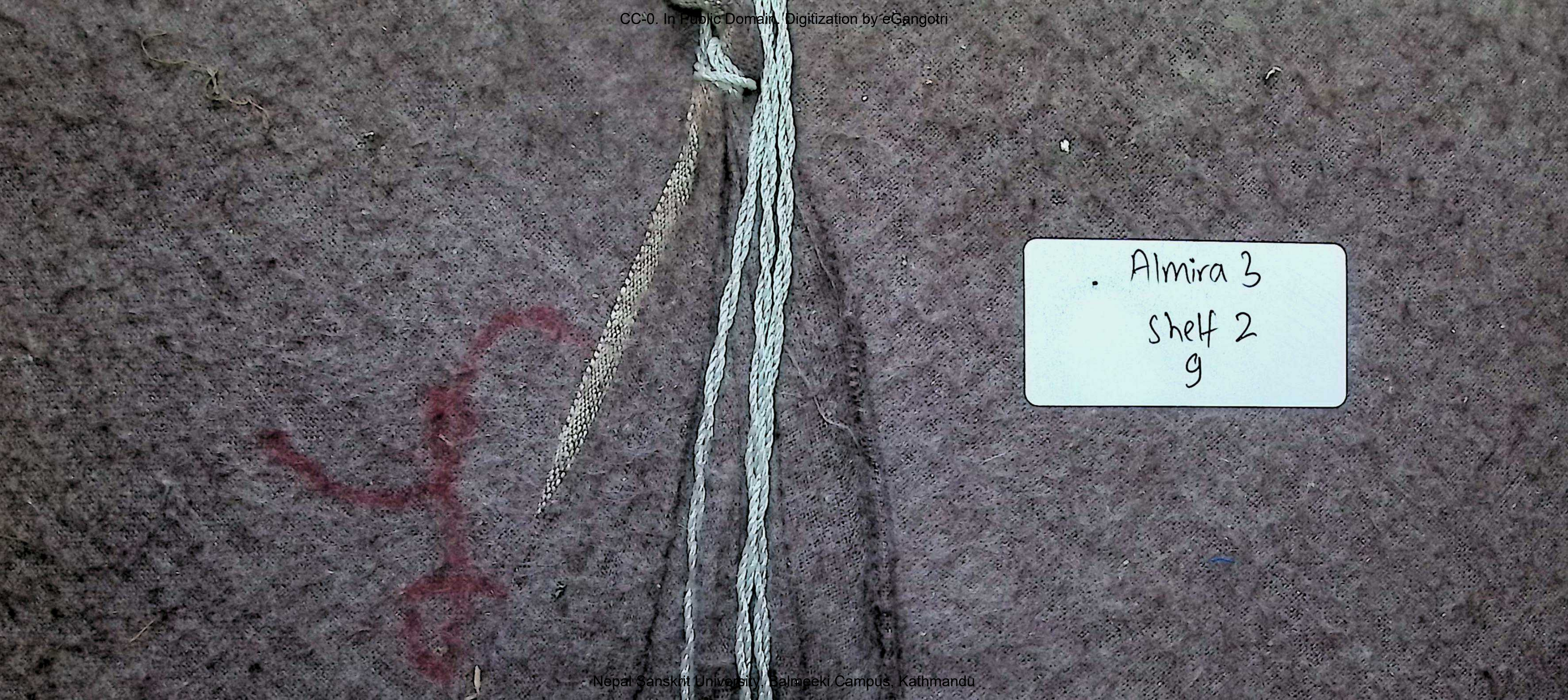

Almira 3
Shelf 2
9

३०८९

# ॥ अथ पूजापङ्कजभास्करप्रारंभः ॥

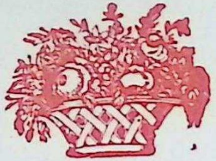

### ॥ श्रीवेंकटेश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विबुधकुमुदकुमुदबान्धवशीलौदार्यवीर्यचांतुर्यगाम्भीर्यादिगुणचुञ्चुमिथिलादेशान्तर्गतदरभङ्गाराजधानीस्थविविधबिरुदावलिविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराजमिथिलाधीशश्रीरुद्रसिंहकुमारबाबुश्रीमद्गुणेश्वरसिंहचरणसरोजयुगलसन्निधौ असकृत्साष्टाङ्गं प्रणम्य विज्ञापयामि किञ्चित्, कलिमलकलुषितसकलजनोद्दिधीर्षया सभगीरथं प्रयत्नं कृत्वेमां पूजापङ्कजभास्कराख्यद्युनदीं पुरातनागमनिगमब्रह्मसदनात्प्राज्ञेतरस्वान्तभूमिमवतार्य प्राथमिकमुद्रणमार्गगामिनीं च कृत्वा पुनर्मुद्रणाद्यधिकारो मह्यमदद्दुरतो महान्तं श्रीमत्कृतमुपकारभरं बिभर्मि पुनरीदृशा अनेके ग्रन्था भवदीयोद्यमाविलसितं भवेयुरित्याशासे चाहं–श्रीकृष्णदासात्मजः खेमराजः ।

# विज्ञापनम्.

पुरा किलास्मिन् भारतवर्षे वेदमार्गानुयायिनस्तदर्थबोधोपयिकव्याकरणादिषडङ्गकर्त्तारः पाणिन्यादयस्तथा मीमांसान्यायसाङ्ख्ययोगाख्यषड्दर्शननिर्मातारो जैमिन्यादयो वेदोक्तधर्मप्रतिपादकस्मृत्यादिप्रवक्तारो याज्ञवल्क्यादयश्चालौकिकज्ञानशालिनो मुनयो जज्ञिरे ते चाजिघृक्षवोऽपि तदानीतनैः प्रबलारातिहृदयपाटनपटुतरोद्दण्डभुजदण्डविराजमानैर्गुणिगुणग्राहकैर्नृपैर्दानमानादिना सत्कृता यथासुखं कालं निन्युः, पश्चात् पूर्वजस्थापितधर्मपरायां मुनिसन्ततौ शृङ्गारादिरसप्रधानकाव्यनाटकादिजनितारो महाकवयः, काव्यादिगुणदोषविवेचककारिकादिग्रन्थोत्पादका नाट्यालङ्कारतत्त्वज्ञा गीतवाद्यनृत्यादिकलानिपुणा भरतादयश्च स्वधर्मपरायणा एव सम्बभूवुः, ततस्तन्मार्गवर्त्तिनः कालिदासादयोऽपि तत्कालीननृपैः सभाजिता मुमुदिरे, तदनु उदग्दिगायातयवनैराजवत्यस्मिन्देशे

गीर्वाणभारती बहुलपक्षचन्द्र इवानुदिनं ह्रासमेवाप्नोदाप्नोति च. तथा विद्वज्जनदौर्लभ्यजनितवेदशास्त्राद्यपरिशीलनशालित्वादर्वाचीनानां प्रायशः सदाचारलोपो दुरितप्रवृत्तिश्च प्रादुरभूत दुःखोदर्कमेतत्सकलैहिकामुष्मिकार्थहानिकरञ्च तदेतत्सर्वं समालोच्य मिथिलदेशान्तर्गतदरभङ्गाराजधानीस्थेन विविधबिरुदावलीविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराजमिथिलाधीशश्रीरुद्रसिंहकुमारबाबुश्रीश्रीमद्गुणेश्वरसिंहेन दानमानादिसन्तुष्टस्वाश्रितविद्वन्मण्डलीकारित एष पूजापङ्कजभास्करनामा ग्रन्थो मन्त्रिकटेऽङ्कनाय प्रैष्यत सोऽयं स्वानुष्ठानजन्येन महता पुण्यचयेन सर्वेषां भारतवासिनां पूर्वजस्थितिप्रापकः स्यात्, अनेन च पुरातनधर्मः शुक्लपक्षशशीव प्रत्यहं वृद्धिं लभेत इति सर्वेषाम्बहुलादरपात्रं कृत्यमेनत्, मयैतन्मुद्रणं दृढपत्रेषु सर्वजनसौलभ्याय स्थूलायसाक्षरैः कृत्वायं प्राकट्यमनायीत्यलम्.

जम्बुद्वीपोदरगतमिदं भारतं वर्षमस्मिन् नीवृद्यः प्राक्ककुभि मिथिलाख्योऽस्ति तद्राजधानी ॥
गुण्यैः स्तुत्यैर्धनिकनिवहैर्मौनहन्त्री मुनीनां संप्रत्यस्ति स्वारिव दरभङ्गाख्यया लोकवित्ता ॥ १ ॥
तस्यान्द्रोढा कुपथगनृणाञ्चावमन्ता रिपूणान्दोग्धार्थानां सपदि गुणिसद्वृत्तयोर्वाञ्छितानाम् ॥

3079

आदौ श्रीमद्गुणपदयुतामीश्वराख्यान्दधानः सिंहान्तां यो वसति मिथिलेशात्मजोऽन्वर्थनामा
॥ २ ॥ चित्रं यत्कविभिरवर्णि वर्ण्यतेऽपि बन्धुत्तंसमुखविचुम्बिनी यदीया ॥ आद्वीपाद्दिशिदि
शि सन्ततं भ्रमन्ती निन्दन्ती भुवनमचन्द्रिकं च कीर्त्तिः ॥ ३ ॥ यत्प्रोत्साहप्रकटितधिया
न्धीमताञ्ज्ञानबिम्बं पूजापद्मार्क इह भगवद्धामदाताजनिष्ट ॥ श्रीरुद्रस्य प्रथितमिथिलाधीश्वर
स्यात्मजो यो भूयात्सोऽयं सकलहितकृद्धर्मगोप्ता चिरायुः ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ छ ॥
वह्नित्रिनागवसुधाप्रमिते शकेऽस्य क्षेमादिराज इति तेन निजेंऽकनं सत् ॥ श्रीवेंकटेश्वरसुयंत्रगृहेऽ
स्य मुंबापुर्य्यां कृतं बुधमुदे खलु पुस्तकस्य ॥ १ ॥ ॥

# ॥ अथेयं पूजापङ्कजभास्कराभिधग्रन्थस्थविषयानुक्रमणिका लिख्यते ॥

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| वंशावली .... .... | १ | १ | १ |
| प्रमाणग्रन्थनिर्द्देशः .... | १ | २ | ५ |
| देवपूजायामधिकारानधिकारौ .... | २ | १ | ४ |
| स्त्रीशूद्रयोः शालग्रामशिलार्च्चने विचारः .... | २ | २ | ३ |
| तदयम्प्रकरणार्थः .... | ३ | १ | ७ |
| अथ नित्यकाम्यपूजाविचारः .... | ३ | २ | २ |
| तदयं समुदायार्थः .... | ४ | २ | ९ |
| अथ नित्यपूजाकालः .... | ५ | १ | ५ |
| तदयम्प्रकरणार्थः .... | ६ | १ | १० |
| अथ देवपूजानाम्पूर्व्वापरीभावविचारः | ६ | २ | ६ |
| तदयं समुदायार्थः .... | ७ | २ | ४ |
| अथ देवपूजाधारवि० .... | ८ | १ | १ |
| तथाचायम्प्रकरणार्थः .... | ९ | २ | ५ |
| अथ देवपूजायाङ्करणमन्त्रविचारः .... | १० | १ | ७ |
| तदयम्प्रकरणार्थः .... | १० | २ | ९ |
| अथोपचारपात्राणि .... | ११ | १ | १ |
| तदयं समुदायार्थः .... | १२ | १ | १ |
| अथोपचारविचारः .... | १२ | १ | १० |
| तत्रासनम् .... | १३ | १ | ९ |
| स्वागतम् .... | १३ | २ | ५ |
| पाद्यम् .... .... | १३ | २ | ६ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| अर्घ्यम् | १३ | २ | ६ |
| आचमनीयम् | १३ | २ | १० |
| पाद्यद्रव्याणि | १३ | २ | ११ |
| मधुपर्कः | १४ | १ | १ |
| स्नानीयद्रव्यप्रतिपत्तिः | १४ | १ | ५ |
| स्नानम् | १४ | १ | ११ |
| वसनम् | १४ | २ | ११ |
| उपवीतम् | १५ | १ | २ |
| गन्धः | १५ | १ | ३ |
| अथ पुष्पाणि | १५ | १ | ५ |
| धूपः | १६ | २ | ६ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| दीपः | १७ | १ | २ |
| नैवेद्यानि | १७ | २ | २ |
| सूर्य्यादिभ्यो दत्तनैवेद्यप्रतिपत्तिः | १८ | २ | २ |
| वन्दनम् | १८ | २ | ६ |
| तदयम्प्रकरणार्थः | १८ | २ | १० |
| अथ षोडशोपचारद्रव्याणि | १९ | २ | २ |
| पूजाकाले सुवर्णादिधारणम् | २१ | २ | ८ |
| पवित्रलक्षणम् | २२ | १ | १ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| जलप्रतिमादावावाहनविसर्ज्जनविचारः | २२ | २ | ७ |
| उपचारे हस्तनियमः | २३ | १ | १० |
| उपचारप्रोक्षणविचारः | २३ | २ | ८ |
| पूजायां दिङ्नियमः | २३ | २ | १२ |
| सावाहनदेवताध्यानम् | २४ | २ | २ |
| तिलकधारणम् | २४ | २ | ३ |
| स्नानीयादौ घण्टावादनम् | २४ | २ | ६ |
| गीतवाद्यादिकरणम् | २४ | २ | ७ |
| प्रकरणार्थः | २४ | १ | ४ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| अथ देवपूजाप्रयोगः | २६ | १ | १ |
| ध्यानम् | २६ | २ | १ |
| अथ सूर्य्यपूजा | २७ | १ | १ |
| अस्य ध्यानम् | २७ | १ | ६ |
| अस्यार्घेभविष्यपुराणम् | २७ | २ | ६ |
| तत्रादौ गन्धाः | २७ | २ | ९ |
| अथ विहितापुष्पाणि | २७ | २ | ११ |
| विहितनिषिद्धानि | २८ | १ | ५ |
| निषिद्धानि | २८ | १ | ६ |
| पत्रेषु विहितानि | २८ | १ | ७ |
| धूपास्तु | २८ | २ | ५ |
| अस्य दीपे | २८ | २ | ८ |
| नैवेद्यानि | २८ | २ | ९ |
| अथायमत्र प्रयोगः | २९ | २ | २ |
| अथ गणपतिपूजा | ३० | १ | ७ |
| अस्य ध्यानम् | ३० | १ | ७ |
| निषिद्धपुष्पपत्राणि | ३० | २ | ९ |
| अथाग्निपूजा ध्यानञ्च | ३१ | १ | १ |
| अथ दुर्ग्गापूजा | ३१ | २ | १ |
| अस्या ध्यानम् | ३१ | २ | ४ |
| अस्या अर्घः | ३२ | १ | ६ |
| गन्धाः | ३२ | १ | ८ |
| पुष्पाणि | ३२ | १ | ९ |
| पत्राणि | ३२ | २ | ४ |
| धूपे | ३२ | २ | ७ |
| दीपे | ३२ | २ | ९ |
| नैवेद्यम् | ३२ | २ | १० |
| पूजाप्रयोगः | ३३ | १ | १ |
| अथ शिवपूजा सा च लिङ्गे प्रशस्ता | ३३ | १ | ६ |
| लिङ्गद्रव्याणि | ३३ | १ | ८ |
| अथ ध्यानम् | ३४ | २ | ९ |
| गन्धद्रव्याणि | ३५ | १ | १४ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| पुष्पाणि विहितानि .... | ३५ | २ | १ |
| निषिद्धपुष्पपत्राणि. .... | ३५ | २ | १२ |
| विहितपत्राणि .... | ३६ | १ | ३ |
| धूपाः .... .... | ३६ | १ | ६ |
| दीपे घृतम् .... .... | ३६ | १ | ८ |
| नैवेद्यम् .... .... | ३६ | १ | ९ |
| अथारात्रिका .... .... | ३६ | १ | ११ |
| अथ नमस्कारः .... | ३६ | २ | २ |
| मुखवाद्यम् .... .... | ३६ | २ | ५ |
| प्रयोगस्तु .... .. | ३६ | २ | ७ |
| एतन्नैवेद्यस्यभक्ष्यत्वे .... | ३७ | १ | ३ |
| लिङ्गद्वयमेककाले नार्च्यम् | ३७ | १ | ९ |
| शूद्रस्पृष्टं लिङ्गं हारिञ्च न नमेत् .... .... | ३७ | १ | १२ |
| अथ विष्णुपूजा .... | ३७ | २ | ३ |
| शालग्रामादौ विष्णुपूजा प्रशस्ता..... .... | ३७ | २ | १२ |
| ध्यानम् .... .... | ३८ | २ | ९ |
| अर्घ्यं. .... .... | ३९ | १ | १ |
| तत्र दक्षिणावर्त्तशङ्खः प्रशस्तः .... .... | ३९ | १ | ६ |
| घण्टावादनम्.... .... | ३९ | १ | ८ |
| गन्धद्रव्याणि .... | ३९ | २ | ७ |
| पुष्पाणि विहितानि .... | ४० | १ | ९ |
| धूपाः .... .... | ४० | २ | १२ |
| दीपः .... .... | ४१ | १ | ११ |
| नैवेद्यानि .... .... | ४१ | २ | ३ |
| वस्त्रम् .... .... | ४२ | १ | ९ |
| गीतवाद्यादि .... .... | ४२ | १ | १२ |
| नीराजनम् .... .... | ४२ | २ | ७ |
| पूजाप्रयोगः .... .... | ४३ | १ | ९ |
| अथ पुरुषसूक्तेन विष्णुपूजा .... .... | ४३ | २ | ५ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| ध्यानं यथा .... .... | ४३ | २ | ९ |
| पूजाक्रमः .... .... | ४४ | १ | ७ |
| अथैतत्प्रयोगः .... | ४५ | १ | ५ |
| अष्टाक्षरमन्त्रेण विष्णुपूजा .... .... | ४६ | १ | १० |
| जपोप्यस्यातिप्रशस्तः .... | ४६ | २ | ११ |
| अथ प्रदक्षिणम् .... | ४७ | १ | ९ |
| अथ नमस्कारः .... | ४७ | २ | ७ |
| अथ विसर्ज्जनम् .... | ४८ | १ | ८ |
| अथ पादोदकधारणम् .... | ४८ | १ | १२ |
| नैवेद्यभोजनम् .... | ४८ | २ | १९ |
| अथापराधः .... .... | ४९ | १ | १२ |
| अपराधक्षमापणम् .... | ५० | १ | ३ |
| आगमोक्तेष्टदेवतापूजा .... | ५० | २ | २ |
| रजतसुवर्णधारणम् .... | ५० | २ | ४ |
| आचमनम् .... .... | ५० | २ | ८ |
| सामान्यार्घः .... .... | ५० | २ | ११ |
| मूलमन्त्रः .... .... | ५१ | १ | ९ |
| अर्घादिपात्रम् .... | ५१ | १ | ११ |
| द्वारदेवतापूजा ... | ५१ | २ | १ |
| विघ्नोत्सारणम् .... | ५२ | १ | ८ |
| आसनपूजा .... .... | ५२ | २ | १ |
| पूजोपकरणस्थापनस्थानम् .... .... | ५३ | १ | २ |
| भूतशुद्धिः .... .... | ५३ | १ | ११ |
| अथ प्राणस्थापनम् .... | ५५ | १ | ८ |
| मातृकान्यासः .... | ५५ | २ | ८ |
| प्राणायामः .... .... | ५७ | २ | ९ |
| पीठन्यासः .... .... | ५८ | १ | ३ |
| मानसपूजा .... ... | ५८ | २ | ४ |
| विशेषार्घस्थापनम् .... | ५९ | १ | २ |
| पीठपूजा .... .... | ६० | १ | ३ |
| पूर्व्वादिदिङ्नियमः .... | ६० | १ | ९ |

| विषयाः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| अथ पूजा सा च यन्त्रे प्रशस्ता .... .... | ६० | २ | १ |
| आवाहनप्रकारः .... | ६० | २ | ६ |
| प्रतिष्ठितप्रतिमाशालग्रामादिष्वावाहनादिविचारः | ६१ | २ | ८ |
| कुण्डलिनी तु द्विविधा.... | ६२ | १ | ४ |
| षोडशोपचाराः .... | ६२ | १ | १२ |
| पूजाङ्गहोमः .... .... | ६४ | १ | ११ |
| अथ जपात्पूर्व्वमितिकर्तव्यता | ६४ | २ | ८ |
| आरात्रिकम् .... .... | ६६ | २ | ६ |
| ततःप्रदक्षिणम् .... | ६६ | २ | १० |
| सर्व्वकर्म्मसमर्प्पणम् .... | ६६ | २ | ११ |
| विसर्ज्जनम् .... .... | ६७ | १ | २ |
| निर्म्माल्यक्षेपणम् .... | ६७ | १ | ३ |
| चरणोदकग्रहणादि .... | ६७ | १ | ६ |
| सङ्क्षेपपूजा .... .... | ६७ | १ | ७ |
| मालानिर्णयः.... .... | ६७ | २ | ९ |
| वस्त्रादिनिर्म्मितगोमुखविचारः ... .... | ६८ | २ | ८ |
| विशेषान्तरम्.... ... | ६८ | २ | ९ |
| अक्षमालादिषु कृतजपसंख्याया गणनद्रव्यविचारः .... | ६८ | २ | १२ |
| मुद्राकथनम्.... .... | ६९ | १ | ४ |
| पार्थिवशिवलिंगपूजा .... | ७० | २ | १ |
| ब्रह्मपूजा .... .... | ७१ | २ | ७ |
| पूजोत्तरकृत्यम् .... | ७२ | २ | ८ |
| काम्यपूजानामपिमोक्षसाधकत्वम् .... | ७२ | २ | १० |
| ग्रन्थसमाप्तिः .... | ७५ | १ | ३ |

इत्यनुक्रमणिका संपूर्णा.

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ आसीत्खंडवलाकुलार्णवभवः श्रीमन्महेशश्शशी यो विद्यासु चतुर्दशस्वपि सुराचार्य्योपमोऽजायत । यं चक्रे मिथिलाधिपं बुधवरं सत्कृत्य दिल्लीपतिर्यत्कीर्त्त्याविशदीकृतेवनितले काकोपि हंसायते ॥ १ ॥ तद्वंशप्रभवोरिकक्षदहनो भूमीभुजामग्रणीः श्रीमन्माधवसिंहभूपतिरभूद्भूदेवदेवद्रुमः । यस्यापत्यगणैर्विभाति मिथिला मेरुर्यथा निर्जरैर्योगाभ्यासपरो महाव्रतधरः काश्यान्तनुं यो जहौ ॥ २ ॥ तत्सूनुः स्वसपत्नवारणगणप्रद्रावणे केसरी भूमीपालशिरोमणिः सुरवपुः श्रीछत्रसिंहोऽभवत् । यत्सौन्दर्यविनिर्ज्जितोमनसिजो मन्येऽतनुत्वं दधौ योनित्यं बहुशास्त्रवित्परिवृतो वेदान्तमभ्यस्तवान् ॥ ३ ॥ तस्माद्धर्म्मपरः प्रजासुखकरः सद्वृत्तवृत्तिप्रदो दानव्रातविनिर्ज्जितामरतरुः श्रीरुद्रसिंहो ह्यभूत् । स्मार्त्ताचारविचारचारुचतुरः प्रोद्यत्प्रतापानलो यद्भीत्या प्रविवेश वाडवमिषाच्छत्रुप्रतापोम्बुधौ ॥ ४ ॥ तस्मात्समुद्रादिव पूर्णचन्द्रो महेश्वरादिः स बभूव सिंहः । सद्दानसन्तोषितभूमिदेवः स्वाचारनिष्ठः कृतदेवसेवः ॥ ५ ॥ यस्माद्विश्वजनीनभूतिररिहा जातः प्रजारञ्जकः श्रीलक्ष्मीश्वरसिंह ईतिरहितक्ष्मामण्डलाखण्डलः । दाने कर्णसमो धिया गुरुसमो गाम्भीर्यरत्नाकरः स्वर्ल्लोकम्मघवेव शास्ति मिथिलां प्रौढप्रतापानलः ॥ ६ ॥ तस्यानुजो वरीवर्त्ति मिथिलेशकृतादरः । श्रीगु

पेश्वरसिंहो यः पितृदत्तमहीश्वरः ॥ ७ ॥ क्रियाकलापैर्ज्जमदग्नितुल्यो युधिष्ठिरेणापि समो वचोभिः । तीर्थाटनैर्यः शिवशर्म्मनाम्ना दानेन तुल्यः शिबिभूमिपेन ॥ ८ ॥ सोयं सूर्य्यगणाधिपौ हुतवहं दुर्गां शिवं श्रीहरिं स्वाभीष्टां परदेवतां च शुभदां नत्वा प्रजानां पतिम् ॥ विद्वद्भिर्म्मिथिलेशमानिततरैर्ग्रंथान्विभाव्याग्रजान्पूजापङ्कजभास्करं वितनुते विद्वत्प्रमोदप्रदम् ॥ ९ ॥ वाक्यसंयोजनं त्वत्र कुरुते तदनुज्ञया । प्यारेशर्म्मा पगौलीसं विष्णुदत्ततनूद्भवः ॥ १० ॥ ग्रंथास्तु महामहोपाध्यायश्रीदत्तकृतच्छन्दोगाह्निकाचारादर्शमहामहोपाध्यायहरिनाथकृतस्मृतिसारमहामहोपाध्यायविश्वेश्वरकृतस्मृतिसमुच्चयमहामहोपाध्यायशंकरमिश्रकृतच्छन्दोगाह्निकमहामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रकृताचारचिन्तामणिमहामहोपाध्यायपक्षधरमिश्रकृततत्त्वनिर्णयमहामहोपाध्यायदेवनाथठक्कुरकृतस्मृतिकौमुदीमहामहोपाध्यायगणेश्वरमिश्रकृतहरिभक्तिदीपिकामहामहोपाध्यायशूलपाणिकृताचारविवेकमहामहोपाध्यायाभिनववाचस्पतिमिश्रकृतकृत्यप्रदीपमहामहोपाध्यायवामदेवकृतस्मृतिदीपिकाप्रभृतिमैथिलनिबद्धाः जीमूतवाहनान्वयापरादित्यकृतयाज्ञवल्क्यस्मृतिटीकापरार्करघुनन्दनभट्टाचार्य्यकृताह्निकतत्त्वगोपालभट्टकृतहरिभक्तिविलासप्रभृतिगौडनिबद्धाः विज्ञानेश्वरकृतयाज्ञवल्क्य

टीकामिताक्षरानीलकंठभट्टकृताचारमयूखकमलाकरभट्टकृतनिर्णयसिंधुरामाचार्यकृतस्मृत्यालोकप्रभृति दाक्षिणात्यनिबद्धाः विस्तरभिया तत्रतत्रोक्तप्रमाणवचनानि क्वचित्क्वचित्परिहृत्यप्रमेयमात्रंपूजाप्रकरणीयं सिद्धवदत्र लिख्यते ॥

अथदेवपूजा तत्र सर्वेषां वर्णानामधिकारः—"क्षमा शौचं दमः सत्यं दानमिन्द्रियनिग्रहः ॥ अहिंसागुरुशुश्रूषातीर्थानुसरणन्दया ॥ आर्ज्जवं लोभशून्यत्वं देवब्राह्मणपूजनम् ॥ अनभ्यसूया च तथा धर्म्मः सामान्य उच्यते ।" इति विष्णुवचनात् । स्वधर्मत्यागिनश्च शिवपूजने नाधिकारः—"स्वधर्मं यः परित्यज्य परधर्मरुचिर्भवेत् । तेनाहं पूज्यमानोपि गन्धं जिघ्रामिकौणपम् ॥" इति स्कन्दपुराणीयशिववाक्यात् ॥ ब्राह्मणस्य स्वधर्मत्यागिनोपि शिवपूजनेऽधिकारः—"वेदमन्त्रधनैर्विप्रैरहन्तुष्येर्च्चितः सदा । न विप्राणां करस्पर्शैरुद्विजामि वरानने ॥ शूद्रकर्मरतेनापि स्पृश्यमानो द्विजन्मना । हृष्यामि तेन सुतरां पूज्यमानश्च सुन्दरि ॥" इति गौरीं प्रति शिववाक्यादिति वाचस्पतिमिश्रप्रभृतयः ॥ स्मृतिदीपिकायां तु—स्वधर्मत्यागिनः शूद्रस्य शिवपूजने नाधिकारः ब्राह्मणस्य स्वधर्मत्यागिनोप्यधिकार इत्याह तन्मते क्षत्रियवैश्ययोः

स्वधर्मत्यागिनोरधिकारानधिकारयोरनध्यवसायापत्तिर्दोष इति बोध्यम् । दाक्षिणात्यास्तु—“ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते । स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा ॥ ” इति देवीपुराणात् स्वधर्मपराणामेव चतुर्णामपि वर्णानां विष्णुपूजाधिकारमाहुः । एवं स्त्रीशूद्रयोः शालग्रमशिलार्च्चने नाधिकारः—“ब्राह्मणस्यैव पूज्योहं शुचेरप्यशुचेरपि । स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शो वज्रादपि सुदुःसहः ॥ ” इति शिष्टपरिगृहीतवचनात् । “ प्रणवस्य जपाद्धोमाच्छालग्रामशिलार्च्चनात् । ब्राह्मणीगमनाच्चैव शूद्रश्चांडालतामियात् ॥ ” इति वचनाच्चेति केचित् । अत्र पूजापदमर्च्चनपदं च स्पर्शपरम् उत्तरार्द्धार्थानुरोधात् । “ भूमावप्सुतथाग्नौ च शालग्रामशिलात्मकः । सर्ववर्णैरहं पूज्यः शिलां शूद्रो न संस्पृशेत् ॥” इति विष्णुरहस्योक्तभगवद्वचनात्स्पर्शमात्रस्यैव निषेधाच्च तेन स्त्रीशूद्रैः स्पर्श एव न कार्यः पूजा तु कार्यैवेति बहवः आचारोपि तथैवेति बोध्यम् । गौडास्तु “स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणाञ्च जनेश्वर । स्पर्शने नाधिकारोस्ति विष्णौ वा शंकरेपि वा ॥ ” इति वचनादनुपनीतेनापि विष्णुशिवयोः स्पर्शो न विधेय इत्याहुः । दाक्षिणात्यास्तु विष्णुधर्मे शालग्रामशिलां वापि चक्रांकितशिलान्तथा । ब्राह्मणः पूजयेन्नित्यं क्ष

त्रियादिर्न पूजयेत् ॥ ” इति स्पर्शसहितपूजाविषयमित्युक्त्वा । स्त्रीणामनुपनीतानामित्यादिपूर्वोक्तवचनाद्विष्णुशिवयोः स्पर्शने स्त्र्यादीनामनधिकारमुक्त्वा “ शालग्रामं न स्पृशेत्तु हीनवर्ण्णो वसुन्धरे । स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शो वज्रस्पर्शाधिको मतः । मोहाच्चेत्संस्पृशेच्छूद्रो योषिद्वापि कदाचन । स्वपते नरके घोरे यावदाभूतसम्प्लवम् ॥ यदि भक्तिर्भवेत्तस्य स्त्रीणां वापिवसुन्धरे । दूरादेव स्पृशन्पूजाङ्कारयेत्सुसमाहितः ॥” इतिवराहोक्तेः शालग्रामशिलामात्रे निर्बन्धो न प्रतिमादौ । “ सर्ववर्णैस्तु सम्पूज्याः प्रतिमाः सर्वदेवताः । लिङ्गान्यपि तु पूज्यानि मणिभिः कल्पितानिच ॥” इति तत्रैवोक्तेरित्याहुः । तदयम्प्रकरणार्थः—देवपूजायाञ्चतुर्ण्णामपि वर्ण्णानामधिकारः स्वधर्म्मत्यागिनो ब्राह्मणेतरस्य शिवपूजने नाधिकारः स्त्रीशूद्रयोः शालग्रामशिलास्पर्शानधिकारेपि शालग्रामशिलायां स्पर्शशून्ये प्रतिमादौ स्पर्शसहितेपि पञ्चोपचारादिभिर्विष्णुपूजनेधिकार एव । गौडमते स्त्रीशूद्रानुपनीतानां विष्णुशिवस्पर्शने नाधिकारः ॥ दाक्षिणात्यमते तु चतुर्ण्णामपि वर्णानां स्वधर्मपराणामेव विष्णुपूजनेधिकारः शालग्रामेगोमत्यादिभवचक्राङ्कितशिलायां च स्पर्शपूर्वकपूजने क्षत्रियादीनामनुपनीतानां स्त्रीणां च नाधिकारः प्रतिमास्तु सर्वैः पूज्याः लि

ङ्गानि च मणिभिः कल्पितान्येव क्षत्रियादिभिः पूज्यानीति इति पूजापङ्कजभास्करे प्रथमःप्रकाशः॥ १॥

अथ नित्यकाम्यदेवपूजाविचारः। तत्र-"शिवम्भास्करमग्निञ्च केशवङ्कौशिकीमपि। मनसानर्च्चयन्याति देवलोकादधोगतिम् ॥" इति कालिकापुराराणात् शिवादीनांपञ्चानाम्पूजानित्या कौशकीं दुर्गां मनसाप्यनर्च्चयन्नित्यर्थः। तेनपूजाप्रशस्तपुष्पाद्यभावे मनसाप्येषाम्पूजा कार्य्येत्यर्थः फलति।अधोगतिं नरकगतिं तेनैषामर्चनस्य नित्यत्वम्। नित्यगणमध्यपाठेन विश्वजिन्न्यायानवतारात्। "वरम्प्राणपरित्यागः शिरसो वापि कर्त्तनम् ॥ न त्वसम्पूज्य भुञ्जीत केशवङ्कौशिकीं शिवम्" इति कालिकापुराणीयनिन्दाश्रवणाच्च ॥ एवम्ब्रह्मपूजापि नित्यैव-"ब्रह्माणंशङ्करं सूर्य्यन्तथैव मधुसूदनम् ॥ अन्यांश्चाभिमतान्देवान्भक्त्याचाक्रोधनोत्वरः। स्वैर्म्मन्त्रैरर्च्चयेन्नित्यम्पत्रैः पुष्पैस्तथाम्बुभिः। यो मोहादथवालस्यादकृत्वादेवतार्च्चनम्। "भुङ्क्ते स याति नरकं शूकरेष्वभिजायते ॥" इति कूर्म्मपुराणात्। विष्णुं प्रजापतिञ्चापि शिवंवाभास्करन्तथा ॥ तल्लिङ्गैः पूजयेन्मन्त्रैर्देवानेतान्समाहितः ॥ इत्यग्निपुराणाभिधानाच्च।"वरन्देहपरित्यागो वरन्नरकसम्भवः ॥ न चासम्पूज्य भुञ्जीतदेवम्पद्मसमुद्भवम्॥सदापूजयेत् यस्तुदेवंभक्त्या पितामहम्। "मनुष्यचर्म्मणा नद्धः स वेधानात्र संशयः।" इति पूजा

रत्नाकरीयभविष्यपुराणाच्च । “ एवं च सूर्य्याग्निदुर्गाशिवविष्णुप्रजापतीनाम्पूजानित्येतिसिद्धम् । “ आरोग्यंभास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात् । ज्ञानम्महेश्वरादिच्छेन्मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात् ॥” इत्यादिमत्स्यपुराणात्॥ “श्रान्तसंवाहनं रोगिपरिचर्य्या सुरार्च्चनम्॥ विप्रपादोदकोच्छिष्टमार्ज्जनं गोप्रदानवत् ॥ गवाह्निकन्देवपूजावेदाभ्यासःसरित्प्लवः । नाशयत्याशु पापानिमहापातकजान्यपि ॥” इति याज्ञवल्क्यवचनात् “देवमाल्यापनयनन्देवागारसमूहनम् । स्नपनं सर्वदेवानांगोप्रदानसमं स्मृतम्॥” इतियमवचनाच्च फलश्रवणाद् देवपूजायाः काम्यत्वेपि काम्यप्रसंगेन नित्यनिर्वाहो बोध्य इति स्मृतिदीपिकायांवामदेवोपाध्यायः। माल्यं निर्म्माल्यम्। श्रीदत्तोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रादयस्तुतर्पणोत्तरकर्मानन्तरम् ॥ “ एवं सूर्यन्नमस्कृत्य त्रिःकृत्वा च प्रदक्षिणम् । द्विजंगाङ्काञ्चनं स्पृष्ट्वा ततो विष्णुगृहं व्रजेत् ॥ आशयस्थञ्च सम्पूज्य प्रतिमास्थञ्च पूजयेत्”। इति विष्णुवचनात् सूर्य्याञ्जलिमुक्त्वा “ततो गृहार्च्चनंकुर्यादभीष्टसुरपूजनम् । जलाभिषेकपुष्पाणान्धूपादीनान्निवेदनैः ॥ इति विष्णुपुराणेभिधानाच्च, विष्णुपूजेष्टदेवतापूजयोरेव नित्यत्वम्। फलश्रवणादन्यदेवपूजानाङ्काम्यत्वमेवेत्याहुः ॥ आदिपदेन गन्धदीपनैवेद्यग्रहणम् ॥ सति सम्भवे पञ्चाना

मावश्यकत्वात् ॥ सा च पूजा सूर्याग्निदुर्गाशिवविष्णुपदैनैवविधेया। सूर्यादिशब्दवाच्यत्वेनैव तेषान्देवतात्वात् । शिष्टाचारादितिशूलपाणिः । गणपतिपूजा तु काम्यैव—'महागणपतेः कर्म्मसिद्धिम्प्राप्नोति मानव' इति देवीपुराणात् । एवम्पार्थिवशिवलिङ्गपूजापि काम्या"यः कृत्वा पार्थिवं लिङ्गम्पूजयेच्छुभवैदिकम्। इहैव धनवाञ्छ्रीमानन्ते रुद्रोभिजायते ॥" इति भविष्यपुराणीयादितिबोध्यम् । दक्षिणात्यास्तु विष्णुशिवब्रह्मसूर्यशक्तिविनायकादिष्वभिमतान्देवतामर्च्चयेत् तत्रापि कलौ हरिहरयोः पूजा प्रशस्ता—"कलौ कलिमलध्वंसं सर्वपापहरं हरिम् । येर्च्चयन्ति नरा नित्यन्तेपि वन्द्या यथा हरिः ॥ नविष्णवाराधनात्पुण्यं विद्यते कर्म्म वैदिकम् । तस्मादनादिमध्यान्तन्नित्यमाराधयेद्धरिम ॥ अथवा देवमीशानम्भगवन्तं सनातनम् । प्रणवेनाथ मन्त्रेण रौद्रेण त्र्यम्बकेणवा ॥ " इत्याद्यभिधानादितिवदन्ति । तदयं समुदायार्थः—सूर्य्याग्निदुर्गाशिवविष्णूनामिष्टदेवतायाश्च पूजानित्येति स्मृतिकौमुदीकृद्देवनाठक्कुरः ॥ श्रीविष्णवभीष्टदेवतयोः पूजा नित्या सूर्य्याग्निदुर्गाशिवानान्तुनित्यकाम्या तत्र काम्यप्रसंगेन नित्यनिर्वाहः साच पूजा सूर्य्याग्निदुर्गाशिवविष्णुपदमुच्चार्य्य विधेया गणपतिपूजा तु काम्यैवेति स्मृतिदीपिकाकृद्रामदेवोपाध्यायः । श्रीविष्णोरभीष्टदेवतायाश्च पूजा

नित्यान्येषाङ्काम्येति श्रीदत्तोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रादयः । ब्रह्मपूजानित्यैवेति शूलपाणिः । पार्थिवशिवलिङ्गपूजा काम्यैव । दाक्षिणात्यास्तु सूर्य्यादिदेवतानाम्मध्ये कामप्येकामभिमतान्देवतामर्च्चयेत् तत्रापि हरिहरयोः पूजा प्रशस्तेत्याहुरिति ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे नित्यकाम्यदेवपूजाविचारो नाम द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

**अथ नित्यपूजाकालः**–"स च चतुर्थेसंविभागे तु स्नानार्थम्मृदमाहरेत् । तिलपुष्पकुशादीनि स्नानञ्चाकृत्रिमे जले ॥ पञ्चमेतुतथाभागेसंविभागोयथार्हतः ॥" इत्यादिना दक्षोक्तमध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दनोत्तरो ज्ञेयः मध्याह्नस्नानसंध्यावन्दनोपरि 'ततो गृहार्च्चनङ्कुर्य्यादभीष्टसुरपूजनम्' इत्यादिना तद्विधानात् । यत्तु–" मैत्रम्प्रसाधनं स्नानन्दन्तधावनमञ्जनम् । पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम् ।" इति मनुवचनन्तत्काम्यपूजापरमिति वाचस्पतिमिश्रादयः । अत्राह्नःपूर्वभागे तृतीयप्रहरात्पूर्वमेव तत्कार्य्यमित्यर्थमाश्रित्य विरोधपरिहारं शूलपाणिराह । यच्च–"सुखोषितास्तां रजनीम्प्रातः सर्वे कृताह्निकाः । विविशुस्तां सभान्दिव्याङ्कितवैरनुमोदिताम् ॥" इतिमहाभारतवचनन्तदप्रत्याख्येयकार्य्यानुरोधेनानन्यगत्या नित्यानामाह्निकानां सूर्य्योदयानन्तरम्मध्याह्नात्प्रागपिकरणमदुष्ट

मित्येवम्परम् । अत्र च पक्षे मध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दने अपि तदैवकार्य्ये क्रमभङ्गे बीजाभावात् तदन्तापकर्षन्यायाच्च।अत्र प्रातः पदेन "प्रातःकालो मुहूर्त्तांस्त्रीन्" इत्यादिना परिभाषितो ज्ञेयो न तु सूर्य्योदयात्पूर्वकालः सूर्य्योदयं विना नैव स्नानदानादिकाः क्रियाः । इत्यादिना निषेधादिति मिश्रादयः।स्मृतिकौमुद्यान्देवनाथठक्कुरस्तु प्रातःस्नानेनापि नित्यपूजाधिकारी भवति परन्तु मध्याह्नस्नानसन्ध्ये अपि नित्यतया विधातव्ये एवेत्याह । वस्तुतो दक्षाद्युक्तो मध्याह्नादिः स्नानादिकालो दृष्टार्थ एव अत एव वैद्यकेपि मध्याह्नस्नानं तदुत्तरं भोजनमुक्तमिति शिष्टा अपि मध्याह्नोत्तरमासुरींवेलाम्परित्यज्य स्नानादिकमाचरन्ति उपवासादिविशेषसत्त्वे तु पूर्व्वाह्णएव स्नानं पञ्चयज्ञांश्च विधाय भुञ्जते । तस्मादहनि स्नात्वा पञ्चयज्ञान्कृत्वातिप्रातर्मध्याह्नञ्चनिषिद्धकालं विहायभोजनमेतावन्मात्रमेव वैधमिति । यदि च दक्षोक्तकालस्य वैधत्वमपि तदापि कार्य्यान्तरानासक्तौ तद्बोध्यम् । ग्रामगमनसभोपवेशनादिकार्य्यान्तरासक्तौ एकस्मिन्नेव कस्मिंश्चिदहर्भागे स्नानपञ्चयज्ञकरणम् । तथाहि भारते–सुखोषितास्तां रजनीम्प्रातः सर्वे कृताह्निकाः । विविशुस्तां सभान्दिव्याङ्कितवैरनुमोदिताम् ॥ ॥५॥ इति प्रथमाहर्भागे भोजनप्राक्कालीनमहः कृत्यन्दर्शयति न तु पूर्व्वाह्णमध्याह्नापराह्णानफलान्कुर्य्यात

यथाशक्ति धर्म्मार्थकामेभ्यः इति गौतमोप्यह्नः पूर्व्वमध्यपरभागान् यथाक्रमन्धर्म्मादिषु विदधत् पूर्व्वोक्तमर्थमनुमेने। अत एव सहवस्त्रो हरहराप्लुत्यान्यद्वस्त्रमाच्छादयेत् इति साङ्ख्यायनगृह्यम् । अहरहः पञ्चयज्ञान्निर्वपेत् इति शङ्खलिखितौचाहर्मात्रं विवक्षितवन्तौ । केचित्तु–'अहरेवाधिकारविशेषणम् । तदन्तर्गतमध्याह्नादिकालश्चाङ्गमात्रमिति तदसम्भवेप्यनुष्ठानम् सर्वशक्तिन्यायात्'इत्याहुरिति श्रीदत्तोपाध्यायकृतच्छन्दोगाह्निकम् । गौडास्तु–पूर्वाह्णेदेवतार्च्चनम्मुख्यम् । 'पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम् । इति मनुवचने एवकारस्मरणात् । मध्याह्नेपि कूर्म्मपुराणे–"पौरुषेण तु सूक्तेन ततो विष्णुं समर्च्चयेत् । वैश्वदेवन्ततः कुर्य्याद्बलिकर्म्म ततः परम् ॥" इत्युक्तेरित्याहुः । तेन पूर्व्वाह्णमध्याह्नभिन्नकालस्य गौणत्वं सूचितवन्तः । देवार्च्चनन्तु प्रातर्होमोत्तरञ्चतुर्थभागे ब्रह्मयज्ञोत्तरं वा कार्य्यम्– " विधाय देवतापूजाम्प्रातर्होमादनन्तरम् । " कुर्वीत देवतापूजाम्पञ्चयज्ञादनन्तरम् इत्यादि द्विविधस्मृतेरिति दाक्षिणात्याः । तदयम्प्रकरणार्थः मध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दनोत्तरन्नित्यपूजा विधेया अप्रत्याख्येयकार्य्यानुरोधेन सूर्य्योदयानन्तरम्मध्याह्नात्प्रागपि काम्यपूजा तु पूर्वाह्णेइतिश्रीदत्तादयः । प्रातः स्नात्वापिसूर्य्योदयोत्तरन्नित्यपूजादयो विधेयाः । मध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दने अपि

नित्यतया विधेये एवेति स्मृतिकौमुदी । श्रीदत्तोपाध्यायस्तु–कस्मिंश्चिदेकस्मिन्नहर्भागे राक्षसीं वेलाम्मुक्त्वा स्नानादिभोजनान्तङ्कर्म्म विधेयंमध्याह्नादिकालनियमा स्तु दृष्टार्थ एवेत्याह । पूर्वाह्णो मध्याह्नश्चाहर्भागो मुख्यः पूजाकालोन्यो गौण इति गौडाः । दाक्षिणात्यस्तु–प्रातर्होमोत्तरश्चतुर्थभागे ब्रह्मयज्ञानन्तरं वा देवपूजाविधेयेत्याहुः । इतिपूजापंकजभास्करे नित्यपूजाकालविचारो नाम तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथदेवपूजानाम्पूर्वापरीभावविचारः तत्र सर्वादौसूर्य्यपूजा–'यावन्न दीयते भानोः' इत्यादि वचनात् । "यथा देवमयत्वाच्च तरणिर्लोकपूजितः । तथा धूपोपहारैश्च पूजयेत्प्रथमं रविम् ॥ अपूज्य प्रथमं सूर्य्यमपरान् यः प्रपूजयेत् । न तद्भूतकृतम्पाद्यं सम्प्रतीक्षन्तिदेवताः ॥" इति स्कन्दपुराणाच्च । ततः काम्यत्वेपि सकलविघ्नहरणद्वारा कर्म्मसिद्धिदायकत्वेन । "आदित्यङ्गणनाथञ्च देवींरुद्रं यथाक्रमम् । नारायणविशुद्धाख्यमंते च कुलदेवताम् ॥" इति पद्मपुराणवचनाच्च गणपतिपूजाकार्य्या । विशुद्धाख्यंवह्निङ्कुलदेवतामिष्टदेवताम् । अन्तेचेष्टदेवतापूजा आगन्तूनामन्तेभिनिवेशादुक्तवचनाच्चेति सकलपूजानिबन्धकारः । मध्ये दुर्गाशिवविष्णूनां क्रमेण पूजा कार्या

उक्तवचनात्पद्मपुराणे–“रविर्विनायकश्चण्डी ईशो विष्णुस्तु पञ्चमः ।क्रमेणानेन पूज्यन्तेव्युत्क्रमेण महद्भयम् ॥ ” इत्यभिधानाच्च । अग्निपूजा तु तदनन्तरङ्कार्य्या “रविर्व्विनायकः” इति क्रमविरोधभयादिति महामहोपाध्यायवामदेवकृतस्मृतिदीपिकासंक्षेपे छन्दोगाह्निककृद्वामदेवोपाध्यायस्तु सूर्य्यगणपत्यग्निदुर्गाशिवविष्णवभीष्टदेवतेति क्रमेण पूजामाह । एवमेवमिथिलाधिपवासुदेवसिंहकारितगोण्टिशर्म्मकृताह्निकोद्धाराभिनववर्द्धमानकृताह्निकविवेकप्राचीनशौरिशर्म्मकृताचारचिन्तामणिप्रभृतिषूपलभ्यते । मिथिलायामाचारोप्येवमेव । ततः काम्या पार्थिवशिवलिङ्गपूजा आचारात् । ततो ब्रह्मपूजा सा च यद्यपि नित्या तथापि सकलदेवपूजान्ते पूजोपकरणशेषद्रव्यैः “ॐ ब्रह्मणे नमः” इत्युच्चार्य्य कार्य्या शिष्टाचारादितिशूलपाणिः । गौडनिबन्धे तत्र प्रथमतः सूर्य्यपूजा–“अपूज्य प्रथमं सूर्य्यम्” इत्यादिब्रह्मपुराणात् प्रागुक्तपद्मपुराणवचनाच्च । यत्तु भविष्यपुराणे–“देवतादौ यदा मोहाद्गणेशो न च पूज्यते । तदा पूजाफलं हन्ति विघ्नराजो गणाधिपः॥” इत्यनेन गणेशपूजनमादावुक्तं तत्सूर्य्यपूजातिरिक्तेज्ञेयम् । ‘आदित्यंगणनाथं च’ इति पद्मपुराणैकवाक्यत्वात् । ‘आदौ विनायकः पूज्योह्यन्ते च कुलदेवताः ।’ इति बह्वृचगृह्यपरिशिष्टोक्तं गौर्य्यादिपूजनपरमिति कल्पतरुप्रभृतिभि

रपि सूर्य्यपूजनस्यादित्वमुक्तम् । एवञ्च सूर्य्यं गणेशं दुर्गां शिवं विष्णुञ्च सम्पूज्य ब्रह्माणमन्यांश्च पूजयेत् । गृहीतागममन्त्रस्य तु तत्तत्पूजनादेव पौराणिकपूजनसिद्धिः । तदनन्तःपातिनस्त्विष्टदेवस्य पृथक्पूजनमित्युक्तम् । स्मृत्यालोके दाक्षिणात्यरामस्तु—सर्व्वादौ सूर्यपूजा सर्व्वान्ते विष्णुपूजा मध्ये गणपत्यादिपूजा तत्र क्रमनियमो नेत्याह । तदयं समुदायार्थः—सूर्य्यगणपतिदुर्गाशिवविष्णवग्नीष्टदेवताः सम्पूज्य काम्यपार्थिवशिवलिङ्गपूजां विधाय सकलदेवपूजोपकरणशेषद्रव्यैः "ॐ ब्रह्मणे नमः" इत्युच्चार्य्य ब्रह्मपूजा कार्य्या इति शूलपाणिः । सूर्य्यगणपत्यग्निदुर्गाशिवविष्णुस्वेष्टदेताकाम्यपार्थिवशिवलिङ्गपूजां विधाय ब्रह्मपूजाविधेयेति शौरिशर्म्मसंक्षेपच्छन्दोगाह्निककृद्रामदेवोपाध्यायादयः । गौडास्तु—एवमेवोक्त्वा गृहीतागममन्त्रस्य आगमोक्तरीत्या तत्तद्देवपूजनादेव पौराणिकपूजासिद्धिः । तदनन्तःपातिनस्त्विष्टदेवस्य पृथक् पूजनङ्कार्य्यमित्याहुः । दाक्षिणात्यरामस्तु—सर्वादौ सूर्य्यस्य सर्वान्ते विष्णोः पूजा कार्य्या मध्ये गणेशादिपूजने क्रमनियमो नास्तीत्याह । इति पूजापंकजभास्करे पूजाक्रमविचारो नाम चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

**अथ देवपूजाधारविचारः** तत्र प्रतिमायां सर्वदेवतापूजा प्रशस्ता । ध्यानाद्यनभिज्ञस्त्रीबालादीनान्तुतत्रैव सा प्रशस्ता । प्रतिमा तु गृहे अङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिपर्य्यन्तप्रमिता सप्ताङ्गुलप्रभृति वितस्तिप्रमिता वा धार्य्या “अङ्गुष्ठपर्वादारभ्यवितस्तियावदेवतु ॥ गृहेषु प्रतिमा धार्य्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥” इति मत्स्यपुराणात्, “सप्ताङ्गुलं समारभ्य यावच्च द्वादशांगुला । गृहेष्वर्च्चा समाख्याता प्रसादे चाधिका शुभा ॥” इति देवीपुराणाच्च । सा च सुवर्णादिभिर्विधातव्या “सौवर्णी राजती वापि ताम्री रत्नमयी तथा । शैलदारुमयी वापि लौहसंघमयी तथा ॥ रीतिका धातुयुक्ता वा कांस्यताम्रमयी तथा । शुभदारुमयी वापि देवतार्च्चा प्रशस्यते ॥” इति मत्स्यपुराणात् । शैलदारुमयी शैलमयी दारुर्देवदारुस्तन्मयी चेत्यर्थः । लौहसंघमयी लौहं सुवर्णादितत्समूहमयी । रीतिकाधातुयुक्ता रीतिकाधातुः पित्तलस्तद्युक्ता । कांस्यताम्रमयी कांस्यताम्रोभयमयी । शुभदारुमयी यज्ञियदारुमयी । चतुर्भुजा देवीप्रतिमा गृहे उपविष्टा न धार्य्या।देवीपुराणे-“ ऊर्द्धस्थिता गृहे कार्य्या सदा देवी चतुर्भुजा । अन्यथा तु न कर्त्तव्या कृता भयकरीमता ॥ ” इत्यभिधानात् । अष्टभुजा तूपविष्टैव धार्य्या “तथा चाष्टभुजा कार्य्या

प्रासादे वा गृहेथवा । ऊर्द्धस्थिता सदा घोरा रौद्री चापि नरेश्वर॥"इति तत्रोक्तेः । तथा–"शैलजा न गृहे पूज्या ह्यभावात्काष्ठजा शुभा । तथा न गृहे सजटा शुभा । " एवमूर्द्धदृष्टिरधोदृष्टिस्तिर्य्यग्दृष्टिर्म्मानोन्मानहीना च प्रतिमा निषिद्धा " नाधो दृष्टिन्नोर्द्धदृष्टिन्तिर्य्यग्दृष्टिन्न कारयेत् । " इति नरसिंहपुराणात् । अप्रतिष्ठिता तु न क्वापि निषिद्धेति तत्रावाहनादिविसर्ज्जनान्ता पूजाऽविरुद्ध प्रतिष्ठितायास्तु कदाचित्पूजालोपे प्रत्यवाय इति श्रीदत्तादयः । नास्तिकस्थापिता तु प्रतिमा न पूजनीयास्तिकेन । नार्म्मदलिङ्गशालग्रामादीनाम्पूजाधारत्वं विशेषपूजाप्रकरणे वक्ष्यते । एवञ्जलादीनामपि पूजाधारत्वमाह शातातपः–" भूमावप्सु तथाग्नौ च दिवि सूर्य्ये च देवताः । नित्यमन्ने हिरण्ये च गोषु च ब्राह्मणेषु च ॥ अप्सु देवा मनुष्याणान्दिवि देवा मनीषिणाम् । काष्ठलोष्टेषु मूर्खाणां युक्तस्यात्मनि देवताः ॥" दिवि आकाशे देवताः सन्तीति शेषः । एषु स्थानेषु देवताः पूज्या इत्यर्थः । अन्यथा व्यर्थता स्यात् । अत एव पूजाप्रकरणे इदं वचनंलिखितम् । तत्र भूमौ जले आकाशे च भावेन देवतामारोप्य गन्धादिना पूजा कार्य्या । अग्नौ होमरूपापि सूर्य्यमण्डले ध्यानेनेति बोध्यम् । अन्नादीनान्तु न देवतान्तराधारत्वम् आचारविरोधात् । किन्तुतेषाम्पूज्यत्वार्थमेव देवतान्तराधारत्वमभिहितम् । तथा

चमनुः—" पूजयेदशनन्नित्यम्॥" इति । नारदोप्याह—"लोकेस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः । हिरण्यं सर्प्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टमः ॥ एतानि सततम्पश्येन्नमस्येदर्च्चयेच्च यः । प्रदक्षिणानि कुर्वीत तथास्यायुर्न हीयते ॥" इति तस्माद्भूम्यादीनान्देवतांतराधारत्वमन्नादीनाम्पूज्यत्वमेवेति स्थितम् । "युक्तस्यात्मनि"इति योगिनाम्बाह्योपचाराभावादन्तर्य्यजनकर्त्तव्यतापरम् । अयञ्च सामान्येनाधारविधिः शिवपूजायामप्यविरूद्धः । अत एव "आकाशं लिङ्गमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका। आलयः सर्वभूतानां लयनाल्लिङ्गमुच्यते ॥" इति लिङ्गत्वेनाकाशस्तुतिरपि गृहस्थस्य जले शिवपूजा निषिद्धेति तदागमविदः । गौडास्तु—विष्णुः " आप आयतनं यस्मात्तस्मात्तासु सदा हरिः ॥" अत एव बौधायनः—" प्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनवर्ज्जम् " इति शातातपोपि—" अप्सु देवा मनुष्याणान्दिवि देवा मनीषिणाम् । काष्ठलोष्टेषु मूर्खाणां युक्तस्यात्मनि देवताः ॥" इति आत्मनीति योगिनो बाह्योपचारनिरासेन कर्तव्यतापरमित्याहुः । दाक्षिणात्यास्तु भागवते—" शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता ॥ " तत्रैव कालकौमुद्यां स्कान्दे—" अक्षादल्पपरीमाणन्न लिङ्गं कुत्रचिन्नरः । कुर्वीताङ्गुष्ठतो ह्रस्वन्न कदाचित्समाचरेत् ॥ "

“ अक्षोशीतिर्गुञ्जाः गुञ्जापञ्चाद्यमाषकाः ते षोडशाक्षः कर्षोंस्त्री ॥ ” इत्यमरकोशात् । प्रयोगपारिजाते—“नवाष्टसप्ताङ्गुलिकं लिङ्गं श्रेष्ठमिहोच्यते । षट्पञ्चकचतुर्म्मानं मध्यमं त्रिविधं स्मृतम्॥”त्रिद्व्येकाङ्गुलिमानंयत् त्रिविधन्तत्कनीयसम् । एवन्नवविधम्प्रोक्तञ्चरलिङ्गं यथाक्रमम् ॥” इति विष्णुधर्मोत्तरे—“नार्च्या गृहेशमजामूर्तिश्चतुरङ्गुलतोधिका । नवितस्त्यधिका धातुसंभवा श्रेय इच्छता ॥ ” इति चाहुः । तथा चायम्प्रकरणार्थः—प्रतिमायां सर्वदेवतापूजा प्रशस्ता । ध्यानाद्यविदुषान्तत्रैव सा प्रशस्ता । सा च प्रतिमाङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिपर्यन्तप्रमाणा । सप्ताङ्गुलां समारभ्य द्वादशाङ्गुलिपर्यन्तप्रमाणा वा गृहे धार्या । प्रासादे चाधिकापि । सापि पुनः सुवर्णमयी रजतमयी ताम्रमयी रत्नमयी शैलमयी देवदारुमयी सुवर्णरजतताम्रसमूहमयी पित्तलमयी कांस्यताम्रोभयमयी यज्ञियदारुमयी वा कार्य्या । चतुर्भुजा देवी प्रतिमा गृहे ऊर्ध्वस्थितैव । अष्टभुजा तूपविष्टैव गृहे कार्य्या ऊर्ध्वदृष्टिरधोदृष्टिस्तिर्यग्दृष्टिर्व्यङ्गा मानोन्मानहीना च प्रतिमा सर्वथा निषिद्धा शैलजा सजटा च गृहे निषिद्धा । एवम्भूमौ जले आकाशे च भावेन देवतामारोप्य गन्धादिना पूजा कार्य्या । अग्नौ होमरूपापि । सूर्य्यमण्डले ध्यानेनेत्यवगंतव्यं गृहस्थस्य तु जले शिवपूजा निषिद्धा । अत्र गौ

डैस्तु–प्रतिष्ठितप्रतिमाभूमिजलाग्निष्वावाहनंविनैव पूजाकार्य्येत्युक्तम् । दाक्षिणात्यैस्तु–"शैली दारुमयी लौही लेख्या लेप्याचसैकती । मनोमयी मणिमयी" इत्यष्टधा प्रतिमामुक्त्वा लिङ्गन्त्वक्षपरिमाणतो न्यूनपरिमाणकन्न कार्यम् । अक्षोशीतिर्गुञ्जाः । आरोहे नवाष्टसप्ताङ्गुलिपरिमितं श्रेष्ठम् । षट्पञ्चचतुरङ्गुलिपरिमितम्मध्यमम् । त्रिद्व्येकाङ्गुलिपरिमितमधमं ज्ञेयम् । प्रतिमा तु गृहे चतुरङ्गुलितोधिका न कार्या धातुमयी वितस्त्यधिका न कार्य्येत्युक्तमिति॥ इति पूजापङ्कजभास्करे पूजाधारविचारो नाम पञ्चमः प्रकाशः ॥ ५ ॥

अथ देवपूजायाङ्करणमन्त्रविचारः । "ब्रह्माणं शङ्करं सूर्य्यन्तथैव मधुसूदनम् । अन्यांश्चाभिमतान्देवान्भक्त्या चाक्रोधनोत्वरः । स्वैर्म्मन्त्रैरर्च्चयेन्नित्यम्पत्रैः पुष्पैस्तथाम्बुभिः॥" इति कूर्म्मपुराणवचनात्, " तल्लिङ्गैः पूजयेन्मन्त्रैः सर्वदेवान्समाहितः । " इत्यग्निपुराणवचनाच्च ब्राह्मणादिवर्णत्रयेण तत्तद्देवताकवेदमन्त्रेण तत्तद्देवतापूजा विधेया विष्णुपूजा तु विष्णुसंहितास्थविष्णुकल्पेन पुरुषसूक्तेन च विधेया वेदमन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैस्तु पञ्चरात्रोदितकल्पैः पूजा विधेया । " अभावे वेदमन्त्राणाम्पञ्चरात्रोदितो विधिः । स्त्रीशूद्रयोर्न तच्छ्रोत्रपदवीमपि यास्यति ॥" इति विष्णुपुराणात् । तत्र च य

स्य यस्मिन्कल्पे दीक्षा तेन स कल्प आदरणीयः । दीक्षामन्त्रविहीनैस्त्रैवर्णिकैस्तत्तन्मन्त्रं विना प्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोन्ततत्तद्देवतानाम्नापि कृतापूजा महाफला । नत्वदीक्षितस्य पूजायामनधिकारः प्रमाणाभावात्, दीक्षामन्त्रविहीनेनापीत्याद्यभिधानाच्च । सर्वानुपचारानुक्त्वा भविष्यपुराणे—“अयं विनैवमन्त्रेण पुण्यराशिः प्रकीर्त्तितः। स्यादयम्मन्त्रयुक्तश्चेत्पुण्यंशतगुणोत्तरम् ॥” इत्युक्तेश्च । स्त्रीशूद्रैस्तु प्रणवस्थाने नमःशब्दएव पठनीयः। स्मृतिकौमुद्यान्देवनाथठक्कुरास्तु-स्त्रीशूद्रैरपि पञ्चरात्रोदितविधिरुपादेयः ‘स्त्रीशूद्रयोर्न तच्छ्रोत्रपदवीमपि यास्यति’ इतिवचनस्थतच्छब्देनवेदमन्त्रस्यैव परामर्शादित्याहुः । एवञ्च पञ्चरात्राप्रामाण्याभिधानमनवबोधात् महाभारतादौ प्रशंसितत्वात् । न च पञ्चरात्राप्रामाण्यबोधकभट्टवार्त्तिकवेदान्तिनयादिविरोधः स्यादितिवाच्यं तस्य वसिष्ठाद्युक्तपञ्चरात्रभिन्नवेदविरोधिमोक्षोपायप्रदर्शकशाण्डिल्याद्युक्तपञ्चरात्रपरत्वादितिबोध्यम्। तदयम्प्रकरणार्थः—वेदमन्त्राभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैः तत्तद्देवताकवेदमन्त्रैस्तत्तद्देवतापूजा विधेया विष्णुपूजा तु वेदमन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैः पञ्चरात्रोदितेन विधिना विधेया तत्रापि यस्य यस्मिन्कल्पे दीक्षा तेन स कल्प आदरणीयः दीक्षामन्त्रविहीनैस्त्रैवर्णिकैस्तु प्रणवादिनमोन्तचतुर्थ्यन्ततत्तद्देवतानाम्ना पूजा विधेया । स्त्रीशूद्रैस्तु प्रणवस्थाने

नमःशब्दएवोच्चारणीय इति ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे पूजामन्त्रविचारो नाम षष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अथोपचारपात्राणि । तानि च दारुमृत्तिकापद्मपत्रपलाशपत्रताम्ररूप्यसुवर्णमयानि अर्घस्नाननैवेद्यबलिधूपादिकार्य्ये उत्तरोत्तरम्प्रशस्तानि इतिच्छन्दोगाह्निके श्रीदत्तोपाध्यायाः । यद्यपि “दारवेण तु पात्रेण दानादर्घस्य यत्फलम् । तस्माच्छतगुणम्प्रोक्तम्मृत्पात्रेण नराधिप ॥ ताम्रजेनार्घपात्रेण पुण्यन्दशगुणं स्मृतम्। पलाशपद्मपत्राभ्यान्ताम्रपात्रसमम्भवेत्॥ रौप्येण चार्घपात्रेण लक्षांशैरधिकम्भवेत् सुवर्णपात्रविन्यस्तमर्घ्यङ्कोटिगुणम्भवेत् ॥ ” इत्यर्घप्रकरणस्थे स्मृतिसारधृतवचनेऽर्घपदमस्ति । तथापि स्नाननैवेद्यादेरपिउपलक्षकन्तत् । अन्यथा स्नाननैवेद्यादिदाने पात्रानध्यवसायापत्तिः स्यादिति तदाशयः । विष्णोः स्नानीयदाने तु शङ्खः प्रशस्तः“ शङ्खस्थितेन तोयेन यः स्नापयति केशवम् । कपिलानां सहस्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात्॥” इति शङ्खमाहात्म्ये विष्णुधर्म्मोत्तरेभिधानात् । शिवे तु शंखो निषिद्धः “नशिवंशंखवारिणा” इति वचनात् । दक्षिणामूर्त्तिशिवपूजायान्तु शंखमनुजानन्ति वृद्धाः । संहितायां विधानादिति शूलपाणिः । गौडास्तु–“न दद्याद्भास्करायार्घं शंखतोयैर्विचक्षणः” इति कालिकापुराणात्सूर्य्येपि शंखन्निषेधयन्ति स्नाने तु सौवर्णराजतकुम्भाभावे ताम्रकु

म्भः प्रशस्तस्तदभावेमृत्कुम्भः । देवतान्तराणामपि स्नाने कुम्भरूपाणि पात्राणि प्रशस्तानि । "मृत्कुम्भात्ताम्रजैः कुम्भैः स्नानं शतगुणोत्तरम् । रौप्यैर्ल्लक्षोत्तरम्प्रोक्तं हैमैः कोटिगुणोत्तरम् ॥" इति भविष्यपुराणात् । विष्णोर्नैवेद्यदाने तु सुवर्णपात्रादपि ताम्रपात्रमधिकफलकमिति छन्दोगाह्निकम् । भग्नन्तु पात्रं सर्वत्र निषिद्धम् । ताम्रसुवर्णरूप्याश्ममुक्तास्फटिकशङ्खशुक्तिपात्राणि भग्नान्यपि प्रशस्तानि तानि च पुण्डरीकाकृतीनि नीलोत्पलाभानि रत्नादिविरचितानि काञ्चीघनयुतानि नानाविचित्ररूपाणि यथाशोभं यथालाभङ्कल्पनीयानि तेषु चारोहपरिणाहाभ्यां षट्त्रिंशदङ्गुलिपरिमितान्युत्तमानि चतुर्विंशत्यङ्गुलिपरिमितानि मध्यमानि द्वादशाङ्गुलिपरिमितान्यधमानि वस्वङ्गुलिपरिमितन्यूनानि तु नैव कार्य्याणि । "षट्त्रिंशदंगुलम्पात्रमुत्तमम्पारिकीर्त्तितम् । मध्यमन्तु त्रिभागोनङ्कनिष्ठन्द्वादशांगुलिम् ॥ वस्वंगुलिविहीनन्तु न पात्रंकारयेत्क्कचित् । नानाविचित्ररूपाणि पुण्डरीकाकृतीनि च ॥ शंखनीलोत्पलाभानि पात्राणि परिकल्पयेत । रत्नादिखचितान्येव काञ्चीघनयुतानि च । यथाशोभं यथालाभम्पात्राणि परिकल्पयेत् ॥" इति देवीपुराणात् । त्रिभागोनम् तृतीयभागहीनं चतुर्व्विंशत्यंगुलमित्यर्थः । शंखे तु परिमाणनि

यमो नास्तीति शूलपाणिः । तदयंसमुदायार्थः—अर्घस्नाननैवेद्यबलिधूपादिकार्य्ये दारुमृत्तिकापद्मपत्रपलाशपत्रताम्ररूप्यसुवर्णमयानि पात्राणि उत्तरोत्तरम्प्रशस्तानि विष्णोः स्नानीयदाने शङ्खः प्रशस्तः नैवेद्ये तु सुवर्णपात्रादपि ताम्रपात्रमधिकफलं स्नपने तु मृत्तिकाताम्ररजतसुवर्णकुम्भा उत्तरोत्तरम्प्रशस्ताः शिवस्यार्घादौ शंखो निषिद्धः । गौडमते सूर्यार्घेपि शंखो निषिद्धः । ताम्रसुवर्णरूप्याश्ममुक्तास्फटिकशंखशुक्तिपात्रातिरिक्तानि भग्नपात्राणि निषिद्धानि तानि च पुण्डरीकाकृतीनि नीलोत्पलाभानि रत्नादिखचितानि काञ्चीघनयुतानि नानाविचित्ररूपाणि यथाशोभं यथालाभङ्कल्पनीयानि तानिचारोहपरिणाहाभ्यांषट्त्रिंशदंगुलिपरिमितान्युत्तमानि चतुर्विंशत्यंगुलिपरिमितानि मध्यमानि द्वादशांगुलिमितान्यधमानि अष्टांगुलन्यूनानि तु न कार्य्याणि शंखे तु परिमाण नियमाभाव एवेति ॥ इति पूजापंकजभास्करे उपचारपात्रविचारो नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

**अथोपचारविचारः** तत्र हारीतः—“ सपर्य्या विविधा प्रोक्ता तासामेकां समाश्रयेत् । गन्धादिका निवेद्यान्ता पूजा पञ्चोपचारिका ॥ ” इति कालिकापुराणम् । “ गन्धपुष्पे तथा धूपो दीपो नैवेद्यमेव च । ” पितामहोप्याह—गन्धादिकान्निवेद्यान्ताम्परिचर्य्याम्प्रकल्पयेत् । इतीयमेका

अपरा दशोपचारा--“ अर्घपाद्याचमनीयमधुपर्क्काचमनानि च । गन्धादिपञ्चकञ्चेति उपचारा दशोदिताः ॥”इति अत्र पाद्यम्प्रथममित्यन्ये । अत्र मधुपर्क्कदानात्पूर्वं स्नानीयन्देयमिति गौडाः । तृतीया षोडशोपचारा–“आसनं स्वागतञ्चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम् । मधुपर्क्काचमनस्नानवसनाभरणानि च । गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वन्दनन्तथा ॥ ” इति चतुर्थी अष्टादशोपचारा–“आसनावाहने चार्घ्यम्पाद्यमाचमनन्तथा । स्नानंवस्त्रोपवीतञ्च भूषणानि च सर्व्वतः ॥ गन्धम्पुष्पन्तथा धूपं दीपमन्नेन तर्प्पणम् । माल्यानुलेपने चैव नमस्कारविसर्ज्जने॥” इति पञ्चमी षट्त्रिंशोपचारा–“आसनाभ्यञ्जने तद्वदुद्वर्त्तननिरुक्षणे । सम्मार्ज्जनं सर्प्पिरादिस्नपनावाहने ततः ॥ पाद्यार्घाचमनीयानि स्नानीयमधुपर्ककौ । पुनराचमनीयञ्च वस्त्रयज्ञोपवीतकम् ॥ अलंकारो गन्धपुष्पे धूपदीपौ तथैव च । ताम्बूलानि च नैवेद्यम्पुष्पमाला तथैव च ॥ अनुलेपनञ्च शय्या च चामरव्यजनन्तथा । आदर्शदर्शनञ्चैव नमस्कारोथ नर्त्तनम् ॥ गीतवाद्ये च दानानि स्तुतिहोमप्रदक्षिणम् । दन्तकाष्ठप्रदानञ्च ततो देवविसर्ज्जनम् । उपचारा इमे ज्ञेयाः षट्त्रिंशत्सुरपूजने ॥” इति एतेषु पञ्च सूपचारकल्पेषु उत्तरोत्तराधिकफलेषु आद्ययोर्नैवेद्यं शेषे देयम् । ‘निवेद्यान्ता’ इत्यभिधानात् । ताम्बूलयज्ञोपवीता

लङ्कारादियत्किञ्चिद्दानमत्र कल्पयोर्नैवेद्यात्प्रागेव “वस्त्रोत्तरङ्गन्धपूर्व्वम्” इति कथनात् । “श्राद्धे वस्त्रात्प्रागेव” इति स्मृतिदीपिका । छन्दोगाह्निके तु स्नापनोत्तरंवस्त्रालंकारयज्ञोपवीतादीनि दत्त्वा गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानि दद्यादित्याहुः श्रीदत्तोपाध्यायाः । एते चोपचारकल्पाः काम्यपूजायां यथाविभवमादेयाः । तत्रापि प्रथमः कल्पो नियतः । सोपि पाद्यादिस्नानीयान्तन्दत्त्वैव विधेय इति सामान्यपूजाप्रयोगे श्रीदत्तोपाध्यायाः। नित्यायान्तु पूजायां सोपि न नियतः किन्तु पञ्चोपचारेष्वपि यावदेव लभ्यन्तावतैव सा निर्वाह्या नित्यत्वात् । गौडास्तु स्मृतिः—“ गन्धम्पुष्पन्तथा धूपन्दीपन्नैवेद्यपञ्चमम् । प्रतिमादिषु पूजायामवश्यं कल्पयेद्बुधः ॥ जले तु पुष्पमात्रेण जलैर्वा प्रतिपूजयेत् ।” तुरप्यर्थे भिन्नक्रमः पुष्पमात्रेणापीत्यर्थः इत्यधिकमाहुः । अत्र च षोडशोपचारपंचोपचारपूजयोः प्रसिद्धत्वात्तदीयद्रव्याणि विविच्यन्ते, तत्रासनं—कुशसूत्रादिनिर्मितपुष्पौघरचितंयज्ञियदारुमयञ्चन्दनोद्भवंवाल्कलं कोशजंफालंफलनिर्मितं रोमजंकंबलं रङ्कुचर्ममयं कुशमयम् । आयसकांस्यसीसकभिन्नतैजसद्रव्यमयं शिलामयं रत्नमयं मणिमयंवायथालाभङ्ग्राह्यम्।कालिकापुराणेसप्तषष्टितमेध्याये—‘पौष्पम्पुष्पौघरचितङ्कुशसूत्रादिसंयुतम् । अतिप्रीतिकरन्देव्या ममाप्यन्यस्य भैरव ।’यज्ञदारुसमुद्भूतमासनम्मसृणं शुभम्।

नोच्छ्रायन्नातिविस्तीर्णमासनंविनियोजयेत्॥वाल्कलङ्कौशजम्फालंवाह्यमेतत्त्रयं स्मृतम्। रोमजङ्कम्बलञ्चैव तदनेन चतुष्टयम् ॥ वास्त्रेषु कंबलं श्रेष्ठमासनं देवतुष्टये । राङ्कवञ्चार्म्मणं श्रेष्ठं दारवञ्चन्दनोद्भवम् ॥ यच्चासनं कुशमयन्तदासनमनुत्तमम् । सर्व्वेषां तैजसानाञ्च आसनञ्ज्येष्ठमुच्यते।आयसं वर्ज्जयित्वा तु कांस्यं सीसकमेव च । शिलामयम्मणिमयन्तथारत्नमयम्मतम्।आसनन्देवताभ्यस्तु भुक्त्यै मुक्त्यै समुत्सृजेत् ।"इत्यादिनोक्तत्वात् । स्वागतन्तु 'स्वागतन्ते'इति स्वागतमस्तु इति वा शब्दोच्चारणरूपम्। पाद्यं पादप्रक्षालनार्थजलम्। अर्घ्यम् रक्तचन्दनकुङ्कुमान्यतरद्बिल्वपत्राक्षतपुष्पदधिदूर्वातिलकुशयुतजलम्। "रक्तबिल्वाक्षतैः पुष्पैर्दधिदूर्व्वाकुशैस्तिलैः । सामान्यः सर्व्वदेवानामर्घोयम्परिकीर्तितः । अभावे दधिदूर्वादेर्म्मानसंवाप्रकल्पयेत् ॥" इत्यर्घप्रकरणे देवीपुराणात् । रक्तं कुङ्कुमं रक्तचन्दनं वा। इदन्तु सति सम्भवे असति तु जलन्नियतमेवेति चिन्तामणिः । अत्र पुष्पतिलयोर्बहुत्वं विवक्षितम्।अत्र गौडनिबन्धे–इदमर्घ्यमिति छन्दोगानाम् एषोर्घ इत्यन्येषामित्याह । आचमनीयं शुद्धजलम् । आगमे तु गंधपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदूर्व्वाअर्घद्रव्याणि । दूर्वाब्जविष्णुक्रांताः पाद्यद्रव्याणि । जातीलवङ्गकङ्कोलान्याचमनीयद्रव्याणि । शुद्धाभिरद्भिः पुनराचमनीयमित्युक्तमित्याचारचिन्तामणिः

मधुपर्क्कः दधिघृतजलमधुसितासमूहः कांस्यपात्रस्थः कांस्यपात्रेणपिहितः “दधिसर्प्पिर्ज्जलङ्क्षौद्रं सितैताभिश्च पञ्चभिः । प्रोच्यते मधुपर्क्कस्तु सर्वदेवौघतुष्टये ॥ जलं तु सर्व्वतः स्वल्पं सितादधिघृतं समम् । सर्व्वेषामधिकं क्षौद्रम्मधुपर्क्के प्रयोजयेत् ॥” इति कालिकापुराणात् । गौडनिबन्धे पाद्यादि दानस्थानमाह–“श्रीमूर्तौ तु शिरस्यर्घन्दद्यात्पाद्यञ्च पादयोः । मुखे चाचमनीयन्त्रिर्म्मधुपर्क्कञ्च तत्र हि ॥” इति । स्नानन्तच्च “स्नानीयद्रव्यैर्युगपत् सकलाङ्गसंयोगः” इति स्मृतिकौमुदी । तानि च घृततैलदधिक्षीरेक्षुरसजलमधुप्रभृतीनि । भविष्यपुराणे–“घृततैलदधिक्षीरैरिक्षोश्चैव रसेन तु । नीरेण मधुना स्नानन्तस्य स्नानमिहोदितम् ।” इत्युक्तत्वात् तत्र स्नाने घृतादि अष्टोत्तरशतपलपरिमितं महास्नाने सहस्रद्वयपलपरिमितन्देयम् “देवानाम्प्रतिमा यत्र घृताभ्यङ्गक्षमाभवेत् । पलानि तस्यै देयानि श्रद्धया पञ्चविंशतिः ॥ अष्टोत्तरपलशतं स्नाने देयञ्च सर्वदा । द्वे सहस्रे पलानाञ्च महास्नाने च सङ्ख्यया । दातव्यं येन सर्व्वासु दिक्षु निर्य्याति तद्घृतम् ॥” इति ब्रह्मपुराणेभिधानात् । अत्र घृतप्रतिमे उपलक्षणे दुग्धादावपि लिङ्गेपि चास्या एव व्यवस्थायाः सत्त्वात् । स्नानं शतपलेनैवेति लिङ्गपुराणन्तु लिङ्गस्नपनविषयम्बोद्धव्यम् “पञ्चविंशपलं लिङ्गे अभ्यङ्गङ्कारयेदथ ।

शिवस्य सर्पिषा स्नानम्प्रोक्तम्पलशतेन तु ॥ तावता मधुना चैव दध्ना चैव ततः परम्। तावतैव हि क्षीरेण पञ्चगव्येन वा पुनः ॥ ” इति कालिकापुराणेभिधानात् । तत्र घृताभ्यङ्गघृतस्नानानन्तरं यवगोधूमचूर्णैर्ज्जटामांस्यादिगन्धद्रव्यचूर्णयुक्तवटपिप्पलवल्कलचूर्णादिभिर्वा उद्वर्त्तनङ्कृत्वा सुखोष्णजलेन क्षालनङ्कर्त्तव्यं दुग्धादिस्नानानन्तरमपि जलक्षालनं कर्तव्यम्। “घृताभ्यङ्गे घृतस्नाने लिङ्गं यत्नाद्विरुक्षयेत् । यवगोधूमजैश्चूर्णैः कषायैर्ग्गन्धयोजितैः। सुखोष्णेनाम्बुना वापि स्नापयेत्तदनंतरम् ॥ ” इति भविष्यपुराणीयात् । लिङ्गमित्युपलक्षणं प्रतिमादेरपि । नरसिंहपुराणे—“यवगोधूमजैश्चूर्णैरुद्वर्त्योष्णेन वारिणा । प्रक्षाल्यदेवदेवेशं वारुणंलोकमाप्नुयात्॥” इत्यभिधानात् । ततो ब्रह्मणो विष्णोश्च स्नानघृतादि ब्राह्मणेभ्यो दातव्यं शिवस्याग्नौ अन्यदेवानान्दीनेभ्यो दातव्यम् “ब्रह्माङ्गलग्नं विप्रेभ्यो वैष्णवञ्च प्रदीयते। रुद्राङ्गलग्नमग्नौ च दहेत्सर्व्वञ्च तत्क्षणात् । शिष्टेभ्यस्त्वथदेवेभ्यो यत्तद्दीनेषु निःक्षिपेत् ॥ ” इति ब्रह्मपुराणात् । देवेभ्य इत्यत्र देव्यश्च देवाश्चेति पुमान् स्त्रियेत्येकशेषाद्देवीभ्य इत्यपि ज्ञेयम्—वसनम् मृदु विकेशन्नवन्दृढं सूक्ष्मम्पारिधानशयनासनादिभिर्म्मनुष्यासम्पृक्तं नीलरक्तभिन्नं विष्णवे । गौडनिबन्धे—“ नीलीरक्तं तथाजीर्णवस्त्रमन्यधृतन्तथा । देवदेवाय

यो दद्यात्स तु पापैः प्रलिप्यते ॥ ” अत्रापवादः ‘आविके पट्टवस्त्रे च नीलीरागो न दुष्यति ।’ इति । आभरणम्–मणिस्वर्णादिनिर्मितम् । षोडशोपचारान्तरे उपवीतम्–पट्टसूत्रादिनिर्म्मितं शुक्लम्पीतं वा दातव्यमिति छन्दोगाह्निकम् । गन्धः–चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमान्यतमपङ्कम् । तिलकरूपम् । तच्च गन्ध पदेनोल्लिख्यैव देयमित्यग्रे स्फुटीभविष्यति । सर्वत्रानुलेपनानन्तरन्तालवृन्तवीजनम्पुण्यप्रदमिति छन्दोगाह्निकम् । अथ पुष्पाणि–अरण्यसम्भवानि गिरिसम्भवानि स्ववाटिकासम्भवानि स्वामिना वाटिकारक्षकेण वा स्वेच्छया दत्तपरवाटिकासम्भवानि च नित्यपूजायाञ्चौर्य्येणाप्यानीतानि च निषिद्धवर्ज्जं सुरभीणि निश्छिद्राणि प्रोक्षितानि सामान्यतो विहितानि । यत्तु “परारोपितवृक्षेभ्यः पुष्पाण्याहृत्य योर्च्चयेत् । अविज्ञाप्य च तस्यैव तस्य तन्निष्फलं भवेत् ॥ ” तद्द्विजेतरपरम् ‘ द्विजस्तृणैधःपुष्पाणि सर्वतः स्ववदाहरेत् । ” इति याज्ञवल्क्यात् ‘ देवतार्थन्तु कुसुममस्तेयम्मनुरब्रवीत् ’ इतिवचनाच्च “ गोग्न्यर्थन्तृणमेधांसि यज्ञार्थे वीरुद्वनस्पतीनाम्पुष्पाणि स्ववदाददीत फलानि च परिवृंहितानाम् ” इति गौतमवचनाच्च विशेषो ज्ञेय इत्याहुः ॥ विशेषतस्तुऽजातीशमीकुब्जककुशकरवीरनागपुन्नागमल्लिकाअशोकचम्पकरक्तोत्पलनीलोत्पलबकुलपद्मपुष्पाणि सर्वदे

वानां विहितानि । स्वयमुत्पादितपुष्पं मुक्तपुष्पाद्ग्रथितपुष्पञ्चाधिकफलम् । ग्रथितम्मालारूपेण गुच्छरूपेण वा । उग्रगन्धीनि विशेषविहितभिन्ननिर्ग्गन्धीनि सकेशसकीटकीटविद्धस्वयम्पतितस्वयमविकसितोपहतशीर्णशुष्काधोवस्त्रधृतमस्तकोपरिधृतवामहस्तधृतशूद्रानीताऽविकसितानि कृताहःस्नानेन पूजाकर्त्रा स्वयन्त्रोटितानि याचितानि सच्छिद्राणि च निषिद्धानि । अशुच्युत्पादितानि च निषिद्धानीति चिन्तामणिः । कलिकापि सर्वेषान्निषिद्धा,मुकुलैर्न्नार्च्चयेद्देवमपक्वान्नन्ननिवेदयेत्’इति भविष्यपुराणात् । अभिवादनकालेभिवाद्याभिवादककरस्थितानि निषिद्धानीति केचित् । अग्रभागत्यागात्प्रोक्षणाच्च तानि शुद्धानीत्यपरे । क्रयक्रीतन्तु निष्फलमिति तु प्रवादः महाजनैरनादृतत्वादिति । तुलस्यां बिल्वपत्रे जलपुष्पेषु च पर्य्युषितत्वदोषो नेति तु प्रवाद इति च श्रीदत्तादयः । पर्य्युषितेष्वपि मालाकारगृहस्थितेषु न दोष इति शैवागमः । यावच्च पुष्पन्निर्म्माल्यतान्न याति तावदेव देवताङ्गेभ्य उत्तारणीयम् । निर्म्माल्यता च जात्या प्रहरेण करवीस्याहोरात्रेण इतरपुष्पाणाङ्गन्धापगमे भवति “प्रहरं तिष्ठते जाती करवीर्महर्न्निशम् ।” इत्यादिश्रवणात् । शारदायाम्—“मलिनम्भूमिसंस्पृष्टङ्कृमिकेशादिदूषितम् । अङ्गस्पृष्टं समाघ्रातन्त्यजेत्पर्य्युषितम्बुधः ॥” पद्मपुराणे—“भूमि

स्पृष्टन्न गृह्णीयाच्छेफालीवकुलम्विना ॥" गौडास्तु योगिनीतन्त्रे–"बिल्वपत्रञ्च माध्यञ्च तमालामलकीदलम् । कह्लारन्तुलसीं चैव पद्मञ्च मुनिपुष्पकम् । एतत्पर्य्युषितन्न स्याद्यच्चान्यत्कलिकात्मकम् ॥" भविष्ये पद्मानि सितरक्तानि कुसुमान्युत्पलानि च । एषाम्पर्य्युषिताशङ्का कार्य्या पञ्चदिनोर्ध्वतः ॥ इति लिखन्ति । निषिद्धान्यपि मालया देयानि देवार्प्पितवाटिकासम्भवानि वृक्षमुत्पाट्य वृक्षशाखाम्भङ्क्त्वा चावचितानि च निषिद्धानीति ज्ञेयम् । पत्राणि चारण्यसम्भवानि कीटादूषितानि निश्छिद्राणि निष्केशानि अपर्य्युषितानि अनुपहतानि सर्वेषान्देवानां विहितानि बिल्वपत्राणि च सर्व्वेषां विहितानि पुष्पेषु ये ये निषेधा उक्तास्ते पत्रेष्वप्यनुसन्धेयाः । विहितपुष्पपत्राभावे विहितनिषिद्धानि तदभावे निषिद्धवर्ज्जमन्यान्यपि गन्धवर्णयुतानि तदभावे विहितपुष्पवृक्षपत्राणि देयानि हरिभक्तिदीपिकायान्तु–पुष्पाद्यभावे जलेनापि नित्यपूजा निर्वाह्येति विशेष उक्तः ।अत्र श्रीदत्तोपाध्यायाः–"पुष्पैररण्यसम्भूतैः पत्रैर्व्वा गिरिसम्भवैः ।" इति वाक्ये पूजास्वरूपसिद्धौ विकल्पश्रवणेपि तत्तद्वचनकथिततत्तत्फलार्थितया समुच्चयोपि । पुष्पाभावे पत्रविधेर्नेति केचित्तन्न तत्र तत्र पत्रपदस्य पुष्पतुल्यतया विहितपत्रेतरपत्रपरत्वात् । एवञ्च मुहुर्मुहुः पुष्पदानन्नानापुष्पजातिसमुच्चयो नानापत्रजातिसमु

च्चयश्च समर्थितः फलविशेषार्थत्वात् । बहुवचनञ्च न कपिञ्जलन्यायात् त्रित्वपरं प्रतिमाच्छादनादेर्व्विहितत्वात् । त्रित्वपरत्वेप्यधिकफलार्थितयाधिकदानमपि । तस्मात्पूजास्वरूपसिद्धिरेकपुष्पजात्यापि एकपत्रजात्यापि अनावृत्त्यापि भवतीति फलार्थितया समुच्चयोपि पुष्पैरेतैर्य्यथालाभम् एतेषाञ्च यथालाभैः पत्रैश्चेत्याद्युक्तेर्व्वा समुच्चयः इत्युक्तवन्तः । पुष्पाद्यर्प्पणे गौडाः ज्ञानमालायाम्–"पुष्पंवा यदि वा पत्रम्फलन्नेष्टमधोमुखम् पुष्पाञ्जलिविधिं हित्वा यथोत्पन्नन्तथार्प्पणम्॥" इति पठन्ति । धूपः सघृतगुग्गुलुः स च पुष्पमदत्त्वा न देयः "अदत्त्वा गन्धमाल्यानि यो मे धूपम्प्रयच्छति । मृतोसौ जायते भूमौ यातुधानो न संशयः ॥ इति वराहपुराणात् । माल्यपदमग्रथितपुष्पाणामप्युपलक्षणम् । धूपदीपनैवेद्यदाने गौडनिबन्धे कालिकापुराणम् "नैवेद्यन्दक्षिणे वामे पुरतो न च पृष्ठतः । दीपन्दक्षिणतो दद्यात्पुरतो न च वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे । निवेदयेत्पुरोभागे गन्धम्पुष्पञ्च भूषणम्॥प्रतिमादिषु यद्योग्यङ्गात्रे दातुञ्च तत्तनौ । दद्यादयोग्यम्पुरतो नैवेद्यम्भोजनादिकम् ॥ " इति तथा गन्धपुष्पधूपाश्च घ्रात्वा देवेभ्यो न देया कालिकापुराणे–"गन्धम्पुष्पञ्च धूपञ्च उपचारांस्तथापरान् । जिघ्रन्निवेद्य देवेभ्यो नरो नरकमाप्नु

यात्॥ " तथा भूम्यादौ संस्थाप्य धूपन्न दद्यात् " न भूमो वितरेद्धूपन्नासने न घटे तथा। यथातथाधारगतं कृत्वा तंविनिवेदयेत्॥" इति कालिकापुराणात्। दीपः स च "नेत्राह्लादकरः स्वर्च्चिः क्रूरतापविवर्ज्जितः। सुशिखः शब्दरहितो निर्द्धूमो नातिह्रस्वकः॥ लभ्यते यस्य तापस्तु दीपस्य चतुरङ्गुलात्। न स दीप इति ख्यातो व्योमवह्निस्तु स स्मृतः॥" इति कालिकापुराणोक्तलक्षणलक्षितः कार्य्यः सर्वदेवानान्दीपे घृतं शिवभिन्नदेवानान्तैलञ्च विहितं घृतन्तैलञ्च मिश्रीकृत्य दीपे न देयं "न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपे स्नेहघृतादिकान्। दत्त्वा मिश्रीकृतं स्नेहन्तामिस्रन्नरकं व्रजेत्॥" इति कालिकापुराणात्। वर्तिका तु तत्र शुद्धपट्टकौशेयकार्प्पाससूत्रनववस्त्रतद्दशाभवा कार्य्येति शूलपाणिः। न तु जीर्णमलिनोपयुक्तवस्त्रादिभवा " शाणंबादरकंवास्त्रञ्जीर्णम्मलिनमेव वा। उपयुक्तन्तु नो दद्याद्वर्त्तिकार्थङ्कदाचन॥" इतिकालिकापुराणादितिबोध्यम्। सूर्य्यदीपाधिकारे भविष्यपुराणे–तांश्च दत्त्वा न हिंसेत न च तैलविवर्ज्जितान्। कुर्व्वीत दीपहर्त्ता च मूषिकोन्धश्च जायते॥" इति वचनात्। "नैव निर्व्वापयेद्दीपन्देवार्थमुपकल्पितम। दीपहर्त्ता भवेदन्धः काणो निर्व्वापको भवेत्॥" इति कालिकापुराणाच्च देवाय कल्पितो दीपो न निर्व्वापणीयः। भूमौ दीपो न धार्य्यः " वृक्षे दीपः प्रदातव्यो न

तु भूमौ कदाचन । सर्व्वंसहा वसुमती सहते न त्विदं द्वयम् । अकार्य्यपादघातञ्च दीपतापन्तथैवच ॥” इति कालिकापुराणात् नैवेद्यानि तु भक्ष्यभोज्यकन्दमूलफलान्नपानकादीनि सर्व्वत्र विहितानि । फलन्तु अपक्वं क्वथितं यत्नपक्वं विद्धं कालापक्वञ्चन निवेदनीयम् “मुकुलैर्नार्च्चयेद्देवमपक्वन्न निवेदयेत् । फलङ्क्वथितविद्धञ्च कालापक्वमपि त्यजेत् ॥”इति देवीपुराणात् ।अन्यत्र“यत्नपक्वमपि त्यजेत्”इति दर्शनाच्च । क्वथितं जलमध्येग्निपक्वं तत्र जलमध्ये इत्यंशः क्वथितपदार्थे विवक्षितः यत्नपक्वमपित्यजेदित्यन्यत्र दर्शनात् । तत्र यत्नोऽग्निधूपरूपः सङ्ख्यापरिमाणनिर्णयनिबन्धे—“यत्नपक्वमपि ग्राह्यङ्कदलीफलमुत्तमम् ।” अत्र यत्नो धूमोपरिस्थापनगर्त्तादिनिःक्षेपवासकपत्राद्याच्छादनरूपः । उत्तमपदेन रसोत्कर्षाभिधानात् हेतुगर्भञ्च तद्विशेषणमिति । पनसलकुचादिकमपि तादृशंग्राह्यमित्यायाति । कालापक्वंसमुचितपाकसमयपक्वव्यतिरिक्तम् । विद्धं कण्टककृम्यादिना । व्यञ्जनस्याग्निपक्वतानियमात्तद्भिन्नतयाग्निपक्वस्य कालापक्वस्य वा निषेधो ज्ञेयः” तेन कदलीपनसपटोलादेर्व्यञ्जनरूपस्य न निषेधः । आम्रचूर्णतिन्तिड्यादेरपि व्यञ्जनोपकरणत्वादपक्वस्याग्निपक्वस्य च न निषेधः । मातृपूजायामकालपक्वमपि देयमिति छन्दोगाह्निकम् । सिद्धान्नन्तु वैश्वदेवानन्तरपूजापक्षे एव देयमित्येके । अकृतेपि

वैश्वदेवे वैश्वदेवार्थमग्रभागमुद्धृत्य शेषेणान्नेन नैवेद्यदानमविरुद्धम् । "अकृते वैश्वदेवे तु भिक्षौ च गृहमागते। वैश्वदेवार्थमुद्धृत्य भिक्षान्दत्त्वा विसर्ज्जयेत्" इति नरसिंहपुराणीयोद्धरणवदित्यपरे। न च वैश्वदेवं विना पक्वान्नस्यासंस्कृतत्वान्न नैवेद्यार्हत्वमिति वाच्यम् । "अहरहः स्वाहा कुर्य्यादाकाष्ठात" इति श्रुतेः। "सायम्प्रातर्वैश्वदेवःकर्त्तव्यो बलिकर्म्म च । अनश्नतापि सततमन्यथा किल्बिषी भवेत्" इति कात्यायनस्मृतेश्च । वैश्वदेवस्य पुरुषार्थत्वेन पाकसंस्कारकत्वाभावात् । न च पाकाग्रमुद्धृत्य जुहुयात्" इति प्रयोगदर्शकविष्णुसूत्रादुद्धरणोत्तरं होमस्यैव विधानात्तदा तेन नैवेद्यदानमयुक्तमितिवाच्यम् । विष्णुसूत्रस्यकठशाखीयत्वादन्यशाखीयानामुद्धरणस्यार्थलभ्यत्वात् । वस्तुतः क्त्वाश्रवणेन होमस्योद्धरणोत्तरकालिकत्वेपि अव्यवहिततदुत्तरकालिकत्वे मानाभावात्कठशाखीयैरपि उद्धृत्य सिद्धान्नन्निवेदनीयमेव भिक्षुभिक्षादानवदित्याह स्मृतिदीपिकाकारः । पाकासत्त्वे तु आमान्नफलादिभिरेव नैवेद्यदानङ्कार्य्यम् । किञ्च "वैश्वदेवनिषेधो यज्ञार्थन्निवर्त्तते" इति गोभिलदर्शनाद्विष्णवर्थकपाकान्तरेण सर्व्वेषान्नैवेद्यदानमविरुद्धमिति बोध्यम् । यज्ञो विष्णुः । शूद्रस्य च नैवेद्यंवैश्वदेवश्चामान्नेनैव। "आमं शूद्रस्य पक्वमुच्छिष्टमुच्यते" इति निषेधात् । मांसं शिवेतरेषु दातव्यं तच्च पक्वं दाक्षि

णात्यनिबन्धे–नैवेद्यादौपार्थक्याभावे यथांशत इति वदेत् सुवर्णमययज्ञोपवीतेप्येवमाचार इति विशेष उक्तः सर्वत्र नैवेद्यदानानन्तरमादर्शदर्शनम्पुण्यप्रदमिति श्रीदत्तः । एतच्च नैवेद्यं सूर्य्याय दत्तं मगेभ्यः शिवाय दत्तम्भस्माङ्गेभ्यःदुर्ग्गायै दत्तं स्त्रीभ्यो विष्णवे दत्तं :सात्त्वतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो वा दद्यात्। "विप्रेभ्यस्त्वथ तद्देयम्ब्रह्मणे यन्निवेदितम् । स्त्रीभ्योथ देयम्मातृभ्यो यत्किञ्चिद्विनिवेदितम् । भूतप्रेतपिशाचेभ्योयत्तद्दीनेषु निःक्षिपेत्" । एतद्वचनस्य स्नानीयदानप्रकरणोक्तत्वेपि विनिवेदितमित्युपसंहारात् नैवेद्यप्रतिपादनस्याप्यभिधायकत्वात् । वन्दनं स्तुतिः प्रणामश्च । स्मृतिदीपिकाकारास्तु–चन्दनमिति पठित्वा चन्दनं हस्ताद्यंगेषु लेपनं तदेव चाष्टादशोपचारेष्वनुलेपनपदार्थः । गन्धः सुरभिद्रव्येण तिलकरूपः स च गन्धपदेनोल्लिख्यैव देयः । अनुलेपनपदेन दानंविशेषादर्शनमूलकम् अतएवैष गन्धःशिवाय नमः इत्येव प्रयोगाल्लिँखन्ति शिष्टाः। गन्धानन्तरमक्षतदाने मानन्तु पारणाद्यर्थपूजायांगन्धाक्षतकरणकत्वदर्शनमिति वामदेवोपाध्याया आहुः । तदयम्प्रकरणार्थः पूजा विविधा–तत्र गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्येति पञ्चोपचारा एका । पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कांचमनीयगंधादिपञ्चकेति दशोपचारा द्वितीया । अत्र मधुपर्कदानात्पूर्व्वं स्नानीयन्देयमिति गौडाः ।

आसनस्वागतपाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणगंधादिपञ्चकवंदनेति षोडशोपचारा तृतीया । स्मृतिदीपिकायांतु–चंदनमिति पठित्वा चंदनं हस्ताद्यंगेषु लेपनङ्गन्धस्तु ललाटे तिलककरूप इत्याह । आसनावाहनार्घ्यपाद्याचमनस्नानवस्त्रोपवीतभूषणगन्धादिपञ्चकमाल्यानुलेपननमस्कारविसर्ज्जनेति अष्टादशोपचारा चतुर्थी । आसनाभ्यञ्जनोद्वर्त्तननिरुक्षणसंमार्ज्जनसर्पिरादिस्नानावाहनपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयमधुपर्कपुनराचमनीयवस्त्रयज्ञोपवीतालंकारगंधादिचतुष्टयताम्बूलनैवेद्यपुष्पमालानुलेपनशय्याचामरव्यजनादर्शदर्शननमस्कारनर्त्तनगीतवाद्यदानस्तुतिहोमप्रदक्षिणादंतकाष्ठदानदेवविसर्ज्जनेति षट्त्रिंशदुपचारा पञ्चमी । एते चोपचारा उत्तरोत्तराधिकफलाः । तत्राद्ययोर्नैवेद्यं शेषे देयमनयोः कल्पयोः फलदर्शनात्ताम्बूलयज्ञोपवीतालंकारादिदानन्नैवेद्यात्प्रागेव श्राद्धे वस्त्रात्प्रागेवेतिस्मृतिदीपिका । छन्दोगाह्निके तु–स्नपयित्वा यथालाभंवस्त्रालङ्कारादीनि यज्ञोपवीतादीनि च दत्त्वा गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनि दद्यादिति लेखात्गन्धात्पूर्व्वं स्नानोत्तरमेतेषां दानमायाति । एते कल्पाः काम्यपूजायांयथाविभवमादेयाः । तत्रापि प्रथमः कल्पोनियतः नित्यायान्तुपूजायां सोपि न नियतः किन्तु पञ्चसूपचोरेष्वपि यावदेव लभ्यन्तावतैव सानिर्व्वाह्या नित्यत्वात् । प्रतिमादिषु

पूजायांगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यान्यवश्यंदेयानि । जले तु पुष्पमात्रेण जलैर्व्वापि पूजा सिद्ध्यतीति गौडाः । अथषोडशोपचारद्रव्याणि तत्रासनं कुशसूत्रादिनिर्म्मितम्पुष्पौघरचितं यज्ञदारुमयं चंदनोद्भवं वाल्कलं कोशजं फलभवं रोमजङ्कम्बलं रङ्कुचर्म्ममयं कुशमयं आयसकांस्यसीसकभिन्नतैजसद्रव्यमयं शिलामयं रत्नमयं मणिमयञ्च देयम् । स्वागतन्तु स्वागतमस्तु स्वागतन्ते इत्यादिना कार्य्यम् पाद्यं पादप्रक्षालनार्थमुदकम् । अर्घ्यम् रक्तचंदनकुङ्कुमान्यतरत् बिल्वपत्राक्षतबहुपुष्पदधिदूर्व्वाबहुतिलकुशयुतजलम् । एषां मध्ये यदभावस्तस्य जले मनसा कल्पना कार्य्या । आचमनीयम् शुद्धजलम् । मधुपर्क्कः दधिघृतजलमधुसितासमूहः कांस्यपात्रस्थः तत्र जलं सर्व्वतः स्वल्पं सितादधिघृतं समं देयम्।स्नानङ्घृततैलदधिक्षीरेक्षुरसजलमधुप्रभृत्यन्यतमद्रव्यैरष्टोत्तरशतपलपारिमितैर्युगपत्सकलाङ्गसम्बन्धः । महास्नानन्तु सहस्रद्वयपलपारिमितैरुक्तद्रव्यैर्भवति । अत्र घृतस्नानानन्तरं यवगोधूमचूर्णैर्ज्जटामांस्यादिगन्धद्रव्यचूर्णयुक्तवटपिप्पलवल्कलचूर्णादिभिर्व्वा उद्वर्त्तनङ्कृत्वा सुखोष्णजलेन क्षालनङ्कर्त्तव्यम् । दुग्धादिस्नानानन्तरमपि जलक्षालनङ्कर्त्तव्यम् । ततो ब्रह्मणो विष्णोश्च स्नानघृतादि ब्राह्मणेभ्यो दातव्यम् शिवस्याग्नौ अन्यदेवानान्देवीनाञ्चदीनेभ्योदेयम् । वसनम् मृदुविके

शम् नवन्दृढम् सूक्ष्मम् परिधानशयनासनादिभिर्म्मनुष्यासम्पृक्तं नीलरक्तभिन्नम् । गौडमते पट्टवस्त्रं नीलं रक्तञ्च देयम् उपवीतं पट्टसूत्रादिनिर्म्मितं शुक्लम्पीतं वा दातव्यमिति छन्दोगाह्निकम् । गन्धः चन्दनागुरुकर्प्पूरकुङ्कुमान्यतमपङ्कन्तिलकरूपः स च एष गन्ध इत्युच्चार्य्य देयः सोऽपि देवतापुरोभाग एव न पृष्ठतः । गन्धदानानन्तरन्तालवृन्तैश्चामरैश्च वीजनमतिप्रशस्तम् । पुष्पाणि अरण्यसम्भवानि. गिरिसम्भवानि स्ववाटिकासम्भवानि स्वामिना वाटिकारक्षकेण वा स्वेच्छया दत्तपरवाटिकासम्भवान्यपि गौडमते परवाटिकासम्भवान्यपि स्ववद्द्विजैरादेयानीति । नित्यपूजायाञ्चौर्य्येणानीतान्यपि निषिद्धवर्ज्जम् सुरभीणि निश्छिद्राणि प्रोक्षितानि सामान्यतो विहितानि । विशेषतस्तुजातीशमी–कुब्जक–कुश–करवीर–नागपुन्नाग–मल्लिकाऽशोक–चम्पक–रक्तोत्पल–नीलोत्पल–बकुलपद्मपुष्पाणि सर्वदेवानां विहितानि स्वयमुत्पादितपुष्पं मुक्तपुष्पाद्ग्रथितपुष्पञ्चाधिकफलम्।उग्रगन्धीनि विशेषविहितभिन्ननिर्गन्धीनि सकेशसकीट–कीटविद्ध–स्वयम्पतित–स्वयमविकसितोपहतशीर्ण–शुष्काधोवस्त्रधृत–नीली–कपित्थाद्यपवित्राणि अन्तर्ज्जलक्षालितपर्य्युषिताकालभवदेवोपरिधृत-मस्तकोपरिधृत–वामहस्तधृत–शूद्रानीतानि–कृताहःस्नानेन पूजाकर्त्रा स्वयं त्रोटितानि याचितानि सच्छि

द्राणि च निषिद्धानि अशुच्युत्पादितानि च निषिद्धानीति शूलपाणिः । कलिका तु सर्वेषान्निषिद्धा अभिवादनकालेभिवाद्याभिवादककरस्थितानि निषिद्धानीति केचित् । अग्रभागत्यागात्प्रोक्षणाच्च तानि शुद्धानीत्यपरे । क्रयक्रीतन्तु निष्फलमिति तु प्रवाद एव शिष्टैरनादृतत्वादिति । तुलस्यां बिल्वपत्रे जलपुष्पेषु च पर्य्युषितत्वदोषो नेत्यपि प्रवाद एवेति च श्रीदत्तोपाध्यायाः। पर्य्युषितेष्वपि मालाकारगृहस्थितेषु न दोष इति शैवागमः । यावच्च पुष्पं निर्माल्यतान्न याति तावदेव देवताङ्गेभ्य उत्तारणीयम् । निर्माल्यता तु जात्याः प्रहरेण करवीरस्याहोरात्रेण इतरपुष्पाणां गंधापगमे भवति शेफालीबकुलातिरिक्तानिभूमिस्पृष्टान्यपि निषिद्धानि । गौडनिबंधे–बिल्वपत्रतमालामलकीदरकल्हारतुलसीपद्मपत्रागस्त्यानां कलिकात्मकानां च पुष्पाणां पर्य्युषित्वदोषाभावः।सितरक्तपद्मानामुत्पलानाञ्च पञ्चमदिनादूर्द्ध्वं पर्य्युषितत्वशंका कार्येत्युक्तम्।निषिद्धान्यपि मालया देयानि । देवार्पितवाटिकासम्भवानि वृक्षमुत्पाट्य वृक्षशाखाम्भंक्त्वा वाऽवचितानि च निषिद्धानि पत्राणिचारण्यसम्भवानि–कीटादूषितानि निश्छिद्राणि–निष्केशानि–अपर्य्युषितानि–अनुपहतानि–सामान्यतो विहितानि विशेषतो बिल्वपत्राणि सर्व्वेषां विहितानि पुष्पेषु ये ये निषेधा उक्तास्ते पत्रेष्वप्यनुसंधेयाः । विहितपत्राभावे

विहितनिषिद्धानि तदभावे निषिद्धवर्ज्जमन्यान्यपि तदभावे विहितपुष्पवृक्षपत्राणि देयानि हरिभक्तिदीपिकायान्तु–पुष्पाद्यभावे जलेनापि नित्यपूजा निर्व्वाह्येति विशेष उक्तः । धूपः सघृतगुग्गुलुःतच्च भूम्यतिरिक्ताधारेदेवतावामभागेऽग्रे वा दद्यान्न तु दक्षिणे न च गन्धपुष्पमदत्त्वा दद्यात् । सर्वदेवानान्दीपे घृतं शिवभिन्नदेवानान्तैलञ्च विहितम् । वर्त्तिका तु तत्र शुद्धपट्टकौशेयकार्प्पाससूत्रनववस्त्रतद्दशाभवा कार्य्येति शूलपाणिः । दीपन्तु देवतादक्षिणे पुरतो वा दद्यान्न वामतो न च भूमौ देवेभ्यो दत्तदीपो न निर्व्वापणीयः । नैवेद्यानि तु भक्ष्यभोज्यकन्दमूलफलान्नपानकादीनि सर्वत्र विहितानि । फलन्तु अपक्वम् जलमध्येऽग्निपक्वम् क्वथितपदवाच्यम् धूमपक्वम् समुचितपाकसमयव्यतिरिक्तसमयपक्वम् कालापक्वपदाभिधेयम् कंटककृम्यादिना।विद्धञ्च न देयम्।व्यन्जनरूपपनसकदलपटोलादीनि अग्निपक्वानि कालापक्वानि च दद्यात् । एवमाम्रचूर्णतिन्तिड्यादेरपि व्यञ्जनोपकरणत्वादपक्वत्वमग्निपक्वत्वंवा तत्र न दोषायेति बोध्यम् । सिद्धान्नन्तु वैश्वदेवानंतरपूजापक्षे देयम् । अकृते वैश्वदेवे पूजेति पक्षे तु वैश्वदेवार्थमग्रभागमुद्धृत्य शेषमन्नन्देवेभ्यो निवेदनीयमित्यपरे । असति पाके फलादिष्वप्यसत्सु आममन्नमपि निवेदनीयम् । शूद्रेण तु पक्वमन्नन्नैव देयम् । मांसन्तु शिवेतरदेवेभ्यो दातव्यं तदपि पक्वमेव । एतच्च नै

वेद्यं सूर्य्याय दत्तम्मगेभ्यः,शिवाय दत्तम्भस्माङ्गेभ्यः,दुर्ग्गायै दत्तं स्त्रीभ्यो,विष्णवे दत्तं सात्त्वतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो वा दद्यात् । इतरदेवताभ्यो निवेदितं दीनेभ्यो दद्यात् । दाक्षिणात्यनिबन्धे नैवेद्यादौ पार्थक्याभावे यथांशत इति वदेत् । स्वर्णमययज्ञोपवीतेप्येवमाचार इति विशेषः । सर्व्वत्र नैवेद्यदानानन्तरमादर्शदर्शनम्पुण्यप्रदम् । वन्दनम् स्तुतिः प्रणामश्च । स्मृतिदीपिकाकारमते तु चन्दनमिति पाठः तच्च हस्ताद्यङ्गेषु लेपनम् । गन्धस्तु सुरभिद्रव्येण तिलकरूपः । स च गन्धपदमुल्लिख्यैव देयः । गन्धानन्तरमक्षततिलादिदानमाचारादिति । इति पूजापङ्कजभास्करे उपचारविचारो नामाष्टमः प्रकाशः ॥ ८ ॥

**अथ प्रकीर्णकम् ॥** ॥ पूजाकाले सुवर्णरजतकुशत्रयाणि दक्षिणहस्ते धारयेत् । "जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृतर्प्पणे । अशून्यन्तु करं कुर्य्यात्सुवर्णरजतैः कुशैः" इति हारीतवचनात् । तत्राप्यनामिकायाम् "अनामिकायान्तद्धार्य्यन्दक्षिणस्य करस्य च" इति हेमधारणप्रकरणस्थदेवीपुराणे हेमधारणस्य तत्र विहितत्वेन तत्समभिव्याहृतानां रजतकुशानां धारणस्यापि तत्रैवौचित्यात् । तर्ज्जन्यां रजतं धार्य्यमिति निर्म्मूलमिति कल्पतरुप्रभृतयः । एवम्पवित्रधारणमपि तत्रैव "सव्यः

सोपग्रहः कार्य्यो दक्षिणः स पवित्रकः” इति कात्यायनेनाभिधानात् । पवित्रलक्षणं छन्दोगपरिशिष्टे— “ अनन्तगर्भिणं साग्रं कौशन्द्विदलमेव च । प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥ ” द्विदलं द्विसंख्याकं दलं पत्रम् । अनन्तगर्भिणं तथा च गर्भं, गर्भि, अन्तर्गर्भि च त्यक्त्वाचतुर्थङ्ग्राह्यम् । छान्दसत्वात्पुल्लिंगनिर्देशः । यत्रकुत्रचित्सन्ध्यावन्दनातिरिक्तेपि कर्मणि इदमेव पवित्रलक्षणम् । पवित्रे सन्यासिपद्धतिलिखितं वाक्यं पठन्ति “ सव्यापसव्यवलितं ब्रह्मग्रन्थिसमन्वितम् । लङ्घयेत्प्रथमं पर्व द्विपर्वन्नैव लङ्घयेत् ॥” लङ्घयेत्पर्वमेकन्तु इति पाठान्तरमित्याचारचिन्तामणिः ॥ गौडास्तु “ अनामिकाधृतं हेम तर्ज्जन्यां रौप्यमेव च । कनिष्ठायां धृतं खड्गन्तेन पूतो भवेन्नरः ॥ ” इति याज्ञवल्क्यवचनात् “ तर्ज्जनी रूप्यसंय्युक्ता हेमयुक्ता त्वनामिका । सैव युक्ता तु दर्भेण कार्य्या विप्रेण सर्व्वदा ॥ ” इति विद्याकरधृतवचनाच्च । तर्ज्जन्यामेव रजतं धार्य्यमिति वदन्ति अनन्तर्गर्भिणमित्यादि पवित्रलक्षणमुक्त्वा अनन्तर्गर्भिणम् अनन्तर्गर्भशून्यम् । तथा च शौनकः—“अनन्तस्तरुणौ यौ तु कुशौ प्रादेशसम्मितौ । अनवच्छेदिनौ साग्रौ तौ पवित्राभिधेयकौ ॥ ” एतदभावे कुशपत्रचतुष्टयं त्रयं वा “ चतुर्भिः कुशपत्रैश्च त्रिभिर्द्वाभ्यामथापि वा । पवित्रं कारयेन्नित्यं प्रशस्तं सर्वकर्मसु ॥ ” इति समु

द्धकरधृतवचनात् । विद्याकरवाजपेयिधृतम् पवित्रन्तु द्विजः कुर्यात्कुशपत्रद्वयेन तु। पत्रत्रयेण वा कार्यं नैकपत्रेण कुत्रचित् ॥ इति च लिखन्ति । दक्षिणात्यास्तु शङ्खः–" अनन्तर्गर्भिणं साग्रम् " इतिवचनमुक्त्वा, हारीतः–पवित्रं ब्राह्मणस्यैव चतुर्भिर्दर्भपिञ्जुलैः । तत्रैकं न्यूनमुद्दिष्टं वर्णेवर्णे यथाक्रमम् ॥ " स्मृत्यर्थसारे–" सर्वेषां वा भवेद्वाभ्यां पवित्रं ग्रन्थितन्नवम्।" रत्नावल्याम्–"द्वयोस्तु पर्वणोर्मध्ये पवित्रन्धारयेद्बुधः" । हेमाद्रौ स्कान्दे–" अनामिकाधृता दर्भा ह्येका नामिकयापि वा । द्वाभ्यामनामिकाभ्यान्तु धार्ये दर्भपवित्रके ॥ " पवित्राभावेतु तत्रैव सुमन्तुः–समूहाग्रौ विगर्भौ तु कुशौ द्वौ दक्षिणे करे । सव्ये चैव तथात्रीन्वै विभृयात्सर्वकर्मसु॥ " इत्याहुः । यत्र जलप्रतिमादौ स्थिर एव देवसन्निधिस्तत्रावाहनविसर्ज्जनञ्च विनैव पूजा कार्य्या । प्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनविसर्ज्जनवर्ज्जमिति बौधायनवचनात् । हरिभक्तिदीपिकायाङ्गणेश्वरमिश्रास्तु शालग्रामशिलायामपि विष्णोरावाहनं विधेयम् । नचावाहनं सान्निध्यार्थं सान्निध्यञ्च स्वतःसिद्धमेव"शालग्रामशिला यत्र तत्र सन्निहितो हरिः" इतिवचनात् । अथ दैशिकसान्निध्यस्य तत्र सिद्धत्वेपि बौद्धसान्निध्यार्थन्तदाचरणमिति तु न वाच्यम् । बौद्धसान्निध्यस्यापि वचनबलादेव सिद्धत्वादिति वाच्यम् । अदृष्टार्थत्वात् । मन्त्रकरणकसान्निध्यबु

द्धेरेव तत्रादृष्टजनकत्वनियमात् । तादृग्बुद्धेस्तत्करणताया आवाहनं विना सम्भवात् । अत एव पद्मपुराणीयस्नाने विष्णोः पादप्रसूतासीति गङ्गायामपि गङ्गावाहनमाचरन्ति शिष्टाः । अत एव च यस्यापि गृहे सोमस्तेनापि सोमः क्रेतव्य इत्यधिकरणसिद्धान्तः । आरुण्यादिगुणविशिष्टगोक्रीतसोमस्यैवादृष्टजनकत्वनियमात् देवतासम्मुखीकरणार्थमावाहनमित्यागमिका इत्याहुः । गौडैस्तु–उद्वासावाहने न स्तः स्थिरायामुद्धवार्च्चने । अस्थिरायां विकल्पः स्यात्स्थण्डिलेतुभवेद्द्वयमिति विशेष उक्तः। द्वयम् उद्वासावाहने दाक्षिणात्यनिबन्धे पुरुषसूक्तषोडशोपचारपूजाप्रकरणे " ध्यायेदभिमतां विष्णुमूर्त्तिं सम्पूजयेत्ततः । " प्रथमया पुरुषसूक्तर्चा आवाहनम् शालग्रामशिलादावावाहनाभावाहगन्ते पुष्पं देयमिति लिखितम् । आवाहनन्तु आगच्छेति पदानन्तरं सम्बोधनान्तदेवतानाम्नेति छन्दोगाह्निकम् । सम्बोधनान्तदेवतानामानन्तरमागच्छेति पदेन देवतामावाह्येति वाचस्पतिमिश्रशूलपाण्यादयः । एते चोपचाराः दक्षिणहस्तेनैव देयाः । कर्म्मोपदिश्यते यत्र कर्त्तुरङ्गन्न चोच्यते। दक्षिणस्तत्र विज्ञेयः कर्म्मणाम्पारगः करः॥" इति छन्दोगपारिशिष्टात् घण्टावादनन्तु वामहस्तेन दक्षिणकरस्यार्घादिनावरुद्धत्वादिति । सव्ये आचमनीयङ्कुर्व्वन् वामहस्तेन कम

ण्डलुङ्गृह्णातीति वाक्ये आचमनकाले वामहस्तेन कमण्डलुधारणवदिति हरिभक्तिदीपिका । तत्रापि देवतीर्थेनैव“सम्मार्ज्जनबलिकर्म्मभोजनप्रदानानि दैवेन”इति हारीतोक्तेः। यद्यप्यञ्जलिपूजायां शिष्टाचारोस्ति तथापि न स प्रमाणम् । श्रुतिस्मृतिविहितो धर्म्मस्तदलाभे शिष्टाचारः प्रमाणमिति वसिष्ठवचनेन तयोरविरोधे शिष्टाचारस्य प्रमाणत्वबोधनादित्यवधेयम् । एवञ्चसति यदागमोक्तपूजायाम् “जपान्ते देवतान्ध्यात्वा दद्यात्पुष्पाञ्जलित्रयम्” इत्यादिवचनेनाञ्जलिपूजनम् तत्रापि वामहस्तयोगमात्रम्पुरस्कृत्य पुष्पत्यागो दक्षिणापि दक्षिणहस्तेनैव।“तौ युतावञ्जलिः पुमान्”इत्याद्यमरकोशाभिधानस्वरसेनवामकरयोगमात्रेणापि दक्षिणकरस्याञ्जलिपदशक्तेर्व्युत्पत्तिसिद्धायास्तादवस्थ्यादिति हरिभक्तिदीपिका । सर्व्वे चोपचाराः प्रोक्ष्यैव देयाः“नाप्रोक्षितं स्पृशेत्किञ्चिद्दैवे पित्र्ये च कर्म्मणि”इतिवायुपुराणात् । “यद्दीयते च देवेभ्यो गन्धपुष्पादिकन्तथा। अर्घपात्रस्थितैस्तोयैरभिषिच्य समुत्सृजेत्”॥इति कालिकापुराणाच्च। प्रोक्षणमुत्तानेन हस्तेन “उत्तानेन तु हस्तेन प्रोक्षणं समुदाहृतम्। तिरश्चाभ्युक्षणम्प्रोक्तन्न्यञ्चतावोक्षणं स्मृतम्॥” इति स्मृतेः। यत्प्रक्षालनयोग्यन्तत्त्रिः प्रक्षालनीयम्“त्रिर्देवेभ्यः क्षालयेत् द्विर्म्मनुष्येभ्यः सकृत्पितृभ्यः” इति गोभिलीयात् । शिवेतरदेवपूजाम्प्रातः प्राङ्मु

खः सायम्पश्चिमाभिमुखः रात्रावुदङ्मुखः कुर्वीत "प्राक्पश्चिमोदगास्यश्च प्रातःसायन्निशासु च" इतिभविष्यपुराणादिति छंदोगाह्निकम् । स्मृतिदीपिकायां तु पश्चिमपदेन न तिस्रस्तत्र दिशो ग्राह्या 'ऐन्द्री सौम्या पराजिता' इति वचने पश्चादभिहितैशानीं सायम्पूजायाङ्गृहीतवान्।दिवा तु प्रागुदगैशान्यान्यतमाभिमुखो देवान्पूजयेत्। "यत्र दिङ्नियमो नोक्तो होमपूजादिकर्म्मसु। तिस्रस्तत्रदिशो ग्राह्या ऐन्द्री सौम्या पराजिता ॥" इति दक्षवचनात्। अपराजिता ऐशानी। शिवपूजा तु सदोदङ्मुखेनैव "रात्रावुदङ्मुखः कुर्य्याद्देवकार्य्यं सदैव हि।शिवार्च्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्य्यादुदङ्मुखः॥"इति गोभिलवचनात् "शंकराराधनन्तद्वत्सदा कुर्य्यादुदङ्मुखः।" इति गौतमवचनाच्चेति हरिभक्तिदीपिका। स्थिरप्रतिमापूजां तु प्रतिमाभिमुखस्तिष्ठन्नेव कुर्य्यात् 'शुचिः संभृतसम्भारः प्राग्दर्भें कल्पितासनः। आसीनः प्रागुदग्वार्च्चेदर्च्चायामथ सम्मुखः॥" इति वचनात्। तथैव शिष्टाचाराच्च एवञ्च पूर्व्वोत्तरमुखस्थितायाः प्रतिमायाः पूजनम्पश्चिमदक्षिणाभिमुखेनैव कार्य्यमिति सिद्धम्। गौडनिबंधे तु—"प्राक्पश्चिमोदगास्यश्च प्रातः सायन्निशासु च।" इत्यनेन सायम्पश्चिमाभिमुखःपूजनन्नान्यदेवपूजायामन्वेति किन्तु सप्ताक्षरसूर्य्यमन्त्रविषय एव शिष्टाचारोपि

तथा इति। दाक्षिणात्यास्तु–प्रतिमाः प्राङ्मुखीरुदङ्मुखो यजेत् अन्यत्र प्राङ्मुखः एतच्चस्थिरप्रतिमाविषयमित्याहुः अन्यत्र उत्तराभिमुखप्रतिमायाम्। ऊर्द्ध्वपुण्ड्रंविधाययेषान्देवानांयानि वाहनानि तत्रस्थितान् तान्ध्यात्वा पूजयेत् “ आत्मानम्पूजयित्वा च सुगन्धिसितवाससा। सुमुहूर्ते यजेद्देवान्स्वकीयासनसंस्थितान् ॥ ” इति देवीपुराणात्। आसनं वाहनम्। नातिलकी कर्म्म कुर्य्यात् “दानं यज्ञस्तपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्प्पणम्। भस्मीभवति राजेन्द्र ऊर्द्ध्वपुण्ड्रं विना कृतम्॥” इति स्मृतेरिति हरिभक्तिदीपिका। स्नानीयादिदानकाले घण्टा वादनीया “ स्नानार्च्चनक्रियाकाले घण्टानादङ्करोति यः। पुरतो वासुदेवस्यइत्यादिवचनात्। पूजाकाले गीतवाद्यनृत्यान्यपि सति सम्भवे देवतासन्निधौ कुर्य्यात् कारयेद्वा विष्णुधर्म्मे–“ फलानि दत्त्वा देवेभ्यः सफलां विन्दते श्रियम्। गीतवाद्यप्रदानेन सौख्यम्प्राप्नोत्यनुत्तमम्॥ प्रेक्षणीयप्रदानेन रूपवानभिजायते। ” प्रेक्षणीयं नृत्यम्। गीतादेर्हानन्देवसमीपे करणमात्रमिति शूलपाण्यादयः। अत्रेदम्बोध्यम्–यद्यपि एकपाकेन वसतां पितृदेवद्विजार्च्चनम “ एकम्भवेद्विभक्तानान्तदेव स्याद् गृहेगृहे।’ इति वचनादविभक्तानाङ्कनीयसान्देवपूजानिषेधोस्ति तथापि “पृथगप्येकपाकानाम्ब्रह्मयज्ञो द्विजन्मनाम्। अग्निहोत्रं सुरार्च्चा तु नित्यं सन्ध्या

भवेत्पृथक् ॥ ” इत्याश्वलायनवचनादाह्निकी पूजा कृष्णाष्टमीपूजा शिवरात्र्यादिपूजा च कनीयसामपि कर्त्तव्या । निषेधस्तु सावकाशनागपूजकोजागरासुखरात्र्यादिकाम्यपूजाविषयक इति बोध्यम् । अपरार्ककृतयाज्ञवल्क्यटीकायां योगियाज्ञवल्क्यः–एवं सम्पूज्य देवेशङ्क्षणन्ध्यात्वा निरञ्जनम्। ततोवलोकयेदर्कं हंसः शुचिषदित्यपि ॥ ” इति विशेषः । तदयम्प्रकरणार्थः–पूजाकाले सुवर्णरजतकुशत्रयाणि दक्षिणहस्तानामिकायाम्पवित्रञ्च धारयेत् । गौडास्तु–दक्षिणहस्तानामिकायां सुवर्णं तर्ज्जन्यां रजतं कनिष्ठिकायां खङ्गञ्च धारयेदिति वदंति। यत्र जलप्रतिमादौ स्थिर एव देवसन्निधिस्तत्रावाहनं विसर्ज्जनञ्च विनैव पूजाविधेयेति शूलपाणिप्रभृतयः । हरिभक्तिदीपिकायाङ्गणेश्वरमिश्रास्तु–शालग्रामशिलायामपि विष्णोरावाहनंविधेयमदृष्टार्थत्वादित्याहुः । हरिभक्तिविलासे स्थिरायामर्च्चायाम्पूजने उद्वासावाहनयोरभावः चलायां विकल्पः स्थण्डिले उभयङ्कार्य्यमित्युक्तम् । आवाहनवाक्यन्तु आगच्छेति पदानन्तरं सम्बोधनान्तदेवतानामेति छन्दोगाह्निकम्। सम्बोधनान्तदेवतानामानन्तरमागच्छेति पदमितिवाचस्पतिमिश्रादयः।एते चोपचारा दक्षिणहस्तस्थदेवतीर्थेनैव देयाः।घण्टावादनन्तु वामहस्तेन दक्षिणकरस्यार्घादिनावरुद्धत्वात् । पुष्पाञ्जलिदाने वामहस्तयोगमात्रपुरस्कारः पुष्पत्यागो

दक्षिणहस्तेनैवेति हरिभक्तिदीपिका सर्व्वे चोपचारा अर्घपात्रस्थजलैः प्रोक्ष्यैव समर्प्पणीयाः । प्रोक्षणमुत्तानदक्षिणहस्तेन । यत्तुप्रक्षालनयोग्यन्तत्रिःप्रक्षालनीयम् शिवेतरदेवतापूजाम्प्रातः प्राङ्मुखः सायम्पश्चिमाभिमुखः रात्रावुदङ्मुखः कुर्व्वीतेति श्रीदत्तोपाध्यायादयः । वामदेवोपाध्यायास्तु–सायमैशान्याभिमुख इत्युक्तवन्तः वस्तुतः दिवा प्रागुदगैशान्यन्यतमाभिमुखो देवान्पूजयेत् रात्रावुदङ्मुख एव शिवपूजातुसदोदङ्मुख एव कुर्य्यात् गौडास्तु–सायम्पश्चिमाभिमुखत्वं सूर्य्यपूजामात्रे इत्याहुः । स्थिरप्रतिमापूजनन्तु प्रतिमाभिमुखः सन्नेव कुर्य्यात् दाक्षिणात्यास्तु–प्रतिमा स्थिराः प्राङ्मुखीरुदङ्मुखः उदङ्मुखीः प्राङ्मुखो यजेदित्युक्तवंतः ऊर्द्ध्वपुण्ड्रं विधाय स्वस्ववाहनसहिताः देवताः ध्यात्वा पूजनीयाः पाद्यार्घाचमनस्नाननैवेद्यचामरवीजनकाले घण्टा वादनीया । पूजाकाले गीतवाद्यनृत्यान्यपि सति सम्भवे कुर्य्यात्कारयेद्वा इति एकपाकेन वसद्भिरपि सोदरभ्रातृभिः पृथक्पृथङ्नित्यदेवपूजा विधेया कृष्णाष्टमीशिवरात्रिपूजावत् । सकलपूजोत्तरन्देवेशङ्क्षणन्ध्यात्वा सूर्य्यमवलोकयेत्। "हंसः शुचिषद" इति मंत्रञ्च पठेदिति गौडाः ॥ इति पूजापंकजभास्करे प्रकीर्णकन्नाम नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

**अथदेवपूजाप्रयोगः** तत्र बन्ध्यारोगार्त्तजीर्णदेहनवप्रसूताऽमेध्यभक्षिकातिरिक्तगोव्यक्तिसम्बन्धिशुचिदेशगृहीताकाशगृहीतान्यतरगोमयोपलिप्तेनिष्टगंधशब्दवर्ज्जितशुचौ देशे देवासनान्नीचासने दिवाप्राङ्मुख उदङ्मुख ऐशान्याभिमुखो वा रात्रावुदङ्मुख एव सुखोपविष्टः शुचिः शुचिवस्त्रद्वयधरो मौनी ध्यानपरः कामरागभयद्वन्द्वमात्सर्य्यत्वराक्रोधरहितः तन्मनाः सुमना दक्षिणपार्श्वे पुष्पकरण्डकं वामेऽपर्य्युषितजलपूर्णपात्रमितरञ्च पूजोपकरणं यथा सन्निवेशमासाद्य जल पूर्णमर्घपात्रमग्रतो धृत्वा तज्जलेन पूजास्थानन्तद्द्रव्याणि च प्रोक्ष्य गंधादिनात्मानमभ्यर्च्य आगच्छेति पदानन्तरं सम्बोधनांतेन देवतानाम्ना सम्बोधनान्तदेवतानामोत्तरमागच्छेति पदेन वा देवतामावाह्य स्थापयित्वा प्रतिष्ठितप्रतिमाशालग्रामनार्म्मदलिंगादावावाहनं विनैव दक्षिणकरस्थदेवतीर्थेन आसनपाद्यार्घांचमनीयानि दत्त्वा स्नपयित्वा यथालाभवस्त्रालंकारयज्ञोपवीतादीनि दत्त्वा गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानि च दत्त्वा दीक्षितो जप्त्वाऽदीक्षितस्तु जपमकृत्वैव प्रदक्षिणीकृत्य प्रणम्य स्तुत्वा ध्यात्वा भगवन् भगवति वा क्षमस्व स्वस्थानङ्गच्छेति विसर्ज्जयेत् । प्रदक्षिणन्तु "एकश्चंड्यां रवौसप्त त्रीणि दद्याद्विनायके । चत्वारि केशवे कुर्य्याच्छिवे चार्द्धप्रदक्षिणम् ॥" इत्युक्तसङ्ख्याकङ्कार्य्यम्

अनुक्तदेवानान्तु त्रिःकार्य्यमिति ज्ञेयम् । अत्र ध्यानन्तु मत्स्यपुराणीयमेव सूर्य्यादीनां बोध्यम् । प्रतिमामानोन्मानादेर्म्मत्स्यपुराणीयस्यैव शिष्टैराहृतत्वेन ध्यानस्यापि तदीयस्यैव ग्रहीतुमुचितत्वात् । अत एव दुर्गाभक्तितरङ्गिण्याम्मत्स्यपुराणीयमेव ध्यानमभिहितम् । गौडनिबन्धे पूजाकर्त्रासनदोषगुणौ नारदपञ्चरात्रे– " वंशासने दरिद्रत्वम्पाषाणे व्याधिसम्भवम् । धरण्यान्दुःखसम्भूतिन्दौर्भाग्यन्दारुजासने ॥ तृणासने यशोहानिम्पल्लवे चित्तविभ्रमम् । दर्भासने व्याधिनाशङ्कम्बलन्दुःखमोचनम् ॥" इति ! अन्यत्र च "कृष्णाजिनं व्याघ्रचर्म्म कौशेयं वेत्रनिर्म्मितम् । वस्त्राजिनङ्कम्बलं वा कल्पयेदासनम्मृदु ॥ " इत्यभिहितम् । विष्णोस्तु नरसिंहपुराणीयन्ध्यानङ्ग्राह्यं निबन्धकृद्भिरुक्तत्वात् । गौडैस्तु– " सलिले यदि कुर्वन्ति देवतानाञ्च पूजनम् । तत्राप्यासन आसीनो नोत्थितस्तु सदाचरेत् ॥" इति कालिकापुराणवचनाज्जलेपि आसने उपविष्ट एव पूजाङ्कुर्य्यात् न तु सन्ध्यावन्दनतर्प्पणवत् ऊर्द्ध्वस्थितो निरासनो वेति विशेष उक्तः॥इति पूजापङ्कजभास्करे पूजासामान्यप्रयोगो नाम दशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

अथसूर्य्यपूजा।"यः प्रदद्याद्गवां लक्षन्दोग्ध्रीणां वेदपारगे। एकाहमर्च्चयेद्भानुन्तस्य पुण्यन्ततोऽधिकम्॥यः सूर्य्यम्पूजयेन्नित्यम्प्रणमेद्वापि भक्तितः।तस्य भोगश्च मोक्षश्च ब्रध्नस्तुष्टः प्रयच्छति॥" "यजेदेकं सहस्रांशुम्मोक्षकामो न संशयः ।मेरुमन्दरतुल्योपि राशिः पापस्य कर्म्मणः । आसाद्य भास्करम्मर्त्यस्तन्नाशयतितत्क्षणात्॥"इत्यादिभविष्यपुराणीयवचनात सूर्य्यपूजा महाफला।अस्य ध्यानं मत्स्यपुराणे-भुजङ्गरश्मिबद्धरश्मिवत्सप्ताश्वैकचक्ररथस्थं नानाभरणभूषितं भुजद्वयधृतस्कन्धद्वयस्थपुष्करद्वयंवस्त्रयुग्मसमोपेतं क्वचिच्चोलकच्छन्नवपुषंतेजः संवृतचरणद्वयं विचित्रमुकुटयुतं पद्मगर्भसमप्रभं सुलोचनं पार्श्वद्वयस्थितखड्गहस्तदण्डपिङ्गलप्रतीहारं पार्श्वस्थितकृतलेखनीहस्तधातारं नानादेवगणावृतं पद्मपत्रसन्निभारुणसारथिं सूर्य्यन्ध्यायेत्, पद्मस्थं

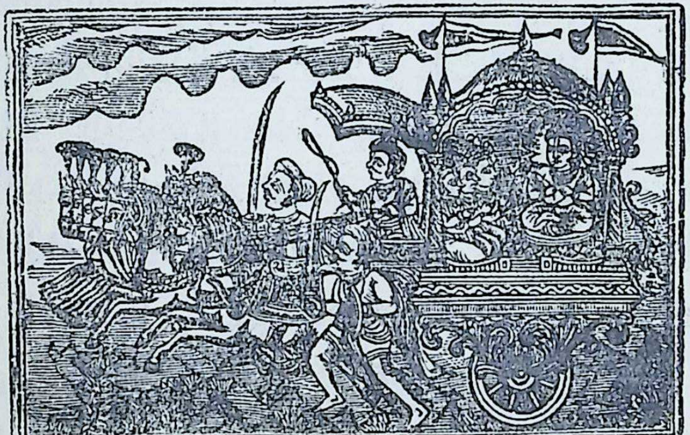

सप्तसञ्ज्ञकाश्वस्थं वा ध्यायेदिति । एतत्पूजा सामवेदिना “ ॐ बण्महाँ २ ॥ ऽअसि सूर्य्य बडादित्यमहाँ २ ॥ ऽअसि महस्ते सतो महिमापनिष्टममह्नादेव महाँ २ ॥ ऽअसि ॥ ” अनेन मन्त्रेण यजुर्व्वेदिना “ ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ” इति मन्त्रेण कार्य्या इमौ च मन्त्रौ कौथुमशाखिमाध्यन्दिनशाखिनोरुक्तौ । एवमन्यैरापस्तंबीयवेदस्वशाखीयमन्त्रैः सूर्यपूजा विधेया । एवमन्यदेवतापूजायामपिबोध्यम् । अस्यार्घे भविष्यपुराणम्–“योष्टाङ्गमर्घमापूर्य्य भानोर्म्मूर्द्ध्नि निवेदयेत् । दशवर्षसहस्राणि वसेदर्क्कस्य मन्दिरे ॥ आपः क्षीरङ्कुशाग्राणि घृतन्दधि तथा मधु । रक्तानि करवीराणि तथा रक्तञ्च चन्दनम्।अष्टाङ्ग एष ह्यर्घो वै ब्रह्मणः परिकीर्तितः॥“इति अथ पञ्चोपचाराः तत्रादौगंधाः तत्र भविष्यपुराणम्–“चंदनागुरुकर्प्पूरकुङ्कुमोशीरपद्मकैः । अनुलिप्तो नरैर्भक्त्या ददाति मनसेप्सितम्॥” पद्मकंपद्मकाष्ठम् । तथा–“कालेयकन्तुरुष्कञ्च-रक्तचंदनमेव च । यान्यात्मनः सदेष्टानि तानिशस्तान्युपाकुरु ॥ ” इति तुरुष्कं शिह्लकम् । अथ विहितपुष्पाणि–आगस्त्याऽटरूप

काऽतिमुक्ताऽर्क्काऽशोकाऽम्रातकोत्पलकदंबकरवीर कर्णिकारकाञ्चनालकालतुलसीकाशकिंशुककिङ्किरातकुङ्कुमकुन्दकुब्जककुरुण्टककुशकुशेशयकेशरकैरवचम्पकजयाजवाजातीतगरतिरीटकत्रिसन्ध्यातिलकद्रोणनवमल्लिकानागकेशरनीलोत्पलपद्मपाटलायावन्तिकपीताम्लानपुन्नागबाणबृहतीमंदारमल्लिकामालतीमुकुरयूथीरोकनरक्तोत्पललोधवक–बकुल–बर्बरमल्लिकावासन्तीविचकिलवोडकशमीशतपत्रिका–शतपत्र–शाल्मली–श्वेतमंदार–श्वेतपद्म–सिंहास्यानि। विहितनिषिद्धन्तु पिण्डी तगरम्। गौडनिबन्धे–दमनक–द्रोण-मंदार–शिंशपा–पुष्पाणि–निषिद्धान्युक्तानि निषिद्धानि तु अपराजिता–आम्रातक–उन्मत्त–कांची–कृष्णला–कुसुम्भ–वनतगरीपुष्पाणि। पत्रेषु–कालतुलसी–केतकी–तमाल–तुलसी–दूर्व्वा–भृंगराज–बिल्व–शमी–शतपत्रिकापत्राणि–विहितानि। गौडास्तु–सूर्य्यलंबोदराभ्यां बिल्वपत्रं न दातव्यम्। बिल्वपत्रमुपक्रम्य–“पूज्या एतेन वै देवाः सूर्य्यलम्बोदरौ विना।” इति बृहद्धर्म्मपुराणवचनादिति वदन्ति। विहितपुष्पपत्राभावे विहितनिषिद्धानि। तदभावे निषिद्धवर्ज्जमन्यदप्युपादेयं तदभावे त्वाह–“अलाभेन तु पुष्पाणाम्पत्राण्यपि निवेदयेत्। पत्राणामप्यलाभे तु फलान्यपि निवेदयेत्॥फलानामप्यलाभे तु तृणगुल्मौषधीरपि। ओषधीनामलाभे तु भक्त्या भवति

पूजितः ॥” इति भविष्यपुराणम् । पत्राण्यपीति विहितपुष्पवृक्षपत्राण्यपीत्यर्थः । ओषधीरपीत्यपिना तण्डुलजलानीति शूलपाणिः । तथा “प्रत्येकमुक्तपुष्पेभ्यो दश सौवर्ण्णिकं फलम् । स्रजोभिर्म्मुनिशार्दूल तदेव द्विगुणम्भवेत् ॥ मुकुराणि कदम्बानि रात्रौ देयानि भानवे । दिवाशेषाणि पुष्पाणि दिवारात्रौ च मल्लिका ॥ गंधवंत्यपवित्राणि कुसुमानि विवर्ज्जयेत् । गंधहीनमपि ग्राह्यं पवित्रं यत्कुशादिकम् ॥ इत्यादि । धूपस्तु–सघृतगुग्गुलु–कुंदुरु–कृष्णागुरु–सघृतमहिषाख्यगुग्गुलु–श्रीवाससघृतबिल्व–देवदारु–सौगंधिक–तुरुष्क–अगुरु–नमेरु–कस्तूरी–कर्प्पूरयुक्तागुरुरूपा विहिताः । कंदुरुः सल्लकीरसः । श्रीवासः सरलोद्भवः । सौगंधिकः सौंधेन इति प्रसिद्धः । तुरुष्कः सिह्लकः । अस्य दीपे घृतं तदभावे तैलं तं च दत्त्वा न निर्व्वापयेदित्यादिसामान्यप्रकरणोक्तमत्रानुसन्धेयम् । नैवेद्यानि तु–संयावकृसरापूपपायसगुडसंयुक्तमोदकरसालाशालितण्डुलप्रस्थषष्टिकौदनयवगोधूमतिलमुद्गमाषमांसपक्वफलपानकादीनि विहितानि । रसालातूक्ता सूपकारतन्त्रे–“ अर्द्धाढकं सुचिरपर्य्युषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडशपलानि शशिप्रभस्य । सर्प्पिः पलं मधु पलं मरिचद्विकर्षं शुंठ्याः पलार्द्धमपि चार्द्धपलं चतुर्णाम् ॥ ” श्लक्ष्णे पटे ललनया मृदुपाणिघृष्टा कर्प्पूरधूलिसुरभी

कृतभाण्डसंस्था । एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला या स्वादिताभगवता मधुसूदनेन॥"इति । अस्य रक्तवस्त्रम्प्रियमन्योऽपि रक्तोपहार इति छन्दोगाह्निकम् । अस्य नैवेद्यम्मगेभ्योदेयम् । सूर्य्यमधिकृत्य भविष्यपुराणे–" प्रणम्य दण्डवद्भूमौ नमस्कारेण योर्च्चयेत् । स याङ्गतिमवाप्नोति न ताङ्क्रतुशतैरपि॥" इत्युक्तेः सूर्य्यप्रणामो महाफलः । प्रदक्षिणन्तु सप्तवारङ्कार्य्यम् " एकञ्चण्ड्यां रवौ सप्तत्रीणि कुर्य्याद्विनायके।चत्वारि केशवे कुर्य्याच्छिवे चार्द्धप्रदक्षिणम्॥" इति प्रागुक्तेः दक्षिणावर्त्तेन देवमुद्दिश्य सर्व्वदिक्षु भ्रमणम्प्रदक्षिणम् । गौडाः–विष्णोरग्रे तु सूर्य्यस्य भ्रमरिकारूपाम्प्रदक्षिणान्न कुर्य्यात्, विष्णुस्मृतौ –" कृष्णस्य पुरतो नैव सूर्य्यस्यैवम्प्रदक्षिणाम् । कुर्य्याद्भ्रमरिकारूपां वैमुख्यापादनीम्प्रभोः ॥ " इत्यभिधानात् । सूर्य्यसन्निधौ शंखो न वादनीयः " शिवागारे झुल्लकञ्च सूर्य्यागारे च शंखकम् । दुर्गागारे वंशवाद्यम्मधुरीञ्च न वादयेत् ॥ " इति गौडदाक्षिणात्यधृतवचनात् । एतत्स्नानीयजलं लंघनयोग्यस्थलादन्यत्र प्रक्षेपणीयम् " यथा न लंघयेत्कश्चित्स्नपनं भास्करस्य च । तथा कार्य्यम्प्रयत्नेन लंघितं ह्यशुभावहम्॥ तामिस्रन्नरकङ्कर्त्ता लंघयेद्यः स रौरवम् ।" इति भविष्यपुराणात् । तामिस्रं रौरवमित्युभयत्रापि यातीति शेषः । कर्त्ता लंघनानुकूलवर्त्मर्क्षेपादेरिति छन्दोगा

पू. पं. ह्निकम् । लंघनस्य स्नपनस्य वेति शूलपाणिः । गौडनिबन्धे–“ उदके तरुमूले वा निर्म्माल्य भा.
॥२९॥ न्तस्य सन्त्यजेत् । ” इति भागवतीयात् । तरुमूलोदकान्यतरत्र निर्म्माल्यप्रक्षेपणमुक्तम् । अथा प. ३३
यमत्र प्रयोगः–अक्षतान्गृहीत्वा यथोक्तन्ध्यायन् ओं भूर्भुवः स्वर्भगवन् सूर्य्य इहागच्छेत्यावाह्य
इह तिष्ठेति जलादौ पूजाधारे स्थापयित्वा पाद्यमादाय इदम्पाद्यम् ॐ सूर्य्याय नम इति दद्यात्
तत एषोर्घ इत्यर्घन्दत्त्वा इदमाचमनीयम् इदं स्नानीयम् इदम्पुनराचमनीयम् एष गन्धः इदमनु
लेपनं वा इदं रक्तचन्दनमिदमक्षतम् मन्त्रमुच्चार्य्य तद्विना वा इदम्माल्यम् एतानि पुष्पाणि
इदम्पुष्पमिति वा त्रिः पुष्पाणि एतान्यमुकपत्राणि एष धूपः एष दीपः इदं नैवेद्यमिति
क्रमेण पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानि च पृथक्पृथक्
दद्यात् । अथवा आवाह्य इह तिष्ठेत्युक्त्वाधारे स्थापयित्वा एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनरा
चमनीयानि ॐ सूर्याय नम इति समस्तवाक्येनैकदैव पाद्यादीनि दत्त्वा गन्धादिपञ्चकं पृथक्पृथक् ॥२९॥
दद्यात् । अथवा पाद्यादिपुनराचमनीयान्तानि समस्तवाक्येन दत्त्वा गन्धमक्षतम्पुष्पाणि च दत्त्वा

एतानि धूपदीपनैवेद्यानीति समस्तवाक्येन धूपादीनि दद्यात् ततो दीक्षितश्चेज्जप्त्वाऽदीक्षितो जपमकृत्वैव सप्तप्रदक्षिणानि कृत्वा प्रणम्य स्तुत्वा ध्यात्वा ॐ भगवन् सूर्य्य पूजितोसि प्रसीद क्षमस्वेति प्रार्थ्य स्वस्थानङ्गच्छेति विसर्ज्जयेदिति छन्दोगाह्निकम्।क्षमस्वेति विसर्जयेदिति वाचस्पतिमिश्रादयः ततः ॐ चण्डभास्कराय नम इति निर्म्माल्यं क्षिपेदिति दाक्षिणात्याः । एतन्नैवेद्यम्मगातिरिक्त ब्राह्मणादिभिर्नभक्षणीयम् "निर्म्मालयन्नोपभोक्तव्यं रुद्रस्य तपनस्य चाउपभुज्य च तन्मोहान्नरके पच्यते ध्रुवम् ॥ "इति गौडधृतभविष्यपुराणात् ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे सूर्य्यपूजाकथनन्नामैकादशः प्रकाशः ॥ ११ ॥

अथ गणपतिपूजा । सा यथा—तत्र प्रथमं गजवक्त्रं त्रिलोचनं लम्बोदरं चतुर्बाहुं व्यालयज्ञोपवीतिनं स्तब्धकर्णं बृहच्छुण्डम् एकदन्तं पृथूदरं दक्षिणोर्द्ध्वकरेण स्वदन्तं दक्षिणाधः करेणोत्पलं वामोर्ध्वकरेण लड्डुकं वामाधः करेण परशुञ्च दधानं बृहत्संक्षिप्तवदनं पीनस्कन्धाङ्घ्रिपाणिकम् ऋद्धिबुद्धिभ्यां युक्तं मूषकवाहनं गणपतिं ध्यात्वाऽक्षतमादाय—

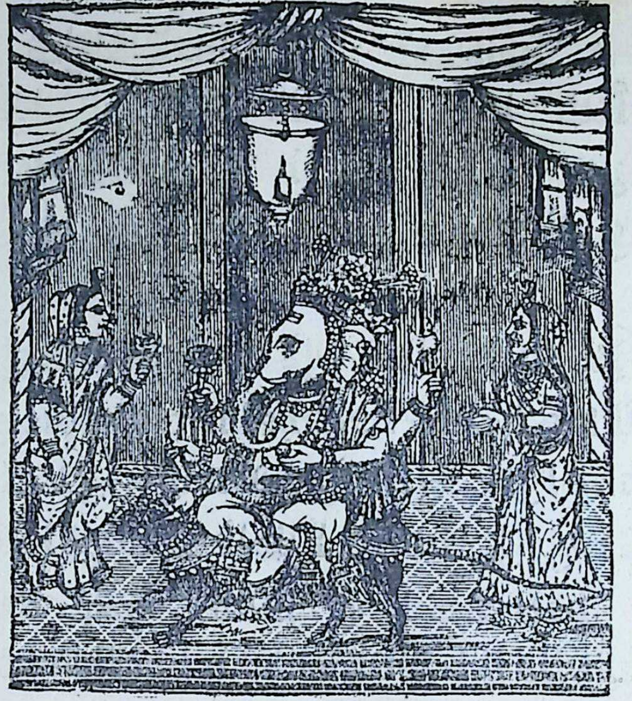

ॐ भूर्भुवःस्वर्भगवन् गणपते इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा “ ॐ आतून इन्द्रक्षुमन्तश्चित्रं ग्राभं सङ्गृभाय महाहस्ती दक्षिणेन । ” इति मन्त्रेण सामवेदी, ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम आहमयानिगर्भधमात्वमयासिगर्भधम् ॥ ” इति मन्त्रेण यजुर्व्वेदी, ॐ गणपतये नमः इति सामान्यप्रकरणोक्तपाद्यादिभिर्व्विसर्ज्जनान्तैः पूजयेत् प्रदक्षिणश्चास्यत्रिः कुर्य्यात् एतत्पूजने अशोकतगर वासन्ती बिल्वपत्र तुलसीपत्राणि निषिद्धानि रक्तोपहारश्चास्यातिप्रियः ॥ इतिपूजाप०भास्करे गणपतिपूजाकथनं नाम द्वादशः प्रकाशः ॥ १२ ॥

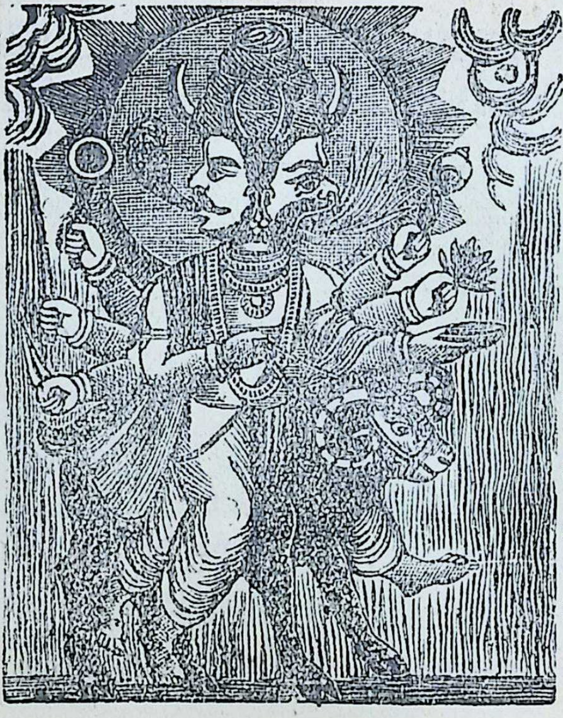

अथाग्निपूजा। सा यथा— दीप्तं सुवर्णवपुषं चन्द्रार्द्धाकारासनस्थितं बालार्कसदृशवदनं यज्ञोपवीतिनं वामहस्तधृतकमण्डलुं दक्षिणहस्तधृताक्षसूत्रं मूर्द्धसप्तशिखं कुण्डस्थमजवाहनमुज्ज्वलमग्निन्ध्यात्वा "ॐ अग्निन्दूतव्वृणीमहे होतारव्विँश्ववेदसम् अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम्॥" इति मन्त्रेण सामवेदी "ॐअग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ २ ॥ आसादयादिह" इति मन्त्रेण यजुर्वेदी, ॐ अग्नये नमः इति सामान्योपचारप्रकरणोक्तपाद्यादिभिः विसर्जनान्तैः पूजयेत्। अस्यापि त्रिः प्रदक्षिणङ्कार्य्यम्॥ इति पूजापङ्कजभास्करे ग्निपूजा कथनन्नाम त्रयोदशः प्रकाशः॥ १३॥ छ॥

अथ दुर्ग्गापूजा। तत्र भविष्ये—“ यःसदा पूजयेद्दुर्ग्गाम्प्रणमेद्वापि भारत। स योगी सामुनिर्द्धीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता॥ ” तथा—अग्निहोत्राणि कर्म्माणि वेदयज्ञाः सदक्षिणाः। चण्डिकार्च्चनस्यैते लक्षांशेनापि नो समाः॥ ” इत्युक्तेर्दुर्ग्गापूजा महाफला। सा च सामान्याधारप्रकरणोक्ताधारे कार्य्या शूले चातिप्रशस्ता। अस्या ध्यानं मत्स्यपुराणे—दशभुजा जटाजूटयुक्ता अर्द्धेन्दुकृतशेखरा त्रिलोचना पूर्णेन्दुसदृशानना अतसीपुष्पवर्णा सुलोचना नवयौवनसंयुक्ता सर्व्वाभरणभूषिता चारुदशना पीनोन्नतपयोधरा त्रिभङ्गस्थानसंस्थाना ऊर्द्ध्वाधःक्रमेण दक्षिणैर्ब्बाहुभिः त्रिशूलखड्ग चक्रतीक्ष्णबाणशक्तिधरा ऊर्द्ध्वाधःक्रमेण वामैर्ब्बाहुभिः खेटकपूर्णचापपाशाङ्कुशघण्टापरश्वन्यतरधरा अधस्ताद्द्विशिरस्कमहिषशिरश्छेदोद्भवखड्गपाणिरक्तरक्तीकृताङ्गरक्तविस्फारितनेत्रनागपाशवेष्टितभ्रुकुटीभीषणाननदेवीशूलनिर्ब्भिन्नहृदयमहिषोपरिधृतवामपादाङ्गु

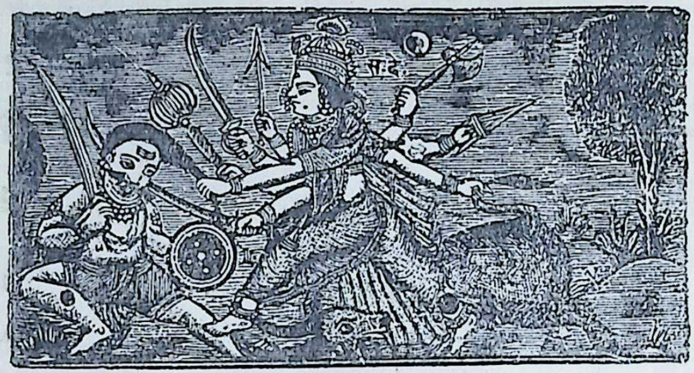

ष्ठा सपाशवामहस्तधृतदानवकेशा वमद्रुधिरवक्रसिंहोपरि धृतदक्षिणपादा इति। अस्याः पूजामन्त्रस्तु–"ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्त्यग्निः ॥" इति। "ॐ इमस्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सम्महे मामनीषया भद्राहिनः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मारिषामावयन्तव।" इति वा सामवेदिनाम्। "ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥" इति यजुर्वेदिनाम्। अस्या अर्घः–"आपः क्षीरङ्कुशाग्राणि अक्षतादधितण्डुलाः। सहा सिद्धार्थका दूर्वा कुङ्कुमो रोचना मधु। अर्घोयङ्कुरुशार्द्दूल द्वादशाङ्ग उदाहृतः॥" इति। अक्षता यवा इति निबन्धकारः। सहा सहदेवा नाम ओषधी गन्धास्तु छन्दोगाह्निके–चंदनागुरु–कर्पूर-कुंकुम–कृष्णागुरु-रक्तचंदनानि। पुष्पाणितु–अगस्त्यऽतिमुक्त–अपराजिता–सर्व्ववर्णा–अर्क्का–अर्जुन अशोकोत्पल–कदम्ब करवीर–किङ्किरात–कर्णिकार–किंशुक कुंकुम–कुब्जक–कुन्द कुमुद कुरुण्टक–कुशमञ्जरी–कूष्माण्ड–केतकी–चम्पकजवाजाती–तगर-तिरीटक–दमनक–द्रोण–धान्यपुष्प–धत्तूर–नवमल्लिका–नागनीलोत्पल–पङ्कज–पद्म–पुन्नाग–बन्धूक–बृहती–भद्रामंदार–मरुबक–मल्लिकामा–

यवी·यूथीरक्तपङ्कज रक्तोत्पल·लोध्र·बक·बकुल ·बर्वरी·विचकिल-शमी-शतपत्रिका—शिंशपा—श्वेतपंकज सिंदुवार·सर्वौषधीसुरभीरूपाणि—विहितानि—अत्र निषिद्धानि न संति पुष्पाणि । मन्दारार्कयोरत्र विधानात्“देवीनामर्क्कमंदारौ”इतिशातातपवचनन्दुर्ग्गेतरदेवीपरं सामान्यविशेषन्यायात् इतिशूलपाणिः। लक्ष्म्यास्तु द्रोणपुष्पमप्यागमे निषिद्धम्। पत्राणि तु—उदुम्बर-दमनक-धान्यनिम्ब-मरुबक-बिल्वब्रह्मवृक्ष लतासर्वौषधीनां विहितानि । दूर्वा तु--अङ्कुररूपा कोमलादूर्व्वाङ्कुरैश्चकोमलैरित्युक्तेः । दुर्ग्गान्नैवतुदूर्व्वय इति निषेधस्तु दूर्वांकुरातिरिक्तविषयः सामान्यविशेषन्यायात्।ब्रह्मवृक्षलता ब्रह्मवृक्षः पलाशस्तस्य लता माधव्यादिः । विहितपुष्पपत्राभावे ओषधीभिस्तदभावेजलेन तदलाभे मानसी पूजा कार्य्या । धूपे--गुग्गुलुसघृतगुग्गुलुसघृतमहिषाख्यगुग्गुलु कृष्णागुरुअगुरुशिह्लकसघृतबिल्वकर्पूरयुक्तागुरुकर्प्पूरचन्दनानि विहितानि । दीपे—घृतन्तैलञ्चसामान्यप्रकरणोक्तमेव विहितम् । विशेषतः स्वशरीरवसा विहिता । नैवेद्यं—सामान्यप्रकरणोक्तमेव। प्रदक्षिणञ्चैकवारम्एकञ्चण्डयाम् इत्युक्तेः। अस्याः प्रणामे फलं “सर्व्वयज्ञोपवासेषु सर्वतीर्थेषु यत्फलम् । तत्फलं लभते वीर प्रणम्य शिरसा सतीम्॥सम्प्रसारितहस्तो यो दण्डवत्प्रणतो भुवि। चंडिकापुरतो वीर स यांति परमाङ्गतिम् ॥” सतींदुर्ग्गाम् ।“छित्त्वा भित्त्वा च

भूतानि हत्वा सर्व्वमिदञ्जगत् । प्रणम्य शिरसा देवीं सर्व्वपापैः प्रमुच्यते ॥" पूजाप्रयोगस्तु–अक्षतान्गृहीत्वा यथोक्तरूपान्दुर्ग्गान्ध्यायन् ॐ भूर्भुवःस्वर्भगवति दुर्ग्गे इहागच्छेत्यावाह्य इह तिष्ठेति स्थापयित्वा ॐ दुर्ग्गायै नम इति पाद्यादीनि दत्त्वा ॐ भगवति दुर्ग्गे पूजितासि प्रसीद क्षमस्वेति प्रसाद्य स्वस्थानं गच्छेति विसर्ज्जयेदिति ॥ इति पूजापंकजभास्करे दुर्ग्गापूजनकथनन्नाम चतुर्दश प्रकाशः ॥ १४ ॥

अथ शिवपूजा । सा च प्रतिमाद्यपेक्षया लिङ्गेति प्रशस्ता "अर्च्चायामर्च्चयेद्यो माम्पूर्णवर्षशतन्नरः । एकञ्च दिवसल्लिङ्गे सममेतन्न संशयः ॥" न तुष्याम्यर्च्चितो भक्त्या तथा देवि नगात्मजे । लिंगेर्च्चितो यथा नित्यम्परितुष्यामि पार्व्वति ॥" इति स्कन्दपुराणे गौरीम्प्रति शिववाक्यात् । लिङ्गञ्च–मृद्भस्मगोमयपिण्डताम्रकांस्ययज्ञियवृक्षस्फटिकरत्नाश्मादिभिर्विधेयम् । भविष्यपुराणे–"यः कृत्वा पार्थिवं लिङ्गमर्चयेच्छुभवेदिकम् । इहैव धनवान् श्रीमानन्ते रुद्रोभिजायते ॥" शुभवेदिकं शोभनवेदिकायुक्तम् वेदिका पिण्डिका तथा–"आर्द्रामलकमात्रन्तु कृत्वा लिङ्गंहिरणमयम् । सम्पूज्य रत्नखचितं शिवलोके महीयते ॥ मृद्भस्मगोशकृत्पिण्डताम्रकांस्यमयन्तथा । कृत्वा लिङ्गं सकृत्पूज्य वसेत्कल्पायुतन्दिवि ॥

इत्यभिधानात् । पार्थिवं सर्व्वसिद्धिदमित्यागमे दर्शनाच्च । देवीपुराणे—वार्क्षंवित्तप्रदं लिङ्गं स्फाटिकं सर्व्वकामदम् । नर्म्मदागिरिजं श्रेष्ठमन्यद्वापिहिलिङ्गवत् । कृत्वा पूजय विप्रेन्द्र लप्स्यसे चेप्सितम्फलम् ॥” वार्क्षम् यज्ञियवृक्षभवम् । कृत्यप्रदीपे—सौवर्णं रत्नघटितं वाशिवलिङ्गं सकृत्पूजयतः शिवलोकमहितत्वम्फलमित्युक्तम् ।पिण्डकालक्षणमुक्त्वा लिङ्गपुराणे च—एवं रत्नमयङ्कुर्य्यात्स्फाटिकम्पार्थिवन्तथा । शुभदारुमयं वापि यद्वा मनसि रोचते ॥” इत्यभिधानाच्च । अन्यत् शैलान्तरजम् । लिङ्गवत् लिङ्गाकारम् । अत्र च लिङ्गङ्कर्कशमतिक्षुद्रमतिस्थूलं चिपिटाकारं पिण्डकाहीनं पिण्डकाविषमवर्णव्यङ्गपिण्डकम्मानोन्मानहीनं मानोन्मानहीनपिण्डकञ्च निषिद्धम् । रत्नजलिङ्गे बाणलिङ्गे च लिङ्गपिण्डकयोर्व्विभिन्नद्रव्यजत्वमपि न दोषाय मणिलिङ्गे दीप्तिमात्रमपेक्षितन्न तु मानोन्मानादिकम् तदुक्तं शूलपाणौ—मणिलिङ्गादौ मानादिहानिरपि न दोषाय । तदुक्तं मयग्रन्थे प्रथमपटले शिवपूजाप्रकरणे “समस्तमणिजातीनान्दीप्तिः सन्निधिकारणम् । मानोन्मानप्रमाणादि तेषु ग्राह्यन्न वै बुधैः ॥” स्फटिकमुपक्रम्य पञ्चरात्रे--अत्यन्तगुणभूयिष्ठङ्किञ्चिद्दोषसमन्वितम् । अग्निहोत्रोपमं

लिङ्गन्न तद्भयकरम्भवेत् ॥ ” मयग्रन्थे–‘ रत्नजम्बाणलिङ्गं वा सर्व्वं साध्वन्यलक्षितम् ’। इति। एतट्टीकायाम् अर्च्चायाश्चिद्रूपत्वात् पिण्डिकायाः प्रकृत्यात्मकत्वात् तयोर्य्योगः प्रतिष्ठेति सा च प्रकृत्यात्मनो रैक्यादेकद्रव्यजेत्युक्तम् । रत्नजलिङ्गबाणलिङ्गयोस्तु विशेषमाह–साध्वन्यलक्षितमिति अन्यथा लक्षितमपि साधु, अन्यद्रव्यजापि सा ध्वीत्यर्थः । तदुक्तं द्वादशसाहस्रे पिङ्गलातन्त्रे– “ रत्नजे बाणलिङ्गे वा तदन्यद्रव्यजापि सा। ” सा पिंडिकेत्यर्थ इत्युक्तम् बाणलिङ्गमपि कपिलं निषिद्धं पक्वजम्बूफलाकारन्त्वतिप्रशस्तमिति छन्दोगाह्निकादौ श्रीदत्तादयः। पार्थिवलिङ्गे सकृदेव पूजा कार्य्येति कृत्यप्रदीपेभिहितम् । स्मृतिदीपिकायाम्–आवाहनविसर्ज्जनप्रतिष्ठा बाणलिङ्गे न सन्ति तन्नैवेद्यञ्च ग्राह्यमित्युक्तम्। शिवपूजा सदोदङ्मुखेनैव विधेया यजमानः शम्भोर्जगत्संहारकर्तुः प्राचीन्न समाश्रयेत् संहारकर्त्तुः साम्मुख्यनिषेधात्। पञ्चवक्रपक्षे प्रधानं वक्रम्प्राग्व्यवस्थितम्। एकवक्रपक्षे तु सुतरामित्येतदर्थकात् “ न प्राचीमग्रतः शम्भोर्नोदीचीं शक्तिसंस्थिताम्। न प्रतीचीं यतः पृष्ठमतो दक्षं समाश्रयेत् ॥ ” इति गौडधृतरुद्रयामलीयात् । जले तु शिवपूजा

निषिद्धा । स्वधर्म्मत्यागिना ब्राह्मणेतरेण शिवपूजा न कार्य्येति पुरस्तादुक्तम् । काम्यशिवपूजाकाले भस्मत्रिपुण्ड्रकरणं रुद्राक्षधारणञ्चावश्यकम् “ विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया । पूजितोपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः ॥ ” इति वचनात् । रुद्राक्षधारणफलं स्कांदे रुद्रवाक्यम्—“ हस्ते बाह्वौ तथा कण्ठे मूर्द्ध्नि रुद्राक्षधारणात् । अधृष्यः सर्व्वभूतानां रुद्रवद्विचरेद्भुवि॥ सुरासुराणां सर्व्वेषां वन्दनीयो यथा शिवः । ध्यानधारणाहीनोपि रुद्राक्षन्धारयेत्तु यः ॥ सर्व्वपापविनिर्म्मुक्तः स याति परमाङ्गतिम् । लक्षन्तुजपतः पुण्यङ्कोटिर्भवति सङ्ख्यया ॥ दशकोटिसमम्पुण्यन्धारणाल्लभते नरः । यावदेवशरीरस्थन्तावन्मृत्युर्न्न बाधते ॥ अमन्त्रधारणादेषाङ्गुणा एते प्रकीर्त्तिताः । समन्त्रं धारयेद्यस्तु फलं वक्तुं न शक्यते ॥ ” इति । एवञ्च “ विना मन्त्रेण यो धत्ते स याति नरकन्ध्रुवम् । ” इति निंदा मंत्रप्ररोचनामात्रपरेति शूलपाणिः । अथ ध्यानम्मत्स्यपुराणीयम्—आपीनोरुभुजस्कन्धस्तप्तकाञ्चनसन्निभः । अर्क्कवच्छुक्लरश्मिसमूहयुक्तः चन्द्राङ्कितजटः विभुर्जटामुकुटधारी षोडशवत्सराकृतिः वारणहस्ताभबाहुः वृत्तजङ्घोरुमण्डलः ऊर्द्ध्वकेशः दीर्घायतलोचनः व्याघ्रचर्म्मपरीधानः कटिसूत्रत्रयान्वितः

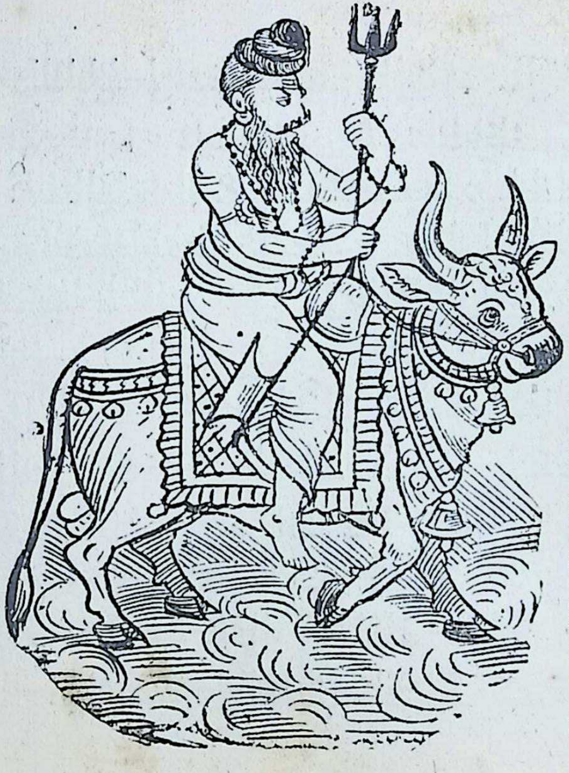

हारकेयूरसम्पन्नः भुजङ्गाभरणः नानाभरणभूषितबाहुः पीनोरुगण्डफलकः कुण्डलद्वयालङ्कृतः आजानुलंबबाहुः सौम्यमूर्त्तिः सुशोभनः दक्षिणैर्ब्बाहुभिद्धृतखड्गशक्तिदण्डशूलवरः वामैर्ब्बाहुभिर्द्धृतखेटककपालनागखट्वाङ्गाक्षमाल इति। शङ्खस्थजलं शिवे निषिद्धं “न शिवं शङ्खधारिणा” इति पात्रविचारप्रकरणलिखितवचनात्। पूजामन्त्रस्तु– “ॐ आवोराजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः। अग्निम्पुरातनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्॥” इति सामगानाम्। “ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥” इति, ॐ नमःशम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥” इति वा यजुर्वेदिनाम्। ॐनमः शिवायेति द्विजातीनाम्। नमः शिवायेति स्त्रीशूद्रयोर्ज्ञेयः। अथ पञ्चोपचाराः—गन्धद्रव्याणि चन्दन अगुरु कर्प्पूर कुङ्कुम पद्म

काष्ठ–उशीर–कस्तूरी–कालेयक–कृष्णागुरु–शिह्लाक–आत्मेष्ट–इत्येतानि पुष्पाणि । अपराजिता–अपामार्ग–अर्क्क–अर्ज्जुन–अशोक–उदुम्बर–उशीर–करहाट–कारिका–कदम्ब–करवीर–कर्णिकार–कह्लार–काञ्चनाल–काश–किङ्किरात–कुङ्कुम–कुटज–कुब्जक–कुमुद–कुरबक–कुश–कूष्माण्ड–कुसुम्भ–केशर–कैरव–गिरिमल्लिका–चम्पक–चित्रक–चूत–जया–जाती–तगर–तिल–दमनक–द्रोण–धवल–धत्तूर–नागकेशर–नीलोत्पल–नेपाली–पद्म–पलाश–पाटला–पुंनाग–बाण–बृहती–भृङ्गराज–मंदार–मल्लिका–मोकन–रक्तोत्पल–वक–वकहुल–बकुल–विचकिल–विजय–बिल्व–शण–शमी–शाल्मली–शिखिनी–शिंशपा–श्वेतपद्म–श्वेतमंदार–सेवन्ती–स्थलकमल–इत्येतानि विहितानि भविष्ये–"कनकानि कदम्बानि रात्रौ देयानि शङ्करे । दिवाशेषाणि पुष्पाणि दिवारात्रौ च मल्लिका ॥" इति विशेषः । अत्र दमनकं चैत्रशुक्लचतुर्द्दश्यांविहितम् । वैशाखादिद्वादशसु मासेषु यथाक्रमं पाटलया १ पद्मैः २ बिल्वकह्लारैः ३ नवमल्लिकया ४ कदम्बचम्पकैः ५ पंकजजातीभ्याम् ६ शतपत्रिकया ७ नीलोत्पलैः ८ कुब्जकैः ९ कुन्दैः १० मरुवकेन ११ शतपत्रैः १२ पूजासर्वयज्ञसर्व्वदानफला अङ्कोल–करञ्ज–कुन्द–केतकी–धातकी–निम्ब–बंधूक–भंटिका–मञ्जिष्ठ–मदन्तिका–माधवी–विभी

तक–यूथिका–शिरीष–श्वेतपाटला–श्वेतापराजिता–सर्ज्ज–सिन्दुवाराणां पुष्पाणि पत्राणि च निषिद्धानि वर्षव्यापिशिवपूजायाम्–कुन्दपुष्पम्माघे विहितमन्यथा तु निषिद्धम्माघेपि शूलपाणौ तु–दमनकपुष्पञ्चशिवशयनादारभ्य फाल्गुनान्तं यावदेव निषिद्धमित्युक्तम् पत्राणि तु–अपामार्ग्ग उदुम्बरविभीतकबिल्वशमीनां विहितानि विहितपुष्पपत्रालाभेन्येनापि निषिद्धवर्जितेन पूजा कार्य्या तदलाभे विहितपुष्पवृक्षीयपत्रैः तेषामप्यलाभे फलेन तदलाभे तृणगुल्मौषधितण्डुलजलैः तदलाभे मानसी पूजाकार्य्या । धूपास्तु–गुग्गुलु–सघृतमहिषाख्यगुग्गुलु–कृष्णागुरु–श्रीवास–सघृतबिल्व–अगुरु–कुंदुरु–देवदारु–सौगन्धिक–बिल्वकर्पूरागुरु–सर्ज्ज–महिषाख्यगुग्गुलु–साज्यदधित्थजा विहिताः।सक्षीरगुग्गुलुश्चामावास्यायां विहितः । चिन्तामणौ तु–सघृतगुग्गुलुरपि धूपे विहितः । दीपे घृतं विहितन्तैलन्निषिद्धम् नैवेद्यं मांसेतरं सामान्यप्रकरणे उक्तमेव विशेषतस्तु कृत्यप्रदीपे । गुडखण्डस्य घृतानाम्भक्ष्याणाङ्घृतपाचितानां वा निवेदने शतगुणफलं सुपक्वमातुलुङ्गादिदानेप्येतदेव फलम् । शिवस्तुतौ जपे च तदेवफलमुक्तम् । अथारात्रिका विद्यापतिठक्कुरकृतशिवसर्व्वस्वे–"करोत्यारात्रिकं यस्तु बहुभावपुरःसरः । प्राप्य ज्ञानम्प्रयाणान्ते गमिष्यत्यक्षयम्पदम् ॥" आरात्रिका आरतिरिति

प्रसिद्धा एवञ्च अद्यप्रयाणकालोत्तरतत्त्वज्ञानप्राप्तिपूर्व्वकाक्षयपदगमनकामनया भगवतः शिवस्यारात्रिकमहङ्करिष्ये । इति संकल्पः कार्य्यं इति । अथ नमस्कारः–“प्रणम्य दण्डवद्भूमौ नमस्कारेण योर्च्चयेत् । स यां गतिमवाप्नोति न तत्क्रतुशतैरपि ॥” भविष्ये– “जानुभ्याञ्चैव पाणिभ्यां शिरसा च विचक्षणः । कृत्वा प्रणामं सर्व्वेशेसर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ तीर्थकोटिसहस्राणि तीर्थकोटिशतानि च । महादेवप्रणामस्य कलान्नार्हांति षोडशीम् ॥ गौडनिबन्धे–शिवपूजने मुखवाद्यमतिप्रशस्तम् “गन्ध पुष्पनमस्कारैर्मुखवाद्यैश्च सर्वतः । योमामर्च्चयते तत्र तस्य तुष्याम्यहं सदा ॥ ” इति शिवपुराणादिति । प्रयोगस्तु–अक्षतान्गृहीत्वा जलातिरिक्ते पूर्व्वोक्ताधारे ओं भूर्भुवःस्वर्भगवञ्छिव इहागच्छे इहतिष्ठेत्यावाह्य यथाधिकारम्मन्त्रमुच्चार्य्य तद्विना वा ओं शिवाय नम इति पाद्यादिभिः पूजयित्वा अर्द्धप्रदक्षिणीकृत्य प्रणम्य स्तुत्वा ध्यात्वा ओं भगवञ्छिव पूजितोसि प्रसीदेति प्रसाद्य स्वस्थानङ्गच्छेति विसर्ज्जयेत् । ओं चण्डेश्वराय नम इति निर्म्माल्यन्त्यजेत् । दाक्षिणात्यनिबन्धे सिद्धान्तशेखरे–“ धराहिरण्यगोरत्नताम्ररत्नांशुकादिकान् । विहाय शेषनिर्माल्यञ्चण्डेशाय निवेदयेत ॥ ” इत्याद्युक्त्वा “ लिंगे स्वयम्भवे बाणे रत्नजे रसनिर्मिते । सिद्धप्रतिष्ठिते चैव न चण्डाधिकृतिर्भवे

त् ॥ ” इत्यभिहितं ततो नैवेद्यम्भस्माङ्गेभ्यः प्रतिपादयेदिति एतन्नैवेद्यस्याभक्ष्यत्वे पद्मपुराणीयशिववाक्यम्–“अनर्हम्मम नैवेद्यम्पत्रम्पुष्पम्फलञ्जलम् । शालग्रामशिलालग्नं सर्व्वं याति पवित्रताम्॥” इति शूलपाणिः । स्मृतिदीपिकायां बाणलिङ्गनैवेद्यस्य भक्ष्यत्वमुक्तम् । बाणलिंगम्प्रकृत्यशिवनारदसंवादे “ ग्राह्याग्राह्यविचारोत्र शिवलिंगे न विद्यते । ’ तन्नैवेद्यादिकङ्ग्राह्यमित्यर्थः । इतिशब्देन दाक्षिणात्यास्तु–शैवसौरनिर्म्माल्यनैवेद्यभक्षणे चान्द्रायणमित्युक्त्वा । “शालग्रामोद्भवे लिंगे बाणलिंगे स्वयम्भुवि । रसलिंगे तथार्षे च सुप्रसिद्धप्रतिष्ठिते ॥ हृदये चन्द्रकान्ते च स्वर्णरौप्यादिनिर्म्मिते । शिवदीक्षावता भक्तेनेदम्भक्ष्यमितीर्य्यते ॥ ” तथा–“बाणलिंगे स्वयम्भूते चन्द्रकान्ते हृदि स्थिते । चान्द्रायणसमं ज्ञेयं शंभोर्न्नैवेद्यभक्षणम्॥ ” इत्युक्त्वा “ यत्र चण्डाधिकारोस्ति तद्भोक्तव्यन्न मानवैः । चण्डाधिकारो नो यत्र भोक्तव्यं तच्च भक्तितः ॥ ” इत्युक्तवन्तः । लिंगद्वयमेककाले एकेन पुरुषेण नार्च्चनीयम् “ गृहे लिंगद्वयन्नार्च्यं शालग्रामद्वयन्तथा । द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्य्यद्वयन्तथा ॥ शक्तित्रयन्तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च । द्वौ शङ्खौ नार्च्चयेच्चैव भग्नाश्च प्रतिमान्तथा ॥ नार्च्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकन्तथा । ” इतिविष्णुधर्मोक्तेरित्युक्तवन्तश्च । गौडनिबन्धे बृहन्नारदीये–नमे

यः शूद्रसंस्पृष्टं लिंगं वा हरिमेव वा । स सर्वयातनाभोगी यावदाभूतसंप्लवम् ॥" इति पूजापङ्कजभास्करे शिवपूजाकथनन्नाम पंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

अथविष्णुपूजा । तत्प्रशंसा यथा अग्निपुराणे–येर्च्चयन्ति सदा विष्णुन्निश्चलेनान्तरात्मना । न ते भूयोभिजायन्ते श्वेतद्वीपनिवासिनः ॥ निवासिन इत्यस्य भवन्तीति शेषः । भविष्यपुराणे–"ये पूजयन्ति तन्देवं शङ्खचक्रगदाधरम् । वाङ्मनःकर्म्मभिः सम्यक्ते यान्ति परमम्पदम्॥" विष्णुपुराणे–भौमान्मनोरथान्स्वर्गं स्वर्गिवंद्यं तथापदम् । प्राप्नोत्याराधिते विष्णौ निर्वाणमपि चोत्तमम् ॥" भौमान् ऐहिकान् । नरसिंहपुराणे–"ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजातयः । सम्पूज्य तं सुरश्रेष्ठम्भक्त्या सिंहवपुर्द्धरम् । मुच्यन्ते चाशुभैर्दुःखैर्ज्जन्मकोटिसमुद्भवैः ॥" तथा-नरके पच्यमानस्य यमेन परिभाषितम् । किंत्वया नार्चितो देवः केशवः क्लेशनाशनः ॥ अलाभे चान्यद्रव्याणामुदकेनापि पूजितः । यो ददाति स्वकं लोकं स त्वया किन्न पूजितः"इति अनाश्रमिणाम्भगवत्पूजायान्नाधिकारः नरसिंहपुराणे–अनाश्रमित्वं गृहभङ्गकारणं ततो गृहाणाश्रममुत्तमन्द्विज । अनाश्रमस्थैर्द्विज वेदपारगैः कृतन्त्वहन्नानुगृह्णामि चार्च्चनम् ॥ " इति भगवद्वाक्यात् । शालग्रामे भ

गवत्पूजातिप्रशस्ता वाराहे–कुड्ये लेख्ये च मे कश्चित्पटे कश्चित्तु मानवः । पूजयेद्यदि वा चक्रे मम तेजोंशसम्भवम् ॥ पद्मे मे पूजनं शस्तं शस्तं चैव तु स्थण्डिले । ” इति भगवद्वाक्यात् । चक्रे शालग्रामशिलाभवे।विष्णुपूजाकल्पलतायाम्पौराणिकी गाथा–“शालग्रामशिला यत्र यत्र द्वारावती शिला। उभयोः सङ्गमो यत्र तत्र सन्निहितो हरिः ॥ येषान्नास्तीह वै मंत्रो न दीक्षा न विधिक्रमः । न तेषामपि बाधोस्ति शालग्रामशिलार्च्चनम् ॥ अगम्यागमने पापन्तथा विश्वासघातने। तत्सर्व्वन्नाशयत्याशु शालग्रामशिलार्च्चनम्॥”इत्यादि । लिङ्गपुराणे–“कामासक्तोपि यो नित्यम्भक्तिभावविवर्ज्जितः । शालग्रामशिलाचक्रम्पूजयेत्सोच्युतो भवेत् ॥ लिङ्गकोटिसहस्रैस्तु पूजितैर्य्यत्फलं लभेत् । तत्फलङ्कोटिगुणितं शालग्रामशिलार्च्चने ॥ द्वादशेह शिला यो वै शालग्रामसमुद्भवाः । अर्च्चये द्वैष्णवो नित्यन्तस्य पुण्यं निबोध मे ॥ कोटिलिङ्गसहस्रैस्तु पूजितैर्ज्जाह्नवीतटे । काशीवासो युगान्यष्टौ दिनेनैकेन तद्भवेत्॥ततो बह्वीरर्च्चयेद्यः शालग्रामशिला नरः । नहि ब्रह्मादयो देवाः सङ्ख्याञ्जानन्ति तत्फले।” इत्यादिशिववाक्याच्च । गौडीयनिबन्धे पूजाधारमाह “शालग्रामे मणौ यन्त्रे स्थण्डिले प्रतिमादिषु । हरेः पूजा तु कर्त्तव्या केवले भूतले न तु॥” इति तदीयनिबन्धान्तरे–भागवतसम्मोहनतन्त्रयोः–“शैली दा

रुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता ॥ चलाचलेति द्विविधा प्रतिष्ठा जीवमंदिरम्॥"तथा–"उद्वासावाहने न स्तः स्थिरायामुद्धवार्च्चने । अस्थिरायां विकल्पः स्यात्स्थंडिले च भवेद्द्वयम् ॥" इति अस्यार्थः स्थिरत्वेन प्रतिष्ठापितायां शैलीप्रभृतिप्रतिमायामर्च्चने उद्वासो विसर्ज्जनम् ; आवाहनञ्च न स्यात् । अस्थिरायाञ्चलायां विकल्पः स च व्यवस्थितः शालग्रामादिशिलादौ स्वभावतो देवतासन्निधानात् कृतप्रतिष्ठासंस्कारकप्रतिमादौ च संस्कारेणदेवतासन्निधानाच्च प्रतिष्ठामुद्वासनञ्च न कुर्य्यात् । सैकत्यामल्पकालस्थायिन्याम्मूर्त्तौ च ते कुर्य्यादेव । स्थण्डिले तु द्वयम्भवेत् । प्रतिष्ठावाहने स्यातां वा न वेत्यर्थः । गृहादौ स्थण्डिले कुलदेवतामेकदा प्रतिष्ठाप्य पुनः प्रतिष्ठां विसर्ज्जनञ्च विनैव पूजयेत् । यज्ञादिग्रहवेद्यादौ ग्रहादिप्रतिष्ठाविसर्ज्जने भवेतामेवेति । ध्यानं तु–ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्त्ती " इत्यादिपुरुषसूक्तषोडशोपचारपूजायां वक्ष्यमाणञ्ज्ञेयम् । पूजामन्त्रस्तु–" ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्यपांसुले"।इति छन्दोगानाम् । ॐविष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोस्यूरसि । विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ " इति यजुर्व्वेदिनाम् । ॐ नमो नारायणायेति । ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति

च द्विजातीनाम् । अर्घे नरसिंहपुराणम्–" आपः क्षीरङ्कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा । यवाः सिद्धार्थकाश्चैव अर्घोऽष्टांगः प्रकीर्तितः ॥ अक्षताश्चात्रामतण्डुलाः । यत्तु । " न बिल्वैरर्च्चयेत्सूर्य्यन्न तुलस्या गणाधिपम् । नाक्षतैः पूजयेद्विष्णुन्न शिवं शङ्खवारिणा । " इति वचनात्तान्निर्म्मूलंसमूलत्वेप्यर्घातिरिक्तपरमिति शूलपाणिः । सिद्धार्थकाः सितसर्षपाः स चार्घः सतिसम्भवे शङ्खेन देयः गारुडे–शंखेनेत्युपक्रम्य " सपुष्पं वारिणा चार्घन्दूर्वाक्षतसमन्वितम् ;। यो दद्याद्वासुदेवस्य तस्य श्रीः सर्व्वतोमुखी ॥ " इतिवचनात् । दक्षिणावर्त्तशङ्खस्तु अर्घादिदानेतिप्रशस्तः " दक्षिणावर्त्तशंखस्थतोयेन योर्च्चयेद्धरिम् । सप्तजन्मकृतम्पापन्तत्क्षणादेव नश्यति ॥ " इति गौडधृतस्कांदवचनात् । विद्याकरपद्धतौ प्रह्लादं प्रति भगवद्वाक्यम्– ॥ " वाद्यानामपि देवस्य तन्त्रीवाद्यं सदा प्रियम् । किं वादित्रसहस्रैस्तु पुरतो वै ममाग्रतः ॥ नागारिचिह्निता घण्टा प्राप्यते यदि कर्हिचित् । नागारिचिह्नितां घण्टां रथाङ्गेन समन्विताम् । वादयन्कुरुते नाशञ्जन्ममृत्युजरापदाम् ॥ " तथा–यस्तु वादयते घण्टां वैनतेयेन संयुताम् । धूपे नीराजने स्नाने पूजने च विलेपने ॥ ममाग्रे लभते पुण्यञ्चान्द्रायणशतोद्भवम् । वैनतेयाङ्कितां घण्टां सुदर्शनसमन्विताम् ॥ ममाग्रे, स्थापयेद्यस्तु तस्य देहे वसाम्य

हम् । ममनामाङ्किता घण्टा मत्पुरो यत्र तिष्ठति ॥ अन्तिके वैष्णवे गेहे तत्र मां विद्धि दैत्यज । मदीयार्च्चनवेलायां घण्टावादं शृणोति यः । शाम्यन्ति तस्य पापानि शतजन्मार्जितान्यपि ॥ ” विष्णोः स्नानीयदाने शंखः प्रशस्तः विष्णुधर्म्मोत्तरे शंखमाहात्म्ये–“शंखस्थितेन तोयेन यः स्नापयति केशवम् । कपिलानां सहस्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात् ॥ ” इति वचनात् । तथा विलेपयति देवेशं शंखे कृत्वा तु चन्दनम् । परमात्मा पराम्प्रीतिङ्करोति शतवार्षिकीम् ॥ ” तथा–तुलसीदललग्नेन चन्दनेन जनार्द्दनम् । विलेपयति यो नित्यं लभते चिन्तितम्फलम् ॥ ” नित्यचन्दनदानेपि गुणविधिरयम् । अथ पञ्चोपचाराः–तत्र गन्धद्रव्याणि श्रीखण्डचन्दन अगुरु कर्प्पूर कुङ्कुम उशीर पद्मकाष्ठ कालेयक सिह्लकरक्तचंदनानि । अग्निपुराणे–“ चंदनागुरुकर्प्पूरकुङ्कुमोशीरपद्मकैः । अनुलिप्तोहरिर्भक्त्या वरान्भोगान्प्रयच्छति ॥ कालेयकन्तुरुष्कञ्च रक्तचंदनमेवच । नृणाम्भवंति दत्तानि पुण्यानि पुरुषोत्तमे–इत्यभिधानात् । कालेयकङ्कृष्णागुरुः । तुरुष्कं सिह्लकम् । गौडनिबंधे विष्णुधर्मोत्तरे–“दारिद्र्यं पद्मकङ्कुर्य्यादस्वास्थ्यं रक्तचन्दनम् । उशीरं चित्तविभ्रंशमन्ये कुर्य्युरुपद्रवम् ॥ ” इति रक्तचंदननिषेध उक्तः स चाप्रामाणिकः अन्ये कुर्य्युरुपद्रवमि

Nepal Sanşkrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

त्युक्त्या विष्णौ चंदनदानाभावप्रसङ्गात् । तुलसीकाष्ठचन्दनं चास्यातिप्रियम् "यथा विष्णोः सदा हृद्यं नैवेद्यं शालिसम्भवम् । कापिलञ्च यथा क्षीरं तथा तुलसिचंदनम् ॥ यो यच्छति सदा विष्णौ तुलसीदारुचन्दनम् । स्वदेहे धारयेद्यस्तु सुराणां स यथा हरिः ॥" इति ब्रह्मांडपुराणे गरुडम्प्रति नारदवाक्यात् । श्रीदत्ताह्निके तु—कस्तूरिकाजातीफले च गन्धद्रव्ये उक्ते । हरिभक्तिदीपिकायान्तु । "यान्यात्मनः सदेष्टानि तानि शस्तान्युपाकुरु ।" इति वचनादात्मेष्टमधिकमुक्तम् । अनुलेपानंतरञ्चामरैर्व्यजनैश्च वीजनङ्कुर्यात् । "ततो भगवतः कुर्यादनुलेपादनंतरम् । विद्वान्विचित्रैर्व्यजनैश्चामरैरपि वीजनम् ॥" इति वचनात् । गौडनिबंधे कालिकापुराणे—गंधो मलयजो यस्तु दैवे पित्र्ये च स स्मृतः । तत्पक्वो वा रसो वापि चूर्णो वा विष्णुतुष्टिदः ॥" तथा—" अनुलिप्तजगन्नाथं तालवृंतेन वीजयेत् । वायुलोकमवाप्नोति पुरुषस्तेन कर्मणा ॥" इत्यभिहितम् । पुष्पाणि तु—अगस्त्य अतिमुक्त अपराजिता अपामार्ग्ग अशोक गौडनिबंधधृत अङ्कोट अम्लान अवंती अष्टापद आम्रातक आम्रमञ्जरी सर्व्ववर्णोत्पल कदंब करञ्ज करवीर कर्णिकार किंशुक कुङ्कुम कुंद कुब्जक कुमुद कुरुंट कुरुबक कुश कूष्मांड कुसुंभ केतक खदिर चम्पक चारुपुट जवा जम्बू जया जाती गौडधृतश्वेतजवाप्रसिद्ध

जम्बूवनज तगर तिलक पीत श्वेतरक्तत्रिसंध्या तुलसी दमन द्रोण धावक नन्द्यावर्त्त नवमालिका नागकेशरनीपनेपालिका पद्म पाटला पारिभद्र पीतकस्वर्णजुहीप्रसिद्ध पीतिका पुन्नाग गौड धृत हरिद्रा प्रसिद्ध पिङ्गक पुङ्गवी प्रसिद्ध पुरंध्रीबंधूक बाण भृंगराज भूचंपक मदन मणिपुष्प मरुवक मल्लिका मालती गौडधृत मधुपिंगल मधुपिंडिका माषवृन्तक यूथी वक बकुल लवंग प्रसिद्ध वनज शतपत्र शतपुष्पिका शतङ्गा शतावरी शमी शाल शिरीषगौडनिबन्धधृतचुडिआ प्रसिद्ध शिखिनी श्वेतजवा शंश वाकसप्रसिद्ध सिंहास्य सेवंती सुवर्ण सौगंधिकानां विहितानि निषिद्धानि तु—अर्क्क कण्टकारीगौडधृत करवीरप्रसिद्ध क्रकर काञ्चनाल कुटज गौडधृत केतकी कृष्णजयन्तीगिरिकर्णिका श्वेता पराजिताप्रसिद्ध फिण्टी धत्तूर मंदार बिभीतकशक्शाल्मलीगौडधृतशिरीषपुष्पाणि । अशोककरवीरकुंकुमकुशकुसुंभजलजत्रिसन्ध्यापलाशपाटलापारिभद्रशमीवर्ज्जरोहितपुष्पाणि सितसुरभिवर्ज्जकण्टकीयपुष्पाणि च । केतकी नृसिंहेतरविष्णुमूर्तौ निषिद्धा काम्ये च केतकीद्वयंविहितम् । पत्राणि तु—अपामार्ग्गआमलकीकुशकेतकीगौडधृतकुम्भी खदिरभृङ्गरजभृङ्गराजमरुवकवकबिल्वशमीगौडीयशेफालीसर्व्ववनस्पतीनां विहितानि । धूपास्तु—स

शर्क्करसाज्यमहिषाख्यगुग्गुलुजटामासीगुग्गुलुदेवदारुसिह्लकसागुरुकर्प्पूरनखीजातीफलसकर्प्पूरकृष्णागुरुसाज्यसगन्धगुग्गुलुरूपा विहिताः। "महिषाख्यं गुग्गुलुम् आज्ययुक्तं सशर्क्करम्। धूपन्ददाति राजेन्द्र नरसिंहाय भक्तिमान्। स धूपितः सर्व्वदिक्षु सर्व्वपापविवर्जितः। अप्सरोगणयुक्तेन विमानेन विराजता। वायुलोकं समासाद्य विष्णुलोके महीयते॥" वामनपुराणे—"हिरुकाख्यङ्कणन्दारुसिह्लकं सागुरुं सितम्। शंखञ्जातीफलं श्रीशे धूपानि स्युः प्रियाणि वै॥" इत्यभिधानाच्च। हिरुकाजटामासी। कणो गुग्गुलुविशेषः। सागुरु इत्यगुरुसहितः। सितः कर्प्पूरः। शङ्खं नखी। स्कन्दपुराणे—"ये कृष्णागुरुणा कृष्णन्धूपयन्ति कलौ नराः। सकर्प्पूरेण राजेन्द्र कृष्णतुल्या भवन्ति ते॥ साज्येन गुग्गुलेनापि सगन्धेन जनार्द्दनम्। धूपितेन नरो याति पदम्भूप सदाशिवम्॥" इत्यभिधानाच्च। कस्तूरिकातिरिक्तजीवजातधूपो विष्णवे न देयः। "न धूपार्थे जीवजातम्" इति विष्णुनाभिधानात्। विष्णुधर्म्मे—"विना मृगमदन्धूपे जीवजातं विवर्ज्जयेत्। न यक्षधूपं वितरेन्माधवाय कदाचन॥" इत्युक्तेश्च। दीपे घृतं तिलतैलं वा देयम् "घृतेन वापि तैलेन दीपं यो ज्वालयेन्नरः। विष्णवे विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु॥ विहाय सकलम्पापं सहस्रादित्यस

न्निभः । ज्योतिष्मता विमानेन विष्णुलोके महीयते ॥ ” इति नरसिंहपुराणात् । कर्प्पूरदीपदानेश्वमेधः कुलोद्धारश्च फलम् “प्रज्वाल्य देवदेवस्य कर्प्पूरेण तु दीपकम् । अश्वमेधमवाप्नोति कुलञ्चैव समुद्धरेत् ॥ ” इति कालिकापुराणात् । “ नैवेद्यानि तु भक्ष्यभोज्यादीनि सामान्यप्रकरणे उक्तानि । विशेषतस्तु कृत्यप्रदीपे–फलेषु बदर खर्ज्जूरआमलकीप्राचीनामलकआम्रपनसपुन्नागबीजपूरकूष्माण्डतालकदलकर्क्कटीपटोलद्वयानि । अन्नेषु–हविःसंस्कृतयवगोधूमशालितिलमुद्गव्रीहिमाषकुलित्था अन्यान्यपि यज्ञियान्यन्नानि विहितानि । वामनपुराणे–“ हविषा संस्कृता ये च यवगोधूमशालयः । तिलमुद्गादयो माषा व्रीहयश्च हरेः प्रियाः ॥ ” इत्युक्तेः । मुद्गादय इत्यादिपदेनायज्ञियमसूरादिव्यावृत्तशस्यग्रहणम् । अयज्ञिया अपि माषाः पृथगुपादानाद् ग्राह्याः । कुलत्थाश्च वराहपुराणेभिधानादिति श्रीदत्ताह्निकम् । दधिदुग्धघृतानि तु गव्यानि विहितानि । गव्यान्यपि अनिर्द्दशाया विवत्साया अन्यवत्सायाः स्यन्दिन्या यमप्रसूतवत्या अमेध्यभुजश्च निषिद्धानीति कृत्यप्रदीपः । “ नाभक्ष्यन्नैवेद्यार्थे भक्ष्येष्वप्यजामहिषीक्षीरे ” इति विष्णुवचनात्, माहिषश्चाविकश्चाजमयज्ञियमुदाहृतमिति । वराहपुराणाच्च अजामहिषीमेषीदधिदुग्धघृतानि निषिद्धानि । मांसेषु–हरिण छाग शश

रुरु तृणमयूर लावक वर्त्तक हारीत टिट्टिभ कुरर वनकपोत मांसानि पक्कानि विहितानि । पञ्चनखमत्स्यवराहमांसानि न देयानि।मृडालमूलशाकचुञ्चुशाकतिन्तिडीशाकानि विहितानीति कृत्यप्रदीपः । वस्त्रन्तु–दुकूलपट्टकौशेयवार्क्षकार्प्पासानि विहितानि " दुकूलपट्टकौशेयवार्क्षकार्प्पासकादिभिः । वासोभिः पूजयेद्देवङ्कुसुमैरात्मनः प्रियैः ॥ इत्यग्निपुराणेभिधानात् । नीलं रक्तञ्च निषिद्धम् । विष्णुपूजामुपक्रम्य " न वासो नीलरक्तम् " इति विष्णुनाभिधानात् । रक्तमित्यस्य दद्यादिति शेषः । पीतम्प्रशस्तम् । अग्निपुराणे–" योगपीठं समभ्यर्च्च्य समावाह्य हरिं यजेत् । पाद्यार्घाचमनीयञ्च पीतवस्त्रं विभूषणम्॥" इत्यभिधानात् । गौडनिबन्धे कालिकापुराणे–"कार्प्पासं सर्व्वतो भद्रन्दद्यात्सर्वेभ्यएव तु । नैकान्तरक्तन्दद्यात्तु वासुदेवाय चेलकम् ॥ " तथा–" तत्पूर्व्वम्पूजयित्वैव मन्त्रैर्द्देवाय चोत्सृजेत् । निर्दशम्मलिनञ्जीर्णञ्छिन्नङ्गात्रावलिङ्गितम् ॥ " परकीयञ्चाखुदष्टं सूचीविद्धन्तथोषितम् । उप्तकेशं विधूतञ्च श्लेष्ममूत्रादिदूषितम् ॥ " उप्तकेशं केशेन सह वापितम् । तथा–" वर्ज्जयेत्स्वोपयोगेन यज्ञादावुपयोजने । पताकाध्वजवस्त्रादौ स्यूतं वस्त्रं निवेदयेत् ॥ " इत्युक्तं स्मृतिदीपिकायाम् । स्कन्दपुराणे–" गीतं वाद्यञ्च नृत्यञ्च तथा पुस्तकवाचनम् । पूजाकाले तु विप्रेन्द्र सर्व्वदा केशवप्रि

यम् । गीतनृत्याद्यभावेपि कुर्य्यात्पुस्तकवाचनम् । पूजाकाले मुक्तिदस्य गीताध्यायमनुस्मृतम ॥ पञ्चस्तवम्महाराज महाप्रीतिकरं हरेः । स्तोत्राणाम्परमं स्तोत्रं विष्णोर्न्नामसहस्रकम् ॥ हित्वा स्तोत्रसहस्राणि पठनीयम्महामुने । तेनैकेन मुनिश्रेष्ठ पठितेन सदा हरिः ॥ प्रीतिमायाति देवेशो युगकोटिशतानि च । विहाय गीतवाद्यानि पूजाकाले सदा हरिः । परिपूर्णं भवत्याह सहस्राख्यानकीर्तनात् ॥" इत्यादिवचनात्पुस्तकवाचनम्पूजाकालेवश्यंविधेयम् । पुस्तकवाचनम्पुराणश्रवणन्तत्पाठश्च । पञ्चस्तवं गीत नृत्य वाद्य पुस्तकवाचनं गीताध्यायपाठश्चेति पञ्चकम् विहाय अनादृत्य । कीर्त्तनात्पूर्णं सर्व्वम्भवतीत्याह हरिः । गानं स्तोत्रस्य गीतस्य वा । गौडनिबन्धे—"ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् । महानीराजनङ्कुर्य्यान्महावाद्यजयस्वनैः ॥ प्रज्वालयेत्तदर्थञ्च कर्पूरेण घृतेन वा । आरात्रिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्त्तिकम् ॥" इति । तन्माहात्म्यं स्कान्दे ब्रह्मनारदसंवादे—"बहुवर्त्तिसमायुक्तञ्ज्वलन्तङ्केशवोपरि । कुर्य्यादारात्रिकं यस्तु कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥ कर्प्पूरेण तु यः कुर्य्याद्भक्त्या केशवमूर्द्धनि । आरात्रिकम्मुनिश्रेष्ठ प्रविशेद्विष्णुमव्ययम्॥" तत्रैव--शिवोमासंवादे "मन्त्रहीनङ्क्रियाहीनं यत्कृतम्पूजनं हरेः । सर्व्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ॥ " इत्यभिहितम् ।

विष्णवे देयमात्रदाने विष्णुधर्म्मोत्तरे–"अक्षयो भगवान्विष्णुः परमात्मा सनातनः। तमुद्दिश्य च यद्दत्तमक्षयन्तत्प्रकीर्तितम्॥" इतिदर्शनात्। ब्राह्मणसम्प्रदानकतत्तज्जातीयवस्तुदानजन्यफलसमाक्षयफलप्राप्तिस्वर्गलोकगमनकामनया तत्तद्वस्तुभगवते देयम्। कामनाविरहे तु महाफलमुक्तन्तत्रैव–" अकामश्चैव यो लोको यत्किञ्चिद्विनिवेदयेत्। तेनैव स्थानमाप्नोति यत्र गत्वा न शोचति॥ धर्म्मवाणिजका मूढाः फलकामा नराधमाः। अर्च्चयन्ति जगन्नाथन्ते कामान्प्राप्नुवन्त्यथ। अन्तवत्तु फलन्तेषान्तद्भवत्यल्पचेतसाम्॥" तथा–" पञ्चाम्प्रतीच्छते देवः स कामेन निवेदितम्। मूर्द्ध्ना प्रतीक्षते दत्तमकामेन द्विजोत्तमाः॥" इति। देवपित्रादिदत्तञ्च विष्णवे न देयम् " अपि दीपावलोकम्मे नोपयुञ्ज्यान्निवेदितम्।" इत्यादिभागवतात्। निवेदितमन्यदेवादिभ्यः। तथा चान्यनिवेदितं विष्णवे न दद्यादित्यर्थः। अस्य पूजाप्रयोगस्तु–तिलान्गृहीत्वा यथोक्तरूपं विष्णुन्ध्यात्वा ओंभूर्भुवःस्वर्भगवन्विष्णो इहागच्छेत्यावाह्य इह तिष्ठेति स्थापयित्वा पूर्व्वोक्तमन्त्रमुच्चार्य्य एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि। ओं विष्णवे नमः इदमनुलेपनमिति, एष गन्धः इति वा। ओं विष्णवे नमः एते यवतिलाः। ओं विष्णवे नमः एतानि पुष्पाणि, इदम्पुष्पं वा। ओं विष्णवे नम

इति त्रिः एतानि तुलसीपत्राणि । ओँ विष्णवे नमः एवम् एष धूपः एष दीपः एतानि नैवेद्यानि इदन्नैवेद्यं वा । ओं विष्णवे नमः इदमाचमनीयम् । ओं विष्णवे नमः इति पूजयित्वा दीक्षितो जप्त्वाऽदीक्षितस्तु जपमकृत्वैव प्रदक्षिणाचतुष्टयं विधाय प्रणम्य स्तुत्वा ध्यात्वा ॐ भगवन् विष्णो पूजितोसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानङ्गच्छेति विसर्ज्जयेदिति । ततः ॐ विष्वक्सेनाय नमः इतिनिर्म्माल्यं क्षिप्त्वा पादोदकम्पीत्वा पादोदकेन शिरः सम्माज्ज्य नैवेद्यम्भक्षयेत् । अथ पुरुषसूक्तेन विष्णुपूजा—“ जलदेवन्नमस्कृत्य ततो गृहगतः पुमान् । विधिना पुरुषसूक्तेन तत्र विष्णुं समर्च्चयेत् । वैश्वदेवन्ततः कुर्य्याद्बलिकर्म्म यथाविधि ॥” इति नरसिंहपुराणदर्शनात् । पुरुषसूक्तेन विष्णुपूजा कार्या तत्र क्रमः—पूजोपयुक्तवस्तूनि सन्निधाप्याऽभिषिच्य नरसिंहपुराणोक्तं ध्यायेत् ध्यानं यथा—“ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः। केयूरवान्कनककुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥” इति । सदा पूजाकाले जपकाले च सवितृमण्डलपदं तेजःसमूहोप

लक्षकम् । सरसिंजासनसन्निविष्टः । पद्मासनोपविष्टः पद्मोपर्य्युपविशन्नुपविष्ट इनि केचित् । मकरकुण्डलवानिति दाक्षिणात्याः पठन्ति । अत्र शंखेत्याद्युपलक्षणम् । तेन दक्षिणकरद्वये ऊर्द्धाधःक्रमेण पद्म शंखौ वामकरद्वये ऊर्द्धाधःक्रमेण गदाचक्रे इति तात्पर्य्यम् । "ततो .नारायणं ध्यायेदेकाग्रमनसा स्थितः । पद्मशंखगदाचक्रपाणिना दिव्यभूषितम् ।" इति पूजानन्तरविष्णुवचनसंवादात् । दिव्यभूषितं मनोहरहारकेयूरकिरीट कनककुण्डलालङ्कृतञ्जलदनीलङ्कनकाभं वा हृत्पुण्डरीके रविमण्डले वा पद्मासनोपविष्टन्ध्यायेदितितदर्थः । अत्रेदं बोध्यं—हृत्पुण्डरीकं रविमण्डलञ्च सर्व्वासामपि देवतानां स्थानम् " अप्स्वग्नौ हृदये सूर्य्ये " इत्याद्यभिधानादिति । पूजाक्रममाह तत्रैव—"आनुष्टुभस्य सूक्तस्य त्रिष्टुबन्तस्य देवता । पुरुषो यो जगद्बीजमृषिर्न्नारायणः स्मृतः ॥ आद्ययावाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तमम् । द्वितीययासनन्दद्यात्पाद्यञ्चैव तृतीयया ॥ चतुर्थ्यार्घ्यम्प्रदातव्यं पञ्चम्याचमनीयकम् । षष्ठ्या स्नानम्प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रमेव । च यज्ञोपवीतमष्टम्या नवम्या गन्धमेव च । दशम्या पुष्पदानं स्यादेकादश्या तु धूपकम् ॥ द्वादश्या दीपकं दद्यात्त्रयोदश्या चरुन्तथा । चतुर्दश्याञ्जलिङ्कृत्वा पञ्चदश्या प्रदक्षिणाम् ॥ षोडश्योद्वासनङ्कुर्य्याच्छेषकर्म्माणि पूर्व्ववत् । स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्यादा

चमनीयकम् ॥ पण्मासात्सिद्धिमाप्नोति देवदेवं समर्च्चयन् । दद्यात्पुरुषसूक्तेन यः पुष्पाण्यप एववा॥ अर्च्चितं स्याज्जगदिदन्तेन सर्व्वंश्चराचरम् ॥ एतत्पठेत्केवलमेव सूक्तन्दिने दिने भावितकृष्णबुद्धिः । स सर्व्वदुःखानि विहाय वैष्णवं पदम्प्रयात्यच्युततुष्टिकृन्नरः॥ पत्रेषु पुष्पेषु फलेषु तोयेष्वक्रीतलभ्येषु सदैव सत्सु । भक्त्यैकलभ्ये पुरुषे पुराणे मुक्त्यै किमर्थं क्रियते न यत्नः॥”अत्र दिने दिनभावितकृष्ण बुद्धिरित्यस्य प्रकर्षकाष्ठाम्प्राप्ता भगवति प्रीतिप्रापिता तज्जननानुकूलीकृता कृष्णविषयिणी बुद्धिर्य्येनेत्यर्थः । अत्र च दिने दिने इत्यभिधानात्तदनुकल्पविधानाच्च नित्याधिकार इत्यवसीयते । स्नाने इत्यादि पष्ठ्या स्नानानन्तरं सप्तम्या वस्त्रदानानन्तरं त्रयोदश्या चरुदानानन्तरञ्च ततो विराडिति पञ्चम्याचमनीयन्दद्यादित्यर्थः । न चाचमनीयस्य पुनरावृत्त्या षोडशोपचारत्वबाधः उपचारैक्य प्रयोजकाचमनीयत्वैकोपाध्यालिङ्गितत्वादाधिक्याभावात् । शेषकर्म्माणीति प्रयातु भगवान् पुनरागमनाय पुनःसन्दर्शनाय च इति वाच्यमित्यर्थ इति बहवः । अस्मिँश्च कल्पेग्नि पुराणे यद्यप्यङ्गन्यासविधिरुक्तः तथापि स काम्य इति तं विनापि पुरुषसूक्तेन नित्यपूजा विधेया । तथाचाग्निपुराणम्—प्रथमां विन्यसेद्वामे द्वितीयां दक्षिणे करे । तृतीयां वामपादे तु चतुर्थी

न्दक्षिणे तथा ॥ जानुनोः पञ्चमीं वामे षष्ठीन्तु दक्षिणे तथा । सप्तमीं वामकट्यान्तु अष्टमीन्दक्षिणे तथा ॥ नवमीन्नाभिमध्ये तु दशमीं हृदये तथा । एकादशीङ्कण्ठमध्ये द्वादशीं वामबाहुके ॥ त्रयोदशीन्दक्षिणे तु तथास्ये च चतुर्द्दशीम् । अक्ष्णोः पञ्चदशीञ्चैव विन्यसेन्मूर्ध्निषोडशीम् ॥ यथा देहे तथा देवे न्यासङ्कुर्य्याद्विचक्षणः । न्यासेन तु भवेत्सोपि स्वयमेव जनार्दनः । एवं न्यासविधिङ्कृत्वा पश्चाद्यागं समाचरेत् ॥ " इति । अथैतत्प्रयोगः—वामादिकरद्वयचरणद्वयजानुद्वयकटिद्वयनाभिहृदयकण्ठबाहुद्वयमुखचक्षुर्म्मूर्द्धसुप्रत्येकमेकैकामृचं स्वस्य देवस्य च देहे विन्यस्य यथोक्तन्ध्यात्वा सहस्रशीर्षेत्यादिषोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिराद्याः पञ्चदशानुष्टुभोन्त्या त्रिष्टुब्जगसिजम्पुरुषो देवता विष्णवर्च्चने पुरुषस्तुतौ वा विनियोगः इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा । "ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्" । ॐ भगवन्विष्णो इहागच्छ १ । "ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्व्वँय्यद्भूतँय्यच्च भाव्यम् । उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥" इदमासनमत्र तिष्ठ २ । "ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायाँश्च पुरुषः । पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ " इदम्पाद्यम् ३ । ॐ विष्णवे नमः "ॐ त्रिपादूर्द्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभव

त्पुनः। ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनानशने अभि॥” एषोर्घः ४। ॐ ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥” इदमाचमनीयम् ५। “ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्।पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये॥”इदं स्नानीयम् ६। ततस्ततो विराडिति पूर्व्ववदाचमनीयदानम् “ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदाꣳ जज्ञिरेद्धी तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥” इदं वस्त्रम् ७। अत्रापि पूर्व्ववदाचमनीयदानम्। “ॐ तस्मादश्वा अजायन्त येकेचोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥” इमे यज्ञोपवीते ८। अत्रापि पूर्व्ववदाचमनीयदानम्। “ॐ तय्यँज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साद्ध्याऋषयश्च ये॥” एष गन्धः ९। तत एते यवतिलाः। ॐ यत्पुरुषँव्विदधुः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते॥” इदम्पुष्पम् १० इति। त्रिः पूजयेत्। “ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो अजायत॥” एष धूपः ११। ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥” एष दीपः १२। “ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत पद्भ्याम्भूमि

र्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ २ ॥ ऽ। अकल्पयन् ॥ ” एषचरुः १३ इदं नैवेद्यमिति वा। अत्रापि व्वर्पूवदाचमनीयदानम् । “ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसंतोस्यासीदाज्यंग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ ” इति पठित्वाञ्जलिङ्कुर्य्यात् १४। “ ओं सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ ” इति प्रदक्षिणङ्कुर्य्यात् १५। “ ओं यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे सांध्याः सन्ति देवाः॥” १६। इति पठित्वा ओं भगवन्विष्णो क्षमस्वेति विसर्ज्ज्य ओं प्रयातु भगवन्पुनरागमनाय पुनः सन्दर्शनाय चेति वदेदिति। एतदशक्तौ पुरुषसूक्तम्पठित्वा पुष्पाणि जलं वा दद्यात्। श्रीकृष्णानुस्मरणपूर्व्वकम्पाठमात्रं वा कुर्य्यात् । पुरुषसूक्तानन्तरन्नरसिंहपुराणम्–“अनेन विधिना देवः पूज्यते मधुसूदनः। वेदज्ञैरेव नान्यैस्तु तस्मात्सर्व्वहितं वद ॥ ” इतिप्रश्नानन्तरम् “ अष्टाक्षरेणमन्त्रेण नरसिंहमनामयम्। गन्धपुष्पादिभिर्न्नित्यमच्युतम्पूजयेन्नरः ॥ गन्धपुष्पादिसकलमनेनैव निवेदवेत्। अनेनाभ्यर्च्चितो विष्णुः प्रीतो भवति तत्क्षणात् ॥ ” इत्यभिधानादष्टाक्षरेणवेदमन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैस्स्त्रीशूद्रैश्च पूजा विधेया अन्यथा सर्वहितत्वानुपपत्तेः। अत्र केचित्–गन्धपु

ष्पादिभिरित्यभिधानाद्गन्धपुष्पादिकमेवोपचारमिच्छन्ति तन्न पूर्वोक्तषोडशोपचारात्मकेऽर्च्चने प्रतीयमाने मन्त्रान्तरसम्बन्धमात्रपरत्वाद्वाक्यस्थं किञ्चार्च्चनं सम्प्रवक्षामीति प्रक्रमादेकस्यैव षोडशोपचारात्मकस्यार्च्चनस्य मन्त्रभेदाद्भिन्नं प्रकारद्वयमिति युक्तं तस्माद्गन्धपुष्पादिभिरित्यादिशब्दः प्रकारे प्राधान्याद्गन्धपुष्पयोर्व्यपदेश इति छन्दोगाह्निकम् । अत्र चायं विशेषः—"नमोनारायणायेति मन्त्रः सर्व्वार्थसाधकः ।" इतिनरसिंहपुराणोक्तसप्ताक्षरे प्रणवमादौ पठित्वा अष्टाक्षरत्वमुपपाद्य त्रैवर्णिकैः पूजादौ कार्य्यें पठनीयः । स्त्रीशूद्रैस्तु नामित्यादौ दत्त्वाक्षरङ्कृत्वा नान्नारायणाय नम इति पठनीयः अत एव पञ्चरात्रे—" ओंकारांशबहिर्भावेणैव नारायणपदादिभूतबिन्दुमद्बीजेनाष्टाक्षरत्वमुक्तमिति श्रीदत्ताह्निकम् । आगमे तु—प्रणवस्थाने ओमिति चतुर्थं सन्ध्यक्षरं स्त्रीशूद्राणाम्पठनीयमाह । अत्र च कल्पे न्यासादिकन्नास्ति प्रमाणाभावात् किन्तु मूलमन्त्रेणैवावाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानीययज्ञोपवीतवस्त्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्याञ्जलिप्रदक्षिणविसर्ज्जनात्मकषोडशोपचारान् कृत्वा नैवेद्यप्रतिपत्तिं कुर्य्यात् । जपोप्यस्यातिप्रशस्तः " किन्तस्य बहुभिर्म्मन्त्रैः किन्तस्य बहुभिर्ज्जपैः । नमो नारायणायेति मन्त्रः सर्व्वार्थसाधकः ॥ स्नात्वा शुचिर्ज्जपेद्यस्तु नमो नारायणं शतम् । स

याति परमन्देवन्नारायणमनामयम् ॥ ” इति नरसिंहपुराणदर्शनात् । “ एकान्ते विजने स्थाने विष्णवग्रे वा जलान्तिके । जपेदष्टाक्षरम्मन्त्रञ्चित्ते विष्णुन्निधाय वै ॥ आयुष्यधनपुत्रांश्च पशून्विद्याम्महद्यशः। धर्म्मार्थकाममोक्षांश्च लभते जपकृन्नरः ॥ ” इति दर्शनाच्च । तत्रेयञ्जपेतिकर्त्तव्यता—अष्टाक्षरस्यमन्त्रस्य नारायणऋषिर्ग्गायत्रीछन्दः परमात्मा देवता चतुर्व्वर्ग्गसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः इति ऋष्यादीन् स्मृत्वा पूर्व्वोक्तान्नारायणमूर्त्तिन्ध्यात्वा “शुक्लवर्णञ्च ॐकारन्नकारं रक्तमुच्यते । मोकारं वर्णतः कृष्णन्नाकारं रक्तमुच्यते ॥ राकारङ्कुङ्कुमाभंतु यकारम्पीतमुच्यते । णाकारमञ्जनाभंतु यकारम्बहुवर्णकम् ॥इति वचनबोधितवर्णविशिष्टान् वर्णान् ध्यायन् अष्टाधिकं सहस्रं शतन्दशवारं वा जपेत् “सहस्रं वा शतं वापि दशवानुदिनञ्जपेत् । कुर्य्यादष्टाधिकन्तेषामयञ्जप्ये विधिः स्मृतः ॥” इति विद्याकरधृतवचनात् अथ प्रदक्षिणं स्कन्दपुराणे—“अर्घंकृत्वा तु शंखे यः प्रकरोति प्रदक्षिणम् । प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥” इति । पूजाकल्पलतायाम्—“प्रदक्षिणं ये कुर्व्वन्ति भक्तियुक्तेन चेतसा । न ते यमपुरीं यान्ति यान्ति पुण्यकृताङ्गतिम् ॥” विष्णुधर्म्मे—रुक्ममाषकदानस्य फलं विप्राः पदेपदे । यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तानि तानि प्रणश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ इति “तत्सर्व्वं

नश्यते विष्णोरिति पाठान्तरम् । त्रिः प्रदक्षिणे वामनपुराणम् ॥ त्रिः प्रदणिमावृत्य सहाष्टाङ्गप्रणामकम् । दशाश्वमेधस्य फलम्प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥ " इति । चत्वारि केशवे कुर्य्यादिति वचनबोधितप्रदक्षिणचतुष्टये तु पुरुषार्थचतुष्टयलाभः फलमिति शूलपाणिः। अथ नीराजनं गौडनिबंधे—"ततश्च मूलमंत्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् । महानीराजनङ्कुर्य्यान्महावाद्यजयस्वनैः ॥ प्रज्वालयेत्तदर्थञ्च कर्प्पूरेण घृतेन वा । आरात्रिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्त्तिकम् ॥" स्कांदे—बहुवर्त्तिसमायुक्तञ्ज्वलन्तङ्केशवोपरि । कुर्य्यादारात्रिकं यस्तु कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥ कर्प्पूरेण तु यः कुर्य्याद्भक्त्या केशवमूर्द्धनि । आरात्रिकं सुरश्रेष्ठ प्रविशेद्विष्णुमव्ययम् ॥ अथ नमस्कारः तत्र नरसिंहपुराणे—"नमस्कारः स्मृतो यज्ञः सर्व्वयज्ञेषु चोत्तमः । नमस्कारेण चैकेन अष्टाङ्गेन हरिं व्रजेत् ॥ उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा। पद्भ्याङ्कराभ्याञ्जानुभ्याम्प्रणामोष्टाङ्ग इष्यते ॥" इति। विष्णुधर्म्मोत्तरे—"जानुभ्याञ्चैव पाणिभ्यां शिरसा च विचक्षणः । कृत्वा प्रणामन्देवस्य सर्व्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ परमाणूनि यावन्ति ललाटे पुरुषस्य तु । पार्थिवानि भवंतीह नमतो मधुसूदनम् । तावन्त्यब्दानि विप्रेन्द्राः स्वर्गलोके महीयते ॥ " इत्यादि । गौडनिबंधे—कैर्वृताञ्जलिभिर्न्नमुरिति भागवती

यात शिरोऽञ्जलिसँयोगोपि नमस्कारः । कलौ नमस्कारमन्त्रो भागवते"–ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहन्तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्त्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ १ ॥ त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं धर्म्मिष्ठ आर्य्यवचसा यदगादरण्यम् । मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ २ ॥ एवंयुगानुवृत्तिभ्याम्भगवान् हरिरीश्वरः । मनुजैरिज्यते राजन् श्रेयसामीश्वरो हरिः ॥ स्तुत्वा प्रसीद भगवन्निति वन्देत दण्डवत् ॥ " तथा–"शिरोमत्पादयोः कृत्वा बाहुभ्याञ्च परस्परम् । प्रसन्नम्पाहिमामीश भीतम्मृत्युमहार्णवात् ॥ इति भगवद्वाक्यम् । ब्रह्मपुराणे-यत्किञ्चित्क्रियते देव मयासुकृतदुष्कृतम् । तत्सर्व्वन्त्वयि विन्यस्तन्त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम् ॥" इत्यनेन सर्व्वं समर्प्पयेदित्युक्तम् । अथ विसर्ज्जनं तत्र मन्त्रो भागवते--"विधिहीनमहीनं वा यत्किञ्चिदुपपादितम् । क्रियामन्त्रविहीनं वा तत्सर्व्वङ्क्षन्तुमर्हसि ॥ मन्त्रहीनङ्क्रियाहीनं भक्तिहीनञ्जनार्दन । यत्पूजितम्मया देव परिपूर्णन्तदस्तु मे ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानम्पुराणपुरुषोत्तम । यत्र ब्रह्मादयो देवा विशन्ति परमम्पदम् ॥ अपराधसहस्रं यत्क्रियतेहर्निशम्मया । दासोयमितिमाम्मत्वा क्षमस्व मधुसूदन ॥" इति । अथ पादोदकधारणमाहात्म्यं विष्णुधर्म्मो

त्तरे-शालग्रामशिलातोयैर्योभिषेकं समाचरेत् । स स्नातः सर्व्वतीर्थेषु सर्व्वयज्ञेषु दीक्षितः ॥ ” इति । स्कान्दे-अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णोः पादोदकम्पुण्यं शिरसा धारयाम्यहम् ॥ ” इति धारणमन्त्रोयम् । पाने तूदरे धारयाम्यहमित्यूहः कार्य्यः । “हृदिरूपम्मुखे नाम नैवेद्यमुदरे हरेः । पादोदकञ्च निर्म्मार्ल्यम्मस्तके यस्य सोच्युतः ॥ बिभर्त्ति मूर्द्ध्नां निर्माल्यङ्केशवार्च्चाधृतन्तु यः । अनिवेद्य न चाश्नाति तस्य तुष्यति केशवः ॥” इति विष्णुधर्म्मेभिधानात् । दाक्षिणात्यनिबंधे-एतन्निर्म्मार्ल्यन्देवदत्तम्भावयित्वाशिरसिधारयेत् शंखोदकं शिरसि धृत्वा देवतीर्थम्पूजांते वैश्वदेवांते वा शिरसि धार्य्यं पेयञ्च । तत्रक्रमः-विप्रपादोदकम्पीत्वा विष्णुपादोदकम्पिबेत् । शालग्रामशिलातोयमपीत्वा यस्तु मस्तके ॥ प्रक्षेपणञ्च कुरुते ब्रह्महा स निगद्यते । पात्रान्तरेण वै ग्राह्यन्नकरेण कदाचन ॥” इति कमलाकर इति । गौडनिबंधे-“निर्म्मार्ल्यम्मस्तके धार्य्यं सर्व्वाङ्गेष्वनुलेपनम् । नैवेद्यमुपभुञ्जीत दत्त्वा तद्भक्तिशालिने ॥” तद्भक्तिशालिने विष्वक्सेनाय । कालिकापुराणे “यो यद्देवार्च्चनरतः स तन्नैवेद्यभक्षकः ।” ब्रह्मपुराणे-“अम्बरीषनवंव्वस्त्रम्फलमन्यद्रसादिकम् । कृत्वा कृष्णोपभोग्यन्तु सदा सेव्यं तु वैष्णवैः ॥ ” तत्रैककर्त्तारि त्वाश्रवणात् स्वदंत्तनैवेद्यभक्षणेप्यधिकार

उक्तः केवलं सौरशैवे तु वैष्णवो नैव भक्षयेत् । विष्णुयामले—"पीत्वा पादोदकन्देवि नैवेद्यं स्वयमुद्धरेत् । त्यजेत्पादोदकं यस्तु नैवेद्यं वा त्यजेच्च यः॥षष्टिवर्षसहस्राणि रौरवे नरके पचेत्॥" उद्धरेत् अभ्यवहरेत्।एतेन अन्यदेवस्य नैवेद्यम्भुक्त्वा चान्द्रायणञ्चरेत् इति यद्वचनन्तदेकान्तवैष्णवपरमिति भूषणः । यत्तु शूद्रान्नं याजकान्नञ्च नैवेद्यञ्चापि वर्ज्जयेत् इति लैङ्गवचनन्तन्नैवेद्यत्वेनोपकल्पितानिवेदितपरम् । लोभादिना भोजननिषेधकं वा । यथोक्तं शाम्बे—"नोपभुक्त्वा च नैवेद्यम्प्रयाति प्रेतयोनिषु । विसर्ज्जनात्पूर्व्वं विष्णुनैवेद्योपादाननिषेधकं वा । अर्व्वाक्विसर्ज्जनाद्द्रव्यं सर्व्वं नैवेद्यमुच्यते । विसर्ज्जिते जगन्नाथे निर्म्माल्यम्भवति क्षणात् ॥" इति गरुडपुराणीयसंज्ञाकरणस्य एतत्प्रयोजनकत्वात् । विसर्ज्जिते पूजने समापिते इति भूषणइति । निर्म्माल्यन्तु—ॐ विश्वक्सेनाय नम इति निवेद्य तथा नद्यादौ क्षिपेद्यथा न कोपि लङ्घयेत् । नरसिंहनिर्माल्यलङ्घनाद्भ्रष्टदिव्यरथारोहणशक्तिं शान्तनुम्प्रति—" अतः परन्तु निर्म्माल्यं मा लङ्घय महीपते । नरसिंहस्य देवस्य तथाऽन्येषान्दिवौकसाम् ॥" इति नारदवाक्यात् । इति शूलपाणिः । दाक्षिणात्यास्तु--" विश्वक्सेनाय दातव्यं नैवेद्यस्य शतांशकम् । पादोदकम्प्रसादञ्च लिङ्गे चण्डेश्वराय तु ॥" इत्युक्तवन्तः । अथ वराहपुराणोक्तविष्णोरपराधाः--क्षत्रियसिद्धा

न्नभोजनम् १ । अनिषिद्धदिने दन्तकाष्ठमकृत्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् २ । मैथुनङ्कृत्वाऽस्नात्वा विष्णोः प्रतिमादिस्पर्शनम् ३ । शवन्दृष्ट्वाऽस्नात्वा विष्णुकर्म्मकरणम् ४ । रजस्वलां स्पृष्ट्वाऽस्नात्वा विष्णुस्पर्शनम् ५ । शवं स्पृष्ट्वाऽस्नात्वा विष्णुसन्निधाववस्थानम् ६ । विष्णुं स्पृशतः पायुवायुत्यागः ७ । विष्णोः कर्म्म कुर्व्वतः पुरीषत्यागः ८ । विष्णुशास्त्रमनादृत्य शास्त्रान्तरप्रशंसा ९ । अतिमलिनं वासः परिधाय विष्णुकर्म्माचरणम् १० । अविधानेनोपस्पृश्य विष्णुस्पर्शनम् ११ । विष्णोरपराधङ्कृत्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् १२ । क्रुद्धस्य विष्णुस्पर्शनम् १३ । निषिद्धपुष्पेण विष्णोरर्च्चनम् १४ । रक्तं वासः परिधाय विष्णोरुपसर्प्पणम् १५ । अन्धाकारे विना दीपेन विष्णोः स्पर्शनम् १६ । कृष्णवस्त्रम्परिधाय विष्णोः कर्म्माचरणम् १७ । वायसोद्भूतवस्त्रम्परिधाय विष्णोः कर्म्माचरणम् १८ । विष्णवे कुक्कुरोच्छिष्टदानम् १९ । वाराहमांसम्भुक्त्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् २० । जलपादम्भुक्त्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् २१ । दीपं स्पृष्ट्वा हस्तमप्रक्षाल्य विष्णोः कर्म्माचरणम् २२ । श्मशानङ्गत्वाऽस्नात्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् २३ । पिण्याकम्भुक्त्वा विष्णोरुपसर्प्पणम् २४ । विष्णवे वराहमांसनिवेदनम् २५ । मद्यमादाय स्पृष्ट्वा पीत्वा वा विष्णुगृहप्रवेशनम् २६ । परकीयेणाशुचिना वस्त्रेण परिहितेन विष्णुकर्म्मा

चरणम् २७ । विष्णवे नवान्नमप्रदाय तद्भोजनम् २८ । गन्धपुष्पे अप्रदाय धूपदानम्२९ । उपानहावारुह्य विष्णुस्थानप्रवेशनम् ३० । भेरीशब्देन विना विष्णोः प्रबोधनम् ३१ । अजीर्णे सति विष्णोरुपसर्प्पणमिति ३२ । एतदपराधक्षमापनन्तु गीताध्यायपाठः पङ्कजपुष्पैर्व्विष्णुपूजनञ्च । नारसिंहे– " अतः प्रभृति निर्म्माल्यम्मालङ्घय महीपते । नरसिंहस्य देवस्य तथान्येषान्दिवौकसाम् ॥ अहन्यहनि यो मर्त्यो गीताध्यायन्तु सम्पठेत् । द्वात्रिंशदपराधैश्च अहन्यहनि मुच्यते ॥ अपराधसहस्राणि अपराधशतानिच । पद्मेनैकेन देवेशः क्षमते हेलयार्चितः ॥ " इत्यभिधानात् । स्मृत्यालोके तु–"एते द्वात्रिंशदाख्याता अपराधाः फलैः सह । विष्णोरभ्यर्च्चनं सम्यगमीषाम्मार्ज्जनं विदुः ॥ " इत्युक्तम् ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे विष्णुपूजाकथनन्नाम षोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥ एवंदेवषट्कं सम्पूज्य तद्भिन्नस्येष्टदेवतात्वे तां पूजयेत् तत्रायं विशेषः–यस्यागमोक्तकल्पे दीक्षा स तेन कल्पेन पूजयेत् । यस्य तु पञ्चरात्रोक्तकल्पे दीक्षा स तेन कल्पेन देवषट्कान्यतमस्येष्टदेवतात्वे तु स्वदीक्षोक्तकल्पेन पूजया तन्त्रेणैव शिवम्भास्करमित्यादिवचनबोधितनित्यपूजापि निर्व्वहतीति गौडाः । शिष्टास्तु–देवषट्कान्यतमस्येष्टदेवतात्वेपि पृथक्स्वे

ष्टदेवताम्पूजयन्ति । तत्र पञ्चगौडा आगमोक्तामेव दीक्षां गृह्णन्तीति । आगमोक्तेष्टदेवतासामान्यपूजापद्धतिः क्वचित्सप्रमाणा क्वचित्तु विस्तरभिया प्रमाणरहितापि महामहोपाध्यायगोविन्दठक्कुरकृतपूजाप्रदीपमहामहोपाध्यायदेवनाथठक्कुरकृततंत्रकौमुदीमंत्रमहोदधितंत्रसाराद्यनुसारेण लिख्यते–तत्र देवतापूजागृहद्वारमागत्य यथोक्तासन उपविश्य दक्षिणहस्तस्य तर्ज्जन्यां राजतमङ्गुलीयकमनामिकायां सौवर्णमङ्गुलीयकञ्च विध्रियात् वरदातन्त्रे प्रथमपटले–"पूजाकाले सर्व्वदैव कुशहस्तो भवेच्छुचिः । तर्ज्जन्यां रजतन्धार्य्यं स्वर्णन्धार्य्यमनामया ॥ कुशकार्य्यकरं यस्मान्न तु वन्याः कुशाः कुशाः । कुशेन रहिता पूजा विफला कथिता मया ॥ नान्यस्य रजतं स्वर्णन्धार्य्यं हि निजमङ्गले ।" इत्यभिधानात् । तत आचामेत् तत्प्रकारस्तु–मूलेन त्रिरपः पीत्वा करम्प्रक्षाल्य द्विरोष्ठौ च प्रक्षाल्य तर्ज्जन्यंगुष्ठाभ्याम्मुखं स्पृशेत् ताभ्यामेव नासिके च अनामिकांगुष्ठाभ्यान्नेत्रे कर्णौ च स्पृष्ट्वा कनिष्ठांगुष्ठाभ्यान्नाभिं तलेन हृदयञ्च सर्व्वांगुलीभिर्म्मस्तकमंसौ च स्पृशेत् ततः सामान्यार्घङ्कुर्य्यात् तद्यथा–स्ववामे रक्तचंदनसिन्दूरपटवासान्यतमेन । त्रिकोणं वृत्तञ्चतुरस्रं भूबिम्बञ्च विलिख्य ॐ आधारशक्तये नम इति गंधादिभिः सम्पूज्य फडिति

मंत्रेणार्घपात्रम्प्रक्षाल्य साधारमर्घपात्रन्तत्र निधाय नम इति पठन् जलेनापूर्य्य तत्र “ॐ गङ्गेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्म्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥” इति मंत्रेण क्रोमित्यङ्कुशमुद्रया सूर्य्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य प्रणवेन गंधादींस्तत्र निःक्षिप्य धेनुमुद्राम्प्रदर्श्यतज्जलं स्पृशन् दशधाऽष्टधा वा मूलमंत्रञ्जपेदिति तंत्रसारः। अत एव भैरवतंत्रे—“तत आचमनङ्कृत्वा सामान्यार्घम्प्रकल्पयेत्। त्रिकोणवृत्तभूबिम्बमण्डलं रचयेत्ततः ॥ आधारशक्तिं सम्पूज्य तत्राधारंविनि क्षिपेत्। अस्त्रेण पात्रं संशोध्य हृन्मंत्रेणच पूरयेत् ॥नि क्षिपेत्तीर्थमावाह्य गंधादीन्प्रणवेन तु दर्शयेद्धेनुमुद्रां वै सामान्यार्घविधिः स्मृतः ॥सामान्यार्घेण देवेशि पूजयेदिष्टदेवताः॥” इत्युक्तम्। पूजाप्रदीपेतुप्रणवेन पुष्पादिकन्तत्र निःक्षिप्य फडिति शोधयित्वा तज्जलं स्पृशन्मूलमन्त्रन्त्रिर्जप्त्वा धेनुमुद्राम्प्रदर्शयेदित्यभिहितम्। मूलमन्त्रस्तु—तत्तद्देवताकतत्तन्मन्त्रः उपचारदाने विशिष्टमन्त्राज्ञाने प्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोन्ततत्तद्देवतानामापि। तन्त्रकौमुद्याम्—“उपचारप्रदानेषु विशिष्टो नास्ति चेन्मनुः। ताराद्यां ङेसमायुक्तनमोन्तान्देवताभिधाम्। समुच्चरेदयम्मन्त्रो मूलादिः परिकीर्त्तितः ॥ ” इति। अर्घादिपात्रन्तन्त्रकौमुद्यां तत्त्वसागरे—“ हैरण्यं राजतन्ताम्रङ्कांस्यम्पालाशपत्रकम्। रत्नोद्भवं शङ्खजं वा

पद्मपत्रमथापि वा। पात्रमष्टविधम्प्रोक्तं सर्व्वसिद्धिकरम्परम्॥”इति। ततः पात्रान्तरेणोद्धृतेन तज्जलेन झडिति मन्त्रेण द्वारमभ्युक्ष्य गृहद्वारदेवताः पुष्पतोयाभ्याम्पूजयेत् तद्यथा—मन्त्रमहोदधौ-ऊर्द्ध्वोदुम्बरे मध्ये ओं गणेशायनमः १। दक्षे ओं महालक्ष्म्यै नमः २। वामे ओं सरस्वत्यै नमः ३। पुनर्द्दक्षिणशाखायाम् ओं विघ्नेशाय नमः ४। ओं गङ्गायै नमः। ओं यमुनायै नमः। वामे ओं क्षेत्रपालाय नमः। ओं गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। पुनर्द्दक्षे ॐ धात्रे नमः। वामे ॐ विधात्रे नमः पुनर्द्दक्षे ॐ शङ्खनिधये नमः। वामे ॐ पद्मनिधये नमः। इति पूजयित्वा देहल्याम् ॐ अस्त्राय नम इति। पूजाप्रदीपे तूर्णापद्धतौ “द्वारस्य दक्षिणे वामे गणेशञ्च सरस्वतीम्। ऊर्द्ध्वोदुम्बरके मध्ये तयोर्द्वारश्रियं यजेत्॥ ततो दक्षिणशाखायां विघ्नं क्षेत्रेशमन्यतः। तयोः पार्श्वगते गङ्गायमुने पुष्पवारिभिः॥ धातारञ्च विधातारं शङ्खपद्मनिधीन्तथा। देहल्यामर्च्चयेदस्त्रम्प्रतिद्वारमिति क्रमात्॥” दक्षिणवामशाखयोः क्रमेण गङ्गायमुने पूजनीये तदुक्तन्तत्रैव—“गङ्गाञ्चयमुनान्तद्वद्दक्षसव्यन्तु शाखयोः।” इत्युक्त्वा द्वारोर्द्ध्वशाखायां दक्षिणशाखोपरिविघ्नेशन्तत्रैव मध्ये महालक्ष्मीन्तत्रैव वामशाखोपरि सरस्वतीं पुष्पतोयाभ्यां सम्पूज्य दक्षिणशाखायां विघ्नेशं वामशाखायाङ्क्षेत्रपालञ्च पूजयेत्।

ततो दक्षिणवामशाखयोः क्रमेण गङ्गायमुने पूजनीये एवन्धात्रादयोपि विघ्नेशस्य क्षेत्रपालस्य च दक्षिणवामपार्श्वयोः क्रमेण गङ्गायमुने एवन्धातृविधात्रोः पार्श्वयोः शङ्खनिधिपद्मनिधिदेहल्यामस्त्रञ्च पूजयेदिति केचित् । ततस्तत्तद्देवताया द्वारपालम्पूजयेदित्यभिहितम् । तन्त्रसारेतु– धातृविधातृशङ्खनिधिपद्मनिधीनान्पूजा नोक्ता । अशक्तश्चेत्पुष्पाक्षतवारिभिरेकदैव ॐ द्वारदेवताभ्यो नम इति पूजयेत् । ततो दक्षिणपादपुरःसरन्द्वारस्य वामशाखां स्पृशन् स्वदक्षिणाङ्गं सङ्कोचयन् पूजागृहान्तः प्रविश्य ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॐ ब्रह्मणे नम इति पूजयेत् । तथाचागमविवेके–“ ततो वामाङ्गसङ्कोचदक्षपादपुरःसरः । पूजायामण्डपस्यास्य प्रवेशः समुदाहृतः ॥ नैर्ऋत्यान्दिशि वास्त्वीशम्ब्रह्माणञ्च समर्च्चयेत् । ” इति तत आसनोपवेशनात्पूर्वमासनोपवेशनानन्तरं वा मूलमन्त्रेण दिव्यदृष्ट्यवलोकनेन दिव्यान्विघ्नान् ॐ अस्त्राय फडिति मन्त्रेण जलेनान्तरिक्षगान् विघ्नान् वामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमान्विघ्नांश्चोत्सार्य्य“लाजचन्दनसिद्धार्थभस्मदूर्व्वाङ्कुराक्षताः विकिरा।इति सन्दिष्टाः सर्वविघ्नौघनाशकाः॥”इति वचनबोधितविकिरान् फडति सप्तवाराभिमन्त्रितान् गृहीत्वा “ॐअपसर्प्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ” इति मन्त्रे

ण दिक्षु विकिरेत् । ततोक्षतमादायास्त्रमन्त्रेण नाराचमुद्रया गृहान्तरविघ्नानुत्सारयेत् । तत ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः इत्यासनङ्गन्धादिना सम्पूज्य आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलञ्छन्दः कूर्म्मो देवता आसनपरिग्रहणे विनियोगः "ॐपृथ्वि·त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वञ्च धारय माम्भद्रे पवित्रङ्कुरु चासनम्॥"इति पठित्वा स्वस्तिकादिक्रमेणोपविशेत् इति तन्त्रसारः। पूजाप्रदीपे तु–द्वारपालपूजामुक्त्वा दिव्यदृष्ट्यवलोकनेन दिव्यान् विघ्नान् अस्त्रमन्त्रेण जलक्षेपेणान्तरिक्षगान् ॐ अपसर्प्पन्तु ते भूता इत्यादिमन्त्रंपठित्वा फडिति नाराचास्त्रबुद्ध्या सिद्धार्थाक्षतकुसुमानि मण्डपान्तः प्रक्षिप्य पार्ष्णिघातत्रयन्दत्त्वा भौमान्विघ्नांश्चोत्सार्य्य वामशाखान्दक्षिणांशेन स्पृशन् दक्षिणाङ्घ्रिणा देहलीं विलंघ्याङ्गं सङ्कोचयन् मण्डपम्प्रविशेत् । ततो नैर्ऋत्यान्दिशि वास्त्वीशम्ब्रह्माणञ्चाभ्यर्च्य पञ्चगव्यार्घतोयाभ्याम्मण्डपम्प्रोक्ष्य । " ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्तदहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञान्दातुमर्हसि ॥ " इति भैरवानुज्ञाङ्गृहीत्वा चतुर्ब्भिः संस्कारैर्म्मण्डपं शोधयेत् । तद्यथा–मण्डपम्मूलमन्त्रेण वीक्ष्य फडिति प्रोक्ष्य फडिति कुशैस्ताडयित्वा हूमित्यभ्युक्षेत् । ततो मण्डपञ्चन्दनागुरुकर्प्पूरैर्द्धूपयित्वा कुशाजिनकम्बलोत्तरं विहितमासनंवेदिकायां वि

न्यस्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्रासने आधारशक्तिप्रकृतिकूर्म्मानन्तपृथिवीः सम्पूज्य आसनमन्त्रस्येत्याद्यभिहितवान्। ततः पञ्चगव्येन मण्डपम्परिशोधयेत् । ततः स्वदक्षिणे अर्घपाद्याचमनीयमधुपर्कपात्राणि गन्धपुष्पादींश्च स्थापयेत् वामपार्श्वे अम्बुपूर्णपात्रञ्छत्रं व्यजनमादर्शञ्चामरन्ताम्बूलञ्च स्थापयेत् पृष्ठदेशे हस्तप्रक्षालनार्थम्पात्रं स्थापयेत् सर्व्वदिक्षु घृतप्रदीपाँश्च स्थापयित्वा कृताञ्जलिः सन् वामे ॐ गुरुभ्यो नमः ॐ परमगुरुभ्यो नमः ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः दक्षिणे ॐ गणेशाय नमः मध्येऽमुकदेवतायै नमः इति प्रणमेत् । ततः फडिति मन्त्रेण गन्धपुष्पाभ्यां करौ संशोध्य ऊर्द्ध्वोर्द्ध्वतालत्रयन्दत्त्वा छोटिकाभिर्द्दशदिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् । ततोरमिति जलधारया वह्निप्राकारञ्चिन्तयेत इति तन्त्रसारः।पूजाप्रदीपे तु–मध्ये दुर्ग्गाप्रणामानन्तरम्पश्चात् क्षेत्रपालन्नमस्कृत्य ॐ सहस्रारहुम्फडिति रक्षां विधाय सुगंधिपुष्पमर्देन हस्तौ सुरभीकृत्य तत्पुष्पन्नाराचमुद्रयोत्तरतः क्षिप्त्वा फडिति करौ संशोध्य ऊर्ध्वोर्ध्वतालत्रयन्दत्त्वाऽस्त्रमुद्रया दिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् इत्युक्तम

अथ भूतशुद्धिः–तत्प्रकारस्तु मंत्रमहोदधौ स्वांके उत्तानौ हस्तौ कृत्वा मूलाधारे स्थितां बिसतंतुनिभां विद्युत्प्रभां कुण्डलीम्परदेवतां हुङ्कारोत्थध्वनिना प्रबुद्धाम्मूलाधारस्वाधिष्ठानमणिपूरकानाहताख्यानि

चत्वारि चक्राणि भित्त्वा सुषुम्णावर्त्मना हृद्गतां स्मृत्वा हृदम्बुजस्थितम्प्रदीपकलिकाकारञ्जीवमादाय विशुद्धाज्ञाख्ये द्वे चक्रे भित्त्वा ब्रह्मरंध्रगतां स्मरेत्। ततोहंसमंत्रेण जीवम्ब्रह्मणि सँय्योज्य पादादिजानुपर्य्यन्तञ्चतुष्कोणम् लमिति भूबीजाढ्यं सवज्रकंपीतवर्ण्णम्भूमण्डलञ्जान्वादिनाभिपर्य्यन्तमर्द्धचंद्रनिभं श्वेतम् वमिति वरुणबीजाढ्यं पद्मद्वयाङ्कितञ्जलमण्डलन्नाभेर्हृदयपर्य्यन्तन्त्रिकोणं रमिति वह्निबीजाढ्यं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णं वह्निमण्डलं हृदो भ्रूमध्यपर्य्यन्तं वर्तुलंषड्बिंदुलांच्छितम् यमिति वायुबीजाढ्यं धूम्रवर्णं वायुमण्डलम्भ्रूमध्याद्ब्रह्मरंध्रपर्य्यन्तं वर्त्तुलं स्वच्छं हंबीजाढ्यङ्गगनमण्डलञ्च विचिन्त्य गंधरसरूपस्पर्शशब्दैः नासिकाजिह्वाचक्षुस्त्वक्श्रोत्रैः वाक्पाणिपादपायूपस्थैश्च क्रमेण युतानि विभाव्य ततः समानोदानव्यानापानप्राणान् धरादिमण्डलगतान् पञ्चवायून् स्मरेत् एषु च पञ्चसु मण्डलेषु तत्तदीशान् क्रमेण ब्रह्मविष्णुशिवेशानसदाशिवान् ध्यात्वा निवृत्तिप्रतिष्ठाविद्याशांतिशांत्यतीतेति पञ्चकला अपि धरादिगताः स्मरेत् ततो भुवञ्जले जलंवह्नौ वह्निंवायौ वायुमाकाशे आकाशमहङ्कारेऽहङ्कारम्महत्तत्त्वे महान्तम्प्रकृतौ प्रकृतिमात्मनि विलापयेत् ततः शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा दक्षकुक्षिस्थितमङ्गुष्ठपरिमितम्ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं मदिरापान

हृदयं स्वर्णस्तेयकटीयुतं पापिसंयोगिपादयुगलमुपपातकरोमाणं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्रन्दुःसहङ्कृष्णम्पापपुरुषं विचिन्त्य यमिति बीजं षोडशवारं जपन् वायुना शरीरं सम्पूर्य्य स्वशरीरयुतमेनं विशोध्य रमित्यग्निबीजञ्चतुःषष्टिवारञ्जपन् तदुत्थेन वह्निना स्वशरीरयुतम्पापपुरुषङ्कुंभकेन दग्ध्वा यमिति वायुबीजन्द्वात्रिंशद्वारञ्जपन् पापनरोद्भवम्भस्म पृथक्कृत्य बहीरेचयेत् । ततो वमिति सुधाबीजं स्मरन् ललाटे चंद्रन्नीत्वाच चंद्रमण्डलाद्गलितामृतेन स्वदेहोत्थम्भस्म सम्प्लाव्य लमिति भूबीजेन घनीकृत्य कनकाण्डकारं विचिन्त्य विशुद्धमुकुरसन्निभं विचिन्त्य हमित्याकाशबीजं स्मरन् मूर्द्धादिपादपर्य्यन्तन्तान्यंगानि विरचयेत् । ततश्चैतन्यादाकाशादीनि भूतान्युत्पाद्य परसंगात्सुधामयजीवं सोहमिति मंत्रेण समादाय हृदयाम्बुजे संस्थाप्य मूलाधारगताङ्कुण्डलीं स्मरेत् अस्या आवश्यकत्वमाह यामले–" भूतशुद्धिं लिपिन्यासं विना यस्तु प्रपूजयेत् । विपरीतफलन्दद्यादभक्त्या पूजनं यथा ॥ " इति । पूजाप्रदीपे तु–हृत्पद्मकर्णिकास्थन्दीपशिखानिभञ्जीवात्मानं हंस इति मन्त्रेण सुषुम्णावर्त्मनामस्तकोपरि सहस्रदलकमलावस्थिते परमात्मनि सँयोज्य आकाशवायुतेजोजलपृथिवीश्रोत्रत्वक्चक्षूरसनघ्राणमुखपाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्ध

वचनादानगतिविसर्गानन्दात्मकपञ्चविंशतितत्त्वानि परमात्मनि बीजभावेन व्युत्क्रमाल्लीनानि विचिन्त्य वामनासापुटे यमिति वायुबीजं धूम्रं वायुमंडलस्थं विचिन्त्य नाभिचक्रस्थवायुमण्डलावस्थितवायुना ऐक्यं विभाव्य पूरकङ्कृत्वा कुम्भके वामकुक्षिस्थकृष्णवर्णपापपुरुषेण सह शुष्कं शरीरं विचिन्त्य दक्षिणनासापुटेन वायुं रेचयेत् ततो दक्षिणनासापुटे रमिति वह्निबीजं रक्तवर्णं वह्निमण्डलस्थं लीनमारुतं विचिन्त्य हृदयस्थवह्निमण्डलावस्थितवह्निना ऐक्य विभाव्य पूरके वह्निपूर्णं शरीरं विचिन्त्य कुम्भके दग्धश्चिन्तयित्वा वामनासापुटेन भस्मना सह वायुं रेचयेत् ततो वामनासापुटे ठमिति चन्द्रबीजं श्वेतञ्जलमण्डलस्थं विचिन्त्य सहस्रपत्रकमलस्थजलमण्डलस्थामृतेन एकीभूतं सम्भाव्य पूरके ठमिति बीजं ललाटचन्द्रं नीत्वा कुम्भके वमित्यमृतबीजेन वर्णमयीश्चन्द्रादमृतवृष्टिन्निपात्य दोषजातं विश्लेषयन् दिव्यं शरीरमुत्पाद्य आपादतलमस्तकममृतेनाप्लाव्य दक्षिणनासापुटेन वायुं रेचयेत् पूरके षोडशमात्रया कुम्भके चतुःषष्टिमात्रया रेचकेद्वात्रिंशन्मात्रया तत्तन्मन्त्रजपः । ततस्तत्त्वानि स्वस्वस्थानानि नीत्वा जीवात्मानं परमात्मनः सकाशात् सोहमिति मंत्रेणत्हृदयाम्बुजमानयेदिति । तथा च सारसमुच्चये—"संयोज्य जीवमथदुर्गममध्यनाडीमार्गेण पुष्करनिविष्टशिवे सुसूक्ष्मे । हंसेन देहम

मरेन्द्रपुरोगतेन सार्द्धेन्दुनाभसितसाद्विदधीत बुद्ध्या ॥ ” इति । अमरेन्द्रपुरोगतेन लकारप्रथमेन रेफेणेत्यर्थः । तंत्रान्तरे तु–“सुषुम्णावर्त्मनात्मानम्परमात्मनि योजयेत् । योगयुक्तेन विधिना चिन्मन्त्रेण समाहितः ॥ कारणे सर्व्वभूतानां तत्त्वान्यपि च चिन्तयेत् । बीजभावेनलीनानि व्युत्क्रमात्परमानि ॥” इति सोहंमंत्रेणयोजनमुक्तम् । सोहमिति चिन्मन्त्रः अत एव तत्र हंसमंत्रेणानयनमुक्तम् एवञ्च सोहम्मंत्रेण योजनम् हंसमन्त्रेणानयनम् हंसमंत्रेण योजनम् सोहम्मंत्रेणानयनमित्युभयमपि प्रामाणिकमेवेत्याहुः । अशक्तस्तु मूलाधारोत्थितकुण्डलिन्या हृद्वर्त्तिजीवात्मानं हंस इति मंत्रेण ब्रह्मरन्ध्रस्थपरमशिवे संयोज्य सोहमिति मंत्रेण जीवपरमात्मनोरैक्यं विचिन्त्य तस्माद्ब्रह्मणः प्रादुर्भूतं शरीरं भावयेदिति । इति भूतशुद्धिः । अथ प्राणस्थापनम्–अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्याजेशपद्मजा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता । आँ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकम् । प्राणस्थापने विनियोगः । शिरसि ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्य ऋषिभ्यो नमः । मुखे ऋग्यजुःसामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः । हृदि प्राणशक्त्यै देवतायै नमः। गुह्ये आँ बीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। सर्व्वांगे क्रों कीलकायनमः । इति ऋष्यादीन्विन्यस्य ङंकंखंघंगं नमो वाय्वग्निजलभूम्यात्मने हृदया

य नम इति हृदि । ञंचंछंझंजं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा इति; शिरसि । णंटंठंढंडं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषडिति शिखायाम् । नंतंथंधंदं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुमिति बाह्वोः । मंपंफंभंबं वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषडिति नेत्रयोः । शंयंरंवंलंहंषंसंळं बुद्धिमनोऽहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट् ततो नाभ्यादिपादाग्रान्तम् । आं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम् ह्रीं नमः मूर्द्धादिकण्ठान्तं क्रों नमः ततो लेलिहानमुद्रयाहृदयंस्पृशन्यं त्वगात्मनेनमः रं असृगात्मने नमः लं परमात्मने नमः बं मेदआत्मने नमः शं अस्थ्यात्मने नमः षं मज्जात्मने नमः सं शुक्रात्मने नमः हौं ओजआत्मने नमः हं प्राणात्मने नमः सं जीवात्मने नमः इतियादीन्न्यसेत् । ततो यंरंलंवंशंषंसंळंक्षं हौंहंसः इत्यनेन मूर्द्धादिपादांतं व्यापकं कुर्य्यात् । इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय मातृकान्यासङ्कुर्य्यात् । अस्यावश्यकत्वमाह फेत्कारिणीतन्त्रे– “ मन्त्रा मूकत्वमायान्ति विन्यासेन विना लिपेः । सर्व्वमन्त्रप्रसिद्ध्यर्थन्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत् ॥ ” इति । तत्प्रकारो यथा–अस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्रीछंदो मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं लिपिन्यासे विनियोगः देहशुद्धौ विनियोग इति प्रदीपः । शिरसि ॐ

ब्रह्मणे ऋषये नमः । मुखे ॐ गायत्रीछंदसे नमः । हृदि ॐ मातृकासरस्वत्यै नमः । गुह्ये हल्भ्यो बीजेभ्योनमः पादयोः स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः । सर्व्वांगे अव्यक्ताय कीलकाय नमः । इति न्यस्य ततः करांगन्यासः—अंकंखंगंघंङंआं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । इंचंछंजंझंञंईं तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा । उंटंठंडंढंणंऊं मध्यामाभ्यां वषट् । एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां हुं । ॐ पंफंबंभंमंऔं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । करन्यासेपि अङ्गुष्ठाभ्यान्नम इत्यादिस्थानेषु हृदयाय नमः इत्यङ्गुष्ठयोः । शिरसेस्वाहा इति तर्ज्जन्योः । शिखायै वषडिति मध्यमयोः। कवचायहुम् इत्यनामिकयोः । नेत्रत्रयाय वौषडिति कनिष्ठयोः । अस्त्राय फडिति करतलयोर्व्विन्यसेदिति पूजाप्रदीपः—“षडंगानि विधेयानिजातियुक्तानि दैशिकैः । अङ्गुष्ठादिष्वङ्गुलीषु न्यसेदंगैः सजातिभिः॥ अस्त्रन्तु तलयोर्न्यस्य कुर्य्यात्तालत्रयन्ततः॥दिशस्तेनैव बध्नीयाच्छोटिकाभिः समाहितः।हृदयादिषु विन्यस्येदङ्गमन्त्रांस्ततः सुधीः॥“हृदयाय नमः पूर्व्वं शिरसे वह्निवल्लभा।शिखायै वषडित्युक्तं कवचाय हुमीरितम् ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् स्यादस्त्राय फडिति क्रमात् ॥षडङ्गमन्त्रानित्युक्तान् षडङ्गेषु नियोजयेत् ॥ पञ्चाङ्गानि मनोर्य्यस्य तत्र नेत्रमनुं त्यजेत् । अङ्गहीनस्य मंत्रस्य स्वेनैवाङ्गानि कल्पयेत ॥ ” जात

यश्च–“ नमः स्वाहा वषट् हुञ्च वौषट् फट्कार एव च । जातिषट्कमिति प्रोक्तं हृदयाद्यस्त्रसंयुतम् ॥” इति कारणागमोक्तेः । तत एवमेव हृदयादिन्यासं कुर्य्यात् । ततोन्तर्म्मातृकान्यासः तद्यथा–अकारादिषोडशस्वरान् सबिन्दून् षोडशदलकमले कण्ठमूले न्यसेत् । ककारादिद्वादशवर्णान् सबिन्दून् द्वादशदलकमले हृदये न्यसेत् । डकारादिदशवर्णान् सबिन्दून् दशदलकमले नाभौ न्यसेत् । बकारादिषड्वर्णान् सबिन्दून् षड्दलकमले लिङ्गमूलेन्यसेत् । वकारादिचतुरो वर्णान् सबिन्दून् चतुर्द्दलकमले मूलाधारे न्यसेत् । हक्षवर्णद्वयं सबिन्दुं द्विदलपद्मे भ्रूमध्ये न्यसेत् । ततो बाह्यमातृकान्यासः । तस्या ध्यानम्–“ पञ्चाशल्लिपिभिर्व्विभक्तमुखदोःपन्मध्यवक्षस्थलाम्भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् । मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्याञ्च हस्ताम्बुजैर्ब्बिभ्राणां विशदप्रभान्त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रयेत् ॥ ” इति मुद्रादिकमधोदक्षिणहस्तमारभ्य प्रादक्षिण्येन ध्येयम्–एवन्ध्यात्वा न्यसेत् तद्यथा–अं नमो ललाटे। आँ नमो मुखवृत्ते। एवं इं नमः दक्षनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे । उंऊं कर्णयोः । ऋंॠं नसोः । लृंॡं गण्डयोः । एं ओष्ठे । ऐं अधरे । ॐ ऊर्द्ध्वदन्तपंक्तौ।औं अधोदन्तपंक्तौ अं ब्रह्मरन्ध्रे ।अः मुखे । कं दक्षबाहुमूले खं कूर्प्परे । गं मणिबन्धे । घं अङ्गुलीमूले । ङं अंगुल्यग्रे ।

चंछंजंझंञं वामबाहुमूलसन्ध्यग्रकेषु।एवं टंठंडंढंणं दक्षिणपादमूलसंध्यग्रकेषु । तंथंदंधंनं वामपादमूलसन्ध्यग्रकेषु। पं दक्षिणपार्श्वे । फं वामपार्श्वे। बं पृष्ठे । भं नाभौ। मं जठरे । यं हृदि। रं दक्षबाहुमूले । लंककुदि । वं वामबाहुमूले। शं हृदादिदक्षिणकराग्रपर्य्यंते। षं हृदादिवामकराग्रपर्य्यंते । सं हृदादिदक्षपदे । हं हृदादिवामपदे । ळं हृदाद्युदरे । क्षं हृदादिमुखे । सर्व्वत्र नमोन्तान्न्यसेत् । हक्षमध्ये ळकारस्थितौ प्रमाणं तु–वर्णमालाजपे :“ अनुलोमविलोमेन क्लृप्तया वर्णमालया । आदिळान्तळादिआन्तक्रमेण परमेश्वरि ॥ क्षकारम्मेरुरूपञ्च लंघयेन्न कदाचन ॥ ” इति मुण्डमालतन्त्रम् । बहुभिरस्याकारोच्चारणयोर्भेदो न क्रियते । वेदऽस्योच्चारणस्थानञ्जिह्वामूलम् । देवनागरवर्णमालायाम् अस्याकार एवम्प्रकारः ळ इति अस्य प्रयोगः । “ अग्निमीळे, हे अग्निवीळचित् ” इत्यादि ऋग्वेदे । एवं सृष्टिन्यासं विधाय स्थितिन्यासङ्कुर्य्यात् तद्यथा–ऋषिश्छन्दश्चपूर्व्ववदेव देवतात्रविश्वपालिनी । ध्यानंतु–“ उपविष्टां वल्लभाङ्के ध्यायेद्देवीमनन्यधीः । मृगबालं वरं विद्यामक्षसूत्रन्दधत्करैः । मालाविद्यालसद्धस्तां वहन्ध्येयः शिवो गिरम्॥”इति। ततो डकारादिक्षकारांतान् वर्णान् सविसर्गबिन्दून् पूर्व्वोक्तस्थानेषु विन्यस्य तादृशानेव अकारादिठकारांतान्पूर्व्वोक्तस्थानेषु विन्यसेत् यदाह–“एवं ध्यात्वा डकारा

द्यान्वर्णानङ्गेषु विन्यसेत् । गुल्फादिजानुपर्य्यंतं स्थितिन्यासोयमीरितः ”॥ततः संहारमातृकान्यासः– ऋष्यादिरत्रापि पूर्व्ववत् । तस्या ध्यानम्–“ अक्षस्रकूंटङ्कसारङ्गविद्याहस्तान्त्रिलोचनाम् । चन्द्रमौलिङ्कुचानम्रां रक्ताब्जस्थाङ्गिरं भजे ॥ ” अक्षस्रगादीनि दक्षिणाधोहस्तमारभ्य ध्येयानि । न्यासस्तु बिन्दुयुक्तक्षकाराद्यकारान्तवर्णानाम् यथाक्षं नमो हृदादिमुखे इत्यादि । एवं संहारन्यासङ्कृत्वा पुनः सृष्टिन्यासं स्थितिन्यासञ्च कुर्य्यात् ततः प्राणायामं कुर्य्यात् “ कृत्वेत्थम्मातृकान्यासम्प्राणायामं समाचरेत् । इत्युक्तेः । तद्यथा--मूलमंत्रस्य प्रणवमन्त्रस्य वा षोडशवारजपेन वायुम्पूरयेत् तस्य चतुःषष्टिवारजपेन वायुङ्कुम्भयेत् तस्य द्वात्रिंशद्वारजपेन वायुं रेचयेत् पुनर्दक्षिणेनापूर्य्य उभाभ्याङ्कुम्भयित्वा वामेन रेचयेत् पुनर्व्वामेनापूर्य्य उभा

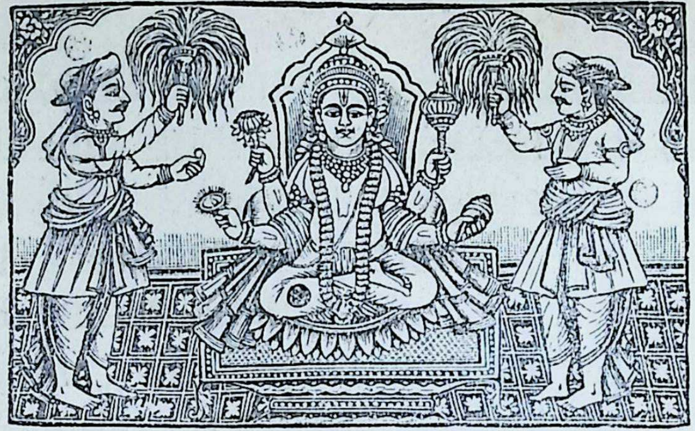

म्याङ्कुम्भयित्वा दक्षिणेन रेचयेत् । अशक्तस्तु चतुर्द्धा जपन् पूरयित्वा षोडशधा जपन् कुंभयित्वा चाष्टधा जपन् रेचयेदिति क्रमेण प्राणायामङ्कुर्य्यात् । "अशक्तस्तच्चतुरीयतः" इत्युक्तेः तत्राङ्गुलिनियमः—कनिष्ठानामिकाङ्गुष्ठैर्न्नासापुटधारणम्प्राणायामः । ततः पीठन्यासः—"प्राणायामं विधायेत्थम्पीठन्यासं समाचरेत् । तत्रादौ हृदिविन्यासं कथयामि यथातथम् ॥ आधारशक्तिं कूर्म्माख्यमनन्तम्पृथिवीन्तथा । क्षीराब्धिं श्वेतद्वीपञ्च मणिमंडपमेव च ॥ कल्पद्रुम्ममणिवेदींश्च रत्नसिंहासनन्तथा । प्रणवादिनमोंतेन न्यसेत्साधकसत्तमः ॥" इत्युक्तेः । तद्यथा—ॐ आधारशक्तये नमः ॐ प्रकृत्यै नमः एवङ्कूर्म्माय अनन्ताय पृथिव्यै क्षीरसमुद्राय श्वेतद्वीपाय मणिमण्डपाय कल्पवृक्षाय मणिवेदिकायै रत्नसिंहासनाय एतत्सर्व्वं हृदि ततो दक्षिणस्कंधे धर्म्माय नमः वामस्कंधे ज्ञानाय नमः वामोरौ वैराग्याय दक्षिणोरौ ऐश्वर्य्याय मुखे अधर्म्माय वामपार्श्वे अज्ञानाय नाभौ अवैराग्याय दक्षपार्श्वे अनैश्वर्य्याय सर्व्वत्र प्रणवादिनमोन्तेन न्यसेत । हृदि ॐ अनन्तायनमः । एवं ॐ पद्माय नमः ॐ सूर्य्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः मं वह्नि मण्डलाय दशकलात्मने॰ सं सत्त्वाय॰ रं रजसे॰ तं तमसे॰ आं आत्मने॰ अं अन्तरात्मने॰ पं

परमात्मने ० ह्रीं ज्ञानात्मने० इत्यन्तं विन्यस्य इति तंत्रसारः । हृत्पद्मस्य पूर्व्वादिकेशरेषु पीठशक्तीः मध्ये पीठमनुञ्च न्यसेत्।ततऋष्यादिन्यासः—मूर्ध्नि अमुकऋषये नमः मुखे अमुकच्छन्दसे नमः हृदि अमुकदेवतायै नमः गुह्ये अमुकबीजाय नमः । पादयोः अमुकशक्तये नमः। सर्व्वांगे अमुककीलकाय नमः ततस्तत्तत्कल्पोक्तमुद्राम्प्रदर्श्य ध्यानङ्कुर्य्यात् । एतञ्च ध्यानं देवतारूपतया स्वचिन्तनम् हृत्कमलकर्णिकायां देवताचिन्तनं वा ततो देवतारूपतया ध्यातस्यात्मनोमानसैरुपचारैः पूजनङ्कुर्य्यादिति प्रदीपः।मानसपूजा यथा—हृत्पद्ममध्ये देवतां विभाव्य मूलाधारत उत्थाय कुण्डलिनीन्द्वादशान्तन्नीत्वा परमशिवेन सह सङ्गमं विभाव्य तदुत्थामृतधारया स्वेष्टदेवताचरणयोः पाद्यन्दद्यात् ततो मनसार्घ्यन्दत्वा सहस्रदलपद्मभृङ्गारललितपरमामृतजलेन आचमनीयम्मुखे पञ्चविंशतितत्त्वेन गंधञ्च अहिंसां विज्ञानङ्क्षमान्दयाम् अलोभम् अमोहम्अमात्सर्य्यम् अमायाम् अनहङ्कारम् अरागम् अद्वेषम् इंद्रियाणि द्वादश एतानि पुष्पाणि च प्रदापयेत्।ततो वायुरूपं धूपन्तेजोरूपं दीपञ्च दद्यात् । अम्बरञ्चामरम् दर्पणं सूर्यं चंद्रञ्छत्रं पद्मन्तु मेखलाम् आनन्दं हारमुत्तमम् अनाहतध्वनिमयीङ्घण्टां निवेदयेत् । ततः सुधारसाम्बुधिम्मांसपर्व्वतं ब्राह्माण्डपूरितम्पायसञ्च दत्त्वा "मनोनर्त्तनसत्तालैः शृङ्गारादिरसोद्भवैः ।

नृत्यैर्गीतैश्च वाद्यैश्च तोषयेत्परमेश्वरीम्॥" एवं सम्पूज्य अभेदेन जपः कार्य्यः इति मानसपूजाविधिः॥ ततो विशेषार्घपात्ररूपशङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् तद्यथा—"अर्घस्य त्रीणि पात्राणि पाद्यस्यापि त्रयम्भवेत् । तथैवाचमनीयानि पात्राणि च विभागशः॥तथा करणदौर्ब्बल्यादेकमेव प्रशस्यते" । किन्तु सामान्यार्घ्यविशेषार्घ्यद्वयस्यावश्यकत्वम् । तथा च नवरत्नेश्वरे—"एकपात्रन्न कर्त्तव्यंयदिसाक्षान्महेश्वरः।मंत्राःपराङ्मुखा यान्ति आपदश्च पदेपदे॥इह लोके दरिद्रःस्यान्मृते च पशुतांव्रजेत्।" इति राघवभट्टधृतम्। "सर्व्वत्रैव प्रशस्तोऽब्जः शिवसूर्य्यार्च्चनं विना" । अब्जः शङ्खः स्ववामाग्रेत्रिकोणमण्डलङ्कुर्य्यात् इति तंत्रसारः । त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्राणि कुर्य्यादिति मन्त्रमहोदधिः । ततस्तदुपरि त्रिपदीमारोप्य आधारशक्तये नम इति तां सम्पूज्य अस्त्राय फडिति शङ्खम्प्रक्षाल्य तदुपरि संस्थाप्य नम इति मंत्रेण गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदूर्व्वास्तत्र निःक्षिपेत् । तंत्रकौमुद्याम्—"ततोऽर्घस्थापनङ्कुर्य्यादिष्टदेवानुसारतः । गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपैः॥ सदूर्व्वं सर्व्वदेवानामेतदर्घमितीरितम् । अस्त्रेण पात्रम्प्रक्षाल्य वामतो वह्निमण्डले॥स्थापयित्वा हृदा तत्र गंधपुष्पादिकानपि।निःक्षिप्य प्रतिलोमेन मूलान्ते मातृकां जपेत्"॥इत्यभिधानात् । ततो विमलजलेन विलोममातृ

कावर्ण्णैर्म्मूलेन वा पूरयेत् "शुद्धतीर्थजलेनैव पूरयेच्छङ्खपात्रकम् । विलोममातृकाभिर्व्वा मूलेन विधिना सुधीः ॥ " इत्युक्तेः । विलोममातृका यथा—क्षंळंहंसंषंशंवंलंरंयंमंभंबंफंपंनंधंदंथंतंणंढंडंठंटंञंझंजंछंचंङंघंगंखंकंअः अंऔंओंऐंएंॡंऌंॠंऋंऊंउंईंइंआंअं इति। ततो मंवह्निमण्डलाय दशकलात्मने नम इति त्रिपदिकायाम्पूजा । अं सूर्य्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नम इति शंखे पूजा । उं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नम इति जले गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य "ओं गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्म्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥ " इत्यनेनांकुशमुद्रया सूर्य्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य अमुकदेवते इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इहतिष्ठ इति मन्त्रेण स्वहृदयाद्देवतान्तत्रावाह्य हमिति तर्ज्जनीभ्यामवगुण्ठयेत् ।"तज्जलन्नयनमन्त्रवीक्षितं वर्म्मणा समवगुण्ठ्य दोर्य्युजा।"इति पूजाप्रदीपेऽभिधानात्।अवगुण्ठनङ्कराभ्यामेवेति नयनमन्त्रं वौषडिति ततः फडिति मन्त्रेण गालिनीमुद्राम्प्रदर्श्य वौषडिति तज्जलं वीक्ष्य पुनरंगमन्त्रैः सकलीकृत्य गन्धपुष्पाभ्यान्देवतान्तत्र सम्पूज्य तदुपरिमत्स्यमुद्रयाच्छाद्य शङ्खमुद्राम्प्रदर्श्य मूलमन्त्रमष्टधा जपेत्।तथा च गौतमीये—"गन्धपुष्पैः समभ्यर्च्य कृष्णाख्यन्धाम योजयेत् । अष्टकृत्वो जपेन्मन्त्रं शिखायां गालिनीं न्यसेत्॥" सकलीकरणञ्च देवतांगे षडंगन्यासकर

णम् । शैवागमे–“ देवतांगे षडंगञ्च सकलीकरणम्भवेत् । ” इति । अत्र कृष्णपदन्तत्तद्देवतापरम् । ततो धेनुमुद्राम्प्रदर्श्य अस्त्रेण संरक्ष्य तस्मात्किञ्चिज्जलम्प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य तेनोदकेनात्मानम्पूजोपकरणञ्चाभ्युक्ष्य सिंहासनादौ तत्तद्देवतायन्त्रादिपूजापीठं संस्थाप्य पीठपूजां कुर्य्यात् सा यथा–पीठस्योत्तरे गुरुपङ्क्तिं पूजयेत् यथा वायव्यादीशपर्य्यन्तम् ॐ गुरुभ्यो नमः ॐ परमगुरुभ्यो नमः ॐ परापरगुरुभ्यो नमः ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः पीठमध्ये ॐ आधारशक्तये नमः एवङ्कूर्म्माय शेषाय पृथिव्यै क्षीरसमुद्राय श्वेतद्वीपाय मणिमण्डपाय कल्पवृक्षाय मणिवेदिकायै रत्नसिंहासनाय, अग्निकोणे धर्म्माय नैर्ऋतीवाय्वीशानेषु ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्य्यञ्च पूजयेत् । ततः पूर्व्वादिचतुर्दिक्षु अधर्म्माज्ञानावैराग्यानैश्वर्य्याणि पूजयेत् । मध्ये पुनः अनन्तादि ह्रीं ज्ञानात्मने नम इत्यन्तम्पूर्व्वोक्तम्प्रपूज्य पूर्व्वादिकेशरेषु मध्येषु च तत्तत्कल्पोक्तपीठशक्तिः सम्पूज्य पीठमनुञ्च पूजयेत्। पूर्व्वादिदिङ्नियमस्तु यामले–“पूज्यपूजकयोर्म्मध्यम्प्राचीति कीर्त्यते बुधैः। तद्दक्षिणन्दक्षिणंस्यादुत्तरञ्चोत्तरम्मतम्॥ पृष्ठन्तु पश्चिमं ज्ञेयं सर्व्वत्रैवं प्रयोजयेत् ॥” इति पुन्देवतापरम् । “पुरन्दरमुखो मन्त्री यदा यन्त्रे प्रपूजयेत्। देवीपश्चात्तदा प्राची प्रतीची देवतापुरः ॥”एवम्–“उत्तराभिमुखो भूत्वा यदादेवीम्प्रपूजयेत् ।

उत्तराशा तदा देवि पूर्व्वांशैव निगद्यते।ईशानकोणन्देवेशि तदाग्नेयम्प्रचक्षते॥”इति वचनात्।अथ पूजा सा च यन्त्रे प्रशस्ता तदभावे चतुर्द्वारभूपुरावृताष्टदलपद्मे। पूजा प्रदीपे–“आदौ लिखेद्यन्त्रराजन्तत्तत्कल्पोक्तलक्षणम्।सौवर्ण्णे राजते ताम्रे पीठे भूर्ज्जपटे भुवि॥विना यन्त्रेण·चेत्पूजा देवता न प्रसीदति।कल्पोक्तयन्त्राभावे तु भूपुरावृतश्चतुर्द्वारमष्टदलं लिखेत् इत्यभिधानात् । यन्त्रलेखनाद्यशक्तस्तु शालग्रामादिपूजाचक्रे ॐ आधारशक्त्यादिपीठदेवताभ्यो नमः इत्यनेन जपाकरवीरापराजिताद्यन्यतमपुष्पविशेषार्घोदकचन्दनाक्षतैरेकदैव पीठदेवताः संपूज्यावाहनङ्कुर्य्यात् तद्यथा–पूजाधारयंत्रे मूलेन तत्तद्देवतामूर्त्तिम्परिकल्प्य कूर्म्ममुद्राञ्जलिना मातृकावर्णधिया रक्तपुष्पाणि गृहीत्वा स्वहृदयाब्जे विद्युत्पुञ्जनिभस्फुरत्पूज्यदेवतातेजः सुषुम्णावर्त्मना सहस्रदलकमलमध्यवर्त्तिनि परमशिवे संयोज्य परमामृतलोलितश्चिदानन्दघनं विभाव्य वामनासामार्ग्गेण वायुबीजेन करस्थपुष्पाञ्जलौ मातृकाम्भोजस्वरूपे ह्सौः कर्णिके स्वरद्वन्द्वाष्टकशोभमानकेसराष्टके कचटतपयशलवर्ग्गाष्टकसहिताष्टपत्रसहिते दिग्गतवकारकोणगतठकारभूपुरावृते संयोज्य कामकलात्मिकान्देवतान्ध्यायेत् ध्यानं यथा भावचूडामणौ–“मुखं बिन्दुवदाकारन्तदधः कुचयुग्मकम् । सर्व्वविद्यासुसम्पन्नं सर्व्ववाग्विभवप्रदम् ॥

सर्व्वार्थसाधनन्देवं सर्व्वरञ्जनकारकम् । तदधः सपरार्द्धन्तु सुपरिष्कृतमण्डलम् ॥ सर्व्व देवादिभूतञ्च सर्व्वदेवनमस्कृतम् । सर्व्वानन्देन सम्पूर्णं सर्व्वस्य च प्रवर्त्तकम् । एतत्कामकलाध्यानं सुगोप्यं साधकोत्तमः ॥ इति । “ॐ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥ ” इति पठन् कल्पितमूर्तेः शिरसि पुष्पाञ्जलिन्दत्त्वा देवतातेजःपुष्पाञ्जलिमपहाय ब्रह्मरन्ध्रद्वारेण तस्या मूर्त्तेर्हृदयं प्रविश्य स्थिरीभूतं भावयेत् । तन्त्रकौमुद्यान्तु—“ध्यानमात्मेष्टदेवस्य मनसा वेदनम्मतम् । तदपि द्विविधम्प्रोक्तं निर्ग्गुणं सगुणन्तथा ॥ यज्जीवब्रह्मणोरैक्ये सोहंस्यामिति वेदनम् । तदेव निर्ग्गुणन्ध्यानमिति वेदविदो विदुः ॥ आत्मनो हृदयाम्भोजङ्कर्णिकाकेशरान्वितम् । प्रफुल्लं सूर्य्यसोमाग्निमण्डलेन विराजितम् ॥ स्वीयेष्टदेवतान्तत्र ध्यायेदागमवेदिताम् । एवं यद्वेदनन्तद्धि सगुणन्ध्यानमुच्यते ॥ मूलाधारे प्रदीपाभन्दैवन्तेजो विचिन्तयेत् । मूलमन्त्रेण तत्तेजः सुषुम्नावर्त्मना शिवे ॥ संयोज्यानीय भालांतश्चिन्तयित्वेष्टदेवताम् । नासिकारन्ध्रमार्गेण निर्गते सुमनोहरम्॥ करस्थपुष्पसम्भारे मातृकाम्भोजरूपिणि । संय्योज्य ब्रह्मरंध्रेण मूर्तौ तस्या विधानतः ॥ ” इत्यभिहितम् । तत आवाहनमुद्रया मूलान्ते अमुकदेवि इहावह इहावह । स्थापनमुद्र

यामूलान्ते अमुकदेवि इह तिष्ठ इह तिष्ठ सन्निधापनमुद्रया मूलान्ते अमुकदेवि इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि ।सन्निरोधनमुद्रया मूलान्ते अमुकदेवि इह सन्निरुद्धयस्व इह सन्निरुद्धयस्व सम्मुखीकरणमुद्रया मूलान्ते अमुकदेवि इहसंमुखीकृता भव इह संमुखी कृताभव इति पञ्चमुद्राभिरावाहनादि कृत्वा यन्त्रादौ प्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्य्यात् सा यथा–लेलिहानमुद्रया देव्या हृदये करन्दत्त्वा आँ ह्रीं क्रों हं सः श्री अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः आँ ह्रीं क्रों हंसः श्री अमुकदेवताया जीव इह स्थितः आँ ह्रीं क्रों हंसःश्रीअमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि आँ ह्रीं क्रों हंसः श्रीअमुकदेवताया वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखञ्चिरन्तिष्ठंतु स्वाहा इति प्राणान्प्रतिष्ठापयेत्। अत्रेदम्बोध्यम्–प्रतिष्ठितप्रतिमाशालिग्रामादिपीठेषु आवाहनविसर्ज्जने विनैव पूजा विधेया “ शालग्रामे स्थिरायां वा नावाहनविसर्ज्जने ” ॥ इत्यभिधानात् । एवञ्च कुण्डलिन्यामपि नावाहनविसर्ज्जने शालग्रामशिलात्वाविशेषादित्येके । स्वकीयहृदयाकाशवर्त्तिचैतन्यस्य वामनासारन्ध्रद्वाराञ्जलिवर्त्तिपुष्पे आनीय शालग्रामादिपीठवर्त्तिचैतन्ये कल्पितमूर्तौ पुष्पप्रक्षेपद्वारा ऐक्यं विधाय पूजयित्वा पूर्व्वकल्पितेष्टदेवतां पुष्पद्वारा हृदयाकाशवर्त्तिचैतन्ये योजयेदित्येवं रूपावाहनविसर्ज्जने शा

लग्रामादावपि विधेये । न तु प्राणप्रतिष्ठा कार्य्यैत्यपरे । तन्त्रकौमुद्याम्महामहोपाध्यायदेवनाथठक्कुरस्तु—"शालग्रामशिलादौ हि नित्यं सन्निहितो हरिः । इति केचिद्वदन्त्यत्रबौधायननिदर्शनात् । सर्व्वत्र परिपूर्णस्य तनुरूपस्य तेजसः । सादरं सम्मुखीभावमावाहनमितीरितम् ॥ इति सिद्धान्तसारीयवचनस्यानुरोधतः । शिलादावपि कुर्व्वन्ति केचित्त्वावाहनम्बुधाः" इत्युक्तवानिति । कुण्डलिनी तु द्विविधा वामावर्त्ता दक्षिणावर्त्ता च।महाविपुलतंत्रे—"वामावर्त्ता भवेद्रेखा वर्त्तुलत्रितया यदि । कुण्डली सा च विज्ञेया शक्तिपूजन उत्तमा ॥ दक्षिणे वर्त्तुलं यत्र तत्सुदर्शनमीरितम् ॥ " इति दाक्षिणात्यनिबन्धे—"सप्ताङ्कसदृशाकारा दक्षिणावर्तसञ्ज्ञिका । नवाङ्केन समाकृत्या कुण्डल्येव सुदर्शनम् । वामावर्त्तापि सैवोक्ता वामाचाररता शुभा ॥ " इत्युक्तत्वात् । ततोवगुण्ठनमुद्रया मूलान्ते श्री अमुकदेवि अवगुण्ठिता भवेत्यवगुण्ठ्य सकलीकुर्य्यात् । तच्च पुष्पेण सम्पूज्य देवतायास्तत्तदङ्गेषु तद्देवतामूलमंत्रस्य षडङ्गन्यास एव ततो धेनुमुद्रया वमित्यमृतीकृत्य परमीकरणमुद्रया परमीकरणङ्कुर्य्यात् तच्चापराधक्षमापनम् "क्षमापनापराधानां विज्ञेया परमीकृतिः।" इति वचनात् । ततः प्राणप्रतिष्ठाङ्कृत्वा षोडशोपचारैः पञ्चोपचाराद्यन्यतमोपचारैर्व्वा पूजयेत्। तत्र षोडशोपचारा यथा—

मूलमुच्चार्य्य इदमासनं अमुकदेवतायै नमः इत्यासनन्दद्यात् । दाने तु–आदौ मूलन्ततो द्रव्योल्लेखः ततःसम्प्रदानम् ततस्त्यागार्थकम्पदमिति सर्व्वत्र । तथा च कुलार्णवे–"आदौ मन्त्रं समुच्चार्य्य पश्चाद्देयं समुच्चरेत् । सम्प्रदानन्तदन्ते तु त्यागार्थकपदन्ततः । एवं क्रमेण देवेशि उपचारान्प्रकल्पयेत्॥ " इति ततो मूलम्पठन् तद्गतमानसः महामुद्रया स्वागतन्ते इति पठेत् ततः श्यामाकविष्णुक्रांताब्जदूर्व्वायुतपाद्यङ्गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य इदम्पाद्यम् अमुकदेवतायै नम इति देवतापादयोर्द्दद्यात् । ततो गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदूर्व्वायुतमर्घङ्गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य एषोर्घः अमुकदेवतायै स्वाहा इति देवताशिरसि दद्यात् । वैष्णवे तु–अर्घोत्तरम्पाद्यदानमिति विशेषः । ततो जातीलवङ्गकङ्कोलचूर्णयुतजलेन मूलमुच्चार्य्यं इदमाचनीयम् अमुकदेवतायै स्वधा इति देवतामुखे आचमनीयन्त्रिर्द्दद्यात् । "स्वधेत्याचमनीयञ्च त्रिवारम्मुखपङ्कजे ।" इति पूजाप्रदीपधृततूर्णायागवचनात् । ततः कांस्यपात्रे दध्याज्यमधुरूपम्मधुपर्कङ्गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य एष मधुपर्कः अमुकदेवतायै स्वधा इति मुखे दद्यात् । ततः पुनराचमनीयम्मूलेन अमुकदेवतायै स्वधा इति दद्यात् । एवं स्नानवस्त्रोपवीतनैवेद्यान्तेपि दद्यात् । ततो मूलमुच्चार्य्यं स्नानीयमिदञ्जलम् अमुकदेवतायै निवेदयामि इति दद्यात् । ततो मूले

न विष्णौ पीते शम्भौ सिते विघ्नार्क्कशक्तिषु रक्ते परिधानीयोत्तरीयवस्त्रे नम इत्युच्चार्य्य दद्यात्। पुन्देवतापक्षे उपवीतमिति विशेषः। ततो मूलेनाभरणन्नम इत्याभरणन्दद्यात्। शक्तिपक्षेत्रैव केशसम्मार्ज्जनञ्ज्जलदानञ्च ज्ञेयम्। ततो मूलेन गन्धमुद्रया एष गन्धः अमुकदेवतायै नमः इति चन्दनकर्प्पूरकालागुरुनिर्म्मितङ्गन्धन्दद्यात्। एवं यथायोग्यं रक्तचन्दनसिन्दूराक्षतान्दद्यात् तत आदर्शञ्च दर्शयेत्। ततो मूलेन पुष्पमुद्रया एतानि पुष्पाणि अमुकदेवतायै वौषट् इति पुष्पाणि दद्यात्। अत्र तन्त्रकौमुद्याम्–“ पररोपितवृक्षेभ्यः पुष्पाण्यानीय चार्च्चयेत्। अविज्ञाप्यैव तं यस्तु निष्फलन्तस्य पूजनम्॥ ” इति विशेषः। ततः षडङ्गेन पूजयेत् ततो मूर्द्धगुह्यपादद्वयसर्व्वाङ्गेषु मूलेन पञ्चपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा तत्तत्कल्पोक्तावरणपूजाङ्कुर्य्यात् तथा च “पञ्चपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा परिवारार्च्चनञ्चरेत्। ” इति भट्टः। सर्व्वत्रोपचारदाने तत्तदुपचारमुद्रा दर्शनीया। प्रतिमायाम्पूजाकरणे त्वावरणपूजा घटे कार्य्या “ प्रतिमायाश्च पुरतो घटं संस्थाप्य यत्नतः। परिवारान् यजेत्तत्र घटे तु परमेश्वरि॥ यन्त्राधिष्ठातृदेवांश्च घटचक्रे प्रपूजयेत्। समस्तदेवतारूपं घटञ्च परिचिन्तयेत्॥ ” इत्यभिधानात्। ततो धूपपात्रस्थिताङ्गारे गुग्गुलवगुरुघृतकर्प्पूरशर्क्कराः

प्रक्षिप्य फडिति मन्त्रेण जलेन सम्प्रोक्ष्य नम इति तत्र पुष्पम्प्रक्षिप्य धूपपात्रं वाम तर्ज्जन्या संस्पृशन् मूलेन एष धूपः अमुकदेवतायै समर्प्पयामि नम इति धूपमुत्सृजेत् । ततस्तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्राम्प्रदर्शयेत् । ततो जयध्वनिमन्त्रेण मातः स्वाहेति घण्टामभ्यर्च्य वामहस्तेन वादयन् दक्षिणहस्तेन धूपपात्रमुत्थाप्य नाभितो नासापर्य्यन्तन्त्रिरुत्तोल्य धूपयेत् । ततः फडिति दीपंसम्प्रोक्ष्य नम इति तत्र पुष्पम्प्रक्षिप्य दीपपात्रं वाममध्यमया स्पृशन् मूलमिमन्दीपममुकदेवतायै समर्प्पयामि नम इत्युत्सृज्य दक्षिणहस्तमध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्राम्प्रदर्श्य जयध्वनीत्यादिमन्त्रेण पुनर्घण्टामभ्यर्च्य वामहस्तेन वादयन् दक्षिणहस्तेन दीपपात्रमुत्थाप्य नेत्रपर्य्यन्तन्नयेत् । दीपनैवेद्यदाने तु विशेषो यामले—“ दीपङ्घृतयुतन्दक्षे तैलयुक्तञ्च वामतः । दक्षिणे च सितावर्त्ति वामतो रक्तवर्त्तिकम् ॥ पक्वापक्वविभेदेन नैवेद्येष्वपि तत्स्थितम् । पुरतो नियमो नास्ति दीपनैवेद्ययोः क्वचित् ॥ ” इति । ततः चतुरस्रमण्डलस्थापितसाधारस्वर्णादिभाजने साज्यपायसादिनैवेद्यम्परिविष्य फडिति प्रोक्ष्य चक्रमुद्रया संरक्ष्य द्वादशवारं जप्तेन वायुबीजेनाभिमन्त्रितैर्ज्जलैर्न्नैवेद्यदोषं संशोष्य दक्षिणकरे रमित्यग्निबीजं विचिन्त्य

तत्पृष्ठे वामकरं विन्यस्य दर्शयित्वा नैवेद्यदोषं सन्दह्य वामकरे वमित्यमृतबीजं सञ्चिन्त्य तत्पृष्ठे दक्षिणहस्तङ्कृत्वा अमृतेनाप्लाव्य मूलेन प्रोक्ष्य अष्टधा मूलञ्जप्त्वा धेनुमुद्राम्प्रदर्श्य नैवेद्याय नमः इति गन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य देवमुखोद्गतन्तेजो विचिंत्य वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यभाजनं स्पृशन् दक्षहस्तस्थ जलेन मूलमुच्चार्य इदं नैवेद्यममुकदेवतायै समर्प्पयामि नम इति जलमुत्सृज्य अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्राम्प्रदर्शयेत् । ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेति देव्या हस्ते जलन्दद्यात् । ततो वामकरेण विकचोत्पलसदृशीं ग्रासमुद्राम्प्रदर्श्य दक्षिणकरेण समंत्रकम्प्राणादिमुद्राम्प्रदर्शयेत् । यथा– ॐ प्राणाय स्वाहा अङ्गुष्ठकनिष्ठानामिकाभिः । ॐ अपानाय स्वाहा अङ्गुष्ठतर्ज्जनीमध्यमाभिः । ॐ व्यानाय स्वाहा अनामामध्यमांगुष्ठैः । ॐ उदानाय स्वाहा अंगुष्ठतर्जनीमध्यमानामाभिः । ॐ समानाय स्वाहा सर्व्वाभिरिति । अथ ब्रह्मेशाद्यैः स्तुतां देवकन्याभिः सुधांशुचामरैः परिवीज्यमानां भोक्तृगणान् हासयन्तीन्देवीन्ध्यायेदिति । अत्र पुन्देवतापक्षे ऊहः कार्य्यः । अत्रैव पानार्थम्पानीयन्ताम्बूलादिकञ्च देयम् । अत्रावसरे पूजाङ्गहोमङ्कुर्य्यात् । तद्यथा–तत्रात्मदक्षिणहस्तप्रमाणञ्चतुरङ्गुलमुन्नतं स्थण्डिलङ्कृत्वा मूलेन वीक्ष्य फडिति प्रोक्ष्य तैरेव कुशैः सन्ताड्य हुमिति मन्त्रेणाभ्युक्ष्य मूलेना

ग्निमादाय तदंशङ्गृहीत्वा नैर्ऋतकोणे ॐ क्रव्यादेभ्यो नम इति क्षिपेत् । ततो मूलेनाग्निं स्थापयित्वा वमित्यमृतीकृत्य हुमित्यवगुण्ठ्य फडिति संरक्ष्य ॐ वैश्वानरजातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्व्वकर्म्माणि साधय स्वाहेति वह्निं सम्पूज्य तत्रेष्टदेवतामावाह्य सम्पूज्य आज्येन ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा इति हुत्वा मूलमन्त्रेण पञ्चविंशतिसंख्याकं हुत्वा पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा मूर्त्तौ देवतां संयोज्याग्निं विसर्ज्जयेदिति । "भो भो वह्ने महाशक्ते सर्व्वकर्म्मप्रसाधक । कर्म्मान्तरेपि सम्प्राप्ते सान्निध्यङ्कुरु सादरम् ॥" इति विसर्ज्जनङ्कृत्वा देवतायै आचमनन्दत्त्वा तन्मुखागतन्तेजः पुनस्तन्मुखे निर्ग्गतमिति विचिन्त्य पुष्पाञ्जलिन्दत्त्वा ताम्बूलं निवेद्य छत्रचामरे दर्शयेत् । अथ जपात्पूर्व्वमितिकर्तव्यता–गुर्व्वादिनमस्कारम् १ । मन्त्रशिखाम् २ । मन्त्रचैतन्यम् ३ । मन्त्रार्थभावनाम् ४ । शिरःपद्मे गुरुध्यानम् ५ । इष्टदेवताध्यानम् ६ । मूर्द्ध्नि कुल्लुकाम् ७ । हृदि सेतुम् ८ । कण्ठे महासेतुम् ९ । मणिपूरे निर्व्वाणजपम् १० । योनिमुद्राविभावनाम् ११ । ऋष्यादिन्यासम् १२ । कराङ्गन्यासौ १३ । १४ । प्राणायामम् १५ । मुखशोधनम् १६ । जिह्वाशोधनम् १७ । प्राणयोगम् १८ । दीपनीम् १९ । जननाशौचभङ्गञ्च कृत्वा२० । भ्रूमध्यं नसोरग्रं वा

दृष्ट्वा सेतुम् २१ । पुनर्ज्जपेदिति सरस्वतीतन्त्रे प्रथमपटले–“अथोच्यते जपस्यात्र क्रमश्च परमाद्भुतः । यत्कृत्वा सिद्धिसङ्घानामधिपो जायते नरः ॥ गुर्व्वादिनतिरादौ स्यात्ततो मन्त्रशिखाम्भजेत् । ततोपि मंत्रचैतन्यम्मन्त्रार्थभावना ततः ॥ गुरुध्यानं शिरः पद्मे इष्टध्यानमतः परम् । कुल्लुकाञ्च ततः सेतुम्महासेतुमनंतरम्। निर्व्वाणञ्च ततो देवि योनिमुद्राविभावना । अङ्गन्यासं प्राणायामञ्जिह्वाशोधनमेव च ॥ प्राणयोगं दीपनीञ्च अशौचभङ्गमेव च । भ्रूमध्यं वा नसोरग्रं दृष्ट्वा सेतुञ्जपेत्पुनः ॥ सेतुमशौचभंगञ्च प्राणायाममितिक्रमः ।” चतुर्थपटले–“कुल्लुकां मूर्द्ध्नि सञ्जप्य हृदि सेतुं विचिन्तयेत् । महासेतुं विशुद्धौ च कण्ठदेशे समुद्धरेत् ॥ मणिपूरे तु निर्व्वाणम्महाकुण्डलिनीमधः । स्वाधिष्ठाने कामबीजं राकिनीमूर्द्ध्नि संस्थितम् ॥ विचिन्त्य विधिवद्देवि मूलाधारांतिकां शिवे। विशुद्धांतं स्मरेद्देवि बिसतन्तुतनीयसीम् । वेदिस्थानं हि जिह्वांतम्मूलमंत्रावृतम्मुहुः ॥” इति। तत्र मंत्रशिखा–“मूलाधारादिचक्रेषु सप्तधा सप्तसु क्रमात्। नियोजनङ्कुण्डलिन्या ज्ञेया मंत्रशिखा शिवे ॥ ” इति यामलोक्ता। कुल्लुका तु रुद्रयामले–“तारायाः कुल्लुका देवि महानीलसरस्वती ” सा यथा–“ ह्रींस्त्रीं हूँ पञ्चाक्षरी कालिकायाः कुल्लुका परिकथ्यते । कालीकूर्च्चं वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि ॥ ” यथा

"क्रींहूँस्त्रींह्रीं फट् श्रीमत्त्रिपुरसुंदर्य्याः कुल्लुका द्वादशाक्षरी । वाग्भवम्प्रथमम्बीजङ्कामबीजमनंतरम् ॥ लज्जाबीजन्ततः पश्चात्त्रिपुरे च पदं ततः । ततो भगवति पदमंते ठद्वयमुद्धरेत् ॥" यथा—"ऐं क्लींह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा" इति ते कथिता देवि संक्षेपात्कुल्लुका मया इत्यादिनोक्ता । सेतुरपि तत्रैव—"विप्राणां प्रणवः सेतुः क्षत्रियाणान्तथैव च । वैश्यानान्तु फडर्णः स्यान्माया शूद्रस्य कथ्यते ॥" इति । महासेतुरपि तत्रैव—"महासेतुश्च देवेशि सुंदर्य्यां भुवनेश्वरी । कालिकायाः स्वबीजन्तु तारायाः कूर्च्चबीजकम् ॥ अन्यासां तु वधूबीजम्महासेतुर्व्वरानने ॥" इति । निर्व्वाणमपि तत्रैव—अथ वक्ष्यामि निर्व्वाणं शृणुष्वावहितानघे । प्रणवम्पूर्व्वमुच्चार्य्य मातृकाञ्च समुच्चरेत् ॥ अथ मूलम्महेशानि ततो वाग्भवमुच्चरेत् । मातृकाञ्च समस्ताञ्च पुनः प्रणवमुच्चरेत् । एवम्पुटित मूलन्तु प्रजपेन्मणिपूरके ॥" इति । अत्राङ्गन्यासपदम् ऋष्यादिन्यासकरन्यासयोरपि बोधकम् । एवञ्जिह्वाशोधनं मुखशोधनस्याप्युपलक्षणम् । तदुभयञ्च प्रणवस्य दशधा जपेन भवतीति ज्ञेयम् तत्रैव प्राणयोगः—" मायया पुटितो मन्त्रः सप्तधा जपितः पुनः । स प्राणो जायते देवि प्राणयोग इति स्मृतः ॥" इति । दीपन्यपि तत्रैव—"वेदादिपुटितं मन्त्रं सप्तवारञ्जपेत्पुनः । दीपनीयं समाख्या

ता सर्व्वत्र परमेश्वरि ॥ ” इति । अशौचभङ्गश्च जननमरणाशौचयोर्भंगः । स च क्रमेण जपस्याद्यन्तयोः कार्य्यः । स च प्रणवपुटितस्य मूलमन्त्रस्य सप्तधा जपेन भवति । कुलार्णवे–“ ब्रह्मबीजम्मनोर्दत्त्वा चाद्यन्ते च महेश्वरि । सप्तवारञ्जपेन्मन्त्रं सूतकद्वयमुक्तये॥ ” इत्युक्तेः । ततो जपमालामानीय पुरतः क्वचित्पात्रे संस्थाप्य। “ह्रीं मालेमाले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्व्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ ” इति मन्त्रेण ॐ अमुकदेवतामालायै नम इत्यर्घोदकगन्धाक्षतपुष्पादिभिः मालां सम्पूज्य ह्रीं अविघ्नं कुरु माले त्वञ्जपकाले सदा मम । निर्व्विघ्नङ्कुरु देवेशि अक्षमाले नमोस्तु ते ॥” इति मन्त्रेण दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा शिरसि गुरुं हृदये स्वेष्टदेवतां ध्यायन् हृदयसमीपम्मालामानीय दक्षहस्तमध्यमामध्यमपर्व्वणि संस्थाप्य प्रणवमुच्चार्य्य सहस्रधा शतधा दशधा वा मूलमन्त्रञ्जपेत् । पुनः प्रणवमुच्चार्य्य जपं समाप्य ह्रीं त्वम्माले सर्व्वदेवानाम्प्रीतिदा शुभदा मता। शुभङ्कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्य्यञ्च देहि मे॥” ह्रीं सिद्ध्यै नम इति स्वशिरसि मालां संस्थाप्य पुनः सेतुमशौचभङ्गञ्च विधाय प्राणायामत्रयङ्कृत्वा ऋष्यादिन्यासङ्करन्यासं षडंगन्यासञ्च विधाय देव्या वामहस्ते अर्घोदकेन “ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् । सिद्धिर्भवतु

मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥” इति जपं समर्प्पयेत्। पुन्देवतापक्षे तु देवस्य दक्षिणहस्ते इति विशेषः। एवम्मन्त्रे सर्व्वत्र पुंलिंगपदमूहनीयम्। क्वचित्तु जपसमर्प्पणानन्तरम्प्राणायाम उक्तः। ततो देवताग्रे मूलेन पञ्चपुष्पाञ्जलीन्प्रक्षिपेत्। ततो मालां स्थापयेत्। सूर्य्यादिसन्निधौ तदभिमुख एव सर्व्वसिद्ध्यै जपङ्कुर्य्यात्। मन्त्रदेवप्रकाशिकायाम्—“सूर्य्यस्याग्रे गुरोरिन्दोर्दीपस्य च जलस्य च। विप्राणाञ्च गवाञ्चैव सन्निधौ सम्मुखो जपेत् ॥” इत्यभिधानात्। ततो घण्टावादनपूर्व्वकं स्तोत्रकवचादिकम्पठित्वा मूर्द्धपर्य्यन्तमारात्रिकङ्कुर्य्यात् ॥ तल्लक्षणन्तन्त्रकौमुद्याम्—“ततः पिष्टकसंजातान्समवर्त्तिसमन्वितान्। घृतादिज्वलितान्मन्त्री उच्चैर्दीपान्प्रदर्शयेत् ॥ पारावतभ्रमाकारान्नातिदीप्तशिखान्वितान्। आदाय पाणिना ध्यायन्मूर्द्धि नीराजयेत्प्रभुम्। आरात्रिकमिति प्रोक्तं घण्टावादनपूर्व्वकम्॥” इति। पूजाप्रदीपेतु—“अमृतापिधानदानात्पूर्व्वमेवारात्रिकमुक्तम्। क्वचित्तु—जपात्पूर्व्वमेव कवचादिपाठः जपसमर्प्पणानन्तरं नित्यहोमश्च दृश्यत इति। ततः प्रदक्षिणामष्टाङ्गप्रणामञ्च कुर्य्यात्। तत उपविश्य पुष्पाञ्जलीन्दत्त्वा दक्षिणहस्तचुलुकेन जलपुष्पाक्षतादीन्यादाय ॐ इतः पूर्व्वम्प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्म्मणा हस्ताभ्याम्पद्भ्यामुदरेण शिश्ना

यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतन्तत्सर्व्वम्ब्रह्मार्प्पणम्भवतु स्वाहा इति समर्प्य पुनर्ज्जलाक्षतादीन्यादायमाम्मदीयं सकलं सम्यक् श्री अमुकदेवतायै समर्प्पयामि ॐ तत्सत् पुनर्ज्जलादीन्यादाय ॐ साङ्गे सायुधे सवाहनसपरिवारे अमुकदेवि पूजितासि क्षमस्वेति विसर्ज्जयेत् । ततः संहारमुद्रया तत्तेजः पुष्पेण सार्द्धं माघ्राय हृदये समानीय ऐशान्याम्मण्डलङ्कृत्वा । निर्म्माल्यङ्गृहीत्वा ॐ उच्छिष्टचाण्डालिन्यै नम इति पठित्वा तत्र प्रक्षिपेत् । पुन्देवतापक्षे विष्वक्सेनादिभ्यो नम इति विशेषः । ततः शङ्खस्यावशिष्ट जलं शरीरे लेपयेत् । ततश्चरणोदकङ्गृहीत्वा नैवेद्यन्तद्भक्तेभ्यो दत्त्वा शेषं स्वयम्भुञ्जीत । ततो देवतान्ध्यायन् सुखं विहरेदिति पूजासामान्यविधिः । अथ संक्षेपतः सर्व्वासान्देवतानान्नित्यपूजाविधिर्ल्लिख्यते। तदुक्तं यामले—"आदावृष्यादिविन्यासः करशुद्धिस्ततः परम्। अङ्गुलीव्यापकौ कृत्वा हृदादिन्यास एव च ॥ तालत्रयञ्च दिग्बन्धः प्राणायामस्ततः परम् । ध्यानं पूजा जपश्चैव सर्व्वतन्त्रेष्वयं विधिः ॥" पूजा च मूलदेवताया एवमन्यच्च । जपार्थं सर्व्वमन्त्राणां विन्यासश्च लिपिं विना । कृते तद्विफलं विद्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत् ॥" इति । पूजाप्रदीपे—"एतान्यन्यानि पूजायां साधनानि बहून्यपि । उत्तमानि च मध्यानि न्यूनानि विविधानि वै ॥ स्वस्थः समर्थः

कुर्व्वीत उत्तमैरेव साधनैः ॥ मध्यमो मध्यमैरेव न्यूनो न्यूनैस्तु साधनैः ॥ आपन्नश्चेत्समर्थोपि न्यूनैरेव समाचरेत् । पूजाकर्म्मविशेषेण देशकालानुसारतः ॥ यथाशक्ति यथान्यायं यथालोकाविगर्हितम् । पूजां विस्तरतः कर्त्तुं यो न शक्नोति मानवः ॥ स इहाङ्गेन्द्रवज्राद्यैः पूजयेदिष्टदेवताम् । अथवा देवतामात्रन्ध्यात्वा सम्यक् प्रपूजयेत् ॥ अथवा मानसीङ्कुर्य्यादात्मपूजामथापि वा । अथवा केवलाम्पूजाम्बाह्याङ्कुर्य्याद्विचक्षणः ॥ अर्च्चामात्रेऽसमर्थश्चेद्दद्यादर्च्चनसाधनम् । सम्पूज्यैव जपङ्कुर्य्यान्न मन्त्रङ्केवलञ्जपेत् ॥" इति । सकलावरणपूजाशक्तौ—अङ्गेन्द्रवज्राद्यावरणत्रयमेव पूजयेत् । तत्राप्यशक्तौ देवतामात्रपूजां सम्यक्तया । तत्राप्यशक्तौ पूजामात्रङ्कुर्य्यात् । तत्राप्यशक्तावन्यस्मै पूजासाधनं दत्त्वा तद्द्वारा पूजाङ्कारयेत् । तत्राप्यशक्तावन्यविधीयमानपूजाम्पश्येदिति । अथ मालानिर्णयः—सा च त्रिविधा करमाला वर्णमाला पद्माक्षादिमाला च। तत्राद्या पुन्देवताविषये । क्रमेण अनामिकामध्यममूलपर्व्वत्रयानामामध्यमाग्रपर्व्वतर्ज्जनीपर्व्वत्रयघटिता मध्यमामूलमध्यमपर्व्वरूपमेरुसहिता । तत्र प्रादक्षिण्यक्रमेण जप्त्वा उक्तपर्व्वसु प्रथमान्तिमे पर्व्वणी विहायाष्टसुपर्वसु जपेनाष्टोत्तरत्वं सम्पादनीयम् । शक्तिमंत्रजपे तु क्रमेणानामिकामध्यममूलपर्व्वकनिष्ठापर्वत्रयानामिकाग्रप

र्व्वंमध्यमापर्व्वत्रयतर्ज्जनीमूलपर्व्वघटिता तर्ज्जनीमध्यमाग्रपर्व्वरूपमेरुसहिता। तत्र प्रदक्षिणक्रमेणैव जपेत्।“अनुलोमविलोमाभ्याम्प्रजपेत्सर्व्वमालया। केवलञ्चानुलोमेनप्रजपेत्करमालया॥” इति शिवोक्तेः। तत उक्तपर्व्वसु प्रथमांतिमे पर्व्वणी मुक्त्वाष्टपर्व्वसु सकृज्जपेनाष्टोत्तरत्वञ्जपस्य सम्पादनीयम्। तत्रायंविधिः-छिद्ररहितसंहताङ्गुलीकदक्षिणकरन्तिर्य्यंक्कृत्वा हृदयदेशे समारोप्य वाससा हस्तमाच्छाद्य अङ्गुल्यग्राणां पर्व्वसंधीनाञ्च स्पर्शम्मेरुलङ्घनञ्च विहाय ससङ्ख्याकञ्जपङ्कुर्य्यादिति। द्वितीया वर्णमाला–सा तु अकचटतपयशेत्यष्टवर्ग्गावयवकसानुस्वारादिक्षकारान्तैकपञ्चाशद्वर्णघटिता क्षकारस्तत्रमेरुत्वेनोपकल्पितः तत्र शवर्गस्तु शषसहळक्षरूपो ज्ञेयः तस्याञ्च एक वर्णं विभाव्य मंत्रमेकवारमुच्चार्य्य द्वितीयं वर्णं विभाव्य मन्त्र उच्चारणीय इति। एवं ळकारपर्य्यन्ते वर्णे जपित्वा पुनर्ळकाराद्यकारपर्य्यन्ते जपित्वा यदृच्छया शतादिसङ्ख्याकत्वञ्जपस्योपपाद्याष्टानामपिवर्ग्गाणामन्तिमेषु वर्णेषु जपित्वाऽष्टोत्तरत्वं सम्पादनीयम्। तृतीया तु–रुद्राक्षशङ्खपद्माक्षपुत्रजीवमौक्तिकस्फाटिकमणिरत्नसौवर्णविद्रुमराजतकुशमूलैः कृतान्यस्ताकारादिक्षकारान्तवर्णा तन्त्रोक्तविधिना कृतसंस्कारा सर्प्पाकृतिर्ग्गोपुच्छाकृतिर्व्वा गृहस्थस्याक्षमालारूपा। तत्र चाकारघटितमणिमारभ्य ळकारघटितमणिपर्य्य

न्ते जपित्वा लकारघटितमणिमारभ्याकारघटितमणिपर्य्यन्ते जपेदित्यनुलोमविलोमक्रमेण जपित्वा जपस्य शतादिसङ्ख्याकत्वमुपपाद्य प्रथममणौ जपित्वा षण्मणीनन्तरान् कृत्वा अष्टमे मणौ मूलञ्जपेत् । एवमन्तिमगुटिकापर्य्यन्तजपेनाष्टोत्तरत्वञ्जपस्य सम्पादयेत् । "आदावेकन्ततः सप्त सप्त सप्तक्रमेण तु । एवङ्क्रमेण देवेशि जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥" इति तन्त्रान्तरेऽभिधानात् । इमान्तु मालाम्पट्टवस्त्रादिनिर्म्मितगोमुखाकृतियन्त्रे संस्थाप्य कृतो जपोऽतिप्रशस्तः । मुण्डमालतन्त्रे–"चतुर्व्विशाङ्गुलिमितम्पट्टवस्त्रादिसम्भवम् । निर्म्मायाष्टाङ्गुलिमुखं ग्रीवान्तत्षोडशाङ्गुगुलाम् ॥ ज्ञेयङ्गोमुखयन्त्रञ्च सर्व्वतन्त्रेषु गोपितम् । तन्मुखे स्थापयेन्मालां ग्रीवामध्यगतः करः । प्रजपेद्विधिना गुह्यं वर्णमालाधिकम्प्रिये ॥" इत्यभिधानात् । " गोमुखादौ ततो मालाङ्गोपयेन्मातृजारवत् ॥" इति मायातन्त्रेऽभिधानाच्च । विशेषान्तरंतु वैशंपायनसंहितायाम् " अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याञ्च चालयेन्मध्यमध्यतः । तर्ज्जन्या न स्पृशेदेनाम्मुक्तिदो गणनक्रमः ॥ जीर्णे सूत्रे पुनः सूत्रं ग्रन्थयित्वाशतञ्जपेत् । प्रमादात्पतिते हस्ताच्छतमष्टोत्तरञ्जपेत् । जपेन्निषिद्धसंस्पर्शे क्षालयित्वा यथोचितम् ।" छिन्नेप्यष्टोत्तरशतजपः छिन्नकरभ्रष्टयोस्तुल्यत्वादिति । अथाक्षमालादिषु कृत

स्य मन्त्रजपस्य सङ्ख्याकरणद्रव्यनिषेधविधी आह यामले–" नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्व्वा न धान्यैर्न्न च पुष्पकैः । न चन्दनैर्म्मृत्तिकया जपसङ्ख्यां तु कारयेत् ॥ लाक्षाकुसीदं सिन्दूरं गोमयञ्च करीषकम् । एभिर्न्निर्म्माय गुटिकाञ्जपसङ्ख्यान्तु कारयेत् ॥ " इति । कुसीदं रक्तचन्दनम् । करीषं शुष्कगोमयमिति । अथागमोक्तपूजोपयोगितत्तन्मुद्रालक्षणं क्रमेण लिख्यते–" ऋज्वीञ्च मध्यमाङ्कृत्वा तर्ज्जनीमध्यपर्वणि । संय्योज्याकुञ्चयेत्किञ्चिन्मुद्रैषा कुशसंज्ञिका ॥ इति ॥ १ ॥ अन्योन्याभिमुखाश्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः । तथैव तर्ज्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥ २ ॥ अंगुष्ठाग्रेण तर्ज्जन्याः संयोज्याथोर्द्धरेखया । अन्यांगुलीस्तथानम्य नाराचः स्यात्प्रसार्य्यते ॥ ३ ॥ तर्ज्जन्यंगुष्ठांगुलिध्वनिश्छोटिका । कनिष्ठांगुष्ठकौ शक्तौ करयोरितरेतरम् । तर्ज्जनीमध्यमानामा संहता भुग्नवर्ज्जिता । मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शंखस्योपरि चालिता ॥ ४ ॥ " दक्षपाणिपृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत् । अंगुष्ठौचालयेत्सम्यङ्मुद्रेयम्मत्स्यरूपिणी ॥५॥ वामहस्तस्य तर्ज्जन्यान्दक्षिणस्य कनिष्ठया । तथा दक्षिणतर्ज्जन्यां वामांगुष्ठेन योजयेत् ॥ उन्नतन्दक्षिणाङ्गुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः ॥ अङ्गुलीर्य्योजयेत्पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च ॥ कूर्म्मपृष्ठसमङ्कुर्य्याद्दक्षपाणिञ्च सर्व्वतः ॥ कूर्म्ममुद्रेयमाख्याता देव

ताध्यानकर्म्मणि ॥ ६ ॥ हस्ताभ्यामञ्जलिम्बद्धानामिकामूलपर्व्वणोः । अङ्गुष्ठौ निःक्षिपेत्सेयम्मुद्रा त्वावाहनी स्मृता ॥ ७ ॥ अधोमुखी त्वियञ्चेत् स्यात् स्थापनी मुद्रिका स्मृता ॥ ८ ॥ उच्छ्रिताङ्गुष्ठमुष्ट्योस्तु संय्योगात्सन्निधापिनी ॥ ९ ॥ अंतःप्रवेशिताङ्गुष्ठा सैव संरोधिनी मता ॥ १० ॥ उत्तानमुष्टियुगला सम्मुखीकरणी मता ॥ ११ ॥ तर्जनीमध्यमानामाः समं कुर्य्यादधोमुखम् ॥ अनामायांक्षिपेद्वृद्धामृज्वींकृत्वा कनिष्ठिकाम् ॥ ललिहा नाम मुद्रेयञ्जीवन्यासे प्रकीर्तिता ॥ १२ ॥ सव्यहस्तकृतामुष्टिर्दीर्घाधोमुखतर्जनी ॥ अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता मता ॥ १३ ॥ दक्षिणा निबिडा मुष्टिर्दीर्घाधोमुखतर्जनी । अवगुण्ठनमुद्रेयमभितोभ्रा मिता मता ॥ १४ ॥ अन्योन्यग्रथितांगुष्ठा प्रसारितपरांगुली । महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः ॥ १५ ॥ कनिष्ठामूलसंलग्नावंगुष्ठौ गन्धमुद्रिका ॥ १६ ॥ अंगुष्ठमूललग्ने च तर्ज्जन्यौ पुष्पमुद्रिका ॥ १७ ॥ अङ्गुष्ठे तर्ज्जनीमूलयोगः स्याद्धूपमुद्रिका ॥ १८ ॥ अंगुष्ठे मध्यमामूलयोगे स्याद्दीपमुद्रिका । हस्तौ तु संमुखौ कृत्वा सन्नतप्रोत्थितांगुली ॥ तलान्तर्म्मिलितांगुष्ठौ सुभुग्नौ सुप्रसारितौ । कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्रसञ्ज्ञिका ॥ १९ ॥ अङ्गुष्ठेनानामिकामूलयोगो नैवेद्य

मुद्रिका ॥ २० ॥ पद्माभश्च वामहस्तो ग्रासमुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥ २१ ॥ कनिष्ठानामिकाङ्गुष्ठैर्दक्षहस्तस्य संय्युतैः ॥ कथिता मुनिभिः प्राणमुद्रा परमदुर्ल्लभा ॥ २२ ॥ तर्ज्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैरपानस्य तु सा स्मृता ॥ २३ ॥ सा मुद्रा ॥ अनामामध्यमाङ्गुष्ठैरुदानस्य च मुद्रिका ॥ २४ ॥ तर्ज्जन्यनामामध्याभिः साङ्गुष्ठाभिश्चतुर्थिका ॥ २५ ॥ चतुर्थिका व्यानमुद्रा ॥ ॥ मुद्राङ्गुलीभिः सर्व्वाभिरुदानस्य प्रकीर्त्तिता ॥ २६ ॥ संयुतैरिति सर्व्वत्र तृतीयान्तेनान्वेति । मध्याभिरित्यादौ लिङ्गविपरिणामेनेति ज्ञेयम् ॥ अधोमुखे वामहस्ते ऊर्द्धास्यन्दक्षहस्तकम् ॥ क्षिप्त्वाङ्गुलीरङ्गुलीभिः सङ्ग्रथ्य परिवर्त्तयेत् । एषा संहारमुद्रा स्याद्विसर्ज्जनविधौ स्मृता ॥ २७ ॥ तत्तन्मुद्राकरणासामर्थ्ये तत्तन्मुद्राध्यानेन पुष्पप्रक्षेपेण तत्त्वमुद्रया वा न्यासोपचारादिकङ्कर्त्तव्यम् ॥ गौतमीतन्त्रे–“ मनसा विन्यसेत्तास्ताः पुष्पेणैवाथ वा मुने । अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां वा चान्यथा विफलम्भवेत् ॥ ” इत्यभिधानात् ॥ ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे आगमोक्तेष्टदेवतापूजाकथनन्नाम सप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

अथ काम्या पार्थिवशिवलिङ्गपूजा। सा चाचारान्नित्याया अपि ब्रह्मपूजातः प्रागेव विधेया तस्या इतिकर्त्तव्यता ब्रह्मपुराणे उक्ता– “ हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्। पशुपतिः शिवश्चैवमहादेवेति सर्ज्जयेत्। मृत्तिकाग्रहणे चैवघट्टने च प्रतिष्ठने। आवाहने च स्नपने पूजने च विसर्ज्जने॥ हरादीनि च नामानि महादेवान्तानि कीर्त्तयेत्॥ एवञ्च भस्मत्रिपुण्ड्रं विधाय रुद्राक्षमालाम्परिधाय ॐ हराय नम इति शुभमृत्तिकामाहृत्य ॐ महेश्वराय नम इति सङ्घट्ट्य ॐ शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव इति पूज्यत्वप्रयोजकसंस्कारं विधाय “ ध्यायेन्नित्यम्महेशं रजतगिरिनिभञ्चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गम्परशुमृगवरा

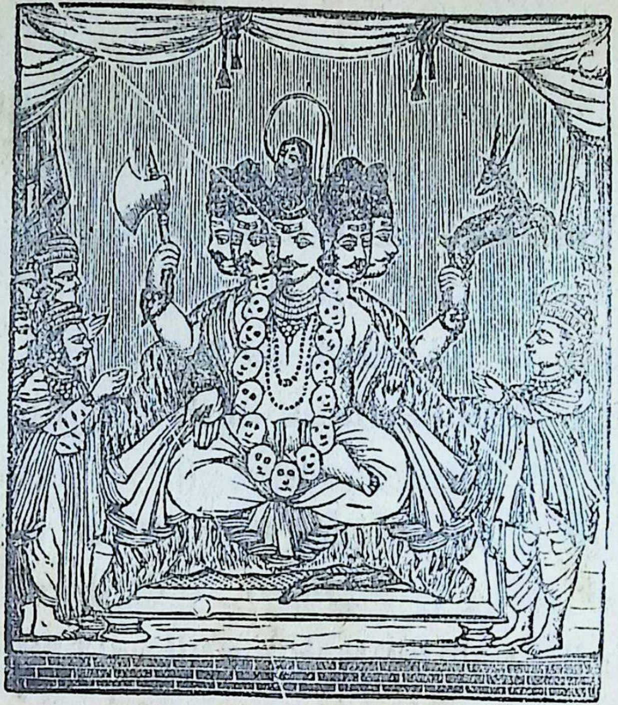

भीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजन्निखिलभयहरम्पञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रम् ॥ ” इति ध्यात्वा ॐ पिनाकधृजे नमः ॐ पिनाकधृक् इहागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा ॐ पशुपतये नमः एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐ पशुपतये नमः इति पाद्यादीनि दत्त्वा ॐ नमः शिवाय एष गन्धः ॐ शिवाय नमः इति गन्धान्दद्यात् । तत एवमेवाक्षतपुष्पबिल्वपत्रधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवस्त्रालङ्कारनैवेद्यानि दद्यात् । ततो वामावर्त्तेन लिङ्गपूर्व्वाद्याग्नेय्यान्तमष्टसु दिक्षु वेद्यामष्टमूर्त्तीर्व्वक्ष्यमाणमन्त्रैर्गन्धाक्षतपुष्पैः पूजयेत् । मन्त्रा यथा—ॐशर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः १। ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ॐ २। रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः ३। ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ४। ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः ५। ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः ६। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः ७। ॐईशानाय सूर्य्यमूर्त्तये नमः ८। इति। तथा च भविष्यपुराणे विष्णुवाक्यम्—“ साधुसाधु द्विजश्रेष्ठ साधु पृष्टोस्मि सुव्रत । शृणुष्व गदतः सर्वं शिवमन्त्रगणम्परम् ॥ ” इत्युक्त्वाऽष्टमन्त्रानभिधाय “ मूर्तयोष्टौ शिवस्यैताः पूर्व्वादिक्रमयोगतः । आग्नेय्यान्ताः प्रपूज्याश्च वेद्यां लिङ्गे शिवं यजेत् ॥ ” शिवमिति ॐ नमः शिवायेति मंत्रेण लिङ्गे शिवम्पू

जयेत् । ततोष्टमूर्तिरुक्तक्रमेणेतिवाक्यार्थः । तत ॐ महादेवाय नमः ॐ महादेव पूजितोसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानङ्गच्छेति विसर्ज्जयेत् । ततः ॐ चण्डेश्वराय नमः इति निर्म्माल्यङ्क्षिपेत् । दाक्षिणात्यनिबन्धे प्रयोगपारिजाते क्रियासारे– “ अशून्यमस्तकं लिङ्गं सदा कुर्वीत साधकः । ” लिङ्गम्पार्थिवशिवलिङ्गम् प्रकरणात् । शूलपाणौ लैङ्गे–“ सूतके मृतके चैव न त्याज्यं शिवपूजनम् । विष्वक्सेनाय दातव्यं नैवेद्यस्य शतांशकम् ॥ पादोदकं प्रसादश्च लिङ्गे चण्डेश्वराय तु ॥ ” इत्युक्तम् ॥ इति पूजापङ्कजभास्करे पार्थिवशिवलिङ्गपूजनन्नामाष्टादशःप्रकाशः ॥ १८ ॥

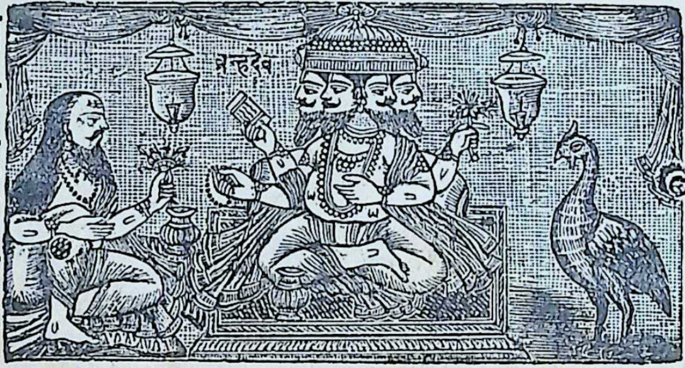

अथ ब्रह्मपूजा । साचसर्व्वदेवतापूजोपकरणद्रव्यैः प्रतिपत्तिरूपेण ॐ ब्रह्मणे नम इति भूमौ कार्य्या । अस्य ध्यानम्–ब्रह्मा चतुर्म्मुखः पद्मगर्भवर्णश्चतुर्भुजः ।उर्ध्वाधः क्रमेण दक्षिणहस्ताभ्यां स्रुवं स्रुचञ्च दधानस्तथा वामकराभ्याङ्कमण्डलुन्दण्डञ्च दधानः शुक्लाम्बरपरीधानो मृगचर्मोत्तरीयो दिव्ययज्ञोपवीती कदा

चिह्नंसारूढः कदाचित्कमलासनः दक्षिणपार्श्वे सन्निधौ आज्यस्थाली सरस्वती च चत्वारो वेदाश्च वामपार्श्वे सावित्री यस्य स इति। ननु पद्मपुराणप्रथमखण्डे—“यदि मेस्ति तपस्तप्तङ्गुरवस्तोषिता यदि । सर्व्वब्रह्मसमूहेषु स्थानेषु विविधेषु च ॥ न तु,ते ब्राह्मणाः पूजां करिष्यन्ति कदाचन ॥” इति सावित्रीकृतशापेन ब्रह्मणोऽपूज्यत्वात्तत्पूजाप्रयोगकथनमयुक्तमिति चेन्न ।“पूजयिष्यन्ति ब्रह्माणन्नरा भक्तिसमन्विताः । तेषामसौ धनन्धान्यन्दातायुष्यं सुखानि च ॥” इति गायत्रीकृतशापोद्धारस्य ब्रह्मपूजाफलप्रदर्शकस्य तदग्रे दर्शनेन । “ब्रह्माणं वा प्रतिष्ठाप्य सर्व्वयत्नैर्विधानतः । यत्पुण्यफलमाप्नोति तदेकाग्रमनाः शृणु॥” इत्यादिना ब्रह्मप्रतिमास्थापनस्याप्यग्रेविधानेन च “अद्य प्रभृति यः पूजाम्मन्त्रयुक्ताङ्करिष्यति । तव मर्त्यो धरापृष्ठे यथान्येषान्दिवौकसाम् । भविष्यति च तद्वंशो दरिद्रो दुःखसंयुतः ॥” इति स्कन्दपुराणीयसावित्रीकृतशापवचने मन्त्रपूर्व्वामित्यभिधानेन च ब्रह्मवैवर्त्ते कृष्णखण्डे चतुस्त्रिंशत्तमेध्याये कृष्णकृताप्सरःशापोद्धारे—“तव मन्त्रन्न गृह्णन्ति केपि वेश्याभिशापतः । यदन्यदेवपूजायान्तव पूजा भविष्यति ॥” इति वचने तन्मन्त्रग्रहणस्यैव निषेधेन च शापस्य समन्त्रनित्यपूजामात्रनिवृत्तिपरत्वात् अमन्त्रकनित्यपूजाया निर्ब्बाधत्वात्

सर्व्वदेवपूजान्ते तत्करणे मानं तु कृष्णकृतशापोद्धारवचनोत्तरार्द्धमेव तत्रान्यदेवपूजायामित्यस्य अन्यदेवपूजायाङ्कृतायां सत्यामित्यर्थात् । सा चावाहनविसर्ज्जनवर्जितैवोचिता गंधपुष्पादिभिर्म्मिलितैरेकदैव भूमौ तत्पूजाकरणस्याचारसिद्धत्वेन भूमौ चावाहनविसर्ज्जनयोरभावस्य प्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनविसर्ज्जनवर्ज्जमिति बौधायनेन विधानात् । अत एव शूलपाणौ-ब्रह्मपूजा नित्या सा च यद्यपि देवतान्तरपूजावत्कर्त्तुमुचिता तथापि सर्व्वदेवपूजान्ते पूजोपकरणशेषद्रव्यैः ॐ ब्रह्मणे नम इति मन्त्रेणाचरन्ति शिष्टा इत्यभिहितमिति बोध्यम् ॥ ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करे ब्रह्मपूजाकथनन्नामैकोनविंशः प्रकाशः ॥ १९ ॥

**अथ विंशः प्रकाशः** । ततो देवेशं क्षणन्ध्यात्वा ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्बृहत् ॥ इति ऋचम्पठेदिति गौडाः । “ननु त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा इत्यादिगतागतङ्कामकामा लभन्ते ” इत्यन्तभगवद्गीतानवमाध्यायस्थभगवद्वाक्येन काम्यकर्म्मानुष्ठानस्य मोक्षप्रतिबन्धकत्वावगमात्काम्यपूजादीनामत्र कथनमयुक्तमिति चेन्न काम्यस्यापीश्वराराधनकर्म्मणः कालेन वैराग्यपूर्व्वकनिष्कामपरमेश्व

राराधनपरत्वजननद्वारा ब्रह्मजिज्ञासुत्वसम्पादकत्वेन जिज्ञासायाश्च ज्ञानजनकत्वेन परम्परया मोक्षसाधकत्वादिति बोध्यम् । अत एव भगवद्गीतासप्तमाध्यायस्थ " चतुर्व्विधा भजते माञ्जनाः सुकृतिनोऽर्ज्जुन । आर्त्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ । तेषाञ्ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते"। इति श्लोकटीकायाम्मधुसूदनस्वामिना ये त्वासुरभावरहिताः पुण्यकर्म्माणो विवेकिनस्ते पुण्यकर्म्मतारतम्येन चतुर्व्विधाः सन्तो माम्भजन्ते क्रमेण कामनाराहित्येन मत्प्रसादान्मायान्तरन्तीत्याह । चतुर्व्विधा भजन्ते मामित्यादि इत्यवतार्य्य ये सुकृतिनः पूर्वजन्मकृतपुण्यसञ्चया जनाः सफलजन्मानस्ते एव नान्ये माम्भजन्ते सेवन्ते हे अर्ज्जुन तत्र त्रयः सकामाः एकोऽकाम इत्येवञ्चतुर्व्विधाः तत्र आर्त्तः आर्त्या शत्रुव्याध्याद्यापदा ग्रस्तस्तन्निवृत्ति मिच्छन्यथा मखभङ्गेन कुपिते इन्द्रे व्रजवासी जनः इत्याद्युक्ता जिज्ञासुर्मुमुक्षुरात्मज्ञानार्थी यथा मुचुकुंदजनकश्रुतदेवोद्धवादयः । 'अर्थार्थी इह वा परत्र वा यद्भोगोपकरणन्तल्लिप्सुः' तत्र इह यथा सुग्रीवो विभीषणश्च परत्र यथा ध्रुवः, एते त्रयोपि भगवद्भजनेन मायान्तरन्ति तत्र जिज्ञासुर्ज्ञानोत्पत्त्या साक्षादेव मायान्तरति आर्त्तोऽर्थार्थी च जिज्ञासुत्वम्प्राप्येति विशेषः इत्यभिहितम् न च सूर्य्यादीनामीश्वरत्वाभावात्तदीयका

म्यपूजनादीनां बन्धकत्वं स्यादेवेति वाच्यम् "येप्यन्यदेवताभक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्व्वकम्॥अहं हि सर्व्वयज्ञानाम्भोक्ता च प्रभुरेव च। न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवंति ते॥" इति भगवदुक्तेः परमेश्वराभेदबुद्ध्या तदीयकाम्यपूजनस्यापि परम्परया मोक्षसाधकत्वावगमात्। अत्राविधिपूर्वकमित्यस्य विधिः परमेश्वराभिन्नत्वबुद्धिस्तद्रहितत्व पूर्व्वकमित्यर्थः। तेनेश्वरबुद्ध्या तेषाङ्काम्यपूजनस्यापि मोक्षजनकत्वं बुद्धिसत्त्वशुद्धिद्वाराभवतीत्यायाति। वस्तुतो नानोपनिषत्पुराणेतिहासेभ्यो ब्रह्मविष्णुशिवदुर्ग्गागणेशाग्नीनां मायावच्छिन्नचैतन्यरूपत्वावगमात्तेषामीश्वरत्वं निर्बाधमेवेति न काप्यनुपपत्तिः। ते चोपनिषदादयो ग्रन्थविस्तरभिया न लिखिता इति बोध्यम्। किञ्च फलप्रदर्शनं रोचनार्थमेव न तु तत्फलकाममात्रस्य प्रवृत्त्यर्थम् अत एव "वेदोक्तमेव कुर्वाणो निःसङ्गोऽर्पितमीश्वरे। नैःष्कर्म्म्यांल्लभते सिद्धिं रोचनार्था फलश्रुतिः॥" इत्येकादशस्कन्धभागवततृतीयाध्यायेभिधानात्। अत्र श्रीधरः—रोचनार्था कर्म्मणि रुच्युत्पादनार्था अगदपाने खण्डलड्डुकादिवत् यथा पिता बालम्प्रति ब्रवीति पिब पुत्रौषधं खण्डलड्डुकादीँस्ते दास्यामीति तत्र न खण्डलड्डुकादिलाभो गदपानस्य फलम् अपि तु रोगनाशस्तद्वत्। ततश्च कर्म्माभिरुच्या वेदार्थं विचारयति त

था च " यो वा एतदक्षरमविदित्वा गार्ग्यस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः ॥ " इत्यनात्मज्ञस्य कृपणता " तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति ब्रह्मचर्य्येण तपसा श्रद्धया यज्ञेनानाशकेन च ॥ " इति यज्ञादीनां ज्ञानशेषताञ्चावधार्य्य निष्कामेषु कर्म्मसु प्रवर्त्तते ततश्च " स्वर्गकामोश्वमेधेन यजेत" इत्यादिभिः कामितस्यैव स्वर्गादेः फलत्वेनावगमादकामितोऽसौ न भवतीति नैष्कर्म्म्यसिद्धिर्भवतीति अत एव भगवद्गीताष्टादशाध्याये " एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गन्त्यक्त्वा फलानि च । कर्त्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितम्मतमुत्तमम् ॥ " इति । अत्र सङ्गन्त्यक्त्वेत्यादेः सङ्गमहङ्करोमीति कर्तृत्वाभिनिवेशं फलानि चाऽभिसन्धीयमानानि त्यक्त्वांतःकरणशुद्धये कर्म्माणि कर्त्तव्यानीति मे मतम् अत एव हे पार्थ कर्म्माधिकृतैः कर्म्माणि त्याज्यानि न त्याज्यानि चेति द्वयोर्म्मतयोर्न्न त्याज्यानीति मम निश्चितम्मतमुत्तमं श्रेष्ठमित्यर्थः इति मधुसूदनस्वामी । द्वादशेध्यायेपि–"अथैतदप्यशक्तोसि कर्त्तुम्मद्योगमाश्रितः । सर्व्वकर्म्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥" इति।अत्र श्रीधरः–न शक्तोसि तर्हि मद्योगं मदेकशरणन्त्वमाश्रितः सन् सर्व्वेषान्दृष्टादृष्टानामावश्यकानाञ्चाग्निहोत्रादिकर्म्मणाम्फले नियतचित्तो भूत्वा परित्यज।एतदुक्तं भवति मया तावदीश्वराज्ञया यथाशक्ति कर्म्माणि कर्त्तव्या

नि फलन्तावद्दृष्टमदृष्टं वा परमेश्वराधीनमित्येवम्मयि भावमारोप्य फलासक्तिं परित्यज्य वर्त्तमानो मत्प्रसादेन कृतार्थो भविष्यसीति तात्पर्य्यमिति । पञ्चमेऽध्यायेऽपि—“ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गन्त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ ” इति । अत्रानंदगिरिः—भृत्यवदीश्वरार्थकर्मकरणाद्वा न तत्फलभागित्वं यथा भृत्यः स्वाम्यर्थङ्कर्म्माणि करोति न फलमपेक्षते तथैव यो विद्वान्मोक्षेपि फलन्त्यक्त्वा भगवदर्थमेव सर्व्वाणि कर्म्माणि करोति न स कर्म्मणा बद्ध्यते यथा न हि पद्मपत्रमम्भसा सम्बध्यते तद्वदित्यर्थ इति फलस्य ब्रह्मणि समर्प्पणाद्वा न कर्म्मणां बन्धकत्वम् “यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्प्पणम् ॥” इति नवमाध्यायोक्तेः । अत्र शङ्करानंदः शुभाशुभफलैरिति एवमीश्वरार्प्पणबुद्ध्या वैदिकमवैदिकञ्च युक्तङ्कर्म्म कुर्वाणस्त्वं शुभाशुभफलैः सुखदुःखप्रदैः स्वर्गनरकहेतुभिर्व्वा कर्म्मबन्धनैः कर्म्माण्येव बन्धनानि तैर्म्मोक्ष्यसे मुक्तो भविष्यसि । ननु कर्म्मण्येवाधिकारस्ते इति “नियतङ्कुरु कर्म्म त्वम् इति स्वधर्म्मम् इति च विहितानामेव कर्मणाङ्कर्त्तव्यत्वविधानात् कथं विहितानामशुभफलत्वमिति चेन्न विहितानामनुष्ठानवैकल्येऽशुभफलहेतुत्वोपपत्तेः यस्याग्निहोत्रदर्शपौर्णमासचातुर्म्मा

स्यमनाग्रयणमतिथिवर्ज्जितञ्च अहुतमवैश्वदेवमविधिनाहुतमासप्तमाँस्तस्यलोकान् हिनस्तीति स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति" इत्यादि श्रुतेः स्मृतेश्च "मन्त्रतन्त्रस्वरवर्णद्रव्यकालादिनियमवैपरीत्ये स्कन्ने भिन्ने च विहितानामप्यशुभफलकारित्वमुपपद्यतइतीति दिक् ॥ श्रीगुणेश्वरसिंहेन मिथिलाधिपसूनुना । निर्म्मापितोऽभवत्पूर्णः पूजापङ्कजभास्करः ॥ १ ॥ सूर्येभास्यहुताशनस्य शिवयोः श्रीशस्य च ब्रह्मणः पूजापङ्कजभास्करोयममलः प्रीत्यै चिरन्तिष्ठतु ॥ लोकानां शिशिरे हिमे च मिहिरो भूसंस्थितानामिव पात्वनं विदुषां सदा सुखकरं लक्ष्मीपतिः सद्गतिः ॥ २ ॥ शाके वेदवियन्नागहिमांशुवलिते १८०४ शुभे ॥ पौषे सिते पञ्चदश्यां ग्रन्थोऽयं पूर्णतामगात् ॥ ३ ॥ ॥ इतिपूजापंकजभास्करे विंशः प्रकाशः ॥ २० ॥ ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥ ॥ छ ॥

---

इदं पुस्तकं क्षेमराज–श्रीकृष्णदास–श्रेष्ठिना मुम्बय्यां ( खेतवाडी ७ वीं गली
खम्बाटा लैन ) स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्–मुद्रणय-
न्त्रालये मुद्रितम् । संवत् १९६८, शके १८३३.

# सूचना.

मिथिलादेशान्तर्गतदरभङ्गाराजधानीस्थविविधबिरुदावलीविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराज श्रीश्रीमद्गुणेश्वरसिंहेन विद्वद्भिः कारितस्य पूजापङ्कजभास्करनामकस्य ग्रन्थस्य सहस्रसंख्याकानि पुस्तकानि आसन्नविद्वज्जनेभ्यः सकलसुहृद्भ्यश्च उपायनीकर्तुमस्मच्छ्रीवेङ्कटेश्वराख्यमुद्रणयन्त्रालयेऽङ्कयित्वाऽऽविष्कृतान्यासन्पुनश्च समस्तभारतवर्षीया जना अस्य ग्रन्थरत्नस्य लाभभाजो भवेयुरित्यस्य पुनर्मुद्रणाद्यधिकारश्चास्मभ्यञ्जगदुपकृतयेऽदायीति निवेदयति क्षेमराज-श्रीकृष्णदासः "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्षो-मुम्बयीस्थः।

# विक्रय्यपुस्तकानि—( कर्मकांडप्रयोगादिग्रन्थाः । )

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| प्रतिष्ठासंग्रह—प्रतिष्ठा करानेके लिये यह ग्रन्थ बहुतही उत्तम है पं०रामलालजीने चार किरणों ( प्रकरणों ) में निर्माण किया है यह समंत्रक ग्रंथ सर्वसंग्रहोपयोगी है | ३-० |
| संस्कारभास्कर—( शुक्लयजुर्वेदीय गर्भाधानादिसे लेके सब प्रकारके संस्कारोंकी विधि प्रयोग और मंत्रसहित) सर्व त्रैवर्णिक यज्ञोपवीतवालेको अति उपयोगी है | २-१२ |
| शान्तिप्रकाश—इसमें पहिले गणपत्यादिपूजन पुण्याहवाचन कलशस्थापनादि और विनायकादि३०शान्तिप्रयोग वास्तुशांतिप्रयोगादि समंत्रक हैं | १-६ |

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| गौडीयश्राद्धप्रकाश महानिबंध—इसमें श्राद्धस्वरूप श्राद्धमें ब्राह्मणलक्षण महालयादि निर्णय और श्राद्धप्रयोग क्षयाहश्राद्ध संकल्पश्राद्ध हेमश्राद्ध एकादशादिश्राद्ध मासिकश्राद्ध माघादिश्राद्ध नांदिश्राद्धादि बहुतसे श्राद्ध और विष्णवादिपूजन पितृतर्पणादि अपूर्व संग्रह है चारों वर्णोंको उपयोगी है | ३—० |
| ग्रहशान्ति—( शुक्लयजुर्वेदोक्त ) यज्ञोपवीत विवाहादि शुभकर्ममें बहुत उपयोगीहै | ०—८ |
| श्राद्धप्रयोगावली—( शुक्लयजुर्वेदीय ) गुर्जर और दाक्षिणात्यलोगोंको अत्यन्तोपयोगी | ०—१४ |
| नवग्रहविधानपद्धतिः—मनुष्यको ग्रह अरिष्ट होनेपर प्रत्येक ग्रहके स्तोत्र पाठादि पढ़नेको अवश्य लेना चाहिये | ०—४ |
| श्राद्धविवेक—सब प्रकारके श्राद्धकी विधि प्रमाणयुक्त | ०—१२ |

जाहि-

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| शय्यादानादि सपिंडीश्राद्ध षोडश मासिकश्राद्ध प्रयोग. त्रयोदशाहे पददानादि दर्शायाहै | ०—६ |
| शूद्रविवाहविधि—( नामहीसे समझलेना ) | ०—२ |
| शूद्रश्राद्धपद्धतिः—( शूद्रोंको पुराणोक्त मंत्रोंसे श्राद्धकरनेकी विधि ) | ०—८ |
| संस्कारप्रकाश—गौडसंप्रदायका कर्मकांडी दशसंस्कारोंका अत्युत्तम ग्रंथ | १—४ |
| बृहत्कर्मकांडसमुच्चय—इसमें मरणसमयसे लेकर मरण विधान अन्त्येष्टिकर्म तथा शांतिके वर्णनहैं | ०—६ |

राव.

संपूर्ण पुस्तकोंका " बडासूचीपत्र " अलगहै, मँगालीजिये। बिनादाम भेजा जाताहै।

पत्ता—खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, ७ वीं खेतवाडी खंबाटागली—बंबई.

| नाम. | की. रु. | आ. |
|---|---|---|
| गौडीयश्राद्धप्रकाश महानिबंध—इसमें श्राद्धस्वरूप श्राद्धमें ब्राह्मणलक्षण महालयादि निर्णय और श्राद्धप्रयोग क्षयाहश्राद्ध संकल्पश्राद्ध हेमश्राद्ध एकादशादिश्राद्ध मासिकश्राद्ध माघादिश्राद्ध नांदिश्राद्धादि बहुतसे श्राद्ध और विष्णवादिपूजन पितृतर्पणादि अपूर्व संग्रह है चारों वर्णोंको उपयोगी है | ३ | ० |
| ग्रहशान्ति—( शुक्लयजुर्वेदोक्त ) यज्ञोपवीत विवाहादि शुभकर्ममें बहुत उपयोगीहै | ० | ८ |
| श्राद्धप्रयोगावली—( शुक्लयजुर्वेदीय ) गुर्जर और दाक्षिणात्यलोगोंको अत्यन्तोपयोगी | ० | १४ |
| नवग्रहविधानपद्धतिः—मनुष्यको ग्रह अरिष्ट होनेपर प्रत्येक ग्रहके स्तोत्र पाठादि पढ़नेको अवश्य लेना चाहिये | ० | ४ |
| श्राद्धविवेक—सब प्रकारके श्राद्धकी विधि प्रमाणयुक्त | ० | १२ |

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| श्राद्धमयूख | ०–८ |
| व्रतोद्यापनकौमुदी–व्रतोंके उद्यापनमें अतिउत्तम है | ०–८ |
| गयायात्रापद्धतिः–गयाजीमें (श्राद्धादि करनेकी विधि है) | ०–४ |
| वासिष्ठीहवनपद्धतिः–इसमें कलशादिस्थापन गणपतिपूजन पुण्याहवाचन मातृकापूजन नांदीश्राद्ध ग्रहमखादि सुगमरीतिसे हैं | ०–४ |
| लम्बोदरीहवनपद्धति | ०–१ |
| विवाहपद्धति–मूल कन्यादानादि संकल्प चतुर्थीकर्मादि विषय हैं | ०–६ |
| विवाहपद्धतिमूल–पं॰ चतुर्थीलालजीकृत | ०–४ |
| नित्यकर्म प्रयोगमाला–पं॰ चतुर्थीलालजीकृत | ०–६ |
| अन्त्येष्टी बड़ी–पं॰ चतुर्थीलालजी कृत छपती है | |
| यज्ञोपवीतपद्धतिः–मूल इसमें यज्ञोपवीतका संपूर्ण संस्कार और वेदारंभादि विषय हैं | ०–२ |

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| तथा भाषाटीका | ०-८ |
| दशकर्मपद्धति–इसमें गर्भाधान पुंसवन सीमंतोन्नयन नामकर्म निष्क्रमण अन्नप्राशन चूडाकर्म कर्णवेध उपनयन वेदारंभ समावर्त्तन. विवाह चतुर्थीकर्मादि विषय हैं | ०-७ |
| कुशकंडिकाभाष्य–इनमें कुंड और स्थंडिलादिकी विधि ब्रह्मास्थापन आदि विषय हैं | ०-४ |
| वेदोक्तशिवार्चनपद्धति–वैदिक मंत्रोंसे शिवजीका न्यास समेत सांगोपांग पूजाविधान प्रयोग समेत | ०-४ |
| वृद्धिश्राद्ध–इसमें वृद्धिश्राद्धादिनिर्णय नान्दीमुखश्राद्ध आभ्युदयिकश्राद्धादि प्रयोग हैं | ०-४ |
| सपात्रिकपार्वणश्राद्धप्रयोग–कन्यास्थित सूर्यके अपरपक्षमें महालयश्राद्ध प्रयोग मूलमात्र | ०-२ |
| तथा भाषाटीका | ०-४ |
| तथा संस्कृतटीका | ०-४ |

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग—( मृतकोंके क्षयतिथि श्राद्धप्रयोग ) | ०—२ |
| ” तथा भाषाटीकासमेत | ०—३ |
| वरदगणेशपूजा—अर्थात् भाद्रपद शुक्क चतुर्थीको गणेशपूजन प्रयोग | ०—१ |
| कात्यायनीशान्तिः—अर्थात् कात्यायन सूत्रानुसारी ग्रहशान्तिप्रयोग | ०—२ |
| जलाशयोत्सर्गप्रकाश—( महानिबंध ) अर्थात् वापी कूप तडागादिकोंकी शान्ति—कलशस्थापनसे लेके होमतक भलीभांतिहै | १—१२ |
| बृहत्प्रतिष्ठाप्रकाश—पं॰ चतुर्थीलालजीकृत कर्मकाण्डियोंको परमोपयोगीहै | १—८ |
| वास्तुशांतिप्रयोग—अर्थात्—समस्त नूतन मकानोंका वैदिक मंत्रोंसे शान्तिका प्रयोग लिखा गयाहै | ०—६ |
| संस्कारमयूख | ०—१२ |
| प्रेतमंजरी—भाषाटीकासमेत इसमें वैतरणीदान प्रेतका दाहविधि दशाहादि श्राद्ध एकादशाहश्राद्ध वृषोत्सर्ग | |

जाहि- रात.

| नाम. | की. रु. आ. |
|---|---|
| शय्यादानादि सपिंडीश्राद्ध षोडश मासिकश्राद्ध प्रयोग. त्रयोदशाहे पददानादि दर्शायाहै | ०—६ |
| शूद्रविवाहविधि—( नामहीसे समझलेना ) | ०—२ |
| शूद्रश्राद्धपद्धतिः—( शूद्रोंको पुराणोक्त मंत्रोंसे श्राद्धकरनेकी विधि ) | ०—८ |
| संस्कारप्रकाश—गौडसंप्रदायका कर्मकांडी दशसंस्कारोंका अत्युत्तम ग्रंथ | १—४ |
| बृहत्कर्मकांडसमुच्चय—इसमें मरणसमयसे लेकर मरण विधान अन्त्येष्टिकर्म तथा शांतिके वर्णनहैं | ०—६ |

संपूर्ण पुस्तकोंका " बडासूचीपत्र " अलगहै, मँगालीजिये। बिनादाम भेजा जाताहै।

पत्ता—खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, ७ वीं खेतवाडी खंबाटागली—बंबई.

विदुषामभ्यर्थना ।

अत्रास्माकं मुद्रणालय ऋगादयो वेदा उपनिषदो वेदान्तग्रन्था महाभारतादीतिहासाः श्रीमद्भागवतादिमहापुराणोपपुराणानि धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-व्याकरण-न्याय-योग-सांख्य-मीमांसादिशास्त्रीयग्रन्थाः काव्य-नाटक-चम्पू-प्रभृतयो ग्रन्थाः सहस्रनामाद्यनेकस्तोत्रग्रन्था विविधभाषाग्रन्थाश्च सीसकोत्तममहल्लघ्वक्षरैर्मनोहरं मुद्रिता योग्यमूल्येन क्रय्याः सन्ति, तांश्च ग्राहका यथापुस्तकसूचीपत्रं मूल्यप्रेषणेन प्राप्नुयुः ।

क्षेमराज-श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्षः-मुंबई,

3069

॥ इति पूजापङ्कजभास्करः समाप्तः ॥

मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स
संस्कृत बुकडिपो
कचौड़ी गली, बनारस सिटी।

3068

# अथ संस्कारकौस्तुभप्रारंभः॥

मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स
संस्कृत बुक डिपो
कचौड़ी गली, बनारस सिटी.

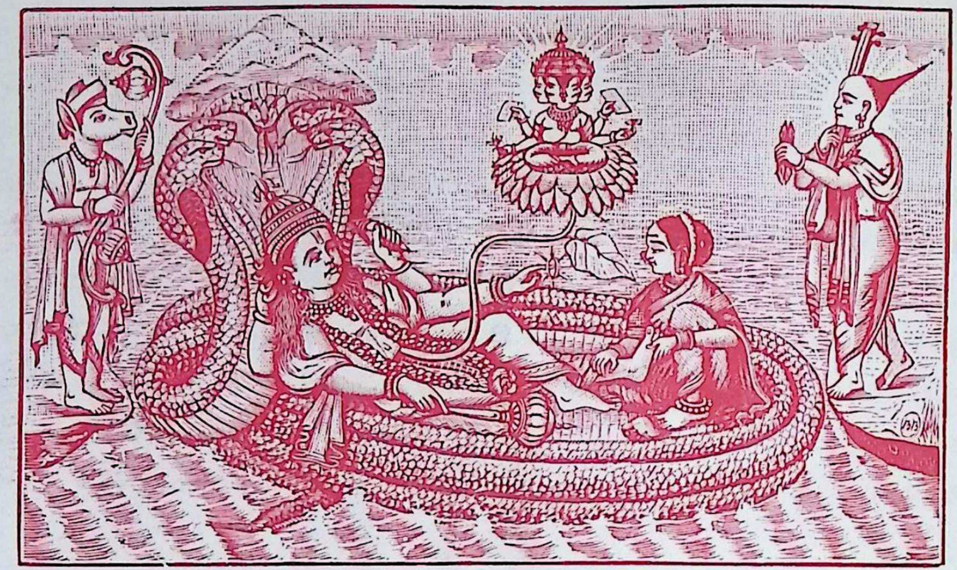

3068

# संस्कारकौस्तुभप्रस्तावना—

नत्वाश्रीकुलदेवतामिहमहालक्ष्मींगणेशंगिरंदत्तात्रेयमहस्करंरवळनाथंजन्मदौचासकृत् ॥ येषांसंस्मरणंहृदाप्रणतयोमूर्ध्ना
खिलार्थप्रदावक्ष्येहंकिमपिप्रशस्तिसदृशंप्रास्ताविकंकौस्तुभे ॥ १ ॥ सर्गस्थित्यंतहेतुर्निरुपमविभवोधर्मधामप्रदीपःश्रीशःश्री
वत्सदेशेवहतियदनिशंकौस्तुभंवैजयंत्या ॥ तन्नाम्नाचेन्निबंधानहमपिकरवाण्यादरेणध्रियासुर्विद्वांसःकंठदेशेष्वितिननुकृत
वान्कौस्तुभान्ग्रंथकारः ॥ २ ॥ क्लिष्टंयैर्वरिवस्ययागुरुकुलेविद्यानवद्यार्जिताग्रंथाःसंग्रथिताअतर्क्यविषयालोकैकभव्यै
षिभिः ॥ तत्तद्विप्रतिषिद्धभूरिवचसामार्षागमानांकृतंयुक्त्यैकाधिकरण्यमस्त्वविरतंतत्पादयोर्मच्छिरः ॥ ३ ॥ भव्यैःशबर
कुमारिलमंडनभवदेवपार्थसारथिभिः ॥ जैमिन्यब्ध्युत्तरणेऽनातरपोताःकृतानमस्तेभ्यः ॥ ४ ॥ धर्मेप्रमाणंविधिभेदशेष
प्रयुक्तिपूर्वापरताधिकारान् ॥ ऊहातिदेशावथबाधतंत्राण्यालोडयद्भ्यःसततंनमोस्तु ॥ ५ ॥ शाब्देनिष्ठाःसंतुवान्यायशास्त्रे
यैर्मीमांसाल्पापिनोशीलिताचेत् ॥ सिद्धंतेषांजैमिनीयोपरोधेवादास्फूर्तेरस्तिवाचंयमत्वम् ॥ ६ ॥ नास्थानेकरवाणिचापल
मिदंनाप्रस्तुताशंसनंग्रंथेऽस्मिन्विलसंत्यहोप्रतिपदंमीमांसकीयागिरः ॥ यत्कर्तुर्जनुषाव्यराजतमहामीमांसकानांकुलंतन्मा
हात्म्यविलेखनंबुधमनस्तोषायभूयान्नकिम् ॥ ७ ॥ संस्कारकौस्तुभनिबंधमनंतदेवोऽकार्षीदनल्पधिषणोललितप्रयोगम् ॥
पृथ्वीसुराःसमवलोक्यमतिप्रकर्षलोकातिगांकृतिमिमांप्रशशंसुरुच्चैः ॥ ८ ॥ प्रायोवैदिकयाज्ञिकेष्वविदितोनैवास्त्ययंकौ

स्तुभोयंपीठेपुरतोनिधायबहवःकर्माणिकुर्वंत्यपि ॥ मीमांसापरिक्लृप्तनिर्णयमिमंतज्ज्ञैकवेद्यंपुनश्चित्रंतत्परिशीलनादिकमृते
धन्याःप्रयोगोद्धुराः ॥ ९ ॥ आस्तांतन्निगदेनयेत्रविषयेनित्यंसमीहायुतास्तेप्यत्यंतदुरूहताद्यभिहताःकृच्छ्रेणचोदासते ॥
संत्येवात्रतथांकितेषुबहवोवर्णाधिकन्यूनताव्यत्यासत्रुटयोह्यनर्थघटकादुर्वेद्यताहेतवः ॥ १० ॥ ग्रंथाद्ग्रंथपरंपराविलिखना
दास्तेक्वचिल्लेखकाःसंत्यज्ञाःप्रतिपूरुषंसहभवौस्तोयत्प्रमादभ्रमौ ॥ एवंदुःस्थनिबंधमुद्रणकलेयंसार्थवाहोद्धृतामुद्यंतेसततंकथं
चिदपितेशुद्धाभवेयुःकथम् ॥ ११ ॥ क्वमीमांसाशास्त्रस्मृतिनिगमपारीणविषयःकथंकारंतत्संस्करणविषयेमत्परिकरः ॥
किमायातंह्येवंसतिनकरणीयंकिमपिचेच्छ्रुतंब्रूतेश्रेयःपुनरकरणान्मंदकरणम् ॥ १२ ॥ पूर्णवेद्म्यधिकारितामयिमनाङ्नैवा
स्तितत्रापिमांनिर्दिष्टो‘ऽकरणात्सुमंदकरण’न्यायोयुयोजादरात् ॥ तस्माद्यद्यदकार्षमभ्यविदुषांसाहाय्यमालंब्यतद्बलेनप्रतनां
श्चकोशनिवहानालोच्ययावन्मति ॥ १३ ॥ सातारास्थितवेदशास्त्रनृपमानाद्युन्नतावेंकटाचार्याःसंत्यधुनावटोदरपुरेयेसंस्कृता
ध्यापकाः ॥ तैःसाहाय्यमकारिभूरिगहनस्थानेषुसंशोधनैःपाठैःसंस्करणोपयोग्यनुपमंतेनास्मितेषामृणी ॥ १४ ॥ बाक्रेशास्त्री
तिविख्यातैर्यन्महादेवशर्मभिः ॥ तथैवोपकृतंशुद्धौतन्नप्रत्यर्पणक्षमम् ॥ १५ ॥ इत्येवंपरिशोधितेपिकुहचिद्भ्रांतिप्रमादो
द्भवादोषामानुषशेमुषीपरिणताःपंथानमीयुर्दृशोः ॥ विद्वांसःपरिमार्जयंत्ववसरेणावेदयेयुश्चमामित्यभ्यर्थयतेप्रसाद्यविदुषः
सभ्यान्मुहुःशोधकः ॥ १६ ॥ क्षमाभृतःक्षमादेवाःशुद्धिक्षामेक्षमाक्षमे ॥ क्षमांतनुयुरक्षामांक्षांत्वागांसिनतस्यमे ॥ १७ ॥

विद्वदेकांतवशंवदः **पणशीकरोपाह्वो वासुदेवशर्मा ।**

# संस्कारकौस्तुभस्थविषयानुक्रमणिका ।

पत्रं. विषयाः
१ मंगलाचरणम्
१ षोडशसंस्काराः
१ ऋतुलक्षणम्
१ प्रथमरजोदर्शनेशुभाशुभानि
१ मासफलम्
१ तिथिफलम्
१ पूर्वाह्णादीनांफलम्
१ वारफलम्
१ नक्षत्रफलम्

पत्रं. विषयाः
१ लग्नफलम्
२ योगफलम्
२ लग्नसंस्थग्रहफलम्
२ वस्त्रफलंवर्णभेदेन
२ स्थानफलम्
२ रजोदर्शनेशिष्टाचारः
२ सर्वर्तुसाधारणनियमाः
३ टी० रजस्वलायावौधा० नियमाः
३ रजस्वलाप्रथमदिननिर्णयः

पत्रं. विषयाः
३ रजस्वलाशुद्धिप्रकारः
३ स्नानोत्तरंविशेषः
३ ज्वरादौरजस्वलाशुद्धिप्रकारः
३ रजस्वलयोःपरस्परंसंसर्गेशुद्धु०
४ ज्ञानतःस्पर्शेशुद्धिविचारः
४ मोहादज्ञानतःस्पर्शेशु०
४ दुष्टरजोदर्शनेशौनकः
४ रजोदर्शनशांतिः
६ रजोदर्शनशांतिप्रयोगः

पत्रं. विषयाः
६ टी.नूतनप्रतिमानामभ्युत्तारणादि
७ ग्रहाणांमात्स्यक्रमेणावाहनादि
१० ग्रहान्वाधानम्
११ ग्रहवल्यादिप्रकारः
१३ सुरास्त्वेत्यादिपौराणमंत्राः
१४ अन्येषांप्रकारांतरंमदनरत्नोक्तम्
१५ बौधायनोक्तशांतिः
१५ घृतसूक्तम्
१५ गर्भाधानम्
१६ निषिद्धपर्वाणि
१६ स्त्रीपुंसोस्तदह्निआहारेविशेषः
१७ टी० अपवादोबौधायनीयः

पत्रं. विषयाः
१७ चतुर्थदिनेपिकर्माहता
१८ पुनःसंधानम्
१९ गर्भाधानप्रयोगः
१९ स्वस्तिवाचनप्रयोगः
२२ शौनकाद्युक्तंस्वस्तिवाचनम्
२३ कर्मदेवताआहबौधायनः
२४ वृद्धिश्राद्धम्
२६ जीवत्पितृकनांदीश्राद्धम्
२९ कर्त्रंतरनांदीश्राद्धदेवतानिर्णयः
३० नांदीश्राद्धेपिंडनिर्णयः
३१ मातृकापूजनादि
३१ नांदीश्राद्धप्रयोगः

पत्रं. विषयाः
३२ अग्निध्यानादिगर्भाधानप्रयोगः
३३ जातगर्भायाधर्माः
३४ गर्भिणीपतिधर्माः
३४ नारायणबलिः
३५ नागबलिः
३६ नागबलिसंस्कारप्रयोगः
३८ महार्णवोक्तःसंतानविधिः
३९ सूर्यारुणसंवादोक्तंसंतत्यै
३९ कृच्छ्रादिलक्षणानि
४० प्रत्याम्नायाः
४१ प्रायश्चित्तस्वीकारप्रकारः
४२ पुत्रदमभिलाषाष्टकम्

| पत्रं. | विषयाः |
|---|---|
| ४३ | दत्तकेग्राह्याग्राह्यविचारः |
| ४९ | दत्तकःकथंग्राह्यः |
| ४९ | यजुर्वेदिनांदत्तकप्रयोगः |
| ५० | बह्वृचाधिकारिकःप्रयोगः |
| ५१ | दत्तकस्यविवाहाद्युपयोगिगोत्रादिनिर्णयः |
| ५१ | दत्तकाशौचनिर्णयः |
| ५२ | दत्तकस्यदायनिर्णयः |
| ५२ | गर्भिण्याःगर्भस्रावहरम् |
| ५३ | सूर्यारुणसंवादस्तोत्रम् |
| ५३ | अनपत्यत्वहरम् |
| ५३ | मृतपुत्रत्वहरम् |
| ५३ | पुत्रकामेष्टिप्रयोगः |
| ५४ | पुंसवनकालः |
| ५५ | सीमंतोन्नयनकालः |
| ५६ | अथप्रयोगः ( त्रयाणांसह ) |
| ५७ | जीवपुत्रसूक्तम् |
| ५८ | अत्रभुक्तवतःप्रायश्चित्तम् |
| ५८ | सूतिकागृहम् |
| ५९ | सुखप्रसवोपायः |
| ५९ | पुत्रजन्मनिकर्तव्यम् |
| ६० | जातकर्मप्रयोगः |
| ६१ | जन्मदानांपूजनादि |
| ६२ | आशौचेकर्तव्यनिर्णयः |
| ६३ | गोप्रसवशांतिः |
| ६५ | कृष्णचतुर्दशीजननशांतिः |
| ६६ | कृष्णचतुर्दशीशांतिप्रयोगः |
| ६७ | सिनीवालीकुहूशांतिः |
| ६८ | अथप्रयोगः |
| ६९ | दर्शशांतिः |
| ७० | अथप्रयोगः |
| ७१ | मूलशांतिविधिः |
| ७३ | अथैतदनुसारीप्रयोगः |
| ७९ | आश्लेषाशांतिविधिः |
| ८० | अथप्रयोगः |
| ८२ | टी.शौनकोक्तआश्लेषाशांतिप्र० |

पत्रं. विषयाः
८३ टी. अन्योपिबह्वृचांविशेषः
८३ ज्येष्ठाशांतिविधिः
८४ अथप्रयोगः
८६ व्यतीपातवैधृतिसंक्रमणशांतिः
८७ अथप्रयोगः
८९ अथैकनक्षत्रजननशांतिः
८९ अथप्रयोगः
९० ग्रहणजननशांतिः
९० अथप्रयोगः
९० नक्षत्रगंडांतशांतिविधिः
९२ अथप्रयोगः
९२ तिथिगंडांतशांतिः

पत्रं. विषयाः
९३ तिथिगंडांतलक्षणम्
९३ अथप्रयोगः
९४ दिनक्षयादिशांतयः
९५ विषनाडीजननशांतिः
९६ अथप्रयोगः
९६ यमलजननशांतिः
९७ अथप्रयोगः
९८ त्रिकप्रसवशांतिः
९८ अथप्रयोगः
९९ सदंतजननशांतिः
९९ अथप्रयोगः
९९ षष्ठाष्टममासयोर्दंतजननशांतिः

पत्रं. विषयाः
९९ प्रसववैकृतशांतयः
१०० सिंहगेसूर्येगोःप्रसवेशांतिः
१०० सुखप्रसवकरम्
१०० अथनामकरणम्
१०१ पक्षच्छिद्रादिवर्जनम्
१०२ मासादिनाम्नांप्रकाराः
१०४ नामकरणप्रयोगः
१०५ स्त्रीणांनामकर्म
१०५ दोलारोहणम्
१०६ दुग्धपानंश्रीधरीये
१०६ आचारप्राप्तंजलपूजनम्
१०६ शिशोस्तांबूलभक्षणम्

| पत्रं. | विषयाः |
|---|---|
| १०६ | सूर्यावलोकनम् |
| १०६ | निष्क्रमणम् |
| १०७ | भूम्युपवेशनम् |
| १०७ | अन्नप्राशनकालः |
| १०८ | सूर्यावलोकनाद्यन्नप्राशनांतप्रयो० |
| ११० | कर्णवेधः |
| १११ | बालस्यदुष्टदृष्टिदोषादौरक्षाविधिः |
| १११ | बालस्यस्खलनादौरक्षाविधिः |
| १११ | अब्दांतेजन्मतिथौवर्धापनम् |
| १११ | अथप्रयोगः |
| ११२ | तद्दिनेनियमाः |
| ११२ | अथचौलम् |
| ११३ | मातरिरजस्वलायांनिर्णयः |
| ११३ | कूष्मांडीहोमः |
| ११३ | संक्षेपतःश्रीशांतिः |
| ११३ | मंडनमुंडनविचारः |
| ११४ | एकमातृजयोःसंस्कारनिर्णयः |
| ११४ | आरंभोत्तरंसूतकप्राप्तौ |
| ११४ | अथचूडाकर्मप्रयोगः |
| ११५ | शिखास्थापननिर्णयः |
| ११५ | अत्रभुक्तवतःप्रायश्चित्तम् |
| ११५ | चौलोत्तरमब्दपर्यंतंनियमाः |
| ११५ | स्त्रीणांचूडाप्रकारः |
| ११६ | शूद्रस्याप्यमंत्रकंचूडाकर्माह |
| ११६ | अथाक्षरस्वीकारः |
| ११६ | गलग्रहस्वरूपम् |
| ११६ | सरस्वतीपूजनादिप्रकारः |
| ११७ | अनुपनीतधर्माः |
| ११७ | रजस्वलादिस्पर्शे |
| ११७ | कृतचूडस्यसमंत्रकपैतृमेधिकाधिकारः |
| ११७ | अथबालकपितृधर्माः |
| ११७ | अथोपनयनम् |
| ११७ | उपनयनशब्दव्युत्पत्तिः |
| ११८ | उपनयनाधिकारिणः |
| ११८ | आचार्यश्रोत्रियलक्षणम् |

पत्रं. विषयाः

११८ अविद्वत्कृतोपनयने
११८ वटूपनेत्रोरधिकारप्रायश्चित्तम्
११८ गायत्रीप्रदानाधिकारार्थंविधेयम्
११८ अथोपनयनकालः
११८ गर्भादित्यस्यविवरणम्
११९ अथकाम्यःकालः
११९ गौणकालावधिमाह
११९ अवध्यतिक्रमेप्रायश्चित्तम्
११९ उपनयनेअयनादिनिर्णयः
११९ वर्णविशेषेणऋतुविशेषनि०
११९ मासनिर्णयः
१२० मुख्यकालेऽस्तादावप्यनुज्ञा

पत्रं. विषयाः

१२० जन्ममासनक्षत्रादिविचारः
१२० अथतिथयः
१२१ निरंशस्वरूपम्
१२१ अनध्यायप्रतिप्रसवः
१२१ गलग्रहाः
१२१ अत्रापवादः
१२१ वासरनियमः
१२१ शाखाधिपतिवारानाह
१२१ वर्णाधिपवलम्
१२१ संकटेपूजाहोमादिद्वैगुण्येनबललाभः
१२२ वेदविशेषेणनक्षत्राणि

पत्रं. तिपयाः

१२२ योगेषुव्यवस्थामाह
१२२ करणव्यवस्थामाह
१२३ निमित्तविशेषेणनिषेधः
१२३ व्रतेह्निगर्जितविचारः
१२३ अथोपकल्पनम्
१२३ अहतवस्त्रस्वरूपम्
१२३ ऐणेयमजिनम्
१२३ उपवीतम्
१२३ उपवीतनिर्माणप्रकारः
१२३ धारणेविशेषः
१२४ मेखलामाह
१२४ दंडमाह

पत्रं. विषयाः

१२४ त्रिवृत्कटिसूत्रकौपीनभिक्षापात्रकमंडल्वादि
१२४ पूर्वसंस्कारातिपत्तौव्याहृतिहोमादि
१२४ जयंतोक्तआचमनप्रकारः
१२४ पारिजातेव्याघ्राद्युक्ताचमनम्
१२५ तीर्थप्रवेशविचारः
१२५ अवक्षारणेविशेषः
१२५ आचारप्राप्तंगायत्रीपूजनम्
१२५ अथास्मैसावित्रीमन्वाह
१२६ अथोपसंग्रहणम्
१२६ प्रत्यभिवादनम्
१२७ भिक्षायांभवच्छब्दविधिः
१२८ विनायकशांतिः
१२८ अथप्रयोगः
१३१ अत्रोपकल्पनश्लोकामहार्णवे
१३१ परिशिष्टोक्तविधिनाग्रहमखः
१३२ अथप्रयोगः
१४३ बृहस्पतिशांतिः
१४३ गुरुपूजा
१४४ बृहस्पतिशांतिप्रयोगः
१४५ उपनयनप्रयोगः
१४५ प्रायश्चित्तानि
१४५ अतीतजातकर्मादिसंस्कारसंक०
१४६ ऋध्यतामित्यादिद्विबहुवचनवि०
१४६ नंदिन्यादिमंडपदेवतापूजा
१४७ वेदिकरणप्रकारः
१४७ मात्रासहभोजनम्
१४७ प्राच्यांगभूतंवापनादि
१४७ मौहूर्तिकपूजनम्
१४७ उपनयनप्रयोगः
१४९ गर्जितादिनिमित्तेशांतिः
१५० उपनयनाग्निनाशेविधिः
१५० अनुप्रवचनीयहोमः
१५१ अत्रव्रतंकारिकायाम्
१५१ मेधाजननम्

पत्रं. विषयाः
१५१ अथप्रयोगः
१५२ मंडपदेवतोद्वासनम्
१५२ ततःपुण्याहवाचनम्
१५२ मंडपदेवतानांकालावधिः
१५२ देवतोद्वासनपर्यंतंनिषेधाः
१५२ विकलांगोपनयनम्
१५३ पुनरुपनयनम्
१५३ तत्रनिमित्तानि
१५४ द्वितीयउपनयनप्रकारः
१५६ तृतीयउपनयनप्रकारः
१५६ पुनरुपनयनेविशेषः
१५८ अथयजुःशाखिनाम्

पत्रं. विषयाः
१५९ ब्रह्मचारिधर्माः
१५९ तदतिक्रमेप्रायश्चित्तम्
१६० अथानध्यायाः
१६० प्रदोषनिर्णयः
१६१ त्र्यहानध्यायाः
१६१ पार्वणभोजने
१६१ एकोद्दिष्टभोजने
१६१ तात्कालिकानध्यायाःसप्तविंशतिः
१६१ विद्युतिविशेषःगर्जितेच
१६१ पंचनखाद्यंतरागमने
१६१ पक्षिण्याद्यनध्यायाः
१६१ सोपपदास्तिथयः

पत्रं. विषयाः
१६१ अध्ययनधर्माः
१६२ अथव्रतानि
१६२ महानाम्नीव्रतम्
१६४ महाव्रतम्
१६४ उपनिषद्व्रतम्
१६४ गोदानव्रतम्
१६५ अथसमावर्तनम्
१६६ ब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तानि
१६६ समावर्तनकालनिर्णयः
१६७ प्रायश्चित्तप्रयोगः
१६८ सद्यस्कालेब्रह्मचर्येविच्छिन्ने
१६८ समावर्तनप्रयोगः

पत्रं. विषयाः
१७० स्नातकव्रतानि
१७२ ब्रह्मचारिणआतुरदशाया
१७२ समावर्तनानुकल्पः
१७२ त्रिदिनमतिक्रांताशौचम्
१७२ अथविवाहः
१७२ कन्यायाबाह्यलक्षणानि
१७२ आभ्यंतरलक्षणानि
१७२ अन्यपूर्विकाःसप्तपुनर्भ्वः
१७२ सापिंड्यविचारः
१७३ तच्चद्विविधम्
१७४ मातुलकन्याविधानम्
१७८ सापिंड्यश्लोकाः ५

पत्रं. विषयाः
१७८ एषांव्याख्या
१७९ गोत्रप्रवरनिर्णयः
१७९ गोत्रलक्षणम्
१८२ प्रवरलक्षणम्
१८३ भृगवोद्विविधाः
१८३ कात्यायनलौगाक्षिभ्यामन्येप्यु०
१८४ अथजामदग्न्याः
१८५ अंगिरसस्त्रिविधाः
१८६ अथभरद्वाजाः
१८८ अथात्रेयाः
१९० अथकश्यपाः
१९१ अथवसिष्ठाः

पत्रं. विषयाः
१९२ अथागस्त्याः
१९३ अथद्विगोत्राः
१९४ अथक्षत्रियविशांगोत्रप्रवराः
१९५ तेषांपुरोहितगोत्रंवा
१९५ गोत्राज्ञानेविचारः
१९५ आचार्यस्यापिगोत्राज्ञाने
१९५ मातृगोत्रनिर्णयः
१९५ मातुश्चगोत्रद्वयम्
१९६ प्रत्युद्वाहनिषेधः
१९६ एकोदरयोरब्दमध्येमंगलनिषेधः
१९६ संकटेभिन्नमंडपलग्नभेदादनुज्ञा
१९६ अतिसंकटेत्वेकस्मिन्नपिमंडपे

पत्रं. विषयाः

१९७ भिन्नोदराणांकार्यत्रयेभ्यनुज्ञा
१९७ अथविवाहकालः
१९७ विवाहेमासाः
१९८ विवाहेतिथयः
१९८ विवाहचतुर्दिनमध्येश्राद्धनिषेधः
१९८ प्रेतश्राद्धविचारः
१९८ नांदीमुखप्राप्तौमासिकाद्यपकर्षः
१९८ नक्षत्राणि
१९९ वासरादिविचारः
१९९ क्षयपक्षविचारः
२०० क्षयमासविचारः
२०० क्षयसंवत्सरविचारः

पत्रं. विषयाः

२०० नांदीश्राद्धात्प्राक्परतश्चमातररिजस्वलायां
२०० नांदीश्राद्धापकर्षेदिनसंख्या
२०० नांद्युत्तरंसूतकप्राप्तौ
२०० मुहूर्तांतरालाभेसूतकिनोप्यधिकारः
२०१ कर्तुःसूतकेभोजननिर्णयः
२०१ कन्यायारजोदर्शनेगोदानम्
२०१ होमकालेरजोदर्शने
२०१ कालातिपत्तौकन्ययास्वयंविवाहः
२०१ प्रतिकूलेविधिः
२०२ पितुर्मरणेअब्दादिप्रतीक्षा

पत्रं. विषयाः

२०३ सगोत्रसपिंडेषुपुरुषत्रयंप्रतिकूलं
२०४ सपिंडीमासिकादिविचारः
२०५ विवाहभेदाअष्टौ
२०५ ब्राह्मविवाहलक्षणं
२०५ दैवविवाहस्य
२०५ आर्षविवाहस्य
२०६ प्राजापत्यस्य
२०६ आसुरविवाहस्य
२०६ गांधर्वविवाहस्य
२०६ राक्षसविवाहस्य
२०६ पैशाचविवाहस्य
२०६ एषांवर्णपरत्वेनव्यवस्थामाह

| पत्रं. | विषयाः |
|---|---|
| २०६ | चौर्येणहृतायाःपुनर्विवाहः |
| २०६ | धर्म्यविवाहफलम् |
| २०७ | वाग्दानोत्तरंवरमरणे |
| २०७ | अनेकेभ्योवाग्दानेव्यवस्था |
| २०७ | आद्यस्यदोषवत्त्वेपरस्मैदेया |
| २०७ | अधर्म्येषुविवाहेषुभोजनादिनिषे० |
| २०७ | अथपरिवेत्रादिनिर्णयः |
| २०८ | अग्रेदिधिषुपत्यादेर्विशेषः |
| २०८ | देशांतरगतज्येष्ठसोदरप्रतीक्षावधि |
| २०८ | मंडपनिर्माणम् |
| २०८ | विवाहवेदिकाप्रकारः |
| २०९ | कन्यायावैधव्यहरोपायः |
| २०९ | वैधव्यहरःकुंभविवाहः |
| २०९ | मृतभार्यात्वपरिहारोपायः |
| २१० | मृतपुत्रत्वहरोपायः |
| २१० | हरिवंशश्रवणविधिः |
| २१० | कन्यादानप्रशंसा |
| २११ | कन्यादानविधिः |
| २११ | वाग्दानपूर्वांगप्रयोगः |
| २१२ | वधूवरयोस्तैलहरिद्रारोपणं |
| २१२ | विवाहपूर्वदिनेस्वस्तिवाचनादितदनुसारीप्रयोगः |
| २१३ | भ्रातृपितृव्यादिकर्तृत्वेऊहः |
| २१३ | नांदीश्राद्धविचारः |
| २१३ | जीवदजीवत्पितृकादेर्नांदीश्राद्धं |
| २१३ | जीवत्पितृकोजीवन्मातामहश्चेत् |
| २१४ | दत्तकेदत्तकन्यायांवाविशेषः |
| २१४ | विष्टरलक्षणम् |
| २१४ | गौरीहरपूजा |
| २१५ | गौरीहरप्रकारः |
| २१५ | सीमांतपूजनम् |
| २१५ | अथमधुपर्कः |
| २१७ | आपस्तंबोक्तोमधुपर्कः |
| २१८ | कन्यादानम् |
| २१९ | गृह्यानुसारीपारिजातप्रयोगः |
| २२० | यथाचारप्रयोगः |

पत्रं. विषयाः
२२२ कन्यादानांगत्वेनगवादिदानमंत्राः
२२४ टी. कन्यादानानुक्रमकारिकाः
२२४ विवाहहोमः
२२५ अथौपासनम्
२२६ गृहप्रवेशनीयहोमः
२२७ औपासनप्रायश्चित्तानि
२२७ अन्वाहिताग्नावनुगमनप्रायश्चि०
२२७ अन्वाधानोत्तरंप्रयाणोपपत्तौप्रा०
२२७ औपासनहोमलोपेप्रा०
२२७ स्वाग्नावन्येनयजनेप्रा०
पत्रं. विषयाः
२२७ अग्नेरायतनाद्बहिःपातेप्रा०
२२७ इध्माधानोत्तरंहविर्दोषनिमित्ते
२२८ पवित्रनाशेप्रा०
२२८ हूयमानाहुतिस्कंदनेप्रा०
२२८ देवताहविर्मंत्रादिविपर्यासेप्रा०
२२८ पिंडपितृयज्ञाकरणेप्रा०
२२८ ऐरिणीदानम्
२२९ अथचतुर्थीकर्म
२३० द्विरागमनम्
२३० विवाहमध्येआशौचे
पत्रं. विषयाः
२३० आशौचेहोमविधिः
२३१ पुरुषस्यैवप्रवासकालेकर्तव्यं
२३२ प्रवासादिषुनिर्णयः
२३२ द्विभार्याग्निसंसर्गप्रयोगः
२३३ अर्कविवाहप्रयोगः
२३४ नास्तिक्यादग्नित्यागे
२३४ अग्निसंसर्गदोषप्रायश्चित्तप्रयोगः
२३५ स्थालीपाकप्रयोगः
२३९ दर्शस्थालीपाकप्रयोगः
२४१ व्यतिषंगप्रयोगः

इति संस्कारकौस्तुभस्थविषयानुक्रमणिका संपूर्णा ।

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐनमःश्रीयज्ञपुरुषाय ॥ गर्भाधानप्रभृतिविहितानेकसंस्कारशुद्धेचित्तादर्शेसकलमुनयोयंप्रपश्यंति देवम् । चंद्रादित्यानलभतडितांभाप्रवाहेनिदानंवंदेवेदैःशिरसिनिहितंपालकंपांडवानाम् ॥ १ ॥ नत्वाहरिगुरुचरणौ वादिर[1]णौघेजयप्रदंविदुषाम् । मधुनाशनमोदावहमधुनासंस्कारकौस्तुभंतनुमः ॥ २ ॥ ॥ अथषोडशसंस्काराः । तत्रगर्भाधानंप्रथममुच्यते । इतरसंस्कारान्प्रतिउपजीव्यत्वेनतस्यैवस्मृतिकर्तृभिःगृह्यसूत्रकारैश्च गर्भाधानमृताविति उपनिषदि गर्भलंभनमितिचप्रथमनिर्देशात् । तदुपयोगितयादुष्टरजोदर्शनशांतिंवक्तुंप्रथमरजो[2]दर्शनेशुभाशुभसूचकानिकथ्यंते । त[3]त्रप्रथमरजोदर्शनेमासफलंभृगुः—चैत्रेस्यात्प्रथमर्तौतुनारीवैधव्यभागिनी । वैशाखेधनपुत्राढ्याज्येष्ठेरोगान्वितातथा । शुचौमृतप्रजाप्रोक्ताश्रावणेधनधान्यभाक् । नभस्येदुर्भगाक्लिष्टाप्याश्विनेचय[4]शस्विनी । ऊर्जेप्यायुष्मतीनारीमार्गशीर्षेबहुप्रजा । पौषेतुपुंश्चलीनारीमाघेपुत्रसुखान्विता । फाल्गुनेश्रीमतीनारीरजोमासफलंक्रमात् । इति ॥ अथतिथिफलम् । श्रीधरीयेगुरुः—प्रथमायांपतिंहंतिद्वितीयायांसुखंभवेत् । तृतीयायांश्रियैस्याच्चचतुर्थ्यांवृषलीभवेत् । पंचम्यांपुत्रलाभश्चषष्ठ्यांचारित्रविक्रया । सप्तम्यांपुत्रवृद्धिःस्यादष्टम्यांपुत्रनाशनम् । नवम्यांरुदतीनित्यंदशम्यांधर्मशालिनी । एकादश्यांप

---

[1] पाठाः—रथौघे । [2] तत्स्वरूपमुक्तंविधानपारिजाते—नाभिमूलेस्थितंपुष्पंचतुर्दलसमन्वितम् । तस्मिन्सर्वाश्चदधतेगर्भसंभवकारणम् । अधोमुखस्थितंस्त्रीणांबाल्येतुमुकुलीकृतम् । बाल्यात्परवयःप्राप्तौमुकुलंविकसद्भवेत् । उत्फुल्लेकुसुमेस्त्रीणांस्वभावेनस्रवेद्रजः । तदाप्रभृतिसर्वासांमासिमासिऋतुर्भवेत् । इति । [3] अथप्रथम । [4] पयस्विनी ।

तिस्निग्धाद्वादश्यांक्रंदिनीभवेत् । त्रयोदश्यांमानधनात्वपरावहुदोषकृत् । पर्वण्यन्यगृहीतास्याद्विद्यादेवंतिथेःफलम् । इति । कश्यपोपि–अष्टमीषष्ठ्यमारिक्ताद्वादशीसंक्रमेपिच । वैधृतौचव्यतीपातेग्रहणेचंद्रसूर्ययोः । विष्ट्यांसंध्यासुनिद्रायांदुर्भगाप्रथमार्तवइति ॥ अथपूर्वाह्णादीनांफलं स्मृतिरत्ने–शुभंचैवतुपूर्वाह्णेमध्याह्नेमध्यमंफलम् । अपराह्णेतुवैधव्यंपूर्वरात्रेशुभंभवेत् । मध्यरात्रेमध्यमंस्यात्पररात्रेशुभान्वितेति । स्मृतौ–प्रातःकालेसुतधनासायाह्नेसर्वभोगिनी[1] । मध्याह्नेतुभवेद्वेश्यानिशीथेविधवाभवेदिति ॥ अथवारफलम्–रुग्णापतिव्रतादुःखीपुत्रिणीभोगे[2]भागिनी । पतिप्रियाक्लेशभागासूर्यवारादिषुक्रमात् । भानुवारेभवेद्व्याधिःसोमवारेपतिव्रता । दुःखिताभौमवारेतुबुधेसौभाग्यसंयुता । श्रीसंयुतागुरोर्वारेपतिभक्ताभृगोर्दिने । मंदवारेनिराशास्यात्प्रथमर्तौरजस्वलेति ॥ अथनक्षत्रफलम् । गर्गः–सुभगाचैवदुःशीलावंध्यापुत्रसमन्विता । धर्मयुक्ताव्रतघ्नीचपरसंतानमोदिनी । सुपुत्राचैवदुष्पुत्रा[3]पितृवेश्मरतासदा । दीनाप्रजावतीचैवपुत्राढ्याचित्रकारिणी । साध्वीपतिव्रतानित्यंसुपुत्राकष्टचारिणी । स्वकर्मनिरताहिंस्रापुण्यापुत्रादिसंयुता । नित्यंधनव्ययासक्तापुत्री[4]धान्यसमन्विता । मूर्खाचारापुण्यवतीदस्रर्क्षादेःक्रमात्फलम्[5] ॥ अथलग्नफलम्–मेषेसव्यभिचारास्याद्वृषभेपरभोगिनी । मि

---

१ भागिनी । २ भगभागिनी । ३ दुःपुत्रा । ४ पुत्रधान्य । ५ पतिवत्याश्चदुष्टेषुप्रथमंस्याद्रजोयदि । पत्युस्तस्याभवेन्मृत्युस्त्रिपूर्वादिषुभेषुच । मघाशक्रादित्यदित्यवह्निभेषुचवाभवेत् । तत्रापिस्यान्महाशोकोदारिद्र्यंचानपत्यता । तद्दोषपरिहारार्थंकुर्याच्छांतिंयथाविधि । तोषयेज्जपहोमाभ्यां तत्तन्नक्षत्रदेवताः । आचार्यादीन्समभ्यर्च्यभोजयेच्छक्तितोद्विजान् । तद्दुष्टेषुकृतेनाशुसर्वारिष्टंप्रणश्यतीत्याश्वलायनस्मृतौ ।

थुनेधनभोगाढ्याकर्कटेव्यभिचारिणी । पुत्राढ्यासिंहराशौतुकन्यायाश्री[1]मतीभवेत् । वि[2]चक्षणातुलायातुवृश्चिकेतुपतिव्रता । दुश्चारिणीधनुःपूर्वेअपरेचपतिव्रता । मकरेत्वन्नहीनातुकुंभेनि[3]र्धनयुक्तता । मीनेविचक्षणालग्नेग्रहसंस्थाविवाहवदिति ॥ अथयोगफलानि दैवज्ञमनोहरे–आद्यतौदुर्भगानारीविष्कंभेचेद्रजस्वला । वंध्याचैवातिगंडेचशूलेशूलवतीभवेत् । गंडेतुपुंश्चलीनारीव्याघातेचात्मघातिनी । वज्रेचस्वैरिणीप्रोक्तापातेचपतिघातिनी । परिघेमृतवंध्याचवैधृतौपतिमारिणी । शेषाःशुभावहायोगायथानामफलप्रदाः । अन्यत्रापिनृसिंहः–परिघस्यतुपूर्वार्धेव्यतीपातेचवैधृतौ । संध्यासूपप्लवेविष्ट्यामशुभंप्रथमार्तवम् । व्याघातेनवशूलेतुनाड्यःपंचचतुर्दशेति । अत्रसंख्ययोर्विकल्पः ॥ अथलग्नसंस्थग्रहफलानि । वसिष्ठः–वैधव्यमष्टमस्थेऽर्केचंद्रेक्षीणरुचिर्भवेत् । अंगारकेभर्तृहीनाबुधेचेदनपत्यता । दौर्भाग्यमिंद्रसचिवे[4]सापत्यं भार्गवेभवेत् । प्रव्रज्यासूर्यपुत्रेतुराहौतुकल[5]हःसदा । अशुभंचैवकेतौस्याज्जामित्रेशुभदाःशुभाः । अष्टमस्थइत्यस्यसप्तम्यंतेषुप्रत्येकमनुषंगः । जामित्रेसप्तमस्थाने । नरसिंहोपि–लग्नस्यसप्तमस्थानेसूर्योवैधव्यकारकः । पुत्रहानि[6]करस्त्वारोबुधःसत्पुत्रदोभवेत् । बृहस्पतिर्धनायुष्यंशुक्रःसाफल्यमेवच । शनैश्चरेतुवंध्यास्याद्राहौतुमरणंध्रुवम् । चंद्रेसद्गुणसं[7]युक्तादेवरातमताच्छुभमिति ॥ अथवस्त्रफलम् । गर्गः–सुभगाश्वेतवस्त्रास्याद्दृढवस्त्रापतिव्रता । क्षौमवस्त्राक्षितीशास्यान्नववस्त्रासुखान्विता । दुर्भगाजीर्णवस्त्रास्याद्रोगिणीरक्तवाससा । नीलांबरधरानारीविधवापुष्पितातत: । मलिनांबरधरानारीद

---

१ श्रीमतीतथा । २ विलक्षणा । ३ निधन । ४ साफल्यं, साकल्यं, सायुज्यं । ५ कलहप्रदा । ६ करोभौमः । ७ संयुक्ते ।

रिद्रास्याद्रजस्वला । वस्त्रेस्युर्विषमारक्ताबिंदवःपुत्रमाप्नुयात् । समाश्चेत्कन्यकाचेतिफलंस्यात्प्रथमार्तवइति ॥ अथस्थानफलम्–ग्रामाद्बहिःपरग्रामेनारीस्याद्व्यभिचारिणी । पतिव्रतापतिं[1]स्थानेसुभगागृहमध्यतः । ग्राममध्येतुवृद्धिश्चविधवाचदिगंबरा । उपरागेचदुःशीलाआयुष्यंजलसंनिधौ । धनमध्येतुकन्यायाधनधान्यसमृद्धिदेति ॥ देवरातः–संमार्जनीकाष्ठतृणाग्निशूर्पान्हस्तेदधानाकुलटातदास्यात् । तल्पोपभोगेतपसिस्थिताचेद्दृष्टंरजोभाग्यवतीतदास्यादिति ॥ अथप्रथमरजोदर्शनेशिष्टाचारः । कश्यपः–प्रथमर्तौतुपुष्पिण्याःपतिपुत्रवतीस्त्रियः । अक्षतैरासनंकुर्युस्तस्मिंस्तामुपवेशयेत् । हरिद्रापुष्पगंधादीन्दद्यात्तांबूलकंस्रजम् । आशिषोवाचयेयुस्ताःपतिपुत्रवतीभव । दीपैर्नीराजनं[2]कुर्यात्स[3]दीपेवासयेद्गृहे । ताःसर्वाःपूजयेत्पश्चाद्गंधपुष्पाक्षतादिभिः । लवणापूपमुद्गादिदद्यात्ताभ्यःस्वशक्तितइति[4] ॥ अथसर्वर्तुसाधारणनियमानाहवसिष्ठः–त्रिरात्रंरजस्वलाऽशुचिर्भवति सानांज्यान्नाभ्यंज्यान्नाप्सुस्नायादधःशयीतनदिवास्वप्यान्नाग्निंस्पृशेन्नरज्जुंसृजेन्नदंतान्धावयेन्नमांसमश्नीयान्नग्रहान्निरीक्षेतनाश्लीलं[5]किंचिदीरयेत् न[6]खर्वेणपिबेदंजलिनावापिबेल्लोहेनायसेनवाविज्ञायतइति । लोहेनताम्रेण । तथा यानखानिनिकृंततेतस्यैकुनखीयाप्रलिखेत्[7]तस्यैखलतिर्यापर्णेनपिबातितस्याउन्मादकइति । तैत्ति

---

[1] शुभस्थाने । [2] कुर्युः । [3] दीपैः । [4] इदंचसर्वंशुभाशुभनिरीक्षणं–प्रथमर्तौद्वितीयेवाशुभाशुभनिरीक्षणं । कर्तव्यंज्ञातिभिःसम्यग्धर्मशास्त्रविधानतइति । [5] कंचिदाचरेत् । [6] खर्वेणनूतनखर्परेण । [7] तस्यैव ।

रीयश्रुतौ नखनिकृंतनंभूमौरेखाकरणंपर्णेनपानंचनिषिद्धम्[1] । यद्यपिदक्षेण–अंजनाभ्यंजनेस्नानंप्रवासंदंतधावनं । नकुर्यात्सार्तवानारीग्रहाणामीक्षणंतथेतिस्नानमात्रंनिषिद्धंतथाप्यु[2]परागादिनिमित्तकस्नानेप्रसक्ते वसिष्ठेननाप्सुस्नायादितिमज्जनंनिषिध्यते। अतएवपराशरेणनियमःस्मर्यते–स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरजस्वला । पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् । सिक्तगात्राभवेदद्भिःसांगोपांगाकथंचन । नवस्त्रपीडनंकुर्यान्नान्यद्वासश्चधारयेदिति ॥ रजस्वलायाःप्रथमदिननिर्णयस्तुपारिजातेचतुर्विंशतिमते–पूर्वांशयोस्तुरात्रौचेज्जननंमरणंरजः। दृष्टंपूर्वदिनादित्वंतृतीयेतूत्तरेहनि । [3]केचिदेवोदितेसूर्येजननंमरणंतथा । रजोवादृश्यतेस्त्रीणांयस्याहस्तस्यशर्वरी । अपरेत्वर्धरात्रात्प्राङ्मृतौरजसिसूतके । पूर्वमेवदिनंप्राहुरूर्ध्वंचेदुत्तरेहनीति । अत्रदेशाचारतोव्यवस्था । स्नातायाःकालांतरेपुनारजोदर्शनेत्रिरात्रव्रताभावेव्यवस्थोक्तातत्रैवसंग्रहे–ऋतुस्नातातुयाप्रौढापुनरेवरजस्वला । स्नानात्सप्तदशाहेचशौचेनैवशुचिर्भवेत् । अष्टादशाहेत्वेकाहंद्व्यहमेकोनविं

---

१ बौधायनेपि–अथयदामलवद्वासास्यान्नैनयासहसंवदेतनसहासीतनास्यान्नमद्याद्ब्रह्महत्यायैह्येखावर्णं(?)प्रतिमुच्यास्तेथोकालपान्याहुरभ्यंजनंवास्त्रियाअभ्यंजनमेवप्रतिग्राह्यकामसन्यादितिनैनामुपनयेन्नारण्येनपराचीनांनस्नातीतिवाभ्यंक्तेनप्रतिलिखतेनाभ्यंक्तेनदंतान्धावतेननखानिनिकृंतते नकृण्वतिनरज्जुंसृजतिनपर्णेनपिवतिनखर्वेणेति । अनयासंभाषणेप्रतिप्रसवोधर्मप्रश्ने–ब्रह्माध्येष्यमाणोमलवद्वासस्थोनसंभाषितुंब्राह्मणेनसंभाष्यतयासंभाषेतसंभाष्यतुब्राह्मणेनैवसंभाष्याधीयीतैवंतस्याःप्रजानिःश्रेयसमितिवचनाद्विधवामिसंभाषणेनैतत्कार्यमिति । हरदत्तः–शौचगानरोदनहसनपाननारीयुतानुलेपनदिवास्वप्नदंतधावनमौनकायिकवाचिकमानसिकदेवतार्चननमस्काररजस्वलांगनास्पर्शतत्संभाषणरजोवस्त्राणांसंत्यागंनकुर्यादितिविशेषः । २ तथाप्युपवर्ण्यतेस्नानेनैमित्तिकेप्रसक्ते । ३ केचिद्दिवोदिते ।

शतौ । विंशत्प्रभृत्युत्तरेषुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् । एतद्यस्याःकिंचिदूनेपूर्णेवामासिरजोनियमस्तद्विषयम् । कश्यपस्तु–एकादशाहेत्वेकाहंद्विरात्रंद्वादशेहनि । ऊर्ध्वंत्रिरात्रंविज्ञेयमितिकुंडलिनोदितमिति । एतत्पक्षादूर्ध्वंयस्यारजोनियमस्तद्विषयम् ॥ अथरजस्वलाशुद्धिप्रकारः स्मृत्यर्थसारे–रजस्वलाषष्टिमृत्तिकाभिःशौचंकृत्वामलंप्रक्षाल्यदंतधावनपूर्वकंसंगवेस्नायादिति[1] । ज्वरितायाःशुद्धिस्तुसंग्रहे–आतुराचेदृतुमतीतस्याःस्नानंकथंभवेत् । स्पृष्ट्वातुतांपरास्नायाद्दशकृत्वोह्यनातुरा । वासोभिर्दशभिश्चैवपरिधाप्ययथाक्रमं । ब्राह्मणान्भोजयित्वाथपुण्याहेनविशुध्यति । आतुराणांतु[2]सर्वेषामेवंशुद्धिर्विधीयतइति ॥ रजस्वलयोःपरस्परंसंसर्गेशुद्ध्युपायः स्मृतिमंजर्यां–उदक्येद्वेतुसंस्पृष्टेसवर्णेचैकभर्तृके । तयोःस्नानंमिथःस्पर्शेपंचगव्यंततःपिबेत् । सवर्णयोनिसंबंधेसगोत्रेचरजस्वले । मिथःस्पृशेदमत्यातुस्नानमात्रेणशुद्ध्यति । मत्यैकरात्रंनाश्नीयात्पंचगव्यंपिबेत्ततः । उदक्ययोर्यदान्योन्यमसंबंधःसवर्णयोः । स्पृशेदमत्यास्नात्वाचतस्मिन्नाद्याच्छुचिर्भवेत् । मत्यातुनाद्यादाशुद्धेर्भुक्त्वाचेत्प्रतिवासरम् । उपोषणंतदाकेचिदाहुस्तद्दिनसंख्यया । उपवासेनशक्ताचेत्तत्समंदानमाचरेत् । संभाषेतांस्पृशेतांवाब्राह्मण्यौचरजस्वले । आस्नानकालान्नाश्नीतामुभेमत्यामिथःक्वचित् । स्नात्वोपवासंकुर्यातांपंचगव्येनशुद्ध्यतः । एवमभ्यासतःशुद्ध्यैप्रायश्चित्तंसमाचरेत् । मत्यारजस्वलान्योन्यंवृषलीब्राह्मणीभवेदित्यतःपूर्वस्पृष्टेतिशेषः ।

---

१ स्नानोत्तरंविशेषः–स्नात्वान्यंपुरुषंनारीनस्पृशेत्तुरजस्वला । यदिस्पृशेत्तदाप्रायश्चित्तमाह । ईक्षयेद्भास्करंदेवंब्रह्मकूर्चंततःपिबेत् । केवलंपंचगव्यंचक्षीरंवाचात्मशुद्धयइतिलैंगे । २ सर्वासां ।

ब्राह्मण्याःकृच्छ्रमेकंतुशूद्रीपादेनशुध्यति । कश्यपः–रजस्वलासूतिकावाचांडालंयदिसंस्पृशेत् । आस्नानकालान्नाश्नीयादतिकृच्छ्रंसमाचरेत् । ज्ञानतःस्पर्शेचैतत् । चांडालंसार्तवानारीसंस्पृशेद्भोजनांतरे । वाग्यताबहिरासीतास्नानकालादुपोषिणी । प्राजापत्यंचरेत्पश्चात्पंचगव्यंततःपिबेत् । विप्रान्द्वादशसंख्याकान्भोजयित्वातुशुध्यति । पुष्पिणींसंस्पृशेन्मोहादशुद्धंवानरंस्पृशेत् । स्नानादर्वाङ्नभुंजीतभुक्त्वाकृच्छ्रंसमाचरेत् । मोहादज्ञानतः । स्पृष्ट्वोदकी[१]पंचनखान्द्विशफैकशफान्पशून् । अंडजानिचसर्वाणिनाद्यादास्नानवासरात् । पराशरः–रजस्वलायदोदष्टा[२]शुनाजंबूकरासभैः । पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति । ऊर्ध्वंतुद्विगुणंनाभेर्वक्रेतुत्रिगुणंतथा । चतुर्गुणंस्मृतंमूर्ध्निदंशेन्यत्रव्रतीभवेदिति ॥ ॥ अथ[३]दुष्टरजोदर्शन[४]शांतिमाहशौनकः–सार्तवानांतुनारीणांशांतिंवक्ष्यामिशौनकः । अर्थपुत्रादिलाभायदंपत्योरभिवृद्धये[५] । पंचमेह्निचतुर्थेवाग्रहातिथ्यपुरःसरम् । तस्मिन्नहनिकर्तव्यऋतुहोमोविधानतः । आचार्यंवरयेत्प्राज्ञंभुवनेश्वरितुष्टये । होमार्थंचजपार्थंचवरयेदृत्विजोबहून् । यजमानोद्विजैःसार्धंशांतिहोमंसमाचरेत् । गृहादीशानदिग्भागेदेवतापूजनायच । द्रोणप्रमाणधान्येनव्रीहिराशित्रयंभवेत् । कुंभत्रयंन्यसेद्राशौतंतुवस्त्रादिवेष्टयेत् । पूरयेत्तीर्थसलिलैःप्रतिकुंभंपृथक्पृथक् । सूक्तेनाथनवर्चेनप्रसुवआपइत्यथ । ऋचायाःप्रवतस्तद्वद्गायत्र्याचततःक्रमात् । मध्यकुंभेक्षिपेद्धान्यमौषधानिचहेमच । ततश्चपंचरत्नानिगंधपुष्पाक्षतादिकान् । औषधानिचवक्ष्यंतेमुनिभिःशांति[६]कारणात् । उदुंबरःकुशादूर्वाराजीववटबिल्वकाः । विष्णु

---

[१] स्पृष्ट्वोदक्या । [२] यदादृष्टा । [३] अतिदुष्टे । [४] दर्शनेशांति, दर्शननिर्णये । [५] रतिवृद्धये । [६] शांतिकर्मणि ।

क्राताचतुलसीबर्हिषंशंखपुष्पिका । शतावर्यश्वगंधाचनिर्गुंडीसर्षपद्वयम् । अपामार्गःपलाशश्चपनसोजीवकस्तथा । प्रियंगवश्चगोधूमाव्रीहयोऽश्वत्थएवच । क्षीरंचदधिसर्पिश्चपद्मपत्रंतथोत्पलम् । कुरंटकत्रयंगुंजावचाभद्रकमुस्तकाः । द्वात्रिंशदौषधानीहयथासंभवमाहरेत् । गजाश्वरथवल्मीकसंगमहृदगोकुलात् । राजद्वारप्रदेशाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत् । कुंभस्थापनइत्येतत्तत्तन्मंत्रेणकारयेत् । मृत्तिकांचौषधादीनिमंत्रेणप्रक्षिपेत्क्रमात् । कुंभोपरिन्यसेत्पात्रंकांस्यंवाताम्रमेव वा । मृन्मयं[1]नवपात्रंवास्वस्यवित्तानुसारतः । तस्योपरिन्यसेद्रुक्मंप्रतिमांभुवनेश्वरीम् । तन्मूल्यंवान्यसेत्तत्रइंद्राणींचपुरंदरम् । आचार्यःपूजयेद्देवीमंगाद्यावरणानिच । अन्योवापूजनंकुर्याद्वायत्र्यामंत्रसारया । इंद्राणींपूजयेद्देवीमिंद्राणीमासुनारिषु । क्रमेणपूजयेदिंद्रमिंद्रत्वावृषभंवयं । अनेनविधिनाचार्यःपूजयेद्देवतात्रयम् । आवाहनादिसकलैरुपचारैःपृथक्पृथक् । तन्मध्यमंस्पृशन्कुंभंमंत्रेणभुवनेश्वरीं । जपेदाचार्यआहोमाच्छ्रीसूक्तंचजपेत्ततः । स्पृशन्वैदक्षिणंकुंभमृत्विगेकोजपेदथ । चत्वारिरुद्रसूक्तानिचतुर्मंत्रोत्तराणिच । संस्पृशन्नुत्तरंकुंभंश्रीरुद्रं[2]रुद्रसंख्यया । शंनइंद्राग्नीसूक्तंचतत्रैवसंस्पृशन्ज-

---

[1] वेणुपात्रं वा । [2] रुद्रं नमस्तेरुद्रेत्याद्येकादशानुवाकात्मकं । यत्तुचमकसहितस्यजपइत्युक्तंतत्प्रामादिकं । महाग्निचयनस्थविनियोगपर्यालोचनयातस्यरुद्रत्वाभावात् । एकादशिन्यादौतुवाचनिकंचमकस्यरुद्रांगत्वं । अतएवभट्टभास्करीयभाष्ये वायुपुराणे चमकंनमकंचैवेत्यादिनापृथगुपादानेनविनियोगउक्तः । आपस्तंबोपि रुद्रान्जपेत्प्रथमोत्तमौवेति । रुद्रान्नमस्तेरुद्रमन्यवइत्यादीनेकादशानुवाकानितितद्व्याख्यायांहरत्तदः । शां. र. ।

पेत् । कुंभस्यपश्चिमेदेशेशांतिहोमंसमाचरेत् । अन्वाधानंततःकुर्या[1]द्धोमंतंत्रंसमाचरेत् । पूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वाचार्योद्विजैःसह । दूर्वाभिस्तिलगोधूमैःपायसेनघृतेनच । पायसंश्रपयेत्तत्रसावित्रंचहविश्चतत् । कृत्वाज्यभागपर्यंतंहविरुद्धासनादिकम् । तिसृभिश्चैवदूर्वाभिरे[2]कैकाचाहुतिर्भवेत् । [3]आभिर्मंत्रप्रयुक्ताभिर्गायत्र्याजुहुयात्क्रमात् । अष्टोत्तरसहस्रंतुशतमष्टोत्तरंतुवा । ( [4]अष्टाविंशतिभिश्चैवअथवाचाष्टसंख्यया ) । तिलमिश्रैश्चगोधूमैर्द्रव्येणाज्याहुतीर्हुनेत् । जुहुयात्पायसेनैवआज्येनचहुनेत्क्रमात् । हविश्चतुष्टयेनैवप्रत्येकंसमसंख्यया । गायत्र्यै[5]वचहोतव्यंहविरत्रचतुष्टयम् । ततःस्विष्टकृतंहुत्वारज्जुप्रहरणंतथा । अयाश्चेत्यादिभिर्हुत्वासमुद्रादूर्मिसूक्ततः । संततामाज्यधारांतांपूर्णाहुतिमथाचरेत् । परिषेचनपर्यंतंहोमशेषंसमापयेत् । [6]सहौषधिस्थितैस्तत्रप्रतिकुंभस्थितोदकैः । ऋतुमत्याःस्त्रियाःशांत्यैदंपतिभ्यांसुखायच । शांतिरभिषेकः । अथाभिषेकमंत्राश्चप्रोच्यंतेशौनकादिभिः । आपोहिष्ठेतिनवभिःसूक्तेनचततःपरम् । इंद्रोअंगतृचेनैवपावमानीःक्रमेणतु । उभयंश्रृणवच्चनःस्वस्तिदाविशएकया । त्र्यंबकेणमंत्रेणजातवेदसएकया । समुद्रज्येष्ठाइत्यादिचतुर्भिश्चप्रसिद्धकैः । त्रायंतामितिमंत्रैश्चत्रिभिश्चैभिर्यथाक्रमं । इमाआपस्तृचेनैवदेवस्यत्वेतिमंत्रतः । मंत्रेणा[7]थतमीशानंत्वमग्नेरुद्रइत्यथ । तमुष्टुहीतिमंत्रेणभुवनस्यपितरंतथा । यातेरुद्रेतिमंत्रेणशिवसंकल्पमंत्रतः । इंद्रत्वा

---

१ द्धोमकर्म । २ वाहुतिः । ३ अभिमंत्र्य । ४ इदंमर्धं क. ख. योरधिकं शां. र. मध्येपठितमस्ति । ५ एवकारादिंद्राणींद्रयोर्होमोनास्तीतिकेचिदिति शां. र. । ६ सहौषधीतिचरणस्थाने अथाभिषेकंकुर्वीतेतिपाठः । ७ मंत्रेणानेनईशानं ।

वृषभंवयंमंत्रैश्चैवाभिषेचयेत् । साचवस्त्रांतरंधृत्वापुनश्चोपवसेत्[1]सती । उपवासोत्रसमीपावस्थानम् । विप्रान्विधिवदभ्यर्च्यगंधपुष्पाक्षतादिभिः । धेनुंपयस्विनींदद्यादाचार्यायचभूषणैः । सदक्षिणमनड्वाहंप्रदद्याद्रुद्रजापिने । ऋत्विग्भ्यश्चापिसर्वेभ्योदद्याद्वैदक्षिणांततः । महाशांतिंप्रजप्याथविप्राशीर्वचनंततः । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्भुंजीतस्वजनैःसह । स्मृतौ–ब्राह्मणान्भोजयित्वातुदैवज्ञंभोजयेत्ततः । एवंयःकुरुतेशांतिंशौनकोक्त[2]प्रकारतः । तदनिष्टंतुसकलंसद्यएवविनश्यतीति । जपेदाचार्यइति अन्वाधानात्मकहोमतंत्रारंभपर्यंतमित्यर्थः । अनेनैवाशयेनान्वाधानंततःकुर्यादितिश्लोकेआचार्यग्रहणम् । ततश्चाग्निस्थापनादिग्रहपूजांतंयजमानेनकर्तुमुचितम् । श्रपयेत्तत्रेतिगृहसिद्धान्नग्रहणंव्यावर्त्यते । सावित्रंचहविश्चतदित्यत्रतच्छब्देनहविश्चतुष्टयत्यागकालेसवित्रइतिचतुर्थ्यंतेनदेवतोद्देशःकार्यइतिज्ञाप्यते । लभ्यतेचात्रमंत्रसंवादः । पार्वणावितितद्धितविसंवादिनोमंत्रात्पूर्णमासायेत्युद्देशोंगीक्रियतेयाज्ञिकैः । संवादेतुकैमुतिकन्यायेनैवतत्सिद्धिः । नचैवंभुवनेश्वरीदैवत्यहोमाभावापत्तिः । वाचनिकत्वेनइष्टत्वात् । वस्तुतस्तुषुञ्प्राणिप्रसवइतिधातोर्व्युत्पन्नःसवितृशब्दःप्रकृतफलदातृत्वेनप्रथमप्रयाजेसमिच्छब्दोग्नेरिवलिंगानादरेणभुवनेश्वरीप्रतिपादकइतिनविरोधः । मुख्यदक्षिणाशक्तौनिष्क्रयोदक्षिणादेया । तमाहकात्यायनः–दशकार्षापणाधेनाविति अष्टावनडुहिस्मृताइतिच ॥ कार्षापणमाहनारदः–कार्षापणोदक्षिणस्यांदिशिरौप्यःप्रवर्तते । पणैर्निबद्धःपूर्वस्यांषोडशैवपणाःसत्विति ॥ ॥

---

१ वसेदिति । २ शौनकोक्तां ।

[1]अथरजोदर्शनशांतिप्रयोगः ॥ बहुतरदोषदुष्टेप्रथमरजोदर्शनेद्वितीयादिरजोदर्शनोत्तरंस्वल्पदोषदुष्टेतुतदनंतरमेवगर्भाधानप्रत्यासन्नदिनेसाकार्या । कर्तापत्न्यासहकृतस्नानादिनित्यक्रियःपवित्रपाणिराचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यास्याममभार्यायाःप्रथमरजोदर्शनेईदृशदुष्टमासादिसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसग्रहमखांशौनकोक्तांशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्यगणपतिपूजनाद्याचार्यर्त्विग्वरणांतंकुर्यात् । आचार्यस्तुयथास्वर्गेशक्रादीनांबृहस्पतिः । तथात्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्योभवसुव्रतेत्याचार्यस्य । अस्ययागस्यनिष्पत्तौभवंतोभ्यर्थितामया । सुप्रसन्नैः[2]प्रकर्तव्यंशांतिकंविधिपूर्वकमित्यृत्विजाम् । ततोगंधवस्त्रादिभिर्यथाशक्तितेषांपूजनं । ततआचार्यःपवित्रपाणिःदेशकालौसंकीर्त्ययजमानानुज्ञयाआचार्यकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्ययदत्रसंस्थितमितिप्राच्यादिदिक्षुप्रादक्षिण्येनसर्षपान्विकीर्यशुचीवइत्यृचापंचगव्येनतथैवप्रोक्ष्य आपोहिष्ठेतितृचेनशुद्धाभिरद्भिस्तथैवप्रोक्ष्यकृतांजलिःस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमितिमंत्रद्वयेनदेवतांसंप्रार्थ्यभुवनेश्वर्यादिप्रतिमात्रयस्याभ्युत्तारणं[3]कुर्यात् । अग्निःसप्तिमितिसूक्तस्यवैश्वानरोऽग्निस्त्रिष्टुप् अभ्युत्तारणेविनियोगः अग्निपदरहितेना

---

[1] अथशांतिः ।

[2] सन्नैश्चकर्तव्यं ।

[3] नूतनप्रतिमानामभ्युत्तारणंयथा–अद्येत्यादि–आसांअस्यावा स्वर्णप्रतिमानामंगप्रत्यंगसंधिषुविघट्टनोच्छेदनतापनादिजन्यपीडानिरासपूर्वकंदेवताधिष्ठानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थमभ्युत्तारणंकरिष्ये । स्वर्णादिशलाकयाप्रतिमांमधुसर्पिर्भ्यामभ्यज्य इमंमेगंगइतिपुरुषसूक्तेनचकुशवारिणाभ्युक्ष्यपंचगव्येनप्रोक्ष्य अग्निःसप्तिमितिसूक्तमग्निपदरहितंतत्सहितंचपठन्संततजलधारांकुर्यात् । अथेष्टदेवतामावाह्य अस्यैप्राणाःप्रतिष्ठंतुअस्यैप्राणाःक्षरंतुच । अस्यैदेवत्वमर्चायैमाऽमहेतिचकश्चनेतिप्राणप्रतिष्ठाभ्युत्तारणसंक्षेपः ।

ग्निःसप्तिमितिसूक्तेनाभिषिच्यपुनरग्निपदयुक्ते[1]नतेनैवाभिषिंचेदित्यग्न्युत्तारणम् । ततोगृहादीशान्यांमध्येतद्[2]क्षिणोत्तरयोश्चमहीद्यौरितिमंत्रावृत्त्याभूमिंस्पृष्ट्वा । ओषधयःसमितिद्रोणप्रमाणव्रीहिभिस्तेषुदेशेषुराशित्रयंकुर्यात् । पलंसुवर्णाश्चत्वारः कुडवंप्रस्थमाढकम् । द्रोणंचखारिकाचेतिपूर्वपूर्वाच्चतुर्गुणम् । इतिषोडशप्रस्थात्मकोद्रोणः । ततःआकलशेष्वितिमध्यदक्षिणोत्तरक्रमेणप्रक्षालितमव्रणमका[3]लकंकुंभत्रयंसादयेत् । प्रसुवआपइत्यस्यसूक्तस्यसिंधुक्षित्प्रैयमेधोनद्योजगतीकलशेषूदकपूरणेविनियोगः । ॐप्रसुवआपो० । याःप्रवतइत्यस्यवसिष्ठोनद्यःशक्करी कलशेषूदकपूरणेविनियोगः याःप्रवतइतिऋक् । प्रतिकलशंपूरणादिमंत्राणामावृत्तिः । ततोगंधद्वारामितिगंधं । याओषधीरितिसर्वौषधीः । ओषधयःसमितियवांश्च त्रि[4]षुकलशेषूक्तक्रमेणक्षिपेत् । हेमपंचरत्नप्रक्षेपोत्तरंवागंधादिप्रक्षेपइतिवक्ष्यामः । ततो[5]मध्यकुंभेगायत्र्यायवव्रीहितिलमाषकंगुश्यामाकमुद्गान्क्षिप्त्वा । सप्तद्रव्यप्रक्षेपोनगायत्र्येतिवृद्धाः । तथैवउदुंबरकुशदूर्वारक्तोत्पलचंपकबिल्वविष्णुक्रांतातुलसीबर्हिःशंखपुष्पीशतावर्यश्वगंधानिर्गुंडीरक्तपीतसर्षपापामार्गपलाशपनसजीवकप्रियंगुगोधूमव्रीह्यश्वत्थदधिदुग्धघृतपद्मपत्रनीलोत्पलसितरक्तपीतकुरंटकगुंजावचाभद्रमुस्ताकाख्यानिद्वात्रिंशदौषधा[6]नियथासंभवंवाप्रक्षिप्य त्रिष्वपिकलशेषुहिरण्यरूपइतिहिरण्यं सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि गंधद्वारामितिगंधं याःफलिनीरितिपुष्पफलानि गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमह्रदगोष्ठमृदःस्योनापृथिवीतिप्रक्षिप्य याओषधीरितिसर्वौषधीः ओषधयःसमितियवान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः

---

[1] युतेन, सहितेन । [2] दक्षिणोत्तरतश्च । [3] मकलंकं । [4] त्रिष्वप्युक्त । [5] मध्यमकुंभे । [6] धानिसर्वाणि ।

अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान्निक्षिप्य युवासुवासाइतिसूत्रेणवाससावावेष्टितान्कलशकंठान्कृत्वा पुष्पमालादिभिःकलशान्भूषयेत् । ततःकलशानामुपरिधातुमयंवैणवंमृन्मयंवापूर्णपात्रत्रयंस्वशक्त्यनुसारेणपूणादर्वीतिमंत्रावृत्त्यानिधाय तदुपरिश्वेतवस्त्रत्रयंचंदनादिकृताष्टदलयुक्तंन्यसेत् । मध्यमेस्थापितप्रतिमायांभुवनेश्वरीमावाहयेत्[१] । गायत्र्याविश्वामित्रो भुवनेश्वरीगायत्री भुवनेश्वर्यावाहनेविनियोगः । ॐ तत्सवि० भुवनेश्वरीमावाहयामि । एवंदक्षिणकलशेइंद्राणीं इंद्राणींवृषाकपिरिंद्राणीपंक्तिः इंद्राण्यावाहनेविनियोगः । इंद्राणीमास्वितिऋक् १ । एवमुत्तरकलशेइंद्रं इंद्रत्वाविश्वामित्र इंद्रोगायत्रीइंद्रावाहनेविनि० । इंद्रत्वा इतिऋक् १ । ततोमध्यमकलशे अंगाद्यावरणदेवताभ्योनमःअंगाद्यावरणदेताआवाहयामीत्यावाह्य सप्रणवगायत्र्यंते अंगाद्यावरणसहितायैभुवनेश्वर्यैआसनंसमर्पयामीत्येवंषोडशोपचारैर्भुवनेश्वरींसंपूज्य उक्तमंत्राभ्यांकांडानुसमयेनइंद्राणींद्रयोःषोडशोपचारैःपूजांकुर्यात् । अशक्तौभुवनेश्वर्यासहैवपदार्थानुसमयेननाममंत्राभ्यांवातयोःपूजनम् । ततोमध्यमकुंभंस्पृष्ट्वा आचार्योऽष्टसहस्रमष्टशतंवागायत्रींजप्त्वाश्रीसूक्तं जपेत् । हिरण्यवर्णामितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यश्रीआनंदकर्दमचिक्लीतेंदिरासुताऋषयः श्रीर्देवता आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः ततएकाबृहती ततोद्वेत्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभोंत्याप्रस्तारपंक्तिः जपेवि० । ॐ हिरण्यवर्णामितिसूक्तम् । ततएकऋत्विक्दक्षिणकुंभेरुद्रसूक्तानिजपेत् । यथा कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्रीअंत्यानुष्टुप्जपेवि० । कद्रुद्रायेतिसूक्तम् । इमारुद्रायतवसइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोजगत्यंत्येद्वेत्रिष्टुभौ जपेवि० । इमारुद्रायेतिसूक्तं । आतेपितरिति

---

[१] अथभुवनेश्वरीध्यानम् ‘उद्यदिनद्युतिमिंदुकिरीटांतुंगकुचांनयनत्रययुक्ताम् । स्मेरमुखींवरदांकुशपाशाभीतिकरांप्रभजेभुवनेश्वरीं’ इति ।

पंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् जपेविनि० । आतेपितर्मरुतांसुम्नमेत्वितिसूक्तम् । इमारुद्रायस्थिरधन्वनइतिचतुर्ऋचस्यसूक्तस्यवसिष्ठोरुद्रोजगत्यंत्यात्रिष्टुप् जपेविनि० । इमारुद्रायस्थिरधन्वने० ४ । आवोराजानंवामदेवोरुद्रस्त्रिष्टुप् जपेविनि० । आवोराजानमध्व० । तमुष्टुह्यत्रीरुद्रस्त्रिष्टुप् जपेविनि० तमुष्टुहियःस्विषु० । भुवनस्यपितरमृजिश्वारुद्रस्त्रिष्टुप् जपेविनि० भुवनस्यपितरंऋक् । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् जपेविनि० । त्र्यंबकं ऋक् । अन्यऋत्विगुत्तरकलशंस्पृशन्एकादशावृत्तिभी[1]रुद्रंजपेत् । ततःशंनइंद्राग्नीतिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् जपेविनियोगः शंनइंद्राग्नीतिसूक्तम् ३ । मध्यकुंभपश्चिमेस्थंडिलेअग्निस्थापनाग्निध्यानेकृतेस्थापितकुंभैशान्यांवेद्यादौनवग्रहाणांतदंगदेवतानांचतत्तन्मंत्रैरावाहनादिकुर्यात्[2] । तद्यथा–प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवतादैवीगायत्रीछंदः व्याहृतीनांक्रमेणविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजाऋषयः अग्निवायुसूर्यादेवताः दैवीगायत्रीदैव्युष्णिग्दैवीबृहत्य[3]श्छंदांसि सूर्याद्यावाहनेविनियोगः । तत्रग्रहपीठस्यमध्येवर्तुलेद्वादशांगुलेमंडलेप्राङ्मुखंसूर्यंरक्तपुष्पाक्षतैः आकृष्णेनहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् सूर्यावाहनेविनियोगः । ॐ आकृष्णेन० ॐ भूर्भुवःस्वःकलिंगदेशोद्भवकाश्यपसगोत्रसूर्ये[4]हागच्छेहतिष्ठति

---

[1] नमकानुवाकानामग्नीरुद्रोमहाविराट् । [2] सौकर्यार्थंग्रहपीठसंग्रहश्लोकौलिख्यते। पंचास्रेकविमिंदुमत्रचतुरस्रेंगारकंत्र्यस्रगेराहुंशूर्पनिभेधनुर्व्यथशनिंकेतुंध्वजाभेतथा । दीर्घेकोष्टचतुष्टयेसुरगुरुंबाणोपमेचंद्रजंप्राचीतःक्रमतोलिखेद्ग्रहगणंमध्येरविंवर्तुलमिति । शुक्रार्कौप्राङ्मुखौज्ञेयौगुरुसौम्यावुदङ्मुखौ । प्रत्यङ्मुखःशनिःसोमःशेषादक्षिणतोमुखाइति। मत्स्यपुराणे। आदित्याभिमुखाःसर्वेसाधिप्रत्यधिदेवताः । स्थापनीयामुनिश्रेष्ठनांतरेणपराङ्मुखाइतिमहार्णवे । [3] दैव्यनुष्टुप् । [4] हागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेतिस्थापयेत् सूर्यायनमःसूर्यमावाहयामीति ।

स्थापयेत् । ततआग्नेयेचतुरस्रेचतुर्विंशांगुलेमंडलेप्रत्यङ्मुखंसोमंश्वेतपुष्पाक्षतैः आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमावाहनेवि० ॐ आप्यायस्वसमेतुते० ॐ भूर्भुवःस्वःयमुनातीरोद्भवात्रेयसगोत्रसोमेहागच्छेहतिष्ठेतिस्थापयेत् । ततोदक्षिणे त्रिकोणेत्र्यंगुलेमंडलेदक्षिणामुखंभौमंरक्तपुष्पाक्षतैः अग्निर्मूर्धाविरूपोङ्गारकोगायत्री अंगारकावाहने० । ॐ अग्निर्मूर्धा दिवःककु० ॐ भूर्भुवःस्वः[१]अवंतिदेशोद्भवभारद्वाजसगोत्रअंगारकेहागच्छेहतिष्ठेतिस्थापयेत् । ततऐशानेबाणाकारेचतुरंगुलेमंडलेउदङ्मुखंबुधंपीतपुष्पाक्षतैः उद्बुध्यध्वंबुधोबुधस्त्रिष्टुप् बुधावाहनेवि० । ॐ उद्बुध्यध्वंसमनसःसखायः० ॐ भूर्भुवःस्वःमगधदेशोद्भवात्रेयसगोत्रबुधेहागच्छेहतिष्ठेति० । ततउत्तरेदीर्घचतुरस्रेमंडलेउदङ्मुखंबृहस्पतिंपीतपुष्पाक्षतैः बृहस्पतेगृत्समदोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् बृहस्पत्यावाहनेवि० । ॐ बृहस्पतेअति० ॐ भूर्भुवःस्वः सिंधुदेशोद्भवांगिरससगोत्रबृहस्पतेइहागच्छेहतिष्ठेति० । ततःपूर्वेपंचकोणेनवांगुलेमंडलेप्राङ्मुखंशुक्रंशुक्लपुष्पाक्षतैः शुक्रःपाराशरःशुक्रोद्विपदाविराट् शुक्रावाहनेवि० । ॐ शुक्रःशुशुक्वाँउषोन० ॐ भूर्भुवःस्वः भोजकटदेशोद्भवभार्गवसगोत्रशुक्रेहागच्छेहतिष्ठेति० । ततःपश्चिमेधनुराकारेद्व्यंगुलेमंडलेप्रत्यङ्मुखंशनिंकृष्णपुष्पाक्षतैः शमग्निरिरिंबिठिःशनिरुष्णिक् शन्यावाहनेवि० । ॐ शमग्निरग्नि० ॐ भूर्भुवःस्वःसौराष्ट्रदेशोद्भवकाश्यपसगोत्रशनेइहागच्छेहतिष्ठेति० ७ । ततोनैर्ऋतेशूर्पाकारेद्वादशांगुलेमंडलेदक्षिणाभिमुखंराहुंकृष्णपुष्पाक्षतैः कयानोवामदेवोराहुर्गायत्री राह्वावाहनेवि० । ॐ कयानश्चित्रआभुव० ॐ भूर्भुवःस्वः रा

---

[१] अवंतीसमुद्भव ।

ठिनापुरोद्भवपैठीनसिसगोत्रराहोइहागच्छेहतिष्ठेति० ८ । ततोवायव्येध्वजाकारेषडंगुलेमंडलेदक्षिणाभिमुखंकेतुंधूम्रपुष्पाक्षतैः केतुंकृण्वन्मधुच्छंदाःकेतुर्गायत्री केत्वावाहने० । ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे० ॐ भूर्भुवःस्वःअंतर्वेदिसमुद्भवजैमिनिसगोत्रकेतोइहागच्छेहतिष्ठेति० ९ । यथोक्तकुसुमतंदुलालाभेयथालाभोपपन्नैःकुसुमतंदुलैःस्थापयेत् । अथाधिदेवताः । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रावाहनेवि० । ॐ त्र्यंबकंयजामहे० ॐ भूर्भुवःस्वःरुद्रेहागच्छेहतिष्ठेतिसूर्यदक्षिणपार्श्वेरुद्रं० १ । गौरीर्मिमायदीर्घतमाउमाजगती उमावाहनेवि० । ॐ गौरीर्मिमायसलि० ॐ भूर्भुवःस्वःउमेइहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति सोमदक्षिणपार्श्वेउमां० २ । यदक्रंदोदीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप् स्कंदावाहनेविनियोगः । ॐ यदक्रंदःप्रथमं० ॐ भूर्भुवःस्वःस्कंदेहागच्छेहतिष्ठेति० भौमदक्षिणपार्श्वेस्कंदं० ३ । विष्णोर्नुकंदीर्घतमानारायणस्त्रिष्टुप् नारायणावाहनेवि० । ॐ विष्णोर्नुकंवी० ॐ भूर्भुवःस्वःनारायणेहागच्छेहतिष्ठेति० बुधदक्षिणपार्श्वेनारायणं० ४ । ब्रह्मजज्ञानंवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहनेवि० ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमं० ॐ भूर्भुवःस्वर्ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठेति० बृहस्पतिदक्षिणपार्श्वेब्रह्माणं० ५ । इंद्रंवोमधुच्छंदाइंद्रोगायत्री इंद्रावाहनेविनियोगः । ॐ इंद्रंवोविश्वतस्परि० ॐ भूर्भुवःस्वःइंद्रेहागच्छेहतिष्ठेति० शुक्रदक्षिणपार्श्वेइंद्रं० ६ । यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् यमावाहनेवि० । ॐ यमायसोमंसुनुत० ॐ भूर्भुवःस्वःयमेहागच्छेहतिष्ठेति० शनैश्वरदक्षिणपार्श्वेयमं० ७ । मोषुणःकण्वःकालोगायत्री कालावाहनेवि० । ॐ मोषुणःपरापरानि० ॐ भूर्भुवःस्वःकालेहागच्छेहतिष्ठेति० राहुदक्षिणपार्श्वेकालं० ८ । उषोवाजंप्रस्कण्वश्चित्रगुप्तोबृहती चित्रगुप्तावाहनेवि० । ॐ उषोवा

जंहिवंस्वय॰ ॐ भूर्भुवःस्वःचित्रगुप्तेहागच्छेहतिष्ठेति॰ केतुदक्षिणपार्श्वेचित्रगुप्तं॰ ९। ततःशुक्लपुष्पाक्षतैःसर्वाःप्रत्यधिदेवताःस्थापयेत्। आग्निंदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहनेवि॰। ॐ अग्निंदूतंवृणीमहे॰ ॐ भूर्भुवःस्वःअग्नेइहागच्छेहतिष्ठेति॰ सूर्यवामपार्श्वेग्निं॰ १। अप्सुमेमेधातिथिरापोनुष्टुप् अबावाहनेवि॰। ॐ अप्सुमेसोमो॰ ॐ भूर्भुवःस्वःआपइहागच्छतेहतिष्ठतेति॰ सोमवामपार्श्वेअपः २। स्योनामेधातिथिर्भूमिर्गायत्री भूम्यावा॰। ॐ स्योनापृथिवि॰ ॐ भूर्भुवःस्वःभूमेइहागच्छेहतिष्ठेति॰ भौमवामपार्श्वेभूमिं॰३। इदंविष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री विष्णवावाहनेवि॰। ॐ इदंविष्णु॰ ॐ भूर्भुवःस्वःविष्णोइहागच्छेहति॰बुधवामपार्श्वेविष्णुं॰ ४। इंद्रश्रेष्ठानिगृत्समदइंद्रस्त्रिष्टुप् इंद्रावाह॰। ॐ इंद्रश्रेष्ठानि॰ ॐ भूर्भुवःस्वः इंद्रेहागच्छेहतिष्ठेतिबृहस्पतिवामपार्श्वेइंद्रं॰ ५। इंद्राणींवृषाकपिरिंद्राणीपंक्तिः इंद्राण्यावा॰। ॐ इंद्राणीमासुनारिषु॰ ॐ भूर्भुवःस्वः इंद्राणिइहागच्छेहतिष्ठेतिशुक्रवामपार्श्वेइंद्राणीं॰ ६। प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्यावाहनेवि॰। ॐ प्रजापतेन॰ ॐ भूर्भुवःस्वःप्रजापतेइहागच्छेहतिष्ठेतिशनिवामपार्श्वेप्रजापतिं॰ ७। आयंगौःसार्पराज्ञीसर्पागायत्री सर्पावा॰। ॐ आयंगौःपृश्नि॰ ॐ भूर्भुवःस्वःसर्पा इहागच्छतेहतिष्ठतइतिराहुवामपार्श्वेसर्पान्॰ ८। ब्रह्मजज्ञानंवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावा॰। ॐ ब्रह्मजज्ञानं॰ ॐ भूर्भुवःस्वःब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठेतिकेतुवामपार्श्वेब्रह्माणं॰ ९। ततःशुक्लपुष्पाक्षतैर्विनायका[१]दिपंचदेवताःस्थापयेत्। गणानांत्वागृत्समदोगणपतिर्जगती गण

---

[१] ताम्ररविशनिकेतुगुरूणांमध्येगणपतिं प्रागादिषुदुर्गादिचतुष्टयंतदुत्तरेचक्षेत्रपालमितिक्रमः शां. र.।

पत्यावा० ॐ गणानांत्वागणपतिं० ॐ भूर्भुवस्वः गणपतेइहागच्छेहतिष्ठेति[1]राहोरुत्तरतोगणपतिं १ । जातवेदसेकश्यपोदुर्गात्रिष्टुप् दुर्गावाहनेवि० । ॐ जातवेदसे० ॐ भूर्भुवःस्वः दुर्गेइहागच्छेहतिष्ठेतिशनेरुत्तरतोदुर्गां २ । तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वाय्वावाहनेवि० । ॐ तववायवृतस्पते० ॐ भूर्भुवःस्वःवायोइहागच्छेहतिष्ठेतिशनेरुत्तरतोवायुं ३ । आदिद्वत्सआकाशोगायत्री आकाशावाहनेवि० । ॐ आदित्प्रत्नस्यरेतसो० ॐ भूर्भुवःस्वःआकाशेहागच्छेहतिष्ठेतिराहोर्दक्षिणेआकाशं ४ । एषोउषाःप्रस्कण्वोश्विनौगायत्री अश्व्यावा० । ॐ एषोउषाअपूर्व्या० ॐ भूर्भुवस्वःअश्विनाविहागच्छतमिहतिष्ठतमितिकेतोर्दक्षिणेऽश्विनौ ५ । यद्वा विनायकादीन्पंचोत्तरतएवस्थापयेत् । ततोग्रहपीठाद्यंगतयावक्ष्यमाणदेवताःस्थापयेत् । उत्तरेक्षेत्रपालंवास्तोष्पतिंचावाहयेदित्येके । क्षेत्रस्यवामदेवःक्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालावा० । ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयं० ॐ भूर्भुवःस्वःक्षेत्रपालेहागच्छेहतिष्ठेतितदुत्तरे क्षेत्रपालं ६ । वास्तोष्पतेवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् वास्तोष्पत्यावा० । ॐ वास्तोष्पते० ॐ भूर्भुवःस्वःवास्तोष्पतेइहागच्छेहतिष्ठेति[2]तदुत्तरेवास्तोष्पतिं ७ । ततःप्रागादिदलाग्रेषु इंद्रादिलोकपालान्सूर्याभिमुखानावाहयेत् । तत्रमंत्राः इंद्रंविश्वाजेतेंद्रोनुष्टुप् पूर्वेइंद्रावा० । ॐ इंद्रंविश्वाअवीवृधन्० ॐ भूर्भुवःस्वःइंद्रेहागच्छेहतिष्ठेतिपूर्ववत् १ । एवमुत्तरत्रापि । अग्निंदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहनेवि० । ॐ अग्निंदूतंवृणीमहे० २ । यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् यमावा० । ॐ यमायसोमं० ३ । मोषुणःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋ

---

[1] रवेरुत्तरतः । [2] तिउत्तरे ।

त्यावा० । ॐ मोषुणःपरापरा० ४ । तत्त्वा[1]यामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावा० । ॐ तत्त्वायामित्र० ५ । तववायोऽयश्चोवायुर्गायत्री वाय्वावाह० । ॐ तववायवृतस्पते० ६ । सोमोधेनुंगोतमःसोमस्त्रिष्टुप् सोमावा० । ॐ सोमोधेनुं० ७ । तमीशानंगौतमईशानोजगती ईशानावा० । ॐ तमीशानंज० ८ । एवमीशानांतादेवताआवाह्य तदस्तुमित्रावरुणा० गृहावैप्रतिष्ठा० एवंप्रतिष्ठाप्योक्ततत्तन्मंत्रैरादित्यायनमइत्येवमादिभिर्नाममंत्रैर्वाषोडशोपचारैःसंपूज्य मंत्रहीनंक्रियाहीनमितिक्षमाप्य ग्रहवेदीशानभागे महीद्यौःपृथिवीचनइत्यादिविधिनाकलशस्थापनंकृत्वातदुपरितत्त्वायामीतिमंत्रेण वरुणंसंपूज्यतत्रकलशेसमुद्रनद्याद्यावाहनंकुर्यात् । सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः । आयांतु[2]यजमानस्यदुरितक्षयकारकाः । ततः कलशाभिमंत्रणं । कलशस्यमुखे० मूलेतत्रस्थितोब्रह्मा० कुक्षौतुसाग० ऋग्वेदोथय० अंगैश्चसहिताः० अत्र गायत्रीसावित्री० आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाइत्यंतं । ततःकलशप्रार्थना । देवदानवसंवादेमथ्यमानेमहोदधौ । उत्पन्नोसितदाकुंभविधृतोविष्णुनास्वयं । त्वत्तोयेसर्वतीर्थानिदेवाःसर्वेत्वयिस्थिताः । त्वयितिष्ठंतिभूतानित्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः । शिवःस्वयंत्वमेवासिविष्णुस्त्वंचप्रजापतिः । आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाःसपैतृकाः । त्वयितिष्ठंतिसर्वेपियतःकामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमंयज्ञंकर्तुमीहेजलोद्भव । सान्निध्यंकुरुदेवेशप्रसन्नोभवसर्वदा । ततआचार्योऽन्वाधानंकुर्यात् । तत्रप्रधानकीर्तनेविशेषः । सूर्यंसोमंभौमंबुधंबृहस्पतिंशुक्रंशनिंराहुंकेतुंएताःप्रधानदेवताः एतत्संख्याकाभिः

---

[1] अत्र शां० र० त्वंनोअग्नेवामदेवोवरुणस्त्रिष्टुबित्युक्तः । [2] आयांतुममशांत्यर्थं ।

अर्कादिजातीयसमिदाहुतिभिः तावतीभिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिश्च एतदित्येतत्स्थानेष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिंवाकीर्तयेत् । ईश्वरंउमांस्कंदंनारायणंब्रह्माणंइंद्रंयमंकालंचित्रगुप्तं अग्निंअपःभूमिंविष्णुंइंद्रंइंद्राणींप्रजापतिंसर्पान्ब्रह्माणं एता देवताःएतत्संख्याकाभिःसमिदाद्याहुतिभिः । अत्रएतदित्यस्यस्थानेपूर्वसंख्यान्यूनामष्टाविंशतिसंख्यामष्टसंख्यांवाकीर्तयेत् । विनायकंदुर्गांवायुमाकाशमश्विनौक्षेत्रपालंवास्तोष्पतिं इंद्रमग्निंयमंनिर्ऋतिंवरुणंवायुंसोममीशानंएतादेवताःएतत्संख्याकाभिःसमिदाद्याहुतिभिः । एतदित्यस्यस्थानेअष्टसंख्यांचतुःसंख्यांवाकीर्तयेत् । भुवनेश्वरीमष्टोत्तरसहस्रसंख्याकाभिर्दूर्वाहुतिभिःतिलमिश्रगोधूमाहुतिभिःपायसाहुतिभिराज्याहुतिभिश्च । तावतीनामसंभवेऽष्टोत्तरशतंवा । भुवनेश्वरीमित्येतस्यस्थानेसवितारमितिवा । इंद्राणीमिंद्रंचएतत्संख्याभिर्दूर्वादिचतुर्विधाहुतिभिः । अत्रएतदित्यस्यस्थानेपूर्वसंख्यान्यूनसंख्यांकीर्तयेत् । देवताद्वयमुद्दिश्यनान्वाधानंवा । शेषेणस्विष्टकृतमित्यादि० । ततःपात्रासादनकालेस्थालीद्वयंप्रोक्षणींदर्वींस्रुवमित्यादि । युगपदनेककर्तृकाज्यहोमप्रसक्तौअनेकस्रुवासादनंकार्यम् । निर्वापकालेभुवनेश्वर्यादिदेवतात्रयमुद्दिश्यतूष्णींनिर्वापप्रोक्षणे ततआज्यसंस्कारः । ग्रहहोमार्थंकर्तव्यामंत्रवंतश्चरवःप्रतिदैवतमितियाज्ञवल्क्यवचनाद्ग्रहार्थंगृहसिद्धान्नचरुर्ग्राह्यइति । केचनगृहपाकौदनमुद्धृत्यग्रहानुद्दिश्यजुह्वति तत्रशिष्टाचारएवप्रमाणमितिमहार्णवे । तत्रायंप्रयोगः सूर्यायत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिचतुरोमुष्टीन्निरुप्यैवंसोमायत्वामंगलायत्वेत्याद्याकारेणग्रहेभ्यश्चतुरोमु

---

१ पूर्वंगायत्र्यैवचहोतव्यंहविरत्रचतुष्टयमित्यत्रएवकारादिंद्राणींद्रयोर्होमोनास्तीतिपक्षादरइदं ।

ष्टीन्निरुप्य इतरासांदेवतानांकृतेदेवेभ्योजुष्टंनिर्वपामीतिचतुरोमुष्टीन्निर्वपेदित्यपितत्रैवेतिदिक् । आज्येनसहपायसादिहविस्त्रयस्यग्रहहोमार्थंगृहसिद्धान्नस्यचपर्यग्निकरणम् । दर्वीस्रुवसंमार्गांतेगृहसिद्धान्नमासादितस्थाल्यामादायअग्नावधिश्रित्याभिघारणादिबर्हिष्यासादनांतंकुर्यात् । ततःपायसमभिघार्यबर्हिष्यासादनांतंकुर्यात् । अर्कादिसमिधःदूर्वातिलमिश्रगोधूमांश्चतत्रैवासाद्य अग्न्यर्चनाद्याज्यभागांते यजमानोऽन्वाधानानुसारेण एतत्संख्याहुतिपर्याप्तंअर्कादिजातीयसमिच्चर्वाज्यात्मकंहविस्त्रयंसूर्यायसोमायेत्यादिनममेत्येवंत्यागपूर्वकंतदंगदेवताभ्योपित्यक्त्वा एतत्संख्याकाहुतिपर्याप्तं दूर्वादिहविश्चतुष्टयंभुवनेश्वर्यैनममेतित्यजेत् । तथाइंद्राण्यैइंद्रायेतिच । भुवनेश्वर्याइत्यस्यस्थानेसवित्रइतिवा । इंद्राणींद्रयोर्होमाभावपक्षेनतदुद्देश्यकत्यागः । एवंत्यागेकृतेसर्त्विगाचार्योऽर्कादिसमिधोदधिमध्वाक्ताश्चर्वाहुतीराज्याहुतीश्चसंकल्पानुसारिसंख्याकाजुहुयात् । तादृशसंख्याएवदूर्वादिहविश्चतुष्टयाहुतीर्जुहुयात् । तत्रदधिमधुघृताक्ताभिस्तिसृभिस्तिसृभिर्दूर्वाभिरेकैकाहुतिःकार्या । तन्न्यूनसंकल्पानुसारिसंख्याचतुर्विधाहुतीरिद्राणींद्रमंत्राभ्यांतद्धोमपक्षेहुत्वा स्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतंकृत्वादिक्पालादिभ्यःसदीपमाषभक्तबलिसंकल्पंयजमानद्वाराकारयेत् । सपत्नीकोयजमानःप्रतिबलिसंकल्पंसाक्षतजलंत्यजेत् । तद्यथा—अग्न्यायतनस्यसमंताद्दिक्षुमाषभक्तबलीन्दिक्पालेभ्योदद्यात् । त्रातारमिंद्रंगर्गइंद्रस्त्रिष्टुप् इंद्रप्रीत्यर्थेबलिदानेविनियोगः । ॐ त्रातारमिंद्र० इंद्रायसांगायसपरिवारायसायुधायसशक्तिकायएषमाषभक्तबलिर्नमम भोइंद्रदिशंरक्षबलिंभक्षममयजमानस्यसहकुटुंबस्यायुःकर्ताक्षेमकर्ताशांतिकर्तापुष्टिकर्तातुष्टिकर्ताभवेति

पुष्पाक्षतजलानिपूर्वाभिमुखस्त्यजेत् १ । एवमग्न्यादिसप्तभ्योदिक्पालेभ्यस्तत्तन्मंत्रैर्बलीन्दद्यात् । तद्यथा आग्निंमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निप्रीत्यर्थेबलिदानेवि० । ॐ अग्निंदूतंवृणी० अग्नयेसांगाय० २ । यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् यमप्रीत्यर्थेबलिदा० । ॐ यमायसोमं० यमायसांगाय० ३ । मोषुणःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋतिप्रीत्यर्थेबलि० । ॐ मोषुणःपरापरा० निर्ऋतयेसांगाय० ४ । तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रीत्यर्थे० । ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा० वरुणायसांगाय० ५ । तववयोव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थेबलि० । ॐ तववायवृतस्पते० वायवेसांगाय० ६ । सोमोधेनुंगोतमःसोमस्त्रिष्टुप् सोमप्रीत्यर्थे० ॐ सोमोधेनुंसोमोअर्वंत० सोमायसांगाय० ७ । तमीशानंगोतमईशानोजगती ईशानप्रीत्यर्थे० ॐ तमीशानंजगतः० ईशानायसांगाय० ८ । ततोग्रहबलयोदेयाः तत्रपूर्वे आकृष्णेनहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् सूर्यप्रीत्यर्थे० । ॐ आकृष्णेनरजसा० आदित्यायसांगायसपरिवारायईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेमंसदीपंमाषभक्तबलिंसमर्पयामिइतिपुष्पांजलिंक्षिपेत् । भोआदित्येमंबलिंगृहाणममयजमानस्य० १ । आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमप्रीत्यर्थे० । ॐ आप्यायस्वसमेतु० सोमायसांगाय० उमाब्रूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि० २ । अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारकोगायत्री भौमप्रीत्यर्थेबलिदा० । ॐ अग्निर्मूर्धादिवः० भौमायसांगाय० स्कंदभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि० ३ । उद्बुध्यध्वंबुधोबुधस्त्रिष्टुप् बुधप्रीत्यर्थे० । ॐ उद्बुध्यध्वंसमनसः० बुधायसांगाय० नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि० ४ । बृहस्पतेगृत्समदोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप्

बृहस्पतिप्रीत्यर्थेबलि०। ॐ बृहस्पतेअति० बृहस्पतयेसागाय० ब्रह्मेंद्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि ५। शुक्रः पाराशरः शुक्रोद्विपदाविराट् शुक्रप्रीत्यर्थेबलि०। ॐ शुक्रः शुशुक्वाँउषोन० शुक्रायसांगाय० इंद्रेंद्राणीरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि ६। शमग्निरिरिंबिठिः शनिरुष्णिक् शनिप्रीत्यर्थे० ॐ शमग्निरग्निभिः० शनैश्चरायसांगाय० यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि ७। कयानोवामदेवोराहुर्गायत्री राहुप्रीत्यर्थेबलि०। ॐ कयानश्चित्र० राहवेसांगाय० कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि० ८। केतुंकृण्वन्मधुच्छंदाः केतुर्गायत्री केतुप्रीत्यर्थे०।ॐ केतुंकृण्वन्न० केतवेसांगाय० चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितायेत्यादि० ९। ततः गणानांत्वागृत्समदोगणपतिर्जगती गणपतिप्रीत्यर्थेबलिदाने० ॐ गणानांत्वागण० गणपतयेसांगायसपरिवारायऋद्धिबुद्धिसहितायेत्यादि १। जातवेदसेकश्यपोदुर्गात्रिष्टुप् दुर्गाप्रीत्यर्थे०। ॐ जातवेदसेसुनवाम० दुर्गायैसांगायैसपरिवारायैसायुधायैसशक्तिकायैइमंबलिं० भोदुर्गे०ममयजमानस्यायुःकर्त्रींक्षेमकर्त्रींशांतिकर्त्रींपुष्टिकर्त्रींतुष्टिकर्त्रींऋद्धिकर्त्रींभव २। तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थे०। ॐ तववायवृत० वायवेसांगायेत्यादि० ३। आदित्प्रश्नस्यवत्सआकाशोगायत्री आकाशप्रीत्यर्थे०।ॐ आदित्प्रत्नस्यरेत० आकाशायसांगायेत्यादि० ४। एषोउषाः प्रस्कण्वोश्विनौगायत्री अश्विप्रीत्यर्थेबलि०ॐएषोउषाअपूर्व्या०अश्विभ्यांसांगाभ्यांसपरिवाराभ्यांसायुधाभ्यांसशक्तिकाभ्यामेषसाग्रभक्त[1]बलि०

---

[1] बलिर्नमम।

भोंअश्विनौअमुंबलिंगृह्णीतंममयजमानस्यायुःकर्तारौक्षेमकर्तारौभवतं ५ । वास्तोष्पतेवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् वास्तोष्पतयेसांगायेत्यादि ६ । ततोगायत्र्याविश्वामित्रोभुवनेश्वरीगायत्री । सवितागायत्रीतिवा । भुवनेश्वरीप्रीत्यर्थे० ॐ भुवनेश्वर्यैसांगायैइत्यादि सवित्रेइत्यादिवा १ । ततइंद्राणींद्रमंत्राभ्यांपूर्वोक्ताभ्यांक्रमेणतदुभयोद्देशेनबलिंदत्त्वा क्षेत्रपालायबलिंदद्यात् । क्षेत्रस्यवामदेवःक्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्य० । ॐ क्षेत्रस्यपतिना० क्षेत्रपालायसांगायसपरिवारायभूतप्रेतपिशाचराक्षसडाकिनीशाकिनीवेतालपरिवारयुतायइममित्यादि० । ततःशूद्रादिनातद्बलिनयनेकृतेशांतापृथिवीतिभुवंप्रोक्ष्यसयजमानआचार्यः प्रक्षालितपाणिपादआचांतः स्रुचिद्वादशगृहीतंचतुर्गृहीतंवाआज्यमादाय तदुपरिवस्त्रयुतंचंदनादिभूषितंफलंनिधाय यजमानतत्पत्न्यन्वारब्धस्तिष्ठन् पूर्णाहुतिंजुहुयात् । समुद्रादूर्मिरितिसूक्तस्यगौतमोवामदेवोग्निस्त्रिष्टुप् अंत्याजगतीपूर्णाहुतिहोमेविनियोगः । ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँउदा० सूक्तांतेस्वाहा अग्नय० । ततःपूर्णपात्रनिनयनंकृत्वासाचार्योयजमानःसंस्थाजपेनोपस्थायपरिस्तरणविमोकादिपर्युक्षणांतंकुर्यात् । ततोधृतनवकंचुकीवस्त्रयावामभागस्थयापत्न्यासहितंप्राङ्मुखंयजमानंसार्त्विगुदङ्मुखआचार्यःस्थापितकलशचतुष्टयाद्भिःपात्रांतरेगृहीताभिः तत्रत्यपंचपल्लवैःसकुशदूर्वैरभिषिंचेत् । आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यांबरीषःसिधुद्वीपआपोगायत्रीपंचमीवर्धमानासप्तमीप्रतिष्ठांत्येद्वेअनुष्टुभौ अभिषेकेत्रि० । ॐ आपोहिष्ठामयोभुव० ९ । इंद्रोअंगेतितृचस्यगृत्समदइंद्रोगायत्री अभिषेके० ॐ

इंद्रोअंगमहद्भय० ३ । त्रिभिष्ट्वंदेवेतिसप्तर्चस्यसूक्तस्यवसिष्ठऋषिः[1]आद्यानांतिसृणामग्निश्चतुर्णांविश्वेदेवाआद्यागायत्रीद्वितीयानुष्टुप्तिस्रोगायत्र्योंत्येद्वेअनुष्टुभौ अभिषेके० ॐ त्रिभिष्ट्वंदेवसवित० ७ । उभयंशृणवच्चनइतिभर्गइंद्रोबृहतीअभि० ॐ उभयंशृणवच्चन० १ । स्वस्तिदाविशइत्यस्यभारद्वाजःशासइंद्रोनुष्टुप् अभिषे० ॐ स्वस्तिदाविशस्पति० १ । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् अभिषेके० ॐ त्र्यंबकंयजा० १ । जातवेदसेकश्यपोदुर्गात्रिष्टुप् अभिषेकेवि० ॐ जातवेदसेसुनवाम० १ । समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् अभि० ॐ समुद्रज्येष्ठाःसलिल० ४ । त्रायंतामितितिसृणांसप्तर्षयआपोनुष्टुप् अभिषेके० ॐ त्रायंतामिह० ४ । इमाआपइतिचतसृणांसप्तर्षयआपोनुष्टुप् अभिषेके० ॐ इमाआपःशिवतमा० ४ । देवस्यत्वासवितुः० हस्ताभ्यांसरस्वत्यैभैषज्येनवीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामि । देवस्यत्वा० अश्विनौभैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि । देवस्यत्वा० इंद्रस्येंद्रियेणश्रियैयशसेबलायाभिषिं० । तमीशानंगौतमईशानोजगती अभिषेके० ॐ तमीशानंजगत० १ । त्वमग्नेरुद्रोगृत्समदोरुद्रोजगती अभिषेके० ॐ त्वमग्नेरुद्रोअ० १ । तमुष्टुह्यत्रीरुद्रस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॐ तमुष्टुहियःस्विषुः १ । भुवनस्यपितरमृजिश्वारुद्रस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॐ भुवनस्यपितरं० १ । यातेरुद्रेतिकश्यपोरुद्रःस्वराळनुष्टुप् अभिषेके० ॐ यातेरुद्रशिवातनू० १ । यज्जाग्रतइतिषण्णांप्रजापतिर्मनस्त्रिष्टुप् अभिषेकेविनि० ॐ यज्जाग्रतो० येनकर्मा० यत्प्रज्ञानं० येनेदंभूतं० यस्मिन्नृचः० सुषारथि० ६ । इंद्रत्वावृषभमितिपंचानांवि

---

[1] आद्यद्वयोरग्निर्देवतातत‌स्तिसृणां सोमोदेवताअंत्येद्वेपावमान्यौ आद्यातृतीयाचतुर्थीचगायत्र्यः पंचमीपुरउष्णिक्द्वितीयाषष्ठीसप्तमीचानुष्टुभः

श्वामित्रइंद्रोगायत्री अभिषेके० ॐ इंद्रत्वावृषभंवयं० ५ । सुरास्त्वामभिषिंचंत्वित्यादिपुराणमंत्राः[1] । सुरास्त्वामभिषिंचंतुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवोजगन्नाथस्तथासंकर्षणोविभुः १ । प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चभवंतुविजयायते । आखंडलोग्निर्भगवान्यमोवैनिर्ऋतिस्तथा २ । वरुणःपवनश्चैवधनाध्यक्षस्तथाशिवः । ब्रह्मणासहिताःसर्वेदिक्पालाःपांतुतेसदा ३ । कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धाक्रियामतिः । बुद्धिर्लज्जावपुःशांतिः[2]कांतिस्तुष्टिश्चमातरः ४ । एतास्त्वामभिषिंचंतुदेवपत्न्यः समागताः । आदित्यश्चंद्रमाभौमोबुधजीवसितार्कजाः । ग्रहास्त्वामभिषिंचंतुराहुःकेतुश्चतर्पिताः ५ । देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः । ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच ६ । देवपत्न्योद्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसागणाः । अस्त्राणिसर्वशस्त्राणिराजानोवाहनानिच ७ । औषधानिचरत्नानिकालस्यावयवाश्चये । सरितःसागराःशैलास्तीर्थानिजलदानदाः । एते त्वामभिषिंचंतुसर्वकामार्थसिद्धये ८ इति । तच्छंयोरावृणीमहे० । ततःकलशोदकेनान्येनचजलेनतैलाभ्यंगसर्वौषध्यनुलेपनपूर्वकंसुस्नातौदंपतीअभिषेककालीनवासांसिपरित्यज्याहतशुक्लवासांसिपरिधायश्वेतचंदनपुष्पधारणंकुर्यातां । त्यक्त्वासांस्याचार्यस्य । अग्नेःपश्चादुपविश्यदक्षिणतःपत्नी । ततोविभूतिधारणंकृत्वाचार्यादीनांचरणक्षालनं गंधाक्षतैःपूजनं कृत्वाचार्यायधेनुंदद्यात् तदभावेउक्तनिष्क्रयं रुद्रजापिनेनड्वाहंसदक्षिणंउक्तनिष्क्रयंवा ऋत्विग्भ्योयथाशक्तिहेमतन्निष्क्रयंवादद्यात् । ततोभुवनेश्वर्यादीनांआदित्यादीनांवरुणस्यचाचार्येणोत्तरपूजनेकृतेतद्धस्तेनैवउत्तिष्ठब्रह्मणस्पतइत्यादि

---

[1] ग्रहाणामादिरादित्य इत्यादयोनवग्रहाणांपौराणमंत्राः । [2] क्षांतिस्तुष्टिश्च, तुष्टिःक्षांतिश्च. ।

विसर्जनेजातेसोपस्करप्रतिमाःतद्धस्तेप्रतिपाद्याग्निपूजांतेगच्छगच्छेत्यग्निंविसृज्य कर्मांगदेवताप्रीत्यर्थंब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यभूयसींदक्षिणांचसंकल्प्यशांतिसूक्तपाठंकारयित्वाकर्मपूर्णमस्त्वितिवाचयित्वापरमेश्वरार्पणंकुर्यात् । इतिश्रीमदनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेदुष्टरजोदर्शनशांतिः ॥ अयंशौनकोक्तप्रकारोबह्वृचानां अन्येषांप्रकारांतरंमदनरत्नेऋषिपुत्रसंहितायाम् । प्रथमार्तवदोषाणांशांतिंकुर्यादनंतरं । तिथिनक्षत्रवारादिदेवानांपूजनंपृथक् । शांतिस्थलंप्रकुर्वीतविधिनादैवनिर्मिते । उद्यानेवानदीतीरेतडागेवाथचत्वरे । मंडलंकारयेत्तत्रगोमयेनद्विहस्तकं । स्थंडिलंकारयेत्तत्रचतुराढकशालिभिः । आढकंतंडुलंचैवआढकौतिलयावकौ । उपर्युपरिसंस्तीर्णंतन्मध्येनलिनंलिखेत् । दर्भैराच्छाद्यतन्मध्येकर्णिकायांन्यसेद्घटं । ससूत्रंसपिधानंचसकूर्चंवस्त्रवेष्टितम् । पुण्योदकेनसंपूर्णमोषध्यादिसमन्वितं । सहदेव्येकपत्राचविष्णुक्रांतासभद्रिका । बिल्वपत्रंसहैतानिचूर्णयित्वान्यसेद्घटे । कुष्ठमांसीहरिद्रेद्वेमुराशैलेयचंदनं । वचाकचोरमुस्ताख्याःसर्वौषध्यःप्रकीर्तिताः । गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमाद्ध्रदगोकुलात् । राजद्वारप्रदेशाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत् । पंचगव्यंचकुमुदंतथाशुक्तफलानिच । वज्रवैडूर्यमाणिक्यविद्रुमाणिविनिक्षिपेत् । एवंकुंभंसमासाद्यगंधपुष्पादिभिःशुभैः । अनुष्ठानपरोविप्रःप्राङ्मुखोवाप्युदङ्मुखः । आसीनःसुप्रसन्नात्माप्राणसंयमनान्वितः । सावित्रींचजपेत्कुंभंस्पृशन्दशशतंद्विजः । एवंप्रदोषकालेतुकारयेदपरेहनि । उदयेसमनुप्राप्तेस्नातांगंधाद्यलंकृतां । स्नापयेच्छांतिमन्विच्छन्पूर्वाह्णेप्राङ्मुखींस्थितां । अधिवासितकुंभस्यतोयैश्चापिसमंत्रकं । पश्चाच्छेषोदकेनैवस्नात्वादेवंप्रणम्यच । स्वगृह्योक्तविधानेनहोमंकुर्यात्प्रयत्नतः । दूर्वाज्येनतिलैर्हुत्वासावित्र्याचैवमंत्रतः । अष्टोत्तर

सहस्रंवाशतमष्टाधिकंतथा । तत्संख्यांत्रिविधंहुत्वादूर्वाज्येनतिलैःसमं । ब्राह्मणान्भोजयित्वातुदेवं[1]ज्ञंपूजयेत्ततः । अनेन विधिनानारीसर्वदोषात्प्रमुच्यते । अनंतरंचतुर्थदिवसे यदातिथ्यादीनांप्रशस्तावहवोदुष्टाश्चाल्पास्तदाचतुर्थदिवसेशांतिकर्मविधायप्रशस्तकालेसंगमंकुर्यादित्युपन्यस्यमदनरत्नेउक्तशांत्युपन्यासात् पृथक्शांतेःपूर्वंदैवनिर्मितेअकृत्रिमेतडागेतत्समीपेउक्तपरिमाणैश्चतुर्भिर्द्रव्यैरुपर्युपरिसंस्तीर्णंस्थंडिलंकृत्वामध्येकमलंलिखेत् । शुभैरित्यंतेअर्चयेत्कुंभेवरुणमितिशेषः । जपार्थंब्राह्मणवरणंसूचयन्नाह अनुष्ठानेति । स्नापयेत्सएवब्राह्मणः । यजमानंप्रत्याहस्नात्वेति । देवंवरुणं । होमेसवितादेवता । इतिश्रीमदनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभे मदनरत्नोक्तारजोदर्शनशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथबौधायनोक्तारजोदर्शनशांतिः । ऋतुशांतिंव्याख्यास्यामः तिथिवारनक्षत्रलग्नदोषशांत्यर्थंचतुर्थेह्निपंचमेह्निवाशांतिस्नानंकुर्वीत देवालयेगृहेवाप्रस्थाष्टभिर्धान्यैस्तदर्धैस्तंडुलैस्तदर्धैस्तिलैश्चारत्निमात्रंचतुरस्रंकृत्वा मध्येनलिनमुल्लिख्यकुशैर्दूर्वाभिःप्रतिच्छाद्य तस्मिंस्तंतुवेष्टितंकुंभंनिधायापोवाइदंसर्वमित्येतेनानुवाकेनाब्लिंगैःशांतिकुंभमुदकैःपूरयित्वा कूर्चमंतर्धायपंचपल्लवान्[2]पंचत्वचश्चनिक्षिप्य कपित्थाश्वत्थपालाशबिल्वोदुंबरंचनवरत्नंचनिक्षिप्य नववस्त्रयुग्मेनाच्छाद्य नारिकेलफलेनापिधायबिल्वपल्लवैश्चूतपल्लवैश्चावकीर्य पुरुषंपुंडरीकाक्षंध्यात्वागंधधूपदीपैरुदकुंभमभ्यर्च्याथश्रोत्रियान्बहुश्रुतान्षट्चतुरोवाब्राह्मणान्वरणपूर्वकमभ्यर्च्याचार्यंचतत्कुंभमन्वारभ्यवैष्णवींगायत्रींसहस्राष्टकंशताष्टकंवा[3]तदंतेगायत्रींचवेदादीना

---

[1] देवंसंपूजयेत्ततः । [2] सप्तमृदश्च । [3] तदंगंगायत्रीं ।

पोहिष्ठामयोभुवइतितिस्रोहिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइत्येतमनुवाकंपवमानःसुवर्जनइत्येतमनुवाकंपुरुषसूक्तमित्येतमनुवाकमृचांप्राचीमित्येतमनुवाकमथालंकृतांपत्नीमुरुविष्टरेतृणआसीनामापोहिष्ठामयोभुवइतितिसृभिर्हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइतिचतसृभिःपवमानःसुवर्जनइत्येतेनानुवाकेनप्रत्यृचमाशीर्वादपुरःसरंस्नापयेयुस्ततोनारींपंचगव्यंप्राशयित्वा यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामके । प्राशनं[१]पंचगव्यस्यदहत्वग्निरिवेंधनमिति । शुचौसमेदेशेस्थंडिलंकल्पयित्वालौकिकाग्निंप्रतिष्ठाप्यस्वगृह्योक्तविधानेनाग्निमुखंकृत्वाविष्णुसूक्तेनशताष्टकसंख्याःपलाशसमिधोहुत्वैवंब्रह्मसूक्तेनान्नंरुद्रसूक्तेनाज्यंतेषामष्टादशकृत्वोथायुष्यहोमोघृतसूक्तेनाज्येनहुत्वाततोनक्षत्रहोमंतत्तन्मंत्रेणतस्यचतुर्दशकृत्वःपूर्ववत्समिदन्नाज्यैस्त्र्यंवकंयजामहइतितिलहोमंशताष्टकाहुतीरुपजुहुयात्स्विष्टकृत्प्रभृतिसिद्धमाधेनुवरप्रदानादथदक्षिणांदद्यादाचार्यायविशेषतः । ततःपुण्याहवाचनंकृत्वाततोनारीदोषात्प्रमुच्यतइत्याहभगवान्बौधायनः । विष्णुसूक्तंविष्णोर्नुकंतदस्यप्रियंप्रतद्विष्णुःपरोमात्रयाविचक्रमेत्रिर्देवइति । ब्रह्मसूक्तंब्रह्मजज्ञानमितिषडृचं । रुद्रसूक्तंपरिणोरुद्रस्यहेतिःस्तुहिश्रुतमितिमीढुष्टम०अर्हन्बिभर्षि० त्वमग्नेरुद्रो० । आवोराजानमितिषडृचंशतमष्टकंचशताष्टकं अष्टोत्तरशतमित्यर्थः । एतत्पूरणार्थमेवैकैकस्यषडृचस्याष्टादशावृत्तयोविधीयंते ॥ अथघृतसूक्तम् ॥ योब्रह्माब्रह्मणउज्जभारप्राणेश्वरःकृत्तिवासाःपिनाकी । ईशानोदेवःसनआयुर्दधातुतस्मैजुहोमिहविषाघृतेनस्वाहा इदंब्रह्मणे १ । विभ्राजमानःसरिरस्यमध्याद्रोचमानोघर्मरुचिर्य

---

[१] प्राशनात्पंचगव्यस्येतिपाठेदहत्यग्निरिवेतिवाच्यं ।

आगात् । सम्मृत्युपाशादपनुद्यघोरादिहायुषेनोघृतमत्तुदेवःस्वाहा इदंदेवाय २ । ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषुगर्भंयमादधात्पुरुरूपंजयंतम् । सुवर्णरंभंग्रहमर्कमर्च्यंतमायुषेवर्धयामोघृतेनस्वाहा इदमर्काय ३ । श्रियं[1]लक्ष्मीमंबिकामौपलांगांषष्ठींजयामिंद्रसेने[2]त्युदाहुः । तांविद्यांब्रह्मयोनिंसरूपामिहायुषेतर्पयामोघृतेनस्वाहा इदंविद्यायै ४ । दाक्षायण्यःसर्वयोन्यःसयोन्यः सहस्रशोबहुरूपा[3]विरूपाः । ससूनवःसपतयःसयूथ्याआयुषेनोघृतमिदंजुषंतांस्वाहा इदंदाक्षायणीभ्यः ५ । दिव्यागणाबहुरूपाःपुराणाआयुश्छिदोनः[4]प्रमथंतुवीरान् । तेभ्योजुहोमिबहुधाघृतेनमानःप्रजांरीरिषोमोतवीरान्स्वाहा इदंदिव्यगणेभ्यः ६ । एकःपुरस्ताद्यइदंबभूवयतोबभूवभुवनस्यगोपाः । यमप्येतिभुवनंसांपरायेसनोहविर्घृतमिहायुषेत्तुदेवःस्वाहा इदंदेवाय ७ । वसून्रुद्रानादित्यान्मरुतोथसाध्यानृभून्यक्षान्गंधर्वांश्चपितॄंश्चविश्वान् । भृगून्सर्पांश्चांगिरसोथसर्वान्घृतं हुत्वास्वायुष्यामहयामशश्वत्स्वाहा इदंवस्वादिभ्यः ८ । इतिघृतसूक्तम् । इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेबौधायनोक्तप्रकारेणरजोदर्शनशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथगर्भाधानम् ॥ कश्यपः । षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीश्चतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा । शेषाःशुभाःस्युस्तिथयोनिषेकेवाराः शशांकार्यसितेंदुजानामिति । आर्योगुरुः सितःशुक्रः इंदुजोबुधः । वसिष्ठः—उपप्लवेवैधृतिपातयोश्चविष्ट्यांदिवापारिघपूर्वभागे । संध्यासु[5]पर्वस्वपिमातृपित्रोर्मृतेह्निपत्नीगमनंचवर्ज्यमिति । तस्मिन्नृतौपर्वाण्याद्याश्चतस्रोरात्रीर्वर्जयित्वायुग्मा

---

[1] लक्ष्मीमौपलामंबिकांगां । [2] त्युदाहः । [3] विश्वरूपाः । [4] प्रवधंत । [5] पर्वण्याद्याः ।

सुसमासु षष्ठीप्रभृतिषुगच्छेत्तापुत्रार्थं । अयुग्मासुस्त्रीजन्मभयादगमनंनतुप्रतिषेधात् । युग्मास्वपिरात्रिष्वेवोपगमनं नाहनि । तथाचाथर्वणीश्रुतिः । प्राणंवाएतेप्रस्कंदंतियेदिवारत्यासंयुज्यंतेब्रह्मचर्यमेवतद्रात्रौसंयुज्यंतइति । शंखलिखितावपि नार्तवेदिवामैथुनंव्रजेदिति । पर्ववर्जंव्रजेच्चैनामितिमनुः । पर्ववर्जमित्यनेननिषिद्धतिथिनक्षत्राण्युपलक्ष्यंते । निषिद्धपर्वचामावास्यापौर्णमासीच । तत्रस्त्रीगमनंश्रुत्यानिषिद्धम् । नामावास्यांपौर्णमास्यांश्रुत्वास्त्रियमुपेयात् यद्युपेयान्निरिंद्रियःस्यादिति । चतुर्दश्यष्टमीचैवअमावास्याचपूर्णिमा । पर्वाण्येतानिराजेंद्ररविसंक्रांतिरेवच । तैलस्त्रीमांसभोगीचसर्वेष्वेतेषुवैपुमान् । विण्मूत्रभोजनंनामप्रयातिनरकंनृपेतिविष्णुपुराणे । एवंगच्छन्स्त्रियंक्षामांमघांमूलंचवर्जयेदिति । क्षामांलघ्वाहारादिनाकृशामित्यर्थः । अतएवबृहस्पतिः । स्त्रीपुंसयोराहारविशेषंसनिमित्तमाह । स्त्रियाःशुक्राधिकेस्त्रीस्यात्पुमान्पुंसोधिकेभवेत् । तस्माच्छुक्रविवृद्ध्यर्थंस्निग्धंभक्ष्यंचभक्षयेत् । लघ्वाहारांस्त्रियंकुर्यादेवंसंजनयेत्सुतमिति । यत्तु षोडशर्तुनिशाःस्त्रीणांतस्मिन्युग्मासुसंविशेत् । ब्रह्मचार्येवपर्वाण्याद्याश्चतस्रश्चवर्जयेदित्येतद्व्याख्यावसरेमिताक्षराकारेणोक्तं ऋतौश्राद्धदिनेपिगच्छतोनब्रह्मचर्यहानिरिति तत्षोडशदिनेषुतदितरकालासंभवविषयम् । पारिजाते—विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानिनिषेककाले । पूज्यानिपुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्यश्चमध्यमफलाविफलाःस्युरन्या इति । विष्णुःश्रवणं प्रजेशोरोहिणी रविर्हस्तः मित्रोऽनुराधा समीरःस्वाती पौष्णंरेवती उत्तरात्रयं वरुणःशतभिषक् एतानिपूज्यानि । वसुर्धनिष्ठा शीतकरोमृगः आदित्यःपुनर्वसुः एतानिमध्यमानि ।

अन्यानिविफलानीत्यर्थः[1]। विष्णुपुराणे—यस्मिन्नृक्षेभवेद्गर्भस्तस्माद्यद्दशमंभवेत्। तत्रापत्यंप्रजायेततस्मादेतत्त्रयंत्यजेदिति। त्रयंमघारेवतीज्येष्ठाख्यानि । आपस्तंवः—चतुर्थीप्रभृत्याषोडशीमुत्तरामुत्तरांयुग्मांप्रजानिःश्रेयसमुपदिशंति । चतुर्थ्यां रात्रौविधिर्निवृत्तरजस्कायां व्यासः—रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः । पंचम्यांपुत्रिणीनारीषष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः । सप्तम्यामप्रजायोषिदष्टम्यामीश्वरःसुतः । नवम्यांसुभगानारीदशम्यांचतुरःपुमान् । एकादश्यामधर्मास्त्री द्वादश्यांपुरुषोत्तमः । त्रयोदश्यांसुतातस्यवर्णसंकरकारिणी । धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः । प्रजायतेचतुर्दश्यां गुणौघैर्जगतीपतिः । राजपत्नीमहाभागाराजवंशगतातथा । जायतेपंचदश्यांतुवहुपुत्रापतिव्रता । विद्यालक्षणसंपूर्णः सत्यवादीजितेंद्रियः । आश्रयःसर्वभूतानांषोडश्यांजायतेपुमानिति । रात्राविति न केवलमल्पायुः किंत्वन्यदपि । तदुक्तं लैंगे—कदाचिज्जीवतिचेद्विद्याहीनंव्रताश्रेष्ठंपतितंपारदारिकंदारिद्र्यार्णवमग्नंचतनयंसाप्रसूयतइति । चतुर्थ्यांरात्रौत्वस्यां गम्यतेसाएवंप्रसूयतइत्यर्थः । आश्वलायनः—दीक्षितस्तुमहायज्ञैःपित्रोःप्राग्वत्सराद्द्विजः । नेयाद्भार्यांप्रयत्नेनऋतावप्यर्थितोबुधः । प्राग्रजोदर्शनात्पत्नींनेयाद्गत्वापतत्यधः । व्यर्थीकारेणशुक्रस्यब्रह्महत्यामवाप्नुयादिति । महाभारते—

---

१ विष्णुपुराणे—ऋतावुपगमःशस्तःस्वपत्न्यामवनीपते । पुंनामर्क्षेशुभेकालेज्येष्ठयुग्मासुरात्रिष्विति । ज्येष्ठासुतासुरात्रिषु ज्येष्ठंचउत्तरोत्तरमलं (?) । आश्वलायनः—गर्भाधानंद्विजःकुर्यादृतौप्रथमएवहि । चतुर्थदिवसादूर्ध्वंपुत्रार्थीदिवसेसमे । क्रूरदारुणभंपौष्णंदस्राग्नीचद्विदैवतम् । श्राद्धाहंचैवरिक्तांचहित्वान्यस्मिन्विधीयतइति ।

३०६८

ऋतौगच्छतियोभार्यामनृतौनैवगच्छति। यावज्जीवंब्रह्मचारीमुनिभिःपरिकीर्तितः। तथा—ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति। घोरायांभ्रूणहत्यायांयुज्यतेनात्रसंशयइति। अस्यवचनस्यजायमानोवैब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणवान्जायतेयज्ञेनदेवेभ्यःप्रजयापितृभ्योब्रह्मचर्येणऋषिभ्यइतिश्रुतिमूलत्वेनोपपत्तेः श्रुत्यन्तरकल्पनायाअन्याय्यत्वादजातपुत्रंप्रत्येषनियमः। तथाचमनुः——ज्येष्ठेनजातमात्रेणपुत्रीभवतिमानवः। पितृणामनृणश्चैवसतस्मात्सर्वमर्हतीति। यस्मिन्नृणंसन्नयतियेनै[1]वानंत्यमश्नुते। सएवधर्मजःपुत्रःकामजानितरान्विदुरितिकेचित्। अन्येतुऋतोर्निमित्तत्वात्प्रतिनिमित्तंनैमित्तिका[2]वृत्तिरुचिता। स्मरंतिच——एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेदित्याहुः। व्यासः——वृद्धावंध्यामसद्वृत्तांमृतापत्यामपुष्पिणीं। कन्यासूंबहुपुत्रांचवर्जयेन्मुच्यतेभयादिति। वृद्धासरजस्कापिगर्भधारणादावशक्तानतुगतरजस्काअपुष्पिणीमित्यस्यपौनरुक्त्या[3]पत्तेः॥ (अत्रत्यस्यअस्यापवादइत्यादेर्ग्रंथस्यप्राचीनादर्शेष्वनुपलंभात्यक्षिप्तइतिसटिप्पणेनिवेशितः।)

---

[1] येनचानंत्य। [2] वृत्तिर्विहिता। [3] अस्यापवादः बौधायनसूत्रानुयायिपद्धतिकर्त्राविश्वकर्त्राभेदेनोक्तः। त्रिरात्रंव्रतंचरेदित्युपक्रम्यव्रतसमाप्तौ अस्तमितआदित्येअन्योन्यमलंकृत्यापआचम्यवाग्यतौशय्यांगच्छतइत्युक्तं। व्रतमध्येपिसहशयनमुक्तंगोभिलेन—एतत्प्रभृतित्रिरात्रमेकरात्रंवाक्षारालवणाशिनौब्रह्मचारिणौभूमौसहशयीयातामिति। अन्यसूत्रेशय्यैक्यमायुर्हरमितिमैथुनंप्रयत्नतोवर्ज्यमिति ब्रह्मचारिणावितिवचनम्। एतत्प्रभृतिविवाहप्रभृतीत्यर्थः। आश्वलायनोपि—अतऊर्ध्वमक्षारालवणाशिनौब्रह्मचारिणावलंकुर्वाणावधःशायिनौस्यातांत्रिरात्रंद्वादशरात्रंसंवत्सरंवैकऋषिर्जायतइतिचरितव्रतःसूर्याविदेवधूवस्त्रंदद्यादिति। व्रतानंतरंसूर्याविदेवध्वाउपयमनकालेपरिहितंवस्त्रंदद्यादितिवृत्तिविद्भिः। श्रीम

अथगर्भाधानहोमः ॥ परिशिष्टे—अथर्तुमत्याःप्राजापत्यमृतौप्रथमेनुकूलेहनिसुस्नातयान्वारब्धः प्राजापत्यस्यस्थालीपाकस्यहुत्वैताआज्याहुतीर्जुहुयात् विष्णुर्योनिमितितिस्रोनेजमेषेतितिस्रःप्रजापतेनत्वदित्येकामिति । प्रथमग्रहणाद्द्वितीयादावृतौनैतत्सूर्योपस्थानांतम् । अनुकूलग्रहणादुपगमनंयत्राहोरात्रेचिकीर्षितंतद्दिनएवैतदितिनियम्यते । अतएवदिनांतरापेक्षयाचतुर्थस्यैवानुकूलत्वेतत्रैवैतत् शांतिरपितदुपयोगितयातत्रैव। यद्यपि शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेह्निस्नानेनस्त्रीरजस्वला। दैवेकर्मणिपित्र्येचपंचमेऽहनिशुद्ध्यतीतिमदनपारिजातोदाहृतवचने[1] चतुर्थेह्निदैवकर्मार्हतानेतिप्रतीयते तथापितेनैव—रजस्युपरतेसाध्वीस्नानेनस्त्रीरजस्वलेतिमनुवाक्येसाध्वीगर्भाधानादिविहितकर्मयोग्येतिव्याख्यानात्प्रधानानुरोधेनतदधिकारसंपत्त्यर्थंशांतावप्यधिकारसिद्धिः । तथाश्रौतेषुदर्शादिष्वपि यदात्रिरात्रेण[2]तिवचनात् रजस्वलायाःस्नानादि

---

त्प्रयोगरत्नकारैरपि—अथविवाहोत्तरंदंपत्योर्गृहप्रवेशदिनादारभ्योपक्रम्य ततःशुभेह्निस्वस्त्यादिवाचयित्वास्वलंकृतांवधूमुपगच्छेतरात्रावित्युक्तम् । धर्मप्रवृत्तौनारायणः—षड्तुषुभार्यांतेत्रयंगादिषुचरेत् (?) । अनर्तुमतीभार्यास्तुनसंगमितिकेचनेतिऊह्यम् । नगंतव्यमितिनिषेधाभावःसूचितः । कारिकायामपि—स्वस्त्यादिवाचयित्वादौस्त्रियंतामुपगच्छति । मुहूर्तेशोभनेतस्याःक्रीडनंस्याद्यथातथेति । ज्ञाताचेयंकारिकाज्ञातृभिः व्रतसमाप्त्यनंतरमुहूर्तेब्राह्मणैःस्वस्त्यादिवाचयित्वानक्तमेववधूमुपगच्छति स्पर्शादिसंकरीकरोतियथायंनमहारणतस्याःललानचरेत् (?) सुंदरवचनैरपेक्षितालंकारवस्त्रादिदानैःप्रीतिमुत्पाद्यलज्जामप्यपनीयपरस्पराभिमतंविषययोगमनुसरतीति । विवाहप्रकरणेकात्यायनः—त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौस्यातामिति । १ वचनात् । २ त्रिरात्राणीति ।

वसेपिश्रौतकर्माणिकर्तव्यान्येव नतुपंचमेहनीतिआपस्तंबभाष्यकारोक्तेः । एवमुदाहृतमदनपारिजातग्रंथे—आदिपदं उपनयनाद्यभिप्रायं तत्रापिवक्ष्यमाणश्रीसूक्तहोमपूर्वकाभिषेकेणचतुर्थेहन्यधिकारसंभवात् । अन्यदिनानुकूलत्वेशांतिपूर्वकमे तत्तत्रैवेतिव्यवस्थाबोध्या । अयंहोमोऽनाहिताग्नेः । अर्धाधानिनश्चाहिताग्नेःसत्यौपासनेतत्रैवकार्यः । तन्नाशेसति द्वादशरात्रात्पूर्वंस्थंडिलाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वाअयाश्चेत्याहुत्योत्पाद्याग्निंतत्रकार्यः । तदूर्ध्वंप्रमादादग्नित्यागेप्रत्यब्दंप्राजापत्यं । एतावत्कालपर्यंतंगृह्याग्निविच्छेदजनितदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंएतावतःकृच्छ्रानेतत्प्रत्याम्नायद्वाराचरिष्यइतिसंकल्प्यतथैवाचरेत् । ततएतावद्दिनेषुगृह्याग्निविच्छेदवशेनलुप्तसायंप्रातरौपासनहोमादिनित्यकर्मपर्याप्तंहोमद्रव्यंतथागृह्याग्निविच्छेदवशेनलुप्तदर्शपूर्णमासस्थालीपाककर्मपर्याप्तंद्रव्यंचतन्निष्क्रयंवादातुमहमुत्सृजइतिसंकल्पपूर्वकंदत्वापुनःसंधानंकुर्यात् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तद्यथा—देशकालकीर्तनांतेश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविच्छिन्नस्यगृह्याग्नेःपुनःसंधानंकरिष्येइतिसंकल्प्याग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वा अग्निध्यानांतेन्वाधानंकुर्यात् । अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्याद्याघारदेवतेआज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रप्रधानंत्रिरग्निंपवमानंअग्निंप्रजापतिंचाज्येनअर्यमणमग्निंवरुणमग्निंपूषणमग्निंप्रजापतिंचलाजद्रव्येण चतुर्वारंसूर्यासावित्रीमाज्येनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि । पात्रासादनेप्रोक्षण्यादिषण्णांपत्न्यंजलेर्न्यग्मुखस्यासादनंशूर्पस्यच । सर्वेषांप्रोक्षणांतेआज्यसंस्कारः तेनसहलाजा

---

१ षोडशरात्रिमध्येचंद्रतारानुकूल्येसर्वथाउक्तदिवसालाभेचतुर्थेऽहनिशुभेसतितत्रैवकार्यम् । शांतिश्चेत्सापितस्मिन्नेवाहनिकार्या ।

नांत्रिःपर्यग्निकरणं । आज्यस्योत्पवनमात्रेकृतेलाजानात्रिःप्रोक्षणं । स्रुवांजलिशूर्पसंमार्गांतेलाजानामाज्यस्यदक्षिणतोबर्हिष्यासादनं। आघारांते । अग्नआयूंषीतितिसृणांशतंवैखानसाऋषयःअग्निःपवमानोदेवतागायत्रीछंदःपुनःसंधानप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॐ अग्नआयूंषि० इतितिसृभिर्हुत्वाअग्नयेपवमानायेदमितित्यागः । त्वमर्यमावसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् पुनःसंधानप्रधानाज्यहोमे० ॐ त्वमर्यमाभवसि० अग्नयइदं० । प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् पुनःसंधानप्र० ॐ प्रजापतेनत्व० प्रजापतयइदं० । ततःक्षालितेंजलौस्रुवेणोपस्तीर्यस्वयमेवलाजानांद्विरवदाय जामदग्न्यश्चेत्रिरवदाय स्रुवेणशूर्पस्थानवत्तांश्चाभिघार्यस्वयमुपविष्टएवतिष्ठंत्याअंजलिंदक्षिणपाणिनाधृत्वास्वाहाकारांतेंजल्यग्रेणजुहुयात् । अर्यमणं वरुणंपूषणमितितिसृणांहिरण्यभोंऽर्यमाग्निर्वरुणाग्निःपूषाग्निरनुष्टुप् पुनःसंधानप्रधानलाजहोमेवि० ॐ अर्यमणंनुदेवं० अर्यम्णेग्नयइदं० । ॐ वरुणंनुदेवं० वरुणायाग्नयइदं० । ॐ पूषणंनुदेवं० पूष्णेग्नयइदं० । पत्यान्वारब्धःशूर्पकोणेनशेषलाजान्प्रजापतिंमनसाध्यायन्स्वाहाकारेणजुहुयात् । तत आनःप्रजामितिचतसृणांसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्री आद्याजगतीद्वितीयात्रिष्टुप् अंत्येद्वेअनुष्टुभौ पुनःसंधानाज्यहोमे० ॐ आनःप्रजांजन० इतिचतसृभिःस्वाहाकारसमकालं

---

१ प्रजापतिंमनसाध्यायेत्तूष्णींहोमेषुसर्वत्रेतिश्रौतसूत्रं । यत्रतूष्णींशब्दविशिष्टोहोमश्चोद्यतेतत्रप्रजापतिदेवतांध्यायेत् देवतासाध्यत्वाद्धोमस्य । ध्यानत्वादेवमानसेसिद्धेमनोग्रहणंशब्दध्यानार्थंतेनचतुर्थ्यंतंप्रजापतिशब्दंध्यात्वातदनंतरंस्वाहेत्युपांशूक्त्वाजुहुयात् । होमेष्वितिबहुवचनादेवप्रकरणादुत्कर्षेसिद्धेसर्वत्रग्रहणंगार्ह्येष्वप्यस्यप्रापणार्थमिति ।

स्रुवेणजुहुयात् सूर्यासावित्र्याइदं० । स्रुवगताज्यशेषमनामिकयादाय समंजंत्वित्यस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीअनुष्टुप् हृदयांजनेवि० ॐ समंजंतुविश्वे० स्वस्यपत्याश्चहृदयांजनंकृत्वा हस्तंप्रक्षाल्यस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यदशत्रीन्वाब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेविच्छिन्नगृह्याग्निपुनःसंधानं ॥ सर्वाधानिनापिएवमेवपुनःसंधानेनौपासनमुत्पाद्यगर्भाधानपुंसवनादिहोमःकार्यः । तत्रकृच्छ्रसंकल्पोद्रव्यदानसंकल्पश्चनकार्यः । गर्भाधानहोमंकर्तुंगृह्याग्नेः पुनःसंधानंकरिष्यइतिसंकल्पः । गर्भाधानांतेऽग्नित्यागः । अर्धाधानिनोपिऔपासनहोमाद्यकरणपक्षेप्रायश्चित्तमात्रंन द्रव्यदानम् । द्विभार्यस्याग्निद्वयसंसर्गात्पूर्वमेकाग्न्यनुगमेप्रायश्चित्तंऔपासनहौमीयद्रव्यमात्रदानंचकार्यंनतुस्थालीपाकादिद्रव्यदानम् ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ कर्ताप्रातरभ्यंगस्नानंकृत्वाशांत्यभावेसप्तमृत्तिकापंचपल्लवपंचत्वक्सहितैर्नूतनोदककुंभैः पत्नीमपिस्नापयित्वातयासहोपविश्यदेशकालौसंकीर्त्य ममास्यांभार्यायांसंस्कारातिशयद्वाराऽस्यांजनिष्यमाणसर्वगर्भाणां वीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंगर्भाधानाख्यंकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य तदंगत्वेनगणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकुर्यात् ॥ तत्रतावत्सर्वोपयोगित्वेन स्वस्तिवाचनमुच्यते । तद्विधिमाह शौनकः—स्वस्तिवाचनमेतत्तुसर्वेषामृद्धिकारणं । आदावंतेचकर्तव्यमितियज्ञविदांमतमिति ॥ तत्रकलशस्थापनंहारितेनोक्तं । गोमयेनोपलिप्योर्वीरंगवल्लिकयार्चयेत् । प्रस्थधान्योपरिस्थाप्यपूर्णंहिकलशद्वयम् । दक्षिणेचोत्तरेचैवउत्तरेतुनिधापयेत् । पात्रमक्षतपूर्णंतुफलपुष्पसमन्वितमिति । तत्रकलशस्य तत्रनिक्षेप्यपंचरत्नानांचलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे—हैमराजतताम्रावामृन्मयालक्षणान्वि

ताः । सुवर्णंराजतंमुक्ताराजावर्तःप्रवालकं । पंचरत्नमितिख्यातमिति । कलशेनिक्षेप्यपंचत्वचःपंचपल्लवाश्वतत्रैवोक्ताः । न्यग्रोधपिप्पलप्लक्षजंबूचूततरूद्भवाः । रुवतिभीमइत्यृचाघटेपंचत्वचःक्षिपेत् । अश्वत्थोदुंबरःप्लक्षोन्यग्रोधश्चूतएवच । पंचपल्लवमाख्यातंसर्वकर्मसुशोभनमिति ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ सपत्नीकोयजमानःकृताभ्यंगःपवित्रपाणिर्गोमयोपलिप्तरंगवल्लिकायुक्तभूतलस्थप्रस्थपरिमितधान्योपरिकलशद्वयंसुलक्षणंशुद्धजलपूरितंसपल्लवंनिधाय तत्पश्चिमदेशेयुग्मान्ब्राह्मणान्विशुद्धान्प्राङ्मुखान्दक्षिणतोवाउदङ्मुखानुपवेश्यसोत्तरच्छदेशुद्धपीठेस्वयमुपविश्यस्वदक्षिणेसंस्कार्यमुपवेश्याचम्यप्राणानायम्य यथाचारमिष्टदेवतादिनमस्कारपूर्वकंसुमुखश्चेत्यादिपठित्वादेशकालौसंकीर्त्य अमुककर्मकरिष्ये तदंगत्वेनस्वस्तिपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकरिष्ये तत्रादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य । गणानांत्वाशौ० ऋद्धिबुद्धिसहितंगणपतिमावाहयामि ।गणपतयेनमःआसनंपाद्यमर्घ्यमाचमनीयमित्यादिदक्षिणादानांतंकृत्वानिषुसीदेतिमंत्रेणपुष्पांजलिंसमर्प्य वक्रतुंडेतिसंप्रार्थ्य । स्वपुरतः[1]महीद्यौःपृथिवीचनइतिमंत्रावृत्त्यादक्षिणतउत्तरतश्चभू

---

[1] सर्वत्राविदितार्षछंदोदैवतविदित्यादिनाकेवलमंत्रपाठानर्थक्यादृष्याद्युपन्यासआवश्यकः सचेत्थं—महीद्यौःकाण्वोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री । ओषधयइत्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् । आकलशेष्वित्यस्यकाश्यपोदेवलःपवमानःसोमोगायत्री । इमंमेगंगइत्यस्यसिंधुक्षित्प्रैयमेधोनद्योजगती । गंधद्वारामित्यस्यानंदकर्दमचिक्लीतेंदिरासुताःश्रीरनुष्टुप् । याओषधीरित्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् । अश्वत्थेवइत्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप्। स्योनापृथिविकाण्वोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री । याःफलिनीरित्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् । सहिरत्नानीत्यस्यश्यावाश्वःसविता

मिंस्पृशेत् ॥ एवमुत्तरक्रियाणांतत्तत्कालानुष्ठानेमंत्रावृत्तिःपूर्वस्थापितकलशयोस्तंत्रेणमंत्रप्रयोगः । ॐ ओषधयःसमितितथैवतंडुलपुंजौकृत्वाआकलशेष्वितितंडुलपुंजोपरिकलशौनिधाय इमंमेगंगेइतितीर्थजलेनप्रत्येकंपूरयित्वा गंधद्वारामितिगंधंप्रक्षिप्य ओषधयःसमितिसर्वौषधीः कांडात्कांडात्प्ररोहंतीतिदूर्वाः अश्वत्थेवोनिषदनमितिपंचपल्लवान् । रुवतिभीमइतिपंचत्वचः स्योनापृथिवीतिसप्तमृदः याःफलिनीरितिफलं । सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि हिरण्यरूपइति हिरण्यं युवासुवासाइतिवाससासंवेष्ट्य पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रंस्थाप्य । तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् पूजनेवि० ॐ तत्त्वायामीतिउत्तरकलशेवरुणंगंधादिभिःपूजयित्वा । तत्रकलशे । कलशस्यमुखेविष्णुःकंठेरुद्रःसमाश्रितः । मूलेतत्रस्थितोब्रह्मामध्येमातृगणाःस्मृताः । कुक्षौतुसागराःसर्वेसप्तद्वीपावसुंधरा । ऋग्वेदोथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथर्वणः । अंगैश्चसहिताःसर्वेकलशंतुसमाश्रिताः । अत्रगायत्रीसावित्रीशांतिपुष्टिकरीतथा । आयांतुममशांत्यर्थंदुरितक्षयकारकाः ।

---

गायत्री । हिरण्यरूपइत्यस्यशौनकोपांनपात्रिष्टुप् । युवासुवासाइत्यस्यविश्वामित्रोयूपस्त्रिष्टुप् । पूर्णादर्वीत्यस्यविश्वेदेवाःशतक्रतुरनुष्टुप् । तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् । भद्रंकर्णइत्यस्यगौतमोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । द्रविणोदाइत्यस्यकुत्सोद्रविणोदाअग्निस्त्रिष्टुप् । सवितापश्चातादित्यस्यलुशोधानाकोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । नवोनवइत्यस्याःसूर्यासावित्रीचंद्रमसस्त्रिष्टुप् । उच्चादिवीत्यस्यांगिरसोदिव्यःप्राजापत्योदक्षिणावातद्दातारोवात्रिष्टुप् । उद्गातेवेत्यस्यगृत्समदःशकुंतःशक्करी । स्वस्तयेवायुमित्यस्यस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् । ऋध्यामस्तोममित्यस्यकाश्यपोभूतांशोश्विनौत्रिष्टुप् । श्रियेजातइत्यस्यकण्वःपवमानःसोमस्त्रिष्टप् । भूमिप्रार्थनादौवि० । कर्मबाहुल्यादनवकाशाद्वासर्वेषांपठनाशक्तौ यस्यवाक्यंसऋषिर्यातेनोच्यतेसादेवतायदक्षरपरिमाणंतच्छंदइतिपारिभाषिकमृष्याद्युपयुंजीतनकेवलमंत्रोहः । १ पूर्णपात्रंचप्रतिकलशंज्ञेयं ।

सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः । आयातुममशांत्यर्थं० । ततःकलशेविष्णवादीन्संपूज्याक्षतान्क्षिपेत् । मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव । आशिषःप्रार्थयंते । एताःसत्याआशिषःसंतु । अवनिकृतजानुमंडलःकमलमुकुलसदृशमंजलिंशिरस्याधायदक्षिणेनपाणिनासुवर्णपूर्णकलशंधारयित्वा दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच तेनायुःप्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु । शिवाआपःसंतु सौमनस्यमस्तु अक्षतंचारिष्टंचास्तु गंधाःपांतुसुमंगल्यंचास्तु अक्षताःपांतु आयुष्यमस्तु पुष्पाणिपांतु सौश्रियमस्तु तांबूलानिपांतु ऐश्वर्यमस्तु दक्षिणाःपांतु वहुदेयंचास्तु । अत्रगंधाःपांत्वित्यादिभिर्मंत्रपूर्वार्धैः युग्मान्ब्राह्मणान्गंधादिनापूजयेत् । तेचसुमंगल्यंचास्त्वित्यादिमंत्रोत्तरार्धानिप्रतिब्रूयुः । यंकृत्वासर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारंभाःशुभाःशोभनाःप्रवर्तंते तमहमोंकारमादिंकृत्वाऋग्यजुःसामाशीर्वचनंवहृषिसंमतंसंविज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातःपुण्यंपुण्याहंवाचयिष्येइत्युक्ते वाच्यतामितिप्रतिब्रूयुः। भद्रंकर्णेभिः० दायुः द्रविणोदाद्रविणस० दीर्घमायुः सवितापश्चातात्० दीर्घमायुः नवोनवोभवति० दीर्घमायुः उच्चादिविदक्षिणावंतो० दीर्घमायुः आपउंदंतुजीवसेदीर्घायुत्वायवर्चसे यस्त्वाहृदाकीरिणा० जातवेदोयशो० यस्मैत्वंसुकृते० अश्विनंसपुत्रिणं० स्वस्ति। संत्वासिंचामियजुषाप्रजामायुर्धनंच। मनःसमाधीयताम्। समाहितमनसःस्मः। प्रसीदंतुभवंतः। प्रसन्नाःस्मः। शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवंकर्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धि० वेदसमृद्धि० शास्त्रसमृद्धि० पुत्रसमृद्धि० धनधान्यसमृद्धि० इष्टसंपदस्तु० सर्वारिष्टनिरसनमस्तु यत्पापंतत्प्र

तिहतमस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु उत्तरेकर्मण्यविघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराःक्रियाःशुभाःशोभनाःसंपद्यंतां इष्टाःकामाःसंपद्यंतां तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रसंपदस्तु । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताःप्रीयंतां तिथिकरणेमुहूर्तनक्षत्रेसग्रहेसदैवतेप्रीयेतां दुर्गापांचाल्यौप्रीयेतां अग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयंतां । इंद्रपुरोगामरुद्गणाःप्री० ब्रह्मपुरोगाःसर्वेवेदाःप्रीयं० विष्णुपुरोगाःसर्वेदेवाःप्रीयं० माहेश्वरीपुरोगाउमामातरःप्रीयं० वसिष्ठपुरोगाऋषिगणाःप्रीयंतां अरुंधतीपुरोगाएकपत्न्यःप्रीयंतां ऋषयश्छंदांस्याचार्यावेदादेवायज्ञाश्चप्रीयंतां ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंतां श्रीसरस्वत्यौप्रीयेतां श्रद्धामेधेप्रीयेतां भगवतीकात्यायनीप्रीय० भगवतीमाहेश्वरीप्रीयतां भगवतीपुष्टिकरीप्री० भगवतीतुष्टिकरी० भगवतीवृद्धिकरीप्री० भगवतीऋद्धिकरीप्रीय० भगवंतौविघ्नविनायकौप्रीयेतां भगवान्स्वामीमहासेनःसपत्नीकःससुतःसपार्षदःसर्वस्थानगतःप्रीयतां हरिहरहिरण्यगर्भाःप्रीयंतां सर्वाग्रामदेवताःप्रीयंतां सर्वाःकुलदेवताःप्रीयंतां सर्वाइष्टदेवताःप्रीयंतां हताब्रह्मद्विषः हताःपरिपंथिनः हताअस्यकर्मणोविघ्नकर्तारः शत्रवःपराभवंयांतु शाम्यंतुघोराणि शाम्यंतुपापानि शाम्यंत्वीतयः शुभानिवर्धंतां शिवाआपःसंतु शिवाऋतवःसंतु शिवाअग्नयःसंतु शिवाआहुतयःसंतु शिवा ओषधयःसंतु शिवावनस्पतयःसंतु शिवाअतिथयःसंतु अहोरात्रेशिवेस्यातां निकामेनिकामेनःपर्जन्योवर्षतु फलवत्योन ओषधयःपच्यंतां योगक्षेमोनःकल्पतां शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिताआदित्यपुरोगाःसर्वेग्रहाःप्रीयंतां भगवान्नारायणःप्रीयतां भगवान्पर्जन्यःप्रीयतां भगवान्स्वामीमहासेनःप्रीयतां पुण्याहकालान्वाचयिष्ये । वाच्यतां।

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि० मावद । याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्या० स्कुरुते । यत्पुण्यंनक्षत्रं तद्वट्कुर्वीतोपव्युषं यदावैसूर्यउदेति अथनक्षत्रंनैति यावतितत्रसूर्योगच्छेत् यत्रजघन्यंपश्येत् तावतिकुर्वीतयत्कारीस्यात् पुण्याहएव कुरुते तानिवाएतानियमनक्षत्राणि यान्येवदेवनक्षत्राणि तेषुकुर्वीतयत्कारीस्यात् पुण्याहएवकुरुते । महां[1]सहकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणायाशीर्वचनमपेक्षमाणायास्यामुककर्मणःपुण्याहंभवंतोब्रुवंतु ॐ पुण्याहमितित्रिः ३ । ॐ स्वस्तयेवायुमुपब्रवामहै० भवंतुनः आदित्यउदयनीयः० स्वस्त्युद्यंतिस्व[2]स्त्युद्यंति स्वस्तिनइंद्रोवृद्ध० दधातु अष्टौदेवावसवःसोम्यासः चत० तेयज्ञं० संव० । महांसह० अमुककर्मणेस्वस्ति० अस्मैकर्मणेस्वस्तिइतिप्रतिवचनंत्रिः । ॐ ऋद्ध्यामस्तोमं० यशोनपक्कं० सर्वामृद्धिमृध्नुयामिति० यएवंवेद ऋद्ध्यास्महव्यैर्नमसोपसद्य मित्रंदेवंमित्रधेयंनोअस्तु अनूराधान्हविषा वर्धयंतः शतंजीवेमशरदःसवीराः त्रीणित्रीणिवैदेवानामृद्धानि त्रीणिच्छंदाꣳसित्रीणिसवनानि त्रयइमेलोकाः ऋद्ध्यामेवतद्वीर्यएषुलोकेषुप्रतितिष्ठति महांसह० अस्यकर्मणःऋद्धिंभवंतोब्रुवंतुइतित्रिः ऋद्ध्यतामितित्रिर्विप्राः ३ । ॐ श्रिये जातः० यएवंवेद यस्मिन्ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत् अमुंचलोकमिदमूचसर्वं तन्नोनक्षत्रमभिजिद्विजित्य श्रियंदधात्वहृणीयमानं । अहेबुध्नियमंत्रंमेगोपाय यमृषयस्त्रयिविदाविदुः ऋचःसामानियजूꣳषि साहिश्रीरमृतासता एतैर्मंत्रैर्नीराजनं

---

[1] अत्रसहशब्दःप्रशस्तवचनः । इन्तुप्रशस्तकुटुंबशब्दात् । अयमेवचसहशब्दस्यप्रशस्तार्थत्वेहेतुःइन्सहयोःसमानार्थकत्वादन्यतरवैयर्थ्यशंकातुसहसानकर्तव्या । [2] आवृत्तिर्मास्तु ।

कारयेत् । मह्यमित्यादिपूर्ववत् अमुककर्मणःश्रीरस्त्वितिभवंतोब्रुवंतुइतित्रिः अस्तुश्रीरितिप्रतिवचनंत्रिः ३ । वर्षशतं पूर्णमस्तुशिवंशिवमस्तु गोत्राभिवृद्धिरस्तु प्रजापतिःप्रीयतां । ॐ शुक्रेभिरंगैः० शोचिर्वसानः० तद्प्येष० आविक्षित० । ततःउत्तरकलशंदक्षिणहस्तेदक्षिणकलशंवामहस्तेगृहीत्वाताभ्यांधाराद्वयंसंततंपात्रेनिषिंचेदेभिर्मंत्रैःॐ[1]वास्तोष्पतेप्रति० यत्त्वेमहेप्रति० वास्तोष्पतेप्रतरणो० अजरासस्ते० वास्तोष्पतेशग्मया० पाहिक्षेमउत० अमीवहावास्तोष्पते० सखासु० शिवं ३ । ततःपत्नींवामतउपवेश्य । तदुक्तं–सर्वेषुधर्मकार्येषुपत्नीदक्षिणतःस्थिता । विप्रपादक्षालनेतुअभिषेकेचवामत इति । ब्राह्मणाअभिषेकंकुर्युः । [2]समुद्रज्येष्ठा० याआपोदिव्या० यासांराजा० यासुराजा० त्रायंतामिह० आपइद्वा० हस्ताभ्यांदशशाखाभ्यां० इमाआपःशिवतमा० याभिरिंद्रमभ्यषिंचत्० महांतंत्वामहीनां० देवस्यत्वासवितुः० भूर्भुवःस्वः तच्छंयोरावृणीमहे० मंत्रांतेअमृताभिषेकोस्तुइतिवदेयुः इतिस्वस्तिवाचनम् ॥ ॥ अथशौनकाद्युक्तम् ॥ शौनकः—अर्चिताब्राह्मणाःसम्यक्गंधमाल्यैःसदक्षिणैः । तिष्ठेयुःप्राङ्मुखायुग्मावक्तारोदर्भपाणयः । तिष्ठेद्वाचयितातेषांदक्षिणस्यामुदङ्मुखः । बिभ्रत्कुंभमपांपूर्णंपिहिताननमर्चितं । अथवाचयितुर्बाहुंदक्षिणंतुसमाश्रिताः । तिष्ठंत्युदङ्मुखाःसम्यक्संस्कार्यास्तत्रतत्रतु । मनइत्यादिकंमंत्रंपूर्ववाचयितावदेत् । समाहितेत्यादीतरेमंत्रंब्रूयुःसमाहिताः । प्रसीदंतुभवंतइत्य

---

[1] वास्तोष्पतइतिचतसृणांमैत्रावरुणिर्वास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् । [2] समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांमैत्रावरुणिर्वसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् । त्रायंतामितितिसृणां सप्तर्षयआपोनुष्टुप् । इमाआपइतितिसृणामैतरेयआपोनुष्टुब्जगत्यनुष्टुभः । देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयःसविताश्विनौपूषाचयजुः ।

थवाचयिताचदेत् । प्रसन्नाःस्मइतिब्रूयुरर्चिताब्राह्मणाःपुनः । शातिपुष्ट्यृद्ध्यविघ्नाद्याःशब्दाःपंचदशैवतु । अस्तुशब्दांतसुच्येरन्वाचयित्वातथापरैः । आशीर्वादानथान्यांश्चविविधानपिवाचयेत् । अतोदेवाअवंतुनःसूक्तंवैष्णवमुत्तमं । द्रविणोदाःसवितेतिनवोविद्युन्नयेतिच । आवदंस्त्वमित्युक्त्वाथपुण्याहंवाचयेत्ततः । वाचयित्वायथाशक्तिसर्वाणिद्विजसत्तमैः । प्रस्तुतेदेवतायास्तुहोमंकुर्याद्विचक्षणः । तस्यानामगृहीत्वाथप्रीयतामितिचोच्यतां । पुण्याहंस्वस्तिमृद्धिंचभवत्पूर्वंब्रुवंत्विति । प्रणवाद्यंत्रिराचष्टेभवदादिविनापरे । पुण्याहादेस्त्रिरभ्यासेमंद्रमध्योत्तमस्वरम् । आश्रयेरन्निमेसर्वेयथागमपरंपरं । प्रयुक्तिविषयेभेदस्तृतीयेत्वृद्ध्यतामिति । वक्तारोब्रूयुरत्युच्चैरतिविस्पष्टमेवच । पुण्याहशब्दमुक्त्वातुस्वस्तिनइत्यृचंजपेत् । स्वस्तिशब्दंतथोक्त्वाचऋद्ध्यामेतिऋचंवदेत्। ऋद्धिंभवंतोब्रुवंत्वित्यृद्ध्यतामित्यथोवदेत् । आपोहिष्ठेतितिसृभिःशंनोदेवीत्यृचैकया । ईशानावार्याणांपंचशुद्धवत्यघमर्षणं । तरत्समंदीसूक्तंतुसर्वपापापनोदनं । पवस्वसोममित्यादिऋग्भिःप्रोक्ष्यसमंततः । पुण्याहंवाचयित्वैवंसर्वकल्याणवान्भवेत् । स्वस्तिवाचनमेवंतुसर्वेषामृद्धिकर्मणां । आदावंतेचकर्तव्यमितियज्ञविदांमतमिति । जयंतेनकारिकाकारेणअर्चिताइत्यारभ्यतथापरैरित्यंतग्रंथमित्थमेवपठित्वाप्रस्तुतदेवतायाइत्यारभ्यतृतीयेत्वृद्ध्यतामितीत्यंतंपठितं । तत आपइत्यादिभिःशांतिंततःकुर्युःसमाहिता इतिपठित्वांत्यःश्लोकःपूर्ववदुक्तः । परिशिष्टे—अथसर्वेसंहत्यशांतिःपुष्टिस्तुष्टिर्वृद्धिरविघ्नमायुष्यंआरोग्यंस्वस्तिशिवंकर्मकर्मसमृद्धिर्धर्मसमृद्धिःपुत्रसमृद्धिर्वेदसमृद्धिःशास्त्रसमृद्धिर्धनधान्यसमृद्धिरिष्टसंपदित्येतानिपंचदशास्त्वंतानिवाक्यान्युक्त्वातत्तन्नाम्नाकर्म

कर्मदेवताप्रीयतामितिब्रूयुः। अथवाचयितापूर्वंतत्तल्लिंगान्मंत्रान्पठित्वात्रिस्त्रिर्मंद्रमध्यमोच्चस्वरैः ॐपुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वोंस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वोमृद्धिंभवंतोब्रुवंत्वितिब्रूयात् । तेपितथाप्रत्येकंप्रतिब्रूयुः । ॐ ऋध्यतामित्यृद्धौब्रूयुः । अथप्राङ्मुखमासीनंसामात्यंकर्तारंब्राह्मणाःसपल्लवदर्भपाणयःशांतिपवित्रलिंगाभिर्ऋग्भिःसिंचेयुःपुरंध्र्योनीराजनादिमंगलंकुर्युरिति । कर्मदेवताआहवौधायनः—विवाहस्याग्निरौपासनस्याग्निसूर्यप्रजापतयः स्थालीपाकस्याग्निः गर्भाधानस्यब्रह्मा पुंसवनस्यप्रजापतिः सीमंतस्यधाता विष्णुवलेःसविता जातकर्मणोमृत्युर्नामकर्मणःसविता तस्यांतेप्रजापतिरुपनिष्क्रमणस्यसविता तस्यांतेचित्रियाणि अन्नप्राशनस्यसविता चौलस्यकेशिनस्तस्यांतेप्रजापतिः उपनयनस्येंद्रः श्रद्धामेधेअंतेविसर्गे सुश्रवाः पुनरुपनयनस्याग्निः।अथयदिब्रह्मचर्यव्रतमाचरेत्तस्मिन्नपापहोमेसविता समावर्तनस्यश्रीरिंद्रोवा शूलगवस्येशानः प्रत्यवरोहणस्यसविता उपाकर्मणिव्रतेषुचसविता वास्तुहोमस्यवास्तोष्पतिरंतेप्रजापतिः । अयुतहोमस्यैंद्रोंतेप्रजापतिः आयुष्यहोमस्याग्निरायुष्मान् । नक्षत्रहोमस्यनक्षत्रेषूक्तं । अष्टमीप्रदोषस्येशानः आग्रयणस्याग्रयणदेवताः सर्पवलेःसर्पाः एकोद्दिष्टस्यांतेप्रजापतिस्तडागादीनांवरुणोयक्षवलेर्यक्षाः ग्रहशांतिहोमस्यादित्यादिनवग्रहाः । नागारितंत्रहोमेब्रह्मादयःप्रीयंतामिति एवमेवान्येषांहोमानांयाज्यानुवाक्ययोर्देवतासौप्रीयतामिति कूपतडागांतेप्रधानोदकांतेप्रजापतिः कूष्मांडहोमस्याग्न्यादयश्चांद्रायणस्याग्न्यादयोग्न्याधेयस्याग्न्यादयोग्निष्टोमस्येंद्रएवान्येन्येष्टकर्मसुप्रजापतिरिति । पुण्याहवाचनसूत्रेचगंधादिदक्षिणांतानांदानसमयेशिवाआपःसंत्वित्यादीनांवहुदेयंचनोस्त्वित्यंतानांवाचनमुक्तंवौधायनेन ।

पारिजातधृतशौनकीयेपिदानसमयेवाक्यवाचनंविधायोक्तम् । कर्ताथदक्षिणंजानुंपातयित्वामहीतले । उदङ्मुखोजपेत्सूक्तंश्रद्धयेत्येवमादिकमिति । ॐ पुण्याहमितिवाचनांतेचोक्तम् । ततःस्वस्तिनइंद्रेतिऋचंब्रूयुःसहोभये । ततोवाचयिता पूर्वमोंस्वस्तीत्यभिधायतु । पश्चाद्भवंतइतिचब्रुवंत्वितिचभाषते । ॐस्वस्तीतितथैवान्येप्रतिब्रूयुरतःपरं । प्रारिप्सितंचतुर्थ्योक्त्वाकर्मवाचयिताततः। स्वस्तीत्याद्यंब्रुवंत्वंतंपूर्ववत्समुदीरयेत् । वक्तारश्चचतुर्थ्यंतंतत्तत्कर्मोक्तिपूर्वकं । स्वस्तीतिच प्रतिब्रूयुरिति । ऋद्धिवाचनांतेच । ततोवाचयिताकुंभजलंसंस्कार्यमूर्धनि । किंचित्सिंचेत्सहैवान्येब्रूयुश्चविविधाशिषइति । आश्वलायनस्मृतौ—गुरोर्दक्षिणभागेतुकर्तासीततदाज्ञयेतिप्रक्रम्य मनःसमाधीयतामित्यादिवचनंगुरुकर्तृकमेवोक्तं । ततःसावित्र्यादिमंत्रैरभिषेकमुक्त्वांतेउक्तं । पुण्याहांतेर्चयेद्विप्रान्दक्षिणाभिःस्वशक्तितः । यत्किंचिच्छ्राद्धिकंभुक्त्वाप्रतिगृह्यचवाशुचिः । अब्राह्मणश्चपुण्याहेनार्हःस्यादितिमेमतिः । पुण्याहवाचनंशस्तमादौस्यात्सर्वकर्मसु । नाकृत्वैतद्बुधःकुर्यात्सर्वकर्माणिमानवइति । अत्रच । बह्वल्पंवास्वगृह्योक्तंयस्ययत्कर्मनोदितं । तस्यतावतिशास्त्रार्थेकृते[1]सर्वंकृतंभवेदितिस्वगृह्यानुक्तस्यानावश्यकत्वमभिप्रेत्यकारिकाकृज्जयंताभ्यांपरिशिष्टमनुसृतम् । तत्रचप्रशस्तानितिब्राह्मणविशेषणंकिमाशयमित्याकांक्षासत्वात्स्मृत्युक्तश्राद्धभोजनप्रतिग्रहादिराहित्यंग्राह्यम् । यद्यपिब्राह्मणपूजनमारंभेकार्यमिति प्रतीयतेतथापिकुंभस्यप्रणामांतपूजांविधायब्राह्मणपूजनंकार्यम् अथशब्देनवद्धक्रमतथापदार्थोक्तिसमयेस्वर्चितमितिकुंभ

---

[1] सर्वःकृतोभवेत् मुद्रि. ।

विशेषणस्यान्यथानुपपत्तेः ब्राह्मणपूजनंप्रसिद्धमेवेतिवाक्यवचनमपिताभ्यामनादृतं । पुण्याहादिवाचनेमंत्रादित्रैविध्यमपियथागमपरंपरमितिवैकल्पिकत्वेनोक्तम् । परिशिष्टेपंचदशवाक्यानिपठित्वापंचदशैतानीत्युक्तिर्न्यूनाधिकोक्तिःव्यावृत्त्यर्थेत्यभिप्रेत्यपंचदशैवेतिकारिकादावुक्तं शांतिपवित्रलिंगाभिर्ऋग्भिरितिपरिशिष्टस्यप्रपंचनंचपारिजातधृतशौनकीयेपवस्वसोममित्यंतानामृचांपाठेनाश्वलायनस्मृतौचसावित्र्यादिमंत्रपाठेनकृतं नत्वृचोविशेषतस्तास्ताविवक्षिताः । पारिजातधृतशौनकीयेविशेषपाठाभावात् उक्तपाठयोःपरस्परविसंवादाच्चेत्याशयेनापइत्यादिभिःशांतिंततःकुर्यादित्येवोक्तं । अतोदेवाइत्यादीनांश्रद्धयेत्यादिसूक्तस्यचशौनकीयपाठएवक्वचिदसत्वात्परिशिष्टादावपिअविधेरनित्यत्वात्तत्तल्लिंगान्मंत्रान्पठित्वेतिपरिशिष्टं स्वधृतशौनकीयेचोद्गातेवेतितिसृणामृचांपाठेन तद्विवरणमालोच्यपारिजातेप्रयोगकालेयाज्ययाजतीत्यादेराचारप्राप्तवाक्यानामनादरःकृतः । अतइत्थंप्रयोगः——यथाचारंगणेशवरुणपूजादौकलशंधारयित्वेत्यंतेवृत्ते शिवाआपःसंत्वित्यादिवाक्यवचनेनब्राह्मणपूजनेविहिते पूजितायुग्माब्राह्मणादर्भपाणयःप्राङ्मुखास्तिष्ठेयुस्तद्दक्षिणतोवाचयितोदङ्मुखोदर्भपाणिःस्वर्चितंकुंभंसपल्लवंदक्षिणहस्तेदधानस्तिष्ठेत् तद्दक्षिणपार्श्वेपत्नीसंस्कार्यश्चतिष्ठेतां । ततोब्राह्मणान्प्रतिमनःसमाधीयतामितिकर्ता समाहितमनसःस्मइतिपरे । प्रसीदंतुभवंतइतिकर्ता प्रसन्नाःस्मइतिपरे । ततःसर्वेसंहत्यपंचदशवाक्यानिवदेयुः शांतिरस्तु १ पुष्टिरस्तु २ तुष्टिरस्तु ३ वृद्धिरस्तु ४ अविघ्नमस्तु ५ आयुष्यमस्तु ६ आरोग्यमस्तु ७ स्वस्तिशिवंकर्मास्तु ८ कर्मसमृद्धिरस्तु ९ धर्मसमृद्धिरस्तु १० पुत्रसमृद्धिरस्तु ११ वेदसमृद्धिरस्तु १२ शास्त्र

समृद्धिरस्तु १३ धनधान्यसमृद्धिरस्तु १४ इष्टसंपदस्तु १५ इत्युक्त्वाकर्मदेवतानामग्रहणपूर्वकं ॐप्रीयतामितिवदेयुः । यत्रनामविशेषोनोक्तस्तत्रप्रजापतिःप्रीयतामिति । अथावदंस्त्वमित्यृचंपठित्वा ॐ पुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वितिवदेत् ॐ पुण्याहमितिपरेब्रूयुः । स्वस्तिनइत्यृचंपठित्वा ॐ स्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिवदेत् ॐ स्वस्तीतिपरे । ऋद्ध्यामस्तोममित्यृचंपठित्वा ॐ ऋद्धिंभवंतोब्रुवंत्वितिवदेत् ॐ ऋद्ध्यतामितिपरे । ततआपोहिष्ठेत्यादित्रिभिःसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिर्वाभिषेकःकार्यः । ततःसुवासिन्योनीराजनाशीःप्रयोगनूतनवस्त्रदानादिमंगलंकुर्युरितिसंक्षिप्तःपुण्याहवाचनप्रयोगः ॥ ॥

अथवृद्धिश्राद्धम् ॥ तच्चपार्वणत्रयात्मकं । मातृभ्यःकल्पयेत्पूर्वंपितृभ्यस्तदनंतरम् । ततोमातामहानांचकुर्याच्छ्राद्धं क्रमेणवेतिवसिष्ठोक्तेः । एतदारंभेमातृपूजनमवश्यंकार्यं । अकृत्वामातृयज्ञंतुयःश्राद्धंपरिवेषयेत् । तास्तस्यक्रोधसंपन्नाहिंसांकुर्वंतिदारुणामितिहेमाद्रौभविष्योक्तेः । कर्मांगश्राद्धेप्येतत्कार्यम् । कर्मादिषुचसर्वेषुमातरःसगणाधिपाः । पूजनीयाःप्रयत्नेनपूजिताःपूजयंतिता इतिषट्त्रिंशन्मते । श्राद्धशेषिकर्मांगत्वस्यापिमातृपूजनप्रतीतेः । अत्रविशेषोहेमाद्रौ चतुर्विंशतिमते । तिस्रःपूज्याःपितुःपक्षेतिस्रःपूज्याश्चमातृके । इत्येतामातरःप्रोक्ताःपितृमातृष्वसाष्टमी । ब्रह्माण्याद्याः स्मृताःसप्तदुर्गाक्षेत्रगणाधिपाः । वृद्धौवृद्धौसदापूज्याःपश्चान्नांदीमुखान्पितॄन् । गौरीपद्माशचीमे[1]धासावित्रीविजया जया । देवसेनास्वधास्वाहामातरोलोकमातरः । एतास्त्वभ्युदयेपूज्याआत्मदेवतयासहेति । मातृपितामहीप्रपितामह्यः

---

[1] दक्षासावित्रीतिपाठः ।

मातामहीमातुःपितामहीमातुःप्रपितामह्यः पितृष्वसासप्तमीमातृष्वसाअष्टमीत्यष्टौमनुष्यमातरःप्रत्यक्षाः प्रत्यक्षमेवकुंकुमवस्त्राभरणपुष्पादिभिःपूज्याः । परोक्षास्तुवक्ष्यमाणदेवतामातृवदक्षतपुंजादिष्वावाह्यपूजनीयाइतिहेमाद्रिः । ब्रह्माण्याद्याःसप्तदुर्गाक्षेत्रपालगणाधिपांश्चषोडशोपचारैःपूजयित्वा नांदीमुखान्पितृन्पूजयेत् । शास्त्रांतरेमहालक्ष्म्यासहअष्टौब्रह्माण्याद्याःपूज्याइत्युक्तम् । तथा । गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया । देवसेना० । धृतिःपुष्टिस्तथातुष्टिरात्मदेवतयासह । आभ्योर्घ्यंगंधपुष्पंचधूपंदीपंनिवेदयेदिति । आत्मदेवताकुलदेवता । अर्घ्यग्रहणेनषोडशोपचारपूजावश्यकीतिद्योत्यते[1] । तथा । कुड्यलग्नावसोर्धाराःपंचधाराघृतेनतु । कारयेत्सप्तधारावानातिनीचानचोच्छृताः । आयुष्याणिचशांत्यर्थंजप्यातत्रसमाहितइति । आयुष्याणिआनोभद्रादीनिसूक्तानि । तत्रेतियत्रमातृपूजायांवसोर्धाराकृताकातीयगृह्याद्यनुसारेणतत्रायमायुष्यसूक्तजपःकार्यः । अनेनैववसोर्धारायाअनित्यत्वंज्ञापितं । ब्रह्मांडे—स्वाहाशब्दंप्रयुंजीत स्वधास्थानेचबुद्धिमान् । वृद्धिश्राद्धेसदासव्यंयज्ञसूत्रंचकारयेत् । कुशस्थानेचदूर्वाःस्युर्मंगलस्याभिवृद्धयइति । आश्वलायनगृह्यपरिशिष्टेतु । आभ्युदयिकेयुग्माब्राह्मणाअमूलादर्भाःप्राङ्मुखेभ्यउदङ्मुखोदद्यादुदङ्मुखेभ्योवाप्राङ्मुखोद्वौदर्भौपवित्रइति । मंगलात्मकविवाहाद्यारंभेक्रियमाणनांदीश्राद्धेकुशस्थानेदूर्वाविधिः यज्ञाद्यारंभेतुक्रियमाणेअमूलदर्भविधिरिति व्यवस्थाबोध्या । युग्मत्वेपिनियममाहहेमाद्रौछागलेयः—एकैकस्यतुवर्गस्यद्वौद्वौविप्रौसमर्चयेत् । वैश्वदेवेतथाद्वौचन

---

[1] निगद्यते ।

प्रसज्येतविस्तरइति । भविष्ये । सर्वंप्रदक्षिणंकार्यंपूर्वाह्णेउपवीतिनेति । पूर्वाह्णेभोजयेद्विप्रानष्टौसर्वंप्रदक्षिणं । तथाचनवमंविप्रंचतुरस्रेखगोत्तमेतिच । चरणक्षालनकालेसमागतातिथिंक्षालनचतुरस्रदेशेभोजयेदित्येतदर्थमेतदितिहेमाद्रिः । अशक्तंप्रतिपक्षांतरंतत्रैव । नांदीमुखान्समुद्दिश्यपितॄन्पंचद्विजोत्तमान् । भोजयेद्विधिवत्प्राज्ञेति । अष्टानांस्थानेचत्वारः एकोतिथिःपूर्ववदधिकइत्यर्थः । वृद्धिश्राद्धेविश्वेदेवाःसत्यवसुसंज्ञकाः । कर्मांगनांदीश्राद्धेक्रतुदक्षसंज्ञकाः । इष्टिश्राद्धेक्रतुर्दक्षइतिवचनात् । इष्टिश्राद्धंकर्मांगश्राद्धमितिहेमाद्रिणाव्याख्यानात् । नचयोगानुसारेणेष्ट्यंगश्राद्धमित्येवव्याख्योचितेतिशंक्यं । प्रधानस्यर्द्धिनोंगत्वस्यप्रवेशेनैवोद्देश्यबुद्धिपर्यवसानेसतिइष्टिग्रहणस्यपंचावत्तैववपाकार्येत्यत्रवपाग्रहणस्येवाविवक्षितत्वात्। अतएव—निषेककालेसोमेचसीमंतोन्नयनेतथा । ज्ञेयंपुंसवनेश्राद्धंकर्मांगंवृद्धिवत्कृतमितिवाक्येपिनिषेकादिग्रहणमाधानाद्युपलक्षणार्थमितिपारिजातादयः । सोमशब्दस्तेषामुपलक्षणार्थइतिमदनरत्नादयः । अस्मिन्पक्षे पुत्रजन्मनिमित्तकेप्रधानभूतेनांदीश्राद्धेसत्यवसूनांगभूतौ । अन्येतुनिषेकादिशब्दानामुपलक्षणार्थतामन्याय्यांमन्यमाना निषेकादिगणितकर्मान्यकर्मांगनांदीश्राद्धेसत्यवसू गणितेषुक्रतुदक्षावित्याहुः । केषांकर्मणामारंभेकार्यमित्यपेक्षायांवह्वृचकारिकायामुक्तं । स्यादाभ्युदयिकंश्राद्धंवृद्धिपूर्तेषुकर्मसु । गर्भपुंसवसीमंतचौलोपनयनेष्विह । विवाहेचानलाधेयप्रभृतिश्राद्धकर्मसु । इदंश्राद्धंप्रकुर्वंतिद्विजावृद्धिनिमित्तकं । अन्यैःषोडशसंस्कारेश्रावण्यादिष्वपीष्यते । वाप्याद्युद्यापनादौतुकुर्युःपूर्तिनिमित्तकमिति । अन्यैरित्युक्तसंस्कारेभ्योन्येषुजातकर्मादिषुश्रवणाकर्मादिषुचतदनावश्यकमितिज्ञा

पनार्थं । कार्ष्णाजनिः—सीमंतोन्नयनेचैवपुत्रादिमुखदर्शने । नांदीमुखान्पितृगणान्पूजयेत्प्रयतोगृहीति । अत्रपुत्रादीत्यादिशब्दात्पौत्रस्यापिसंग्रहइतिनिर्णयामृते । अत्रविशेषंछंदोगपरिशिष्टेकात्यायनः—असकृद्यानिकर्माणिक्रियंतेकर्मकारिभिः । प्रतिप्रयोगंनैताःस्युर्मातरःश्राद्धमेवच । आधानसोमयोश्चैववैश्वदेवेतथैवच । बलिकर्मणिदर्शेचपूर्णमासेतथैवच । नवयज्ञेचयज्ञज्ञावदंत्येवमनीषिणः । एकमेवभवेच्छ्राद्धमेतेषुनपृथक्पृथगिति । अत्रप्रथमश्लोकोऽपराभ्यांआधानादीनांकेषांचिदेवावृत्तावपिनांदीश्राद्धंनावर्ततइत्येतत्परतयाव्यवस्थाप्यते । अतएवापस्तंबकल्पानुसारियाज्ञिकानांविच्छिन्नाधानेनांदीश्राद्धाचारश्चिंत्यः । केषांचित्प्रथमप्रयोगेपिनैतत्कार्यमित्यप्याहसः । नाष्टकासुभवेच्छ्राद्धंनश्राद्धेश्राद्धमिष्यते । नसोष्यंतीजातकर्मप्रोषितागतकर्मस्विति । अत्रद्वितीयःपादोहेतुवन्निगदतयाप्रथमशेषः । प्रसवात्पूर्वंविहितंकर्मसोष्यंतीकर्म । जातकर्मांगत्वेननिषेधस्तुछंदोगमात्रविषयस्तत्परिशिष्टगतत्वादितिसमयोद्योतस्तदापिवृद्धिनिमित्तकंपुरुषार्थंततःपूर्वंभवत्येव । वृद्धिश्राद्धजातकर्मादीनांस्वकालातिपत्तौसहैकस्मिन्दिनेचौलादिनासहक्रियमाणेषुतेषुनांदीश्राद्धंतंत्रेणकार्यमित्यपितत्रैवपरिशिष्टे । गणशःक्रियमाणेषुमातृभ्यःपूजनंसकृत् । सकृदेवभवेच्छ्राद्धमादौनपृथगादिष्विति । अत्रादौयज्जन्मनिमित्तंयच्चसंस्कारादिषुविहितंतत्सकृदेवकार्यं नपृथगित्यन्वयः । ततश्चपुत्रजनिनिमित्तंचौलांतसंस्कारांगंचनांदीश्राद्धंतंत्रेणकरिष्येइतिसंकल्पः । यद्यपिवृद्धवसिष्ठेन—नांदीमुखेविवाहेचप्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्तयेद्विद्वानन्यत्रपितृपूर्वकमित्युक्तम् । स्मृत्यर्थसारेपि वृद्धमुख्याश्चपितरोवृद्धिश्राद्धेषुभुंजतइति । नतदाश्वलायनशा

खिभिरनुसर्तव्यं । मातापितामहीचैवतथैवप्रपितामही । पित्रादयस्त्रयश्चैवमातुःपित्रादयस्त्रयः । एतेनवार्चनीयाःस्युः पितरोभ्युदयेद्विजैरित्याश्वलायनस्मृतिवशेनमात्रादीनामनुलोमक्रमप्रतीतेर्बह्वृचैरनादरणीयंतदितिपारिजातोक्तेः । एवं पित्रर्थेविप्रेभ्यःप्रदायार्घ्यंयथाविधि । पितामहार्थेविप्रेभ्योदत्वार्घ्यंचयथापुरा । प्रपितामहशब्दादिमिदंतेर्घ्यमितीरयेदितिपारिजातोदाहृतभगवत्स्मृतौचअर्घ्यदानक्रमप्रतीतेः । प्रपितामहसंयुक्तंमंत्रमुक्त्वातमेवतु । तदर्थमुपविष्टेभ्यस्तृतीयं सकृदेवत्वितिकारिकोक्तेश्च । उक्त्वापितरिदंतेर्घ्यमितिपित्रेर्घ्यमानयेदित्युक्त्वा शौनकेन एवमेवार्घ्यदानंतुकुर्यादुत्तरयोर्द्वयोरित्युक्तेश्च । एवमेवजयंतोक्तेश्च ॥ ॥ अथजीवत्पितृकस्यसंस्कर्तुंनांदीश्राद्धनिर्णयः ॥ तत्रकात्यायनः—वृद्धौतीर्थेचसंन्यस्तेतातेचपतितेसति । येभ्यएवपितादद्यात्तेभ्योदद्यात्स्वयंसुतइति । गृह्यपरिशिष्टेतुनांदीश्राद्धंप्रकृत्योक्तं—महत्सुपूर्वेद्युस्तदहरल्पेषुतदिदमेकेमातृणांपृथक्कुर्वंतिअथपितृणांअथमातामहानामितित्रितयमिच्छंति तस्माज्जीवत्पितासुतसंस्कारेषुमातृमातामहयोःकुर्यात्तस्यांजीवंत्यांमातामहस्यैवकुर्यादिति । महत्सुउपनयनादिषु । अल्पेषुपुंसवनादिषु । पृथग्दिनभेदेनपूर्वाह्णादिकालभेदेनवा त्रितयंश्राद्धत्रयंभिन्नप्रयोगमित्याशयः । तथाचगार्ग्यः—मातृश्राद्धंतुपूर्वेद्युःकर्माहनितुपैतृकम् । मातामहंचोत्तरेद्युर्वृद्धौश्राद्धत्रयंस्मृतमिति । तथाचशातातपः—पूर्वाह्णेमातृकंश्राद्धंमध्याह्नेपैतृकंतथा । ततोमातामहानांचवृद्धौश्राद्धत्रयंस्मृतमिति । एकेइच्छंतीतिपरिशिष्टोक्त्यासहप्रयोगःस्वाभिमतत्वेनसूचितः । उक्तश्चानुकल्पत्वेनवृद्धमनुना । अलाभेभिन्नकालानांनांदीश्राद्धत्रयंबुधः । पूर्वेद्युर्वैप्रकुर्वीतपूर्वाह्णेमातृपूर्वकमिति । एवंजीवत्पि

तृकंप्रत्यपितीर्थइवश्राद्धत्रयप्राप्तौविषयविशेषेऽपवादार्थमुच्यतेतस्मादिति । तत्रपार्वणद्वयेनैवनांदीश्राद्धफलसिद्धिरित्याशयः । एवंजीवन्मातृपितृकस्यमातामहश्राद्धेनैवतत्सिद्धिरित्याशयेनोक्तंतस्यामित्यादि । एतच्चोपलक्षणार्थं जीवत्पितृमातामहस्यमातृपार्वणेनैतत्सिद्धिरित्यपिबोध्यम् । यद्वर्गाद्योजीवतितत्पार्वणातिरिक्तपार्वणानुष्ठानेनांदीश्राद्धफलसिद्धिरित्यत्रतात्पर्यस्यवाक्यभेदभयेनतस्मादित्यादिग्रंथेस्वीकर्तुमुचितत्वात् । एवंचसतिमृतपितृकजीवन्मातृमातामहस्यपितृपार्वणमात्रेणनांदीश्राद्धसिद्धेःसाधकतयासकलदाक्षिणात्यस्वीकृतेन—पितृवर्गेमातृवर्गेतथामातामहस्यच । जीवेत्तुयदिवर्गाद्यस्तंवर्गंतुपरित्यजेदितिशास्त्रेणसंवादलाभात् । एवंसति येभ्यएवपितादद्यादितिशास्त्रेणपितुःपितृपार्वणंपरिशिष्टबलेनचस्वमात्रादिपार्वणंसमुच्चयेनकार्यमित्यत्यंतानुचितं परिशिष्टस्वरसविरोधात् । तस्यांजीवत्यांमातामहस्यैवकुर्यादितिपारिजाताद्यनेकग्रंथसंमतपाठेएवकारविरोधाच्च।नगिरागिरेतिब्रूयादितिवदर्थप्राप्तेतरनिवृत्त्यनुवादतयातत्स्वीकारेणात्रह्येवावपंतीतिवत्श्रौतपरिसंख्यांगीकारगौरवस्याप्यनापत्तेश्च तंवर्गंतुपरित्यजेदितिशास्त्रविरोधाच्च । येभ्यएवेतिशास्त्रस्यपरिशिष्टस्यचपारिजातोक्तव्यवस्थाविरोधापत्तेश्च । तथाहि तत्रोक्तपरिशिष्टमुदाहृत्यतत्संवादितया—सपितुःपितृकृत्येषुअधिकारोनविद्यते । नजीवंतमतिक्रम्यकिंचिद्द्यादितिश्रुतिरितिकातीयवचनमुदाहृत्य पितृकृत्येषुपितामहादिसंबंधिषुश्राद्धेष्वित्यर्थइतिव्याख्याय केषुचिदेतदपवादत्वेन—उद्वाहेपुत्रजननेपित्र्येष्ट्यांसौमिकेमखे । तीर्थेब्राह्मणआयातेषडेतेजीवतःपितुरितिमैत्रायणीयपरिशिष्टमुदाहृतं तदधिकारेच येभ्यएवपितादद्यात्तेभ्योदद्यात्स्वयंसुतइत्येतत्समा

नार्थाविष्णुस्मृतिरुदाहृता पितरिजीवतियःश्राद्धंकुर्यात्सयेषापिताकुर्यात्तेषांकुर्यात्पितरिपितामहेचयेषांपितामहइति । ततश्चबह्वृचपरिशिष्टस्यसुतसंस्कारविषयत्वान्नजीवंतमतिक्रम्येत्येतद्विषयं मैत्रपरिशिष्टस्यतुतदतिरिक्तविषयत्वाद्येभ्यएव पितादद्यादित्येतद्विषयमित्येवंव्यवस्थाप्रतीयतइतिवार्त्रघ्नीवृधन्वत्योरिवसमुच्चयासंभवः । नचमैत्रपरिशिष्टस्यसुतसंस्कारविषयत्वमस्तीतिशंक्यम् । उद्वाहशब्दस्यकर्तुर्द्वितीयविवाहपरत्वात् । नांदीश्राद्धंपिताकुर्यादाद्येपाणिग्रहेबुधः । अतऊर्ध्वंप्रकुर्वीतस्वयमेवतुनांदिकमितिवचनात् । नचपुत्रजनननिमित्तकमितिसंस्कारांगं । तीर्थइवतत्रापिपुरुषार्थस्यैवविधानात् । नचजीवद्वर्गत्रयाद्यस्यसुतसंस्कारेष्वपियेभ्यएवपितादद्यादित्येतत्स्वीकारआवश्यकइतिशंक्यम् । पितरिपितामहेप्रपितामहेचजीवतिनैवकुर्यादितिविष्णूक्तरीत्यालोपस्यौचित्यप्रतीतेः । एतदपवादमप्यनंतरंवक्ष्यामः । यत्तुपारिजातोक्तव्यवस्थादूषणायस्मृतिरत्नावल्यामुक्तं बह्वृचपरिशिष्टस्यबह्वृचविषयत्वान्मैत्रायणीयस्यतच्छाखिविषयत्वान्नव्यवस्थांतरंकल्पनीयमिति तन्न । आश्वलायनपरिशिष्टेसुतसंस्कारेष्वितिश्रवणात् परिशिष्टांतरेचतद्भिन्नकर्मणामेवश्रवणात् कर्मभेदेनव्यवस्थायाअकल्प्यत्वात् शब्दानांरूढशाखाभेदव्यवस्थाकल्पनस्यैवान्याय्यत्वात् होकालाधिकरणन्यायबाधितत्वाच्च । यत्तुपारिजाते—नाजीवतःपितुःकुर्याच्छ्राद्धमग्निमृतेद्विजः । येभ्यएवपिताकुर्यात्तेभ्यःकुर्वीतसाग्निकः । पितामहेप्येवमेवकुर्याज्जीवतिसाग्निकः । साग्निकोपिनकुर्वीतजीवतिप्रपितामहइतिसुमंतुवचनान्मैत्रायणीयपरिशिष्टोक्तविषयेष्वपिजीवत्पितृकस्यसाग्नेरेवाधिकारोननिरग्नेरितिप्रतिपादितं तदुद्वाहपुत्रजनननिमित्तकनांदीश्राद्धव्यतिरिक्ततीर्थ

श्राद्धादिविषयं । अनग्निकोपिकुर्वीतजन्मादौवृद्धिकर्मणि । येभ्यएवपितादद्यात्तानेवोद्दिश्यपार्वणमित्याचारमदनरत्नोदाहृतहारीतवचनेनसुमंतुवाक्यापवादात् । साग्निरत्रश्रौताग्निमान्स्मार्ताग्निमांश्च । तदितरोनिरग्निरित्यपितत्रैवोक्तम् । अतश्चनिरग्नेर्जीवत्पितृकस्यतीर्थश्राद्धादौनाधिकारइतिसिद्धम् । यत्तुतत्रैवोक्तम्—येभ्यएवपितादद्यादित्यत्रयेभ्यइतिपितुःपित्रादयएवपरामृश्यंतेनतुमात्रादयोमातामहादयश्च।नजीवंतमतिक्रम्यकिंचिद्द्यादित्यादिशास्त्रेणतावत्पितृपार्वणमेवनिषिध्यते तत्रैवजीवतोतिक्रमसंभवात् प्रमीतस्वमात्रादिकेनस्वमात्राद्युद्देशेनश्राद्धकरणेतदभावात् प्रतिप्रसवार्थस्यचयेभ्यइतिशास्त्रस्यनिषेधसमानविषयत्वौचित्यात्।किंचयेभ्यइत्युक्तवाक्येपितुर्मात्रादिग्रहणेतत्समानार्थेविष्णुवाक्येपितदापद्येत।तच्चेत्थंपठ्यते।पितरिजीवतियःश्राद्धंकुर्यात्सयेषांपिताकुर्यात्तेषांकुर्यात्पितरिपितामहेचजीवतियेषांपितामहः पितरिपितामहेप्रपितामहेचजीवतिनैवकुर्यात् यस्यपिताप्रेतःस्यात्सपित्रेपिंडंनिधायपितामहात्परंद्वाभ्यांदद्यात्[१]। मातामहानामप्येवंश्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः।मंत्रोहेनयथान्यायंशेषाणांमंत्रवर्जितमिति।अत्रचप्रमीतमातृमातामहोपिजीवत्पितृकःपितुःपित्रादीनिवतदीयानेवमात्रादीन्मातामहादींश्चोद्दिश्यश्राद्धंकुर्यादितिचेत्प्रथमवाक्येविवक्षितार्थःस्यात्तदायेषांपितामहःकुर्यात्तेषांकुर्यादितिसानुषंगेद्वितीयवाक्येतथैवविवक्षापद्येत । ततश्चस्वीयानांमात्रादीनांमातामहादीनां

---

[१] यस्यपितापितामहश्चप्रेतौस्यातांसताभ्यांपिंडंदत्त्वापितामहप्रपितामहायदद्यात् । यस्यपितामहःप्रेतःस्यात्सतस्मैपिंडंनिधायप्रपितामहात्परंद्वाभ्यांपिंडंदद्यात् ।

पितुर्मात्रादीनामातामहादीनांचप्रमीतानांपरित्यागेनपितामहस्यमात्रादीन्मातामहादींश्चोद्दिश्योद्वाहपुत्रजननादौजीवत्पितृपितामहस्यश्राद्धानुष्ठानमापद्येत । तथामातामहानामप्येवमित्यतिदेशात्जीवन्मातामहस्यस्वीयानांपैतृकाणांपैतामहानांचमात्रादिमातामहादीनांचप्रमीतानांपरित्यागेनमातामहस्यमात्रादीन्मातामहादींश्चोद्दिश्य तदनुष्ठानंस्यादिति प्रथममेववाक्यंपितुःपित्रादिपार्वणस्यैवप्रापकमितिस्वीकृत्य जीवत्पितृकस्तेनसहस्वीयानामेवमात्रादीनांमातामहादीनांचश्राद्धंकुर्यादितिस्वीकर्तुमुचितमिति । तन्न । यतोयेभ्यएवपितादद्यादीदृशार्थकानांविष्णुस्मृत्यादिवाक्यानांप्रतिप्रसवत्वंतदैवघटते यदानजीवंतमतिक्रम्येत्यादीनांजीवत्पितृकंप्रतिपितुःपित्राद्युद्देश्यकपार्वणनिषेधपरत्वंभवति । नचैतत् प्रतिप्रसवत्वाभिमतवाक्यभिन्नस्यतादृशपार्वणप्रापकस्यनिषेधापेक्षितस्याभावात् तत्तच्छ्राद्धविधिषुपित्रादिशब्दानांससंबंधिकत्वमहिम्नाकर्तुःपित्रादीनामेवप्रतीत्यास्तैस्तादृशपार्वणप्राप्तेरनाशंक्यत्वात् निषेधस्यचप्रेतेभ्यएवनिपृणीयादिति पितृयज्ञप्रकरणस्थाश्वलायनोक्तितुल्यप्रवृत्तिकेन—जीवमानेनदेयंस्याद्यस्माद्भरतसत्तम । तस्माज्जीवत्पिताकुर्याद्वाभ्यामेवनसंशयइतिभविष्यपुराणवचनेनप्राप्तस्यमृतपुंद्वयमात्रोद्देश्यकप्रदानस्यनिषेधकतयोपपत्तेः । शक्यतेचहारीतवचनस्यानग्निकंप्रतिमात्रादिपार्वणविषयेपिप्रतिप्रसवत्वंवक्तुमनायासेनतस्यापिवृद्धितीर्थादौमैत्रायणीयप्राप्तस्यसुमंतुवचनेन निषिद्धत्वात् । यत्तु जीवत्पितृपितामहेनपितामहमात्राद्युद्देशेनश्राद्धंस्यादित्युक्तंतन्नानिष्टं । पितुर्मात्राद्युद्देशेनेवतदुद्देशेनापिप्रमाणसिद्धस्यतदनुष्ठानस्यस्वीकर्तुमुचितत्वात् । यत्तु मातामहानामप्येवमित्यतिदेशमूलकर्मनिष्ठापादनंतत्तदर्था

ज्ञानविजृंभितं । अत्रहिमातामहानांश्राद्धंपितृपार्वणवत्कर्तव्यमुचितमंत्रोहयुक्तमित्यतिदिश्यते इत्थमतिदेशेनचयथाविसर्जनांतान्यंगान्यतिदिश्यंतेतथाव्यवहितपूर्वग्रंथोक्तक्रमेणैकद्यादिजीवननिमित्ताद्युत्क्रममरणनिमित्ताच्चपितृपार्वणगतादेवताव्यवस्थापिअंगत्वाविशेषात् । नचैवंमात्रादिश्राद्धंपितृपार्वणांगंयेनातिदिश्येत । नचविष्णुस्मृतिव्याख्यातारोपिमातामहानामप्येवमितिवचसइतरेतिकर्तव्यतातिदेशपरतामिवोक्तविधदेवताव्यवस्थातिदेशपरतांमन्यमानाअपिमात्रादिपार्वणातिदेशपरतांमन्यंते । मन्यंतेचसयेषांपिताकुर्याद्येषांपितामहइत्यनयोर्मात्रादिमातामहादिपार्वणगोचरतामपि । युक्तंचैतद्येषामितियच्छब्देनपितृकर्तृकश्राद्धोद्देश्यतायाःपुत्रकर्तृकश्राद्धोद्देश्यत्वव्याप्यत्वप्रतीतेः । यद्यत्कृतकंतदनित्यमितिवद्येभ्यएवपितादद्यादितियच्छब्दोपबद्धैवकारेणवीप्साप्रतीतेश्च—यमेवधार्तराष्ट्रंतुभीमसेनोऽभ्यवेक्षते । क्षणमात्रेणतंहंतिव्याघ्रोमृगगणंयथेतिवत् । अतोयेभ्यएवपितादद्यादीदृशशास्त्रानुसारिण्यनुष्ठानेपितृकर्तृकश्राद्धोद्देश्यपितृमातृमातामहाद्युद्देश्यकश्राद्धत्रयस्यकर्तव्यत्वान्नपुत्रेणात्मीयमात्राद्युद्देशेनश्राद्धसंभवः । नचाश्वलायनपरिशिष्टानुसारिण्यनुष्ठानेपितुःपित्राद्युद्देशेनतत्संभवइतिप्रागेवावेदितं । अतस्तदुभयार्थसमुच्चयोक्तिःसाहसमात्रं । सत्यपिविष्णुस्मृतेःसुतसंस्कारसाधारण्येआश्वलायनशाखिभिस्तत्परिशिष्टोक्तएवपक्षःसंभवेकर्तुमुचितः । वह्वल्पंवास्वगृह्योक्तमितिस्मृतेःकुलपरंपरायातत्वेनयदितच्छाखिनोपिविष्णुस्मृत्युक्तमाचरंतिआचरंतु नतूक्तसमुच्चयःपरंपरायातोस्ति । एवंचजीवत्पितृमातामहेनयदामातृपार्वणमात्रेणनांदीश्राद्धसिद्धिरंगीक्रियतेनतत्रदेवाअपिश्राद्धहेमाद्रिसमुदाहृतेन नित्यश्राद्धमदैवंस्या

देकोद्दिष्टंतथैवच । मातृश्राद्धंतुयुग्मैःस्याददैवंप्राङ्मुखैःपृथगितिवचनेनपूर्वाह्णादिकालभेदेनपार्वणत्रयानुष्ठानपक्षेपार्वणांतरासाहित्येनक्रियमाणेमातृश्राद्धइवोक्तविधमातृश्राद्धेपितादृशेअदैवत्वबोधनात् । नांदीश्राद्धमात्रेपिचविश्वेदेवाःकृताकृताः । विश्वेदेवविहीनंतुकेचिदिच्छंतिमानवाः । युग्माश्चात्रद्विजाःकार्यास्तेपूज्याश्चप्रदक्षिणमितितत्रैवमार्कंडेयवचनादित्यलम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथसुतसंस्कारेप्रवासादिनापितृकर्तृकत्वासंभवनिमित्तककर्त्रंतरंप्रतिनांदीश्राद्धदेवतानिर्णयः । पारिजातेकात्यायनः— स्वपितृभ्यःपितादद्यात्सुतसंस्कारकर्मसु। पिंडानोद्वाहनात्तेषांतस्याभावेतुतत्क्रमादिति। ओद्वाहनात्प्रथमविवाहमभिव्याप्यसुतसंस्कारकर्मसुपितास्वपितृभ्यःपिंडान्दद्यात्तदुपलक्षितंवृद्धिश्राद्धंकुर्यात्तस्यपितुःप्रवासादिनाभावेतेष्वेवकर्मसुतन्निमित्तःपितृसंनिधिनिमित्तोयोधिकारिक्रमःअसंस्कृतास्तुसंस्कार्याभ्रातृभिःपूर्वसंस्कृतैरितिशास्त्रावगतः तेनक्रमेणतेषांपूर्वसंस्कृतानांमध्येज्येष्ठभ्रात्रादिःकुर्वन्स्वपितृभ्योदद्यात् । समावर्तनस्यापिविवाहात्प्राचीनसुतसंस्कारत्वाज्जीवत्पितृकसमावर्तनेपितास्वपितृभ्योदद्यात् । अजीवत्पितृकस्तुपूर्वसंस्कृतभ्रात्रसंभवेस्वयमेवस्वपितृभ्योदद्यात् । उपनयनेनकर्माधिकारसत्वाद्विवाहेप्येवमेवद्रष्टव्यमितिपारिजातेव्याख्यातं । अत्रचपितुर्जीवत्पितृकस्याजीवत्पितृकस्यचज्येष्ठभ्रात्रादेश्चतथाद्विविधस्यशास्त्रांतरेश्राद्धीयदेवतात्वेनयेवगताःपित्रादयोमात्रादयोमातामहादयश्चतेषामेवस्वपितृभ्यइतिनिर्देशः स्वेज्यत्वस्यषष्ठ्यर्थत्वात् । जीवत्पितृकेनस्वजनकाद्युद्देश्यकश्राद्धानुष्ठानस्यबाधितत्वात् । अतएवसमावर्तनस्यमाणवकक

तृंकत्वेपितदंगभूतनांदीश्राद्धेपितुस्तदभावेज्येष्ठभ्रात्रादेरप्राप्तकर्तृत्वप्रापणादिनावचनस्यार्थवत्त्वमित्याशयेनतदुपन्यासइतिबोध्यम् । अजीवत्पितृकइतिचजीवदसंनिहितपितृकस्याप्युपलक्षणम् । स्वपितृभ्यइतिचपूर्ववत् । आद्यस्येज्याजनकादयएव परस्यपितुर्जनकादयएव नत्वाश्वलायनपरिशिष्टोक्तरीत्यापितृपार्वणत्यागेनमात्रादयः । समावर्तनस्यात्मसंस्कारत्वेनसुतसंस्कारत्वाभावात् । हेमाद्रिणात्वक्षरारूढ्यप्राप्तविधिंदर्शयितुंव्याख्यांतरमकारि । पित्रभावेअन्योयःकश्चित्संस्कारंकुर्यात् सतंकुमारपितरमारभ्यसंस्कार्यस्यपितृणांयःक्रमस्तेनक्रमेणदद्यात् नतुस्वीयेभ्यःपितृभ्यः । तस्मात्पितृव्याचार्यमातुलादयःसंस्कार्यस्योपनेयादेरेवपितृभ्यःश्राद्धंदद्युः नस्वपितृभ्यइत्यत्रपारमार्थिकःपक्षोविधीयते । अन्यथास्वपितृभ्यइत्यस्यानुषंगकल्पनायाअन्याय्यत्वात्पितृव्यादीनामपिपितृवत्स्वपितृभ्योदानाविशेषेस्वपितृभ्यःपितादद्यादित्यस्यानर्थक्यापत्तेःपितुःपितृव्यादिषुवैलक्षण्यद्योतकतुशब्दानुपपत्तेः । उपनेयस्यप्रदेयकन्यायाश्चामुख्याधिकारित्वेनतदीयपित्रादीनामिज्यत्वौचित्याच्च । महार्णवोदाहृतेगर्भाष्टमेवर्षेब्राह्मणआत्मानमुपनाययेदित्यादिबुधस्मृत्यादिवाक्येणिजंतमुपनायनशब्दंव्याचक्षाणैरपरार्कादिभिरुपपादितंचोपनेयकन्ययोरेवोपनयनादौमुख्याधिकारित्वमिति । अयमेवप्रकारःपितृव्यकर्तृकविवाहेबोध्यः ।नचतत्रमानाभावः ।पित्रभावेनामकरणेकर्त्रंतरप्रापकशंखस्मृतौअन्योवाकुलवृद्धइत्यस्यनामकरणप्रभृतिसंस्कारविषयतायाहेमाद्रिणैवोक्तत्वादिति । अत्रापिपित्रभावोद्वेधा मरणेनप्रवासादिनावा । पितरमारभ्येत्यपिइज्यत्वेनइज्योपलक्षणत्वेनवा ।संस्कार्यस्येतिषष्ठीक्रमनिरूपितसंबंधार्था ।संस्कार्यंप्रतिसमावर्तनादौइज्यदेव

ताक्रमोयोविहितइत्यर्थः । अतएवेज्यत्वमुपनेयादेरितिषष्ठ्यर्थः । ततश्चाजीवत्पितृकस्योपनयनंकुर्वन्मातुलादिस्तदीयजनकादीनुद्दिश्यैवकुर्यांजीवत्पितृकस्यतुजनकस्यजनकादीन् नतुपरिशिष्टानुसारेणकेवलान्प्रमीतानपिसंस्कार्यमात्रादीन् । संस्कार्यंप्रतिस्वसंस्कारेसमावर्तनादौकर्तव्येतासामुक्तिरीत्येज्यत्वाप्राप्तेः । अतउपनयनेसमावर्तनइवसंस्कार्यस्यैवयद्यधिकारःस्यात्तदासंस्कार्यस्यनांदीश्राद्धदेवतायाऔचित्यायतास्ताएवोद्दिश्यमातुलादिर्नांदीश्राद्धंकुर्यादितितात्पर्यार्थः । इतिपित्रन्यकर्तृकनांदीश्राद्धदेवतानिर्णयः ॥ ॥ श्रौतस्मार्ताधानातिरिक्तविषयंचनांदीश्राद्धंपूर्वाह्णेकार्यम् । पार्वणंचापराह्णेतुप्रातर्वृद्धिनिमित्तकमितिशातातपोक्तेः । पूर्वाह्णेवैभवेद्वृद्धिरित्यत्रिवचनाच्च आधानांगंत्वपराह्णे । आमश्राद्धंतुपूर्वाह्णेसिद्धान्नेनतुमध्यतः । पार्वणंचापराह्णेस्याद्वृद्धिश्राद्धंतथाह्निकमितिगालववचनात् । इदंचाधानपूर्वदिने वौधायनोक्तनांदीश्राद्धविषयम् । आपस्तंबसूत्रानुसारिणांतुयत्संभारस्पर्शोत्तरंभाष्यकारादिभिरुक्तंतत्पूर्वोत्तरपदार्थैर्निबद्धक्रमत्वान्नपृथक्कालमपेक्षतइतिनतद्विषयम् । पुत्रजन्मनिमित्तकश्राद्धेपिनप्रातःकालनियमः । नियतेषुनिमित्तेषुप्रातर्वृद्धिनिमित्तकं । तेषामनियतत्वेतुतदानंतर्यमिष्यतइतिलौगाक्षिवचनात् । अत्रपिंडदानंकुलधर्मानुसारेणवैकल्पिकम् । पिंडनिर्वपणंकुर्यान्नवाकुर्यान्नराधिप । वृद्धिश्राद्धेमहावाहोकुलधर्मानवेक्ष्यत्वितिभविष्योक्तेः । पिंडदाने विशेषः शाल्यन्नंदधिमध्वक्तंवदराणियवांस्तथेतिप्रकृत्यस्मृत्यंतरेउक्तः–द्राक्षामलकमूलानियवांश्चविनियोजयेत् । तान्येवदक्षिणार्थंतुदद्याद्विप्रेषुसर्वदेति । ब्राह्मणभोजनसमयेजपविशेषोब्रह्मपुराणे–पठेच्छकुनिसूक्तंतुस्वस्तिसूक्तंशुभंतथेति ।

संग्रहे—शुभायप्रथमांतेनवृद्धौसंकल्पमाचरेदिति।कारिकायांसंबंधनामगोत्राणिवर्जयेदत्रकर्मणीति ।चंद्रोदये—मालत्याशतपत्र्यावामल्लिकांकुरयाअपि । केतक्याःपाटलायावादेयामालानलोहिताइति । सुवेषभूषणैस्तत्रसालंकारैस्तथानरैः । कुंकुमाद्यनुलिप्तांगैर्भाव्यंतुब्राह्मणैःसहेतिच । वृद्धिश्राद्धारंभेश्राद्धीयात्पाकात्पाकांतरेणवैश्वदेवःसर्वैःकार्यः । आदौवृद्धौक्षयेचांतेमध्येदर्शेतुपार्वणे । एकोद्दिष्टेनिवृत्तेतुवैश्वदेवोविधीयतइतिसांख्यायनपरिशिष्टात् । अस्यबह्वृचैःपठ्यमानस्यापिहोलाकाधिकरणन्यायेनसर्वसाधारण्यात् । यत्तुश्राद्धहेमाद्रौ—शेषमन्नमनुज्ञाप्यवैश्वदेवक्रियांततः । श्राद्धाहिश्राद्धशेषेणसकलंतुसमाचरेदितिचतुर्विंशतिमतादंतेवैश्वदेवाचरणमुक्तं तच्छ्राद्धसामान्यविषयत्वाद्विशेषशास्त्रानुरोधेनाशक्तंप्रत्यनुकल्पभूतपक्षांतरविधायकम् । अनेनैवाशयेनश्राद्धसामान्यपुरस्कारेणैवकालहेमाद्रावपीदृशोपन्यासाच्च । तथाचोक्तंदीपिकायाम्—भिन्नान्नेनतुवैश्वदेविकमनुश्राद्धंचरेत्साग्निकःपश्चाद्भूतमखाद्यनग्निकजनस्त्वग्नौकृतेर्वोत्तरम् । स्वस्त्युक्तेर्विकिरस्यचांतरुततत्पाकांतरेणाचरेद्देवाख्यंमखमंततःपितृयजेःस्याद्भूतयज्ञोथवा।श्राद्धान्नेनतदंतएवसकलंस्याद्वैश्वदेवादिकमिति । अत्रसकलंसाग्निककर्तृकंनिरग्निककर्तृकंच । नचपूर्वोक्तेनसहतुल्यविकल्पः । पक्षांतंकर्मनिर्वर्त्यवैश्वदेवंचसाग्निकः । पिंडयज्ञंततःकुर्यात्ततोन्वाहार्यकंबुधइत्याद्यनेकविशेषशास्त्रविरोधात् । पितृमात्राद्युद्देशेननांदीश्राद्धेपितुर्मातापितामहीचेतिपाठः । लुप्तपार्वणविषयश्लोकैकदेशलोपः । केवलमातृपार्वणकरणेएताभवंतुमेप्रीताइत्यूहः । सूक्तवाकवदिष्टदेवतासंस्कारार्थत्वाच्छ्लोकपाठस्येतिनांदीश्राद्धनिर्णयः ॥

## ॥ अथमातृकापूजनादिनांदीश्राद्धप्रयोगः ॥

गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया । देवसेनास्वधास्वाहामातरोलोकमातरः । धृतिःपुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनःकुलदेवता । ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा। वाराहीचतथैंद्राणीचामुंडाःसप्तमातरः । गौर्यादिषोडशमातृर्ब्राह्म्यादिसप्तमातृश्चएतेष्वक्षतपुंजेष्वावाहयामि । ॐभूर्भुवःस्वःमातृभ्योनमइतिनाममंत्रेणध्यानादिदक्षिणासमर्पणांतांपूजांकृत्वा गौरीर्मिमायसलिला० परमेव्योमन् मंत्रपुष्पंसमर्पयामि । इतिमातृकापूजनम् ॥ ॥ अथनांदीश्राद्धम् । सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यंस्वाहानमइयंचवृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामह्यः नांदीमुखाःभू० इदंवःपाद्यं० । पितृपितामहप्रपितामहाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंवःपाद्यं० । मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहाःपत्नीसहिताःनांदीमुखाःभूर्भुव० रिदंवःपाद्यंस्वाहा० । ततःपूर्ववत्सत्यवसुसंज्ञकाइत्यादिआसनगंधाद्युपचारकल्पनंस्वाहानमइयंचवृद्धिः । एवंमातृपितामहीप्रपितामह्यः पितृपितामहप्रपितामहाः एवंमातामहइत्यादि । गौर्यादिषोडशमातरःब्राह्म्यादिसप्तमातरश्चवःयुग्मब्राह्मण० पुनःसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वःइदंदास्यमानंवोयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नमामंवायथाशक्तिसोपस्करंहिरण्यंवास्वाहानमइयंचवृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामह्यःनांदीमुखाःभू० दास्यमानमित्यादि० । पितृपितामहप्रपितामहाःनांदीमुखाःभूर्भुवःस्वः०दास्यमानमित्यादि० । एवंमातामह० सपत्नीकाइत्यादि । उपास्मैगा० ५ अक्षन्नमीमदंत० १ कृतस्यनांदीश्राद्धस्यपूर्णतासिद्ध्येद्राक्षामलकंतत्प्रतिनिधित्वेनद्रव्यंवादक्षिणात्वेनस्वाहानम० । इदंचश्राद्धीयान्नादिप्रतिग्रहीतृभ्योदेयम् । प्रजापतेनत्वदेतानीतिमंत्रंजप्त्वा अनेननांदीश्राद्धे

ननांदीसुखदेवताःप्रीयंताद्वृद्धिः । मातापितामहीचैवतथैवप्रपितामही । पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामहः । मातामहस्तत्पिताचप्रमातामहकादयः । एतेभवंतुमेप्रीताःप्रयच्छंतुच[1]मंगलम् । इळामग्नेपुरुदंसं० १ इतियथाचारंमुद्रापात्रसंघट्टनेनशब्दंकुर्यात् । ततःउत्तिष्ठब्रह्मणस्पते० १ अभ्यारमि० १ यांतुदेवगणाःसर्वे० इत्यादिवैदिकपौराणमंत्रैरावाहितदेवताउत्थापयेत् । विश्वेदेवागर्भाधानेदक्षक्रतुसंज्ञकाः । ततोग्निध्यानादौकृतेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेप्रजापतिंचरुणाविष्णुंषड्वारंप्रजापतिंचाज्येनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिप्रणीतानिधानांते प्रजापतयेत्वाजुष्टंनिर्वपामिप्रोक्षामीतिनिर्वापप्रोक्षणाद्यद्भ्यर्चनांते पत्न्यन्वारब्धइध्माधानाद्याज्यभागांतंकृत्वा चरुमवदानधर्मेणावदायान्वारब्धःसव्यपाणिमूर्ध्वांगुलिंहृदयेनिधायप्रजापतयेस्वाहेत्याहुतिंहुत्वाप्रजापतयइदंनममेतित्यजेत् । ततोविष्णुर्योनिमितितिसृणांत्वष्टाविष्णुरनुष्टुप् गर्भाधानप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॐ विष्णुर्योनिंकल्पयतु० स्वाहा विष्णवइदं० ३ । नेजमेषेतितिसृणांत्वष्टाविष्णुरनुष्टुप् गर्भाधानप्रधानाज्य० ॐ नेजमेषपरापत० स्वाहा विष्णवइदं० ऋचः ३ । यद्यप्यनुक्रमण्यनुसारेणविष्णुर्योनिमित्यादिहोमेषुलिंगोक्त[2]त्वष्ट्रादिदेवताउचिताः तथापिपारिजातादिग्रंथैःसकलशिष्टाचारैश्चानादृताइतिमयापिनादृताः । प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् गर्भाधानप्र० ॐ प्रजापतेन० स्वाहा प्रजापतयइदं० । अन्वारब्धएवैवंसमाज्याहुतीर्हुत्वापत्न्यामूर्धानंदक्षिणपाणिनाभिमृशेत् ।अपनःशोशुचदघमितिसूक्तस्यकुत्सोग्निर्गायत्रीमूर्धाभिमर्शनेवि० ॐ अपनः

---

१ सुमंगलंपा. २ त्वाष्ट्रादि, विष्ण्वादि ।

शोशुचदघ० इतिसूक्तांतेमूर्ध्निहस्तंनिधायततस्तमपसार्ययाःफलिनीरितिजपेत्। याःफलिनीरित्य[1]स्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् जपेविनि० ॐ याःफलिनीर्या० १। ततोग्नेर्वायव्यदिशितिष्ठन्नुपतिष्ठते। वधेनदस्युमितिषण्णांवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अभ्युपस्थानेवि० ॐ वधेनदस्युंप्रहिचातयस्व० ६ ऋचः । अग्निस्तुविश्रवस्तममितिद्वयोर्वसूयवोग्निरनुष्टुप् अभ्युपस्थानेवि० ॐ अग्निस्तुविश्रवस्तमं० ऋचः २। ततःसूर्योपस्थानंकृत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् परिशिष्टस्वारसिकप्रतीतेः। परिशिष्टान्मूर्धालंभात्पूर्वंवासूर्योपस्थानं। होमशेषंसमाप्यसूर्योपस्थानमितिवृद्धाः। सूर्योनोदिवस्पात्वितिपंचर्चस्यसूक्तस्यचक्षुःसूर्योगायत्रीसूर्योपस्थानेवि० ॐ सूर्योनोदिवस्पातु० ऋचः ५ इतिसपत्नीकःसूर्यमुपस्थायब्राह्मणान्शतंदशत्रीन्वाभोजयित्वातदाशिषोगृहीत्वाभुक्त्वानुकूलनिशायांकृतनित्यक्रियःस्वलंकृतःस्वलंकृतयापत्न्यासहस्वलंकृतंगृहंप्रविशेत् । तत्रपर्यंकारूढस्तांशुभेमुहूर्तेपर्यंकमारोप्यसूक्ष्मवस्त्रेणाश्वगंधाकल्कंसंवेष्ट्य । उदीर्ष्वेतिद्वयोःसूर्यासावित्री सूर्यासावित्रीआद्यात्रिष्टुप्अन्त्यानुष्टुप्भार्यायाःनासापुटेऽश्वगंधारससेचनेवि०। पक्षांतरेदूर्वारससेचनेइतिविशेषः। ॐ उदीर्ष्वातःपतिवती०स्वाहेतिस्वाहाकारांताभ्यांमंत्राभ्यांप्राङ्मुख्याःप्राङ्मुखःपृष्ठतस्तिष्ठन्नासापुटयोःसिंचेत् यथारसउदरपर्यंतमायाति । उभयोर्नासाबिलयोर्निषिच्येतिपरिशिष्टात्। दक्षिणनासापुटएववासिंचेत् नस्तोदक्षिणतोनिःसिंचेदितिपरिशिष्टांतरात् । ततस्तामाचमय्य ॐगंधर्वस्यविश्वावसोर्मुखमसीतिमंत्रेणपूर्वोक्तर्ष्यादिभिर्विष्णुर्योनिमितितिसृभिर्नेजमेषइतितिसृभिःति

---

[1] त्यस्यभिष।

सृभिरंगुलीभिर्योनिमभिमृश्य तांपूषन्नितिमंत्रस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीत्रिष्टुप् जपेविनि० ॐ तापूषन्छिवतमामेरयस्व० १ योगर्भमित्यस्यवसिष्ठःपर्जन्योगायत्रीजपेवि० ॐ योगर्भमोषधीनां० १ अहंगर्भमित्यस्यप्रजावान्प्राजापत्योगर्भइंद्र[१]स्त्रिष्टुप्जपेविनि० ॐ अहंगर्भमदधा० १ इतिजपित्वासकृदुपगच्छेत् । रेतःसेककालेप्राणेतेरेतोदधाम्यसावितिअनुप्राणय यथाभूमिरग्निगर्भायथाद्यौरिंद्रेणगर्भिणी । वायुर्यथादिशांगर्भएवंतेगर्भंदधाम्यसावितिस्त्रीहृदयमभिमृश्याचामेत् ।असावित्यस्यस्थानेप्रथमैकवचनांतंस्त्रीयंनामवाच्यम् । संप्रदायानुसारेणोक्तमेतत् । परिशिष्टेतु—गंधर्वोसिविश्वावसुर्मुखमसीत्युपस्थमभिमृश्य विष्णुर्योनिंकल्पयत्वितिद्वाभ्यांविहृत्य योगर्भमोषधीनामहंगर्भमदधामोषधीष्वितिजपित्वोपगच्छेत् प्राणेतेरेतोदधाम्यसावि० अभिमृशेत् । नैकेगमनेमंत्रविधिमिच्छंतिनत्वनेनकिंचित्संस्क्रियतइतितत्रौषधिनिषेकंकृत्वोप[२]गच्छतीत्युक्तम् । परिशिष्टांतरेतु—गंधर्वस्यविश्वावसोर्मुखमसीत्युपस्थंप्रजनयिष्यमाणोभिमृशेत्विष्णुर्योनिमितिद्वारंविदारयेत्तांपूषन्छिवतमामेरयस्वेत्यनुप्रहरेत् । समासेर्थेजपेत्प्राणेतेरेतोदधाम्यसावितिअनुप्राण्याद्यथाभूमिरग्निगर्भायथाद्यौरिंद्रेणगर्भिणी ।वायुर्यथादिशांगर्भएवंगर्भंदधाम्यसावितिचोक्तम्। उक्तहोमासंभवेपूर्वोत्तरपाकयज्ञतंत्रसहिताःपंचाज्याहुतयोहोतव्याः अग्नयेस्वाहा इंद्रायस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा । तत्रपरिस्तरणमाज्यभागौब्रह्माचेत्यंगानिकृताकृतानि । सर्वथैवहोमासंभवेअश्वगंधामूलंप्रेषयित्वा उदीर्ष्वातःपतिवतीत्येकयै

---

[१] इंद्रोनुष्टुप् । [२] गच्छंती ।

वक्त्रचादक्षिणस्यांनासिकायांनिषिच्योपगमनंकार्यम् । यथोक्तंसिद्धांतभाष्ये—तत्रैकेऋतुकालेअनादेशहोममिच्छंतिअपरेतुउदीर्ष्वैत्यनयादक्षिणस्यांनासिकायांनस्तःकरोतीत्येतद्गर्भलंभनमिति । अनुसृतंचहोमरहितस्यएकयर्चानस्तःकरणमात्रस्यसौत्रगर्भलंभनपदार्थत्वंजयंतेन तदनुसारिणाकारिकाकृतापि । उक्तंचेत्थंशौनकेनापि उदीर्ष्वातःपतिवतीत्येतामृचमुदीर्यतिवित्यादिनाग्रंथेन । नचोपगमनमंत्राअप्यावश्यकाः जयंतादिभिरनादरणात्उदाहृतपरिशिष्टाच्च । प्राजापत्यचरुहोमकरणपक्षेपिप्रथमर्तावेवासौकार्यः । अश्वगंधारसेननस्तःकरणंतुप्रत्यृतुआवर्तते । परिशिष्टे—अथर्तुमत्याःप्राजापत्यमृतौप्रथमेइत्युपक्रम्यहोमाम्नानात् अथगर्भलंभनमृतावितिऋतुसामान्यमधिकृत्यनस्तःकरणाम्नानात् तथैवभाष्यकारादिभिःसंकथनाच्च । इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेगर्भाधानम् ॥ ॥ ॥ ॥

एवंजातगर्भायाधर्माउच्यंते । पाद्मेगर्भिण्यधिकारे—नावस्कारेषूपविशेन्मुसलोलूखलादिषु । जलंचनावगाहेतशून्यागारंचवर्जयेत् । वल्मीकंनाधितिष्ठेतनचोद्विग्नमनाभवेत् । विलिखेन्ननखैर्भूमिंनांगारेणनभस्मना । नशयालुःसदातिष्ठेद्व्यायामंचविवर्जयेत् । नतुषांगारभस्मास्थिकपालेषुसमाविशेत् । वर्जयेत्कलहंगेहेगात्रभंगंतथैवच । नमुक्तकेशातिष्ठेतनाशुचिःस्यात्कदाचन । नशयीतोत्तरशिरानचैवाधःशिराःक्वचित् । नवस्त्रहीनानोद्विग्नानचार्द्रचरणातथा । नामंगल्यंवदेद्वाक्यंनचहास्याधिकाभवेत् । कुर्याच्छ्वशुरयोर्नित्यंपूजांमांगल्यतत्परा । तिष्ठेत्प्रसन्नवदनाभर्तुःप्रियहितेरतेति । पाद्मे—संध्यायांनैवभोक्तव्यंगर्भिण्यावरवर्णिनि । नस्थातव्यंनगंतव्यंवृक्षमूलेचसर्वदा । सर्वौषधीभिःकोष्णेनवारिणास्नानमाचरेत् ।

कृतरक्षासुभूषाचवास्तुपूजनतत्परा । दानशीलातृतीयायापार्वत्यानक्तमाचरेत् । गर्भिणीकुंजराश्वादिशैलहर्म्यादिरोहणम् । व्यायामंशीघ्रगमनंशकटारोहणंत्यजेत् । शोकंरक्तविमोकंचसाध्वसंकुक्कुटासनम् । व्यवायंचदिवास्वापंरात्रौजागरणंत्यजेत् । अतिक्षारंतुनाश्नीयादत्यम्लमतिभोजनम् । अत्युष्णमतिशीतंचगुर्वाहारंपरित्यजेत् । इतिवृत्ताभवेन्नारीविशेषेणतुगर्भिणी । यश्चतस्यांभवेत्पुत्रःस्थिरायुर्वृद्धिसंयुतः । अन्यथागर्भपतनमवाप्नोतिनसंशयइति । मार्कंडेयपुराणेगर्भंप्रकृत्य—तस्यरक्षांसदाकुर्यान्नित्यंशौचनिषेवणात् । प्रशस्तमंत्रलिखनाच्छस्तमाल्यानुलेपनात् । विशुद्धगेहवसनादनायासाच्चवैद्विजेति । तत्रैवगर्भिणींप्रकृत्य—अतोनवृक्षंनैवाद्रिंप्राकारंनपयोनिधिं । परिखांवासमाक्रामेदबलागर्भधारिणीति ॥ ॥ अथगर्भिणीपतिधर्माः । संग्रहे—गर्भिणीवांछितंद्रव्यंतस्यैदद्याद्यथोचितम् । सूतेचिरायुषंपुत्रमन्यथादोषमर्हतीति । कालविधाने—क्षौरंशवानुगमनंनखकृंतनंचयुद्धंचवास्तुकरणंत्वतिदूरयानम् । उद्वाहमंबुधिजलस्पृशनोपयोगमायुःक्षयोभवतिगर्भिणिकापतीनामिति । क्षौरंवपनं तच्चात्रकर्तनस्याप्युपलक्षणं । नोदन्वतोंभसिस्नायान्नचश्मश्वादिकर्तयेत् । अंतर्वत्न्याःपतिःकुर्वन्नप्रजाभवतिध्रुवमितिक्रतुस्मरणात् । यत्तुवपनस्यनिषेधेपिकर्तनंचविधीयत इति स्मृत्यंतरवचनंतद्गर्भिणीपतिव्यतिरिक्तानांजीवत्पितृकादीनांयोवपननिषेधस्तत्रकर्तनविधानपरम् । संग्रहे—दहनंवपनंचैवचौलंवैगिरिरोहणम् । नावआरोहणंचैववर्जयेद्गर्भिणीपतिरिति[1] । केशान्मासत्रयादूर्ध्वंधारयेद्गर्भिणीपतिः । जाया

---

[1] रितिस्मृत्यंतरे ।

यांतुप्रसूतायांदशमेहनिवापयेत् । इतिशौनकः । स्मृत्यंतरे—सिंधुस्नानंद्रुमच्छेदंवपनंप्रेतवाहनं । विदेशगमनंचैवनकुर्याद्गर्भिणीपतिरिति । एतदपवादस्तत्रैव—क्षौरंनैमित्तिकंकुर्यान्निषेधेसत्यपिध्रुवं । पित्रोःप्रेतविधानंचगर्भिणीपतिराचरेत् । [1]एतेचनियमाःसप्तममासादूर्ध्वंभवंति । वपनंमैथुनंतीर्थंवर्जयेद्गर्भिणीपतिः । श्राद्धंचसप्तमादूर्ध्वमित्याश्वलायनोक्तेः । श्राद्धंश्राद्धभोजनम् । तीर्थंतीर्थयात्रां । इतिगर्भिणीपतिधर्माः ॥ ॥ ॥

यदिकृतेपिगर्भाधानेगर्भोत्पत्त्यभावस्तदाप्रतिबंधकप्रेतोपद्रवनिवृत्त्यैनारायणबलिनागबलीकार्यौ । परिशिष्टे—अथनारायणबलिरर्वाक्संवत्सराच्छुद्धकालेशुक्लैकादश्यांस्नातःशुचौदेशेविष्णुंवैवस्वतंयमंचयथावदभ्यर्च्य तदग्रेतिलमिश्रान्मधुघृतप्लुतान्दशपिंडान्विष्णुरूपंप्रेतंध्यायन् काश्यपगोत्रे[2]देवदत्तायंतेपिंडइतिदक्षिणाग्रेषुदर्भेषुदक्षिणामुखःप्राचीनावीतीपराचीनेनपाणिनादत्वापिंडान्गंधादिभि[3]रभ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वानद्यांक्षिपेदथरात्रावयुग्मब्राह्मणान्निमंत्र्योपोषितःश्वोमध्यंदिनेविष्णुमभ्यर्च्यप्रेतमुद्दिश्यब्राह्मणानेकोद्दिष्टविधिनाभोजयित्वातृप्तेषुब्राह्मणसमीपेपिंड[4]विधिनानिनयनांतंतूष्णींकृत्वाविष्णवेब्रह्मणेशिवायसपरिवाराययमायविष्णोअयंतेपिंडइत्येवंचतुरःपिंडान्भुक्तशेषेणदक्षिणसंस्थान्दत्वाथपंचमं काश्यपगोत्रदेवदत्तेतिप्रेतंध्यात्वातद्रूपायविष्णवेविष्णोऽयंतेइतिदद्यादथाचांतान्दक्षिणयासंतोष्यैकंतेषुगुणवंतंविशेषतोवस्त्राभरणगोहिरण्यैःप्रेतबुद्ध्यातोषयेदथतैःपवित्रपाणिभिःप्रेतायकाश्यपगोत्रायायंतेतिलोदकांजलिरितितिलोदकंदापयित्वाने

---

[1] तेचत्वारोनियमाः । [2] गोत्रासौविदैवतअयं । [3] दीनर्घ्यादिभिः । [4] पिंडयज्ञविधिना ।

ननारायणवलिकर्मणाभगवान्विष्णुरिमंदेवदत्तंशुद्धम[1]पापंकर्माहंकरोत्वितिवाचयित्वाविसृजेदेषनारायणवलिकल्पएवमन्यामपिस्वाभिमतदेवतांयमद्वितीयायामभ्यर्च्यविधिमिमंकुर्यात्सोप्येनमपापंकरोतिनतुपुण्यकृतोपिवलिमेनमकृत्वापारलौकिकंकुर्यात्कृतंनोपतिष्ठतेंतरिक्षेविनश्यतितस्माद्यथासंभवमपिकुर्यादिति ॥ ॥ अथप्रयोगः । कर्ताशुक्लैकादश्यांनदीतीरादिशुचिदेशेस्नानादिनित्यक्रियांतेप्राणायामादितिथ्यादिसंकीर्तनांतेमदीयकुलाभिवृद्धिप्रतिवंधकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्तिद्वाराश्री० नारायणवलिंकरिष्यइतिसंकल्प्यकलशस्थापनविधिनास्थापितकलशद्वयेसुवर्णादिजातीयप्रतिमयोर्विष्णुमावाहयामि वैवस्वतंयममावाहयामीत्यावा[2]ह्य पुरुषसूक्तेनयमायसोमंसुनुतेतिचषोडशोपचारैःसंपूज्यतत्पूर्वभागेरेखायांदक्षिणाग्रकुशास्तरणांते शुंधंतांविष्णुरूपीप्रेतइतिदशस्थानेषुदक्षिणसंस्थमपोनिनीयमधुघृतप्लुतान्दशपिंडान्सतिलान् काश्यपगोत्रचैत्रप्रेतविष्णुदेवतायंतेपिंडइतिदक्षिणामुखःप्राचीनावीतीदक्षिणाग्रेषुकुशेषुपराचीनपाणिनासव्यंजान्वाच्यविष्णुरूपंप्रेतंध्यायन्दत्वागंधादिभिरभ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वानद्यादौक्षिपेत् । तस्यामेवरात्रौश्वःकरिष्यमाणश्राद्धेक्षणःक्रियतामित्येवमेकंत्रीन्पंचवेत्येवमयुग्मान्ब्राह्मणान्श्राद्धोद्देशेननिमंत्र्योपोष[3]णंकुर्यात् । श्वोभूतेमध्याह्नेवि[4]ष्णुमभ्यर्च्यप्रेतंविष्णुरूपिणमुद्दिश्यैकोद्दिष्टविधिनापादप्रक्षालनादितृप्तिप्रश्नांतंकृत्वा ब्राह्मणसमीपेपिंडपितृयज्ञवदुल्लेखनाद्यवनेजनांतंतू

---

[1] मपापमर्हंकरोतु । [2] अत्र क्वचित्परिशिष्टेविष्णुं ब्रह्माणं शिवं वैवस्वतंयमं प्रेतंचेतिपाठोपलंभात्कुंभपंचकेपंचाप्येतेपूज्याइतिकेचिदाहुः ।
[3] उपोषितोजागरणंकुर्यात् । [4] विष्णुब्रह्मशिवयमप्रेतान्वा ।

ष्णींकृत्वा विष्णवेब्रह्मणेशिवायसपरिवाराययमायचनाममंत्रैश्चतुरःपिंडान्दत्वा विष्णोयंतेपिंडइति विष्णुरूपंप्रेतं[1]ध्यायन्पंचमंपिंडंचदत्वार्चनादिप्रवाहणांतंकृत्वाआचांतान्दक्षिणयासंतोष्यतेष्वेकस्मैगुणवतेप्रेतबुद्ध्यावस्त्राभरणगोहिरण्यानिदत्वाब्राह्मणान्वदेत् भवंतःप्रेतायतिलोदकांजलिदानंकुर्वंत्विति । तेचपवित्रपाणयःसकुशतिलतुलसीपत्रतोयांजलिंप्रेतायकाश्यपगोत्रायविष्णुरूपिणेयंतिलोदकांजलिरितिदद्युः । ततोब्राह्मणान्वाचयेत् अनेननारायणबलिकर्मणाभगवान्विष्णुरिमंदेवदत्तंशुद्धमपापंकर्मार्हंकरोत्विति । ततःस्नात्वाभुंजीतेतिपरिशिष्टोक्तनारायणबलेःस्मृत्यर्थसारानुसारीप्रयोगः॥

अथनागबलिः ॥ तत्रशौनकः—अथवक्ष्यामिसर्पस्यसंस्कारविधिमुत्तमं । सिनीवाल्यां[2]पौर्णमास्यांकारयेद्विधिवत्ततः ।
कृतसर्पवधोविप्रःपूर्वजन्मनिवायदि । स्नात्वागत्यततोब्रह्मदंडंदद्याद्विजातये । वधंप्रख्यापयेच्चापिचरेत्कृच्छ्रांश्चतुर्दश ।
वधेत्रजन्मनिकृतेलोहदंडंद्विजातये । दद्यात्पापविशुद्ध्यर्थंश्रोत्रियायकुटुंबिने । विप्रायदंडमूल्यंवाह्यभावेसतिदापयेत् ।
[3]सार्पवधात्कर्मकर्तुरेतदेवप्रदापयेत् । निष्कत्रयंद्विनिष्कंवानिष्कमेकंकनीयसं । [4]अनुमत्यादिकर्तॄणांनिष्कमर्धंतदर्धकं ।
वित्तशाठ्यंनकुर्वीतदद्याद्वित्तानुसारतः । अनुज्ञांचगुरोर्लब्ध्वासंस्कुर्यात्तदनंतरम् । प्रियंगुव्रीहिगोधूमतिलपिष्टेनवापुनः ।
कृत्वासर्पाकृतिंतेन[5]नवशूर्पेनिधायच । अनेनवक्ष्यमाणेनमंत्रेणप्रार्थयेदहिम् । एहिपूर्वमृतसर्पअस्मिन्पिष्टेसमाविश ।
संस्कारार्थमहंभक्त्याप्रार्थयामिसमाहितः । वस्त्रोपवीतगंधाद्यैरक्षतैःकुसुमादिभिः । कर्तापुष्पांजलिंदत्वाप्रणिपत्यहरे

---

[1] ध्यायन् काश्यपगोत्रदेवदत्तविष्णुरूपप्रेतायंतेपिंड इति। [2] पंचम्यांवापिकारयेत्। [3] साक्षाद्वधात्। [4] अनुज्ञानादि। [5] सर्पभोगसमन्वितं।

द्वहिः । प्रक्षालितांघ्रिपाणिस्तुआचम्योपविशेद्भुवि । कुर्यात्संस्कारसंकल्पंप्राणायामपुरःसरम् । यज्ञोपवीतिनाकार्यंसर्पसंस्कारकर्मंतु । लौकिकाग्निंप्रतिष्ठाप्यसमिदाधानमाचरेत् । ततोऽग्नेरग्निदिग्भागेभूमिंसंप्रोक्ष्यवारिभिः । चितिंकृत्वाथसंस्तीर्यकुशैराग्नेयकाग्रकैः । पर्युक्ष्याग्निंपरिस्तीर्यपरिषिच्यसमर्चयेत् । कृत्वेध्माधानपर्यंतंषट्पा[१]त्रासादनादिकम् । आघारचक्षुषीहुत्वासर्पिषाचयथाविधि । सर्पंगृहीत्वायत्नेनचितिमारोपयेत्सुधीः । अपःस्पृष्ट्वास्पृशेच्छ्रोत्रंगत्वाचाग्निसमीपतः । स्रुवेणजुहुयादाज्यमग्नौव्याहृतिभिस्त्रिभिः । सर्पास्येजुहुयादाज्यंव्याहृत्याचसमस्तया । आज्यशेषंस्रुवेणैवसर्पदेहेनिषेचयेत् । स्रुवंतत्रनिधायाथयज्ञपात्राणिबर्हिषि । चितिं[२]प्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यक्षमापयेत् । चमसस्थैर्जलैःसर्पंव्याहृत्याभ्युक्ष्यपाणिना । अग्नेरक्षाणइत्यनयासर्पायाग्निंप्रदापयेत् । उपतिष्ठेद्दह्यमानंनमोस्तुसर्पमंत्रतः । ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिकृतःसर्पवधोमया । पूर्वजन्मनिवासर्पतत्सर्वंक्षं[३]तुमर्हसि । इतिसंप्रार्थ्यनागेंद्रंस्नात्वागत्यततःपुनः । क्षीराज्येनततश्चाग्निंप्रोक्ष्यव्याहृतिभिस्त्रिभिः । हुतेसर्पेजलेनाग्निमभिषिंचेत्ततःपरम् । नास्थिसंचयनंकुर्यात्स्नात्वाचम्यगृहंव्रजेत् । ब्रह्मचर्यादिकंकार्यंत्रिरात्रां[४]शौचमिष्यते । चतुर्थेऽहनिसंप्राप्तेसचैलंस्नानमाचरेत् । घृतपायसभक्षैश्चद्विजानष्टौतुभोजयेत् । कर्तानामपदैर्विप्रानर्चयेद्वक्ष्यमाणकैः । सर्पोनंतस्तथाशेषःकपिलोनागएवच । कालिकःशंखपालश्चभूधरश्चप्रकीर्तितः । पादप्रक्षालनंकुर्यादेभिर्नामपदैःपृथक् । गंधपुष्पाक्षतैर्धूपदीपाद्यैरर्चयेद्द्विजान् । एवंकृतेविधानेवैसर्पसंस्कारकर्मणि ।

---

[१] तत्पात्रासादना ।
[२] प्रदक्षिणंकृत्वा ।
[३] चक्षमस्वमे ।
[४] रात्राच्छुद्धिरिष्यते ।
[५] श्चेतिवैक्रमात् ।

सर्पहिंसाकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः । कुष्ठव्याध्यादिभिर्मुक्तःसर्वथाभेषजंत्विदम् । आयुरारोग्यमैश्वर्यंप्राप्यकामानवाप्नुयादिति ॥ ॥ अथनागबलिसंस्कारप्रयोगः ॥ सतुसिनीवाल्यांपौर्णमास्यांपंचम्यामाश्लेषायुक्तनवम्यांवाकार्यः । कर्तापर्षदंप्रदक्षिणीकृत्यनत्वातदग्रेनिष्कं[1]तदर्धंवानिधाय ममेहजन्मनिजन्मांतरेवाज्ञानादज्ञानाद्वाजातसर्पवधोत्थदोषपरिहारार्थंप्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवंतः । तद्यथा——सर्वेधर्मविवेक्तारइतिश्लोकान्पठित्वामामनुगृह्णंतुभवंतइतिप्रणमेत् । तैरु[2]पदिष्टःचतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तं यथोक्तप्रत्याम्नायेनकरिष्येइतिसंकल्पपूर्वकंवपनादिविधिनातदाचरेत् । ततोब्राह्मणंसंपूज्य । पूर्वोच्चरितएवंगुणविशेषणविशिष्टायांपुण्यतिथौममसर्पवधदोषपरि[3]हारार्थंइमंलोहदंडंअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायइमांदक्षिणांचतुभ्यमहंसंप्रददेप्रतिगृह्यतां देवस्यत्वासवितुः० प्रतिगृह्णामीतिविप्रः । ततोगुर्वाज्ञांलब्ध्वाप्रियंगुव्रीहिगोधूमतिलपिष्टेष्वेकतमपिष्टेनसर्पाकृतिंकृत्वाशूर्पेनिधायसर्पंप्रार्थयेत् । एहिपूर्वमृतसर्पह्यस्मिन्पिष्टेसमाविश । संस्कारार्थमहंभक्त्याप्रार्थयामिसमाहितः । ततः । भुजंगेशायविद्महे[4]सर्पराजायधीमहि । तन्नोनागःप्रचोदयादिति आवाहनादिषोडशोपचारपूजांकृत्वा पुष्पांजलिंदत्वाप्रणिपत्य भोःसर्पेमंबलिंगृहाणममाभ्युदयंकुरु[5]इतिबलिंसमर्प्यहस्तौपादौप्रक्षाल्याचामेत् । ततःशुद्धभूमौस्थित्वाप्राणानायम्यसंकल्पंकुर्यात् । ममेहजन्मनिजन्मांतरेवाज्ञानादज्ञानाद्वाजात

---

[1] गोवृषनिष्क्रयं । [2] उपदिष्टआचमनादिदेशकालस्मरणांतेपर्षदुपदिष्टंप्रायश्चित्तंअमुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्यामीति । [3] रार्थंलोहदंडदानंतन्मूल्यदानंवाकरिष्ये इतिसंकल्प्यविप्रंसंपूज्य । [4] सर्पजातायेतिप्रचुरःपाठः । [5] इतिपायसादिनाबलिं ।

सर्पवधोत्थदोषपरिहारार्थंसर्पसंस्कारकर्मकरिष्ये । ततोलौकिकाग्निंप्रतिष्ठाप्य[1]ान्वादध्यात् । अस्मिन्सर्पसंस्कारहोमकर्मणिदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये। अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्याद्याघारचक्षुष्यंतमुक्त्वात्रप्रधानंअग्नौअग्निंवायुंसूर्यंएताः प्रधानदेवताआज्येनभू[2]र्भुवःस्वरितिसर्पमुखेप्रजापतिमाज्येनआज्यशेषेणसर्पसद्योयक्ष्ये समिधमादायततोग्नेरग्निदिशिभूमौ जलेनप्रोक्ष्यचितिंकृत्वाग्निंचितिंचपरिसमुह्यआग्नेय्यग्रकैर्दर्भैःपिंडपितृयज्ञवत्परिस्तीर्यपरिषिच्यषट्पात्राण्यासाद्येध्माधानाद्याघारचक्षुष्यंतंकुर्यात् । ततःसर्पंगृहीत्वाचित्यामारोप्यापःस्पृष्ट्वाअग्निसमीपमेत्यततःप्रधानहोमः । समस्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजप्रजापतयऋषयः अग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताःगायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहत्यश्छंदांसिआज्यहोमे वि० ॐ भूःस्वाहाअग्नयइदंनममेत्यादिव्याहृतित्रयमग्नौजुहुयात् चतुर्थींसर्पमुखेजुहुयात् आज्यशेषंस्रुवेणैवसर्पदेहेनिषेचयेत् । ततोहस्तगृहीतैश्चमसजलैःसमस्तव्याहृत्यापाणिनाभ्युक्ष्य । अग्नेरक्षाणोवसिष्ठोग्निर्गायत्री सर्पायाग्निप्रदानेविनि० ॐ अग्नेरक्षाणोअंहसः० १ ततउपस्थानं । ॐ नमोअस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु ।येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः । येदोरोचनेदिवोयेवासूर्यस्यरश्मिषु । येषामप्सुसदःकृतंतेभ्यःसर्पे० । याइषवोयातुधानानांयेवावनस्पतीँरनु । येवावटेषुशेरतेतेभ्यःसर्पेभ्यो० ॥ अथपौराणमंत्राः । कर्कोटकनमस्तेस्तुशंखपालनमोस्तुते । नागराजमहादेवदिव्यरूपायतेनमः । अफणाःफणिनोयेचसविषानिर्विषाश्चये । सर्वेवटेशयाःसर्पाःपुण्यमूर्तेनमोस्तुते । त्वयेयंजगतीस्वामिन्स्वफणा

---

[1] ष्ठाप्यध्यात्वान्वा. । [2] अग्निं वायुं सूर्यं चाज्येन सर्पमुखेप्रजापतिमाज्येन ।

मंडलोपरि । धृतैकदेशेह्यणुवत्तस्मैतुभ्यंनमोनमः । त्वयाभगवतेश्रीमद्वासुदेवायनिर्मितं ।[1] स्वभोगेनैवपर्यंकमायतंभोगिनांवर । त्राहित्राहिमहाभोगिन्सर्पोपद्रवदुःखतः । संततिंदेहिमेपुण्यांनिर्दुष्टांदीर्घदेहिनीम् । प्रपन्नंपाहिमांभक्त्याकृपालोदीनवत्सल । ज्ञानतोऽज्ञानतोवापिकृतःसर्पवधोमया । जन्मांतरेतथैतस्मिन्मत्पूर्वैरथवाविभो। तत्पापंनाशयक्षिप्रमपराधंक्षमस्वमे । इतिसंप्रार्थ्यनागेंद्रंस्नात्वागत्यततःपुनः ।क्षीराज्येनाग्निंसंप्रोक्ष्यततोव्याहृतिभिस्त्रिभिः । हुतेसर्पंजलेनाग्निमभिषिंचेत्ततःपरं । नास्थिसंचयनंकुर्यात्स्नात्वाचम्यगृहंव्रजेत् । ब्रह्मचर्यादिकंकार्यंत्रिरात्राच्छुद्धिरिष्यते । शौनकाद्बौधायनमतेतुएकरात्राशौचं । अत्रकर्तुरेवाशौचं । आशौचंपिंडदःकुर्यान्नतुतद्बंधुगोत्रजाइतिवचनात् । चतुर्थेहनिसंप्राप्ते सचैलंस्नानमाचरेत् । घृतपायसभक्षैस्तुद्विजानष्टौतुभोजयेत् । कर्तानामपदैर्विप्रानर्चयेद्वक्ष्यमाणकैः । [2]सर्पस्वरूपिणेब्राह्मणायइदंतेपाद्यं अनंतस्वरूपिणे० शेषस्वरूपिणे० कपिलस्वरू० नागस्वरू० कालिकस्वरू० शंखपालस्वरू० भूधरस्वरू० इतिपादौप्रक्षाल्या[3]चम्य । ततोभूर्भुवःस्वरिदमासनंआस्यतां । सर्पस्थानेक्षणःक्रीयतां ॐतथा । प्राप्नोतुभवान् प्राप्नवानि । एवंशेषादिभ्यः । भोसर्पस्वरूपइदंगंधंएवंपुष्पधूपदीपवस्त्रादिदानं एवंशेषादीनामपिगंधादिदानं । सर्पायइद

---

[1] इदंसर्वंसव्येनैवकार्यम्. । [2] कर्ताआचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यनागबल्यंगविहितंब्राह्मणभोजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य । [3] विप्रांश्चाचमय्यविप्रान्प्राङ्मुखानुदङ्मुखान्वोपवेश्य ।

मन्नं[1]ममृतरूपंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचा[2]तृप्तेःस्वाहासंपद्यतांइदंनमम । एवंशेषादिभ्योप्यन्नदानं । आचांतेषुविप्रेषु[3]सर्पादिनाममंत्रैर्वलिदानंवस्त्रादिपूजाकार्या । ततोब्राह्मणानांतांवूलसुवर्णादिदक्षिणादानंच । ततआचार्यादींश्चपूजयित्वासुवर्णनागदानंकार्यं । इतिसर्पस्यसंस्कारंकृत्वानागवलिंततः । दत्वास्वर्णमयंनागमपराधात्प्रमुच्यतइतिवचनात् । ततः[4]कलशेस्वर्णनागमावाहनादिषोडशोपचारैःसंपूज्यप्रार्थयेत् । ब्रह्मलोकेचयेसर्पाःशेषनागपुरोगमाः । नमोस्तुतेभ्यःसुप्रीताःप्रसन्नाःसंतुमेसदा । विष्णुलोकेचयेसर्पावासुकिप्रमुखाश्चये । नमोस्तुतेभ्यः० । रुद्रलोकेचयेसर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा । नमोस्तुतेभ्यः० । खांडवस्यतथादाहेस्वर्गंयेचसमाश्रिताः । नमोस्तुतेभ्यः० । सर्पसत्रेचयेसर्पाआस्तिकेनाभिरक्षिताः । नमोस्तुतेभ्यः० । मलयाद्रौचयेसर्पाःकर्कोटकमुखाश्चये । नमोस्तुतेभ्यः० । धर्मलोकेचयेसर्पावैतरण्यांसमाश्रिताः । नमोस्तुतेभ्यः० । येसर्पाःपर्वतीयेषुदरीसंधिषुसंस्थिताः । नमोस्तुतेभ्यः० । ग्रामेवायदिवारण्येयेसर्पाःप्रचरंतिहि । नमोस्तु० । पृथिव्यांचैवयेसर्पायेसर्पाविलसंस्थिताः । नमोस्तुतेभ्यः० । रसालयेचयेसर्पाअनंताद्यामहावलाः । नमोस्तु० एवंस्तुत्वातुनागेंद्रमाचार्यायनिवेदयेत् । देशकालौसंकीर्त्यकृतस्यसर्पसंस्कारकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थंइमंहेममयंनागंसकलशंसवस्त्रंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम । अनेनस्वर्णनागदानेनअनंतादयोनागदेवताःप्रीयंतां । ततआचार्यायगोदानंदेयं ।

---

[1] सर्वेषांपूजनांतेचतुरस्रमंडलेषुपात्राणिनिधायपायसभक्ष्यादीन्परिविष्य । [2] आतृप्तेर्दास्यमानमितिप्रचुरःपाठः । [3] प्रागग्रास्तीर्णदर्भेषुभोःसर्पअयंतेबलिर्नममेत्यादिपायसबलिदानं सावित्र्याप्रोक्ष्यपरिषिच्य । [4] महीद्यौरित्यादिस्थापितकलशे ।

इमांगांसवत्सांस्वर्णशृंगींरौप्यखुरांताम्रपृष्ठींकांस्यदोहासवस्त्रासदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे । अनेनानंतादयःप्रीयंतां । आचार्याययततोदद्यात्कृष्णांगांवृषभेणहि । वस्त्रालंकरणैःपूज्यब्राह्मणंब्राह्मणींतथा । यस्यस्मृत्याचनामोक्त्येति० । मयायत्कृतंसर्पसंस्काराख्यंकर्मतद्भवतांब्राह्मणानांवचनाच्छ्रीपरमेश्वरप्रसादात्सर्वंपरिपूर्णमस्तु । तथास्त्वितितेब्रूयुः । पूजयेद्विधिवद्भक्त्याब्राह्मणांश्चैवतोषयेत् । कृत्वासर्पस्यसंस्कारमनेनविधिनानरः । विरोगोजायतेक्षिप्रंसंततिंलभतेशुभां । सर्पोपद्रवनिर्मुक्तोभवेत्सर्पप्रसादतः । ततःपूर्वकृतंकर्मयातिनाशंमहामते । क्षीणपापोविशुद्धात्माविष्णुलोकेमहीयते । ततःसांगतासिद्ध्यर्थंब्राह्मणभोजनंकार्यम् ॥ इतिनागबलिविधानंसमाप्तम् ॥ एवंनागबलिंकृत्वाऽजातौर्ध्वदेहिकतयानिर्णीतस्यतत्कार्यं गयाश्राद्धंच । अतादृशस्यगयाश्राद्धमेवकार्यम् ॥ ॥ ॥ ॥

एवमपिफलासिद्धौमहार्णवोक्तोविधिःकार्यः । सयथावायुपुराणे—चतुर्विधाचयावंध्याभवेद्वत्सवियोजनात् । वक्ष्येतस्याःप्रतीकारंतत्स्वरूपंनिबोधय । हिरण्येनयथाशक्त्यासवत्सांकारयेद्दृढां । धेनुंपलेनवत्संचपादेनगुरुरब्रवीत् । हिरण्येनयथाशक्त्येति पलेनवातदर्धेनतदर्धेनापिवापुनरितिपरिभाषोक्तप्रकारेणकुर्यादित्यर्थः । धेनुंरूप्यखुरांरत्नंतस्याःपुच्छेनियोजयेत् । घंटांगलेनिबध्नीयात्सवत्सांप्राङ्मुखःसुधीः । चंदनागरुकर्पूरगंधमाल्यैःसुशोभनैः । उपचारैःषोडशभिर्नैवेद्यंपायसंभवेत् । मोदकंचतथापूपंगुडंलवणमेवच । जीरकंचसुविस्तीर्णेशूर्पेवेणुमयेदृढे । धेनोरेकंप्रदातव्यंब्राह्मणस्त्रीषुचैवहि । षडष्टौदशवादद्यात्तदनंतरमेवच । उपचारैःषोडशभिःपूजयेदितिशेषः । मोदकादिभिःपरिपूरितमेकंशूर्पंधेनोः

स्थापयित्वोक्तद्रव्यपूरितान्येवशूर्पाणिषडष्टौदशवासभर्तृकाभ्योब्राह्मणीभ्योदद्यादित्यर्थः । ब्राह्मणंसर्वशास्त्रार्थकुशलंधर्मवेदिनम् । विद्याविनयसंपन्नंशांतंचैवजितेंद्रियं । अलोलुपंसर्वजनप्रियंकल्मषवर्जितम् । आहूयभक्त्यासंपूज्यवस्त्राद्यैर्गंधपुष्पकैः । तेनैवकारयेत्पूजामादितोधेनुवत्सयोः । होमंचकारयेत्तत्रसमिदाज्यचरूत्कटम् । पूजायांचहोमेचमंत्रमाह–सोमोधेनुमितिमंत्रंसमुच्चार्यततःपुनः । अस्यगौतमऋषिःसोमस्त्रिष्टुप्विहितार्थेवि०।ॐ सोमोधेनुंसोमोअर्वंत० १ सोमेविनियुक्तायाअप्यस्याःसंयोगपृथक्त्वन्यायेनधेनुरपि । देवताहोममुत्कटंकारयेदित्यभिधानात्समिदादिभिःप्रत्येकमष्टोत्तरसहस्रंकुर्यात् । धेनुदानमाह–प्राङ्मुखायोपविष्टायप्रदद्यात्तामुदङ्मुखः । मंत्रेणतस्यविधिवत्पुच्छंहस्तेनिधायच । दानमंत्रमाहसार्धश्लोकद्वयेन—धेनुर्यांगिरसांसत्रेप्रविष्टासुरभेश्चया । दुहितायातथाभानोरश्मेश्चवरुणस्यच । यावैगावःप्रवर्ततेवनेषूपवनेषुच । प्रीणंतुताममगृहंपुत्रपौत्रप्रदाःसुखम् । प्रयच्छंतुदिवारात्रमविच्छेदंतथान्वये । एवंदत्वातुतद्दानंप्रणिपत्यविसर्जयेदिति । इतिवंध्यात्वहरसुवर्णधेनुदानं ॥ ॥ यद्वासूर्यारुणसंवादोक्तंकार्यं । तद्यथा—निक्षेपाहरणाच्चैवह्यनपत्यःप्रजायतइत्युपक्रम्य । अरुणउवाच । वृथाधनंगृहंधान्यमपुत्रंजन्मनिष्फलम् । ममोपरिदयांकृत्वाप्रायश्चित्तंवदस्वमे । श्रीसूर्यउवाच । तीर्थयात्राप्रकर्तव्यारेवातापीसमुद्भवा । एकेनापिहिवस्त्रेणदंपतीस्नानमुत्तमम् । श्रवणंहरिवंशस्यब्राह्मणोद्वाहनंखग । अष्टोत्तरशतान्विप्रान्मिष्टान्नेनतुतर्पयेत् । ईशानइतिमंत्रेणजपंकुर्यात्सहस्रकं । दशांशहोम

संयुक्तंकुर्याच्चविधिवत्ततः । पद्मैस्तुलक्षसंख्याकैःशिवंसंपूज्ययत्नतः । स्वर्णधेनुःप्रदातव्यासवत्सासुरभिस्तथा । घृतकुंभं वैनतेयब्राह्मणायनिवेदयेत् । एवंकृतेवैनतेयह्यपत्यंजायतेकलाविति ॥ ॥ ॥ ॥

द्विविधस्याप्यस्यकर्मविपाककर्मणःकृच्छ्रादिप्रायश्चित्तपूर्वकमेवानुष्ठेयतायामहार्णवादिसंमतत्वात्संक्षेपेणकृच्छ्रादिलक्षणान्युच्यंते । तत्रयाज्ञवल्क्यः—एकभुक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच । उपवासेनचैवायंपादकृच्छ्रःप्रकीर्तितः । यथाकथंचित्त्रिगुणःप्राजापत्योयमुच्यते । अत्रापस्तंबः–सायंद्वाविंशतिर्ग्रासाःप्रातःषड्विंशतिःस्मृताः । चतुर्विंशतिरायाच्याःपरेनिरशनास्त्रयः । प्रातःपादंचरेच्छूद्रःसायंवैश्यस्यदापयेत् । अयाचितंचराजन्येत्रिरात्रंब्राह्मणेस्मृतमिति । पादकृच्छ्रविधावितथंव्यवस्थामुक्त्वार्धस्यपादोनस्यचविनियोगेविशेषमाह—सायंप्रातर्विनार्धंस्यात्पादोनंनक्तवर्जितमिति । याज्ञवल्क्यः——अयमेवातिकृच्छ्रःस्यात्पाणिपूरान्नभोजनः । कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसादिवसानेकविंशतिम् । द्वादशाहोपवासेनपराकःपरिकीर्तितः । येषुनवदिनेषुभोजनंप्राप्तंतत्रपाणिपूरान्नंनियम्यते । यत्रपुटिकादिनाग्रासपरिमाणंकृत्वा एकग्रासपर्याप्तंदुग्धमेकविंशतिदिनेष्वश्नीयात् प्राजापत्योक्तद्वाविंशत्यादिसंख्ययावा यावताप्राणधारणंभवतितावद्वेतिमदनपारिजातः । पयोत्रपानीयम् । अब्भक्षःकृच्छ्रातिकृच्छ्रइतिगौतमोक्तेरितिभवदेवः । गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् । जग्ध्वापरेन्ह्युपवसेत्कृच्छ्रंसांतपनंचरेत् । पृथक्सांतपनद्रव्यैःषडहःसोपवासकः । सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनःस्मृतः । तप्तक्षीरघृतांबूनामेकैकंप्रत्यहंपिबेत् । एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्रउदाहृतः । अंगिराः—कपिलायांतुदुग्धा

यांधारोष्णंतुपयःपिबेत् । एषव्यासकृतःकृच्छ्रःश्वपाकमपिशोधयेत् । इति । तिथिवृद्ध्याचरेत्पिंडान्शुक्लेशिख्यंडसंमितान् । एकैकंह्रासयेत्पिंडंकृष्णेचांद्रायणंचरन् । एतद्यवमध्यचांद्रायणं । कृष्णादिशुक्लांतंतुपिपीलिकामध्यमित्युच्यते । बौधायनस्तुचतुर्दश्यामुपोष्यकेशादिवापयित्वापर्वणिपंचदशग्रासनियमंकृत्वाचांद्रायणमारभेतेत्याह ॥ ॥ ॥

अथप्रत्याम्नायाः । अपरार्के—समिद्धृतहविर्धान्यंतिलान्वामारुताशनः । हुत्वाद्वादशसाहस्रंगायत्र्याकृच्छ्रमाप्नुयात् । द्वादशैवसहस्राणिजपेद्देवीमुपोषितः । जलांतेविधिवन्मौनीप्राजापत्योयमुच्यते । अन्नदानंहिरण्येनद्वादशब्राह्मणान्शुचीन् । तर्पयेन्मारुताशीचश्रोत्रियान्कृच्छ्रउच्यते । उपोष्यश्रद्धयायुक्तस्तिलपात्राणिधर्मतः । द्वादशब्रह्मवादिभ्यःप्राजापत्येनतत्समम् । स्वयमाहृत्ययोमूर्ध्नातृणभारानुपोषितः । दद्याद्गोमंडलेकृच्छ्रोद्वादशैवनसंशयः । भारोद्विसहस्रपलपरिमितः । प्राणायामशतंकृत्वाद्वात्रिंशोत्तरमार्तिषु । अहोरात्रोषितस्तिष्ठेत्प्राङ्मुखःकृच्छ्रउच्यते । नमस्कारसहस्राणिद्वादशैवदृढव्रतः । गोविप्रपितृदेवेषुकुर्यात्कृच्छ्रत्रयंभवेत् । कौर्मे—तिलपात्रंत्रिधाप्रोक्तंकनिष्ठोत्तममध्यमं । ताम्रपात्रंदशपलंजघन्यंपरिकीर्तितम् । द्विगुणंमध्यमंप्रोक्तंत्रिगुणंचोत्तमंस्मृतं । सर्वत्रयात्रायांकृच्छ्रसंख्ययायोजनसंख्यास्यादितिउत्सर्गोक्तिः । स्मृत्यर्थसारेवसिष्ठः—गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् । कृच्छ्रमेकाहिकंप्रोक्तंदृष्टमंगिरसास्वयम् । निश्यासीनोदिवातिष्ठेत्त्रिरात्रंमारुताशनः । प्राजापत्यंविजानीयात्कूष्मांडैर्जुहुयाद्धृतमिति । पराशरः——कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयं । पुण्यतीर्थेनार्द्रशिराःस्नानंद्वादशसंख्ययेति । माधवीये——प्राजापत्यंचरन्विप्रोयद्यशक्तःकथंचन । अहा

निपंचविप्राग्र्यान्भोजयेत्सम्यगीप्सितान् । एकमध्ययनंकुर्यात्प्राजापत्यमथापिवा । दद्याद्द्वादशसाहस्रंगवामुष्टिंविचक्षणः । चतुर्विंशतिमते—कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् । तिलहोमसहस्रंतुवेदपारायणंतथा । विप्राद्वादशवाभोज्याःपावकेष्टिस्तथैवच । अन्यावापावमानेष्टिःसमान्याहुर्मनीषिणः । स्मृत्यर्थसारे—रुद्रैकादशिनीकृच्छ्रोद्वादशांशोनिवर्तनात् । तत्र दशहस्तेनदंडेनात्रिंशद्दंडानिवर्तनमित्यस्यद्वादशांशभूमिदानेनकृच्छ्रइत्यर्थः । माधवीये—प्राजापत्यक्रियाशक्तौधेनुंदद्यात्पयस्विनीं । धेनोरभावेदातव्यंतुल्यंमूल्यंनसंशयः । मदनरत्नेब्राह्मे—गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्धंपादएववा । याज्ञवल्क्यः—निष्कंसुवर्णाश्चत्वारइति । एतत्परिमितंहेमरूप्यंवा अत्यशक्तौपादार्धंतत्समंधान्यादिवादद्यात्इतिस्मृत्यर्थसारः । षडुपवासाःप्राजापत्यःप्रत्याम्नायः । एकविप्रभोजनमुपवासस्येतिच । पक्षिवधेनक्तंरूप्यमाषकंवादद्यादितिहारीतोक्तेरूप्यमाषकदानंनक्तस्येतिशूलपाणिः । षट्त्रिंशन्मते—धेनुःपंचभिराढ्यानांमध्यानांत्रिपुराणिका । कार्षापणैकमूल्यादिकनिष्ठानांप्रकीर्तिता । द्वात्रिंशत्कृष्णलपरिमितंरजतपुराणः । द्वात्रिंशत्पणिकागावोवत्सःपौराणिकोभवेदितिचयज्ञविषयमेतदितिशूलपाणिः । कात्यायनः—द्वात्रिंशत्पणिकागावः दशकार्षापणाधेनाविति । षट्त्रिंशन्मते—प्राजापत्येतुगामेकामतिकृच्छ्रेद्वयंस्मृतं । चतुर्विंशतिमते—प्राजापत्येतुगामेकांदद्यात्सांतपनेद्वयं । पराकेतसातिकृच्छ्रेतिस्रस्तिस्रस्तुताःस्मृताः । अष्टौचांद्रायणेज्ञेयास्तिस्रोवाशक्त्यपेक्षया । शूलपाणिः—चांद्रायणंतुकुर्वाणाःकुर्युःकृच्छ्रचतुष्टयम् । तथा—चांद्रायणपराकाभ्यांनिष्कृतिंयोनशक्नुयात् । सकरोत्यात्मशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यस्यपंचकम् ।

अत्रगुरुलघुपक्षाणागुरुलघुकृच्छ्रादिभेदेनशक्ताशक्तभेदेनवाव्यवस्था । कृच्छ्रातिकृच्छ्रेधेनुचतुष्टयमितिभवदेवः ॥ ॥

अथप्रायश्चित्तस्वीकारप्रकारः । पर्षदमुपविश्यतस्यैधेनुवृषौदत्वास्वपापंनिवेदयेत् । पापंविख्यापयेत्पापीदत्वाधेनुंवृषंतथेतिपराशरोक्तेः । महापातकादिष्वधिकंकल्प्यमितिमिताक्षरायां । विष्णुः—पादकृच्छ्रेवस्त्रदानंकृच्छ्रार्धेचैलकांचनं । पादहीनेतुगामेकांकृच्छ्रेगोमिथुनंस्मृतं । अंगिराः——सचैलंवाग्यतःस्नात्वाक्लिन्नवासाःसमाहितः । उपस्थायततःशीघ्रमार्तिमान्धरणींगतः । गात्रैश्चशिरसाचैवनचाकिंचिदुदाहरेत् । प्रदक्षिणीकुर्यादितिमहार्णवे । सर्वेधर्मविवेक्तारोगोप्तारःसकलाद्विजाः । ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतुद्विजसत्तमाः । मयाकृतंमहाघोरंज्ञातमज्ञातकिल्बिषं । प्रसादःक्रियतांमह्यंशुभानुज्ञांप्रयच्छत । पूज्यैःकृतःपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमाः । मामनुगृह्णंतुभवंतइतिवदेदित्याचारः । अंगिराः—वृद्धाःपृच्छंतिकिंकार्यमुपविश्याग्रतःस्थितं । यदिचेद्रक्षसेसत्यंनियतंप्राप्स्यसेशुभं । यद्यागतोस्यसत्येननत्वंशुद्ध्यसिकर्हिचित् । एवंतैःसमनुज्ञातःसर्वंब्रूयादशेषतः । ततःपर्षदनुज्ञया ब्राह्मणोब्राह्मणानांतुक्षत्रियाणांपुरोहितः । वैश्यानांयाजकश्चैवप्रायश्चित्तंसमादिशेत् । शृणुष्वभोइदंविप्रायतआदिशतेव्रतं । तत्तेयत्नेनकर्तव्यमन्यथातेवृथाभवेदिति । अनेनप्रायश्चित्तेनतेशुद्धिर्भविष्यतीति । ततःपर्षदंविसृज्यदेशकालौसंकीर्त्यामुकपापनिवृत्त्यर्थंपर्षदुपदिष्टमिदंप्रायश्चित्तंपूर्वोत्तरांगसहितमाचरिष्येइतिसंकल्प्य कर्तव्यमाहविष्णुः—दिनांतेनखरोमादीन्प्रवाप्यस्नानमाचरेत् । भस्मगोमयमृद्वारिपंचगव्यादिकल्पितैः । मलापकर्षणंकार्यंब्रह्मशौचोपसिद्धये । दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् । व्रतंनिशामुखेग्राह्यंबहिस्तारक

दर्शने ॥ ॥ वपनेविशेषोपरार्के—पापसंचयःशिखायामिति। ततः—आयुर्वलंयशोवर्चःप्रजापशुवसूनिच । ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांचत्वंनोदेहिवनस्पतेइतिदंतधावनं । अनेनशाखाभिमंत्रणमितिकेचित् । जिह्वोल्लेखनमप्याचारतः । भस्मस्नानविधिलैंगे—ईशानेनशिरोदेशेमुखेतत्पुरुषेणतु । हृदोदेशमघोरेणगुह्यंवामेनसुव्रत । सद्येनपादौसर्वांगंप्रणवेनतुशोधयेत् । ईशानादिपदोपेतैर्मंत्रैश्चतुर्थ्यंतैरीशानादिनामभिर्वालेपयेदित्यर्थः ॥ ॥ गोमयस्नानंगृह्यपरिशिष्टे—प्रातउत्सृष्टंगोमयंत्वंतरिक्षस्थंसंगृह्यभूमिस्थंवोपर्यधश्चसंत्यक्त्वातीर्थमेत्यधौतपाणिपादोदक्षिणभागंप्रणवेनदिक्षुनिक्षिप्योत्तरंतीर्थेक्षिप्त्वामध्यमंमानस्तोकेइत्यभिमंत्र्यगंधद्वारामित्यृचामूर्धादिसर्वांगमालिप्यप्रांजलिर्हिरण्यशृंगेतिद्वाभ्यामवतेहेळइतिद्वाभ्यांप्रसम्राजइतिसूक्तेनप्रार्थ्य याःप्रवतइत्येतयातीर्थमभिमृश्यावगाह्यद्विराचम्यमार्जयेदिति ॥ ॥ मृत्स्नानविधिःशैवे—अश्वक्रांतइतिस्मृत्वामंत्रेणामंत्र्यमृत्तिकां । उद्धरेदुद्धृतासीतिमंत्रेणसुसमाहितः । नमोमित्रस्येतिऋचादर्शयित्वाचभानवे । आरुह्येतिचगात्राणिसमालंभ्यद्विराचमेत्॥ ॥वारिस्नानविधिर्ब्रह्मांडे—आपोअस्मानित्युक्त्वातुभास्कराभिमुखःस्थितः। इदंविष्णुर्जपित्वाचप्रतिस्रोतोनिमंजति ॥ ॥ पंचगव्यविधिर्मात्स्ये—[1]गायत्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिवैशकृत् । आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्राव्णेतिवैदधि । तेजोसीतिघृतंतद्वद्देवस्यत्वेतिचोदकम् । कुशमिश्रंजपेद्विद्वान्पंचगव्यंभवेत्ततइति । स्नानांगतर्पणादिविधायकर्तव्यं जाबालिः—आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौचविशेषतः । आज्येनैवहिशालाग्नौजुहुयाद्व्या

---

[1] सावित्र्यादाय ।

हुतीःपृथक् । श्राद्धंकुर्याद्व्रतांतेचगोहिरण्यादिदक्षिणेति । होमोष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वेतिमहार्णवः । दक्षिणमितिपाठेत्वंतएवश्राद्धं । शातातपः—विधायवैष्णवंश्राद्धंसांकल्पंनिजकाम्यया । धेनुंद्विजेभ्योदद्याच्चदक्षिणांचस्वशक्तितइति । आज्यहोमेपंचगव्यहोमेचेध्महवनादिस्थालीपाकेतिकर्तव्यतांकेचिन्नेच्छंति । आज्यहोमेपापापहामहाविष्णुर्देवतेतिचवदंति । ततोब्रह्मकूर्चविधिनापंचगव्यप्राशनं । व्रतंनिशामुखमित्युक्तवचनेव्रतशब्दार्थत्वेनमहार्णवादिभिस्तस्यैवोक्तेः । प्रायश्चित्तसंकल्पोव्रतमितिमाधवः । पालाशादिपत्रेताम्रायाःगोमूत्रंअष्टमाषप्रमाणंगायत्र्यादाय श्वेतगोशकृत्षोडशमाषमितंगंधद्वारामित्यादाय पीतगोक्षीरंद्वादशमाषपरिमितमाप्यायस्वेत्यादाय नीलगोदधिदशमाषमितंदधिक्राव्णइत्यादाय कृष्णगोघृतमष्टमाषमितंतेजोसिशुक्रमसीत्यादाय कुशोदकंचतुर्माषमितंदेवस्यत्वेत्यादाय सप्तपत्रैरच्छिन्नाग्रैःकुशैरिरावतीदंविष्णुर्मानस्तोकेशंवतीभिर्हुत्वाप्रणवेनालोड्यतेनाभिमंत्र्यतेनोद्धृत्यतेनवपिबेदितिस्मृत्यर्थसारः । मरीचिस्तु—अग्नयेस्वाहासोमायस्वाहेदंविष्णुर्मानस्तोकेगायत्र्याप्रजापतेनत्वदेतानीत्याहुतीर्जुहुयादित्याह । माधवीयेप्रजापतिः—अग्नयेचैवसोमायसावित्र्याचतथैवच । प्रणवेनतथाहुत्वास्विष्टकृच्चतथैवचेति । ब्राह्मे—उदङ्मुखस्त्रिराचामेदिति । जावालिः—स्त्रीणांहोमोनदातव्यःपंचगव्यंतथैवच । पराशरः—स्त्रीशूद्रस्यतुशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यंसमाचरेत् । पंचगव्यंचकुर्वीतस्नात्वाचैवशुचिर्भवेत् । स्त्रीशूद्राणांपंचगव्येविकल्पइतिमहार्णवे । प्राशनपक्षेपिकापिलपंचगव्यंस्त्रीशूद्राभ्यांपेयं । स्त्रीशूद्रौतुविप्रैःकारयित्वातूष्णींपिबतइतिस्मृत्यर्थसारः । भवदेवीयेयमः—आहृत्यप्रणवेनैवतथोप्यप्रणवेनतु । प्रणवेनसमालो

ड्यप्रणवेनैवतत्पिबेदिति । प्राशनारंभेव्रतंग्रहीष्यइतिविप्रान्प्रार्थयेदितिवृद्धाः । ततःप्रायश्चित्तंमुख्यविधिनोक्तप्रत्याम्नायेनवाकृत्वाव्याहृतिहोमविष्णुश्राद्धगोदानानिपूर्ववद्विधायकृतंप्रायश्चित्तंपूर्णमस्त्वितिब्राह्मणान्वाचयित्वापापापहमहाविष्ण्वर्पणंकुर्यादिति । अवादीत्थमनंतेनकृच्छ्रादेर्लक्षणादिकं । देवेशःप्रीयतांतेनयस्यज्ञानमयंतपः ॥ १ ॥ इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेकृच्छ्रादिविधिः ॥ ॥ एवंकृच्छ्राद्यनुष्ठानपूर्वकंमहार्णवोक्तमरुणसंवादोक्तंवाकर्मकृत्वाकारयितारंसंपूज्यपूर्णतांवाचयेत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

माघकृत्योक्तांपार्थिवपूजांप्रत्यहंकृत्वाऽभिलाषाष्टकजपंवासंवत्सरंकुर्यात् । तद्यथा । विश्वानरउवाच । एकंब्रह्मैवाद्वितीयंसमस्तंसत्यंसत्यंनेहनानास्तिकिंचित् । एकोरुद्रोनद्वितीयोऽवतस्थेतस्मादेकंत्वांप्रपद्येमहेशं ॥ १ ॥ एकःकर्तात्वंहिविश्वस्यशंभोनानारूपेष्वेकरूपोस्यरूपः । यद्वत्[१]प्रत्यंब्वर्कएकोप्यनेकस्तस्मान्नान्यंत्वांविनेशंप्रपद्ये ॥ २ ॥ रज्जौसर्पःशुक्तिकायांचरौप्यंनैरःपूरस्तन्मृगाख्येमरीचौ । यद्वत्तद्वद्विष्वगेषप्रपंचोयस्मिन्[२]ज्ञातेतं[३]प्रपद्येमहेशं ॥ ३ ॥ तोयेशैत्यंदाहकत्वंचवह्नौतापोभानौशीतभानौप्रसादः । पुष्पेगंधोदुग्धमध्येचसर्पिर्यत्तच्छंभोत्वंततस्त्वांप्रपद्ये ॥ ४ ॥ शब्दंगृह्णास्यश्रवास्त्वंहिजिघ्रेरघ्राणस्त्वंव्यंघ्रिरायासिदूरात् । व्यक्षःपश्येस्त्वंरसज्ञोऽप्यजिह्वःकस्त्वांसम्यग्वेत्त्यतस्त्वांप्रपद्ये ॥ ५ ॥ नोवेदस्त्वामीशसाक्षाद्धिवेदनोवाविष्णुर्नोविधाताखिलस्य । नोयोगींद्रानेंद्रमुख्याश्चदेवाभक्तोवेदत्वामतस्त्वांप्रपद्ये ॥ ६ ॥ नोते

---

[१] प्रत्यप्स्वर्कं । [२] यस्मिन्जाते । [३] तंप्रपन्नो ।

गोत्रंनाऽपिजन्मापिनाख्यानोवारूपंनैवशीलंनदेशः । इत्थंभूतोऽपीश्वरस्त्वंत्रिलोक्याःसर्वान्कामान्पूरयेस्तद्भजेत्वाम्
॥ ७ ॥ त्वत्तःसर्वंत्वंहिसर्वंस्मरारेत्वंगौरीशस्त्वंचनग्नोऽतिशांतः । त्वंवैवृद्धस्त्वंयुवात्वंचबालस्तत्किंयत्त्वंनास्यतस्त्वांन
तोस्मि ॥ ८ ॥ स्तुत्वेतिभूमौनिपपातविप्रःसदंडवद्यात्रदतीवहृष्टः । तावत्सबालोऽखिलवृद्धवृद्धःप्रोवाचभूदेववरंवृणीहि
॥ ९ ॥ ततउत्थायहृष्टात्मामुनिर्विश्वानरःकृती । प्रत्यब्रवीत्किमज्ञातंसर्वज्ञस्यतवप्रभो ॥ १० ॥ सर्वांतरात्माभगवान्
शर्वःसर्वप्रदोभवान् । याञ्चांप्रतिनियुंक्तेमांकिमीशोदैन्यकारिणीं ॥ ११ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यदेवोविश्वानरस्यह । शुचेः
शुचिव्रतस्याथशुचिस्मित्वाब्रवीच्छिशुः ॥ १२ ॥ बालउवाच । त्वयाशुचेशुचिष्मत्यांयोऽभिलाषःकृतोहृदि । अचिरेणै
वकालेनसभविष्यत्यसंशयः ॥ १३ ॥ तवपुत्रत्वमेष्यामिशुचिष्मत्यांमहामते । ख्यातोगृहपतिर्नाम्नाशुचिःसर्वामरप्रियः
॥ १४ ॥ अभिलाषाष्टकंपुण्यंस्तोत्रमेतत्त्वयेरितं । अब्दंत्रिकालपठनात्कामदंशिवसंनिधौ ॥ १५ ॥ एतत्स्तोत्रस्यपठ
नंपुत्रपौत्रधनप्रदम् । सर्वशांतिकरं[1]वांपिसर्वापत्परिनाशनं । स्वर्गापवर्गसंपत्तिकारकंनात्रसंशयः ॥ १६ ॥ प्रातरुत्थायसु
स्नातोलिंगमभ्यर्च्यशांभवम् । वर्षंजपन्निदंस्तोत्रमपुत्रःपुत्रवान्भवेत् ॥ १७ ॥ वैशाखेकार्तिकेमाघेविशेषनियमैर्युतः । यः
पठेत्स्नानसमयेलभतेसकलंफलम् ॥ १८ ॥ कार्तिकस्यतुमासस्यप्रसादादहमव्ययः । तवपुत्रत्वमेष्यामियस्त्वन्यस्तत्पठि
ष्यति ॥ १९ ॥ अभिलाषाष्टकमिदंनदेयंयस्यकस्यचित् । गोपनीयंप्रयत्नेनमहावंध्याप्रसूतिकृत् ॥ २० ॥ स्त्रियावापुरुषे

---

[1] चापिसर्वा ।

णापिनियमाल्लिंगसंनिधौ । अब्दंजप्तमिदंस्तोत्रंपुत्रदंनात्रसंशयः । इत्युक्त्वातर्दधेबालःसोपिविप्रोगृहंगतः ॥ २१ ॥

इतिश्रीस्कंदपुराणेकाशीखंडेविश्वेश्वरस्तोत्रंसंपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

एवमपिफलाप्राप्तौदत्तकपुत्रस्वीकारंकुर्यात् ॥ अथदत्तकेग्राह्याग्राह्यविवेकः । तत्रशौनकः—ब्राह्मणानांसपिंडेषुकर्तव्यः पुत्रसंग्रहः । [१]तदभावेऽसपिंडेषुअन्यत्रतुनकारयेदिति । अत्रचसपिंडेष्वपिभ्रातृसुतोमुख्यः तदभावेसगोत्रःसपिंडोयःकश्चित् तदभावेत्वसगोत्रःसपिंडः तदभावेत्वसपिंडःसगोत्रः तदभावेऽसपिंडोऽसगोत्रोपि । तत्रापिभागिनेयदौहित्रवर्जं विरुद्धसंबंधापत्त्यापुत्रत्वबुद्ध्यनर्हभ्रातृपितृव्यमातुलवर्जंत्रयाणांवर्णानांस्वसमानवर्णएव । तत्रापिदेशभेदप्रयुक्तगुर्जरत्वादिजात्यासमानजातीयएव । सर्वोपिसभ्रातृकएवज्येष्ठभिन्नश्च । शूद्रस्यतुभागिनेयदौहित्रावपिग्राह्यौ । अत्रप्रमाणंमनुः—भ्रातॄणामेकजातानांयद्येकःपुत्रवान्भवेत् । सर्वेतेनैवपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीदिति । एकजातानामित्येवसिद्धे भ्रातृपदंसोदरत्वेपिभ्रातृभगिनीनांपरस्परपुत्रनियमोनभवतीतिज्ञापनार्थम् । एकजातग्रहणंभिन्नोदराणामेकपितृकाणामपिसपिंडांतरलाभदशायाभ्रातृपुत्रनियमोनभवतीतिज्ञापनार्थम् । नतुभिन्नोदरभ्रातृसुतस्याग्राह्यत्वज्ञापनार्थम् । ब्राह्मणादित्रयेनास्तिभागिनेयःसुतःक्वचिदितिवृद्धगौतमस्मृतिवत्तन्निषेधस्मृतेःक्वाप्यनुपलंभात् । एकइत्येकोपीत्यर्थः । तेनद्वयोरपिपुत्रवत्त्वेअन्येषामपुत्राणांनभ्रातृपुत्रग्रहणासंभवः । पुत्रवानित्यत्रपुत्रःपुत्रौपुत्रावाविद्यंतेयस्येतिमतुपंस्वीकृत्य

---

[१] तदलाभे ।

नत्वेकंपुत्रंदद्यादितिनिषेधस्यात्रानवकाशइतिकेचित् । तन्न । निषेधबाधशास्त्रस्यस्मृत्यंतरेष्वप्यनुपलंभेसतिशास्त्रविरुद्धेदृशतात्पर्यवर्णनासंभवात् पुत्रवानितिमतुपाएकहायनीपदेभट्टपादोक्तन्यायेनसंख्याविशेषोदासीनपुत्रविशिष्टतामात्रप्रत्यायनाच्च । नचात्रददातेरमुख्यत्वान्नोक्तनिषेधप्रवृत्तिरितिशंक्यम् । प्रकृतेददातेरमुख्यतायाअनुपदमेवनिराकरिष्यमाणत्वात् । पुत्रपदंचौरसपरम् । जन्यपुंस्त्ववाचिनःपुत्रपदस्यतत्रैवमुख्यत्वात् । तेनभ्रातृपुत्रस्यापिदत्तकादेर्भ्रातृमतोपिनग्रहणम् । उत्तरार्धेतेनेत्येकवचनात् पुत्रिणइतिबहुवचनाच्च बहवोप्येकंयुगपत्प्रतिगृह्णीयुरितियुगपत्प्रतिग्रहेणद्रौपदीभार्यात्ववत् द्व्यामुष्यायणत्ववच्चविलक्षणानेकनिरूपितपुत्रत्वफलकस्यसत्रवत् परस्परसहितसर्वभ्रात्रधिकारिकस्यप्रतिग्रहविधेरिहाक्षेपइतिकेचित् । तन्न । भ्रातुःपुत्रोत्पत्तेःप्रागेवपुत्रप्रतिग्रहादिनाभ्रातृपुत्रग्रहमनिच्छतिकस्मिंश्चिद्भ्रातरिइच्छतोप्येकस्यभ्रातृपुत्रप्रतिग्रहानापत्तेः । अन्येतुनैधात्रप्रतिग्रहविधिरनुमीयतेकिंत्वकृतस्यैवभ्रातृपुत्रस्यअपुत्रपितृव्यपुत्रत्वंविधीयते । तेनपुत्रवच्छ्राद्धाधिकारादिलाभः । तथाचबृहत्पाराशरः—अपुत्रस्यपितृव्यस्यतत्पुत्रोभ्रातृजोभवेत् । सएवतस्यकुर्वीतश्राद्धपिंडोदकक्रियाइति । बृहस्पतिरपि—यद्येकजाताबहवोभ्रातरस्तुसहोदराः । एकस्यापिसुतेजातेसर्वेतेपुत्रिणःस्मृताः । बह्वीनामेकपत्नीनामेषएवविधिःस्मृतः । एकाचेत्पुत्रिणीतासांसर्वासांपिंडदस्तुसइति । अत्रसापत्नपुत्रस्यागृहीतस्यापिपिंडदानाधिकारित्वात् पितृपत्न्यःसर्वामातरइत्यादिशास्त्राल्लोकव्यवहाराच्चपुत्रत्वंनिर्विवादं । तत्सहपाठाच्चभ्रातृपुत्रस्याप्यगृहीतस्यैवपुत्रत्वंविधीयतइत्युचितं । अस्तिचोक्तमनुवाक्येनापिसहपठितसापत्नपुत्रस्यागृ

हीतस्यापिपुत्रत्वविधायकंवाक्यांतरं—सर्वासामेकपत्नीनामेकाचेत्पुत्रिणीभवेत् । सर्वास्तास्तेनपुत्रेणपुत्रिण्योमनुरब्रवीदिति । तदपिन । अपुत्रस्यैवभ्रातृपुत्रस्यपुत्रत्वेत्रयोदशपुत्रापत्तेः । तत्रच—पुत्रान्द्वादशयानाहनृणांस्वायंभुवोमनुः । तेषांषड्बंधुदायादाःषडदायादबांधवाइतिद्वादशसंख्याविरोधात् । पत्नीदुहितरश्चैवपितरौभ्रातरस्तथा । तत्सुतागोत्रजाबंधुशिष्यसब्रह्मचारिणइतियाज्ञवल्कीयेवचसिभ्रातृपुत्राणांभ्रात्रनंतरस्थाननिवेशानुपपत्तेश्च तेषांपुत्रत्वेइतरपुत्रवत्पत्न्याःपूर्वमेवनिवेशौचित्यात् । व्याख्यातंच भ्रातृणामेकजातानामितिवचोविज्ञानेश्वरेण—भ्रातृपुत्रस्यपुत्रीकरणसंभवेअन्येषांपुत्रीकरणनिषेधार्थंनपुनःपुत्रत्वप्रतिपादनाय तत्सुताइत्यनेनविरोधादिति । कातर्ह्येतस्यवचसोगतिरितिचेत् नापुत्रस्यलोकोस्ति जायमानोवैब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणवान्जायते यज्ञेनदेवेभ्यः प्रजयापितृभ्यो ब्रह्मचर्येणऋषिभ्यइत्यादिशास्त्रबोधितस्याप्रजस्त्वप्रयुक्तदोषस्यनिवृत्तिःपुत्रकार्यभूता द्वादशपुत्रभिन्नेनापिभ्रातृसुतेनाऽपुत्रपितृव्यस्यभवतीतिज्ञापनार्थं । संगच्छतेचैकस्यापिसुतेजातइतियद्येकःपुत्रवान्भवेदिति[1]चजननमात्रेणसत्तामात्रेणचेतरेषां[2]पुत्रवत्त्वसंकीर्तनं । उचितं चैतत् स्वपुत्रेणेवभ्रातृसुतेनापिसमस्तपितृणांपिंडोदकक्रियानिर्वाहस्यवंशविच्छेदपरिहारस्यचसंभवात् । इत्थंचभ्रातृणामितिसर्वेपुत्रिणइतिबहुवचनंतावतोवारुणानितिवत् पृष्ठशमनीयेनयजेरन्नितिवच्चयथासंभवप्राप्तबहुत्वानुवादः । उक्तज्ञापनस्यफलंकेवलंपरलोकार्थितयाभ्रातृपुत्रवतोऽपुत्रस्यदत्तकादिस्वीकारप्रवृत्तिनिरासः । पत्न्यादिभ्यःपूर्वंमदीयपिंडदा

---

१ दितिवचमजनन्न । २ पुत्रत्व ।

नरिक्थाधिकारीकश्चिद्भवेदितिकामनायांभ्रातृपुत्रस्यैवदत्तकविधिनास्वीकारसिद्धिरप्यर्थाज्जायमानाभवतिवाक्यस्यप्रयोजनं। अप्रजस्त्वदोषनिवर्तकतयापुत्रसदृशस्यैवपुत्रप्रतिनिधित्वेनस्वीकरणसुचितमितिषाष्ठप्रतिनिधिन्यायादेवसिद्धेः। एवं[1]चसतिनमन्वादिवाक्येषुअश्रुतप्रतिग्रहादिक्रियां[2]कल्पनाक्लेशः। नापिमिताक्षरादिग्रंथविरोधः । नापियाज्ञवल्क्यादिवाक्येभ्रातृसुतानांपंचमस्थाननिवेशानुपपत्तिः । पुत्रत्वेनाकृतानांभ्रातृसुतानांपत्न्यादिषुसत्सुपुत्रकार्यभूतपैतृकर्णापाकरणकारिणामपिवचनाद्रिक्थग्रहणाद्यनधिकारसंभवात् पुत्रत्वेनकृतानांतुसंभवतितदधिकारः । संगच्छतेचैवंसति कालिकापुराणेशंकरसुतयोर्वेतालभैरवयोर्नंदिवाक्येनपुत्रार्जनेप्रवृत्तयोर्मध्येभैरवेणोर्वश्यासुत्पादितपुत्रस्यतद्भ्रात्रावेतालेनापिपुत्रत्वेनस्वीकरणं ।—ततःकदाचिदुर्वश्यांभैरवोमैथुनंगतः । तस्यांसजनयामाससुवेशंनामपुत्रकम्। तमेवचक्रेतनयं वेतालोपिस्वकंसुतमिति। अत्रच[3]स्वकसुतकार्यकारित्वेनतमेवाभ्यमन्यतेतियद्यर्थःक्रियते यदिवाप्रतिग्रहेणस्वसुतत्वंसंपादितवानिति। उभयथापिएतस्मिन्मतेनक्षतिः । भ्रातृसुताभावेपूर्वोदाहृतशौनकवाक्यादेवग्राह्यसापिंडासंभवेसगोत्रएवेतिनियममाहवृद्धगौतमः—सगोत्रेषुकृतायेस्युर्दत्तक्रीतादयःसुताः । विधिनागोत्रतांयांतिनसापिंड्यंविधीयत इति । गोत्रतांसंततित्वं । संततिर्गोत्रजननकुलानीतित्रिकांडीस्मरणात् । सपिंडसगोत्रासंभवेऽसगोत्रःसपिंडएव ग्राह्यः । शौनकोक्तवचनोत्तरार्धेसापिंडाभावएवासपिंडनियमात् गोत्रापेक्षयासापिंड्यस्यप्रत्यासन्नतयातत्कृतसादृश्य

---

[1] एवंसति। [2] कल्पनेक्लेशः। [3] स्वसुत।

स्यबलवत्त्वाच्चसर्वथासपिंडालाभेसमानगोत्रस्यैवग्रहणमनंतरोदाहृतवृद्धगौतमवचसैवसिद्ध्यति । नसापिंड्यंविधीयतइतिचतुर्थपादोक्तनिषेधस्यासपिंडसगोत्रएवसंभवात्। सगोत्रालाभेऽसगोत्रोपि । दत्ताद्याअपितनयानिजगोत्रेणसंस्कृताः । आयांतिपुत्रतांसम्यगन्यबीजसमुद्भवाइतिकालिकापुराणात् । गोत्ररिक्थेजनयितुर्नभजेद्दत्रिमःसुतइतिमानवलिंगाच्च । दत्तक्रीतादिपुत्राणांबीजवप्तुःसपिंडता । पंचमीसप्तमीतद्वद्गोत्रंतत्पालकस्यचेतिबृहन्मनुवाक्येसापिंड्यगोत्रयोर्व्यवस्थाविधानाच्च । असगोत्रेष्वपिभागिनेयादिनिषेधमाहशौनकः—दौहित्रोभागिनेयश्चशूद्राणांविहितःसुतः । ब्राह्मणादित्रयेनास्तिभागिनेयःसुतःक्वचिदितिपूर्वार्धेभागिनेयस्यदौहित्रसाहचर्यात्उत्तरार्धेभागिनेयपदंदौहित्रोपलक्षणार्थं पुत्रत्वबुद्ध्यनर्हभ्रात्राद्युपलक्षणार्थंच । समानवर्णएवग्राह्यइतिनियमस्तुपूर्वोदाहृतशौनकवाक्येअन्यत्रतुनकारयेदितिचरणेनब्राह्मणैर्ब्राह्मणान्येषुनकर्तव्यइत्यर्थकेनलभ्यते । तथा—क्षत्रियाणांस्वजातौवागुरुगोत्रसमेपिवा । वैश्यानां वैश्यजातेषुशूद्राणांशूद्रजातिषु । सर्वेषांचैववर्णानांज्ञातिष्वेवनचान्यतइतिशौनकवचनाच्चविशेषवचनैरेवसमानवर्णत्वनियमेसिद्धेपुनर्ज्ञातिष्वेवनचान्यतइत्युक्तिः गुर्जरत्वादिनापिसमानजातीयत्वनियमार्थं । क्षत्रियेणस्वीकर्तव्यस्यदत्तकस्यसमानगोत्रस्यैवचिकीर्षायांपुरोहितगोत्रेणैवसमानगोत्रत्वमितिज्ञापनार्थं । गुरुगोत्रेतिपौरोहित्यान्राजविशामित्याश्वलायनोक्तेः । सभ्रातृकएव[1]ग्राह्यइतिसूचितंशौनकेन—नैकपुत्रेणकर्तव्यंपुत्रदानंकदाचन । बहुपुत्रेणकर्तव्यंपुत्रदानंप्रयत्नत

---

[1] ग्राह्यत्वमिति ।

इति । वसिष्ठोपि—नत्वेवैकंपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वासहिसंतानायपूर्वेषामिति । ज्येष्ठभिन्नोग्राह्यइत्यपिस्मृत्यंतरे सूचितं नज्येष्ठंपुत्रंदद्यादिति । दौहित्रभागिनेयौशूद्रेणग्राह्यावित्याहशौनकः—दौहित्रोभागिनेयश्चशूद्राणांचापिदाप्यत इति । उक्तविधदत्तकस्वीकारःपुंभिरिवस्त्रीभिरपिसधवाभिर्विधवाभिश्चकार्यः । वंध्यावामृतपुत्रावापुत्रार्थंसमुपोष्यचेतिशौनकीयवचनस्यविशेषश्रवणात् । केचित्तु अपुत्रेणैवकर्तव्यःपुत्रप्रतिनिधिःसदेति अस्मिन्वाक्येएवकारश्रवणात्पुंस्त्वश्रवणाच्च नस्त्रीपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वान्यत्रभर्तुरनुज्ञानादितिवसिष्ठवाक्येभर्तुरनुज्ञानाभावे[1]स्त्रीणांप्रतिग्रहनिषेधाच्च नापुत्राणांस्त्रीणांभर्तुरनुज्ञाभावेपुत्रप्रतिग्रहेधिकारइत्याहुःतदयुक्तम् । अपुत्रपदार्थस्यविधेयत्वेहितद्विशेषणपुंस्त्वविवक्षामाश्रित्यपुंस्त्वश्रवणादितिहेतूपन्यासउचितःस्यात् नतुतस्यविधेयत्वं ।मुख्याभावेतत्कार्यकारीहिप्रतिनिधिपदार्थः। एवंच ऐरंकृत्वोद्गायेदितिवाक्यबलादेवगिरापदकार्येइरापदविधिबलात्नगिरागिरेतिब्रूयादितिगिरापदनिषेधस्ययदानुवादत्वमाश्रितंतदाकाक्षायोग्यतासहकृतात्पुत्रप्रतिनिधिःकार्यइत्येतावतोवाक्यादेवापुत्राधिकारिकत्वलाभात् अपुत्रपदंकथंनानुवादःतदर्थस्यविधेयत्वाभावेचनतरांपुंस्त्वविवक्षेति। किंचविरुद्धौभवदुपन्यस्तौहेतू। एवकारश्रवणादेवपुंस्त्वस्याविवक्षितत्वात्। अश्वमेधेहि अतिदेशप्राप्ताध्रिगुवचनेअप्राप्तस्यापिषड्विंशतिपदस्यषड्विंशतिरित्येवब्रूयादित्यत्रनविधिः एवकारार्थविशेषणत्वादित्युक्तंपूर्वमीमांसायां । तथाअत्रह्येवावपंतीत्यत्रानंत्यतृचेष्वप्राप्तस्याप्यावापस्यततएवनविधानमाश्रितं तथो

---

[1] नुज्ञाभावे. ।

त्तरमीमांसायामप्यात्मानमेवलोकमुपासीतेत्यादौ ततएवनोपास्यत्वेनात्मविधानमित्याश्रितंविवरणादौ । एवंचैवकारार्थविशेषणस्यसंभवत्प्राप्तिकस्याविधेयत्वेकथंतद्विशेषणपुंस्त्वविवक्षेतिकृतबुद्धयएवविदांकुर्वंतु । यदिपरमेवकारमथैतैरेवरश्मिभिरूर्ध्वआक्रमतइतिवत्कथंचिदयोगव्यावृत्त्यर्थतयानुवादमाश्रित्यापुत्रपदार्थोविवक्ष्यतेतथापिमलिनःस्नायादित्यत्रमलिनपदमिवफलकामनाक्षेपकत्वेनाधिकारिसमर्पकमेवापुत्रपदंस्वीकार्यं । ततश्चस्वर्गकामादिपदगतपुंस्त्वाविवक्षासाधकषाष्ठन्यायेनैवपुंस्त्वाविवक्षासिद्धिरितिप्रथमहेतुद्वयालीकत्वसिद्धिः । नचापुत्रपदंविवक्षितंस्वीकृत्यशास्त्रांतरप्राप्तपुत्रप्रतिग्रहानुवादेनपुंसैवकर्तव्योनस्त्रियेतिपरिसंख्यास्त्वितिशंक्यम् । तथासतिस्त्रियाकर्तव्यंपुत्रप्रतिग्रहंप्रतिभर्त्रनुज्ञांगविधेरलीकत्वापत्तेः । नापितृतीयोहेतुः । निषेधवाक्यपर्यालोचनयाभर्त्रनुज्ञानस्यप्रतिग्रहांगत्वंवदद्भिर्हितदंगत्वेनतद्विधिपरत्व[1]मस्यवाक्यस्या[2]श्रयणीयम् । न[3]चाविहितमंगंभवतीतिन्यायात् । ततश्चपुत्रप्रतिग्रहायभर्त्रनुज्ञांस्वीकुर्यादितिविधिर्यमधिकारिणंप्रवर्तयन्नियमविधितामापद्यतेयश्चविधिविषयेसमर्थस्तमेवावगाहतइतिसधवांप्रत्येवतस्यप्रवृत्तिः । तस्यामेवनियमोपजीव्यपाक्षिकप्राप्तेःसंभवात् तयैवानुज्ञास्वीकारस्यशक्यत्वाच्च । स्वीकृतंविनैवविशेषणंनियमविधित्वलाघवानुरोधेनैवविशेषविषयत्वमुपांशुयजुषेत्यत्रद्वितीये । एवंचयथा—पक्षांतंकर्मनिर्वर्त्यवैश्वदेवंचसाग्निकः । पिंडयज्ञंततःकुर्यात्ततोन्वाहार्यकंबुधइतिवचसा वैश्वदेवाधिकृतसाग्निकंप्रतिपिंडयज्ञांगत्वेनवैश्वदेवोत्तरकालतारूपमनुपादेयगुणं

---

[1] परत्ववाक्य । [2] श्रवणीयं । [3] नवाविहित ।

नियमयतापिज्येष्ठाद्यविभक्ततयातदनधिकृतसाग्निकस्यपिंडयज्ञाधिकारोनव्यावर्त्यते तथासधवाप्रत्युक्तनियमंकुर्वतापिशास्त्रेणविधवायाःपुत्रप्रतिग्रहेऽधिकारोनव्यावर्त्यते । नचानुज्ञारूपोगुणोनुपादेयोयेननापुत्रस्यलोकोस्तीत्यादिवचनेनावश्यकर्तव्येपिसायंकालादिवदधिकारमवच्छिंद्यादितिसुधीभिरेवालोचनीयम् । अथांगत्वप्रतिज्ञापरित्यज्यापिभर्त्रनुज्ञारहिताप्रतिप्रतिग्रहनिषेधःक्रियतइत्युच्यते तथापिनविधवायाअधिकारोव्यावर्तयितुंशक्यते । अनुज्ञाशब्दोहिपुमभिप्रायवचनोधीष्टादिशब्दवत् । एवंचजीवतोभर्तुस्तादृशाभिप्रायंतज्जीवनदशायांतन्मरणोत्तरंवाज्ञातवत्याःकथंनाधिकारः । त्वयापुत्रःस्वीकर्तव्यइतिशब्दंप्रयुज्यभर्तरिमृतेतुविधवयाक्रियमाणंपुत्रस्वीकरणंभर्त्रनुज्ञयैवकृतंभवतीतिस्फुटम् । ब्राह्मणाःसंस्थापयतमेयज्ञमित्युक्त्वाहवनीयंप्रविष्टेयजमानेऋत्विग्भिःक्रियमाणस्यसर्वस्वारसमापनस्ययजमानानुज्ञातत्ववत् । वस्तुतस्तुनापुत्रस्यलोकोस्तीत्यादिशास्त्रेणपुत्रीकरणस्यदोषाहेतुत्वेभर्त्रनुज्ञारहितांप्रतिपुत्रीकरणाभ्यनुज्ञापरमदःशास्त्रंनतुनिषेधपरं शास्त्रप्रासनिषेधस्यान्याय्यत्वात् पर्युदासलक्षणाप्रसंगादितिसुधीभिरूह्यम् । नचनस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियाइत्यभावेज्ञातयइतिच भर्त्रभावेज्ञातिपरतंत्रत्वान्नापुत्रायाविधवायाअधिकारःपुत्रप्रतिग्रहेसिद्ध्यतीतिशंकितुमप्यर्हम् । रक्षेत्कन्यांपिताविन्नांपतिःपुत्रास्तुवार्धके । अभावेज्ञातयस्तेषांनस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियाइतियाज्ञवल्क्यवचस्तद्व्याख्यानोपक्रमेचमिताक्षराकारेणोक्तंपाणिग्रहणात्प्राक्पिताकन्यामकार्यकरणाद्रक्षेदिति । एवंचनिषिद्धाचरणात्स्त्रीनिवर्तनेतत्तदवस्थायांतत्तदधिकारइतिवचनस्वरसाद्व्याख्यानाच्चप्रतीयते नतुविहिताचरणप्रतिबंधेपि । नचनित्यकाम्यव्रताद्याचरणेज्ञातिपारतं

न्यकृतोविधवानामधिकारप्रतिबंधःक्वचिद्देशेकैरपिशिष्टैर्व्यवहियते । पक्षद्वयावसानेतुराजाभर्ताप्रभुःस्त्रियाइतिमिताक्षरोदाहृतवचनेनच त्वदुक्तरीत्याज्ञातिरहितानांविधवानांराजाज्ञांविनाव्रतादावधिकाराभावःस्यात् । नचव्रतादेःपुत्रप्रतिग्रहेकश्चिद्विशेषइतिमहत्पांडित्यमाविष्कृतंधर्मशास्त्राभिज्ञानशून्यैः । नचप्रतिग्रहमंत्राभावेनाधिकाराभावोक्तिरपिघटते। अनुज्ञायांसत्यामिवासत्यामपितस्यामुक्तरीत्याधिकारनिर्णये रथकारवन्मंत्राध्ययनकल्पनासंभवात् । एतेनानुज्ञायांसत्याममंत्रकःप्रतिग्रहइतिनिरस्तम् । तस्माद्विधवायाअपिस्वीकृतःपुत्रोवृत्तिधनभाक्भवत्येवेतितादृशब्राह्मणस्यवृत्तिप्रतिबंधंकुर्वंतःस्वस्यैवानर्थाययतंते। योब्राह्मणस्यवृत्तौतुप्रतिकूलंसमाचरेत्। विड्भुजांतुकृमीणांस्यादेकःसंवत्सरान्बहूनितिशास्त्रादित्यलंपल्लवितेन । चूडादिसंस्कारेषुकृतेषुअकृतेषुवा पंचमवर्षात्प्रागूर्ध्वंचदत्तकोग्राह्यः । यत्तु अकृतसंस्कारएवापूर्णपंचवर्षएवदत्तकःस्वीकार्यः ।—दत्ताद्याअपितनयानिजगोत्रेणसंस्कृताः । आयांतिपुत्रतांसम्यगन्यबीजसमुद्भवाः । पितुर्गोत्रेणयःपुत्रःसंस्कृतःपृथिवीपते । आचूडांतंनपुत्रःसपुत्रतांयातिचान्यतः । चूडाद्यायदिसंस्कारानिजगोत्रेणवैकृताः । दत्ताद्यास्तनयास्तेस्युरन्यथादासतोच्यते । ऊर्ध्वंतुपंचमाद्वर्षान्नदत्ताद्याःसुतानृप । गृहीत्वापंचवर्षीयंपुत्रेष्टिंप्रथमंचरेत् । पौनर्भवंतुतनयंजातमात्रंसमानयेत् । कृत्वापौनर्भवष्टोमंजातमात्रस्यतस्यवै । सर्वांस्तुकुर्यात्संस्कारान्जातकर्मादिकान्नरः । कृतेपौनर्भवष्टोमेसुतःपौनर्भवःस्मृतइतिकालिकापुराणादिति । तन्न । एषांवचसांबहुषुकालिकापुराणपुस्तकेष्वदर्शनान्निर्मूलत्वादितिकेचित् । अन्येतुसमूलत्वेपिआद्यश्लोकत्रयस्यासगोत्रदत्तकविषयत्वात्तत्प्रायपठितत्वे

नांत्यश्लोकस्यापितद्विषयत्वमेवोचितं । अतःसगोत्रस्यदत्तकस्यनायंनियमइतिपरिणीतोपिदत्तकोभवेदित्याहुः । वस्तुतस्तु नासगोत्रेष्वप्युपनयनांतसंस्कारोत्तरंदत्तकत्वसामान्यनिषेधःकर्तुंशक्यःपुराणवचोभिर्वैदिकलिंगविरुद्धस्मृतिवचसां प्रामाण्यासंभवस्यबलाबलाधिकरणवार्तिकराणकसिद्धत्वात् उक्तपौराणिकवाक्यानांचबह्वृचब्राह्मणविरोधात् । तथा हि दत्ताद्याइतितावत्कृत्रिमादीनामपिग्रहणमितितिनिर्विवादं । ततश्चस्वगोत्रेणसंस्कृतःस्वयंदत्तोपिपुत्रोनभवतीतिप्रतीयते । ब्राह्मणेचशुनःशेपोविश्वामित्रपुत्रःस्वयमभवदितिस्फुटमुक्तम्—अथहशुनःशेपोविश्वामित्रस्यांकमाससादसहोवाचाजीगर्तःसौयवसिर्ऋषेपुनर्मेपुत्रंदेहीति नेतिहोवाचविश्वामित्रो देवावाइमंमह्यमरासतेतिसहदेवरातोवैश्वामित्रआसेति। अथभाष्यं—शुनःशेपइत्यूर्ध्वंकस्यपुत्रोस्त्वितिविचारेसति तदीयेच्छैवनियामिकेतिमहर्षीणांवचःश्रुत्वा शुनःशेपःस्वेच्छयाविश्वामित्रपुत्रत्वमंगीकृत्य सहसातदीयमंकमाससादेति।नचासावनुपनीतः।तादृशस्यवेदाध्ययनासंभवात्। अनधीतवेदस्यचवैदिकमंत्रकरणकप्रजापत्यादिस्तुतौप्रवृत्त्ययोगात् इंद्रदत्तसुवर्णरथप्रतिग्रहेसमंत्रकेप्रवृत्त्ययोगाच्च । श्रूयतेचैषा तस्माइंद्रःस्तूयमानःप्रीतोमनसाहिरण्यरथंददौतमेतयाप्रतीयायशश्वदिंद्रइतीति । प्रतीयायप्रतिजग्राहेतिव्याख्यातं भाष्ये । अतःपौराणवचसांसमूलत्वेपीत्थंयोजना । अन्यबीजसमुद्भवाइतिदत्ताद्यास्तनयाजातकर्मप्रभृतिभिःसंस्कारैर्निजगोत्रेणचेत्संस्कृताभवेयुस्तदैवप्रतिग्रहीतुःसम्यक्पुत्रतांयांति । सम्यक्त्वंचसमानगोत्रत्वविशिष्टमसाधारण्यं । तत्रयद्यपिजातकर्मादिषुसाक्षाद्गोत्रविनियोगोनश्रूयते तथापितदंगभूतवृद्धिश्राद्धद्वारकोगोत्रसंबंधोबोध्यते । चूडायांतुसाक्षा

देवतत्संबंधः तत्तद्गोत्रिणंप्रतिआर्षेयसंख्ययाशिखाकरणविधानात् । शिखाअपिचकर्तव्याःकुमारस्यार्षसंख्ययेति । अतएवद्वितीयवचोप्यन्यतइतितसिल्प्रत्ययंषष्ठ्यर्थेस्वीकृत्यचकारंचावधारणार्थमंगीकृत्येत्थंयोज्यम् । आचूडांतंजनकगोत्रेणयः संस्कृतःसप्रतिग्रहीतुःपुत्रोभवन्नपिनान्यस्यैवपुत्रतांयातिकिंतुद्व्यामुष्यायणोद्विगोत्रोभवतीति । तथाचूडायाःप्राक्संस्कारेषुपितृगोत्रेणकृतेष्वपिचूडाप्रभृतिसंस्काराःप्रतिग्रहीत्रानिजगोत्रेणचेत्कृतास्तदैवदत्ताद्यास्तेतनयानिजगोत्रेणकृताःस्युः । अन्यथातुअदासतादासवैलक्षण्यंरिक्थग्राहित्वादिनाभवति नतुस्वासाधारणगोत्रत्वमित्यर्थकेनतृतीयवचनेनापिचूडादिसंस्काराणांनिजगोत्रानुष्ठानस्यैकगोत्रताप्रापकत्वेनतात्पर्याच्चूडाद्यग्रहणाच्चतत्पूर्वसंस्कारेषुजनकगोत्रेणकृतेष्वपिचूडाद्याःसंस्काराःप्रतिग्रहीतृगोत्रेणचेज्जातास्तदाद्व्यामुष्यायणत्वेपिनद्विगोत्रत्वंकिंतुप्रतिग्रहीतृगोत्रत्वमेवेत्युक्तंभवति । यथाचप्रतिग्रहीतृगोत्रेणचूडा[1]कर्मतत्समानगोत्रत्वप्रापकंतथातद्गोत्रेणतच्छाखोक्तविधिनोपनयनंतत्समानशाखीयत्वस्यापिप्रापकंभवति । यथाहवसिष्ठः—अन्यशाखोद्भवोदत्तःपुत्रश्चैवोपनायिनः । स्वगोत्रेणस्वगृह्योक्तविधिनास्वस्वशाखभागिति । यत्तूर्ध्वंत्वित्यादिश्लोकार्धंतन्नस्वतंत्रनिषेधपरं । उत्तरार्धगतपुत्रेष्टिविधिनावाक्यभेदापत्तेः किंतुअनाहुतिर्वैजर्तिलाश्चगवेधुकाश्चेत्यस्यपयोहोमविधिशेषत्ववत्पुत्रेष्टिविधिशेषत्वमस्यबोध्यम् । पुत्रेष्टिस्तुअग्नयेपुत्रवतेपुरोडाशमष्टाकपालंइंद्रायपुत्रिणेपुरोडाशमेकादशकपालंप्रजाकामोग्निरेवास्मैप्रजांप्रजनयतिवृद्धामिंद्रःप्रयच्छतीतिप्रसिद्धा । प्रथमंचरेदितिसंस्कारे

---

[1] कर्मतःसमान ।

भ्यःप्रथममित्यर्थः । तथाचान्वारंभणीयायाआरंभयोग्यतार्थत्ववत्पुत्रेष्टेःसंस्कारयोग्यतार्थत्वप्रतीतेस्तादृशसंततावेवपुत्रेष्ट्यपेक्षा नतुद्व्यामुष्यायणेइतिसिद्धम् । एवंपौनर्भवेपौनर्भवष्टोमाख्यसोमयागस्यापिसंस्कारयोग्यतासिद्धिद्वारातादृशसंततावेवोपयोगोबोध्यः । अनाहिताग्नीनांतुपुत्रेष्ट्यसंभवात्पुरोडाशस्थानेचरूकार्यौ । यआहिताग्नेःपुरोडाशास्तेऽनाहिताग्नेश्चरवइतिशास्त्रात् । अतःकृतसंस्कारोपिपंचवर्षाधिकबालोपिदत्तकोभवतीतिसिद्धम् । इतिग्राह्याग्राह्यविवेकः ॥ ॥ कथंग्राह्यइत्यपेक्षायामाहशौनकः—शौनकोहंप्रवक्ष्यामिपुत्रसंग्रहमुत्तमम् । वंध्यावामृतपुत्रावापुत्रार्थंसमुपोष्यच । वाससीकुंडलेछत्रमुष्णीषंचांगुलीयकम् । आचार्यंधर्मसंयुक्तंवैष्णवंवेदपारगम् । वर्हिःकुशमयंचैवपालाशंचेध्ममेवच । एतान्याहृत्यबंधूंश्चज्ञातीनाहूययत्नतः । बंधूंश्चान्नेनसंपूज्यब्राह्मणांश्चविशेषतः । अग्न्याधानादियत्तंत्रंकृत्वाज्योत्पवनांतकम् । दातुःसमक्षंगत्वातुपुत्रंदेहीतियाचयेत् । दानेसमर्थोदातास्मैयेयज्ञेनेतिपंचभिः । देवस्यत्वेतिमंत्रेणहस्ताभ्यांप्रतिगृह्यच । अंगादंगेत्यृचंजप्त्वाचाघ्रायशिशुमूर्धनि । वस्त्रादिभिरलंकृत्यछत्रच्छायागतंशिशुम् । नृत्यगीतैश्चवाद्यैश्चस्वस्तिशब्दैश्चसंयुतः । गृहमेत्येध्ममाधायचरुंहुत्वाविधानतः । यस्त्वाहृदेतिद्वाभ्यांचतुभ्यमग्नेऋचैकया । सोमोददित्येताभिःप्रत्यृचंपंचभिस्तथा । स्विष्टकृदादिशेषंचकृत्वाहोमंसमापयेत् । ब्राह्मणानांसपिंडेषुकर्तव्यःपुत्रसंग्रहः । तदलाभेऽसपिंडेषुअन्यत्रतुनकारयेत् । क्षत्रियाणांस्वजातौवैगुरुगोत्रसमेपिवा । वैश्यानांवैश्यजातेषुशूद्राणां

---

१ गतंसुतम् ।

शूद्रजातिषु । सर्वेषांचैववर्णानांजातिष्वेवनचान्यतः । दौहित्रंभागिनेयंवाशूद्राणांचापि[१]दापयेत् । नैकपुत्रेणकर्तव्यंपुत्रदानंकदाचन । बहुपुत्रेणकर्तव्यंपुत्रदानंप्रयत्नतः । दक्षिणांगुरवेदद्याद्यथाशक्तिद्विजोत्तमः । नृपोराष्ट्रार्धमेवापिवैश्योरत्नशतत्रयम् । शूद्रःसर्वस्वमेवापिअशक्तश्चेद्यथाबलमिति । पंचभिरित्यनंतरंदद्यादितिशेषः । द्वाभ्यामिति द्वाभ्यामृग्भ्यांद्वेआहुतीइतिकेचित् । तन्न । वक्ष्यमाणबौधायनसूत्रैकमूलत्वप्रयुक्तलाघवलिप्सयाएकस्याएवाहुतेःस्वीकर्तुमुचितत्वात् । अयंचपुत्रप्रतिग्रहविधिर्बह्वृचविषयोबह्वृचगृह्यप्रतिपादकत्वाच्छौनकस्य ॥ यजुर्वेदिनांतुपुत्रप्रति[२]ग्रहविधिमाहबौधायनः—पुत्रप्रति[३]ग्रहविधिंव्याख्यास्यामःशोणितशुक्रसंभवोमातृपितृनिमित्तकस्तस्यप्रदानपरित्यागविक्रयेषुमातापितरौप्रभवतोनत्वेकंपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वासहिसंतानायपूर्वेषांनस्त्रीपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वान्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः । प्रतिग्रहीष्यन्नुपकल्पयतेद्वेवाससीद्वेकुंडलेअंगुलीयकंचाचार्यंचवेदपारगंकुशमयंबर्हिःपर्णमयमिध्ममित्यथबंधूनाहूयमध्येराजनिचावेद्यपरिषदिचागारमध्येब्राह्मणानन्नेनपरिविष्यपुण्याहंस्वस्त्यृद्धिमितिवाचयित्वाथदेवयजनोल्लेखनप्रभृत्याप्रणीताभ्यःकृत्वादातुःसमक्षंगत्वापुत्रंमेदेहीतिभिक्षेतददामीतीतरआहतंपरिगृह्णातिधर्मायत्वागृह्णामिसंतत्यैत्वागृह्णामीत्यथैनंवस्त्रकुंडलाभ्यामंगुलीयकेनचालंकृत्यपरिधानप्रभृत्यग्निमुखांतंकृत्वापक्त्वाजुहोतियस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानइतिपुरोनुवाक्यामनूच्ययस्मैत्वंसुकृतेजातवेदइतियाज्ययाजुहोत्यथव्याहृतीर्हुत्वास्विष्टकृत्प्रभृतिसिद्धमाधेनुवरप्रदानाद्दक्षिणांददात्येतेचवाससीपरिधाय

---

[१] दीयते । [२] ग्रहमाह । [३] ग्रहंव्याख्या ।

एतेकुंडलेएतच्चांगुलीयकम् । यद्येवंकृत्वौरसःपुत्रउत्पद्यतेतुरीयभागेप्रभवतीतिहस्माहबौधायनइति । अंगुलीयकमित्यनंतरमनुपक्तेनददातीत्यनेनकुंडलांगुलीयदानंग्रहीतारंप्रतिविधीयते । प्रभवतइतिमातापित्रोरेवदानाधिकारइत्याशयः । मध्यइतिबंधुसमक्षंराजन्यावे[1]दनमित्याशयः । प्रभवतीतितुरीयभागमेवलभतेइत्याशयः ॥

॥ अथबह्वृचाधिकारिकःशौनकोक्तरीत्यापुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः । पूर्वेद्युःकृतोपवासः—वाससीकुंडलेछत्रमुष्णीषंचांगुलीयकम् । आचार्यंधर्मसंयुक्तंवैष्णवंवेदपारगम् । बर्हिःकुशमयंचै[2]वेध्मंपालाशमेवच । एतान्याहृत्यबंधूंश्चज्ञाती[3]नाहृत्ययत्नतः । पवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य ममाप्रजस्त्वप्रयुक्तपैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशौनकोक्तविधिना पुत्रप्रतिग्रहंकरिष्ये । तदंगत्वेनस्वस्तिपुण्याहवाचनमाचार्यस्यमधुपर्केणार्हणंविष्णुपूजनंबंधुवर्गब्राह्मणेभ्योन्नदानंचकरिष्ये । तं[4]दादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्यवरणांतंकृत्वा मधुपर्कांतेपितृणांकुलदेवतानांगुरूणांच[5]प्रीत्यर्थंब्राह्मणान्बंधूंश्चभोजयेत् । ततआचार्यःदेशकालौसंकीर्त्ययजमानानुज्ञयापुत्रप्रतिग्रहांगत्वेनविहितहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्य अग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेअत्रप्रधानं सकृदग्निंषड्वारंसूर्यांसावित्रींचवरुणाग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचाज्येनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिअष्टाविंशतिमुष्टीन्तूष्णींनिरुप्यतावत्कृत्वःप्रोक्ष्यआज्योत्पवनांतंकृत्वाब्राह्मणैःसहदातुःसमक्षंगच्छेत् । दातारंप्रत्यस्मैपुत्रंदेहीतिब्राह्मणद्वारायाच्ञांकारयेत् । ततोदाताआचम्यप्राणाना

---

१ वेदनंकार्यमित्या । २ चैवसिध्मं । ३ नाहूय । ४ तत्रादौ । ५ गुरूणांप्रीत्यर्थं ।

यम्यदेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपुत्रदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणपतिंसंपूज्ययथाशक्तिचंदनादिनाप्रतिग्रहीतारं संपूज्य । येयज्ञेतिपंचानांनाभानेदिष्ठोमानवऋषिःविश्वेदेवादेवताआद्याश्चतस्त्रस्त्रिष्टुभः पंचम्यनुष्टुप् पुत्रदानेविनियोगः ॐ येयज्ञेनदक्षिणयासमक्ता० ऋचः ५ इत्यंतेइमंपुत्रंतवपैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणसिद्ध्यर्थंआत्मनश्चश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंतुभ्यमहंसंप्रददेनममप्रतिगृह्णातुपुत्रंभवानित्यंतेप्रतिग्रहीतृहस्तेसाक्षतंजलंक्षिपेत् । ततःप्रतिग्रहीतादेवस्यत्वेतिमंत्रेणहस्तद्वयेनप्रतिगृह्यस्वांकेउपवेश्यअंगादंगादिति शिशुमूर्धनिआजिघ्रेत् । ततोयुवंवस्त्राणीतिवस्त्रंपरि[1]धाप्यतूष्णीमुष्णीषंबध्वाकुंकुमादिनातिलकंकृत्वा हिरण्यरूपइत्यादिनाकुंडला[2]भ्यामलंकृत्य छत्रेणाच्छादितंबालंनृत्यगीतवाद्यैःस्वस्तिनोमिमीतामित्यादिमंत्रैश्चगृहमानीय हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्यअग्नेःपश्चिमतोमातुरुत्संगेस्वदक्षिणतोबालमुपवेश्य आचार्यदक्षिणतःस्वयमुपविशेत्। ततआचार्योबर्हिरास्तरणाद्याज्यभागांतंकुर्यात्। ततश्चरुमवदानविधिनाऽवदाययस्त्वाहृदाकीरिणेतिद्वयोरात्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् । पुत्रप्रतिग्रहांगहोमेवि० ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणा० २ ऋक्द्वयंक्रमेणपठित्वास्वाहेतिजुहुयात् । यजमानःअग्नयइदं० । पुनरवदाय० तुभ्यमग्रइतिमंत्रस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्र्यनुष्टुप् पुत्रप्रतिग्रहांगहोमे० ॐ तुभ्यमग्रेपर्यवहन्० स्वाहा सूर्यासावित्र्याइदं० १ । पुनरवदाय सोमोददिितिपंचानांसूर्यासावित्री सूर्यासावित्रीआद्येद्वेअनुष्टुभौ तृतीयाजगतीचतुर्थीत्रिष्टुप्पंचम्यनुष्टुप् पुत्रप्रतिग्रहांगहोमे० ॐ सोमोददद्गंधर्वाय० ऋचः ५

---

[1] परिधाप्य । [2] कुंडलादिभिरलंकृत्य ।

पुनःपुनरवदायपंचभिर्जुहुयात् सर्वत्रसूर्यासावित्र्याइतित्यागः । ततोव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिराज्यंहुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यआचार्यायधेनुंदद्यात् । दशत्रीन्वाब्राह्मणान्भोजयेत् । कर्मणःसंपूर्णतांवाचयित्वाईश्वरार्पणंकुर्वीतेतिशौनकोक्तपुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः । एवंयजुर्वेदिकर्तृकोबौधायनोक्तरीत्याप्रयोगोबोद्धव्यः । ततःप्रागसंस्कृतस्यस्वस्तिवाचनंनांदीश्राद्धादिपूर्वकंजातकर्मादिसंस्कारान्करिष्येइतिविशेषः ॥ ॥ ॥ ॥

अथदत्तकस्यविवाहाद्युपयोगिगोत्रादिनिर्णयः । तत्रयश्चप्रतिग्रहीत्राजातकर्मादिभि[1]श्चूडादिभिर्वासंस्कृतस्तदेकगोत्रः । एतमभिप्रेत्यैवगोत्ररिक्थेजनयितुर्नभजेद्[2]दत्रिमःसुतइतिशास्त्र[3]मपिप्रवृत्तम् । एतदन्यस्तुप्रतिग्रहीत्रोपनयनमात्रसंस्कृतस्तदुत्तरंप्रतिगृहीतोवादेवरातवद्द्विगोत्रएवेतिव्यवस्थाप्रागवादि। तथाप्येषाव्यवस्थाअभिवादनश्राद्धादिगतगोत्रनिर्देशार्था। विवाहेतुदत्तकमात्रेणवीजिप्रतिग्रहीत्रोःपित्रोर्गोत्रप्रवरवर्जनंकार्यम् प्रवरमंजर्यादिनिबंधेषुतन्निषेधोक्तेः । इतिगोत्रनिर्णयः । गौतमः—ऊर्ध्वंसप्तमात्पितृबंधुभ्योबीजिनश्च मातृबंधुभ्यःपंचमादिति । उक्तंच—वसुदेवांगजाताचकौंतेयस्यविरुध्यतइतिवार्तिकव्याख्यावसरेन्यायसुधाकृतादत्तकविषयमेतदित्यंगीकृत्य कुंत्याजनककुलेसाप्तपुरुषं[4]सापिंड्यमितिव्याख्यातंतद्विषयत्वेनैवसापिंड्यमीमांसायाम् । अतःकुलद्वयेपिसाप्तपुरुषंसापिंड्यंप्रतीयते । पैठीनसिस्तु त्रीन्मातृतःपंचपितृतःपुरुषानतीत्यउद्वहेदित्याह । व्याख्यातमेतदपरार्केदत्तकादिपुत्रान्पितृपक्षतोनिवृत्तापिंडगोत्रार्षेयान्प्रत्येतदु

---

[1] चूडाकर्मादि । [2] भजेदंतिमः । [3] शास्त्रमेव । [4] सापिंड्यंप्रतीयते ।

च्यतेपंचपितृतइतीति । अतश्चप्रतिग्रहीतृपितृकुलेसप्तपुरुषंसापिंड्यंप्रतीयते । प्रतिग्रहीतृमातृपितृकुलयोस्त्रिपुरुषंसापिंड्यमितिप्राञ्चः । अथात्रव्यवस्थोक्तासापिंड्यदीपिकायां । दत्तक्रीतादीनांजनकगोत्रेणोपनयनेकृतेजनककुलेसप्तपुरुषंसापिंड्यं प्रतिग्रहीतृमातृपितृकुलेनिर्वाप्यपिंडलक्षणंत्रिपुरुषंसापिंड्यं प्रतिग्रहीतृमात्रेणोपनयनेतत्कुलेसप्तपुरुषमिति। उपनयनमात्रेकृतेपंचपुरुषं जातकर्माद्युपनयनांतेकृतेसप्तपुरुषमितिपैठीनसीवचःसाफल्यायव्याख्येयम् । नकेवलंदत्तकस्यपरिणयनार्थमेवैषसापिंड्योपन्यासः किंतुतत्संततेस्तत्पित्रादिकुलोत्पन्नैःसहसंबंधसंभवनिर्णयार्थमपि । अन्यथापार्थसुभद्रयोरदत्तयोःसंवंधासंभवशंकाया आचार्यकर्तृकोपन्यासस्यतदुपपत्त्यैसुधायांगौतमीयउपन्यासस्यालग्नकतापत्तेः । यादृशदत्तकस्ययथासापिंड्यमुक्तंतत्संततेरपितथैवतद्बोध्यम् । अत[1]एवयन्मदनपारिजातउक्तम्—दत्तपुत्र्याःसुतस्यमातुः प्रतिग्रहीतृमातुःकुलेत्रिपुरुषंसापिंड्यं दत्तपुत्रसुतस्यस्वजनककुलेपंचपुरुषमिति तदपिपूर्वोक्तरीत्यादत्तकविशेषसंततिविषयत्वेनव्याख्येयम् । इतिसापिंड्यनिर्णयः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दत्तकाशौचनिर्णयः । दत्तकपुत्रस्यजन्ममरणयोःपूर्वापरपित्रोस्त्रिरात्रं सपिंडानामेकाहम् । यद्यसपिंडःपुत्रीकृतः—परपूर्वासुभार्यासुपुत्रेषुकृतकेषुच । भर्तृपित्रोस्त्रिरात्रंस्यादेकाहस्तुसपिंडगइतिमाधवीयेहारीतवचनात् । वैजिकादभिसंवंधादनुरुंध्यादघं[2]त्र्यहमिति तादृशदत्तकेनपित्रादिमरणेत्रिरात्रंकार्यम् । दत्तकश्चस्वयंदत्तःकृत्रिमःक्रीतएवच । सूतकेमृ

---

[1] एवमदन । [2] दघंत्रयमिति ।

तकेचैवत्र्यहाशौचस्यभागिनइतिशुद्धितत्वेब्राह्मवचनात् । सपिंडस्यपुत्रीकरणेतुसपिंडमरणादिनिमित्तंदत्तकस्यतन्मरणादिनिमित्तंसपिंडानांदशरात्रमेवनिर्विवादं सापिड्यंचपूर्वोक्तरीत्याऽव्यवस्थितमाशौचहेतुः । इत्याशौचनिर्णयः ॥ ॥ दत्तकस्यदायनिर्णयः । धनस्वामिनिमृतेतदीयपत्नीदुहित्रादिषुसत्स्वपिदत्तकपुत्रएवरिक्थंलभते । द्वादशविधपुत्राभावे पत्नीदुहितरश्चेत्यादिनापत्न्यादीनांरिक्थग्रहणाधिकारप्रतिपादनात् । पश्चादुत्पन्नौरसेसतितुतदीयंचतुर्थांशंलभते पूर्वोदाहृतबौधायनसूत्रात् । विधानमालायांतु—दत्तपुत्रेयदाजातेकदाचित्त्वौरसोभवेत् । पितुर्वित्तस्यसर्वस्यभवेतांसमभागिनौ । अविधानंविधानंवापरिप्राप्नोतिनंदनः । विवाहविधिभाजंतंकुर्यान्नधनभाजनं । तस्मिन्जातेसुतेदत्तेनकृतेचविधानके । तत्सर्वस्यैववित्तस्यसस्वामीपितुरंजसा । जातेष्वन्येषुपुत्रेषुदत्तपुत्रपरिग्रहात् । पिताचेद्विभजेद्वित्तंनैवासौ ज्येष्ठभाग्भवेदिति । जातेउपनयनांतजातकर्मादिसंस्कारविशिष्टतयानिष्पादित[१]इत्यर्थः । तादृशसंस्कारालाभेत्वाह अविधानमिति । अविधानंसंस्कारविध्यलाभः । नंदनःप्रकरणाद्दत्तपुत्रः । विधानेसतिपूर्वश्लोकरीत्याधनलाभमभिप्रेत्या विधानपक्षेआहविधानेति । तस्मिन्नौरसेदत्तविषयेसंस्कारविधानेनकृते।सऔरसः।परिग्रहात् अनंतरमितिशेषः । ततश्चप्रतिग्रहीत्रोपनयनांतसंस्कारसंस्कृतस्यौरससमानांशभागित्वंदत्तकस्य । तत्कर्तृकसकलतदंतसंस्काररहितस्यतुविवाहमात्रलाभोनान्यधनलाभः । सत्यौरसेकतिपयसंस्कारलाभेतुचतुर्थांशलाभइतिव्यवस्थेतिदायनिर्णयः । दत्तकपुत्र्याअपि

---

[१] निष्पद्यत, निष्पन्नइ. ।

स्वीकारउक्तविधिनाकार्यः । वक्ष्यामिपुत्रसंग्रहमित्यादिगतपुत्रपदस्यपुमान्पुत्रइत्यादिवैदिकप्रयोगमूलकेनवृत्तिकृदुक्तन्यायेनपुत्रीसाधारण्यात् । दानप्रतिग्रहविधिषुउद्देश्यविशेषपुंस्त्वाविवक्षायाश्च इतिहासपुराणेषुकुंत्यादत्तकत्वोक्तेश्च पत्यभावेसारिक्थंलभतेदुहितृत्वात् ॥ सतांसंतोषसिद्ध्यर्थमितिदत्तकदीधितिः । अकार्यनंतदेवेनते[१]नतेषांमुदेस्तुसा । इतिश्रीमदापदेवसूनुनाअनंतदेवेनकृतेसंस्कारकौस्तुभेदत्तकविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथगर्भिण्यागर्भस्रावहरणंमहार्णवे वायुपुराणे—यज्ञोपवीतंकुर्वीतकांचनंतुस्वशक्तितः । अत्यंतवर्णयुक्तंचराजतंचोत्तरीयकम् । पलार्धेनतदर्धेनतदर्धेनाथवापुनः । ग्रंथिप्रदेशेदेयंतुमौक्तिकंवज्रमेवच । प्रक्षाल्यपंचगव्येनगायत्र्याताम्रभाजने । द्रोणप्रमाणंतस्मिंस्तुनिक्षिपेद्दधिमध्यतः । आज्यस्योपरिसंस्थाप्यसूपवीतंसुपूजितम् । गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नैवेद्यैरपिभक्तितः । ततोब्राह्मणमाहूय[२]होमंतत्रचकारयेत् । तिलैराज्येनमधुनामिश्रैरष्टोत्तरंशतम् । तस्मैहुतवतेदेयंवस्त्राद्यैःपूजितायतु । मंत्रेणानेनविधिवत्प्राङ्मुखायोपवीतकम् । मंत्रः—उपवीतंपरिमितंब्रह्मणाविधृतंपुरा । भवनौकास्यदानेनगर्भंसंधारये ह्यहम् । धनान्यपिब्राह्मणेभ्यस्तस्मिन्कालेप्रदापयेत् । अनुव्रज्यातथाकार्याप्रणिपत्यक्षमापयेत् । गर्भस्रावकराद्दोषादेवं कृत्वाविमुच्यतइति । अत्यंतवर्णयुक्तमुत्कृष्टम् । एतच्चकांचनराजताभ्यांसंबध्यते । यज्ञोपवीतग्रंथौमौक्तिकं उत्तरीयग्रंथौवज्रम् । गायत्र्येत्यस्यप्रक्षाल्येत्यनेनान्वयः । तस्मिन्मध्यभागेद्रोणप्रमाणंदधिनिक्षिप्यतस्यमध्येद्रोणमाज्यंनिक्षिपेत् ।

---

[१] तेनतस्य । [२] होमतंत्रंच ।

प्रस्थमाढकंद्रोणंचखारिकाचेतिद्रोण[1]परिमाणम् । तस्मिन्नाज्येशोभनमुपवीतंसोत्तरीयंविन्यस्यगंधाद्युपचारैःसुपूजितंकुर्यादितिशेषः । आज्यस्यद्रोणपरिमाणासंभवेशक्त्यनुसारिप्रमाणं । मंत्रपूजायांगायत्र्येव । होमेतुव्याहृतयोगायत्रीवा । स्त्र्यधिकारंचेदंकर्मेतिमहार्णवः । अतःपूजांभर्ताकुर्यात् । तदभावेब्राह्मणःकुर्यात् । होमंतुब्राह्मणएव त्यागंभर्ता तदभावेस्त्र्येवकुर्यात् । आज्यमधुमिश्रैस्तिलैरष्टोत्तरशतमाहुतयः । प्रधानंपूर्वोत्तरंतंत्रंस्वगृह्योक्तंकार्यम् । होमांतेब्राह्मणपूजावस्त्रादिभिःकार्या । ततोब्राह्मणायप्राङ्मुखायोदङ्मुखाधिकारिणीमंत्रेणदानंकुर्यात् । विधिवदिति पात्रस्यनामगोत्रोच्चारणादिगर्भस्रावनिदानदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इतिफलसंकीर्तनं[2]पात्रेणसावित्र्यादिपाठोयथाशक्तिदक्षिणादानंचेतिप्राप्यते । मंत्रे नौकादुःखतरणोपायभूताभवेत्यर्थः । ततोब्राह्मणेभ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वोपवीतप्रतिग्रहीतुरनुव्रज्यप्रणिपातक्षमापनानिकृत्वायथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वेश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ ॥ अत्रचस्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहंतियाविषैरितिमहार्णवोदाहृतवृद्धगौतमवचनोक्तनिदानभूतबालहत्यांकृत्वैतत्कार्यं सूर्यारुणसंवादेस्रवद्गर्भंप्रकृत्य श्रीअरुणउवाच । प्रायश्चित्तंकथंस्वामिन्सत्यंवदममाग्रतः । श्रीसूर्यउवाच । एकवासोविधिंचैवकुर्याच्चविधिवत्ततः । चंद्रसूर्योपरागेतुस्वर्णधेनुंप्रदापयेत् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्प्राजापत्यचतुष्टयम् । सारस्वतजपंलक्षंदशांशहोमसंयुतम् । श्रवणंहरिवंशस्यएकचित्तेनमानद । शतपत्रैःशिवंपूज्यषण्मासाद्रविवासरे । कलशंताम्रमयंचैवघृतेनपरिपूरितम् । दातव्यंब्राह्मणे

---

[1] प्रमाणं । [2] मंत्रेण ।

चैवसर्वं[1]कार्यार्थसिद्धये। एवंकृतेवैनतेयगर्भोनिश्चलताव्रजेत्इति ॥ ॥ अथानपत्यत्वहरम् । शातातपः—विप्ररत्नापहारीयःसोनपत्यःप्रजायते । तेनकार्यंविशुद्ध्यर्थंमहारुद्रजपादिकम् । आदिपदाद्ब्राह्मणोद्वाहनहरिवंशश्रवणे । मृतवत्सादिकःसर्वोविधिरत्रविधीयते । दशांशहोमःकर्तव्यःपालाशेनयथाविधि । दशांशोमहारुद्रस्य ॥ ॥ अथमृतपुत्रत्वहरम् । हंतिवैबालकंसुप्तंत्वसंजातंचमूलजम् । तेनसाजायतेवंध्यामृतवत्साचनारकी। तत्पातकविनाशायतथाकार्यंप्रयत्नतः । सौवर्णंबालकंकृत्वादद्याद्दोलासमन्वितम्।अनड्वाहंततोदद्याद्वस्त्रद्वयसमन्वितम् । तत्पातकविनिर्मुक्तापश्चाद्भवतिपुत्रिणीति॥ एवंगर्भस्थैर्येपिकन्यानामेवोत्पत्तौपुत्रार्थंपुत्रकामेष्टिप्रयोगः । ऋतुकालात्षष्ठेदिनेभार्ययासहकृताभ्यंगोयजमानःअलंकृतःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यपुत्रकामःपुत्रकामेष्टिंकरिष्येइतिसंकल्प्यतदंगस्वस्तिवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धानि कृत्वा स्थंडिलाद्यग्निप्रतिष्ठांतंकृत्वासमिद्द्वयमादायान्वाधानंकरिष्येऽस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वाऽत्रप्रधानं अग्निंपंचवारंवरुणंपंचवारंविष्णुंपृथिवींविष्णुंसोमंसूर्यां[2]सावित्रींएताःप्रधानदेवताःपायसद्रव्येणशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वा श्वेतवत्सश्वेतगोक्षीरेणचरुंपक्त्वाआज्यभागांतंकृत्वा भार्ययान्वारब्धःप्रधानाहुतीर्जुहुयात् । तत्रायंक्रमः आतेगर्भंइतिअग्निरैतुप्रथमइतिसूक्तद्वयस्यहिरण्यगर्भऋषिःक्रमेणाग्नीवरुणौदेवतेअनुष्टुप्जगत्यौछंदसीचरुं[3]होमेविनियोगः ॐ आतेगर्भोयोनिमैतुपुमान्बाणइवेषुधिम् । आवीरोजायतांपुत्रस्तेदशमास्यःस्वाहा अग्नयइदं०

---

[1] कामार्थ । [2] सूर्यां, सूर्यं । [3] पायसहोमे ।

१ । करोमितेप्राजापत्यमागर्भोयोनिमैतुते । अनूनःपूर्णोजायतामश्लोणोपिशाचधीतःस्वाहा अग्नय० २ । पुमांस्तेपुत्रोना
रितंपुमाननुजायताम् । यानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतुनौस्वाहा अग्नय० ३ । यानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतिनः ।
तैस्त्वंपुत्रान्विंदस्वसाप्रसूर्धेनुकाभवस्वाहा अग्नय० ४ । कामःसमृध्यतांमह्यमपराजितमेवमे । यंकामंकामयेदेवतंमेवा
योसमर्धयस्वाहा अग्नयइदं० ५ । अग्निरैतुप्रथमोदेवतानांसोस्यैप्रजांमुंचतुमृत्युपाशात् । तदयंराजावरुणोनुमन्यतांयथेयं
स्त्रीपौत्रमघंनरोदात्स्वाहा वरुणायेदं० १ । इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः । अशून्योपस्थाजीव
तामस्तुमातापौत्रमानंदमभिप्रबुध्यतामियंस्वाहा वरुणायेदं० २ । मातेगृहेनिशिघोषउत्थादन्यत्रत्वद्रुदत्यःसंविशंतु ।
मात्वंविकेश्युरआवधिष्ठाजीवपत्नीपतिलोकेविराजपश्यंतीप्रजांसुमनस्यमानास्वाहा वरुणाये० ३ । अप्रजस्तांपौत्रमृत्युं
पाप्मानमुतवाघम् । शीर्ष्णःस्रजमिवोन्मुच्यद्विषद्भ्यःप्रतिमुंचामिपाशंस्वाहा वरुणा० ४ । देवकृतंब्राह्मणंकल्पमानंतेन
हन्मियोस्निषदःपिशाचान् । क्रव्यादोमृत्यूनधरान्पातयामिदीर्घमायुस्तवजीवंतुपुत्राःस्वाहा वरुणाये० ५ । नेजमेष
इतितिसृणांविष्णुस्त्वष्टागर्भकर्ताऋषिःक्रमेणविष्णुपृथिवीविष्णवोदेवताःअनुष्टुप्छंदः चरु[1]होमेवि० ॐ नेजमेषपरापत०
स्वाहा विष्णवइदं० १ । यथेयंपृथिवीमह्यु० पृथिव्याइदं० २ । विष्णोःश्रेष्ठेन० विष्णवइदं० ३ । सोमोधेनुमित्यस्यरा
हूगणोगोतमऋषिःसोमोदेवतात्रिष्टुप्छंदःचरुहोमे० ॐ सोमोधेनुंसोमोअर्वंत० सोमायेदं० १ । इमांत्वमित्यस्यसूर्यासा

---

[1] पायसहोमे ।

वित्रीसूर्यासावित्र्यनुष्टुप् चरुहोमेवि० ॐ इमांत्वमिंद्रमीढः० स्वाहा सूर्यासावित्र्याइदं० १ । इतिपंचदशाहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृद्धोमंकृत्वाउभौ अपश्यंत्वेतिमंत्रयोःप्रजापति[1]र्ऋषिःप्रजापतिर्देवतात्रिष्टुप्छंदःचरुप्राशनेविनियो० ॐ अपश्यंत्वा मनसाचेकि० १ । अपश्यंत्वामनसादीध्याना० २ । इतिमंत्राभ्यांप्राश्याचम्य । पिशंगेत्यस्यदैवोदासिःपरुच्छेपऋषिः इंद्रोदेवतागायत्रीच्छंदः नाभ्यालंभनेवि० ॐ पिशंगभृष्टि० १ । इतिमंत्रेणोभौनाभ्यालंभनंकुर्याताम् । ततोयजमानः प्रायश्चित्तहोमंसमाप्यसवत्सांगांदत्वाब्राह्मणेभ्यःसुवर्णादिदक्षिणांदत्वारात्रौदर्भसंस्तरणेशयीयाताम् । ततःमनसायजमानःपंचहोत्रा[2]स्त्रियमुपेयादित्यादि । वीरंविभ० (?) इतिपुत्रकामेष्टिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथपुंसवनकालः । याज्ञवल्क्यः—पुंसःसवनंस्पंदनात्पुरेति । शौनकः—व्यक्तेगर्भेतृतीयेतुमासेपुंसवनंभवेत् । गर्भोऽव्यक्तस्तृतीयेचेच्चतुर्थेमासिवाभवेदिति । बृहस्पतिः—तृतीयेमासिकर्तव्यंगृष्टेरन्यत्रशोभनम् । गृष्टेश्चतुर्थेमासेतुषष्ठेमास्यथवाष्टमइति । सकृत्प्रसूतागृष्टिःस्यादितित्रिकांडी । जातूकर्ण्यः सीमंतेनसहाथवेति । मदनरत्नेकालविधाने—कुर्यात्पुंसवनंप्रसिद्धविषयेगर्भेतृतीयेथवामासिस्फीततनौतुषारकिरणेपुष्येथवावैष्णवे । हित्वाकर्कटकंनृयुग्ममवलामन्येष्वरिक्तेतिथौशुद्धेनैधनधाम्निशुक्रशशभृद्धिन्मंत्रिणांवासरइति । प्रसिद्धविषयेव्यक्ते । तुषारकिरणश्चंद्रः । स्फीततनुःपूर्णबलः । तत्समयंलल्लः—प्रतिपत्पूर्वंदशाहंमध्यबलःशीतगुःसितेपक्षे । संपूर्णवलःपूर्णःकृष्णेपक्षेतुपंचमींयावदिति । प्रतिपत्पूर्वा

---

[1] प्रजावान् । [2] होतास्त्रिय ।

यस्मिन्तेनशुक्लैकादशीप्रभृतिकृष्णपंचमीपर्यंतःकालःप्रशस्तइतिज्ञायते । वैष्णवःश्रवणः । पुष्यासंभवेचैषः । तृतीयेगर्भमासेतिष्येणोपोषितायाइतिगृह्यात् । तिष्येणेतिप्राशनेनसंबध्यतइतिव्याख्यानात् । श्रवणासंभवेनक्षत्राण्यप्याह गर्गः—कुर्यात्पुंसवनाख्यंतुपुंनामर्क्षेशुभेदिने । पुंनामश्रवणंतिष्यःस्वातीहस्तपुनर्वसू । मूलंप्रोष्ठपदंचानूराधामृगशिरोश्विनी । नृयुग्मंमिथुनम् । अबलांकन्याम् । अन्येषुएतत्रितयभिन्नलग्नेषु । अत्रविशेषंबृहस्पतिः—कन्यायांनप्रशंसंतिशुभदृष्टेयुतेपिचेतिविशेषनिषेधेनान्ययोःप्रतिप्रसवोगम्यते । सीमंतेनसहानुष्ठानेकन्यायाएवनिषेधइत्यपिकालविधाने । अरिक्तेतिथाविंतिसामान्येननिषेधेपिनवमीसर्वथैववर्ज्या । रिक्ताश्चपर्वनवमींत्यक्त्वापुंसवनेशुभाइतिस्मृत्यंतरेनवम्याःपुनरुपादानात् । नैधनधामाऽष्टमस्थानं तस्मिन्शुद्धेग्रहहीने । वित्बुधः । पारिजातेबृहस्पतिः—गुरुशुक्रबुधेंदूनांद्रेक्काणादिवसांशकाः[1] । तेषामुदयहोराचपुंसवेतिशुभावहाः । तथा—मासप्रयुक्तकार्येषुमूढत्वंगुरुशुक्रयोः । नदोषकृदिति । तथा—वृद्धिर्दास्यंपुंसवाद्यंप्रेतकर्मानुमासिकम् । नित्यंमास्यधिकइति । द्रेक्काणोराशेस्तृतीयांशः । तद्यथा—मेषलग्नेतृतीयांशरूपद्रेक्काणाधीशोगुरुः तेनतस्मिन्कार्यम् एवमूह्यम् । पुंसवनेनसहानवलोभनस्यकार्यत्वात्तुल्यस्तिथ्यादिनिर्णयः । अथसीमंतोन्नयनकालः । याज्ञवल्क्यः—षष्ठेष्टमेवासीमंतइति । आश्वलायनः—चतुर्थेगर्भमासेसीमंतोन्नयनमिति । वैजवापः—सीमंतोन्नयपंचतुर्थेपंचमेषष्ठेवापीति । अत्रिः—आधानादष्टमेमासिसीमंतोन्नयनंभवेत् । नवमेमासिवाकु

---

[1] द्रेष्काणादि ।

र्याद्यावद्गर्भविमोचनमिति । बृहस्पतिः—सौरेणैवचतुर्थेस्यान्मासेषष्ठेऽष्टमेपिवेति । वसिष्ठः—चतुर्थेसावनेमासिषष्ठेवाप्यथवाष्टमइति । अथसौरसावनमानयोर्विकल्पः । मदनरत्नेगार्ग्यः—यदिसीमंततःपूर्वंप्रसूतास्यात्तुभामिनी । तदानींपेटकेगर्भंस्थाप्यसंस्कारमाचरेदिति । तत्रैवसत्यव्रतः—स्त्रीयदाऽकृतसीमंताप्रसूयेतकदाचन । गृहीतपुत्राविधिवत्पुनःसंस्कारमर्हतीति । बृहस्पतिः—पूर्वपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविनेति । कृष्णपक्षेत्रयोदश्यादित्रयमतिदुष्टमित्यर्थः । पक्षच्छिद्रांचरिक्तांचविनापंचदशींशुभाः । चतुर्थीचकदाचित्स्युस्तिथयश्चशुभप्रदाइति । षष्ठ्यष्टमीद्वादश्यःपक्षच्छिद्राः । पंचदशीअमावास्या । कदाचिदितिचतुर्थ्यावर्ज्यत्वंपाक्षिकमितिज्ञायते । शुभसंस्थेनिशानाथेचतुर्थींचचतुर्दशीम् । पौर्णमासींप्रशंसंतिकेचित्सीमंतकर्मणीतिशास्त्रांतरात् । व्यासः—पुरुषग्रहवाराःस्युःशुभाःसीमंतकर्मणि । मध्यौस्त्रीग्रहवारौतुवर्जयेत्तुनपुंसकाविति । पुंग्रहाःरविभौमगुरवः । स्त्रीग्रहौसोमभृगू । नपुंसकौशनिबुधौ । नक्षत्राण्याहबृहस्पतिः—रोहिण्यैन्दवमादित्यंपुष्यहस्तोत्तरात्रयम् । पौष्णंवैष्णवभंचैवसीमंतेदशमंस्मृतमिति । ऐंदवंमृगशिरः । आदित्यःपुनर्वसुः । पौष्णंरेवती । वैष्णवंश्रवणः । जयंतस्तु—पुंनामाश्रवणस्तिष्योहस्तश्चैवपुनर्वसुः । अभिजित्प्रोष्ठपाच्चैवअनुराधातथाश्वयुक् । इत्येतेषुनक्षत्रेषुकालविद्भिरस्यप्राशस्त्यमित्युक्तं । यन्नक्षत्रंतस्यनक्षत्रस्यमध्यमारूढेचंद्रमसिकर्मकुर्यात् । तत्रादावंतेचपंचदशनाडिकाअग्राह्याअपनीयमध्यमास्त्रिंशन्नाडिकागृहीतव्याः । अत्रापिशोभनेमुहूर्तेकुर्यादित्याह कारिकायामपि—ऋक्षस्यमध्यमेपादद्वयेकर्मेदमिष्यतइति । कालविधाने—सिंहालीवर्जयित्वाशुभबहुलफला

राशयोप्यंशकानिश्रेष्ठानीति । अलिर्वृश्चिकः । इदंचकर्मसकृदेवकार्यं स्त्रीसंस्कारत्वान्नप्रतिगर्भमावर्ततइतिवृत्तिकाराद्युक्तेः । यत्तुविष्णुः—सीमंतोन्नयनंकर्मनस्त्रीसंस्कारइष्यते । केचिद्गर्भस्यसंस्कारात्प्रतिगर्भंप्रयुंजतइति । तत्कात्यायनविषयम् । सीमंतोन्नयनंकार्यंषष्ठेमास्यथवाष्टमे। गर्भसंस्कारएवायंकर्कोपाध्यायसंमतादितितदीयरेणुकाकारिकोक्तेः ॥ पुंसवनानवलोभनयोःपतिःकर्ता तदभावेदेवरादिः । सीमंतोन्नयनेतुस्वयमेवकर्ता तथैववृत्तिकाराद्युक्तेः ॥ अथप्रयोगः । तत्राकृतगर्भाधानोद्विजायगांदत्वापुंसवनादिकुर्यात् ।—गर्भाधानस्याकरणात्तस्यांजातस्तुदुष्यति । अकृत्वागांद्विजेदत्वा कुर्यात्पुंसवनंपतिरितिपारिजातेआश्वलायनवचनात् । तत्रपूर्वेद्युःसमानरूपवत्सायागोरन्यस्यावाक्षीरेणदधिसंपाद्यमाषषट्कंयवत्रयंमंडलागारच्छायमगारमानडुहंचर्मअजीर्णदूर्वापुंजंकुमार्यादृषदुपलाभ्यांपिष्टीकृतंशुद्धवसनांचलेबद्धंचसंपाद्य सीमंतेपिकर्तव्येऔदुंबरापक्वयुग्मफलवत्स्तबकौतदभावेजयंतोक्त्यातादृशपत्रतादृशप्रसूनान्यस्तबकौवा त्रिश्वेतशललीं त्रीणिकुशपिंजूलानिचसंपाद्य हविष्येणकृतैकलघुभोजनयाभार्ययापरेद्युःकृतमंगलस्नानयापरिहिताहतवस्त्रयालंकृतया दक्षिणतउपविष्टयायुक्तोदेशकालकीर्तनांते ममास्यांभार्यायामुत्पत्स्यमानगर्भस्यबैजिकगार्भिकदोषपरिहारपुंरूपताज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वारापुंसवनमनवलोभनंचतंत्रेणकरिष्येइतिपृथक्प्रयोगेसंकल्पः । सीमंतोन्नयनस्यचेत्थम् । ममास्यांभार्यायांगर्भाभिवृद्धिपरिपंथिपिशितरुधिरप्रियालक्ष्मीभूतराक्षसीगणदूरनिरसनक्षेमसकलसौभाग्यनिदानभूतमहालक्ष्मीसमावेशनद्वाराप्रतिगर्भंबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराचस्त्रीसंस्काररूपंसीमंतोन्नयनाख्यंकर्मकरिष्यइतिसंकल्पः ।

त्रयाणांसहकरणेतुअनवलोभनमित्यंतंपूर्वसंकल्पवाक्यमुक्त्वाममास्यामित्याद्युत्तरवाक्यांतेकर्मचकरिष्येइतिब्रूयात्। तदंगत्वेनस्वस्तिपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकरिष्येतदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्य क्रमेणकुर्यात् । अनयोःपुंसवनानवलोभनकर्मणोःपुण्याहं एतेषांपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनकर्मणांपुण्याहमितियथायथंवक्तुःप्रयोगः । उक्तकर्मभ्यांस्वस्ति उक्तकर्मभ्यःस्वस्ति। ऋद्ध्येतामृद्ध्यंतामित्येवंप्रत्युक्तिवाक्यम् । नांदीश्राद्धेक्रतुदक्षसंज्ञकाविश्वेदेवाः । पृथक्त्वेपुंसवनाद्यर्थमौपासनंपवमानसंज्ञं[१]मग्निंप्रतिष्ठापयेत् । केवलसीमंतेत्रयाणांसहत्वेवामंगलनामानंप्रतिष्ठापयेत् । अविद्यमानाग्नेःसर्वाधानिप्रभृतेरग्न्युत्पत्तिःपूर्ववत् । अस्मिन्पुंसवनानवलोभनहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्येइतिद्वयोःपृथक्त्वे । एषुपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनहोमेषुदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्यइतित्रयाणांसहत्वे । सीमंतस्यस्वातंत्र्येतुअस्मिन्सीमंतोन्नयनइति । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेप्रजापतिंचरुणाशेषेणेतिपृथक्त्वे । सहत्वेतुचरुणेत्यंतेस्वतंत्रसीमंतेचक्षुषीआज्येनेत्यंते धातारंधातारंराकांराकांविष्णुंविष्णुंविष्णुंप्रजापतिंचाज्येन शेषेणेत्यादि । पात्रासादनात्पूर्वंस्वस्यदक्षिणतःप्राग्ग्रीवास्तरणं । प्रणयनांतेप्रजापतयेत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिचतुरोमुष्टीन्निरुप्यहविरासादनांतेस्वस्यदक्षिणदेशेप्राग्ग्रीवआनडुहेचर्मणिउत्तरलोमास्तीर्णेबहिराचांतसलिलांपत्नींतीर्थेनप्रविष्टामात्मानमग्निंचांतरेणानीयोपवेश्यतयान्वारब्धआज्यभागांतंकृत्वा प्रत्यग्ग्रीवेउपविष्टायास्तस्याःक्षालितप्रसृतीकृतदक्षिणपाणावंतर्जानु

---

[१] संज्ञंप्रतिष्ठाप्य ।

स्थितेप्रसृतिमितंतद्दधिनिक्षिप्यतत्रप्रागग्रंयवंतत्पार्श्वद्वयेमाषद्वयंनिधाय पत्नींकिंपिवसीतित्रिःपृच्छेत् । साचपुंसवनमितित्रिरुक्त्वासयवमाषंतन्निःशेषंपीत्वावहिराचामेत् । पुनरेवंद्विःकार्यंआचमनांतं एतत्पुंसवनम् । अथपूर्वसंकल्पितंसवस्त्रं दूर्वापिंडमादायमंडलागारच्छायायामुपविष्टायाःप्राङ्मुख्याःपत्न्याःपश्चिमतस्तिष्ठन्वदेत् । आतेगर्भोयोनिमैतुपुमान्वाण इवेषुधिम् । आवीरोजायतांपुत्रस्तेदशमास्यः । करोमितेप्राजापत्यमागर्भोयोनिमैतुते । अनूनःपूर्णोजायतामश्लोणोपिशाचधीतः । पुमांस्तेपुत्रोनारितंपुमाननुजायताम् । यानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतुनौ । यानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतिनः । तैस्त्वंपुत्रान्विंदस्वसाप्रसूर्धेनुकाभव । कामःसमृद्ध्यतांमह्यमपराजितमेवमे । यंकामंकामयेदेवतंमेवायोसमर्धय । इतिप्रजावत्सूक्तम् । अग्निरैतुप्रथमोदेवतानासोस्यैप्रजांमुंचतुमृत्युपाशात् । तदयंराजावरुणोनुमन्यतांयथेयंस्त्री पौत्रमघंनरोदात् । इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः । अशून्योपस्थाजीवतामस्तुमातापौत्रमानंदमभिप्रबुध्यतामियम् । मातेगृहेनिशिघोषउत्थादन्यत्रत्वद्रुदत्यःसंविशंतु । मात्वंविकेश्युरआवधिष्ठाजीवपत्नीपतिलोकेविराजपश्यंतीप्रजांसुमनस्यमाना । अप्रजस्तांपौत्रमृत्युंपाप्मानमुतवाघम् । शीर्ष्णःस्रजमिवोन्मुच्यद्विषद्भ्यःप्रतिमुंचामिपाशम् । देवकृतंब्राह्मणंकल्पमानंतेनहन्मियोनिषदःपिशाचान् । क्रव्यादोमृत्यूनधरान्पातयामिदीर्घमायुस्तवजीवंतु पुत्राः । इदंजीवपुत्रसूक्तम् । वामहस्तेनतदाननमुन्नमय्यपत्न्यादक्षिणेनासापुटेस्वांगुष्ठाग्रेणमंत्रांतेदूर्वारसंतथासिंचेत् यथोदरपर्यंतंगच्छति । ततोदेशांतरेआचांतयातयास्पृष्टश्चरुमवदानविधिनावदाय वामहस्तंहृदिधारयन् ॐप्रजापतयेस्वा

हेतिजुहुयात् प्रजापतयइदं० १। यत्तेसुशीमइतिमंत्रस्यहिरण्यगर्भःप्रजापतिरनुष्टुप् भार्याहृदयालंभनेवि०। ॐ यत्तेसुशीमेहृदयेहितमंतःप्रजापतौ। मन्येहंमांतद्विद्वांसंमाहंपौत्रमघंनियामितिभार्याहृदयंपाणितलेनस्पृशेत्। ततःपाणितलेनास्याहृदयंसंस्पृशेत्पतिरितिशौनकोक्तेः। अथप्राग्ग्रीवेउपविष्टयान्वारब्धोजुहुयात्स्रुवेण। धाताददात्वितिमंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भऋषिः धातादेवता आद्यानुष्टुप् द्वितीयात्रिष्टुप् सीमंतोन्नयनप्रधानाज्यहोमे०। ॐ धाताददातुदाशुषेप्राचीं जीवातुमक्षिताम्। वयंदेवस्यधीमहिसुमतिंवाजिनीवतःस्वाहा धात्रइदं० १। धाताप्रजानामुतरायईशेधातेदंविश्वंभुवनं जजान। धाताकृष्टीरनिमिषाभिचष्टेधात्रइद्धव्यंघृतवज्जुहोतस्वाहा धात्रइदं० २। राकामहमितिमंत्रद्वयस्यगृत्समदो राकाजगती सीमंतोन्नयनप्रधानाज्यहोमेवि०। ॐ राकामहंसुहवांसुष्टुतीहुवे० ऋक् स्वाहा राकायाइदं० १। ॐ यास्ते राकेसुमतयःसुपेशसो० ऋक् स्वाहा राकायाइदं० २। नेजमेषइत्यादिमंत्रत्रयस्यहिरण्यगर्भोविष्णुरनुष्टुप् सीमंतोन्नयनप्रधानाज्यहोमेवि० ॐ नेजमेषपरापत० स्वाहा विष्णवइदं० १। ॐ यथेयंपृथिवी० विष्णवइदं० २। ॐ विष्णोः श्रेष्ठेन० विष्णवइदं० ३। प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् सीमंतोन्नयनप्रधानाज्यहोमेवि० ॐ प्रजापतेनत्व० स्वाहा प्रजापतयइदं० १। शौनकजयंतमतेराकादैवत्याहुतिद्वयांतेउक्थ्यंस्वाहेत्याहुतिरेकातदनुसार्यन्वाधानंचकार्यम्। एवंस्रुवाहुतीर्हुत्वापत्न्याःपश्चिमतःप्राङ्मुखस्तिष्ठन्पूर्वकल्पितस्तबकद्वयंशललीपिंजूलत्रयसहितंपाणिनादायपत्न्याःकेशललाटसंधिमारभ्यमूर्धमध्यमपर्यंतं ॐ भूर्भुवःस्वरोमितिमंत्रंप्रत्युन्नयनमावर्तयंस्त्रिश्चतुर्वासीमंतमुन्नयेत्। अस्यमंत्रस्यपरमेष्ठी

प्रजापतिःप्रजापतिर्बृहती सीमंतव्यूहनेवि० । सगोधूमामौदुंबरफलमालांतत्कंठेनिधायसामगानकुशलौवीणागाथिनौ अन्यौवासंशास्तिसोमंराजानंसंगायेतामिति । कुशलौ सोमोनोराजावतुमानुषीःप्रजानिविष्टचक्रागंगेइतिसंनिहितनदीनामसंबुद्ध्यंतंवदंतौवीणयासामगायेताम् । तदभावेअन्यौसंबुद्ध्यंतनामयुक्तंवाक्यमेवपठेतांत्रिः । ततउपस्तीर्यचरोराज्यस्यचावदायद्विरभिघार्यस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । ब्रह्मणेऋषभंदद्यात्तदभावेसंनिहितेभ्योब्राह्मणेभ्योदद्यादिति यद्यपिवृत्तिकारादिभिरुक्तं तथापिदद्यात्तथावृषंविदुषेब्राह्मणायेतिशौनकोक्तेरनियमाभिप्रायंबहुवचनम् । अतःसंनिहितानांमध्येविदुषेब्राह्मणायदद्यात् । ऋषभासंभवेतन्मूल्यंवृषेषट्कार्षापणकाइतिप्रसिद्धंदद्यात् । शौनकप्रयोगादृषभोवृषभोवृषइतिकोशाच्चवृषर्षभयोरभेदात् । पुंसवनसीमंतान्नयनयोःशतंशतंअनवलोभनस्यदशप्रत्येकंदशदशत्रींस्त्रीन्वाब्राह्मणान्भोजयेत् । इतिश्रीमदापदेवसूनुनाअनंतदेवेनकृतेसंस्कारकौस्तुभेत्रयाणांसहप्रयोगः ॥ पृथक्प्रयोगेहृदयालंभनांतेप्रत्यग्ग्रीवाजिनएवासीनयान्वारब्धश्चरोरेवस्विष्टकृतंहुत्वातंत्रंसमाप्यब्राह्मणान्[1]भोजयेत् । स्वतंत्रसीमंतेतुप्राग्ग्रीवएवासीनयान्वारब्धआज्येनैवस्विष्टकृतंहुत्वावृषभदानंब्राह्मणभोजनांतंकुर्यात् ॥ अत्रभुक्तवतःप्रायश्चित्तंपारिजातेधौम्यः—ब्रह्मौदनेच सोमेचसीमंतोन्नयनेतथा । जातश्राद्धेतथाभुक्त्वाभोक्ताचांद्रायणंचरेदिति । तत्रैवऋग्विधाने—अराइवेजपेन्मंत्रंशतवारंनसंशयः । सीमंतेचयदाभुंक्तेमुच्यतेकिल्बिषात्तदेति । अत्राधानांगब्रह्मौदनांगभोजनमिवसीमंतांगभोजनमेवनि

---

[1] ब्राह्मणभोजनांतंकुर्यात् ।

मित्तत्वेनविवक्षितम् । अतस्तद्दिनेतद्गृहेभोक्तुःप्रायश्चित्तमितिपारिजातोक्तिःपरास्ता । परिशिष्टेतुपुंसवनानवलोभने अन्यथोक्ते—उक्तंतृतीयेपुंसवनंचतुर्थेऽनवलोभनंब्रह्मणाग्निःसंविदानइतिषट्प्राजापत्यःस्थालीपाकस्यहुत्वाऽक्षीभ्यांतेनासिकाभ्यामितिप्रत्यृचमाज्यलेपेनांगान्यभिमृशेत् । व्याख्यातंसीमंतोन्नयनंप्रथमेगर्भेअनवलोभनंव्याख्यास्यामश्चरुद्वयंकुर्वीतेतिप्राजापत्यंपौरुषंचहिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रइतिषट्प्राजापत्येसहस्रशीर्षेतिद्वितीयेगुर्विण्याःकुक्षिमभिमंत्रयेतायुष्यमितिसूक्तेनब्राह्मणान्भोजयित्वास्वस्त्ययनंवाचयीतेति । द्वितीयेचरौसूक्तस्यविनि० सूक्तंसूक्तादौहीनेपादइतिपरिभाषायागृह्यइवतत्परिशिष्टप्रवृत्तेः । अयंप्रकारश्चनभाष्यवृत्तिकारादिभिरादृतः । उक्तंहिभाष्येप्राजापत्यंप्रकृत्य उभयोः कर्मणोरयंसाधारणःस्थालीपाकइति । जयंतकारिकादौचनाम्नैवहोमउक्तः अतःशिष्टैरप्यनादृतइतिचनतत्प्रयोगोलिख्यते । इतिपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनानि ॥ ॥ ॥ ॥

अथसूतिकागृहंपारिजातेवसिष्ठः । ऐंद्रेतुविक्रमस्थानमाग्नेय्यांपचनालयः । वारुण्यांभोजनगृहंनैर्ऋत्यांसूतिकागृहमिति । तत्प्रवेशकालंगर्गः—रोहिण्यैंदवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि । पुनर्वसौपुष्यहस्तधनिष्ठात्र्युत्तरासुच । मैत्रेत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यांसूतिकागारवेशनम् । ग्रहेनुकूलेराशौतुरिक्ताषष्ठ्यष्टवर्जिते । सर्वेचाथशुभाःकेंद्रेपापाश्चत्रिषडायगाः । शुभांशेशुभदृष्टौतुसूतिकावेशनंशुभमिति । तद्विधिःपाद्मे—प्रविशेत्सूतिकासंज्ञंकृतरक्षंसमंततः । सुभूमौनिर्मितंरम्यंवास्तुविद्याविशारदैः । प्राग्द्वारमुत्तरद्वारमथवासुदृढंशुभम् । देवानांब्राह्मणानांचगवांकृत्वाचपूजनम् । विप्रपुण्याहशब्देनशंखवाद्य

रवेणच । प्रसूतावहवस्तत्रतथाक्लेशक्षमादयः । हृद्याविश्वसनीयाश्चप्रविशेयुस्त्रियश्चतत् । एरंडमूलचूर्णेनसघृतेनतथैवताम् । सुखप्रसवनार्थायपश्चात्कार्येंतुतत्क्षिपेदिति । [१]प्रसवनिर्बंधेतन्निवर्तकमृग्विधाने—प्रमंदिनेऋचंत्वेतांजपेद्गर्भप्रमोचनीम् । इंद्रंचमनसाध्यायेन्नारीगर्भंप्रमुंचतीति । तथाविजिहीर्ष्वंवनस्पतेतदिदंच्यावनंस्मृतम् । प्रच्यावयतुकामःस्याच्च्यावयेत्तमिदंजपन् । स्त्रियंगर्भप्रमूढांवापाययेदनुमंत्रितम् । उदकच्यावनेनैवगर्भोऽधश्च्यवतेसुखम् । इति ॥

अथपुत्रजन्मनिकर्तव्यंवसिष्ठः । जातमात्रकुमारस्यमुखमस्यावलोकयेत् । पिताऋणाद्विमुच्येतपुत्रस्यमुखदर्शनादिति । ज्योतिर्वसिष्ठः—श्रुत्वाजातंपितापुत्रंसचैलंस्नानमाचरेत् । उत्तराभिमुखोभूत्वानद्यांवादेवखातकइति । अत्रासंनिधौश्रवणानंतरंस्नानं । संनिधौमूलाद्यजातस्यमुखदर्शनानंतरंस्नानमितिबोध्यम् । पूर्ववाक्येमात्रपदेनजन्मानंतरंमुखावलोकनेव्यवधाननिषेधात् । एतच्चरात्रावपिकार्यम् । नैमित्तिकंतुकुर्वीतस्नानंदानंचरात्रिषु । पुत्रजन्मनियात्रायांशर्वर्यांदत्तमक्षयमितिव्यासोक्तेः । रात्रौनद्यादिगमनाशक्तंप्रत्याहसांख्यायनः—दिवायदाहृतंतोयंकृत्वास्वर्णयुतंतुतत् । रात्रिस्नानेतुसंप्राप्तेकुर्यादनलसंनिधाविति । आशौचांतरमध्येपुत्रजन्मनिनैमित्तिकेस्नानादावस्त्येवाधिकारः । सूतकेतुसमुत्पन्नेपुत्रजन्मयदाभवेत् । कर्तुस्तात्कालिकीशुद्धिरितिप्रजापतिवचनात् । पुत्रजन्मनिमित्तशुद्धेरप्यवधिंजैमिनिः । यावन्नच्छिद्यतेनालंतावन्नाप्नोतिसूतकम् । छिन्नेनालेततःपश्चात्सूतकंतुविधीयतइति । नैमित्तिकाधिकारसंपादकसंध्या

---

[१] शीघ्रप्रसवमन्त्रस्तु—हिमवत्युत्तरेपार्श्वेसुरथानामयक्षिणी । तस्याःस्मरणमात्रेणविशल्याभवगार्भिणि । इति ।

वंदनादेःपूर्णतार्थमुत्तरार्धम् । जाबालिः—जन्मनोनंतरंकार्यंजातकर्मयथाविधि । दैवादतीतकालंचेदतीतेसूतकेभवेत् । अच्छिन्ननाभिकर्तव्यंश्राद्धंवैपुत्रजन्मनि । हेमश्राद्धंप्रकुर्वीतेतिनैमित्तिकक्रममाहाचार्यः । जातंकुमारंतंदृष्ट्वास्नात्वानीयगुरून्पिता । नांदीश्राद्धावसानेतुजातकर्मसमाचरेदिति । जातकर्मोत्तरमपितदहःकर्तव्यमाहहारीतः—जातेकुमारेपितृणामामोदात्पुण्यंतदहस्तस्मात्तिलपूर्णानिपात्राणिसहिरण्यानिब्राह्मणानाहूयपितृभ्यःस्वधांकुर्यात्प्रजापतयेचेति । ब्राह्मे——देवाश्चपितरश्चैवपुत्रेजातेद्विजन्मनाम् । आयांतितस्मात्तदहःपुण्यंपूज्यंचसर्वदा । तत्रदद्यात्सुवर्णंचभूमिंगांतुरगंरथं । छत्रंछागंचमाल्यंचशयनंचासनंगृहमिति । वृद्धयाज्ञवल्क्यः——कुमारजन्मदिवसेविप्रैःकार्यःप्रतिग्रहः । हिरण्यभूगवाश्वादिधान्यशय्यासनादिषु । तत्रसर्वंप्रतिग्राह्यंपक्वान्नंतुविवर्जयेत् । भक्षयित्वातुतन्मोहाद्द्विजश्चांद्रायणंचरेत् । सूतकेतुसकुल्यानामदोषोमनुरब्रवीदिति । पितुःपातित्यादौविशेषमाहाश्वलायनः——पत्यौमृतेवापतितेसंन्यस्तेवाविदेशगे । तद्गोत्रजेनश्रेष्ठेनकार्याःपुंसवनादयः । दीक्षांतेदीक्षितोभर्ताजातकृत्यादिकंचरेत् । पुंसवनादीनिकर्माणित्रीणिश्रेष्ठोनकारयेत् । अकृतेऽन्यकृतेकर्मण्यापत्सुस्वास्थ्यमागतः । दानैर्ब्राह्मणवाक्यैश्चपुत्रकर्मोत्तरंचरेदिति । श्रेष्ठेनेतितादृशएवप्रतिनिधिरित्येवमर्थम् । दीक्षितेनतुदीक्षाकालेस्वयमपिजातकर्मनकार्यं । नापितत्प्रतिनिधिनान्येन । किंत्ववभृथांतेविसृष्टदीक्षःस्वयमेवकुर्यादित्यर्थः । श्रेष्ठःकनिष्ठहस्तेनपुंसवनादीनिनकारयेदित्युक्त्याजातकर्मतुकारयेदितिसूच्यते । अकृतइतिनिषिद्धप्रतिनिधिनाकृतमित्यकृततामापन्नंकर्मातिक्रांतंकेनापिनिमित्तेनकंचित्कालंस्वयंकर्तुमसमर्थोपिनान्ये

नकारयेत् । स्वास्थ्योत्तरंदानसहितब्राह्मणाशीर्भिःसोत्कर्षपुत्रसंस्कारंकुर्यादित्यर्थः । महारोगार्तस्तुसत्यपिसामर्थ्येस्वयं जातकर्मनकुर्यात् । रोगार्दितस्तुतत्कालंस्पृशन्नन्येनकारयेत् । यावत्स्वास्थ्यंभवेत्तावन्नाचरेज्जातकक्रियामित्याश्वलायनवचनात् । जातकर्मानंतरंकर्तव्यमाहवसिष्ठः—दत्वागोभूहिरण्यादिततोलग्नंनिरीक्षयेत् । लग्नमेवप्रशंसंतिज्योतिःशास्त्रविदोजनाः । अरिक्तपाणिर्दैवज्ञाच्छृणुयात्पुत्रजन्मनीति । ततश्चदैवज्ञोक्तदुःस्थानस्थितग्रहप्रीत्यर्थंशक्त्युचितदानानि कुर्यात् । अशक्तःसंकल्पपूर्वकंजपपूजादौब्राह्मणान्नियुंजीतेति ॥ ॥ अथजातकर्मप्रयोगः । पुत्रेजातमात्रेमूलज्येष्ठादौ अनुत्पन्नस्यतस्यमुखंकुलदेवताकुलवृद्धप्रणामपूर्वकमालोक्यनद्यादावुदङ्मुखःस्नायात् । तदसंभवेगृहेवाहृताभिःशीताभिः स्वर्णपूताभिरद्भिःस्नायात् । रात्रावनलसंनिधौ । ततोद्विराचम्यप्रागकृतसंध्यावंदनश्चेत्पूर्णसंध्योपासनंकुर्यात् । अथश्वेतवस्त्रमाल्यादिभिरलंकृतःपवित्रपाणिःअकृतनालच्छेदमपीतस्तन्यमन्यैरस्पृष्टंक्षालितमलंकुमारंमातुरुत्संगेप्राङ्मुखंकारयित्वास्वयंप्राङ्मुखोदेशादिकीर्तनांते अस्यकुमारस्यगर्भांबुपानजनितसकलदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंजातकर्मकरिष्ये । तदादौस्वस्तिपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकरिष्ये । हिरण्येनजातकर्मांगभूतंपुत्रजन्मनिमित्तकंचाभ्युदयिकंतंत्रेणकरिष्ये । तदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंकरिष्ये इतिसंकल्प्यगणपतिपूजनंकुर्यात् । अस्यजातकर्मणःपुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वित्यादिप्रयोगः । श्राद्धेचयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तंहिरण्यंस्वाहानममेतिप्रयोगः । ततोमधुसर्पिषीविषममानेमिश्रितेशिलायांनिक्षिप्ययथातयोःसुवर्णरजःसंसर्गोभवतितथा

सुवर्णसंघृष्यसौवर्णादि[1]पात्रेतत्संभृत्य । प्रतेददामीतिमंत्रस्यहिरण्यगर्भःसवितात्रिष्टुप् कुमारेणमधुसर्पिःप्राशनेवि० । ॐ प्रतेददामिमधुनोघृतस्यवेदंसवित्राप्रसूतंमघोनाम् । आयुष्मान्गुप्तोदेवताभिःशतंजीवशरदोलोकेअस्मिन् इतिमंत्रांते तेनैवहिरण्येनकुमारंपाययित्वातद्धिरण्यंप्रक्षाल्यस्वयमाचम्यतद्धिरण्यंकुमारदक्षिणकर्णेनिधाय मेधांतइतिमंत्रस्यहिरण्यगर्भःसवितासरस्वत्यश्विनावनुष्टुप् कुमारदक्षिणकर्णेजपेवि० । कर्णसमीपेमुखंनीत्वाजपेत् । मेधांतेदेवःसवितामेधांदेवीसरस्वती । मेधांतेअश्विनौदेवावाधत्तांपुष्करस्रजाविति । हिरण्यंसव्यकर्णेनिधायतथैवतामृचंजपित्वा शिशोरंसौदक्षिणेनपाणिनायुगपदभिमृशेत् । अश्माभवेत्यस्यहिरण्यगर्भइंद्रोनुष्टुप् कुमारांसाभिमर्शनेविनियोगः । ॐ अश्माभवपरशुर्भवहिरण्यमस्तृतंभव । वेदोवैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतं । इंद्रश्रेष्ठानिगृत्समदइंद्रस्त्रिष्टुप् कुमारांसाभिमर्शनेवि० । ॐ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानिधेहिचित्तिंदक्षस्यसुभगत्वमस्मे । पोषंरयीणामरिष्टिंतनूनांस्वाद्मानंवाचःसुदिनत्वमह्नाम् । अस्मेप्रयंधीत्यांगिरसोघौरइंद्रस्त्रिष्टुप् कुमारांसाभिमर्शनेवि० । ॐ अस्मेप्रयंधिमघवन्नृजीषिन्निंद्ररायोविश्ववारस्यभूरेः । अस्मेशतंशरदोजीवसेधाअस्मेवीरांच्छश्वतइंद्रशिप्रिन् । ततोरक्षायुरभिवृद्ध्यर्थं । अंगादंगात्संभवसिहृदयादधिजायसे । आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतम् । इतिमूर्धानंत्रिराजिघ्रेदितिबहवः । पारिजातोदाहृतं—रक्षायुषोभिवृद्ध्यर्थमाजिघ्रतिपि

---

[1] सौवर्णेराजतेवापिपात्रेकांस्यमयेथवा । मधुसर्पिर्निषिच्याथहिरण्येनावघर्षयेत् । प्राशयेत्तंहिरण्येनकुमारंमधुसर्पिषी इति । आश्वलायनस्मृतौ अत्रक्रमोऽविवक्षितइतिबहवः ।

तासुतम्। तावन्नामस्मरेत्तस्यतंमाताप्यथपाययेदिति। आचार्यवचोनुसरंतःवृत्तिकृज्जयंतादयस्तु प्रवासादागतस्यैवसूत्रानुसारेणतत्रिराघ्राणमित्याहुः। तच्चेत्थं। प्रवासादेत्यगृहद्वारिस्थित्वागृहमवेक्षेतगृहान्माबिभीतेति। अथप्रविशेद्गृहानहंसुमनसःप्रपद्यइति। अथशिवंशग्ममितिमंत्रंसकृदुक्त्वात्रिरनुवीक्षमाणःप्रपद्यकृताचमनोनेकपुत्रश्चेज्ज्येष्ठानुपूर्व्येणशिरःसर्वतोगृहीत्वात्रिराघ्रायजपेदंगादंगादितिमंत्रं। प्रतिपुत्रंशिरोग्रहणादिजपांता[१]वृत्तिः। एकपुत्रःसकृदेवजपांतंकुर्यात्। पूर्वमतानुसारेणजातकर्मांतेपिक्रियमाणमाघ्राणमित्थमेवशिरोग्रहणादिजपांतंकर्तुमुचितं। ततोनानानामभ्योभूयसींदक्षिणांशक्तौपूर्वोक्तदेयांतराणिचदत्वाऽरिक्तपाणिर्दैवज्ञपूजनपूर्वकंजन्मलग्नगतग्रहावधारणंकृत्वा प्रतिकूलग्रहानुकूल्यसिद्ध्यर्थंविशिष्टदानानिकुर्यात्। जपादिकर्मणिवावृतब्राह्मणान्नियुज्य नालच्छेदंकारयित्वाहिरण्योदकेनमातुर्दक्षिणस्तनंप्रक्षाल्यमात्राकुमारंपाययेत्—इमांकुमारोजरांधयतुदीर्घमायुःप्रजीवसे। अस्यैस्तनौप्रयुंजानाआयुर्वर्चोयशोबलमिति केनाऽपिब्राह्मणेनपठितमंत्रेण। तमर्वंतमितिब्राह्मणाआशीर्वादमंत्रंवदेयुः। गृह्यपरिशिष्टेतु—अथजातकर्मपुत्रेजातेपुरान्यैरालंभादग्निरिंद्रःप्रजापतिर्विश्वेदेवाब्रह्मेत्यनादेशदेवताहुत्वाप्राक्स्विष्टकृतःसर्पिर्मधुप्राशनादिकुर्यादिति। परिशिष्टांतरेतु—कुमारस्यतुजातस्यअरणींषोडशांगुलाम्। आहृत्यचोत्तरामणींताभ्यामग्निंतुमंथयेत्। जुहुयाज्जातकर्मादिपित्र्येऔपासनेपिवा। तस्मिन्कुमारकर्माणिविवाहांतानिकारयेत्। सगृह्यश्चातऊर्ध्वंस्याद्विधिनानेनसंस्कृतइत्युक्तम्। तस्मिन्मंथनो

---

[१] जपांतामंत्राः।

त्पन्ने । अपिवेत्यस्योत्तरार्धेनान्वयः । होमपक्षेनादीश्राद्धांतेजातकर्मांगभूतंहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्यारणिपरिग्रहपूर्वकंमथितमग्निंलौकिकमग्निंवाव्याहृतिभिःप्रतिष्ठाप्यास्यान्वाधानेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽग्निमिंद्रंप्रजापतिंविश्वान्देवान्ब्रह्माणमितिप्रधानदेवताआज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिआज्यभागांतंकृत्वा स्रुवेणाग्नयेस्वाहेत्येवंपंचाहुतीर्हुत्वा मधुसर्पिःप्राशनाद्यंसाभिमर्शनांतंमूर्धाघ्राणांतंवाकृत्वास्विष्टकृदादिकुर्यादितिक्रमः । कुमार्याअपिएतज्जातकर्मामंत्रकंकार्यम् । आवृतैवकुमार्याइतिसूत्रात् । तूष्णीमेताःक्रियाःस्त्रीणांविवाहस्तुसमंत्रकइतिस्मृतेश्च । इतिकौस्तुभेजातकर्मप्रयोगः ॥ ॥

अथजन्मदेवतानांपूजनादि । व्यासः—सूतिकावासनिलयाजन्मदानामदेवताः । तासांयागनिमित्तात्तुशुद्धिर्जन्मनिकीर्तितेति । जन्मनिमित्ताशौचेसत्यपीत्यर्थः । प्रथमेहनिषष्ठेवादशमेचैवसर्वदा । त्रिष्वाशौचंनकुर्वीतसूतकेपुत्रजन्मनीति । चकारात्पंचमाष्टमयोरपि । तच्चप्रथमेनैमित्तिकश्राद्धादौ । दशमेबलिदानान्नदानयोः । इतरत्रतुजन्मदेवतापूजादौ । बलिदानंतुदशमेह्यन्नदानंप्रशस्यतइति । अन्नदानंचसगोत्रेभ्यः ॥ ॥ अथपूजाप्रयोगः । पंचमादिदिनेरात्रेःप्रथमयामे कुमारस्यपित्रादिराचमनादिदेशकालसंकीर्तनांतेऽस्यबालस्यसमातृकस्यायुरारोग्यसकलारिष्टशांतिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंस्कंदस्यराकादीनांजन्मदानांजीवंतिकायाश्चपूजनंकरिष्येतदादौविघ्नेशपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजांषोडशोपचारैःकृत्वाप्रार्थयेत् । लंबोदरमहाभागसर्वोपद्रवनाशन । त्वत्प्रसादादविघ्नेशचिरंजीवतुबालकइति । ततःकुड्यादिलिखितप्रतिमासुतंदुलपुंजेषुवाजन्मदाः जीवंत्यपरनाम्नींषष्ठीं स्कंदं राकामनुमतिंसिनीवालींकुहूंखड्गादिषुभगवतींचषोडशो

पचारैःपूजयेत् । जन्मदाभ्योनमइतिनाममंत्रेणजन्मदानामावाहनादि । आयाहिवरदेदेविमहाषष्ठीतिविश्रुते । शक्तिभिःसहबालंमेरक्षजागरवासरे । इतिषष्ठ्यावाहनम् । शक्तिस्त्वंसर्वदेवानांलोकानांहितकारिणी । मातर्बालमिमंरक्षमहाषष्ठिनमोस्तुते । इतीतरोपचाराणांतस्यैसमर्पणम् । क्षेत्रपालनमस्तुभ्यंसर्वशांतिफलप्रद । बालस्यविघ्ननाशार्थंगृहाणेमंबलिंशुभम् । इतिक्षेत्रपालबलिंदद्यात् । जीवंतिकाप्रीत्यर्थंबलिंदत्वा । भूतप्रेतपिशाचाद्यागंधर्वारक्षसांगणाः । शुभंकुर्वंतुतेसर्वेममगृह्णंत्विमंबलिम् । नवग्रहबलीन्दत्वाअष्टलोकपालेभ्योमाषभक्तबलीन्दद्यात् । ततस्तस्याःप्रार्थनम् । जननीसर्वभूतानांबालानांचविशेषतः । नारायणीस्वरूपेणबालंमेरक्षसर्वदा । भूतप्रेतपिशाचेभ्योडाकिनीयोगिनीषुच । मातेवरक्षबालंमेश्वापदेपन्नगेषुच । गौरीपुत्रोयथास्कंदःशिशुत्वेरक्षितःपुरा । तथाममाप्ययंबालःषष्ठिकेरक्ष्यतांनमइति । उक्तदिनेषुपूजितदेवताप्रीत्यर्थंब्राह्मणेभ्योयथाचारंतांबूलदक्षिणादिदद्यात् । पक्वान्नभिन्नदानप्रतिग्रहयोर्नदोषः । इतिजन्मदादिपूजनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथाशौचकर्तव्यनिर्णयः । भारद्वाजः—सूतकेमृतकेकुर्यात्प्राणायामममंत्रकम् । तथामार्जनमंत्रांस्तुमनसोच्चार्यमार्जयेत् । गायत्रींसम्यगुच्चार्यसूर्यायार्घ्यंनिवेदयेत् । मार्जनंतुनवाकार्यमुपस्थानंनचैवहीति । पैठीनसिः—सूतकेसावित्र्याजलंप्रक्षिप्यप्रदक्षिणंकृत्वासूर्यंध्यायन्नमस्कुर्यादितिप्राप्तायाःसावित्र्याःपुनर्वचनंस्पष्टोच्चारणार्थम् । विष्णुः—आशौचेहोमदानप्रतिग्रहस्वाध्यायानिवर्तंते नाशौचेकस्यचिदन्नमश्नीयादिति । अत्रहोमोवैश्वदेवाख्यः । पंचयज्ञविधानंतुनकुर्यान्मृति

जन्मनोरितिस्मृत्यंतरात् । नतुअग्निहोत्रोपासनाख्यः । वैतानोपासनाःकार्याःक्रियाश्चश्रुतिचोदिताइतियाज्ञवल्क्योक्तेः । कर्मवैतानिकंकार्यंस्नानोपस्पर्शनात्स्वयमितिहारीतोक्तेश्च । वैतानिकग्रहणमौपासनहोमोपलक्षणार्थम् । तस्यापिश्रौतत्वेनमिताक्षरोक्तेः । स्नानाचमनेचतात्कालिके । अग्निहोत्रस्यहोमार्थंशुद्धिस्तात्कालिकीभवेदितिगोभिलोक्तेः । स्थालीपाकपिंडपितृयज्ञादिस्मार्तंतु आशौचेप्यन्यद्वाराकारयेत् नत्यजेन्नापिस्वयंकुर्यात् । सूतकेतुसमुत्पन्नेस्मार्तंकर्मकथंभवेत् । पिंडयज्ञंचरुंहोममसगोत्रेणकारयेदिति । एतच्चप्रथमारंभोत्तरं । होमऔपासनहोमः सोऽसगोत्रेणापिकारणीयइत्याशयेनतदुक्तिः । नतुतत्रापिनियमः अग्निहोत्रतुल्यत्वात् । अन्येतुस्थालीपाकादिवदौपासनहोमेऽप्यन्यकर्तृत्वनियमंमन्यंते । काम्यस्यापिप्रतिसवंपुलस्त्यः—सद्यःशौचमित्यनुवृत्तौ सांनिहित्यमुपस्पृश्यराहुग्रस्तेदिवाकरे । सत्रधर्मप्रवृत्तस्यदानकर्मफलैषिणइतिसंनिहिततीर्थेस्नात्वाराहूपरागेकाम्यदानंकुर्यात् । तथासन्नप्रवृत्तोपिइतिव्याख्यातंपारिजाते । तथाबृहस्पतिः——कन्याविवाहेसंक्रांतौसूतकंनकदाचनेति । जमदग्निः——सूतकेमृतकेवापिजाह्नव्याःसलिलेस्थितः । नाभिमात्रेजलेस्थित्वाकुर्याद्दानजपादिकमिति । एतदुभयंकाम्यविषयमपीत्यपितत्रैवोक्तम् ॥ ॥ अथसूतिकाशुद्धिः । द्विजातेःसूतिकायास्याद्दशाहेनतुशुद्ध्यति । त्रयोदशेह्निसंप्राप्तेऽशुद्धाशुद्ध्यत्यसंशयमिति । अशुद्धाशूद्रा । अस्पृश्यत्वनिवृत्तिरत्रोच्यते । कर्मानधिकारस्तुतत्तद्वर्णोचिताशौचांतेसर्वेषांनिवर्तते । द्विजातिस्त्रीणांतुपुत्रप्रसूनांविंशतिरात्रांतेकन्याप्रसूनांतुमासांतइतिसंक्षेपः । इत्याशौचकर्तव्यादिनिर्णयः ॥ ॥ ॥ ॥

अथजननशांतयः ॥ तत्रादौगोप्रसवउच्यते । गर्गः—पित्ररिष्टेसुतारिष्टेमात्ररिष्टेतथैवच । प्रायश्चित्तंततःकुर्यात्तत्तद्दोषस्यशांतये । तादृशनक्षत्रोत्पत्त्यासूचितेपित्राद्यरिष्टेतत्तद्दोषशांत्यैतत्तत्प्रायश्चित्तंकुर्यादित्यर्थः । पौष्णाश्विन्योर्गुरौसार्पमघाचित्रेंद्रमूलभे । एषुऋक्षेषुजातस्यकुर्याद्गोजननंतथा । जन्मर्क्षेवात्रिजन्मर्क्षेशुभवारेशुभेदिने । कृत्वाभ्यंगादिकंसर्वंगृहालंकारपूर्वकम् । गोमयेनोपलिप्याथगृहस्यैशानभागके । पंकजंकर्णिकायुक्तंरजोभिःश्वेतवर्णकैः । व्रीहिंस्तत्रविनिक्षिप्ययथावित्तानुसारतः । नवशूर्पेतुतन्मध्येरक्तवस्त्रंप्रसारयेत् । स्थापयित्वाशिशुंतत्रपुनःसूत्रेणवेष्टयेत् । प्राङ्मुखंतमवाक्पादंतिलगर्भगतंशिशुम् । गोमुखंदर्शयित्वातुपुनर्जातंतुगोर्मुखात् । विष्णुर्योनिमितिसूक्तेनगव्येनस्नापयेच्छिशुम् । गवामंगेषुमंत्रेणगवां[1]मंगेषुसंस्पृशेत् । विष्णोःश्रेष्ठेनमंत्रेणगोप्रसूतंतुबालकम् । आ[2]चार्यस्तुसमादायपश्चान्मात्रेददेत्तदा । माताजघन्यभागस्थाशिशुमानीयतन्मुखात् । ततःपित्रेतदादद्यात्ततोमात्रेप्रदापयेत् । व[3]स्त्रेनवेचसंस्थाप्यपुत्रस्यमुखमीक्षयेत् । गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधि[4]सर्पिश्चसंयुतम् । आपोहिष्ठादिभिर्मंत्रैरभिषिंचेत्ततःशिशुम् । मूर्ध्निचाघ्रायतंपुत्रंतन्मंत्रेणतदापिता । अंगादंगात्संभवसिहृदयादधिजायसे । आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतमिति । मूर्धनित्रिरवघ्रायतंशिशुंस्थापयेत्ततः । पुण्याहंवाचयेत्पश्चाद्ब्राह्मणैर्वेदपारगैः । दारिद्रायाथविप्रायतांगामभ्यर्च्यदापयेत् । गोवस्त्रस्वर्णधान्यानिदद्यादर्कादितःक्रमात् । यथाशक्तिधनंदद्याद्ब्राह्मणेभ्यस्तदापिता । ततोहोमंप्रकु

---

१ गोवामांगेषु. । २ साचार्यस्तुसमादायपश्चान्मात्रेददेत्पिता. । ३ वस्त्रंस्थाप्यपितास्याथ. । ४ सर्पिःकुशोदकम् ।

र्वीतस्वस्वशाखोक्तमार्गतः । उल्लेखनं[1]ततःकुर्यादाज्यभागांतमेवच । होमस्यैशानदिग्भागेधान्योपरिशुभंघटम् । पंचगव्यंघटेस्थाप्यतिलांस्तत्रविनिक्षिपेत् । क्षीरद्रुमकषायांश्चपंचरत्नानिनिक्षिपेत् । वस्त्रयुग्मेनसंछाद्यगंधादिभिरथार्चयेत् । विष्णुंवरुणमभ्यर्च्य[2]प्रतिमांचविधानतः । प्रतिमांयक्ष्मघ्नः अग्रेतद्देवत्यहोमविधानात् । चकाराच्चेतिकेचित् । तन्न । विष्णवादिपूजायांप्रतिमानियमसंभवे अपूर्वपूजांतरविधिकल्पनस्यान्याय्यत्वात् चकारस्यविधानशब्दोक्ततत्तदुचितेतिकर्तव्यतानिरूपितसमुच्चयार्थत्वात् । यतइंद्रादिभिर्मंत्रैःकुंभंस्पृष्ट्वाभिमंत्रयेत् । दधिमध्वाज्ययुक्तेनहोमंकुर्याद्विधानतः । आपोहिष्ठेतितिसृभिरप्सुमेसोमइत्यथ । तद्विष्णोःपरमंपदमक्षीभ्यामितिसूक्ततः । ऋग्भिराभिःप्रत्यृचमष्टाविंशतिसंख्यया । अशक्तावष्टसंख्यंवादधिमध्वाज्यसंयुतम् । आदित्यादिग्रहाणांचहोमंकुर्यात्समंत्रकम् । इतिगोप्रसवविधिः ॥

अथप्रयोगः ॥ बालस्यजन्मर्क्षेतदारभ्यगणनेनदशमैकोनविंशयोर्वारनक्षत्रयोस्तदसंभवेदेवनक्षत्रादियुक्तेशुभदिनेवाकृताभ्यंगस्नानोगृहमुपलेपनादिनालंकृत्यसभार्योऽस्यबालकस्याऽमुकदुष्टकालोत्पत्तिसूचितारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंगर्गोक्तांगोमुखप्रसवाख्यांशांतिंकरिष्ये तदंगत्वेनगणेशपूजांकरिष्येइतिसंकल्प्यतंसंपूज्याचार्यवरणंतत्पूजनंचकुर्यात् । आचार्योयदत्रसंस्थितमितिसर्षपविकिरणंशुचीवइतिपंचगव्येनापोहिष्ठेत्यद्भिश्चदेशप्रोक्षणंस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमितिप्रार्थनंच विधाय गृहस्यैशानभागेगोमयेनोपलिप्यश्वेतरजोभिःकर्णिकायुक्तंपंकजंकृत्वातत्रव्रीहीन्निक्षिप्यतेषुशूर्पे[3]तस्मिन्रक्तवस्त्रंप्र

---

[1] उल्लेखनादिकंकृत्वाथाज्यभागांतमाचरेत् । [2] प्रतिमायां । [3] शूर्पेप्रागग्रे ।

सार्यंतत्रतिलविकिरणंचकृत्वातत्रप्राङ्मुखं[1]मवाक्पादंशिशुंनिधायसशिशुशूर्पंसूत्रेणवेष्टयित्वातस्मिन्गोमुखसांनिध्यंकृत्वा। विष्णुर्योनिमितिसूक्तं[2]स्यत्वष्टाविष्णुरनुष्टुप्[3] सूक्तेनजन्मचिंतनंकृत्वा तेनैवावृत्त्यापंचगव्येनशिशुंस्नापयित्वा । गवामंगेषु तिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रचेतिगोःसर्वांगेषुवामांगेष्वेववास्पृशेत् । ततआचार्यो ( विष्णोःश्रेष्ठेनेत्यस्यत्वष्टाविष्णुरनुष्टुप् बालादानेवि० ) विष्णोःश्रेष्ठेनेतिशिशुंगृहीत्वामात्रेदद्यात् । मातातुबालमादाय गोमुखसमीपादानीयतत्पश्चिमभागस्थासती पित्रेदद्यात् । ततःपितामात्रेदत्त्वापुनरादाय । नवेवस्त्रेशिशुंस्थाप्याच्छादनमपसार्यपुत्रमुखेक्षणंकुर्यात् । ततःपंचगव्येनाचार्यःशिशुंप्रोक्षेत् आपोहिष्ठेतितिसृभिः । आसामांबरीषःसिंधुद्वीपआपो गायत्रीअभिषेकेवि० ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः० ऋचः ३ । ततःपिताहस्तद्वयेनपरिग्रहणपूर्वकं ( अंगादंगाद्धिरण्यगर्भो धातानुष्टुप्अवघ्राणेवि० ) अंगादंगादितिमंत्रेणशिशोर्मूर्धनित्रिरवघ्रायस्थानेशिशुस्थापनंकृत्वा शाखाध्यायिभिःस्वशाखोक्तविधिनापुण्याहवाचनं[4]कुर्यात् । ततआचार्योगोर्दरिद्रब्राह्मणस्यचपूजनपूर्वकंतस्मैतद्दानंविधिनाकारयेत् । ततोयजमानो वस्त्रस्वर्णधान्यानियथाशक्त्यार्कादिप्रीत्यर्थंआचार्यायदत्त्वान्येभ्योब्राह्मणेभ्योभूयसींदक्षिणांदद्यात्।ततआचार्यःगोमुखप्र

---

[1] दक्षिणदिक्पादं । [2] सूक्तस्येत्यत्रतिसृणामितिशां. र. । [3] जन्मचिंतनेस्नापनेचवि० । [4] तत्र विष्णुवरुणयक्ष्माणःप्रीयंतां । कृतगोजननकर्मणेस्वस्तीतिविशेषः । एतदसंभवेतुकृतस्यास्यगोमुखप्रसवस्य पुण्याहंभवंतोब्रुवंतु एवंस्वस्ति ऋद्धिं श्रीः कल्याणमितित्रिस्त्रिर्वाचयित्वेतिशां. र. ।

सवशांतिहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्यस्थंडिलाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतेऽर्कादिग्रहा[1]णामावाहनंकृत्वान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेत्रप्रधानंअपः द्वादशोत्तरशतसंख्याभिर्दधिमध्वाज्याहुतिभिर्द्वात्रिंशत्संख्याभिर्वा । विष्णुंअष्टाविंशतिसंख्याभिर्दधिमध्वाज्याहुतिभिःअष्टाभिर्वा । यक्ष्माणंअष्टषष्ट्यधिकशतसंख्याभिर्दधिमध्वाज्याहुतिभिःअष्टचत्वारिंशत्संख्याभिर्वा । अर्कादीन्प्रत्येकंअष्टाविंशतिसंख्याभिर्दधिमध्वाज्याहुतिभिःप्रत्येकमष्टाभि[2]र्वा । शेषेणेत्याद्याज्यभागांतेस्थंडिलस्यैशानदिशिग्रहपीठोत्तरतोमहीद्यौरित्यादिविधिनाधान्योपरिघटस्थापनंकृत्वातस्मिन्पंचगव्यंतिलान्क्षीरद्रुमकषायान्पंचरत्नानिक्रमेणनिक्षिप्यवस्त्रयुग्मेनसंछाद्यगंधपुष्पादिभिःकलशमभ्यर्च्यंकृताग्न्युत्तारणप्रतिमयोर्विष्णुवरुणौपूजयेत् । तद्विष्णोरितिमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री । तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् गोप्रसवप्रधानपूजनेवि० ॐ तद्विष्णोःप० ऋक् ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणा० ऋक्[3] । पूजांतेकुंभंस्पृष्ट्वाभिमंत्रयेत् । यतइंद्रेतिषण्णांभर्गइंद्रोबृहतीसमानांसतोबृहतीपंक्तिःकुंभाभिमंत्रणेवि० ॐ यतइंद्रभयामहे० ऋचः ६ । ततआचार्यःस्रुवेणदधिमध्वाज्यहोमंकुर्यात् । आपोहिष्ठेतितिसृणांसिंधुद्वीपआपोगायत्रीगोप्रसवप्रधानहोमे० । सत्यपिहोमस्यवारुणत्वेऽब्द्यइत्येवत्यागः पार्वणहोमेपूर्णमासायेदमितिवत् । अप्सुमे० ऋष्यादिपूर्ववत् । ( अप्सुमेसिंधुद्वीपआपोगायत्री । गायत्रीकुतः । अप्स्वग्नेसधिष्ठवाप्सुमेसोमो

---

[1] अग्नेःपूर्वेऽधिप्रत्यधिदेवतारहितकेवलग्रहाणमेवात्रावाहनपूजनहोमाःसिंधावुक्ताः । [2] अत्रषट्पात्रासादनंदधिमध्वाज्येनसहाज्यस्यपर्यग्निकरणंच । [3] अत्र शां. र. अक्षीभ्यामित्यस्यविवृहायक्ष्मानुष्टुप्यक्ष्मावाहनेवि० अक्षीभ्यांते० इतियक्ष्माणंचावाह्यसंपूज्य यक्ष्मपूजनंनेत्येकेइति ।

अब्रवीदित्यस्मिन्सूत्रेपूर्वस्यागायत्रीत्वात्तत्साहचर्यादुत्तरापिगायत्र्येवगृहीतव्येतिवृत्तिकृल्लेखनाद्यथोत्तरागायत्रीगृह्यते । अत्रतुविधिवाक्येसंघट्टसपाठाद्गायत्रीग्राह्येतिकिंवक्तव्यं । अतएवनानुष्टुभोग्रहणं । तद्विष्णोरितिमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री गोप्रसवप्रधानहोमेवि० ॐ तद्विष्णोः० विष्णवइदं० । अक्षीभ्यांतइतिषण्णांविवृहायक्ष्मानुष्टुप्गोप्रसवप्र० । ॐ [१]अक्षीभ्यांतेनासिकाभ्यां० १ । ग्रीवाभ्यस्त० २ । आंत्रेभ्यस्ते० ३ । ऊरुभ्यांते० ४ । मेहनाद्वनं० ५ । अंगादंगाल्लो० ६ । यक्ष्मणइदं० । ततआकृष्णेनेत्यादिभिर्दध्यादिहोमः । सवित्रेसोमायेदमितित्यागःसर्वत्र । प्रत्यृचंअष्टाविंशतिरष्टौवाहुतयः । प्रणीताप्रणयनसंस्थाजपांतेपरिस्तरणविसर्जनादि । आचार्याययथाशक्तिदक्षिणांदत्त्वास्थापितदेवतानामुत्तरपूजाविसर्जनांतेतत्प्रतिमामाचार्यहस्तेप्रतिपाद्याग्निंसंपूज्यविभूतिधारणांतेगच्छगच्छेतितंविसृज्यदशत्रीन्वाब्राह्मणान्भोजयेत् कर्मणःसंपूर्णतांवाचयित्वेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ इतिगोप्रसवप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥

अथकृष्णचतुर्दशीजननशांतिः । गर्गः—कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेःषड्विधंफलम् । चतुर्दशींचषड्भागांकुर्यादादौशुभंस्मृतम् । द्वितीयेपितरंहंतितृतीयेमातरंतथा । चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् । षष्ठेतुधनहानिःस्यादात्मनोवंशनाशनम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशांतिंकुर्याद्विधानतः । आचार्यंवरयेद्धीमान्पुत्रदारसमान्वितम् । ब्राह्मणानृत्विजश्चैवस्वस्तिवाचनपूर्वकम् । रुद्रादिदेवता[२]तस्याःकर्षमात्रसुवर्णतः । तदर्धार्धेनवाकुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः । प्रतिमांकारयेच्छं

---

[१] मूलेसूक्तत इतिदर्शनादत्रयक्ष्महोमेसूक्तावृत्तिरेवेष्टा । तंत्रावृत्तिस्तुनदुष्यति शां. र. । [२] तस्याश्चतुर्दश्याः ।

भोःसर्वलक्षणसंयुताम् । वृषभेचसमासीनंवरदंशूलपाणिनम् । शुद्धस्फटिकसंकाशंश्वेतमाल्य।बरान्वितम् । त्रैयंबकेणमंत्रेणपूजांकुर्याद्विधानतः । स्थापयेच्चतुरःकुंभांश्चतुर्दिक्षुयथाक्रमम्[1] । पुण्यतीर्थजलोपेतान्धान्यस्योपरिविन्यसेत् । तन्मध्येस्थापयेत्कुंभंशतच्छिद्रसमन्वितम् । पंचमृतपंचरत्नानिपंचत्वक्पंचपल्लवान् । पंचधान्यंसुवर्णंचतत्तन्मंत्रैर्विनिक्षिपेत् । शतौषधानिनिक्षिप्यश्वेतवस्त्रैश्चवेष्टयेत्[2] । सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः । आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः । आवाह्यवारुणैर्मंत्रैरनेनचविधानतः । इमंमेवरुणेत्यनयातत्त्वायामीत्यृचातथा । त्वंनोअग्नइत्यनयासत्वंनइतिमंत्रतः । आग्नेयकुंभमारभ्यपूजांकुर्याद्यथाक्रमात् । आनोभद्राख्यसूक्तंचभद्राअग्नेश्चसूक्तकम् । जप्त्वापुरुषसूक्तंचकद्रुद्रंतुक्रमाज्जपेत् । ईश्वरस्या[3]भिषेकंचग्रहपूजांचकारयेत् । ईश्वरस्यरुद्रस्य । पूजाकर्मसुनिर्वर्त्यहोमंकुर्याद्विधानतः । ग्रहस्येशानदिग्भागेकुंडंकुर्याद्विधानतः । विस्तारायामखातंचअरत्निद्वयसंमितम् । कुंडकंठंपरित्यज्यसमंतादंगुलंक्रमात् । मेखलोच्छ्रायविस्तारौचतुस्त्रिद्व्यंगुलैःक्रमात् । पश्चिमेमध्यभागेतुयोनिं[4]कुर्याद्विधानतः । समिदाज्यचरूंश्चैवतिलमाषांश्चसर्षपैः । अश्वत्थप्लक्षपालाशसमिद्भिःखादिरैःशुभैः । अष्टोत्तरसहस्रंवाअष्टोत्तरशतंतुवा । अष्टाविंशतिमेतैश्चहोमंकुर्यात्पृथक्पृथक् ।

---

[1] आग्नेयीमारभ्यविदिक्ष्वित्यर्थः । [2] सुरभीणिचपुष्पाणिश्वेतानिपरिवेष्टयेदित्यन्यत्राधिकं । [3] ईश्वरस्यपूर्वस्थापितेश्वरप्रतिमायाः । [4] योनिंषडंगुलांतिर्यक्द्वादशांगुलदैर्घ्यकाम् । अश्वत्थदलसंकाशांकिंचिन्निम्नायतांशुभाम् । कुर्यादाघारपर्यन्तंस्वगृह्योक्तविधानतः । [5] सर्षपैःसहितास्तिलमाषाग्राह्याइत्यर्थः ।

त्रैयंबकेणमंत्रेणतिलान्व्याहृतिभिःक्रमात् । ग्रहा[1]एवंचहोतव्याअस्मदुक्तविधानतः । एवंक्रमेणहोतव्यंहोमशेषंसमापयेत् । सर्वालंकारयुक्तानांत्रयाणामभिषेचनम् । त्रयाणांमातृपितृबालकानाम् । चतुर्भिःकलशैरद्भिर्बृहत्[2]कुंभसमन्वितम् । धौतांबराणिधृत्वाथकुर्यादाज्यावलोकनम् । पूर्णाहुतिंचजुहुयाद्यजमानःसमाहितः । तत्सर्वंपरयाभक्त्याईश्वरायनिवेदयेत् । सर्वालंकारसंयुक्तांसवत्सांगांपयस्विनीम् । प्रतिमांवस्त्रयुग्मंचआचार्यायनिवेदयेत् । ईश्वरप्रीतयेशक्त्याकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । अन्येषांचैवसर्वेषांकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं । तस्मादनेनविधिनावित्तशाठ्यविवर्जितः । एवंयःकुरुतेशांतिंसर्वपापैःप्रमुच्यते । सर्वान्कामानवाप्नोतिस्थिरजीवीसुखीभवेदिति ॥ ॥ अथकृष्णचतुर्दशीजननशांतिप्रयोगः । दे[3]शकालौसंकीर्त्यअस्यशिशोःकृष्णचतुर्दश्यांअमुकांशजननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसग्रहमखांकृष्णचतुर्दशीजननशांतिंकरिष्ये । तदंगत्वेनगणपतिपूजनंस्वस्तिपुण्याहवा[4]चनंआचार्यर्त्विग्वरणंचकरिष्ये । वृतानांपूजनं । अग्न्युत्तारणं । आचार्यःकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य यदत्रसंस्थितमित्यादिस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमित्यंतेस्थंडिलपूर्वभागेमहीद्यौरित्यादिमंत्रावृत्त्यापदार्थानुसमयेनमध्येशतच्छिद्रं तस्यआग्नेय्यादिविदिक्षुचतुरःकलशांश्चसंस्थाप्य शतच्छिद्रेस्योनापृथिवीतिपंचमृदः अश्वेत्थेवइतिपंचपल्लवान् सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि रुवतिभीमोवृषभस्तविष्ययेतिपंचत्वचः ओषधयःसमि

---

२ ग्रहाणांचैवहोतव्या । २ शतच्छिद्रोबृहत्कुंभः । ३ चतुर्दश्याद्वितीयतृतीयांशयोरुत्पत्तौगोमुखप्रसवंकृत्वा । ४ अत्रनांदीश्राद्धमप्यावश्यकम् ।

तिपंच[1]धान्यानि हिरण्यरूपइतिसुवर्णं याओषधीरितिसर्वौषधीः शतावरींनिक्षिप्ययुवासुवासाइतिश्वेतवस्त्रैःसंवेष्ट्य पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रनिधानांतेरुद्रप्रतिमांकर्षतदर्धतदर्धान्यतरपरिमितहेमनिर्मितांवराभयांकितहस्तद्वयांवृषभारूढां[2]स्थापयित्वा त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रपूजनेविनि० ॐ त्र्यंबकंयजामहे० ऋक् १। शुद्धस्फटिकसंकाशंश्वेतमाल्यांबरावृतं ध्यात्वा एकादशिन्यभिषेकघटितोपचारैरुद्रंसंपूज्य आग्नेय्यादिचतुर्षुकलशेषुगंधद्वारामितिगंधंओषधयइतियवान्अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि हिरण्यरूपइतिहिरण्यं याःफलिनीरितिफलम् युवासुवासाइतिवस्त्रवेष्टनं पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रनिधानं एतावत्कांडानुसमयेनकृत्वा इमंमेवरुणइतिसर्वेसमुद्राइतिचसमुद्रादिसहितंवरुणमावाहयेत्। इमंमेवरुणशुनःशेपोवरुणोगायत्री वरुणावाहनेवि० ॐ इमंमेवरुण० समुद्रादिसहितं वरुणंसंपूज्य। उत्तरकलशेष्वपिसमुद्रादिसहितवरुणपूजनेक्रमेण तत्त्वायामि० त्वंनोअग्ने० सत्वंनोअग्ने० इत्यादयो मंत्राः। तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् ॐ तत्त्वायामि० ऋक् १। त्वंनोअग्नेइत्यस्यगौतमोवामदेवोऽग्नीवरुणौ त्रिष्टुप्पूजनेवि० ॐ त्वंनोअग्ने० ऋक् १। सत्वंनोअग्नइत्यस्यवामदेवोग्नीवरुणौत्रिष्टुप्पूजने० ॐ सत्वंनोअग्नेवमोभवो० ऋक् १। सर्वपूजांतेदेवदानवइतिप्रतिकलशंप्रार्थना। तत्रक्रमेणचतुर्षुकलशेषुसूक्तजपः। आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्त

---

१ व्रीहियवगोधूममाषतिलान्। २ स्थंडिलात्पूर्वतःपीठादौरुद्रमावाह्य तत्प्राच्यामैशान्यामुदीच्यांवाविधिवत्कुंभपंचकस्थापनमुक्तंमयूखेतत्र शतच्छिद्रे नपूर्णपात्रंकिंतुकेवलंद्रव्यप्रक्षेपः। मूलानुगुण्याद्युक्तंचैतत्।

स्यराहूगणोगोतमोविश्वेदेवादेवता आद्यापंचसप्तमीचजगत्यःषष्ठीविराट्स्थानाशेषास्त्रिष्टुभःजपेविनियो० ॐ आनोभद्राःक्रतवोयंतु० ऋचः १० । भद्राअग्नेरितिद्वादशर्चस्यवाध्र्यश्वःसुमित्रोग्निर्देवताआद्येद्वेजगत्यावंत्यास्त्रिष्टुभः जपेविनि० ॐ भद्राअग्नेर्वध्र्यश्वस्य० ऋचः १२ । सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्यसूक्तस्यनारायणःपुरुषोनुष्टुवंत्यात्रिष्टुप् जपेवि० ॐ सहस्रशीर्षा० ऋचः १६ । कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्र्यंत्यानुष्टुप् जपेवि० ॐकद्रुद्रायप्रचेतसे० इतिसूक्तम्। ततोग्निंवेद्यांग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्यान्वाधानंकुर्यात्। समिद्द्वयमादायात्रप्रधानम् आदित्यादिग्रहान्अष्टाष्टसंख्याभिःअर्कादिजातीयसमिदाहुतिभिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिश्च । अधिदेवताप्रत्यधिदेवताद्याग्रहपीठदेवताएकैकसंख्याकाभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः । रुद्रंप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याकाभिरश्वत्थप्लक्षपलाशखादिरजातीयसमिदाहुतिभिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिःसंमिश्रतिलमाषसर्षपाहुतिभिश्च । अग्निवायुसूर्यप्रजापतींस्तिलाहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्याद्याज्यभागांतेकृतेयजमानोयथादैवतंत्यागंकुर्यात्। तदनंतरंहोमांतेस्विष्टकृदादिनवाहुत्यंतेबलिदानंपूर्णाहुतिःप्रणीतानिनयनांतंसंस्थाजपः दंपत्योर्बालकस्यचाभिषेकः । धौतवस्त्रचंदनादिधारणं । आज्यंरूपंरूपमित्यवलोक्यसदक्षिणंदत्वापूर्णाहुतिंहुत्वाकृतं कर्मरुद्रार्पणंकृत्वाआचार्यायवस्त्रयुग्मसहितसोपस्करगोनिष्क्रयदानं ऋत्विग्भ्यःहिरण्यनिष्क्रयदानं स्थापितदेवतानांपू

---

१ प्रजापतिंतिलैःपूर्वोक्तसंख्याभिरितिशां. र. अत्रनिर्वापादिनाचरुरुक्तः ।

२ अयंचशतच्छिद्रगतैश्चतुःकुंभोदकैर्ग्रहकलशोदकेनचकार्यः ।

जनं विसर्जनंआचार्यहस्तेप्रतिपादनंचअग्नेःपूजनविसर्जने यथाशक्तिब्राह्मणभोजनस्यसंकल्पःभूयसीदानस्यच विष्णुस्मरणं तदर्पणंचकुर्यात् । इतिकृष्णचतुर्दशीजननशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथसिनीवालीकुहूशांतिविधिः । प्रयोगपारिजातेगार्ग्यः—सिनीवाल्यांप्रसूतां[1]स्याद्यस्यभार्यापशुस्तथा । गजाश्वामहिषीचैवशक्रस्यापिश्रियंहरेत् । येसंतिसकलाश्चान्येस्वप्रसादोपजीविनः । वर्जयेत्तानशेषांस्तुपशुपक्षिमृगादिकान् । कुहूप्रसूतिरत्यर्थंसर्वदोषकरास्मृता । यस्यप्रसूतिरेतेषांतस्यायुर्धननाशनम् । सर्वगंडसमस्तत्रदोषस्तुप्रबलोभवेत् । शांतिंविनाविशेषेणपरि[2]त्यागोविधीयते । परित्यागात्तत्रशांतिंकुर्या[3]दिमांविचक्षणः । तत्फलंतत्क्षणार्धेनपुनरेवानुपालनम् । नत्यजेत्पंडितोमोहादर्थादज्ञानतोपिवा । तद्योगान्नाशयेत्किंचित्स्वयंवानाशमश्नुते । कल्पोक्तशांतिःकर्तव्याशीघ्रंदोषापनुत्तये । रुद्रःशक्रश्चपितरःपूज्याःस्युर्देवताःक्रमात् । कर्षमात्रसुवर्णेनतदर्धार्धेनवापुनः । अथवाशक्तितःकुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः । प्रतिमांकारयेच्छंभोश्चतुर्भुजसमन्विताम् । त्रिशूलखड्गवरदाभयहस्तांयथाक्रमात् । श्वेतवर्णांश्वेतपुष्पांश्वेतांबरवृषस्थिताम् । त्र्यंबकेनमंत्रेणपूजांकुर्याद्यथाविधि । इंद्रश्चतुर्भुजोवज्रांकुशचापैःससायकः । रक्तवर्णोगजारूढोयतइंद्रेतिमंत्रतः । पितरःकृष्णवर्णाश्चचतुर्हस्ताविमानगाः । [4]यष्ट्यक्षसूत्रकमंडल्वभयस्यैवधारिणः । येचेहेति[5]चमंत्रेणपूजाकुर्यादनंतरम् ।

---

[1] स्याद्दासीभार्या । [2] त्यागादितिल्यब्लोपेपंचमी परित्यागंकृत्वेत्यर्थः । [3] कुर्याद्धीमान्विचक्षणः । [4] गदाक्षसूत्र । [5] येसत्याइतिमदनरत्नपाठे येसत्यासोहविरदइतिमंत्रः ।

आग्नेयींदिशमारभ्यकुंभान्कोणेषुविन्यसेत् । तन्मध्येस्थापयेत्कुंभंशतच्छिद्रसमन्वितम् । तेष्वेवपंचगव्यादींस्तत्तन्मंत्रैश्चनिक्षिपेत् । कल्पोक्तशांतिःकर्तव्याकुर्याच्छीघ्रंस्वशक्तितः । गोदानंवस्त्रदानंचसुवर्णंचोर्वरांशुभाम् । दशदानानिचोक्तानिक्षीरमाज्यंगुडस्तथा । आज्यावेक्षणमेतानितत्तन्मंत्रैश्चकारयेत् । समिदाज्यचरोर्होमस्तिलमाषैश्चसर्षपैः[1] । अश्वत्थप्लक्षपालाशसमिद्भिःखादिरैःशुभैः । अष्टोत्तरशतंमुख्यंप्रत्येकंजुहुयाद्द्विजः । त्र्यैयंबकेनमंत्रेणतिलान्व्याहृतिभिःपुनः । चतुर्भिःकलशैर्युक्तंबृहत्कुंभसमन्वितम् । शांतिवत्सकलंकार्यमभिषेकंचकारयेत् । पितृमातृशिशूनांचअभिषिंचेत्तुवारुणैः । शंकरस्याभिषेकंचकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । अन्येषांचैवसर्वेषांब्राह्मणानांचतर्पणम् । यथाशक्त्यनुसारेणद्विजवाचन[2]पूर्वकमिति ॥

अथप्रयोगः । कर्ताऽस्यबालकस्यसिनीवालीजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसिनीवालीजननशांतिंकरिष्ये इतिसंकल्प्यगणेशपूजनाद्याचार्यर्त्विग्वरणांतंकुर्यात् । कुहूजननेकुहूजननसूचितेत्यूहः । कुहूजननेगोमुखप्रसवः । चतुर्दशीविद्धामावास्यासिनीवाली । प्रतिपद्विद्धाकुहूः । वेधद्वयरहितोदर्शः । ततआचार्यःसर्षपविकिरणादिप्रार्थनांतंकृत्वोक्तप्रतिमाग्न्युत्तारणंकृत्वा स्थंडिलपूर्वभागेविदिक्षुआग्नेयीमारभ्यमहीद्यौरित्यादिमंत्रैःपदार्थानुसमयेनचतुरःकुंभानासाद्य मध्येशतच्छिद्रंसंस्थाप्यचतुर्षुजलपूरणगंधक्षेपांते तत्सवितुरित्यादिभिःपंचगव्यानि स्योनापृथिवीतिपंचमृदः सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि रुवतीतिपंचत्वचः ओषधयःसंवदंतइतिपंचधान्यानि हिरण्यरूपइतिहिरण्यंप्रक्षिप्य पंचस्वपि

---

[1] तिलमाषमिलितसर्षपाद्रव्यं । [2] द्विजवाचनं पुण्याहवाचनं । कर्मसंपूर्णतावाचनमित्येके ।

पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रनिधानांतेमध्यमेशतच्छिद्रेयथाशक्तिनिर्मितामुक्तलक्षणांरुद्रप्रतिमानिधाय त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रावाहनेवि० ॐ त्र्यंबकंयजा० इतिमंत्रेणरुद्रंश्वेतगंधपुष्पादिभिःसंपूज्य तद्दक्षिणतोयतइंद्रेतिभर्गइंद्रोबृहती इंद्रावा० ॐ यतइंद्र० इतिइंद्रंसंपूज्य येचेहेतिशंखःपितरस्त्रिष्टुप् पित्रावा० ॐ येचेहपितरो० इत्युत्तरतःपितृन्संपूज्यचतुर्षुकुंभेषुवरुणंसंपूज्य आनो[२]भद्राइतिपठेदृग्वेदी यजुर्वेदीनमोवाचइति । गवामंगेष्वितिगांदद्यात् । शरण्यंसर्वलोकानांलज्जायारक्षणंपरम् । सुवेषधारिवस्त्रत्वमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिवस्त्रम् । हिरण्यगर्भगर्भस्थमितिसुवर्णम् । सर्वभूताश्रयाभूमिर्वराहेणसमुद्धृता । अनंतसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमेइतिउर्वरां । ततोदशदानानि गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यगुडानिच । रौप्यंलवणमित्याहुर्दशदानानिपंडिताः । गांभुवंचोक्तमंत्राभ्यांपुनर्दत्त्वातिलान्दद्यात् । महर्षेर्गोत्रसंभूताः कश्यपस्यतिलाःस्मृताः । तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहत्विति । उक्तमंत्रेणपुनर्हिरण्यंदत्वाज्यंदद्यात् । कामधेनुषुसंभूतंसर्वक्रतुषुसंस्थितम् । देवानामाज्यमाहारमतःशांतिंप्रयच्छमे । उक्तमंत्रेणवासःपुनर्दत्वाधान्यंदद्यात् । सर्वदेवमयं धान्यंसर्वोत्पत्तिकरंमहत् । प्राणिनांजीवनोपायमतःशांतिंप्रयच्छमेइति । यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरश्चजनार्दनः । सामवेदस्तुवेदानांमहादेवस्तुयोगिनाम् । प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा । तथारसानांप्रव[३]रःसदैवेक्षुरसोमतः । ममत

---

[१] मयूखमतेस्थंडिलात्पूर्वतः पीठादौरुद्रेंद्रपितृन्संपूज्यतत्प्राच्यामुदीच्यामैशान्यांवाकुंभपंचकस्थापनंशतच्छिद्रेचनपूर्णपात्रनिधानादि युक्तंचैतत् । [२] शांतिरत्नेआनोभद्रा० भद्राअग्नेः० सहस्रशीर्षा० कद्रुद्रायेत्यादिस्वस्वशाखोक्तशांतीःपठेदित्युक्तम् । [३] प्रचुरःसदैव ।

स्मातपरांशांतिंददस्वगुडसर्वदेतिगुडम् । प्रीतिर्यतःपितॄणांचविष्णुशंकरयोःसदा । शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतःशांतिंप्रयच्छमे इतिरौप्यम् । यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना । शंभोःप्रीतिकरंनित्यमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिलवणम् । इतिदशदानानि । ततःक्षीरंदद्यात् । क्षीरजातास्तथाशंखाःक्षीरादमृतसंभवः । क्षीरात्क्षीरोदवत्कीर्तिःक्षीरेप्राणस्यसंभवः । तस्मात्क्षीरप्रदानेनअतःशांतिंप्रयच्छमेइति । आज्यगुडावुक्तमंत्राभ्यांपुनर्दत्वाज्यपूर्णकांस्यपात्रेरूपंरूपमितिसहकुटुंबःप्रतिरूपंवीक्ष्यदद्यात् । आज्यंतेजःसमुद्दिष्टमाज्यंपापहरंस्मृतम् । आज्यंसुराणामाहारआज्येदेवाःप्रतिष्ठिताइति । भुवोमानं गोचर्म तिलानांद्रोणः सुवर्णरजतयोःसुवर्णतदर्धतदर्धान्यतरत् आज्यस्यपलानिचत्वारिंशत् वाससस्त्रितयम् धान्यस्यपंचद्रोणाः एवंगुडलवणयोः सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडानिवर्तनम् दशतान्येवगोचर्म । अत्रगवादीनांदक्षिणात्वात्सदक्षिणमनड्वाहमितिवद्वचनाभावाद्यज्ञियदक्षिणात्मकगोधान्यादेरिवनदक्षिणांतरापेक्षा । नचैवंदक्षिणादानकालेदानापत्तिः । अग्निगतदीक्षणीयादिगोचरन्यायेनप्रत्यक्षपाठबलीयस्त्वात् । अस्मिन्नप्यवसरेक्रियमाणदानेनर्त्विगानतिरूपप्रयोजनसंभवाच्च । आकरेदशदानोत्तरमुक्तक्षीरादिदानस्यहोमोत्तरकर्तव्यतोक्तिस्तुकिंमूलेतिनविद्मः ॥ अथाचार्योऽग्निंप्रतिष्ठाप्यग्रहानावाह्यसंपूज्यान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानम् ग्रहानर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिर्विवक्षितसंख्याभिः । त्र्यंबकं अश्वत्थप्लक्षपालाशखदिरसमिदाहुतिभिःप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याभिराज्याहुतिभिश्चर्वाहुतिभिःसंमिश्रसर्षपतिल

---

४ एतानिदक्षिणात्वेनात्रदेयानि अथक्रमेणपाठक्रमस्यबाधात् अतएवांतेदक्षिणानुक्तिः । शां. र. ।

माषाहुतिभिश्चप्रत्येकंतावतीभिः । इंद्रंपितृंश्चप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिरष्टसंख्याभिर्वोक्तद्रव्याहुतिभिः २ त्र्यंबकमितिमंत्रेणतिलाहुतिभिः । प्रजापतिंतिलैः २८ वा ८ शषेणेत्यादियथान्वाधानं त्यागेकृतेप्रायश्चित्तहोमांतेबलिदानं [1]धामंतइतिपूर्णाहुतिश्च । ततोग्रहकुंभसहितचतुःकुंभजऽयुतशतच्छिद्रेणमातृपितृशिशूनामभिषेकस्तत्त्वायामीतित्रिभिः । एषांशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॐ तत्त्वायामि० ऋचः ३ । ततोवि[2]भूतिधारणांतेषोडशोपचारैरुद्रस्येतरेषांपंचोपचारैः पूजनम् विसृज्यताःप्रतिमाआचार्यहस्तेप्रतिपाद्याऽग्निंसंपूज्यविसृज्ययथाशक्तिद्विजानुज्ञयाब्राह्मणानन्यांश्चांधपंग्वादीन्भोजयेदिति इतिसिनीवालीकुहूशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथदर्शशांतिः । नारदः—अथातोदर्शजातानांमातापित्रोर्दरिद्रता । तद्दोषपरिहारार्थंशांतिंव[3]क्ष्यामितेसदा । पुण्याहंवाचयित्वादौक्रतुसंकल्पपूर्वकम् । कुंडंवामंडलंकुर्या[4]त्तद्देशेस्थापयेद्घटं । [5]मंडलंसर्वतोभद्रं । तत्कुंभेनिक्षिपेद्द्रव्यंदधिक्षीरघृतादिकम् । आदिशब्दाद्गोमूत्रगोमये । न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थाःसचूतानिंबकास्तथा । एतेषांवृक्षमूलानित्वगादीन्पल्लवांस्तथा । [6]पंचरत्नानिनिक्षिप्यवस्त्रयुग्मेनवेष्टयेत् । सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः । आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः । आपोहिष्ठातृचेनाथकयानश्चित्रइत्यृचा । यत्किंचेदमृचाचैवसमुद्रज्येष्ठाइत्यृचा । अभिमंत्र्योदकंपश्चादग्नेः

---

१ मूर्धानमिति । २ शां. र. तु गवादिदानान्यत्रैवकर्तव्यानीत्युक्तम् । ३ वक्ष्यामिनारदः । ४ तद्देशेतत्समीपे । ५ मंडलंस्थंडिलंइति शांतिम० । ६ एवंरत्नानि ।

पूर्वप्रदेशके । उदकमभिमंत्र्यपश्चाद्दर्शदेवतांस्थापयेदित्याशयः । मंडलंकुर्यादितियदुक्तंतदाह—हारिद्रंरक्तकंचैवकृष्णंश्वेतंचनीलकम् । एतेषांतंडुलैश्चैवसर्वतोभद्रमुद्धरेत् । दर्शस्यदेवतायाश्चसोमसूर्यस्वरूपकाम् । प्रतिमांस्वर्ण[1]जांनित्यंराजतींताम्रजांतथा । दर्शदेवतापितरस्तद्रूपांप्रतिमांस्थापयेदित्यभेदेनान्वयः । कुह्वाअपितत्त्वात्तत्रापीदम् । सर्वतोभद्रमध्येचस्थापयेद्दर्शदेवताम् । ग्रहवर्णवस्त्रयुग्मंतद्वर्णगंधपुष्पकम् । आप्यायस्वेतिमंत्रेणसवितापश्चातात्तथैवच । उपचारैःसमाराध्यततोहोमंसमाचरेत् । कृत्वावह्निंप्रतिष्ठाप्यक्रतुसंकल्पमीदृशं । आयुरारोग्यसिध्यर्थंसर्वानिष्टप्रशांतये । पुत्रस्यदर्शजननदोषनिर्हरणायच । मातापित्रोःकुमारस्य[2]सर्वारिष्टप्रशांतये । तेषामायुःश्रियेचैवशांतिहोमंकरोम्यहम् । समिधश्चचरुद्रव्यंक्रमेणजुहुयाद्गृही । हुनेत्सवितृमंत्रेणसोमोधेनुंचमंत्रतः । एतैर्मंत्रैश्चप्रत्येकंहुनेदष्टोत्तरंशतम् । एतैरितिबहुवचनंप्रणवस्वाहाकारसाहित्याभिप्रायेणानुवादः अतएवाह—दर्शस्यदेवता[3]होमस्त्वष्टाविंशतिसंख्यया । होममेवंतुकृत्वाथविद्ध्याच्चाभिषेचनं । श्रीसूक्तमायुष्यसूक्तंसमुद्रज्येष्ठाइत्यृचा । एतैर्मंत्रैरभिषेकंमातापित्रोःशिशोस्तथा । ततःस्विष्टकृदादिस्याद्धोमशेषंसमापयेत् । हिरण्यंरजतंचैवकृष्णाधेनुःसदक्षिणा । अन्येभ्योपियथाशक्तिदातव्यादक्षिणातथा । ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्रकारयेत्स्वस्तिवाचनम् । इतिनारदोक्तादर्शशांतिः ॥ ॥ अथप्रयोगः । कर्ताकृतनित्यक्रियःपवित्रपाणिःसपत्नीकःस्वासनेउपविश्यदेशकालसंकीर्तनांते अस्यबालस्यदर्शजननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्य

---

१ दर्शसोमसूर्यक्रमापेक्षयायंधातुक्रमः । २ सर्वानिष्ट । ३ दर्शदेवतामंत्रस्तल्लिंगको ग्राह्यःवेदमंत्रानुपदेशान्नाममंत्रोवा ।

थं[1]दर्शजननशांतिंकरिष्ये । अखंडाऽमाजननेइत्थंसंकल्पः । अमायाःखंडतिथित्वेउत्तरविद्धामाजननेकुहूजननशांतिंकरिष्येइतिसंकल्पेविशेषः । ततोगणेशपूजनपुण्याहवाचनाचार्यर्त्विग्वरणाचार्यादिपूजनानिकुर्यात् । ततआचार्योयदत्रसंस्थितमित्यादिस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमितिप्रार्थनांतंकृत्वा कुंडात्स्थंडिलाद्वापूर्वेसर्वतोभद्रपर्यासंस्थलमतिक्रम्य महीद्यौरित्यादिनाकुंभस्थापनादिजलसेच[2]नांतंकृत्वा तत्रआप्यायस्वेत्यादिमंत्रैःक्षीरदधिघृतानिप्रक्षिप्य गायत्र्यागंधद्वारामितिचगोमूत्रगोमयेप्रक्षिप्य न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थचूतनिंबमूलानांत्वचोरुधतिभीमइतितत्पल्लवानश्वेत्थेवइति पंचरत्नानिसहिरत्नानीतिनिक्षिप्य युवासुवासाइतिवस्त्रयुग्मेनावेष्ट्य सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः।आयांतुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः इतिसमुद्रादिदेवतासहितंवरुणमावाह्यसंपूज्य कलशोदकंआपोहिष्ठेतितृचेनकयानश्चित्रइत्यृचायत्किंचेदमितिसमुद्रज्येष्ठा इतिचऋग्भ्यांचाभिमंत्र्यतत्पश्चिमेअग्नेःपूर्वभागेकृष्णनीलरक्तादिवर्णतंडुलैर्यथोचितंपूरितंश्रृंखलावल्लीभद्रादिगर्भंसर्वतोभद्रंसंवत्सरकृत्यांतर्गतानंतव्रतोद्यापनोक्तरीत्याकृत्वा तत्रब्रह्मादिप्रसिद्धदेवतापूजांते मध्येसुवर्णप्रतिमायांपितृनावाहयेत् ।येचेहेतिशंखःपितरस्त्रिष्टुप् पित्रावाहने० ॐयेचेहपितरो० १ । दक्षिणतःरजतप्रतिमायांसोमम् उत्तरतःताम्रप्रतिमायांसूर्यंचावाहयेत् । आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री सोमावा० ॐ आप्यायस्व० १ । सवितापश्चातादितिधानाकोलुशःसवितात्रिष्टुप् सूर्यावाह० ॐ सवितापश्चातात्० ऋक् १ । ततोदेवतात्रयंसंपूज्याऽग्निंप्रतिष्ठाप्य सर्वतोभद्रस्यैशा

---

१ सग्रहमखांनारदोक्तांदर्श. । २ जलपूरणांतं ।

न्यांग्रहप्रतिष्ठापनादिवरुणपूजांतंकृत्वान्वादध्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंते आदित्यादिग्रहान्चिकीर्षितसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः पितृनष्टाविंशतिसंख्याकाभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः सोमंसूर्यंचप्रत्येकंअष्टोत्तरशतसंख्याकाभिःतदाहुतिभिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि ततःआज्येनसहचरोःपर्यग्निकरणादिकालेकुर्यात् । आज्यभागांतेआयुरारोग्यमितिमंत्राभ्यांयजमानेनहोमसंकल्पपूर्वकंत्यागेकृतेसर्त्विगाचार्यःप्रधानहोमंकुर्यात् । तदंतेस्विष्टकृतःपूर्वं [1]हिरण्यवर्णामितिआ[2]युष्यंवर्चस्यमितिसूक्ताभ्यांसमु[3]द्रज्येष्ठाइत्यृचाचसबालौपितरावभिषिच्यस्विष्टकृदादिकुर्यात् । ततोबलिदानपूर्णाहुतीकृत्वाहोमशेषंसमापयेत् । ततोयजमानःहिरण्यरजतेसदक्षिणांकृष्णांधेनुंचआचार्यायदत्वाऋत्विग्भ्यश्चयथाशक्तिदक्षिणांदत्वास्थापितदेवतोपस्थापनक्रमेणउत्तरपूजाविसर्जनेकृत्वाप्रतिमाआचार्यायप्रतिपाद्यअग्निंसंपूज्यगच्छगच्छेतिविसृज्यशांतीःपाठयित्वाब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्योदक्षिणादानांतेस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिवाचयेत् । तेचस्वस्तीतिवदेयुः ॥ ॥ इतिदर्शशांतिः । इतिसंस्कारकौस्तुभेदर्शतिथिशांतिप्रयोगः ॥ इतितिथिशांतयः ॥ ॥ ॥

अथनक्षत्रशांतयः ॥ अथमूलशांतिविधिः । अथातःसंप्रवक्ष्यामिमूलजातहितायच । मातापित्रोर्धनस्यापिकुलशांतिहितायच । त्यागोवामूलजातस्यस्यादष्टाब्दात्प्रदर्शनम् । अभुक्तमूलजातानांपरित्यागोविधीयते । ( ज्येष्ठांत्यघटिकाचैका

---

[1] हिरण्यवर्णामितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यकर्दमानंदचिक्लीतेंदिरासताःश्रीरनुष्टुप् चतुर्थीबृहतीपंचमीषष्ठयौत्रिष्टुभौअंत्याप्रस्तारपंक्तिः । [2]आयुष्यमित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यसनकादयोहिरण्यमनुष्टुप्पंचस्यष्टमीनवमीचत्रिष्टुभःसदामीशक्कर्यंत्याजगती । समुद्रज्येष्ठाइत्यस्य० ।

मूलादौघटिकाद्वयम् । अभुक्तमूलमित्याहुर्जातंपुत्रंविसर्जयेत् ) । अदर्शनाद्वापिपितुःसतुतिष्ठेत्समाष्टकम् । एवंचदुहितुर्ज्ञेयंमूलजातफलंबुधैः । अन्यत्रतु—नबालाहंतिमूलर्क्षेपितरंमातरंतथा । मूलजाश्वशुरंहंतिव्यालजाचतदंगनाम् । माहेंद्रजाग्रजंहंतिदेवरंतुद्विदैवजा । शांतिर्वापुष्कलास्याच्चेत्तर्हिदोषोनविद्यतेइति । व्यालआश्लेषा । माहेंद्रंज्येष्ठा । द्विदैवंविशाखा । मुख्यकालंप्रवक्ष्यामिशांतिहोमस्ययत्नतः । जातस्यद्वादशाहेतुजन्मर्क्षेवाशुभेदिने । [१]समाष्टकेद्वादशाहेकुर्याद्वाशांतिमादरात् । उत्तरार्धेसमाष्टकेद्वादशाब्देइतिमदनरत्नपाठः । सुसमेपुण्यदेशेतुमंडपंकारयेद्बुधः । पुण्य[२]र्ग्भिर्मंत्रितैस्तोयैःप्रोक्षितायांक्षितौततः । तत्रोदकुंभंसुश्लक्ष्णंरक्तंव्रणविवर्जितम् । [३]अकृष्णमूलंनिर्णिक्तंपूरयेन्निर्मलांभसा । वस्त्रावगुंठितंकुर्यात्पूरयेत्तीर्थवारिणा । [४]कूर्चहेमसमायुक्तंचूतपल्लवशोभितम् । स्वस्तिकोपरिविन्यस्यसक्षीरिद्रुमपल्लवैः । द्रोणव्रीहींश्चनिक्षिप्यईशान्यांतंनिधापयेत् । पंचरत्नानिनिक्षिप्यसर्वौषधिसमन्वितम् । अर्चितंगंधपुष्पाद्यैःश्रीरुद्रंचस्पृशन्जपेत् । षडंगसहितंसम्यक्तंजपेद्रुद्रसंख्यया । बह्वृचोरुद्रसूक्तैर्वाछंदोगोरुद्रसामभिः । एकादशाष्टत्रिद्व्येकसंख्ययाशक्तितोजपेत् । तत्राप्रति[५]रथंसूक्तंशतरुद्रानुवाककम् । रक्षा[६]मंत्रंतथापुण्यंराक्षोघ्नंचस्पृशन्जपेत् । त्र्यंबकंजपेत्सम्यगष्टोत्त

---

[१] समाष्टकेतिअभुक्तमूलोत्पत्तौसमाष्टकादर्शनपक्षेसमाष्टकानंतरं तद्भिन्नमूलोत्पत्तौद्वादशाहेइत्यर्थः । [२] पुण्यर्चआपोहिष्ठादयः । [३] सुवर्तुलंचनिर्णिक्तमितिपाठः । निर्णिक्तंधौतं । [४] कूर्चपंचगव्यंदर्भमुष्टिर्वा । [५] अप्रतिरथमाशुःशिशानइति । शतरुद्रानुवाकस्त्वमग्नेरुद्रइति । [६] रक्षामंत्रोरक्षाणोअग्नइति । राक्षोघ्नंचरक्षोहणमितिपंचविंशर्चं ।

रसहस्रकम्। एकवारंतथाजापीपावमानीःस्पृशन्जपेत्। संस्थाप्यपंचकुंभांश्चद्वयंवातदलाभतः। श्रीरुद्रस्यैककुंभश्चसर्वसूक्तानितत्रतु। तथान्यंचशुभंकुंभंपूर्वोक्तैर्लक्षणैर्युतम्। चतुःप्रस्रवणंकुर्यात्पंच[1]वक्रंतथैवच। वस्त्रावगुंठितंकुर्यात्पूरयेत्तीर्थवारिणा। पंचरत्नसमायुक्तमाम्रपल्लवसंयुतम्। गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमह्रदगोकुलात्। राजद्वारप्रदेशाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत्। कुंभस्यनैर्ऋतेदेशेहोमस्थानंप्रकल्पयेत्। गोमयालेपितेदेशेकुर्यात्स्थंडिलमुत्तमम्। कृत्वाग्नि[2]मुखपर्यंतमुल्लेखादिस्वशाखया। पूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वापूजां[3]समारभेत्। नक्षत्रदेवतारूपंसुवर्णेनप्रयत्नतः। निष्कमानेनचार्धेनपादेनाथस्वशक्तितः। प्रतिमां[4]लक्षणोपेतांकारयित्वाविचक्षणः। यद्वामूल्यंसुवर्णस्यस्थापयित्वाप्रपूजयेत्। सुवर्णंसर्वदैवत्यंसर्वदेवात्मकोऽनलः। सर्वदेवात्मकोविप्रःसर्वदेवमयोहरिः। संस्मरेन्निर्ऋतिंश्यामंसुसुखंनरवाहनं। रक्षोधिपंखड्गहस्तंदिव्याभरण[5]भूषितम्। प्रतिमापूजनार्थायवस्त्रयुग्मंप्रकल्पयेत्। पंकजंकारयेद्भूमौरक्ताभैर्व्रीहितंडुलैः। चतुर्विंशद्दलोपेतंशुक्लैर्वाकर्णिकान्वितम्। तस्योपरिन्यसेत्[6]पात्रंस्वर्णंवारौप्यमृन्मयम्। शुद्धवस्त्रेणसंछाद्यतत्रमूलानिनिक्षिपेत्। मूलानिशतमूलानितदलाभे—विष्णुक्रांतासहदेवीतुलसीतुशतावरी। मूलानीमानिगृह्णीयाच्छतालाभेविशेषतः। स्थापयेत्कर्णिकामध्येवस्त्रगंधाद्यलंकृतम्। कूर्च[7]हेमजलोपेतंकुंकुमौषधिसंयुतम्। कुंभोपरिन्यसेद्विद्वान्मूलनक्षत्रदेवताम्। अधिप्र

---

१ वक्रंतुतद्भवेत्। २ अग्निमुखमग्निस्थापनं। ३ पूजांपूजासंभारंकुर्यात्नत्वत्रपूजा अग्रेवक्ष्यमाणत्वात्। ४ लक्षणेनैकां। ५ ज्योतिर्निबंधेतु—मूलरूपंविधातव्यंश्वेतंकुणपवाहनं। खड्गखेटधरंचोग्रंद्विभुजंचवृकाननमित्युक्तम्। ६ पात्रंकलशं। ७ कूर्चोदर्भस्तंभः।

त्यधिदेवौचदक्षि[1]णोत्तरदेशयोः । अधिदेवंयजेदादौज्येष्ठानक्षत्रदेवताम् । तथाप्रत्यधिदेवंचपूर्वाषाढाधिपंयजेत् । उत्तराषाढऋक्षाद्याअनुराधांतमर्चयेत् । ऐंद्रादीशानपर्यंतंपूजयेत्स्वस्वनामतः । स्वलिंगोक्तैश्चतन्मंत्रैःप्रधानादीन्प्रपूजयेत् । पंचामृतेनसंस्नाप्यआवाह्याथसमर्चयेत् । (आवाह्येतिल्यब[2]लोपेपंचमी) । अथेतिपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वेत्युक्तानंतर्यानुवादः । अतएवाह उपचारैःषोडशभिरिति । आवाहनमारभ्यार्चनविवरणम् । उपचारैःषोडशभिर्यद्वापंचोपचारकैः । रक्तचंदनगंधाद्यैःपुष्पैःकृष्णसितादिभिः । मेषशृंगादिधूपैश्चघृतदीपैस्तथैवच । सुरापोलिकमांसाद्यैर्नैवेद्यैरोदनादिभिः । मत्स्यमांससुरादीनिब्राह्मणानांविवर्जयेत् । सुरास्थानेप्रदातव्यंक्षीरंसैंधवमिश्रितम् । पायसंलवणोपेतंमांसस्थानेप्रकल्पयेत् । उक्तगंधाद्यलाभेतुयथालाभंसमर्पयेत् । पु[3]ष्पांतंतुसमभ्यर्च्यहोमंकुर्याद्यथोदितम् । निर्वापप्रोक्षणादीनिचरोःकुर्याद्यथाविधि । हविर्गृहीत्वाविधिवन्नैर्ऋत्यैवऋचाहुनेत् । मोषुणःपरापरेतियत्तेदेवीतिवापुनः । पायसंघृतसंमिश्रंहुनेदष्टोत्तरंशतम् । विधिवदितिपायसचर्वोरवदानधर्मविधेःप्रतिप्रसवः । अन्यथानर्थक्यात् । समिदाज्यचरून्पश्चाच्छक्तितःसंख्ययाहुनेत् । पश्चात्पायसहोमोत्तरम् । अधिदैवतयोश्चैवंजुहुयात्स्वस्वमंत्रतः । चतुर्थ्यंतैर्नमोंतैश्चस्वाहांतैः[4]स्वस्वमंत्रकैः । नक्षत्रदेवताभ्यश्चपायसेनतुहोमयेत् । कृणुष्वेतिपंचदशर्ग्भिर्जुहुयात्कृसरंततः । गायत्र्याजातवेदसेत्र्यंबकमितिचक्रमात् । सीरायुंजंतितामग्निंवास्तोष्पत्यग्निमेवच । क्षेत्रस्यपतिनागृणानाग्निंदूतंपुरोदधे । श्रीसूक्तेनतथाविद्वान्स

---

[1] दक्षिणोत्तरयोःक्रमात् । [2] ल्यब्लोपेइत्यादिविचारणीयमिदं । [3] पुष्पांजल्यंतमित्यर्थः । [4] स्वस्वमंत्रोनाममंत्रः ।

मिदाज्यचरून्क्रमात् । अष्टोत्तरशतैर्वाथअष्टाविंशतिभिःक्रमात् । अष्टाष्टसंख्ययावापिजुहुयाच्छक्तितोबुधः । त्वंनःसोमेनपायसंजुहुयात्तुत्रयोदश । चतुर्गृहीतमाज्यंचयातेरुद्रेतिमंत्रतः । स्रुवेणजुहुयादाज्यंमहाव्याहृतिभिःक्रमात् । हुत्वास्विष्टकृतंपश्चात्प्रायश्चित्ताहुतीर्हुनेत् । आचार्योयजमानोवाअग्नौपूर्णाहुतिंहुनेत् । समुद्रादूर्मिसूक्तेनप्राजापत्यऋचाथवा । पूर्णादर्विंसप्ततेतिमंत्रैःपूर्णाहुतिंहुनेत् । होमशेषंसमाप्याथ[1]वह्निमारोपयेद्बुधः । कुंभाभिमंत्रणंकुर्याद्दक्षिणेनाभिमर्शयेत् । मृत्युप्रशमनार्थायजपेत्त्रैयंबकंशतम् । रुद्रकुंभोक्तमार्गेणरुद्रमंत्रं(कुंभं)स्पृशन्जपेत् । धूपंदीपंचनैवेद्यंकुंभयुग्मंनिवेदयेत् । प्रसादयेत्ततोदेवमभिषेकार्थमादरात् । तस्मिन्कालेग्रहातिथ्यंकर्तव्यंभूतिमिच्छता । पृथक्प्रशस्तंतेनैवनक्षत्रेष्टयासहैववा । अभिषेकविधिंवक्ष्येसर्वाचार्यैरुदीरितम् । भद्रासनोपविष्टस्ययजमानस्यऋत्विजः । दारपुत्रसमेतस्यकुर्युःसर्वैभिषेचनम् । अक्षीभ्यामितिसूक्तेनपावमानीभिरेवच । आपोहिष्ठेतिनवभिं[2]रापइद्वाद्वयेनच । सहस्राक्षतृचेनापिदेवस्यत्वेतिमंत्रकैः । शिवसंकल्पमंत्रेणवक्ष्यमाणैश्चमंत्रकैः । योसौवज्रधरोदेवोमहेंद्रोगजवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषंमातापित्रोर्व्यपोहतु । योसौशक्तिधरोदेवोहुतभुङ्मेषवाहनः । सप्तजिह्वश्चदेवोऽग्निर्मूलदोषंव्यपोहतु । योसौदंडधरोदेवोधर्मोमहिषवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषंव्यपोहतुयमोमम । योसौखड्गधरोदेवोनिर्ऋतीराक्षसाधिपः । प्रशामयतुमूलोत्थंदोषंगंडांतसंभवम् । योसौपाशधरोदेवोवरुणश्चजलेश्वरः । नक्रवाहःप्रचेतानोमूलोत्थाघंव्यपोहतु । योसौदेवोजगत्प्राणोमारुतोमृगवाहनः ।

---

[1] वह्निसमारोपोऽयंग्रहमखविकृतित्वात्स्मार्ताग्निपक्षेज्ञेयः । [2] यतइंद्रद्वयेनच ।

प्रशामयतुमूलोत्थंदोषंवालस्यशांतिदः । योसौनिधिपतिर्देवःखड्गभृद्वाजिवाहनः । मातापित्रोःशिशोश्चैवमूलदोषंव्यपोहतु । योसौपशुपतिर्देवःपिनाकीवृषवाहनः । आश्लेषामूलगंडांतदोषमाशुव्यपोहतु । विघ्नेशःक्षेत्रपोदुर्गालोकपालानवग्रहाः । सर्वदोषप्रशमनंसर्वेकुर्वंतुशांतिदाः । तच्छंयोरभिषेकंतुसर्वदोषोपशांतिदम् । सर्वकामप्रदंदिव्यंमंगलानांचमंगलम् । वस्त्रांतरितकुंभाभ्यांपश्चात्तुस्नापयेद्बुधः । ततःशुक्लांवरधरःशुक्लमाल्यानुलेपनः । यजमानोदक्षिणाभिस्तोषयेदृत्विगादिकान् । धेनुंपयस्विनींदद्यादाचार्यायसवत्सकाम् । निर्ऋतिप्रतिमांवस्त्रंकुंभंहेमचदापयेत् । ग्रहार्थवस्त्रप्रतिमास्तत्तदुक्ताश्चदक्षिणाः । श्रीरुद्रजापिनेदेयःकृष्णोनड्वान्प्रयत्नतः । तत्कुंभवस्त्रप्रतिमास्तस्मैदद्यात्प्रयत्नतः । इतरेभ्योपिविप्रेभ्यःशक्त्यादद्याच्चदक्षिणाम् । उक्तालाभेततोदद्यादाचार्यब्रह्मऋत्विजाम् । तत्तन्मूल्यंप्रदातव्यंशक्त्यावाथप्रदापयेत् । आचार्यायचयद्दत्तंतदर्धंब्रह्मणेभवेत् । सदस्यायब्रह्मणोर्धंमृत्विग्भ्यश्चतदर्धकम् । गृह्णीयादाशिषस्तेभ्यःप्रणम्याथसमापयेत् । दद्यादन्नंपायसादिब्राह्मणान्भोजयेच्छतम् । अलाभेसतिपंचाशद्दशकंतदलाभतः । सर्वशांतेश्चपठनंब्राह्मणैराशिषस्तथा । गृहीक्षमापयेद्विद्वान्निर्ऋतिःप्रीयतामिति । विधानेचरितेऽस्मिंस्तुततःशांतिर्भवेद्ध्रुवम् । गंडांतेप्येवमेवस्यात्पुष्यार्धेतद्वदेवंतु[1] । इत्युक्तंमनुनासम्यङ्मूलजातहितायच । मातापित्रोर्धनस्यापिवंधुदोषापनुत्तये[2] ॥ ॥ अथैतदनुसारीप्रयोगः । अभुक्तमूलोत्पत्तौवर्षाष्टकसहितद्वादशाहांतेवर्षाष्टकांतेद्वादशाब्दांतेवातदन्यमूलोत्पत्तौतुद्वादशाहे अव्यवहितागामिमूल

---

[1] समाष्टकेद्वादशाहेकुर्याद्वाशांतिमादरात्इत्यधिकंक्वचित् । [2] शोकापनुत्तये ।

नक्षत्रयुतेशुभदिनेवागोप्रसवशांतिमुक्तविधिनाकृत्वा देशकालकीर्तनांतेस्यकुमारस्य[१]मूलप्रथमचरणजन्मसूचितसकलारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशौनकोक्तप्रकारांसग्रहमखांमूलजननशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणपतिपूजादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् । द्वितीयादिचरणोत्पत्तौसंकल्पेऊहोवोद्धव्यः । ब्रह्मसदस्यौकृताकृतौ । ऋत्विजश्चाष्टौद्वादशषोडशवा । ब्राह्मणाःश्रोत्रियाश्चाष्टौद्वादशत्वथषोडशेतिकश्यपोक्तेः । अत्यंताशक्तौचत्वारोपि यथाशक्तिसवस्त्रालंकारमधुपर्केणान्यथावातेषांपूजनम् । ततआचार्यःपवित्रपाणिःप्राणानायम्ययथाचारंसंकल्प्य सुसमीकृतपुण्यदेशेयदत्रसंस्थितमितिसर्षपान्विकीर्य एतोन्विंद्रंस्तवामेतितिसृभिर्ऋग्भिर्जलमभिमंत्र्यतेनापोहिष्ठेतितृचेनतांभूमिंप्रोक्ष्य मंडपपक्षेमंडपदेवतापूजनं माघकृत्योक्तविधिनाकुर्यात् । ततःप्रतिमाग्न्युत्तारणंकृत्वामंडपस्यतदभावेप्रोक्षितभूमेर्वा ऐशान्यांस्वस्तिकंविरच्य मही द्यौरितिभुवंस्पृष्ट्वाओषधयःसमितिद्रोणपरिमितव्रीहीन्प्रक्षिपेत् यथोक्तलक्षणंकलशंप्रक्षालितं (आकलशेष्वितिसंस्थाप्यं) युवासुवासाइतिवस्त्रावगुंठितंकृत्वा तीर्थवारिणेमंमेगंगेइत्यापूर्य शरासःकुशरासइतिदर्भकूर्चंहिरण्यरूपइतिहेमसमायुक्तं विधाय चूतपल्लवैःसंयुक्तंस्वस्तिकेव्रीहिषुविन्यस्यसपल्लवाःक्षीरद्रुमशाखाअश्वत्थेवइतिनिक्षिप्य सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि याओषधीरितिसर्वौषधीः गंधद्वारामितिगंधं याःफलिनीरितिपुष्पफले ओषधयइतियवान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः स्योनेतिमृदः आपोहिष्ठेतितृचेनपंचगव्यंचनिःक्षिप्य पूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रंनिधाय तस्मात्कलशाच्चतुर्दिक्षुमहीद्यौरित्या

---

[१] कुमार्याःकुमार्यावाद्वादशाहकरणपक्षे शिशोःबालस्येतिवोहः ।

दिमंत्रावृत्त्याचतुर्णांकलशानांपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वा मध्यकलशस्थितसाष्टदलवाससिहेमप्रतिमायां[1] यातेरुद्रेतिमंत्रस्य कश्यपोरुद्रःस्वराडनुष्टुप्याते० इतिरुद्रमावाह्यमंत्रेणतेनैवसंपूज्यचतुर्षुवरुणमावाह्यपंचोपचारैःसंपूज्य यजुर्वेदीयजमानश्चेत्कंचिदृत्विजंमध्यकुंभेषडंगैकादशिनीजपेयोजयेत् सचरुद्रकलशंस्पृशन्जपेत् । बह्वृचोयजमानश्चेद्रुद्रसूक्तजपेकंचिद्योजयेत् । छंदोगश्चेद्रुद्रसामजपेसामगांस्त्रीन्योजयेत् । तेपिकलशंस्पृशंतोजपेयुः । सूक्तसामजपयोरेकादशाष्टत्रिद्व्येकसंख्या[2]नांविकल्पः । कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्र्यंत्यानुष्टुप् । इमारुद्रायेत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोनवजगत्योंत्येत्रिष्टुभौ । आतेपितरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् । सर्वेषांजपेविनियोगः । ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसे० ऋचः ९ । ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने० ऋचः ११ ॐ आतेपितर्मरुतांसुम्नमेतु० ऋचः १५ । सूक्तांतरसत्वेपिनतज्जपःबहुवचनस्यत्रिषूपपत्तेः । आवोराजानमित्यादित्रयाणांसाम्नांवामदेवोरुद्रआद्यस्यत्रिष्टुप्द्वयोर्गायत्रीजपेवि० । ॐ आवोराजानमध्वरस्यरुद्रं० ऋचः ३ चतुर्णामन्येषामपितत्रैवजपस्तत्रत्यजपसंदंशपाठात् । आशुःशिशानइतित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्यैंद्रोप्रतिरथइंद्रःचतुर्थ्यांबृहस्पतिर्द्वादश्याअप्वांत्यायामरुतस्त्रिष्टुबंत्यानुष्टुप् । त्वमग्नेरुद्रइत्यनुवाकस्यहव्यवाड

---

[1] त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् अनेनावाहनं शां० र०। [2] संख्यातारतम्यंशक्तितोज्ञेयं । केचित्तुरुद्रःसर्वसाधारणोबह्वृचछंदोगयोस्तुसूक्तसाम्नोरुद्रेणसहविकल्पमाहुः । रुद्रस्यषण्न्यासारुद्रपद्धतावालोचनीयाः । ऋष्यादितु—नमकानुवाकानामग्नीरुद्रोमहाविराट् । चमकानुवाकानामग्निःकांडऋषिःआद्याग्नावैष्णवीगायत्री शिष्टानांवाजादयोन्नादिविशेषादेवताः यजुश्छंदःजपेवि० ।

ह्यात्मारुद्रआद्याजगतीशिष्टानियजूंषि । रक्षाणोअग्नइत्यस्यवामदेवोऽग्निस्त्रिष्टुप् । रक्षोहणमितिपंचविंशर्चस्यसूक्तस्यआगिरसःपायुरग्निस्त्रिष्टुप् चतस्रोंत्याअनुष्टुभः सर्वेषांजपेविनियोगः । अत्राऽपिशक्त्यापूर्वोक्तसंख्यास्वीकारः । ततस्त्र्यंबकमंत्रस्याष्टोत्तरसहस्रंजपंतत्रैवकश्चित्कुर्यात् पावमानीनांतिसृणामृचांच ।[1]आसांमधुच्छंदाःपवमानःसोमोगायत्रीजपे० ॐ स्वादिष्ठया० ऋ० ३ अन्येषुकलशेषुशांति[2]जपमृत्विजःकुर्युः । यद्वाकुंभपंचकस्थानेकुंभद्वयंसंस्थाप्यतत्रैकादिमरुद्रकुंभेरुद्रादिसर्वजपः । अन्यकुंभेतदुत्तरस्थेवरुणमावाह्यशांतिजपः । यद्वाचतुःप्रस्रवणएकवक्रकुंभःपंचकुंभस्थानेस्थापनीयः तत्रमुखेमध्यमकुंभकार्यंचतुर्षुप्रस्रवणेषुकुंभचतुष्टयकार्यंकर्तव्यमितिव्यवस्था । ततःस्थापितकुंभोत्तरतोरक्तवर्णैःशुक्लैर्वाव्रीहितंडुलैश्चतुर्विंशद्दलोपेतंसकर्णिकंपंकजंविधाय तत्कर्णिकायांमहीद्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वा ओषधयःसमितिव्रीहीन्निक्षिप्य सौवर्णंराजतंमृन्मयंवाकुंभंपूर्वोक्तमंत्रेणशुद्धवस्त्रवेष्टितंकृत्वातत्रेमंमेगंगेइतितीर्थजलमानीयबर्हिःशिखादीनिशतमूलानितदभावेविष्णुक्रांतासहदेवीतुलसीशतावरीर्निक्षिप्योक्तमंत्रैर्यवादिप्रक्षेपंकृत्वागंधाद्यलंकृतंकूर्चहेमोपेतंकुंकुमसर्वौषधिसंयुतंविधाय आकलशेष्वितिकर्णिकायांस्थापयेत् । ततःपूर्ववत् याओषधीरित्यादिमंत्रैर्यवादिप्रक्षेपंकृत्वापूर्णादर्वीतिनिहितपूर्णपात्रेसाष्टदलवस्त्रंनिधाय निष्कतदर्धतदर्धान्यतरमानहेमनिर्मितांनिर्ऋतिप्रतिमांप्रतिमांतराणिचपंचामृतेनप्रक्षाल्यतत्रवस्त्रेनिर्ऋतिप्रतिमांतद्दक्षिणतउत्तरतश्चेंद्रप्रतिमामपांप्रतिमांपूर्वादिदलेषुविश्वेदेवप्रतिमास्तदभावेफलानितं

---

१ स्वादिष्ठयेतितिसृणां । २ पूर्वादिक्रमेण आनोभद्राः. स्वस्तिनोमिमीतां. शंनइंद्राग्नी. यतइंद्रेतिचत्वारिशांतिसूक्तानि ।

डुलपुंजान्वानिधाय प्राच्यादिस्थानेषुलोकपालप्रतिमाःफलादिवानिधायप्रतिमासुदेवताआवाहयेत् । तद्यथा । मोषुणो घौरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्यावा० ॐमोषुणःइतिनिर्ऋतिमावाह्य इंद्रंवोमधुच्छंदाइंद्रोगायत्री इंद्रावा० । ॐइंद्रं वो० । अप्सुमेमेधातिथिरापोनुष्टुप् अवावाह[1]० ॐ अप्सुमेसो० विश्वान्देवानावाहयामि विष्णुं० वसून्० वरुणं० अजैकपदं० अहिर्बुध्न्यं० पूषणं० अश्विनौ० यमं० अग्निं० प्रजापतिं० सोमं० रुद्रं० अदितिं० बृहस्पतिं० सर्पान्०पितृन्० भगं० अर्यमणं० सवितारं० त्वष्टारं० वायुं० इंद्राग्नी० मित्रं० इत्यावाहनांतेग्रहमखरीत्यालोकपालानावाह्य नैर्ऋतप्रदेशेस्थंडिलाद्यग्निस्थापनांतंकृत्वा स्थापितकुंभैशाने[2]देशेग्रहानावाह्यसंपूज्य तदैशान्यांकलशप्रार्थनांतंकृत्वाऽन्वाधानम् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेआदित्यादिनवग्रहान् प्रत्येकंअर्कादिजातीयसमिच्चर्वाज्याहुतिभिरेतत्संख्याभिरधिदेवताप्रत्यधिदेवताविनायकादिक्षेत्रपालांताःलोकपालांश्चपूर्वोक्ताहुतिभिरेतत्संख्याभिः निर्ऋतिंप्रत्येकंअष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतसंमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः । समिदाद्याहुतीनांशक्तितोन्यूनसंख्याकरणपक्षेतथैवनिर्देशः । इंद्रमपश्चप्रतिद्रव्यमष्टाविंशतिसंख्याभिरुक्ताहुतिभिः विश्वेदेवाद्याश्चतुर्विंशतिदेवताअष्टाष्टसंख्याभिःपायसाहुतिभिः रक्षोहणमग्निंविंशत्यधिकशतसंख्याभिःकृसराहु० । सवितारंदुर्गांत्र्यंबकंकवीन्दुर्गांवास्तोष्पतिमग्निंक्षेत्राधिपतिंमित्रावरुणावग्निंचएतादेवताःप्रत्येकमष्टाष्टसंख्याभिःकृसराहुतिभिः । श्रियंप्रतिद्रव्यंविंशत्यधिकशतसंख्याभिःसमिदाज्यचर्वाहुतिभिः । सोमंत्रयोदशवारंपा

---

[1] इत्यपश्चावाह्यपूर्वादिचतुर्विंशतिदलेषुनाममंत्रैरुत्तराषाढाद्यनूराधांतानिनक्षत्राणितद्देवतावाआवाहयेत् । [2] उत्तरतोवा ।

यसाहुतिभिः । रुद्रंस्वराजंचतुर्गृहीताज्येन अग्निंपृथिवींमहांतंवायुमंतरिक्षंमहांतंआदित्यंदिवंमहांतं चंद्रमसंनक्षत्राणि दिशोमहांतंचाज्येन शेषेणेत्यादि । पात्रासादनेपायसचरुकृसरार्थस्थालीनांस्रुवाणामाज्यस्थालीनांशूर्पाणांचासादनादि प्रणीतास्थापनांतंकृत्वा निर्ऋत्यादीनांवक्ष्यमाणतत्तन्मंत्रैःपूजांकुर्यात् । निर्ऋतयेवस्त्रयुग्मंरक्तचंदनंकृष्णसितादिपुष्पाणिमेषशृंगधूपआज्यदीपःपोलिकौदनसुरामांसात्मकंपुरुषाहारपर्याप्तंनैवेद्यं । तत्रब्राह्मणेनसुरास्थानेसैंधवमिश्रंक्षीरंमांसस्थानेलवणमिश्रंपायसंदेयम् । अन्यैःसंभवेमुख्यमेवोभयम् । पुष्पांजल्यंतेपूजनेकृतेनिर्ऋतिमिंद्रमपश्चोद्दिश्यशूर्पयोःपायसार्थंचर्वर्थंचद्वादशमुष्टीन्तूष्णींनिरुप्य पायसार्थेनिरुप्तेषण्णवतिमुष्टीन्तूष्णींनिरुप्य पुनःशूर्पांतरेकृसरार्थंचतुश्चत्वारिंशत्संख्यान्मुष्टीन्निरुप्य चर्वर्थेपुनश्चतुरः पायसार्थेद्विपंचाशन्मुष्टीन्निरुप्य तत्तत्संख्ययाप्रोक्ष्य क्रमेणावहत्यपात्रत्रयेहविस्त्रयंश्रपयेत् । ततोयथान्वाधानंत्यागः । तद्यथा । एतत्संख्याहुतिपर्याप्तंसमिद्द्रव्यंचरुराज्यंच आदित्यायसोमायेत्यादि एवमधिदेवतादिभ्यस्त्यागः । ततोष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तंघृतसंमिश्रपायसंनिर्ऋतये । समिदादिषुसैवसंख्यान्यूनसंख्यावायापूर्वसंकल्पितातदनुसारीत्यागः । इयदाहुतिपर्याप्तंपायससमिदाज्यचर्वात्मकंद्रव्यचतुष्टयंनिर्ऋतये० । अष्टाविंशत्याहुतिपर्याप्तमुक्तद्रव्यचतुष्टयंइंद्राय० एवमग्न्यः० । अष्टाष्टसंख्याहुतिपर्याप्तंपायसंविश्वेभ्योदेवेभ्यः० विष्णवे० वसुभ्यो० वरुणाय० अजैकपदे० अहयेबुध्नियाय० पूष्णे० अश्विभ्यां० यमाय० अग्नये० प्रजापतये० सोमाय० रुद्राय० अदितये० बृहस्पतये० सर्पेभ्यः० पितृभ्यः० भगाय० अर्यम्णे० सवित्रे० त्वष्ट्रे० वायवे० इंद्राग्निभ्यां० मित्राय० ।

विंशत्यधिकशताहुतिपर्याप्तंकृसरंहविः रक्षोघ्नेग्नये । अष्टाष्टसंख्याहुतिपर्याप्तं कृसरद्रव्यं सवित्रे० दुर्गायै० त्र्यंबकाय० कविभ्यो० दुर्गायै० वास्तोष्पतये० अग्नये० क्षेत्राधिपतये० मित्रावरुणाभ्यां० अग्नयेच० । विंशत्यधिकशतसंख्याहुतिपर्याप्ताःसमिधःतावदाज्यंतावांश्चरुःश्रियै । त्रयोदशाहुतिपर्याप्तंपायसं सोमायच । तुर्गृहीताज्यं रुद्रायस्वराजे । एकैकाहुतिपर्याप्तमाज्यं अग्नयेपृथिव्यैमहते० वायवेंतरिक्षायमहते० आदित्यायदिवेमहते० चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहतेच० एवंत्यागेकृतेसाचार्याऋत्विजस्तथैवजुहुयुः।तत्रादित्यादिभ्योरजोदर्शनशांत्युक्तरीत्याहोमः। मोषुणोघौरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्रीहोमेविनि० ॐमोषुणःपरापरा० । इंद्रंवोमधुच्छंदाइंद्रोगायत्री होमे० ॐ इंद्रंवो० । अप्सुमेमेधातिथिरापोनुष्टुप् होमेवि० ॐअप्सुमे० एतैर्मंत्रैःप्रणवादिस्वाहांतैर्यज्ञियतरुसमिधःसंकल्पानुसारिसंख्यादधिमधुघृताक्ताहोतव्याः।पायसचरून्चतुरवत्ताद्यवदानविधिनाहविर्गृहीत्वाजुहुयात् । विधिवदित्याकारोक्तेः।पायसहोमेसमाप्तेसमिदादिहोमारंभः । ततः ॐविश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहेत्येवंउक्तचतुर्विंशतिनाममंत्रैःप्रत्येकमष्टाष्टसंख्ययापायसहोमः। कृणुष्वेतिपंचदशर्चस्यगौतमोवामदेवोरक्षोहाग्निस्त्रिष्टुप् कृसरहोमेवि० ॐकृणुष्वपाजःप्रसितिं० ऋचः १५ प्रत्यृचमष्टाष्टसंख्ययाहोमः । गायत्र्याप्यष्टौतदाहुतयः । जातवेदसेकश्यपोदुर्गात्रिष्टुप् कृसरहोमे० ॐ जातवेदसे० १ । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् कृसरहोमे० ॐ त्र्यंबकं० । ततःसीरायुंजंतीत्यस्यबुधःसौम्यःकवयोगायत्री कृसरहोमे० ॐ सीरायुंजंति० ८ । तामग्निवर्णांसोभरिर्दुर्गात्रिष्टुप् कृसरहो० ॐ तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतीं० ८ । वास्तोष्पतेवसिष्ठोवास्तोष्पतिस्त्रिष्टुप् कृसरहो० ॐ वास्तो

ष्पतेप्रति० ८। ततः अग्निंदूतंमेधातिथिरग्निर्गायत्री कृसरहोमे० ॐ अग्निंदूतं० ८। क्षेत्रस्यपतिनावामदेवःक्षेत्राधिपतिरनुष्टुप् कृसरहो० ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयं० ८ । गृणानाजमदग्निर्मित्रावरुणौगायत्री कृसरहो० ॐ गृणानाजमदग्निना० ८। ततःअग्निंदूतंपुरोदधइत्यांगिरसोविरूपोग्निर्गायत्री कृसरहोमे० ॐ अग्निंदूतंपुरोदधे० ८। ततःहिरण्यवर्णामितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यआनंदकर्दमचिक्लीतेंदिरासुताऋषयः श्रीर्देवताआद्यास्तिस्रोनुष्टुभः चतुर्थीबृहती पंचमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभःअंत्याप्रस्तारपंक्तिःहोमेविनियो० ॐ हिरण्यवर्णांहरिणीं० ऋचः १५ प्रत्यृचंसमिदाज्यचरून् अष्टाष्टसंख्ययाजुहुयात्। त्वंनः[1]सोमविश्वतइत्यस्यप्रगाथःसोमस्त्रिष्टुप् पायसहोमे० ॐत्वंनःसोमविश्वतोवयोधाः०। १३ यातेरुद्रेत्यस्यकश्यपोरुद्रःस्वराडनुष्टुप् आज्यहोमे० ॐ यातेरुद्रशिवा०। अनेनचतुर्गृहीतंहुत्वास्रुवेणचतस्रआज्याहुतीर्जुहुयात्।भूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहा।भुवोवायवेचांतरिक्षायचमहतेचस्वाहा।सुवरादित्यायचदिवेचमहतेच०।भूर्भुवः सुवश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहेतचस्वाहेति। ततःस्विष्टकृत्पायसाज्यचरुकृसराणांसकृत्सकृदवदायाज्यंद्विर्गृहीत्वा यदस्येति०। ततःप्रायश्चित्तहोमांतेकृतेदिक्पालग्रहविनायकादिभ्योरुद्रायनिर्ऋतयेइंद्रायाज्यश्चसदीपमाषभक्तबलिदानं कार्यं। अथाचार्योयजमानोवापूर्णाहुतिंजुहुयात्।समुद्रादूर्मिरित्येकादशर्चस्यसूक्तस्यगौतमोवामदेवोग्निस्त्रिष्टुबंत्याजगती पूर्णाहुतिहोमेवि० ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमांउदार० ऋचः ११। प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतिहोमे०।

---

[1] अत्रक्वचित् त्वंनःसोमविश्वतोगोपाइतिमंत्रोगृहीतस्तत्रतुवसुक्रःसोमआस्तारपंक्तिरितिनिर्देशः। क्वचित्तु त्वंनःसोमसुक्रतुरित्यूरीकृतोस्ति।

ॐ प्रजापतेन० ऋक् १ । पूर्णादर्वीतिविश्वेदेवाःशतक्रतुरनुष्टुप् पूर्णाहुति० ॐ पूर्णादर्विपरापत० ऋक् १ । सप्ततेअग्नेसप्तवानग्निर्जगती पूर्णाहुतिहोमे० ॐ सप्ततेअग्ने० १ । अग्नयेप्रजापतयेशतक्रतवेसप्तवतेऽग्नये० । ततःप्रणीतानिनयनसंस्थाजपपरिस्तरणविसर्जनपरिसमूहनपर्युक्षणानिकृत्वा । गृह्याग्नावेतच्छांतिकरणपक्षेतत्समारोपः[1] । ततोरुद्रकलशंदक्षिणतःस्पृशन्त्र्यंबकमितिमंत्रंशतकृत्वोजप्त्वा यजमानस्यायुरारोग्यस्याभिवृद्ध्यर्थं अभिषेककर्म कर्तुं योग्यतासिद्ध्यर्थं उदकस्पर्शं कुर्यात्यजमानस्ययाजुषत्वादिनिमित्तकंचपूर्ववद्रुद्रैकादशिन्यादिजपमपि । अत्राप्येकादशादिसंख्याविकल्पःपूर्ववत् । अथरुद्रकुंभनिर्ऋतिकुंभगतदेवताःपंचोपचारैःसंपूज्य[2] भवत्प्रसादेनयजमानाभिषेकंकरिष्यइतिताःप्रार्थयेत् । अस्मिन्समयेभूतिमिच्छताग्रहपूजनंकार्यम् । सर्वकलशोदकंकचित्पात्रेआदायविनायकशांतिवत्स्वस्तिकचर्मपीठेनिर्मितभद्रासनेउपविष्टंधृतनववस्त्रंसर्वौषध्यनुलिप्तांगंयजमानंतद्वामभागोपविष्टांतादृशींसापत्यांपत्नींचसर्त्विगाचार्योऽभिषिंचेत् । कश्यपोक्तंशतच्छिद्रांतर्धारणंकृताकृतम् । अभिषेकेमंत्राः । अक्षीभ्यामितिषण्णांकश्यपोविवृहायक्ष्मनाशनोनुष्टुप् अभिषेकेवि० ॐ अक्षीभ्यांतेनासिका० ऋचः ६ । त्रिभिष्ट्वंदेवेतिसप्तानांवसिष्ठऋषिःआद्यानांत्रयाणामग्निश्चतुर्णांविश्वेदेवाः आद्यागायत्रीद्वितीयानुष्टुप्तिस्रोगायत्र्योंत्येद्वेऽनुष्टुभौ अभिषेके० ॐ त्रिभिष्ट्वंदेवसवितः० ऋचः ७ । आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यसूक्तस्यांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्रीपंचमीवर्धमानासप्तमीप्रतिष्ठाअंत्येद्वेअनुष्टुभौअभिषेके० ॐ आपोहिष्ठामयो० ऋचः ९ । आपइद्वेतिद्वयोःसप्तर्षयोविश्वेदेवाअनुष्टुप् अभिषेकेवि०

---

[1] शांत्यासहग्रहमखाकरणेत्विदानींतस्मिन्नेवाग्नौपृथक्सकार्यः । [2] त्र्यंबकं मोपुणइतिचोपस्थाय । [3] षडर्चस्यसूक्तस्य ।

ॐ आपइद्वाउभेषजी० ऋचौ २ । सहस्राक्षेतितृचस्यप्राजापत्योयक्ष्मनाशनोयक्ष्मात्रिष्टुबन्त्यानुष्टुप् अभिषेके० ॐ सहस्राक्षेणशतशारदेन० ऋचः ३। देवस्यत्वेतित्रिभिर्याजुषैः। यज्ञाग्रतइतिषण्णांप्रजापतिर्मनस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॐयज्ञाग्रतो० ६ । अथ योसौवज्रधरोदेवोमहेंद्रोगजवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषंमातापित्रोर्व्यपोहतु १ । योसौशक्तिधरोदेवोहुतभुङ्मेषवाहनः । सप्तजिह्वश्चदेवोग्निर्मूलदोषंव्यपोहतु २ । योसौदंडधरोदेवोधर्मोमहिषवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषंव्यपोहतुयमोमम ३ । योसौखङ्गधरोदेवोनिर्ऋतीराक्षसाधिपः । प्रशामयतुमूलोत्थंदोषंगंडांतसंभवम् ४ । योसौपाशधरोदेवो[१]वरुणःसलिलेश्वरः । नक्रवाहःप्रचेतानोमूलोत्थाघंव्यपोहतु ५ । योसौदेवोजगत्प्राणोमारुतोमृगवाहनः । प्रशामयतुमूलोत्थंदोषंबालस्यशांतिदः ६ । योसौनिधिपतिर्देवःखङ्गभृद्वाजिवाहनः । मातापित्रोःशिशोश्चैवमूलदोषंव्यपोहतु ७। योसौपशुपतिर्देवःपिनाकीवृषवाहनः । आश्लेषामूलगंडांतदोषमाशुव्यपोहतु ८ । विघ्नेशःक्षेत्रपोदुर्गालोकपालानवग्रहाः । सर्वदोषप्रशमनंसर्वेकुर्वंतुशांतिदाः ९ । इतिमंत्रैःसुरास्त्वामित्यादिभिश्चाभिषिच्य । तच्छंयोःशंयुर्विश्वेदेवाःशक्वरी अभिषेके० ॐतच्छंयोरावृणीमहे० । ततोवस्त्रवेष्टितमुखाभ्यांरुद्रनिर्ऋतिकुंभाभ्यामभिषिक्तोयजमानःशुक्लवस्त्रगंधमाल्यधरःसपत्नीकःसापत्योविभूतिधारणंकृत्वानिर्ऋतिरुद्रकलशस्थदेवताःसंपूज्यविसृज्यग्रहाणामुत्तरपूजांविसर्जनंचकृत्वा आचार्यादींश्चंदनादिनासंपूज्यआचार्यायसवत्सांपयस्विनींगांदद्यात् । निर्ऋतिप्रतिमांसोपस्करांतत्कलशं

---

[१] वरुणश्चजलेश्वरः।

तथाग्रहप्रतिमाग्रहप्रीत्यर्थंदक्षिणाश्च । ततोरुद्रजापिनेकृष्णोनड्वान्देयः । रुद्रप्रतिमाःसोपस्करास्तत्कुंभांश्चइतरेभ्योपि यथाशक्तिदक्षिणांदद्यात् । धेन्वनडुहोरसंभवे दशकार्षापणाधेनावष्टावनडुहिस्मृताइतिमूल्यंदेयम् । तदसंभवेयथाशक्तिदद्यात् । तत्राचार्यदत्तार्धंब्रह्मणेतद्दत्तार्धंसदस्यायतद्दत्तार्धंप्रत्येकमृत्विग्भ्योदेयम् । ततस्तेभ्योमूलजननसूचितसर्वारिष्टनिवृत्तिरस्त्वित्याशिषंगृहीत्वाप्रणम्यक्षमापयेत् । ततःपायसादिनाशतंतदर्धंदशवाब्राह्मणान्भोजयेत् तैश्चब्राह्मणैःसर्वशांतिपाठपूर्वकंभुक्त्वाशिषोदेयाः । यजमानोनिर्ऋतिःप्रीयतामितितान्क्षमापयेत् ततईश्वरार्पणंकुर्यादितिमूलशांतिः ॥

(मंडलादिष्वाग्नेयमैंद्रादितिपरिभाषावशात्कृणुष्वेतिसूक्तेरक्षोहाग्निर्देवतागुणस्यविशेष्यंप्रतिसाक्षेपत्वाच्च यत्तुकैश्चिदुक्तं ऋत्विक्स्तुतिर्वेत्यनुक्रमणिकोक्तेःसीरायुंजंतीत्यस्यऋत्विक्स्तुतिर्देवतेति । तन्न । स्तुतेर्मंत्राप्रकाश्यत्वेनस्तुत्युपन्यासस्यस्तुतिविषयेदेवतात्वद्योतनार्थत्वात् । तथाचसमुद्रादूर्मिरित्येकादशाग्नेयंजगत्यंतंसौर्यंवापंवागव्यंवाघृतस्तुतिर्वेत्यनुक्रमणिकामनुसृत्याहवेदभाष्यकारः अग्निसूर्याब्गोघृतानामन्यतमादेवतेति । तथायत्रग्रावेतिसूक्तेउच्छिष्टंचम्वोर्भरेत्येतदृग्विषयामंत्याचर्मप्रशंसावेतितामनुसृत्याहसः अधिषवणचर्मदेवतेति । तथाश्वमेधांगभूताध्रिगुविनियुक्तसूक्तगोचरामानोद्व्यधिकाश्वस्तुतिरित्येवंरूपांतामेवानुसृत्यसएवाह अश्वस्यस्तूयमानत्वात्यातेनोच्यतेसादेवतेतिन्यायेनाश्वोदेवतेति । ऋत्विक्स्तुतेर्देवतात्वेतत्तुल्यन्यायतयोक्तविषयेषुघृतस्तुतिचर्मप्रशंसाश्वस्तुतीनामेवदेवतात्वंभाष्यकारोब्रूयान्नघृतादीनाम् । किंचपितुंन्वन्नस्तुतिरित्यनुक्रमणीव्याख्यावसरेतद्भाष्यकारेणोक्तं अन्नस्तुतिरन्नमस्यदेवतेत्यर्थइति । युक्तंचैतत्

यातेनोच्यतेसादेवतेत्यनुक्रमणीपरिभाषोक्तेः। तद्यानिनामानिप्राधान्यस्तुतीनांदेवतानांतद्दैवतमित्याचक्षतेसैषादेवतोपपरीक्षायत्कामऋषिर्यस्यांदेवतायामार्थपत्यमिच्छंस्तुतिंप्रयुंक्तेतद्दैवतःसमंत्रोभवतीतिनिरुक्ताच्च स्तुतिंप्रयुंक्तेयेनमंत्रेणसाप्राधान्यस्तुतिभाक्तस्यदेवतेति।अत्रभाष्यं–यमर्थंसिंधु(?)कामयमानऋषिर्यस्यांदेवतायामभिष्टुतायामार्थपत्यमर्थपतिभावमात्मनइच्छन् अमुष्यादेवतायाःप्रसादेनाहममुष्यार्थस्यपतिर्भविष्यामीत्येतांबुद्धिंपुरोधायस्तुतिंप्रयुंक्तेतद्दैवतएवसमंत्रोर्थाद्भवति।एतेनलक्षणेनसर्वमंत्रेषुदेवतोपलक्ष्या। अथवास्यार्थस्येयंदेवतादातुंसमर्थेतिजानानःस्तुतिंप्रयुंक्तेयेनमंत्रेणसाप्राधान्यस्तुतिभाक्तस्यदेवतेति। अत्रव्याख्याद्वयेपिस्तुतिभागेवदेवतानस्तुतिरितिस्फुटंप्रतीयते। अतएवऋत्विक्स्तुतिर्वेतिवाशब्दोविश्वेदेवदेवतार्थाक्षिप्तस्तुत्याविकल्पार्थः। वैश्वदेवंतुत्रिष्टुबंतमुद्बुध्यध्वंबुधःसौम्यऋत्विक्स्तुतिर्वेतिपठितेहिग्रंथेपूर्वसूक्तेदेवतात्वेनोक्ताविश्वेदेवाउद्बुध्यध्वमितिसूक्तेऽनुवर्तंते।तुहिहवैतच्छब्दविशिष्टान्यृषिदैवतच्छंदांसिद्वित्रिचतुःपंचषट्सूक्तभांजीतिपरिभाषानुसारिणातुशब्देनतद्द्योतनात्। नचैवमन्वाधानादौविश्वेदेवशब्दस्यऋत्विक्शब्दस्यवानिर्देशेनभवितव्यं नकविशब्दनिर्देशेनेतिवाच्यम्। तद्यानिनामानीतिनिरुक्तेनयोयंनामार्थःप्राधान्येनमंत्रेस्तुत्यतयाप्रतीयतेतन्नाम्नानिर्दिश्यमानस्यैवतस्यदेवतात्वप्रतीतेः। पार्वणौजुहोतीतिविहितहोमयोर्ऋषभममावास्येतिमंत्रवर्णगतपूर्णमासामावास्याशब्दाभ्यामेवोद्देशस्यसर्वयाज्ञिकसंमतत्वदर्शनाच्चविधिशब्दस्यमंत्रत्वमितिन्यायेनहोमविधिनाशब्दविशेषेणदेवतोद्देशंविधित्सतान्तरंगमंत्रानुसारेणैवक्रमस्यैवदेवताशब्दस्यापिनियमानौचित्याच्च। कविधीरनाम्नोर्मेधाविना

मपाठेतुल्येपिधीरपदार्थस्यकविविशेषणतयाभाष्यकृतोक्तेश्च विश्वेषांदेवानामिवर्त्विजामपिवहुवचनांतकविपदेनाभिधानसंभवाच्च प्रयाजाधिकारपठितनिरुक्तोक्तन्यायेनदेवताविकल्पस्यध्यानफलतासंभवाच्चेत्यलम् ) ॥ ॥ अथाश्लेषाशातिविधिः मानवसंहितायाम् । आश्लेषायांतुजातानांशांतिंवक्ष्याम्यतःपरम् । जातस्यद्वादशाहेचशांतिहोमंसमाचरेत् । असंभवेतुजन्मर्क्षेअन्यस्मिन्वाशुभेहनि । स्नातोऽभ्यंगादिभिस्तस्मिन्वरयेत्तुद्विजोत्तमान् । विभवेपंचकुंभांस्तुद्वयंवातदलाभतः । देवतास्थापनेचैकमेकंरुद्राभिमंत्रणे । मूलर्क्षोक्तप्रकारेणकुंभेनिक्षिप्यपूजयेत् । गोमयालेपितेदेशेधा (त्वा)न्याद्यैःपरिशोभिते । पंकजंकारयेत्तत्रचतुर्विंशद्दलान्वितं । तंडुलैःकारयेद्यद्वारक्तपीतसितासितैः । कर्णिकायांन्यसेद्व्रीहीन्स्थापयेत्तेषुकुंभकम् । आकलशेष्वित्यनयाकलशस्थापनंस्मृतम् । इमंमेगंगेमंत्रेणपूरयेत्तीर्थवारिणा । कुंभंचवस्त्रगंधाद्यैस्तत्तन्मंत्रैःप्रपूजयेत् । याःफलिनीरित्यनयाक्षिपेद्रत्नौषधादिकान् । कुंभोपरिस्थपात्रेतुआश्लेषाप्रतिमांयजेत् । निष्कनिष्कार्धपादैर्वाकारयित्वास्वशक्तितः । तत्पूर्वोत्तरनक्षत्रेदक्षिणोत्तरयोर्यजेत् । ऐंद्रादैशानपर्यंतमितरर्क्षाणिपूजयेत् । मूलोक्तेनविधानेनकुंभयोरभिमंत्रणम् । रुद्रार्चारुद्रकुंभेतुपूर्ववच्छेषमाचरेत् । नमोअस्तुसर्पेभ्यःपूजामंत्रइतीरितः । सर्पोरक्तस्त्रिनेत्रश्चद्विभुजःपीतवस्त्रकः । फलकासिधरस्तीक्ष्णोदिव्याभरणभूषितः । एवंध्यात्वाततोभ्यर्च्यहोमकर्मसमारभेत् । कर्तुःशाखोक्तमार्गेणआचार्यस्याथवाचरेत् । मुखांतंकर्मनिर्वर्त्यहविरादायशास्त्रतः । इदंसर्पेभ्योजुहुयात्साधिप्रत्यधिदैवतम् । अष्टोत्तरशतंवापिअष्टाविंशतिमेववा । मूलनक्षत्रवच्छेषंहोमकर्मसमाचरेत् । पूर्णाहुत्यंतकर्माणिकृत्वासंपातकं

तथा । कुंभेजलेषुप्रक्षिप्यअभिषेकमथाचरेत् । दारपुत्रसमेतस्ययजमानस्यपूर्ववत् । अभिमंत्रितकुंभाद्भिरभिषेचनमाचरेत् । तथापौराणमंत्रैश्चपल्लवैरभिषेचयेत् । आश्लेषाऋक्षजातस्यमातापित्रोर्धनस्यच । भ्रातृज्ञातिकुलस्थानांदोषंसर्वंव्यपोहतु । योसौवागीश्वरोनामाअधिदेवोबृहस्पतिः । मातापित्रोःशिशोश्चैवगंडांतंचव्यपोहतु । पितरःसर्वभूतानांरक्षंतुपितरःसदा । सार्पनक्षत्रजातस्यवित्तंचज्ञातिबांधवान् । ततःशुक्लांबरधरोयजमानःसुभूषितः । दक्षिणाभिस्ततोविप्रान्मूलवच्चप्रतोषयेत् । भुक्तवद्भ्यश्चविप्रेभ्यःस्वीकुर्यादाशिषंगृही । इत्यनेनविधानेनसर्वारिष्टंविनश्यति । अर्घ्यमंत्रः । सर्पाधीशनमस्तुभ्यंनागानांचगणाधिप गृहाणार्घ्यंमयादत्तंसर्वारिष्टप्रशांतये । मूलनक्षत्रवत्कुर्यात्सर्पगंडेस्वनामतइति ॥

अथप्रयोगः ॥ द्वादशाहेतदसंभवेजन्मर्क्षेन्यस्मिन्शुभेदिनेवाप्रातर्नित्यविधिंविधायतैलाभ्यंगोद्वर्तनादिनास्नातोदेशकालौसंकीर्त्य गोमुखप्रसवंकृत्वाऽस्यशिशोराश्लेषाजननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं [1]मनूक्तविधिनासग्रहमखामाश्लेषाशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् । अभ्युत्तारणसर्षपविकिरणाद्यंतेमूलशांत्युक्तप्रकारेणकुंभपंचकेचतुःप्रस्रवणेपंचवक्त्रैककुंभेवासवरुणरुद्रस्यावाहनादिपूजनंविधायरुद्रैकादशिनीजपरक्षोहणमितिसूक्तजपांतेरुद्रकुंभोत्तरभागेगोमयेनोपलिप्तेधान्यादिभिःपरितःशोभितेशुद्धतंडुलैरक्तपीतसितकृष्णपिष्टैर्वाचतुर्विंशतिदलान्वितंपंकजंविधायतत्कर्णिकायांभूमिंमहीद्यौरित्यभिमृश्य ओषधयइतिव्रीहीन्निक्षिप्याकलशेष्वितिस्थापितकलशमि

---

[1] शौनकोक्तांसग्रह०।

मंमेगंगइतितीर्थोदकेनापूर्यगंधद्वारामितिगंधपुष्पाभ्यांयुवासुवासाइतिवस्त्रवेष्टनेनचसंपूज्य काण्डात्काण्डादितिदूर्वाभिश्च अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवैः स्योनेतिसप्तमृद्भिःआपोहिष्ठेतिपंचगव्येनचसंयोज्ययाःफलिनोरितिफलानिपंचरत्नानियवान्सर्वौषधीश्चप्रक्षिप्यपूर्णादर्वीतिनिहितपूर्णपात्रेसाष्टदलवस्त्रेआश्लेषादेवताप्रतिमायां[1]नमोअस्तुसर्पेभ्यइतिसर्पानावाह्यध्यायेत् । सर्पोरक्तस्त्रिनेत्रश्चद्विभुजःपीतवस्त्रकः । फलकासिधरस्तीक्ष्णोदिव्याभरणभूषितइति । तद्दक्षिणोत्तरदेशयोः[2]पुष्यमघेअधिप्रत्यधिदेवतेआवाह्यचतुर्विंशतिदलेषुपूर्वदलमारभ्यप्रादक्षिण्येनपूर्वाफल्गुनीमारभ्यपुनर्वसुपर्यंतानिनक्षत्राण्यावाहयेत् । तत्रपुष्यावाहने । बृहस्पतिःप्रथमंजायमानः । तिष्यंनक्षत्रमभिसंबभूव । श्रेष्ठोदेवानांपृतनासुजिष्णुः । दिशोनुसर्वाअभयंनोअस्तु । तिष्यःपुरस्तादुतमध्यतोनः । बृहस्पतिर्नःपरिपातुपश्चात् । बाधेतांद्वेषोअभयंकृणुतां । सुवीर्यस्यपतयःस्यामेतितैत्तिरीयशाखोक्तोमंत्रः । तथामघावाहने । उपहूताःपितरोयेमघासु । मनोजवसःसुकृतःसुकृत्याः । तेनोनक्षत्रेहवमागमिष्ठाः । स्वधाभिर्यज्ञंप्रयतंजुषंताम् । येअग्निदग्धायेऽनग्निदग्धाः । येमुंलोकंपितरःक्षियंति । यांश्चविद्मयांउचनप्रविद्म । मघासुयज्ञंसुकृतंजुषंतामिति । तथापूर्वाफल्गुन्याद्यावाहनानितत्रत्यैरेव । गवांपतिःफल्गुनीनामसित्वमित्यादिवाक्याष्टकैःकर्तव्यानि । यद्वानाममंत्रैः पूर्वाफल्गुनीभ्यांनमः पूर्वाफल्गुन्यावावाहयामि उत्तराफ

---

[1] नमोअस्तुवामदेवःसर्पाअनुष्टुप्सर्पावा० । नमोअस्तुसर्पेभ्यो० । अयंमंत्रोबह्वृचैःखिलस्थोग्राह्यः । [2] अत्रापि शां. र. । तद्दक्षिणेबृहस्पते गृत्समदो० इतिबृहस्पतिं । उत्तरेआहंपितॄन्शंखःपितरस्त्रिष्टुप् इतिपितॄंश्चावाह्यपूर्वादिदलेषु भगाय अर्यम्णेइत्यादिनाममंत्रैरुक्तं ।

ल्गुनीभ्यां० हस्तायन० चित्रायै० निष्ट्यायै० विशाखाभ्यां० अनूराधेभ्यो० ज्येष्ठायै० मूलाय० पूर्वाषाढाभ्य० उत्तराषाढाभ्यां० श्रोणायै० श्रविष्ठाभ्यो० शतभिषजे० पूर्वाप्रोष्ठपदेभ्यो० उत्तराप्रोष्ठपदेभ्यो० रेवत्यै० अश्वयुग्भ्यां० अपभरणीभ्यो० कृत्तिकाभ्यो० रोहिण्यै० मृगशीर्षाय० आर्द्रायै० पुनर्वसुभ्यां० इत्येतैः । ततआवाहितदेवताउक्ततत्तन्मंत्रैः षोडशोपचारैःसंपूज्यआचार्योयजमानशाखोक्तेनस्वशाखोक्तनवाविधिनाऽग्निंप्रतिष्ठाप्यग्रहपूजांवरुणपूजांतांकृत्वाऽन्वादध्यात् । तत्रग्रहपीठस्थदेवतानांमूलशांतिवन्निर्देशंकृत्वा सर्पान्प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतक्तपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः ( प्रतिद्रव्यं १०८ वा २८ । ) तिष्यंमघाश्चअष्टाविंशतिभिस्तदाहुतिभिः । सर्पाणामष्टाविंशतिश्चेदितरयोरष्टावष्टौ । पूर्वाफल्गुन्यादिचतुर्विंशतिदेवताःप्रत्येकमष्टाष्टसंख्याभिःपायसाहुतिभिः । रक्षोहप्रभृतिदेवतानिर्देशो मूलशांतिवत्। शेषेणेत्यादि।पायसकृसरचरूणांश्रपणं आज्यभागांतेयथान्वाधानंत्यागंयजमानः तत्तन्मंत्रैर्होमंचसार्विगाचार्यःकुर्यात् । आज्यहोमेषुप्रत्याहुतिउत्तरतःस्थापितजलकुंभेसंपाताख्यशेषंप्रक्षिपेत् । सर्पेभ्योहोमस्तु । इदꣳसर्पेभ्योहविरस्यजुष्टं । आश्रेषायेषामनुयंतिचेतः । येअंतरिक्षंपृथिवींक्षियंति । तेनःसर्पासोहवमागमिष्ठाः । येरोचनेसूर्यस्यापि सर्पाः । येदिवंदेवीमनुसंचरंति । येषामाश्रेषाअनुयंतिकामं । तेभ्यःसर्पेभ्योमधुमज्जुहोमीतितैत्तिरीयोक्तवाक्याष्टकेन कार्यः । इदंसर्पेभ्योजुहुयादितिमानवोक्तेः । मदनरत्नोदाहृतसंहितायामस्यामेवशांतौहोमाधिकारइदंसर्पेभ्यइतिचवाक्यान्यष्टौतुसर्पेभ्यइत्युक्त्यासंवादलाभाच्च । अतएवेदंहविरितियोजनयेदमित्यस्यमानववाक्येवैयर्थ्यमापादयन्त्योनमो

मान्येभ्यः । सर्पतिष्यमघाहोमोऽवदानसंपदापायसचर्वोःकार्यः । प्रायश्चित्तहोमांतेविनायकादिभ्योवलिदानांतंकृत्वा रुद्रायसर्पेभ्यस्तिष्यायमघाभ्यःक्षेत्रपालायचसदीपबलीन्दद्यात् । ततआचार्योद्वादशगृहीतादिविधिनामूलशांतिवत्पूर्णाहुतिंहुत्वासंपातंकुंभेक्षिपेत् । ततःप्रणीतानिनयनादितद्वत्पर्युक्षणांतम् । ततोरुद्रकुंभंदक्षिणतःस्पृष्ट्वात्र्यंबकजपादिमूलशांतिवत् । ततोरुद्रसर्पादिदेवतानांपंचोपचारैरुत्तरपूजांकृत्वाऽभिषेकानुज्ञांतद्वदेवादायसंपातोदकमितरकुंभजलानिचादायाऽभिषिंचेत्सर्त्विगाचार्यःअक्षीभ्यामित्यादियज्जाग्रतइत्यंतंमूलशांतिवत् । श्लोकेषुविशेषः । योसौवज्रधरोदेवोमहेंद्रोगजवाहनः । सार्पजातशिशोर्दोषंमातापित्रोर्व्यपोहतु १ । योसौशक्तिधरोदेवोहुतभुङ्मेषवाहनः । सप्तजिह्वश्चदेवोग्निःसार्पदोषंव्यपोहतु २ । योसौदंडधरोदेवोधर्मोमहिषवाहनः । सार्पजातशिशोर्दोषंव्यपोहतुयमोमम ३ । योसौखङ्गधरोदेवोनिर्ऋतीराक्षसाधिपः । प्रशामयतुसार्पोत्थंदोषंगंडांतसंभवम् ४ । योसौपाशधरोदेवोवरुणश्चजलेश्वरः । नक्रवाहःप्रचेतानःसार्पोत्थाघंव्यपोहतु ५ । योसौदेवोजगत्प्राणोमारुतोमृगवाहनः । मातापित्रोःशिशोश्चैवसार्पदोषंव्यपोहतु ६ । योसोनिधिपतिर्देवःखङ्गभृद्वाजिवाहनः । प्रशामयतुसार्पोत्थंदोषंबालस्यशांतिदः ७ । योसौपशुपतिर्देवःपिनाकीवृषवाहनः । आश्लेषामूलगंडांतदोषमाशुव्यपोहतु ८ । विघ्नेशःक्षेत्रपोदुर्गालोकपालानवग्रहाः । सर्वदोषप्रशमनंसवेकुर्वंतुशांतिदाः ९ । आश्लेषाऋक्षजातस्यमातापित्रोर्धनस्यच । भ्रातुर्ज्ञातिकुलस्थानांदोषंसर्वंव्यपोहतु १० । योसौवागीश्वरोनामअधिदेवोबृहस्पतिः । मातापित्रोःशिशोश्चैवगंडांतंसव्यपोहतु ११ । पितरःसर्वभूतानांरक्षंतुपितरः

**सदा । सर्पनक्षत्रजातस्यवित्तंचज्ञातिबांधवान् १२ । सुरास्त्वामभिषिंचंतु० तच्छंयोरा० शतच्छिद्रातर्धानेनमूलवदभिषेकांतेआचार्यरुद्रजापिभ्यांधेनुकृष्णानडुह्वोरन्येभ्योदक्षिणायादानंमूलवत्कृत्वाग्रहाणामुत्तरपूजांविधायसर्पेभ्योऽक्षतफलपुष्पयुतमर्घ्यंदद्यात् । मंत्रः । सर्पाधीशनमस्तुभ्यंनागानांचगणाधिप । गृहाणार्घ्यंमयादत्तंसर्वारिष्टप्रशांतयेइति । ततोब्राह्मणभोजनसंकल्पादिआशीर्ग्रहणांतंमूलवदिति । इत्याश्लेषाशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥**

अथशौनकोक्तआश्लेषाशांतिप्रयोगः ॥ ॥ द्वादशाहेतदसंभवेजन्मर्क्षेऽन्यस्मिन्शुभेदिनेवाप्रातर्नित्यविधिंकृत्वासपत्नीकस्तैलाभ्यंगोद्वर्तनादिनास्नातोगोमुखप्रसवंविधायद्विराचमनादिदेशकालस्मरणांते अस्यशिशोःआश्लेषानक्षत्रजननसूचितसकलारिष्टपरिहारद्वाराश्री० सग्रहमखांशौनकोक्तांशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् । तत्रर्त्विजोष्टौचत्वारोवा । ततआचार्यःप्रादेशकरणांतेमूलशांत्युक्तप्रकारेणकुंभपंचकेचतुःप्रस्रवणएककुंभेवारुद्रवरुणयोरावाहनादिपूजनंविधायरुद्रैकादशिन्यादिशांतिसूक्तजपांतेरुद्रकुंभोत्तरभागेगोमयेनोपलिप्ते धान्यादिभिःपरितःशोभितेशुद्धतंडुलैःरक्तपीतसितकृष्णपिष्टैर्वाचतुर्विंशतिदलान्वितंपंकजंविरच्य तत्कर्णिकायांमहीद्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वाओषधयःसमितिव्रीहिराशिंकृत्वा आकलशेष्वितिकलशंसंस्थाप्य इमंमइतितीर्थोदकेनापूर्य गंधद्वारामितिगंधपुष्पाणिप्रक्षिप्य युवासुवासाइतिवस्त्रेणावेष्ट्य कांडात्कांडादितिदूर्वाः अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् स्योनेतिसप्तमृदः आपोहिष्ठेतिपंचगव्यं ओषधयःसमितियवान् याओषधीरितिसर्वौषधीश्चनिक्षिप्य याःफलिनीरित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वातदुपरिसाष्टदलवस्त्रेउक्तलक्षणप्रतिमायां । नमोअस्तुवामदेवःसर्पाअनुष्टुप् सर्पावा० ॐ नमोअस्तुसर्पेभ्यो० [ अयंमंत्रोबह्वृचैःखिलस्थोग्राह्यः ] इतिसर्पानावाह्य । सर्पोरक्तस्त्रिनेत्रश्चद्विभुजःपीतवस्त्रकः । फलकासिधरस्तीक्ष्णोदिव्याभरणभूषितः । इत्युक्त

रूपान्ध्यात्वा । तद्दक्षिणेबृहस्पतेगृत्समदो० इतिबृहस्पतिं । उत्तरे आहंपितॄन्शंखःपितरस्त्रिष्टुप् पित्रावा० इतिपितॄंश्चावाह्य । चतुर्विंशतिदलेषु पूर्वदलमारभ्यप्रादक्षिण्येनपूर्वाफल्गुन्यादिपुनर्वस्वंतानिनक्षत्राणितद्देवतावास्थापयेत् । भगायनमःभगमावाहयामि एवमग्रेपि अर्यम्णे० सवित्रे० त्वष्ट्रे० वायवे० इंद्राग्निभ्यां० मित्राय० इंद्राय० निर्ऋतये० अद्भ्यो० विश्वेभ्योदेवेभ्यो० विष्णवे० वसुभ्यो० वरुणाय० अजायैकपदे० अहयेबुध्न्याय० पूष्णे० अश्विभ्यां० यमाय० अग्नये० प्रजापतये० सोमाय० रुद्राय० अदित्यै० इति । ततःपरितःनाममंत्रैरिंद्रादिलोकपालानावाह्योक्तमंत्रैःषोडशोपचारैःसर्वान्पूजयेत् । [ लोकपालावाहनंमूलानुपलंभान्नोक्तंमयूखादौ ] ततआचार्योरुद्रकुंभान्नैर्ऋतप्रदेशेयजमानशाखयास्वशाखयावास्थंडिलेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यस्थापितकुंभोत्तरतोग्रहस्थापनादिकलशप्रार्थनांतंकृत्वान्वादध्यात् । तत्रग्रहोत्कीर्तनांतेप्रधानदेवंसर्पान्घृताक्तपायससमिदाज्यचरुभिःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिःअष्टाविंशतिसंख्याभिर्वा बृहस्पतिंपितॄंश्चतैरेवद्रव्यैःप्रत्येकंप्रतिद्रव्यं २८ वा ८ भगादिचतुर्विंशतिदेवताःपायसेनप्रत्येकं ८ रक्षोहणमग्निंकृसरेणेत्याज्यभागहोमांतंमुख्यदेवतापूजावर्जंमूलशांतिवत्कृत्वा यजमानेनत्यागेकृतेसार्त्विगाचार्योयथान्वाधानंहोमंकुर्यात् । तत्रग्रहादिहोमोत्तरंप्रधानाज्यहोमेषुप्रत्याहुतिउत्तरतःस्थापितजलकुंभेसंपाताख्यमाज्यशेषंप्रक्षिपेदितिविशेषः । सर्पादित्रयहोमेतुपायसचर्वोरवदानधर्मः । ततःस्विष्टकृदादिप्रायश्चित्तहोमांतेलोकपालादिभ्योरुद्रायसर्पेभ्योबृहस्पतयेपितृभ्यःक्षेत्रपालायचबलीन्दद्यात् । ततआचार्योयजमानोवामूलशांतिवत्पूर्णाहुतिंजुहुयात् । संस्रवहोमादिकर्मशेषंसमाप्यरुद्रकुंभंदक्षिणतःस्पृशन्त्र्यंबकमितिमंत्रंशतवारंजप्त्वारुद्रैकादशिन्यादिकमपिजपेत् । ततोरुद्रंसर्पादिदेवतात्रयंचपंचोपचारैःसंपूज्य त्र्यंबकंनमोअस्त्वितिचोपस्थाय भवत्प्रसादेनयजमानाभिषेकंकरिष्येइतितान्प्रार्थयेत् । रुद्रजपादिप्रार्थनांतंतुमूलेऽनुपलब्धत्वादनादेयमितिभाति । शांतिसारस्थव्याख्याशयोप्येवम् । ततःसर्वकलशोदकंसंपातोदकंचपात्रांतरे आदायऋत्विग्भिःसहपत्नीशिशुसहितं धृतनववस्त्रंयजमानंमूलशांत्युक्तरीत्याभिषिंचेत् । तत्रअक्षीभ्यामित्यादियज्जाग्रतइत्यंते । योसौवज्रधरोदे

वोमहेंद्रोगजवाहनः । सार्पजातशिशोर्दोषंमातापित्रोर्व्यपोहतु १ योसौशक्तिधरोदेवोहुतभुङ्मेषवाहनः । सप्तजिह्वश्चदेवोग्निःसार्पदोषंव्यपोहतु २ योसौदंडधरोदेवोधर्मोमहिषवाहनः । सार्पजातशिशोर्दोषंव्यपोहतुयमोमम ३ योसौखङ्गधरोदेवोनिर्ऋतीराक्षसाधिपः । प्रशामयतुसार्पोत्थंदोषंगंडांतसंभवम् ४ योसौपाशधरोदेवोवरुणःसलिलेश्वरः । नक्रवाहःप्रचेतानःसार्पोत्थाघंव्यपोहतु ५ योसौदेवोजगत्प्राणोमारुतोमृगवाहनः । प्रशामयतुसार्पोत्थंदोषंबालस्यशांतिदः ६ योसौनिधिपतिर्देवःखङ्गभृद्वाजिवाहनः । मातापित्रोःशिशोश्चैवसार्पदोषंव्यपोहतु ७ योसौपशुपतिर्देवःपिनाकीवृषवाहनः । आश्लेषामूलगंडांतदोषमाशुव्यपोहतु ८ विघ्नेशःक्षेत्रपोदुर्गालोकपालानवग्रहाः । सर्वदोषप्रशमनंसर्वेकुर्वंतुशांतिदाः ९ आश्लेषाऋक्षजातस्यमातापित्रोर्धनस्यच । भ्रातृज्ञातिकुलस्थानांदोषंसर्वंव्यपोहतु १० योसौवागीश्वरोनामअधिदेवोबृहस्पतिः । मात्रापित्रोःशिशोश्चैवगंडांतंसव्यपोहतु ११ पितरःसर्वभूतानांरक्षंतुपितरःसदा । सार्पनक्षत्रजातस्यवित्तंचज्ञातिबांधवान् १२ ततोग्रहादिमंत्रैःसुरास्त्वामित्यादिश्लोकैस्तच्छंयोर्देवस्यत्वेतिमंत्राभ्यांचाभिषेकांतेतूष्णींशतच्छिद्रांतर्धानेनाभिषिच्यवस्त्रवेष्टितमुखाभ्यांरुद्रसर्पकुंभाभ्यामवशिष्टजलेनाभिषिंचेत् । ततोयजमानोधृतशुक्लांबरगंधमाल्यःस्नानवस्त्रमाचार्यायदत्वाविभूतिंधृत्वारुद्रादीनामुत्तरपूजांतेताम्रपात्रेगंधाक्षतपुष्पफलादियुक्तमर्घ्यमादाय । सर्पाधीशनमस्तुभ्यंनागानांचगणाधिप । गृहाणार्घ्यंमयादत्तंसर्वारिष्टप्रशांतयेइतिदत्वाआचार्यादीन्संपूज्यतेभ्योदक्षिणादानादिसर्वंमूलशांतिवत्कृत्वाकर्मसमापयेत् । इतिबह्वृगुपयुक्तःशांतिरत्नगतःप्रयोगः ॥

**॥ अन्योपिबह्वृचांविशेषःसौकर्यार्थंसंगृह्यते ॥**

यद्यप्यत्राष्टवाक्यात्मकास्तैत्तिरीयामंत्राएवसर्वैर्ग्राह्याइत्युक्तंतथापि मूलेविशेषादशनात्स्वशाखीमाएवनक्षत्रमंत्राःसर्वैर्ग्राह्याः । यच्छाखायांनसंतितेषांविकल्पेनान्यदीयाः । तत्रबह्वृचानांनक्षत्रमंत्राःशौनकेननक्षत्रहोमेउक्ताः । तैत्तिरीयाणांतुतच्छाखीयाएव । तत्रापिमंत्रेणेत्येकवचनाच्चतुर्वाक्यात्मकमंत्रेणहोमः सचोभयोरन्यतमः प्रथमोपस्थितेराद्यएववानत्वष्टवाक्यात्मकएकोमंत्रः । तेषांयाज्यानुवाक्यायुगलत्वेनमंत्रद्वयतायाःक्लृप्तत्वात् ।

अष्टवाक्यात्मकत्वेविशेषाभावाच्चेतिबोध्यं ॥ ॥ अत्रसौकर्यार्थमश्विन्यादिक्रमेणशौनकोक्तनक्षत्रदेवतामंत्राऋष्यादिसहितानिर्दिश्यंते । अश्विनावेहसप्तवध्रिरश्विनावुष्णिक् १ । यमायसोमंययोयमोनुष्टुप् २ । अग्निर्मूर्धाविरूपोग्निर्गायत्री ३ । प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ४ । आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री ५ । कद्रुद्रायकण्वोरुद्रोगायत्री ६ । अदितिर्द्यौर्गौतमोऽदितिस्त्रिष्टुप् ७ । बृहस्पतेगृत्समदोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ८ । आयंगौःसार्पराज्ञीसर्पागायत्री ९ । आहंपितॄन्शंखःपितरस्त्रिष्टुप् १० । शंनोभगोवसिष्ठोभगस्त्रिष्टुप् ११ । अनृक्षराःसूर्यासावित्र्यर्यमात्रिष्टुप् १२ । सवितापश्चाताद्धानाकोलुशःसवितात्रिष्टुप् १३ । तन्नस्तुरीपंवसिष्ठस्त्वष्टात्रिष्टुप् १४ । वायवायाहिमधुच्छंदावायुर्गायत्री १५ । इंद्राग्नीरोचनाविश्वामित्रइंद्राग्नीगायत्री १६ । मित्रोजनान्विश्वामित्रोमित्रस्त्रिष्टुप् १७ । इंद्रमिन्मेधातिथिरिंद्रोबृहती १८ । मोषुणःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री १९ । आपोअस्मान्देवश्रवाआपस्त्रिष्टुप् २० । विश्वेदेवाऋतावृधऋजिश्वाविश्वेदेवागायत्री २१ । इदंविष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री २२ । ज्मयाअत्रवसिष्ठोवसवस्त्रिष्टुप् २३ । इमंमेवरुणशुनःशेपोवरुणोगायत्री २४ । शंनोअजएकपाद्वसिष्ठोऽजएकपात्रिष्टुप् २५ । उतनोनक्तंतान्वोऽहिर्बुध्न्यःप्रस्तारपंक्तिः २६ । संपूषन्नध्वनःकण्वःपूषागायत्री २७ । इतिशौनकोक्ताआश्वलायनानांनक्षत्रमंत्राः ॥ ॥ ॥

**अथज्येष्ठाशांतिविधिर्ब्रह्मयामले । ज्येष्ठादौजननीमाताद्वितीयेजननीपिता । तृतीयेजननीभ्रातास्वयंमाताचतुर्थके । आत्मानंपंचमेहंतिषष्ठेगोत्रक्षयोभवेत् । सप्तमेचोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे । नवमेश्वशुरंहंतिसर्वंहंतिदशांशके । वसिष्ठः— सुरेशताराजनिताधवाग्रजंद्विदैवताराजनितातुदेवरम् । पुरंदरर्क्षेजनितःसुतस्तथास्वस्याग्रजंहंतिनपुत्रिकायदि । पारिजाते— सुखासीनंमुनिश्रेष्ठंगर्गंमुनिगणान्वितम् । कृतांजलिपुटोभूत्वापरिपप्रच्छशौनकः । गर्गउवाच— ज्येष्ठान्**

क्षत्रसंभूतंगंडदोषविनिर्णयम् । तस्यशांतिविधानंचयथावत्कथयाम्यहम् । घटिकैकाचमैत्रातेज्येष्ठादौघटिकाद्वयम् । तयोःसंधिरितिज्ञेयंशिशुगंडंसमीरितम् । प्रथमेचद्वितीयेचज्येष्ठर्क्षेचतृतीयके । पादत्रयेजातनरोज्येष्ठोऽप्यत्रप्रजायते । ज्येष्ठांत्यपादजातस्तुपितुःस्वस्यविनाशनः । जायतेनाऽत्रसंदेहोदशाहाभ्यंतरेतथा । ज्येष्ठर्क्षेऽथपुमान्जातोह्यग्रजस्यविनाशनः। ज्येष्ठर्क्षेकन्यकाजाताहंतिशीघ्रंधवाग्रजं । तच्छांतिंतस्यवक्ष्यामिगंडदोषप्रशांतये । सुदिनेशुभनक्षत्रेचंद्रताराबलान्विते । सूतकांतेतथाकुर्याज्ज्येष्ठाशांतिंविधानतः । वज्रांकुशधरंदेवमैरावतगजान्वितम् । कुर्याच्छचीपतिंरम्यंदेवेंद्रंसुरनायकम् । कर्षमात्रसुवर्णेनकर्षार्धेनाऽथपादतः । तद्विधानंप्रकुर्वीतवित्तशाठ्यंनकारयेत् । शालितंडुलसंपूर्णकुंभस्योपरिपूजयेत् । इंद्रायेंदोमरुत्वतइतिमंत्रेणवाग्यतः । गंधपुष्पैर्धूपदीपैर्नानाभक्ष्यनिवेदनैः । पूजयेद्विधिनाविप्रलोकपालगणान्वितम् । रक्तवस्त्रद्वयोपेतंपूजयेत्सुरनायकम् । तत्रसं (तत्पुरः) स्थापयेत्कुंभांश्चतुर्दिक्षुविशेषतः । तन्मध्येस्थापयेत्कुंभंशतच्छिद्रसमन्वितम् । पुण्योदकसमायुक्तान्वस्त्रयुग्मेनवेष्टितान् । कुंभेषुविन्यसेद्धीमान्पंचगव्यंसमंत्रकम् । पंचामृतंपंचरत्नंमृत्तिकाःसप्तसंख्यकाः । पंचवृक्षकषायांश्चपंचपल्लवकांस्तथा। सुवर्णंकुशदूर्वाश्चशतौषधिंविनिक्षिपेत् । पूजयेद्वारुणैर्मंत्रैश्चतुःकुंभान्प्रयत्नतः । त्वंनोअग्नेजपेदादौसत्वंनोपिद्वितीयके । समुद्रज्येष्ठाइतिचेमंमेगंगेचतुर्थकम्। पूजयेद्वस्त्रयुग्माद्यैश्चतुरःकलशानपि । कलशस्थान्वरुणानपीत्यर्थः । जपंकुर्युःप्रयत्नेनमंत्रैरेभिर्द्विजोत्तमाः । आनोभद्राजपंचादौभद्राअग्नेर्द्वितीयकं । तृतीयंपौरुषंसूक्तंकद्रुद्रायचतुर्थकम् । आचार्योमूलमंत्रेणजपंकुर्याद्विशेषतः । इंद्रसूक्तंरुद्रजाप्यंजपे

न्मृत्युंजयंततः । इंद्रंसंपूज्यदेवेशंवरुणंकुंभसंस्थितम् । सुसंकल्पविधानेनहोमकार्यंततश्चरेत् । समिद्भिर्ब्रह्मवृक्षस्यशतमष्टोत्तरंतथा । सर्पिषाचरुणाचैवमूलमंत्रेणवाग्यतः । हुनेज्जाप्यंचतेनैवयतइंद्रभयेतिच । तिलान्व्याहृतिभिर्हुत्वाशतमष्टोत्तरंपृथक् । भार्याशिशुसमोपेतंयजमानंविशेषतः । अभिषेकंप्रकुर्वीतसूक्तैर्वारुणसंज्ञकैः । समुद्रज्येष्ठादिभिर्मंत्रैरिमंमेवरुणस्तथा । द्यौःशांतेत्यादिभिर्मंत्रैरभिषेकंततश्चरेत् । अभिषेकनिवृत्तौतुयजमानःसमाहितः । शुक्लवस्त्राणिधृत्वाथकुर्यादाज्यावलोकनं । रूपंरूपेतिमंत्रेणचित्रंतच्चक्षुरेवच । देवतापुरतःस्थित्वाधूपदीपनिवेदनम् । दद्यात्स्वाचमनंसम्यक्ताबूलार्घ्यंतथैवच । नमस्तेसुरनाथायनमस्तुभ्यंशचीपते । गृहाणार्घ्यंमयादत्तंगंडदोषप्रशांतये । कार्यंयत्पूजकादीनांशुभंलब्ध्वासमर्पयेत् । जप्त्वातुतत्फलंसर्वंदेवेंद्रायसमर्पयेत् । आचार्यायचगांदद्यात्सुशीलांचपयस्विनीम् । रक्तवर्णांवत्सयुतांसर्वालंकारभूषिताम् । वस्त्रयुग्मपिधानांचयथाविभवसारतः । यक्षगंधर्वसिद्धैश्चपूजितोसिशचीपते । दानेनानेनदेवेशगंडदोषंविनाशय । अष्टोत्तरशतंसंख्याकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । तेभ्योपिदक्षिणांदत्वाप्रणिपत्यक्षमापयेत् । अज्ञानाद्वाथवाज्ञानाद्वैकल्याद्वाधनस्यच । यन्न्यूनमतिरिक्तंवातत्सर्वंक्षंतुमर्हसि । इतिसंप्रार्थयेद्देवमिंद्राणीपतिमुत्तमं । ज्येष्ठाशांतिमिमांकृत्वायथाविध्युक्तमार्गतः । गंडदोषंविनिर्जित्यआयुष्मान्जायतेनरः । इत्युक्तंवृद्धगर्गेणशौनकायविशेषतः । ज्येष्ठानक्षत्रसंभूतगंडदोषप्रशांतये । इतिज्येष्ठानक्षत्रशांतिः ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ सुदिनेदेवनक्षत्रयुतेबालपितुश्चंद्रताराबलान्वितेसूतकांतेगोमुखप्रसवंकृत्वासपत्नीकःकर्तादेशकालसंकीर्तनांतेअस्यशिशोर्ज्येष्ठाजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्री

परमेश्वरप्रीत्यर्थंज्येष्ठाजननशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिऋत्विग्वरणांतंकुर्यात् । ततआचार्यःसर्षपविकिरणभूप्रोक्षणप्रतिमाग्न्युत्तारणानिकृत्वास्थंडिलपूर्वभागेमहीद्यौरित्यादिविधिनास्थापितकलशंशालितंडुलैःपूरयित्वातत्रपूर्णादर्वीतिनिहितपूर्णपात्रेसाष्टदलवस्त्रेकर्षतदर्धतदर्धान्यतरमानहेमनिर्मितांशच्यासहैरावतारोहणांवज्रांकुशद्विभुजांइंद्रप्रतिमांनिधायेंद्रमावाहनाद्युपचारैःपूजयेत् । इंद्रायेंदोमरुत्वतइत्यस्यकश्यपइंद्रोगायत्री आवाहनेविनि० । ॐ इंद्रायेंदोमरुत्वते० ऋक् १ । इंद्रमावाह्य परितोलोकपालांश्चावाह्यतत्समन्वितमिंद्रमुक्तमंत्रेणपूजयन्नासमाप्तिमौनीभवेत् । वस्त्रार्पणकालेरक्तवस्त्रद्वयंनैवेद्यकालेशष्कुल्यादिनानाभक्ष्यनिवेदनंकुर्यात् । पूजांतेतस्यचतुर्दिक्षुकुंभचतुष्टयंतत्पूर्वमध्यभागेचशतच्छिद्रं महीद्यौरित्याद्यावृत्त्यानिधायेमंमेगंगइतिचतुरउदकेनापूर्यतेषुगायत्र्यादिभिःपंचगव्यंगोमूत्रादिआप्यायस्वेत्यादिभिःपंचामृतंक्षीरादि सहिरत्नानीतिपंचरत्नानि स्योनेतिसप्तमृत्तिकाः अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् तत्कषायसहितान् हिरण्यरूपइतिहेम शरासइतिकुशान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः याओषधीरितिसर्वौषधीः प्रादक्षिण्येनमंत्रावृत्त्यानिक्षिप्य युवासुवासाइतिवस्त्रयुग्मवेष्टितेषुतेषुपूर्णपात्राणिनिधायतेषुक्रमेणवरुणपूजांकुर्यात् । प्रथमकलशेत्वंनोअग्नइत्यस्यगोतमोवामदेवोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणपूजने० । ॐ त्वंनोअग्नेवरुणस्यविद्वान्० १ द्वितीये सत्वंनइत्यस्यगोतमोवामदेवोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणपूजने० ॐ सत्वंनोअग्नेवमोभवो० १ तृतीये समुद्रज्येष्ठावसिष्ठोवरुणस्त्रिष्टुप् वरुणपूजने० ॐ समुद्रज्येष्ठाः०

---

१ सग्रहमखांगगोंक्तांज्येष्ठा० ।

१ चतुर्थे इमंमेगंगइत्यस्यसिंधुक्षित्प्रैयमेधोवरुणोजगती वरुणपूजने० ॐ इमंमेगंगे० १ प्रतिकुंभंवस्त्रयुग्मंवस्त्रार्पणसमयेऽर्पयेत् । ततश्चतुर्षुकुंभेषुऋत्विजश्चत्वारिसूक्तानिजपेयुः । आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्तस्यराहूगणोगोतमोविश्वेदेवाः आद्याःपंचसप्तमीचजगत्यःषष्ठीविराट्शेषास्त्रिष्टुभः प्रथमकलशेजपेवि० । ॐ आनोभद्राःक्रतवो० सूक्तम् १५ । भद्राअग्नेरितिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यवाध्र्यश्वःसुमित्रोग्निः आद्येद्वेजगत्यौ शेषास्त्रिष्टुभः द्वितीयकलशेजपे० । ॐ भद्राअग्नेर्वध्र्यश्वस्य० ऋचः १२ । सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्यसूक्तस्यपुरुषोनारायणोनुष्टुप् अंत्यात्रिष्टुप् तृतीयकलशेजपे० । ॐ सहस्रशीर्षा० ऋचः १६ । ततःकद्रुद्रायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्री अंत्यानुष्टुप् चतुर्थकलशेजपे० ॐ कद्रुद्रायप्र० ऋचः ९ । आचार्यऐंद्रकलशे इंद्रायेंदोमरुत्वतइत्येतदष्टोत्तरशतादिसंख्ययाजपित्वा । यतइंद्रेत्यस्यभर्गइंद्रस्त्रिष्टुप् एतत् सूक्तंजपित्वा इंद्रंविश्वाअवीवृधन्नित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यजेतामाधुच्छंदसइंद्रोनुष्टुप् एतत्सूक्तंचजपित्वारुद्रजपंत्र्यंबकमितिमृत्युंजयजपंचपंचाष्टाविंशत्यादिसंख्ययाकुर्यात् । ततःस्थंडिलेऽग्निंवेद्यांग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्याऽन्वादध्यात् । अत्रप्रधानं ग्रहानेतत्संख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः तदंगदेवताअप्येतत्संख्याभिरुक्ताहुतिभिः । इंद्रंपलाशसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिः प्रजापतिमष्टोत्तरशततिलाहुतिभिः । शेषेणेत्यादिआज्यभागांतेग्रहानुत्कीर्त्यअष्टोत्तरशताहुतिपर्याप्तंसमिच्चर्वाज्यात्मकंद्रव्यत्रयमिंद्रायेतितत्संख्याहुतिपर्याप्तास्तिलाःप्रजापतयइतित्यागोत्तरंवाग्यतआचार्यो द्रव्यत्रयेणोक्तसंख्यंहोमंकुर्यात् । एतद्धोमांतेइंद्रायेंदोमरुत्वतइति० यतइंद्रेतितृचंजपेत् । ततोव्याहृतिभिःतिलानष्टो

त्तरशतंजुहुयात् । आज्यतिलचरुशेषैः स्विष्टकृतंहुत्वाप्रायश्चित्तहोमांतंकुर्यात् । ततोवलिदानंलोकपालादिभ्योंतेइंद्रायक्षेत्रपालायच ततःपूर्णाहुतिःप्रणीत । विमोकःसंस्थाजपश्च परिस्तरणविसर्जनादिपर्युक्षणांतं । ततोभार्याशिशुसहितयजमानमासनेसमुपवेश्याऽभिषेकः । नहितेक्षत्रमितिदशर्चस्यसूक्तस्यजीगार्तिःशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० । ॐ नहितेक्षत्रंनसहोन० ऋचः १० यच्चिद्धीत्येकविंशर्चस्यसूक्तस्यजीगार्तिःशुनःशेपोवरुणोगायत्री अभिषेके० ॐ यच्चिद्धितेविशोय० ऋचः २१ इदंकवेरित्येकादशर्चस्यसूक्तस्य कूर्मोगृत्समदोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० । ॐ इदंकवेरादित्य० ऋचः ११ । समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् अभिके० ॐ समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्य० ऋचः ४ समुद्रज्येष्ठादिभिर्मंत्रैः इमंमेवरुणेत्यस्याजीगार्तिःशुनशेपोवरुणोगायत्री अभिषे० । ॐ इमंमेवरुण० ऋक् । द्यौःशांतासादित्येनशांतेति० पृथिवीशांतिरंतरिक्षंशांतिरिति० तयाहंशांत्येतियाजुषमंत्रैश्चत्रिभिरभिषिक्तोयजमानःपत्न्यासहशुक्लवस्त्रचंदनकुसुमानिधृत्वा रूपंरूपमितिचित्रंदेवानामितितच्चक्षुरितिमंत्रैरवलोकितमाज्यंसदक्षिणंब्राह्मणायदत्वाइंद्रपुरोभागेस्थित्वागंधादिपंचोपचारैःसंपूज्यआचमनतांबूलेनिवेद्यगंधपुष्पफलयुक्तमर्घ्यंनिवेदयेत् । मंत्रः । नमस्तेसुरनाथायनमस्तुभ्यंशचीपते । गृहाणार्घ्यंमयादत्तंगंडदोषप्रशांतयेइति । ततआचार्यायसुशीलांपयस्विनींरक्तवर्णांसवत्सांहेमशृंगादिसर्वालंकारभूषितांगांदद्यात् गोदानविधिना । मंत्रविशेषः । यक्षगंधर्वसिद्धैश्चपूजितोसिशचीपते । दानेनानेनदेवेशगंडदोषंप्रशामयेति । अस्यागोर्दक्षिणात्वान्नदक्षिणांतरम् । ततोष्टोत्तरशतब्राह्मणान्भोजयेत् तेभ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वाप्रणिपत्यक्षमध्वंम

मापराधानितिक्षमाप्येंद्रंप्रार्थयेत् । अज्ञानादथवाज्ञानाद्वैकल्याद्वाधनस्यच । यन्न्यूनमतिरिक्तंवातत्सर्वंक्षंतुमर्हसिइति । ततोविसर्जनं । आचार्यहस्तेसोपस्करांप्रतिमांदत्वाऽग्निंसंपूज्यविभूतिंधृत्वागच्छगच्छेतितंविसृज्यज्येष्ठाशांतिसुकृतंयन्मयालब्धंतेनदेवेंद्रनामेश्वरःप्रीयतामिति ॥ इतिज्येष्ठाशातिविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथव्यतीपातवैधृतिसंक्रमणशांतिः ॥ शौनकः—अथातःसंप्रवक्ष्यामिशौनकःशांतिमुत्तमाम् । वैधृतौचव्यतीपातेमहादोषोऽभिजायते । कुमारजन्मकालेतुव्यतीपातश्चवैधृतिः । संक्रमश्चरवेस्तत्रजातोदारिद्र्यकारकः । दरिद्राणांमहादुःखंव्याधिपीडामहद्भयम् । अश्रियंमृत्युमाप्नोतिनाऽत्रकार्याविचारणा । स्त्रीणांचशोकदुःखंचसर्वनाशकरोभवेत् । शांतिर्वापुष्कलाकार्यातत्रदोषोनकश्चन । गोमुखप्रसवंकुर्याच्छांतिंकुर्यात्प्रयत्नतः । जपाभिषेकदानैश्चहोमादपिविशेषतः । नवग्रहमखंकुर्यात्तस्यदोषस्यशांतये । प्रथमंगोमुखाज्जन्मततःशांतिंसमाचरेत् । ग्रहस्यपूर्वदिग्भागेगोमयेनानुलिप्यच । अलंकृतेसुदेशेतुव्रीहिराशिंप्रकल्पयेत् । पंचद्रोणमितंधान्यंतदर्धंतंडुलेनच । तदर्धंतुतिलैःकुर्या[१]दन्योन्योपरिकल्पयेत् । द्रव्यत्रितयराशौतुअष्टपत्रंलिखेद्बुधः । पुण्याहंवाचयित्वातुआचार्यंवृणुयात्पुरा । आचारवंतंधर्मज्ञंकुलीनंचकुटुंबिनम् । मंत्रतंत्रार्थतत्वज्ञंशांतिकर्मणिकोविदम् । पंचांगभूषणंदद्यात्पट्टवस्त्रांगुलीयकम् । राशौप्रतिष्ठितंकुंभमव्रणंसुमनोहरम् । तीर्थोदकेनसंपूर्यसमृदौषधिपल्लवम् । सगव्यपंचरत्नंचवस्त्रयुग्मेनवेष्टयेत् । तस्योपरिन्यसेत्पात्रंसूक्ष्मवस्त्रेणसंयुतम् । प्रति

---

[१] अन्योन्योपरीत्यस्यव्यवस्था । धान्यंव्रीहिःतस्यप्रथमंपरिधिः । तन्मध्येतंडुलपरिधिः । तदंतस्तिलपरिधिरितिराशित्रयविवेकः शां. र. ।

मास्थापयेद्धीमान्साधिप्रत्यधिदेवताम् । चंद्रादित्याकृतीपार्श्वेमध्येवैधृतिमर्चयेत् । वैधृतिंतद्देवतारुद्रम् । एवमेवव्यतीपातशांतौसंक्रमणस्यच । भानोरुत्तरतोरुद्रमाग्निंदक्षिणतोयजेत् । निष्कमात्रेणवार्धेनपादेनापिस्वशक्तितः । प्रतिमांकारयेद्धीमांस्तत्तल्लक्षणलक्षिताम् । प्रतिमापूजनार्थायवस्त्रयुग्मंनिवेदयेत् । अधिदेवोभवेत्सूर्यश्चंद्रःप्रत्यधिदैवतम् । ततोव्याहृतिपूर्वेणतत्तन्मंत्रेणपूजयेत् । त्रैयंबकेणमंत्रेणप्रधानप्रतिमांयजेत् । उत्सूर्यइतिमंत्रेणसूर्यपूजांसमाचरेत् । आप्यायस्वेतिमंत्रेणसोमपूजांसमाचरेत् । उपचारैःषोडशभिर्यद्वापंचोपचारकैः । अर्चित्वागंधपुष्पाद्यैःफलंनैवेद्यमर्पयेत् । मृत्युंजयेनमंत्रेणप्रधानप्रतिमांस्पृशन् । अष्टोत्तरसहस्रंवाअष्टोत्तरशतंतुवा । अष्टाविंशतिवारंवापूजांतेचस्वशक्तितः । सर्वंसौरंप्रजाप्याथसोमार्थंसोममंत्रतः । आनोभद्रेतिसूक्तंचभद्राअग्नेश्चसूक्तकम् । जपेत्तुपौरुषंसूक्तंत्रैयंबकमतःपरम् । कुंभंस्पृष्ट्वाचतुर्दिक्षुजपंकुर्युस्तथर्त्विजः । कुंभस्यपश्चिमेदेशेस्थंडिलेग्निंप्रकल्पयेत् । स्वगृह्योक्तविधानेनकारयेत्संस्कृतानलं । त्रैयंबकेणमंत्रेणसमिदाज्यचरून्हुनेत् । अष्टोत्तरसहस्रंवाअष्टोत्तरशतंतुवा । अष्टाविंशतिवाकुर्यात्स्वस्वशक्त्यनुसारतः । मृत्युंजयेनमंत्रेणतिलहोमंसमाचरेत् । ततःस्विष्टकृतंहुत्वाअभिषेकंतुकारयेत् । समुद्रज्येष्ठासूक्तेनआपोहिष्ठातृचेनच । अक्षीभ्यामितिसूक्तेनपावमानीभिरेवच । त्रैयंबकेणउत्सूर्यआप्यायस्वेतिमंत्रतः । सुरास्त्वामितिमंत्रैश्चअभिषेकंसमाचरेत् । अभिषेकाप्लुतंवस्त्रमाचार्यायनिवेदयेत् । श्वेतवस्त्रधरोभूत्वाभूषणाद्यैरलंकृतः । यजमानःस्त्रियायुक्तआज्यावेक्षणमाचरेत् । आचार्यंपूजयेद्भक्त्यावस्त्रहेमांगुलीयकैः । गोदानंवस्त्रदानंचस्वर्णदानंविशेषतः । तद्दोषशमनार्थायआचार्यायप्रदापयेत् ।

प्रच्छादनपटंदद्यात्ततःशांतिर्भवेदिति । जापकेभ्योब्राह्मणेभ्योदक्षिणाःप्रतिपादयेत् । दीनांधकृपणेभ्यश्चप्रदद्याद्भूरिदक्षिणाम् । ब्राह्मणान्शतसंख्याकान्मिष्टान्नैर्भोजयेच्चतान् । तानाचार्यंऋत्विजश्चेत्यर्थः । बंधुभिःसहभुंजीतयथाविभवसारतः । एवंयःकुरुतेमर्त्योनैवदुःखमवाप्नुयात् । आयुरारोग्यमैश्वर्यंमातापित्रोःशिशोरपि । सर्वदुःखनिवृत्तिश्चपुत्रपौत्रप्रवर्धनम् । सर्वान्कामानवाप्नोतिसुखीभूत्वाचिरंवसेदिति ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ गोमुखप्रसवमुक्तविधिनाकृत्वादेशकालौसंकीर्त्योऽस्यशिशोर्व्यतीपातजन्मसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशांतिंकरिष्यइति[1]संकल्प्य गणेशपूजनाद्युक्तलक्षणाचार्यवरणंकुर्यात् । वृतायतस्मैपट्टवस्त्रयुगंकुंडलयुगमंगुलीयकंचदद्यात् । आचार्योयदत्रसंस्थितमितिसर्षपविकिरणंशुचीवइतिपंचगव्येनआपोहिष्ठेत्यद्भिश्चगृहपूर्वदिग्भागंप्रोक्ष्यस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमितिमंत्राभ्यांप्रार्थ्य तत्रैवगोमयलिप्तेरंगवल्ल्याद्यलंकृतेसमदेशेमहीद्यौरितिभुवमभिमृश्यओषधयःसमितिपंचद्रोणपरिमितव्रीहिराशिंकृत्वा तदुपरिसार्धद्रोणद्वयमिततंडुलराशिंतदुपरिसपादद्रोणमिततिलराशिंचकृत्वातत्राष्टदलंकृत्वाआकलशेष्वितितत्राऽव्रणंकुंभंप्रतिष्ठाप्य इमंमेगंगेइतितीर्थोदकेनापूर्यस्योनापृथिवीतिसप्तमृदः याओषधीरितिसर्वौषधीरश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् गायत्र्यागंधद्वारामाप्यायस्वदधिक्राव्णस्तेजोसिशुक्रमसीतिपंचगव्यानिगंधद्वारामितिगंधं सहिरत्नानीतिपंचरत्नानितत्रनिक्षिप्यवस्त्रयुग्मेनावेष्ट्यतदुपरिसूक्ष्मवस्त्रयुतंपूर्णपात्रंपूर्णादर्वीतिनिधायतदुपरिनिष्कतदर्धतदर्धान्यतरमानेनहेमनिर्मितांसूर्यप्रतिमां

---

[1] व्यतीपातसंक्रमयोस्तुतत्तच्छब्दस्योहेनसंकल्पः । एकदिनेतयोःसत्वेतंत्रेणैकैवशांतिः । वैधृतिसंक्रांत्योःसत्वेतुशांतिद्वयंपृथक्कार्यं ।

निधायतत्रसूर्यमावाहनाद्युपचारैःपूजयेत् । व्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिःप्रजापतिर्बृहती । उत्सूर्यइतिमंत्रस्यमैत्रावरुणिर्वसिष्ठःसूर्यस्त्रिष्टुप् पूजनेवि० । ॐ भूर्भुवःस्वःउत्सूर्योबृहदर्चीं० ऋक् १ । तद्दक्षिणतोग्निमावाहयेत् । अग्निंकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निपूजने० । ॐ भूर्भुवःस्वःअग्निंदूतं० ऋक् उत्तरतोरुद्रमावाहयेत् । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रुद्रपू० । ॐ भूर्भुवःस्वःत्र्यंबकंयजा० ऋक् । एवमेवसंक्रांतिशांतौसंक्रांतिशांतिंकरिष्येइतिसंकल्पेविशेषः । व्यतीपातसंक्रमणयोर्जन्मनितुव्यतीपातसंक्रांतिशांतीतंत्रेणकरिष्येइतिसंकल्पः । तिस्रोदेवताःषोडशोपचारैःवस्त्रयुग्मसहितैःपंचोपचारैर्वासंपूज्यगंधपुष्पाद्यर्चितफलनैवेद्यंसमर्प्यप्रधानप्रतिमांस्पृशन्सर्वसौरमंत्रान्जपेत् । उदुत्यमितित्रयोदशर्चस्यसूक्तस्यकाण्वःप्रस्कण्वोनवाद्यागायत्र्योंत्याश्चतस्रोनुष्टुभः । चित्रंदेवानामितिषळर्चस्यसूक्तस्यांगिरसःकुत्सस्त्रिष्टुप् । इंद्रंमित्रमितिद्वयोरौचथ्योदीर्घतमास्त्रिष्टुप् । हंसःशुचिषदित्यस्यगौतमोवामदेवोजगती । यत्त्वासूर्येत्यस्यात्रिरनुष्टुप् यदद्यसूर्येत्येकस्याउत्सूर्यइतितिसृणांउद्वेतीतिसार्धचतसृणां उदुत्यद्दर्शतमितितिसृणांमैत्रावरुणिर्वसिष्ठस्त्रिष्टुप् । उदुत्यद्दर्शतमिति बृहती शीर्ष्णःशीर्ष्णःसतोबृहती तच्चक्षुरितिपुरउष्णिक् । बण्महाँअसीतिद्वयोर्भार्गवोजमदग्निःपूर्वाबृहतीउत्तरासतोबृहती । नमोमित्रस्येतिद्वादशर्चस्यसूक्तस्यसूर्योभितपाःसूर्योजगतीदशमीत्रिष्टुप् । सूर्योनोदिवइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यसौर्यश्चक्षुर्गायत्री । विभ्राड्बृहदितिचतसृणांसौर्योविभ्राड्जगती विभ्राजमितिप्रस्तारपंक्तिः । आयंगौरितितृचस्यसार्पराज्ञीगायत्री । सर्वेषांसूर्योदेवता जपेवि० । ततोरुद्रप्रतिमांस्पृशन्मृत्युंजयमंत्रमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति

वारंवाजपेत् । ततश्चत्वारऋत्विजश्चतुर्दिक्षुकुंभंस्पृष्ट्वाक्रमेणसूक्तानिजपेयुः । पूर्वस्याम् आनोभद्राइतिसूक्तस्यराहूगणोगोतमऋषिः विश्वेदेवादेवता आद्याःपंचसप्तमीचजगत्यः षष्ठीविराट्शेषास्त्रिष्टुभः जपेवि० । ॐ आनोभद्राः० ऋचः १५ । दक्षिणस्याम् भद्राअग्नेरितिद्वादशर्चस्यवाध्र्यश्वःसुमित्रऋषिःअग्निर्देवताआद्येद्वेजगत्यौअंत्यास्त्रिष्टुभः जपेवि० ॐभद्राअग्नेर्वध्र्यश्वस्य० ऋचः १२ । प्रतीच्यांसहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्यसूक्तस्य नारायणऋषिः पुरुषोदेवताअंत्यात्रिष्टुप्शेषाअनुष्टुभः जपेवि० ॐ सहस्रशीर्षा० ऋचः १६ । उत्तरस्याम् त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् जपेवि० ॐत्र्यंबकंयजा० । अथकुंभपश्चिमदेशेऽग्निंस्थंडिलेस्वगृह्योक्तविधिनाप्रतिष्ठाप्यकुंभस्योत्तरतोग्रहाणामावाहनादिपूजांकृत्वातदीशान्यांकलशस्थापनंकृत्वाऽग्नेःपश्चिमतउपविश्यान्वादध्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानम् । आदित्यादिग्रहांश्चिकीर्षितसंख्याकाभिः अर्कादिजातीयसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः ग्रहपीठदेवताःएकैकसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः । सूर्यंप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याभिःसमिदाज्यचर्वाहुतिभिः । अग्निंरुद्रंचप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । मृत्युंजयंअष्टोत्तरशतसंख्याभिस्तिलाहुतिभिः । शेषेणेत्यादि० प्रायश्चित्ताहुत्यंतेबलिदानंततःपूर्णाहुतिःप्रणीताविमोकःसंस्थाजपेनोपस्थानंच । ततोधृतनूतनवस्त्रयोर्दंपत्योःसबालयोरभिषेकः । समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् अभिषेके० । आपोहिष्ठेतितिसृणांसिंधुद्वीपआपोगायत्री अभिषेके० । अक्षीभ्यांतइतिषण्णांविवृहायक्षमहानुष्टुप् अभिषेके० । स्वादिष्ठयेतिपावमानीनांमधुच्छंदाःपवमानःसोमोगायत्री अभिषेके० । उत्सूर्यो० अग्निंदूतं० त्र्यंबकं० पूजाकालेउक्तमेषामृष्यादि । सुरास्त्वामभिषिंचंत्वि

त्यादिनापौराणमंत्रेणचाभिषेकांतेऽभिषेकवासआचार्यायसमर्पयेत्सपत्नीकःश्वेतवस्त्रचंदनादिधृत्वाभूषणमालादिनालंकृतआज्यमवेक्ष्यतत्पात्रंसदक्षिणंब्राह्मणायदत्वावस्त्रहेमांगुलीयकैःआचार्यंसंपूज्यव्यतीपातजननदोषशांत्यर्थंगोवस्त्रस्वर्णानितुभ्यंसंप्रददेइतिआचार्यायतानिदत्वा तदर्थंप्रच्छादनपटंतथैवदद्यात् ऋत्विग्भ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वादीनांधकृपणेभ्योभूयसींदत्वाशतंब्राह्मणानृत्विग्भिःसहमिष्टान्नैर्भोजयित्वासंपूर्णतांवाचयित्वाकर्मेश्वरार्पणंकृत्वाबंधुभिःसहभुंजीतेति व्यतीपातसंक्रांतिशांती ॥ वैधृतिशांतौतुसंकल्पेवैधृतेरुल्लेखः । आवाहनमध्येसव्याहृतिकेनत्र्यंबकमितिमंत्रेणरुद्रमावाह्यदक्षिणतउत्सूर्योबृहदर्चींषीतिसूर्यंउत्तरतश्चाप्यायस्वेतिसोममावाह्यपूजनम् । रुद्रप्रतिमांस्पृष्ट्वामृत्युंजयमंत्रमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिवारंवाजपः । सूर्यप्रतिमांस्पृष्ट्वासर्वसौरजपः । सोमप्रतिमांस्पृष्ट्वाआप्यायस्वेतिजपः । अन्वाधानेरुद्रंसमिच्चर्वाज्यैःप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः । सूर्यसोमौप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । मृत्युंजयमष्टोत्तरसहस्रशतविंशत्यन्यतरसंख्याभिस्तिलाहुतिभिः शेषेणेत्यादितथैवहोमःकार्यइतिविशेषः ॥ इतिवैधृतिशांतिः ॥

अथैकनक्षत्रजननशांतिः ॥ वृद्धगार्ग्यः—एकस्मिन्नेवनक्षत्रेभ्रात्रोर्वापितृपुत्रयोः । प्रसूतिश्चेत्तयोर्मृत्युर्भवेदेकस्यनिश्चयः । तद्दोषनाशायतदाप्रशस्तांशांतिंचकुर्यादभिषेचनंच । संपूज्यऋक्षप्रतिमांतदग्रेदानंचकुर्याद्विभवानुरूपम् । तत्रशांतिंप्रवक्ष्यामिसर्वाचार्यमतेनतु । शुभर्क्षेशुभवारेचचंद्रताराबलान्विते । रिक्ताविष्टिविवर्ज्येतुप्रारभेद्विभवेसुधीः । आचार्यंवरयेत्पूर्वंचतुरश्चद्विजोत्तमान् । पुण्याहंवाचयित्वातुशांतिकर्मसमारभेत् । अग्नेरीशानदिग्भागेनक्षत्रप्रतिमांततः । तत्तद्दक्षो

क्तमंत्रेणअर्चयेत्कलशोपरि । रक्तवस्त्रेणसंछाद्यवस्त्रयुग्मेनवेष्टयेत् । स्वशाखोक्तेनमार्गेणकुर्यादग्निमुखंततः । अनेनैवतुमंत्रेणहुनेदष्टोत्तरंशतम् । प्रत्येकंसमिदन्नाज्यैःप्रायश्चित्तांतमेवच । अभिषेकंततःकुर्यादाचार्यःपितृपुत्रयोः । वस्त्रालंकारगोदानैराचार्यंपूजयेत्पुनः । ऋत्विजांदक्षिणांदत्वामाषत्रयसुवर्णकम् । देवताप्रतिमादानंधान्यवस्त्रादिभिःसह । यानशय्यासनादीनिदद्यात्तद्दोषशांतये । भोजयेद्ब्राह्मणान्सर्वान्वित्तशाठ्यविवर्जितइति । भ्रात्रोःपितृपुत्रयोरित्यत्रपुंस्त्वमविवक्षितं । निमित्तविशेषणत्वात् । एकोदरयोर्जन्यजनकयोश्चैकनक्षत्रजननेशांतिरित्याशयः । पूर्वंविधित्सितपुण्याहवाचनात् । अतएववाचयित्वेतिआनंतर्यार्थकम् । तन्नक्षत्रप्रतिमांतद्देवताप्रतिमांवा । नक्षत्रदेवतापूज्यात्वधिप्रत्यधिपूर्वकमितिज्योतिर्निबंधात् । तत्तद्दक्षोक्तमंत्राः[1]अग्निर्नःपातुकृत्तिकाइत्यादयः । नक्षत्रतद्देवतोभयप्रकाशकत्वात्पक्षद्वयेपिविनियोगार्हाः ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ उक्तसमयेजनकनक्षत्रोत्पत्तौगोमुखप्रसवंकृत्वाएकोदरनक्षत्रोत्पत्तौतमकृत्वादेशकालौसंकीर्त्य अस्यशिशोःपित्रेकनक्षत्रोत्पत्तिसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशांतिमभिषेकंपूजितनक्षत्रप्रतिमाग्रेयथाशक्तिदानंचकरिष्येइतिसंकल्प्य गणपतिंसंपूज्यआचार्यंचतुरऋत्विजश्चवृत्वापुण्याहंवाचयीत । मात्रेकनक्षत्रेत्याद्यूहेनान्यत्रसंकल्पः । ततआचार्योयदत्रसंस्थितमितिसर्षपविकिरणप्रोक्षणप्रार्थनानिकृत्वास्थंडिलादैशान्यांकलशंमहीद्यौरित्यादिनास्थाप्यतत्ररक्तवस्त्राच्छादितेनक्षत्रतद्देवतान्यतरप्रतिमांकृताग्न्युत्तारणांतन्मंत्रेणावाहनाद्युपचारैःपूजयेत् । वस्त्रा

---

[1] अत्रयद्यपिनक्षत्रदेवतामंत्राअग्निर्नइत्याद्युक्तास्तथापिशांतिरत्नकारेणाश्वलायनार्थंनिर्णीताःपूर्वमाश्लेषाशांत्यंतेसंगृहीतास्ततोग्राह्याः ।

पर्णेतद्युग्ममर्पयेत् । पूजांतेऽग्निंव्याहृतिभिःप्रतिष्ठाप्यान्वाधानेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेअदोनक्षत्रमिमांदेवतांवाप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिःशेषेणेत्यादिप्रायश्चित्तहोमांतेप्रणीताविमोकादि । आचार्यःकलशोदकेनतयोरभिषेकंकुर्यात्ययोरेकनक्षत्रजन्म । ततःपूजितप्रतिमाग्रेआचार्यायवस्त्रालंकारगांदद्यात् । ज्योतिर्निबंधोक्त्यास्वर्णरूप्यमयौहरिहरौसंपूज्यतौवादद्यात् । विविधस्यास्यविश्वस्यपितरौविश्वतोमुखौ । प्रीयेतांमूर्तिदानेनदेवौहरिहरावुभावितिमाषत्रयसुवर्णमृत्विग्भ्योदत्वा उत्तरपूजाविसर्जनेआचार्यहस्तेप्रतिमाप्रतिपादनंधान्यवस्त्रादिभिःसहयानशय्यासनादीनांब्राह्मणांतरेभ्योदानंकृत्वा तैःसहाचार्यऋत्विजोभोजयित्वापूर्णतांवाचयित्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ इत्येकनक्षत्रजननशांतिः ॥

अथग्रहणजननशांतिः ॥ पारिजाते—ग्रहणेचंद्र[1]सूर्यस्यप्रसूतिर्यदिजायंते[2] । शांतिंतेषांप्रवक्ष्यामिनराणांहितकाम्यया । यस्मिन्नृक्षेविशेषेणग्रहणंसंप्रजायते । तदृक्षाधिपतेरूपंसुवर्णेनप्रकल्पयेत् । यथाशक्त्यनुसारेणवित्तशाठ्यंनकारयेत् । सूर्यग्रहेसूर्यरूपंसुवर्णेनविशेषतः । चंद्रंचंद्रग्रहेधीमान्रजतेनविशेषतः । राहुरूपंप्रकुर्वीतनागेनैवविचक्षणः । शुचौदेशेप्रयत्नेनगोमयेनप्रलेपयेत् । नागेनसीसेन । तस्योपरिन्यसेद्धीमान्नववस्त्रंसुशोभनम् । त्रयाणांचैवदेवानांस्थापनंतत्रकारयेत् । रक्ताक्षतंरक्तगंधंरक्तपुष्पांबराणिच । सूर्यग्रहेप्रदातव्यंसूर्यप्रीतिकरंचतत् । श्वेतवस्त्रंश्वेतमाल्यंश्वेतगंधाक्षतादिच ।

---

[1] चंद्रसूर्ययोरित्यर्थः । ग्रहणकालेजन्मन्येवेयं । वेधकालेजन्मनिनैवशांतिःकिंतुदुष्टकालत्वाद्रुद्राभिषेकःकार्यइतिधर्माब्धौ ।

[2] अत्रविशेषः—व्याधिपीडातदास्त्रीणामादौतुऋतुदर्शनात् । इत्थंसंजायतेयस्तुतस्यमृत्युर्नसंशयः । व्याधिपीडाचदारिद्र्यंशोकश्चकलहोभवेत् ॥ इतिविशेषः ।

चंद्रग्रहेप्रदातव्यंचंद्रप्रीतिकरंपरम् । राहवेचैवदातव्यंकृष्णपुष्पांबरादिच । दद्यान्नक्षत्रनाथायश्वेतगंधानुलेपनम् । सूर्यसंपूजयेद्धीमानाकृष्णेनेतिमंत्रतः । चंद्रग्रहेतथासम्यगाप्यायस्वेतिमंत्रतः । स्वर्भानोरितिमंत्रेणराहुंयत्नेनपूजयेत् । एवंसंपूजयेद्धीमान्समिद्भिश्चार्कसंभवैः । सूर्यग्रहइत्यर्थः । चंद्रग्रहेचपालाशैःसमिद्भिर्जुहुयान्नरः । दूर्वाभिर्जुहुयाद्धीमान्राहोःसंप्रीणनायच । समिद्भिर्[1]जलवृक्षस्यभेशायजुहुयादधः । भेशायनक्षत्राधिपतये । आज्येनचरुणाचैवतिलैश्चजुहुयात्ततः । पंचगव्यैःपंचरत्नैःपंचत्वक्पंचपल्लवैः । जलैरोषधिकल्कैश्चसहितैःकलशोदकैः । अभिषेकंप्रकुर्वीतयजमानंप्रयत्नतः । मंत्रैर्वरुणदेवत्यैरापोहिष्ठादिभिस्त्रिभिः । इमंमेगंगेपरतस्तत्त्वायामीतिमंत्रकैः । अभिषेकेनिवृत्तेतुयजमानःसमाहितः । आचार्यंपूजयेत्पश्चात्सुशांतोनियतेंद्रियः । तस्मैदद्यात्प्रयत्नेनभक्त्याप्रतिकृतित्रयम् । ( प्रतिकृतिःप्रतिमा ) दक्षिणाभिश्चसंयुक्तंयथाशक्त्यनुसारतः । ब्राह्मणान्भोजयित्वातुप्रणिपत्यक्षमापयेत् । तेभ्योपिदक्षिणांदद्याद्यजमानःसमाहितः । अनेनविधिनाशांतिंकृत्वासम्यग्विशेषतः । अकालमृत्युंशोकंचव्याधिपीडांचनाप्नुयात् । सौख्यंसौमनसंनित्यंसौभाग्यंलभतेनरः । इत्थंग्रहणजातानांसर्वारिष्टविनाशनम् । कथितंभार्गवेणेदंशौनकायमहात्मने ॥ ॥ अथप्रयोगः । सूर्यग्रहणेप्रसूतौतत्कालस्थितनक्षत्रस्ययाधिष्ठात्र्यश्व्यादिदेवतातस्याःसूर्यस्यचयथाशक्तिहेम्नाप्रतिमेविधाय राहोःसीसेननागाकृतिंकृत्वाशौचांते ममभार्यायाःसूर्यग्रहणकालीनप्रसूतिसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसग्रहमखांशांतिं

---

[1] ब्रह्मवृक्षोत्थैरिति शां. र. । अन्वाधानेपितथैव ।

करिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनाद्याचार्यवरणपूजांतंकुर्यात् । चंद्रग्रहेतुसूर्यस्थानेराजतंचंद्रबिंबंकुर्यात् । अन्यद्बयंपूर्ववत् । संकल्पेसूर्यस्थानेचंद्रपदप्रयोगः । ततआचार्योयदत्रेत्याद्यंतेशुचिदेशंगोमयेनोपलिप्यतत्रनवंसदशंक्षालितंश्वेतवस्त्रंप्रसार्य तत्रोक्तदेवतानांरूपत्रयंनिधाय आकृष्णेनहिरण्यस्तूपःसवितात्रिष्टुप् पूजनेवि० । ॐ आकृष्णेनरज० । मध्येसूर्यंरक्तवर्णैर्वस्त्रगंधाक्षतपुष्पैर्धूपदीपादिभिश्चपूजयेत् । तद्दक्षिणतोराहुंकृष्णवर्णैर्गंधादिभिर्धूपादिभिश्चपूजयेत् । स्वर्भानोरित्यस्यात्रिः स्वर्भानुस्त्रिष्टुप् राहुपूजने० । ॐ स्वर्भानोरधयदिं० । नक्षत्रदेवतामग्निर्नःपातुकृत्तिकाइतितैत्तिरीयपठिततत्तद्वाक्याष्टकेन पूजयेत् सूर्यस्योत्तरतः। चंद्रग्रहेतुमध्येचंद्रपूजनम् । आप्यायस्वगोतमःसोमोगायत्री चंद्रपूजनेवि० ॐआप्यायस्व० इति मंत्रेणश्वेतगंधादिभिर्धूपादिभिश्चेतिविशेषः । अन्यदेवतयोःपूजनंपूर्ववत् । ततोऽग्निस्थापनंग्रहपूजाकलशस्थापनांतंकृत्वान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेग्रहान्वाधानंकृत्वा सवितारंअर्कसमिदाज्यचरुतिलानांप्रत्येकमष्टोत्तरशताहुतिभिः स्वर्भानुंदूर्वासहिताज्यादीनांतावतीभिराहुतिभिः नक्षत्रदेवतामग्निंजलवृक्षसमित्सहिताज्यादीनां तावतीभिराहुतिभिःशेषेणेत्यादि । चंद्रग्रहेअर्कस्थानेचंद्रस्यार्कसमित्स्थानेपालाशसमिधांनिर्देशः । गृहसिद्धान्नस्यपर्यग्निकरणादि । यथान्वाधानंत्यागः । प्रायश्चित्तांतेबलिपूर्णाहुती । संस्थाजपांतेपंचगव्यपंचरत्नपंचत्वक्पंचपल्लवैरोषधिकल्कैश्चमिश्रितलौकिकजलैर्ग्रहकलशोदकैश्चसहितैरभिषेकः।आपोहिष्ठेतितृच०द्वीपआपोगायत्री अ०।इमंमेगंगेइतिसिंधुक्षित्प्रैयमेधोनद्योजगती।(पितं

---

१ शां. र. अयंमंत्रोनैवगृहीतः ।

रःपितामहाःपरेवरेइतियाजुषमंत्रेण ) तत्त्वायामिशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० । अभिषेकांतेआचार्यंसंपूज्यतस्मै प्रतिमात्रयंदक्षिणांचदद्यात् । ततोग्रहाणांपूजनविसर्जनेप्रतिमाप्रतिपादनंब्राह्मणभोजनसंकल्पश्चेतिग्रहणशांतिः ॥ अथ नक्षत्रगंडांतशांतिविधिः । पारिजाते—अश्विनीमघमूलादौत्रिषट्कनवनाडिकाः । रेवतीसार्पशाक्रांतेमासाश्चऋतुसायकाः । अश्विनीमघमूलादौनाडिकाद्वितयंतथा । रेवतीसार्पशाक्रांतेनाडिकाद्वयमेवहि । अश्विनीमघमूलानांपूर्वार्धेबाध्यतेपिता । पूषाहिशाक्रपश्चार्धेजननीबाध्यतेशिशोः । पूषारेवती अहिराश्लेषा शाक्रंज्येष्ठा । पितृघ्नश्चदिवाजातोरात्रिजातस्तुमातृहा । दिवाजातोदिवागंडांतेजातइतियावत् । आत्मघ्नःसंध्ययोर्जातोनास्तिगंडेनिरामयः । सर्वेषांगंडजातानांपरित्यागोविधीयते । वर्जयेद्दर्शनं(तेषां)[1]श्रावंतच्चषाण्मासिकंभवेत् । तच्चवर्जनम् । तस्यशांतिंप्रवक्ष्यामिसोममंत्रेणभक्तिमान् । कांस्यपात्रंप्रकुर्वीतपलैःषोडशभिर्नवम् । अष्टाभिश्चचतुर्भिर्वाद्वाभ्यांवाशोभनंतथा । तन्मध्येपायसेशंखेनवनीतेनपूरिते । राजतंचंद्रमभ्यर्चेत्सितपुष्पसहस्रकैः । दैवज्ञःक्षौमवासास्तुसितपुष्पांबरार्चितः । सोमोहमितिसंचिंत्यपूजांकुर्यादतंद्रितः । जपेत्सहस्रकंमंत्रंश्रद्दधानःसमाहितः । आप्यायस्वेतिमंत्रेणपूजांकुर्यात्समाहितः । दद्याद्वैदक्षिणामिष्टांगंडदोषप्रशांतये । शुक्लंवागीश्वरंचैवताम्रपात्रसमन्वितम् । गंडदोषप्रशांत्यर्थंदद्याद्वेदविदेशुचिः । ज्योतिर्निबंधे—कुंकुमंचंदनंकुष्ठंगोरोचनमथापिच । चूतपूर्णेषुकुंभेषुचतुर्षुप्रक्षिपेत्क्रमात् । सहस्राक्षेणमंत्रेणबालकंस्नापयेन्नरः । पितृयु

---

[1] तेषांतच्च पा० ।

क्तंदिवाजातंमातृयुक्तंतुरात्रिजम् । स्नापयेत्पितृमातृभ्यांसंध्ययोरुभयोरपि । कांस्यपात्रंघृतापूर्णंगंडदोषोपशांतये । सक्षीरंमौक्तिकंशंखंश्वेतवस्त्रयुगंशुभं । यजुर्वेदविदेदद्याद्गंडदोषापनुत्तये । दद्याद्धेनुंहिरण्यंचग्रहांश्चापिप्रपूजयेत् । आयुर्वृद्धिकरंजप्त्वाकुर्याद्ब्राह्मणतर्पणमिति । अत्रचाश्विन्यादिभागेत्र्यादिसंख्या रेवत्यादीनामंत्यभागेचद्वादशादिसंख्याघटिकादुष्टाः । तत्तदाद्यांत्यभागस्थेद्वेद्वेघटिकेदुष्टतरे । अश्विन्याद्यादिभागोदिवा रेवत्याद्यंत्यभागोरात्रौदुष्टतमः । तत्रापिद्वेद्वेघटिकेअतिदुष्टे । अतएवनिमित्ततारतम्येननैमित्तिकतारतम्यं कांस्यपात्रपरिमाणचतुष्टयोपन्यासेनसूचितम् । अतएवचंद्रवागीश्वरप्रतिमादावपिकर्षादिपरिमाणतारतम्यमूह्यम् ॥ ॥ अथप्रयोगः । षण्मासोत्तरमेकादशेवाहनिप्रथमतोगोप्रसवंकृत्वादेशकालौसंकीर्त्य ममास्यशिशोरेवत्यश्विनीसंध्यात्मकगंडांतजननसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनक्षत्रगंडांतशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादियजुर्वेदविद्दैवज्ञाचार्यर्त्विग्वरणांतंकुर्यात् । ततस्तंचंदनशुक्लमाल्यैःक्षौमशुक्लवासोभ्यांपूजयेत् । ततआचार्योनिर्मितस्यापिनिमित्तानुसारिपरिमाणकांस्यदात्रस्यपुनर्निर्माणमाप्यायस्वेतिमंत्रेणकुर्याच्चंद्रप्रतिमाग्न्युत्तारणंच । ततोयदत्रेतिसर्षपविकिरणादिनाभूसंस्कारंकृत्वाउपलिप्तेदेशेकांस्यपात्रेपायसंपयोवानिक्षिप्य तत्रनवनीतपूर्णंशंखंनिधायतत्रराजतंचंद्रबिंबंस्थापयित्वासोमोहमितिध्यानपूर्वकंसमाहितचेताआप्यायस्वेतिमंत्रेणावाहनादिषोडशोपचारैस्तत्रचंद्रपूजनंकुर्यात् । तत्रनवंश्वेतंसदशंवस्त्रद्वयंसमर्पणीयं पुष्पाणिश्वेतानिसहस्रमर्पणीयानि । मौक्तिकंदक्षिणातदसंभवेइष्टमन्यत् । पूजांतेतमेवमंत्रंसविश्वासंचंद्रंध्यायन्सहस्रंसप्रणवमृष्यादिस्मरणपूर्व

कंजपेत् । तदुत्तरतस्ताम्रकलशंमहीद्यौरित्यादिविधिनास्थापयित्वा तत्ररजतप्रतिमायांबृहस्पतिमंत्रेणवागीश्वरंसंपूज्यतदुत्तरतःक्रमेणतेनैवविधिनानिहितकुंभचतुष्टये अश्वत्थेवोनिषदनमित्याम्रपल्लवप्रक्षेपांतंकृत्वाचतुर्षुक्रमेणद्रवीभूतानिकुंकुमचंदनकुष्ठगोरोचनानिनिसिंचेत् । तेषुवरुणंपूजयेत् । ततःपश्चिमदेशेस्थंडिलाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वा स्थापितकलशोत्तरभागेग्रहावाहनादिवरुणपूजांतंकृत्वाऽन्वाधानादिग्रहमखंपूर्णाहुत्यंतंकुर्यात् । अभिषेककालेवारुणकलशचतुष्टयस्थोदकेनदिवागंडांतजातंबालंपित्रासह रात्रिजातंमात्रासह संध्ययोर्जातमुभाभ्यांसहाभिषिंचेत् । सहस्राक्षेणेतिमंत्रस्ययक्ष्मनाशनःप्राजापत्यइंद्रस्त्रिष्टुप् अभिषेकेवि० । ॐ सहस्राक्षेण० ऋक् १ । ततःसर्वकलशोदकैः समुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिःसुरास्त्वामित्यादिभिर्मंत्रैश्चाभिषेकांतेसुस्नातःसपत्नीकः कर्ताधृतश्वेतचंदनादिर्विभूतिधारणंकृत्वाआचार्यायशंखदानंकुर्यात् स्वस्त्यस्तुइमंसचंद्रंशंखंसवस्त्रयुगंसमौक्तिकंनवनीताद्युपस्करसहितंगंडदोषापनुत्तयेदैवज्ञाययजुर्वेदविदेतुभ्यमहंसंप्रददइतितत्सांगतासिद्ध्यर्थंसहिरण्यांधेनुंदद्यात् । ततोवागीश्वरंताम्रपात्रसहितंतुभ्यंगंडदोषशांत्यर्थंसंप्रददइतिबृहस्पतिप्रतिमादानंतदंगत्वेनयथाशक्तिदक्षिणादानंच । ततःस्थापितेतरदेवतानामुत्तरपूजापूर्वकंविसर्जनमाचार्यहस्तेप्रतिपादनंच । ततःसहस्राक्षेणेतिमंत्रस्यायुर्वृद्ध्यर्थंयथाशक्तिजपोदशावरब्राह्मणभोजनंच । इतिनक्षत्रगंडांतशांतिः ॥ ॥ ॥

अथतिथ्यादिगंडांतशांतिः ॥ पारिजातेगार्ग्यः—अभुक्तेतरजातस्यसूतकांत्यदिनेथवा । शांतिंशुभेऽह्निवाकुर्यात्तावत्पुत्रंनलोकयेत् । तिथिगंडेत्वनड्वाहंनक्षत्रेधेनुरुच्यते । कांचनंलग्नगंडेतुगंडदोषोविनश्यति । आद्यभागेपितुर्गंडेत्रयाणामभि

षेचनम् । मातापित्रोःशिशोश्चेत्यर्थः । इतरत्रशिशोर्मातुरभिषेकंकारयेत् । द्वयोरेवेत्यर्थः । उत्तरेतिलपात्रंस्यात्पुष्येगोदानमुच्यते । अजाप्रदानंत्वाष्ट्रेचपूर्वाषाढेचकांचनम् । उत्तरातिष्यचित्रर्क्षेपूर्वाषाढोद्भवस्यच । कुर्याच्छांतिंप्रयत्नेननक्षत्राकारजंबुधः । सुवर्णेनतदर्धेनयथावित्तानुसारतः । नक्षत्राधिपतेरूपंकृत्वावस्त्रद्वयान्वितम् । वरुणस्यार्चनंकार्यंस्वस्तिवाचनपूर्वकम् । सर्वौषधींचरत्नानिमृत्त्वक्पल्लवसंयुतम् । प्रक्षिप्येतिशेषः । पूजांतेसमिदन्नाज्यैर्होमंतिलयवैस्तथा । ततःपूर्णाहुतिंहुत्वावेदाध्यायिकुटुंबिने । उत्तराप्रथमेपादेतिलपात्रंतथैवच । तिष्येतुगांसवत्सांचसुशीलांचपयस्विनीम् । अजांचित्रासुवैदद्यात्पूर्वाषाढेतुकांचनम् । यवांश्चव्रीहीन्माषांश्चतिलमुद्गांश्चदापयेत् । यथावित्तानुसारेणकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । पितुरायुष्यसिद्ध्यर्थंशांतिरत्रविधीयते । एवंयःकुरुतेनूनंशांतिकर्मसमाहितः । नदोषैर्लिप्यतेनूनंपद्मपत्रमिवांभसेति ॥ ॥ तिथिलग्नगंडांतलक्षणंज्योतिर्निबंधे—पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योःसंधिनाडीद्वयंतथा । गंडांतंमृत्युदंजन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु । कुलीरसिंहयोःकीटचापयोर्मीनमेषयोः । गंडांतमंतरालंस्याद्घटिकार्धंमृतिप्रदमिति । पूर्णाः पंचमीदशमीपंचदश्यः नंदाएतदुत्तराःषष्ठ्याद्याः कुलीरःकर्कटः कीटोवृश्चिकः चापंधनुः । उत्तरादीनांनिषिद्धभागव्यवस्थोक्तानृसिंहप्रसादे—चित्राद्यार्धेपुष्यमध्येद्विपादेपूर्वाषाढाधिष्ण्यपादेतृतीये । जातःपुत्रश्चोत्तराद्येविधत्तेपित्रोर्भ्रातुः स्वस्यचापिप्रणाशमिति । उत्तराफल्गुन्याद्यपादइत्यर्थः । एवंचोदाहृतगार्ग्यस्मृतावुत्तरादौतिथिगंडादौचदानशांत्योर्वक्ष्यमाणवचनालोचनेनसमुच्चयप्राप्तावभुक्तेतरजातस्येत्यनेनसर्वनिषिद्धैतत्कालानामभुक्तशब्दोक्तपूर्वार्धेतरोत्तरार्धजन्मनि

निमित्तेशांतिरेवनबहिःप्रयोगंदानमितिबोध्यते। पूर्वार्धजन्मनितुदानमप्याहतिथिगंडइति। नक्षत्रेनक्षत्रगंडे ज्येष्ठामूलसंध्यादावित्यर्थः। नतूत्तरादौ तत्रदानांतरस्यवक्ष्यमाणत्वात्। अत्रचनिमित्तानंतरंनालच्छेदात्पूर्वंगंडोत्तरार्धाधिकरणकंदानंकार्यमितिदर्शयितुंसप्तमीनिर्देशः । पूर्वोत्तरवाक्यपर्यालोचनेनैवनिमित्तलाभात् । उत्तरार्धात्पूर्वार्धेदोषाधिक्यमेवदर्शयितुमाह आद्यभागइत्येवंउत्तरेतिलपात्रंस्यादित्यादावपिपूर्वार्धजन्मनिउत्तरार्धेदानानिकर्तव्यानीत्युच्यते । अतएवशांतिविधौप्रयत्नेनेतिपूर्वोत्तरार्धयोर्जन्मनिशांतिर्नियमेनकर्तव्येतिज्ञापनार्थंनक्षत्राकारेतिपदंरूपमित्यनेनसंबध्यते । अर्चनंकार्यमितिचाग्रिमपदद्वयम् । ततश्चाधिष्ठात्रधिष्ठेययोरभेदचिंतनेनपूजादिकार्यम् । अतोमंत्रोप्युभयप्रकाशकस्तैत्तिरीयशाखागतोवाक्याष्टकरूपएवग्राह्यः। होमकालीनत्यागोपिनक्षत्रेष्टाविवाधिष्ठात्रधिष्ठेयोभयोद्देशेनकार्यइतिसूच्यते। तिथिलग्नगंडजन्मनिचाहवरुणस्येति । अत्रनक्षत्राधिपतेरितिपदवर्जंपूर्वश्लोकानुषंगः । ततश्चतत्रवरुणपूजनमेवकार्यमित्यर्थः । तत्रैवशांत्यंगत्वेनदानमाहयवांश्चेत्यादिना । कर्तुरकरणेदोषेनशांतेरावश्यकतांसूचयितुमाह पितुरिति ॥ ॥

अथप्रयोगः । तिथिगंडपूर्वार्धजन्मनिकर्तास्नातःपुत्रमनालोक्याऽस्यशिशोस्तिथिगंडपूर्वार्धजन्मसूचितसर्वारिष्टनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अनडुद्दानंकरिष्येइतिसंकल्प्य नालच्छेदनात्पूर्वंगंडदोषेब्राह्मणपूजनपूर्वकमनड्वाहंदद्यात् असंभवेकार्षापणाष्टकंवा । सूतकांतेशुभदिनेवास्नातोऽनडुद्दानमित्यस्यस्थानेशांतिमित्यूहेनसंकल्प्यगणेशपूजादिआचार्यवरणांतंकुर्यात्। सचयदत्रेत्यादिनाभूशुद्धिकलशस्थापनेकृत्वा कलशेयाओषधीःसहिरत्नानिस्योनापृथिविरुवत्यश्वत्थेवइतिशतौ

षधीरत्नानिमृदंत्वचःपल्लवांश्चनिक्षिप्य पूर्णादर्वीतिस्थापितपूर्णपात्रेस्थापितहैमवरुणप्रतिमायातत्त्वायामीतिवरुणंपूजयेत् । ततोऽग्निंप्रतिष्ठाप्यग्रहान्संपूज्यान्वादध्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानम् वरुणंप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिः समिधांचरोराज्यतिलयवानांचाहुतिभिः शेषेणेत्यादिबलिदानपूर्णाहुतिप्रणीताविसर्गांतेकलशद्वयोदकेनसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिःपित्रादित्रयाणामभिषेकोयवव्रीहिमाषतिलमुद्गानांदक्षिणात्वेनदानंविसर्जनादियथाशक्तिब्राह्मणभोजनंचेति । तिथिगंडोत्तरार्धजन्मनितुनतात्कालिकदानं । शांतौमातुःशिशोश्चाभिषेकइतिविशेषः । लग्नगंडपूर्वार्धजन्मनिकांचनदानमितिविशेषः । नक्षत्रगंडस्योत्तरादिनिषिद्धभागस्यचपूर्वार्धजन्मनिधेनोस्तिलपात्रादेश्चदानम् । शांतौनक्षत्रप्रतिमायास्तत्तद्वाक्याष्टकेनपूजनम् । उत्तरार्धेजन्मनिनदानम् दक्षिणाकालेउत्तरादौतिलपात्रादेर्दानम् । इतरत्रयवव्रीह्यादेरभिषेकव्यवस्थाचपूर्ववत् । इतितिथ्यादिगंडांतशांतयः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथदिनक्षयादिशांतयः ॥ पारिजातेगार्ग्यः—अथातःसंप्रवक्ष्यामिजन्मकालेविशेषतः । गंडांतानांचनामानिमहादोषकराणिच । दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ । शूलेगंडेतिगंडेचपरिघेयमघंटके । कालदंडेमृत्युयोगेदग्धयोगेचदारुणे । तस्मिन्गंडदिनेप्राप्तेप्रसूतिर्यदिजायते । अतिदोषकरीप्रोक्तातस्मिन्पापयुतेसति । यजनंदेवतानांचग्रहाणांचैवपूजनम् । दीपंशिवालयेभक्त्याघृतेनपरिदापयेत् । अभिषेकंशंकरायअश्वत्थस्यप्रदक्षिणाः । आयुर्वृद्धिकरंजाप्यंसर्वारिष्टविनाशनम् । गुरुदैवतविप्राणांपूजनंगोत्रवर्धनम् । पुण्यायुस्तुष्टिशांत्यर्थमभीष्टफलसिद्धये । सर्वारिष्टहरार्थायग्रहयज्ञंस

माचरेत् । शिवायविधिवद्भक्त्यादीपदानंकरोतियः । अखंडगोघृतेनैवसवैमृत्युंजयेन्नरः । विष्णुमूर्तिंमहापुण्यामश्वत्थंश्रीकरंसदा । प्रदक्षिणंनरोभक्त्याकृत्वामृत्युंजयेजपेत् । सर्वसंपत्समृद्ध्यर्थंतथाकल्याणवृद्धये । अभीष्टफलसिद्ध्यर्थंकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् । अभिषेकंशिवेशांतिंकृत्वाभक्त्यानरोत्तमः । अकालमृत्युंनिर्जित्यदीर्घायुर्जायतेनरः । गाणपत्यंपुरुषसूक्तंसौरंमृत्युंजयंशुभं । शांतिजाप्यंरुद्रजाप्यंकृत्वामृत्युंजयीभवेत् । मूलेवासर्पगंडेवाकुर्यादेतानियत्नतः । आयुर्वृद्धिकरार्थाथगंडदोषप्रशांतयइति । तस्मिन्पापयुतेसतीतिविष्ट्यादेरपिनिषिद्धांशयुतेजन्मकालेसतिदोषाधिक्यमित्याशयः । ततश्चप्रतिप्रसूतेर्भद्रापुच्छादौजन्मनिस्वल्पदोषइत्यर्थः । शूलादीनांनिषिद्धांशानाहवृद्धवसिष्ठः—विरुद्धयोगेषुयआद्यपादःसर्वेषुकार्येषुविवर्जनीयः । सवैधृतेयोव्यतिपातयोगःसर्वोपिनेष्टःपरिघार्धमाद्यम् । तिस्रस्तुनाड्यःप्रथमाश्ववज्रेगंडातिगंडेपिचषट्चषट्च । व्याघातयोगेनवपंचशूलेशुभेषुकार्येषुविवर्जनीयाइति । यमकंटकान्सएवाह—अर्कारतमसौम्यार्यमंदायद्येकराशिगाः । कंटकाख्योमहादोषःसर्वकर्मविनाशकृत् । आरोभौमः तमोराहुः आर्योबृहस्पतिः मंदःशनिः । मैत्रविश्वांबुपाद्येंदुसार्पसूर्याख्यतारकाः । मृत्युयोगामृतिकराःसूर्यवारादिषुक्रमात् । विश्वेतिवैश्वदेवमुत्तराषाढेत्यर्थः अंबुपंशततारकेत्यर्थः यमघंटकइतिवापाठः । तमाहगार्ग्यः—मघाविशाखाआर्द्राचमूलमृक्षंचकृत्तिका । रोहिणीहस्तइत्येतेयमघंटाःक्रमाद्रवेरिति । रविवारमारभ्येत्यर्थः । दग्धयोगानाहनारदः—एकादशीचेंदुवारेद्वादशीचार्कवासरे । षष्ठीबृहस्पतेर्वारेतृतीयाबुधवासरे । अष्टमीशुक्रवारेचनवमीशनिवासरे । पंचमीभौमवारेचदग्धयोगाःप्रकीर्तिताइति । कालदंडोभानु

वासरभरणीयोगः अश्विन्यादिसाभिजिन्नक्षत्राणांचतुर्भिश्चतुर्भिःक्रमेणादित्यवारादिषुयोगेनर्निष्पन्नेष्वष्टाविंशतियोगेषु पठित आनंदःकालदंडश्चेति । यजनंदेवतानामितिदेवतापदेनगुरुदेवताविप्रागृह्यंते । जपांतोक्तकर्मणांप्रशंसापरवाक्यशेषेतत्संकीर्तनात् । ब्राह्मणभोजनाश्वत्थप्रदक्षिणांतानिसमाप्यतन्मध्यपठितस्यापिशंकराभिषेकस्यशांतिपदसामानाधिकरण्येनपृथक्संकीर्तनंपूर्वोक्तपूजादीनामन्यशांतीनांचनिरपेक्षकार्यंभिषेकेइतिद्योतनार्थं जपस्यतदनंतरंसंकीर्तनंतत्तुल्यताज्ञापनार्थं निमित्तभूयस्त्वेनैकादशिन्यभिषेकजपयोःसंख्याविवृद्धिःकल्पनीया । मूलेवेतितद्गंडइत्यर्थः । पूर्वोक्तगंडांतशांत्यासहविकल्पेनाभिषेकसहितानिजपकर्माणिकुर्यादित्यर्थः । इतिदिनक्षयादिगंडांतशांतयः ॥ ॥ ॥

अथविषनाडीजननशांतिः ॥ पारिजातेवृद्धगर्गः—विषनाडीषुसंजातःपितृमातृधनात्मनाम् । नाशकृद्विषशस्त्रास्त्रैःक्रूरेलग्नेंशकेपिवा । तद्दोषपरिहारायशांतिकर्मसमारभेत् । रुद्रोयमोग्निर्मृत्युश्चदेवताःपरिकीर्तिताः । सुवर्णेनयथाशक्तितत्तल्लक्षणलक्षिताः । प्रतिमाःकारयित्वातुआढकव्रीहिभिःस्थले । स्थंडिलंपरिकल्प्याथकुंभमौषधिसंयुतम् । जलैःसंपूर्यसंस्थाप्यमृदादिप्रक्षिपेत्ततः । वस्त्रद्वयेनसंवेष्ट्यपंचरत्नानिनिक्षिपेत् । कुंभोपरितुसंस्थाप्यचतस्रःप्रतिमास्तथा । तत्तन्मंत्रैश्चसंपूज्यगंधपुष्पोपहारकैः । कद्रुद्रायेतिमंत्रेणयमायसोममित्यथ । अग्निर्मूर्धेतिमंत्रेणपरंमृत्योरितित्वथ । एतैश्चतुर्भिर्मंत्रैश्चक्रमादर्चेद्धुनेत्तथा । समिच्चरुघृतद्रव्यैःप्रत्येकंचयथाक्रमम् । ऋत्विग्भिश्चसहाचार्योहुनेदष्टसहस्रकम् । अष्टोत्तरशतंवापिअष्टाविंशतिमेववा । ततस्तिलैर्हुनेद्देवांस्तत्तन्मंत्रैश्चमंत्रवित् । ततोभिषेचयेद्बालंमंत्रैःपौराणिकैःक्रमात् । वक्ष्यमाणै

रितिशेषः । प्रीयतांभगवानीशःपिनाकीसर्वतोमुखः । तवमूर्तिप्रदानेनसर्वाभीष्टप्रदोभव । ईषत्पीनोयमःकालोदंडहस्तःप्रसन्नधीः । रक्तदृङ्नीलकायश्चमहिषस्थःशिवंकुरु । पिंगभ्रूश्मश्रुकेशांतःपिंगाक्षचरणोरुणः । छागस्थःसहसूत्रश्चसप्तार्चीरक्तलोचनः । तवमूर्तिप्रदानेनममपापंविनाशय । दंष्ट्राकरालवदनोनीलांजनसमाकृतिः । रक्ताक्षोसिगदापाणिर्मृत्युर्मांपातुसर्वदा । दानमेवंविधैर्मंत्रैर्यथाविधिसमाहितः । गोभूहिरण्यवस्त्रैश्चआचार्यंपूजयेत्सुधीः । एवंकुर्याद्विधानेनविषदोषःप्रशाम्यतीति । विषनाडीस्तिथिवारसंबंधिनीराहवृद्धगर्गः—तिथी१५षु५नागा८द्रि७गिरीश११वारिधि४र्गजा ८द्रि७दिक्१०पावक३दिक्क१०भास्कराः१२ । मुनी७भ८संख्याप्रथमातिथेःक्रमात्परंविषाख्यंघटिकाचतुष्टयमिति । तिथीनांपंचदशत्वात्तिथिशब्देनपंचदशसंख्योच्यते । एवमग्रेपि । एवंचसतिप्रथमांप्रतिपदमारभ्यएकोनविंशतिपर्यंतंविषम् । द्वितीयायांषष्ठीमारभ्यनवमीपर्यंतंविषम् । एवमग्रेप्यूह्यम् । विंश२०चतु४र्द्वादश१२दिक्१०चशैला७बाणा ५श्चतत्वानि२५यथाक्रमेण । सूर्यादिवारेषुभवंत्यनंतरंनाड्योविषाख्यंघटिकाचतुष्टयमिति । अत्रापिआदित्यवासरेविंशत्युत्तरंचतस्रः सोमवारेचतुष्टयोत्तरंचतस्रइत्येवंव्यवस्थापूर्ववद्बोध्या । नक्षत्रविषनाड्योनारदेनोक्ताः—खमार्गणा५०वेदपक्षाः२४खरामा३०व्योमसागराः ४० । वार्धिचंद्रा१४रूपदस्राः२१खरामा३०व्योमबाहवः २० । द्विरामाः३२खाग्नयः३०शून्यदस्राः२०कुंजरभूमयः १८ । रूपपक्षा२१व्योमदस्रा२०वेदचंद्रा१४श्चतुर्दश १४ । शून्यचंद्रा१०वेदचंद्राः१४षडक्षा५६वेदबाहवः २४ । शून्यदस्राः२०शून्यचंद्राः१०पूर्णचंद्रा१०गजेंदवः १८ । तर्कचंद्रा१६वेदपक्षाः२४खरामा

३० अश्विनीक्रमात् । आभ्यःपराःस्युर्घटिकाश्चतस्रोविषसंज्ञिताइति । अत्रापिअश्विन्यांपंचाशद्घटिकोत्तरंचतस्रोभरण्यां चतुर्विंशतिघटिकोत्तरंचतस्रोघटिकाविषनाड्यइत्येवंव्यवस्थापूर्ववद्बोध्या ॥ ॥ अथप्रयोगः । कर्ताशौचांतेदेशकालौ संकीर्त्यविषनाड्यामेतच्छिशुजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंवृद्धगर्गोक्तविधिनाशांतिकर्मकरिष्यइतिसंकल्प्यगणेशपूजनाद्याचार्यर्त्विग्वरणांतंकुर्यात् । आचार्योयदत्रसंस्थितमितिस्थलशुद्धिंकृत्वायथाशक्तियथालक्षणं निर्मितानांहैमीनांरुद्रादिप्रतिमानांचतसृणामग्न्युत्तारणंकृत्वा पूर्वभागेमहीद्यौरितिभुवंस्पृष्ट्वातत्रओषधयःसंवदंतइतिचतुःप्रस्थपरिमितान्व्रीहीन्प्रक्षिप्यतैःस्थंडिलंपरिकल्प्य तत्रकलशस्थापनोदकपूरणेसमंत्रकेकृत्वायाओषधीरितिसर्वौषधीः प्रक्षिप्यस्योनेतिमृदःअश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान्कांडात्कांडादितिदूर्वाःहिरण्यरूपइतिहिरण्यंयाःफलिनीरितिफलंयुवासुवासाइतिवस्त्रद्वयेनावेष्ट्यसहिरत्नानीतिपंचरत्नानिनिक्षिप्यगंधद्वारामितिगंधादिनाकलशंसंपूज्यपूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रंनिधायतत्रप्रतिमाचतुष्टयंनिधायतास्वावाहनादिषोडशोपचारैर्देवताःपूजयेत् । कद्रुद्रायेत्यस्यकण्वोरुद्रोगायत्री । यमायसोमंयमोयमोनुष्टुप् । अग्निर्मूर्धाविरूपोग्निर्गायत्री । परंमृत्योरित्यस्यसंकुसुकोमृत्युस्त्रिष्टुप् । पूजांतेस्थंडिलेपश्चिमभागस्थेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यस्थापितोत्तरभागेग्रहपूजनंकलशस्थापनांतंकृत्वाऽन्वादध्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेग्रहपीठदेवतान्वाधानंप्रसिद्धरीत्याकृत्वा रुद्रंप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिःसमिच्चरुघृताहुतिभिः यमममग्निंमृत्युंचतावतीभिस्तद्द्रव्याहुतिभिः एताएवदेवतास्तिलाहुतिभिश्चतत्संख्याभिः शेषेणेत्यादिप्रणीताप्रणयनांतेआज्यनिर्वापःआज्येनसहगृहसिद्धान्नस्यपर्यग्नि

करणसंमार्गांतेचरोरग्नावधिश्रपणमभिघारणंचकृत्वोदगुद्वासनाद्याज्यभागांतेग्रहपीठदेवताउद्दिश्ययथान्वाधानंत्यागेकृते प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तंसमिच्चरुघृतात्मकद्रव्यत्रयंरुद्राय० एवंयमाय० अग्नये० मृत्यवे० एवंतत्संख्या हुतिपर्याप्तंतिलद्रव्यंरुद्रादिभ्योनममेतित्यागेकृतेऋत्विक्सहितआचार्यस्तन्मंत्रैर्जुहुयात् । प्रायश्चित्तहोमांतेलोकपालेभ्योग्रहपीठदेवताभ्यश्चबलिदानंरुद्रयमाग्निमृत्युभ्यश्चांतेक्षेत्रपालाय। पूर्णाहुत्यंतेप्रणीताविमोकः कलशद्वयोदकेनाभिषेकःसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिर्मंत्रैःप्रीयतांभगवानीशइत्यादिभिश्चतुर्भिःश्लोकैश्च । ततएतैरेवश्लोकैःसमाहितएकैकांदेवतामाचार्यायदद्यात्। ततस्तस्मैगोभूहिरण्यवस्त्राणितन्निष्क्रयंवादद्यात् । कृतस्यकर्मणःसांगतायैइमांदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददइतिएवमृत्विग्भ्योपियथाशक्तिदक्षिणादानंततोग्रहपीठदेवतानांपूजनविसर्जनेआचार्यहस्तेप्रतिपादनंब्राह्मणभोजनंचेतिविषशांतिः ॥

अथयमलजननशांतिः । तत्रैतरेयब्राह्मणम्—यआहिताग्निर्यस्यभार्यागौर्वायमौजनयेत्कातत्रप्रायश्चित्तिरितिसोग्नयेमरुत्वतेत्रयोदशकपालंपुरोळाशंनिर्वपेत्तस्ययाज्यानुवाक्येमरुतोयस्यहिक्षयेराइवेदचरमाअहेवेत्याहुतिंवाहवनीयेजुहुयादग्नये मरुत्वतेस्वाहेतिसातत्रप्रायश्चित्तिरिति । आहिताग्नेःकृतप्रकृत्यारंभस्येष्टिरकृततदारंभस्यपूर्णाहुतिरितिवृत्तिकारः । आश्वलायनसूत्रकारेणतुयस्यभार्यागौर्वायमौजनयेदिष्टिर्मरुतइतिमारुतयागएवउक्तः वृत्तिकृद्देवत्राताभ्यांमरुतएवात्रदेवतेत्युक्तेः एवकारवशेनसिद्धांतभाष्यकृतापितदुपपादनाच्चनपूर्णाहुतिरितितदीयमेवकारव्याख्यांतरंवृत्तिकृदाद्यनादरादुपेक्षणीयम् । अनाहिताग्नेरुक्तगृह्याग्निमतआहकारिकाकारः—अथयस्यवधूर्गौर्वाजनयेच्चेद्यमौततः । समरुद्भ्यश्चरुंकुर्यात्पूर्णाहु

तिमथापिवेति । गृह्याग्निनापिशून्योबह्वृचस्तुकात्यायनोक्तप्रायश्चित्तंकुर्यात् । स्वगृह्योक्ताभावेपरगृह्योक्तस्यलौकिकाग्नौसंभवात् । तच्चतदीयगृह्येपठितम्—अथातोयमलजननेप्रायश्चित्तविधिंव्याख्यास्यामोयस्यभार्यागौर्दासीवडवावाविकृतिंप्रसवेत्सप्रायश्चित्तीभवेत्पूर्णेदशाहेचतुर्णांक्षीरवृक्षाणांकषायमुपाहरेत्प्लक्षवटौदुंबराश्वत्थशमीदेवदारुगौरसर्षपास्तेषांमिश्रमपोहिरण्यदूर्वांकुरैराम्रपल्लवैःसर्वौषधीभिरष्टौकलशानापूर्यदंपतीस्नपयेत् । आपोहिष्ठेतितिसृभिःकयानइतिद्वाभ्यांपंचैंद्रेणपंचवारुणेनेदमापःप्रवहतेत्यपाघमितिस्नापयित्वालंकृत्यतौदर्भेषूपवेशयंतिमारुतंस्थालीपाकंश्रपयित्वाज्यभागाविष्ट्वाज्याहुतीर्जुहोतिपूर्वोक्तैःस्नपनमंत्रैःस्थालीपाकस्यजुहोति अग्नयेस्वाहा सोमायस्वाहा पवमानाय॰ पावकाय॰ मरुताय॰ मरुद्भ्यः॰ यमाय॰ अंतकाय॰ मृत्यवे॰ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेत्येतदेवगृहोत्पातेषु उलूकःकपोतोगृध्रःश्येनोवागृहंप्रविशेत्स्तंभोवाप्ररोहेद्वल्मीकंमधुजालंवासूवेदुदकुंभप्रज्वलनेआसनशयनयानभंगेगृहगोधिकाकृकलाससरीसृपसर्पणेछत्रध्वजविनाशेष्वन्येषूत्पातेष्वेतदेवप्रायश्चित्तंग्रहशांतिंचोक्तेनविधिनाकृत्वा (चार्यायवरंदत्वा) ब्राह्मणान्भोजयित्वास्वस्तिवाच्याशिषःप्रतिगृह्णीयादिति । विकृतिप्रसवो यमलोत्पत्तिः । अद्भिःपूरितेषुकलशेषुकषायैःप्लक्षादिशाखाभिर्गौरसर्षपैर्मिश्रितंहिरण्यंप्रक्षिप्यदूर्वांकुराणांसर्वौषधीनांचप्रक्षेपःकार्यः । पंचैंद्रामंत्रायस्मिंस्तत्पंचैंद्रंसूक्तम् एवमन्यत् । इदमितिऋक् । अपाघं अपनःशोशुचदघमितिसूक्तम् । उत्पातेष्वित्यनंतरंभूकंपोल्कापातकाकसर्पसंगमप्रेक्षणादिष्वितिक्वचित्पाठः । आहिताग्न्यधिकारिकमारुतपुरोडाशस्थानेविहितस्यमारुतस्थालीपाकस्यप्रायश्चित्तसमाख्ययातुल्यकार्यस्यपुरोडाशेनसह

समुच्चयंवदद्भ्योनमोमान्येभ्यः ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ ममभार्यायायमलजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंइष्ट्यायक्ष्येइतिश्रौताग्निमतः गृह्याग्निमतस्तुमारुतस्थालीपाकेनयक्ष्यइतिसंकल्पः । अकृतप्रकृत्यारंभस्यतत्स्थानेपूर्णाहुतिंहोष्यामीति । अग्निशून्यस्तुसग्रहमखंकात्यायनोक्तंप्रायश्चित्तंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतंकुर्यात् । आचार्योयदत्रेत्यादिनाभूशुद्धिंविधायप्रागादिक्रमेणैशान्यंतासुदिक्षुमहीद्यौरित्यादिविधिनाकलशाष्टकपूरणांतंकृत्वाहिरण्यरूपइतिहिरण्यंकषायादिसहितंप्रक्षिप्यकांडात्कांडादितिदूर्वायाओषधीरितिसर्वौषधीश्चप्रक्षिप्यगंधादिप्रक्षेपादिवरुणपूजांतंकुर्यात् । अथकलशोदकैराचार्योदंपत्योरभिषेकंकुर्यात् । आपोहिष्ठेतितिसृणामांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री अभिषेकेविनियोगः । कयानइतिद्वयोर्वामदेवइंद्रोगायत्री अभिषेके० । आनस्तुतइतिपंचानांवामदेवइंद्रस्त्रिष्टुप् अभिषेके० । मोष्वितिपंचानांवसिष्ठोवरुणोगायत्रीअंत्याजगती अभिषेके० । इदमापइत्यस्यासिंधुद्वीपआपोऽनुष्टुप् अभिषेके० । अपनःशोशुचदघमित्यष्टर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोग्निर्गायत्री अभिषेके० । एवमभिषिक्तौदंपतीश्वेतैर्वस्त्रचंदनपुष्पैःसौवर्णभूषणैश्चालंकृत्यदर्भेषूपवेशयति तौतत्रोदङ्मुखौतिष्ठतः । तत्समीपेप्राङ्मुखआचार्यःस्थंडिलेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यैशान्यांग्रहपूजाकलशस्थापनांतंकृत्वान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंते अपस्तिसृभिराज्याहुतिभिः इंद्रंसप्तभिः वरुणंपंचभिः अपएकया अग्निमष्टाभिराज्याहुतिभिः अग्निंसोमंपवमानंपावकंमारुतंमरुतोयमंअंतकंमृत्युंचएकैकयाचर्वाहुत्याशेषेणेत्यादि । तूष्णींषट्त्रिंशद्वारंनिर्वापप्रोक्षणे । यथान्वाधानमाज्याहुतिषुत्यागः । अग्नयेस्वाहेत्यवदानसंपदानवाहुतयः । यथालिंगंत्यजता

प्यग्न्याद्यात्मनामरुतोध्येयाः प्रयाजेषुसमिद्ध्यइतित्यागेपिसमिदाद्यात्मनानिरुक्तोक्ताग्निध्यानवत् । ततःस्विष्टकृदादिबलिदानांतेपूर्णाहुतिः पूर्णपात्रनिनयनंग्रहकलशेनाभिषेकआचार्यायदक्षिणादानंस्थापितदेवतानांपूजनादिआचार्यहस्तेप्रतिपादनांतंचकृत्वाब्राह्मणान्भोजयित्वास्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिवाचयीत। तेचस्वस्तीतिवदेयुस्तेभ्यआशिषोगृहीत्वेश्वरार्पणं कुर्यादिति ॥ इतियमलजननशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथत्रिकप्रसवशांतिः॥ शांतिसर्वस्वे—सुतत्रयेसुताचेत्स्यात्तत्त्रयेवासुतोयदि । मातापित्रोःकुलस्यापितदानिष्टंमहद्भवेत् । ज्येष्ठनाशोधनेहानिर्दुःखंवासुमहद्भवेत् । जातस्यैकादशाहेवाद्वादशाहेशुभेदिने । आचार्यमृत्विजोवृत्वाग्रहयज्ञपुरःसरम् । ब्रह्मविष्णुमहेशेंद्रप्रतिमाःस्वर्णतःकृताः । पूजयेद्धान्यराशिस्थाःकलशोपरिशक्तितः । पंचमेकलशेरुद्रंपूजयेद्रुद्रसंख्यया । रुद्रसंख्ययाचत्वारिसूक्तानिजपेदित्यन्वयः । रुद्रसूक्तानिचत्वारिशांतिसूक्तानिसर्वशः । आचार्योजुहुयात्तत्रसमिदाज्यतिलांश्चरुम् । अष्टोत्तरसहस्रंवात्रिशतंवाशतंतुवा । देवताभ्यश्चतुर्वक्त्रादिभ्योग्रहपुरःसरम् । ब्रह्मादिमंत्रैरिंद्रस्ययतइंद्रभयामहे । ततःस्विष्टकृतंहुत्वाबलिंपूर्णाहुतिंततः । अभिषेकंकुटुंबस्यकृत्वाचार्यंप्रपूजयेत् । हिरण्यंधेनुरेकाचऋत्विजांदक्षिणांततः । आज्यस्यावेक्षणंकृत्वाशांतिपाठंतुकारयेत् ॥ ॥ अथप्रयोगः । एकादशेद्वादशेऽन्यस्मिन्वाशुभेऽहनिसभार्योदेशकालौसंकीर्त्य ममसुतत्रयजन्मानंतरंसुताजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसग्रहमखांशांतिकरिष्येइतिसंकल्पः । निमित्तांतरेतदूहःकार्यः । ततोगणेशपूजनाद्याचार्यर्त्विग्वरणतत्पूजांतेआचार्योयदत्रेत्याद्यद्युक्ता

रणंच । ततःस्थंडिलपूर्वभागेग्रहपूजाकलशस्थापनवरुणपूजनांतंकृत्वातदुत्तरतउदक्संस्थानांपंचकलशानांमहीद्यौरित्यादिविधिनायथाशक्तिधान्योपरिस्थापितानामुपरियथाशक्तिहेमनिर्मिताःब्रह्मविष्णुमहेशेंद्ररुद्रप्रतिमाःस्थापयित्वातासुदेवताःपूजयेत् । ब्रह्मजज्ञानंवामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् । इदंविष्णुरित्यस्यमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री । तत्पुरुषायेत्यस्यहिरण्यगर्भोमहेशोगायत्री । यतइंद्रेत्यस्यभर्गइंद्रोबृहती । कद्रुद्रायेत्यस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्री । पूजांतेरुद्रकलशंस्पृष्ट्वाचत्वारिरुद्रसूक्तानिकश्चिदृत्विग्जपेत् । कद्रुद्रायेत्यस्यर्ष्याद्युक्तम् । इमारुद्रायतवसइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रआद्यानवजगत्योंऽत्येद्वेत्रिष्टुभौ । आतेपितरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् । इमारुद्रायस्थिरधन्वनइतिचतसृणांवसिष्ठोरुद्रस्तिस्रोजगत्योंऽत्यात्रिष्टुप् जपेवि० । प्रत्येकमेकादशवारंसूक्तानांजपः । तदंतेआनोभद्राइत्यादिशांतिसूक्तानिजपेत् । ततोऽग्निप्रतिष्ठापनादिअन्वाधानेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेप्रसिद्धंग्रहपीठगतदेवतान्वाधानंकृत्वाब्रह्माणंविष्णुंमहेशंइंद्रंरुद्रंचप्रत्येकंसमिदाज्यतिलचरूणांप्रत्येकमष्टोत्तरसहस्राहुतिभिः शेषेणेत्यादि । असंभवेअष्टोत्तरत्रिशताहुतिभिरिति अत्राप्यशक्तौअष्टोत्तरशताहुतिभिरितिवा । आज्यभागांतेयथान्वाधानंत्यागः । ततःप्रधानहोममुक्तमंत्रैराचार्यर्त्विक्कर्तृकग्रहहोमपुरःसरंकुर्यात् । प्रायश्चित्तहोमांतेबलिःपूर्णाहुतिश्च । ततःप्रणीताविमोकसंस्थाजपपरिस्तरणविमोकांतेषट्कलशोदकेनसहकुटुंबयजमानाभिषेकः समुद्रज्येष्ठाइत्यादिमंत्रैः । ततआचार्यायसहिरण्यधेनुंदत्वाऋत्विग्भ्योयथाशक्तिदक्षिणादानंचकृत्वास्थापितदेवतानामुत्तरपूजनविसर्जनांतेतत्प्रतिमाआचार्यहस्तेप्रतिपाद्यकांस्यपात्रेरूपंरूपमित्याज्यमवेक्ष्यस

दक्षिणंतद्दानंकृत्वाब्राह्मणभोजनंयथाशक्तिसंकल्प्ययथाशक्तिशांतिपाठंकारयित्वापरमेश्वरार्पणंकुर्यादितित्रिकशांतिः ॥ अथसदंतजननशांतिः । अद्भुतसागरेपाद्मे—दंतजन्मनिसामान्येश्शृणुस्नानमतःपरम् । भद्रासनेनिवेश्यैनंमूर्ध्निमूलफलैस्तथा । सर्वौषधैःसर्वबीजैःसर्वगंधैस्तथैवच । स्नापयेत्पूजयेच्चात्रवह्निंसोमंसमीरणम् । पर्वतांश्चतथाख्यातान्देवदेवंचकेशवम् । एतेषामेवजुहुयाद्घृतमग्नौयथाविधि । ब्राह्मणानांप्रदातव्यायथाशक्त्याचदक्षिणेति । तत्रैवबृहस्पतिः—बालानामष्टमेमासिषष्ठेमासिततःपुनः । दंतायस्यचजायंतेमातावाम्रियतेपिता । बालकःपीड्यतेतत्रस्वयमेवनसंशयः । दधिक्षीरघृताक्तानामश्वत्थसमिधांततः । हुनेदष्टशतंप्राज्ञःसमंत्रेणतुमंत्रवित् । धेनुंचदक्षिणांदद्यात्ततःसंपद्यतेशिवमिति । विष्णुधर्मोत्तरेतु—दंतजन्मनिबालानांलक्षणंतन्निबोधमे । उपरिप्रथमंयस्यजायंतेथशिशोर्द्विजाः । दंतैर्वासहयस्यस्याज्जन्मभार्गवसत्तम । द्वितीयेचतृतीयेचचतुर्थेपंचमेतथा । यदादंताश्चजायंतेमासेचैवमहद्भयम् । पितरंमातरंवाथखादेदात्मानमेवच । तत्रशांतिंप्रवक्ष्यामितांमेनिगदतःशृणु । गजपृष्ठगतंबालंनौस्थंवास्नापयेद्द्विजः । तदभावेतुधर्मज्ञकांचनेतुवरासने । सर्वौषधीःसर्वगंधैर्बीजैःपुष्पैःफलैस्तथा । पंचगव्येनरत्नैश्चमृत्तिकाभिश्चभार्गव । स्थालीपाकेनधातारंपूजयेत्तदनंतरम् । सप्ताहंचात्रकर्तव्यंतथाब्राह्मणभोजनम् । अष्टमेऽहनिविप्राणांतथादेयाचदक्षिणा । कांचनंराजतंगाश्चभुवंवाधनमेवचेति ॥ ॥ अथप्रयोगः । अस्यशिशोःप्रथममूर्ध्वदंतजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशांतिंकरिष्ये । निमित्तांतरेसदंतजननसूचितेत्यूहः द्वितीयमासदंतजननसूचितेत्येवमूहश्चकल्प्यः । गणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतेआ

चार्यायदत्रेत्यादिप्रतिमानामभ्युत्तारणंचकृत्वाहोमदेशोत्तरभागेगजपृष्ठेनौकायांसौवर्णपीठेवास्वस्तिकचर्मयोगेनभद्रासनत्वेनकल्पितेबालमुपवेश्यसर्वौषधिसर्वगंधादियुक्तजलैःस्नापयित्वा होमदेशपूर्वभागेस्थापितकलशोपरिधातारंवह्निंसोमंवायुंपर्वतान्केशवंचषट्प्रतिमासुसंपूज्याग्निंप्रतिष्ठाप्यग्रहान्संपूज्यान्वादध्यात् । अत्रप्रधानं ग्रहान्वाधानांते धातारंसकृचरुणावह्नयाद्यादेवताएकैकयाज्याहुत्याशेषेणेत्यादिधात्रेत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिप्रोक्षामीतिसमंत्रेनिर्वापप्रोक्षणे।ग्रहानुद्दिश्यत्यागहोमांते धात्रेस्वाहेत्यवदानधर्मेणसकृदाहुतिः। ॐ वह्नयेस्वाहा ॐ सोमाय० ॐ समीरणाय० ॐ पर्वतेभ्यः० ॐ केशवाय० इतिस्रुवेणाज्याहुतयः। यथालिंगंत्यागः। चर्वाज्याभ्यांस्विष्टकृद्बलिपूर्णाहुत्यंतेकलशद्वयोदकेनाभिषेकः। यथाशक्त्याचार्यायदक्षिणादानंतद्धस्तेप्रतिमाप्रतिपादनांतेभूयसींदक्षिणामन्येभ्योयथाशक्तिदत्वासप्ताहंब्राह्मणान्भोजयेत् अष्टमेहनिशक्त्यनुसारेणकांचनादिदानंतेभ्यःकार्यं दिनाष्टकंब्रह्मचर्यादिव्रतचर्यांतेपरमेश्वरार्पणंकुर्यादितिसदंतजननादिशांतिः॥ ॥षष्ठेऽष्टमेवामासेदंतोत्पत्तौतुतदनुसारिसंकल्पपूर्वकंवृहस्पतेरेवतन्मंत्रेणतत्पूजनविधिनापूजनंदधिमधुघृताक्तानामश्वत्थसमिधामष्टोत्तरशतंतन्मंत्रेणहोमः आज्येनस्विष्टकृदादितत्कलशोदकेनाभिषेकः आचार्यायधेनुर्देया ब्राह्मणभोजनांतेईश्वरार्पणंकुर्यात्। इतिषष्ठाष्टममासदंतोत्पत्तिशांतिः॥ अष्टमादिषुमासेषुदंतजन्मशुभावहमितिज्योतिर्निबंधवाक्येतुअतद्गुणसंविज्ञानवहुव्रीहिणानवमादिग्रहणमितिवृद्धाः॥ ॥ ॥ ॥

अथप्रसववैकृतशांतयः॥ वृद्धगर्गः—यत्रगर्भेविपर्यासोमानुषाणांगवामपि । अद्भुतानिप्रसूयंतेतस्यदेशस्यविद्रवः । अत्रा

पिदिव्यजाशांतिःकार्यापंचदशींबुधैः। पंचदशींप्राप्येतिशेषः। पर्वणीत्यर्थः। मानुषामानुषाणाचगोजाश्वमृगपक्षिणाम्। जायंतेजातिभेदाश्चसदंताविकृतास्तथा। बहुशीर्षाअशीर्षावाबहुकर्णाअकर्णकाः। एकशृंगाद्विशृंगाश्चतथैवचतुराद्विजाः। दीर्घकर्णामहाकर्णागजकर्णाश्चमानवाः। मानवाश्चयदाव्याघ्रामार्जारास्तनुधारिणाम्। जायंतेपुरुषायत्रतत्रसंग्राममादिशेत्। राजश्रेष्ठकुलेनाशोधनस्यचकुलस्यच। यमलायत्रजायंतेनारीणांगजवाजिनाम्। ब्रह्मशांतिंततःकुर्याद्यत्रब्रह्माप्रशासिता। अष्टोत्तरसहस्राणिचरुंवैजुहुयाद्धृतम्। समिधांतुपलाशानांतर्पयेत्पूर्ववद्द्विजान्। दासीदाससमायुक्तंगोदानफलसंयुतम्। कांचनंवृषभंवस्त्रंदद्याद्विप्रायदक्षिणाम्। अशिराजायतेजंतुस्तथाद्वित्रिशिरास्तथा। सूर्याद्भुतंविजानीयात्पूजयित्वादिवाकरम्। दध्याज्यमधुसंयुक्ताःसमिधस्त्वर्कसंभवाः। यद्वाजनःप्रसृतिभिर्जुहुयाद्धृतमेवच। धेनुंसुवर्णंवस्त्रंचदद्याद्धात्रेचदक्षिणाम्। सर्वेदोषाविनश्यंतिततःसंपद्यतेशुभम्। मृगीजनयतेसर्पान्मंडूकाश्चाप्यमानुषान्। बृहस्पत्यद्भुतमिदंतद्वारेसंप्रपूजयेत्। औदुंबरस्यसमिधोदधिसर्पिःसमन्विताः। दोषोपशमनार्थायजुहुयान्नियमेस्थितः। वस्त्रंसुवर्णंधेनुंचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम्। स्त्रीगर्भपातोयमलंप्रसूयंतेऽथवास्त्रियः। सदंताश्चैवजायंतेजातमात्राहसंतिच। बुधाद्भुतंविजानीयात्तद्वारेतंप्रपूजयेत्। वस्त्रंगावःसुवर्णंचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम्॥ इतिप्रसववैकृतशांतयः॥ अद्भुतसागरे नारदः——भानौसिंहगतेचैवयस्यगौःसंप्रसूयते। मरणंतस्यनिर्दिष्टंषड्भिर्मासैर्नसंशयः। तत्रशांतिंप्रवक्ष्यामियेनसंपद्यतेशुभम्। प्रसूतांतत्क्षणादेवतांगांविप्रायदापयेत्। ततोहोमंप्रकुर्वीतघृताक्तैराजसर्षपैः। अयुतोहोमोव्याहृतिभिःकार्यः।

तथा—अस्यवामस्यसूक्तेनतद्विष्णोरितिमंत्रतः । जुहुयाच्चतिलाज्येनशतमष्टोत्तराधिकम् । मृत्युंजयेनमंत्रेणजुहुयाच्चतथायुतम् । श्रीसूक्तेनततःस्नायाच्छांतिसूक्तेनवापुनरिति ॥ ॥ अथसुखप्रसवकरम् । मदनरत्ने नारायणीघटिकायाम्—करंकीभूतगोमूर्धासूतिकाभवनोपरि । तत्कालनिहितोनार्याःसुखप्रसवकारकः । अस्थिमात्रावशिष्टोगोमस्तकइत्यर्थः । उपोदक्यास्तुमूलानितैलयुक्तानिकारयेत् । योनिप्रलेपोदातव्यःसुखंनारीप्रसूयते । वंशनिंबयोस्त्वक्तुलसीमूलंकपित्थपत्रंच । करवीरमूलमेतत्पिष्ट्वाक्षीरेणमाहिषेणैव । समतोलितंसतैलंयोनिंलिप्त्वाचतेनापि । मृतगर्भंनिःसारयतिकिमत्रचित्रंसुखप्रसवे । अत्रसर्वत्रप्रयोगाःसुगमाइतिनलिख्यंते ॥ यत्कांत्यासूर्यचंद्राद्याअभवन्प्रौढकांतयः । श्रीकांतस्यसुदेतस्यप्रोक्ताजननशांतयः । इत्यापदेवसुतानंतदेवकृतेसंस्कारकौस्तुभेजननशांतिनिरूपणम् ॥ ॥ ॥

अथनामकरणम् ॥ तत्रनामचास्मैदद्युरितिसूत्रव्याख्यावसरेवृत्तिकृतोक्तंनामकरणस्याचार्येणकालांतरानुक्तेर्जातकर्मानंतरंकार्यमित्येकइति । तथाचज्योतिर्वसिष्ठः—जन्माहेद्वादशाहेवादशाहेवाविशेषतः । कुर्याद्वैनामकरणंकुमारस्येतिवैश्रुतिरिति । पारस्करः—दशम्यामुत्थाप्यब्राह्मणान्भोजयित्वापितानामकरोतीति । उत्थाप्यसूतिकाम् । नचदशम्यामतीतायामितिव्याख्यानमुचितम् । अध्याहारस्यानुचितत्वात् अपरार्कमेधातिथिभ्यामनंगीकाराच्च । जन्मतोदशमेवापिद्वादश्यांवापितत्पुनः । विप्राणांनामकर्मस्यादाशौचांतेतुशेषयोरितिनारदवाक्येविप्राणांदशमेआशौचनिवृत्तिंविनापिकर्तव्यताप्रतीतेश्च । एवंयेषांदशाहतःप्राक्शुद्धिस्तद्विषयं । दशम्यामितिकल्पतरूक्तिरप्ययुक्ता । तथासतिक्षत्रिय

वैश्ययोर्विप्रवैधर्म्योक्तौउक्तवाक्यव्यवस्थायांनिस्तात्पर्यकत्वापत्तेः । याज्ञवल्क्यः—अहन्येकादशेनामेति । पारिजातेबृहस्पतिः—द्वादशेदशमेवापिजन्मतोदिवसेशुभे । षोडशेविंशतौचैवद्वाविंशेवर्णतःक्रमादिति । षोडशैकोनविंशेवाद्वात्रिंशेवर्णतइतिक्वचित्पाठः । कीदृशःक्रमादित्यस्यार्थइत्यपेक्षायामुक्तंसंग्रहे—एकादशेऽह्निविप्राणांक्षत्रियाणांत्रयोदशे । वैश्यानांषोडशेकार्यंमासांतेशूद्रजन्मनइति । एकादशइतिदशमद्वादशयोरुपलक्षणम् । त्रयोदशइतिषोडशइतिचविंशादेःक्षत्रियादिभिःस्वाशौचकालात्पूर्वंनकार्यमित्यत्रतात्पर्यम् । भविष्येनामकरणप्रकरणे—द्वादश्यामपरेरात्र्यांमासेपूर्णेतथापरे । अष्टादशेऽह्निचतथावदंत्यन्येमनीषिणइति । आश्वलायनपरिशिष्टे—नामत्वेकादशेदिवसेशतरात्रेसंवत्सरेवायथोपपत्त्येकेजन्मन्येकादशेचैवनक्षत्रइति । गोभिलपरिशिष्टे—जननाद्दशरात्रेव्युष्टेशतरात्रेसंवत्सरेवानामकरणमिति । व्युष्टेअतिक्रांते । मनुः—नामधेयंदशम्यांतुद्वादश्यांवापिकारयेत् । पुण्येतिथौमुहूर्तेवानक्षत्रेवागुणान्वितेइति । अपिशब्दादेकादशे । ततश्चद्वादशदिनांतकालेषुनपुण्यतिथिनक्षत्रचंद्रानुकूल्यादिगुणादरः तुल्यन्यायात् । तथाक्षत्रियादेर्विशिष्यविहितेत्रयोदशादिदिनेऽपिनतदादरःकार्यइतिउत्तरार्धगतैकवाशब्दस्यार्थः । ततश्चकालांतरेषुतदादरौचित्यंध्वन्यते । द्वितीयवाशब्देनतुगुणान्वितंनक्षत्रमपिस्वतंत्रःकालइतिज्ञाप्यते । अतएवब्राह्मणादेर्दशमैकादशद्वादशदिनेषुकुर्वतः क्षत्रियादेश्चत्रयोदशादौनमलमासगुरुशुक्रमौढ्यादिनिषेधादरोपि । तथादीपिकायाम्—गर्भाधानमुखंचचौलविधितःप्राग्जातयागंविनेतिप्रकृत्योक्तं अधिकेमास्येवमाद्याचरेदिति । तथापिपारिजातेबृहस्पतिनापि—यस्यांक्रियायांयश्चो

क्तः कालोमासदिनैरपि । तस्यांनदोषोमूढत्वंवक्रंवाजीवशुक्रयोरिति । दिनैरितितृतीयेत्थंभावे । मासात्मनादिनात्मनावायोनियतःकालस्तस्मिन्क्रियमाणायांतस्यांमूढत्वादिनदूषणमित्यर्थः । एवमुक्तदिनेषुसर्वनिषेधानादरेप्राप्तेतदपवादंतत्रैवगर्गः—व्यतीपातेचसंक्रांतौग्रहणेवैधृतावपि। श्राद्धंविनाशुभंनैवप्राप्तकालेपिमानवः। कुर्यादितिशेषः। तथा—अमासंक्रांतिविष्ट्यादौप्राप्तकालेपिनाचरेदिति । सर्वदिनेषुविशेषांतरंमुहूर्तसंग्रहे—पूर्वाह्णःश्रेष्ठइत्युक्तोमध्याह्नोमध्यमःस्मृतः। अपराह्णंचरात्रिंचवर्जयेन्नामकर्मणीति॥ अथोक्तदिनेष्वकृतस्यनामकर्मणःकालांतरेक्रियमाणस्यापेक्षितस्तिथ्यादिनिर्णयः। पारिजातेनृसिंहः—छिद्राख्यांपर्वनवमींहित्वाशेषाःशुभावहाइति । चतुर्थीषष्ठ्यष्टमीद्वादशीचतुर्दश्यश्छिद्राःद्वेपर्वणीनवमीचेत्यष्टौतिथीर्विहायशेषास्तिथयोनामकर्मणिशस्ताइत्यर्थः। वसिष्ठः—बुधेंदुसितजीवानामंशकेदिवसोदये । द्रेक्काणेकालहोरायांनामकर्मप्रशस्यतेइति । षष्ठ्यंतस्यसप्तम्यंतेषुप्रत्येकंसमन्वयः। अंशकोनवांशोराशेः उदयोलग्नं द्रेक्काणोराशेस्तृतीयांशः कालहोरावारप्रवृत्तिमारभ्याहोरात्रसंबंधिनोभागभेदाः। दिवसोदयइत्येकवद्भावः । ततश्चत्वारोवासराः प्रशस्ताइत्यर्थः । पारिजाते—मित्रादित्यमघोत्तराशतभिषक्स्वातीधनिष्ठाच्युतप्राजेशाश्विशशांकपौष्णदिनकृत्पुष्येषुराशौस्थिरे । छिद्रांपंचदशींविहायनवमींशुद्धेष्टमेभार्गवज्ञाचार्यामृतपादभागदिवसेनामानिकुर्याच्छिशोरिति । मित्रोऽनुराधा आदित्यंपुनर्वसुः उत्तरेत्युत्तरात्रयंगृह्यते । त्रीण्युत्तराण्याहुरुडूनिनाम्नीतिशास्त्रांतरसंवादात् । अच्युतःश्रवणः प्राजेशंरोहिणी अश्वीत्यश्विनी शशांकोमृगशिरः पौष्णंरेवती दिनकृद्धस्तः। राशौस्थिरे वृषसिंहवृश्चिककुंभलग्नेषु तेभ्यए

वाष्टमस्थानेरिष्टसूचकग्रहानाक्रमणंशुद्धत्वम् । ज्ञोबुधः आचार्योगुरुः अमृतपादश्चंद्रः एषांभागाख्यांशेदिवसाख्यवासरे प्रत्येकमन्वयः । भागदिवसमित्येकवद्भावः । नामानीतिबहुवचनमेकस्यशिशोर्बहूनिनामानिकार्याणीतिज्ञापनार्थम् । प्रथममाहशंखः—कुलदेवतासंबद्धंपितानामकुर्यादिति कुलपूज्यायादेवतातत्संबद्धमित्यर्थः । अस्यांव्याख्यायामनादिराचारोमूलम् । द्वितीयमाहगार्ग्यः—मासनामगुरोर्नामदद्याद्बालस्यवैपिता । कृष्णोनंतोच्युतश्चक्रीवैकुंठोथजनार्दनः । उपेंद्रोयज्ञपुरुषोवासुदेवोहरिस्तथा । योगीशःपुंडरीकाक्षोमासनामान्यनुक्रमात् । अत्रमार्गशीर्षादिक्रमः । चैत्रादिमासनामानिवैकुंठोऽथजनार्दनः । उपेंद्रोयज्ञपुरुषोवासुदेवोहरिस्तथा । योगीशःपुंडरीकाक्षःकृष्णोऽनंतोऽच्युतस्तथा । चक्रधारीतिचैतानिक्रमादाहुर्मनीषिणइति मदनरत्नोदाहृतगर्गवचःसंवादात् । मासाश्चात्रचांद्रास्तेष्वेवचैत्रादिशब्दानां मुख्यत्वात् । तेचशुक्लादिकृष्णांताएव । तादृशचांद्रमानस्यैवमुख्यत्वात् ब्राह्मणेनचैतदेवविशेषेणादरणीयम् । अमावास्यापरिच्छिन्नोमासःस्याद्ब्राह्मणस्यत्वितिवचनात् । तृतीयमप्याहबौधायनः—नक्षत्रनामधेयेनद्वितीयंनामधेयंगुह्यमस्यान्यत् अभिवादनीयमुपनयनान्मातापितरौसंविदितौभवतोविज्ञायतेद्विनामाब्राह्मणइति । अन्यद्व्यावहारिकात् । नक्षत्रनामधेयेनेतितृतीययातत्रजातइत्यधिकारेविहिततद्धितांतेनकृत्तिकादिनाम्नानिष्पन्नमित्यर्थोलभ्यते । अतएवनक्षत्रनामद्वितीयंस्यादितिहिरण्यकेशिसूत्रव्याख्यावसरेमातृदत्तग्रंथः । किंतत् जन्मनक्षत्रप्रकृतिकंतत्रजातार्थतद्धितांतं यथा—रौहिणः श्रविष्ठः आर्द्रकइतीति । उक्तश्चास्यनाम्नोविनियोगःसूक्तवाकेआश्वलायनेन—असावसावित्यस्यादि

इयनामनीइति । उक्तंचैतद्याख्यावसरेनाम्नोःक्रमनियमायदेवत्रातेन—तत्रजातइत्यस्मिन्नर्थेतद्धितउत्पद्यतेइतिप्रकृत्य तस्मादेवंप्रयोगोभवति अनूराधोदेवदत्तइति । तथाबौधायनेनपुत्रस्यनामगृह्णातीतिप्रक्रम्यरोहिणायतिष्यायेतियथानुशासनंविनियोगोऽभ्यधायि । तथोपनयनप्रकरणस्थस्यकोनामासीतिनामधेयंपृच्छतितस्याचार्यः अभिवादनीयनामधेयंकल्पयित्वादेवताश्रयंनक्षत्राश्रयंगोत्राश्रयमप्येकइतिसूत्रस्यव्याख्यावसरेछंदोगसूत्रभाष्यकृतोक्तंनक्षत्राश्रयंफल्गुननामासीति । यथोक्ततद्धितानामेवनक्षत्रनाम्नांसंग्रहार्थःश्लोकःसुदर्शनभाष्येविद्यारण्यभाष्येचसमुदाहृतः—रोरेमसृज्येचिपुष्द्धिरादौष्ठांत्येचवांत्यश्रवशाश्वयुक्षु । शेषेषुनाम्न्योःकपरःस्वरोंऽत्यःस्वाप्योरदीर्घःसविसर्गइष्टइति । रोइतिरोहिणी । आदौ आद्याक्षरे । ततश्च रौहिणः रैवतः माघः मार्गशीर्षः ज्येष्ठः चैत्रइतिषण्णांसिद्धिः । प्रोष्ठपदाप्रकृतिकेनाम्निठकरात्परेवृद्धिरित्यर्थः । ततश्चप्रोष्ठपादइतिनक्षत्रद्वयसंबंधिनामसिद्धिः । अंत्यमपभरणी तैत्तिरीयाणांनक्षत्रेष्टिपाठेकृत्तिकाद्यपभरण्यंतपाठात् । ततश्चअपभरणः आपभरणः । श्रवणः श्रावणः । शतभिषक् शातभिषजः । जातार्थेप्रतिप्रसूतोण्डिद्वावक्तव्यइतिवाक्यकारोक्तेःशातभिषइत्यपि । अश्वयुक् आश्वयुजः । एवंचतुर्नक्षत्रसंबंधिनामसिद्धिः । शेषेषुउक्तान्यनक्षत्रप्रकृतिकनामसुनवृद्धिः श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधेत्यादिसूत्रेतद्धितलुकोनियमात् लुक्तद्धितलुकीतिश्रविष्ठाफल्गुन्यादौस्त्रीप्रत्ययनिवृत्त्याच श्रविष्ठः फल्गुनः अनुराधः तिष्यः आश्लेषः हस्तः विशाखः अषाढः कृत्तिकः बहुलइतिवेति एकादशसंबंधिनामसिद्धिः । आम्न्योः आर्द्रामूलयोरंत्यस्वरः ककारात्परोभवति । रेफग्रहणंआश्लेषाग्रहणमाकारेण

माभूदिति आर्द्रकः मूलकइति। स्वाप्वोः स्वातीपुनर्वस्वोरंत्यस्वरः सविसर्गोज्ञेयः स्वातिः पुनर्वसुरिति । केषांचित्स्वातीतिसदीर्घपाठात्पुनर्वस्वोर्द्वित्वेनचपुनर्वसूइतिदीर्घत्वप्रसक्तेरदीर्घत्वमुक्तम् । पूर्वैःसहेमानिचत्वारि । सप्तविंशतिनक्षत्रसंबंधिनाम्नामेवंसिद्धिः।तैत्तिरीयैर्नक्षत्रेष्टिष्वभिजितःपृथगाम्नातत्वेऽपि पाणिनिनावत्सशालाभिजिदश्वयुगितितत्प्रकृतिकयोरभिजिदाभिजितइतिनाम्नोरनुशिष्टयोरपिश्लोकेतयोर्नादरःसतस्यनक्षत्रांतरेंऽतर्भावात्तन्नाम्नैवव्यवहारसौकर्यादितिबोध्यम् । आद्दतंत्वाभिजितइतिनाक्षत्रनाममातृदत्तेनेतितत्स्वीकारेपिनबाधकम् । अभिजित्स्वरूपंतैत्तिरीयाआमनंति—अभिजिन्नामनक्षत्रमुपरिष्टादषाढानामधस्ताच्छ्रोणायाइति । विवृतमेतद्वसिष्ठेन—अभिजिद्भोगमेतद्वैश्वदेवांत्यपादमखिलम्। आद्याश्चतस्रोनाड्योहरिभस्येति। वैश्वदेवमुत्तराषाढाश्चतस्रइतिपंचदशांशोपलक्षणम् । द्वयोर्नक्षत्रयोर्वृद्धिक्षयालोचनेनपादपंचदशांशावभिजिदित्यर्थः । उक्तनाक्षत्रनामानिस्त्रीप्रत्ययांतानिस्त्रीणां मातृदत्तेनैवकार्तिकीरोहिणीत्याद्यनुक्रमणात्। तूष्णीमेताःक्रियाःस्त्रीणामितिस्मृत्या आवृतैवकुमार्याइतिगृह्येणचमंत्ररहितयथावस्थितसंस्काराणांतास्वपिविधानात्। उक्तोऽत्रविशेषोमातृदत्तेनैवपुण्याहादिवाचनंकार्यंनान्यदस्तीति । अश्वयुक्आश्वयुज इतिविकल्पेप्राप्ते नियमःपरिशिष्टे—तदक्षरादिकंनामयस्मिन्धिष्ण्येयदक्षरमिति । अक्षरं स्वरः । द्व्यक्षरमित्यादौतथादर्शनात्। ततश्चाश्वयुगित्येवोचितम् । एवंचज्योतिर्वित्प्रसिद्धस्वरोदयाभिहितशतपदचक्रसारोद्धारोयोज्योतिषाकेंभिहितः—चूचेचोलापदेष्वाद्येलीलूलेलोयमस्यचेत्यादि । तत्र इतिप्रोक्ताइमेपद्येवर्णानामादिजाःस्फुटाइत्युपसंहारा

दाद्ये अश्विन्यां पदेषुचरणेषुयेचूइत्यादयोवर्णास्तदादीनिनामानि चूडामणिः चेदिपतिः चोलपतिः लाटपतिरित्येवंकार्याणीतिप्रतीतेर्ज्योतिर्विदांनक्षत्रतच्चरणज्ञानफलानिसंतुतान्यपिनामानि । यदिनामकरणप्रकरणेक्वचिद्गृह्यग्रंथेतादृशनाक्षत्रनामकार्यमितिस्फुटोविधिर्भवेत्तदापिसूक्तवाकादिसंबद्धकर्मानधिकृतजात्यंधविषयोसावितिज्ञेयम् । तदधिकृतान्प्रतिव्याकरणानुसारिनाक्षत्रनाम्नामेवावश्यकतायादर्शितत्वात् । शांखायनास्तु—कृत्तिकासूत्पन्नस्यअग्निशर्मेत्येवंनाक्षत्राणिन्नामानितत्तद्देवतासंबद्धानिमन्यंते । उदाहृतंचश्रुतिभाष्येवचनं—नक्षत्रदेवताएताएताभिर्यज्ञकर्मणि । यजमानस्यशास्त्रज्ञैर्नामनक्षत्रजंस्मृतम् । शर्मांतंब्राह्मणस्योक्तमिति । अभिवादनिकंचसूक्तवाकेपठनीयंनाक्षत्रादन्यदेवेत्यपितत्सूत्रभाष्ये । कातीयाअपिदेवतासंबद्धमेवनाक्षत्रनाममन्यंते । नैतदाश्वलायनानाम् । व्यावहारिकंनामाहबृहस्पतिः—नामाखिलस्यव्यवहारहेतुःशुभावहमिति । तत्स्वरूपमाहाश्वलायनः—नामचास्मैदद्युर्घोषवदाद्यंतरंतस्थमभिनिष्ठानांतंद्व्यक्षरंचतुरक्षरंवाद्व्यक्षरंप्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरंब्रह्मवर्चसकामोयुग्मानित्वेवपुंसामयुजानिस्त्रीणामिति । वर्गेषुकखचछेत्यादिप्रथमद्वितीयभिन्नागघेत्यादयःपंचदशहकारश्चेत्येतेघोषवंतोहलः तदन्यतरआदिर्यस्यअंतस्थोयरलवान्यतरोमध्येयस्याभिनिष्ठानोविसर्जनीयोंऽतेयस्याक्षरंस्वरःसचऋलभिन्नः यस्मिन्द्वेअक्षरेचत्वारिवा व्यंजनेषुनसंख्यानियमः । युग्मानित्वेवेतितदन्यलक्षणानादरेपिनदोषइतिज्ञापनार्थं । ततश्चदेवइत्यादिवद्रुद्रइत्याद्यपिकार्यं । अत्रविशेषंवसिष्ठः—तद्द्व्यक्षरंवाचतुरक्षरंवाविवर्जयेदंत्यलकाररेफम् । तन्मासनामादिकमेवाचिंत्यंस्फुटंवदेद्दक्षिणकर्णरंध्रइति । महाभाष्येयाज्ञिकाःपठंति—त्रिपुरुषा

नुकमनरिप्रतिष्ठितंकृतंकुर्यान्नतद्धितमिति।कृदंतंकुर्यान्नतद्धितांतमितिभावः। कपिलसंहिताया—देवतानांविशेषेणपित्रोर्वानामशस्यतइति।हिरण्यकेश्यापस्तंबाभ्यांविशेषांतरमुक्तंनामादि।आख्यातांतंनामहिरण्यदाइत्यादि।स्वित्युपसर्गादिवासुश्रीरित्यादीति।व्यावहारिकनामाधिकारेयमः—शर्मदेवश्चविप्रस्यवर्मराजाचभूभुजः।गुप्तोदत्तश्चवैश्यस्यदासःशूद्रस्यकारयेदिति। मनुः—स्त्रीणांचसुखमक्रूरंविस्पष्टार्थंमनोरमम्।मंगल्यंदीर्घवर्णांतमाशीर्वादाभिधानवदिति। प्रासादादीनामपिनामकार्यमितिस्कांदे—देवालयगजाश्वानांवृक्षाणांवापिकूपयोः। सर्वापणानांपण्यानांचिह्नानांयोषितांनृणाम्। काव्यादीनांकवीनांचपश्वादीनांविशेषतः। गजप्रासादयज्ञानांनामकर्मयथोदितमिति। नामकर्मणिविशेषंपारिजातेभगवान्—शिशोर्नामाथपित्रादिर्दशमेद्वादशेपिवा। कुर्याद्यद्वागुणैर्युक्तेनक्षत्रेऽनुगुणेशिशोः। इदमार्याःकुमारस्यनामास्यविदधाम्यहम्। इतिविज्ञापितैर्विप्रैर्विद्वद्भिरनुमोदितम्। ब्राह्मणैःसार्धमारभ्यपूर्वंपुण्याहवाचनम्। तत्रपुण्याहपर्यायंयथाविधिसमाप्यच। स्वस्तिपर्यायमध्येतुनामधेयंविधित्सितम्। चतुर्थ्यंतमुदीर्यादौपितातन्नामकर्मणि। स्वस्तीत्याद्यंब्रुवंत्वंतंभवत्पदमुदीरयेत्। वक्तारश्चचतुर्थ्यंतंबालनामोक्तिपूर्वकम्। स्वस्तीत्येवंप्रतिब्रूयुरिति। आदृतश्चासौ स्वस्तिवाचनगतोविशेषःशौनकजयंतकारिकासुपारिजातादिप्रयोगेषुच। अभिवादनीयंचनामनस्त्रीणामित्युक्तंजयंतेनेत्यलम्॥ ॥अथप्रयोगः। तत्रगर्भाधानादिसंस्कारातिपत्तौप्रमादात्तदकरणे जातकर्मणःकालातिपत्तिनिमित्तकाज्यहोमपूर्वकंप्रत्येकंपादकृच्छ्रंबुद्धिपूर्वकाकरणेप्रत्येकमर्धकृच्छ्रंगोदानतिलसहस्रहोमाद्यन्यतरप्रत्याम्नायेनकुर्यात्। तद्यथा।

जातकर्मणःकालातिपत्तिनिमित्तदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंप्रायश्चित्तहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्यउपलेपनाद्याज्य
भागांतंकृत्वा ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहेत्याज्याहुतिंहुत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य गर्भाधानपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नय
नलोपनिमित्तदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंइयतःपादकृच्छ्रानेतत्प्रत्याम्नायेनाचरिष्यइतिसंकल्पितान्संकल्पपूर्वक
मर्धकृच्छ्रान्वाचरेत् । आरभ्याधानमाचौलात्कालेऽतीतेतुकर्मणाम् । व्याहृत्याज्यंसुसंस्कृत्यहुत्वाकर्मयथाक्रमम् ।
एतेष्वेकैकलोपेपिपादकृच्छ्रंसमाचरेत् । चूडायाअर्धकृच्छ्रंस्यादापदित्येवमीरितम् । अनापदितुसर्वत्रतदेवद्विगुणंचरेदि
तिभगवदुक्तेः । अस्मिन्होमेपारिजातमनुसृत्यपाकयज्ञतंत्रमुक्तम् । केचित्तुआज्यंसुसंस्कृत्येतिवचनादग्निस्थापनाज्यसं
स्कारपात्रसंमार्गातिरिक्तंनकार्यमित्याहुः । अथदेशकालौसंकीर्त्यअस्यकुमारस्यायुरभिवृद्धिव्यवहारसिद्धिबीजगर्भसमुद्भ
वैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनामकर्मकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजनस्वस्तिवाचनादिकुर्यात् । केवलनामचिकी
र्षायांस्वस्तिवाचनमुपक्रम्यपुण्याहत्रयमुक्त्वाऽमुकनाम्नेस्मैस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितित्रिर्वदेत् । ब्राह्मणाश्चैतन्नाम्नेस्वस्तीतिप्र
तिब्रूयुः । ततश्चपुण्याहवाचनशेषंसमापयेत् । जातकर्मसहितनामचिकीर्षायामस्यकुमारस्यजातकर्मनामकर्मणोःपुण्या
हंभवंतोब्रुवंत्वितित्रिरुक्त्वात्रिःप्रत्युक्ते अस्यकुमारस्यजातकर्मणएतन्नाम्नेऽस्मैचस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितित्रिर्वदेत् । तदनुसा
रिप्रतिवचनेब्राह्मणैर्दत्तेऽस्यकुमारस्यजातनामकर्मणोः ऋद्धिंभवंतोब्रुवंत्वितित्रिर्वदेत् । ऋध्येतामितिब्राह्मणाःप्रतिब्रूयुः ।
ततःपुण्याहशेषंसमाप्यनांदीश्राद्धांतंकृत्वाआचारप्राप्तंनामदेवतापूजनंकुर्यात् । तदित्थम् । तंडुलपूर्णकांस्यपात्रेसुवर्ण

शलाकयाश्रीगणेशायनमइतिलिखित्वा कुलदेवतानाम लिखेत्श्रीनृसिंहभक्तइत्यादि। ततोमासनामकृष्णइत्यादि। ततोनाक्षत्रनामकृत्तिकइत्यादि। ततोव्यावहारिकंशिवशर्मेति। ततोनामदेवताभ्योनमइतितेष्वक्षतेषुनामदेवताआवाहयेत्। तदस्तुमित्रावरुणा॰ गृहावैप्रतिष्ठा॰ इतिप्रतिष्ठाप्य नाममंत्रेणषोडशोपचारैःसंपूज्य बालस्यदक्षिणकर्णेउपदिशेत्। तदित्थम्। इदमार्याःकुमारस्यनामास्यविदधाम्यहमितिप्रार्थितब्राह्मणैरनुज्ञातःश्रीगणपतयेनमइत्युपन्यस्य कुलदेवतानाम्नाश्रीनृसिंहभक्तोऽसि मासनाम्नाकृष्णोऽसि ततोनाक्षत्रेणनाम्नाकृत्तिकोसि इत्युपांशुवदेत्। ततोव्यावहारिकेणनाम्नाशिवशर्मासीति तदस्तुमित्रावरुणा॰ गृहावैप्रतिष्ठेत्युक्त्वा सुप्रतिष्ठितंनामास्त्वितिब्राह्मणाःप्रवदेयुः। ततःकर्तातिष्ठन्कुलदेवतानाम्नाश्रीनृसिंहभक्तोभवतःसर्वान्ब्राह्मणानभिवादयतेइतिवदेत्तेचायुष्मान्भवतुश्रीनृसिंहभक्तइतिवदेयुः। एवंकर्तामासनाम्नाकृष्णोभवतोऽभिवादयतेइतिवदेत्तेचाऽऽयुष्मान्भवतुकृष्णइतिवदेयुः। कर्तोपांशुवदेन्नाक्षत्रेणनाम्नाकृत्तिकइति भवतःसर्वान्ब्राह्मणानभिवादयतेइत्युच्चैः। आयुष्मान्भवतुभवदुक्तनामेतितेवदेयुः। कर्ताव्यावहारिकेणनाम्नाशिवशर्माभवतइति। तेचायुष्मान्भवतुशिवशर्मेतिवदेयुः। तदस्तु॰ गृहावैप्रति॰। ततःकृतस्यनामकर्मणःपूर्णतासिद्ध्यर्थं दशब्राह्मणान्भोजयिष्येइतिसंकल्प्यभूयसीदानंचसंकल्प्येश्वरार्पणंकुर्यात्। प्रयोगकालेप्यभिवादनीयनाम्नउपांशुत्वमाह शौनकः—अभिवादननामेदमस्येत्यालोच्यचेतसा। उपांशुनिर्दिशेचैतन्नजानीयुःपरेयथेति। अभिवादनीयंचनाक्षत्रमेव पूर्वोदाहृतबौधायनवचनात्। तच्चव्यावहारिकोत्तरंकार्यमितियद्यप्याश्वलायनीयपाठक्रमादवगम्यते, यद्यपिपारिजाते

प्रयोगकालेयमेवक्रमोनुसृतस्तथापिसूक्तवाकेदेवत्रातेननाक्षत्रोत्तरंव्यावहारिकविनियोगकथनात् तदुदाहृततत्साधक
न्यायसहकृतवृद्धाचारवशाच्चविपरीतक्रमोमयोदाहृतः—नामकर्मणिव्यावहारिकस्यैवशर्मांतत्वेस्मृतिसिद्धेप्यभिवादनेना
क्षत्रस्यतदंतत्वंवाचनिकमिति । इतिपुंसांनामकर्म ॥ ॥ अथस्त्रीणाम् । संकल्पेऽस्याःकुमार्याइतिविशेषः । स्वस्तिवाच
नेएतन्नाम्न्यैअस्यैस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्विति। स्वस्तिवाचनांतेनामानिलिखेत्। भक्तेत्याबंतंकुलदेवतानाम। मासनामसुचक्रिणी
वैकुंठीवासुदेवीतित्रीणिङीबंतानि । सांकेतिकेष्ववयवार्थाभावेपिनांतत्वाणंतत्वयोर्ङीब्व्युत्पत्तिनिमित्तयोरनपायात् ।
हरिरित्यविकृतंसंकेतेनमतिशब्दवत्स्त्रियांसंभवात् कृष्णाअनंतेत्येवमवशिष्टान्याबंतानिअदंतत्वात्ननाक्षत्रंमातृदत्तोक्तम
प्याश्वलायनशाखिभिःकार्यं अभिवादनीयनिषेधस्यजयंतेनोदाहृतत्वात् । व्यावहारिकेचयज्ञदाशर्मेत्यादिपुंवत्प्रयोगः
नाममंत्रेणपूजादिवैदिकमंत्रवर्जंपुंवत् । द्विविधमप्येतत्पितुरसंनिधौपितामहादिःकुलवृद्धःकुर्यात् । पितानामकुर्यादन्यो
वाकुलवृद्धइतिशंखस्मरणात् ॥ इतिसंस्कारकौस्तुभेनामकर्म ॥ ॥ ॥ ॥

अथदोलारोहणं ॥ भविष्ये—अभीष्टेपुण्यदिवसेचंद्रताराबलान्विते । मृदुध्रुवक्षिप्रभेषुमातावाकुलयोषितः । योगशा
यिहरिंस्मृत्वाप्राक्शीर्षंविन्यसेच्छिशुमिति । मृदुध्रुवादिलक्षणंश्रीपतिः—रोहिण्युत्तरभंस्थिरंगिरिशमूलेंद्रोरगंदारुणंक्षि
प्रंचाश्विदिनेशपुष्यमनलेंद्राग्नीतुसाधारणम् । उग्रंपूर्वमघांतकंमृदुमृगत्वाष्ट्रांत्यमैत्रंचराविष्णुस्वातिशतोडुवस्वदितयःकुर्युः
स्वसंज्ञाफलमिति । रोहिणीउत्तरात्रयंचेतिस्थिरं । आर्द्रामूलज्येष्ठाश्लेषादारुणानि । अश्विनीहस्तपुष्याःक्षिप्राणि ।

कृत्तिकाविशाखेसाधारणे । पूर्वात्रयंमघाभरणीउग्राणि । मृगचित्रारेवत्यनुराधामृदूनि । श्रवणस्वातीशततारकाधनिष्ठापुनर्वसवश्चराणि । एतेषांसंज्ञानुसारिफलंज्ञेयमिति । ईदृशनक्षत्रनियमापवादोज्योतिर्निबंधे—आंदोलाशयनेपुंसोद्वादशोदिवसःशुभः । त्रयोदशस्तुकन्यायांननक्षत्रविचारणा । अन्यस्मिन्दिवसेचेत्स्यात्तिर्यगास्येप्रशस्यतइति । अन्यदिवसानाहपारिजातेबृहस्पतिः—दोलारोहस्तुकर्तव्योदशमेद्वादशेपिवा । षोडशेदिवसेवापिद्वाविंशेदिवसेपिवेति । द्वात्रिंशइतिक्वचित्पाठः । इतिसंस्कारकौस्तुभेदोलारोहणम् ॥ ॥ अथदुग्धपानंश्रीधरीये—एकत्रिंशेवासरेवाद्वितीयेजन्मर्क्षेवाशुद्धलग्नेनुकूले । शंखेक्षीरंसंनिदध्याच्छिशूनांवक्रेधात्रीपूज्यपूजांविधायेति । शंखइतिसप्तमीतृतीयार्थे । पूज्याःकुलदेवताविप्राश्च । नृसिंहः—पूर्वाह्णेवाथमध्याह्नेकुर्याद्रात्रिंविवर्जयेत् । योगिनीराहुरुद्रादिमुखंचैवविवर्जयेदिति । योगिन्यादिलक्षणंयोगिनीनांस्थिरचरभेदश्चज्योतिःशास्त्रादवगंतव्यः । इतिसंस्कारकौस्तुभेदुग्धपानम् ॥ ॥ अथाचारप्राप्तंजलपूजनं । आहुर्ज्योतिर्विदः—कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपोषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ । बुधेंद्वीज्यवारेष्वरिक्तेतिथौहिश्रुतीज्यादितींद्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैरिति । शुक्रगुर्वस्तयोश्चैत्रेऽधिमासेपौषेचनकार्यं । मासांतेबुधसोमगुरुवारेषुरिक्तान्यतिथौश्रवणपुष्यपुनर्वसुमृगहस्तमूलानुराधानक्षत्रेषुकुर्यादितिभावः । इतिसंस्कारकौस्तुभेजलपूजनम् ॥ ॥ अथशिशोस्तांबूलभक्षणम् । सार्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः । कर्पूरादिकसंमिश्रंविलासायहितायच । सार्धयुग्मकमासेतुपूगस्यप्राशनंशुभम् । षड्भिरन्नस्यमासैस्तुभोगीभोगेभवेन्नरइति । षड्भिर्मासैरन्नस्यभोगइत्यन्वयः । अतोऽन्नप्राशनकालस्तांबूलभ

क्षणेविशिष्टइतिप्रतीयते । इतितांबूलभक्षणम् ॥ ॥ अथसूर्यावलोकनादिसंस्कारः । पारिजातेयमः—तृतीयेमासि कर्तव्यमहःसूर्यस्यदर्शनम् । चतुर्थेमासिकर्तव्यमग्नेश्चंद्रस्यदर्शनम् । उपनिष्क्रमणंकुर्याच्चतुर्थेमासिसावनेइति । शौनकः—अन्नप्राशनकालेवाकुर्यान्निष्क्रमणक्रियामिति । अथनिष्क्रमणकालः मुहूर्तसंग्रहे—पूर्वपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकं विना । तथा—रिक्ताषष्ठ्यष्टमीदर्शोद्वादशीचविवर्जिताइति । वारनक्षत्राण्याहबृहस्पतिः—जीवभार्गवसौम्यानांशिशुनिष्क्रमणक्रिया । दिवसेशस्यतेनित्यमायुर्वृद्धिधनप्रदेति । अश्विनीरेवतीहस्तोधनिष्ठारोहिणीतथा । श्रवणंपुष्यसंयुक्तंमृगेणोत्तरफल्गुनी । अनुराधोत्तराषाढातथैवचपुनर्वसुः । इमानिभानिशस्तानिशिशोर्निष्क्रमणेविधाविति । योगादिमुहूर्तसंग्रहे—वर्ज्याश्चाशुभयोगाश्चविष्टिश्चशकुनादिचेति । आदिशब्देननिषिद्धकरणांतरसंग्रहः ॥ ॥ अथनिष्क्रमणेविशेषविधिर्विष्णुधर्मोत्तरे—चतुर्थेमासिकर्तव्यंशिशोर्निष्क्रमणंगृहात् । दिगीशानांदिशांतत्रतथाचंद्रार्कयोर्द्विजः । पूजनंवासुदेवस्यगगनस्यचकारयेत् । ततःस्वलंकृताधात्रीबालमादायपूजितम् । बहिर्निष्कासयेद्गेहाच्छंखपुण्याहनिस्वनैः । ततस्तत्रपठेन्मंत्रंयंतंरामनिबोधमे । चंद्रार्कयोर्दिगीशानांदिशांचगगनस्यच । निक्षेपार्थमिमंदद्मितेऽमुंरक्षंतु सर्वदा । अप्रमत्तंप्रमत्तंवादिवारात्रमथापिवा । रक्षंतुसततंसर्वेदेवाःशक्रपुरोगमाइति । स्त्रीणामविधवानांचद्विजानांसुहृदांतथा । तदातुपूजाकर्तव्यागीतनृत्यैस्तथोत्सवइति । शंखग्रहणंवाद्यांतरोपलक्षणं । तत्रबहिर्देशगमनेतुमंत्रांतरमाहाश्वलायनः—नयेदाकल्पकैःसम्यग्देवतायतनंगृहात् । अभ्यर्च्यदेवतामूर्तिंपंचघोषपुरःसरम् । भोजयित्वाद्विजान्गेहे

स्वस्तिवाचनमाचरेत् । शाकुंतेप्रजपेत्सूक्तेशिशोर्निष्क्रमणेपितेति । आकल्पैर्भूषणैः । पंचघोषाःपंचविधावाद्यघोषाः । शाकुंतेसूक्तेकनिक्रद्दितिप्रदक्षिणिदितिच । ततोमंगलदर्शनंकारणीयमित्यपिविष्णुधर्मोत्तरे——द्विजांश्चादर्शपूर्वाणिमंगलानिपुरोनयेत् । दर्पणःकलशःकन्यातथासुमनसोक्षताः । दीपमालाध्वजोलाजाःसंप्रोक्तंचाष्टमंगलम् । विवाहेनिष्क्रमेकाम्येवृद्धौपूर्तेसमागमे । उत्सवेषुचयात्रायांप्रशस्तंचाष्टमंगलमिति। शौनकः——निर्गमय्यगृहादेनंनीत्वाचेष्टसुरालयम् । ततःप्रदक्षिणंनीत्वाबालंतद्देवतालये । गंधमाल्यादिभिस्तत्रपूजयित्वाचदेवताम् । प्रणमय्यचतंबालंततोदेवालयस्थितैः । विद्वद्भिर्ब्राह्मणैराशीर्वादाद्यैरभिनंदितम् । मातुलादेःसमासन्नबंधोःप्रापय्यमंदिरम् । तत्रोपहारदानाद्यैराशीर्भिश्चाभिलालितम् । कुमारंपरिगृह्यैनंप्रापयेत्स्वगृहंततइति । जयंतः——ततोमातृष्वसृमातुलादिगृहंगत्वातेषांचाशीर्वचनादिभिर्नंदितोदीर्घायुर्भवतीति । बृहस्पतिः—स्वस्तिवाच्यसमारूढवाहनंनिर्ययेद्गृहात् । मातुलोवावहेत्तत्रनिर्वाहनशिशुंस्वयम् । शिशुनासहमित्राणिनिर्गच्छेयुर्गृहात्स्वयम् । सहदुंदुभिघोषैश्चवाद्यशब्दसमन्वितैः । चतुरस्रेशुचौदेशेगोमयेनोपलेपिते । धान्यपुंजसमासीनंबालंबालामथापिवा । अर्चयेद्गंधपुष्पाद्यैस्तस्मिन्मूर्ध्निललाटके । अस्यरक्षांततःकृत्वामृतसंजीवनंजपेत् । तत्रार्चयेद्गणेशानंभूतेशानंतथैवच । भक्ष्यैर्विचित्रैःसफलैःशिशूनभ्यर्चयेद्बुधइति । कृत्वेतिसुखंव्यादायस्वपितीतिवत्पौर्वापर्यमविवक्षितम् । शिशुनेतितद्धस्तेनपूजनंकारयेदित्यर्थः । अत्रकर्तृनियममाहशौनकः—मासेचतुर्थेषष्ठेवाशिशोर्निष्क्रमणंगृहात् । विदधीतास्यपित्रादिर्हितैषीयश्चरक्षकइति । यद्यपिसूर्येंद्वोःकर्मणीयेचतयोःश्राद्धंन

विद्यतइतिकातीयस्मरणान्नात्रनादीश्राद्धमितिकल्पतरुणोक्तंतथाप्याश्वलायनशाखिभिरिच्छयानुष्ठेयम् । अन्यैःषोडशसंस्कारश्रावण्यादिष्वपीष्यतइतिकारिकोक्तेः। अस्यनित्यकाम्यत्वमाहबृहस्पतिः—अथनिष्क्रमणंनामगृहात्प्रथमनिर्गमः। अकृतायांक्रियायांस्यादायुःश्रीनाशनंशिशोः । कृतेसंपद्विवृद्धिःस्यादायुर्वर्धनमेवचेति ॥ ॥ अथभूमावुपवेशनकालः । विष्णुधर्मोत्तरे—पंचमेचतथामासेभूमौतमुपवेशयेत् । तिथिंविवर्जयेद्रिक्तांशस्तानिशृणुभानिमे । उत्तरात्रितयंसौम्यंपुष्यर्क्षंशुक्रदैवतम् । प्राजापत्यंचहस्तश्चशस्तमाश्विनमित्रभम् । नचसर्वेग्रहाःशस्ताभौमोरामविशेषतः । भौमानुकूल्यमत्रावश्यकमितिभावः । वराहंपूजयेद्देवींपृथिवींचतथाद्विजः । पूजनंपूर्ववत्कृत्वागुरुदेवद्विजन्मनाम् । देवःकुलदैवतम् । भूभागमुपलिप्याथकृत्वातत्रतुमंडलम् । शंखपुण्याहशब्देनभूमौतमुपवेशयेत् । मंत्राश्चात्रभवंतीमेतान्मेनिगदतःशृणु । रक्षेमंवसुधेदेविसदासर्वगतंशुभे । आयुःप्रमाणंसकलंनिक्षिपस्वहरिप्रिये । अचिरादायुषस्तस्ययेकेचित्परिपंथिनः । जीवितारोग्यवित्तेषुनिर्दहस्वाचिरेणतान् । धारिण्यशेषभूतानां[1]मातस्त्वमधिकाह्यसि । अजराचाप्रमेयाचसर्वभूतनमस्कृते । त्वमेवाशेषजगतांप्रतिष्ठाचाश्रयाह्यसि । कुमारंपाहिमातस्त्वंब्रह्मातदनुमन्यतामिति । तस्योपवेशनंकृत्वाभूमौब्राह्मणपूजनम् । ततःकृत्वाततःकार्यमुत्सवंपूर्ववद्द्विजइति । उत्सवंनीराजनादीतिव्याख्यातंपारिजाते । एतत्कुमार्याअपि ॥ अथान्नप्राशनकालः ॥ आश्वलायनः—षष्ठेमास्यन्नप्राशनमिति । पारिजातेनारदः—जन्मतोमासिषष्ठेस्यात्सौरेणोत्तम

---

[1] मातस्त्वमसिकामधुक् ।

मन्नदम् । तदभावेऽष्टमेमासेनवमेदशमेपिवा । द्वादशेवापिकुर्वीतप्रथमान्नाशनंपरं । संवत्सरेवासंपूर्णेकेचिदिच्छंतिपंडिताइति । सौरेणमानेनषष्ठइत्यन्वयः । नचायमेवनियमः । बालान्नभोजनविधौगुरुशुक्रमौढ्यबाल्यप्रयुक्तमशुभंत्वधिमासदोषः । नास्त्येत्रसावनविधाविहमासिषष्ठेयुग्मेचमासिपरतःशुभचंद्रपक्षइतिविधिरत्नं । सावनमानेनापिषष्ठस्यमासस्यविधानात् । शुभचंद्रपक्षःशुक्लपक्षः । तत्रापिपरस्मिन्पंचम्याःपरभागइत्यर्थः । पंचम्याःकृष्णपक्षइतिशास्त्रांतरसंवादात् । युग्मेमासीतिषष्ठासंभवेऽष्टमादियुग्ममासएवपुंसामन्नप्राशनेग्राह्यइतिनियमार्थं । अतएवनारदवाक्येनवममासविधिःस्त्रीणामन्नप्राशनविषयः । तथाचगर्गः—नरस्यान्नाशनेयुग्मंस्त्रीणामन्नाशनेऽयुजमिति । तत्रापियथाकुलधर्मंव्यवस्था । यद्वेष्टंमंगलंकुलइतिमनूक्तेः । तिथीःप्राहलघुनारदः—द्वितीयाचतृतीयाचपंचमीसप्तमीतथा । त्रयोदशीचदशमीप्राशनेतिथयःशुभाः । पंचपर्वसुरिक्तायांनंदायामाद्यभोजनम् । बलमायुर्यशोहंतिसप्तम्यांचेतिकेचन । रिक्तांदिनक्षयंनंदांद्वादशीमष्टमीमिमाम् । त्यक्त्वान्यतिथयःश्रेष्ठाःप्राशनेशुभवासराइति । वासराइत्यनंतरंश्रेष्ठाइत्यनुषंगः । वासराणांशुभत्वंफलद्वारेणाहमार्तंडः—वाचालोबलवान्दिनेदिनपतेरत्यंतदीप्तानलोदेहीहीनहुताशनःशिशिरगौकौजेरुजापीडितः । बौधेभोगसुखंश्रियोऽनवरतंजीवेचिरायुःसुखीशुक्रेचातिबलान्वितोऽतिमलिनोमंदेचमंदानलइति । शिशिरगुःसोमवारः । कौजोभौमवारः । बृहस्पतिः—पौष्णादितींदुहस्ताश्वित्वाष्ट्रवैष्णववासवाः । रोहिणीमैत्रतिष्याश्चवरुणश्चोत्तरात्रयम् । श्रविष्ठाचशुभाह्येतेषोडशान्नाशनेशुभाइति । पौष्णंरेवती अदितिःपुनर्वसुः इंदुर्मृगः वासवंधनिष्ठा वरुणःशतभिषक् ।

ज्योतिरर्णवः—जन्मर्क्षेश्रीक्षयंविद्यात्कर्मर्क्षेचातिसौख्यकृत् । आधानर्क्षेचबालानांभोजनेरोगनाशनमिति । एतान्युक्तानिसंग्रहे—जन्मभंजन्मनक्षत्रंदशमंकर्मसंज्ञितम् । एकोनविंशमाधानमिति । यत्तुनारदेनोक्तम्—पट्टबंधनचौलान्नप्राशनेचोपनायने । शुभदंजन्मनक्षत्रमशुभंत्वन्यकर्मणीति तत्क्षत्रियविषयं पट्टबंधसाहचर्यात् । बृहस्पतिः—नवैधृतौव्यतीपातेविष्ट्यांगंडातिगंडयोः । शूलेवज्रेनपरिघेबालान्नप्राशनंशुभमिति । लग्ननियममाहकश्यपः—गोश्वकुंभतुलाकन्यासिंहकर्किनृयुग्मकाः । शुभदाराशयश्चैतेनमेषझषवृश्चिकाइति । अश्वीतिधनुरुच्यते । राजमार्तंडः—लाभत्रिषष्ठनवमोपगतास्त्वसौम्याःसौम्यग्रहानवमपंचमकंटकस्थाः । लग्नेषुदैत्यसचिवज्ञबृहस्पतीनामन्नोपभोगकरणैर्विविधोपभोक्तेति । कंटकशब्देनप्रथमचतुर्थसप्तमदशमस्थानानिकेंद्रपदवाच्यान्युच्यंते । अन्नप्राशनांतेकर्तव्यंपारिजातेमाधवीयेचमार्कंडेयः—अग्रतोथपरिन्यस्यशिल्पभांडानिसर्वशः । शस्त्राणिचैववस्त्राणिततःपश्येत्तुलक्षणम् । प्रथमंयत्स्पृशेद्बालस्ततोभांडंस्वयंतदा । जीविकातस्यबालस्यतेनैवतुभविष्यतीति । एवंसूर्यावलोकनादीनांभिन्नकालत्वोपदेशेपिशिष्टैरन्नप्राशनकालएवप्रायशोनुष्ठानात् शौनकेननिष्क्रमणेऽन्नप्राशनकालोपदेशात्सौकर्यात्सहप्रयोगोभिधीयते ॥ ॥ तत्रान्नप्राशनकालाविरोधेननिष्क्रमणादिकालोपसंहारेणनिर्णीतदिनेभार्ययासहकृताभ्यंगस्नानोदेशकालौसंकीर्त्यममास्यकुमारस्यायुरभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसूर्यावलोकनं, आयुःश्रीवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनिष्क्रमणं, आयुर

---

१ तस्मिन्कालेस्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रंशस्त्रंपुस्तकंलेखनींच । स्वर्णंरौप्यंयच्चगृह्णातिबालस्तैराजीवंतस्यवृत्तिःप्रदिष्टा । इति ।

भिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंभूमावुपवेशनं, मातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेजइंद्रियायुर्लक्षणफलसिद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अन्नप्राशनंचकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकृत्वानिष्क्रमणांगत्वेनेंद्रादिविंशतिदेवताः, उपवेशनांगत्वेनवराहंपृथिवींच, सूर्यावलोकनादिसंकल्पितसकलकर्मांगत्वेनइष्टदेवतांच पूजयिष्यइतिसंकल्प्यत्रयोविंशतिप्रतिमासुधान्यपुंजेषुवा ॐइंद्रायनमः इंद्रमावाहयामीत्येवमिंद्राग्नियमादिलोकपालान्, ॐप्राच्यैनमःप्राचीमावाहयामीत्येवंप्राच्याद्यैशान्यंतादिशः, चंद्रायनमोर्कायनमोवासुदेवायनमोगगनायनमोवराहायनमःपृथिव्यैनमइत्येतैर्मंत्रैःप्रणवाद्यैरमुमावाहयामीत्यंतैश्चंद्रादिदेवताअमुष्मैनमोऽमुमावाहयामीतीष्टदेवंचावाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्यसूर्यावलोकनंकारयेत् । तद्यथा । स्वस्तिनःस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् शिशोरंकारोपणेविनियोगः ॐ स्वस्तिनोमिमीतामितिमंत्रेणशिशुमंकमारोप्य । आशुःशिशानइतिसूक्तस्येंद्रोप्रतिरथइंद्रस्त्रिष्टुप् चतुर्थीबार्हस्पत्यात्रयोदश्यनुष्टुप् जपेवि० ॐ आशुःशिशानो० वरंवरम् । तच्चक्षुर्वसिष्ठःसूर्यःपुरउष्णिक् शिशोःसूर्यावेक्षणेवि० तच्चक्षुर्देवहितं० ऋक् ॥

॥ अथनिष्क्रमणम् । पूजितदेवताप्रीत्यर्थंत्र्यवरान्ब्राह्मणान्भोजयित्वाऽस्मैकुमारायस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिस्वस्तिवाचयित्वा यथाशक्त्यलंकृतंबालंधात्र्यामातुलेनवावाहनेनोह्यमानंमंगलवाद्यघोषेणकनिक्रददितिशाकुंतसूक्तद्वयंपठन्ज्ञातिभिःसह बहिर्नीत्वा पुरोभागेब्राह्मणानांदर्पणकलशकन्याद्यष्टमंगलानांसूर्याग्निचंद्रधेनूनांचयथासंभवंदर्शनंकारयित्वा बहिर्देशे शुचौस्थानेसशिशुरुपविश्यदेवताःप्रार्थयेत् । चंद्रार्कयोर्दिगीशानांदिशांचगगनस्यच । निक्षेपार्थमिमंदद्मितेमंरक्षंतुसर्वदा ।

अप्रमत्तंप्रमत्तंवादिवारात्रावथापिवा । रक्षंतुसततंसर्वेदेवाःशक्रपुरोगमाइति । वरुणस्यचेतिपाठः । दिशाचेत्यनुक्तसमुच्चयार्थचकारोच्चारणकालेवासुदेवंध्यायेत् । तेममित्येकारश्छांदसः । त्वामित्यपपाठः । पारिजातधृतपौराणपाठादावदर्शनात् । ततोविष्णुशिवादीष्टदेवालयंनीत्वास्वगृहस्थदेवसमीपेवानीत्वादेवंसंपूज्यबालंप्रणमय्यप्रदक्षिणंचकारयित्वा मातुलादिवंधुगृहंप्रापय्यस्वगृहेवातमानीयं मातुलादिनावस्त्रादिभिःपितृभ्यांसहबालेपूजितेस्वगृहेगोमयेनोपलिप्तेदेशेचतुरस्रेधान्यराशीन्विधायतेषूपविष्टबालस्यशिरसिभालेचविभूत्यालेपनेनरक्षांकुर्यात् । त्र्यंबकंवसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप् रक्षाकरणेवि० ॐहौंजूंसःत्र्यंबकंयजामहे० मामृतात् सःजूंहौं ॐइतिमृतसंजीवनमंत्रेण । ततोगणेशंभूतेशानंचशिशुहस्तेनसफलापूपाद्युपहारैस्तोषयित्वाब्राह्मणैःसुवासिनीभिश्चाशिषोवाचयेत् ॥ इतिनिष्क्रमणम् ॥ ॥ अथोपवेशनम् । भौमानुकूल्येगुरुंद्विजन्मनश्चसंपूज्यकृतकर्मणऐशानदेशेउपलिप्तेतंडुलपिष्टेनतंडुलैश्चकृतमंडलोपरिवाद्यशब्देनब्राह्मणकर्तृकेणउद्गातेवशकुनेसामगायसीत्यादिमंत्रघोषेणचबालंपित्रादिरुपवेशयेत् । तस्यमंत्राः—रक्षैनंवसुधेदेविसदासर्वगतंशुभे । आयुःप्रमाणंसकलंनिक्षिपस्वहरिप्रिये । अचिरादायुषस्त्वस्ययेकेचित्परिपंथिनः । जीवितारोग्यवित्तेषुनिर्दहस्वाचिरेणतान् । धारिण्यशेषभूतानांमातस्त्वमधिकाह्यसि । अजराचाप्रमेयाचसर्वभूतनमस्कृते । त्वमेवाशेषजगतांप्रतिष्ठाचाश्रयाह्यसि । कुमारंपाहिमातस्त्वंब्रह्मातदनुमन्यतामिति । पारिजातानुसार्येषपाठः । केचित्तुप्रमाणंनिखिलमितिपठंति । अन्येमातात्वमसिकामधुगिति । ततोब्राह्मणान्संपूज्यबालस्यसुवासिनीभिर्नीराजनंकारणीयं । श्रियेजातइतिब्राह्मणाः । इत्युपवे

शनम् ॥ ॥ अथान्नप्राशनम् । दधिमधुघृतमिश्रमन्नंनवेकांचनेकांस्यमयेवापात्रेनिक्षिप्यपूजितेष्टदेवंप्रणम्यतत्पुरतःशुभवस्त्रोपरिस्थितमातुरुत्संगेप्राङ्मुखोपविष्टशिशोःससुवर्णहस्तोन्नंपात्रादीषदादायमंत्रेणप्रथमप्राशनंकारयेत् । अन्नपतइत्यस्यनलकूबरोऽन्नपतिर्जगती अन्नप्राशनेवि० ॐअन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः ।प्रप्रदातारंतारिषऊर्जंनोधेहिद्विपदेचतुष्पदइति । ततोयथेष्टंभोजयित्वाबालस्यमुखंस्वहस्तंचप्रक्षाल्याचामेत् । जयंतस्त्वाह—अन्नंसंस्कृत्यप्रथमंब्राह्मणानाराध्यतेषुशोभनमभिहितवत्सुस्नातमलंकृतंसुकृप्तआसनेप्राङ्मुखमुपवेश्योक्तविधिनान्नंमंत्रेणप्राशयेत् । ततःपंचकृत्वस्तूष्णींप्राशयेदिति । ततःकर्पूरैलादिसंयुक्ततांबूलंप्राशयेत् । ततःपुस्तकशस्त्रादीनिशिल्पानिबालस्याऽग्रेनिधायपरीक्षाकुर्यात् । ततःप्रतिसंस्कारंदशदशेतित्रींस्त्रीनितिवाब्राह्मणान्भोजयिष्यइतिसंकल्प्यनिष्क्रमणांगत्वेनयथाशक्तिसुवासिनीर्भोजयिष्यइतिचसंकल्प्यभूयसींदक्षिणांचसंकल्प्येश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ इतिसंस्कारकौस्तुभेसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशनान्नप्राशनप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथकर्णवेधः ॥ तत्रराजमार्तंडः—ताराचंद्रानुकूल्येऽह्निशस्तेभास्वतिवाक्पतौ । अयुक्संवत्सरेप्राहुःकर्णवेधविधिंबुधाइति । मुहूर्तसंग्रहे—दशमेद्वादशेवाऽह्निषोडशेकर्णवेधनम् । प्रथमेसप्तमेमासिअष्टमेदशमेऽथवा । द्वादशेचतथाकुर्यात्कर्णवेधंशुभावहमिति । गर्गः—मासेषष्ठेसप्तमेवाअष्टमेमासिवत्सरे । कर्णवेधंप्रशंसंतिपुष्ट्यायुःश्रीविवृद्धयइति । वत्सरइतिप्रथमवत्सरांतर्गतानुक्तमाससंग्रहार्थम् । तत्रतृतीयादिवत्सरेचनियममाहव्यासः—कार्तिकेपौषमासेवाचैत्रे

वाफाल्गुनेपिवा । कर्णवेधंप्रशंसंतिशुक्लपक्षेशुभेदिनेइति । व्यवहारोच्चयेतु—नजन्ममासेनचचैत्रपौषेनभाद्रसंज्ञेनहरौ प्रसुप्ते । तिथौनरिक्तेनचविष्टिदुष्टेकर्णस्यवेधंमुनयोवदंतीति । अत्रचैत्रपौषनिषेधोमीनधनुःस्थसूर्यविशिष्टकालविषयइतिवृद्धाः । बोधिन्युत्तरभागविषयश्चकार्तिकविधिः । भाद्रपदनिषेधश्चदोषाधिक्यार्थः । तिथीराहबृहस्पतिः—द्वितीयादशमीषष्ठीसप्तमीचत्रयोदशी । द्वादशीपंचमीशस्तातृतीयाकर्णवेधने । नृसिंहः—एकादश्यष्टमीपर्वरिक्तावर्ज्याइति । वारान्नक्षत्राणिचबृहस्पतिः । भूमिजार्कात्मजार्काणांदिवसान्परिवर्जयेत् । जीवेंदुजेंदुशुक्राणांदिवसाःपूजितामताइति । सौम्यार्यादित्युत्तरात्रिहस्तचित्राश्विविष्णुभम् । धनिष्ठारेवतीचैवशुभाःस्युःकर्णवेधनइति । आर्यःपुष्यः । कश्यपः—शुभयोगेषुसर्वेषुकर्णवेधःशुभावहइति । लग्नव्यवस्थांनारदः—वृषभेमिथुनेमीनेकुलीरेकन्यकासुच । तुलाचापेतुकुर्वीत कर्णवेधंशुभंद्वये । मेषश्चमकरश्चैवमध्यमौगुरुणोदितौ । सिंहवृश्चिककुंभाश्चअधमत्वाद्विवर्जिताइति । कर्णवेधविधिर्विष्णुधर्मोत्तरे—पूर्वाह्णेपूजनंकुर्यात्केशवस्यशिवस्यवा । ब्रह्मणश्चंद्रसूर्याभ्यांदिगीशानांतथैवच । नासत्ययोःसरस्वत्याब्राह्मणानांगवांतथा । गुरूणामर्चनंकृत्वातत्रदत्वावरासनम् । तथोपवेशयेत्तत्रधात्रींशुक्लांबरांतथा । अलंकृतंतदुत्संगेबालंधृत्वातुसांत्वितम् । घृतस्यनिश्चलंसम्यगलक्तकरसांकिते । विध्येदेवंकृतेछिद्रेसकृदेवात्रलाघवात् । प्राग्दक्षिणेकुमारस्य भिषग्वामेतुयोषितः । शिशोर्विवर्धनंकार्ययावदाभरणक्षमम् । कर्णवेधेसदाविप्राःसांवत्सरचिकित्सकाः । पूज्याश्चाविधवानार्यःसुहृदश्चतथाद्विजेति । अत्रसूचीव्यवस्थामाहबृहस्पतिः—सौवर्णीराजपुत्रस्यराजतीविप्रवैश्ययोः । शूद्रस्य

चायसीसूचीमध्यमाष्टांगुलात्मिकेति । बालस्यमध्यमांगुलिमध्यपर्वमितांगुलेनाष्टांगुलेत्यर्थः । वृद्धिमानमाहदेवलः— कर्णरंध्रेरवेश्छायानविशेदग्रजन्मनः । तंदृष्ट्वाविलयंयांतिपुण्यौघाश्चपुरातनाइति । इतिसंस्कारकौस्तुभेकर्णवेधः ॥

अथबालस्यदुष्टदृष्टिदोषादौरक्षाविधिः ॥ पारिजातेकपिलसंहितायाम्——शिशुसंरक्षणार्थायाशुभग्रहनिवारिणीम् । रक्षांसंध्यासुकुर्वीतनिंबसर्षपगृंजनैः । फलीकरणसंमिश्रैःकरंजैरवलोकने । वचोधरान्नदेशेषुबालग्रहविमुक्तये । वासुदेवो जगन्नाथःपूतनातर्जनोहरिः । रक्षतुत्वरितोबालंमुंचमुंचकुमारकम् । कृष्णरक्षशिशुंशंखमधुकैटभमर्दन । प्रातःसंगवमध्याह्नसायाह्नेषुचसंध्ययोः । महानिशिसदारक्षकंसारिष्टनिषूदन । यद्गोरजःपिशाचांश्चग्रहान्मातृग्रहानपि । बालग्रहान्विशेषेणछिंधिछिंधिमहाभयात् । त्राहित्राहिहरेनित्यंत्वद्रक्षाभूषितंशिशुम् । इतिभस्माभिमंत्र्यैवभूषयेत्तेनभस्मना । शिरोललाटाद्यंगेषुरक्षांकुर्याद्यथाविधि । मंत्रसंरक्षणादेवंशिशुःसंवर्धतेऽन्वहमिति । वचो वचनकाले धरा रिंगणकाले अन्नाशनकाले वृक्षादिच्छायादेशेच दुष्टदृष्ट्यवलोकनेनिमित्तं । करंजांतद्रव्यैरक्षांकुर्वीतेत्यन्वयः । यद्गोरजइतिगोरजसःप्रार्थनाप्रतीतेर्गोरजःसहितभस्माभिमंत्रणंद्रष्टव्यम् । इतिसंस्कारकौस्तुभेदुष्टदृष्टिदोषरक्षाविधिः ॥

॥ बालस्यस्खलनादौरक्षाविधिर्हरिवंशे——नंदोंकमेनमारोप्यभूरेणुंपरिगृह्यच । शिरःप्रदक्षिणंकुर्वन्मंत्रमेनंजजापह । विष्णुस्तेपूर्वतःपातुरुद्रोरक्षतुदक्षिणे । ब्रह्माचपश्चिमेपायाच्चंद्रोरक्षत्वथोत्तरम् । उपरिष्टात्तथासूर्यः——पायाच्चाधश्चवासुकिः । पायादूर्ध्वमधोवत्स शिष्टाःकाष्ठाःसमीरणः । स्वस्तिकरोतुभगवान्पिनाकीवृषभध्वजः । गावोरक्षंतुसर्वत्रभूमिःपातुसदाशिवा । एवमुच्चार्य

नंदस्तुकृष्णंपस्पर्शसर्वतः । एषमंत्रोहिबालानांरक्षायैपरिकीर्तितः । इतिसंस्कारकौस्तुभेस्खलनादौरक्षाविधिः ॥ ॥ अथाब्दांतेजन्मतिथिकृत्यम् ॥ ब्रह्मपुराणगर्गसंहितयोः——सर्वैश्चजन्मदिवसेस्नातैर्मंगलपाणिभिः । गुरुदेवाग्निविप्राश्चपूजनीयाःप्रयत्नतः । देवःकुलदेवता । सर्वपदेनशूद्राणामपिसंग्रहः । स्नानंतिलैःकार्यमित्यपितत्रैवोक्तम्—तिलोद्वर्तीतिलस्नायीतिलहोमीतिलप्रदः । तिलभुक्तिलवापीचषट्तिलोनावसीदतीति । होमप्रकारश्चतत्रैवोक्तः——एकैकांदेवतांरामसमुद्दिश्ययथाविधि । चतुर्थ्यंतेनधर्मज्ञनाम्नाचप्रणवादिनेति । देवताःकाइत्यपेक्षायामुक्तम्——स्वनक्षत्रंचपितरौतथादेवःप्रजापतिः । प्रतिसंवत्सरंचैवकर्तव्यश्चमहोत्सवः । गुडदुग्धतिलान्दद्याज्जन्मग्रंथेश्चबंधनम् । कुर्यादितिशेषः । तदुपयोगिद्रव्याण्यपितत्रैवोक्तानि—गुग्गुलंनिंबसिद्धार्थदूर्वागोरोचनायुतम् । उक्तपंचद्रव्यगर्भपोटलिकाबंधनंदक्षिणहस्तेकार्यमित्याशयः । संपूज्यभानुविघ्नेशौमहर्षिंप्रार्थयेदिदम् । चिरंजीवीयथात्वंभोभविष्यामितथामुने । रूपवान्वित्तवांश्चैवश्रियायुक्तश्चसर्वदा । मार्कंडेयनमस्तेस्तुसप्तकल्पांतजीवन । आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थंप्रसीदभगवन्मुने । चिरंजीवीयथात्वंतुमुनीनांप्रवरद्विज । कुरुष्वमुनिशार्दूलतथामांचिरजीविनम् । मार्कंडेयमहाभागसप्तकल्पांतजीवन । आयुरिष्टार्थसिद्ध्यर्थमस्माकंवरदोभवेति । श्रीपतिव्यवहारेमार्कंडेयपूजोत्तरमन्येषामपिपूजोक्ता । ततोदीर्घायुषंव्यासंरामंद्रौणिंकृपंबलिम् । प्रह्लादंचहनूमंतंविभीषणमथार्चयेत् । षष्ठींचदधिभक्तेनवर्षेवर्षेपुनःपुनरिति । ततोगुडतिलमिश्रपयःपानंसमंत्रकंकृत्वागुरुपूजनंचकार्यमित्यप्युक्तम् ॥ ॥ अथप्रयोगः । ममामुकशर्मणआयुष्याभिवृद्ध्यर्थंवर्षवृद्धिकर्मकरि

ष्यइतिसंकल्प्यतिलोद्वर्तनपूर्वकंतिलोदकेनस्नात्वानव्यवस्त्रंपरिधायकृतसंध्याविधिः दक्षिणपाणौगुग्गुलादिपंचद्रव्यगर्भंपोटलिकाबंधनंकृत्वागुरुंविप्रांश्चसंपूज्यप्रतिमास्वक्षतपुंजेषुवा ॐ कुलदेवतायैनमइत्येवंकुलदेवतांस्वनक्षत्रंप्रकृतिपुरुषात्मानौपितरौप्रजापतिंभानुंविघ्नेशंमार्कंडेयंव्यासंजामदग्न्यंरामंअश्वत्थामानंकृपंबलिंप्रह्लादंहनूमंतंबिभीषणंषष्ठींचेतिदेवताआवाह्यसंपूजयेत् । षष्ठ्यैदधिभक्तनैवेद्यंदद्यात् । ततोनमस्कृत्य चिरंजीवीत्यादिश्लोकचतुष्टयेनमार्कंडेयंप्रार्थ्यषष्ठींप्रार्थयेत् । जयदेविजगन्मातर्जगदानंदकारिणि । प्रसीदममकल्याणिनमस्तेषष्ठिदेवते । रूपंदेहियशोदेहिभगंभवतिदेहिमे । पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामांश्चदेहिमे । त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच । ब्रह्मविष्णुशिवैःसार्धंरक्षांकुर्वंतुतानिमेइति । ततःपूजितदेवताभ्योयथोक्तदेवतानामभिःप्रणवादिचतुर्थ्यंतैःप्रत्येकमष्टाविंशत्य २८ वरसंख्ययातिलाहुतीर्हुत्वाभुव्यपितिलावापंकृत्वातिलगुडसंमिश्रमंजल्यर्धमितंपयःपिबेत् । तत्रमंत्रः—सतिलंगुडसंमिश्रमंजल्यर्धंमितंपयः । मार्कंडेयवरंलब्ध्वापिबाम्यायुष्यवृद्धयइति । ततोगुरुंसंपूज्यतस्मैदक्षिणांदद्यात् । अन्यानपिब्राह्मणांश्चभोजयेदिति ॥ तद्दिननियमाश्चस्कांदे—खंडनंनखकेशानांमैथुनाधानमेवच । आमिषंकलहंहिंसांवर्षवृद्धौविवर्जयेदिति । जन्मतिथिद्वैधेनिर्णयोबृहद्राजमार्तंडे—घस्रद्वयेजन्मतिथिर्यदिस्यात्कुर्यात्तदाजन्मभसंयुतांच । असंगतातेनदिनद्वयेचेत्पूज्यापरायाभवतीहयत्नादिति । यत्तुशौनकः—अथस्वजन्मनक्षत्रेस्नातःशुक्लांबरोनृपः । कृतकौतुकबंधश्चसर्वाभरणभूषितः । नक्षत्रदेवतापूजांकुर्याद्गुरुसमन्वितः । आचार्येणैवहोतव्योहोमःसर्वत्रभूपतेः । स्थंडिलाद्याज्यभागांतंकृत्वासर्वं

यथाक्रमम् । दूर्वाघृताक्ताज्जुहुयादष्टोत्तरशताहुतीः । यद्देवताकंनक्षत्रंमंत्रस्तद्दैवतःस्मृतः । ततःस्विष्टकृतात्सर्वंहोमशेषं समापयेत् । गोभूहिरण्यवस्त्राद्यैर्ब्राह्मणान्पूजयेन्नृपः । दुःखार्तान्सर्ववर्णांश्चमोचयेन्नृपतिस्ततः । द्विजान्सर्वानथाभ्यर्च्य पूजितव्यान्सबांधवान् । नहिंस्यात्सर्वभूतानितदहस्तुविशेषतः । एवंसमाचरन्राजासुखीभवतिसर्वदेति तद्राजानंप्रत्येवजन्मनक्षत्रमात्रेविहितमितिनब्राह्मणादीन्प्रत्यब्दांततिथिकृत्यांतर्गतत्वेनवक्तुमुचितम् । एवमन्यदप्यूह्यम् । ब्रह्मपुराणोक्तमृत्युंजयदेवताकदूर्वाहोमस्यापिजन्मर्क्षेविहितस्यकटिसूत्रबंधनांगकस्यउक्ततिथिकृत्यांतर्गतत्वेनगृहस्थब्राह्मणंप्रतिवक्तुमनुचितत्वात् । यत्किंचित्कुरुतेकर्मवैदिकंवाथतांत्रिकम् । कटिबंधनसंयुक्तंतत्सर्वंनिष्फलंभवेत् । रौप्यंकार्पासकंहैमं पट्टसूत्रकृतंतथा । वर्जयेत्कर्मकालेषुकांचींविप्रोविशेषतइतिपारिजातेआश्वलायनोक्तेः । इतिवर्धापनम् ॥

अथचौलम् ॥ तत्राश्वलायनः—तृतीयेपंचमेवाब्देचौलकर्मप्रशस्यते । प्राग्वासमेसप्तमेवासहोपनयनेनवेति । उपनीतेः प्राग्युग्मेवेत्यर्थः । वसिष्ठः—तृतीयेऽब्देपंचमेऽब्देस्वकुलाचारतोपिवा । चौलंशिशूनांयत्नेनस्वगृह्योक्तविधानतः । आधानतोजन्मतोवासप्तमाब्देपिकारयेत् । स्वकुलाचारतइतिविहितकल्पानांव्यवस्थार्थंनतुकालांतरम् । अतएवयाज्ञवल्क्येनसामान्यतोऽभ्यधायि चूडाकार्यायथाकुलमिति । आधानतःगर्भाधानात् । अवधिद्वयस्यपूर्वत्राप्यन्वयः । नारदः—जन्मतस्तुतृतीयेचश्रेष्ठमिच्छंतिपंडिताः । पंचमेसप्तमेवर्षेजन्मतोमध्यमंभवेत् । अधमंगर्भतःस्यात्तुदशमैकादशेपिवेति । देवरातः—अयनेचोत्तरेसौख्यंदक्षिणेत्वशुभावहमिति । तत्रविशेषोज्योतिरर्णवे—मकरेसर्वसंपत्तिःकुंभःसंतानकारकः ।

मीनेतुसर्वदासौख्यंमेषसर्वार्थसाधनम् । विजयंवृषभेविद्यान्मिथुनेवंशवृद्धिकृदिति । सारसंग्रहे—ज्येष्ठेमासितथामार्गेक्षौरंपरिणयंव्रतम् । ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोश्चयत्नतःपरिवर्जयेदिति । कृत्तिकास्थंरविंत्यक्त्वाज्येष्ठेज्येष्ठस्यकारयेत् । अधिमासेतुयत्क्षौरंजन्ममासेतुजन्मभे । नभवेत्तत्रकल्याणमितिशंसंतिसूरयइति । मुहूर्तसंग्रहे—पूर्वपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविनेति । पराशरः—पंचमीसप्तमीचैवदशम्येकादशीतथा । त्रयोदशीतृतीयाचचौलकर्मशुभावहमिति । वसिष्ठोपि—द्वित्रिपंचमसप्तम्यामेकादश्यांतथैवच । दशम्यांचत्रयोदश्यांकार्यंक्षौरंविजानतेति । पराशरः—सितेज्यसौम्यवारेषुचौलंपक्षद्वयेहितम् । इंदुवारःसितेपक्षेवाराःशेषानशोभनाइति । नारदः—दस्रादितीज्यचंद्रेंद्रपौष्णभानिशुभानिच । चौलकर्मणिहस्तर्क्षात्रीणित्रीणिचविष्णुभादिति । बृहस्पतिः—हस्ताश्विविष्णुपौष्णानिश्रविष्ठादित्यपुष्यभम् । सौम्यचित्रेनवक्षौरेउत्तमानवतारकाः । त्रीण्युत्तराणिवायव्यंरोहिणीवारुणंतथा । क्षौरेषण्मध्यमाःप्रोक्ताःशेषाद्वादशगर्हिता इति । लल्लः—हित्वैकंजन्मर्क्षंद्वितारेजन्मसंज्ञितेशुभदे । उद्वाहेचोपनयेयात्रायामन्नभोजनेक्षुरकेइति । राजमार्तंडः—क्षौरंप्रशस्तंमृगचापमीनेकन्याऽविकुंभेमिथुनेवृषेचेति । अत्रकुंभविधिर्गत्यंतराभावे । कुंभःकुलविनाशायकथितःक्षुरकर्मणि । शुभैर्दृष्टोथवायुक्तोनशुभःकुंभभृत्सदेति । भृगुः—कृष्टिःप्रयाणंक्षौरंचमध्येवर्ज्यंयथाष्टमइति । कृष्टिः कर्षणम् । मध्ये द्वितीयादिक्षौरे । पारिजाते—नर्मदोत्तरदेशेतुसिंहस्थेदेवमंत्रिणि । शुभंकर्मनकुर्वीतनिषेधोनास्तिदक्षिणेइति । मातरिगर्भिण्यांव्यवस्थामाहनारदः—सूनोर्मातरिगर्भिण्यांचूडाकर्मनकारयेत् । पंचाब्दात्प्रागथोर्ध्वंतुगर्भिण्यामपिका

रयेत् । सहोपनीत्याकुर्याच्चेत्तदादोषोनविद्यतइति । अतएवकैश्चिदुदाहृतस्यसूनोर्मातरिगर्भिण्यांमौंजीचूडेनकारयेदित्य
स्यवचसःसमूलत्वेपिप्रत्येकमेवनिषेधोनसहितयोः । पंचाब्दानिपूर्यन्तेयस्मिन्दिनेतत्पंचाब्दम् । प्रकारांतरेणनिषेधाप
वादमाहवसिष्ठः—गर्भेमातुःकुमारस्यनकुर्याच्चौलकर्मतु । पंचमासादधःकुर्यादतऊर्ध्वंनकारयेत् । पंचमासागर्भसंबंधिनः
पूर्यंतेयस्मिन्दिनेतत्पंचमासम् । मातरिरजस्वलायांवृद्धगार्ग्यः—विवाहव्रतचूडासुमातायदिरजस्वला । तस्याःशुद्धेःपरं
कार्यंमांगल्यंमनुरब्रवीदिति । चौलादिप्रारंभोत्तरंरजःप्रारंभात्प्रागपिरजसिमुहूर्तांतराभावोवातदाशांतिंकृत्वातदैवका
र्यम् । यथोक्तंकारिकानिबंधे—सूतिकोदक्ययोःशुद्ध्यैगांदद्याद्धोमपूर्वकम् । प्राप्तेकर्मणिशुद्धास्यादितरस्मिन्नशुद्ध्यति ।
अलाभेसुमुहूर्तस्यरजोदोषउपस्थिते । श्रियंसंपूज्यतत्कुर्याद्वृत्रहत्याभयंकरी । हैमींमाषमितांपद्मांश्रीसूक्तविधिनार्चयेत् ।
प्रत्यृचंपायसंहुत्वाभिषिच्यशुभमाचरेदिति । श्लोकभेदेनप्राप्तपदोक्तारंभस्यमुहूर्तांतरलाभस्यचश्रवणान्नपरस्परसापेक्षत्वम् ।
प्रकारांतरेणचौलनिषेधंकात्यायनः—कुलेऋतुत्रयादर्वाङ्मंडनान्नतुमुंडनम् । प्रवेशान्निर्गमोनेष्टोनकुर्यान्मंगलत्रयमिति ।
ऋतुत्रयंषण्मासाः । कुलंत्रिपुरुषम् । पुरुषत्रयपर्यंतंप्रतिकूलंस्वगोत्रिणाम् । प्रवेशान्निर्गमस्तद्वत्तथामंडनमुंडनइतिमेधाति
थ्युक्तेः । तथाकुलेचतुःपुरुषपर्यंतंसपिंडीकरणांतप्रेतकर्मसमाप्तेःप्रागाभ्युदयिकंकर्मनकार्यमित्यपिसः—प्रेतकर्माण्यनि
र्वर्त्यंचरेन्नाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थंततःपुंसिपंचमेशुभदंभवेदिति । अतएवानिर्वर्त्येत्यत्रसमानकर्तृकत्वमविवक्षितम् ।
यदोर्वंशंनरःश्रुत्वासर्वपापैःप्रमुच्यतइतिवत् । मुंडनादिस्वरूपमपिकात्यायनः—पुत्रोद्वाहःप्रवेशाख्यःकन्योद्वाहस्तुनि

र्गमः । मुंडनंचौलमित्युक्तंव्रतोद्वाहौतुमंगलम् । चौलंमुंडनमेवोक्तंवर्जयेद्वरणात्परम् । वरणात्तदुपक्रमकालाद्वाग्दानादित्यर्थः । मौंजीचोभयतःकार्यायतोमौंजीनमुंडनमिति । उभयतोविवाहात्प्रागूर्ध्वंचेत्यर्थः । वृद्धमनुः—एकमातृजयोरेकवत्सरेपुरुषद्वयोः । नसमानक्रियांकुर्यान्मातृभेदेविधीयतइति । तथारंभोत्तरंसूतकेप्राप्तेविशेषःसंग्रहे—कूष्मांडीभिर्घृतंहुत्वागांदद्याच्चपयस्विनीम् । चूडोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादिकमारभेदिति ॥ ॥ अथप्रयोगः । कर्ताकृतमंगलस्नानंबालमलंकृत्यस्वदक्षिणस्थितमात्रंकेतमुपवेश्यदेशकालौसंकीर्त्यास्यकुमारस्यबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणबलायुर्वर्चोभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचौलकर्मकरिष्ये तृतीयेवर्षेइतिसहोपनीत्येतिवासंकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकृत्वाअग्निप्रतिष्ठापनतद्ध्यानांतंकृत्वाआघारावाज्येनेत्यंतेत्रिरग्निंपवमानंप्रजापतिंचेतिप्रधानदेवताआज्येनशेषेणस्विष्टकृतमग्निमित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतेकृते प्रणीतानामुत्तरतोदर्भेषुव्रीहियवमाषतिलैःपृथक्पूरितानिनवानिशरावाण्येकैकशःप्राक्संस्थानिसादयेत् । अथान्यत्स्यादथापरमितिकारिकायामथशब्देनैकैकशआसादनप्रतीतेः । मातुःपूर्वभागेऽग्नेःपश्चादानडुहगोमययुतंशरावंशमीपर्णशरावंचनिदध्यात् । यवानामसंभवेतत्सदृशैर्व्रीहिभिःपूरयेदिति । गोमयमभूमिस्पृष्टमितिजयंतः । अनड्वान्शकटवहनसमर्थोबलीवर्दः । मातुर्दक्षिणतःपिताब्रह्मावा एकविंशतिकुशपिंजूलानिधारयन्नास्ते । अत्रविशेषंजयंतः—पितुरसंभवेन्यस्मिन्वाकर्तरिब्रह्माधारणएवाश्रयितव्यइति तदाब्रह्मानित्यइतिप्रतीयते । अस्मिन्नेवकालेताम्रमयक्षुरपरिग्रहइत्यपिसः । अतःप्रक्षालितःप्रागग्रःसमीपेनिधेयः । ततःकर्ताघारांतंकुमारेणान्वारब्धःकृत्वा ।

अग्नआयूंषीतितिसृणांशतंवैखानसाऋषयः अग्निःपवमानोदेवतागायत्रीच्छंदः चौलप्रधानाज्यहोमेवि० तिसृभिर्जुहोति
अग्नयेपवमानायेदं०। प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् चौलप्रधानाज्यहोमे० प्रजापते० इतिजुहुयात् प्रजापतयइदं०।
अथकर्ताशिशोःपश्चिमतःस्थित्वा शीतोष्णजलपात्रेदक्षिणवामपाणिभ्यामादायपात्रांतरेप्राङ्मुखोयुगपन्निनयति ॐ उष्णे
नवायउदकेनेहीति । महानसादुष्णमानीयशरावेकृत्वा शरावांतरेशीतमादायोक्तप्रकारेणशरावांतरेसिंचतीतिजयंतः ।
तासामपामेकदेशंपात्रांतरेगृहीत्वानवनीतेनतदभावेदधिद्रप्सेनमिश्रयेत् । दध्नोरसमुपादत्तेनास्तिचेन्नवनीतकमितिका
रिकोक्तेः । ताभिरद्भिःकुमारशिरोवामकर्णमारभ्यप्रदक्षिणंत्रिःक्लेदयति ॐ अदितिःकेशान्वपत्वापउंदंतुवर्चसइतिमंत्रं
प्रतिक्लेदनमावर्तयेत् । ततएकविंशतिकुशपिंजूलमध्येत्रीण्यादायकुमारस्यदक्षिणेकेशपक्षेअभ्यात्माग्राणिनिदधाति—
दक्षिणेकेशपक्षेऽथबालस्यत्रीन्कुशांकुरान् । बालाभिमुख्यपर्यंतान्पठित्वामंत्रमोषधेत्रायस्वैनमितिन्यसेदितिशौनकः ।
कुमाराभिमुखंपश्चिमाग्रान्कृत्वामंत्रेणनिधानमितिपारिजाते । केशपक्षेकुमारस्यहृदग्रंतत्कुशत्रयमितिकारिकाकारः ।
अग्रैर्हृदयमालिखन्निवनिदधातीतिजयंतः । शौनकानुसारिपारिजातमतेकुमाराभिमुख्येनपश्चिमाग्रान्कृत्वानिधानम् ।
प्रागग्राणांतस्यनित्याःप्राञ्चइतिपरिभाषायाःजयंतानुसारिकारिकामतेतुहृदयाभिमुखाग्रत्वम् । युक्तंचैतत् आत्मानंप्रत्य
भिमृश्येत्यत्रहृदयाभिमर्शनस्यैवसर्वयाज्ञिकसंमतत्वात् । तेषुपिंजूलेषुस्वधितिंनिदधाति स्वधितेमैनंहिंसीरिति । ॐ येना
वपत्सविताक्षुरेणसोमस्यराज्ञोवरुणस्यविद्वान् । तेनब्रह्माणोवपतेदमस्यायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासदितिसकेशानिपिंजूलानि

छित्त्वाप्रागग्राणिकृत्वाऽऽसादितशमीपर्णैरेकीकृत्यशिशुमातृहस्तेनिदधाति साचानडुहेगोमयेनिदधाति । प्रथमनिधाने प्रागग्रत्वनियमोस्तिनद्वितीयइतिदेवत्रातः । ततोमेध्यच्छिन्नकेशस्पर्शनिमित्ताशुचित्वनिवृत्त्यर्थोजलस्पर्शःकार्यः । एवमुत्तरच्छेदनेषुसमंत्रकंपिंजूलनिधानादि । ॐ येनधातेतिद्वितीयच्छेदनेमंत्रः । ॐ येनभूयश्चरात्र्यामितितृतीये । उक्तत्रिमंत्रैश्चतुर्थं । चत्वार्येवंदक्षिणतश्छेदनानि । एवमुत्तरतःप्रत्येकंमंत्रैस्त्रीणिकृत्वाक्षुरधारामग्रतआरभ्यामूलंमंत्रेणनिमृजेत् ॐ यत्क्षुरेणमर्चयतासुपेशसावप्तावपसिकेशान् । शुंधिशिरोमास्यायुःप्रमोषीरिति । शीतोष्णाभिरद्भिरवर्थंकुर्वाणोऽक्षण्वन्कुशलीकुर्विति प्रैषेणनापितमनुशास्य प्रैषार्थमवबोधयेत् । ततोनवनीताद्यमिश्रितशीतोष्णावशिष्टाद्भिरार्द्रीकृतशिरसःप्राङ्मुखस्यकुमारस्यदक्षिणकर्णमारभ्यशिखांतंशिखामारभ्यवामकर्णांतंवपनंकुर्वतानापितेनयथाकुलाचारंशिखास्थापनंकारणीयम् ।—उदङ्मुखःप्राङ्मुखोवावपनंकारयेत्सुधीः । केशश्मश्रुलोमनखान्युदक्संस्थानिवापयेत् । दक्षिणंकर्णमारभ्यधर्मार्थंपापसंचये । शिखाद्यंनवसंस्कारेशिखाद्यंतंशिरोवपेदित्यपरार्कोक्तेः । नवसंस्कारेप्रथमेचूडाकर्मोपनयनादौ । प्रायश्चित्तार्थस्यद्वितीयोपनयनादेःपापसंचयइत्यनेनसंग्रहात् । पराशरमाधवीयेलौगाक्षिः—दक्षिणतःकमुजावासिष्ठानामुभयतोत्रिकश्यपानां मुंडाभृगवःपंचचूडाअंगिरसो वाजिमेकेमंगलार्थंशिखिनोऽन्येयथाकुलधर्मंचेति । कमुजाशिखा । वासिष्ठानामेकप्रवरिणामेकैवदक्षिणतोनियम्यते । त्र्यार्षेयाणांतुतिस्रः । अत्रीणांचकश्यपानांद्व्यार्षेयाणांवामदक्षिणेद्वेशिखे । त्र्यार्षेयाणांमध्येप्यन्या । भृगूणांवंशसमाचाराविरोधेनमुंडत्वम् । तद्विरोधेतुत्र्यार्षेयाणांतिस्रः पंचार्षेयाणांपंच । एवमंगिरसांपं

चार्षेयाणांपंचत्र्यार्षेयाणांतिस्रएके । पुनर्वाजिंललाटकर्णमूलस्पर्शिनींमालामिवकेशपंक्तिंमंगलार्थंकुर्वंति । मंगलार्थत्वकीर्तनेनतस्यांसत्यामपितदन्यशिखाधारणमावश्यकमितिध्वन्यते । शिखिनोऽन्यइतिकुलधर्मतएवतेषांदेशनियमोनान्यःप्रकारइत्यर्थः । संख्यानियममाहाश्वलायनकारिकाकारः—शिखाअपिचकर्तव्याकुमारस्यार्षसंख्ययेति । एवंचौलकालधृतशिखानांमध्येमध्यशिखेतरशिखानामुपनयनकालेवपनंकार्यं ।—मध्येशिरसिचूडास्याद्वसिष्ठानांतुदक्षिणे । उभयोःपार्श्वयोरत्रिकश्यपानांशिखामतेतिवृद्धोदाहृतवचसिमध्यशिखायानिमित्तविशेषसंयोगंविनाविहितायानित्यत्वेन सदाबद्धशिखेनचेतिनित्यविधिविषयत्वौचित्यादितरशिखानामनुपनीतधार्यत्वेनमाधवोक्तेश्चेत्यलम् । वपनोत्तरंस्नापितंभूषितंकुमारं दक्षिणतोमातुरुत्संगेस्थापयित्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । व्रीह्यादिपात्राणिनापितायदत्वादशानांत्रयाणांवाब्राह्मणानामन्नेनतर्पणंसंकल्प्यभूयसींदक्षिणांदत्वेश्वरार्पणंकुर्यात् । अत्रत्यब्राह्मणभोजनेभुक्तवतःप्रायश्चित्तमाहपराशरः—निवृत्तेचूडहोमेतुप्राङ्नामकरणात्तथा।चरेत्सांतपनंभुक्त्वाजातकर्मणिचैवहि । अतोन्येषुतुभुक्त्वान्नंसंस्कारेषुद्विजोत्तमः । नियोगादुपवासेनशुद्ध्यतेनिंद्यभोजनादिति । चौलोत्तरंविशेषःस्मृत्यर्थसारे—विवाहमौंजीचौलोर्ध्वंवर्षमर्धंतदर्धकम् । सपिंडाःपिंडंनोदद्युर्गयायांदद्युरेवतइति । एवममंत्राचौलक्रियाकुमार्याभवतिहोमस्तुसमंत्रकइतिपारिजाते । होमोप्यमंत्रःकार्योनवेतिवृत्तिकृद्देवत्रातश्च । जयंतस्त्वाह—स्त्रियामप्येवमेवाहोमकमग्निस्थापनपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वोदकसमानयनादिक्षुरमार्जनपर्यवसानममंत्रकंभवतीति । केचित्कर्मबोधनार्थइतिकृत्वाशीतोष्णाभिरितिप्रैषमिच्छंतीति ।

आश्वलायनस्मृतौ—होमकृत्यंतुपुंवत्स्यात्स्त्रीणांचूडाकृतावपीति । मनुः—अमंत्रिकातुकार्येयंस्त्रीणामावृदशेषतइति । एवंचामंत्रकहोमानुष्ठानमुचितमितिप्रतिभातिसूत्रमनुवाक्ययोःसंवादात् । मंत्राणामुपगमेपितत्प्रमाणकदेवतानांहोमांगत्वसंभवेनतदुद्देश्यकत्यागसंभवात् । दक्षिणेग्नौप्रतिप्रस्थातृकर्तृकेदशातिमुक्तिहोमानांबौधायनीयकल्पभाष्येप्रसिद्धत्वाच्चेत्यलम् । शूद्रस्याप्यमंत्रकंचूडाकर्माहयमः—शूद्रोऽप्येवंविधःकार्योविनामंत्रेणसंस्कृतः । नकेनचित्समसृजच्छंदसातंप्रजापतिरिति । अतएवतदीयचूडाकर्मणिलग्नविशेषमाहगुरुः—चंद्रोदयोंगनानांतुप्रशस्तःक्षुरकर्मणि । प्रशस्तःकथितस्तद्वद्विट्शूद्राणांयमोदयइति । चंद्रोदयश्चंद्रदेवताकंलग्नं । यमोदयःशनिदेवताकंलग्नं । नचैवंशूद्रस्यशिखाधारणंस्यात्तत्रच—नशिखानोपवीतं चनोच्चरेत्संस्कृतांगिरमितिप्रभासखंडवचोविरोधइतिशंक्यम् । पारंपर्येणशिखाधारणादिसदाचारयुक्तसच्छूद्रविषयत्वाद्विधेः निषेधस्यतदितरविषयत्वात् । इतिसंस्कारकौस्तुभेचौलम् ॥ ॥ ॥

अथाक्षरस्वीकारः ॥ नृसिंहः—-अक्षरस्वीकृतिःप्रोक्ताप्राप्तेपंचमहायने । उत्तरायणगेसूर्येकुंभमासंविवर्जयेदिति । मुहूर्तसंग्रहे—-उत्तरायणगेसूर्येकुंभमासंविवर्जयेत् । पूर्वपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविनेति । बृहस्पतिः—-विद्यारंभोव्रतोद्देशःक्षौरंचैवविशेषतः । गलग्रहेनकर्तव्यंयदीच्छेत्पुत्रजीवितमिति । गलग्रहस्वरूपंराजमार्तंडः—-त्रयोदश्याश्चतुष्कंचसप्तम्यादिदिनत्रयम् । चतुर्थीचैकतःप्रोक्ताअष्टावेतेगलग्रहाइति । ल्यब्लोपेपंचमी । तस्याःप्रतिप्रसवमाहदेवरातः—-त्रयोदश्यक्षरेश्रेष्ठेति । मार्कंडेयः—-वारेदिनेशभृगुसुज्ञबृहस्पतीनांविद्वानसौभवतीति । वसिष्ठः—रविवारेतुपूर्वाह्णेविद्यारंभो

विधीयते । चंद्रवारेऽपराह्णेतुविद्यागुर्वीविधीयतेइति । महेश्वरः––हस्तादित्रितयेतथानिर्ऋतिभेपूर्वांत्यभेष्वश्विभेमित्रर्क्षेचमृगादिपंचसुशुभःप्रारंभआद्यःस्मृतः। विद्यानांहरिभत्रयेचदिवसेसूरेर्भृगोर्वादिनेऽनध्यायाख्यतदाद्यवर्जिततिथौकेंद्रस्थितैःसद्ग्रहैरिति । राजमार्तंडः—विद्यारंभःप्रशस्तोभवतिमधुरिपौप्राप्तबोधेशशांकेशस्तेतीक्ष्णद्युतौचत्रिदशपतिगुरावुद्गतेचाथशुक्रे । स्वाध्यायेसिंहसंस्थंखरकिरणयुतंदेवपूज्यंविहायशुक्रादित्येज्यवारेत्रिदशपतिगुरौकेंद्रसंस्थेनपापे । पापेनिषिद्धस्थानस्थिते । अक्षरारंभप्रकारस्तुमाधवीयेमार्कंडेयेनोक्तः—पूजयित्वाहरिंलक्ष्मींदेवींचैवसरस्वतीम् । स्वविद्यासूत्रकारांश्चस्वविद्यांचविशेषतः। एतेषामेवदेवानांनाम्नातुजुहुयाद्धृतम् । दक्षिणाभिर्द्विजेंद्राणांकर्तव्यंचात्रपूजनम् । प्राङ्मुखोगुरुरासीतवरुणाभिमुखंशिशुम् । अध्यापयेत्तुप्रथमंद्विजातिभिःसुपूजितइति । अनेनगुरुपूजनमपिकर्तव्यमितिसूचितम् । सरस्वतीपूजनादिप्रकारमाहपारिजातेगर्गः—स्नात्वाशुचौसमेदेशेगोचर्ममात्रमुपलिप्यसैकतंस्थंडिलंकृत्वापालाशशाखयामृदंखनित्वातस्यांसरस्वतीमावाहयेत्—भुवनमातःसर्ववाङ्मयरूपेणागच्छागच्छेति । ततःप्रणवेनार्घ्यपाद्याचमनीयगंधपुष्पाक्षतधूपदीपपायसगुडौदननैवेद्यसमर्पणनमस्कारान्कृत्वाचार्यंशक्तितोवस्त्रालंकारादिभिःपूजयित्वासरस्वतीविघ्नेशाचार्यांस्त्रिःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणवपूर्वकमक्षरमारभेत् । ततआचार्याभिवंदनंकृत्वासरस्वत्यादीनावाहनक्रमेणोद्वासयेद्विद्यावृद्धिर्भवतीति । विष्णुधर्मोत्तरेधात्रीपूजनमत्राधिकमुक्तम् । ब्राह्मणानांगुरूणांचदेवतानामनंतरम् । ततःसंपूज्यवित्तेनधात्रींरामगुरुंतथेति । गुरूणांपित्रादीनांगुरुमाचार्यम् । इतिसंस्कारकौस्तुभेऽक्षरस्वीकारः ॥ ॥

अथानुपनीतधर्माः ॥ माधवीयेविष्णुपुराणे––भक्ष्याभक्ष्येतथापेयेवाच्यावाच्येतथानृते । अस्मिन्कालेनदोषःस्यात्सयावन्नोपनीयतइति । एतदपवादस्तत्रैवस्मृत्यंतरे—स्यात्कामचारभक्ष्योक्तिर्महतःपातकादृतेइति । गौतमः—यथोपपादितमूत्रपुरीषोभवतिनतस्याचमनकल्पोविद्यतेनब्रह्माभिव्याहरेदन्यत्रस्वधानिनयनादिति । यथोपपादितेत्यनेनदिवासंध्यासूदङ्मुखत्वंरात्रौदक्षिणामुखत्वमित्यादिनियमाभावोज्ञाप्यते । कल्पग्रहणाद्द्विरुन्मृजेदित्यादीतिकर्तव्यतानिषेधोनत्वाचमनस्यैव । शुद्धेरंस्त्रीचशूद्रश्चसकृत्स्पृष्टाभिरंततइतियाज्ञवल्क्यवचोव्याख्यावसरे चकारादनुपनीतोऽपीतिविज्ञानेश्वरेणानुपनीतस्याचमननिमित्तेस्त्रीशूद्रतुल्याचमनस्वीकाराच्च । रजस्वलादिस्पर्शेतुपारिजातेस्मृतिदीपिकायांव्यवस्थोक्ता—शिशोरभ्युक्षणंप्रोक्तंबालस्याचमनंस्मृतम् । रजस्वलादिसंस्पर्शेस्नानमेवकुमारके । प्राक्चूडाकरणाद्बालःप्रागन्नप्राशनाच्छिशुः । कुमारकस्तुविज्ञेयोयावन्मौंजीनिबंधनमिति । विज्ञानेश्वरोक्तमनुपनीताचमनमपिकुमारावस्थायांबोध्यम् । रजस्वलादिस्पर्शनिमित्तस्नानविधेस्तत्तन्निमित्ताचमनविधेश्चसाहचर्यदर्शनात् । अन्यत्रेत्यादिनापितृकर्मणिदाहादावनुपनीतस्यापिमंत्रोच्चारणंभवतीतिज्ञाप्यते । तदपिकृतचूडस्यत्रिवर्षस्यवाज्ञेयम् ।—अनुपेतोपिकुर्वीतमंत्रवत्पैतृमेधिकम् । यद्यसौकृतचूडःस्याद्यदिस्याच्चत्रिवत्सरइतिसुमंतूक्तेः । अत्रचूडाप्रथमवर्षातिरिक्तवर्षकृताज्ञेया । कृतचूडस्तुकुर्वीतउदकंपिंडमेवच । स्वधाकारंप्रयुंजीतवेदोच्चारंनकारयेदितिव्याघ्रवचनस्यसुमंतुवचनाविरोधायप्रथमवर्षकृतचूडविषयत्वात् । तथैवमाधवादिभिरुक्तेः । यत्तु—असंस्कृतेनपत्याचह्यग्निदानंसमंत्रकम् । कर्तव्यमितरत्सर्वंकारयेदन्यमेवहीति । तदपिप्रथमवर्षकृ

तचूडंप्रत्येवाग्निदानेनमंत्रप्रतिप्रसवार्थंलाघवात् । शेषस्याशक्तिप्राप्तार्थानुवादत्वसंभवान्नत्वकृतचूडविषयं अत्यंताप्राप्तविशिष्टविधेरन्याय्यत्वात् । नापिसुमंतुवाक्यविषयेप्यशक्तविषयम् । अग्निदानेऽश्रुतप्रतिनिधिनिरासपरत्वकल्पनायाअन्याय्यत्वात् । एतच्चौरसविषयम्—पित्रोरनुपनीतोपिविदध्यादौरसःसुतः । और्ध्वदेहिकमन्येतुसंस्कृताःश्राद्धकारका इतिस्कांदात् । नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मयावन्मौंजीनबध्यते । मंत्राननुपनीतोपिपठेदेवैकऔरसइतिसुमंतूक्तेश्च ॥ इतिसंस्कारकौस्तुभेऽनुपनीतधर्माः ॥ ॥ अथबालपितृधर्माः ॥ विष्णुधर्मोत्तरे—अपथ्यंनचबालानांतथाभार्गवपश्यताम् । पश्यद्भिःपित्रादिभिरपथ्यंनिवारणीयमित्यर्थः । बालकाश्चानुनेयाःस्युर्धर्मकामैःसदानरैः । तेषांभोज्यप्रदानेनगोदानफलमाप्नुयात् । तेषांक्रीडनकंदत्वामोदतेनंदनेदिवि । तस्मात्सर्वप्रयत्नेनबालानग्रेतुभोजयेत् । अभुक्तवत्सुबालेषुनचाश्नीयात्कदाचनेति । इतिसंस्कारकौस्तुभेबालपितृधर्माः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथोपनयनम् ॥ योगरूढमेतत्पदम् । आचार्यसमीपनयनांगकोगायत्र्युपदेशोहिप्रधानम् । गायत्र्याब्राह्मणमसृजदिति श्रुतौ गायत्र्याब्राह्मणमुपनयीतेतिकातीयवाक्ये——तत्रयद्ब्रह्मजन्मास्यमौंजीबंधनचिह्नितम् । सातस्यमातासावित्रीति मनुवाक्येअत्रास्यमातासावित्रीतिगौतमवाक्येचद्विजत्वसंस्कारेगायत्रीहेतुत्वसंकीर्तनस्यगायत्र्युपदेशहेतुकत्वाशयेनैववर्णनीयत्वात् । समिद्र्भादिपदस्येवांगवाचिनोप्युपनयनपदस्यतत्संबंधेनप्रधानसंज्ञात्वोपपत्तेः । अतएवापरार्केणोक्तम्—उपनयनंनामबटोर्गायत्रीसंबंधकरणं तच्चाचार्यकर्तृकं । अधीहिभोरितिबटोराचार्यप्रयोजकव्यापारउपनयनम् । अष्टव

र्षोब्राह्मणआत्मानमुपनाययेदितिबुधस्मृतौस्पष्टाभिधानादिति । यद्यपिकल्पतरुणाबुधवचनंपित्राद्युपनेत्रभावविषयमि
तिव्याख्यातम् यद्यपिचमेधातिथिनापितुरभावे व्युत्पन्नमतिनामाणवकेनात्मोपनाययितव्यः गौतमंप्रतिजाबालस्यब्र
ह्मचर्यंभगवतिवत्स्यामीतिप्रार्थनालिंगादित्युक्तं तथापिवहिःप्रयोगप्रार्थनादिव्यापारांतरस्यणिजर्थत्वांगीकारेणोपनयन
पदएवापरार्कोक्तार्थादतिरिक्तार्थांगीकारस्तयोर्नतूपनयनशब्देतदुक्तार्थत्यागइतिमंतव्यम् ॥ ॥ अथोपनयनाधिका
रिणः ॥ तत्रवृद्धगार्ग्यः--पितापितामहोभ्राताज्ञातयोगोत्रजाग्रजाः । उपनायेऽधिकारीस्यात्पूर्वाभावेपरःपरइति ।
भ्रातापितुर्भ्राता । पितैवोपनयेत्पुत्रंतदभावेपितुःपिता । तदभावेपितुर्भ्रातातदभावेतुसोदरइतिपितामहस्मरणात् ।
अग्रजाइत्यत्राकारलोपश्छांदसः । तथाचज्ञातिपदोक्तेषुसपिंडेषुतदतिरिक्तेषुचगोत्रजेषुयेऽग्रजावृद्धाःवटोरपेक्षयेत्यर्थः ।
उपनेयकनिष्ठाचार्यत्वस्यनिषिद्धत्वात् । यत्तु—असंस्कृतास्तुसंस्कार्याभ्रातृभिःपूर्वसंस्कृतैरितियोगीश्वरवचस्तत्पितामह
वचोनुरोधेनपितृव्याभावविषयम् । पित्राद्युक्ताधिकार्यभावेकर्तारमाहशौनकः—कुमारस्योपनयनंश्रुताभिजनवृत्तवान् ।
तपसाधूतनिःशेषपाप्माकुर्याद्विजोत्तमइति । आचार्यंकुर्यादित्यधिकृत्यव्यासोपि—वेदैकनिष्ठंधर्मज्ञंकुलीनंश्रोत्रियंशु
चिम् । स्वशाखाढ्यमनालस्यंविप्रंकर्तारमीप्सितमिति । श्रोत्रियलक्षणंब्राह्मे—जन्मनाब्राह्मणोज्ञेयःसंस्कारैर्द्विजउच्यते ।
विद्वत्त्वाच्चापिविप्रत्वंत्रिभिःश्रोत्रियउच्यतेइति । अविद्वत्कर्तृकोपनयनेदोषमाहश्रुतिः । उभयोस्तमसोवाएषतमःप्रवि
शतियमविद्वानुपनयतेयश्चाविद्वानिति । नचैतद्वचनेभ्यःकृत्स्नशाखाध्यायिनएवाचार्यत्वंनैकदेशाध्यायिनइतिशंक्यं ।

गोमधुपर्कार्हौवेदाध्यायआचार्यऋत्विक्स्नातकोराजाधर्मयुक्तश्चेतिधर्मसूत्रव्याख्यावसरेउज्ज्वलाकृता । अतएववेदैकदेशाध्यायिनावप्यृत्विगाचार्यौसंभवतइत्यभिधानात् । बटूपनेत्रोरधिकारसिद्धौप्रायश्चित्तमाहपारिजातेवृद्धविष्णुः—कृच्छ्रत्रयंचोपनेतात्रीन्कृच्छ्रांश्चबटुश्चरेदिति । आचार्यस्यगायत्र्युपदेशेयोग्यतासिद्धौजपमप्याहसएव—सावित्रीमभ्यसेदग्निपवित्राणिचसंस्मरन् । सहस्रंद्वादशावृत्तंसावित्रींप्रजपेद्बुधः । स्वाधिकारार्थमेवास्याःप्रदानार्थंहितत्स्मृतमिति । अग्निपवित्राण्यग्निःशुचिव्रततमइत्यादीनि । संस्मरन्नितिलडादेशेनगायत्रीजपंसंकल्प्यतस्मात्पूर्वंमानसजपएतेषांगायत्रीजपाधिकारसिद्ध्यर्थंकार्यइतिज्ञाप्यते । इत्थंहिसंस्मरणस्याभ्यसेदित्युक्तभावनासमकालत्वंलभ्यते । सावित्रीपदसमानाधिकरणसहस्रपदस्यसंख्याविशिष्टसंख्येयपरत्वाच्च द्वादशावृत्तमित्यस्यनसंख्यायामन्वयः । पंचपंचाशतस्त्रिवृतइत्यत्रनिवृत्तामितिविपरिणामाभावेपंचसंख्यायाइवपंचाशत्संख्यायांसंभवतितुविशेष्येएकसंख्यापरिच्छिन्नेपिसंख्यांतरपरिच्छिन्नावृत्तिवैशिष्ट्यस्यवक्तुंशक्यत्वात् । ततश्चद्वादशाधिकसहस्रसंख्योजपःकार्यइतितात्पर्यार्थः । गायत्र्याःप्रदानार्थंयोधिकारस्तदर्थमित्यंत्यार्धेयोजना । इत्युपनयनाधिकारिनिर्णयः ॥ ॥ अथोपनयनकालः । याज्ञवल्क्यः—गर्भाष्टमेऽष्टमेवाऽब्देब्राह्मणस्योपनायनम् । राज्ञामेकादशेसैकेविशामेकेयथाकुलमिति । गर्भाधानमवधिंकृत्वाजन्मतोवाष्टमइतिव्याख्यामाहविज्ञानेश्वरः । गर्भग्रहणंसर्वत्रानुवर्तते । गर्भादेकादशेराज्ञोगर्भात्तुद्वादशेविशइतिस्मृत्यंतरादित्यप्याहहेमाद्रौपैठीनसिः—गर्भपंचमेब्राह्मणमुपनयेद्गर्भाष्टमेवागर्भैकादशेराजन्यंगर्भद्वादशेवागर्भद्वादशेवैश्यंगर्भषोडशेवेति। अत्र

कामसंयोगंविनागर्भाष्टमात्पूर्वपाठेनगर्भपंचमस्यापिनित्यत्वंज्ञाप्यते । बौधायनः—गर्भादिसंख्यावर्षाणांतदष्टमेषुब्राह्मणमुपनयेद्राजन्यमेकादशेवैश्यंद्वादशइति । तदष्टमेषुगर्भाष्टमेषु । बहुवचनंषष्ठसप्तमयोःसंग्रहार्थं । यस्मिन्वर्षेगर्भोभूत्वाशेतेसगर्भइतिहरदत्तः । गर्भसहचरितोब्दोगर्भशब्देनोच्यतइतिभारुचिःकर्कश्च । अब्दश्चात्रचांद्रश्चैत्रशुक्लप्रतिपदादिरितिकेचित् । अन्येत्वष्टममासारंभंगर्भाधानंचारभ्यवर्षप्रवृत्तिरित्याहुः । तस्मात्पंचममितिपंचमीसमासः । एवंगर्भाष्टमादिशब्देषुद्रष्टव्यम् । उक्तवचनेष्वष्टमवर्षसंबंधेनैवाष्टवर्षत्वं नत्वतीताष्टवर्षत्वेनेतिनित्यःकालः ॥ ॥ अथकाम्यः । उशनाः—जन्मतःपंचमेवर्षेब्राह्मणस्योपनायनम् । राज्ञस्तुषष्ठेवैश्यस्यसप्तमेतुबलार्थिनइति । बौधायनः——अथकाम्यानिभवंतिसप्तमेब्रह्मवर्चसकाममष्टमेआयुःकामंनवमेतेजस्कामंदशमेऽन्नाद्यकाममेकादशइंद्रियकामंद्वादशेपशुकामंत्रयोदशेमेधाकामंचतुर्दशेपुष्टिकामंपंचदशेभ्रातृव्यवंतंषोडशेसर्वकाममिति । भ्रातृव्यवंतमित्यनेनाभिचारकाममितिध्वन्यते । हेमाद्रौसप्तमइत्यारभ्यपशुकाममित्यंतंबौधायनीयसद्दशमापस्तंबवचउदाहृत्याद्यवाक्यद्वयमब्राह्मणविषयं । शेषंवर्णत्रयसाधारणमित्युक्तम् ॥ इतिकाम्यःकालः ॥ ॥ गौणकालावधीनाहवर्णभेदेनयाज्ञवल्क्यः——आषोडशादाद्वाविंशादाचतुर्विंशाच्चवत्सरात् । ब्रह्मक्षत्रविशांकालऔपनायनिकःपरइति । यद्यप्ययमाङ्अभिविधौ षोडशाब्दानिविप्रस्येतिशंखस्मृतेस्तथापिगर्भादिसंख्यावर्षाणामित्युपक्रम्याषोडशाद्ब्राह्मणस्यापतितासावित्रीतिगौतमेनाभिधानात्पंचदशवर्षाण्येवगौणःकालइतिमंतव्यम् । अतएवयमः—सावित्रीपतितायस्यदशवर्षाणिपंचच । सशिखंवपनंकृत्वाव्रतंकुर्यात्समा

हितः । एकविंशतिरात्रंचपिबेत्प्रसृतियावकम् । हविषाभोजयेच्चैवब्राह्मणान्सप्तपंचवा । ततोयावकशुद्धस्यतस्योपनयनं स्मृतमिति । इदंचोक्तावधिगौणकालानंतरवत्सरेसंभवदुपनयनस्यज्ञेयम् । तदुत्तरोत्तरसंवत्सरेषुतुक्रमेणमनूक्तंकृच्छ्रत्रयमापस्तंबोक्तंद्वैमासिकंत्रैविद्यकंब्रह्मचर्यंवसिष्ठोक्तंत्रिरात्राधिकमासचतुष्टयसाध्यमुद्दालकव्रतम् । तदुक्तमेवाश्वमेधावभृथस्नानम् तदुक्तमेवव्रात्यस्तोमानुष्ठानमितिव्यवस्थयाकृतप्रायश्चित्तानामुपनयनंबोध्यम् ॥ ॥ अथोपनयनेऽयनादिनिर्णयः । तत्राश्वलायनः—उदगयनआपूर्यमाणपक्षेकल्याणेनक्षत्रेचौलकर्मोपनयनगोदानविवाहाइति । कल्याणंज्योतिःशास्त्राविरोधीतिवृत्तिकृत् । उदगयननियमापवादमाहवृद्धवसिष्ठः—विप्रस्यक्षत्रियस्यापिमौंजीस्यादुत्तरायणे । दक्षिणेतुविशांकुर्यान्नानध्यायेनसंक्रमइति । वर्णविशेषंप्रतिऋतुविशेषप्राशस्त्यमुक्तंश्रुतौ—वसंतेब्राह्मणमुपनयीतग्रीष्मेराजन्यंशरदिवैश्यंवर्षासुरथकारमिति । अत्रमाहिष्येणकरण्यांतुरथकारःप्रजायतइत्युक्तरथकारस्यवर्षाविधिः । तदीयोपनयनेसप्रमाणत्वस्यविज्ञानेश्वरेणोपन्यासात् । नतुसौधन्वनस्य तस्योपनयनेप्रमाणाभावात् । नचैवंविप्रंप्रतिवसंतनियमात् विनर्तुनावसंतेनकृष्णपक्षेगलग्रहे । अनध्यायेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हतीतिबृहस्पतिनावसंताभावेदोषकथनाच्चोत्तरायणस्यतंप्रतिनित्यप्राप्ततयाविधिवैयर्थ्यमितिवाच्यम् । केनापिनिमित्तेनवसंतालाभेतदन्योत्तरायणप्रापणार्थत्वात् । तथाच गर्गः—माघादिशुक्रांतकपंचमासाःसाधारणावासकलद्विजानामिति । वृद्धगार्ग्यः—माघादिमासषट्केतुमेखलाबंधनंमतमिति । नचैवमेताभ्यामेवशास्त्राभ्यांपौनरुक्त्यम् । उत्तरायणशून्यमाघादिभागाषाढांत्यभागयोर्निवृत्त्यैउत्तरायणवि

धेरावश्यकत्वात् । नचोत्तरायणविधिनैवमाघादिमासप्राप्तेस्तच्छास्त्रंव्यर्थमितिवाच्यम् । मकरार्कविशिष्टपौषनिषेधार्थत्वात् पंचसंख्याविधेर्मिथुनार्कविशिष्टाषाढनिवृत्त्यर्थत्वाच्च । षट्संख्याविधेस्तुवैश्यंप्रतिश्रावणादिनिषेधार्थत्वात् । अस्तिहितंप्रतिदक्षिणायनविधिर्बृहस्पतिवृद्धवसिष्ठोक्तः—विप्रस्यक्षत्रियस्यापिमौंजीस्यादुत्तरायणे । दक्षिणेतुविशांकुर्यान्नानध्यायेनसंक्रमइति । शरदलाभेश्रावणाद्यन्यदक्षिणायनप्रापकस्यवक्तुंशक्यत्वाच्च । एवंचब्राह्मणेनदक्षिणायनेउपनयनंनकार्यं नापिपौषाषाढयोःसत्यप्युत्तरायणे । उत्तरायणविशिष्टमाघादिपंचमासेषुकार्यं । तत्रापिमीनार्कप्रभृतियावन्मिथुनप्रवेशंप्रशस्तःकालः चांद्रसौरान्यतरवसंतलाभात् । मीनमेषयोर्वावसंतंइतिबौधायनोक्तेः । मीनमेषयोस्तुप्रशस्ततरः—मृगकुंभगतेभानौमध्यमंमीनमेषयोः । उत्तमंगोयुगस्थेऽर्केऽत्यधमंचोपनायनमितिबृहस्पतिवचनात् । मृगोमकरः गौर्वृषः युगंमिथुनम् । मीनार्कविशिष्टश्चैत्रोऽनेकनिषेधापवादकतयाप्रशस्ततमः । मीनस्थितेऽर्केखलुचैत्रमासेशुभप्रदोब्राह्मणमौंजिबंधइतिबृहस्पतिवाक्यस्यतदर्थत्वात् । अतएवोक्तंतेनैव—गोचराष्टकवर्षाभ्यांगुरुशुद्धिर्नलभ्यते । तदोपनयनंकार्यंचैत्रेमीनगतेरवौ । शुक्रेनष्टेतथाजीवेदुर्बलेचंद्रभास्करे । व्रतोपनयनंकार्यंचैत्रेमीनगतेरवौ । जीवभार्गवयोरस्तेसिंहस्थेदेवतागुरौ । मेखलाबंधनंशस्तंचैत्रेमीनगतेरवौ । अमुनैवाशयेनाहराजमार्तंडः—वसंतसमयेकुर्यादब्देगर्भाष्टमेपिवा । मेधावीमेखलाबंधंजन्ममासेऽथजन्मभेइति । अत्रवसंतपदंमीनार्कविशिष्टचैत्रपरं । निषेधसामान्यापवादकत्वेनक्लृप्तकालस्यैवनिषेधविशेषापवादत्वबोधनेलाघवात् । विप्रंप्रत्येवतद्विशेषप्रशस्ततमत्वज्ञापनेलाघवात् गर्भाष्टमेपिवेत्यव्ययाभ्यांत

दनादरोध्वन्यते । अतएवशौनकः—गर्भाष्टमेगर्गपराशराद्यैःफलंयदुक्तंव्रतवंधनेतु । ततोधिकंजन्मसुतारकासुमासेथवा जन्मनिवाडवानामिति ।वाडवानांब्राह्मणानां । यन्मीनार्केजन्ममासेजन्मनक्षत्रेचोपनयनंकर्तव्यमित्यनूद्य तद्गर्भाष्टमफलाधिकफलमितितात्पर्यार्थः । यत्तुराजमार्तंडः—जातंदिनंदूषयतेवसिष्ठोह्यष्टौचगर्गोनियतंदशाऽत्रिः । जातस्यपक्षं किलभागुरिश्चशेषाःप्रशस्ताःखलुजन्ममासि । जन्ममासेतिथौभेचविपरीतदलेसति । कार्यमंगलमित्याहुर्गर्गभार्गवशौनकाइति तन्मीनार्कचैत्रान्यकालविषयम् । त्रिविधेप्युक्तसमयेशुक्लपक्षःप्रशस्ततमः आपूर्यमाणपक्षइत्याश्वलायनोक्तेः । कृष्णपक्षेत्रेधाविभक्तेंऽत्यतृतीयोंशोनिषिद्धः मध्यमप्रथमांशौप्रशस्ततरौ । शुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविनेतिबृहस्पत्युक्तेः । शुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णपक्षेत्रिधाकृते । अंत्यभागंविनान्यौद्वौगणितौमध्यमाधमावितिस्मृत्यंतराच्च । अथतिथयोनृसिंहः—तृतीयापंचमीषष्ठीद्वितीयाचापिसप्तमी । उभयोःपक्षयोश्चैवविशेषेणसुपूजिताः । धर्मकामौसिते पक्षेकृष्णेचप्रथमातथा।कृष्णेत्रयोदशींकेचिदिच्छंतिमुनयस्तथा।द्वादश्येकादशीचैवमध्यमेचप्रचक्षतइति । धर्मोदशमी । कामस्त्रयोदशी । तेअपिसितेकृष्णेचेत्यन्वयः । प्रथमातथाकृष्णे कृष्णेत्रयोदशीमितिमध्यममणिन्यायेनान्वयः । मध्यमे चेत्यत्रपक्षद्वयइतिवोध्यम् । नारदः—एकांचतुर्थींसंत्यज्यकृष्णपक्षेतुमध्यमाः । आपंचम्यास्तुतिथयःपराःस्युरतिनिंदिताइति । परास्तृतीयांशगताः । यस्तुप्रथमातथेतिप्रतिपद्विधिःसकृतप्रायश्चित्तव्रात्योपनयनविषयः । प्रशस्ताप्रतिपत्कृष्णेकदाचिच्छुभगेविधौ । चंद्रेवलयुतेलग्नेवर्षाणामतिलंघनइतिव्यासोक्तेः । एवं—चंद्रेवलयुतेलग्नाच्छुभभावेशुभे

क्षिते । चतुर्दशींप्रशंसंतिकुमारेवयसाधिकेइति चतुर्दशीविधिरपि । अतिलंघनाधिकशब्दाभ्यांगौणकालातिक्रमस्याविवक्षितत्वात् । अपरार्के—नष्टेचंद्रेष्टमेशुक्रेनिरंशेभास्करेतथा । कर्तव्यंनोपनयनंनानध्यायेगलग्रहेइति । निरंशस्वरूपमन्यत्रोक्तम्—राशेःप्रथमभागस्थोनिरंशःसूर्यउच्यते । युगादित्वादिनानध्यायानामपिप्रतिप्रसवमाहभारद्वाजः—याचैत्रवैशाखसितातृतीयामाघस्यसप्तम्यथफाल्गुनस्य । कृष्णेद्वितीयोपनयेप्रशस्ताप्रोक्ताभरद्वाजमुनींद्रमुख्यैरिति । अत्रचैत्रसिततृतीयामाघशुक्लसप्तम्योर्मन्वाद्योःप्रतिप्रसवः । मन्वादिषुतयोःस्मृत्यर्थसारेपाठात् वैशाखतृतीयायायुगादेरपि । ज्येष्ठशुक्लद्वितीयातुआश्विनेदशमीसिता । चतुर्थीद्वादशीमाघेएताःसोपपदाःस्मृताइत्येतासामपितत्रैवानध्यायत्वमुक्तमितिताअपिवर्ज्याः । गलग्रहाउक्तामुहूर्ततत्वे––प्रतिपत्पूर्वचतुष्कंनवमीपूर्वत्रयंचतुर्थीच । अष्टौगलग्रहास्त्याज्यागर्गस्यमतेतथाषष्ठी । अत्राप्यपवादःषष्ठीसप्तमीत्रयोदशीनांविनियोगोपन्यासेनदर्शितःस्मृत्यंतरे—अनध्यायस्यपूर्वेद्युरनध्यायात्परेहनि । व्रतारंभंविसर्गंचविद्यारंभंविवर्जयेदिति । एतदपवादोपिद्वितीयासप्तमीत्रयोदशीविनियोगेनदर्शितः । अयंगलग्रहापवादश्चमूकाद्युपनयनविषयइतिकेचित् । वासरनियममाहनारदः—गुरुशुक्रबुधानांतुवाराःश्रेष्ठतमाःस्मृताः । अधमःसोमवारस्तुसूर्यवारस्तुमध्यमः । वारौमंदारयोर्वर्ज्यौकृष्णेवर्ज्योनिशापतेः । अस्तंगतस्यसौम्यस्यवारोवर्ज्योद्विजन्मनीति । तथा—शाखाधिपतिवारश्चशाखाधिपबलंतथा । शाखाधिपतिलग्नंचदुर्लभंत्रितयंव्रतइति । शाखाधिपवारानाहबृहस्पतिः—बह्वृचानांगुरोर्वारोयजुर्वेदजुषांकवेः । सामगानांधरासूनोरथर्वविदुषांरवेरिति । अमुनैववा

क्येनबह्वृचशाखाधिपोगुरुरित्यादिध्वन्यते । बलंगोचराष्टवर्गादि । शाखाधिपबलासंभवेदोषमप्याह मदनरत्नेवृद्धगार्ग्यः—शाखाधिपेबलिनिकेंद्रगतेचमौंजीबंधस्तदीयदिवसेषुशुभायक्लृप्तः । अस्मिन्बलेनरहितेतुपुनर्द्विजानांस्याद्वर्णसंकरइतिप्रवदंतितज्ज्ञाइति । तथावर्णाधिपबलमप्यपेक्ष्यते—सदानुकूलेचैकस्मिन्वर्णेशबलशालिनि । ब्राह्मणादेःप्रकुर्वीतकुमारंव्रतचारिणमितिपराशरोक्तेः ।—पतीसितेज्यौविप्राणांनृपाणांकुजभास्करौ । वैश्यानांशशभृत्सौम्यावितिवर्णाधिपाःस्मृताइतितेनैवव्यवस्थाप्रदर्शनाच्च । मदनरत्नेराजमार्तंडः—पितुःसूर्यबलंश्रेष्ठंशाखावर्णेशयोर्वटोः । सर्वेषांगुरुचंद्रर्क्षबलंश्रेष्ठंव्रतादिषु । मौंजीबंधेविवाहेचप्रतिष्ठायांविशेषतः । गोचरेणैवकर्तव्यंवैधंबलमकारणमिति । सर्वेषामित्यनेनयेषांनशाखाधिपोगुरुस्तेषामपिवटूनांतत्पितॄणांचगुरुबलमावश्यकम् । उभयोरलाभेवटोरावश्यकमितिध्वन्यते । वैधंवामवेधप्रयुक्तम् । गर्भाष्टमादिनित्यकालेवटोर्गुरुबलालाभेशांत्यातल्लाभः । अनित्यकालेषुनैवमित्याहनारदः—बालस्यबलहीनोपिशांत्याजीवोबलप्रदः । यथोक्तवत्सरेकार्यमनुक्तेनोपनायनमिति । अनुक्तेनित्यत्वेनेतिशेषः । केचिद्दुष्टस्थानेषुस्थितेबृहस्पतौशांत्यापिनोपनयनाधिकारइत्याहवसिष्ठः—बंधौतृतीयेरिपुराशिसंस्थेइच्छंतिपूजांदशमेसुरेज्ये । नेच्छंतिपूजांजनिगेव्ययस्थेपुरातनाअष्टमगेपिसूराविति । बंधुश्चतुर्थः रिपुराशिःषष्ठः जनिर्जन्मराशिः व्ययोद्वादशोराशिः । अतिसंकटेएतेष्वपिराशिषुपूजाहोमादेर्द्विगुणत्वादिवृद्धिकल्पनयोपनयनंकार्यं नतूक्तसंवत्सरातिक्रमःकार्यः । तथाचगुरुः—तस्माद्ग्रहेभ्यःकालत्वाद्बलीसंवत्सरोमतइति । राशिविशेषस्थस्यगुरोरष्टमादिस्थानस्थितस्यापिनाधिकारप्रतिबंध

त्वमित्याहभरद्वाजः—धनुर्मीनकुलीरस्थोजीवोजन्मांत्यमृत्युगः । अतिसौख्यंबटोःकुर्याद्वसिष्ठवचनंयथेति । धनुर्मीनौहिगुरुस्वामिकौ । यथाहुर्दैवज्ञाः—पंचाननेरविंविद्यात्सोमंकर्कटकेतथा । मेषवृश्चिकयोर्भौमःकन्यामिथुनयोर्बुधः । गुरुर्धनुषिमीनेचतुलायांवृषभेभृगुः । शनिस्तुमकरेकुंभेराशीनामधिपाःस्मृताइति । कुलीरःकर्कः । सचगुरोरुच्चंस्थानम् । यथाहुः—अजवृषभमृगांगनाकुलीराझषवणिजौचदिवाकरादितुंगाइति । मृगोमकरः कुलीरःकर्कः झषोमीनः वणिक्तुला । वेदविशेषेणनक्षत्रविशेषविधिर्ज्योतिर्निबंधे—मूलेहस्तत्रयेसार्पेशैवेपूर्वात्रयेतथा । ऋग्वेदाध्यायिनांकार्यंमेखलाबंधनंबुधैः । पुष्येपुनर्वसौपौष्णेहस्तेमैत्रेशशांकभे । ध्रुवेषुचप्रशस्तंस्याद्यजुषांमौंजिबंधनम् । पुष्यवासवहस्ताश्विशिवविष्णूत्तरात्रयम् । प्रशस्तंमेखलाबंधेबटूनांसामगायिनाम् । मृगमैत्राश्विनीहस्तरेवत्यादित्यवासवम् । अथर्वशाखिनांशस्तोभगणोयंव्रतार्पणइति । हस्तत्रयंहस्तचित्रास्वातीति । पूर्वात्रयंपूर्वापूर्वाषाढापूर्वाभाद्रपदेति । शैवमार्द्रा । एषामसंभवेसारसमुच्चये—मघाग्नेयविशाखेंद्रयाम्यंहित्वाचवारुणम् । व्रतेशस्तानिसर्वेषांचेच्छाखोक्तंनलभ्यते । आग्नेयंकृत्तिकाइंद्रोज्येष्ठा याम्यंभरणी वारुणंशततारका । शार्ङ्गधरीये—श्रवणादित्यपौष्णादिद्वयेहस्तत्रयेमृगे । सर्वेषांमेखलाबंधःशुभःप्रोक्तोद्विजन्मनामिति । आदित्यंपुनर्वसुः । सचऋक्सामशाखिव्यतिरिक्तविषयः । व्यवस्थावाक्यानुसारेणऋक्सामशाखीतरान्प्रत्यप्रवृत्तेन—चंद्रतारानुकूलेषुग्रहाब्देषुशुभेष्वपि । पुनर्वसौकृतोविप्रःपुनःसंस्कारमर्हतीतिराजमार्तंडवाक्येनोक्तशाखिनःप्रत्येवव्यवस्थावाक्यप्राप्तायाःपुनर्वसुनिवृत्तेःसर्वसाधारणविनियोगविधिनाऽपवादप्रसक्तौप्रतिप्रसवेला

घवात् । वस्तुतस्तु—ज्योतिर्वित्प्रसिद्धवसिष्ठादिसंहितासुक्वचिदपिपुनर्वसुनिषेधादर्शनात्तासुहेमाद्र्यादिमहानिबंधेषुचपुनर्वसुविधेरेवप्रतीतेर्दाक्षिणात्यसकलशिष्टानांपुनर्वसावुपनयनाचारस्योपलंभाच्चराजमार्तंडवाक्यंनिर्मूलम् । समूलत्वेपिनयजुर्वेदिप्रभृतिविषयं उक्तव्यवस्थौचित्यात् । यत्तुविप्रपदोपेतैतद्वाक्यबलेनयजुर्वेद्यादीन्प्रतिपुनर्वसुविधिरेवक्षत्रियवैश्यविषयइति । तन्न । नक्षत्रांतरेवर्णत्रयसाधारणस्यतस्यतथात्वेवैरूप्यापत्तेः । जातिवाचकविप्रपदोपेतत्वेनसामान्यशास्त्राद्व्यक्तिवाचिपदोपेतत्वेनविशेषशास्त्रस्योक्तविधेर्बलवत्त्वात् सावकाशतायाउभयत्रतुल्यत्वेनाविनिर्गमकत्वात् । आदित्यवारनिषेधात् नक्तविधेर्बलवत्त्वेमहानिबंधोक्तन्यायेनकल्प्यनिषेधात् क्लृप्तविधेःसुतरांबलवत्त्वाच्च । प्रतिप्रसवत्वप्रयुक्तलाघवस्यसामान्यप्रवृत्तशास्त्रसंकोचकतायाः पौष्णपेषणादौक्लृप्तत्वेनतद्विरुद्धकल्पनायाअन्याय्यत्वाच्च । विप्रान्प्रतिसर्वथैवपुनर्वसुनिषेधेसर्वेषांद्विजन्मनामितिबहुत्वोक्तेर्द्विजन्मद्वयेनुपपत्तेश्च । अस्मन्मतेतूक्तनिषेधस्यनिर्मूलत्वेऽन्यशाखिनोपिप्रतिअनुकल्पत्वेनपुनर्वसुविध्यंगीकारेणतदुपपत्तेः । समूलत्वेपियजुर्वेद्यात्मकत्रिवर्णविषयत्वात् । योगेषुव्यवस्थामाहश्रीपतिः—सवैधृतिस्तुव्यतिपातनामासर्वोप्यनिष्टःपरिघस्यचार्धम् । तिस्रस्तुयोगेप्रथमेसवज्रेव्याघातसंज्ञेनवपंचशूले । गंडेऽतिगंडेचषडेवनाड्यःशुभेषुकार्येषुविवर्जनीयाइति । उक्तान्यविषयेत्वाहबृहस्पतिः—शिष्टाष्टादशयोगेषुप्रशस्तंह्यौपनायनमिति । करणेव्यवस्थामाहसएव—बवादीनांतुषट्कंस्यादुपनायेसुपूजितम् । शकुन्यादीनिविष्टिंचवर्जयेच्चविशेषतइति । दिनभागव्यवस्थामाह मनुः—सर्वदेशेषुपूर्वाह्णेमुख्यंस्यादुपनायनम् । मध्याह्नेमध्यमंप्रोक्तमपराह्णेचग

र्हितमिति । एवंव्यवस्थितेपिशुभकालेनिमित्तविशेषेणनिषेधमाहगर्गः—ग्रहेरवींद्वोरवनिप्रकंपेकेतूद्गमोल्कापतनादिदोषे । व्रतेदशाहानिवदंतितज्ज्ञास्त्रयोदशाहानिवदंतिकेचिदिति । वर्ज्यानीतिशेषः । अन्यत्रतु—दाहेदिशांचैवधराप्रकंपेवज्रप्रपातेचविदारणेच । केतौतथोल्कांशुकणप्रपातेत्र्यहंनकुर्याद्व्रतमंगलानीति । अत्रांशुकणेतिपदेननिमित्तलाघवएतदितिसूच्यते । तथालल्लः—व्रतेऽह्निपूर्वसंध्यायांवारिदोयदिगर्जति । तद्दिनेस्यादनध्यायोव्रतंतत्रविवर्जयेदिति । यत्तुज्योतिर्निबंधे—नांदीश्राद्धंकृतंचेत्स्यादनध्यायस्त्वकालिकः । तदोपनयनंकार्यंवेदारंभंनकारयेदिति । एतन्नबह्वृचविषयम् । तेषामुपनयनेवेदारंभाभावेननिषेधासंभवादितिबहवः । केचित्तु—कार्यमित्यंतंसर्वसाधारणं निषेधस्तुसंभवत्प्रासिकविशेषविषयोस्तु आर्षेयंवृणीतेत्यादेःसाधारणत्वेपियाज्ञिकमतेनचतुरोवृणीतइत्यादिनिषेधयोर्द्व्यामुष्यायणविषयत्ववदित्याहुः । उपनयनोत्तरंगर्जितसंभावनायांसतिगर्जितेचानुप्रवचनीयात्पूर्वंयत्कार्यंतदवसरेवक्ष्यामः ॥ ॥ अथोपकल्पनम् ॥ सुमुहूर्तेनिरीक्षणकालेएकमहतंकौपीनधारणोत्तरमपरम् । अहतस्वरूपमाहप्रचेताः—ईषद्धौतंनवंश्वेतंसदशंयंत्रधारितम् । अहतंतद्विजानीयात्सर्वकर्मसुपावनमिति । तच्चकार्पासम् शुक्लमहतंवासोब्राह्मणस्यकार्पासमितिवसिष्ठोक्तेः । शाणंवा—वसीरन्नानुपूर्व्येणशाणक्षौमाविकानिचेतिमनूक्तेः ॥ प्रावरणार्थमैणेयमजिनंवासोवा । ऐणेयेनवाजिनेनब्राह्मणमित्याश्वलायनोक्तेः । एणीबिंदुरहितामृगी तत्संबंध्यैणेयं । तदभावेकृष्णहारिणंवा । हारिणमैणेयंवाकृष्णंब्राह्मणस्येत्यापस्तंबोक्तेः । तच्चनोपस्तीर्यासीतशयीतवातथैवतदुक्तेः । तत्परिणाममाहशाकलः—अखंडंवात्रिखंडंवाष्टच

त्वारिंशदंगुलम् । चतुरंगुलविस्तीर्णंधारयेदजिनंसदेति । खंडत्रयमानव्यवस्थापिस्मृत्यंतरे । त्र्यंगुलंतुबहिर्लोमयद्वास्याच्चतुरंगुलम् । अजिनंधारयेद्विप्रश्चतुर्विंशाष्टषोडशैरिति । चतुर्विंशांगुलएकः अष्टांगुलोद्वितीयः षोडशागुलस्तृतीयः एवंत्रिभिःखंडैरष्टचत्वारिंशदंगुलंपरिमंडलंधार्यमित्यर्थः ॥ उपवीतमाहमनुः—कार्पासमुपवीतंस्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतंत्रिवृदिति । ऊर्ध्ववृतमाहसंग्रहकारः—करेणदक्षिणेनोर्ध्वगतेनत्रिगुणीकृतम् । वलितंमानवैःसूत्रंशास्त्रेऊर्ध्ववृतंस्मृतमिति । तन्निर्माणप्रकारःस्मृत्यर्थसारे—शुचौदेशेशुचिःसूत्रंसंहतांगुलिमूलके । आवेष्ट्यषण्णवत्यातत्त्रिगुणीकृत्ययत्नतः । अब्लिंगकैस्त्रिभिःसम्यक्प्रक्षाल्योर्ध्ववृतंतुतत् । अथप्रदक्षिणावृत्तंसावित्र्यात्रिगुणीकृतम् । त्रिरावेष्ट्यदृढंबध्वाहरिब्रह्मेश्वरान्न्यसेत् । यज्ञोपवीतंपरममितिमंत्रेणधारयेत् । सूत्रंसलोमकंचेत्स्यात्ततःकृत्वाविलोमकम् । सावित्र्यादशकृत्वोद्भिर्मंत्रिताभिस्तदुक्षयेदिति । धारणेविशेषःश्रुत्यैवोक्तः—दक्षिणंबाहुमुद्धरतेऽवधत्तेसव्यमिति । तथान्यच्च—विच्छिन्नंचाप्यधोयातंभुक्त्वानिर्मितमुत्सृजेत् । परिमाणांतरमपितत्रैवोक्तंयद्वेत्युपक्रम्य—पृष्ठदेशेचनाभ्यांचयद्धृतंविंदतेकटिम् । तद्धार्यमुपवीतंस्यान्नातिलंबंनचोच्छ्रितम् । स्तनादूर्ध्वमधोनाभेर्नधार्यंतत्कथंचन । ब्रह्मचारिणएकंस्यात्स्नातकेद्वेबहूनिवा । तृतीयमुत्तरीयंवावस्त्राभावेतदिष्यते । एतच्चवस्त्रोत्तरीयाभावेतृतीयोपवीतधारणंकर्मांगम् । बहूनिवेतिकाम्यम् । बहूनिचायुष्कामस्येतिदेवलोक्तेः । अस्यकंठादुत्तारणनिषेधः । क्षालनार्थंचशाखाविशेषेणतदपवादमाहभृगुः—मंत्रपूतंस्थितंकायेयस्ययज्ञोपवीतकम् । नोद्धरेच्चततःप्राज्ञोयइच्छेच्छ्रेयआत्मनः । सकृच्चाधारणात्तस्यप्रायश्चित्तीभवेद्द्विजः । तैत्तिरीयाःकठाः

कण्वाश्वरकावाजसेयिनः । कंठादुत्तार्यसूत्रंतुकुर्युर्वैक्षालनंद्विजाः । बह्वृचाःसामगाश्चैवयेचान्येयजुःशाखिनः । कंठादुत्तार्यसूत्रंतुपुनरर्हंतिसंस्क्रियाम् । संस्क्रिया मंत्रेणोपवीतांतरधारणम् । अभ्यंगेचोदधिस्नानेमातापित्रोर्मृतेऽहनि । कंठादुत्तार्यसूत्रंतुकुर्याद्विक्षालनंद्विजइति । एतद्वाक्यबोधितविषयेष्वेवोक्तव्यवस्थाबोध्या ॥ मेखलामाहमनुः—मौंजीत्रिवृत्समाश्लक्ष्णाकार्याविप्रस्यमेखला । त्रिवृताग्रंथिनैकेनत्रिभिःपंचभिरेवचेति । आश्वलायनः—त्रिवृतामेखलाकार्यात्रिवारंस्यात्समावृता । तद्ग्रंथयस्त्रयःकार्याःपंचवासप्तवापुनः । वेदत्रयेणावृतोहमितिमन्येतसद्विजः । तद्ग्रंथयस्तदंगानितद्रहस्यानिसंस्मरेदिति । ग्रंथिसंख्यानांप्रवरसंख्यानुसारेणव्यवस्थितविकल्पोबोध्यः । मनुः—मुंजाभावेतुकर्तव्याकुशाश्मंतकबल्बजैरिति ॥ दंडमाहाश्वलायनः—पालाशोब्राह्मणस्येति,केशसंमितोब्राह्मणस्येतिच। गौतमः–यज्ञियोवासर्वेषामिति, मूर्धललाटनासाग्रप्रमाणइतिच । अतएवकेशांतत्वंमूर्धप्रमाणमितिकेचित् । त्रिवृत्कटिसूत्रंकौपीनंभिक्षापात्रंकमंडलुमाचाराद्विवाहवद्वेदिंचसंपादयेत्।इत्युपकल्पनम् ॥ ॥ पूर्वसंस्कारातिपत्तौप्रतिनिमित्तंव्याहृतिहोमंकृच्छ्रानुष्ठानंचकृत्वातंत्रेणनांदीश्राद्धांतंकृत्वोपनयनांगत्वेनमंडपदेवताप्रतिष्ठापनांतेचौलात्प्राचःसंस्कारान्पूर्वेद्युःकुर्यात् । चौलोपनयनेतुपरदिनएवकुर्यादितिपारिजाते ॥ अथोपनयनांतर्गतपदार्थेषुविशेषाः—तत्रवासःपरिधानानंतरंपूर्वोक्तानुपनीताचमनरीत्याद्विराचमनंकार्यम् । कारयंतिचशिष्टाभोजनरथ्याप्रसर्पणनिमित्ताचमनमनुपनीतावस्थायाम् । उपवीतधारणानंतरंतुतत्तद्वर्णोचितविधिनैवाचमनम् । आचांतमुत्तरेणाज्यमितिकारिकाद्युक्तेः। यज्ञोपवीतिनंकृत्वायथाशास्त्रमाचामयतीति

जयंतोक्तेश्च ॥ ॥ अथजयंतोक्ताचमनप्रकारः—अंतर्जानुकरःप्रणवसावित्रीबद्धशिखोदक्षिणहस्तंगोकर्णाकारंसंहतांगुलिंकृत्वाब्रह्मतीर्थेनवीक्षितमंबुफेनबुद्बुदविकृतगंधरसवर्जितंहृद्गमंत्रिःपिबेत् । ऋग्वेदःप्रीयतामितिप्रथमं यजुर्वेदःप्रीयतामितिद्वितीयं, सामवेदःप्रीयतामितितृतीयम् । पाणीप्रक्षाल्यालोमकौसंवृतावोष्ठौसंहतांगुलिपाण्यंगुष्ठमूलेनद्विःपरिमृजति अथर्ववेदःप्रीयतामिति । इतिहासपुराणानिप्रीयंतामितिद्वितीयम् । ततःपाणीप्रक्षाल्यपादौशिरश्चाभ्युक्षेत्विष्णुःप्रीयतामिति । अपःस्पृष्ट्वासंहताभिस्तिसृभिरंगुष्ठेनचमुखंस्पृशेत् अग्निःप्रीयतामिति । अपःस्पृष्ट्वाअंगुष्ठप्रदेशिनीभ्यांनासिकांप्राणःप्रीयतामिति । अपःस्पृष्ट्वाअंगुष्ठानामिकाभ्यांचक्षुषीचंद्रादित्यौप्रीयेतामिति । अपःस्पृष्ट्वातथैवकर्णौदिशःप्रीयंतामिति । अपःस्पृष्ट्वांगुष्ठकनिष्ठिकाभ्यांनाभिंपृथिवीप्रीयतामिति । अपःस्पृष्ट्वाहृदयंतलेनरुद्रःप्रीयतामिति । अपःस्पृष्ट्वासर्वाभिःशिरःसप्तर्षयःप्रीयंतामिति । अपःस्पृष्ट्वाबाहूअग्रेणइंद्रःप्रीयतामिति । एवंभोक्ष्यमाणस्यसंध्योपासनादौचद्विराचमनंभवतीति । पारिजातेव्याघ्रपादः—केशवादित्रिभिःपीत्वाचतुर्थेनमृजेत्करम् । पंचमेनचषष्ठेनद्विरोष्ठावुन्मृजेत्क्रमात् । तौसप्तमेनचमृजेदेकवारंतुमंत्रवित् । अष्टमेनतुमंत्रेणअभिमंत्र्यजलंशुचि । वामंसंप्रोक्षयेत्पाणिंमनुनानवमेनतु । दक्षिणंदशमेनांघ्रिंवाममेकादशेनवै । मूर्धानंद्वादशेनाथस्पृशेदूर्ध्वोष्ठपृष्ठकम् । संकर्षणायनमइतिस्पृशेदंगुलिमूर्धभिः । अंगुष्ठतर्जन्यग्राभ्यांसंश्लिष्टाभ्यांजलैःसह । नासारंध्रेवासुदेवप्रद्युम्नाभ्यांस्पृशेच्छुभे । अंगुष्ठानामिकाभ्यांच[1]संश्लिष्टाभ्यां

---

[1] संश्लिष्टाग्राभ्यामित्यर्थः ।

जलैःसह । अनिरुद्धायनमइतिसंस्पृशेदक्षिदक्षिणम् । पुरुषोत्तममंत्रेणताभ्यांवामांस्पृशेद्दृशम् । तथांगुष्ठकनिष्ठाभ्यांसंश्लिष्टाभ्यांजलैःसह । अधोक्षजनृसिंहाभ्यांश्रोत्रेद्वेसंस्पृशेत्क्रमात् । नाभिमच्युतमंत्रेणताभ्यामेवस्पृशेद्बुधः । श्रीजनार्दनमंत्रेणतलेनहृदयंस्पृशेत् । उपेंद्रायेतिमूर्धानंस्पृशेत्सजलपाणिना । सर्वांगुल्यग्रभागैस्तुसमाश्लिष्टैर्जलैःसह । भुजौतुहरिकृष्णाभ्यांसंस्पृशेद्दक्षिणोत्तरौ । आचामेदपएवंयोभगवन्नामभिःक्रमात् । सद्यःपूतःसविहितेषूत्तरेष्वधिकारवानिति । यत्तुतत्रैवभरद्वाजः—देव्याःपादैस्त्रिभिःपीत्वाअब्लिंगैर्नवधास्पृशेत् । पुनर्व्याहृतिगायत्र्याशिरोमंत्रैर्द्विधास्पृशेत् । देव्याःगायत्र्याः । आब्लिंगैरित्यनंतरंपादैरित्यनुषंगः । आपोहिष्ठेत्यादिभिर्नवभिःपादैर्मुखघ्राण२नेत्र२श्रोत्र२नाभिहृदयानिनवस्थानानिसंस्पृश्यव्याहृत्यादिमंत्रैःशिरोद्विःसंस्पृशेदित्यर्थः । नायंविधिःप्रकृताचमनोपयोगी । गायत्रीसाध्यस्यगायत्र्युपदेशोत्तरभाव्याचमनविषयतायाउचितत्वादिति । आचमनोत्तरंकार्यमुक्तंकारिकायाम्—आचांतमुत्तरेणाज्यंयज्ञपात्राणिचानयेत् । अंतरेणाग्निमात्मानंदक्षिणेतूपवेशयेत् । आहचवृत्तिकारः—ब्रह्मचारीतीर्थेनप्रविश्याचार्यस्यदक्षिणतउपविशेत् । तीर्थंनामप्रणीतानांपश्चिमोदेशः । सर्वत्रतीर्थेनैवप्रविश्यकर्मकुर्यादिति । पश्चिमश्चपूर्वेणोत्करमपरेणप्रणीताइतिसूत्रोक्तउत्कराभावेपितदुपलक्षणार्होबोध्यः । एकपुरोडाशायामग्नीषोमीयाभावेपितदुपलक्षितांतरालवत् । ततःकर्तव्यंकारिकायाम्—अंतरेणाग्निमात्मानंदक्षिणेतूपवेशयेत् । बर्हिरास्तरणादिस्यादिति । आश्वलायनस्मृतौतु—स्रुवसंमार्जनंकृत्वाकुर्याद्यज्ञोपवीतिनम् । यज्ञोपवीतमिति । एतेनबह्वृचोप्यग्नेरुदक्तिष्ठंतमर्भकम् । प्राङ्मुखंप्राङ्मुखस्तिष्ठन्कु

र्याद्यज्ञोपवीतिनम् । आचार्येणाजिनादीनिदातव्यानिस्थितस्यवै । सम्यगाचमयित्वातमित्यादिनास्रुवसंमार्जनांतेयज्ञोपवीतदानाद्याचमनांतमुक्तम् । अवक्षारणेविशेषंशौनकः—शिष्यांजलौस्वांजलिस्थमवक्षार्योदकंगुरुः । शिष्यांजलिगताश्चापोऽवक्षार्यस्वेनपाणिनेति । कस्येतिपरिदायैनंप्रजाधिपतयेततइति । यद्यपिमंत्रस्यपरिदानेकरणत्वंप्रतीयते तथापिजपोयंपरिदानसंकल्पोत्तरंकार्यः । आदित्यमीक्षयेच्छिष्यमथोभावपिपूर्ववत् । तिष्ठतामुत्तरेणाग्निमन्योन्याभिमुखौ ततः । धात्रेपरिददाम्येनमितिसंकल्पपूर्वकम् । कस्यब्रह्मादिकंमंत्रंददाम्यंतंगुरुर्जपेदितिकारिकोक्तेः । तथैवजयंतोक्तेश्च ।जपत्वस्यवृत्तिकृदुक्तत्वाच्च अवक्षारणादिसमिदाधानांतं ।गायत्र्युपदेशेसन्निपात्यंगमितिप्राहाश्वलायनः—शुचित्वसिद्ध्येतस्यसावित्रीग्रहणेगुरुः । अभिमंत्र्ययथावारिसिंचत्येवतदंजलौ । हस्तंगृहीत्वाशिष्यस्यमंत्रंशिष्यत्वसिद्धये । कर्मसाक्षिणमादित्यंतर्पयेत्तंयथोक्तवत् । ततोव्रतानांपतयेददातिरवयेवटुम् । रवेःसंमाननार्थायरक्षार्थंतद्वटोरपि । असामर्थ्यात्समाहर्तुमात्मनस्तंगुरुःपुनः । ददातिमंत्रवद्ब्रह्मप्रजानांपतयेपुनः । प्रजानांपतयेसूर्यायताभ्यांदत्तइतिस्मरन् । गृहीत्वैवानयोःशिष्यंसमालभ्यात्मसात्करोत् । योमयोभाभ्यांदत्तःसताभ्यांमह्यंपुनर्दत्तइतिस्मरन्नित्यर्थः । करोत् करोतु । कुर्वंत्येवात्मसात्संतःसर्वान्पूर्वमुखस्थितान् । तस्मात्पूर्वमुखंकृत्वागृह्णीयाच्छिष्यमेवतम् । गुरोरग्नेःप्रधानत्वात्प्रागग्नौजुहुयाद्वटुरिति । अग्नौगुरुत्वोक्त्यागुरोरिवाग्नेरप्यभिवादनंकार्यमितिसूच्यते । एतदंतेआचारप्रासंगायत्रीपूजनंजान्वाच्योपसंगृह्येतिसूत्रोक्तप्रकारउपदेशश्चाग्नेरुत्तरदेशेकार्यः । अथास्मैसावित्रीमन्वाहोत्तरतोग्नेःप्रत्यङ्मुखायोपविष्टायोपसन्नायद

क्षिणतस्तिष्ठतआसीनायेत्येकइतिपारस्करोक्तेः । इत्थमेवकातीयसूत्राच्च । कल्पसूत्राधिकरणोक्तरीत्याषडंगमेकइतिवदत्यत्रयैकीयत्वोक्त्यादक्षिणतउपविष्टायोपदेशस्यानभिमतत्वसूचनाच्च । उत्तरेणाग्निमुपविशतःप्राङ्मुखआचार्यःप्रत्यङ्मुखइतरइतिगायत्र्युपदेशपरशांखायनसूत्रवाक्यशेषस्य–अध्यासीनोदिशमेकाप्रशस्ताप्राचीमुदीचीमपराजितांवेत्यस्यव्याख्यावसरेएकःश्रोतादक्षिणतोनिषीदेदित्येतन्निषिध्यतेऽनेनसूत्रेणेतितद्भाष्याच्च । उदगग्नेरुत्सृप्यप्राङाचार्यउपविशतिउदगग्रेषुदर्भेषुप्रत्यङ्माणवकइतिछंदोगसूत्रव्याख्यावसरेउत्तरतएवाग्नेरितितद्भाष्योक्तेश्च । उत्तरतोग्नेःप्राङ्मुखआचार्योवतिष्ठतेपुरस्तात्प्रत्यङ्मुखइतरइत्याश्वलायनेनापिगायत्र्युपदेशांगेऽवक्षारणादावुत्तरदेशोपदेशस्यप्रयोगविषयत्वेनगायत्र्युपदेशेपितद्देशत्वौचित्यसूचनाच्च । होमदेशनिरूपितोत्तरदेशस्योक्तसूत्रेषुविधित्सितत्वेनहोमस्यसत्यप्यंगत्वेतद्देशत्वमनाशंक्यम् । तत्तद्धोमसमयेऽग्नेःपश्चादुभयोर्दक्षिणोत्तरभावेनजयंतादिभिरुपवेशनविधानाच्च । अस्मादेवब्रह्मचारिणोदक्षिणदेशेस्थितिनियमाद्ब्रह्मचारिकर्तृकेसंस्थाजपोपस्थानादौपरिभाषाप्राप्तंनाग्नेःप्रत्यगुदग्देशावस्थानंभवति । अनियतदेशाप्राप्तौपरिभाषायानियमार्थत्वात् । मानांतरनियतदेशबाधेनापूर्वविधित्वासंभवात् । योपिजयंतग्रंथः—अथोभयोरप्यग्नेःपश्चाद्यथोपवेष्टुंशक्यंतथोपविशत्याचार्यस्तस्याभिमुखोब्रह्मचारीति । ब्रह्मचारिणाग्नेःपृष्ठतःकरणस्यपरिभाषाविरुद्धत्वात् अनेकोदाहृतसूत्रानुरोधाच्च अग्नेःप्रत्यगुदग्देशएवपश्चादितितत्रनिर्दिष्टइतिद्रष्टव्यम् । अग्नयेसमिधमितिमंत्रोऽविज्ञातस्वरत्वाद्विभाषाच्छंदसीत्येकश्रुत्याविधानाच्चैकश्रुत्येनैवप्रयोक्तव्योऽतःसर्वत्राप्यविज्ञातस्वरामंत्राएकश्रुत्येनैवप्रयोक्तव्याइतिजयंतः ॥

अथोपसंग्रहणम् । तत्रकारिकाकारः—जान्वाच्यदक्षिणंपादमाचार्यस्योपगृह्यचेति । पादावुपसंगृह्येतिजयंतः । उपसंग्रहणंनामामुकगोत्रोदेवदत्तशर्माहंभोअभिवादयइत्युक्त्वाकर्णौदक्षिणोत्तरौपाणिभ्यांस्पृष्ट्वादक्षिणेनपाणिनागुरोर्दक्षिणपादंसव्येनसव्यंगृहीत्वाशिरोवनमनमिति । अनेनैवाशयेनविष्णुः—तस्यचव्यत्यस्तकरःपादावुपस्पृशेदिति । अत्रविशेषमाहबौधायनः—श्रोत्रेसंस्पृश्यमनःसमाधायाधस्ताज्जान्वोरापद्भ्यामन्यस्योपसंग्रहणमिति । अन्यस्यगुर्वादेः । अत्रापिवि

---

१ उपसंग्रहणे स्वकीयकर्णद्वयस्पर्शपूर्वकगुरुपादद्वयस्पर्शःस्मृतः । तत्रोपसंग्रहीतादक्षिणेनहस्तेनगुरोर्दक्षिणंपादंवामेनवामंस्पृशेदितिसर्वस्मृतिसिद्धआचारश्चैतादृशएव । परंतुकर्णस्पर्शेकिंदक्षिणेनहस्तेनदक्षिणंकर्णंवामेनवाममुतवामेनदक्षिणंदक्षिणेनवाममितिसंदेहोनिबन्धेषूपलभ्यते । तथाहि—धर्मसिंधौ-दक्षिणोत्तरौकर्णौ वामदक्षिणपाणिभ्यांसंस्पृश्येत्यादिपाठः । आचारचंद्रिकायां—स्वस्तिकीकृतहस्ताभ्यांकर्णौस्पृष्ट्वेत्यादिपाठः । प्रयोगरत्ने—पाणिभ्यांयथासव्यदक्षिणंश्रोत्रेसंस्पृश्यव्यस्तपाणिराचार्यस्यदक्षिणपादंस्वदक्षिणहस्तेनसव्यंचसव्यहस्तेनेतिपाठः । अत्रोपरिष्टान्निर्दिष्टेनिबंधद्वये नसंदेहलेशोप्यस्तीतितदर्थानुसंधानाद्गुरुपादस्पर्शार्थे व्यत्यासीकृताभ्यांहस्ताभ्यामादौस्वकीयौकर्णौस्पृष्ट्वा तथाभूताभ्यामेवताभ्यांगुरोःपादौस्पृशेदित्यसंदिग्धःसिद्धांतः । प्रयोगरत्नेयथासव्यदक्षिणमितियद्यपिसंदेहमुत्थापयति तथापिव्यस्तपाणिरित्यस्योत्तरग्रंथे फलाभावादन्वयाभावात्पूर्वान्वयित्वेचोक्तस्यैवसिद्धान्तस्यप्राबल्यंप्रतीयते । यथासव्यदक्षिणमित्युक्तिस्तुहस्ताभ्यांश्रोत्रेचेत्यत्राभ्यर्हितत्वात्प्रथममुपस्थितिविषययोर्ददक्षिणयोर्हस्तश्रोत्रयोः अनन्तरीयोपस्थितिविषययोर्वामयोर्हस्तकर्णयोरुपस्थितिक्रमेणान्वयेसंभवतःसिद्धान्तविरोधस्यपरिहारायैव । अयंभावः—पदार्थोपस्थितिक्रमंहित्वासव्यदक्षिणक्रमोहस्तयोरदृष्टानुरोधादाश्रयणीयइति । इत्थंच सर्वेषांनिबंधानामाचारस्यच दक्षिणेनहस्तेनस्वकीयंवामंकर्णंस्पृष्ट्वागुरोर्दक्षिणंपादंस्पृशेत् वामेनचहस्तेनस्वकीयंदक्षिणंकर्णंस्पृष्ट्वागुरोर्वामंपादंस्पृशेदित्यस्मिन्नर्थआनुकूल्यंप्रतिभाति ।

शेषमाह्निकपारिजातेभरद्वाजः—कर्णयुग्मंस्वहस्ताभ्यांस्पृष्ट्वाजानुद्वयादिकम् । चरणांगुष्ठयुग्मांतंसंमृज्यतुशनैःशनैः । दक्षश्रोत्रसमंबाहुंदक्षिणंतुप्रसार्यच । बाहूपरिशिरोनम्रमुक्तंतदभिवादनमिति । यद्यपिस्मृत्यर्थसारेगुरुषूपसंग्रहणंवृद्धतरेष्वभिवादनंवृद्धेषुनमस्कारंकुर्यादित्युक्त्वाऽभिवादनेपादग्रहणंनास्तिपादस्पर्शनंकार्यंनवेत्युक्तं तथापिअभिवादनविशेषात्मकोपसंग्रहणविषयाभरद्वाजोक्तिरितिनविरोधः । गोत्रपरिचयार्थंप्रवरकीर्तनमपिकार्यमितिवृद्धाः । यद्यपिसर्वत्रप्रत्युत्थायाभिवादनमित्यापस्तंबोक्तिस्तथापीहजान्वाच्योपसंगृह्येतिसूत्रादपोद्यते ॥ ॥ अथप्रत्यभिवादनम् । मनुः—आयुष्मान्भवसौम्येतिवाच्योविप्रोऽभिवादने । अकारश्चास्य[1]नाम्नोंऽतेवाच्यःपूर्वाक्षरःप्लुतइति । तथाचायुष्मान्भवसौम्यदेवदत्तशर्मान्अइतिवाक्यंसंपद्यतेइतिकेचित् । प्रत्यभिवादेऽशूद्रे—एचोप्रगृह्यस्यदूराद्धूतेपूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदूताविति पाणिनीयसूत्रयोरनुसरणेतुअकारांतदेवदत्तादिनाम्नोंतेविद्यमानस्याकारस्यप्लुतत्वंहरेशंभाइत्यादौहरा३इशंभा३उइत्येवंसंध्यक्षरविश्लेषेणाक्षरपूर्वभागाकारस्यप्लुतत्वंविधीयतेइतिमनुवाक्यार्थःसंभवति । पूर्वकायइतिवच्चपूर्वाक्षरइत्यप्यक्षरपूर्वार्धेइत्यर्थेसंभवतिलभ्यतेचैवंमनुवाक्यस्य[2]आमंत्रितेयोंऽत्यस्वरःप्लुतःसंध्यक्षरमप्रगृह्यमाईआउभावंचापद्यतेइतिवसिष्ठवाक्य

---

१ नाम्नोंतर्वाच्यो । २ वासिष्ठवाक्यमपरार्के—आमंत्रितेस्वरोंत्यस्यप्लवतेसंध्यक्षरमायाउभावंचेत्येवमुपलभ्यते—आमंत्रितविभक्त्यंतस्यनाम्नोंते यःस्वरःसप्लवतेत्रिमात्रोभवति । तथाप्रगृह्यसंज्ञावर्जितंयत्संध्यक्षरमेकारैकाररूपमाइभावस्तस्यकार्यः । ओकारौकाररूपंचेत्तदातस्याऽऽउभावःकार्य इतितदर्थश्च तत्र ।

संवादोऽपि । तस्मादायुष्मान्भवसौम्यदेवदत्ता३इत्येवप्रत्यभिवादउचितः । संगच्छतेचैवंसतिदेवदत्ता३ अग्निभूता३इ पटा३उ ईदृशप्रत्यभिवादवाक्योदाहरणंवैयाकरणानां पारिजातादिप्रयोगकाराणाचदेवदत्ता३इतिप्लुतांतप्रत्यभिवादकथनम् । संगच्छतेचोक्तमनुवाक्यव्याख्यावसरेव्याख्यातॄणामीदृशग्रंथः—अभिवादकस्ययन्नामतस्यांतोयोऽकारादिस्वरःनाम्नामकारांतत्वनियमाभावात्सप्लुतःकार्यइत्युपक्रम्यपठितः । एतच्चप्रत्यभिवादेऽशूद्रेइतिप्लुतंस्मरन्पाणिनिःस्फुटमुक्तवानिति । यदिशर्मानित्येवप्लुतोविवक्षितस्तदाकारांतत्वनियमाभावोक्तिःपाणिनीयवाक्योदाहरणेचनसंभवतः । अतश्चस्मृत्यर्थसारेप्रत्यभिवादपक्षेषुबहुषुसत्स्वपिदेवदत्ता३इतिप्लुत्यंगीकारपक्षएवश्रेयानितिमंतव्यम् । ब्रह्मचार्योपदेशेवेदमधीष्वेति सूत्रकृतेतिकरणप्रयोगादुपदेशसमाप्तिः । प्रैषार्थमेवमुक्त्वातुकालमेकंविनिर्दिशेदितिकारिकायामपिन्यायप्राप्तंशक्तस्यवैकल्पिककालावधारणमुक्तं नतुपूर्वोपदेशवदयंनित्योपदेशः। यस्त्वस्मिन्नवसरेपारिजातादौसायंप्रातर्भिक्षेथाःसायंप्रातःसमिधमाधेहिइत्युपदेशपाठः सकर्मकुर्वित्यनेनैवगतार्थत्वात्प्रमादपाठः । अनुप्रवचनीयार्थभिक्षायामेवभिक्षांभवान्ददात्विति भिक्षांभवतीददात्वित्यनुप्रवचनीयमेवेतिभवच्छब्दमध्यकभिक्षावाक्यप्रयोगनियमोनसायंप्रातर्भिक्षायाम् । तत्रत्वादिमध्यावसानेषुभवच्छब्दोपलक्षितेतिस्मृत्युक्तप्रकारेणैवतद्वाक्यप्रयोगइतिभाष्यकारः । इत्युपनयनपदार्थेषुविशेषकथनम् ॥

अथोपनयनप्रयोगंवक्तुंद्वितीयजन्मप्रदत्वेनेतरकर्माधिकारसाधकत्वेनेतरसंस्कारेभ्यस्तस्यवैशिष्ट्यात्तत्फलप्राप्तौविघ्नपरिहा

रायविनायकशांतिरुच्यते । तत्रयाज्ञवल्क्यः—-एवंविनायकंपूज्य[१]ग्रहांश्चैवविधानतः । कर्मणांफलमाप्नोतिश्रियंचाप्नोत्यनुत्तमामिति । बृहत्पराशरः—चतुर्थ्यांशुक्लपक्षेतुश्रवणेचोत्तरेतथा । पुण्यार्थंसर्वसिद्ध्यर्थंकुर्याच्छांतिंविनायकीम् । नक्षत्रांतराणिविष्णुधर्मेइमांशांतिंप्रकृत्य—हस्तपुष्याश्वयुक्सौम्यवैष्णवान्यतमेशुभे। नक्षत्रेचमुहूर्तेचमैत्रेवाब्रह्मदैवतइति। भविष्ये—शुक्लपक्षेचतुर्थ्यांचवारेणधिषणस्यच—तिष्येचवीरनक्षत्रेतस्यैवपुरतोनृपेति । एतद्वचनमुदाहृत्यापरार्कः—तच्छ्रीकामस्यविनायकस्नपनविषयम् । उपसृष्टविषयंतुपुण्याहविधानम्। उपसृष्टस्यविलंबायोगात्। धिषणोगुरुः। तस्यैवविनायकस्येत्यर्थइति । उपनयनादिफलप्राप्त्यैक्रियमाणायामपिविनायकशांतावुपनयनकालाविरोधेनसंभवत्कालोपसंग्रहःकार्योनतुतद्विरोधेनेतिबोध्यम् ॥ ॥ अथप्रयोगः—उक्तकालेपवित्रपाणिरधिकारीप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य[२]स्वकुमारस्योपनयनकर्मणोनिर्विघ्नफलसिद्ध्यर्थंविनायकशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्यतदंगत्वेनगणेशपूजादि[३]नांदीश्राद्धांतंकृत्वाचार्यवरणंकुर्यात् । आचार्यस्तुयथास्वर्गे॰चतुर्णामृत्विजांचअस्ययागस्यनिष्पत्तौ॰ पंचानांवस्त्रादिभिःपूजनम् । ततआचार्योपिपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्याचार्यकर्मकरिष्यइतिसंकल्प्य यदत्रसंस्थितमितिसर्षपान्विकीर्यशुचीवइत्यद्भिर्भुवंप्रोक्ष्यस्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमितिमंत्रद्वयेनप्रार्थ्य प्रतिमाद्वयस्याग्न्युत्तारणंकृत्वा मध्यदेशेशुचौसुलिप्तेस्थंडि

---

[१] पूज्येत्यार्षंपूजयित्वेत्यर्थः। [२] निमित्तांतरेसंकल्पे—विनायकोपसर्गशांत्यर्थं अमुककर्मणिनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं अमुकफलसिद्ध्यर्थंलक्ष्मीप्राप्त्यर्थंवेत्याद्यूह्यम् । [३] अत्रापरेपुण्याहवाचनंनेच्छंतिअग्रेतस्यकर्तव्यत्वात् । अस्मिन्पक्षेमातृकार्चावृद्धिश्राद्धयोर्लोपआर्थिकः ।

लेपंचवर्णैःपिष्टैःस्वस्तिकंकृत्वातस्मिन्प्राचीनग्रीवमुत्तरलोमानडुहंरक्तमरक्तंवाचर्मास्तीर्यतत्रश्रीपर्णीपीठंनिधायतच्छ्वेतवाससाच्छाद्यपूर्वादिक्रमेणचतसृषुदिक्षुस्वस्तिकानिकृत्वातेष्विमान्पदार्थान्कांडानुसमयेनकुर्यात् । महीद्यौरितिभुवंस्पृष्ट्वा ओषधयःसमितिधान्यंनिःक्षिप्य आकलशेष्वित्येकरूपमव्रणकलशंनिधाय इमंमेगंगेइतिसंगमोदकेनहृदोदकेनवापूर्य उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना । मृत्तिकेहर(हन)मेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतमिति अश्वस्थानगजस्थानवल्मीकसंगमहृदमृदोनिक्षिप्य गंधद्वारामितिचंदनागरुकेशरकस्तूरीकर्पूरगोरोचनानिनिःक्षिप्य तूष्णींगुग्गुलंचनिक्षिप्य याओषधीरिति सर्वौषधीः ओषधयःसमितियवान् कांडात्कांडादितिदूर्वाः अश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान् याःफलिनीरितिफलं सहिरत्नानीति पंचरत्नानि हिरण्यरूपइतिहिरण्यं युवासुवासाइतिवस्त्रेणावेष्ट्यचंदनमालाभूषितंकृत्वापूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रंनिधाय[1] कलशस्यमुखेविष्णुः० यजमानस्यदुरितक्षयकारकाः० सर्वेसमुद्राःसरितः० देवदानवसंवादेमथ्यमानइतिचपठेत् । दक्षिणपश्चिमोत्तरकलशेष्वित्यंतेकर्मण्याचार्येणकृते चत्वारऋत्विजःपवित्रपाणयःआचम्यप्राङ्मुखास्तत्त्वायामीतिवरुणमावाह्य षोडशोपचारैरभ्यर्च्य पूर्वकलशेश्रीसूक्तंदक्षिणेमहित्रीणां पश्चिमकलशेनहितेक्षत्रं उत्तरकलशेवामदेव्यं[2]आनोभद्राइतिबह्वृचाः नमोवाचइति शंनोवातःपवतामितितैत्तिरीयाःपठेयुः । तदैवाचार्योभद्रासनप्राग्देशेहोमार्थंस्थंडिलंकृत्वा तदैशान्यांवेद्यांपीठेवावस्त्रादौप्रतिमाद्वयेविनायकांबिकयोरावाहनादिभिर्नैवेद्यांतैरुपचारैःपूजांकुर्यात् । तत्रमंत्रौ—तत्पुरुषा

---

१ अत्रचवरुणावाहनपूजनेअपिकेचिदाहुः । २ आनोभद्राइतिदशर्चस्यसूक्तस्यराहूगणोगोतमोविश्वेदेवाजगतीषष्ठीविराट्तिस्रोंत्यास्त्रिष्टुभः ।

यविद्महेवक्रतुंडायधीमहि । तन्नोदंती[1]प्रचोदयात् । सुभगायैविद्महेकामकालिन्यैधीमहि । तन्नोगौरीप्रचोदयात् । अपरार्केहेमाद्रिमतेप्रतिमयोरुत्तरतोनमोंतैर्नाममंत्रैरन्यादेवताआवाह्यषोडशोपचारैःपूजयेत् । मंत्राः—व्योमकेशायनमः पार्वत्यै० भीमजाय० कृष्णस्यपित्रे० अर्काय० आराय० सिताय० धिषणाय० क्लेदपुत्राय० कोणाय० लक्ष्मवते० विधुंतुदाय० केतवे० वाहुलेयाय० नंदकस्यधारिणे०[2] १५ । ततोहोमार्थंस्थंडिले[3]यजमानगृह्योक्तविधिनाऽग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात्[4] । तत्रचक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानं मितं संमितं शालं कटंकटं कूष्मांडं राजपुत्रं व्योमकेशं नंदकस्यधारिणं पार्वतीं भीमजं कृष्णस्यपितरं अर्कं आरं सितं धिषणं क्लेदपुत्रं कोणं लक्ष्मवंतं विधुंतुदं केतुं वाहुलेयं नंदकस्यधारिणं एताःप्रधानदेवताःएकैकयाचर्वाहुत्याशेषेणेत्यादि । निर्वापकालेमितायत्वेत्यादिभिरेकाविंशतिमंत्रैः प्रत्येकंचतुरावृत्तैश्चतुरशीतिवारंनिरुप्यतथैवप्रोक्ष्यबार्हिष्यासादनांतंकृत्वा गव्याज्यलोलीकृतेनसिद्धार्थपिष्टेनोद्वर्तितांगस्यसर्वौषधैःसर्वगंधैश्चविलिप्तशिरसोयजमानस्यमंगलवेदघोषेणवस्त्राच्छादितोक्तपीठात्मकभद्रासनोपर्याचार्येणोपवेशनंकार्यं उपवेशनोत्तरमुद्वर्तनंमदनरत्नोक्तंतुमिताक्षरामहार्णवादिमहानिबंधविरोधादुपेक्ष्यम् । सर्वौषधानिप्रियंगुनागकेसरादीनीतिमिताक्षरायाम् । अपरार्केवृद्धवसिष्ठः—बलाचशंखपुष्पीचकुष्ठंचैववचातथा । नागकेसरचूर्णंचसर्वौषधिगणोभृगोइति । छंदोग

---

[1] दंतिःप्रचोदयादितिपाठः । [2] इंद्रादिलोकपालावाहनमप्यत्रोक्तंशांतिरत्ने । [3] भद्रासनस्यपूर्वतःस्थंडिले । [4] केचिदत्रग्रहमखमेतत्समानतंत्रं कुर्वंतितत्रविनायकादुत्तरेग्रहावाहनंअन्वाधानेतदूहश्चेतिविशेषः ।

परिशिष्टेतु—कुष्ठंमांसीहरिद्रेद्वेमुराशैलेयचंदने । वचाचंपकमुस्तेचसर्वौषध्योदशस्मृताइति । महार्णवेतु—मुरामांसीवचाकुष्ठंशैलेयंरजनीद्वयम् । सटीचंपकमुस्ताचसर्वौषधिगणःस्मृतइति । सटीकचोराइति । सर्वगंधामदनरत्ने—कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचंदनंतथा । जातीफलमितिप्रोक्ताःसर्वगंधाःसदाबुधैरिति । हेमाद्रौगारुडे—कर्पूरंचंदनंदर्पःकुंकुमंचसमांशकम् । सर्वगंधमितिप्रोक्तंसमस्तसुरवल्लभमिति । भद्रासनोपविष्टोयजमानःऋत्विग्भिर्गृह्योक्तविधिनास्वस्तिवाचनंकुर्यात् । तत्रजीवत्पतिपुत्रादिभिःसुवेषाभिःस्त्रीभिर्नीराजितस्ताभ्यःसकंचुकानिवस्त्राणिदद्याच्छिष्टाचारात् । ततआचार्योयजमानदक्षिणतउदङ्मुखस्तिष्ठन्ऋत्विग्दत्तपूर्वादिकुंभत्रयेणक्रमेणैकैकमंत्रेणस्नापयेत् । सहस्राक्षंशतधारमृषिभिःपवनंकृतम् । तेनत्वामभिषिंचामिपावमान्यःपुनंतुते १ । भगंतेवरुणोराजाभगंसूर्योबृहस्पतिः । भगमिंद्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः २ । यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्धनि । ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नंतुसर्वदा ३ । उत्तरकलशेमंत्रत्रयसमुच्चयइतिहेमाद्रिमिताक्षरामहार्णवकृन्मतम् । प्रतिकलशंमंत्रत्रयावृत्तिरित्यपरार्कः । ततश्चतुर्भिर्मिलितैःकलशैर्ऋत्विग्घृतैर्बृहत्पराशरोक्तैर्मंत्रैरभिषेकंकारयेत् मंत्रान्स्वयंपठेदाचार्यः । एतद्वैपावनंस्नानंसहस्राक्षमृषिस्मृतम् । तेनत्वाशतधारेणपावमान्यःपुनंत्विमाः । शक्रादिदशदिक्पालाब्रह्मेशाःकेशवादयः । आपस्तेघ्नंतुदौर्भाग्यंशांतिंददतुसर्वदा । सुमित्र्यानआपओषधयःसंतुदुर्मित्र्यास्तस्मैसंतुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मः । समुद्रागिरयोनद्योमुनयश्चपतिव्रताः । दौर्भाग्यंघ्नंतुतेसर्वेशांतिंयच्छंतुसर्वदा । पादगुल्फोरुजंघास्यनितंबोदरनाभिषु । स्तनोरोबाहुहस्ताग्रग्रीवाअंसांगसंधिषु । नासाललाट

कर्णभ्रूकेशांतेषुचयतिस्थितम् । तदापोघ्नंतुदौर्भाग्यंशांतिंयच्छंतुसर्वदेति । ततआचार्यउपविश्यसव्यपाणिगृहीतकुशत्रयांतर्हितेयजमानमूर्धनिऔदुंबरेणस्रुवेणसार्षपंतैलंजुहुयात् । ॐ मितायस्वाहा ॐ संमितायस्वाहा० ॐ शालाय० ॐ कटंकटाय० ॐ कूष्मांडाय० ॐ राजपुत्रायस्वाहेति । यथामंत्रलिंगंत्यागंयजमानः । शालकटंकटायकूष्मांडराजपुत्रायेति समासांगीकारेणआहुतिचतुष्टयमित्यपरार्कः । ततइध्माधानादि । मितादिषण्मंत्रैरष्टावदानधर्मेणहोमः । व्योमकेशायस्वाहेत्येवंपंचदशाहुतयश्च । ततःस्विष्टकृदादिपूर्णपात्रनिनयनसंस्थाजपांतंकृत्वा चरुशेषेणाभिषेकशालायांलोकपालेभ्योबलीन्दद्यात् ॐ इंद्रायनमइत्यादि ईशानायनमइत्यष्टदिक्षु । ब्रह्मणेनमः अनंतायनमः ईशानपूर्वयोर्मध्येबलिद्वयम् । अथयजमानःसुस्नातः शुक्लानुलेपनमाल्यांबरधरआचार्यसहितःस्तीर्णकुशेशूर्पेनिहितमुपहारंगायत्र्याविनायकायैतमुपहारंनिवेदयामीत्यंतयाविनायकायनिवेदयेत् । सकृदवहतास्तंडुलास्तिलपिष्टमिश्रौदनः पक्वमत्स्याः ३अपक्वाः ३माषविकारास्तदाकारावा पक्वमपक्वंचमांसंतादृशमाषविकारौवा चित्रंसुगंधिपुष्पं चंदनादिसुगंधिद्रव्यं त्रिविधासुरा गुडमधुपिष्टमिश्राणिससैंधवानिपात्रत्रयस्थितानिक्षीराणिवा मूलकं १ पूरिकाः३अपूपाः३औंडेरकस्रजः३दध्योदनः पायसं गुडमिश्रितंतंडुलादिपिष्टं लड्डुकाः३इत्युपहाराः । ईदृशमेवोपहारमंबिकागायत्र्यांबिकायैएतमुपहारंनिवेदयामीत्यंतयांबिकायैनिवेदयेत् । ततआचमनफलतांबूलदक्षिणानीराजनपुष्पांजलिभिरभ्यर्च्यशिरसाभूमिंगत्वोक्तगायत्रीभ्यांविनायकमंबिकांचनमस्कुर्यात् । गंधपुष्पदूर्वासर्षपयुक्तेनकुसुममात्रयुतेनवोदकेनांजलिमापूर्यपूर्वोक्तगायत्रीभ्यामर्घ्यंदत्वा दूर्वास

र्षपपुष्पपूर्णांजलीताभ्यांदत्वा विनायकमुपतिष्ठेत् । रूपंदेहियशोदेहिभगंभगवन्देहिमे । पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामाश्चदेहिमे । ततःरूपंदेहि० भगवतिदेहिमेइति । यथापाठमंत्रेणांबिकामुपतिष्ठेतेतिमहार्णवः । बृहत्पाराशरेणोपस्थाने मंत्रांतरमुक्तम्—सौभाग्यमंबिकेदेहिभगंरूपंयशोपिच । स्त्रियंपुत्रांश्चकामांश्चतथाशौर्यंचदेहिमे । गणेशमातरंबालेयत्किंचिन्मदभीप्सितम् । एकनाम्नैवतद्देहिदेहिगौरिवरान्ममेति । ततआस्तीर्णकुशेशूर्पेसर्वप्रकारमुपहारशेषंनिधायचतुष्पथभुवमुपलिप्यतत्रगुरुःशूर्पंनिदध्यात् । यजमानःप्रक्षालितपादआचांतोमंत्रोक्तदेवताभ्योबलिंदद्यात् । तत्रमंत्राः—बलिंगृह्णंत्विमेदेवाआदित्यावसवस्तथा । मरुतश्चाश्विनौरुद्राःसुपर्णाःपन्नगाग्रहाः । असुरायातुधानाश्चपिशाचामातरोनगाः । शाकिन्योयक्षवेतालायोगिन्यःपूतनाःशिवाः । जृंभकाःसिद्धगंधर्वानागाविद्याधरानदाः । दिक्पालालोकपालाश्चयेचविघ्नविनायकाः । जगतांशांतिकर्तारोब्रह्माद्याश्चमहर्षयः । माविघ्नंमाचमेपापंमासंतुपरिपंथिनः । सौम्याभवंतुतृप्ताश्चभूतप्रेताःसुखावहाइति । ततोयजमानोगृहमागत्यक्षालितपादआचम्याचार्यंसंपूज्यसदक्षिणंवस्त्रयुग्मंतस्मैदद्यादृत्विग्भ्योपियथाशक्तिहेमदक्षिणांदत्वाऽन्येभ्यश्चभूयसींदद्यात् । स्थापितदेवतानामुत्तरपूजाविसर्जनपूर्वकमाचार्यायसमर्पणंविधायपरिस्तरणविसर्जनादिविभूतिधारणांतंकृत्वागच्छगच्छेत्यग्निंविसृज्यदशावरान्ब्राह्मणान्भोजयेदीश्वरार्पणंकुर्यात् । विवाहाद्यारंभेविवाहकर्मणोनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थमित्येवंसंकल्पवाक्यऊहः । एवमुपसर्गनिवृत्तिकामइतिश्रीकामइतिवाऽन्यत्रतदूहोबोध्यः । इतिवैनायकीशांतिःसमवादि यथामति ॥ अनंतेनभवेदेषागणेशांबिकयोर्मुदे ॥ अपरार्कमतेकलशेषु

पूजांतेव्योमकेशादिदेवतापूजनं । ततउत्सादनादिसंस्कृतस्योपवेशनम् । ततःसहस्राक्षमितिमंत्रत्रयावृत्त्याचतुर्भिःकलशैरभिषेकः । ततोमितायस्वाहेतिचतुर्भिर्मंत्रैस्तैलहोमः । तैरेवचतुर्भिर्मंत्रैश्चतुष्पथेवलिदानं । ततोऽर्घ्यदानमुपस्थानं ततःशुक्लवस्त्रादिधारणंब्राह्मणभोजनंगुरवेवस्त्रयुग्मदानंगुरुवत्पूजनंचेतिप्रयोगः ॥ अत्रोपकल्पनश्लोकामहार्णवे—अथोच्यंतेऽत्रसंभारारोचनापंचमृत्तिकाः । अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् । चंदनागरुकस्तूरीकर्पूराद्याःसुगंधयः । गौरसर्षपकल्कस्तुगव्याज्येनविमिश्रितः । गुग्गुलश्चापिसंशुद्धःसर्वौषधिगणस्तथा । मुरामांसीवचाकुष्ठंशैलेयंरजनीद्वयम् । सटाचंपकमुस्तेचसर्वौषधिगणःस्मृतः । चत्वारःकलशाएकवर्णाश्चास्फुटिताव्रणाः । ह्रदोदकयुतावापिनिम्नगासंगमोदकाः । सुग्रीवपुच्छमारक्तंचर्मचानडुहंतथा । श्रीपर्णिकाष्ठपीठंचसहकारस्यपल्लवाः । अश्वत्थपल्लवावास्युःसुगंधिसुमनांस्यपि । स्रजःशोभनगंधाश्चविचित्रकुसुमानिच । कलशावेष्टनार्थंतुनववस्त्रचतुष्टयम् । पीठस्याच्छादनार्थंतुशुभ्रवस्त्रमथापरम् । गणेशांविकयोरर्थेवस्त्रयुग्मंसुशोभनम् । आचार्यदक्षिणार्थंतुमहार्हवसनद्वयम् । पंचवर्णानिपिष्टानिस्वस्तिकस्यविनिर्मितैः । तैलंचसार्षपंतद्वदुदुंवरविनिर्मितः । स्रुवःकुशाश्चरुस्थालीपाकार्थेतंडुलाःशुभाः । किंचिद्धंतिक्रियाक्षमास्तंडुलाश्चापरेतथा । तिलपिष्टेनसंयुक्तओदनःशूर्पमेवच । पक्वाश्चमत्स्याश्चापक्वामांसंपक्वमपक्वकम् । गौडीपैष्टीचमाध्वीचेत्येवंवैत्रिविधासुरा । मत्स्यादिकंसुरांतंचनिषिद्धंयच्चयस्यतत् । नग्राह्यंतुविशेषेणद्विजैस्त्याज्यासुरासदा । यजमानस्तुशूद्रश्चेदद्विजैस्तानियोजयेत् । प्रत्यक्षमूलकंवास्यादुक्तभक्षस्तथाकृतः । अपूपाःपूरिकाश्चैवतथैवोंडेरकस्रजः । दध्यन्नं

पायसंचैवपिष्टंचगुडमिश्रितम् । लड्डुकाश्चतथादूर्वाःसर्षपागौरसंज्ञिताः । गणेशप्रतिमाचैवगौर्याश्चप्रतिमातथा । एवंसंभृतसंभारःशांतिंकुर्याच्छुभेदिने ॥ इतिविनायकशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथपरिशिष्टोक्तविधिनाग्रहमखउच्यते ॥ तत्रपरिशिष्टे—आदित्यइंदुरंगारकःसौम्योगुरुर्भार्गवःशनैश्चरोराहुःकेतुरिति नवग्रहाः तेहिस्वगत्याजगदभिगृह्णंतितानयनादिषुपुण्यकालेषुयजेच्छांतयेसद्योद्भुतेषुचाभ्युदयिकंकरिष्यमाणोग्रहयज्ञंकुर्यात् । अनाभ्युदयिकंहिशांतिकर्मयदितदानुकूल्यकामःस्यात्कामंप्रागभ्युदयात् सप्ताहान्यंतरीत्यकुर्यात्तंदशावराहुतिंस्वयमेकःकुर्यात् ऊर्ध्वमापंचाशतश्चत्वारऋत्विजःशतावराहुतावष्टौनवमआचार्यःसस्वयमेववा यदिस्वयमाचार्यःस्यात्तद्भागंकल्पविदेदद्यात् तान्विधिवद्वरयित्वार्चयेत् । आचार्यआदित्यायजुहुयात् इतरेभ्यइतरेपूर्वोत्तरंतंत्रमाचार्यःकुर्यादितरेतमन्वालभेरन्निति । अभ्युदयकामंप्रत्ययनादिपुण्यकालनियममुक्त्वाद्भुताख्योत्पातेषुतच्छांत्यर्थंप्रयोगेनायनादिपुण्यकालापेक्षेतिसद्यइत्यनेनोक्तम् । आभ्युदयिकमित्यादेर्व्याख्यानमुक्तंपारिजाते—विवाहोपनयनादिष्वाभ्युदयिकेषुकर्मस्वादौग्रहयज्ञंकुर्यात् अनाभ्युदयिकेषुश्राद्धातिरिक्तकर्मसुग्रहानुकूल्यकामोग्रहयज्ञंकुर्यादिति । आभ्युदयिककर्माव्यवहितपूर्वकालेऽसंभवतोग्रहयज्ञस्यनियतव्यवहितकालेनानुष्ठानमभ्यनुजानाति । व्यवहितानुष्ठानेपिसप्तदिनाधिकव्यवधानंनकार्यमित्यर्थः । होमगतसंख्यानिमित्तांकर्तृसंख्याव्यवस्थामाहदशेत्यादिना । ऊर्ध्वमितिदशभ्यऊर्ध्वंपंचाशतमभिव्याप्यचत्वारऋत्विजःततऊर्ध्वंशतपर्यंतमष्टौऋत्विजोनवमआचार्यः। सइतिआचार्यकर्मस्वयमेववाकुर्यादित्यर्थः । अस्मिन्पक्षे

आचार्यायदेयादक्षिणांग्रहकल्पविदेदद्यात् । इतरेभ्यःसोमादिभ्यः । तंत्रानुष्ठानकालेऋत्विग्भिराचार्यान्वारंभःकार्यइति विधीयते ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ पत्न्यावटुनासहकृताभ्यंगस्नानोयजमानोदेशकालौसंकीर्त्याऽस्यकुमारस्यकरिष्यमाणोपनयनेनिर्विघ्नफलसिद्धिकामोबह्वृचगृह्यपरिशिष्टोक्तरीत्याग्रहमखंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणपतिपूजनादिआचार्यर्त्विग्वरणतत्पूजनांतंकुर्यात् । ततआचार्योग्रहप्रतिमानामग्न्युत्तारणंकुर्यात् । तद्विधिःपरिशिष्टे—ताम्रंस्फाटिकंरक्तचंदनंसुवर्णं तदेवरजतंलोहंसीसंकांस्यमितिनवग्रहप्रतिमाद्रव्याणि सुवर्णमेकमेववासर्वेषामिति । तदेवेतिबृहस्पतेरपिबुधवत्सौवर्णीप्रतिमेत्याशयः । अथाचार्योयजमानानुज्ञयाचार्यकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य हस्तमात्रावरंचतुरस्रंकुंडंस्थंडिलंवासंस्कृत्यततऐशान्यांकुंडवदायतांचतुरस्रांचतुस्त्रिद्व्यंगुलोच्छ्रितत्रिभूमिकांग्रहवेदिंकृत्वातस्यांशुक्लैर्व्रीहितंडुलैःसकर्णिकमष्टदलमंबुजमुल्लिखेत् । आहुतिसंख्यावृद्ध्यनुसारेणकुंडादौहस्ताधिकपरिमाणव्यवस्था संवत्सरकौस्तुभांतर्गतमाघकृत्येद्रष्टव्या । कुंडतुल्यैवग्रहवेदिवृद्धिःकल्प्या । कर्णिकायांग्रहपीठानिकुर्यात् । कर्णिकायांमध्येरक्ताक्षतैर्वर्तुलं आग्नेयदलेशुक्लाक्षतैश्चतुरस्रं दक्षिणेरक्ताक्षतैस्त्रिकोणं ऐशान्येहरिताक्षतैर्बाणाकारं उत्तरेपीताक्षतैर्दीर्घचतुरस्रं पूर्वस्मिन्शुक्लाक्षतैःपंचकोणं पश्चिमेकृष्णाक्षतैश्चापाकारं नैर्ऋतेतादृशैःशूर्पाकारं वायव्येचित्राक्षतैर्ध्वजाकारमिति । ततउदीच्यांरंगवल्लीपद्मेधान्येनकुंभयोग्यं पीठंप्रकल्प्य तत्रनवमव्रणंतैजसंमृन्मयंवानुलिप्तमक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतंकुंभंस्थापयेत् आकलशेष्वित्यस्यगाधिपुत्रोविश्वामित्रःपवमानःसोमोगायत्रीकलशस्थापने० । ततःकुंभंशुद्धाद्भिःपूरयेत् इमंमेगंगेइत्यस्यसिंधुक्षित्प्रैयमेधोनद्योजगतीउ

दकपूरणेवि० । ततःकर्तव्यक्रमःपरिशिष्टे—अद्भिःपूरयित्वापंचगव्यानिपंचामृतानिनवपर्वतधातून्पवित्रमृदोनवरत्नानिप्रक्षिप्य दूर्वापल्लवैर्मुखमवच्छाद्यवस्त्रयुग्मेनवेष्टयित्वा समुद्रादीनितीर्थान्यावाह्यकुंभमभिमृश्याऽब्लिंगावारुणीःपावमानीश्चजपेदिति । तत्रआप्यायस्वेत्यस्यराहूगणोगौतमःसोमोगायत्रीक्षीरप्रक्षेपेवि० । दधिक्राव्णइत्यस्यगौतमोवामदेवोदधिक्रावानुष्टुप् दधिप्रक्षेपेवि० । उक्तमंत्राभ्यांक्षीरदधिनीक्रमेणप्रक्षिप्य शुक्रमसिज्योतिरसीतिघृतं गंधद्वारामित्यस्यानंदकर्दमःश्रीरनुष्टुप्गोमयप्रक्षेपे० इतिगोमयं गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्री गोमूत्रप्रक्षेपे० इतिगोमूत्रं पुनराप्यायस्वेत्यादिभिस्त्रिभिःक्षीरदधिघृतानिप्रक्षिप्य मधुवाताइतितिसृणांराहूगणोगोतमोविश्वेदेवागायत्री मधुप्रक्षेपे० इतिमधुप्रक्षिप्य स्वादुःपवस्वेत्यस्यरेणुर्भार्गवःपवमानःसोमस्त्रिष्टुप् शर्कराप्रक्षेपे० इतिशर्करांचप्रक्षिप्य नूतनाहृतपवित्रपर्वतधातून्त्र्यवरान्हयगजवल्मीकहृदगोष्ठराजद्वारचतुष्पथेभ्योनूतनाहृतपवित्रमृदश्चक्षिपेत् । उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना । मृत्तिकेहनमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतमिति । सहिरत्नानीत्यस्यश्यावाश्वःसवितागायत्रीरत्नप्रक्षेपे० । नूतनाहृतरत्नानिप्रक्षिप्य । रुवतिभीमइत्यस्यवैश्वामित्रोरेणुःपवमानसोमोजगतीत्वक्प्रक्षेपे० न्यग्रोधाश्वत्थप्लक्षजंबूचूतत्वचःप्रक्षिप्य । याओषधीरित्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोऽनुष्टुप् अनेनशतौषधानितदभावेदशमूलानिसुवर्णंवानिक्षिप्य गंधद्वारामितिगंधं कांडात्कांडादितिदूर्वाः ततःप्रवोयज्ञेष्वित्यस्यवसिष्ठोविश्वेदेवाअनुष्टुप् पल्लवप्रक्षेपे० न्यग्रोधाद्युक्तपल्लवैर्मुखमाच्छाद्य । युवंवस्त्राणीतिवस्त्रयुग्मेनवेष्टयित्वा कुंभेतीर्थान्यावाहयेत् । सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः । आयांतु

यजमानस्यदुरितक्षयकारकाः । गंगेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति । नर्मदेसिंधुकावेरिजलेस्मिन्संनिधिंकुर्विंति । इमंमेगंगेइतिच । ततःकुंभमभिमृश्यजपेत् । आपोहिष्ठेतितृचस्यांवरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री । नहितेक्षत्रमितितिसृणामाजीगर्तिःशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् । स्वादिष्ठयेतितिसृणांमधुच्छंदाःपवमानःसोमोगायत्री सर्वासांजपे० । मूलेस्त्रीलिंगबहुवचनांतशब्दैस्तिसृणामेवर्चांविनियोगप्रतीतेःप्राचांसूक्तोपन्यासश्चिंत्यः । काम्येस्वयमेवायंजपआचार्येणकार्यः । नैमित्तिकेस्वाशक्तौमंत्रविदमन्यंनियुंजीत । अथयजमानःप्राङ्मुखःसमाहितचित्तआचार्यर्त्विक्सहितःपुण्याहवाचनंकुर्यात् । अस्य नवग्रहकर्मणःपुण्याहंभवंतोब्रुवंत्विति । एवंस्वस्तीत्यादि । ततोग्रहपूजांकरिष्येइतिसंकल्प्य । ततःपूर्वनिर्मितपीठेषु यथास्थानमुखीर्ग्रहप्रतिमाःस्थापयित्वा तद्दक्षिणवामपार्श्वयोरधिदेवताप्रत्यधिदेवताप्रतिमेतदभिमुख्यौस्थापयेत् । तत्प्रतिमानामसंभवेपुष्पाक्षतादिषुदेवताआवाहयेत्तच्च प्रणवव्याहृतिभिर्वक्ष्यमाणरीत्यावाह्याकृष्णेनेत्यृगंतेभगवन्नादित्येत्याद्यावाहयामीत्यंतंपरिशिष्टोक्तंगद्यमंत्रंपठित्वा कर्णिकास्थताम्रप्रतिमायांप्राङ्मुख्यांपुष्पांजलिंनिक्षिपेदित्यावाहनं । एवंप्रत्यावाहनंपुष्पांजलिप्रयोगोबोध्यः । तत्राऽयंक्रमः । व्यस्तसमस्तव्याहृतीनामत्रिभृगुभरद्वाजप्रजापतयऋषयःअग्निवायुसूर्यप्रजापतयोदेवताःगायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहत्यश्छंदांसिआवाहने० ॐ भूरादित्यमावाहयामि ॐ भुवआदित्य० ॐ स्वरादित्यमा० ॐ भूर्भुवःस्वरादित्यमावाहयामि आकृष्णेनेत्यस्यहिरण्यस्तूपऋषिःसवितादेवतात्रिष्टुप्छंदःआवाहनेविनियोगः ॐ आकृष्णेनरजसा० पश्यन्नितिमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्नादित्यग्रहाधिपतेकाश्यपगोत्रकालिंगदेशेश्वरजपापुष्पोप

मांगद्युतेद्विभुजपद्माभयहस्तासिंदूरवर्णांबरमाल्यानुलेपनज्वलन्माणिक्यखचितसर्वांगाभरणभास्वरतेजोनिधेत्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्तेनमस्तेसन्नद्धारुणध्वजपताकोपशोभितेनसप्ताश्वरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छाग्निरुद्राभ्यांसह पद्मकर्णिकायाताम्रप्रतिमांप्राङ्मुखींवर्तुलपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामिइत्यादित्यमावाहयेत्। तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूरादित्याधिदेवमग्निमावाहयामि ॐ भुवआदित्याधिदेवमग्निमावाहयामि ॐ स्वरादित्याधिदेवमग्निमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरादित्याधिदेवमग्निमावा० ॐ अग्निंदूतमित्यस्यकाण्वोमेधातिथिर्ऋषिः अग्निर्देवतागायत्रीछंदःआवाहने० ॐ अग्निंदूतमितिमंत्रमुच्चार्य पिंगलश्मश्रुकेशंपिंगाक्षित्रितयमरुणवर्णंछागस्थंसाक्षसूत्रंसप्तार्चिषंशक्तिधरवरदहस्तद्वयमादित्याधिदेवमग्निमावाहयामि । तद्वामपार्श्वे ॐ भूरादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावाहयामि ॐ भुवआदित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावाह० ॐ स्वरादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावा० त्र्यंबकमित्यस्यवसिष्ठऋषिःत्र्यंबकोदेवता अनुष्टुप्छंदःआवाहने० ॐ त्र्यंबकंयजामहे० मृतादिमंमंत्रंसमुच्चार्य त्रिलोचनोपेतंपंचवक्त्रंवृषारूढंकपालशूलखट्वांगधारिणंचंद्रमौलिंसदाशिवमादित्यप्रत्यधिदेवंरुद्रमावा० १। तद्दक्षिणपूर्वदले ॐ भूःसोममावाह० ॐ भुवःसोममावाह० ॐ स्वःसोममावाह० ॐ भूर्भुवःस्वःसोममावाह० आप्यायस्वेत्यस्यगोतमऋषिःसोमोदेवतागायत्रीछंदःआवाहने० ॐ आप्यायस्वसमेतुते० इमंमंत्रमुच्चार्य भगवन्सोमद्विजाधिपतेसुधामयशरीरअत्रिगोत्रयमुनातीरदेशेश्वरगोक्षीरधवलांगकांतेद्विभुजगदावरदानांकितकरशुक्लांबरमाल्यानुलेपनसर्वांगमुक्तमौक्तिकाभरणरमणीयसमस्तलोकाप्यायकदेवतास्वाद्यमूर्ते

नमस्तेसन्नद्धधवलध्वजपताकोपशोभितेनदशश्वेताश्वरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छाद्भिरुमयासहपद्माग्नेयदलमध्ये स्फाटिकप्रतिमांप्रत्यङ्मुखींचतुरस्रपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूःसोमाधिदेवताअपआवाहयामि ॐ भुवःसोमाधिदेवताअपआवाह० ॐ स्वःसोमाधिदेवताअपआवाह० ॐ भूर्भुवःस्वःसोमाधिदेवताअपआवा० अप्सुमइत्यस्यसिंधुद्वीपऋषिःआपोदेवताःगायत्रीछंदःआवाहने० ॐ अप्सुमेसोमो० शंभुवं इमंमंत्रमुच्चार्य स्त्रीरूपधारिणीःश्वेतवर्णामकरवाहनाःपाशकलशधारिणीर्मुक्ताभरणभूषिताःसोमाधिदेवताअपआवाह० । तद्वामपार्श्वे ॐ भूःसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावाह० ॐ भुवःसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावा० ॐ स्वःसोमप्रत्यधिदेवतामुमामा० ॐ भूर्भुवःस्वःसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावाह० गौरीर्मिमायेत्यस्यदीर्घतमांऋषिःउमादेवताजगतीछंदःआवाहने० ॐ गौरीर्मिमायसलिला० परमेव्योमन् इमंमंत्रमुच्चार्य अक्षसूत्रकमलदर्पणकमंडलुधारिणींत्रिदशपूजितांसोमप्रत्यधिदेवतामुमामावाह० २ । दक्षिणदेशे ॐ भूरंगारकमावाह० ॐ भुवोंगारकमावाहया० ॐ स्वरंगारकमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वरंगारकमावाह० अग्निर्मूर्धेत्यस्यविरूपऋषिःअंगारकोदेवतागायत्रीछंदःआवाहने० ॐ अग्निर्मूर्धा० जिन्वति इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्नंगारकाग्न्याकृतेभारद्वाजगोत्रअवंतिदेशेश्वरज्वालापुंजांगद्युतेचतुर्भुजशक्तिशूलगदाखड्गधारिन्रक्तांबरमाल्यानुलेपनप्रवालभूषिताभरणसर्वांगदुरालोकदीप्तेनमस्तेसन्नद्धरक्तध्वजपताकोपशोभितेनरक्तमेषरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छभूमिस्कंदाभ्यांसहपद्मदक्षिणदलमध्येरक्तचंदनप्रतिमांदक्षिणामुखींत्रिकोणपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे

ॐ भूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाह० ॐ भुवोंगारकाधिदेवतांभूमिमावाह० ॐ स्वरंगारकाधिदेवतांभूमिमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाह० स्योनापृथिवीत्यस्यमेधातिथिर्ऋषिः पृथिवीदेवतागायत्रीछंदःआवाहने० ॐ स्योनापृथिवि० इमंमंत्रंसमुच्चार्य शुक्लवर्णांदिव्याभरणभूषितांचतुर्भुजांसौम्यवपुषंचंडांशुसदृशांबरांरत्नपात्रसस्यपात्रौषधिपात्रपद्मोपेतकरांचतुर्दिङ्नागपृष्ठगतामंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहयामि । तद्वामपार्श्वे ॐ भूरंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावा० ॐ भुवोंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावा० ॐ स्वरंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावा० कुमारश्चित्पितरमित्यस्यगृत्समदऋषिः स्कंदोदेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहने० ॐ कुमारश्चित्पितरं० इमंमंत्रंसमुच्चार्य षण्मुखंशिखंडकविभूषणंरक्तांबरधरंमयूरयानंकुक्कुटघंटापताकाशक्त्युपेतचतुर्भुजमंगारकप्रत्यधिदेवंस्कंदमावाह० ३ । ततःप्रागुत्तरदले ॐ भूःबुधमावा० ॐ भुवोबुधमावा० ॐ स्वर्बुधमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्बुधमावा० उद्बुध्यध्वमित्यस्यबुधऋषिःसौम्योदेवतात्रिष्टुप्छंदःआवाहने० ॐ उद्बुध्यध्वंसमनसः० इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्सौम्यसौम्याकृतेसर्वज्ञानमयात्रिगोत्रमगधदेशेश्वरकुंकुमवर्णांगद्युतेचतुर्भुजखड्गखेटगदावरदानांकितपीतांबरमाल्यानुलेपनमरकताभरणालंकृतसर्वांगविबुधपतेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनचतुःसिंहरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छविष्णुपुरुषाभ्यांसहैशानदलमध्येसुवर्णप्रतिमासुदङ्मुखींबाणाकारपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामा० । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूःसौम्याधिदेवंविष्णुमावा० ॐ भुवःसौम्याधिदेवंविष्णुमावा० ॐ स्वःसौम्याधिदेवंविष्णुमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःसौम्याधिदेवंविष्णु

मावा० इदंविष्णुरित्यस्यकाण्वोमेधातिथिर्ऋषिःविष्णुर्देवतागायत्रीछंदः आवाहने० ॐ इदंविष्णुर्वि० इमंमंत्रंसमुच्चार्य कौमोदकीपद्मशंखचक्रोपेतंचतुर्भुजंसौम्याधिदेवंविष्णुमावा० । तद्वामपार्श्वे ॐ भूःसौम्यप्रत्यधिदेवंपुरुषमावा० ॐ भुवः सौम्यप्रत्यधिदेवंपुरुषमावा० ॐ स्वःसौम्यप्रत्यधिदेवंपुरुषमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःसौम्यप्रत्यधिदेवंपुरुषमावाहयामि सहस्रशीर्षेत्यस्यनारायणऋषिःपुरुषोदेवताअनुष्टुप्छंदःआवाहने० ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः० इमंमंत्रंसमुच्चार्य कौमोदकीपद्मशंखचक्रोपेतचतुर्भुजंसौम्यप्रत्यधिदेवंपुरुषमावा० । उत्तरदले ॐ भूर्बृहस्पतिमावा० ॐ भुवोबृहस्पतिमा० ॐ स्वर्बृहस्पतिमावाहयामि ॐ भूर्भुवःस्वर्बृहस्पतिमावाह० बृहस्पतेअतीत्यस्यगृत्समदऋषिःबृहस्पतिर्देवतात्रिष्टुप्छंदःआवाहने० ॐबृहस्पतेअतियदर्योअर्हात्०स्वाहा इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्बृहस्पतेसमस्तदेवताचार्यांगिरसगोत्रसिंधुदेशेश्वरदीप्तसुवर्णसदृशदीप्तचतुर्भुजदंडकमंडल्वक्षसूत्रवरदानांकितपीतांबरमाल्यानुलेपनपुष्परागमयाभरणरमणीयसमस्तविद्याधिपतेनमस्तेसन्नद्धपीतध्वजपताकोपशोभितेनपीताश्वरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेंद्रब्रह्मभ्यांसहपद्मोत्तरदलमध्येसुवर्णप्रतिमामुदङ्मुखींदीर्घचतुरस्रपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूर्बृहस्पत्यधिदेवमिंद्रमावाहयामि । ॐ भुवर्बृहस्पत्यधिदेवमिंद्रमावाह० ॐ स्वर्बृहस्पत्यधिदेवमिंद्रमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्बृहस्पत्यधिदेवमिंद्रमावाह० इंद्रश्रेष्ठानीत्यस्यगृत्समदऋषिः इंद्रोदेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहनेविनि० ॐ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानि० इमंमंत्रंसमुच्चार्य चतुर्दंतगजारूढंवज्रांकुशधरंशचीपतिंनानाभरणभूषितंबृहस्पत्यधिदेवमिंद्रमावाहयामि । तद्वामपार्श्वे ॐ भूर्बृहस्पतिप्रत्यधिदेवं

ब्रह्माणमावाहयामि ॐ भुवोबृहस्पतिप्रत्यधिदेवंब्रह्माणमावा० ॐ स्वर्बृहस्पतिप्रत्यधिदेवंब्रह्माणमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्बृहस्पतिप्रत्यधिदेवंब्रह्माणमावा० ब्रह्मणातेब्रह्मयुजेत्यस्यविश्वामित्रऋषिःब्रह्मादेवतात्रिष्टुप्छंदःआवाहनेविनि० ॐ ब्रह्मणातेब्रह्मयुजायुनज्मि० इमंमंत्रंसमुच्चार्य पद्मासनस्थंजटिलंचतुर्मुखमक्षमालास्रुवपुस्तककमंडलुधारिणंकृष्णाजिनवाससंपार्श्वेस्थितहंसंबृहस्पतिप्रत्य० ब्रह्माणमा० । ततःप्राग्दले ॐ भूःशुक्रमावाहयामि ॐ भुवःशुक्रमावा० ॐ स्वःशुक्रमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वःशुक्रमावा० शुक्रंतेअन्यदित्यस्यभरद्वाजऋषिःशुक्रोदेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहनेवि० ॐ शुक्रंतेअन्यद्यजतंते० इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्भार्गवसमस्तदैत्यगुरोभार्गवगोत्रभोजकटदेशेश्वररजतोज्ज्वलांगकांतेचतुर्भुजदंडकमंडल्वक्षसूत्रवरदानांकितशुक्लांबरमाल्यानुलेपनवस्त्राभरणभूषितसर्वांगसमस्तनीतिशास्त्रनिपुणमतेनमस्तेसन्नद्धशुक्लध्वजपताकोपशोभितेनशुक्लाश्वसहितेनरथेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेंद्राणींद्राभ्यांसहपूर्वदलमध्येरजतप्रतिमांप्राङ्मुखींपंचकोणपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूःशुक्राधिदेवतामिंद्राणीमावाहयामि ॐ भुवःशुक्राधिदेवतामिंद्राणीमावाह० ॐ स्वःशुक्राधिदेवतामिंद्राणीमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःशुक्राधिदेवतामिंद्राणीमावा० इंद्राणीमास्वित्यस्यवृषाकपिर्ऋषिः इंद्राणीदेवतापंक्तिश्छंदःआवाहनेवि० ॐ इंद्राणीमासुनारिषु० इमंमंत्रंसमुच्चार्य संतानमंजरीवरदानधरद्विभुजांशुक्राधिदेवतामिंद्राणीमावा० । वामपार्श्वे ॐ भूःशुक्रप्रत्यधिदेवमिंद्रमावाहयामि ॐ भुवःशुक्रप्रत्यधिदेवमिंद्र० ॐ स्वःशुक्रप्रत्यधिदेवमिंद्रमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःशुक्रप्रत्यधिदेवमिंद्रमावा० इंद्रमिद्देवतातयइत्यस्यमेधातिथिर्ऋषिः इंद्रोदे

वताप्रगाथाबृहतीछंदः आवाहनेवि० ॐ इंद्रमिद्देवतातय० इमंमंत्रंसमुच्चार्य चतुर्दंतगजारूढंवज्रांकुशधरंशचीपतिंनानाभरणभूषितंभार्गवप्रत्यधिदेवमिंद्रमावाह० । पश्चिमदले ॐ भूःशनैश्चरमावाह० ॐ भुवःशनैश्चरमावा० ॐ स्वःशनैश्चरमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःशनैश्चरमा० शमग्निरित्यस्यरिरिंबिठिर्ऋषिःशनैश्चरोदेवताउष्णिक्छंदः आवाहने० ॐ शमग्निरग्निभिः० इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्शनैश्चरभास्करतनयकाश्यपगोत्रसौराष्ट्रदेशेश्वरकज्जलनिभांगकांतेचतुर्भुजचापतूणीरकृपाणाभयांकितनीलांबरमाल्यानुलेपननीलरक्तभूषणालंकृतसर्वांगसमस्तभुवनभीषणामर्षमूर्तेनमस्तेसन्नद्धनीलध्वजपताकोपशोभितेननीलगृध्ररथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छप्रजापतियमाभ्यांसहपद्मपश्चिमदलमध्येकालायसप्रतिमांप्रत्यङ्मुखींचापाकारपीठेऽधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूःशनैश्चराधिदेवंप्रजापतिमावाहयामि ॐ भुवःशनैश्चराधिदेवंप्रजापतिमावा० ॐ स्वःशनैश्चराधिदेवंप्रजापतिमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वःशनैश्चराधिदेवंप्रजापतिमावा० प्रजापतेनत्वदित्यस्यहिरण्यगर्भऋषिःप्रजापतिर्देवतात्रिष्टुप्छंदःआवाहनेवि० ॐ प्रजापतेनत्व० इमंमंत्रंसमुच्चार्य यज्ञोपवीतिनंहंसस्थमेकवक्रमक्षमालास्रुवपुस्तककमंडलुसहितचतुर्भुजंशनैश्चराधिदेवंप्रजापतिमावाह० । तद्वामपार्श्वे ॐ भूःशनैश्चरप्रत्यधिदेवंयममावाह० ॐ भुवःशनैश्चरप्रत्यधिदेवंयममावाह० ॐ स्वःशनैश्चरप्रत्यधिदेवंयममावाह० ॐ भूर्भुवःस्वःशनैश्चरप्रत्यधिदेवंयममावाहयामि यमायसोमंसुनुतेत्यस्ययमऋषिः यमोदेवताअनुष्टुप्छंदःआवाहने० ॐ यमायसोमंसुनुत० इमंमंत्रमुच्चार्य ईषत्पीनंदंडहस्तंरक्तसदृशंपाशधरंकृष्णवर्णमहिषारूढंसर्वाभरणभूषितंशनैश्चरप्रत्यधिदेवंयम

मावाह० प्रत्यग्दक्षिणदलाग्रे ॐ भूराहुमावाह० ॐ भुवोराहुमावा० ॐ स्वाराहुमावा० ॐ भूर्भुवःस्वाराहुमावा० कयानश्चित्रइत्यस्यवामदेवऋषिःराहुर्देवतागायत्रीछंदःआवाहनेवि० ॐ कयानश्चित्रआभु० इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्राहोरविसोममर्दनासिंहिकानंदनपैठीनसगोत्रबर्वरदेशेश्वरकालमेघद्युतेव्याघ्रवदनचतुर्भुजखङ्गचर्मशूलवरदानांकितकृष्णांबरमाल्यानुलेपनगोमेदकाभरणभूषितसर्वांगशौर्यनिधेनमस्तेसन्नद्धकृष्णध्वजपताकोपशोभितेनकृष्णसिंहरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छसर्पकालाभ्यांसहपद्मनैर्ऋतदलमध्येसीसकप्रतिमांदक्षिणामुखींशूर्पाकारपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामावाहयामि । तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूराह्वधिदेवान्सर्पानावाह० ॐ भुवोराह्वधिदेवान्सर्पानावा० ॐ स्वाराह्वधिदेवान्सर्पानावाह० ॐ भूर्भुवःस्वाराह्वधिदेवान्सर्पानावाहयामि आयंगौरित्यस्यसार्पराज्ञीऋषिः सर्पादेवताःगायत्रीच्छंदः आवाहने० ॐ आयंगौःपृश्नि० इमंमंत्रंसमुच्चार्य अक्षसूत्रधरान्कुंडिकाकारपुच्छयुक्तानेकभोगान्राह्वधिदेवान्सर्पानावाहयामि । तद्वामपार्श्वे ॐ भूराहुप्रत्यधिदेवंकालमावा० ॐ भुवोराहुप्रत्यधिदेवंकालमावा० ॐ स्वाराहुप्रत्यधिदेवंकालमावाहयामि ॐ भूर्भुवःस्वाराहुप्रत्यधिदेवंकालमावा० परंमृत्योइत्यस्यसंकुसुकऋषिः मृत्युर्देवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहने० ॐ परंमृत्योअनुपरे० इमंमंत्रंसमुच्चार्य करालवदनंनित्यगंभीषणंपाशदंडधरंसर्पवृश्चिकरोमाणंराहुप्रत्यधिदेवंकालमावाहयामि । प्रत्यगुत्तरदले ॐ भूःकेतुमावाहयामि ॐ भुवःकेतुमावा० ॐ स्वःकेतुमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःकेतुमावाहया० केतुंकृण्वन्नित्यस्य मधुच्छंदाऋषिः केतुर्देवतागायत्रीछंदः आवाहने० ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे० इमंमंत्रंसमुच्चार्य भगवन्केतोकामरूपजैमि

निगोत्रमध्यदेशेश्वरधूम्रवर्णध्वजाकृतेद्विभुजगदावरदानांकितचित्रांबरमाल्यानुलेपनवैडूर्यमयाभरणभूषितसर्वांगचित्रशक्तेनमस्तेसन्नद्धचित्रध्वजपताकोपशोभितेनचित्रकपोतरथवाहनेनमेरुंप्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यांसहपद्मवायव्यदलमध्येकांस्यप्रतिमांदक्षिणामुखींध्वजाकारपीठेधितिष्ठपूजार्थंत्वामावा०। तद्दक्षिणपार्श्वे ॐ भूःकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ॐ भुवःकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ॐ स्वःकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावा० ब्रह्मजज्ञानमित्यस्यनकुलऋषिः ब्रह्मादेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहनेवि० ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमं० इमंमंत्रंसमुच्चार्य पद्मासनस्थंजटिलंचतुर्मुखमक्षमालास्रुवपुस्तककमंडलुधरंकृष्णाजिनवाससंपार्श्वस्थितहंसंकेत्वधिदेवंब्रह्माणमावाह०। तद्वामपार्श्वे ॐ भूःकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावा० ॐ भुवःकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावाह० ॐ स्वःकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावाह० सचित्रचित्रमित्यस्यभरद्वाजऋषिःचित्रगुप्तोदेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहनेवि० ॐ सचित्रचित्रंचितयंत० इमंमंत्रंसमुच्चार्य उदीच्यवेषधरंसौम्यदर्शनंलेखनीपत्रोपेतद्विभुजंकेतुप्रत्यधिदेवंचित्रगुप्तमावा० ९ ॥ अथकर्मसाद्गुण्यकरदेवतावाहनंशुक्लतंडुलपीठेषुकुर्यात्। तत्राऽयंक्रमः शनेर्वामप्रदेशे ॐ भूर्विनायकमावा० ॐ भुवोविनायकमावा० ॐ स्वर्विनायकमा० ॐ भूर्भुवःस्वर्विनायकमावा० आतूनइंद्रेत्यस्यकाण्वःकुसीदऋषिःविनायकोदेवतागायत्रीछंदः आवाहने० ॐ आतूनइंद्रक्षुमंतं० इमंमंत्रंसमुच्चार्य चतुर्भुजंत्रिनेत्रंगजाननंनागयज्ञोपवीतिनंचंद्रधरंदंताक्षमालापरशुमोदकोपेतचतुर्भुजंविनायकमावा० १। तद्दक्षिणतः ॐ भूर्दुर्गामावाहयामि ॐ भुवोदुर्गामा०

ॐ स्वर्दुर्गामावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्दुर्गामावा० जातवेदसइत्यस्यकश्यपऋषिःदुर्गादेवतात्रिष्टुप्छंदः आवाहनेविनि० ॐ जातवेदसेसुनवाम० इमंमंत्रंसमुच्चार्य । शक्तिबाणशूलखड्गचक्रचंद्रबिंबखेटकपालपरशुटंकोपेतदशभुजांसिंहारूढांदुर्गाख्यदैत्यासुहारिणींदुर्गामावा० २ । तद्दक्षिणतः ॐ भूःक्षेत्रपालमावाह० ॐ भुवःक्षेत्रपालमावाह० ॐ स्वःक्षेत्रपालमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वःक्षेत्रपालमावा० क्षेत्रस्यपतिनेत्यस्यवामदेवऋषिः क्षेत्रपतिर्देवताऽनुष्टुप्छंदः आवाहनेवि० ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयं० इमंमंत्रमुच्चार्य श्यामवर्णंत्रिलोचनमूर्ध्वकेशंसुदंष्ट्रंकुभ्रुटीकुटिलाननंनूपुरालंकृतांघ्रिंसर्पमेखलयायुतसर्वांगमतिवृद्धंक्षुद्रघंटावबद्धंगुल्फावलंबिनृकरोटिमालाधारिणमुरगकौपीनंचंद्रमौलिंदक्षिणहस्तैःशूलवेतालखड्गदुंदुभीन्दधानंवामहस्तैःकपालघंटाचर्मचापान्दधानंभीमंदिग्वाससममितद्युतिंक्षेत्रपालमावाहयामि ३ । तद्दक्षिणतः ॐ भूर्वायुमावाह० ॐ भुवोवायुमा० ॐ स्वर्वायुमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्वायुमावा० क्राणाशिशुरित्यस्यत्रितऋषिः वायुर्देवतोष्णिक्छंदः आवाहने० ॐ क्राणाशिशुर्महीनां० इमंमंत्रंसमुच्चार्य धावद्धरिणपृष्ठगतंध्वजवरदानधारिणंधूम्रवर्णंवायुमावाह० ४ । तद्दक्षिणतः ॐ भूराकाशमावाह० ॐ भुवआकाशमावा० ॐ स्वराकाशमावा० ॐ भूर्भुवःस्वराकाशमावा० आदित्प्रत्नस्येत्यस्यवत्सऋषिः अंतरिक्षंदेवतागायत्रीछंदः आवाहनेवि० ॐ आदित्प्रत्नस्यरे० इमंमंत्रंसमुच्चार्य नीलोत्पलाभंनीलांबरधारिणंचंद्रार्कोपेतद्विभुजंषंढमाकाशमावाह० ५ । तद्दक्षिणतः ॐ भूरश्विनावावाह० ॐ भुवोश्विनावावाह० ॐ स्वरश्विनावावाह० ॐ भूर्भुवःस्वरश्विनावावाह० अश्विनावर्तिरस्मदेत्यस्यराहूगणोगोतमऋषिः अश्विनौदेवतेउष्णि

क्छंदः आवाहनेवि० ॐ अश्विनावर्तिरस्मदा० इमंमंत्रंसमुच्चार्य । प्रत्येकंओषधिपुस्तकोपेतदक्षिणवामहस्तावन्योन्यसंयुक्तदेहौएकस्यदक्षिणपार्श्वेअपरस्यवामपार्श्वेरत्नभांडकरशुक्लांबरधारिनारीयुग्मोपेतौदेवौभिषजावश्विनावावाहयामि ६ । अथक्रतुसंरक्षकेंद्रादिलोकपालावाहनंपूर्ववत्तंडुलपीठेषुकुर्यात् । तत्रायंक्रमः । तत्रप्राग्दलाग्रे० ॐभूरिंद्रमावाह० ॐभुवइंद्रमावा० ॐ स्वरिंद्रमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरिंद्रमावा० इंद्रंवइत्यस्यमधुच्छंदाऋषिः इंद्रोदेवता गायत्रीछंदः आवाहने० ॐ इंद्रंवोविश्वत० इमंमंत्रंसमु० स्वर्णवर्णंसहस्राक्षंवज्रपाणिंशचीप्रियमिंद्रमावाह० १ । आग्नेयदलाग्रे ॐ भूरग्निमावाह० ॐ भुवोग्निमावाह० ॐ स्वरग्निमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वरग्निमावाह० अग्निमीळइत्यस्यमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री आवाहने० । ॐ अग्निमीळे० इमंमंत्रंसमुच्चार्य रक्तवर्णंसप्तार्चिषंसप्तहस्तंशक्त्यन्नस्रुक्स्रुवतोमरव्यजनघृतपात्राणिदधानंस्वाहाप्रियंमेषवाहनमग्निमावाहयामि २ । याम्यदलाग्रे ॐ भूर्यममावाह० ॐ भुवोयममावा० ॐ स्वर्यममावाह० ॐ भूर्भुवःस्वर्यममावा० यमायसोममित्यस्ययमोयमोनुष्टुप् आवाहनेवि० ॐ यमायसोमंसुनुत० इमंमंत्रंसमुच्चार्य रक्तवर्णंदंडधरंमहिषवाहनमिलाप्रियंयममावा० ३ । नैर्ऋतदलाग्रे ॐ भूर्निर्ऋतिमा० ॐ भुवोनिर्ऋतिमावा० ॐ स्वर्निर्ऋतिमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्निर्ऋतिमावा० मोषुणइत्यस्यघौरःकण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री आवाहने० ॐ मोषुणःपरापरा० इमंमंत्रंसमुच्चार्य नीलवर्णंखड्गचर्मधरंऊर्ध्वकेशंनरवाहनंकालिकाप्रियंनिर्ऋतिमावाहयामि ४ । पश्चिमदलाग्रे ॐ भूर्वरुणमावाह० ॐ भुवोवरुणमावा० ॐ स्वर्वरुणमावा० ॐ भूर्भुवःस्वर्वरुणमावा० उदुत्तमंमुमुग्धिनइत्यस्यशुनःशेपऋषिः वरुणोदेवतागा

यत्रीछंदः आवाहने० ॐ उदुत्तमंमुमुग्धिनो० इमंमंत्रंसमुच्चार्य रक्तभूषणंनागपाशधरंमकरवाहनंपद्मिनीप्रियंसुवर्णवर्णं वरुणमावा० ५। वायव्यदलाग्रे ॐ भूर्वायुमावा० ॐ भुवोवायुमावा० ॐ स्वर्वायुमावाह० ॐ भूर्भुवःस्वर्वायुमावा० तववायोइत्यस्यांगिरसोव्यश्वऋषिः वायुर्देवतागायत्रीछंदः आवाहने० ॐ तववायवृत० इमंमंत्रंमुच्चार्य श्यामवर्णहेमदंडधरंकृष्णमृगवाहनंजगत्प्राणरूपंमोहिनीप्रियंवायुमावाहयामि ६ । उत्तरदलाग्रे ॐ भूःकुबेरमावाह० ॐ भुवःकुबेरमावा० ॐ स्वःकुबेरमावा० ॐ भूर्भुवःस्वःकुबेरमावा० त्वंनःसोमइत्यस्यगोतमोराहूगणःसोमोगायत्री कुबेरावाह० ॐ त्वंनःसोमविश्वतो० इमंमंत्रंसमुच्चार्य स्वर्णवर्णनिधीश्वरंकुंतपाणिमश्ववाहनंचित्रिणीप्रियंकुबेरमावाह० ७। ऐशानदलाग्रे ॐ भूरीशानमावा० ॐ भुवईशानमावा० ॐ स्वरीशानमावा० ॐ भूर्भुवःस्वरीशानमावाहया० कद्रुद्रायेत्यस्यकण्वऋषिः रुद्रोदेवतागायत्रीछंदः आवाहने० ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसे० इमंमंत्रंसमुच्चार्य शुद्धस्फटिकवर्णवरदाभयशूलाक्षसूत्रधरंवृषवाहनंगौरीप्रियमीशानमावाह० ८। एवमेकचत्वारिंशद्देवताआवाह्यकलशेचवरुणमावाह्यपूजयेत्। तत्रचंदनादिषुग्रहभेदेनव्यवस्थाविधिःपरिशिष्टे—रक्तचंदनो मलयजो देवदारुः कुंकुमो मनःशिला शंखपिष्टं तिलपिष्टं केतकीरजः कस्तूरिकेतिनवानुलेपनानि मलयजमेववा। रक्तपद्मं कुमुदं रक्तकरवीरं पाटलं चंपकं कुंदामिंदीवरं कृष्णधत्तूरं तच्चित्रवर्णमिति नवपुष्पाणि मल्लिकैववा। पुष्पवर्णाःअक्षताः अहतवस्त्रयुग्मानिच। कंदरसो मयूरशिखा दशांगः सर्जरसो बिल्वफलं श्रीवासः कृष्णागरुः जटामांसी मधूकमितिनवधूपाः गुग्गुलुरेकएववा । सर्पिषादीपस्तिलतैलेनवा। हवि

ष्यान्नं पायसं पललान्नं गुडान्नं क्षीरोदनः दध्योदनः कृसरः मांसान्नं चित्रान्नमिति नवोपहारास्त्रिवृदन्नमेकमेववा । माणिक्यं मौक्तिकं प्रवालं मरकतं पुष्परागः वज्रो नीलः गोमेदकं वैडूर्यमितिनवरत्नान्येकमेववामाणिक्यमिति । पूजायांविशेषांतरमपितत्रैवोक्तं पुष्पांजलिप्रयोगेणावाहनमंत्रैरावाह्यनमोंतैर्नामभिःक्रमेणधूपदीपांतानुपचारानर्पयेदिति । नामभिः ॐआदित्यायनमःइत्येवंरूपैः । क्रमेणेति आसनपाद्यार्घादीनांप्रसिद्धक्रमेणैवार्पणंकार्यमित्युच्यते । तेनपुष्पानंतरंपठितानामप्यक्षतवस्त्राणांस्वकालएवार्पणंबोध्यम् । दीपांतानित्यतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिः । पुष्पांतानितियावत् । प्राक्स्विष्टकृतोग्रहाणांघंटादिशब्दैर्धूपदीपैरुपहारानुपहृत्येतिहोमोत्तरंपरिशिष्टोक्तेः पारिजातादिप्रयोगेषुहोमात्पूर्वंग्रहाणांपूर्वोक्तद्रव्यैःपुष्पसमर्पणपर्यंतंपूजांकृत्वाऽन्यदेवतामलयजगंधशतपत्रपुष्पैस्तथैवपूजयेदित्युक्तेः होमोत्तरंचसर्वदेवतानां धूपदीपप्रभृतिपूजायाएवोपदेशात् । अतोहोमात्पूर्वोत्तरकालयोर्व्यवस्थयाविततापूजाकार्या । तत्रपूर्वकालेगंधपुष्पेषुयथोपदेशेशक्तंप्रतिद्रव्यव्यवस्था । अशक्तंप्रत्येकोपदेशः । उत्तरपूजायांनैवेद्येषुसपुष्परत्ननिवेदनेषुचतथैवोपदेशइतिबोध्यम् । उत्तरपूजावसरएवरत्नासंभवेसुवर्णपुष्पाणिदद्यादित्यप्युक्तंपरिशिष्टे । एवंग्रहपीठगतसर्वदेवतानांपुष्पांतपूजांकृत्वास्थंडिलेकुंडेवाचार्योऽग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् । तत्रपरिशिष्टम्—अथाग्निमुपसमाधायसहर्त्विग्भिःसमिच्चर्वाज्यानिप्रत्येकंशतैकावराभिःसहस्रपराभिराहुतिभिर्निमित्तशक्त्यपेक्षयाजुहुयात् प्रधानदशांशेनपार्श्वदेवतयोस्तदर्धेनेतरेषांस्वाहांतैर्नामभिर्होमस्तल्लिंगमंत्रैर्वा सकृदवदानेनचरुहोमःपाणिनाप्रसृतिमितान्व्रीहींस्तिलांश्चव्याहृतिभिर्हुत्वेति । सयदिमंत्रैरिष्टस्तदैते

मंत्राभवंत्याकृष्णेनेत्यादि । चर्वाहुतिप्रमाणंसिद्धांतशेखरे—अन्नंग्रासससमंग्राह्यमिति । हेमाद्रौस्कांदे—अष्टोत्तरसहस्रंवाशतमष्टोत्तरंतथा । अष्टाविंशतिमष्टौवाएकैकस्यतुहोमयेत् । नैवेद्यशेषेहुत्वाचहोममंत्रैस्ततःपरम् । अथव्याहृतिभिर्हुत्वाएकैकस्ययथाक्रममिति । पचनाग्नौपक्वमन्नंगुडादिमिश्रंकृत्वाकिंचित्किंचित्सूर्यादिभ्योनिवेद्यतच्छेषंमंत्रैर्जुहुयादित्यर्थः । एतद्बह्वृचान्यविषयं । बह्वृचानांतुपरिशिष्टेहोमानंतरमेवनैवेद्यसमर्पणस्योक्तत्वात्तथैवानुष्ठानंयुक्तमितिपारिजातः । अनेनाहुतिसंख्यादावपिपरिशिष्टोक्तपक्षस्यैवबह्वृचैरादरःकार्यइत्युक्तंभवति । यद्यप्याश्वलायनेन—अष्टोत्तरशतंहोममष्टाविंशतिमेववा । कुंडेवास्थंडिलेवैकःकुर्यात्कुर्वन्पृथक्पृथगितिस्मृतिरूपेणोक्तं तत्रैकःकुर्वन्कुर्यादित्येकाचार्यपक्षेनियमपरम् । प्रधानहोमानंतरंहोमांतरमाहपारिजातेभगवान्—अथस्रुवेणजुहुयात्सूर्यपावकरुद्रकान् । सूर्योनोपंचकंसूक्तमुदुत्यंजातवेदसम् । नमोमित्रस्यवरुणस्यचित्रंदेवानामित्यपि । उद्घेतिसुभगःपंचर्चाभिर्ऋग्भिर्घृताहुतीः । त्वमग्नेप्रथमंसूक्तमित्यष्टादशकर्चकम् । त्वमग्नेद्युभिःषोडशभिर्घृतेनजुहुयात्ततः । अथरुद्रायजुहुयात्कद्रुद्रायषळाहुतीः । इमारुद्रायचतथासूक्तेनचततःपरम् । आतेपितर्मरुतामितिसूक्तेनचघृताहुतीरिति । आश्वलायनः—पूर्णाहुतिंचवस्त्वंतेहोमेग्रहमखेगुरुरिति । वस्त्वंतेहोमांतेइतिव्याख्यातंपारिजाते । अतःप्रायश्चित्तहोमांतेपूर्णपात्रनिनयनात्प्राक्पूर्णाहुतिःकार्येत्यर्थः । पूर्णाहुत्यनंतरंप्रणीतानिनयनाद्यग्न्यर्चनांतंकृत्वाभिषेकः । होमंसमापयेदितिप्रकृत्याऽथयजमानाभिषेकइतिपरिशिष्टात् । एवंप्रकृत्यतद्विधिरुक्तस्तत्रैव—ग्रहवेदेःप्रागुदीच्यांशुचौदेशेसंमृष्टालंकृतेप्राक्प्रवणेचतुष्पादंदीर्घचतुरस्रंसोत्तरच्छदंपीठंनिधायत

त्रोदगग्रानमूलान्हरितदर्भानास्तीर्य प्राङ्मुखंकर्तारंसामात्यमुपवेश्याचार्यःसहर्त्विग्भिरभिषेककुंभमादायप्रत्यङ्मुखस्तिष्ठन्नौदुंबर्यार्द्रयाशाखयासपलाशयासहिरण्यपवित्रयासकुशदूर्वापल्लवयांतर्धायकुंभोदकपृषद्भिरभिषेचयेत् अब्लिंगाभिर्वारुणीभिरन्याभिःशांतिपवित्रलिंगाभिर्ग्रहाभिषेकमंत्रैःसुरास्त्वामित्यादिमंत्रैः श्रीसूक्तेनेमाआपःशिवतमाइतितृचेन देवस्यत्वेतिचयजुषाभूर्भुवःस्वरितिचव्याहृतिभिरेवमभिषिक्तस्तेभ्योग्रहोक्तांदक्षिणांदद्यात् गौःशंखोरक्तोनड्वान्हिरण्यं पीतंवासःश्वेतोऽश्वःकृष्णागौःकालायसंहस्तीछागोवेतिपुनर्हिरण्येनसंमितांकुर्यादभावेसर्वेषांहिरण्यमेववातुष्टिकरंदद्यात् द्विगुणमाचार्याय त्रिवृतान्नेनब्राह्मणान्भोजयित्वाशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वितिवाचयेत् ज्ञातिसंबंधिबांधवांश्चतोषयेदेष ग्रहयज्ञःसर्वारिष्टशमनःसर्वपुष्टिकरःसर्वाभीष्टप्रदइति । त्रिवृतान्नेनेतिस्थानेघृतान्नेनेतिक्वचित्पाठः । अभिषेकादौविशेषःपारिजातेवसिष्ठः—स्वस्तिकंकल्पयेत्पश्चात्कुंडस्यैशानदेशतः । यजमानाभिषेकार्थंतत्रभद्रासनंन्यसेत् । प्राङ्मुखस्योपविष्टस्ययजमानस्यतत्रच । अभिषेकंततःकुर्यादाचार्योब्राह्मणैःसह । वक्ष्यमाणैःस्वमंत्रैश्चअब्लिंगैर्वेदमंत्रकैः । स्वमंत्रैर्ग्रहमंत्रैः । कुंभोदकैःपुण्यतमैरुक्तद्रव्यसमन्वितैः । ततस्तस्याभिषिक्तस्यरक्षार्थंबलिमुत्क्षिपेत् । दिग्विदिक्षुचचित्रान्नैर्दीपैर्नीराजयेत्ततः । शुक्लमाल्यांबरधरःशुक्लगंधानुलेपनः । ततोमंडपमागत्यध्यायेदग्निंग्रहान्सुरान् । प्रत्येकंप्रतिमंत्रैश्चदद्यात्पुष्पांजलिंततइति । उद्वासनविधिःपारिजातेवामनीये—प्रणवंत्वादितःकृत्वाभूर्भुवःस्वस्ततःपरम् । चतुर्थ्यानामसंयुक्तंनमस्कारांतयोजितम् । अनेनावाहनंकुर्यादनेनैवविसर्जनम् । आचार्यप्रभृतिभ्यश्चग्रहार्चनफलंततः । समिदाज्य

चरूणाचतिलहोमफलंततः । ब्रह्मत्वेकुंभपूजायाचार्चनस्यफलंचयत् । लोकपालगणेशाद्यास्तत्रयाअंगदेवताः । तासांहोमफलंतद्वद्गृह्णीयाज्जलपूर्वकम् । आज्यंनिरीक्ष्यदत्त्वाचब्राह्मणान्भोजयेत्ततइति । ब्राह्मणभोजनेशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्थोक्तामात्स्ये—एकमेकाहुतेर्विप्रंहोमेत्वन्नेनभोजयेत् । अत्याढ्योमध्यमश्चापिविप्रमेकंशताहुतेः । सहस्रस्याहुतेर्वैकंजघन्योपिप्रभोजयेत् । अन्यथादहतिक्षिप्रंतद्राष्ट्रंनात्रसंशयः । अनन्नःप्राहरेद्राष्ट्रममंत्रश्चर्त्विजोगुरुम् । होमःकारयितारंचसुक्ततोपित्वदक्षिणः । तस्माद्दातुमशक्तोयोदक्षिणाश्चान्नमेवच । जपैःप्रणामैःस्तोत्रैश्चतोषयेत्तर्पयेद्ग्रहानिति ॥ ॥ अथान्वाधानादिप्रयोगः । ऋत्विग्भिरन्वारब्धःसमिद्द्वयमादायचक्षुषीआज्येनेत्यंते आदित्यंप्रत्येकंशतसंख्याभिरर्कसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अग्निंरुद्रंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । सोमंप्रत्येकंशतसंख्याभिःपलाशसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अपःगौरींच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । अंगारकंप्रत्येकंशतसंख्याभिःखदिरसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः पृथिवींस्कंदंचप्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । बुधंप्रत्येकंशतसंख्याभिरपामार्गसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः विष्णुंपुरुषंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । बृहस्पतिं प्रत्येकंशतसंख्याभिरश्वत्थसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः इंद्रंब्रह्माणंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । शुक्रं प्रत्येकंशतसंख्याभिरौदुंबरसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः इंद्राणीमिंद्रंचप्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । शनिं प्रत्येकंशतसंख्याभिःशमीसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रजापतिंयमंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । राहुं प्रत्येकंशतसंख्याभिर्दूर्वाचर्वाज्याहुतिभिः सर्पान्कालंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः । केतुं प्रत्येकंशतसंख्याभिःकुशस

मिच्चर्वाज्याहुतिभिः ब्रह्माणंचित्रगुप्तंच प्रत्येकंदशसंख्याभिस्तदाहुतिभिः ९ । विनायकंदुर्गांक्षेत्रपालंवायुमाकाशंअश्विनौइंद्रमग्निंयमंनिर्ऋतिंवरुणंवायुंकुबेरमीशानंच प्रत्येकंपंचसंख्याभिःपालाशसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः अग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचैकैकयाव्रीहितिलाहुत्या सूर्यंत्रयोदशवारमाज्येन अग्निंचतुस्त्रिंशद्वारं रुद्रंद्वात्रिंशद्वारमाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्यादि । पात्रासादनकालेबह्वीनांचरूद्वासनस्थालीनामाज्यस्थालीनांस्रुवाणांचबहूनामासादनंकार्यंयुगपदनेककर्तृकचर्वाज्यहोमनिर्वाहाय । कालेलोकसिद्धान्नतिलव्रीहिभिःसहाज्यस्यत्रिःपर्यग्निकरणम् । स्रुवाणांसंमार्गांतेदर्व्याःसंमार्गः । ततोऽन्नंपात्रांतरेपृथक्कृत्याग्नावधिश्रित्यस्रुवेणाभिघार्योदगुद्वास्याज्याद्दक्षिणतोव्यवहितदेशेबर्हिष्यासाद्यप्रत्यभिघार्यतदुत्तरतोव्रीहितिलानासाद्यर्त्विगन्वारब्धइध्माधानाद्याज्यभागांतंकुर्यात् । ततोयजमानस्त्यागंकुर्यात् । शतशतसंख्याअर्कादिजातीयाःसमिधःशतशतसंख्याहुतिपर्याप्तश्चरुःशतशतसंख्याहुतिपर्याप्तमाज्यंच आदित्यायसोमायांगारकायबुधायबृहस्पतयेशुक्रायशनैश्चरायराहवेकेतवेचनमम । दशदशसंख्याअर्कादिजातीयसमिधः दशदशसंख्याहुतिपर्याप्तश्चरुः दशदशसंख्याहुतिपर्याप्तमाज्यंच अग्नयेरुद्रायाद्भ्योगौर्यैपृथिव्यैस्कंदायविष्णवेपुरुषायेंद्रायब्रह्मणइंद्राण्याइंद्रायप्रजापतयेयमायसर्पेभ्यःकालायब्रह्मणेचित्रगुप्तायनमम । पंचपंचसंख्याःपलाशसमिधः पंचपंचसंख्याहुतिपर्याप्तश्चरुः पंचपंचसंख्याहुतिपर्याप्तमाज्यंचविनायकायदुर्गायैक्षेत्रपालायवायवेआकाशायाश्विभ्यां इंद्रायाग्नयेयमायनिर्ऋतयेवरुणायवायवेकुबेरायेशानाय । एकैकाहुतिपर्याप्तास्तिलव्रीहयोऽग्नयेवायवेसूर्यायप्रजापतयेच । त्रयोदशाहुतिपर्याप्तमाज्यंसूर्याय । चतुस्त्रिंश

दाहुतिपर्याप्तमाज्यमग्नये। द्वात्रिंशदाहुतिपर्याप्तमाज्यंरुद्रायेति । ततोऽष्टर्त्विक्सहिताचार्यपक्षेआचार्यआदित्यायजुहुयादितरइतरग्रहेभ्यः । ऋत्विक्चतुष्टयपक्षेद्वाभ्यांद्वाभ्यांग्रहाभ्यामेकैकोजुहुयात् । तत्रद्व्यंगुलादूर्ध्वंमध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागेसमिधमादायदधिमध्वक्तांजुहुयात्। पाणिनाग्राससमंचरुं । आज्यंस्रुवेणतदभावेऽश्वत्थादियज्ञियपर्णेन । सर्वेप्राङ्मुखाउदङ्मुखावाहृदयनिहितोर्ध्ववामपाणयोजुहुयुः । आचार्यःप्रभूततिलव्रीहीन्व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वाज्यहोमंकुर्यात् । सूर्योनइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यसूर्यपुत्रश्चक्षुःसूर्योगायत्रीग्रहमखांगाज्यहोमेविनियोगः । उदुत्यमित्यस्यकाण्वःप्रस्कण्वःसूर्योगायत्री। नमोमित्रस्येत्यस्यसूर्यपुत्रोभितपाःसूर्योजगती। चित्रंदेवानामित्यस्यांगिरसःकुत्सःसूर्यस्त्रिष्टुप् । उद्वेतिसुभगइतिपंचर्चस्यसूक्तस्यमैत्रावरुणोवसिष्ठःसूर्यस्त्रिष्टुप् । त्वमग्नेप्रथमइत्यष्टादशर्चस्यसूक्तस्यांगिरसोहिरण्यस्तूपोग्निर्जगतीअंत्याष्टमीषोडश्यस्त्रिष्टुभः । त्वमग्नेद्युभिरित्यस्यषोळशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोग्निर्जगती । कद्रुद्रायेतिनवर्चस्यसूक्तस्यघौरःकण्वोरुद्रोगायत्री । इमारुद्रायतवसइत्येकादशर्चस्यसूक्तस्यकुत्सोरुद्रोजगत्यंत्येत्रिष्टुभौ । आतेपितरितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यगृत्समदोरुद्रस्त्रिष्टुप् । एवमेकोनाशीतिमंत्रैःस्वाहांतैस्तावतीराहुतीर्हुत्वा ग्रहवेदिस्थदेवताभ्योवरुणायचघंटाशब्देनधूपदीपनैवेद्यतांबूलादीन्पुष्पांजल्यंतानुपचारान्समर्पयेत्। धूपदीपनैवेद्येषुपूर्वोक्तव्यवस्थाविधिस्तदसंभवेतूक्तसाधारणविधिःस्वीकार्यः । तत्रसूर्यायभद्रमुस्ताख्यकंदधूपः सोमायमयूरशिखा भौमायदशांगः बुधायरालाख्यःसर्जरसः गुरवेबिल्वफलं शुक्रायबिडाख्यःश्रीवासः शिष्टत्रिभ्यःक्रमेणकृष्णागरुजटामांसीमधूकानीतिधूपाः । दीपःसर्पिषातिलतैलेनवासर्वेषां

षाष्टिकमादित्याय सोमायपायसं भौमायपयोमिश्रितौदनः बुधायगुडमिश्रितः क्षीरमोदनंचपृथग्गुरवे भृगवेदध्योदनः शनयेकृसरः मांसस्थानीयमाषविकारमिश्रितौदनोराहवे चित्रान्नंकेतवे इतिनैवेद्यानि। माणिक्यप्रभृतिरत्नानिसपुष्पाणि पुष्पांजलिरूपेणदद्यात् माणिक्यान्येववा तावंतिसुवर्णपुष्पाणिवा। प्रसीदंतुभवंतइतितान्संप्रार्थ्यऋत्विगन्वारब्धश्चर्वाज्यतिलव्रीहिशेषेणस्विष्टकृतंहुत्वाप्रायश्चित्तहोमांतंकुर्यात्। ततःसामात्ययजमानान्वारब्धआचार्योद्वादशगृहीतेनाज्येन पूर्णाहुतिंजुहुयात्। ततःपूर्णपात्रंनिनीयसंस्थाजपेनोपस्थायपरिस्तरणविसर्जनाद्यग्न्यर्चनांतंकुर्यात्। अथग्रहवेदेःप्रागुदीच्यांशुचौसंमृष्टेरंगवल्ल्यास्वस्तिकालंकृतेप्राक्प्रवणेचतुष्पदंदीर्घचतुरस्रंसोत्तरच्छदंपीठंनिधाय तत्रोदगग्रानमूलान्हरितदर्भानास्तीर्यतत्रप्राङ्मुखंसामात्यंयजमानंपरिहितनववस्त्रमभिषिंचेत्। आपोहिष्ठेतितिसृणामांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री अभिषेकेवि० तत्त्वायामीतितिसृणांशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् अभिषेके० स्वादिष्ठयेतितिसृणांमधुच्छंदाःपवमानःसोमोगायत्री अभिषेके० शंनइंद्राग्नीइतितिसृणांवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् अभिषेके० पवित्रंतइतितिसृणामांगिरसःपवित्रःपवमानः सोमोजगती अभि०। अथग्रहमंत्रैः। ग्रहाणामादिरादित्योलोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतांपीडांहरतुतेरविः। रोहिणीशःसुधामूर्तिःसुधागात्रःसुधाशनः। विषमस्थानसंभूतांपीडांहरतुतेविधुः। भूमिपुत्रोमहातेजाजगतांभयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ताचपीडांहरतुतेकुजः। उत्पातरूपोजगतांचंद्रपुत्रोमहाद्युतिः। सूर्यप्रियकरोविद्वान्पीडांहरतुतेबुधः। देवमंत्रीविशालाक्षःसदालोकहितेरतः। अनेकशिष्यसंयुक्तःपीडांहरतुतेगुरुः। दैत्यमंत्रीगुरुस्तेषांप्राणदश्चमहामतिः। प्रभु

स्ताराग्रहाणांचपीडांहरतुतेभृगुः।सूर्यपुत्रोदीर्घदेहोविशालाक्षःशिवप्रियः।मंदचारःप्रसन्नात्मापीडांहरतुतेशनिः। महाशिरामहावक्त्रोदीर्घदंष्ट्रोमहाबलः।अतनुश्चोर्ध्वकेशश्चपीडांहरतुतेतमः। अनेकरूपवर्णैर्यःशतशोथसहस्रशः। उत्पातरूपो जगतांपीडांहरतुतेशिखी। सुरास्त्वामभिषिंचंत्वित्यादिपौराणमंत्रैश्चप्रतिमंत्रमभिषिच्य । हिरण्यवर्णामितिपंचदशर्चस्यसूक्तस्यानंदादयऋषयःश्रीर्देवताअनुष्टुबादीनिच्छंदांसीतिप्रत्यृचमभिषिच्यइमाआपःशिवतमाइतितृचेनदेवस्यत्वेतियजुषाभूर्भुवःस्वरितिव्याहृतिभिश्चाभिषिंचेत् । ततोऽभिषेकशालायामेवाभिषिक्तयजमानस्यपूर्वादिदिक्षुविदिक्षुचचित्रान्नैराचार्योदिग्देवताभ्योबलिमुत्क्षिपेत् इंद्रायनमःअग्नयेनमःयमायनमइत्यादिनाममंत्रैः। ततोयजमानस्यसुवासिनीभिर्दीपैर्नीराजनंकारयेत् । ततोयजमानोऽभिषेकवस्त्रमाचार्यायदत्वाश्वेतांबरेधृत्वाश्वेतचंदनश्वेतपुष्पाणिचधृत्वाभिषेकशालातोग्निसमीपमागत्याऽग्नेर्ग्रहपीठदेवतानांचपंचोपचारपूजांतेऽग्निंग्रहांस्तदुपदेवताश्चध्यात्वा । अग्नयेनमःआदित्यायनमइतिमंत्रैःप्रणवादिभिःप्रत्येकंपुष्पांजलिमर्पयेत्। ततआचार्योदेवतोद्वासनंकुर्यात् ॐ भूर्भुवःस्वःआदित्यायनमःआदित्यमुद्वासयामीति । एवंसोमादीनामुद्वासनवाक्यमूह्यम्। ततोब्राह्मणेभ्योजपहोमफलंगृहीत्वाचार्यादिभ्योदक्षिणांदद्यात्। सूर्यप्रीत्यर्थमाचार्यायगां अथर्त्विग्भ्यःसोमप्रीत्यर्थंशंखं अंगारकप्रीत्यर्थंरक्तमनड्वाहं बुधप्रीत्यर्थंसुवर्णं बृहस्पतिप्रीत्यर्थं पीतंवासः शुक्रप्रीत्यर्थंश्वेतमश्वं शनिप्रीत्यर्थंकृष्णांगां राहुप्रीत्यर्थंकालायसं केतुप्रीत्यर्थंहस्तिनंछागंवेति तत्तद्धोमकर्त्रेऽव्यवस्थयातांतांदक्षिणांदद्यात् । तत्रमंत्राः—कपिलेसर्वदेवानांपूजनीयासिसर्वदा । सर्वदेवमयीयस्मादतःशांतिंप्रय

च्छमे । त्वंपुरासागरोत्पन्नोविष्णुनाविधृतःकरे । पांचजन्यप्रदास्यामिह्यतःशांतिंप्रयच्छमे । धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारकः । अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन । हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेम० । पीतवस्त्रयुगंयस्माद्वासुदेवस्यवल्लभम् । प्रदानात्तस्यभोविष्णोरतःशांतिंप्रयच्छमे । विष्णुस्त्वमश्वरूपेणयस्मादमृतसंभवः । चंद्रार्कवाहनोनित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे येनत्वंपृथिवीसर्वाधेनोवैकृष्णसन्निभे । सर्वपापहरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे । यस्मादायसकार्याणित्वदधीनानिसर्वदा। लांगलाद्यायुधादीनितस्माच्छांतिंप्रयच्छमे । यस्मात्त्वंछागयज्ञानामंगत्वेनव्यवस्थितः । यानंविभावसोर्नित्यमतःशांतिंप्रयच्छमइति । एषामर्थानांविषममूल्यकत्वेपिन्यूनलाभवद्भ्यःसुवर्णदानेनलाभसाम्यंसंपादनीयम् । उक्तदक्षिणानामभावेसर्वेभ्यस्तुष्टिकरंहिरण्यमेववादद्यात् । अतोनात्रमूल्याध्यायोक्तमूल्यदानम् । सर्वस्मिन्पक्षेआचार्यायद्विगुणंदद्यात् । कांस्यपात्रगतमाज्यमवेक्ष्यसदक्षिणंब्राह्मणायदत्वा यावत्यःप्रधानाहुतयस्तावतोब्राह्मणान्भोजयेत् यावंतितदाहुतिशतानितावतोवा यावंतितत्सहस्राणितावतोवा । भुक्तवद्भ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वाप्रार्थयेत् शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्विविति भवंतोब्रुवंत्विति । तेचवदेयुःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्विवति । ततोऽच्युतानंतगोविंदेतिनामत्रयंजपेदिति पारिजाते । ततोज्ञातिसंबंधिबांधवानांभोजनवस्त्रादिदानेनतोषंसंपाद्येश्वरार्पणंकृत्वाभुंजीतेति ।—परिशिष्टोक्तमार्गेणग्रहयज्ञनिरूपणम् । अकार्यनंतदेवेनदेवेशस्तेनतुष्यतु । इतिसंस्कारकौस्तुभेनवग्रहमखः ॥ ॥ ॥ ॥

एतदसंभवेउपनयनकालेचबृहस्पतेरानुकूल्याभावेतच्छांतिःकार्या । उक्तेऽपिवर्षेनबलीगुरुश्चेच्छांत्याप्रशस्तंव्रतबंधकर्म

तिवृद्धवसिष्ठोक्तेः । तामाहशौनकः—कन्यकोद्वाहकालेतुआनुकूल्यंनविद्यते । ब्राह्मणस्योपनयनेगुरोर्विधिरुदाहृतः । सुवर्णेनगुरुंकृत्वापीतवस्त्रेणवेष्टयेत् । ईशान्यांधवलंकुंभंधान्योपरिनिधायच । दमनंमधुपुष्पाणिपत्रपालाशसर्षपान् । मांसीगुडूच्यपामार्गविडंगंशंखिनीवचा । सहदेवीविष्णुक्रांतासर्वौषधिशतावरीः । कुंभेनिक्षिपेदितिशेषः । कृत्वाज्यभागपर्यंतंस्वशाखोक्तविधानतः । ग्रहोक्तमंडलेऽभ्यर्च्यपीतपुष्पाक्षतादिभिः । देवपूजोत्तरेकालेततःकुंभानुमंत्रणम् । अश्वत्थसमिधश्चाज्यंपायसंसर्पिषायुतम् । यवव्रीहितिलाःसाज्यामंत्रेणैवबृहस्पतेः । अष्टोत्तरशतंसर्वंहोमशेषंसमापयेत् । पुत्रदारसमेतस्यअभिषेकंसमाचरेत् । कुंभाभिमंत्रणोक्तैश्चसमुद्रज्येष्ठामंत्रतः । प्रतिमाकुंभवस्त्रंचआचार्यायनिवेदयेत् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाच्छुभदःस्यान्नसंशयः । इतिबृहस्पतिशांतिः ॥ ॥ तथामदनरत्नेस्कांदेगुरुपूजोक्ता ।—कन्याविवाहकालेतुगुरोःशुद्धिर्नविद्यते । ब्राह्मणस्योपनयनेयस्यस्याद्दुःस्थितागतः । दुःस्थितंदुःस्थानमष्टमादिआगतोगुरुरितिशेषः । तदापूजागुरोःकार्याविधिवद्भक्तिभावितैः । मदंतीकामपुष्पाणिपत्रंपालाशसर्षपाः । मदंतीयूथिका । कामोदमनः । गुडूचीचाप्यपामार्गविडंगंशंखिनीवचा । सहदेवीविष्णुक्रांतासर्वौषध्यःशतावरी । (कुष्ठंमांसीहरिद्रेद्वेमुराशैलेयचंदनम् । वचाकचोरमुस्तंचसर्वौषध्यःप्रकीर्तिताः) । तथैवाश्वत्थभंगांश्चपंचगव्यंजलंतथा । नूतनंसोदकुंभंचपीतवस्त्रसमन्वितम् । पंचरत्नैःसमायुक्तमीशान्यांस्थाप्यचानलात् । अनलादनलदेशात् । याओषधीरितिमंत्रेणसर्वास्त्वस्मिन्विनिक्षिपेत् । कुंभस्योपरिभागेतुस्थापयित्वाबृहस्पतिम् । सुवर्णपात्रेसौवर्णींप्रतिमांतुयुधिष्ठिर । कारयेत्तुयथाशक्त्याविचशाठ्यविवर्जितः । पीतवस्त्र

युगच्छन्नांपीतयज्ञोपवीतिनीम् । पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैस्ततोहोमंसमाचरेत् । समिधोऽश्वत्थवृक्षस्यहोम्याअष्टोत्तरंशतम् । तिलव्रीहियवंमिश्रंहोतव्यंचयथाक्रमम् । अनेनग्रहमखदृष्टस्यसमिद्धोमानंतरंभाविनश्चर्वाज्यहोमस्यानंतरमागंतुरयंहोमःकार्यइतिज्ञाप्यते । बृहस्पतेतिमंत्रेणऋषिच्छंदःसमन्वितम् । ततोहोमावसानेतुपूजयेच्चबृहस्पतिम् । पीतगंधैस्तथापुष्पैर्धूपैर्दीपैश्चभक्तितः । दध्योदनंचनैवेद्यंफलतांबूलसंयुतम् । नमअंगिरसांनाथवाक्पतेथबृहस्पते । क्रूरग्रहैःपीडितानाममृतायनमोनमः । पूजयित्वासुराचार्यंपश्चादर्घ्यंनिवेदयेत् । गंभीरदृढरूपांगदेवेज्यसुमतेप्रभो । नमस्तेवाक्पतेशांतगृहाणार्घ्यंबृहस्पते । अर्घ्यंदत्वासुरेशायजपंहोमंसमर्पयेत् । भक्त्यायत्तेसुराचार्यहोमपूजादिसत्कृतम् । तत्त्वंगृहाणशांत्यर्थंबृहस्पतेनमोनमः । मंत्रेणानेनसंकल्प्यपश्चात्संप्रार्थयेन्नृप । जीवोबृहस्पतिःसूरिराचार्योगुरुरंगिराः । वाचस्पतिर्देवमंत्रीशुभंकुर्यात्सदामम । सर्वोपचारसंयुक्तांप्रतिमांतांयुधिष्ठिर । प्रणम्यचगवायुक्तामाचार्यायनिवेदयेत् । अथाचार्यस्तुनियतोवेदवेदांगपारगः । यजमानंसपत्नीकंशांतचित्तोजितेंद्रियः । कुंभोदकंगृहीत्वाथमंत्रैरेतैःप्रसिंचयेत् । इदमापोथमंत्रेणतामग्निमित्यृचातथा । याओषधीरश्वावतीःकूष्मांडैश्चाभिषेचयेत् । पश्चात्संभोजयेद्विप्रान्यथाशक्तियुधिष्ठिर । संक्रांतावपिकौंतेयतथास्वाभ्युदयेषुच । कुर्वन्बृहस्पतेःपूजामभीष्टफलमाप्नुयादिति । संक्रांतौगुरोः । इतिसंस्कारकौस्तुभेस्कांदोक्तागुरुपूजा ॥ अत्रचशौनकोक्तौस्कांदोक्तौचशाखाभेदेद्वादशकपालैकादशकपालादिभेदस्येवयूथिकासदसत्त्वादिप्रयुक्तेषद्वैलक्षण्यस्यापिकर्मभेदकत्वासंभवादुभयगतगुणोपसंहारेणकुंभानुमंत्रणादिसाधारणधर्माणांदीर्घचतुरस्रमं

डलाद्यसाधारणधर्माणांविनियोगवशेनापेक्षितानांग्रहमखात्स्वीकारेणतावद्भिरेवग्रहमेधीयवन्नैराकांक्ष्यसंभवेनाविनियुक्ततत्रत्यधर्मानादरेणप्रयोगंवदामः ।—अस्यकुमारस्योपनयनकालेबृहस्पत्यानुकूल्यसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंबृहस्पतिशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजनाद्याचार्यवरणांतंकुर्यात् । ततआचार्यःकर्षतदर्धादिपरिमितहेम्नायथाशक्तिनिर्मितप्रतिमायाअग्न्युत्तारणंकृत्वायदत्रसंस्थितंभूतमित्यादिदेशसंस्कारांतेहोमदेशस्यैशानदेशेमहीद्यौरितिस्पृष्टभुवि ओषधयइतिधान्यंप्रक्षिप्याकलशेष्वितिधवलंकुंभंसंस्थाप्येमंमेगंगइतितीर्थोदकेनापूर्याश्वत्थेवोनिषदनमित्यश्वत्थपल्लवान् गायत्र्यादिमंत्रैःपंचगव्यंदेवस्यत्वा० मभिषिंचामीतिकुशोदकंनिक्षिप्ययुवासुवासाइतिपीतवस्त्रेणसंवेष्ट्यसहिरत्नानीतिपंचरत्नानि प्रक्षिप्ययाओषधीरितिवक्ष्यमाणान्सर्वान्निक्षिपेत् । यूथिकादमनमधुपुष्पाणि । पत्रंभाषायांपत्रजमितिप्रसिद्धम् । पलाशं सर्षपान् जटामांसींगुडूचीं अपामार्गंविडंगंशंखिनींवचांसहदेवींविष्णुक्रांतांशतावरीं । कुष्टंमांसींहरिद्रेद्वेमुराशैलेयचंदनम् । वचाकचोरमुस्तांचेति । ततश्चंदनादिनाकुंभमभ्यर्च्यपूर्णादर्वीतियथाविभवंसौवर्णादिपूर्णपात्रंनिधाय तत्राष्टदलोत्तरदलेहरिताक्षतनिर्मितदीर्घचतुरस्रपीठेहैमींबृहस्पतिप्रतिमांस्थापयित्वास्थंडिलेऽग्निप्रतिष्ठापनादि । अन्वाधानेचक्षुषीआज्येनेत्यंतेबृहस्पतिमष्टोत्तरशतसंख्याभिरश्वत्थसमिद्भिस्तावतीभिराज्याहुतिभिस्तावतीभिःसर्पिर्मिश्रपायसाहुतिभिस्तावतीभिःसाज्ययवव्रीहितिलाहुतिभिश्च शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिस्वशाखोक्तविधिनाज्यभागांतंकृत्वा कुंभोपरिस्थापितप्रतिमायामावाहनादिषोडशोपचारैर्बृहस्पतिंपूजयेत् । तत्रविशेषः पीतवस्त्रयुग्मंपीतंयज्ञोपवीतंपीतंचंदनंपीताक्षतान्

चंपकादिपीतपुष्पं विल्वमज्जाधूपं घृतदीपं दध्योदनंनैवेद्यं दक्षिणायांपुष्परागोमाणिक्यंयथाशक्तिहेमवा । पूजांतेऽब्लिंगाभिर्वारुणीभिःपावमानीभिश्चग्रहमखोक्ताभिःकुंभानुमंत्रणम् । ततोयजमानोयथान्वाधानंबृहस्पतयइदंनममेतित्यागं कुर्यात् । अथाचार्योबृहस्पतिमंत्रेणप्रणवादिनाऋष्यादिस्मरणपूर्वकंदधिमध्वक्ताअष्टोत्तरशतमश्वत्थसमिधोजुहुयात्तावतीराज्याहुतीःसर्पिर्मिश्रलोकसिद्धपायसाहुतीःसाज्ययवव्रीहितिलाहुतीश्च । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यपरिस्तरणविसर्जनाभ्यर्चनांतंकुर्यात् । ततोबृहस्पतेर्गंधादिभिःपूर्वोक्तैःफलतांबूलांतैःपूजनंकृत्वासयजमानोनमस्कुर्यात् । ततस्ताम्रपात्रेशुद्धोदकंप्रक्षिप्यतत्रपीतानिगंधाक्षतपुष्पाणिफलंचप्रक्षिप्यार्घ्यंदद्यात् । गंभीरदृढरूपांगदेवेज्यसुमतेप्रभो । नमस्ते वाक्पतेशांतगृहाणार्घ्यंबृहस्पतइति । ततोयजमानोबृहस्पतयेकृतकर्मार्पणंकुर्यात् । भक्त्यायत्तेसुराचार्यहोमपूजादिसत्कृतम् । तत्त्वंगृहाणशांत्यर्थंबृहस्पतेनमोनमइति । ततःप्रार्थयेत् । जीवोबृहस्पतिःसूरिराचार्योगुरुरंगिराः । वाचस्पतिर्देवमंत्रीशुभंकुर्यात्सदाममेति । ततोविसर्जनंकृत्वाचार्यंप्रणम्यसर्वोपचारसंयुक्तांगोयुक्तामिमांप्रतिमांतुभ्यमहंसंप्रददइतितादृशप्रतिमांदद्यादभिषेकोत्तरंवाप्रतिमादानम् । कुंभोदकेनाचार्यःपुत्रदारसमेतंयजमानमभिषिंचेत् । आपोहिष्ठेतितिसृणामांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्री । तत्त्वायामीतितिसृणांशुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् । स्वादिष्ठयेतितिसृणांमधुच्छंदाःपवमानःसोमोगायत्री । समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् । इदमापइत्यस्यासिंधुद्वीपआपोनुष्टुप् । तामग्निवर्णामित्यस्यहिरण्यगर्भोदुर्गात्रिष्टुप् । याओषधीरित्यस्याथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् । अश्वावतीर्गोमतीरित्यस्यवसिष्ठउषस

स्त्रिष्टुप् । यद्दे वादेवहेडनंयददीव्यमायुष्टेविश्वतोदधदित्यापस्तंबशाखोक्तैरनुवाकैश्चतच्छंयोरावृणीमहइति । ततोयथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयेत् । इतिसंस्कारकौस्तुभेबृहस्पतिशांतिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथोपनयनप्रयोगः ॥ उपनयनात्पूर्वेद्युरहतवस्त्रमजिनंयज्ञोपवीतंमेखलांदंडंकटिसूत्रंकौपीनमित्येतान्युक्तलक्षणानिसंपाद्यभिक्षापात्रजलपात्रेचसंपाद्य स्वस्योपनेतृत्वयोग्यतायैकृच्छ्रत्रयंसंकल्प्यतिलसहस्रहोमगोदानाद्यन्यतरप्रत्याम्नायेनतदाचरणपूर्वकं द्वा[1]दशसहस्रगायत्रीजपंतद्योग्यतायैकृत्वोपनेयत्वयोग्यतायैबटुनापिकृच्छ्रत्रयंकारयित्वा यदिजातकर्मादिसंस्काराअतीतास्तदाजातकर्मादिसंस्काराणांकालातिपत्तिप्रायश्चित्तहोमंकरिष्यइतिसंकल्पपूर्वकं पूर्वोत्तराज्यभागांतस्विष्टकृदादितंत्रयुताअतिपन्नसंस्कारसमसंख्याभूर्भुवःस्वःस्वाहेत्याज्याहुतीर्हुत्वा प्रमादादतिपत्तौप्रत्येकंपादकृच्छ्रंचौलस्यार्धकृच्छ्रंबुद्धिपूर्वकाकरणेतूक्तद्विगुणंकुमारेणकारयेत् । चौलेकुलधर्मप्राप्ततृतीयवर्षादिनियतकालातिपत्तावेतत् । सहोपनीत्येत्यस्यकुलधर्मप्राप्तत्वेतुनैतत् ।पत्न्यासहोपविश्यदेशकालौसंकीर्त्यअस्यकुमारस्यगर्भांबुपानजनितदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंअतिक्रांतंजातकर्म, बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणायुरभिवृद्धिव्यवहारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनामकर्म, आयुरभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसूर्यावलोकनं, आयुःश्रीवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणार्थंनिष्क्रमणं, आयुरभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंउपवेशनं, मातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेज

---

[1] द्वादशसहस्रमित्यत्रद्वादशाधिकसहस्रंज्ञेयमितिनिर्णीतंप्राक् ।

इंद्रियायुरभिवृद्धिबीजगर्भ० प्रीत्यर्थंअन्नप्राशनंचाद्यकरिष्ये, वीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणवलायुर्वर्चोभिवृद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचौलं द्विजत्वसिद्ध्यावेदाध्ययनाधिकारार्थमुपनयनंचश्वःकरिष्येइतिसंकल्प्यतदंगत्वेनस्वस्तिपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंचकरिष्ये उपनयनांगत्वेननंदिन्यादिमंडपदेवतानांपूजनपूर्वकंतासांकुलदेवतादीनांचस्थापनंकरिष्ये तदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणेशपूजनंकरिष्यइतिसंकल्प्य तंत्रेणनांदीश्राद्धांतंकुर्यात् । सर्वेषांसद्यःकरणेसर्वसंकल्पांतेअद्यकरिष्यइतिसंकल्पः । वहूनांसंकल्पेऋद्ध्यंतामिति । चौलोपनयनयोःसंकल्पेऋद्ध्येतामिति । उपनयनमात्रसंकल्पेऋद्ध्यतामिति । नांदीश्राद्धांतेमातृकाअविसृज्य यथाचारंवद्धासुशाखासुनंदिन्यैनमःनंदिनीमावाहयामि नलिन्यैनमःनलिनीमावा० मैत्रायैनमःमैत्रामावाह० उमायैन० उमामा० पशुवर्धिन्यै० पशुवर्धिनीमा० भगवत्यै० भगवतीमा० अविघ्नगणपतयेनमः अविघ्नगणपतिमा० । सापिधानकलशयोःगृहावैप्रतिष्ठेत्यावाहितदेवताःप्रतिष्ठाप्यासनाद्याचमनांतसमर्पणेकृतेत्रिसूत्रीवेष्टितकुंभचतुष्टयमध्यस्थाभिषेकपात्रेताःशाखानिधायपत्न्यातन्नीराजनंश्रियेजातइतिकारयित्वा कनिक्रददितितैलेनाभ्यज्य सुगंधिपिष्टंतासुनिक्षिप्योष्णोदकेनाभिषिच्यापोहिष्ठेतितृचेनकुंभचतुष्टयोदकेनाभिषिच्याचमनादिपुष्पांतोपचारसमर्पणांते दधिक्राव्णइतिदध्नाकांडात्कांडात्प्ररोहंतीतिदूर्वाभिश्चाभ्यर्च्यधूपादिपूजांसमाप्य मंत्रहीनमितिसंप्रार्थ्यमातृकासहितास्ताःशाखाःस्वयमादत्तेकलशौपत्नीघंटादिवाद्यघोषेणकनिक्रददितिसूक्तेनचप्रतिष्ठापनदेशंगत्वा सूपलिप्तेऽलंकृतेतस्मिन्देशेगृहावैप्रतिष्ठेतिकलशाभ्यांसहिताःशाखाःप्रतिष्ठाप्यपंचोपचारैःसंपूज्य स्थापितदेवताप्रीत्यर्थंय

थाशक्तिब्राह्मणान्सुवासिनीश्चभोजयिष्ये तेभ्योयथाशक्तिवस्त्रदक्षिणादानंचकरिष्यइतिसंकल्पयेत् । ततोनीराजिताभ्यां दंपतीभ्यांसुहृदोवस्त्राणिदद्युः युवंवस्त्राणिपीवसा० अभिवस्त्रासुव० भद्रावस्त्रासमन्या० वसिष्वाहिमियेध्य० सतुवस्त्राण्यधपेशनानि० वेदिषदेप्रियधामाय० प्रसेनानीःशूरोअग्नेरथानां० उभाउनूनंतदिदर्थ० इमान्मंत्रान्पठेयुः । ततोऽतिक्रांतजातकर्मादिसंस्कारानुष्ठानं । केचिन्मंडपनिर्माणपूर्वकंदेवतास्थापनंकुर्वंतितदित्थम् । आग्नेय्यामाम्रेणजंब्वावास्तंभः नैर्ऋत्याखादिरेणधात्र्यावा वायव्यामुदुंबरेणशम्यावा ऐशान्यांबदर्याऽश्मंतकेनवा यथाकुलधर्मंशम्यर्कादिजातीययज्ञियवृक्षस्यषट्शाखायुग्मानिसूत्रवेष्टितानिकार्याणि षष्ठंछूरिकागर्भंदेवकमित्युच्यते । आद्याश्चतस्रःशाखादधिक्राव्णइतियाओषधीरितिचमंत्राभ्यांचतुर्णांब्राह्मणानांहस्तेदत्वाऽग्नेयस्तंभेगंगायैनमःगंगामावाहयामीत्यावाहनादिषोडशोपचारैः संपूज्यसुदृढातिस्थिराभवेतिप्रार्थयेत् । एवंनैर्ऋत्येगौरीं वायव्येधरणीं ऐशान्येलक्ष्मीं । ततआग्नेयस्तंभेनंदिनीमावाहयामिगृहावैप्रतिष्ठासूक्तमितिशाखायुग्मंप्रतिष्ठापयेत् । एवंनैर्ऋत्येनलिनीं वायव्येमैत्रां ऐशान्येउमां मंडपाच्छादनोपरिदेशमध्येपशुवर्धिन्यैनमइतियथाचारंमुसलमंडकादियुक्तंशाखायुग्मंरोपयेत् । सर्वत्रगृहावैप्रतिष्ठेत्यस्यावृत्तिः । ततस्तामंडपदेवताःषोडशोपचारैःसंपूज्यमंडपमध्येआग्नेयादिक्रमेणकलशस्थापनविधिनोदकपूर्णमाम्रपल्लवादियुतंकुंभचतुष्टयंस्थापयित्वासूत्रयेत्तन्मध्येनुपहतपीठेदंपतीदेवकस्थापनमित्थंकुरुतः । वंशपात्रस्थंपूर्वोक्तदेवके भगवत्याआवाहनाद्याचमनांतोपचारार्पणेकृतेचतस्रःसुवासिन्योनीराजनाभ्यंगोद्वर्तनोष्णोदकशीतोदकस्नानानिकारयेयुः । ततःकनिक्रददितिसूक्तेनदे

वकसहितंवंशपात्रमुक्तपीठेस्थाप्यगृहावैप्रतिष्ठेतिप्रतिष्ठाप्यवस्त्राद्युपचारैःपूजयेत्भगवत्यैनमइतिमंत्रेण । भगवतीपूजनेनसहाविघ्नगणपतिपूजनंचतत्रैवकार्यं । ततोब्राह्मणभोजनादिसंकल्पःपूर्ववत्कार्यइति । वटुहस्तेनचतुर्हस्ताचतुरस्राहस्तोच्छ्रितासुश्लक्ष्णासोपानांकिताप्रागुदक्प्रवणाकदलीस्तंभतोरणपुष्पमालाद्यलंकृतावेदिःकार्येत्यपिकेचित् । इतिपूर्वदिनकृत्यम् ॥ ॥ परदिनेअतिक्रांतचौलंकृत्वाप्रागेवजातचौलंत्वभ्यंगस्नानेनस्नापयित्वामात्रासहभोजयेत् । ततोब्रह्मचारिभ्योऽन्नदानमाचारात्कार्यं । ततोदेशकालौसंकीर्त्यास्यकुमारस्यद्विजत्वसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंगायत्र्युपदेशंकर्तुंतत्प्राच्यांगभूतंवापनादिकरिष्येइतिसंकल्प्यवापनंकारयेत् । मुख्यशिखाधिकशिखानांचौलेधृतानामत्रवापनम् । ततःस्नापितमहतांबरंबद्धशिखंमंगलतिलकंवटुंकुर्युः । मौहूर्तिकंसंपूज्यतदुक्तशुभमुहूर्तेआचार्योवेद्यांप्राङ्मुखउपविष्ट[1]स्तन्मुखमीक्षेत । कृतनमस्कारंतंस्वांकेकुर्वीत । ततोब्राह्मणायेयज्ञेनेतिमंत्रैर्यथाचारमुभयोःशिरस्यक्षतान्क्षिपेयुः तदस्तुगृहावैप्रतिष्ठतिच । ततःकुमारंदक्षिणतउपवेश्याचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्योपनयनहोमंकर्तुंस्थंडिलादिकरिष्यइतिसंकल्प्यस्थंडिलादिकुर्यात् । आघारावाज्येनेत्यंतेत्रिरग्निंपवमानंप्रजापतिंचाज्येनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि कुमारेणान्वारब्धःसमिद्धोमंकुर्यात् । ततोबर्हिःसंनहनाद्याज्योत्पवनांतंकुर्यात् । ततःस्वदक्षिणतःकुमारंप्राङ्मुखमवस्थाप्य[2] त्रिवृत्कार्पाससूत्रंकटावाबध्यकौपीनंपरिधाप्याहतंशुक्लंवासःसमंत्रंपरिधापयेत् ।युवंवस्त्राणीत्यस्यौचथ्योदीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप्

---

[1] मध्येंतःपटधारणमंगलाष्टकपद्यपाठाद्यत्रैवाचारात्कार्यं । [2] स्वयंचोत्थायतमुत्थाप्येत्यर्थः । अथोत्थायगुरोर्वह्नेरित्यादिशौनकोक्तेः ।

वासोधारणेविनियोगः। ॐ युवंवस्त्रा० वाससैवप्रावरणपक्षेमंत्रावृत्तिः। ततउत्तरतोनीतेनकुमारेणद्विवारमुदकप्राशनंकारयित्वोपवीतधारणादि । अजिनेनप्रावरणपक्षेतदादिवाकुर्यात् । मित्रस्यचक्षुरित्यस्यवामदेवोऽजिनंत्रिष्टुप् अजिनधारणेवि० ॐ मित्रस्यचक्षुर्धरुणंबलीयस्तेजोयशस्वीस्थविरंसमिद्धम् । अनाहनस्यंवसनंजरिष्णुपरीदंवाज्यजिनंदधेहं इत्युक्तप्रकारमजिनंधारयित्वा। गायत्र्यादशकृत्वोभिमंत्रिताद्भिरुपवीतंप्रोक्ष्यतद्धारयेत् । यज्ञोपवीतमितिमंत्रस्यपरब्रह्मऋषिः परमात्मादेवतात्रिष्टुप्छंदः श्रौतस्मार्तकर्माधिकारसिद्ध्यर्थंउपवीतधारणेविनियोगः ॐ यज्ञोपवी० । अध्ययनकालेमंत्राक्षराणांसंधिवशेनयेविकारास्तानत्यजन्मंत्रंवाचयित्वातद्दक्षिणबाहुमुद्धार्योपवीतंधारयित्वाकुमारमात्मनोग्नेश्चमध्येनयज्ञपात्रोत्तरभागेनीत्वा जयंतोक्तेनविधिनापारिजातोक्तेनवाचमय्य प्रणीतापूर्वभागेनीत्वातत्पश्चिमभागात्मकतीर्थेनप्रपन्नंपूर्ववदानीतंदक्षिणतउपवेश्य बर्हिष्याज्यमासाद्यस्रुवसंमार्गाद्ध्यर्चनेकृत्वा ब्रह्मचार्यन्वारब्धइध्माधानाद्याज्यभागवर्ज्यंचौलवदाज्याहुतिचतुष्टयंहुत्वाचार्यउत्तरतोऽग्नेःप्राङ्मुखस्तिष्ठेत् । कुमारस्तयोर्मध्येनगत्वाचार्याभिमुखस्तिष्ठेत् । ततआचार्यो[1]नुच्छिष्टजलेनशिष्यांजलिमापूर्य स्वांजलिपूरणमन्येनकारयित्वा तत्सवितुरित्यस्यात्रेयःश्यावाश्वःसवितानुष्टुप् अवक्षारणेविनियोगः ॐ तत्सवितुर्वृ० मंत्रांतेस्वांजलिस्थोदकंशिष्यांजल्युदकेआसिच्यस्वदक्षिणपाणिधृतेनतदंजलिनातज्जलमवक्षारयेत् । ततःस्वदक्षिणपाणिनाकुमारस्यसांगुष्ठदक्षिणपाणिग्रहणंकुर्यात् देवस्यत्वासवितुः० हस्तंगृह्णामिअमुक

---

[1] चार्यःशुद्धोदकेनेत्यर्थः ।

शर्मन्नितिआभिवादनिकंनामशर्मांतंसंबुद्ध्यानिर्दिशेत्।पुनर्द्भिःपूर्ववत्पूरणादि।सवितातेहस्तमग्रभीदितिमंत्रांतेपूर्ववन्नामग्रहणपूर्वकंहस्तग्रहणंद्वितीयपर्याये । तृतीयेतुअग्निराचार्यस्तवेत्यंते । ततोयत्रदेशेब्रह्मचारिणआदित्येक्षणंभवतिब्रह्मचारिणासहतंदेशंगत्वा देवसवितरेषतेब्रह्मचारीतंगोपायसमामृतेत्युच्चार्यब्रह्मचारीयथादित्यमीक्षेततथाकुर्यात् । ततोऽग्नेरुत्तरतोऽन्योन्याभिमुखौतिष्ठतः । आचार्यःप्रजापतयेरक्षणार्थंमनसाब्रह्मचारिणंसमर्प्य कस्यब्रह्मचार्यसिप्राणस्यब्रह्मचार्यसिकस्त्वाकमुपनयतेकायत्वापरिददामीतिजपेत् । युवासुवासाइत्यस्यकौशिकोविश्वामित्रोयूपस्त्रिष्टुप् पूर्वार्धर्चस्यप्रदक्षिणावर्तनेउत्तरार्धर्चस्यपाणिभ्यांबटुहृदयालंभनेविनियोगः युवासुवासाइत्यर्धर्चमुच्चार्यप्रदक्षिणमावर्त्यप्राङ्मुखमवस्थाप्य कुमारांसयोरुपरिस्वपाणीगमयित्वा तंधीरासइत्यर्धर्चांतेपाणिभ्यांयुगपत्तदीयहृदयंस्पृशेत् । ततःपूर्वेणैवपथासमानीय स्वदक्षिणतउपवेशयेत् । अथब्रह्मचारी अग्नयेसमिधमित्यस्यहिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप् समिदाधानेविनियोगः अग्नयेसमिधमाहार्षंबृहतेजातवेदसेतयात्वमग्नेवर्धस्वसमिधाब्रह्मणावयंस्वाहेतिमंत्रमेकश्रुत्येनपठित्वासमिधमाधायाग्नयइदंनममेतित्यागांतेदक्षिणंपाणिंप्रक्षाल्याग्नौप्रताप्य ॐ तेजसामासमनज्मिइतिसंवृतौष्ठमुखमवाङ्निमृजेत् । एवंपाणिप्रक्षालनादिमुखमार्जनांतंपुनर्द्भिःकुर्यात् । ततःपाणिंप्रक्षाल्यतिष्ठन्हृदिकृतप्रणतिमुद्रायुतकरसंपुटउपतिष्ठते । मयिमेधामितिषण्णांहिरण्यगर्भःत्रयाणामग्नींद्रसूर्याःत्रयाणामग्निर्गायत्री उपस्थानेवि० । मयिमेधांमयिप्रजांमय्यग्निस्तेजोदधातु । मयिमेधांमयिप्रजांमयींद्रइंद्रियंदधातु । मयिमेधांमयिप्रजांमयिसूर्योभ्राजोदधातु । यत्तेअग्नेतेजस्तेनाहंतेजस्वीभूयासम् । यत्तेअग्ने

वर्चस्तेनाहंवर्चस्वीभूयासम् । यत्तेअग्नेहरस्तेनाहंहरस्वीभूयासम् । मानस्तोकइतिमंत्रस्यकुत्सोरुद्रोजगतीभस्मधारणेविनियोगः मानस्तोकेतनये० । त्र्यायुषंजमदग्नेरितिललाटे कश्यपस्यत्र्यायुषंकंठे अगस्त्यस्यत्र्यायुषंनाभौ यद्देवानांत्र्यायुषंदक्षिणांसे तन्मेअस्तुत्र्यायुषंवामांसे सर्वमस्तुशतायुषंशिरसि कृतांजलिरुपतिष्ठते ॐ चमेस्वरश्चमे० तस्मैतेनमः अग्नयेनमः स्वस्ति । श्रद्धांमेधांयशःप्रज्ञांविद्यांबुद्धिंश्रियंबलं । आयुष्यंतेजआरोग्यंदेहिमेहव्यवाहनदेहिमेहव्यवाहनोंनमः । एतत्प्रवरान्वितैतद्गोत्रोत्पन्नएतच्छर्माहंभोअग्नेअभिवादयेइत्यग्निमभिवाद्योत्तरतउपविष्टस्याचार्यस्याभिमुखउत्तरतउपविशेत् । अथयथाचारमाचार्येणगायत्रीपूजनेकृतेदक्षिणंजानुंभूतलेनिपात्यदक्षिणसव्यहस्ताभ्यांसव्यदक्षिणश्रोत्रेसंस्पृश्याचार्यस्यदक्षिणसव्यपादौव्यस्ताभ्यांस्वीयसव्यदक्षिणहस्ताभ्यांजानुप्रभृतिपादांगुष्ठाग्रपर्यंतंस्पृष्ट्वा एतत्प्रवरान्वितेत्यादिअहंभोअभिवादयइत्यंतंपूर्ववदुक्त्वाआचार्यपादयोःशिरोनिधानेनप्रणमेत् । अकारांतंकृत्तिकरोहिणादिनाम्नाभिवादनेआचार्य आयुष्मान्भवसौम्यकृत्तिका ३ आयुष्मान्भवसौम्यरौहिणा ३ इत्याशिषंप्रयुंजीत । इकारांतंस्वातिनाम्नाभिवादनेआयुष्मान्भवसौम्यस्वाता ३ इइति उकारांतपुनर्वसुनाम्नाभिवादने आयुष्मान्भवसौम्यपुनर्वसा ३ उइति एवमन्यत्रोह्यम् । ततःसविनयंअधीहिभोःसावित्रींभोअनुब्रूहीत्याचार्यंसंप्रार्थ्योत्तानीकृतवामपाण्यंगुष्ठांगुलीर्न्यङ्मुखीकृतदक्षिणपाण्यंगुष्ठांगुलीभिर्दृढसंयोगिनीःकृत्वातादृशंब्रह्मांजलिंदक्षिणांकेनिक्षिप्यासीत । आचार्यस्तमंजलिंतत्परिधानीयवाससाच्छाद्यतादृशंस्वपाणिभ्यामादायसप्रणवव्याहृतिकांसावित्रीमुपदिशेत् । तद्यथा—प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवतादैवी

गायत्रीच्छंदः व्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिःप्रजापतिर्बृहती गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्री उपनयनप्रधानोपदेशेविनि० सप्रणवव्याहृतिकांसावित्रींस्वयंपच्छउक्त्वातथैवकुमारंवाचयीत अशक्तंयथाशक्ति । ततस्तादृशीमर्धर्चशउक्त्वावाचयीत ततस्तादृशीमनवानमुक्त्वावाचयीत । यथाशक्तिसर्वत्रवाचयन्संधिकृतंवर्णविकारंनान्यथाकुर्वीत । ममव्रतइति मंत्रस्यप्रजापतिर्बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् अस्यहृदयदेशेऊर्ध्वांगुलिपाण्युपधानेविनि० ॐ ममव्रतेहृदयंतेदधामिममचित्तमनुचित्तं तेअस्तु । ममवाचमेकव्रतोजुषस्वबृहस्पतिष्ट्वानियुनक्तुमह्यम् । इतिब्रह्मचारिणोहृदयेस्वदक्षिणपाणिमूर्ध्वांगुलिंन्यङ्मुखमुपधाय मेखलाबंधनंकुर्यात् । इयंदुरुक्तादितिद्वयोर्वामदेवोमेखलात्रिष्टुप् मेखलाबंधनेविनि० इयंदुरुक्तात्परिबाधमाच्छर्मवरूथंपुनतीनआगात् । प्राणापानाभ्यांबलमाभरंतीप्रियादेवानांसुभगामेखलेयम् । ऋतस्यगोप्त्रीतपसःपरस्पीघ्नतीरक्षःसहमानाअरातीः । सानःसमंतमनुपरीहिभद्रयाभर्तारस्तेमेखलेमारिषामेति । परेहीत्यपपाठः आनुपूर्व्येणपरिगच्छेतिपारिजातव्याख्यानासंगतेः । कटिदेशेमेखलांत्रिरावृत्यनाभिप्रदेशेग्रंथित्रयंकुर्यात् । तदाब्रह्मचारीसांगसरहस्यवेदत्रयेणसंवृतोहमितिमन्येत । अथास्मैदंडंदद्यात् । स्वस्तिनइत्यस्यस्वस्त्यात्रेयोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् दंडदानेविनि० स्वस्तिनोमिमीता० । अदांतंदमयित्वामांमार्गेसंस्थापयन्स्वयम् । दंडःकरेस्थितोयस्मात्तस्माद्रक्षयतोभयमिति । मंत्रांतेब्रह्मचारीतंगृह्णीयात् । अथाचार्योब्रह्मचारिणमाह ब्रह्मचार्यसि बटुरोमितिस्वीकुर्यात् । अपोशान मूत्रोत्सर्गादौनिमित्तेशौचांते विधिनाआचमनंकुर्वीतियावत् । कर्मकुरु संध्योपासनाग्निकार्यादिसायंप्रातःकुरु । दिवामास्वाप्सीः दिवानिद्रांमाकुरु ।

आचार्याधीनोभव तदाज्ञोल्लंघनंमाकुरु । वेदमधीष्व द्वादशवर्षाद्यन्यतरपक्षाश्रयणेनवेदाध्ययनंकुर्वितितंप्रत्युपदेशार्थं बोधयेत् परश्चस्वीकुर्यात् । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यद्वेशतेब्राह्मणान्भोजयिष्यइतिशतंवायथाशक्तिवासंकल्प्यनानानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योभूयसींदातुमहमुत्सृज्यइतिचसंकल्प्यब्राह्मणाशिषोगृह्णीयात् । ततोब्रह्मचारीनूतनभिक्षापात्रेमातरमनुप्रवचनीयकर्मार्थंतंडुलान्याचेतभिक्षांभवतीददात्विति अनुप्रवचनीयंभवतीददात्वितिवा । मातुरभावेमातुःस्वसारंस्वभगिनींज्येष्ठभ्रातृपत्नींवाऽप्रत्याख्यायिनीमित्थमेवयाचेत । स्वपितरंवाभिक्षांभवान्ददात्विति अनुप्रवचनीयमितिवा । तद्भैक्षमाचार्यायनिवेद्यमध्याह्नसंध्यामुपास्यगुरुसंनिधावचपलस्तिष्ठन्नहःशेषंनयेत् ॥ ॥ ॥

अनुप्रवचनीयारंभात्पूर्वंगर्जितवृष्ट्यादिसंभावनायांदिवैवचरुश्रपणांतंकृत्वास्तमितेहोमंकुर्यात् । नसंध्यागर्जितेकालेनवृष्ट्युत्पातदूषिते । ब्रह्मौदनंपचेदग्नौपक्वंचेन्ननिवर्ततेइतिसंग्रहोक्तेः । पाकाभावेगर्जितादिनिमित्तेतुशांतिंकृत्वापाकःकार्यः । यथोक्तंविधानमालायम्—ब्रह्मौदनविधेःपूर्वंप्रदोषेगर्जितंभवेत् । तदाविघ्नकरंज्ञेयंवटोरध्ययनस्यतत् १ । तस्यशांतिविधानंतुवक्ष्येशास्त्रानुसारतः । स्वस्तिवाचनपूर्वंतुहवनंकारयेद्बुधः २ । प्रधानंपायसंतत्रसाज्यंसाष्टशतंयजिः । सूक्तंबृहस्पतेर्विद्वान्पठेत्प्रज्ञाविवृद्धये ३ । गायत्रीयजनेमंत्रःप्रायश्चित्तंतुसर्पिषा । धेनुंसवत्सकांदद्यादाचार्यायपयस्विनीम् ४ । शीलान्होमविधेःपश्चाद्ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः । शतमष्टोत्तरंधीमांस्ततोब्रह्मौदनंपचेदिति ॥ ॥ अथप्रयोगः । ब्रह्मौदनपाकात्पूर्वंगर्जितेनसूचितस्यब्रह्मचारिकर्तृकाध्ययनविघ्नस्यनिरसनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणे

शपूजनस्वस्तिवाचनेकृत्वाचार्यवरणंकार्यं । आचार्यःयदत्रेतिसर्षपविकिरणादिभूसंस्कारंकृत्वास्थंडिलेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्यनेत्यंतेऽत्रप्रधानं सवितारंअष्टोत्तरशतसंख्याभिःसाज्यपायसाहुतिभिःशेषेणेत्यादिमरुतआज्येनेत्यंते सवितारमाज्येनेतिप्रणीताप्रणयनांतेआज्यनिर्वापादि। आज्येनसहगृहसिद्धपायसस्यपर्यग्निकरणम्। संमार्गांतेपायसमग्नावधिश्रित्याभिघार्योदगुद्वास्याज्यस्यदक्षिणतआसाद्याभ्यर्चनाद्याज्यभागांतेऽष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तंसाज्यपायसंसवित्रेनममेतित्यक्तस्याचार्यस्तावतीराहुतीर्हस्तेनगायत्र्याजुहुयात् । ततोबृहस्पतिसूक्तंजपेत्। ततःस्विष्टकृदादियद्वोदेवाइत्याहुत्यंतेगायत्र्याज्याहुतिः। कर्मशेषंसमाप्याचार्यायसवत्सांपयस्विनींधेनुंसंप्रददेइतिसंकल्प्य अष्टोत्तरशतसंख्यान्सुशीलान्ब्राह्मणान्भोजयिष्येइतिसंकल्पंकुर्याद्यथाशक्तिवा । ततईश्वरार्पणंकुर्यादिति ब्रह्मौदनपाकात्पूर्वंगर्जितशांतिः ॥

मेधाजननात्पूर्वकालीनाग्निकार्यंयावद्बुपनयनाग्निनाशेउपनयनाहुतिभिःकटिसूत्रादिधारणादिमाणवकसंस्कारावक्षारणाग्निकार्यंगायत्र्युपदेशवर्जंपूर्वोत्तरतंत्रसहिताभिरग्निमुत्पाद्यतत्रानुप्रवचनीयपूर्वभाव्यग्निकार्यपूर्वकमनुप्रवचनीयादिकार्यं । अष्टवर्षंब्राह्मणमुपनयीतेत्यत्रद्वितीयावगतस्यसंस्कारस्यहोमात्कथंसिद्धिरित्याकांक्षायां आज्यसमिदाहुतिसंस्कृताग्नितेजसामासमनज्मीतिसमंजनद्वारेणेतिसामर्थ्यादवगमात् गायत्र्युपदेशपूर्वभाविनःसमंजनस्यतद्योग्यतामिवानुप्रवचनीयान्मेधाजननात्पूर्वमंजनस्यतत्तद्योग्यतायामुपयोगस्यौचित्यापातत्वात् मेधाजननांतानांत्रयाणामपिवेदाध्ययनोपयोगित्वेनतद्द्वारामीमांसकप्रसिद्धाध्ययनांगत्वोपपत्तेः । अनयैवरीत्यामेधाजननोत्तरभाव्यग्निकार्याणामपिसमंजनकरणकाध्यय

नयोग्यताद्वारैवनियुक्ताध्ययनांगत्वोपपत्तेः । ज्योतिष्टोमभावनारंभेसमुत्पन्नयूपस्यतद्भावनांतर्गतपशुत्रयसाधारण्यवच्चोपनयनभावनारंभेसमुत्पन्नाग्नेस्तद्भावनांतर्गतयोग्यतात्रयसाधारण्यमभिप्रेत्याभियुक्तैर्मेधाजननपर्यंतमुपनयनाग्निधारणोक्तिसंभवात् । एवंचशेषिणांमेधाजननांतानांशेषानुष्ठानसमर्थत्वाद्भवत्युपनयनाहुतिभिरग्न्युत्पत्तिः । नचसंस्कृतमाणवकस्यसंस्कारैःप्रयोजनमितिपुनःसंधानेपाणिग्रहणादीनामिवात्रापिकटिसूत्रधारणादीनांनिवृत्तिः । नष्टस्योपनयनाग्नेःपुनरुत्पत्तिंकरिष्यइतिसंकल्पः । नष्टस्योपनयनाग्नेःपुनरुत्पत्तिहोमेविनियोगइतिविशेषः ॥ ॥ ॥

अथब्रह्मचारीसायंसंध्यामुपास्यसायमग्निकार्यंचोपनयनाग्नौकृत्वास्वासीनःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यउपनयनांगमनुप्रवचनीयहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्यस्थंडिलांतरेहोमचिकीर्षायामुपलेपाद्युपनयनाग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वा अन्यथात्वग्निंध्यात्वाआघारावाज्येनेत्यंते सदसस्पतिंसवितारमृषीन्प्रधानदेवताश्चरुणा शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिसद्योयक्ष्यइत्यंतमुक्त्वासमिद्ध्याधानादिप्रणयनांतंकृत्वाभिक्षातंडुलांस्तूष्णींदेवतात्रयमुद्दिश्यचतुरश्चतुरोमुष्टीन्निरुप्यब्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्वोप्यतूष्णींप्रोक्ष्यावहत्यत्रिःफलीकृत्यप्रक्षाल्यश्रपयित्वाशृतःस्थालीपाकइत्याचार्यायनिवेदयेत् । शृतोब्रह्मौदनःशृतोनुप्रवचनीयइतिचेतिजयंतः । बटोरेवंकरणाशक्तौश्रपणांतमन्येनकारयेत् । अथाचार्यआज्यसंस्काराद्याघारांतंकृत्वाऽवदानधर्मेणचरुमवदायजुहुयात् । सदसस्पतिमित्यस्यकाण्वोमेधातिथिःसदसस्पतिर्गायत्री अनुप्रवचनीयचरुहोमेविनियोगः । सदसस्पतिम० सिषंस्वाहा बटुःसदसस्पतयइदं० तत्सवितुर्विश्वामित्रःसवितागायत्री अनुप्रवचनीयचरुहोमे० तत्सवि०

स्वाहा बटुःसवित्रइदं० ऋषिभ्यःस्वा० बटुःऋषिभ्यइदं० । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यचरुशेषेणत्र्यवरान्ब्राह्मणान्भोजयित्वादक्षिणांदत्वास्यवेदसमाप्तिरस्त्वितिभवंतोब्रुवंत्वितिप्रार्थयेत् । तेचवेदसमाप्तिरस्त्वितिब्रूयुः । ईश्वरार्पणंकृत्वासाचार्योभुंजीतेत्यनुप्रवचनीयप्रयोगः ॥ अत्रव्रतंकारिकायां—क्षौ[१]रादिवर्जमश्नीयाद्ब्रह्मचारीदिनत्रयम् । शयीताधश्चतुर्थेह्निमेधाजननमाचरेत् । यद्वाद्वादशरात्रंस्यादब्दव्रतमथापिवा । तदातदंतएवस्यान्मेधाजननसंज्ञकमिति । मेधाजननविधिश्चोक्तआश्वलायनस्मृतौ—कुर्यात्त्रिमेखलांवेदिंसर्वतोद्वादशांगुलाम् । शुचौप्रागुत्तरेभागेतस्यांमेधांसमर्चयेत् । पलाशशाखांतन्मध्येपत्रांकुरसमन्विताम् । आर्द्रांवाथकुशस्तंबंसमूलंस्थापयेद्गुरुः । मेधामावाह्यमतिमान्मेधायैनमइत्यथ । गंधपुष्पाक्षतैःसम्यग्धूपदीपादिभिःपुरा । इष्ट्वानिवेदयेदेनांसक्तुमिश्रंसयावकम् । समोदकंनिवेद्यान्नंपुनश्चाभ्यर्च्यपूर्ववत् । प्रणम्यतस्यैमेधायैव्रतिभिःसारयेज्जलम् । उच्चरन्सुश्रवोमंत्रंजलंगृह्यप्रदक्षिणम् । संस्राव्यतांनमस्कृत्यतथाकुर्यात्पुनःपुनः । एवंत्रिवारमावर्त्यदंडाजिनकमंडलून् । वेद्यांनिक्षिप्यचस्नात्वावाससीचविनिक्षिपेत् । मेखलांचोपवीतंचधृत्वान्येतेविनिक्षिपेत् । वाससीतेस्वगुरवेमेधाजननकर्मणि । दद्यात्तावत्प्रभृत्येवकौपीनेनप्रवर्तते । पुण्याहवाचनंकृत्वाब्राह्मणांश्चापिभोजयेत् । तमावहतिसामेधामेधाजननकर्मणः । तत्कर्तव्यंप्रयत्नेनव्रतस्यचसमासयइति । पारिजातेभगवान्—गृहान्प्रतीयाद्वुर्वाद्यैःसमस्तैर्बंधुभिःसह । पथिस्वस्त्ययनान्मंत्रान्पठेयुर्ब्राह्मणैःसह । ततःसन्मंगलैर्दीपैःपूर्णकुंभादिभिर्युतः । प्राप

---

[१] क्षीरादिवर्ज्यं ।

येद्गृहमाचार्यःपुण्याहंवाचयेत्ततइति ॥ ॥ अथप्रयोगः ॥ व्रतसमाप्तिपरदिनेस्वगृहान्नैर्ऋतदक्षिणाग्नेयदिगन्यदिक्स्थमशाखंतदभावेसशाखंवापलाशंतदभावेकुशस्तंबंवायत्र[1]क्काप्युत्पन्नंवक्ष्यमाणरीत्यापूजयेत् । तदभावेस्वगृहस्योपनयनवेद्यामैशानदिशिसर्वतोद्वादशांगुलांत्रिमेखलांवेदिंकृत्वातस्यांसपत्रांकुरामार्द्रांसमूलांपलाशशाखांकुशस्तंबंवाप्रतिष्ठाप्यब्रह्मचार्येन्वारब्धस्तिथ्यादिसंकीर्त्य अस्योपनयनव्रतसमाप्तिवेदधारणसामर्थ्यलक्षणमेधासिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंमेधाख्यसावित्रीपूजनमहंकरिष्यइतिसंकल्प्य तत्रमेधायैनमइतिमंत्रेणावाहनप्रभृत्युपचारसमर्पणंकुर्यात् । नैवेद्यसमयेयावकसक्तुमोदकसहितमोदनमर्पयेत् । एतत्पूजांतेपुनःपंचोपचारैःपूर्वोक्तनैवेद्यसहितैःसंपूज्यब्रह्मचारिणाप्रणामंकारयित्वाप्रादक्षिण्येनत्रिःशुद्धोदकेनपरिषिंचंतंवाचयति । सुश्रवःसुश्रवाअसियथात्वंसुश्रवःसुश्रवाअस्येवंमांसुश्रवःसौश्रवसंकुरु । यथात्वंदेवानांयज्ञस्यनिधिपोस्येवमहंमनुष्याणांवेदस्यनिधिपोभूयासमिति । प्रतिप्रदक्षिणंमंत्रावृत्तिः अंतेप्रणामावृत्तिश्च । ततोदंडाजिनकमंडलून्मेधासमीपेवेद्यांनिक्षिप्यस्नात्वामंत्रस्नानंवाकृत्वा वाससीतत्रैवनिक्षिप्यनूतनान्वासोजिनोपवीतमेखलादंडान्क्रमेणोक्तसविधिमंत्रैर्धृत्वामेखलोपवीतेजीर्णेतत्रैवनिक्षिप्य निक्षिप्तवाससीगुरवेदत्वापुण्याहंवाचयेत् । अस्यमेधाजननकर्मणःपुण्याहंभवंतोब्रुवंत्विति । यदिगृहाद्बहिर्मे[2]धाजननंकृतंतदास्वस्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाइत्यादिस्वस्त्ययनमंत्रान्पठद्भिर्बांधवैर्ब्राह्मणैःसहमंडलदीपपूर्णकुंभभेर्यादिशब्दैरेनंगुरुर्गृहंप्रापयित्वापुण्याहंवाचयेदिति । ततोमेधासूक्तपाठमा

---

१ क्कापिनद्युत्पन्नं । २ मेधापूजनं ।

चारात्केचिदिच्छंति । ॐ मेधामह्यमंगिरसोमेधांसप्तर्षयोददुः । मेधामिंद्रश्चाग्निश्चमेधांधाताददातुते० स्वधयाप्रयोगे इत्यंतं ॥ इतिमेधाजननम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथमंडपदेवताद्युद्वासनम् ॥ स्थापितदेवताःपंचोपचारैरभ्यर्च्यप्रदेशांतरमानीयपत्न्याब्रह्मचारिणाचसहप्राङ्मुखउपविश्यदेशकालौसंकीर्त्य उपनयनार्थंस्थापितदेवतानांषोडशोपचारैःपूजनंविसर्जनंतदंगत्वेनपुण्याहवाचनंचकरिष्येइतिसंकल्प्यगणेशमभ्यर्च्यषोडशोपचारैर्देवताःपूजयेत् । तत्राभिषेककालेनीराजनंकनिक्रददितितैलाभ्यंगसुगंधिद्रव्यार्पणोष्णोदकस्नानादिपूर्ववत् । ततउत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेअभ्यारमिदद्रयइतिविसर्जनम् । ततःपुण्याहवाचनम् । तत्रास्यमंडपदेवतोद्वासनकर्मणःपुण्याहंभवंतइतिवाक्यप्रयोगः । समुद्रज्येष्ठाइत्यभिषेकांतेपुरोहितोन्योवामान्यउन्मुक्तसूत्राःशाखावंशपात्रेनिधायतदुपरिक्षिप्ताभिषेकजलंसपत्नीकसापत्ययजमानशिरसिकिंचित्किंचित्स्रावयेत् । प्रेतिचेतिचेत्येतद्वैसर्वंस्वस्त्ययनं० स्वस्तिपुनरागच्छतीति । ततःकर्ताषट्सुषट्सुमासेष्वस्मद्गोत्रेशोभनानिभवंत्वितिप्रार्थयेत् । तेपितथास्त्विति ब्रूयुः । ततउन्मुक्तंसूत्रंक्षीराभ्यक्तंकृत्वाक्षतपूगीफलयुक्तंतद्धस्तेआदायपतिर्भार्यामाहहृष्यंगृहाणेति । सावदेत्क्रियतेति । पतिःप्रत्याहशतैःसहस्रैरिति । एवंत्रिः । तत्सूत्रंवस्त्रादिधनपेटिकायांस्थापनीयं । ततस्ताःशाखास्तदभिषेकजलंगृहोपरिशुचिदेशेनिक्षिप्यांगणवितानस्यैशानकोणेविमोक्षंकृत्वायथाशक्तिब्राह्मणभोजनंसंकल्प्य भूयसींदक्षिणासंकल्पपूर्वकंब्राह्मणेभ्योदत्वापरमेश्वरार्पणंकुर्यादिति ॥ अत्रकालावधिमाहुर्वृद्धाः । समेचदिवसेकुर्याद्देवकोत्थापनंबुधः । षष्ठंचविषमंनेष्टंमु

क्त्वापंचमसप्तमाविति । समेषुषष्ठंविषमेषुपंचमसप्तमातिरिक्तंनिषिद्धमित्यर्थः ॥ अथनांदीश्राद्धोत्तरंदेवतोद्वासनपर्यंतं निषेधाः । गार्ग्यः—नांदीश्राद्धेकृतेपश्चाद्यावन्मातृविसर्जनम् । दर्शश्राद्धंक्षयश्राद्धंस्नानंशीतोदकेनच । अपसव्यंस्वधाकारंनित्यश्राद्धंतथैवच । ब्रह्मयज्ञंचाध्ययनंनदीसीमातिलंघनम् । उपवासव्रतंचैवश्राद्धभोजनमेवच । नैवकुर्युःसपिंडाश्चमंडपोद्वासनावधीति । अत्रनित्यश्राद्धनिषेधेनतत्कार्यविहितपितृयज्ञनिषेधसिद्धेःस्वधाकारग्रहणंतत्सहचरितवैश्वदेवनिषेधार्थमाचारसंवादलाभाच्चेतिबह्वर्थः । तथान्यत्र—अभ्यंगेसूतकेचैवविवाहेपुत्रजन्मनि । मांगल्येषुचसर्वेषुनधार्यंगोपिचंदनमिति ॥ अथादिविप्रतुष्ट्यर्थमौपनायनिकोविधिः । इत्थंसर्वोप्यनंतेनतेनयातुमुदंहरिः ॥ १ ॥ इतिसंस्कारकौस्तुभेउपनयनम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

विकलांगविषयेउक्तंस्मृत्यर्थसारे—षंढांधबधिरस्तब्धजडगद्गदपंगुषु । कुब्जवामनरोगार्तशुष्कांगविकलांगिषु । ध्वस्तपुंस्त्वेपिचैतेषुसंस्काराःस्युर्यथोचितम् । मत्तोन्मत्तौनसंस्कार्यावित्येके कर्मस्वनधिकारात् । पतितत्वंनास्तितदपत्यंसंस्कार्यं । ब्राह्मण्यांब्राह्मणादुत्पन्नोब्राह्मणएवेतिश्रुतेः । अन्येसंस्कार्यावित्याहुः । होममाचार्यःकरोति । उपनयनंचाचार्यसमीपेनयनं अग्निसमीपेवा सावित्रीवाचनंवा । अन्यदंगंयथासंभवंकार्यमितित्रयाणांपक्षाणामन्यतमेनप्रधानसिद्धिरित्याशयः । मूकबधिरादेःसावित्रीवाचनासंभवेस्पृष्ट्वासावित्रीजपोवाकार्यः । संस्कारमंत्रहोमादीन्करोत्याचार्यएवतु । उपनेयांश्च

---

१ एकग्रामेनिषेधोयंसंपिंडानांभवेदिह । ग्रामांतरेनदोषःस्यात्प्रवदंतिमहर्षयः । इतिशाकलकारिकाग्रंथेविशेषः ।

विधिवदाचार्यःस्वसमीपतः । आनीयाग्निसमीपेतुसावित्रींस्पृश्यवाजपेदिति । कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वंविप्रेणकारयेदितिपारिजातेब्राह्मोक्तेः । संस्कारमंत्राउपनेयस्यवासःपरिधानादिषुयेमंत्रास्तानाचार्यएवपठेदित्यर्थः । बौधायनस्त्वीदृशोपनयनप्रकरणेतूष्णींवासःपरिधापयतितूष्णींमेखलांतूष्णीमजिनंप्रतिमुंचतितूष्णींदंडंप्रयच्छतीतिप्रकृत्यसर्वान्मंत्रानाचार्यएवजपेदित्येकेइत्याह । इतिसंस्कारकौस्तुभेविकलांगोपनयनम् ॥ ॥ ॥ ॥

नत्वोमामाधवौदेवौब्राह्मणप्रीतिसिद्धये । अनंतदेवस्तनुतेपुनःसंस्कारपद्धतिम् ॥ पुनःसंस्कारःपुनरुपनयनम् । तच्चत्रिविधं, प्रत्यवायनिमित्तेप्रायश्चित्तत्वेनविहितं निमित्तविशेषेणकृतोपनयनस्यवृथाचेष्टात्वापत्तौतत्फलार्थत्वेनविहितं, वेदांतराध्ययनचिकीर्षायांतदर्थत्वेनविहितमिति । तत्राद्यंतावद्बौधायनः—अमत्यासुरापानेकृच्छ्राब्दपादंचरित्वापुनरुपनयनमिति । औषधांतरानाश्यव्याध्युपशमनार्थंपैष्टीपानेएतदितिमदनरत्नेवसिष्ठः । मत्यामद्यपानेत्वसुरायाःसुरायाश्चाज्ञाने कृच्छ्रातिकृच्छ्रौघृतप्राशनंपुनःसंस्कारश्चेति । अत्रसुरायाश्चेतिसुराशब्दोनपैष्टीपरः । तदज्ञानपानेद्वादशाब्दोक्तेः । शूलपाणौयमः—अज्ञानाद्वारुणांपीत्वाप्राश्यमूत्रपुरीषयोः । पुनःसंस्कारमर्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयइति । यद्यपिसंस्कारशब्दोजातकर्मादिसाधारणस्तथापीदृशविधिषुसंस्कारशब्देनोपनयनमेवोच्यते । तस्यद्विजत्वसंपादनरूपातिशययोगेनबुद्ध्यारोहात् । अनंतरवक्ष्यमाणमनुवचसिवाक्यशेषेणतथाप्रतीतेश्च । भविष्ये—अज्ञानाद्वारुणींपीत्वासंस्कारेणैवशुद्ध्यति । तप्तकृच्छ्रान्वितेनेहकेवलेनतुशुद्ध्यति । तदप्युक्तव्याध्युपशमनार्थंपानएवाज्ञातकृतेबोध्यम् । स्मृत्यंतरे—रेतोमूत्रपुरीषा

णागौडीमाध्व्योश्चप्राशने । क्रव्यादपशुविष्ठानासंस्काराच्छुद्धिरिष्यते । मनुः—अज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रंसुरासंसृष्टमेवच । पुनःसंस्कारमर्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयः । वापनंमेखलादंडोभैक्षचर्याव्रतानिच । निवर्तंतेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणीति । एतदतीतसुरासंपर्कविषयम् । तप्तकृच्छ्रपूर्वकश्चैषविधिर्ज्ञेयो वक्ष्यमाणगौतमस्मृतिनिर्दिष्टविण्मूत्रसाहचर्यात् । विष्णुः—मलानांमद्यानामन्यतमस्यप्राशनेचांद्रायणंकुर्यात् । लशुनपलांडुगृंजनतद्गंधिविड्वराहग्रामकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेचसर्वेष्वेतेषुद्विजातीनांप्रायश्चित्तांतेपुनःसंस्कारंकुर्यादिति । ज्ञानतःसकृद्भक्षणेएतदितिशूलपाणिः । तत्रैवशातातपः—उष्ट्रीक्षीरमानुषीक्षीरप्राशनेपुनरुपनयनंतप्तकृच्छ्रंचेति । पानाभ्यासएतदितिशूलपाणिः । मिताक्षरायांपैठीनसिः—अविखरोष्ट्रमानुषीक्षीरप्राशनेतप्तकृच्छ्रंपुनरुपनयनंचेति । बृहस्पतिः—रेतोमूत्रपुरीषाणांशुद्ध्यैचांद्रायणंचरेत् । तप्तकृच्छ्रपूर्वकंपुनःसंस्कारंप्रकृत्यगौतमः—मूत्रपुरीषकुणपरेतसांप्राशनेचैवमिति । अत्रचांद्रायणतप्तकृच्छ्रयोर्ज्ञानाज्ञानाभ्यांव्यवस्था । संस्कारस्तूभयत्रतुल्यएवेतिशूलपाणिः । हेमाद्रौ—प्रेतशय्याप्रतिग्राहीपुनःसंस्कारमर्हतीति । आचारोद्द्योतेवृद्धमनुः—जीवन्यदिसमागच्छेद्घृतकुंभेनियोजयेत् । उद्धृत्यस्नापयित्वास्यजातकर्मादिकारयेत् । द्वादशाहव्रतंकुर्यात्त्रिरात्रमथवास्यतु । स्नात्वोद्वहेत्ततोभार्यामन्यांवातदभावतः । अग्नीनाधायविधिवद्व्रात्यस्तोमेनवायजेत् । अथैंद्राग्नेनपशुनागिरिंगत्वाचतत्रतु । इष्टिमायुष्मतींकुर्यादीप्सितांश्चक्रतूंस्तथा । प्रायश्चित्तोद्द्योते—सिंधुसौवीरसौराष्ट्रांस्तथाप्रत्यंतवासिनः । अंगवंगकलिंगांध्रान्गत्वासंस्कारमर्हति । एतच्चतीर्थयात्रांविनागमनेसतिबोध्यम् । तीर्थयात्रांविनागत्वापु

नःसंस्कारमर्हतीतिप्रयोगपारिजातेबौधायनस्मरणात् । मनुः—चांडालान्नंद्विजोभुक्त्वासम्यक्चाद्रायणंचरेत् । बुद्धिपूर्वंतुकृच्छ्राब्दंपुनःसंस्कारमेवचेति । अभ्यासविषयमेतदितिमदनरत्ने । पाराशर्यप्रायश्चित्तकांडे—अजिनंमेखलादंडोभैक्षचर्याव्रतानिच । निवर्तंतेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणीति । ब्रह्मचारिणंपुनःप्रकृत्यपैठीनसिः—मधुमांसाशनेत्रिरात्रमुपवासःपुनरुपनयनंचेति । अयंचत्रिरात्रोपवासःप्राजापत्याशक्तस्येत्युक्तंमदनरत्ने । एतयोरज्ञातभक्षणेकृच्छ्रः मत्या पराकः अभ्यासेद्विगुणंपुनःसंस्कारश्चेतिस्मृत्यर्थसारे । तथातत्रैव—मातापितृगुर्वाचार्योपाध्यायेभ्योऽन्यप्रेतसंस्कारेब्रह्मचारिणःपुनरुपनयनंकार्यमिति । तथारेतोविण्मूत्रकरनिर्मथितदधिबर्हिर्वेदिपुरोडाशभक्षणानामत्यंताभ्यासेऽतिकृच्छ्रःपुनरुपनयनंचेति । पराशरः—यःप्रत्यवासितोविप्रःप्रव्रज्यातोविनिर्गतः। अनाशकनिवृत्तश्चगार्हस्थ्यंचेच्चिकीर्षति । सचरेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानिच । जातकर्मादिभिःसर्वैःसंस्कृतःशुद्धिमाप्नुयात् । वसिष्ठः—संन्यस्यदुर्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंव्रजेद्यदि । सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतःषण्मासान्प्रत्यनंतरमिति । अत्रविप्रस्यषाण्मासिकःकृच्छ्रः क्षत्रियस्यचांद्रत्रयं वैश्यस्यकृच्छ्रत्रयमितिव्यवस्थोक्तामिताक्षरायांप्रघट्टके । कर्मनाशाजलस्पर्शात्करतोयाविलंघनात् । गंडकीबाहुतरणात्पुनःसंस्कारमर्हतीति । इत्थंविहितेप्रायश्चित्तभूतपुनरुपनयनेविशेषः । पारिजातमदनरत्नयोःकश्यपः—चीर्णप्रायश्चित्तःप्राच्यामुदीच्यांवादिशिगत्वायत्रग्राम्यपशूनांशब्दोनश्रूयतेतस्मिन्देशेग्निंप्रज्वाल्यब्रह्मासनमास्तीर्यप्राक्प्रणीतेनविधिनापुनःसंस्कारमर्हतीति । ब्रह्मासनमितिब्रह्मनियमार्थं ॥ ॥ ॥ ॥

पुनरुप-

अथद्वितीयउपनयनप्रकारः । समयोद्योते—विनर्तुनावसंतेनकृष्णपक्षेगलग्रहे । अपराह्णेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हति । तथादक्षिणोत्तराभ्यांपाणिभ्यांकुमारस्यांसाभिमर्शनपूर्वकंसमीपानयनविधायकहिरण्यकेशिसूत्रेमातृदत्तः । इदंप्रधान कर्मास्यविस्मरणेसर्वमावर्ततइति । वसिष्ठः—पापांशकगतेचंद्रेअरिनीचस्थितेपिच । अनध्यायेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हतीति ( दोषाधिक्यतात्पर्यग्राहकप्रायश्चित्तोपदेशाभावात् । अतःसर्वान्प्रत्यनध्यायत्वंत्रिपादीसिद्धंहेतुत्वेनादायचतुर्थपादेनपरिसंख्यांकुर्वताधरात्रादिगर्जननिमित्तानध्यायस्यापिनपुनःसंस्कारविधिगतानध्यायशब्देनग्रहणमितिदर्शितंभवति । सर्वेचत्रिरात्राकालिकाद्यनध्यायागर्जितादिनिमित्ततयाप्रतीयमानाःपौषादिमुख्यकालीनोत्सर्जनसापेक्षगर्जनादिनिमित्ताइतिकातीयसूत्रसंवादिनोक्तश्रुतिभाष्येणलभ्यतइतिनतस्योपनयनकालेप्रसक्तिर्नतरांपुनःसंस्कारनिमित्तत्वम् । अतःसिद्धमेतत् प्रातर्गर्जितनिमित्तानध्यायाःप्रतिपदाद्यनध्यायाश्चपुनःसंस्कारविधिगतानध्यायशब्देनगृह्यंतइति)। अत्र चानध्यायशब्देननानध्यायाःसर्वेपिसर्वान्प्रतिपुनःसंस्कारनिमित्तत्वेनसर्वदेशेषुविवक्षिताः । यतोहेमाद्रिरनध्यायप्रकरणे प्रसिद्धाप्रसिद्धानध्यायानुपन्यस्यांतेस्मृतिवाक्यमुदाजहार—चतुर्दश्यष्टमीपर्वप्रतिपत्स्वेवसर्वदा । दुर्मेधानामनध्यायस्त्वंतरागमनेषुचेति । शिष्टाअपिकलौपुरुषान्दुर्मेधान्मन्यमानाउक्तवाक्यवशेनवेदाध्ययनेएतानेवानध्यायान्वर्जयंतोदृश्यंते । उचितंचदुर्मेधत्वागीकारेणैवतेषांस्वस्वगृह्योक्तपौषादिकालेअध्ययनसंकोचापादकोत्सर्जनाननुष्ठानम् । पुष्येतूत्सर्जनंकुर्यादुपाकर्मदिनेपिवेतिछंदोगशाखीयखादिरगृह्यानुसारेणचोपाकर्मदिनेनुष्ठानम् । एवंचऐतरेयिणांमहाव्रतप्रकरणेत्रिरा

त्रानध्यायःपठ्यते—अपर्तौवर्षेत्रिरात्रंवैदिकेनाध्यायेनांतरियादिति । तथाआपस्तंबीयधर्मप्रश्नेपि—विद्युत्स्तनयित्नुर्वृष्टिश्चापर्तौयत्रसंनिपतेयुस्त्र्यहमनध्यायोयावद्भूमिर्व्युदकेत्येकइति । यश्चमनुनाऽकालिकानध्यायउक्तः—विद्युत्स्तनितवर्षेषुमहोल्कानांचसंप्लवे।आकालिकमनध्यायमेतेषुमनुरब्रवीदिति । तथा—प्रादुष्कृतेष्वग्निषुतुविद्युत्स्तनितनिःस्वने । सज्योतिःस्यादनध्यायःशेषेरात्रौयथादिवेति । यश्चस्मृत्यर्थसारेऽकालिकानध्यायउक्तः—अर्धरात्रादूर्ध्वंगर्जनेऽर्धरात्रे वाऽकालिकोनध्यायः प्रातःसंध्यागर्जितेत्वहोरात्रमिति। ईदृशसर्वानध्यायानांप्रतिपत्स्वेवेत्येवकारेणात्रह्येवावपंतीतिवह्निर्दोषश्रौतपरिसंख्यायादुर्मेधान्प्रतिज्ञापनात्तेषांतावदुक्तानध्यायदिनोपनयनंनपुनःसंस्कारनिमित्तम् । अतएवनमेधावतोपिप्रतितत्पुनःसंस्कारनिमित्तम् । दुर्मेधान्प्रतिनिषेधेनाध्ययनेचतुर्दश्यादिवदितरानध्यायानांनित्यत्वाभावनिर्णयेसतिनित्यचतुर्दश्याद्यनध्यायग्रहणेनोपनयनस्यपुनःसंस्कारविधिगतानध्यायशब्दस्यानित्यानध्यायग्राहकत्वासंभवात् । उक्तंहिपंचमे—अग्नीषोमीययागोत्कर्षपरतयाप्रतीयमानेनयदेवादःपौर्णमासंहविरितिवचनेनाग्नीषोमीयस्यपुरोडाशयागस्यैवोत्कर्षोनत्वग्नीषोमीयोपांशुयाजस्य नित्याग्नीषोमीयग्रहणेनोपपत्तावनित्याग्नीषोमीयग्रहणायोगादिति । किंचोज्वलायांहरदत्तेनधर्मप्रश्नगतोदाहृतवाक्यस्येत्थंव्याख्यानंकृतं—यस्मिन्देशेयोवर्षाकालस्ततोन्यस्तत्रापर्तुरिति । नचात्रवर्षाशब्दोवर्षर्तुपरः तस्यसर्वदेशेमासद्वयात्मकत्वात् तथैवोक्तश्रुतिभाष्येउक्तत्वाच्च किंतुवृष्टिपरः । एवंचयस्मिन्माघादिकालेवृष्टिर्यत्रनियतानासावपर्तुः । दृश्यतेचयथावृष्टिकालोदक्षिणायनएकस्तथोदगयनेप्यपरइत्यर्थस्यज्ञापकंमहाभारतेवै

पुनरुप.

राटपर्वणिबृहन्नडावाक्यमुत्तरंप्रति—गांडीवमेतत्पार्थस्यलोकेषुविदितंधनुरितिप्रकृत्य—एतद्वर्षसहस्रंतुब्रह्मापूर्वमधारयत् । ततोनंतरमेवाथप्रजापतिरधारयत् । त्रीणिपंचशतंचैवशक्रोऽशीतिंचपंचच । सोमःपंचशतंराजातथैववरुणःशतम् । पार्थःपंचचषष्टिंचतथैवश्वेतवाहनइति । अत्रचखांडवदाहानंतरलब्धधनुषःपार्थकर्तृकधारणेपंचषष्टिवत्सरात्मकवर्षाणां वाधितत्वाद्वर्षशब्दंवृष्टिकालपरंस्वीकृत्यैकैकस्मिन्वत्सरेद्वौद्वावुक्तरीत्यावृष्टिकालावभिप्रेत्यसार्धद्वात्रिंशद्वत्सराःपंचषष्टिवर्षशब्देऽविवक्षिताइत्यवश्यंवाच्यम् । अन्यथाअतीतानागतवत्सराभिप्रायव्याख्यानेभूतनिर्देशानुपपत्तेः । किंचयावद्भूमिव्युदकेतिधर्मप्रश्नएवपक्षांतरसत्वान्नत्रिरात्रानध्यायस्यानित्यत्वम् । नापिमनूक्ताकालिकस्यानित्यत्वम् । उक्तमनुवाक्ये एतेषुमनुरब्रवीदितिचतुर्थपादस्यश्लोकपूरणार्थत्वेऽनुशयंमन्यमानोमेधातिथिर्यतआहमनुरब्रवीदित्युक्तिर्विकल्पार्थेत्यन्ये इति । किंचप्रादुष्कृतेष्वितिवाक्यशेषादपितद्दिनेप्रातःसन्निपातएवाकालिकानध्यायनिमित्तंनपूर्वदिनेसायंसंध्यागतोपीतिप्रतीयते । यतोत्रव्याख्यातृभिरेवंव्याख्यातं शेषतौवृष्टिकालभिन्नकालेउक्तनिमित्तेचरणत्रयोक्तसज्योतिरनध्यायवशेनयथादिवानध्यायस्तथारात्रावपीतिसायंसंध्यागतनिमित्तवशेनसज्योतिरनध्यायेचदिवानध्यायस्याप्राप्तस्यानुवादासंभवः । रात्रावनध्यायस्यचप्राप्तस्यविध्यसंभवः प्रातःसंध्यानिमित्तेचतयोःसंभवइतिशाब्दन्यायविद्भिरालोचनीयम् । अतोपिनमनूक्ताकालिकस्यनित्यत्वम् । नापिस्मृत्यर्थसारोक्ताकालिकानध्यायस्यानित्यतयापुनःसंस्कारविधिगतानध्यायपदेनग्रहणम् । यतोस्तिवसिष्ठवचोलल्लादिनिबंधोदाहृतम्—प्रत्येह्निपूर्वसंध्यायांवारिदोयदिगर्जति । तद्दिनेस्यादन

ध्यायोत्रतंतत्रविवर्जयेदिति, तन्निषेधमुखपरिसंख्यांकुर्वन्प्रातःसंध्यान्यकालीनगर्जननिमित्तानध्यायंनोपनयनेविवर्जयेदित्यर्थपरंभवति नभूपालैरनुत्सवइतिवत् । नचदुर्मेधान्प्रतिप्रातर्गर्जितनिमित्तानध्यायप्रतिप्रसवार्थमेतदितिशंक्यम् । त्रिपाद्यैतदुपपत्तौचतुर्थपादानर्थक्यापत्तेः । नापिदोषाधिक्यार्थेनश्रोत्रियोहंतव्यइत्यत्रेवदोषाधिक्यतात्पर्यग्राहकप्रायश्चित्तोपदेशाभावात् । अतःसर्वान्प्रत्यनध्यायत्वंत्रिपादीसिद्धंहेतुत्वेनादायचतुर्थपादेनपरिसंख्यांकुर्वता ऊर्ध्वरात्रादिगर्जननिमित्तानध्यायस्यापिनपुनःसंस्कारविधिगतानध्यायशब्देनग्रहणमितिदर्शितंभवति । सर्वत्रत्रिरात्राकालिकाद्यनध्यायागर्जितादिनिमित्ततयाप्रतीयमानाःपौषादिमुख्यकालीनोत्सर्जनसापेक्षगर्जनादिनिमित्ताइतिकातीयसूत्रसंवादिनोक्तश्रुतिभाष्येणलभ्यतइतिनतस्योपनयनकालेप्रसक्तिर्नतरांपुनःसंस्कारनिमित्तत्वम् । अतःसिद्धमेतत् प्रातर्गर्जितनिमित्तानध्यायःप्रतिपदाद्यनध्यायश्चपुनःसंस्कारविधिगतानध्यायशब्देनगृह्यतइति ॥ ॥ अथतृतीयप्रकारः । तत्रजयंतः—यजुर्वेदंचाधीत्यऋग्वेदमध्येतुकामस्यैतदेवोपनयनमलंकारवर्जंभवतीति । गृह्यकारिकायाम्—वेदांतरमधीत्यैवमृग्वेदंयेत्वधीयते । उपनीतिरियंतेषामलंकरणवर्जितेति । पारिजातेभगवान्—द्वितीयमिममृग्वेदमध्येतुमभिवांच्छया । एतद्गृह्योक्तविधिनापुनश्चैवोपनीयतइति । इतितृतीयप्रकारः । अयंचप्रकारोनतैत्तिरीयाणाम् । यथोक्तमापस्तंबेनधर्मप्रश्ने—सर्वेभ्योवैवेदेभ्यःसावित्र्यनूच्यतइतिहिब्राह्मणमिति । व्याख्यातमेतदित्थमुज्वलायाम्—त्रिभ्यएवतुवेदेभ्यःपादंपादमदूदुहत् । तदित्यृचोस्याःसावित्र्याःपरमेष्ठीप्रजापतिरिति । मनुः—ततश्चोपनयनसावित्र्याअनुवचनंतन्मुखेन

सर्वेवेदा अनूक्ता भवंति । अतोगृह्यमाणविशेषत्वादेकमेवोपपन्नंसर्वार्थम् । आथर्वणार्थंतुपृथगुपनयनंकार्यंनान्यत्रसंस्कृतो भृग्वंगिरसोधीयीतेतिश्रुतेः भृग्वंगिरसआथर्वणमिति ॥ पुनरुपनयनेविशेषमाहाश्वलायनः—अथोपेतपूर्वस्यकृताकृतंकेशवपनंमेधाजननंचानिरुक्तंपरिदानंकालश्चतत्सवितुर्वृणीमहइतिसावित्रीमिति । अनिरुक्तंनभवति । इदंचवृत्ति[1]कारजयंतपर्यालोचनेप्रायश्चित्तभूतपुनरुपनयनविषयमेवप्रतीयते । प्रायश्चित्तत्वेनपुनरुपनयनप्राप्तावेवंकुर्यादितिवृत्तिकृतैतद्व्या[2]ख्यानेभिधानात् । जयंतेनप्रायश्चित्तनिमित्तंयस्यपुनरुपनयनंक्रियतेतस्यायंविधिरुच्यतइत्युपक्रम्यैतत्सूत्रव्याख्यानात् । यदैतदुपनीतस्यप्रायश्चित्तंतदाभवेत् । कृताकृतंचवपनंमेधाजननमेवच । मेधाजननसद्भावेव्रतचर्याभवेदिह । अनुप्रवचनीयश्चतदभावेद्वयंनच । परिदानंनकार्यंस्यान्निमित्तानंतरंत्विदम् । पूर्वस्यवाचयेत्स्थानेतत्सवितुर्वृणीमहे । भणितोत्रविशेषोयंसमानमितरद्भवेदितिकारिकोक्तेश्चनिमित्तानंतरंत्विदमित्युक्त्याचनैमित्तिकेनिमित्तानंतर्यस्योचितत्वान्न्यायमूलकंकालश्चेतिसूत्रं । निमित्तानंतर्यासंभवेतुजातेष्टिवदुदगयनादिकालोपेक्षणीयएवेतिसूचितम् । परिदानंकस्यब्रह्मचार्यसीत्यादेःपरिददामीत्यंतस्यमंत्रस्योच्चारणम् । भणितोत्रेतिप्रायश्चित्तार्थेपुनरुपनयनएवगायत्र्याःस्थानएषाऋग्भवति नतुतदनंतरभाविषुब्रह्मयज्ञादिष्वपि तत्रपूर्वविहितगायत्रीबाधेमानाभावादितिदर्शयति । मातृदत्तोपि—अत्रसावित्रींवाचयतियदिपुरस्तादुपेतोभवतितर्हिअनुपतेतस्त्र्यहेप्रायश्चित्तार्थंपुनरुपनयनांतर्गतसावित्रीवाचनांगत्वेनपरिदानांतंयंकालवि

---

[1] वृत्तिकारिकाजयंत । [2] व्याख्यांतेभिधानात् ।

धिंवदंस्तस्मिन्नेवप्रकरणेपरिदानसूत्रेपुनरुपनयनविषयत्वमेवदर्शितत्वात् तस्मिन्नेवप्रकरणेतत्सूत्रव्याख्याकाले अहतवासोमेखलाजिनभैक्षचर्यादंडानामत्रनिवृत्तिःपुनरुपनयनइत्याह । हरदत्तेनतु—अथोपेतपूर्वस्येतिसूत्रीयव्याख्यावसरेउक्तम् अथानंतरंवेदांतरे उपेतपूर्वोयइमंवेदमध्येतुमिच्छतितस्योपनयनेविशेषोवक्ष्यतइति । अस्तिचतदनुसारिणी स्मृतिः पारिजाते—अध्वर्यूणांसामगानामेवमध्येतुमिच्छताम् । क्रियास्यात्परिदानांतादीक्षादिर्नविधीयते । ब्रह्मौदनंचमेधार्थादीक्षाचनविधीयते । ऋचमध्येतुकामानांदीक्षामिच्छंतिकेचनेति । अत्राध्वर्युसामग्रहणस्यायमाशयः—ऋग्वेदाध्ययनांगभूतमेवोपनयनमाश्वलायनोक्तेतिकर्तव्यताकंभवति । सत्यप्युप[1]नयनैक्येतत्तदाम्नायाध्ययनांगभूतएतस्मिंस्तत्तद्गृह्योक्तेतिकर्तव्यताभवतीतिस्मृतिपादेन्यायसुधायामुक्तेः । नचऋग्वेदिनांतदध्ययनार्थंपुनरुपनयनंभवति । तैःप्रथमोपनयनानंतरमेवतदध्ययनस्योचितत्वात् । अतोन्यवेदिनामेवऋग्वेदार्थेपुनरुपनयनेऽयंविधिरिति । अतएवपूर्वोदाहृतजयंतकारिकयोर्ऋग्वेदग्रहणंकृतम् । यच्चतत्रहरदत्तीयेचऋग्वेदाध्ययनपूर्वकएववेदांतराध्ययनेषुपुनरुपनयनकथनंतेनयुगपदनेकवेदारंभेनोपनयनावृत्त्यपेक्षेतिसूचितम् । अस्तिह्यन्यवेदिनांकामिकवेदारंभपक्षोयुगप[2]त्तदारंभपक्षश्च । तथाच हरिहरेणोपनयनानंतरंवेदारंभसमयइत्युक्त्वावेदारंभांगभूताःकात्यायनोक्ताआहुतीर्दश।यथोक्तम्—यदिऋग्वेदआरभ्यतेतदापृथिव्यैस्वाहा अग्नयेस्वाहेति।यदियजुर्वेदः अंतरिक्षायस्वाहा वायवेस्वाहेति । यदिसामवेदः दिग्भ्यःस्वाहा

---

[1] नयनेयैक्ये । [2] तदास्मत्पक्षश्च ।

चंद्रमसेस्वाहेति । यद्येकदासर्ववेदारंभः प्रतिवेदंवेदाहुतिद्वयंहुत्वाप्रायश्चित्ताहुतीर्जुहुयादिति । अतश्चयुगपदनेकवेदारंभेषुसकृदुपनयनेनैवसकलवेदारंभसिद्धिरित्यभिप्रेत्योक्तमापस्तंबेन—सर्वेभ्योवैवेदेभ्यःसावित्र्यनूच्यतइतिसंक्षेपः । वेदातराध्ययनपूर्वकमृग्वेदाध्ययनचिकीर्षताआश्वलायनोक्तेतिकर्तव्यताकंपुनरुपनयनंकार्यम् । तत्रजयंतकारिकामतेऽलंकारमात्रवर्जं, हरदत्तमतेसूत्रोक्तसकलपुनरुपनयनगतविशेषविशिष्टंभवति । स्मृतिमतेतुदीक्षापिवैकल्पिकी । द्वितीयपुनरुपनयननिमित्तेत्वविकृतपुनरुपनयनंकार्यं गार्हपत्याधानात्प्राक्सूर्योदयेविकृताधानवत् । तत्रपुनरुपनयनेक्वचिदपिग्रंथेविशेषानुक्तेः अथोपेतपूर्वस्येतिसूत्रस्यतत्राप्रवृत्तेश्च । प्रायश्चित्तभूतपुनरुपनयनेतूक्तवचनेभ्योनेकविशेषावगतेस्तत्प्रयोगोलिख्यते—तच्चयत्रप्रायश्चित्तांतरसहितंविहितंतत्रपर्षदुपदिष्टविधिनातत्प्रायश्चित्तंकृत्वाकार्यं यथोष्ट्रीपानादौ । यत्रजातकर्मादिसंस्कारसहितंविहितं तत्रनिमित्तानंतरकरणपक्षेपुण्यनक्षत्राद्यनालोच्य पर्षदुपदेशेनचौलांतसंस्कारान्कृत्वाकार्यम् । अन्यथोचितंनक्षत्राद्यावश्यकम् । कर्ताचपितृसत्वेसएव तदभावेपितृव्यादिसपिंडः तदभावेकश्चित् । पुनरुपनयनंयत्रचिकीर्षितंतत्रैवदेशेजातकर्मादयःकार्याः । अस्यकृतौर्ध्वदेहिकस्यपुनःसंस्कारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंजातकर्मादीन्युपनयनांतानिकर्माणिकरिष्यइतिसंकल्प्यसर्वोद्देशेनस्वस्तिवाचनादिश्मश्रुवापनानंतरंचौलेकेशवापनमितिविशेषोमहद्वयसः । विवाहसंकल्पंतदर्थंस्वस्तिवाचनादिकंतुस्वयमेवपृथक्कुर्यात् । एवंनिमित्तांतरेपिसंकल्पऊह्यः । यत्रतुपुनरुपनयनमात्रंप्रायश्चित्तत्वेनविहितंतत्रपर्षदुपदिष्टविधिनातदेवकार्यम् । तत्राचार्यः कृच्छ्रत्रयंद्वादशसहस्रंतत्सवितुर्वृणीम

हइत्यस्यजपंकुर्वीत । संस्कार्योनिमित्तांतरोपनयनेप्रायश्चित्तंकालांतरोपनयनेत्वेवंसंस्कुर्यात् । ततोग्रामात्प्राच्यामुदीच्यांवादिशिगत्वायत्रग्राम्यपशुशब्दोनश्रूयतेतादृशदेशंमार्जनोपलेपनाभ्यांशोधयित्वा तत्रकृतनित्यक्रियआचार्यःस्वदक्षिणतः संस्कार्यमुपवेश्य अस्यप्रत्यंतदेशगमनजनितदोषनिरसनेनपुनःसंस्कारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपुनरुपनयनंकरिष्य इत्येवंतन्निमित्तानुसारिसंकल्पंकृत्वा तदंगभूतेत्यादिसंकल्पपूर्वकंमंडपदेवताप्रतिष्ठापनांतंकुर्यात् । स्वस्तिवाचनेऽग्निः प्रीयतामितिविशेषः । पुनरुपनयनेऽग्निरितिबौधायनोक्तेः । कृतमंगलस्नानंसंस्कार्यंभोजयित्वा वपनपक्षेसंकल्पपूर्वकंवपनस्नानेकारयित्वा अन्यथाऽकारयित्वानित्योपनयनवदन्वाधानात्प्राक्तंत्रंकृत्वा अस्यप्रायश्चित्तार्थंपुनरुपनयनहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिप्रोक्षणांतंनित्यवत्कुर्यात् । ततोब्रह्माणमुपवेश्यप्रणीताप्रणयनाद्याज्यभागांतंकृत्वा वासोधारणपक्षेनित्यवत्समंत्रंधारणंतयोःकुर्यात् । तदभावपक्षेपूर्वमेवकुमारेणपरिहितवस्त्रेणभवितव्यम् । ततोब्रह्मचारिणःपुनरुपनयनेतुवस्त्रादिनित्यंयज्ञोपवीतधारणाद्यादित्येक्षणांतंनित्यवत्कुर्यात् । ततोयुवासुवासाइत्येतन्मंत्रेणप्रदक्षिणमावर्तनादिवाससापाणिभ्यांतदंजलिग्रहणांतंकृत्वा प्रणवव्याहृतीनामृष्यादिस्मरणांते तत्सवितुःश्यावाश्वःसवितानुष्टुप् पुनरुपनयनेविनियोगः । प्रथमंपादशःस्वयमुक्त्वावाचयेत् ततोर्धर्चशः ततःसर्वाम् । ततोमेखलादंडदानपक्षेसमंत्रकंतद्दानंकृत्वांब्रह्मचर्यमादिशेत् । यदिब्रह्मचारिणोऽसमापितवेदस्यपुनरुपनयनंनित्यवत् (?) । अन्य

---

१ मन्यथाकृत्वा ।

थास्यतादृशस्यपुनरुपनयनेतु अपोशान कर्मकुरु दिवामास्वाप्सीः वेदमधीष्वेति । समापितवेदस्यतुस्वाप्सीरित्यंतमेव । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । मेधाजननकरणपक्षेतत्पर्यंतमग्निंरक्षेत् व्रतचर्यांचकुर्यात् । उपनयनदिनेभिक्षायाचनपूर्वकमनुप्रवचनीयंच । तत्रगायत्र्याःस्थानेतत्सवितुर्वृणीमहइत्येतांपठित्वाद्वितीयामाहुतिंजुहुयात् । उक्तमृष्यादि । नित्यस्त्यागः । यद्यसमापितवेदस्यपुनरुपनयनंवेदसमाप्तिवाचनंकुर्यान्नान्यथा । ततस्त्रिरात्रंद्वादशरात्रमब्दंवाव्रतचर्यांतस्यांकृतायांमेधाजननम् । तत्रयदिपुनरुपनीतोब्रह्मचारीतदायस्यपलाशस्यकुशस्तंबस्यवोक्षणंकृतंतत्रैवमेखलादीनिव्युदस्यनव्यानिधारयेत् । अन्यस्तुपुनरुपनीतो[1]योषिद्धृतमेखलादिःसव्युदस्यनान्यानिधारयेत् । यस्मिन्नाश्रमेपुनरुपनयनंप्राप्तंतदाश्रमधर्मान्कुर्यात् । यत्रतुपुनरुपनयनानंतरमाश्रमांतरस्वीकारःश्रूयते । यथा—स्नात्वोद्वहेत्ततोभार्यामित्यादौ तत्रमेखलादीनिव्युदस्यपुनस्तानिधारयित्वाब्रह्मचारीव्रतचर्यामुचितकालेनसमाप्य विधिनाआश्रमांतरंस्वीकुर्यात् । इतिश्रीमदनंतदेवकृतसंस्कारकौस्तुभेबह्वृचानांपुनःसंस्कारविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथयजुःशाखिनाम् । तत्रबौधायनः—अथोपनीतस्यव्रत्यानिभवंति नान्यस्योच्छिष्टंभुंजीतान्यत्रपितृज्येष्ठाभ्यांनस्त्रियासहभुंजीतमधुमांसंश्राद्धसूतकान्नानिर्दे[2]शाहसंधिनीक्षीरंछत्राकनिर्यासौविलापनंगणान्नंगणिकान्नमित्येतेषुपुनःसंस्कारःप्रतिषिद्धदेशगमनमित्येकेषामथाप्युदाहरंति—सुराष्ट्रंसिंधुसौवीरमवंतीदक्षिणापथम् । एतानिब्राह्मणोगत्वापुनःसंस्कार

---

[1] योपिव्रतमेख । [2] न्ननिर्दशाहंसंधिनी ।

मर्हतीत्यथपुनःसंस्कारंव्याख्यास्यामोऽथदेवयजनोल्लेपनप्रभृत्याग्निमुखान्कृत्वापालाशींसमिधमाज्येनवाभ्या(?)धायवाचयति पुनस्त्वादित्यारुद्राव० कामाःस्वाहेत्यथात्रत्यप्रायश्चित्तेजुहोति यन्मआत्मनोमिंदाभू० पुनरग्निश्चक्षुरदादिति द्वाभ्यां अथपक्कान्जुहोति सप्ततेअग्ने० घृतेनस्वाहा अथाज्याहुतीरुपजुहोति येनदेवाःपवित्रेणेतितिसृभिरनुछंदसंस्विष्टकृत्प्रभृतिसिद्धमाधेनुवरप्रदानात्। अथापरमापरिधानान्कृत्वापालाशींसमिधमाधायाथात्रत्यप्रायश्चित्तेजुहोति अथव्याहृतीर्जुहोति । अथापरोब्राह्मणवचनादेवसावित्र्याशतकृत्वोघृतमभिमंत्र्यप्राश्यकृतप्रायश्चित्तोभवतिगुरोर्वाप्युच्छिष्टंभुंजीताप्युदाहरंति वपनंदक्षिणादानं । मेखलांदंडमजिनंभैक्षचर्याव्रतानिच । एतानिननिवर्तंतेपुनःसंस्कारकर्मणीत्येतेन पुनःसंस्काराव्याख्याताइति। अत्रशक्ताशक्तभेदेनगुरुलघुकल्पव्यवस्थावोध्या ॥ ब्राह्मणप्रीतयेऽकारिपुनःसंस्कारपद्धतिः । प्रीतस्तत्प्रीतितःकुर्याच्छंनोविष्णुरुरुक्रमः ॥ ॥ इतिश्रीमदनंतदेवकृतासंस्कारकौस्तुभेपुनःसंस्कारपद्धतिः ॥ ॥

अथब्रह्मचारिधर्माः । मनुः—प्रतिगृह्येप्सितंदंडमुपस्थायचभास्करम् । प्रदक्षिणंपरीत्याग्निंचरेद्भैक्षंयथाविधीति । एतद्व्याख्यामाहमाधवः—दंडप्रतिग्रहांतमुपनयनंप्राप्यगायत्र्यर्थंभास्करमुपस्थायसोहमितिज्ञात्वाग्निंपरिचर्यभैक्षंपरिचरेदिति । परिचर्यार्थंसमिदाहरणमाहवैजवापः—पुरास्तमयात्प्रागुदीचींदिशंगत्वाहिंसन्नरण्यात्समिधमाहरेच्छुष्कांब्रह्मवर्चसकामआर्द्रामन्नाद्यकामउभयीमुभयकामइति। जातिनियमोवायुपुराणे——पालाश्यःसमिधःकार्याःखादिर्यस्तदलाभतः । शमीरोहितकाश्वत्थास्तदभावेऽर्कवेतसाविति । याज्ञवल्क्यः——आदिमध्यावसानेषुभवच्छब्दोपलक्षिता । ब्राह्मणक्ष

त्रियविशांभैक्षचर्यायथाक्रममिति । व्यासः—ब्राह्मणक्षत्रियविशश्चरेयुर्भैक्षमन्वहम् । सजातीयगृहेष्वेवसार्ववर्णिकमेववेति । अत्रद्वितीयपक्षआपद्विषयइत्युक्तंभविष्ये—चातुर्वर्ण्यंचरेद्भैक्षमलाभेकुरुनंदनेति । आपद्यपिनशूद्रात्पक्वंगृह्णीयात् । आममेवाददीतास्मादवृत्तावेकरात्रकमित्यंगिरोवचनात् । मनुः—वेदयज्ञैरहीनानांप्रशस्तानांस्वकर्मसु । ब्रह्मचार्याहरेद्भैक्षंगृहेभ्यःप्रयतोऽन्वहम् । समाहृत्यतुतद्भैक्षंयावदर्थममायया । निवेद्यगुरवेऽश्नीयादाचम्यप्राङ्मुखःशुचिः । भैक्षेणवर्तयेन्नित्यंनैकान्नाशीभवेद्द्विजः । भैक्षेणव्रतिनोवृत्तिरुपवाससमास्मृता । व्रतेवादेवदेवत्येपित्र्येकर्मण्यथर्षिवत् । काममभ्यर्थितोऽश्नीयाद्व्रतमस्यनलुप्यतइति । भैक्षचर्यायानित्यत्वमाहसएव—अग्नींधनंभैक्षचर्यामधःशय्यांगुरोर्हितम् । आसमावर्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनोद्विजइति । सुमंतुरपि—ब्रह्मचर्यंतपोभैक्षंसंध्ययोरग्निकर्मच । स्वाध्यायोगुरुवृत्तिश्चचर्येयंब्रह्मचारिणइति । स्वाध्यायोब्रह्मयज्ञः । सचोपाकरणात्पूर्वमपिगायत्र्याकार्यः । अनुपाकृतवेदस्यकर्तव्योब्रह्मयज्ञकः । वेदस्थानेतुसावित्रीगृह्यतेतत्समीपतइति । कौर्मे—नादर्शंचैववीक्षेतनाचरेद्दंतधावनम् । गुरूच्छिष्टंभेषजार्थंप्रयुंजीतनकामतइति । अत्र—मधुमांसांजनोच्छिष्टशुक्रस्त्रीप्राणिहिंसनम् । भास्करालोकनाश्लीलपरिवादादिवर्जयेदितियाज्ञवल्क्येननिषिद्धमध्वादेस्तदन्यानिवर्त्यरोगपरिहारायावश्यकभक्षणप्रसक्तौगुरूच्छिष्टतद्भक्षणप्रतिप्रसवःक्रियते । तदन्यगुरूच्छिष्टभोजनस्यपुण्यजनकत्वात् । पितुर्ज्येष्ठस्यचभ्रातुरुच्छिष्टंभोज्यमित्यादिस्मृतिपौराणवाक्यैस्तथाबोधनात् । तांबूलादिवर्जनमाहप्रचेताः—तांबूलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनम् । यतिश्चब्रह्मचारीचविधवाचविवर्जयेदिति । माधवीये

भृगुः—सदोपवीतिनाभाव्यंसदाबद्धशिखेनच । विशिखोव्युपवीतश्चयत्करोतिनतत्कृतमिति । यमः—दंडंकमंडलुंवेदंमौंजींचरशनांतथा । धारयेद्व्रतयुक्तंचभिक्षान्नाशीगुरौवसन् । मेखलामजिनंदंडमुपवीतंचनित्यशः । कौपीनंकटिसूत्रंचब्रह्मचारीचधारयेदिति । वेदोदर्भमुष्टिरितिमाधवः । त्रुटितानांप्रतिपत्तिंमनुः—मेखलामजिनंदंडमुपवीतंकमंडलुम् । अप्सुप्रास्यविनष्टानिगृह्णीतान्यानिमंत्रतइति । उपनयनप्रकरणोक्तैर्मंत्रैरित्यर्थः । उपवीतनाशेविशेषंहारीतः—मनोत्रातपतीभिश्चतस्रोंहुत्वापुनःप्रतीयादिति । मनोज्योतिरित्येकात्रातपतीभिस्तिस्रइत्यर्थः । व्यासः—जघन्यशायीपूर्वंस्यादुत्थायीगुरुवेश्मनि । यच्चशिष्येणकर्तव्यंयच्चदासेनवापुनः । कृतमित्येवतत्सर्वंकृत्वातिष्ठेत्तुपार्श्वतइति । तथा—अभुक्तवतिनाश्नीयादपीतवतिनोपिबेत् । नतिष्ठतितथासीतनासुप्तेप्रस्वपेत्तथेति । ईदृशीगुरुशुश्रूषाचावर्त्यमानैवनिर्विघ्नतयावेदविद्यांसवीर्यांकरोतीतिजैमिनीयतंत्रे । आचाराद्गृह्यमाणेषुतथास्यादित्यादिप्रदेशेषूपपादितंतदीयैः । इतिब्रह्मचारिधर्माः॥

अथतदतिक्रमेप्रायश्चित्तं स्मृत्यर्थसारे—संध्याग्निकार्यलोपेस्नात्वाष्टसहस्रजपः भिक्षालोपेऽष्टशतम् अभ्यासेद्विगुणंपुनःसंस्कारश्चेति । जपश्चायंगायत्र्याः ।—यःसंध्यांचैवनोपास्तेअग्निकार्यंयथाविधि । गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नात्वासमाहितइति । शातातपः—ब्रह्मचारीतुयोऽश्नीयान्मधुमांसंतथैवच । प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंव्रतशेषंसमापयेदिति । मनुः—अवकीर्णीतुकाणेनगर्दभेनचतुष्पथे । पाकयज्ञविधानेनयजेद्वैनिर्ऋतिंनिशीति । एकानेकव्रतलोपसाधारणंप्रायश्चित्तमुक्तमृग्विधाने—तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंचैवशिवालये । ब्रह्मचारीस्वधर्मेषुन्यूनंचेत्पूर्णमेतितदिति । इतिश्रीसंस्कारकौस्तु

भेब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तम् ॥ ॥ उपाकर्मकालनिर्णयस्तत्प्रयोगश्चसंवत्सरकौस्तुभेनिरूपितइतिनेहनिरूप्यते । तथाविद्यारंभकालस्तत्रविहितोहरिलक्ष्मीपूजादिर्गुरुपूजांतप्रकारश्चाक्षरारंभांगत्वेनप्रागुपन्यस्तोवेदारंभेपिद्रष्टव्यः ॥ ॥ अथानध्यायाः । माधवेहारीतः—प्रतिपत्सुचतुर्दश्यामष्टम्यांपर्वणोर्द्वयोः । श्वोऽनध्यायेऽद्यशर्वर्यांनाधीयीतकदाचनेति । श्वइतिउदयानंतरमनध्यायतिथिसत्वे । तदनंतरंस्वाध्यायतिथिसत्वेतुनपूर्वशर्वर्यामनध्यायइतिशिष्टाः । उक्ततिथीनामहोरात्रानध्यायनियामकपरिमाणंस्मृत्यर्थसारे—उदयेस्तमयेचापिमुहूर्तत्रयगामियत् । तद्दिनंतदहोरात्रमनध्यायविदोविदुरिति । दिनंचांद्रं तिथिरितियावत् । यद्यस्मिन्नहोरात्रे अनध्यायत्वेनतद्विदुरित्यर्थः । तत्रैवकौर्मे—उपाकर्मणिचोत्सर्गेत्रिरात्रंक्षपणंस्मृतम् । अष्टकासुत्वहोरात्रमृत्वंतासुचरात्रिषु । अत्रर्तवःसौराः तदंतरात्रीणामप्राप्तानध्यायत्वप्रापणेऽर्थवत्त्वात् । गौतमः—कार्तिकीफाल्गुन्याषाढीपौर्णमासीस्तिस्रोऽष्टकास्त्रिरात्रमिति । उक्तपौर्णमासीरारभ्यत्रिरात्रंतथातिस्रोष्टकाःसप्तम्यादयोष्टकासंबंधिन्यस्तिथयस्तास्वनध्ययनमितिमाधवेनव्याख्यातम् । तत्रैवनारदः—अयनेविषुवेचैवशयनेबोधनेहरेः । अनध्यायस्तुकर्तव्योमन्वादिषुयुगादिषु । एतेकालाःसंवत्सरकृत्यगततत्तन्निर्णयानुसारेणबोध्याः । आपस्तंबः—श्रावण्यांपौर्णमास्यामनध्यायमुपाकृत्यमासंप्रदोषेनाधीयीतेति । प्रदोषशब्देनात्रपूर्वरात्रिर्विवक्षितेतिमाधवः । त्रयोदश्यादिप्रदोषेष्वपिनाध्येयमित्यस्मिन्नर्थेपौराणंवाक्यंतत्रैवोदाहृतम्—मेधाकामस्त्रयोदश्यांसप्तम्यांचविशेषतः । चतुर्थ्यांचप्रदोषेषुनस्मरेन्नचकीर्तयेदिति । नस्मरेदित्यन्यानध्यायेभ्योऽत्रदोषाधिक्यंध्वन्यते । त्रयोदश्या

दिद्वैविध्येनिर्णयंतत्रैवप्रजापतिः—षष्ठीचद्वादशीचैवअर्धरात्रोननाडिका । प्रदोषेनत्वधीयीततृतीयानवनाडिकेति । अनेनेदृशस्थलेपूर्वदिनएवप्रदोषप्रयुक्तोऽध्ययननिषेधोनतूत्तररात्रिमुखेसप्तम्यादिसत्वेपीतिनियम्यते । याज्ञवल्क्यः—त्र्यहंप्रेतेष्वनध्यायःशिष्यर्त्विग्गुरुबंधुषु । उपाकर्मणिचोत्सर्गेस्वशाखाश्रोत्रियेतथा । संध्यागर्जितनिर्घातभूकंपोल्कानिपातने । समाप्यवेदंद्युनिशमारण्यकमधीत्यच । पंचदश्यांचतुर्दश्यामष्टम्यांराहुसूतके । ऋतुसंधिषुभुक्त्वाचश्राद्धिकंप्रतिगृह्यच । श्राद्धिकमित्यस्यपूर्वोत्तरक्रियाभ्यांसंबंधः । एतत्पार्वणविषयम् । एकोद्दिष्टान्नभोजनादौतुत्र्यहमितिमन्वादयः । पशुमंडूकनकुलश्वाहिमार्जारमूषकैः । कृतेंतरेत्वहोरात्रंशक्रपातेतथोच्छ्रयइति । तात्कालिकानध्यायानपिसएव—श्वक्रोष्टृगर्दभोलूकसामबाणार्तनिःस्वने । अमेध्यशवशूद्रांत्यस्मशानपतितांतिके । देशेऽशुचावात्मनिचविद्युत्स्तनितसंप्लवे । भुक्त्वार्द्रपाणिरंभोंतरर्धरात्रेऽतिमारुते । पांसुप्रवर्षेदिग्दाहेसंध्यानीहारभीतिषु । धावतःपूतिगंधेचशिष्टेचगृहमागते । खरोष्ट्रयानहस्त्यश्वनौवृक्षेरिणरोहणे । सप्तत्रिंशदनध्यायानेतांस्तात्कालिकान्विदुरिति । विद्युतिविशेषंगौतमः—विद्युतिनक्तंचापररात्रात्रिभागादिप्रवृत्तौसर्वमिति । पूर्वरात्रौविद्युतिअपररात्रावधिरनध्यायः । दिनतृतीयांशोत्तरंतस्यांरात्रिसमाप्तिपर्यंतं । एतद्वर्षातिरिक्तविषयं वर्षासुतुतात्कालिकइतिव्यवस्था । गर्जितेविशेषंहारीतः—सायंसंध्यास्तनितेरात्रिः प्रातःसंध्यास्तनितेऽहोरात्रमिति । विष्णुः—नवादित्रशब्देनशूद्रपतितयोःसमीपे नदेवतायतनस्मशानचतुष्पथरथ्यासुनोदकांतः नपीठोपहितपादः नहस्त्यश्वोष्ट्रनौगोयानेषु नवांतोनविरिक्तोनाजीर्णीनपंचनखांतरागमन

इति । पीठेतितदुपरिस्थापितपादतलइत्यर्थः । यानेषुतिष्ठन्नितिशेषः वांतःकृतवमनः विरिक्तःकृतविरेकः अजीर्णीतियावत् । भुक्तपाकपर्यंतं । पंचनखाःश्वादयः । तदंतरागमनेविशेषःस्मृत्यर्थसारे—आरण्यमार्जारसर्पनकुलपंचनखादेरंतरागमनेत्रिरात्रं । आरण्यश्वसृगालवानरादेर्द्वादशरात्रं । खरवराहोष्ट्रचांडालसूतिकोदक्यादेर्मासम् । गोगवयाजनास्तिकादेस्त्रिमासम् । शशमेषश्वपाकादेःषण्मासम् । गजसारससिंहव्याघ्रमहापातकिकृतघ्नादेरब्दम् । शोभनदिनेचानध्यायः । विवाहप्रतिष्ठोत्थापनादिष्वासमाप्तेःसगोत्राणामिति । अन्येप्यनध्यायास्तत्रैव । श्रवणद्वादशीमहाभरण्योःप्रेतद्वितीयायां रथसप्तम्यामाकाशेशवदर्शनेचाहोरात्रमिति । महाभरणीमहालयांतर्गता । प्रेतद्वितीयायमद्वितीया । अयनेविषुवेपक्षिणीतिच । मनुः—शयानःप्रौढपादश्चकृत्वाचैवावसक्थिकम् । नाधीयीतामिषंजग्ध्वासूतकान्नाद्यमेवचेति । माधवीयेकौर्मे—श्लेष्मातकस्यछायायांशाल्मलेर्मधुकस्यच । कदाचिदपिनाध्येयंकोविदारकपित्थयोरिति । निर्णयामृते—चातुर्मास्यद्वितीयासुमन्वादिषुयुगादिषु । अनध्यायस्तुकर्तव्योयाचसोपपदातिथिरिति । उक्तद्वितीयाआहगर्गः—शुचावूर्जेतपस्येचयाद्वितीयाविधुक्षये । चातुर्मास्यद्वितीयास्ताःप्रवदंतिमनीषिणइति । सोपपदाःपूर्वमेवोक्ताः । इत्यनध्यायाः ॥

अथाध्ययनधर्माः ॥ ॐकारंप्रथमंकृत्वाततोब्रह्मप्रवर्तयेत् । ॐकारंचपुनःकृत्वाभूमिंस्पृष्ट्वाविरामयेदिति । विष्णुः—शिष्येणब्रह्मारंभावसानयोर्गुरोःपादोपसंग्रहणंकार्यमिति । नापररात्रमधीत्यशयीतेतिच । मनुः—प्रदोषपश्चिमौयामौवेदाभ्यासेनयोजयेत् । यामद्वयंशयानस्तुब्रह्मभूयायकल्पतेइति । विष्णुः—अननुज्ञातश्चान्यस्माअधीयानान्नविद्यामादद्यात् । यआ

वृणोत्यवितथेनकर्णावदुःखंकुर्वन्नमृतंसप्रयच्छन् । तंवैमन्येतपितरंमातरंचतस्मैनद्रुह्येत्कतमस्यजानन्नित्यध्ययनधर्माः ॥ अथव्रतानि ॥ तदुपयोगिकालनिर्णयःश्रीधरीये—तिथिनक्षत्रवारांशवर्गोदयनिरीक्षणम् । चौलवत्सर्वमाख्यातंसगोदानव्रतेषुच । व्रतानांचरणंत्वेवंकृत्वास्नानंसमाचरेदिति । सगोदानेतिगोदानेनसहितेषुमहानाम्न्यादिव्रतेष्वित्यर्थः । कृत्वेतियद्यपिव्रताचरणस्यस्नानाधिकारहेतुत्वंप्रतीयतेतथापिनैतन्नित्यमित्यवसरेवक्ष्यामः ॥ ॥ अथमहानाम्नीव्रतम् । जन्मप्रभृतित्रयोदशवर्षेचौलोचितोदगयनादिकालेपूर्वदिनेब्रह्मचारिणासहाचार्यःसुस्नातोदेशकालोच्चारणांते एनंब्रह्मचारिणं महानाम्नीरध्यापयिष्यमाणोमहानाम्नीव्रतसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्य तदंगत्वेनगणपतिपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकृत्वा परेद्युःकारितवपनस्नानंबद्धशिखंब्रह्मचारिणंसुमुहूर्तेस्वदक्षिणतउपवेश्यविधिवदग्निंप्रतिष्ठाप्य महानाम्नीव्रतांगहोमेदेवतापरिग्रहार्थमित्यादिकायत्वापरिददामीत्यंतमुपनयनवत्कुर्यात् । तत्रप्रावरणंकाषायवासइतिपारिजाते । प्रधानहोमेचमहानाम्नीव्रतप्रधानाज्यहोमेविनियोगइतिविशेषः । परिददामीतिप्रजापतयेमनसाबटुंसमर्प्य आसनेउपविश्योपनयनोक्तविधिनामेखलादंडधारणंकारयित्वा पुराणयज्ञोपवीतादीनिजलेनिक्षिप्य स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य ब्रह्मचारिणंप्रतिवदेत् महानाम्नीव्रतंसंवत्सरंचरेति । सचरिष्यामीत्युक्त्वासंवत्सरंकेशादिधारणभिक्षाचरणादिव्रतंचरेत् । पूर्णेऽब्देउदगयनेशुक्लपक्षेबटुसहितोगुरुर्विविक्तदेवालयादिदेशंगत्वा तिथ्यादिसंकीर्त्यअस्यबटोर्महानाम्नीश्रवणांगभूतव्रतपूर्तिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्य उपलेपनाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकुर्यात् । चक्षुषीआज्ये

नेत्यंतेत्रप्रधानं अग्निं१संराधनीं२अग्निं ३ अग्निं४ असूयंतीं अनुमतीं५ प्रदातारं६ अग्निं७ वायुं ८ सूर्यंच ९ एतादेवताःकृसरान्नेनशेषेणेत्यादिपूर्णपात्रनिधानांतंकुर्यात् । ततोबटुर्होमायस्वभोजनायचपर्याप्ततंडुलान्भिक्षार्जितान्स्थालीपाकविधिनातूष्णींषट्त्रिंशत्संख्ययानिरुप्यतथैवप्रोक्ष्य स्थाल्यांप्रक्षिप्ततंडुलेषुतिलानोप्यश्रपयित्वाशृतःस्थालीपाकइतिज्ञापयेत् । ततआचार्योबटुंप्रतिव्रतलोपान्पृच्छेत् । तेनोत्तरेदत्तेलोपगौरवेप्रायश्चित्तंकारयित्वापुनःसंवत्सरव्रतंकारयेत् । आपत्प्रयुक्ततयालोपलाघवेदानजपादिप्रायश्चित्तेनसद्यःशुद्धिंसंपाद्यनव्रतमावर्तयेदितिपारिजातादयः । बहवोव्रतलोपाश्चेत्पुनरावर्तयेद्व्रतम् । लोपेष्वापत्प्रयुक्तेषुपुनर्नावृत्तिरिष्यतइतिकारिकोक्तेर्लोपलाघवेव्रतानावृत्तिवत्प्रायश्चित्ताभावोप्युचितः । आपदाकारिताश्चेदग्नावग्निरित्यादिभिर्जुहुयान्नप्रायश्चित्तांतरंकर्तव्यमितिवृत्तिकृताष्टमाध्यायगतमहानाम्नीव्रतसूत्रव्याख्यायामभिधानात् । शुचिनातेनान्वारब्धआज्यसंस्काराद्याज्यभागांतंकृत्वाऽवदानधर्मेणचर्वाहुतीर्जुहुयान्नवभिर्मंत्रैरेकश्रुत्येन । अग्नावग्निश्चरतिप्रविष्टऋषीणांपुत्रोअधिराजएषः । तस्मैजुहोमिहविषाघृतेनमादेवानांमोमुहद्भागधेयंमोअस्माकंमोमुहद्भागधेयंस्वाहा अग्नयइदं० । यातिरश्चीनिपद्यतेहंविधरणीइति । तांत्वाघृतस्यधारयायजेसंराधनीमहंस्वाहा । संराधन्याइदं० । यस्मैत्वाकामकामायवयंसम्राड्यजामहे । तमस्मभ्यंकामंदत्वाथेदंत्वंघृतंपिबस्वाहा अग्नयइदं० । अयंनोअग्निर्वरिवःकृणोत्वयंमृधःपुरएतुप्रभिंदन् । अयंशत्रून्जयतुजर्हृषाणोऽयंवाजंजयतुवाजसातौस्वाहा अग्नयइदं० । असूयंत्यैचानुमत्यैचस्वाहा असूयंत्याअनुमत्याइदं० । प्रदात्रेस्वाहा प्रदात्रइदं० । भूःस्वाहा अग्नय० । भुवःस्वाहा वायव० ।

स्वःस्वाहा सूर्यायेदं० । ततःस्विष्टकृदर्थंस्रुच्यवदायतांबर्हिषिनिधायब्रह्मचारिणमाहएतंस्थालीपाकंसर्वमशानेति । ब्रह्मचारीसर्वमश्नीयात् । भुक्तवंतमाचांतंतंप्रतिब्रूयात्उपतिष्ठस्वादित्यमिति । ब्रह्मचारीततोऽप्पूर्णमंजलिंसिंचेत् त्वंव्रतानांव्रतपतिरसिव्रतंचरिष्यामितच्छकेयंतेनशकेयंतेनराध्यासमित्युपतिष्ठमानः । ततएकरात्रंसंमीलिताक्षोवाग्यतआसित्वा तदनंतरदिनेआचार्येणसहसमवायंगमिष्यामीतिध्यायेत् यएकरात्राध्ययनेनमहानाम्नीरध्यापयितुंशक्नुयाद्ब्रह्मचारी । योबहुभिरेवाहोभिःशक्नुयात्सउक्तसंकल्पकालेएकरात्रस्थानेत्रिरात्रंध्यायेत् । उक्तादित्योपस्थानानंतरमेवैतद्ध्यानंनमध्येकालविक्षेपःकार्यइतिवृत्तिसिद्धांतभाष्यकृतौ । ततआचार्यःसंमीलिताक्षवाग्यतबटोर्मुखसहितंशिरोवामकर्णदेशमारभ्य त्रिःप्रदक्षिणंतत्परिहिताहतवाससासंवेष्ट्य यथानतद्वासःपतेत्तथोपायंकृत्वाब्रूयादाचार्य एतंकालमेवंभूतोऽस्वपन्भवेति । एतमित्यस्यस्थानेब्रह्मचारीसंकल्पानुसारेणैकरात्रमित्यादिवदेत् नकालमित्यस्यलोपः । ब्रह्मचारीउक्तकालेऽवश्यकर्तव्यसंध्यावंदनादेरितरत्स्नानभोजनस्वापगमनादिनकुर्यात् । आचार्यःप्रैषांतेस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । संकल्पितकालांतेआचार्योनुवक्ष्यतीतिनिश्चयोत्तरंबहिर्ग्रामादैशान्यांदिशिस्त्रीसंचाररहितेशुचौदेशेउल्लेखनादिकृत्वाग्निंप्रतिष्ठाप्यतस्योत्तरतोसिमुदककमंडलुमश्मानंचनिधायतस्यैवप्रत्यगुदग्देशेवत्सतरींतथाबध्नीयात् यथाग्निसमीपेउच्चार्यमाणःशब्दोवत्सतर्यानसम्यक्श्रूयते । साचरम्याद्विवर्षारक्तातदभावेश्वेतेतिपारिजातः । एतावत्कर्मब्रह्मचारिणःकश्चित्करोतीति वृत्तिकृत् । अतएवान्योब्रह्मचारीकुर्यादितिपारिजातः । एतावत्कृतमित्याचार्यायवेदयीतसंस्कार्यः । एतदनंतरमाचार्य

एवोल्लेखनाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकुर्यादितिपारिजातादयः । तस्मादग्नेःपश्चात्प्रागग्रेषुदर्भेषुआचार्यऐशानदिगभिमुखउपविशेदितिवृत्तिकृत्पारिजातादयः।—पश्चादग्नेस्तृणेषुतु । ईशान्यग्रेषूपविशेदीक्षमाणस्तुतांदिशमितिकारिकायाम्।ततःशिष्योमुखदेशाद्वस्त्रमपसार्यमुखंप्रक्षाल्यकंठस्नानंकृत्वाचम्याग्निमाचार्यंचप्रदक्षिणीकृत्याचार्यंविधिवदुपसंगृह्यपश्चादाचार्यस्यतदासनप्रागग्रदर्भेष्वेवमूलदेशेस्वपृष्ठमाचार्यपृष्ठेनसंधाय प्रत्यग्दक्षिणांदिशमभिसमीक्षमाणोंकधारणयोपविशेत् । ततोमनसागुरुंवदेत् ॐमहानाम्नीर्भोअनुब्रूहीति । गुरुरियताकालेनानेनैतदुक्तमितिज्ञात्वातदहर्व्रतलोपान्पृष्ट्वानुतापिनेश्रद्धानायब्रह्मचारिणेस्वयंनिमीलिताक्षोमहानाम्नीर्विदामघवन्विदेत्याद्यानवर्चः एवाह्येवैवाह्यग्नाइत्यादीनिनवपुरीषपदानिचप्रणवादीनित्रिरुपदिशेत् । शिष्योपित्रिःपठेत् । ततोगुरुःशिरोवेष्टनंशिष्यस्योन्मुच्यब्रूयात् आदित्यमीक्षस्वेति । वटुर्मित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतीक्षेमित्रस्यत्वाचक्षुषासमीक्षइतिमंत्रद्वयेनादित्यमवेक्षेत । ततोमित्रस्यवश्चक्षुषानुवीक्षइतिससंभारादिशोवीक्षेत । पुनरादित्यमीक्षस्वेत्युक्तस्तमीक्षेतमित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतिपश्यामियोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मस्तंचक्षुषोहँतुर्ऋच्छत्विति । ततोष्टभिर्मंत्रैर्भुवमभिमृशेत् ।अग्नइळानमइळानमऋषिभ्योमंत्रकृद्भ्योमंत्रपतिभ्योनमोवोअस्तुदेवेभ्यःशिवानःशंतमाभवसुमृळीकासरस्वतिमातेव्योमसंदृशि १ । भद्रंकर्णेभिरित्यस्यराहूगणोगोतमोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् भूमिस्पर्शनेवि० भद्रंकर्णेभिःशृणु० २ । शंनइंद्राग्नीइत्यस्यवसिष्ठोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् भूमिस्पर्शने० शंनइंद्राग्नीभवता० ३ । स्तुषेजनमित्यस्यऋजिश्वाविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् भूमिस्पर्शने० स्तुषेजनंसुव्रतंनव्यसीभिः० ४ । कयानइतितृचस्यवामदेवइंद्रोगायत्री

भूमिस्पर्शने० कयानश्चित्रआ० ५ कस्त्वासत्यो० ६ अभीषुणःसखीना० ७। स्योनापृथिवीत्यस्यमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री भूमिस्पर्शने० स्योनापृथिवि० ८ । ततोवत्सतरींगुरवेदत्त्वाईश्वरार्पणंकृत्वातंडुलभिक्षापूर्वकमुपनयनवद्द्विवैवब्रह्मौदनहोमंकुर्यात् । तत्रमहानाम्न्यध्ययनांगभूतमनुप्रवचनीयहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्याघारावाज्येनेत्यंतेसदसस्पतिंमहानाम्नीःऋषींश्चचरुणाशेषेणेत्यादिपूर्णपात्रनिधानांतेकृतेभैक्षतंडुलानांतूष्णींनिर्वापाधिश्रपणांते शृतोब्रह्मौदनइतिनिवेदयेत् । ततो गुरुःशिष्येणान्वारब्धआज्यसंस्काराद्याघारांतंकृत्वा । सदसस्पतिमित्यस्यकाण्वोमेधातिथिःसदसस्पतिर्गायत्री महानाम्न्यध्ययनांगभूतानुप्रवचनीयहोमेवि० ॐ सदसस्पतिमद्भुतं० सदसस्पतयइदं० १। महानाम्नीभ्यःस्वाहा महानाम्नीभ्यइदं० २। ऋषिभ्यःस्वाहा ऋषिभ्यइदं० ३। इत्यवदानधर्मेणतिस्र[१]आहुतीर्हुत्वाकर्मशेषंसमाप्यचरुशेषेणब्राह्मणान्भोजयित्वातेभ्योदक्षिणांदत्वावेदसमाप्तिरस्त्वितिवदेत्। तेचवेदसमाप्तिरस्त्वितिवदेयुः ततोभुंजीत । इतिमहानाम्नीव्रतम् ॥

अथमहाव्रतम् ॥ उदगयनादिकालेप्रथमहोमांतेपूर्ववज्जातेसंवत्सरमहाव्रतमाचरेतिप्रेषितेनबटुनासंवत्सरंव्रतेकृतेग्रामाद्बहिःशुचिदेशेप्रागग्रदर्भेषुप्राङ्मुखउपविशेत् । शिष्योविधिवदभिवादनपूर्वकंमहाव्रतंभोअनुब्रूहीतिवाचावदेत् । अथतंप्राङ्मुखमुपवेश्य अथमहाव्रतमित्याद्यारण्यकंत्रिर्ब्रूयात् । शिष्योपित्रिःपठित्वापूर्ववन्मंत्रद्वयेनादित्यमीक्षेतनतृतीयेनसंभारान् । ततःपूर्ववदग्नइळेत्यादिभिर्भूमिस्पर्शनं । ततःशिष्यकर्तृकनिवेदनांतमाचार्यकर्तृकश्चहोमःपूर्ववन्महानाम्नीभ्यः

---

[१] तिस्रआज्याहुतीर्हुत्वा ।

स्वाहेत्यस्यस्थानेमहाव्रतायस्वाहेत्याहुतिःशेषंमहानाम्नीवत् । इतिमहाव्रतम् ॥ ॥ अथोपनिषद्व्रतम् । सर्वंमहाव्रतवत्संवत्सरमुपनिषद्व्रतंचरेतिवटुंप्रतिप्रैषः । उपनिषदंभोअनुब्रूहीतितदुक्तिः । अनुप्रवचनीयहोमेउपनिषदेस्वाहेतिमध्यमाहुतिः । आचार्याभावेशिष्यःस्वयमेवमहाव्रताद्यध्ययनादिकंकुर्यादितिपारिजाते । व्रतकालीनश्रवणेनैवाध्ययनसिद्धिरितितदाशयः । अतोमहानाम्नी[1]श्रवणोत्तरमध्ययनमाचार्याधीनमेव । त्रयाणामध्ययनं[2]श्रवणोत्तरंपूर्वमनधीतवद्भिः फाल्गुनमारभ्यश्रावणीपर्यंतंकर्तव्यम् । अधीतपूर्वैस्तुपौषीमारभ्यश्रावणीपर्यंतमितिकालनियमउक्तःसूत्रकृता । इत्युपनिषद्व्रतम् ॥ ॥ अथगोदानव्रतम् । तच्चजन्मतःषोडशेवर्षेचौलार्हतिथ्यादिकालेतद्वदेवकार्यम् । अस्यब्रह्मचारिणोगोदानिकव्रतंकरिष्यइतिसंकल्पः । तदंगगणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतेऽग्निप्रतिष्ठापनादि । नांकेसंस्कार्योपवेशनं । मातुरुत्तरतोवटुःतदुत्तरतस्तदन्वारब्धआचार्यआ[3]ज्यभागांतंकृत्वा शीतोष्णजलानयनादिकुर्यात् । अदितिःश्मश्रूणिवपत्वित्यूहितमंत्रेणवामश्मश्रुदेशमारभ्यप्रदक्षिणंश्मश्रूणामेवत्रिःछेदनं दक्षिणोत्तरश्मश्रुभागयोरेवकुशपत्रनिधानादीनिसप्तच्छेदनानिसकुशश्मश्रूणामेवच्छेदनादिगोमयनिधानांतं । क्षुरावमार्जनमंत्रेवसावपसिश्मश्रूणि शुंधिशिरोमुखंमास्यायुरित्यूहः । नापितप्रैषेविशेषःअक्षण्वन्कुशलीकेशश्मश्रुलोमनखान्युदक्संस्थानिकुर्विति । नापितस्ताभिरद्भिःश्मश्रूणामुदक्संस्थंवपनं कृत्वातथैवशिरसिकेशानामुपपक्षादिलोम्नांवपनंनखनिकृंतनंचकुर्यात् । ततःस्नातंवटुंदक्षिणतउपवेश्यहोमशेषंसमाप्य

---

[1] श्रावणोत्तरं । [2] श्रावणोत्तरं । [3] आज्यहोमांतं ।

पात्रदानातेगुरुणाकृतेऽहःशेषंवाग्यतोबटुस्तिष्ठन्नेवनयेत् । संध्यावंदनांतंगुरोरंतिके वरंददामीतिवाचंविसृज्यगोमिथुनंदक्षिणादद्यात् । गोमिथुनंवरंददा[1]तीतिजयंतः । ततःपरेद्युर्गुरुणागोदानव्रतमाचरेत्युक्तःकेशादिधारणंकुर्वन्संवत्सरंब्रह्मचारिव्रतकुर्यादितिगोदानव्रतम् ॥ इतिचत्वारिवेदव्रतानि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथसमावर्तनम् । तत्रयाज्ञवल्क्यः—गुरवेतुवरंदत्त्वास्नायीततदनुज्ञया । वेदव्रतानिवापारंनीत्वाह्युभयमेवचेति । वरस्वरूपंमनुः——स्ना[2]स्यंस्तुगुरुणाज्ञप्तःशक्त्यागुर्वर्थमा[3]हरेत् । क्षेत्रंहिरण्यंगामश्वंछत्रोपानहमंततः । धान्यंवासांसिशाकंवागुरवेप्रीतिमावहन्निति । प्रीतिमिति एतेषुमध्येयदेवगुरोःप्रियंतदेवदद्यादित्याशयः । दानमंतरेणैवगुरोःप्रीतावनुज्ञयैवसमावर्तनंकुर्यादित्यपिसूच्यते । अतएवोक्तंसंग्रहे—तेनोक्तंचतथाकृत्वास्नानंशिष्यःसमाचरेत् । अलमर्थेनमेवत्सत्वद्गुणैरस्मितोषितः । गृहान्गच्छानुजानामीत्यनुज्ञातोथवाचरेदिति । छत्रोपानहोःसहितयोर्दानं द्वंद्वोपादानात् । वासांसित्रीणि । गुरुप्रीत्यर्थमेतद्दानंनविद्यानिष्क्रयः । एकमप्यक्षरंयस्तुगुरुःशिष्येनिवेदयेत् । पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्त्वात्वनृणीभवेदिति । अश्वप्रतिग्रहेतन्निष्क्रयस्यषष्ठांशंद्वादशांशंवाब्राह्मणायदत्त्वाहिताग्निःप्राजापत्येष्टिंकुर्यात् गृह्याग्निमान्प्राजापत्यचरुम् । अनग्निप्रत्यरुणस्मृतौ—अश्वप्रतिग्रहंकृत्वाचरेच्चांद्रायणत्रयम् । लक्षत्रयंवागायत्र्याजपेद्विद्वान्समाहितः । त्रिगुणंवाचयेद्वेदंशतंविप्रांश्चभोजयेदिति । ब्राह्मणभोजनमुक्तोपायत्रयेप्रत्येकंसंबध्यते । वेदमित्यनेनत्रिविधस्नातकउ

---

[1] ददामीति । [2] स्नात्वातु । [3] माचरेत् ।

च्यते । तत्रवेदशब्देनसार्थवेदाधिगमउच्यते । वेदंवेदौतथावेदान्वेदान्वाचतुरोद्विजः । अधीत्यचाधिगम्यार्थंततःस्नायाद्विजोत्तमइतिमाधवीयेकौर्मोक्तेः वेदानितित्रित्वाभिप्रायम् । उक्तश्चार्थज्ञानंविनाध्ययनमात्रेणसमावर्तनाधिकाराभावःप्रथमसूत्रएवजैमिन्यादिभिः । अतश्चविद्यास्नातकोभयस्नातकयोरुभयोरपिस्नानात्पूर्ववेदार्थज्ञानमावश्यकमितिसिद्धम् । व्रतशब्देनचउपनयनव्रतसावित्रीव्रतवेदाब्दव्रतोपनिषद्व्रतान्युच्यंतेइतिमाधवादयः । तत्रोपनयनानंतरंत्रिरात्रंद्वादशरात्रंसंवत्सरंवामेधाजननात्पूर्वंविहितमक्षारालवणाशित्वादिरूपंगृह्येप्रसिद्धमुपनयनव्रतंतदुत्तरमुपाकर्मांतं अग्निकार्यादिब्रह्मचारिधर्मानुष्ठानंसावित्रीव्रतं तदुत्तरंवेदाध्ययनंकुर्वतायत्तदनुष्ठानंतद्वेदाब्दव्रतं वेदाध्ययनांगभूतसंख्यापरिच्छिन्नवर्षसाध्यत्वात् । तत्संख्यागतविकल्पमाहमनुः––षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यंगुरौत्रैविद्यकंव्रतम् । तदर्धंपादिकंवापिग्रहणांतिकमेववेति । स्पष्टीकृतमेतद्दीपिकायां––प्रतिवेदंब्रह्मचर्यंवर्षाणिद्वादशाथवा । षट्त्रीणिग्रहणांतंवेति । वेदाब्दव्रतांतेआरण्यकव्रतानीतिस्मृत्यर्थसारे ।आश्वलायनसूत्रस्यवृत्तिभाष्यकाराभ्यांतुद्वादशवर्षादिपरिच्छिन्नंवेदाध्ययनांगभूतंब्रह्मचर्यमेवव्रतं तादृशब्रह्मचर्येणयोवेदंसमापयतिसविद्याव्रतस्नातकः तादृशब्रह्मचर्यसमाप्तेपियस्यवेदसमाप्तिर्नजातासव्रतस्नातकः तादृशब्रह्मचर्यसमाप्तेःप्रागेवयस्यवेदसमाप्तिर्जातासविद्यास्नातकइत्युक्तम् । अस्मिन्मतेचत्रिविधमपिस्नातकत्वंतादृशब्रह्मचर्यसमाप्त्युत्तरकालीनाभिमतमहानाम्न्यादिव्रताधीनंनभवति भवतितुमाधवादिमते । मतद्वयेपिव्रतस्नातके

---

१ ब्रह्मचर्यंब्रह्मचर्येण ।

नाप्युपनिषद्विशेषाध्ययनंकृत्वैवसमावर्तनंकर्तव्यम् । तेनविनातादृगधिकाराभावादित्युक्तंश्रुत्यैव नेदमनधीयन्स्नातको भवतीति । अतएवविद्यांतेगुरुमामंत्र्येतिसूत्रं स्नातकत्रैविध्यानुरोधेनवेदांत्यभागरूपोपनिषदध्ययनेसत्येवसमावर्तनाधिकारइत्याशयेनैवव्याख्यातंवृत्तिकृता । आश्वलायनशाखिविषयंचैतत् । क्लृप्तसंबंधनियमेलाघवात् । येनवेदभागमनधीत्यापिसमावर्तनंकृतंतदुत्तरमप्यध्ययनांगनियमविशिष्टेनतदध्ययनंकार्यम् । समावृतोब्रह्मचारिकल्पेनेतिसूत्रात् । स्वाध्यायकालेविहितायेधर्मामधुमांसस्त्रीगमनखट्वादिवाशयनादिवर्जनादयस्तैर्युक्तोऽधीयीतसमावृतः । मेखलादयस्तुनभवंति अस्वाध्यायधर्मत्वादितिवृत्तिकृदुक्तेश्च । ऋतौभार्योपगमनंतुतेनापिकार्यं । जायोपेयेत्येकेप्राजापत्यंतदितिसूत्रस्य वृत्तिकृतैवतादृशाशयेनव्याख्यानात् । अधीत्यवेदंस्नानमितिहिरण्यकेशिसूत्रव्याख्यावसरे[१]मातृदत्तः । अतिक्रांतेप्युक्तकालेसतिसंभवेधीत्यैवस्नातव्यं । अत्यंताशक्तावेवव्रतमात्रेणस्नातव्यमितिव्रतमात्रस्नानंगर्हितमितिच । कामंतुयाज्ञिकस्येतिसूत्रव्याख्यावसरेकर्कः । यज्ञंवेदेतियाज्ञिकस्तस्यकामंस्नानंभवतिषडंगमर्थतोनधिगम्यापीति । तथाहरिहरः—मंत्रब्राह्मणात्मकंवेदमधीत्यावबुध्यस्नायादित्येकःपक्षः । सांगवेदमधीत्यावबुध्यस्नायादित्यपरःपक्षः । ग्रंथमात्रमधीत्ययज्ञविद्यांचाभ्यस्यस्नायादितितृतीयः । यज्ञविद्याविरहेणग्रंथमात्रेधीते नस्नायादितिनिषेधइतिच । संहितापदवाच्यमंत्राध्ययनेनुकूल्यांतराणिशांखायनः—आद्योत्तमेकामसूक्तेवानुब्रूयादृषेरनुवाकस्यवैकैकांसूक्तादाविति एषाप्रभूतिरितिकामंसू

---

[१] हरदत्तः ।

क्तादाचाचार्यइति । ऋषिदृष्टस्यमंत्रजालस्यानुवाकस्यवाआद्योत्तमेसूक्तेअनुब्रूयात्प्रतिसूक्तंप्रथमामृचंवायथेच्छंकतिपय
सूक्तानामेवप्रथमामृचंचेत्यर्थः । तच्चसमावर्तनंब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तंकृत्वैवकर्तव्यम् । तदाहपारिजातेबौधायनः—
शौचाचमनेत्यादीनिब्रह्मचारिव्रतान्यनुक्रम्यतल्लोपजनितसकलदोषपरिहारार्थंब्रह्मचारीकृच्छ्रत्रयंचरेत् महाव्याहृतिहोमं
चकुर्यात् । प्रथमंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चतस्रआज्याहुतीर्हुत्वाभूरग्नयेचेतिमहाव्याहृतिभिश्चतसृभिर्हुत्वायज्ञंपाहिविभाव
सोस्वाहासर्वंपाहिशतक्रतोस्वाहा । पुनरूर्जानिवर्तस्वपुनरग्नइहायुषा पुनर्नःपाह्यंहसःस्वाहा । सहरय्यानिवर्तस्वाग्नेपि
न्वस्वधारया । विश्वप्स्न्याविश्वतस्परिस्वाहा । पाहिनोअग्नएनसेस्वाहा । पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा । व्याहृतिभिरंतेचतस्र
आहुतीर्जुहुयादिति । केचित्पाहिनोअग्नइत्याहुतिद्वयांतेयज्ञंपाहीत्याहुतिचतुष्टयंपठंति । एतदल्पधर्मलोपे । वहुधर्मलोपे
तुपारिजातएवऋग्विधाने—तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंचैवशिवालये । ब्रह्मचारीस्वधर्मंचन्यूनंचेत्पूर्णमेवतदिति । न्यूनंचे
ज्जानीयाज्जपेत् तत्तेनजपेनन्यूनमपिधर्मंपूर्णमेवजानीयादित्यर्थः । यत्तुस्मृत्यर्थसारे—महानाम्न्यादिव्रतेषुलुप्तेषुतारतम्ये
नत्रीन्षट्द्वादशवाकृच्छ्रान्कृत्वापुनर्व्रतमारभेतेतितद्व्रतस्नातकस्यविद्याव्रतस्नातकस्यवामाधवादिमते, वृत्तिकारादिमतेत्रि
विधस्यापिस्नातकस्यारब्धव्रतस्यमध्येभ्रेषेज्ञेयं । पुनर्व्रतमारभेतेतिवचसस्तथैवसाफल्यात् । विद्यास्नातकस्यतुनव्रतलोप
प्रायश्चित्तंस्नानाधिकारसिद्ध्यर्थमपेक्षितंमतद्वयेपि । इतिसंस्कारकौस्तुभेसमावर्तनाधिकारः ॥ ॥ अथैतत्कालनिर्णयः ।
आश्वलायनः—विद्यांतेगुरुमर्थेननिमंत्र्यकृतानुज्ञानस्यवास्नानमिति । पारिजातेश्रीधरीये—वागीशादितिसौम्यपौष्ण

दिनकृन्मैत्रोत्तरारोहिणीगोविंदेषुशशांकभानुगुरुविच्छुक्रांशवारादिषु । रिक्तांपर्वंतथाष्टमींप्रतिपदंमेषंचकीटंहरिंहित्वा शुद्धियुतेष्टमेऽह्निविमलेकुर्यात्समावर्तनमिति । पुष्यपुनर्वसूमृगरेवतीहस्तानुराधोत्तरात्रयरोहिणीश्रवणेष्वेकादशनक्षत्रेषु सोमादित्यबृहस्पतिबुधशुक्रवारेषुतदीयांशहोरासु रिक्तात्रयपर्वद्वयाष्टमीप्रतिपद्भिन्नतिथिषु मेषवृश्चिकसिंहभिन्नलग्नेषु अष्टमस्थानेग्रहविशेषाक्रमणदोषशून्येऽह्निविमलेगुरुशुक्रास्तादिदोषशून्यइत्यर्थः । तथाचमदनरत्नेनारदः—अथोत्तरायणेजीवशुक्रयोर्दृश्यमानयोः । द्विजातीनांगुरोर्गेहान्निवृत्तानांयतात्मनाम् । मित्रोत्तरादितीज्यांत्यहरींदुरविधातृषु । अर्केंदुज्ञार्यशुक्राणांवारलग्नांशकेषुच । अथवाबीजनक्षत्रवारलग्नांशकेष्वपि । प्रतिपत्पर्वरिक्ताख्यामष्टमींचदिनक्षयम् । हित्वान्यदिवसेकार्यंसमावर्तनमंडनमिति । बीजनक्षत्राणिबीजवापनक्षत्राणि । सुदर्शनस्तु—उदगयनेकृतसमावर्तनस्यदक्षिणायनेविवाहप्रसक्तौ अनाश्रमीनतिष्ठेतेतिनिषेधातिक्रमापत्तेः, आश्वलायनेनचौलविकारेगोदानेप्राप्तोदगयनस्य पुनर्विधानेनतद्विकारेसमावर्तनेउदगयननियमाभावज्ञापनात्, बौधायनेनापिसमावर्तनेचौलविकारत्वेनैवशुक्लपक्षप्राप्तौ पुनस्तत्रतद्विधानेनोदगयनानियमज्ञापनात्, नसमावर्तनेउदगयननियमइत्याह । हिरण्यकेशिनांतुचित्रायाविशाखयोर्वेतिनक्षत्रद्वयमधिकमुक्तम् । इतिसमावर्तनकालः ॥ ॥ आश्वलायनः—अथैतान्युपकल्पयीतसमावर्त्स्यमानोमणिंकुंडलेवस्त्रयुगंछत्रमुपानद्युगंदंडंस्रजमुन्मर्दनमनुलेपनमांजनमुष्णीषमित्यात्मनेचाचार्यायचयद्युभयोर्नविंदेताचार्यायैवेति ॥ अथप्रयोगः ॥ पूर्वेद्युस्तद्दिनएववादेशकालौसंकीर्त्य ममशौचाचमनादिब्रह्मचर्यनियमलोपजनितसंभावितदोषपरिहारे

णसमावर्तनाधिकारसंपादनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमाज्यहोमपूर्वकंकृच्छ्रत्रयमाचरिष्येइतिसंकल्प्य स्थंडिलसंस्काराद्यग्निध्यानांतेऽन्वाधानंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंते अत्रप्रधानं अग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचतस्रोदेवताःचतसृभिराज्याहुतिभिः अग्निंपृथिवींमहांतंएकयाज्याहुत्या वायुमंतरिक्षंमहांतमेकयाज्याहुत्या आदित्यंदिवंमहांतमेकया० चंद्रमसंनक्षत्राणिदिशोमहांतमेकया० द्विरग्निमाज्येन० विभावसुं शतक्रतुं अग्निं अग्निं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिंचेत्यष्टौ देवताएकैकयाज्याहुत्याशेषेणेत्यादिषट्पात्रासादनं प्रणीताप्रणयनांतेआज्यस्यनिर्वापादिबर्हिषिसादनांतंस्रुवसंमार्गश्च । ततोऽग्न्यर्चनाद्याज्यभागांतेव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चतस्रआहुतीर्हुत्वा ॐ भूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहा अग्नयेपृथिव्यैमहतइदं० । भुवोवायवेचांतरिक्षायचमहतेचस्वाहा वायवेंऽतरिक्षायमहतइदं० । सुवरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा आदित्यायदिवेमहतइदं० । भूर्भुवःसुवश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहतेचस्वाहा चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहतइदं०। पाहिनोअग्नएनसेस्वाहा अग्नयइदं० । पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा अग्नयइदं० । यज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा विभावसवइदं० । सर्वंपाहिशतक्रतोस्वाहा शतक्रतवइदं० । पुनरूर्जानिवर्तस्वपुनरग्नइहायुषा । पुनर्नःपाह्यंहसःस्वाहा अग्नयइदं० । सहरय्यानिवर्तस्वाग्नेपिन्वस्वधारया। विश्वप्स्न्याविश्वतस्परिस्वाहा अग्नयइदं०१। पुनर्व्याहृतिभिराहुतिचतुष्टयंहुत्वाकृच्छ्रप्रत्याम्नायत्वेनगोदानाद्यन्यतरच्चरित्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । व्रतचतुष्टयलोपेप्रत्येकंगायत्र्याष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौवाज्याहुतीर्हुत्वाएकैकंकृच्छ्रंचरित्वापुनर्व्रतानिकुर्यादितिवृद्धाः । अस्मिन्विषयेबौधायनीयगृह्यसूत्रेऽन्यथाम्नातं

दृश्यते । तद्यथा—ब्रह्मचारिव्रतविपर्यासेमेखलायज्ञोपवीतानांछेदनेकृष्णाजिनस्याधारणेकमंडलवधारणेदंडभंगेसंध्यालोपेस्वाध्यायलोपेभिक्षाचरणलोपेशुश्रूषाशूद्रेन्यैःएतैश्चान्यैश्चानाम्नातेषुप्रायश्चित्तमग्निमुपसमाधायसंपरिस्तीर्यप्रायश्चित्तं जुहोति पाहिनोअग्नएनसेस्वाहा पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा यज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा सर्वंपाहिशतक्रतोस्वाहा पाहिनो अग्नएकयापाह्युतद्वितीयया पाह्यूर्जंतृतीययापाहिगीर्भिश्चतसृभिर्वसोस्वाहेति । अथविवाहेचतुर्थेसद्यस्कालब्रह्मचर्येविच्छिन्नेप्रायश्चित्तानिव्याख्यास्यामश्चतुर्होतासारस्वतौहोमौभवतोदुर्गामनस्वतीमिँदाहुतीर्महाव्याहृतीर्व्याहृतयश्चप्रायश्चित्तंजुहुयादिति । व्याहृतिभिःपुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चसानुक्रमणंयथापूर्वंकरणमविच्छिन्नंसंततंभवतीति । अनाम्नातेष्वित्यनंतरंप्रायश्चित्तेष्वितिशेषः । अत्रब्रह्मचारिधर्मलोपप्रायश्चित्तंविवाहचतुर्थदिनगतब्रह्मचर्यव्रतभ्रंशप्रायश्चित्तंचप्रकृत्यआम्नातेनव्याहृतिभिःपुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चेतिसूत्रेणद्विविधप्रायश्चित्तस्याप्युपक्रमसमाप्त्योर्व्याहृतिभिश्चतस्रश्चतस्रआहुतयोविहिताभवंति ततश्चब्रह्मचारिधर्मलोपेत्रयोदशैवप्रधानाहुतयःसिद्धाभवंति महानाम्न्यादिव्रतलोपप्रायश्चित्तपूर्वकंपुनःकरणंतु विद्यास्नातकेननैवकार्यंइतराभ्यामप्यारब्धव्रतस्यमध्यभ्रेषविषयमितिप्रागेवोक्तम् ॥

## ॥ अथसमावर्तनप्रयोगः ॥

ब्रह्मचारीकृताग्निकार्यांतनित्यक्रियोगुरवेसंतोषावहंद्रव्यंदत्त्वादेशकालौसंकीर्त्य ममगृहस्थाश्रमार्हतासिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसमावर्तनंकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकुर्यात् । जीवत्पितृकश्चेत्पितुर्मात्रादीनुद्दिश्यश्राद्धं कुर्यात् । ब्रह्मचारिणोशक्तौतद्द्वारासंकल्पंकारयित्वापित्रादिस्तत्प्रतिनिधित्वेनतानेवोद्दिश्यकुर्यात् । ततोयज्ञियस्यवृक्ष

स्याश्वत्थादेरैशानदिशिनिर्गताशाखांआर्द्रांशुष्कांआर्द्रशुष्कांवायथाकामंप्रादेशमितामाहृत्योपरिनिधाय करिष्यमाणसमावर्तनांगत्वेनत्रिभ्योब्राह्मणेभ्योभोजनपर्याप्तमन्नंगवातत्प्रत्याम्नायद्रव्येणवासहितंसंप्रददइत्येवंसंकल्प्योल्लेखनाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकृत्वा अग्निध्यानांते देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये आघारावाज्येनेत्यंतेत्रिरग्निंपवमानंप्रजापतिंचाज्येन अग्निमूर्ध्वसमिधा विश्वान्देवान्दशसमिद्भिः शेषेणस्विष्टकृतमिध्मसंनहनमित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतेउत्तरतोग्नेर्दर्भपुञ्जीहियवमाषतिलैःपूरितानिशरावपात्राण्येकैकशःप्राक्संस्थान्यासाद्याग्नेःपश्चान्मातुरग्रेशमीपर्णयुक्तमेकंशरावमानडुहगोमययुक्तंचापरमासाद्यव्रीह्यादिपात्राणामुत्तरतस्ताम्रंक्षुरंशीतोष्णेउदकेनवनीतंदधिद्रप्सान्वामण्याद्येकादशद्रव्याणिचासादयति । ब्रह्मादक्षिणतएकविंशतिकुशपिंजूलानिधारयन्नास्ते । ब्रह्मचारीआघारांतेचौलवच्चतस्रआज्याहुतीर्जुहुयात् । समावर्तनप्रधानाज्यहोमेविनियोगइतिविशेषः । ततोब्रह्माऽन्योवोष्णेनवायउदकेनेहीतिचौलवच्छीतोष्णेउदकेयुगपन्निनीय नवनीतेनदध्नावातदेकदेशंपात्रांतरेमिश्रयित्वाअदितिःश्मश्रूणिवपत्वापउंदंतुवर्चसइतिमंत्रंत्रिरावर्तयन् वामश्मश्रुप्रदेशमारभ्यप्रदक्षिणंत्रिःक्लेदयित्वा दक्षिणश्मश्रुप्रदेशेत्रीणित्रीणिपिंजूलानिचौलवन्निधायसर्वैर्मंत्रैश्चतुर्थमित्यंतानिचरित्वाछेदनानिकुर्यात् । मंत्रेषुविशेषः । ओषधेत्रायस्वमां स्वधितेमामाहिंसीः । येनावपत्सविताक्षुरेण० तेनब्रह्माणोवपतेदंममायुष्मान्जरदष्टिर्यथासं । येनधाता० तेनमआयुषे० येनभूयश्च० तेनमआयुषे० । वामभागेप्येवंभूतमंत्रैस्त्रीण्येवच्छेदनानि । यत्क्षुरेणमर्चयता० वप्तावपसिश्मश्रूणि । शुंधिशिरोमुखंमामआयुःप्रमोषीरिति० क्षुरावमार्जनेविशेषः । अक्षण्व

न्कुशलीकेशश्मश्रुलोमनखान्युदक्संस्थानिकुर्वितिप्रैषविशेषः । नापितःपूर्वावशिष्टोदकैःशीतोष्णैःश्मश्रुकेशलोमान्युदक्संस्थानिवापयित्वा तत्संस्थमेवनखनिकृंतनंकुर्यात् । तस्मैव्रीह्यादिपात्रचतुष्टयंदत्वाकरंजफलंयदेकबीजंतत्पेषयित्वातेनांगोद्वर्तनंकुर्यादितिवृत्तिकारः । करंजफलंकौशेयंवैकबीजंतत्पेषयित्वेतिजयंतः । ततःपूर्वावशिष्टाभिःशीतोष्णाभिरद्भिःस्नात्वाद्विराचम्याग्नेरंतिकंगत्वा युवंवस्त्राणीत्यस्यौचथ्योदीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप् वासोधारणे० अनेनमंत्रेणैकंवस्त्रंपरिधायैतदावृत्त्याद्वितीयंप्रावरणंकुर्याद्विवचनस्यदेवतापरत्वादितिवृत्तिकृद्विवचनलिंगत्वान्मंत्रःसकृदेवभवतीतिजयंतः । पुनर्द्विराचम्यदक्षिणकरांगुल्यांजनमादाय अश्मनस्तेजोसिचक्षुर्मेपाहीतिमंत्रमावर्तयन्क्रमेणसव्यदक्षिणेचक्षुषीआंजयीत । अश्मनस्तेजोसिश्रोत्रंमेपाहीत्यावर्तयन्क्रमेणदक्षिणसव्यश्रोत्रयोःकुंडलेआबध्नीत । कुंकुमाद्यनुलिप्ता[1]भ्यांमुखमग्रेऽनुलिप्य पश्चादितरांगान्यनुलिप्य ॐ अनार्तास्यनार्तोहंभूयासमितिशिरसिस्रजंबध्नीत नमालेत्युक्त्वा । मालेतिकेनाप्युक्तेस्रगित्यभिधाप्यबध्नीत । देवानांप्रतिष्ठेस्थःसर्वतोमापातमितिमंत्रांतेयुगपदुपानहावास्थाय । दिवश्छद्मासीतिछत्रंधृत्वा । वेणुरसिवानस्पत्योसिसर्वतोमापाहीतिवैणवंदंडमादाय । आयुष्यमितिसूक्तेनसौवर्णमणिंकंठेबध्नीयात् । आयुष्यमितिसूक्तस्यसनकादयऋषयःहिरण्यंदेवताअनुष्टुबादीनिच्छंदांसि कंठेमणिधारणेविनियोगः । आयुष्यंवर्चस्यंरायस्पोषमौद्भिदम् । इदंहिरण्यंवर्चस्वज्जैत्रायाविशतादिमाम् । उच्चैर्वाजिपृतनाषाट्सभासाहंधनंजयम् । सर्वाःसमग्राऋद्धयोहिरण्येऽस्मिन्स

---

[1] अस्यइतराभ्यामितिपूर्वेणसंबंधः ।

माहिताः । शुनमहंहिरण्यस्यपितुर्मानेवजग्रभ । तेनमांसूर्यत्वचमकरंपूरुषुप्रियम् । सम्राजंचविराजंचाभिष्टिर्याचमेध्रुवा । लक्ष्मीराष्ट्रस्ययामुखेतयामामिंद्रसंसृज । अग्नेःप्रयातंपरियद्धिरण्यममृतंयज्ञेअधिमर्त्येषु । यएनद्वेदसइदेनमर्हतिजरामृत्युर्भवतियोबिभर्ति । यद्वेदराजावरुणोयद्वुदेवीसरस्वती । इंद्रोयद्वृत्रहावेदतन्मेवर्चसआयुषे । नतद्रक्षांसिनपिशाचाश्चरंति देवानामोजःप्रथमजंह्ये[1]तत् । योबिभर्तिदाक्षायणाहिरण्यंसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुःसमनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः । यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यंशतानीकायसुमनस्यमाना । तन्नआबध्नामिशतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासत् । घृताद्दुल्लुप्तंमधुमत्सुवर्णंधनंजयंधरुणंधारयिष्णु । ऋणक्सपत्नादधरांश्चकृण्वदारोहमांमहतेसौभगाय । प्रियंमाकुरुदेवेषुप्रियंराजसुमाकुरु । प्रियंविश्वेषुगोप्त्रेषुमयिधेहिरुचारुचम् । अग्निर्येनविराजतिसूर्योयेनविराजति । विराड्येनविराजतितेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेविराजसमिधंकुरु । इतिसूक्तांतेकंठेमणिंबध्नीयात् । ततउष्णीषंशिरसिप्रादक्षिण्येनसंवेष्ट्यआचारप्राप्तंबहिर्गमनादि । उपानहौसंत्यज्य उपरिनिहितांसमिधमादायतिष्ठन्नेववक्ष्यमाणमंत्रांतेस्वाहाकारेणाग्नावादध्यात् । स्मृतंचमेअस्मृतंचमेतन्मउभयव्रतम् । निंदाचमेअनिंदाचमेतन्मउभयव्रतम् । विद्याचमेअविद्याचमेतन्म० । श्रद्धाचमेअश्रद्धाचमेतन्म० । प्रज्ञाचमेअप्रज्ञाचमेतन्म० । इष्टंचमेअनिष्टंचमेतन्म० । दत्तंचमेअदत्तंचमेतन्म० । अधीतंचमेअनधीतंचमेतन्म० । कृतंचमेअकृतंचमेतन्म० । सत्यंचमेअसत्यंचमेतन्म० । श्रुतंचमेअश्रुतंचमेतन्म० । व्रतंचमेअव्रतंचमेतन्मउभयव्रतम् ।

---

[1] प्रजातंपरियत् ।

यदग्नेसेंद्रस्यसप्रजापतिकस्यसऋषिकस्यसऋषिराजन्यस्यसपितृकस्यसपितृराजन्यस्यसमनुष्यस्यसमनुष्यराजन्यस्यसाकाशस्यसातीकाशस्यसानूकाशस्यसप्रतीकाशस्यसदेवमनुष्यस्यसगंधर्वाप्सरस्कस्यसहारण्यैश्चपशुभिर्ग्राम्यैश्चयन्मआत्मनआत्मनिव्रतंतन्मेसर्वव्रतमिदमहमग्नेसर्वव्रतोभवामिस्वाहा अग्नयइदं०। अथोपविश्य ममाग्नइतिसूक्तस्यविहव्यऋषिःविश्वेदेवादेवताःआद्यास्त्रिष्टुभःअंत्याजगतीसमिदाधानेविनियोगः। वक्ष्यमाणदशस्वाहाकारसमकालंदशसमिधोजुहुयात्। ममाग्नेवर्चो० मह्यंनमंतां० जयेमस्वाहा। ममदेवा० ममांतरिक्ष० अस्मिन्स्वाहा। मयिदेवाद्रविण० दैव्याहोता० सुवीराः स्वाहा। मह्यंयजंतु० एनोमानि० तानःस्वाहा। देवीःषळुर्वी० माहास्महि० राजन्स्वाहा। अग्नेमन्युं० प्रत्यंचोयंतु० नेशत्स्वाहा। धाताधातृणां० इमंयज्ञ० न्यर्थात्स्वाहा। उरुव्यचानो० सनःप्रजायै० दाःस्वाहा। येनःसपत्ना० वसवो रुद्रा० मक्रन्त्स्वाहा। अर्वांचमिंद्र० इमंनो० मेदिनंत्वास्वाहा १०। सर्वत्रविश्वेभ्योदेवेभ्यइदं०। प्रत्यृचग्रहणंव्याख्यातमित्यत्रप्रकरणेवृत्तिकृतोक्तम्। गृहप्रवेशनीयहोमप्रकरणेतुप्रत्यृचग्रहणव्याख्यावसरेस्वाहाकारंपठन्जुहुयादित्युक्तम्। जयंतेनापिऋगंतेस्वाहाकारंकुर्वन्दशसमिधआदधातीत्युक्तम्। कारिकायांतु—ममाग्नेदशभिर्हुत्वास्वाहाकारमृगंततः। परिषेचनपर्यंतंकुर्यात्स्विष्टकृदादिकमित्युक्तम्। अत्रापिऋगंततइत्यनंतरंपठन्नित्येवाध्याहारो वृत्त्यादिमूलानुसारात्, ऋगंतस्वाहाकारयोरविच्छेदाच्च। एवंसत्यग्नावादध्यात्पश्चात्स्वाहाकारमुच्चारयेदितिवद्ध्योनमोमान्येभ्यः। विभूतिधारणांतेकृतेसमावर्तनसांगतासिद्ध्यर्थंदशब्राह्मणान्भोजयिष्यइतिसंकल्पयेत्। असंभवेत्रीनितिवा। ततईश्वरार्पणंकुर्यात्॥

कौपीनंमेखलांचविसृज्यकेशश्मश्रुलोमनखान्यपराजितायांदिशिनिखनेत् । यत्रस्वस्यमधुपर्कादिनापूजासंभाव्यतेतत्रसमावर्तनानंतरंरात्रौवासःकर्तव्यस्तदनंतरंव्रतस्वीकारः । दास्यंतिमधुपर्कंयेतत्रैतांरजनींवसेत् । ततःसंकल्पयेन्नक्तंनस्नामीत्युत्तराण्यपीतिकारिकोक्तेः तत्रैतांरात्रींवसेत् ॥ ॥ अथव्रतानि । ननक्तंस्नायादित्येवमादीन्यन्यान्यप्यत्रोह्यानीतिजयंतोक्तेश्च । अतश्चस्मृत्युक्तव्रतवत्सूत्रोक्तान्यपिपुरुषार्थान्येवनसमावर्तनांगानीतिभ्रमितव्यम् । समावर्तनभिन्नदेशकालत्वेनकारिकाकारादिभिःप्रतिपादनात् अनंगभूतवासप्रायपाठात् आद्यंतयोस्तस्येतिमहद्वैभूतं[१]स्नातकइतिचसूत्रकृदुक्त्या स्नातकपुरुषार्थकप्रतीतेश्च, स्नातकशब्दस्यवृत्तिकृतोगृहस्थपरत्वेनाभिप्रेतत्वप्रतीतेश्च, नसंशयमभ्यापद्येतेत्यस्यनसंशयंप्रपद्येतेत्यनेनैकमूलत्वलाघवाच्च । अतोऽशक्तःसूत्रोक्तान्येवव्रतानिकुर्यात् । बह्वल्पंवास्वगृह्योक्तमितिशास्त्रात् । इत्थंचसंकल्पान्कुर्यात् । ननक्तंस्नास्यामिननग्नःस्नास्यामिननग्नांस्त्रियमीक्षिष्येऽन्यत्रमैथुनाद्वर्षतिनधाविष्येनवृक्षमारोहिष्येनकूपमवरोहिष्ये नबाहुभ्यांनदीस्तरिष्ये नसंशयमभ्यापत्स्येइति । नदीग्रहणंतडागाद्युपलक्षणं । बाहुग्रहणंतुविवक्षितमितिहरदत्तादयःस्मृतिव्याख्यातारः । शक्तस्त्वन्यान्यपि । यथोक्तानिमाधवीयेकौर्मे—यज्ञोपवीतद्वितयंसोदकंचकमंडलुम् । छत्रंचोष्णीषममलंपादुकेवाप्युपानहौ । रौक्मेचकुंडलेवेदंकृत्तकेशनखःशुचिः । स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्याद्बहिर्माल्यंचधारयेत् । शुक्लांबरधरोनित्यंसुगंधःप्रियदर्शनः । नजीर्णमलवद्वासाभवेत्तुविभवेसति । नरक्तमुल्वणंचान्यधृतंवासोनकंथि

---

[१] स्नातकोभवतीतिविज्ञायतइति ।

कामिति । नित्यमित्यस्यप्रत्येकमन्वयः । अतोवेदमित्यंतेषुनित्यंधारयिष्येइतिप्रत्येकंसंकल्पः । वेदोदर्भमुष्टिः । एवंबहिर्माल्यंधारयिष्येरक्तंवासोनधारयिष्येइत्येवंरक्तादिकंथांतेषुसंकल्पः । माल्यंनिर्माल्यंस्वशरीरादुद्धृतंचंदनपुष्पादिनपुनर्धारयेत् किंतुबहिस्त्यजेदित्यर्थः । नधारयेदितिपाठेतुशिखावेष्टनादिरूपेणपुष्पमालांनधारयेदित्यर्थः । कृत्तेत्यादिषुशुक्लेत्यादिषुचप्रथमांतेषुषट्सुप्रत्येकंस्यामित्यन्वयेनसंकल्पः । कृत्तंकर्तनेनह्रस्वतांनीतंनतुवपनेन । नसमावृत्तामुंड्येरन्नित्यापस्तंवोक्तिसंवादात् । केशग्रहणंश्मश्रूपलक्षणार्थं । क्लृप्तकेशनखश्मश्रुरितिमनूक्तिव्याख्यावसरे क्लृप्तंकर्तनाद्ध्रस्वतांनीतंनतुमुंडितमितिनारायणादिभिर्व्याख्यानाच्च । विभवेसतिजीर्णमलवद्वासानस्यामितिसंकल्पः । उल्बणंशरीरपीडावहंबहुमूल्यंवा । एवंयाज्ञवल्क्येन नस्वाध्यायविरोध्यर्थमीहेतेत्यादौ, शूद्रेषुदासगोपालकुलमित्रार्धसीरिणः । भोज्यान्नानापितश्चैवयश्चात्मानंनिवेदयेदित्यंतेग्रंथे उक्तव्रतानुसारिसंकल्पाअपिशक्तेनकार्याः । तत्रयश्चेतिचकारेणकुंभकारस्यापिसंग्रहः । अत्रशूद्रविशेषस्यभोज्यान्नत्वोक्तिरत्यंतापद्विषयेतिहरदत्तः । कंदुपक्वंशूलपक्वंपायसंदधिसक्तवः । एतानिशूद्राद्ग्राह्याणिभोज्यानिमनुरब्रवीदितिविशेषवचनाद्विशेषविषयैवसेतिनारायणः । कलौतुनैतद्विषयचिंतायाःप्रयोजनम् । शूद्रेषुदासगोपालकुलमित्रार्धसीरिणांभोज्यान्नतेतिकलिवर्जमध्येपाठादितिबोध्यम् । एवंमनुनापि—स्वर्गायुष्यप्रशस्यानिव्रतानीमानिधारयेदित्युपक्रम्य—एषोदितागृहस्थस्यवृत्तिर्विप्रस्यशाश्वती । स्नातकव्रतकल्पश्चसत्यव्रतकरःशुभः । अनेनविप्रोवृत्तेनवर्तयन्वेदशास्त्रवित् । व्यपेतकल्मषोनित्यंब्रह्मलोकेमहीयतेइत्यनेनग्रंथेनोक्तानिव्रतान्यपिशक्तेनविप्रेणानुष्ठेयानि ।

कल्पइतिविप्रइतिचपदद्वयात् । यत्तुतत्रैवपठितं—नलंघयेद्वत्सतंतींनप्रधावेच्चवर्षति । नचोदकेनिरीक्षेतस्वंरूपमितिधारणा । नाश्नीयाद्भार्ययासार्धमिति । तत्रवत्सतंती गोवत्सबंधनदामेतिनारायणः । नोपरिवत्सतंतींगच्छेदितिगौतमोक्तिव्याख्यावसरेवत्सशब्दोगोजातेरुपलक्षणमितिहरदत्तः । सार्धमेकपात्रेइतिनारायणः । एकस्मिन्कालेइतिव्याख्यांतरंहरदत्तः । एतदपवादंमाधवीयेंऽगिराः—ब्राह्मण्यासहयोऽश्नीयादुच्छिष्टंवाकदाचन । नतस्यदोषमिच्छंतिनित्यमेवमनीषिणः । इति तद्विवाहविषयमितिस्मृत्यर्थसारादयः । दोषाल्पत्वपरमितिमाधवः । यच्च—नशूद्रायमतिंदद्यान्नोच्छिष्टंनहविःकृतम् । नचास्योपदिशेद्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेत् । तत्रमतिर्नीतिशास्त्रादिविषया । धर्माद्युपदेशनिषेधस्यपृथगाम्नानात् । गृहस्थशूद्रायनोच्छिष्टंदद्यादितिविवक्षितम् । उच्छिष्टमन्नंदातव्यंशूद्रायाऽगृहमेधिने । गृहस्थायतुदातव्यमनुच्छिष्टंदिनेदिनेइतिव्याघ्रवचनादितिहरदत्तः । शूद्रायोपदेशनिषेधोपिसाक्षादुपदेशविषयः । श्रावयेच्चतुरोवर्णान्कृत्वाब्राह्मणमग्रतइतिब्राह्मणद्वारकोपदेशस्वीकारविधानात् । नचेदंवक्तारंप्रतिब्राह्मणद्वारकवचनाभ्यनुज्ञाशास्त्रं । तमध्यापयीत एतयान्नाद्यकामंयाजयेदितिवत्प्रयोजकव्यापारेणप्रयोज्यव्यापारंलक्षयित्वाशूद्रंप्रत्येवब्राह्मणद्वारकश्रवणविध्यभ्युपगमात् । एवंगौतमीयनवमाध्यायेप्युक्तानिउक्तव्रतभिन्नानिस्नातकव्रतानितान्यपिशक्तेनानुष्ठेयानि । यथा—नरक्तमुल्बणमन्यधृतंवासोबिभृयात् नस्रगुपानहौ निर्णिक्तमशक्तौ नतिष्ठन्नुद्धृतोदकेनाचामेत् नशूद्राशुच्येकपाण्यावर्जितेननाकल्पांनारीमभिगच्छेत् पादेनपादधावनासंदीस्थभोजनानिवर्जयेत् नप्रावृत्यशिरोऽहनिपर्यटेत् प्रावृत्यरात्रौमूत्रोच्चारेच

सोपानत्कश्चाशनाभिवादननमस्कारान्वर्जयेत् नपदासनमपकर्षेत् नशिश्नोदरपाणिवाक्चक्षुश्चापलानिकुर्यात् नकुलकुलःस्यादिति । नस्रगित्यत्रान्यधृताइतिविपरिणतानुषंगः । अशक्तेत्वन्यधृतमपिवासःप्रभृतिनिर्णिज्यधारयेत् । उद्धृतेतिजानुमात्रे तदधिकेजलेतुतिष्ठन्नप्याचामेदित्याशयः । शूद्रेणानीतंअशुचिनावाब्राह्मणेनशुचिनावातेनैकहस्तेनानीतंयज्जलंतेननाचामेत् पादेनपादधावनंनकुर्यात् प्रावृत्यैवरात्रौपर्यटेत् प्रावृत्यैवमूत्रादिकुर्यात् । नकुलमिति । कुलमेवकुलंयस्यसकुलकुलः स्वकुलएवाध्येतव्यमितिनियमंपरित्यज्यविद्यालाभायकुलांतरमपिगच्छेदित्याशयः । एवंचसूत्रोक्ताःस्मृत्युक्तावायेसंकल्पाःकृतास्तदुल्लंघनेज्ञानतोऽज्ञानतोवाकृतेगौतमाद्युक्तंत्र्यहमेकरात्रंवाअभोजनंप्रायश्चित्तंबोध्यम् । इतिस्नातकव्रतानि ॥ ॥ अथब्रह्मचारिणआतुरतादशायामुक्तसमावर्तनासंभवेसंक्षेपेणतत्कार्यम् । संक्षेपप्रकारमाहापस्तंबः—अथैतदपरंतूष्णीमेवतीर्थेनस्नात्वातूष्णींसमिधमादधाति । अत्रसुदर्शनः—अथापरमेतद्विधानमुच्यतइतिशेषः । तीर्थेपुण्यनद्यादौसमिधंपालाशीं एवकाराच्चास्मिन्विधौनान्यत्किंचिदनुष्ठेयमिति । प्रयोगस्तुब्रह्मचारिलिंगानिमेखलादीनित्यक्त्वातीर्थेतूष्णींस्नात्वा[१]वासोंतरपरिधानादिकृत्वा श्रोत्रियागारादग्निमाहृत्ययत्रक्वचनाग्निंविधिनोपसमाधायतत्रप्रजापतिंमनसाध्यायन्तूष्णीमेवसमिधमादधातिकेशश्मश्रुवपनादिकमन्यदप्यविरोधितूष्णीमेवकर्तव्यमिति ॥ अत्रक्रमः—संकल्प्यमेखलादीनित्यक्त्वावपनंततःतीर्थेस्नानमिति । परिधानादीत्यादिपदेनद्विराचमनंतिलकधारणंच । वपनादिकमित्यादि

---

[१] वासोत्तरपरि ।

शब्देननखनिकृंतनम् । इतिसमावर्ननानुकल्पः ॥ ब्रह्मचारिदशायामृतसपिंडानासमावर्तनानंतरमुदकदानपूर्वकंत्रिरात्रमतिक्रांताशौचंकार्यम्।आदिष्टीनोदकंकुर्यादाव्रतस्यसमापनात्। समाप्तेतूदकंदत्वात्रिरात्रमशुचिर्भवेदितिमनुवचनात्। आदिष्टीब्रह्मचारीतिमिताक्षरायाम् । ततश्चब्रह्मचर्यदशायांसपिंडमरणेसतिसमावर्तनानंतरंत्रिरात्रमध्येविवाहोनकार्यः । जननेतुसत्यपिकार्यएव । जननेऽतिक्रांताशौचाभावात् ॥ इतिसंस्कारकौस्तुभेसमावर्तनम् ॥ ॥ ॥

अथविवाहः ॥ मनुः—गुरुणानुमतःस्नात्वासमावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यांसवर्णांलक्षणान्वितामिति । लक्षणान्यप्याहसएव—अव्यंगांगींसौम्यनाम्नींहंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदंतांमृद्वंगीमुद्वहेत्स्त्रियमिति । एतानिबाह्यानि । आभ्यंतराणितु—अष्टौपिंडान्कृत्वेत्याद्याश्वलायनगृह्योक्तविधानाज्ज्ञेयानि । कन्यागतंविशेषणांतरमाहयाज्ञवल्क्यः—अनन्यपूर्विकांकांतामसपिंडांयवीयसीम् । अरोगिणींभ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजामिति । अन्यपूर्विकाःसप्तविधाःपुनर्भ्वः वाचादत्तामनोदत्ताग्निपरिगतासप्तमंपदंनीताभुक्त्वागृहीतगर्भाप्रसूताचेतिबौधायनोक्ताः । एतानविवाह्याइत्येवमर्थमनन्येतिविशेषणम् । प्रथमवरस्यपातित्यादिबलवद्दोषनिर्णयेतुआद्यानांतिसृणामन्येनपरिणयनंभवतीत्यवसरेवक्ष्यामः । कांतांवरस्यचक्षुर्मनसोरानंदकारिणीमितिविज्ञानेश्वरादयः । तेनश्वशुरादिचक्षुरादेस्तत्कारित्वाभावेपिनदोषः । एकस्यांपिंडदानक्रियायांदातृत्वपिंडभाक्त्वलेपभाक्त्वान्यतरसंबंधेनान्वयःसापिंड्यम् । तथाचमात्स्ये—लेपभाजश्चतुर्थाद्याःपित्राद्याःपिंडभागिनः । पिंडदःसप्तमस्तेषांसापिंड्यंसाप्तपौरुषमिति । पिंडदइत्येकवचनांतेनापि

यजेतेतिवद्यासज्यवृत्तिकर्तृत्वाभिप्रायेणाग्निसाध्यश्राद्धेषुदंपत्यात्मककर्तृनिर्देशात्पत्न्यापिसापिंड्यसिद्धिः। एकस्यामितिचोद्देश्यदेवतायाःकस्याअप्यभेदेनापिंडदानक्रियायाअभेदोविवक्षितः नतुक्रियाव्यक्त्यैक्यम् । तेनचैत्रस्यस्वीयपितृव्यादिभिःसापिंड्यसिद्धिः । अस्तिहिचैत्रियश्राद्धोद्देश्यतत्पितामहादेस्तत्पितृव्यकर्तृकश्राद्धेपितृत्वेनोद्देश्यता । नचैवंगयाश्राद्धादौ—यन्नाम्नापातयेत्पिंडंतंनयेद्ब्रह्मशाश्वतमितिशास्त्रेणोद्देश्यतायामित्रादिसाधारणत्वात्तत्कन्यायामपिसापिंड्येनाविवाह्यतापत्तिः । अवयवानुवृत्तिःसापिंड्यमितिमतेविधात्रवयवानुवृत्त्यातिप्रसंगस्येवास्याप्यतिप्रसंगस्य—सप्तमात्पंचमादूर्ध्वंमातृतःपितृतस्तथेत्यादिवचोनुरोधेनपित्रादिसंबंधिषुकेषुचिदेवसपिंडशब्दस्ययोगरूढ्यंगीकारेणपरिहारसंभवात् ईदृशसापिंड्यरहिताअसपिंडेतिकेचित् । अस्मिन्मतेशुक्रशोणिताद्यवयवानुवृत्तिसापेक्षप्रतीतिकस्यपितृत्वादेरेवरूढिविषयत्वात् अवयवानुवृत्तिःसापिंड्यमित्येवमतंलाघवाद्युक्तम् । नहितत्रमतेरूढिविषयेपिंडदानक्रियायाःप्रवेशोस्ति । अतः समानएकःपिंडःकूटस्थदेहआरंभकोयस्याःसासपिंडातद्भावःसापिंड्यम् । तच्चद्विविधं मुख्यमारोपितंच । आद्यंद्विविधं साक्षादेकशरीरावयवानुवृत्त्यायथाभ्रात्रोर्भगिन्योश्चपरंपरयापौत्रयोर्दौहित्रयोश्च । अत्रहिपितृमातृद्वारकैकशरीरावयवानुवृत्त्यासापिंड्यंउक्तयाज्ञवल्क्यवचनाच्च । वधूवरयोःपितृकुलेसप्तशीर्षपर्यंतंकूटस्थावयवानुवृत्तिःसपिंडपदरूढिविषयः । मातृकुलेपंचमपर्यंतंतदनुवृत्तिस्तद्विषयः । पंकजशब्दस्येवपद्मत्वैकार्थसमवायिपंकजनिकर्तृत्वमित्यंगीकारेणनातिप्रसंगदोषः । तथाचशास्त्रांतरं—वध्वावरस्यवातातःकूटस्थाद्यदिसप्तमः । पंचमीचेत्तयोर्मातासापिंड्यंविनिवर्तत

इति । अतश्चपितृद्वारकसापिंड्यविचारेसप्तमादूर्ध्वंसापिंड्यनिवृत्तिः मातृद्वारकतद्विचारेतुपंचमादूर्ध्वमितिनिर्णयः । एवंचवरादेःपितृद्वारकसापिंड्याचिंतासमयेशीर्षगणनायांपंचम्यांस्त्रीव्यक्तौसत्यामपितत्पुत्रकन्यानैवविवाह्या शास्त्रबलेन मंडूकप्लुत्यातत्ररूढिविषयसापिंड्यानुवृत्त्यभ्युपगमात् । यद्वसिष्ठेनोक्तं—पंचमींसप्तमींचैवमातृतःपितृतस्तथेति । उद्वहेदितिशेषः । यच्चपैठीनसिना—त्रीनतीत्यमातृतःपंचातीत्यपितृतइति तदर्वाङ्निषेधार्थमितिविज्ञानेश्वरः । अनुकल्पपरमितिमाधवः । युक्तंचैतत् अश्रुतनिषेधपरत्वात्, अनुकल्पतयापिस्वार्थपरतायान्याय्यत्वात्, दशभिःपुरुषैःख्याताच्छ्रोत्रियाणांमहाकुलात् । उद्वहेत्सप्तमादूर्ध्वंतदभावेतुसप्तमीम् । पंचमींतदभावेतुपितृपक्षेत्वयंविधिः । सप्तमींचतथाषष्ठींपंचमींचतथैवच । एवमुद्वाहयेत्कन्यांनदोषःशाकटायनः । तृतीयांवाचतुर्थींवापक्षयोरुभयोरपि । विवाहयेन्मनुःप्राहपाराशर्योगिरायमः । असपिंडाचयामातुरसगोत्राचयापितुः । साप्रशस्ताद्विजातीनांदारकर्मणिमैथुने । यस्तुदेशानुरूपेणकुलमार्गेणचोद्वहेत् । नित्यंसव्यवहार्यःस्याद्वेदाच्चैतत्प्रतीयते इतिचतुर्विंशतिमताच्च । तृतीयांमातृतःकन्यांतृतीयांपितृतस्तथा । विवाहयेन्मनुःप्राहपाराशर्योगिरायमइतिचंद्रिकापारिजातोदाहृतषट्त्रिंशन्मताच्च । पूर्वस्मृतौसप्तमीमित्यादिषुचतुर्थीमित्यंतेषुद्वितीयांतेषुप्रत्येकंमहाकुलादित्यंतार्धस्यानुषंगः । ततश्चमहाकुलानुरोधेनसापिंड्यसंकोचःस्वीकार्योनतुतद्भीत्याअधमात्कुलात्कन्यास्वीकार्येतिविधीयते । अतएवाश्वलायनेनप्रथमंकुलपरीक्षैवोक्ता—कुलमग्रेपरीक्षेतयेमातृतःपितृतश्चेतियथोक्तंपुरस्तादिति । एतद्व्याख्यावसरेवृत्तिकृतोक्तम्—अग्रवचनंवधूवरगुणेभ्यःकुलमेवकथंप्रधानंस्या

दिति।पुरस्तादितिश्रौतसूत्रेनवमाध्यायेदशपेयप्रकरणइत्यर्थः । यथोक्तमितिप्रतीकंगृहीतं। तत्रचेत्थंपठितं—येमातृतः पितृतश्चदशपुरुषंसमनुष्ठिताविद्यातपोभ्यांपुण्यैश्चकर्मभिर्येषामुभयतोनाऽब्राह्मण्यमिति। विद्यादिगुणसंपन्नामातृकुलेपंच पितृकुलेचपंचपुरुषाविद्यंतेतत्कुलमिति दशपेयेऋत्विक्स्वीकारायया कुलपरीक्षोक्तासाकन्यास्वीकारायकार्येत्याशयः । मनुरपि—महांत्यपिसमृद्धानिगोजाविधनधान्यतः।स्त्रीसंबंधेदशैतानिकुलानिपरिवर्जयेत् । हीनक्रियंनिष्पुरुषंनिश्छंदोरोमशार्शसं । शय्यामयाव्यपस्मारिश्वित्रिकुष्ठिकुलानिच ।हीनक्रियंविहितक्रियारहितम् । निष्पुरुषंपुंप्रसवरहितं। निश्छंदो वेदाध्ययनरहितं। रोमशंसर्वांगारूढरोमकं।अर्शसमित्यादिपदैस्तत्तद्रोगवंतिकुलान्युच्यंते । दारसंग्रहफलभूतसंततौदोषानुवृत्तिपरिहारायचैषाकुलपरीक्षोच्यते कुलानुरूपाःप्रजाःसंभवंतीतिहारीतवचनात् । इत्थंचोक्तस्मृतौकुलानुरोधेनानुकल्पविधिस्त्रीनेववर्णान्प्रतिस्वीयदेशकुलाचाराविरोधेनोच्यते श्रोत्रियाणामित्युपक्रमात्, असपिंडेतिश्लोके साप्रशस्ता द्विजातीनामितिमहाकुलीनायाःसप्तपुरुषसापिंड्यसामान्याभाववत्या द्विजान्प्रतिमुख्यकल्पत्वोक्त्यातदभावविहितानामनुकल्पानामपिद्विजविषयत्वज्ञापनाच्च मुख्यकल्पानुकल्पयोरेकविषयत्वनियमात् । यस्तुदेशेतिश्लोकेचव्यवहार्यत्वेनवेदसंमतत्वेनचोक्तानुकल्पेषुनिर्दोषतायादेशकुलपरिग्रहेणैवोपन्यासात् । अतश्चाऽसपिंडेतिश्लोकेद्विजातिग्रहणात्सापिंड्यसंकोचविधयःशूद्रविषयाः पंचमेसप्तमेचैवयेषांवैवाहिकीक्रिया । क्रियापराअपिहितेसर्वेतेशूद्रतांगताः । इतिमरीचिवाक्येशूद्रेशूद्रतापत्तेरसंभवाच्चेतिवदंतोनिरस्ताः । अंतेशूद्रत्वमसच्छूद्रत्वं तस्यसच्छूद्रेष्वप्यापत्तिसंभवात् । यच्चोदाहृतेचतु

विंशतिमतांत्यश्लोके वेदाच्चैतत्प्रतीयंतइत्युक्तंतस्यायमाशयः—तृतीयचतुर्थादिविषयेअनुकल्पतयास्वकुलदेशाविरोधेनपरिणयनमुक्तं तदेववेदात्प्रतीयतइत्युक्तम् । तद्यथा शतपथेदार्शिकप्रकरणेपठ्यते—तस्मात्समानादेवपुरुषादत्ताचाद्यश्चजायतेउततृतीयेसंगच्छावहैचतुर्थेसंगच्छावहाइति । अत्रचकूटस्थादुत्पन्नयोर्भोक्तृभोग्ययोर्मिथःसंकल्पोक्तिस्तृतीयइत्यादिका तद्दशाचसापिंड्यसंकोचविधिकल्पनमितिमाधवः । एवं आयाहींद्रपथिभिरितिबह्वृचमंत्रे तृप्तांजहुर्मातुलस्येवयोषाभागस्तेपैतृष्वसेयीवपामिवेतिमातुलकन्यादेर्भागिनेयादिंप्रतिभागत्वोक्त्यापरिणयनसूचनात् सापिंड्यसंकोचांगीकारेणमातुलकन्यादिपरिणयनेइदंमंत्रलिंगमपिसाधकम् । इदंच मातुलस्यसुतामूढ्वामातृगोत्रांतथैवच । समानप्रवरांचैवत्यक्त्वाचांद्रायणंचरेदितिस्मृत्यपेक्षयाबलवदितिबलाबलाधिकरणवार्तिकव्याख्यावसरेन्यायसुधाकारउक्तवान् । वेदाच्चैतत्प्रतीयतइत्यत्रसर्वनाम्नापूर्वार्धनिर्दिष्टदेशकुलानुसारिणएवसापिंडयसंकोचस्यपरामर्शात्तदनुसरणमपिवेदोक्तमितिज्ञाप्यते । तथाचामनंतिबह्वृचामंत्रं—तेनस्राध्वंतेवततउनोअधिवोचत । मानःपथःपित्र्यान्मानवादधिदूरंनैष्टपरावत इति । अत्रहिपित्र्यात्पितुरागतात् मानवान्मनुसंमतात् ( उक्तंहितेन—येनास्यपितरोयातायेनयाताःपितामहाः । तेनयायात्सतांमार्गंतेनगच्छन्नदुष्यतीति ) पथःमार्गात्तदतिक्रमेणनोऽस्मान्दूरंमानयतेतिदेवप्रार्थनयातादृशमार्गएवावस्थानमुचितमितिज्ञाप्यते । इतिस्तुतासोअसथा० मनोर्देवायज्ञियासइतिपूर्वर्चिप्रकृतदेवानामेवनैष्टेतिमध्यमपुरुषेकर्तृत्वानुवादेननिषेधसंभवात् । अतएववेदाच्चेतिचकारेणमनुस्मृतेरितिसमुच्चीयते । अनेनचयथा—भृग्वग्न्यनशनाद्यैश्चवृद्धस्यमरणं

तथेतिसत्यपिकलिवर्ज्येषुपाठे येवैतन्वं १विसृजंतीतिश्रुतिस्मृतिसिद्धत्वात्त्रिवेणीप्रवेशस्य तद्भिन्नस्यैवजलप्रवेशस्यकलिवर्ज्यत्वंस्वीक्रियते तथास्वकुलदेशाविरोधिनामातुलदुहितृपरिणयनादेरुक्तविधयानेकश्रुतिस्मृतिसिद्धत्वाद्गोत्रान्मातुःसपिंडाचविवाहोगोवधस्तथेतिमाधवोदाहतब्राह्म[1]वचनेनप्रतीयमानंमातुलकन्यापरिणयनादेःकलिवर्ज्यत्वमपि स्वकुलदेशविरोधितादृशपरिणयनविषयमितिज्ञाप्यते । यच्चबौधायनः—पंचधाविप्रतिपत्तिर्दक्षिणतस्तथोत्तरतइत्युपक्रम्य दक्षिणतः पर्युषितभोजनादिभिःसहमातुलकन्यापरिणयनाद्युपन्यस्योत्तरतश्चोर्णाविक्रयाद्युपन्यस्याह तत्रतदितरस्मिन्कुर्वन्नदुष्यति इतरइतरस्मिन्तत्तद्देशप्रामाण्यान्मिथ्यैतदितिगौतमःउभयमेवनाद्रियेतशिष्टस्मृतिविरोधदर्शनादिति । तत्रापिप्रामाण्यादित्यंतोग्रंथो मिथ्यैतदित्यादिनापर्युषितभोजनसीधुपानादेर्व्यावर्त्यमातुलकन्यापरिणयनादिविषयतयाव्यवस्थाप्यते । वेदाचैतत्प्रतीयतइतिस्मृत्याश्रुतिस्मृतिसिद्धत्वेनोपन्यस्तोक्तपरिणयनेस्मृतिविरोधोपन्यासासंभवात् पर्युषितभोजनादौकर्तव्यतासूचकश्रुतेर्विशेषतःस्मृतेश्चाभावेनस्मृतिविरोधहेतूपन्याससंभवेनचमिथ्यैतदितितद्विषयमेवेत्यादिसुधीभिरूह्यम् । अतःसिद्धमेतत्—कलावपियेषांकुलेदेशेऽनुकल्पत्वेनसापिंड्यसंकोचःपरंपरयासमागतस्तेषांतादृशसंकोचेनविवाहे नदोषः अस्तिचभार्यात्वोत्पत्तिः । अन्येषांतैःसहव्यवहारेनैवदोषः । स्वयंतुस्वकुलदेशविरुद्धसापिंड्यसंकोचेनविवाहेभवत्येवदोषः नचभार्यात्वोत्पत्तिः । दृश्यंतेहिस्वयंसापिंड्यसंकोचेनविवाहमकुर्वंतोपितादृशसंकोचेनासक्तज्ञा

---

[1] ब्राह्मणवचनेन ।

तद्विवाहेभ्यः कुलेभ्यः कन्याः स्वीकुर्वंतस्तत्कुलीनान्श्राद्धादौ भोजयंतश्च बहवः शिष्टाः । अतएवमातुलकन्योद्वाहिनां हेमाद्र्यादौ श्राद्धनिषेधोपि स्वकुलदेशेपरंपरयानागतसापिंड्यसंकोचेनकृतविवाहविषयएवेति बोध्यम् । दत्तकसापिंड्यंतुदत्तकनिर्णयेप्रागेवोक्तमितिनेहलिख्यते । मुख्यावयवानुवृत्त्यभावेपि द्वितीयसापिंड्यप्रकारंसुमंतुः—पितृपत्न्यः सर्वामातरस्तद्भ्रातरोमातुलास्तद्भगिन्योमातृस्वसारस्तद्दुहितरश्चभगिन्यस्तदपत्यानिभागिनेयानि अन्यथासंकरकारिणः स्युरिति । मदनरत्नेपारिजातेमाधवीयेचतद्भगिन्यइतिनपठितं । अन्यग्रंथेषुतुपठ्यते । अत्र यावद्वचनंवाचनिकमितिन्यायेनपरिगणितेष्वेवसापिंड्यंनतुसप्तमादिपर्यंतमितिभट्टचरणप्रभृतयोबहवः । अन्येतूद्देश्यतावच्छेदकानांपितृपत्नीत्वतद्भ्रातृत्वादीनांभेदेनवाक्यभेदात्तन्निवृत्त्यैलक्षणयासापत्नमातामहकुलेचतुःपुरुषंसापिंड्यमातिदेशिकंविधीयते । अतश्चमातुलादिदुहितृष्विवतत्पुत्रेष्वपिसापिंड्यात्कन्यायाः सपत्नमातुलपुत्रेणनविवाहइत्याहुः । तन्न । यत्रहिश्रुतयावच्छब्दानामेकस्मिन्नर्थेतात्पर्यंलक्षणोत्तरंचैकरूपेणप्रामाण्यंबोद्धव्यान्प्रतिसंभवति तत्रैवलक्षणयावाक्यभेदपरिहारो यथार्धमंतर्वेदीत्यादौ । अत्रच पितृपत्न्यइतिप्रथमवाक्यमेवनसापत्नमातरिउक्तविधसापिंड्यपरं, नहितस्याविवाहप्रसक्तिरस्तियेनविवाहप्रतिबंधाय सापिंड्यातिदेशः क्रिंयेत[1] किंतु सापत्नमातरि[2] मुख्यमातृत्वातिदेशेनतद्भ्रात्रादिषुतन्निरूपितमुख्यभ्रातृत्वादेव[3] विवाहप्रतिबंधकतापरम् । मदनपारिजातेहि—असपिंडाचयामातुरसगोत्राचयापितुरितिमनुवाक्यव्याख्यावसरे—असपिंडाच

---

१ क्रियेत । २ सपत्नमातरि । ३ त्वादेरेव ।

यामातुरित्यस्यफलप्रदर्शनायोक्तं, सपत्नमातृकुलजा स्वासपिंडा मात्रसगोत्रा मातृसपिंडाचेति । तत्रविवाहप्रसक्ताविदसुच्यतेअसपिंडाचयामातुरिति । तथाचसापत्नमातुःसपिंडेष्वपिमातुलादिव्यवहारंदर्शयतिसुमंतुरित्युक्त्वापितृपत्न्यइत्याद्युदाहृतम् । एवंवदताहिग्रंथकारेणसर्वेषांवाक्यानांयथाश्रुतेऽर्थएवतात्पर्यं[१]प्रदर्श्यते । लक्षणोत्तरंचभवन्मतेसापत्नपुत्रंप्रतिमातुलादिसापिंड्योक्तिस्तादृशकन्यांप्रतिदुहितृषुसापिंड्योक्तिरफलेतिनैकरूप्येणप्रामाण्यसंभवः । लक्षणातःपूर्वंचप्रतिवाक्यंमातृत्वमातुलत्वाद्यतिदेशोयोग्यतयात्रेयीवधेब्रह्महत्याप्रायश्चित्तस्येवमातृगमनप्रायश्चित्तस्यभागिनेयीपरिणयनतदुपगमनादिप्रायश्चित्तस्यचातिदेशव्यवस्थयाकुर्वन्नवैरूप्यमावहतीतिनलक्षणोचिता । नहिगुणभूतवाक्याश्रितदोषभयात्प्रधानप्रयोजनबाधउचितः । उदाहृतश्चोक्तसुमंतुवाक्येषुप्रतिवाक्यप्रयोजनभेदोभियुक्तैः । मुख्यमात्रादाविवसपत्नमात्रादौअभिवादनसंमाननाद्यतिदिश्यते तत्तदुपगमनेवधेवा तद्दुहित्रादिपरिणयेप्रायश्चित्तंवा तादृशेमातुलादिमरणे आशौचविशेषोवेति । किंच अंतर्वेदिदेशमात्राविधानेनवाक्यभेदपरिहारः बहिर्वेदिदेशेनियोगेनार्थांतराप्राप्तेरितिवार्तिकादौस्फुटम् । अत्रतुतदपत्यानिभागिनेयानीत्येतावतैवतच्छब्दमहिम्नापूर्ववाक्याधिगम्यसापिंड्यप्राप्तेःपूर्ववाक्यान्यविधायकानिस्युरितिकथंवाक्यभेदः । किंच तद्भगिन्योमातृस्वसारइतिभवदुदाहृतपाठेतदनर्थकंभवन्मतेस्यात्, तृतीयचतुर्थस्थानइवद्वितीयस्थानेप्येकशीर्षसंकीर्तनेनैवचतुःपुरुषसापिंड्यलाभात् । अनर्थकंचतद्भ्रातरोमातुलाइत्यपिस्यात्,

---

[१] प्रदर्शितम् ।

पितृपत्न्यःसर्वामातरस्तद्भागिनेय्योभगिन्यइत्येतावतापितल्लाभात् । एवंश्रीमतांलक्षणांगीकरणंस्वसिद्धांतविरुद्धम् । तथाहि—अभ्युदयेष्टिवाक्येस्थविष्ठदध्नोर्द्वयोरुद्देश्यतानिमित्तोवाक्यभेदोभट्टैरंगीकृतः नांगीकृतश्चपंचशराववाक्येद्रव्यदेवताविधिनिमित्तोवाक्यभेदः । अनयोर्वाक्यभेदयोःकोभेदइतिकैश्चित्कृताक्षेपनिरासःश्रीमद्भिरित्थंकृतः सहश्रपयतीतिवाक्यानर्थक्यभयादभ्युदयेष्टिवाक्येतदंगीकारउचितइति । एवंसतिप्रकृतेऽनेकवाक्यानर्थक्यभयात्कथंनतदंगीकारे श्रीमतामौचित्यबुद्धिः । अस्तुवाक्यभेदभयाच्चतुःपुरुषसापिंड्यनिषेधलक्षणा । चतुष्ट्वंतुनव्यक्त्यपेक्षंभ्रातृभगिन्यादीनामानंत्यात् किंतुसप्तपदार्थवाक्येयथाघटादीनांरूपादीनांचयथाक्रममेकत्वापादकद्रव्यत्वगुणत्वादिसामान्यगोचरापेक्षाबुद्ध्यात्मकंसप्तत्वंतादृशबुद्धिजन्यंवास्वीक्रियते तथाप्रकृतेपितद्भ्रातृत्वदुहितृत्वादिसामान्यविषयापेक्षाबुद्ध्यात्मकंतज्जन्यमेववाचतुष्ट्वादिस्वीकार्यं नत्वनुपस्थिततदपत्यत्वादिविषयतादृशबुद्ध्यात्मकं उपस्थितत्यागेनुपस्थितस्वीकारेचमानाभावात् । किंचमाधवेनअसपिंडाचयामातुरसगोत्राचयापितुरितिमनुवाक्यव्याख्यानावसरे—ब्राह्मादिषुविवाहेषुयातूढाकन्यका भवेत् । भर्तृगोत्रेणकर्तव्यातस्याःपिंडोदकक्रिया । गांधर्वादिविवाहेषुपितृगोत्रेणधर्मविदितिमार्कंडेयपुराणमुदाहृत्योक्तं मातुलकन्यादिनिषेधवाक्यानिगांधर्वादिविवाहोढोत्पन्नविषयाणि तत्रसापिंड्यनिवृत्तेरभावात्, मातुलकन्यादिविवाहकर्तव्यताबोधकास्तुश्रुतिस्मृतिसदाचाराब्राह्मादिविवाहोढोत्पन्नविषयाः तत्रसापिंडयनिवृत्तेरित्युक्तवा तादृशनिषेधप्रदर्शनावसरे मातुलस्यसुतामूढ्वेत्यादिप्राये पितृपत्न्यइत्यादिसुमंतुवाक्यमुदाहृतम् । तद्यथा शातातपः—मातुलस्यसुता

मूढ्वामातृगोत्रांतथैवच । समानप्रवरांचैवत्यक्त्वाचांद्रायणंचरेत् । पैठीनसिः—पितृमातृस्वसृदुहितरोधर्मतस्ताभगिन्यस्तावर्जयेदिति । सुमंतुरपिपितृपत्न्यइत्यादि ।व्यासः—मातुःसपिंडायत्नेनवर्जनीयाद्विजातिभिरिति । ततोविशेषप्रवृत्तानामेषांवचनानांकथंविशेषविषयतेत्याशंक्य विशेषवचनबलादितिब्रूमइतिप्रतिज्ञाय मनुवाक्यमुदाहृतम्—पैतृष्वस्रेयींभगिनींस्वस्रीयींमातुरेवच । मातुश्चभ्रातुराप्तस्यगत्वाचांद्रायणंचरेत् । एतास्तिस्रस्तुभार्यार्थेनोपयच्छेत्तुबुद्धिमानिति । अत्रचभगिनीपदंपूर्वोत्तरद्वितीयांताभ्यांसंबध्यते । आप्तपदंचमातुर्गांधर्वादिविवाहप्रयुक्तसापिंड्यपरं । पैतृष्वसेयीगांधर्वविवाहोढैवविवक्षिता । अतोभगिन्यादिपदसार्थकत्वानुरोधेनमनुवचनादितरेषांविशेषविषयत्वमित्युक्तम् । स्वीकृतश्चास्यमनुवाक्यस्यभगिन्याप्तपदमहिम्नेदृशोऽभिप्रायोन्यायसुधाकारेणबलाबलाधिकरणे । एवंचमाधवेनसुमंतुवाक्यस्यपूर्वोत्तरदेशोदाहृतशातातपपैठीनसिमनुवाक्येषुमातुलसुतात्वमातृगोत्रत्वाद्युद्देश्यतावच्छेदकभेदेनवाक्यभेदस्यपरिहारायलक्षणयैकोद्देश्यतावच्छेदकस्यवक्तुमशक्यत्वात् तस्यपुंसाधारण्येचद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति, ताभगिन्यइति, एतास्तिस्रस्तुभार्यार्थेनोपयच्छेतेति,नैमित्तिकविधेयसमर्पकपदानन्वयापत्तेरपरिहार्योवाक्यभेदः।तथाचतत्समानविषयतयामाधवोदाहृतेसुमंतुवाक्येपिवाक्यभेदएवमाधवसंमतइतिस्वीकर्तुमुचितं प्रायपाठभंगस्यान्याय्यत्वात् । गांधर्वविवाहप्रयुक्तक्लृप्तमाधवसंमतसापिंड्येनैवसकलसुमंतुवाक्यानांसंभवेश्रुत्यंतरकल्पनापादकचतुःपुरुषापूर्वपरिणेतृनिरूपितसापिंड्यविधिकल्पनायाअन्याय्यत्वाच्च । कल्प्यविधिविषयसापिंड्यस्यापिगौणत्वेनविधेयमुख्यत्वालाभाच्च । अस्मन्मतेतुमातृत्वाद्य

तिदेशेनविधिविषयस्यसंमाननप्रायश्चित्तादेर्मुख्यत्वात् । नचसापिंडयबोधनएवसंकरकारित्वापादनरूपवाक्यशेषोपपत्तिरित्यपिशंक्यम् । अवश्यकर्तव्यसंमाननाशौचातिक्रमस्या[1]नाचारसंकरापादकत्वसंभवात्, प्रायश्चित्तनिमित्तनिषेधातिक्रमस्यतुतदापादकतायामतद्वयेपितुल्यत्वात् । नन्वेवंमदनपारिजातोक्तवसिष्ठवाक्यव्याख्यानसंगच्छते तेनहिपंचमींसप्तमींचैवमातृतःपितृतस्तथेतिवसिष्ठवाक्यमुदाहृत्योक्तं—तत्सवर्णसापत्नमातामहकुलविषयं, ब्राह्मणादीनांक्षत्रियादिदानसमुत्पन्नपितृकुलविषयंच। एकत्रावयवानुवृत्तेरभावादन्यत्रसावर्ण्याभावाच्चेतिसुमंतुवाक्यस्यसापिंड्यविषयत्वे तदवधिप्रदर्शनार्थंवसिष्ठवाक्येपंचमीमितिसंगच्छते अन्यथानुपपन्नंस्यादितिचेत् । न । ईदृशवाक्यानांचतुर्विंशतिमताद्यनुसारेणानुकल्पाद्यर्थांतरतात्पर्यस्यप्रागेवदर्शितत्वात्, पारिजातव्याख्यायामपि तदपत्यानिभागिनेयानीतिभागिनेयीत्वेनसिद्धायाइवतत्कन्यायाअपियुक्त्याभासेनप्रसिद्धभागिनेयीकन्यायाइवापरिणेयत्वेप्रसक्तेतन्निवृत्त्यासर्वसुमंतुवाक्यानांयथाश्रुतेर्थतात्पर्यंदीर्घार्थत्वसंभवात् (?)। यथाहिसपत्नमातरिमातृत्वातिदेशपरेप्रथमवाक्येयन्निरूपितंसपत्नमातृत्वंतंप्रत्येवभवन्मतेपिसापिंड्यातिदेशोविधीयतेनतुतत्पुत्रंप्रत्यपि । यथाचास्मन्मतेमातुलत्वाद्यतिदेशोपितंप्रत्येवविधीयतेनतुमातुलकन्यादौ पितुर्भगिनीत्वातिदेशेनपुत्रंप्रत्यपियौक्तिकःपितृस्वसृत्वाद्यतिदेशःसिद्ध्यति । यथाचतदपत्यानीत्यंत्यवाक्येन भागिनेयत्वातिदेशेपितत्कन्यायांनयौक्तिकोभागिनेयीकन्यात्वातिदेशः युक्त्याभासस्येदृशविषयसाधकतयावसिष्ठेनापि

---

[1] मस्याचार ।

पारिजातोक्तरीत्याप्रदर्शनात् । तथामातुलकन्यायांभगिनीत्वातिदेशेपिनमातुलसुतेभ्रातृत्वातिदेशोपि यावद्वचनंवाचनिकमित्येवाभियुक्तस्वीकारौचित्यादित्यलंसवर्णसपत्नमातृकुलेसापिंड्यविचारेण । असवर्णमातृकुलेतुतद्विचारस्यनकलौ प्रयोजनं असवर्णाविवाहस्यकलिवर्जत्वात् । वध्वावरस्यवामुख्यपितृद्वारकसापिंड्यंतुकूटस्थमारभ्यसप्तमादूर्ध्वंनिवर्तते तयोरेवमुख्यमातृद्वारकंतुतमारभ्यैवपंचमादूर्ध्वंनिवर्ततइतिसिद्धम् । ततश्चमुख्यकल्पेनकुलद्वयवर्जनीयकन्यानामभियुक्तोक्तसंख्योपपन्नाभवति । यथाहुः—उद्वोढुःपितरौपितुश्चपितरौतज्जन्मकृद्दंपतीद्वंद्वंतस्यचतुष्कमष्टकमतोप्यस्यक्रमात्षोडश । वंशारंभकदंपतीप्रमितिरित्यासप्तकक्षंरदाएकैकान्वयकन्यकाःपितृकुलेत्वासप्तकक्ष्यंब्रुवे १ । यद्यप्येकस्यबह्वयोपिसुताःस्युस्तदपीहतु । संबंधसाम्यादेकैवगणितेत्यवधार्यताम् २ । एकस्मान्मिथुनात्सुतोऽथदुहिताद्वंद्वद्वयंतद्द्वयात्तस्माद्द्वंद्वचतुष्कमष्टचततोतःषोडशातोरदाः । यावत्सप्तमकक्ष्यमग्निऋतवःकन्याइहैकान्वयेतादंतैर्गुणितारसैकखदृशोवंशे सपिंडाःपितुः ३ । मातुर्जन्मदद्दंपतीचमिथुनद्वंद्वंतयोःसागरास्तस्याःपंचमकक्ष्यमश्वमितिरित्येकान्वयेपुंसुते । द्वंद्वाद्द्वंद्वयुगंततोऽब्धयइतोष्टौपंचकक्ष्यंशरक्षोण्यःसप्तगुणाःशराश्रविधवोमातुःसपिंडाःकुले ४ । कुलद्वयस्यकन्यकायुतामिथःसपिंडका । हिमांशुदृग्धरादृशो २१२१ विवाहकर्मवर्जिताः ५ । अत्रप्रथमश्लोकेवरस्यपितृपक्षेसापिंड्येनाविवाह्यकन्यानां संख्यांदर्शयितुंप्रत्येकंएककन्यायाःपितरावेकंद्वंद्वमित्येवमंगीकृत्यसप्तकक्ष्यं द्वंद्वानांसंख्यामुक्त्वापितृपक्षेएकैकद्वंद्वंकुलेतावत्कन्यानांसंख्योक्तिप्रतिज्ञाक्रियते । तथाहि—वरःप्रथमःद्वितीयस्थानस्थितंवरपितरौद्वंद्वं १, तृतीयस्थानेपितुःपितरौ

द्वंद्वं १, चतुर्थस्थानेतयोःप्रत्येकंजनकेद्वंद्वे २, पंचमस्थानेतद्द्वंद्वद्वयघटकपुंद्वयस्त्रीद्वययोर्जनकद्वंद्वानि ४, षष्ठस्थानेतद्घट
काष्टसंख्यस्त्रीपुंव्यक्तिजनकानिद्वंद्वानि ८, सप्तमस्थानेतद्घटकषोडशव्यक्तिजनकादिद्वंद्वानि १६, अतोपीतितसिःष
ष्ठ्यर्थे । तज्जन्मकृदितिसमासांतर्गतजन्मकृत्पदस्यतस्येत्यादिषष्ठ्यंतेपुनिष्कृष्यप्रत्येकमन्वयः । ततश्चतस्यजन्मकृद्द्वंद्वानां
चतुष्कमित्येवंवाक्यार्थउन्नेय इत्यासप्तकक्षमित्यस्यमध्यमणिन्यायेनान्वयः । दंपतिशब्देनद्वंद्वमुच्यते । रदशब्देनद्वात्रिंश
त्संख्योच्यते । ततश्चेतिप्रमितिःसिद्धा । तथाचापेक्षाबुद्ध्याउक्तसंख्यासिद्धेत्याशयः १ । ननुनोक्तद्वंद्वसंख्या नापिवक्ष्य
माणाकन्यासंख्यापिसंभवति द्वंद्वद्वयघटकयोःस्त्रियोरेकद्वंद्वजन्यत्वसंभवात्, एकस्माद्द्वंद्वादनेककन्यानामपिसंभवात्,
अतउक्तं—यद्यपीति । एकस्यद्वंद्वस्यस्युरित्यंतेनशंकाद्वयानुवादः । इहद्वंद्वसंख्यायांतुशब्दस्तद्विषयप्रथमशंकानिवृत्त्यर्थः ।
साम्यादित्यनंतरंएकस्मादितिसामर्थ्यलभ्यं । ततश्चगणनासौकर्यायजन्यकन्याभेदेनजनकद्वंद्वेभेदमारोप्य जनकद्वंद्वैक्ये
नचजन्यास्वभेदमारोप्य संख्याद्वयोपपत्तिरित्याशयः २ । उक्तद्वात्रिंशद्द्वंद्वानांमध्येएकद्वंद्वकुलेउद्वोढुःसपिंडकन्यानांत्रि
षष्टिरूपामवांतरसंख्यांतावदाह—एकस्मादिति । प्रथममेकंमिथुनं, ततःपुत्रःकन्याचेतिद्वंद्वंद्वितीयेस्थाने, ततःप्रत्येकं
ताभ्यांकयाचित्केनचिन्मिथुनभावंगताभ्यांपुत्रःकन्याचेतिद्वंद्वद्वयंतृतीये, ततोद्वंद्वद्वयात्तयैवरीत्याद्वंद्वचतुष्टयंचतुर्थे, तत
श्चतुष्टयात्तयैवरीत्याद्वंद्वाष्टकंपंचमे, ततोष्टकात्तेनैवप्रकारेणषोडशद्वंद्वानिषष्ठे, तेभ्यःषोडशेभ्योऽनेनैवप्रकारेणद्वात्रिंशद्द्वंद्वा
निसप्तमेस्थानइतिद्वितीयस्थानप्रभृतिषष्ठपर्यंतमेकत्रिंशद्द्वंद्वांतर्गताएकत्रिंशत्कन्याः सप्तमस्थानगतद्वात्रिंशद्द्वंद्वांतर्गताभि

स्तावतीभिःकन्याभिस्त्रिषष्टिःसंपद्यते। इयंसंख्याग्निऋतवइतिपदेनाभिधीयते। अग्नयस्त्रयः ऋतवःषट् गणकरीत्याप्रातिलोम्येनांकप्रक्षेपेतत्संपत्तेःपूर्वोक्तद्वात्रिंशद्द्वंद्वेषुप्रत्येकंत्रिषष्ट्यं ६३ गीकारेणपितृवंशेषोडशभिरधिकाद्विसहस्रीकन्यानांसंपद्यते। इयंसंख्यारसैकखदशइतिपदेनाभिधीयते। रसाःषट् खंशून्यं दशोद्वे। उक्तरीत्या २०१६ ईदशांकसिद्धेः ३। वरस्यमातृवंशेउक्तरीत्यैवआरंभकद्वंद्वसंख्योपन्यासपूर्वकंकन्यानांपंचोत्तरशतसंख्यांवक्तुमाह—मातुरिति। अत्रापि वरःप्रथमेस्थाने, तस्यपितरौद्वितीये, मातुःपितरौतृतीयेद्वंद्वमेकं, तयोःप्रत्येकंजनकद्वंद्वद्वयंचतुर्थे, तद्घटकानांचतसृणांव्यक्तीनांप्रत्येकंजनकद्वंद्वचतुष्टयंपंचमे, एतेषांसप्तद्वंद्वानांमध्येएकैकान्वयेपंचदशसपिंडाःकन्याभवंति। यत्किंचिदेकंद्वंद्वं कूटस्थंप्रथमेस्थाने, ततःपुत्रोदुहिताचेतिद्वंद्वंद्वितीये, प्रत्येकंताभ्यांजातद्वंद्वयुगंतृतीये, ततःपूर्वोक्तरीत्याद्वंद्वचतुष्टयंचतुर्थे, ततस्तथैवरीत्याद्वंद्वाष्टकंपंचमे, एवंपंचदशद्वंद्वप्रविष्टाःपंचदशकन्याःसंपद्यंते, इयंसंख्याशरक्षोण्यइतिपदेनाभिधीयते शराःपंच क्षोण्येकेति। उक्तसप्तद्वंद्वेषुप्रत्येकंपंचदशसंख्यांगीकारेच पंचोत्तरशतसंख्यासंपत्तिः। साचशराभ्रविधवइत्यभिधीयते शराःपंचः अभ्रंशून्यं विधुरेकइति ४। कुलेतिपंचमश्लोकेपूर्वोक्तपितृवंशगतायाःषोडशाधिकद्विसहस्रसंख्यायांमातृवंशगतयाःपंचोत्तरशतसंख्ययामेलनेनमहासंख्याएकविंशतिसहितशताधिकद्विसाहस्रीरूपोच्यते—हिमांशुदरधरादशइति हिमांशुरेकः दशौद्वे धरैका दशौद्वे। उक्तरीत्या २१२१ ईदशांकसिद्धेः। ततश्चैतावत्यःकन्याःकुलद्वयग

तामुख्यकल्पेनविवाहकर्मणिवर्जनीयाइत्यर्थः ॥ अवादीत्थमनंतेनसापिंडयस्यविनिर्णयः । निर्मत्सरायेविद्वांसस्तोषंसंयांतुतेमुना १ ॥ इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेसापिंडयनिर्णयः ॥ ॥ ॥ ॥

अथगोत्रप्रवरनिर्णयोमदनुजजीवदेवकृतएवास्मिन्नवसरेप्रदर्श्यंते । तत्रगोत्रलक्षणंबौधायनआह—विश्वामित्रोजमदग्निर्भरद्वाजोऽथगौतमः । अत्रिर्वसिष्ठःकश्यपइत्येतेसप्तऋषयः । सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमानांयदपत्यंतद्गोत्रमित्याचक्षतइति । सप्तर्षिशब्दःप्रत्येकंरूढः पंचजनशब्दवत् । एतत्सूत्रानुसारेणागस्त्याष्टमसप्तर्ष्यपत्यंगोत्रमितिस्मृत्यर्थसारादयः । केचित्त्वगस्त्याष्टमसप्तर्षयएवस्वापत्यानांगोत्रं वसिष्ठगोत्रा[1]वयमित्यादिव्यवहारादित्याहुः । तन्न । तदपत्येषुवत्सादिषुगोत्रव्यवहारस्यौपचारिकत्वप्रसंगात्, गोत्राणामष्टसंख्यत्वापत्त्या—गोत्राणांचसहस्राणिप्रयुतान्यर्वुदानिचेति बौधायनसूत्रविरोधाच्च । नचभवन्मतेपिवसिष्ठादिगोत्रव्यवहारस्यौपचारिकत्वमितिवाच्यम् । बौधायनोक्तसमानगोत्रत्वलक्षणगोत्रलक्षणसंख्यानुरोधेनतस्यस्वीकारात् कुंडिनादीनांस्वस्वगणेएकगोत्रत्वेनअविवाहप्रयोजकत्ववत् । वसिष्ठादीनांसर्वस्वगणेषुसदृशगोत्रत्वप्रयोजकत्वेनअविवाहप्रयोजकतयासादृश्याच्च । यद्वाऽनादौसंसारेतिर्यगधिकरणस्थतंत्ररत्नोक्तन्यायेनपूर्ववसिष्ठाद्यपत्यत्वेनोत्तरोत्तरेषुवसिष्ठादिषुलक्षणानुगमान्मुख्यएवगोत्रव्यवहारः । अगस्त्याष्टमसप्तर्षीणांतुगोत्रत्वेतदपत्येषुगोत्रव्यवहारःसर्वथानुपपन्नइत्यपत्यान्येवगोत्रं । अत्रकेचित् तानिपूर्वेषांसप्तर्षीणांपरेषांस्वापत्यानां

---

[1] गोत्रावयवमित्यादि ।

चगोत्राणि इदानींतनेषुवत्सगोत्रावयवमितिवहुव्रीहिणाव्यवहारात्, वत्सेचजमदग्निगोत्रोवत्सइतितत्पुरुषेणव्यवहारात्, वत्सइदानींतनानांजमदग्नेश्चगोत्रमित्याहुः । तन्न । जमदग्निगोत्रवत्सइतिवहुव्रीहिणैवव्यवहारसंभवात् जमदग्नेर्गोत्रत्वस्यपूर्वोक्तरीत्योपपत्तेः, अनादौसंसारेजमदग्नेरपिपूर्वजमदग्न्यपत्यवत्साद्यपत्यत्वसंभवेनगोत्रसंबंधसंभवात् जमदग्निर्गोत्रंयेषामितिव्युत्पत्तिरित्यप्याहुः । एवंव्यवहारोपपत्तौसप्तर्षीणांयदपत्यंतद्गोत्रमित्यपत्यशब्दान्वितसप्तर्षिपदस्यपुनर्गोत्रशब्दान्वयकल्पनानुपपन्नाप्रतीत्यनारूढाच तदपत्यानांतुसोपपन्नेति सप्तर्ष्यपत्यानिस्वापत्यभूतानांपरेषामेवगोत्राणीतिवृद्धाः । नचपरेषांतदपत्यानामत्रानुपस्थितिः, प्रकरणानुवृत्तौमार्कंडेयाइत्यादिशब्दगतलुप्तप्रत्ययांशेनतत्समर्पणात् । नचसप्तर्ष्यपत्यत्वगोत्रत्वेऽस्मदादीनामपिपरंपरयातदपत्यत्वादतिप्रसक्तिः, [1]प्रसिद्ध्यैवतन्निरासात् । तथाचगोत्रत्वेनप्रसिद्धंयदगस्त्याष्टमसप्तर्ष्यपत्यंतद्गोत्रम् । अतएवविज्ञानेश्वरमाधवमदनपारिजातेषुगोत्रंवंशपरंपराप्रसिद्धमित्युक्तम् । उक्तंचभट्टपादैरपि—समानेपिब्राह्मण्येकुंडिनोत्रिरितिस्मरणलक्षणंगोत्रमिति । नत्वेतावताप्रसिद्धिमात्रंलक्षणं साधुशब्दप्रसिद्धेरिवगोत्रप्रसिद्धेरपिप्रामाण्यनिश्चयस्यस्मृत्यधीनत्वात् । ननुकेवलभृगुगणेषुयस्कादिषुकेवलांगिरोगणेषु हरितादिष्वव्याप्तिः तेषांसप्तर्ष्यपत्यत्वाभावात् । नचतेषांगोत्रत्वंनास्तीतिवाच्यम् । तथासति—एकएवऋषिर्यावत्प्रवरेष्वनुवर्तते । तावत्समानगोत्रत्वमन्यत्रभृग्वंगिरसांगणादितिवौधायनोक्तपर्युदासानुपपत्तेः । प्राप्तिसंभावनायांहिप

---

[1] प्रसिद्धेरेव ।

र्युदासोभवति यथायजतिषुयेयजामहंकरोतीतिसामान्यवाक्यादनुयाजेषुयेयजामहइतिप्राप्तिसंभावनायां नानुयाजेष्वि
त्यनुयाजव्यतिरिक्तेष्वित्येवंपर्युदासः । केवलभृग्वंगिरोगणेषुसप्तर्ष्यपत्यबाह्यत्वेनगोत्रत्वप्राप्तिसंभावनायाअभावात्क
थमयंपर्युदासः भृग्वंगिरोगणव्यतिरिक्तेष्वेकप्रवरानुवृत्त्यासमानगोत्रत्वमिति । ननुनायंकेवलभृग्वंगिरोगणविषयः
पर्युदासः किंतुजामदग्न्यभृगुगणगौतमभारद्वाजांगिरोगणविषयः, तेषांसप्तर्ष्यपत्यत्वेनगोत्रत्वात् । तथाचतेष्वितरगणव
देकप्रवरानुवृत्त्यासमानगोत्रत्वसंभावनायामयंपर्युदासः । तेनतेषांशास्त्रांतरबोधितद्वित्रिप्रवरानुवृत्त्यासमानगोत्रत्वंनै
कप्रवरानुवृत्त्येतिचेत् । न । तथासतिकेषुचित्तेष्वेकप्रवरसाम्येसमानगोत्रत्वमविवाहप्रयोजकंनास्ति । नापिसमानप्रव
रत्वंतेष्वविवाहप्रयोजकमस्ति ।—पंचानांत्रिषुसामान्यादविवाहस्त्रिषुद्वयोः । भृग्वंगिरोगणेष्वेवमितिस्मृत्याद्वित्रिप्रवर
साम्यस्यैवतेष्वविवाहप्रयोजकतयोक्तत्वात्, तथाचतेष्वविवाहप्रयोजकाभावाद्विवाहप्रसंगः । नचेष्टापत्तिः । भृगूणांव
त्साविदाआर्ष्टिषेणाइत्येतेषांसर्वेषामविवाहः गौतमानांसर्वेषामविवाहइतिबौधायनसूत्रविरोधात् । तस्मात्तेष्वेकप्रवरा
नुवृत्त्यासमानगोत्रत्वमविवाहप्रयोजकमस्तीतिस्वीकार्यम् । तथाचायंपर्युदासःकेवलभृग्वंगिरोगणविषयएव । नचतेष्व
प्येकप्रवरसाम्येसगोत्रसप्रवरत्वयोरुक्तन्यायेनाभावाद्विवाहापत्तिः इष्टापत्तेः । सचायंपर्युदासोऽसतिगोत्रत्वेऽनुपपन्नइति
तेषांगोत्रत्वंस्वीकार्यं तस्माद्गोत्रलक्षणेदृढाव्याप्तिरिति । अत्रोच्यते—प्रवरमंजरीस्मृत्यर्थसारादिप्रामाणिकनिबंधलिखि
तत्वेनेदंलक्षणमवश्यंस्वीकार्यम् । तस्यचकेवलभृग्वंगिरोगणेष्वभावान्नतेषांगोत्रत्वम् । पर्युदासानुपपत्तेस्तुसमाधानमा

श्वलायनसूत्रवृत्तिकारआह—एषांगोत्रसंदंशपाठात् जामदग्न्यादिभृग्वंगिरोगणानांचगोत्रत्वात्तत्सादृश्येनगोत्रत्वभ्रांतिर्भवति तादृशभ्रांतिप्रसक्तिमपेक्ष्यायंपर्युदासः श्राद्धेकुंडगोलकादिनिषेधवदिति । स्मृतिचंद्रिकाकारस्त्वाह—नास्मिन्बौधायनसूत्रेएकप्रवरानुवृत्त्यासमानगोत्रत्वमुच्यते किंतुसमानप्रवरत्वमेव प्रवरसाम्यस्यैवप्रागुपक्रमात्, गोत्रलक्षणस्यत्वंतेकथनात्, प्रवरर्षीणांगोत्रापत्यत्वाच्च गोत्रशब्देनप्रवरलक्षणा । सगोत्रसप्रवरत्वयोरविवाहप्रयोजकतासादृश्यात् गौणीवा । तथाचायं[1]पर्युदासार्थः—भृग्वंगिरोगणव्यतिरिक्तेष्वेकप्रवरानुवृत्त्यासमानप्रवरत्वमविवाहप्रयोजकमिति । अतएवात्रऋषिशब्दःप्रवरर्षिमात्रपरो नतुगोत्रर्षिपरः । भृग्वंगिरोगणेषुतुद्वित्रिप्रवरसाम्येनसमानप्रवरत्वमविवाहप्रयोजकंकेवलेषुगोत्रभूतेष्वप्यस्ति तेनकेवलानामगोत्रत्वेपिसमानप्रवरत्वस्याविवाहप्रयोजकत्वमस्ति गोत्रभूतभृग्वंगिरोगणेषुतुद्वित्रिप्रवरसाम्येसमानप्रवरत्वमपि अतोयंयुक्तःपर्युदासइति । नचायंस्वगोत्रावयवं हरितगोत्रावयवमित्यादिव्यवहारविरोधः गोत्रसंदंशपाठात्, गोत्रभूतभृग्वंगिरोगणसादृश्याच्चतत्प्रवृत्तेः तस्मादुक्तगोत्रलक्षणंनिर्दोषम् । केचित्तुकेवलभृग्वंगिरोगणेषुमहर्षिषुचगोत्रव्यवहारोपपत्तयेप्रवरर्षिसंबद्धाऋषयोगोत्रमितितल्लक्षणंतैर्गोत्राणीतिसत्याषाढवचनात् प्रवरर्षिभिर्गोत्राणिबोद्धव्यानीतितस्यार्थादित्याहुः । तन्न । अगस्त्याष्टमानामपत्यगोत्रमित्यग्रिमसत्याषाढोक्तिविरोधादस्यान्यथार्थोव्याख्येयः प्रवरैःसमानैःगोत्राणिसमानानिबोद्धव्यानीति । तथैवाहतट्टीकाकारः—प्रवरैर्गोत्राणांगणव्यव

---

[1] पर्युदासः ।

स्थासमानताचेतिक्वापिनिबंधेऽदर्शनादिदंनिर्मूलमितिकेचित् । अन्येत्वाहुः—यमधिकृत्ययेषांप्रवराम्नानंसतेषांगोत्रं, बौधायनोक्तिस्त्वनुवादत्वादुपलक्षणं, अतःकेवलानामपिगोत्रत्वमुपपन्नमिति । तदपिन, तर्कितलक्षणानुरोधेनवाचनिकलक्षणस्यबाधकल्पनापत्तेः प्रवरघटितगोत्रलक्षणांगीकारेप्रवरोगोत्रप्रवर्तकस्यमुनेर्व्यावर्तकोमुनिगणइतिमाधवाद्युक्तगोत्रघटितप्रवरलक्षणेऽन्योन्याश्रयापत्तेश्च केवलभृग्वंगिरोगणेषुमहर्षिषुचगोत्रव्यवहारउपपादितएवेतिसंक्षेपः ॥ तच्चविवाहप्रयोजकंसगोत्रत्वंद्विविधं एकगोत्रत्वंसदृशगोत्रत्वंचेति । तत्राद्यमेकैकगणांतःपातिषु तत्रमूलभूतस्यवत्सादेरेकस्यैवगोत्रत्वात् । यत्रापिगणावांतरऋषीणांगोत्रत्वंतत्रापितदपत्यानिप्रतितेषामेकत्वमेव । द्वितीयंतुभिन्नभिन्नगणांतःपातिषु वत्सबिदयो[1]रपिगोत्रयोरेकसप्तर्ष्यपत्यत्वेनसादृश्यात् । एकसप्तर्ष्यपत्यत्वंचतदनुवृत्त्याज्ञायते । तदनुवृत्तिरपिद्वेधा म्रियमाणतयासत्तयाच । आद्यावत्सादिषुजमदग्न्यादेः, तत्प्रवरेषुजामदग्न्यादिपदसंकीर्तनात् । द्वितीयाकपिषुभारद्वाजस्यतत्प्रवरेषुभारद्वाजपदसंकीर्तनाभावात् । केवलंसूत्रादिगतानुक्रमणेषुभरद्वाजगोत्रसंदंशपाठेनतदनुवृत्तिःप्रतीयते । तदुक्तंस्मृत्यर्थसारे—म्रियमाणतयावापिसत्तयावानुवर्तनम् । एकस्यदृश्यतेयत्रतद्गोत्रंतस्यकथ्यतइति । एकस्यागस्त्याष्टमसप्तर्ष्यन्यतमस्यमहर्षेरपत्यंयत्रकुलेतदपत्यंतत्कुलसंबंधिगोत्रंकथ्यतइत्यर्थः । केचित्तुसत्तयानुवृत्तिर्नसगोत्रत्वप्रयोजिका, तस्याःपुराणभेदेनाव्यवस्थितत्वात् । अन्यथाविश्वामित्रस्यात्रिवंश्यत्वेनपुराणेऽभिधानात्तद्गणेष्वत्रेःसत्तयानुवृत्तेरत्रिगोत्र

---

[1] बिदयोर्भिन्नयोरपि ।

त्वप्रसंगः किंतुत्रियमाणत्वेनैव । कपिषुचतादृशभारद्वाजानुवृत्त्यभावान्नतत्सगोत्रत्वं, तथाचतेषाभारद्वाजैःसहविवाह एव । यथाहाश्वलायनः—एतेषांतुविशेषोयमामहय्याभिधानकैः । उरुक्षय्यैश्चकपिभिर्विवाहस्त्रिभिरिष्यतेइति । एतेषां भरद्वाजगणानाम् । यत्तुस्मृत्यर्थसारः—भरद्वाजाश्चकपयोगर्गारौक्षायणाइति । चत्वारोपिभरद्वाजगोत्रैक्यान्नान्वयुर्मिथ इति तद्वर्गांतर्गतकपिविषयमित्याहुः । तन्न । अविभ्रष्टशिष्टस्मरणपरंपरामूलकैर्गोत्रप्रतिपादकैःकल्पसूत्रादिभिर्द्योतितैवसत्तयानुवृत्तिःसगोत्रत्वप्रयोजिकांगीक्रियते । नचतैर्विश्वामित्र[1]गणेष्वत्रेःसाद्योतिता । द्योतिताचापस्तंबादिभिःसर्वैः कपिषुभारद्वाजस्य, ऋक्षगर्गसंदंशेनपाठात्, अन्यथात्रियमाणतयानुवृत्तावप्यनाश्वासःस्यात् । तत्रकल्पसूत्रप्रामाण्यमितितत्प्रकृतेपितुल्यम् । आश्वलायनश्लोकस्तुनिर्मूलएव भाष्यकारादिभिरव्याख्यानात्, स्मृत्यर्थसारादिप्रामाणि[2]कग्रंथविरोधाच्च गर्गांतर्गतकपिविषयतापिविवाहनिषेधस्यनयुक्ता । गर्गतुल्यकक्षतयानिर्देशेनस्वतंत्रकपिप्रतीतेः, गर्गांतर्गतकपीनामभावाच्च कात्यायनादिभिःकपिभूमीनांतदंतर्गतत्वेनोक्तत्वात् । यत्त्वाश्वलायनसूत्रेमुद्गलादीनांकेवलांगिरसां भारद्वाजगर्गादिसंदंशपाठात्तत्रभारद्वाजस्यसत्तयानुवृत्तिप्रसंगइति, तदपिन । बौधायनादिभिःसर्वैःकेवलांगिरोमध्येतेषां पाठात् आंगिरसत्वमात्रेणचाश्वलायनीयसंकरपाठोपपत्तेः, तस्मात्सत्तयानुवृत्तिरपिसगोत्रत्वप्रयोजिकेत्यलंप्रपंचेन तत्सिद्धंगोत्रलक्षणम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

[1] गणैर्निष्पन्नैःसा । [2] प्रामाणिकसर्वग्रंथ ।

अथप्रवरलक्षणम् । तत्रप्रवरणानिप्रार्थनानिप्रवराइतिनिबंधकारैर्व्याख्यातम् । कस्यप्रार्थनानीत्यपेक्षायाबौधायनादिसूत्रेषुएकार्षेयःप्रवरइत्याद्युक्त्वातद्धितढञ्प्रत्ययांतप्रयोगादृषिसंबंधेनाग्नेःप्रार्थनानीतिज्ञायते । हौत्रमंत्रेहिअग्नेमहाँअसीत्यादिनाग्निप्रार्थनेकृतेतद्धितांतभार्गवादिशब्दप्रयोगःक्रियते । पुनश्चदेवेद्धोमन्विद्धइत्यादिनाग्नेःप्रार्थनंक्रियते । तत्संदंशपाठाद्भार्गवादिपदैरपिऋषिसंबंधेनाग्निःप्रार्थ्यते । यथायंयजमानोभृगुवंशोत्पन्नत्वाद्भार्गवः तथातदुत्पादितत्वात्त्वमपिभार्गवइति । अस्यफलंयथाभृग्वादीनांप्रसिद्धब्राह्मण्यानांहविस्त्वयादेवान्प्रतिनीयतेतथातद्वंश्यस्यास्ययजमानस्यप्रसिद्धब्राह्मण्यस्यहविर्देवान्प्रतिनेयमितिसूचनम् । अध्वर्युमंत्रेपिऋषिसंबंधेनाग्नेःप्रार्थनंक्रियते । एवंहिमंत्रः—अग्निर्देवोहोतादेवान्यक्षद्विद्वांश्चिकित्वन्मनुष्वद्भरतवदित्याद्युक्त्वा जमदग्निवदित्यादिहोतृविपरीतक्रमेणवत्प्रत्ययांतप्रवरपदान्युच्चार्यब्रह्मण्वदाचवक्षद्ब्राह्मणाअस्ययज्ञस्यप्रावितारोमुकशर्मामानुषइति । अस्यार्थः—हेब्रह्मप्रमुखाःब्राह्मणाःयथाग्निर्देवसंबंधीहोताचिकितमनुभरतानामेतद्यजमानपूर्वजानांजमदग्न्यादीनांब्रह्मणश्चयज्ञदेवताः यजमानांश्चाधिकारिणोविद्वान्देवानिंद्रादीन्यक्षदावक्षच्च । तथाऽमुकशर्मायंमानुषोपिहोतातदपत्यत्वेनतत्सदृशस्यास्ययजमानस्ययज्ञेदेवहोत्रद्वयधिष्ठानबलेनविद्वान्देवान्यजत्वावहतुचेति । तेनोभयत्राप्यग्नेरेवप्रार्थनाख्यवरणकर्मत्वं ऋषीणांतुविशेषणत्वेनतत्संबंधः । एतत्संबंधविवक्षयैवऋषेरिदमार्षंनामप्रवरइतिमिताक्षरायामुक्तं नतुप्राधान्येनतत्प्रकाशनंउभयमंत्रानन्वयापत्तेः केवलप्रातिपदिकेनऋषिप्रकाशनसंभवात्तद्धितवत्प्रत्ययांततावैयर्थ्याच्च । अत्रकेचित् मंत्रकृतोवृणीतइतिविधौमंत्रकृतांकर्म

त्वप्रतीतेःप्रव्रियंतइतिव्युत्पत्त्याऋषीणामेवप्रवरत्वम् । मत्स्यपुराणे भृगुच्यवनादिशब्दान्प्रयुज्य इत्येतेप्रवरामताइति कीर्तनात् अतोनाग्नेर्वरणकर्मत्वं । उक्तविध्यनुसारेणमंत्रान्वयानांजस्यंनदोषाय ऐंद्रीवत्तद्धितादेश्चस्वार्थपरत्वादिनायोजनादित्याहुः । तन्न । तद्धितवत्प्रत्ययांतत्वस्याग्निप्रकाशकमंत्रमध्यपाठस्यऋषिपरत्वेआनर्थक्यप्रसंगेनानर्थक्यप्रतिहतानां विपरीतंबलाबलमितिन्यायेनविधीनामेवानांजस्यकल्पनस्योचितत्वात् मंत्रकृतःसंकीर्त्याग्निंवृणीतइत्यध्याहारेणविधयो व्याख्येयाः । यद्वाविनैवाध्याहारंऋषीणामग्निविशेषणत्वेनवरणंप्रत्यनीप्सितकर्मत्वाभिप्रायेणव्याख्येयाः । एवंमत्स्यपुराणमपिकर्मव्यक्त्याकरणव्युत्पत्त्यावाव्याख्येयमितिदिक् । तत्सिद्धंप्रवरणान्यग्निप्रार्थनानिप्रवराइति । इतिप्रवरलक्षणम् ॥ तच्चाविवाहप्रयोजकंसमानप्रवरत्वंद्विविधं, एकप्रवरसाम्यं द्वित्रिप्रवरसाम्यंच । आद्यंभृग्वंगिरोगणव्यतिरिक्तेषु द्वितीयं भृग्वंगिरोगणेषु । तत्रपंचप्रवराणांत्रिप्रवरसाम्यं त्रिप्रवराणांद्विप्रवरसाम्यमविवाहप्रयोजकमितिमंतव्यम् । पंचानांत्रिषुसामान्यादविवाहस्त्रिषुद्वयोः । भृग्वंगिरोगणेष्वेवंशेषेष्वेकोपिवारयेदितिवचनाच्छेषेष्वेकोपिप्रवरःसमानश्चेद्विवाहंवारयेदित्यर्थः । इदंचासंकीर्णकेवलभृग्वंगिरोगणेष्वविवाहप्रयोजकं तेषांगोत्रत्वाभावेनासमानगोत्रत्वस्याप्रसक्तेः । अतएव तेषुद्वित्रिप्रवरसाम्याभावेविवाहएवभवति । समानगोत्रत्वंचासंकीर्णकपीनांभरद्वाजगणैः[१]सहविवाहप्रयोजकं तेषामेकप्रवरसाम्येपिअंगिरोगणत्वेनापेक्षितद्वित्रिप्रवरसाम्यस्याभावात् संकीर्णत्वेतेप्रायशःसर्वत्रैवेत्यलंभूयसा ॥ ॥ गोत्रप्रवरसंबं

---

[१] सहाविवाह ।

धिपरिभाषानिरूपणे । कृतेगोत्राणितेषाचप्रवरान्गणयाम्यहम् ॥ ॥ तत्रभृगवोद्विविधाः—जामदग्न्याःकेवलाश्च । द्वौजामदग्न्यौवत्सविदौ । केवलाःषट्—वत्साः आर्ष्टिषेणाः यास्काः[1] मित्रयुवः वैन्याः शुनकाः इति । तत्रद्विविधाअपि वत्सास्तंत्रेणोच्यंते—मार्कंडेयाः मांडूकेयाः मांडव्याः कांसयः आलेखनाः दार्भायणाः शार्कराक्ष्याः दैवतायनाः शौनकायनाः माधूकेयाः पार्षिकाः सांकाः प्राच्तायनाः पैलाः पैंगलायनाः दाभ्रेषकाः बाह्यकयः वैश्वानरयः वैहीनरयः वैरोहिताः बाह्याः ब्रध्नाः गोष्ठायनाः टीकयः काशकृत्स्नाः वाड्भूतकाः कृतभागाः ऐतिशायनाः जानायनाः पाणिनिः वाल्मीकिः स्थौलपिंडयः सौषातवाः जिहीतयः सावर्णिः वाकायनाः बालायनाः सौकृतयः मंडेवः[2] सोविष्टयः हस्ताश्नयः शौद्धकयः शौद्धाकयः वैकर्ण्याः द्रोणकजिह्वयः औरसयः कंबलोदरयः वाकारकृतः वैहलयः सांकवाः कास्तंबराः कारवाः[3] तामसाः विरूपाक्षाः वृकाश्वाः उच्चैर्मन्यवः द्वैमत्याः आर्यायणाः यार्कायणाः काह्वायणाः वायनयः वायनिनः शार्ङरवाः चांद्रमसाः[4] गांगेयाः नैपेयाः याज्ञियाः जाबालिः बाहुमित्रायणाः[5] आपिशलयः वैष्टपुरयः लोहितायनाः उष्ट्राक्षाः मालायनाः शारद्वतायनाः रजतवाहाः वत्साः वात्स्यायनाः एतावंतोबौधायनोक्ताः ॥ ॥ कात्यायनलौगाक्षिभ्यामन्येप्युक्ताः—नालायनाः वागायनाः अनुमातकयः जैह्मतयः जीवंतयः कांबलोदरयः वैहायनाः रेखायनयः पार्षतयः पार्णिलयः उच्चयमानाः सात्यकर्णयः बालाकयः तौलकेशिनः ऋतभागाः आर्तभागाः आजिहीताः आति

---

[1] यस्काः । [2] मुंडयः । [3] कण्वाः । [4] चंद्रमसाः । [5] बहुमित्रायणाः ।

थयः स्थौमांगिरयः स्थौलाः सौरवाः बार्हिषः देवमतयः गार्ग्यायणाः गेह्लायनाः गोष्ठायनाः वैशंपायनाः गालवाः सांकृतयः वाणकेयाः ऐतिकायनाः श्राष्ट्रेयाः श्राम्लेयाः लाक्षेयाः लाकुचयः लालाटयः आवयः आंगावयः सौष्मिकयः[1] सात्यकायनाः नैकर्षयः शाकल्याः पाकानुमतयः जैकजिह्मयः जैह्माशिनयः आश्मक्रमाः कौचहस्तयः आनुलोमिनः क्रौंचाः चैक्षाः क्रौंचाक्षयः सौरध्वजयः वाध्यात्केयाः[2] निरीणयः वासयः सदनाः[3] स्पोषाः स्यंदनयः[4] कठेरणयः लवेरणयः सौगोलयः माध्योदाः मात्स्यः नाडायनः वैरायणः वैन्यः रौहित्यायनिः कृपानीलुः सावर्णिः विकस्वरुः विष्णुः तौलकेशिः जहिनः वीतिनः केनयाः[5] तलिनः शिखापतिः जलधिः सेनाजित् कृत्स्नः पैंगलायनिः दिवःपतिः ऋषभः सुतः पलवः कोपियज्ञः मित्रयज्ञः आमिलायनाः हायतिः वैकर्णिपिः भाल्लकायनिः लाक्ष्मणः शाल्यायनिः माल्यायनिः कौटालिः सौक्तिः कोठरः साक्षी सांद्रमणिः नैकजिह्वः जिह्वाशून्यः केललेढिः हिकश्वरिः सारध्वजिः नैमिश्यः लोष्ठाक्षिः गरेवणिः पौर्णसौगंधिः काशकृत् बिलभृत् सौमदायनाः स्वानुमतयः मंडचित्राः शौक्रायणाः त्वाष्ट्रेयाः कोचहुंडयः शौनायनाः शाकपौर्णयः व्रीहिमतयः मायामतिः राघ्रेवकिः कोशनः[6] मौद्गल्यः कारकारवचः सांतपनायनाः गेलहः भेह्लिः किरुषः स्तन्वतः औलंधिः वायार्गिराणिः श्येनयागतिः नैकषिः शौद्धकर्णिः निडायनाः २०५ इत्येतेवत्साः । तत्रयेजामदग्न्यावत्सास्तेषांपंचप्रवराः भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वजामदग्न्येति, त्रयोवा भार्गवौर्वजामद

---

१ सौष्ट्रिकयः । २ सादनाः । ३ स्यंदनयः । ४ स्पंदनयः । ५ फेनयः । ६ शोकणः ।

ग्न्येति । येत्वजामदग्न्यावत्सास्तेषांत्रयः भार्गवच्यावनाप्नवानेति ॥ ॥ अथजामदग्न्याः—बिदाः बौधायनः बिदाः शैलाः अवटाः प्राचीनयोग्याः अभयदानाः कांडरथयः वैनभृतः पुलस्त्यः आर्कायणाः नाष्ट्रायणः ताम्रायणः क्रौंचायसाः कामलः पौलस्त्यः वेदभृत् अभयजाताः त्रैकायनाः भ्राजः भ्रादंत्याः वैकायनाः भृंजायनाः २० इत्यादयोबिदाः । तेषांपंचप्रवराः भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वबैदेति, त्रयोवा भार्गवौर्वजामदग्न्येति, अजामदग्न्यबिदानां भार्गवौर्वजामदग्न्येतित्रयइतिकात्यायनाः। वत्सानां भार्गवच्यावनाप्नवानेतित्रयइत्यपितेनैवोक्तम्। पंचप्रवरेषुबिदेषुजमदग्नेःसत्तयानुवृत्तिः। आर्ष्टिषेणाः नैर्ऋथयः ग्राम्यायणयः कार्णायणाः चांद्रायणाः पैटकलायनाः सिद्धाः सुमनायनाः गौराभिः राभिः भृग्वंदीयः मार्गपथः नैकर्षिः आपस्तंबिः वाल्विः कार्दमायनिः गार्दभिः अनूपाः चट्टायनिः कविः आश्वभिः ११ इत्यार्ष्टिषेणाः । तेषापंचप्रवराः भार्गवच्यावनाप्नवानार्ष्टिषेणानूपेति, त्रयोवा भार्गवार्ष्टिषेणानूपेति, केचिदेष्वपिजमदग्नेःसत्तयानुवृत्तिमाश्रित्यजामदग्न्यत्वमाहुस्तत्स्मृत्यर्थसारादिविरुद्धं । पंचावत्तिताचैषामजामदग्न्यत्वेपिवाचनिकी एतेपंचावत्तिनइतिबौधायनवचनात् अविवाहोवत्सबिदाभ्यांसहत्रिप्रवरसाम्यात् । यद्यपित्रिप्रवरार्ष्टिषेणानांनान्यैःसहद्विप्रवरसाम्यंतथापिपंचार्षेयसंगतमपिप्रवरसाम्यमेष्वविवाहप्रयोजकं वत्साबिदाआर्ष्टिषेणाइत्येतेषामविवाहइतिबौधायनवचनादितिवृद्धाः । नचपंचप्रवरेषुविदेष्वपिजमदग्नेःसत्तयानुवृत्तौ मानाभावः । तत्रजामदग्न्यत्वप्रयुक्तौर्वशब्दसमन्वयात् ।

यथाहाश्वलायनसूत्रवृत्तिकृत् । और्वजमदग्निशब्दौजामदग्न्यत्वप्रयुक्ताविति[1]त्रिप्रवरेषुतदनुवृत्त्याऽन्यत्रापितदुन्नयनसंभवाच्च । अतोजामदग्न्यवत्सविदयोःसगोत्रत्वसप्रवरत्वाभ्यामविवाहः । अजामदग्न्यवत्सार्ष्टिषेणाभ्यांसप्रवरत्वाच्चेतिदिक् । वात्स्यानांत्रयः भार्गवच्यावनाप्नवानेति, वत्सपुरोधसयोःपंचभार्गवच्यावनाप्नवानवात्सपौरोधसेति, वैजवनिमथितयोःपंचभार्गवच्यावनाप्नवानवैजवनमथितेति, एतेपिकचित् एतेषांपरस्परंपूर्वोक्तैश्चाविवाहःप्रवरसाम्यात् । यस्काः मौनःमूकःवाधुलःवर्षपुष्पःभागलेयःभागविज्ञेयःदुर्निदःभास्करःदैवतायनःवार्कलेयः[2]माध्यमेयाः वासयः कौशांबेयाः क्रौविल्याः सत्यकयः [3]चित्रसेनाः भागुरिः छयाः वातहव्याः माधूलाः मौसलाः जीवंत्यायनाः अर्थलेखयः वृकाश्मकयः मदोकधःवारेयाः गौरिक्षिताः दैर्घचित्ताः पंचालवाः पौष्णावताः गोदायनाः चंदुमोदनः भागलिः भागवतिः पिलिः खलिः काश्यपिः बालेपिः [4]समदागपिः सौरिः ज्वरिः भागंतयः सानुष्टयः मादायनाः शालंकायनाः [5]तार्क्षाः प्रावरेयाः शार्कराक्षिः कौटिल्यः विलेभिःवाह्लियःहालेयः दीर्घचित्तः ५३ इत्येतेयस्काः । वैतहव्याइतिकेचित् । एषांत्रयः भार्गववैतहव्यसावेतसेति । मित्रयुवः रैष्णायनाः सापिंडिनाः सुरभिनेयाः माल्याः महाबाल्याः तार्क्ष्यायणाः कैतवानयः शाकटाक्ष्याः मैत्रेयाः सांचर्याः द्रोणायनाः रौक्थ्यायनाः आटिकायनाः हंसजिह्वाः रौप्यायणाः सात्यडिनः पिंडिकाक्षाः मोदायनाः कापिशायनाः शांडेयाः साक्षिताः मित्रयुजः आपिशायनाः पाटिकायनाः वाध्र्यश्वःदिवोदासः ३१ इत्येते

---

१ द्विप्रवरेषु । २ माधृमेयाः । ३ वित्रसेनाः । ४ समदागयिः । ५ तार्क्षाः ।

मित्रयुवः । दिवोदासाइतिकेचित् । एषांत्रयः भार्गववाध्र्यश्वदैवोदासेति, अंत्योपांत्ययोर्व्यत्ययोवा, एकोवावाध्र्यश्वेति, भार्गवच्यावनदैवोदासेतिवा । वैन्याः पार्थाः बाष्कलाः श्यैनाः ४ इत्येतेवैन्याः । श्यैताइतिकेचित् । तेषांत्रयः भार्गववैन्यपार्थेति । शुनकाः गार्त्समदाः यज्ञपतयः सौगंधयः खार्दमायनाः गार्भायणाः मत्स्यगंधाः श्रोत्रियाः तैत्तिरीयाः सौकराः मासगंधाः प्रत्यूषाः कार्दमायनाः चोक्षाः श्रोण्याः शात्त्यायनाः राजबांधवयाः १७ इत्येतेशुनकाः । एषामेकः शौनकेति गार्त्समदेतिवा, द्वौवा भार्गवगार्त्समदेति, त्रयोवा भार्गवशौनहोत्रगार्त्समदेति। शौनहोत्रेत्यस्यस्थानेशौनकेतिकेंचित् । यास्कादीनांचतुर्णांस्वस्वगणंहित्वापरस्परंपूर्वैश्चसहविवाहोभवत्येव द्वित्रिप्रवरसाम्याभावात् । तदुक्तंस्मृत्यर्थसारे—यस्कामित्रयुवोवैन्याःशुनकाःप्रवरैक्यतः।स्वंस्वंहित्वागणंसर्वेविवहेयुःपरावरैः। प्रवरैक्यतःस्वगणंहित्वेतिसंबंधः। मित्रयूनांपाक्षिकद्वित्रिप्रवरसाम्यात्रिप्रवरैर्वत्सादिभिःसहनविवाहइतिकेचित् । तत्पक्षग्राहिणामविवाहः । पक्षांतरग्राहिणांमित्रयूनांविवाहएवेत्यन्ये । चतुर्विधशौनकानांपरस्परंविवाहएव प्रवरसाम्याभावादितिकेचित्। वृद्धास्तु एकगणस्थत्वाद्गोत्रत्वाभावेप्यविवाहएव । एतेषामविवाहइतिकात्यायनादिभिःसर्वेषामविवाहाभिधानात्स्वगणंहित्वेतिस्मृत्यर्थसाराच्चेत्याहुः । क्वचित्त्वधिकंगणद्वयमुक्तम् वेदविश्वज्योतिषांत्रयः भार्गववेदवैश्वज्योतिषेति शाठरमाठराणांत्रयः भार्गवशाठरमाठरेति। अनयोःपरस्परंपूर्वैश्चविवाहः इतिभृगवः॥ ॥ अंगिरसस्त्रिविधाः गौतमाः भारद्वाजाः केवलाश्च। गौतमांगिरसःसप्त आयास्याः शरद्वंताः कौमंडाः दीर्घतमसः कारेणुपालयः वामदेवाः औशनसाश्च। आयास्याः श्रोणि

वेधाः मूढरथाः सत्यकयः स्वैदेहाः कौमारवत्साः तौडंदर्भिः दैवकिः सात्यमुग्रिः कौवाह्याः बौभ्याः नौकरिः स्वस्तैषकिः कीलालयः कारुणयः कांठोरयः काशिवाजः साक्षीकः पार्थिवाः १९ इत्यायास्याः। तेषांत्रयः आंगिरसायास्यगौतमेति ॥ अथशरद्वताः अभिजिताः रोहिण्याः क्षीरकरंभाः सौमुचयः सौयामुनाः औपबिंदवः रहूगणाः गणयःभाषण्याः क्षौलेयाः नैकरयः करभोगिण्याः सैंधवाःगतवाः सांगराः सौमिनयः पौष्पिंडयः भागलाः कुंडवाः कारोढाः काशवारयः मांद्यर्थाः इषवः रोहितायनाः अंगारकाः क्रौलायनाः कास्तौर्ष्णयः अरुणयः पार्थिवाः मौट्टहायनाः स्कंदाः सरावाः कौटिल्याः वासमूलयःवासपुष्पयःवासस्तेवयःवासधूपयः काचाक्षयः क्षपावारषयः करलयः उतथ्याः बौधयोनगाः सुगोमाक्षयः क्षीरयष्टिकयःराहूकर्णयः सौपुत्रयः सामलोमकयः पौष्कंजितयः भागत्राश्व डांडकाः सुतपाः सुरैषिणः रौहिणायनयः क्रोष्टायनयः अरुणायनयः सौदामनयः कासोर्णाः कौशल्याः रौहिणेयाः काराधनयः मूलयः वासवः पुष्पवंतः पाचिकाः रेवयः औपमन्याः षैष्टिकाः शौनरयः शापयः खरिकाः नैकषयः तोदेयाः वाल्यौद्धाः इत्येतेशरद्वताः। तेषांत्रयः आंगिरसगौतमशारद्वतेति।कौमंडाः मामंथरेषणाः मांसुराक्षाः काष्ठरेखयः आंजायनाः वांजायनाः काक्षीवताः औशिजाः मासुरेखयःवाशयः १० इतिकौमंडाः। तेषांपंच आंगिरसौतथ्यकाक्षीवतगौतमकौमंडेति। दीर्घतमसांपंच आंगिरसौतथ्यकाक्षीवतगौतमदीर्घतमसेति। त्रयोवा आंगिरसौतथ्यदैर्घ्यतमसेति। कारेणुपालयःवास्तव्याः श्वेतीयाः पौंजिष्ठाः

---

१ आरायणाः।

औदजायनाः माधुक्षारः अजगंधाः ७ इतिकारेणुपालयः । तेषांत्रयः आंगिरसगौतमकारेणुपालेति । वामदेवानांत्रयः आंगिरसवामदेव्यगौतमेति । अंत्ययोर्व्यत्ययोवा। आंगिरसवामदेव्यबार्हदुक्थेतिवा । औशनसाः दिश्याः प्रशस्ताः सुरूपाक्षाः महोदराः विकंहताः सुबुध्याः निहताः गुहाः ९ इत्यौशनसाः । तेषांत्रयः आंगिरसगौतमौशनसेति । क्वचिदन्येप्यष्टौउक्ताः। औतथ्यानांत्रयः आंगिरसौतथ्यगौतमेति। औशिजानांत्रयः आंगिरसौशिजकाक्षीवतेति । आयस्यौशिजानांपंच आंगिरसायास्यौशिजगौतमकाक्षीवतेति । रहूगणानांत्रयः आंगिरसराहूगणगौतमेति । सोमराजानांत्रयः आंगिरससोमराज्यगौतमेति । बृहदुक्थानात्रयः आंगिरसबार्हदुक्थ्यगौतमेति । काक्षीवतांपंच आंगिरसौतथ्यगौतमौशिजकाक्षीवतेति । रायुवानांत्रयः आंगिरसरायुवगौतमेति । एषांसर्वेषांगौतमांगिरसांपरस्परंअविवाहः । गौतमस्यत्रियमाणतयासत्तयावाऽनुवृत्तेःसगोत्रत्वात् प्रायेणद्वित्रिप्रवरसाम्याच्च । इतिगौतमाः ॥ ॥ अथभरद्वाजाः । तेचत्वारः भारद्वाजाः कपयः गर्गाः रौक्षायणाश्च। भरद्वाजाः क्षाम्यायणाः मेगडाः देवाश्वाः इद्ध्हव्याः प्राग्वंशयःवाहलक्षाः बाह्योगाः वसीतायनाः तैदेहाः आश्लाः औक्षाः शूरयः पारिणद्रेयाः केशखेयाः शौद्धयः उरूढाः खारिग्रीवयः औपसयःवयोक्षिभेदाः अग्निवेश्याः शठाः गौरिवावनाः खेलकाः स्तनकर्णाः ऋक्षाः माणिभिंद्याः कद्वादकाः स्वौज्वलायाः वैलाः खौरडाः देवयः भरुंडेयाः भद्रादयः सौरभराः शुंगाः देवमतयः इषुमत्ताः औदमेघयः प्रवाहणेयाः कल्माषाः राजस्तवयः संधोपकृतयः पराहरयः बलभोकयः रुद्रांगपथाः शालद्वलयःवेदवेलाः नृलायनाः नृत्याः शालालयः शार्दूलयः काक्षलः

वाष्कलाः सह्यकेयाः कौंडायनाः कौंडिन्याः ब्रह्मस्तंभाः राजस्तंभाः अग्निस्तंभाः वायुस्तंभाः सूर्यस्तंभाः सोमस्तंभाः विष्णुस्तंभाः यमस्तंभाः इद्रस्तंभाः आपस्तंवाः येचान्येस्तंभशब्दांतास्तेपि ।आरणाः सिंधवः कौसुदगंधयः शिखायनाः मात्रेयायणाः भामाण्याः कुक्षाः कौकाक्षयः तैतुंदयः दार्भयः शामेयाः मत्स्यक्राथाः कारुणायनाः कारुपथयः कारिषायणाः कावल्याः वालिशायनाः सौढयः वाराहयः विविपथः शिलापलयः पैलाः शालंकायनयः जैह्मलायनयः साष्टंकयः लाभायनयः आपस्तंबयः धौतांचकयः जित्यद्रोणयः वाह्यगच्छयः व्यठाकयः स्वारग्रीवयः वाजवृषयः प्रवाहयः दशादीकयः तूर्णकर्णयः कांचयः देवगारयः हारिकर्णयः सपौलयः सौगेयाः मालोहराः खगखलायनाः सौविष्टाः हालीहराः सात्यमुग्रयः लेखायनाः कारुणायनाः चेलाः रुक्षाः किकायनाः बाललक्षाः गौरिवाः सौपथाः सौभराः सौबुद्धयः धौरकुकुलिकाः विकाराः कुपियाः मालाहलाः श्रीपथाः निद्रांगवधाश्वाः शैखेयाः माधूकवर्याः कांडण्याः औवेयाः सैथुनमतयः कौरुलेत्रयाः रचारणादयः देवस्थानयः शालुहयः गोरवपिंगलयः गांगोदयः अधिकारग्रीवयः अयंचकयः माषायणाः शाक्राः काजाः सौविश्वाः कासुकायनाः सिंधवः सारावयः वाहयः सामस्तंबयः सोमस्तंबयः ब्रह्मस्तंवयः आश्वलायनः मार्कंडेयाः कुक्काः सौंगयः १६० इतिभरद्वाजाः। तेषांत्रयः आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेति । कपयः स्वस्तितरयः विंदवः दंडिनः दिक्ष्वशक्तयः पतंजलयः भूयसिनः तैरंधयः चैतकयः ऊर्ध्वाः ताराजकेशिनः कलसिनः कण्वाः कारीतयः वान्यायनाः आमावास्यायनाः कात्यायनाः कपेतराः खेदतराः जलसिंचयः कुसीदरयः स्वौजटयः सासवयः सह्लयः क्षण्याः

सावस्थायनयः २६ इतिकपयः। तेषांत्रयः आंगिरसामहय्यौरुक्षय्येति, आंगिरसामहीयवौरुक्षयसेतिआश्वलायनपाठः। केचित्त्वांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेति आंगिरसबार्हस्पत्यकापेयेतिपक्षद्वयमाहुः। गर्गाः सांभरायणाः सखीनयः माधरायणाः बाहुलयः आष्टूकृतः आष्टूबिंदवः क्रोष्टूकयः सौयामुनाः आजिनाक्षयः होत्रापचयः सत्यापचयः वात्स्यतरायणाः सांभाराः वत्सचतुरायनाः काण्वायनाः सांख्यायनाः कानायनाः कैवलायनाः कौंडायनाः भारमताः प्रैश्यंगाः पैल्वकायनाः विश्वायवकायनाः क्रौलिनः मधुरावहाः सांपरिवाराः वालाकयः शालायनयः साहनयः माथुरावदाः ऐंद्रालयः लोपकृतः भालकृतः वांसायनाः शारायणाः शामायनाः रामिनः भांगिनः कारिणः आस्मिनः क्रीडिनः रावा[1]रताः भालविदाः औपमर्कटाः कार्षायणाः कौंजवयः शालंकायनाः कौलास्नाः श्यामाः ५० इतिगर्गाः। तेषां पंचांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजसैन्यगार्ग्येति। शैन्येतिक्वचित्पाठः। त्रयोवा आंगिरससैन्यगार्ग्येति। अंत्ययोर्व्यत्ययोवा। भारद्वाजगार्ग्यसैन्येतिवा। तित्तिरः कपिभूमयः खंडिता इत्येतेषांगर्गाणांत्रयः आंगिरससैन्यगार्ग्येति, आंगिरसतैत्तिरकपिभुवेतिवा। रौक्षायणाः कपिलाः शबलाः शिफिलाः चि[2]भिंडयः कौथुमाः अग्निजिह्वाः कर्णाः सुताः ९ इतिऋक्षाः। तेषांपंच आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजवांदनमातवचसेति। त्रयोवा आंगिरसवांदनमातवचसेति। आत्मभुवांपंच आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजमंत्रवरात्मभुवेति। अयंगणःक्वचित्। एषांभरद्वाजांगिरसांपरस्परमविवाहः। त्रियमाणतयास

---

[1] रावातराः। [2] विभंडयः।

त्तयावाभारद्वाजानुवृत्तेःसगोत्रत्वात् प्रायेणद्वित्रिप्रवरसाम्याच्च । इतिभरद्वाजाः । केवलांगिरसःषट् हरिताः कुत्साः कण्वाः रथीतराः विष्णुवृद्धाः मुद्गलाश्च । हरिताः शंखदर्भयः सौभागाः नेय्यगवाः मतायवाः वालोदराः महोदराः नैमिश्रयः मिश्रोदकाः कौतपाः[1] करीषवः कौलयः पौलयः पोटलयः पौटलाः मत्स्याः मांधातवः मांडकारयः खांडायनाः मांडमालयः गवेरणयः मत्स्यमालयः गाणगरयः मद्रागरयः कुत्साः हंसाः हस्तिवायसाः पैंगलाः पिंगाः पालाशिनः दांदलाः हास्तिनः कौमारहारितः इलाः ३३ इतिहरिताः । तेषांत्रयः आंगिरसांबरीषयौवनाश्वेति, मांधात्रांबरीषयौवनाश्वेतिवा । कुत्सानांत्रयः आंगिरसमांधात्रकौत्सेति । कण्वाः औपमर्कटायनाः बाष्कलाः पौलाहस्तिनः मौंजिभाजयः मौंजिगंधाः विजियवाजयः वाजश्रवसः भारुडाः भेरुडाभरणाः[2] सणामर्कटाः गर्दभाः प्राकासराः शाकटायनाः गोदायनाः शानायनाः रामायणाः शौवेरिणः नारिणाः आर्यादयः चतुराः श्यामायनयः २२ इतिकण्वाः । तेषांत्रयः आंगिरसाजमीढकाण्वेति, आंगिरसघौरकाण्वेतिवा । रथीतराः हस्तिदाः सिकाह्वायनाः नैतिरक्षयः भैलयः भिलोभायनाः सावहवाः भैक्षवाहाः हेमगवाः वैरूढ्याः विरूपाः अंगुष्ठाः अष्टादंष्ट्राः पृषदश्वाः १५ इत्येतेरथीतराः । तेषांचत्रयः आंगिरसवैरूपराथीतरेति, आंगिरसवैरूपपार्षदश्वेतिवा । अष्टादंष्ट्रवैरूपपार्षदश्वेतिवा । अंत्ययोर्व्यत्ययोवा । विष्णुवृद्धाः शठाः मरणाः मद्रणाः भद्रणाः भद्रयः बादरायणाः वात्सप्रायणाः सात्यकयः सात्यकायनाः नैतुंद्याः स्तुत्याः

---

[1] कौतयाः । [2] भरुडारमणाः ।

भारुण्याः वैहोढाः देवस्थानयः क्षत्रिणाः छत्रिणाः होत्रिणाः पुत्रिणाः जतृणाः वज्रिणाः कर्तृणाः शांबरायणाः औपमीतयः औपगवयः २५ इत्येतेविष्णुवृद्धाः । तेषांत्रयः आंगिरसपौरुकुत्सत्रासदस्यवेति । मुद्गलाः सात्यमुग्रयः हिरण्यस्तंबयः हंसजिह्वाः देवजिह्वाः आलबालाः विडालादयः आश्चयादयः सूनयः छत्रहयाः तारणाः कार्यभासिताः हिरण्याक्षाः दीर्घजंघाः हिरण्यगर्भाः भिंदयः १९ इतिमुद्गलाः । तेषांत्रयः आंगिरसभार्म्यार्श्वमौद्गल्येति, आद्यस्तार्क्ष्य इतिवा । आंगिरसताविमौहल्येतिवा । एषांकेवलांगिरसांस्वस्वगणंहित्वापरस्परंपूर्वैरंगिरोभिश्चविवाहएवसगोत्रत्वाभावाद्वित्रिप्रवरसाम्याभावाच्च । हरितकुत्सयोस्त्वविवाहःपाक्षिकद्विप्रवरसाम्यात् । हरितकुत्सपिंगशंखदर्भभैमगवानामित्याश्वलायनेनसर्वप्रवरसाम्योक्तेरित्याहुः । इतिकेवलांगिरसः ॥ ॥ अथात्रेयाः । तेचत्वारः—अत्रयः गविष्ठिराः वाङ्कूतकाः मुद्गलाश्च । अत्रयः भूरयः छांदयः छांदोगेयाः पौषिं[1]काः मोहलयः सौ[2]पालगलाः छागलाः [3]सुतृणविंदवः भार्गतयः मालरुचः व्यालयः सांवव्यानयः कामर्यानयः दाक्षायः तैदेहाः माथितयः औदालकयः द्रोणभावाः गौरिग्रीवयाः माविष्ठिराः शै[4]शुपालाः कृष्णात्रेयाः गौरात्रेयाः ऋक्षात्रेयाः नीलात्रेयाः श्वेतात्रेयाः श्यामात्रेयाः महात्रेयाः गालेयाः वालेयाः शौभ्रेयाः वामरथ्याः श्वेतभावाः शौद्रेयाः गोपवनाः कालापचयाः नीलायनाः आनंगयः मानंगयः दौरंगयः सौरंगयः पौरं[5]गयः पुष्पयः सौपुष्पयः साकेतयनाः भारद्वाजायनाः इंद्रातिथयः शांखरयः आहायनाः पवनाशाः किकिदिवयः

---

[1] कौष्यिकाः । [2] क्षौपालगलाः । [3] युतृणविंदवः । [4] शिशुपालाः । [5] गौरंगयः ।

शौनककर्णयः सौभृतयः गौरग्रीवः[1] कैरंजयः[2] जैत्रायणाः चेकयः बाहुतंत्राः बाहमित्राः जानुकयः पैतंजनाः[3] भागमादनाः सांख्येयाः सारायणाः सौक्तचराः अर्धपथाः गौपन्याः[4] कलजिह्वाः उद्धरग्रीवयः वैडालयः शाकलायनाः गौरणीपथाः बलदाः भागपादाः अर्घ्यायणाः बादर्यायणाः मांगलाः बाहुदंतयः भागलेयः आरुणात्रेयः रुणात्रेयाः दत्तात्रेयाः शैखयः करायणाः नीशायनाः दर्भ्याः कुयादुलाः[5] वामरथाः वैश्वानकयः शोधूलकयः निकलाः ९४ इत्यत्रयः । आद्याः त्रयइति केचित् । तेषांत्रयः आत्रेयार्चनानसश्यावाश्वेति । गविष्ठिराः दक्षयः भलंदनाः और्णनाभयः चंद्रात्रेयाः वैजवापयः मौजकेशाः पूर्वातिथयः श्यामपुष्पयः शिलंदलयः ब्रह्मपुष्पयःव्याघ्रपुष्पयः सौपुष्पयः कार्ष्णशीकयः हिरण्यपुष्पयः कालासयःकालशीर्षयः प्लक्षयः वलयः घृतयः पार्ष्णयः कुट्टुकयाः मैत्राण्याः शिरीषकाः २४ इतिगविष्ठिराः । तेषांत्रयः आत्रेयार्चनानसगाविष्ठिरेति, आत्रेयगाविष्ठिरपौर्वातिथेतिवा । वाङ्कूतकानांत्रयः आत्रेयार्चनानसवाङ्कूतकेति । मुद्गलाः शालिसंधयः अर्णवाः बौधाक्षाः वैतवाहः शिरीषयः शालिमताः गौरिताः गोरकयः वाजवताः १० इतिमुद्गलाः । पूर्वातिथयइतिकेचित् । तेषांत्रयः आत्रेयार्चनानसपौर्वातिथेति । क्वचित्त्वन्येपंचाम्नाताः अतिथयः वामरथ्याः सुमंगलाः बीजवापाः धनंजयाश्च । आद्यचतुर्णां आत्रेयार्चनानसातिथेति, आत्रेयार्चनानसगाविष्ठिरेतिवा । सुमंगलानामत्रिसुमंगलश्यावाश्वेतिवा । धनंजयानां आत्रेयार्चनानसधानंजयेति । वालेयाः हालेयाः कौद्रेयाः शौभ्रेयाः वामरथ्याः गोपवनाः

---

१ सौरग्रीवाः । २ कौरंजयः । ३ न्यंकजनाः । ४ गौयन्याः । ५ वुपादुलाः ।

इत्यत्रेःपुत्रिकापुत्रास्तेषांत्रयः आत्रेयवामरथ्यपौत्रिकेति । अत्रीणासर्वेषामविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवराच्च इत्यत्रयः ॥ अथविश्वामित्रास्तेदश । कुशिकाः लोहिताः रौक्षकाः कामकायनाः अजाः कताः धनंजयाः अघमर्षणाः पूरणाः इंद्रकौशिकाः इति । कुशिकाः पार्णजंघाः वारक्याः औदलयः माणयः बृहदग्नयः आलवयः आद्यहयः आयद्रव्याः कामंतकाः बद्धकथाः चिकिताः कामकायनाः शालंकायनाः कात्यायनाः[1] लौकाः गौराः सौगंतव्याः यमदूताः आनभिन्नाः तारकायणाः चौवलाः जाबालयः याज्ञवल्क्याः वितंडानुवलयः सौश्रुतयः औपगहनयः उदंपरयः भाष्टग्र्याः[2] श्यामेयाः चैत्रेयाः तालोच्चतराः मयूराः सौमेतयाः[3] चित्रतवयाः स्याततायनाः[4] मनवः तंतवः मांतवः यक्षाः न्यत्वशब्दाः बाभ्रव्याः कालायाः उत्सरयः देवराताः औलकयः उलूकाः बाभ्रवाः शालाः विशालाः कालवचाः सैंधवायनाः सौरधयः कारीषयः संसृत्याः औलोप्याः पार्योदरयः क्षरयः पडलयः गालवाः वैकृतयः वतंडाः चलशंकचः श्यामायनाः कालाः वालखिल्याः यांजयः[6] सौमेयाः आश्वलायनाः आवाहाः उलूखलाः जैमिनयः सांकृतयाः औधेयाः साक्ष्यः इतिकुशिकाः । तेषांत्रयः वैश्वामित्रदेवरातौदलेति । लोहिताः कृतअकयाः चाक्रवर्णायनाः तंतायनाः वासकयः ष्टकाः ६ । इतिलोहिताः । रोहिताइतिकेचित् । अष्टकावातेषांत्रयः वैश्वामित्राष्टकलोहितेति । अंत्ययोर्व्यत्ययोवावैश्वामित्रमाधुच्छंदसाष्टकेतिवा । द्वौवावैश्वामित्राष्टकेति । रौक्षकाः सोद्वहलाः रेवणाः ३ इतिरौक्षकाः । रेवणावा तेषांत्रयः वैश्वा

---

१ कात्यायताः । २ भाष्टपाः । ३ सौमाः । ४ स्वततायनाः । ५ औलकेयाः । ६ पांजयः ।

मित्ररौक्षरैवणेति, वैश्वामित्रगाथिनरैवणेतिवा । कामकायनाः देवश्रवसः देवतरसाः श्रोमताः ज्यामकायनाः ५ इति कामकायनाः । श्रौमतावा तेषांत्रयः वैश्वामित्रदेवश्रवसदैवतरसेति । अजाः मार्गमित्राः माधुच्छंदसाइत्यजाः । तेषांत्रयः वैश्वामित्रमाधुच्छंदसाजेति । कताः औदुंबरयः शैशिरयः तैकायनाः स्तोकायनाः तार्क्ष्यायनयः कात्यायनयः कराभयः बालकेयाः शालंकायनाः मौंजहायनाः गांगायनयः कालयः वेदायनयः गोदायनयः मोदायनयः भेदायनयः वैनायनयः रामणयः रातकयः मौंजायनयः २१ इतिकताः । तेषांत्रयः वैश्वामित्रकात्यात्कीलेति । धनंजयाः पार्थिवाः मंदकाः बंधुलाः पाणिलाः चैत्रेयाः परिकुरयः ७ इतिधनंजयाः । तेषांत्रयः वैश्वामित्रमाधुच्छंदसधानंजयेति, वैश्वामित्रमाधुच्छंदसाघमर्षणेतिवा । अघमर्षणानांत्रयः वैश्वामित्राघमर्षणकौशिकेति–पूरणाः वारिधापयंताश्च तेषांद्वौ वैश्वामित्रपौरणेति, वैश्वामित्रदेवरातपौरणेतिवा । इंद्रकौशिकानांद्वौ वैश्वामित्रेंद्रकौशिकेति । क्वचिदन्येप्येकादशोक्ताः । आश्मरथ्याः साहुलाः गाथिनाः वैणवाः हिरण्यरेतसः सुवर्णरेतसः कपोतरेतसः । शालंकायनाः घृतकौशिकाः कथकाः रोहिणा इति । आश्मरथ्याः घोटमुखाः कामुकायनाः कामलायनाः वधुलाः पाणिनयः नेतुलांगुलयः कौशिकाः इत्याश्मरथ्याः । कुशिकाइतिकेचित् । अजाइत्यन्ये । तेषांत्रयः वैश्वामित्राश्वरथ्यवाधुलेति । साहुलाः माहुलाः काहुलाः फागुलाः औमिलाः औदलाः शातातपाः कामलायनाः सातवयः जातवयः १२ इतिसाहुलाः । तेषांत्रयः वैश्वामित्रसाहुलमाहुलेति । गाथिनाः औद्दालकयः उदवासाः रौक्थ्यकाः आज्योद्वलाः रेणुकाः इतिगाथिनाः । रेणवइतिकेचित् । उदवे

णवोवा हर्यश्वावा। तेषांत्रयः वैश्वामित्रगाथिनरैणवेति। रेणुवेतिक्वचित्पाठः। वैणवानात्रयः वैश्वामित्रगाथिनवैणवेति। हिरण्यरेतसांद्वौ वैश्वामित्रहैरण्यरेतसेति। सुवर्णरेतसांद्वौ वैश्वामित्रसौवर्णरेतसेति। कपोतरेतसांद्वौ वैश्वामित्रकापोतरेतसेति। शालंकायनाः शालाक्षाः लोहिताक्षाः लोहिताः जह्नवः इत्येतेशालंकायनाः। कौशिकावा जाह्नवोवा। तेषात्रयः वैश्वामित्रशालंकायनकौशिकेति। घृतकौशिकानांद्वौ वैश्वामित्रघृतकौशिकेति। कथकाः ऋथकाः आदूद्ययाः उदूणयाः ४ इतिकथकाः। तेत्रयः वैश्वामित्रमाधुच्छंदसरौहिणेति। विश्वामित्रगणानांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च इतिविश्वामित्राः॥ ॥ अथकश्यपाः—तेषांत्रयः निध्रुवाः रेभाः शंडिलाश्च। निध्रुवाः कश्यपाः अष्टांगिरयः मठराः ऐतिशायनाः आशून्याः वैशिप्राः धूम्राः धूम्रायणाः सौम्याः धर्म्यायणाः स्त्रौवदक्षाः राग्रायणाः चैवकयः प्राचर्याः हृद्रोगाः आतपाः पांचायनिकाः प्रेषांतकयः सागकयः माघसरावयः वार्षकयः सैंधवयः सापस्याः। आसुरायणाः छागव्याः सौनघः स्थौलकेशयः वार्षकयः औपव्याः लाक्षायणाः क्रोष्टयः जीवनयः स्वाद्रायणाः रोहितायनाः मितकुंभाः पिंगाक्षयः औडुलयः आरयणाः पौलयः वैकर्णयः कौशितकेयाः धूमलहाणयः सुराः गौरिवायनाः महाचक्रेयाः पैठीनस्याः पानस्याः विषगणाः दाक्षमाणयः भालंदनाः शांखमित्रेयाः हरित्याजाः मात्स्याः रमणयः साविश्रवसः वैशंपायनाः स्वैरंकयः कासलयः उलकायनयः मार्जलायनाः कासकायनाः देवाः होतारः सुचक्रयः खरेभाः अयस्थूणाः भागुरयः पाथिकयाः गोमयनाः हिरण्यवायाः अग्नयः देवयः सौर्याः मुसलाः आविश्रेण्याः उदलीमंत्रिताः

वैकर्णयः स्थूलबिंदवः आग्रायणाः मौषकाः तंतिकायनाः औपप्रतिमाः साराहरेयाः कौरंजाः चैकेताः मानृत्याः स्वैकयः भौवनाः चैत्रगाः आहूगायकाः देवयाताः सोमयागाः शत्रुहयः काचायनाःचक्रधर्मिणः महाचक्रधर्मिणः श्रैपयणाः हार्करयः दाक्षपाणयः हास्तयः दासयः वात्स्यपाणयः हास्तलायणाः आश्ववातायनाः कौसीरकाः खगादाः आग्निशर्मायणाः कैकसेयाः काश्वहायनाः विहायनाः हस्त्याः सानुश्रुताः हरितायनाः मार्गणगाः सोमश्रुवः ज्ञानराधाः स्वामापक्षाः[1] बभ्रवः वाजिवाहायनाः वाह्वकायनाः भौमनयाः गोष्ठायनाः वात्स्यायनाः वाष्टायनाः नागशिरसः शौकयाः ज्ञानहस्तयः भवनंदयः प्रतिश्रवाः प्रातिथेयाः कैजालयः कांडवायनाः पैलमेलयः चाक्रायणाः कौषीतकाः मारीचाः कामेयाः नकयः वेलणीवभिक्षयः १४० इतिनिध्रुवाः । तेषांत्रयः काश्यपावत्सारनैध्रुवेति । रेभाणांत्रयः काश्यपावत्सारैभ्येति । शंडिलाः कोहलाः पावकाः वापिकाः औदमेघाः सौदानवाः सावचसाः कारेयाः कौकंटयः तैक्षिमाहयः महोदकयः कौशयः मौंजायनाः भाणवंशाः खार्वभायनाः गंगायनाः वात्सभालयः[2] गोभिलाः वेदायनाः वात्स्यायनाः बहूदरयः भागुरयः खादंतीमुखाः हिरण्यबाहवः नेदेहाः गोमूत्राः वाक्यशठाः जानंधरयः धन्वंतरयः एकखंडाः गर्दभीमुखाः अजावंशाः तृणबिंदवः कोकिलाः पैप्पलादयः जलंधवाः गोशिलाःशत्रुगायनाः जीमाः पिप्पलाः शिंजाः केशिलाः सुंचमयूराः वैदानवाः कौवलयः कौरंडजाः उत्तराः सुजातपूराः चेरलाः सुकेतवः कुहकाः वहुपिंडाः हैपुटाः चटाश्वनाः

---

[1] यक्षाः । [2] वात्सभाषयः ।

महोकौरलयः कुहुलाः मंहलाः मंगलाः धवलाः कैराताः पर्यश्वाः भुजांजलयः परिवारिणः ६३ इतिशंडिलाः । तेषां त्रयः काश्यपावत्सारशांडिल्येति । अंत्यस्थानेदेवलोवाअसितोवा । काश्यपासितदेवलेतिवा । अंत्ययोर्व्यत्ययोवा । शांडिल्यासितदेवलेतिवा । शांडिल्येतिक्कचित्पाठः । असितदेवलशांडिल्येतिभवदेवः । द्वौवा देवलासितेति । कश्यपानापरस्परमविवाहः । कश्यपस्यत्रियमाणतयासत्तयावानुवृत्तेः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च । इतिकाश्यपाः ॥ ॥ अथवसिष्ठाः । तेचत्वारः वसिष्ठाः कुंडिनाः उपमन्यवः पराशराश्च । वसिष्ठाः वैतालकवयः रकयः सारवलाः गौरीश्रवसाः आश्वलायनाः कपिष्ठलाः सौविवृक्षाः व्याघ्रपादाः बाह्यकायनयः गायनयः नयाव्याः जातूकर्ण्याः रौभ्रामयाः कौभोजयः कौलायनाः सुवाहारिताः कांडवृद्धयः सौपवत्सायनाः आलंभायनाः लोमायन्याः स्वस्त्याकर्षिताः पार्ष्णिकायनाः पार्णवल्काः देवनाः गौरव्याः विश्वायनाः वाहकथयः अवकितयः वस्वयाजयाः पूतिमाषाः समवेलाः औपवनाः औपगवाः वैष्णवाः सात्वलायनाः औडुलोमाः गोपायनाः धोवयः पालिसयाः वाग्रथयाः आपस्थूणाः ब्रह्मपुरेयाः स्वस्तिकाः पांडुलयः गोधिलयः मालोहवयः ब्रह्मवलयः चौलयः पौहिश्रवसः याज्ञवल्क्याः रावणेयः मौलयः कौलयः औपलोमाः आश्लायनाः मिथोवलयः चंडालयः गौडिलयः व्यालोहयाः स्यामुनाश्वाः सुपार्चयाः दासव्याः भ्रलिसयाः आर्जनाक्षयः ६५ इतिवसिष्ठाः । तेषामेकः वासिष्ठेति । त्रयोवा वासिष्ठेंद्रप्रमदाभरद्वस्विति । कुंडिनाः लोहितायनाः गुग्गुलयः अश्वत्थाः नैकर्णयः औपवस्थाः आश्मरथाः बाहवाः क्रौंक्रोल्याः सांगतिनः कापटवः पेठकाः नवग्रामाः हिरण्याक्षायणाः पैप्प

लादयः सौगयोक्षिताः माध्यंदिनाः सोमयक्षयः सौस्थयः धृतयः त्रैश्टंगाः लोभायनाः गोवनाः विधंकषयः मैत्रावरुणाः २५ इतिकुंडिनाः । तेषांत्रयः वासिष्ठमैत्रावरुणकौंडिन्येति । उपमन्यवः औदलयः मांडलेखयः कापिंजलाः जालागताः तपोलोकाः त्रैवर्णाः पार्णगिरयः सादाक्षराः मौलालयः महाकण्वायनाः बालशिखाः औद्गहनायनाः चलायनाः भागवित्तायनाः कुंडोदरायणाः लाक्ष्मणेयाः वाह्यकयः वार्कयः आलवचाः कपिकेशाः शैलालयः शाकधियः दाकायनाः वलेखलाः लंबायनाः ब्रह्मचर्याः शाकोहयाः सरावणाः कण्वायनाः कालाक्षाः दशेरकाः कृष्णाः तरायणाः पालंकायनाः उद्गाहाः कौरव्याः क्रोधिनः मानेयाः[1] ब्रह्मचलयः माशरावत्याः सांख्यायनाः गोरथाः सुहाकाः श्यामयः रास्थेयाः औपलेखयः गोपोदंतयः कौमाराः काडोदरयः चक्रदर्भयः कारपुरयः कौलमयः व्याघ्रायणाः रौक्षहेमयः नाहुलयः वाहुलयः कालपायनाः भागुरायणाः शांकर्याः मुंचकायनाः पाथश्रवसः मारायणाः पादकायनाः स्कंभायनाः धातुहयः भागहयः कौरकृतः कशानयाः ७० इत्युपमन्यवः । तेषांत्रयः वासिष्ठेंद्रप्रमदाभरद्वस्विति । आभरद्वसव्येतिक्वचित्पाठः । वासिष्ठभरद्वाजेंद्रप्रमदेतिवा । आद्ययोर्व्यत्ययोवा । पराशराः कांडशयाः वाजयः वाजिमंतयः भौमतायनाः[2] गोवालयः प्रागेहयाः वैकलयः प्लक्षयः कौकुचादयः हार्यश्वयः काल्याः पनयः गोपयः स्वातयः वारुणयः भालुक्याः वांजरयः क्राच्छ्रयनाः क्रैमतयः कृष्णाजिनाः कापिसुखाः स्वाप्यायनयः श्वेतयूपयः पौष्करसादयः गार्ग्यादयः तार्णेयाः श्रौतुहयाः

---

[1] मातेयाः । [2] भैमतायवाः ।

सहचोलयः जेनयाः पार्थैयाः कारुजायनाः काष्ठ्यायनाः शोकयः वाष्ठ्यायनाः कपिश्रोताः स्कंभिन्याः मांडिकाः शानयातयाः पटिकाः वधिकाः तिलपूपयः स्वाल्वायनाः क्षौमयः हर्यावयः शिवयः इषीकहस्ताः ४७ इतिपराशराः । तेषांत्रयः वासिष्ठशात्त्यपाराशर्यैति । एषांवसिष्ठानांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च । इतिवसिष्ठाः ॥ ॥ अथागस्त्याः—तेदश अगस्तयः इध्मवाहाः सांभवाहाः सोमवाहाः यज्ववाहाः दर्भवाहाः सारवाहाः पूर्णमासाः पारणिनः हिमोदकाः पाणिकाश्च । अगस्तयः करंभयः कौशल्याः सुमेधसः सोमयोभुवः गाधरायणाः पुलस्तयः पुलहाः क्रतवः कार्णाटाः महेंद्राः ११ इत्यगस्तयः । तेषांत्रयः आगस्त्यमहेंद्रमायोभुवेति । इध्मवाहाः विशालाद्याः स्फालायनाः औपदहनयः कल्मषाः दंडयः लावणयः लव्याःवरदंडयः वैरणयः सुदोदरयः सौवपथयः शाल्यातयाः मौंजिलतः पाथोहताः हारिग्रीवयः रोहिष्याः मौसलयः सैवराः साभरायणाः कैकर्णायनाः मार्गायणाः आचार्याः शालंकायनयः उपकलाः कामनयः वारिणयः वात्यायनयः क्षौमिनयः लाशयः साकाक्षयः तंडयः लाज्यायनयः हृद्रोगयः प्रादुराक्षसयः पंडोधृताः कुंड्याक्षयः उपकुलाः अर्बुदाः शैवायुधाः परहताः वैत्योरंदयः औकुलाः वैरंडयः गाव्यादयः दामः सौम्यायनाः ब्राह्मण्याः पुत्रयः वाशिषायणाः शारंगराः फाटावचनाः ५२ इतीध्मवाहाः । तेषांत्रयः आगस्त्यदार्ढच्युतैध्मवाहेति, दार्ढ्येतिवापाठः एकोवाआगस्त्येति । सांभवाहानां सांभवाहांत्यौ पूर्वावेव एवंसोमवाहानां चतुर्णां तत्तन्नामांत्यौपूर्वावेव

पूर्णमासानां पारणिनाचत्रयः आगस्त्यपौर्णमासपारणेति । हिमोदकाः अक्राः शक्ताः शुक्राः हंसाश्वासाः हेमचर्चयः इतिहिमोदकास्तेषांत्रयः आगस्त्यहैमचार्चिहैमोदकेति । पाणिकाः विमिलयः मामितकलयः पिनायकाः नंदयः अग्नियाः चिलयः इतिपाणिकाः । तेषात्रयः आगस्त्यपैनायकपाणिकेति । अगस्तीनांसर्वेषांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च । इत्यगस्तयः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथद्विगोत्राः । तेषांत्रयः शौंगशैशिरयः संकृतयः लौगाक्षयश्च । तत्रभारद्वाजाच्छुंगाद्वैश्वामित्रस्यशैशिरेःक्षेत्रेजातः शौंगशैशिरिनामा तद्गोत्राणांपंच । आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजशौंगशैशिरेति, अंत्यौकात्यात्कीलेतिवा । त्रयोवा आंगिरसकात्यात्कीलेति । आद्योभारद्वाजोवा । एषांविश्वामित्रभारद्वाजाभ्यांनान्वयः । संकृतयः पूतिमाषाः तंडवः शंबवः मौगवाः सैपवनाः जानकयः तैराद्याः रतव्याः ऋषनयः चारायणयः सहयः गांगयः लौक्षयः तालानागहयः भिल्लातयः विभीतकाः तैलयः परिभवाः वैयाग्रपद्याः श्रौतायनाः चांद्रायणाः मलकाः शालायनाः आर्षण्याः हारिनिवाः पौलाः आग्रयः २८ इतिसंकृतयस्तेषांत्रयः आंगिरसगौरिवीतिसांकृत्येति । शाक्त्यगौरिवीतिसांकृत्येतिवा । अंत्ययोर्व्यत्ययोवा । एषांसंकृतीनांवासिष्ठत्वंतावदस्ति । आपस्तंबादिभिर्वसिष्ठगणमध्येपाठात् वासिष्ठशक्तेःपाक्षिकवरणाच्च । आंगिरसत्वमप्यस्ति बौधायनेनकेवलांगिरोमध्येपाठात् आंगिरसप्रवराच्च । तेनैषांसर्वैर्वासिष्ठैरहर्वासिष्ठैलौंगाक्षिभिश्च सहाविवाहः सगोत्रत्वात् किंचित्प्रवरसाम्याच्च । केवलांगिरोगणैश्चविवाहएव सगोत्रत्वाभावाद्वित्रिप्रवरसाम्याभा

वाच्च । केचित्तुभरद्वाजान्पठित्वापाठात् भारद्वाजांगिरसत्वमाश्रित्यभरद्वाजानांशौंगशैशिरैःसहाविवाहमाहुः तन्नेच्छंतिवृद्धाः केवलांगिरसांमध्येपाठात् भरद्वाजस्यसत्तयानुवृत्तेः कपिवज्ज्ञापकाभावात् । प्रयोगपारिजातेतुकाश्यपैरेषाम विवाहइत्युक्तम् । नव्याश्चकेचिदाहुः तत्रहेतुश्चिंत्यः । लौगाक्षयः दार्भायणाः मैत्रवादयः देहकालेयाः कापुटयः कां[१]लयाः कंसपात्राः बालकायनयः नित्यरातादयः औदकयः कौनामयः सौतमयः सैतिकयः अष्टिभेराः निशयः छैषिकयः सौसुखिकयः सैरंध्रयः चौषणायः कालकयः राजवाहयः अनष्टयः मिगुरयः राजवन्नयः सैरयः खिरोदवाहयः राजसवयः सौरंध्रयः पिंगाक्षयः काकुलयः शाकलयः रावफालयः सैकयः सासुधयः शरद्वंताः औपपत्यकटाः सौतपाः १९ इतिलौगाक्षयः । तेषांत्रयः काश्यपावत्सारवासिष्ठेति, काश्यपावत्सारासितेति, वासिष्ठावत्सारकाश्यपेतिवा । एतेऽहर्वसिष्ठाः नक्तंकश्यपाः । एषांवसिष्ठकश्यपाभ्यांसंकृतिभिश्चाविवाहः सगोत्रत्वात् । कैश्चित्सप्रवरत्वादपि । पारिजातधृतसंग्रहस्मृत्यर्थसारयोस्त्वन्येषड्डुक्ताः । देवरातानांत्रयः वैश्वामित्रदेवरातौदलेति, एषांजमदग्निविश्वामित्राभ्यामविवाहः । जमदग्निगणस्यापिविश्वामित्रगणस्यच । नदेवरातगोत्रेणविवाहःस्यात्परस्परमितिसंग्रहोक्तेः । बौधायनादिभिर्जामदग्न्येषुदेवरातस्यापठितत्वाज्जामदग्न्यत्वंचिंत्यमितिकेचित् । अन्येतुऔर्वस्यैवमृचीकस्यसत्यवत्यांमहायशाः । जमदग्निस्तपोवीर्योजज्ञेब्रह्मविदांवरः । मध्यमश्चशुनःशेपःशुनःपुच्छःकनिष्ठकः । इत्युक्त्वा—देवैर्दत्तःशुनःशेपोविश्वामित्रायभार्गवः । देवैर्दत्तःस

---

१ कंवयः ।

वैयस्माद्देवरातस्ततोभवदितिहरिवंशेदेवरातस्यजमदग्निसंबंधस्यकथनाज्जामदग्न्यत्वमुपपन्नमित्याहुः । धर्मप्रदीपेतुमातामहैःशुद्धजामदग्न्यैर्देवरातादीनानविवाहइत्युक्तम् । वस्तुतस्तुहरिवंशश्रीभागवतादौभार्गवत्वंतावद्देवरातस्यनिःसंदेहमवगम्यते तन्निर्वाहश्चजामदग्न्यकेवलभार्गवान्यतरत्वेनैववाच्यः । नचतत्साधकोबौधायनादिपाठोस्ति । भवतितुसंग्रहगतादेवरातानांजामदग्न्यैरविवाहोक्तिर्जामदग्न्यत्वसाधिकासतीभार्गवत्वनिर्वाहकरी । यद्यपिजमदग्निभ्रातृत्वंसाक्षान्नजामदग्न्यत्वसाधकं तथापिजमदग्नेर्जामदग्न्यविदेषुमत्स्यपुराणेपाठात्सिद्धम् । जामदग्न्यत्वंतदनुजदेवरातस्यापिजामदग्न्यत्वसाधकत्वं । नह्येकस्मादृषेरुत्पन्नयोर्भिन्नगोत्रत्वप्रवरत्वसंभवः । नचविदांतर्गतजमदग्नेर्देवरातज्येष्ठाभेदेमानाभावः । भार्गवत्वविवाहकसंग्रहस्यैवतन्मानत्वादित्यलम् । धनंजयानांविश्वामित्रमधुच्छंदसधानंजयेति । एषामत्रिविश्वामित्राभ्यामविवाहः । जातूकर्ण्यानांवासिष्ठात्रेयजातूकर्ण्येति । एषामत्रिवसिष्ठाभ्यामविवाहः । वामरथ्यादीनांपूर्वोक्तानामत्रिपुत्रिकापुत्राणामत्रिवसिष्ठाभ्यामविवाहः । अत्रिविश्वामित्राभ्यामितिकेचित् । कपिलानांपंच आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजवांदनमातवचसेति । एषांविश्वामित्रभरद्वाजाभ्यामविवाहः । तत्रकपिलस्यविश्वामित्रसंबंधेमानाभावः वैश्वामित्रंदेवरातंप्रकृत्य तस्यैतेकापिलेयबाभ्रवाइतिऐतरेयिब्राह्मणगतकापिलोक्तोलिंगविधयामानत्वात् कपिलानांवैश्वामित्रत्वाभावेकापिलानांवैश्वामित्रत्वानुपपत्तेः । कतानांत्रयः वैश्वामित्रकात्यात्कीलेति, एषांविश्वामित्रभरद्वाजाभ्यामविवाहः । एवमिदानींतनानामपिदत्तकादीनांद्वयोरपिपित्रोःसमगोत्रैरविवाहः । यथाहप्रवरमंजरीकारः । एवंपुत्रिकापुत्र

दत्तक्रीतादीनामपिद्वयोरपिगोत्रयोरविवाहइति । यत्तुमनुवचनं–गोत्ररिक्थेजनयितुर्नभजेद्त्रिमःसुतः। गोत्ररिक्थानुगः पिंडोव्यपैतिददतःस्वधा इति । तद्दत्तकादेर्जीवतः आर्षेयवरणाभिवादादिषु मृतस्यचश्राद्धदेवतात्वेजनकगोत्रसंबंधनिवृत्त्यर्थं । विवाहस्तुजनकगोत्राया निषिद्धएव । स्वस्यचजनकगोत्रसंबंधाभावेनतस्याःस्वसगोत्रत्वाभावेपिपितृसगोत्रत्वात् । असगोत्राचयापितुरित्यत्रपितृग्रहणस्येदमेवप्रयोजनमितिस्मृतिचंद्रिकादौसूक्तमितिसंक्षेपः । सर्वेषांचद्व्यामुष्यायणानां गोत्रद्वयसंबंधिप्रवरवरणप्रसक्तौव्यवस्थामाहाश्वलायनः—तेषामुभयतःप्रवृणीतैकमितरतोद्वावितरतोद्वौवेतरतस्त्रीनितरतोनहिचतुर्णांप्रवरोस्तिनपंचानामतिप्रवरणं । आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजवैश्वामित्रकात्यात्कीलेतीति । विशेषांतरंकात्यायनलौगाक्षीऊचतुः । पूर्वःप्रवरउत्पादयितुरुत्तरःप्रतिग्रहीतुरिति । अतएवनचतुरोवृणीतइतिनिषेधोननित्यानुवादाविति । उक्तंचपारिजाते संग्रहे—द्व्यामुष्यायणकार्येचदत्तकक्रीतकादयः । गोत्रद्वयेप्यनुद्वाह्याःशौंगशैशिरयोर्यथेति । तथानारायणवृत्तौदत्तक्रीतादीनांजनकपालकयोर्गोत्रनिषेधः शौंगशैशिरग्रहणस्यप्रदर्शनार्थत्वादिति । तथाच—क्रियाभ्युपगमात्क्षेत्रेबीजिनेयत्प्रदीयते । तस्येहभागिनौदृष्टौबीजीक्षेत्रिकएवच । फलंत्वनभिसंधायक्षेत्रिणाबीजिनातथा । [१]अत्रत्यपक्षेऽत्रिणामर्थोबीजाद्योनिर्बलीयसीतिमनूक्तेः । क्षेत्रजस्याभिसंधिनैवद्व्यामुष्यायणत्वं तथादत्तकादिष्वपीत्यत्रमानमस्ति सर्वेषांतत्वेतूक्तग्रंथाएवेत्यलम् । इतिद्विगोत्राः ॥ ॥ अथक्षत्रियवैश्यानां। क्षत्रियाणांमनुगोत्रं मानवैलपौरूरवसे

---

[१] प्रत्यक्षमितिमनुस्मृतिः ।

तिप्रवराः । वैश्यानां भलंदनगोत्रं भालंदनवात्सप्रमांकिलेतिप्रवराः । यद्वापुरोहितप्रवराएवतेषामितिपक्षद्वयंसूत्रकारैरुक्तम् । मिताक्षराकारादयस्त्वंत्यपक्षमेवस्वीचक्रिरे । तत्रहेतुः मन्वादौअगस्त्याष्टमसप्तर्ष्यपत्यत्वरूपगोत्रलक्षणाभावात् । प्रवरमंजरीकारस्तुतयोरेकरूपगोत्रप्रवरत्वेसर्वेषांपरस्परमविवाहप्रसंगइतिहेतुमाह । तस्मात्पुरोहितगोत्रप्रवरावेवेतिराजर्षिवरणस्यचाभिषिक्तविषयत्वंराज्ञामित्यर्थः । नक्षत्रियाणामितितद्गोत्रेत्यत्रचतच्छब्देनपुरोहितपरामर्शः । तस्यैवमुख्यगोत्रसंभवाच्छास्त्रांतरसंवादलाभाच्चेतिसर्वथैवसिद्धमेतत् । विवाहेक्षत्रियवैश्यानांपौरोहित्यप्रवरैक्यप्रयुक्तएवनिषेधइतिबहवः । वस्तुतस्तु पौरोहित्यान्राजविशांराजर्षीन्वाराज्ञांसर्वेषांमानवेतिसंशयेइतिसूत्रंदृष्ट्वाप्रथमभागोयेनमिताक्षराकारेणलिखितःसकथमेवंवदेत् । यद्यपिप्रातिस्विकगोत्राभावात्प्रवराभावः । तथापिपुरोहितगोत्रप्रवरौवेदितव्यावितितस्यैवसूत्रस्यवाक्यशेषेप्रातिस्विकप्रवरदर्शनात् । अतोलक्षण्यांस्त्रियमुद्वहेदितिविवाहाधिकारात्तन्निर्णयोपयोगिनांपौरोहित्यान्यप्रवराणामभावस्तदभिप्रेतइतिगम्यते । तथाचस्मृत्यर्थसारे—गुरोःसगोत्रप्रवरानोद्वाह्याक्षत्रविट्‌जनैरिति । कर्मणितुवरणादौभवतुविकल्पः । उक्तसूत्रस्यकर्माधिकारप्रवृत्तेःसोपिव्यवस्थितः । येषांकुलेयादृशंवरणमागतंतथैवकर्तुमुचितमितिविप्रेष्वपिव्यवस्थादर्शनात् । अभिषिक्तराज्ञस्तुपौरोहित्यानांराजर्षिभिःसमुच्चयः । क्षत्रियवैश्ययोःपौरोहित्यान्राजर्षीन्वेतिसत्याषाढसूत्रव्याख्यावसरेशबरस्वामिनायथोक्तं—वाशब्दःसमुच्चये । कुतःराजन्ये अतिज्ञापनार्थं तद्गोत्रपरिणयनप्रतिषेधार्थमिति । गतश्रीप्रदर्शनार्थंवचसीवराजन्यशब्दोत्राभिषिक्तपरः । अतिशब्दश्चनपंचातिवृणीतेइत्यत्रप्रसि

द्धपंचाधिकनिषेधप्रतिप्रसवार्थः समुच्चयेतदवश्यंभावात् । उक्तंचतेनैव—प्रवराध्यायांत्यस्याथराजर्षयोमानवैलपौरूरवसेतिसूत्रस्यव्याख्यावसरेपि उक्तसमुच्चयांत[१]र्गतेविशेषोयमितिदिक् । अथगोत्राज्ञानेउपनेताचार्यस्तद्गोत्रप्रवरैरेवकर्माणिविवाहाविवाहौच । अथासंप्रज्ञातबंधुमाचार्यामुष्यायणमनुब्रवीताचार्यप्रवरंवृणीतेतिबौधायनवचनात् । आचार्यगोत्राज्ञानेतु—आचार्यगोत्रप्रवरानभिज्ञस्तुद्विजःस्वयम् । दत्वात्मानंतुकस्मैचित्तद्गोत्रप्रवरोभवेदिति । यत्तु गोत्रस्यत्वपरिज्ञानेकाश्यपंगोत्रमिष्यतेइति तदाचार्यगोत्राज्ञानेसत्येवविवाहातिरिक्तविषयमितिवृद्धाः॥ ॥ अथमातृगोत्रनिर्णयः । मातुलस्यसुतामूढ्वामातृगोत्रांतथैवच । समानप्रवरांचैवत्यक्त्वाचांद्रायणंचरेदितिमातृगोत्रायाविवाहोनिषिद्धः । यद्यप्येकगोत्रत्वंसदृशगोत्रत्वंचेतिद्विविधसगोत्रत्वमुक्तम् तथापिमातुर्गोत्रैक्यमेववर्ज्यम् । मातुर्गोत्रंगोत्रंयस्यास्तामितिव्याख्यानेनतस्यैवप्रतीतेः । मातुश्चगोत्रद्वयम्—प्राग्विवाहात्पितृगोत्रं ऊर्ध्वंभर्तृगोत्रं । स्वगोत्राद्भ्रश्यतेनारीविवाहात्सप्तमेपदे । एकत्वंसागताभर्तुःपिंडेगोत्रेचसूतकेइतिवचनात् । पितुर्गोत्रस्यस्वोत्पत्तिदशायामनुवृत्त्यास्वगोत्रत्वेनैवनिषेधः । तेनपरिशेषान्मातृगोत्रपदेनमातामहसगोत्रस्यैवनिषेधः । तस्यस्वोत्पत्तिदशायामनुवर्तमानस्यसगोत्रत्वप्रयोजकत्वाभावात् । अतएवपुत्रिकायांगांधर्वविवाहोढायांचदानाभावेनपितृगोत्रसंबंधस्यानिवृत्तेः स्वोत्पत्तिदशायामनुवृत्त्यातस्यस्वगोत्रत्वादेवनिषेधः ब्राह्मादिविवाहोढायांतुपितृगोत्रसंबंधनिवृत्तावपिभूतपूर्वगत्यामातामहगोत्रस्यैवमातृगोत्रत्वेननिषेधः ।

---

[१] र्गतेतिशेषोयंदिक्, र्गतेतिशब्दोयंदिक्, गतेतिदिक् ।

परिशेषात् एवंचपुत्रिकागांधर्वादिविवाहोढासुतानांसर्वेषामातृगोत्रंवर्ज्यं ब्राह्मादिविवाहोढासुतानासर्वेषामातृगोत्रत्वंनवर्ज्यं किंतुमाध्यंदिनीयानामेव। मातृगोत्रंमाध्यंदिनीयानामितिसत्याषाढोक्तेः। शिष्टाचारोप्येवमेव। केचित्त्वस्यवचनस्यनिर्मूलत्वात्सर्वेषांमातृगोत्रवर्जनंयुक्तमिति। युक्तंतुशिष्टाचारसहकृतवचनान्माध्यंदिनानामेवतद्वर्जनं निर्मूलत्ववचनंतुप्रामाणिकानांनयुक्तंपराक्रांतंचात्रसूरिभिरित्युपरम्यते॥ कृत्स्नक्ष्मातलवर्तिपंडितजनालंकारचूडामणिर्गोदातीरजनिर्गुणोच्चयखनिर्नाम्नापदेवोग्रणीः। तत्सूनोरिहजीवदेवकृतिनःसद्धर्मशास्त्रेकृतौगोत्राणांप्रवरैःसहेयमभवन्निर्णीतिरीशार्पणं १। इतिगोत्रप्रवरनिर्णयः॥ ॥ एवंभार्यात्वप्रतिबंधकानिसापिंड्यसगोत्रत्वसप्रवरत्वानिनिरूपितानि। विज्ञानेश्वरः—सपिंडासुसमानगोत्रासुसमानप्रवरासुभार्यात्वमेवनोत्पद्यते। रोगिण्यादिषुभार्यात्वेउत्पन्नेपिदृष्टविरोधइति। इदमुपलक्षणंभार्यात्वोत्पत्तावपि। अदृष्टदोषांतरप्रयोजकानिसंत्यन्यानि। यथाहनारदः—प्रत्युद्वाहोनैवकार्योनैकस्मिन्दुहितृद्वयम्। नचैकजन्ययोःपुंसोरेकजन्येतुकन्यकेइति। स्वकन्यायस्यपुत्रायदत्तातत्कन्यकायाः स्वपुत्रेणपरिणयनंप्रत्युद्वाहः। अत्रोत्तरार्धगतनिषेधापवादःपारिजातेस्मृत्यंतरे—एकोदरीकरतलग्रहणंयदिस्यादेकोदरस्यवरयोःकुलनाशनंच। एकाब्दकेतुविधवाभवतीहकन्यानद्यंतरेतुशुभदंपृथुशैलरोधइति। विवाहास्त्वेकजातानामेकस्मिन्नुदयेकुले। नाशंकरोत्येकवर्षेस्यादेकाविधवातयोरिति। उदयोलग्नम्। पारिजातेगर्गः—भ्रात्रोर्युगेस्वसृयुगेभ्रातृस्वसृयुगेतथा। नजातुमंगलंकुर्यादेकस्मिन्मंडपेहनि। पुत्रीपरिणयादूर्ध्वंयावद्दिनचतुष्टयम्। पुत्र्यंतरस्यकुर्वीतनोद्वाहमितिसूरयइति। एतद्वचनद्वयंभिन्न

भार्यात्व०

मातृकविषयमितिपारिजाते । ज्योतिर्निबंधेचैवं । सामान्यप्रवृत्तमपि—एकोदरप्रसूतानामेकस्मिन्वत्सरेयदि । विवाहो नैवकुर्वीतकुर्वंतिमुनयोन्यथेतिसारावलीवचनेनसमानोदरप्रसूतविषयनिषेधस्यप्राप्तत्वात्तद्भिन्नविषयंभवतीतितदाशयः । उद्वाह्यपुत्रींनपिताविदध्यात्पुत्र्यंतरस्यो[1]द्वहनंहिजातु । यावच्चतुर्थीदिनमत्रसर्वंसमाप्यचान्योद्वहनंविदध्यादितिकपर्दिवचोप्येवंभिन्नोदरविषयम् । अत्रेतिचतुर्थीदिनइत्यर्थः । यत्तुज्योतिर्निबंधेमेधातिथिः—पृथङ्मातृजयोःकार्योविवाहश्चैकवासरे । एकस्मिन्मंडपेकार्यःपृथग्वेदिकयोस्तथा । पुष्पपट्टिकयोःकार्यंदर्शनंनशिरःस्थयोः । भगिनीभ्यामुभाभ्यांचयावत्सप्तपदीभवेदिति। तत्कर्तृकभेदाभिप्रायम् । कार्यइतिकर्मप्रत्ययेद्वाभ्यांत्रिभिरित्यन्वयसंभवात् । उदाहृतगर्गवाक्ययोः कपर्दिवाक्येचैवंकर्तारंप्रतिनिषेधोज्ञाप्यते कुर्यात् कुर्वीत नपिताविदध्यादितिशब्दैस्तथैवप्रतीतेः । अतश्च द्वाभ्यांकर्तृभ्यांएकस्मिन्नपिलग्नेएकस्मिन्नपिगृहेभिन्नोदरयोर्विवाहःकार्यः । भिन्नकर्तृकत्वेनैवमंडपदेवप्रतिष्ठादिभेदःप्रतीयते । एकः कर्तातुदिनचतुष्टयेनपूर्वंविवाहंसमाप्योत्तरंकुर्यात् । अतिसंकटेत्वेकस्मिन्नपिदिनेमंडपदेवताप्रतिष्ठाद्यभेदेपिगृहभेदेनवेति व्यवस्थाबोध्या । वक्ष्यमाणवसिष्ठवाक्योत्तरार्धस्यभिन्नोदरसाधारणत्वात् । मदनरत्नेनारदः—मातृयज्ञक्रियापूर्वंज्येष्ठंकृत्वातुमंगलम् । ऋतुत्रयंपुनर्यावन्नकुर्याल्लघुमंगलम् । एकमातृजयोरेकवत्सरेपुरुषस्त्रियोः । नसमानक्रियांकुर्यात्मातृभेदे विधीयतेइति । ऋतुत्रयस्यमध्येचेदन्याब्दस्यप्रवेशनम् । तदाह्येकोदरस्यापिविवाहस्तुप्रशस्यते । अत्रत्यतुशब्देनविवाह

---

[1] द्वहनंकदापि ।

भिन्नमेकोदरविषयंमंगलद्वयमब्दभेदेनभवतीतिज्ञाप्यते । तत्रैवमिहिरस्तु—पुत्रोपनयनादूर्ध्वंषण्मासाभ्यंतरेतथा । पुत्र्युद्वाहंनकुर्वीतविवाहाद्व्रतबंधनम् । यमयोस्तु—एकस्मिन्वत्सरेचैववासरेमंडपेतथा । कर्तव्यंमंगलंस्वस्रोर्भ्रात्रोर्यमलजातयोरिति । तथामदनरत्नेवसिष्ठः—द्विशोभनंत्वेकगृहेपिनेष्टंशुभंतुपश्चान्नवभिर्दिनैस्तु । आवश्यकंशोभनमुत्सवोवाद्वारेथवाचार्यविभेदतोवेति । एकोदरप्रसूतानांनाग्निकार्यत्रयंभवेत् । भिन्नोदरप्रसूतानांनेतिशातातपोब्रवीदितिशातातपग्रहणेभिन्नोदरविषयाग्नित्रयनिषेधस्यानित्यताज्ञाप्यते । गृह्यपरिशिष्टे—अविरुद्धसंबंधामुपयच्छेतेत्युपक्रम्य विरुद्धसंबंधायथाभार्यास्वसुर्दुहितापितृव्यपत्नीस्वसाचेतीत्थमूह्यम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथविवाहकालः । आश्वलायनः—उदगयनआपूर्यमाणपक्षेकल्याणेनक्षत्रेचौलकर्मोपनयनगोदानविवाहाःसार्वकालमेकेविवाहमिति । कल्याणनक्षत्रंज्योतिःशास्त्राविरुद्धमितिवृत्तिकृत् । पुण्यनक्षत्रेदारान्कुर्वीतेतिछंदोगसूत्रेनक्षत्रग्रहणात्तिथ्याद्यपेक्षयानक्षत्रमावश्यकमितितद्भाष्ये । विवाहोदिवाकार्यः रात्रावपिकेचित्कुर्वंतितत्रकारणंनविद्मइतिजयंतः । हेमाद्रौतुदेवलः—राहुदर्शनसंक्रांतौविवाहात्ययवृद्धिषु । स्नानदानादिकंकुर्युर्निशिकाम्यव्रतेषुचेति । वृद्धवसिष्ठः—ग्रहणोद्वाहसंक्रांतियात्रादौप्रसवेषुच । दानंनैमित्तिकंज्ञेयंरात्रावपितदिष्यतइति रात्रावपिकन्यादानमुक्तम् । अन्यत्रापिसुमंतुः—ग्रहणोद्वाहसंक्रांतियात्रार्तिप्रसवेषुच । श्रवणेचेतिहासस्यरात्रौदानंप्रशस्यतइति । निर्णयामृते—अर्कार्किभूमिपुत्राणांदिनेषुकलहप्रियेतिदिनग्रहणाद्रात्रौविवाहेनदोषइत्युक्तमितिरात्रावपिविवाहसिद्धिः । मदनरत्नेनारदः—

युग्मेब्देजन्मतःस्त्रीणांप्रीतिदंपाणिपीडनम् । एतत्पुंसामयुग्मेब्देव्यत्ययेनाशक्तयोरिति । पारिजातेयमः—दद्याद्गुणवतेकन्यांनग्निकामविशंकितइति । अस्यामवस्थायांशंकाप्रसक्तिंवदन् अष्टमवर्षपर्यंतोगर्भपंचमप्रभृतिःकन्याविवाहेउचितःकालस्त्रीणामुपनयनस्थानापन्नोविवाहइतितदुचितोघयोवस्थायांविवाहस्योचितत्वात् । अतस्तत्रविवाहेशंकानेतिदर्शयति । षड्वर्षोत्तरंतुप्रशस्ततरःकालः—षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः । सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चतथानलइतिज्योतिर्निबंधोदाहृतवचनात् । हेमाद्रौवात्स्यः—माघेमासेभवेद्यूढाकन्यासौभाग्यसंयुता । फाल्गुनोढाभवेत्साध्वीवैशाखेपुत्रिणीभवेत् । धर्मयुक्ताभवेज्ज्येष्ठेधनिनीकार्तिकेभवेत् । देवपूजारतानित्यंमासेस्यात्सोमदेवतइति । धनिनीस्वातंत्र्येणधनसंग्रहवती । नित्यमितिभर्त्रादिशुश्रूषाव्यावृत्तिःसूचिता । सोमदेवतोमार्गशीर्षः । अतएवमदनरत्नेनारदः—माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासाःशुभप्रदाः । मध्यमःकार्तिकोमार्गशीर्षोवैनिंदिताःपरइति । यत्तुतत्रैवभरद्वाजवचनं—माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमृगाह्वयाः । षडेतेपूजितामासाश्चातुर्वर्ण्यस्यनित्यशइति । अत्रविहितप्रतिषिद्धानामाषाढादीनांदेशभेदेनव्यवस्थेतिमदनरत्ने । वसिष्ठस्तु—पौषेपिकुर्यान्मकरस्थितेर्केचैत्रेभवेन्मेषगतोयदास्यात् । प्रशस्तमाषाढकृतंविवाहंवदंतिगर्गामिथुनस्थितेर्केइति। यद्यपि—ज्येष्ठमासाद्यगर्भस्यशुभंवर्ज्यंस्त्रियाअपिइतिनिषेधोस्तितथापिवधूवरयोरन्यतरज्येष्ठत्वेनदोषः । ज्येष्ठस्यज्येष्ठकन्यायाविवाहोनप्रशस्यते । तयोरन्यतरेज्येष्ठेज्येष्ठोमासःप्रशस्यते । द्वौज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठंसुखावहम् । ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीतविवाहेसर्वसंमतमितिमिहिरोक्तेः । तथाकृत्तिकास्थरवेरतिक्रमेपि

नदोषः । कृत्तिकास्थरविंत्यक्त्वाज्येष्ठेज्येष्ठस्यकारयेदितिसंग्रहोक्तेः । यत्तुसार्वकालवचनंतदासुराद्यधर्म्यविवाहविषयमितिमदनरत्ने । आश्वलायनसूत्रवृत्तिभाष्यकर्तारौतुप्रत्यासन्नर्तुकालायाविवाहविषयमित्यूचतुः । इतिमासाः ॥ ॥

अथतिथयः । भारद्वाजः—प्रतिपद्दुःखजननीद्वितीयाप्रीतिवर्धनी । सौभाग्यदातृतीयास्याच्चतुर्थीचार्थनाशिनी । पंचम्यांसुखवित्तानिषष्ठीविघ्नप्रदायिनी । विद्याशीलसुखाप्तिःस्यात्सप्तम्यामफलाष्टमी । नवमीशोकफलदाआनंदोदशमीदिने । सुखदैकादशीज्ञेयासफलाद्वादशीस्मृता । मानपुत्रौत्रयोदश्यांचतुर्दशीतुदोषदा । फलंवहुविधंपंचदश्यांचैवविशेषतइति । पंचदशीपूर्णमासी । विवाहमारभ्यचतुर्थिमध्येश्राद्धंदिनंदर्शदिनंयदिस्यात् । वैधव्यमाप्नोतितदाशुकन्याजीवेत्पतिश्चेदनपत्यतास्यादितिज्योतिर्निबंधवचसाऽमायांविवाहभावनांतर्भावनिषेधेनतत्रसुतरांविवाहनिषेधसिद्धेःश्राद्धंतद्युक्तंदिनमितिविवाहमध्येश्राद्धस्यैवनिषेधः नतुतद्रहिततत्तिथिमात्रस्य । (विवाहमध्येयदिचेत्क्षयाहस्तत्रास्यमुख्याःपितरोनयांति)। वृत्तेविवाहेपरतस्तुकुर्याच्छ्राद्धंस्वधाभिर्नतुदूषयेत्तमितिशास्त्रांतरस्यनिर्विषयत्वापातात् । दर्शदिनमितिस्वरूपेणतिथिनिषेधः । तथासत्येवपृथग्ग्रहणस्यसार्थकत्वात् । प्रेतश्राद्धसपिंडीकरणानुमासिकानांतुविवाहादिनिमित्तकवृद्धिपूर्वकालप्रमीतविषयाणांप्राप्तकालानांकालेनुष्ठानेनअप्राप्तकालानामपकृष्यानुष्ठानेनचप्रेतस्यचतुःपुरुषपर्यंतंसापिंडानांवृद्धिश्राद्धविशिष्टतत्कर्मस्वधिकारः । प्रेतकर्माण्यनिर्वर्त्यचरेन्नाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थंततःपुंसिपंचमेशुभदंभवेदितिमेधातिथिवचनात् । अतएव—प्रेतश्राद्धानिसर्वाणिसपिंडीकरणंतथा । अपकृष्यापिकुर्वीतकर्तुंनांदीमुखंद्विजइति

हेमाद्रिलिखितशाठ्यायंनिवचसोपितावत्सपिंडविषयत्वं प्राप्तकालप्रेतकर्मणांयावतःपुरुषान्प्रतिनादीमुखानुरोधेनावश्यकर्तव्यताविहितातावतःप्रत्येवापकर्षविधावपिशब्दसामंजस्यात्। सपिंडीकरणस्यसत्यपिप्रेतश्राद्धत्वेआहिताग्न्यादिविषयत्वेनव्यवस्थापितत्रिपक्षादिकालबाधेनाप्यपकर्षसिद्ध्यर्थंपृथग्ग्रहणम् । एवंच—सपिंडीकरणादर्वागपकृष्यकृतान्यपि । पुनरप्यपकृष्यंतेवृद्ध्युत्तरनिषेधनादितिस्मृत्यंतरमपितावत्पुरुषविषयमेव । पुनरपीत्युक्तेतान्प्रत्येवसंभवात् । यद्यपिकेचिदभियुक्ता नांदीश्राद्धनिमित्तोयमपकर्षोऽसपिंडीकृतानांतत्रदेवतात्वासंभवात् अतःस्वपितृदेवत्यनांदीश्राद्धांगकेसंस्कार्यपितृदेवत्यतदंगकेवोपनयनादौ शास्त्रनियुक्तेनपुंसास्वपितुःसंस्कार्यपितुर्वासपिंडीकरणोपस्थितौविहितकालात्प्रागपिषोडशश्राद्धैःसहापकृष्यसपिंडीकरणंकार्यमितिविधीयते नतुसपिंडकर्तृकनांदीश्राद्धानुरोधेननांदीश्राद्धसंबद्धदेवत्यसपिंडीकरणस्याप्यपकर्षःशास्त्रार्थइत्याहुः । तथापिनेत्थंस्वीकर्तुमुचितं मेधातिथिवचनविरोधात् संस्कार्यपित्राद्युद्देश्यनांदीश्राद्धांगकोपनयनाच्चतुर्थपुरुषादूर्ध्वमपिसंभाव्यते । असपिंडीकृतानांचदेवतात्वासंभवस्तत्रापिसमइतिकथंनापकर्षः । अतआचतुर्थमित्यनुपपन्नं । इतितिथयः ॥ ॥ अथनक्षत्राणि । कात्यायनः—उदगयनआपूर्यमाणपक्षेपुण्याहेकुमार्याःपाणिंगृह्णीयादित्युपक्रम्य त्रिषूत्तरादिषुस्वातौमृगशिरसिरोहिण्यांचेति उत्तराहस्तचित्राइतित्रीणि तथाउत्तराषाढाश्रवणधनिष्ठाइतित्रीणि उत्तराप्रोष्ठपदारेवत्यश्विन्यइतित्रीणीतिव्याचष्टेहरिहरः । यद्यप्याश्वलायनेनविवाहकालनियममुक्त्वा अलंकृत्यकन्यामुदकपूर्वांदद्यादेषब्राह्मोविवाहइत्युक्तेर्विवाहपदार्थे दानेएवपुण्यनक्षत्रादिनियमःप्रतीयते

तथापिकात्यायनेनपाणिग्रहेनियमविधानात्तदंतंकर्मसुमुहूर्तेकार्यम् । अतएवपारिजातेबृहस्पतिरप्यन्यनक्षत्रविधिंवदन्नाह—सौम्यपैतृकहस्ताश्वमैत्रमूलाश्विवायवः । त्रीण्युत्तराणिपौष्णंचरोहिणीचशुभप्रदाः । अन्याश्चसर्वावर्ज्याःस्युस्ताराःपाणिग्रहेसदेति । हेमाद्रावपि—हस्तोत्तराणिवायव्यंमैत्रंमूलंचरेवती । रोहिणीसौम्यपित्र्येचशुभंपाणिग्रहेसदेति । विहितेष्वपिग्रहविशेषाक्रमणेननक्षत्रेषुनिषेधंतदपवादंचपारिजातेबृहस्पतिवसिष्ठावूचतुः—वत्सरेणतदर्धेनतस्याप्यर्धेनयांतिये । मंदजीवकुजैर्दग्धाराशयःपूर्वजंगुणमिति । राहुकेतुविमुक्तंयद्ग्रहचक्रनिपीडितम् । वत्सरार्धेनशुद्ध्येतग्रहयुद्धयुतंचभमिति । यस्मिन्भेऽस्तमयंयांतिग्रहास्तद्भंत्रिमासतः । शुद्धत्वमुपयातीतिवज्रिन्पद्मासनोदितमितिच । चंद्रशुक्रसमायोगादुडूनिशुभतामियुः । ग्रहयुक्तेतुनक्षत्रेतदैवयदिचंद्रमाः । तयोर्मध्येव्रजन्पीडांदोषान्सर्वान्व्यपोहतीतिच । इतिनक्षत्राणि ॥

अथवासरादिनृसिंहः—बुधशुक्रेंदुजीवानांवारेषुशुभदंभवेत् । शुभानामंशकंश्रेष्ठवर्गादिचविवाहकइति । मदनरत्नेगर्गः—चंद्रताराबलंमुख्यंदंपत्योःपाणिपीडने । मुख्यंगुरुबलंवध्वावरस्येष्टंरवेर्बलम् ॥ विवाहेमुख्यकालेतयोर्बलालाभेपूजाकार्या । विवाहेबलमावश्यंदंपत्योर्गुरुसूर्ययोः । चेत्पूजांयत्नतःकुर्याद्दुर्बलप्रदतातयोरितितत्रैवनारदवचनात् । चेदित्यस्यदुर्बलेत्यत्रान्वयः । गुरुपूजाप्रकारउपनयनप्रकरणएवोक्तइतिनेहोच्यते । रवेरपिपूजाग्रहमखरीत्याद्रष्टव्या । उक्तानुक्तकालसंग्रहार्थःश्लोकःश्रीधरीये—अर्केकर्कटकन्यकाघटधनुर्युक्तेभृगौमंत्रिणिस्फीतज्योतिषिशीतरोचिषिनवोद्रिक्तेविरिक्तेतिथौ । रोहिण्युत्तररेवतीपितृमरुन्मित्रेंदुहस्तासुरेष्वाराकार्किजवासरादिरहितेषूद्वाहकर्मारभेदिति । मंत्रीगुरुः । स्फीतज्योतिषीत्य

स्यमध्यमणिन्यायेनोभयतोन्वयः । भृगुमंत्रिणोरनेनविशेषणेनास्तवाल्यादिनिषिध्यते । शीतरोचिश्चंद्रः । नवोद्रिक्तइति तद्विशेषणेनशुक्लपक्षविधिः । पूर्वविशेषणेनतत्रापिषष्ठ्यादेःप्राशस्त्यं । अनेनैवकृष्णपक्षनिषेधस्तत्रापिपंचम्यंतस्यननिषेध इतिचज्ञाप्यते । तत्रस्फीतज्योतिष्ट्वाच्चंद्रस्यपूर्वोदाहृतशास्त्रांतराच्चविरिक्तइतिउक्तविहितकालेपिरिक्तानिषेधः । पितरोमघाः मरुतःस्वाती मित्रोनुराधाः इंदुर्मृगः आसुरंमूलम् आरोभौमः अर्कजःशनिः आदिशब्देनविष्टिव्यतीपातवैधृत्यादिनिषेधाःसंगृह्यंते । सिंहस्थेमकरस्थेगुरौनिषेधप्रतिप्रसवव्यवस्थाचसंवत्सरकृत्यकौस्तुभेबार्हस्पत्यवत्सरदीधितौद्रष्टव्या । जन्ममासादेर्निषेधप्रतिप्रसवयोर्व्यवस्थोपनयनाधिकारएवोक्तेतिनेहोच्यते । एवंक्षयपक्षक्षयमासक्षयवत्सराणामपिविवाहेनिषेधः । तत्रक्षयपक्षः चंडेश्वरीये—त्रयोदशदिनेपक्षेविवाहादिनकारयेत् । गर्गादिमुनयःप्राहुःकृतेमृत्युस्तदा भवेत् । मृत्युर्विवाहेदंपत्योः । आदिपदोपात्तचौलादौशिशोः । ज्योतिर्निबंधे—उपनयनंपरिणयनंवेश्मारंभादिपुण्यकर्माणि । यात्रांद्विक्षयपक्षेकुर्यान्नजिजीविषुःपुरुषः । मदनरत्ने—पक्षस्यमध्येद्वितिथीपतेतांतदाभवेद्रौरवकालयोगः । पक्षेविनष्टेसकलंविनष्टमित्याहुराचार्यवराःसमस्ताः । त्रयोदशदिनेपक्षेनूनंसंहरतेजगत् । अपिवर्षसहस्रेणकालयोगः प्रकीर्तितइति । तत्रपक्षस्यचांद्रदिनात्मकतिथिसमूहात्मकत्वात्पक्षपदसमभिव्याहारवशेनदिनपदंचांद्रदिनपरं दिनेशदर्शनंदिनमितिचप्रसिद्धेस्तद्रहितक्षीणतिथ्योरदिनत्वमभिप्रेत्यतद्वदवशिष्टत्रयोदशतिथ्यात्मकानिदिनानियस्मिन्निति व्युत्पत्त्यात्रयोदशदिनत्वंपक्षस्यबोध्यम् । एवंचपक्षांतर्गतयोःकयोरपितिथ्योःक्षयेणतत्प्रसंगेऽपि पक्षस्यमध्येद्वितिथी

पतेतामितिवचनेपक्षइतिसप्तम्यप्रयोगेण मध्यपदप्रयोगेण आरंभसमाप्तित्वेनाभिप्रेतेप्रतिपत्पंचदश्यौनक्षयंयत्रगच्छतः तद्भिन्नयोःकयोश्चित्तिथ्योःक्षयेणसपक्षोनिंद्यत्वेनाभिप्रेतइतिगम्यते । नचप्रतिपदःक्षयेद्वितीयामारभ्यविशेष्यपक्षस्यापि संभवइतिकृतबुद्धयएवविदांकुर्वंतु । अतएवभीष्मपर्वणि उत्पातप्रदर्शनेनयुद्धंनिवारयिष्यतोव्यासस्यधृतराष्ट्रंप्रत्युक्तिः खरागोषुप्रजायंतेइत्यादिग्रंथे—चतुर्दशींपंचदशींभूतपूर्वांचषोडशीम् । इमांचनाभिजानेऽहममावास्यांत्रयोदशीमिति । एकतिथिवृद्ध्याषोडशींतत्क्षयेणचतुर्दशींक्षयवृद्ध्यभावेपंचदशीममावास्यांपूर्वंभूतामभिजाने । इमांयुद्धकालेसंनिहितांतिथिद्वयक्षयेणत्रयोदशींपूर्वकालेभूतांनाभिजाने । एषामहानुत्पातइत्याशयः । एवंचपूर्वार्धेचतुर्दशीत्वादेःप्रतिपन्निरूपितत्वात्तत्प्रायपाठात्त्रयोदशीत्वमपिप्रतिपन्निरूपितम् । तच्चतदैवघटते यदिप्रतिपत्पंचदश्योर्नक्षयः । अस्तिचमौसलेपिभगवदुक्तिः—त्रयोदशीपंचदशीकृतेयंराहुणापुरा । तदाचभारतेयुद्धेप्राप्ताचाद्यक्षयायनइति । अत्रापियापंचदशीसात्रयोदशीतिप्रकृतामावास्याविषयोक्त्योर्निरूपकैक्यावश्यंभावात्प्रतिपत्पंचदशीभिन्नयोरेवतिथ्योःक्षयेणक्षयपक्षोनान्यथेतिसिद्धम् । इतिक्षयपक्षनिर्णयः ॥ ॥ तथाक्षयमासोपिनिषिद्धः—काम्यादिष्वखिलेषुकर्मसुपरित्याज्यौक्षयाख्योत्तरासंक्रांतीइतिदीपिकोक्तेः । तन्निर्णयश्चांद्राब्दकौस्तुभेउक्तइतिनेहोच्यते । तथाक्षयसंवत्सरोनिषिद्धः । विवाहानुवृत्तौमदनरत्नेलल्लः—अतिचारगतोजीवस्तंराशिंनैतिचेद्यदि । लुप्तःसंवत्सरोज्ञेयःसर्वकर्मबहिष्कृतइति । पूर्वराशिशेषमतिक्रम्यराश्यंतरसंचारोऽतिचारः तंप्राप्तोगुरुःपुनस्तंराशिंयदिनैतितदालुप्तःसंवत्सरःसर्वधर्मबहिष्कृतोज्ञेयइत्याशयः । एवंचपूर्वनि

मित्तेसत्यपिसंवत्सरक्षयःपाक्षिकइत्युक्तंभवति । तथाचविवृतंतेनैव—यदातिचारंसुरराजमंत्रीकरोतिगोवृश्चिकमीनसंस्थः । नायात्यसौयद्यपिपूर्वराशिंशुभायपाणिग्रहणंवसिष्ठः । मेषेवृषेमीनकुंभेयद्यतीचारगोगुरुः । नतत्रकालेलोपःस्यादित्याहगालवोमुनिरिति । इतिक्षयसंवत्सरनिर्णयः ॥ ॥ यश्चमाधवीयादौ—प्रारंभात्प्राग्विवाहस्यमातायदिरजस्वला । निवृत्तिस्तस्यकर्तव्यासहत्वश्रुतिचोदनादितिनिषेधस्तन्निमित्तरजोदर्शनस्यनांदीश्राद्धोत्तरमुत्पत्तौ ततःपूर्वोत्पत्तावपिमुहूर्तांतरालाभेश्रीपूजनादिनाविवाहसंभवोप्युपनयनाधिकारएवोक्तोऽनुसंधेयः । रजोदर्शनादिसंभावनायांनादीश्राद्धस्यापकृष्यानुष्ठानेप्यवधिःप्रयोगरत्ने—एकविंशत्यहर्यज्ञेविवाहेदशवासराः । त्रिषट्चौलोपनयनेनांदीश्राद्धंविधीयतेइति । एवंनांदीश्राद्धोत्तरंसूतकेपिनविवाहप्रतिबंधः—विवाहव्रतयज्ञेषुश्राद्धेहोमार्चनेजपे । आरब्धेसूतकंनस्यादनारब्धेतुसूतकम् । प्रारंभोवरणंयज्ञेसंकल्पोव्रतसत्रयोः । नांदीमुखंविवाहादौश्राद्धेपाकपरिक्रियेतिविष्णूक्तेः । मुहूर्तांतरालाभेसामग्र्यांचकृतायांसूतकिनोप्यधिकारोपायमाहपारिजातेविष्णुः—अनारब्धविशुद्ध्यर्थंकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतम् । गांदद्यात्पंचगव्याशीततःशुद्ध्यतिसूतकी । ततःशुद्ध्यतीतिपुनरुक्तिर्विवाहाद्युपयोगिपाकपरिवेषणादावपिशुद्धिज्ञापनार्था । गांपयस्विनींदद्यात् ।—संकटेसमनुप्राप्तेसूतकेसमुपस्थिते । कूष्मांडीभिर्घृतंहुत्वागांचदद्यात्पयस्विनीम् । चूडोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादिकमाचरेत् । यदैवसूतकप्राप्तिस्तदैवाभ्युदयक्रियेतिसंग्रहोक्तेः । एवंशुद्धिपूर्वकविवाहाद्यनुष्ठानेतदंगत्वेनसंकल्पितान्नभोजनेनदोषइतिबृहस्पतिनोक्तम्—विवाहोत्सवयज्ञेषुत्वंतरामृतसूतके । पूर्वसंकल्पितान्नेषुनदोषःपरिकीर्तित

इति । मृतसूतकमध्येविवाहाद्यनुष्ठानेउक्तशुद्धिपूर्वकमारब्धेइत्यर्थः । नांदीश्राद्धोत्तरंसूतकादौविवाहारंभोत्तरमपिसंकल्पितान्नेविशेषःषड्त्रिंशन्मते । पूर्वार्धंपूर्ववत् । परैरन्नंप्रदातव्यंभोक्तव्यंचद्विजोत्तमैरिति । विवाहादिमध्येसूतकादिप्राप्तावित्यर्थः । पूर्वसंकल्पितान्नेभोजनसमयेसूतकादौतुविशेषस्तत्रैव—भुंजानेषुतुविप्रेषुत्वंतरामृतसूतके । अन्यगेहोदकाचांताःसर्वेतेशुचयःस्मृताःइति । भोक्तृभिर्भुक्तशेषस्त्याज्यः पक्वशेषःसूतकिभिर्भोक्तव्यइत्याशयः ॥ ॥ कन्यायारजोदर्शनेतु विवाहात्पूर्वंजातेविवाहयोग्यतासिद्ध्यर्थं उपायमाहाश्वलायनः—पिताऋतून्स्वपुत्र्याश्चगणयेदादितःसुधीः । दानावधि गृहेयत्नात्पालयेच्चरजोवतीम् । दद्यात्तदृतुसंख्यागाःशक्तःकन्यापितायदि । दातव्यैकापियत्नेनदानेतस्यायथाविधि । दद्याद्वाब्राह्मणेष्वन्नमतिथिभ्यःसदक्षिणम् । तस्यातीतर्तुसंख्येषुवरायप्रतिदापयेत् । उपोष्यत्रिदिनंकन्यारात्रौपीत्वागवां पयः । अदृष्टरजसेदद्यात्कन्यायैरत्नभूषणम् । तामुद्वहन्वरश्चापिकूष्मांडैर्जुहुयाद्द्विजइति । तस्याःकन्यायादानेकर्तव्येयथाविधिसुवर्णशृंगादिगोदानविधिनेत्यर्थः । वरायेति उक्तप्रकाराणामन्यतमेनदाताकन्यादानेयोग्योभवतीत्यर्थः । उपोष्येतिश्लोकेनदृष्टरजस्ककन्यायाउपवासत्रयांतेगव्यपयःपानपूर्वकंअदृष्टरजसेकुमार्यैसरत्नभूषणदानेनविवाहयोग्यतोच्यते । तामुद्वहन्नितिवरस्यकूष्मांडहोमेनतदुद्वाहयोग्यतेतिबोद्धव्यम् । होमकालेरजोदर्शनेतुयज्ञपार्श्वः—विवाहेविततेयज्ञेहोमकालउपस्थिते । कन्यामृतुमतींदृष्ट्वाकथंकुर्वंतियाज्ञिकाः । स्नापयित्वातुतांकन्यामर्चयित्वायथाविधि । युंजानामाहुतिं हुत्वाततस्तंत्रंप्रवर्तयेदिति । युंजानेतिमंत्रस्तैत्तिरीयशाखायांप्रसिद्धः । यदातुदात्रभावेनरजोदर्शनंततःस्वयंवरंवरयेत् । सत्य

पिवारजसिकंचित्कालंजीवत्स्वपिदातृपुतान्प्रतीक्ष्यस्वयंवरंवरयेत् । तद्विशेषमाहमनुः——त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेतकुमार्यृतुमतीसती । ऊर्ध्वंतुकालादेतस्माद्विंदेतसदृशंपतिम् । अदीयमानाभर्तारमधिगच्छेद्यदिस्वयम् । नैनःकिंचिदवाप्नोतिनचयंसाधिगच्छतीति । अदीयमानादात्रभावाद्दात्रोपेक्षणाद्वेतिमंतव्यम् । सायंभर्तारमधिगच्छतिसोपिनैनोऽधिगच्छतीति व्याख्यातंमाधवेन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथप्रतिकूलविधिः । कृष्णभट्टीये—वधूवरार्थेघटितेसुनिश्चितेवरस्यगेहेप्यथकन्यकायाः । म्रियेतकश्चिन्मनुजोऽथनारीतदानकुर्युःखलुमंडनंते । वाङ्निश्चयेकृतेपश्चात्पितरौनिधनंगतौ । तयोस्तत्प्रतिकूलंस्यान्नान्येषांतुकदाचन । वृद्धवसिष्ठः——वरवध्वोःपितामातापितृव्यश्चसहोदरः । एतेषांप्रतिकूलंस्यान्महाविघ्नप्रदंभवेत् । पितापितामहश्चैवमाताचैवपितामही । पितृव्यःस्त्रीसुतोभ्राताभगिनीचाविवाहिता । एभिरेवविपन्नैश्चप्रतिकूलंबुधैःस्मृतम् । अन्यैरपिविपन्नैस्तुकेचिदूचुर्नतद्भवेत् । मांडव्यः—वाग्दानानंतरंमातापिताभ्राताविपद्यते । विवाहोनैवकर्तव्यःस्ववंशहितमिच्छता ॥ ॥

अथसंकटेप्रवृत्तिप्रकारमाहमेधातिथिः——वाग्दानानंतरंयत्रकुलयोःकस्यचिन्मृतिः । तदासंवत्सरादूर्ध्वंविवाहःशुभदोभवेत् । पुरुषत्रयपर्यंतंप्रतिकूलंस्वगोत्रिणाम् । प्रवेशनिर्गमौतद्वत्तथामुंडनमंडने । प्रेतकर्माण्यनिर्वर्त्यचरेन्नाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थंततःपुंसिपंचमेशुभदंभवेत् । स्मृतिरत्नावल्याम्—पितुरब्दमिहाशौचंतदर्धंमातुरेवच । मासत्रयंतुभार्यायास्तदर्धंभ्रातृपुत्रयोः । अन्येषांतुसपिंडानामाशौचंमाससंमितम् । तदंतेशांतिकंकृत्वाततोलग्नंविधीयते । ज्योतिः

प्रकाशे—प्रतिकूलेपिकर्तव्योविवाहोमासमंतरा । शांतिंविधायगांदत्वावाग्दानादिचरेत्पुनरिति । स्मृत्यंतरे—प्रतिकूले नकर्तव्यंलग्नंयावदृतुत्रयम् । प्रतिकूलेपिकर्तव्यंकेप्याहुर्बहुसंप्लवे । प्रतिकूलेसपिंडस्यमासमेकंविवर्जयेत् । विवाहस्तुततः पश्चात्तयोरेवविधीयते । ज्योतिःसागरे[1]—दुर्भिक्षेराष्ट्रभंगेचपित्रोर्वाप्राणसंशये । प्रौढायामपिकन्यायांनानुकूल्यंप्रतीक्षते[2] । अन्यत्रापि—दीर्घरोगाभिभूतस्यदूरदेशस्थितस्यच । उदासीनस्थितस्यापिप्रतिकूलंनविद्यते । संकटेसमनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येनयोगिना । शांतिरुक्तागणेशस्यकृत्वातांशुभमाचरेत् । अकृत्वाशांतिकंयस्तुनिषिद्धेसतिदारुणे । प्रकरोति शुभंकर्मविघ्नस्तस्यपदेपदे । वृद्धवसिष्ठः—प्रतिकूलेतुसंप्राप्तेविवाहंनैवकारयेत् । अंतेदोषविनाशायकुर्याच्छांतिमिमांशुभाम् । श्रियेजातइतिश्रियं इदंविष्णुरितिविष्णुं गौरीर्मिमायेतिगौरीं त्र्यंबकमितित्र्यंबकं परंमृत्योरितियमं । पूजयित्वातिलाज्यंचहुनेदष्टोत्तरंशतम् । भूःस्वाहामृत्युर्नश्यतांस्नुषायैसुखंवर्धतांस्वाहा । ततोहोमंसमाप्याथगोद्वयंदक्षिणा भवेत् । स्मृतिचंद्रिकायाम्—कृतेवाङ्निश्चयेपश्चान्मृत्युर्मर्त्यस्यगोत्रिणः । तदानमंगलंकार्यंनारीवैधव्यदंध्रुवमिति। वाग्दानानंतरंयत्रकुलयोःकस्यचिन्मृतिः । तदोद्वाहोनैवकार्यःस्ववंशक्षयदोषतइति । अत्रयद्यपिम्रियतेकश्चिदिति मृत्युर्भवति कस्यचिदितिचाविशेषेणोक्तं तथापिपितामह्यादीनामिवमातामह्यादीनामपिमरणस्यप्रतिकूलदोषनिमित्तत्वेनक्वचिदकीर्तनादविवाहितायाभगिन्याइवविवाहितायामरणस्यतथात्वानुक्तेर्मेधातिथिवाक्येस्वगोत्रिणामितिचंद्रिकावाक्येमर्त्यस्य

---

[1] ज्योतिःसारे । [2] नानुकूलंप्रतीक्षते ।

गोत्रिणइतिचकीर्तनात्—वध्वावरस्यवासगोत्रसपिंडेषुत्रिपुरुषांतर्गतेमर्त्यैमृतेप्रतिकूलदोषइतिमंतव्यम् । स्त्रीवरस्यद्वितीयादिविवाहसमयेपूर्वोढासुतस्तस्यांपूर्वोत्पन्नः । एतत्पौत्रोपलक्षणम् । एवंपितृव्यग्रहणंतत्पुत्रस्य । एवंचवरमारभ्यजनकत्रिपुरुषी जन्यात्रिपुरुषी कूटस्थमारभ्यसंतानभेदेचत्रिपुरुष्यत्रबोद्धव्या । वधूवरयोःसमानगृहेतन्मरणेकिंचित्कालंप्रतीक्ष्यैवविवाहइतितदानकुर्युरित्यादिशब्दैर्बोध्यते । तयोस्तत्प्रतिकूलंस्यादितिकालप्रतीक्षाशांतिभ्यामसमाधेयोदोषोद्वयोर्युगपन्मरणजइत्यर्थः । अतएवोक्तंनान्येषांतुकदाचनेति । अन्येषांसपिंडानां । तयोरप्येकैकमरणजस्तुसमाधेयइत्याशयः । वृद्धवसिष्ठवाक्येचतुर्णांमरणस्यमहाविघ्नकरत्वकथनं तत्रप्रतीक्षासहिताकेवलावाविनायकशांतिरितिकथनार्थम् । अतएवतद्विधिवाक्यशेषेशांत्यकरणेपदेपदेइतिविघ्नस्यमहत्त्वंप्रदर्शितम् । एभिरेवविपन्नैरितिकालप्रतीक्षासहितायाःश्रीपूजनादिशांतेर्निमित्तमेतन्मरणमेवेत्याशयः ।अतएववाक्येनैवकर्तव्योनिमित्तानंतरमितिव्याख्येयम् । एवंवृद्धवसिष्ठवाक्यमपि । प्रतीक्षाचसामान्यतःसंवत्सरमृतुत्रयंमासमात्रंवेतिपक्षत्रयंमेधातिथिवाक्यसहितस्मृत्यंतरवाक्याद्बोद्धव्यम् । रत्नावलीवाक्येतुआशौचशब्देनप्रतिकूलकृतंविवाहानधिकारमात्रंप्रतीक्षातात्पर्यकंबोद्धव्यम् । तत्रपितुर्मरणेअब्दप्रतीक्षायामात्रादिमरणनिमित्ततदर्धादिप्रतीक्षायास्तुल्यकल्पत्वेनोक्तत्वात् पितुर्मरणेसंकटतारतम्येनपक्षत्रयम् । मातुर्मरणेतदर्धमासमात्रंवेतिपक्षद्वयम् । एवंभार्यामरणेमासमात्रंवेति भ्रातृमरणेपुत्रमरणेचसार्धमासंमासमात्रंवेतिपक्षद्वयम् । पितामह्यादिसपिंडांतरमरणेतुमासमेवप्रतीक्षेतिव्यवस्था । यदिगुणवत्तरमातृमरणेऋतुत्रयप्रतीक्षयाऽपरितोषस्तदासंवत्सरप्रतीक्षा

पिकार्यां । एवंगुणवत्तरभार्यादिमरणेऋतुत्रयप्रतीक्षापीत्याशयेनतयोरपिपक्षयोःसामान्यविध्युपपत्तिः । पितृमातृपितृव्यसोदराणांचतुर्णांमरणेउक्तव्यवस्थयाप्रतीक्षांतेविनायकशांतिः । अन्यमरणेतदंतेशांत्यंतरम् । यदात्वतिसंकटवशेन सर्वत्रनिमित्तेमासाधिकप्रतीक्षायाअसंभवस्तदातन्मध्येपिकिंचित्कालेप्रतीक्ष्योक्तव्यवस्थयान्यतरांशांतिंकृत्वागांदत्वापुनर्दानंचरेदितिज्योतिःप्रकाशवाक्यकृतोविशेषः । नतुक्वचिदपिप्रतिकूलंपूर्वाशौचादिनिमित्तेनानिवृत्ताशौचस्यापिसद्योविवाहेप्रवृत्तिरुचिता । यथासगोत्रसपिंडेषुपुरुषत्रयपर्यंतमेवप्रातिकूलस्यनिषेधनिमित्तत्वम् । एवंप्रवेशमुंडनयोर्निर्गममंडननिषेधनिमित्तत्वमपितेष्वेतावत्पर्यंतमेवेतिपुरुषत्रयेइतिमेधातिथिवाक्यार्थः । प्रेतकर्माणीत्युत्तरवाक्येतुयद्यपिआचतुर्थमितिसंख्यांतरस्योपादानात् प्रेतकर्मानिवृत्तेर्निमित्तत्वस्यआभ्युदयनिषेधस्यचनैमित्तिकस्योपादानात्पूर्ववाक्यादत्यंतभिन्नविषयतास्फुटैवप्रतीयते । तथापिस्वगोत्रिणामाचतुर्थमित्यनुषंगलभ्यार्थसिद्ध्यैतदनंतरपाठः । प्रेतकर्माणीतिचप्रेतोद्देशेनविहितानिकर्माण्युच्यंतेनतुप्रेतशब्दोद्देशविशिष्टानि । तेनसपिंडीकरणोत्तरंमासिकानामपिसंग्रहः । तेषामुत्पत्तिवेलायांप्रेतोद्देशेनविहितानामपितच्छब्दोद्देशरहितपुनरावृत्तेर्वाचनिकत्वात् । अतएवकात्यायनः—निर्वर्त्यवृद्धितंत्रंतुमासिकानिनतंत्रयेत् । अयातयामंमरणंनभवेत्पुनरस्यत्विति वृद्धिकर्मोत्तरंमासिकानुष्ठानेमृतस्यमरणं अयातयामंभवेत्नूतनमिवभवेत् । तच्चमांगलिककर्मणःपूर्वमृतस्यमांगलिककर्मोत्तरमापद्यमानमनुचितमितिभावः । शाठ्यायनिरपि—सपिंडीकरणादर्वागपकृष्यकृतान्यपि । पुनरप्यपकृष्यंतेवृद्ध्युत्तरनिषेधनादिति । एवंचमृतमरणस्यारोपितनूतन

प्रतिकूल.

त्वेदोषंवदताऽनारोपितनूतनत्वापादकानांसपिंडीकरणातानामाभ्युदयिकोत्तरमनुष्ठानमतिदुष्टमितिज्ञाप्यते । मासिकसाहचर्यादेवचसपिंडीकरणांतानामनुष्ठानमपि । नात्रनांदीश्राद्धदेवतात्वसिद्ध्यर्थमुक्तमासिकानांतदर्थतयाबाधितत्वात् । अनिर्वर्त्येतियद्यपिप्रेतकर्मभिःसहाभ्युदयक्रियायाः संगलापरपर्यायाःसमानकर्तृकत्वंप्रतीयते तथापितदसतिकर्त्रंतरेमुख्यं । सतितुप्रेतकर्मसुप्रयोजककर्तृतामादायोपपादनीयम् । इत्थमेवहिवध्वंजलावुपस्तीर्यभ्राताभ्रातृस्थानोवाद्विर्लाजानावपतीतिसूत्रेवृत्तिकृदादिभिस्तदुपपाद्यते विवाहहोमेउपस्तरणस्यवरकर्तृकत्वंलाजावापस्यभ्रात्रादिकर्तृकत्वम् । विच्छिन्नसंधानार्थंतुतस्मिन्लाजहोमस्यापिवरकर्तृकत्वमितिवदद्भिः एवंनांदीश्राद्धेदेवतात्वसिद्ध्यर्थंसपिंडीकरणापकर्षपरत्वेनपराभिमतवचनेपिसमानकर्तृकत्वमित्थमेवस्वीकार्यम् । तद्यथाशाठ्यायनिः—प्रेतश्राद्धानिसर्वाणिसपिंडीकरणंतथा । अपकृष्यापिकुर्वीतकर्तानांदीमुखंततइति । तथालघुहारीतोपि—भ्रातावाभ्रातृपुत्रोवासपिंडःशिष्यएववा । सहपिंडक्रियांकृत्वाकुर्यादभ्युदयंततइति । मृतस्यकन्यादानेहितस्यज्येष्ठकनिष्ठौभ्रातरावधिकारिणौकन्यायाःपितृपितामहभ्रात्रभावात्संभवतः । पितापितामहोभ्रातासकुल्योजननीतथा । कन्याप्रदःपूर्वनाशेप्रकृतिस्थःपरःपरइतियाज्ञवल्क्यवचनात् । तस्यसपिंडीकरणेतुकनिष्ठस्यैवाधिकारोनज्येष्ठस्य । नपुत्रस्यपितादद्यान्नानुजस्यतथाऽग्रजः । अपिस्नेहे[1]नकुर्यातांसपिंडीकरणंविनेतिसपिंडीकरणस्यतंप्रतिविशिष्यनिषेधात् । नचेदंशास्त्रंशास्त्रांतरावगतकालनियमकर्तृनियमयोर्बाधं

---

[1] स्नेहेनकुर्वीत ।

कर्तुमीष्टे प्राप्तेकर्मण्युभयविधानेवाक्यभेदात् । अतोज्येष्ठस्यसपिंडीकरणेप्रयोजककर्तृतांकनिष्ठस्यमुख्यकर्तृतामंगीकृत्यैवोक्तवचनयोःसमानकर्तृकत्वमुपपादनीयम् । एवंचानयोर्वचनयोर्देवतात्वसिद्धिप्रयोजनासंकीर्तनाद्विधेयार्थैक्याच्चमूलैक्यलाघवानुरोधेनप्रेतकर्माण्यनिर्वर्त्यैतिकृष्णभट्टीप्रयोगोदाहृतवचनार्थपरत्वंस्वीकर्तुमुचितं । यदिपरंमातामहसपिंडीकरणापकर्षोसगोत्रविषयोनैवंसिद्ध्येदितितथानस्वीक्रियतेश्रीमद्भिर्मास्वीकुर्वंतु । नतुस्वकृतैतद्वाक्यव्याख्यावशेनानेकाभियुक्तोदाहृतस्यसकलदाक्षिणात्यप्रभृत्यनेकशिष्टाचारसंवादिनःप्रेतकर्माण्यनिर्वर्त्यैतिवचसोनिर्मूलत्वमर्थांतरकल्पनंचोक्तशिष्टाचारस्यवाप्रामाण्यकल्पनंप्रामाणिकैःस्वीकर्तुमुचितम् । आस्तांवचनकथा । अस्तितावत्प्राच्यभिन्नशिष्टानांसापिंडदाहप्रभृतिपुनर्मासिकांतप्रेतकर्माभावेमांगलिककर्मानारंभाचारः । सपिंडेषुसंमताचतत्सत्ताश्रीमतामपितन्मूलंनविद्मः इतिवदता जनपदधर्माग्रामधर्माश्चतान्विवाहेप्रतीयादितिगृह्यसूत्रकारैरितराचाराणामादरंवदद्भिरस्यैवाचारस्यानादरः कृतइतिकथमिवनिर्धारितम् । एवंचनांदीश्राद्धदेवतात्वयोग्यस्यापिसपिंडीकरणापकर्षोमांगलिककर्मानुरोधेनसिद्धिः । तथाहिपितामहेप्रपितामहेअकृतसपिंडनेसतिपितरिमृतेऔचित्येनतयोःसपिंडीकरणोत्तरंपितुःसपिंडीकरणकर्तव्यतायां प्राप्तायामपि यदातथानुष्ठानेनपितुःसपिंडीकरणकालातिक्रमोभवतितदापिन्यायतःकालातिक्रमेणतथैवतत्कर्तव्यतायां प्राप्तायांवचनेनाकृतसपिंडीकरणाभ्यामपिताभ्यांपितुःसपिंडीकरणंकर्तव्यतयाविहितम् । यथाहकात्यायनः—असंस्कृतौनसंस्कार्यौपूर्वौपौत्रप्रपौत्रकैः । पितरंतत्रसंस्कुर्यादितिकात्यायनोऽब्रवीत् । पापिष्ठमपिशुद्धेनशुद्धंपापकृतापिवा ।

प्रतिकूल.

पितामहेनपितरंसंस्कुर्यादितिनिश्चयइति । असंस्कृतौअकृतसपिंडीकरणौ पूर्वौपितामहप्रपितामहौ पापिष्ठंअकृतसापिंड्यंपितरं शुद्धेनकृतसापिंड्येन पापकृताअकृतसापिंड्येनवापितामहेनसहशुद्धंनिवृत्तप्रेतावस्थंकुर्यादित्यर्थः । एवंकृते दर्शश्राद्धमपितादृशाभ्यांसहकर्तव्यमित्यपितेनैवोक्तम् । पितुःसपिंडनंकृत्वाकुर्यान्मासानुमासिकमिति । एवंचदर्शश्राद्धविकृतित्वान्नांदीश्राद्धेपितादृशयोर्देवतात्वसंभवेपिमांगलिकविवाहाद्यनुरोधेनतयोःसपिंडीकरणंकृत्वैवमांगलिकंकर्म कार्यम् । तयोश्चतुःपुरुषांतर्गतत्वात् । अतएवशुभागमएवसपिंडीकरणापकर्षनिमित्तत्वेनकालादर्शेपठ्यते—एकादशे द्वादशेऽह्नित्रिपक्षेवात्रिमासिवा । षष्ठेवैकादशेवाब्देसंपूर्णेवाशुभागमे । सपिंडीकरणस्येत्थमष्टौकालाःप्रकीर्तिताः । साग्नौकर्तर्युभावाद्यौप्रेतेसाग्नावनंतरः । अनग्नेस्तुद्वितीयाद्याःसप्तकालाःप्रकीर्तिताइति । अनंतरस्त्रिपक्षइतिशुभस्यविवाहादेरागमउपस्थितेसतीतिचतत्रैवव्याख्यायतन्मूलवाक्योदाहरणंचेत्थंकृतंमहाभारते—सपिंडीकरणंकुर्याद्यजमानस्त्वनग्निमानित्युपक्रम्य एकादशेपिवामासिमंगलेस्यादुपस्थितइति । अत्रचशुभमंगलशब्दाभ्यांविवाहाद्येवोक्तमितिप्रतीतेर्ननांदीश्राद्धप्रतीतिः नतरांतद्देवतात्वस्येतिकृतबुद्धयएवविदांकुर्वंतु । नचशुभमंगलशब्दौअंगभूतनांदीश्राद्धलक्षकौ प्रधानवाचिनःशब्दस्यांगलक्षकतायाअन्याय्यत्वाददृष्टत्वाच्चशक्यतेतुवक्तुम् । शाठ्यायनिवाक्येनांदीमुखग्रहणंविवाहाद्यारंभपरं । सपिंडीकरणांतमपकृष्यविवाहाद्यारंभंकुर्वीतेत्यर्थः । मूलश्रुतिकल्पनालाघवात् । चरुंनिर्वपेत् पशुमालभेत पूतिकानभिषुणुयात् भक्षंप्रयच्छेतेत्यादौ अंगवाचिनःशब्दस्यप्रधानलक्षकतायादृष्टत्वाच्च नांदीश्राद्धंविवाहादावितिनांदीश्रा

द्धस्यतदारंभत्वेनप्रसिद्धेश्च सत्यपिदेवतात्वसिद्ध्यर्थापकर्षस्यशास्त्रार्थत्वेमातामह्याःसपिंडीकरणस्यनापकर्षः । तस्यानांदीश्राद्धदेवतात्वाभावात् । प्रकृतिभूतपार्वणएवगृह्यसूत्रगृह्यपरिशिष्टेषुनिर्गुणपित्रादीनांदेवतात्वावगमेनसपत्नीकत्वेनगुणस्यापिदेवतानुप्रवेशासंभवात् । स्विष्टकृतेसमवद्यति पात्नीवतंगृह्णातीत्यादौ चतुर्थ्याद्यवगतदेवतात्वस्यगुणस्यगुणिनंप्रतिनित्यसापेक्षत्वाद्धिभवतिमांत्रवर्णिकगुणिनोऽग्न्यादेर्देवतानुप्रवेशः । नभवतिचयदग्नयेचेतिचतुर्थ्याद्यवगतदेवतात्वस्यगुणिनोगुणिनंप्रतिनित्यसापेक्षत्वाभावेनगुणस्यज्योतिष्ट्वादेस्तदनुप्रवेशइतिप्रसिद्धम् । यत्तु—नयोषिद्भ्यःपृथग्दद्यादवसानदिनादृते । स्वभर्तृपिंडमात्राभ्यस्तृप्तिरासांयतःस्मृतेतिवचनात्सपत्नीकानांदेवतात्वमिति, तद्विस्मयकरं । तद्धितादिरहितस्यार्थवादस्य बृहस्पतेर्वाएतदन्नंयन्नीवाराइतितद्देवतायामप्रामाण्यात् । येचत्वामत्रान्वितिपिंडदानमंत्रेणान्येषामनुचराणामिवपत्न्याअपिप्राप्तस्यांशलाभस्यतदालंबनत्वसंभवाच्च । यद्यपिदाक्षिणात्याचारवशेनसपत्नीकत्वविशिष्टपित्राद्युद्देशःपार्वणश्राद्धेप्रामाणिकस्तथापिशक्यतेवक्तुं यथाप्रस्तरयागस्योद्देशांशेनेष्टदेवतासंस्कारस्यदेवेभ्यआज्यपेभ्यइत्युद्देशेपिप्रयाजादिदेवतानांसमिदादीनामेवदेवतात्वम् । देवाज्यपत्वगुणसंकीर्तनंत्वदृष्टार्थं नतुतस्यदेवतानुप्रवेशः । इष्टदेवतासंस्कारत्वविघातापत्तेः । तथात्रापिसपत्नीकत्वसंकीर्तनमदृष्टार्थमिति । उचितंचैतत् । माहेंद्रग्रहइंद्रस्यादेवतात्ववत्सपत्नीकपितृदेवत्येश्राद्धेकेवलनामदेवतात्वेनजीवन्मातृकमृतपितृकस्यामाश्राद्धाननुष्ठानापत्तेः । अदृष्टार्थगुणंतूपादेयंविहायापिसंभवतिनित्यानुष्ठानम् । अस्तुवादेवतानुप्रवेशोप्यस्य तथापिकालादर्शे मासिकदार्शिकयोर्भेदानुष्ठानसिद्धौदेवताभेदप्र

दर्शनावसरे पितृपितामहयोरुभयोरन्यतरस्यवामृतभार्यात्वेसपत्नीकदेवतात्वयोग्यतादशायामेवस[1]पत्नीकानांदेवतात्वकथनाज्जीवन्मातृकैर्मृतपितृकैःकेवलपित्राद्युद्देश्यकश्राद्धानुष्ठानान्मृतोभयैश्चसपत्नीकतदुद्देशेनैवतदनुष्ठानाच्च मातृणांदेवतात्वयोग्यतादशायामेवसपत्नीकानांदेवतात्वमितिस्वीकर्तव्यम् । ततश्चमृतपितृकेणदेशांतरमृताहिताग्निमात्रस्थिप्रतीक्षांकुर्वतायथाकेवलपित्राद्युद्देशेनदर्शश्राद्धमनुष्ठेयं तथामातामह्याऔर्ध्वदेहिकाभावेपिकेवलमातामहाद्युद्देशेनतस्यांजीवत्यामिवनांदीश्राद्धसंभवान्नतदनुरोधेनापिमातामह्याऔ[2]र्ध्वदेहिकप्रतीक्षावोचितेतिज्ञेयम् । नचमृतयावस्वादिभावंगतयासपत्नमातामह्यासपत्नीकत्वगुणसंभवेकिमितिकेवलानांदेवतात्वमितिशंक्यं । अन्वष्टकासुवृद्धौचप्रतिसंवत्सरंतथा । अत्रमातुःपृथक्श्राद्धमन्यत्रपतिनासहेतिशातातपस्मृतौ—स्वेनभर्त्रासमंभुंक्तेमाताश्राद्धंसुधासमम् । पितामहीचस्वेनैवस्वेनैवप्रपितामहीतिबृहस्पतिस्मृतौच श्रुतस्यमात्रादिशब्दस्यसपत्नमात्रादिगौणत्वान्मुख्येसंभवतिगौणत्वस्यान्याय्यत्वादमावास्याश्राद्धादौसापत्नमात्रादेर्दैवतानुप्रवेशाभावस्यश्राद्धहेमाद्रिणोक्तत्वादित्यलमतिप्रसंगेन ॥ ॥ ॥

अथविवाहभेदाः । तत्रमनुरुद्देशपूर्वकंतत्क्रमेणलक्षणमाह—ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षःप्राजापत्यस्तथासुरः । गांधर्वोराक्षसश्चैवपैशाचश्चतथाष्टमः । आच्छाद्यचार्हयित्वाचश्रुतशीलवतेस्वयम् । आहूयदानंकन्यायाब्राह्मोधर्मःप्रकीर्तितः । यज्ञेतुविततेसम्यगृत्विजेकर्मकुर्वते । अलंकृत्यसुतादानंदैवंधर्मंप्रचक्षते । एकंगोमिथुनंद्वेवावरादादायधर्मतः । कन्याप्रदानंविधि

---

[1] सपत्नीकदेवतात्वकथनात् । [2] और्ध्वदेहिकापकर्ष ।

वदार्षोधर्मःसउच्यते । सहोभौचरतांधर्ममितियश्चानुभाष्यतु । कन्याप्रदानमभ्यर्च्यप्राजापत्योविधिःस्मृतः । अत्रविशेषंपारिजातेभगवान्—अन्येष्वपिविवाहेषुधर्मस्यचरणंसह । यद्यप्युक्तंतथाप्यत्रविशेषोक्तिर्गृहाश्रमात् । आश्रमांतरसंप्राप्तिर्निषेधार्थेतिगम्यते । नचात्रतस्यांजीवत्यांविवाहस्यपरिग्रहः । आश्रमांतरयोगोवामृतायांभवतस्तुताविति । अन्येतुतीर्थादावनग्निसाध्येषुसाहित्यनियमा[१]र्थासेति—ज्ञातिभ्योद्रविणंदत्वाकन्यायाश्चस्वशक्तितः । कन्याप्रदानंस्वाच्छंद्यादासुरोधर्मउच्यते । इच्छयान्योन्यसंयोगःकन्यायाश्चवरस्यच । गांधर्वःसइतिज्ञेयोमैथुनेकामसंभवः । हत्वाछित्त्वाचभित्त्वाचक्रोशंतींरुदतींगृहात् । प्रसह्य[२]कन्याहरणंराक्षसोविधिरुच्यते । सुप्तांमत्तांप्रमत्तांवारहोयत्रोपगच्छति । सपापिष्ठोविवाहानांपैशाचःप्रथितोष्टमः । आर्षेगोमिथुनादानंचकन्यार्हणंनतुतावताकन्याविक्रयेणनिंद्यत्वमित्यपिमनुनैवोक्तम्—आर्षेगोमिथुनंशुल्कंकेचिदाहुर्मृषैवतदित्युपक्रम्य—अर्हणंतत्कुमारीणामानृशंस्यंहिकेवलमिति । तद्गोमिथुनं । आनृशंस्यंअनिंदितम् । किंतुतत्कुमारीणामर्हणंपूजनमित्येवमाचारमदनरत्नेव्याख्यातम् । एषांव्यवस्थामाहमनुः—षडानुपूर्व्याविप्रस्यक्षत्रस्यचतुरोवरान् । विट्शूद्रयोस्तुतानेवविद्याद्धर्म्यानराक्षसान् । तत्रब्राह्मादीन्गांधर्वान्तान्ब्राह्मणस्यधर्म्यान्धर्मादनपेतान्विद्यात् । क्षत्रस्यआसुरगांधर्वराक्षसपैशाचान् । वैश्यशूद्रयोराक्षसवर्जितान् । आसुरगंधर्वपैशाचानितिव्याख्यातंमदनपारिजाते । एषां[३]मपिप्राशस्त्यव्यवस्थामाहमनुः—चत्वारोब्राह्मणस्याद्याःशस्तागांधर्वराक्षसौ । राज्ञस्तथासुरोवैश्येशूद्रे

---

[१] सतिजातिभ्यो । [२] प्रगृह्यकन्याहरणं । [३] एष्वपिप्राशस्त्य ।

चांत्यस्तुगर्हितइति । नारायणवृत्तिकारस्त्वाह । पूर्वेषुचतुर्षुपूर्वःपूर्वःप्रशस्तः । उत्तरेषूत्तरोत्तरःपापीयान् । तत्रपूर्वौब्राह्मणस्येतरयोःप्रतिग्रहाभावात् आर्त्विज्याभावाच्च । गांधर्वःक्षत्रियस्यपुराणेदृष्टत्वात् । राक्षसश्चतस्यैवयुद्धसंयोगात् । आसुरस्तुवैश्यस्यधनसंयोगात् । इतरेत्रयोऽनियताइति । त्रयआर्षप्राजापत्यपैशाचाः । अत्राद्येमनुवाक्येषण्णांधर्म्यत्वं भार्यात्वजनकत्वं । द्वितीयेत्वासुरादेःसत्यपिभार्यात्वजनकत्वेप्रत्यवायजनकत्वमप्राशस्त्यम् । यद्यपिवृत्तिकारेणत्रयोनियताइतितुल्यवदविशेषेणोक्तं तथापिपैशाचेप्रत्यवायाधिक्यं पापिष्ठत्वाद्युक्तेस्तदाशयत्वात् वृत्तिकृताचस्पष्टंतत्कथनात् विवाहांतरासंभवेप्रत्यवायाधिक्यमंगीकृत्यापिप्रवृत्तम् । क्षत्रियादिप्रतीतस्यभार्यात्वजनकत्वाभ्युपगमात् । यथाहमाधवः—अन्यविवाहालाभेक्षत्रियादीनांपैशाचमप्यनुजानातिवत्सः । सर्वोपायैरसाध्यास्यात्सुकन्यापुरुषस्यया । चौर्येणापिविवाहेनसाविवाह्यारहःस्थिता । इति । चौर्येणनीतापिविवाहहोमाभावेततोपहृत्याऽन्यस्मैदेयेतिमाधवीयेवसिष्ठः—बलादपहृताकन्यामंत्रैर्यदिनसंस्कृता । अन्यस्मैविधिवद्देयायथाकन्यातथैवसेति । अस्तिचगांधर्वादिषुचतुर्ष्वपिपरिग्रहोत्तरंहोमविधिर्गृह्यपरिशिष्टे—गांधर्वासुरपैशाचाविवाहाराक्षसश्चयः । पूर्वंपरिग्रहस्तेषांपश्चाद्धोमोविधीयतइति । मंत्रैर्यदिनसंस्कृतेतिसप्तमपदातिक्रमणमंत्रांतामंत्राविवक्षिताः तत्रैवभार्यात्वोत्पत्तेरितिमाधवः । धर्म्यविवाहफलंदुष्टविवाहजनितप्रत्यवायफलंचाहमनुः—दशपूर्वान्परान्वंश्यानात्मानंचैकविंशकम् । ब्राह्मीपुत्रःसुकृतकृन्मोचयत्येनसःपितॄन् ।

दैवोढायाःसुतश्चैवसप्तसप्तपरावरान् । आर्षोढायाःसुतस्त्रींस्त्रीन्षट्षट्कायोढजःसुतः । ब्राह्मादिषुविवाहेषुचतुर्ष्वेवानुपूर्वशः । ब्रह्मवर्चसिनःपुत्राजायंतेशिष्टसंमताः । इतरेष्ववशिष्टेषुनृशंसयानृतवादिनः । जायंतेदुर्विवाहेषुब्रह्मधर्मद्विषःसुताइति । ब्राह्मादिषुविवाहेषुवाग्दानोत्तरमद्भिर्दानोत्तरंवावरमरणेवसिष्ठः—अद्भिर्वाचाचदत्तायांम्रियेतोर्ध्वंवरोयदि । नचमंत्रोपनीतास्यात्कुमारीपितुरेवसेति । वाग्दानोत्तरंदेशांतरगमनेतुअपरार्केनारदः—प्रतिगृह्यतुयःकन्यांवरोदेशांतरंव्रजेत् । त्रीनृतून्समतिक्रम्यकन्यान्यंवरयेद्वरमिति । एतच्चकन्यायैशुल्कदानाभावे । शुल्कदानेतुकात्यायनः—प्रदायशुल्कंगच्छेद्यः कन्यायाःस्त्रीधनंतथा । धार्यासावर्षमेकंतुदेयान्यस्मैविधानतइति । वर्षोत्तरमितिशेषः । यत्तुवसिष्ठः—कन्यायांदत्तशुल्कायांम्रियेतयदिशुल्कदः । देवरायप्रदातव्यायदिकन्यानुमन्यतेइति, तद्युगांतरीयक्षेत्रजोत्पत्त्यनुमतिविषयम् । अनेकेभ्योवाग्दानेपिचंद्रिकायाम्—अनेकेभ्योहिदत्तायामनूढायांतथैवच । पूर्वागतश्चसर्वेषांलभेताद्यवरस्तुताम् । पश्चाद्वरेण यद्दत्तंतस्याःप्रतिलभेतसइति । सर्वेषांतुल्यत्वेआद्यवरएवलभेत । तल्लाभासंभवनिर्णयेइतरेषांमध्येयएवपूर्वागतःसएवलभेतेत्यर्थः । आद्यस्यदोषवत्त्वेपरस्यगुणवत्त्वेचपरस्मैदेया । कुलशीलविहीनस्यपश्चाद्धिपतितस्यच । अपस्मारिविधर्मस्यरोगिणांवेषधारिणाम् । दत्तामपिहरेत्कन्यांसगोत्रोढांतथैवचेतिवसिष्ठोक्तेः । दत्तामपिहरेत्पूर्वाच्छ्रेयांश्चेद्वरआव्रजेदिति याज्ञवल्क्योक्तेश्च । पश्चाद्वाग्दानोत्तरंपतितस्येत्यर्थः । वरस्यदोषाभावेवाग्दत्तामप्रयच्छन्दंड्यः । कन्यायाश्चापस्मारादिमहादोषसत्वेतमनाख्यायप्रयच्छन्दंड्यइत्यप्याहयाज्ञवल्क्यः—सकृत्प्रदीयतेकन्याहरंस्तांचोरदंडभागिति । अनाख्याय

ददद्दोषंदंड्यउत्तमसाहसमितिच दोषमनाख्यायेत्यन्वयः । उत्तमसाहसंतेनैवोक्तं—साशीतिपणसाहस्रोदंडउत्तमसाहसइति । अधर्म्येषुविवाहेषुभोजनादिनिषेधःतदतिक्रमप्रायश्चित्तंचोक्तंपारिजातेत्रिकांड्याम्—अधर्मेषुविवाहेषुतांबूलमनुमोदनम् । भोजनंवाहनंचैववर्जयेत्सर्वथाद्विजः । आसुरेतूपवासःस्याद्गांधर्वेचत्रिरात्रकम् । राक्षसेचैवपैशाचेचरेच्चांद्रायणंतथेति । इतिविवाहाष्टकगतविशेषनिर्णयः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथपरिवेत्रादिनिर्णयः । तल्लक्षणंमनुः—दाराग्निहोत्रसंयोगंकुरुतेयोग्रजेस्थिते । परिवेत्तासविज्ञेयःपरिवित्तिस्तुपूर्वजइति । स्मृत्यंतरे—ज्येष्ठायांयद्यनूढायांकन्यायामूह्यतेनुजा । यासाग्रेदिधिषुर्ज्ञेयापूर्वातुदिधिषुः स्मृतेति । परिवेत्रादिस्वरूपकथनपूर्वकंतत्प्रायश्चित्तंहारीतः—ज्येष्ठेनिविष्टेकनीयान्निविशमानःपरिवेत्ताभवति पूर्वःपरिवित्तिः परिवेदिनीकन्या परिदायीदाता परियष्टायाजकः तेसर्वेपतिताः सम्यक्संवत्सरंप्राजापत्येनकृच्छ्रेणपावयेयुरिति । एतत्कामतः पित्राद्यनुज्ञातोद्वाहविषयम् । अकामतःपित्रादिदत्तोद्वाहेतुमानवंत्रैमासिकम् । अज्ञानतःपित्राद्यदत्तोद्वाहेयाज्ञवल्कीयंव्रतचतुष्टयम् । उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचांद्रायणेनवा । पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनरिति । एवमितिगोवधप्रायश्चित्तातिदेशः । अज्ञानतःपित्रादिदत्तोद्वाहेतुयमः—कृच्छ्रौद्वयोःपारिवेद्येकन्यायाःकृच्छ्रएवतु । अतिकृच्छ्रंचरेद्दाता यष्टाचांद्रायणंचरेदिति । प्रायश्चित्तांतेकृत्यमाहवसिष्ठः—परिविदानःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वातस्मैदत्वापुनर्निविशेततांचैवोपयच्छेदिति । परिविदानइतिपरिवेत्तुरेवसंज्ञा । तस्मैज्येष्ठाय । ब्रह्मचर्याहृतभैक्षवन्निवेद्यपुनरुद्वहेत् । कामित्यतउक्तं

तामेवेतिव्याचष्टेविज्ञानेश्वरः । तथाग्रेदिधिषुपत्यादेरपिविशेषंवसिष्ठः—अग्रेदिधिषुपतिःकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वानिविशेततांचैवोपयच्छेत । दिधिषुपतिःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वाज्येष्ठायामन्येनोढायांपश्चात्तामेवोद्वहेत् । तस्मैकनीयस्याःपूर्ववोढ्रेज्येष्ठांदत्वाअन्यामुद्वहेतेतिव्याख्यातंपारिजातादौ । एवंतस्मैपुनर्निविशेतेतिनिर्णीतपरिवेदनदोषस्यापवादमाहयमः—पितृव्यपुत्रान्सापत्नान्परपुत्रांस्तथैवच । दाराग्निहोत्रधर्मेषुनदोषःपरिवेदनेइति । परपुत्रादत्तकादयइतिपारिजातः । सोदर्येपितमाहकात्यायनः—देशांतरस्थान्क्लीबांश्चतथाकुवृषणानपि । वेश्यातिसक्तपतितशूद्रतुल्यातिरोगिणः । जडमूकांधवधिरकुब्जवामनखेलकान् । अतिवृद्धानभार्यांश्चकृषिसक्तान्नृपस्यच । धनवृद्धिप्रसक्तांश्चकामतःकारिणस्तथा । कुहकोन्मत्तचोरांश्चपरिविंदन्नदुष्यतीति । खेलकोभग्नपादद्वयः । अभार्यान्नैष्ठिकब्रह्मचारिणः । कामतःकारिणोविवाहादिच्छयानिवृत्ताइतिव्याख्यातंपारिजाते । देशांतरगतज्येष्ठसोदरविषयेप्रतीक्षावधिमाहवसिष्ठः—अष्टौद्वादशवर्षाणिज्येष्ठभ्रातरमनिविष्टमप्रतीक्षमाणःप्रायश्चित्तीभवतीति । द्वादशेतिमुख्यःपक्षः । द्वादशैवतुवर्षाणिश्रेयान्धमार्थयोगतः । न्याय्यःप्रतीक्षितुंभ्राताश्रूयमाणःपुनःपुनरिति । अत्राप्यपवादंकार्ष्णाजिनिः—उन्मत्तःकिल्बिषीकुष्ठीपतितःक्लीबएववा । राजयक्ष्मामयावीचनन्याय्यःस्यात्प्रतीक्षितुमिति । कन्याविषयेप्युक्तदोषापवादंगर्गः—एकमातृप्रसूतानांकन्यानांपरिवेदने । दोषःस्यात्सर्ववर्णेषुनदोषोभिन्नमातृष्विति । वृद्धमनुः—विवाहेऽनधिकारेणज्येष्ठकन्यास्थितायदा । तदनुज्ञांविनाचापिकनिष्ठामुद्वहेत्तदेति । अन्यत्सर्वंपरिवेदनोक्तमनुसंधेयमितिपारिजातः । इतिपरिवेत्रादिनिर्णयः ॥ ॥

अथमंडपादिनिर्माणंवसिष्ठः—षोडशारत्निकंकुर्याच्चतुर्द्वारोपशोभितम् । मंडपंतोरणैर्युक्तंतत्रवेदिंप्रकल्पयेत् । अष्टहस्तंतुरचयेन्मंडपंवाद्विषट्करमिति । अन्यत्रतु—मंगलेषुचसर्वेषुमंडपोगृहमानतः । कार्यःषोडशहस्तोवान्यूनहस्तोदशावधिः । स्तंभैश्चतुर्भिरेवात्रवेदीमध्येप्रतिष्ठितेति । पारिजातेनारदः—हस्तोच्छ्रितांचतुर्हस्तैश्चतुरस्रांसमंततः । स्तंभैश्चतुर्भिःसुश्लक्ष्णांवामभागेतुसद्मनि । समांचैवचतुर्दिक्षुसोपानैरतिशोभिताम् । प्रागुदक्प्रवणांरंभास्तंभैर्हंसशुकादिभिः । विचित्रेणांकितैःकुंभैर्विहितैस्तोरणांकुरैः । भृंगारपुष्पनिकरैर्वर्णकैःसमलंकृताम् । विप्राशीर्वचनैःपुण्यैस्त्रीभिर्दीपैर्मनोरमाम् । वादित्रगीतनृत्याद्यैर्हृदयानंदिनींशुभाम् । एवंविधामारुरुक्षेन्मिथुनंसाग्निवेदिकामिति । गृहमानतइतिमहतिगृहेमहान्मंडपः । न्यूनेन्यूनइत्यर्थः । दशावधिरितिन्यूनतायांदशसंख्यावधिरित्यर्थः । अतोवसिष्ठोक्तोऽष्टहस्तपक्षोऽत्यंतापद्विषयः । साग्निवेदिकामितिदंपत्योरारोहणात्पूर्वंहोमोपयोगिनामग्न्यादीनामुपकल्पनंकार्यमित्याशयः । कृष्णभट्टीयेपक्षांतरं—कन्याहस्तैःसप्तभिःपंचभिर्वाकार्यावेदिःकूर्मपृष्ठोन्नताग्रा । हर्म्येरम्येनिर्गमाद्वामभागेजायापत्योराशिषैःस्तंभयुक्ता । विवाहर्क्षेशुभदिनेवेदिःकार्यासमंडपेति । तत्रैवविशेषांतरम्—नवत्रिषष्ठोनववारकःशुभोनवर्णकेनैवविवाहमंडपेइति । नववारकोऽङ्कुरार्पणमितितत्रैवव्याख्यातम् । वर्णकेनैवानुकल्पतयामंडपनिर्माणमपिनवमादिदिनेनकार्यम् । मुख्यकल्पेनतन्निर्माणंतुतेषुदिनेषुसुतरांनकार्यमितितदाशयः । विवाहार्थोमंडपोवर्णकेनैवक्रियमाणोनशुभोऽन्यार्थस्तुवर्णकेनैवक्रियमाणोपिशुभइत्यन्ये ॥ ॥ ॥ ॥

अथकन्यायाजन्मकालीनग्रहादिसूचितवैधव्यपरिहारोपायःकर्मविपाके—ब्राह्मणंसाधुमामंत्र्यसंपूज्यविविधार्हणैः। तस्मै दद्याद्विधानेनविष्णोर्मूर्तिंचतुर्भुजाम् । शुद्धवर्णसुवर्णेनवित्तशक्त्याथवाकृताम्। रुचिरांनिर्मितांशंखगदाचक्राब्जसंयुताम्। दधानांवाससीपीतेकुमुदोत्पलमालिनीम् । सदक्षिणांचतांदद्यान्मंत्रमेतमुदीरयेत् । यन्मयाप्राचिजनुषिघ्नंत्यापतिसमागमम् । विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतोवातिविरक्तया । प्राप्नुवंत्यामहाघोरंयशःसौख्यधनापहम् । वैधव्याद्यतिदुःखौघंतन्नाशायसुखाप्तये । बहुसौभाग्यलब्ध्यैचमहाविष्णोरिमांतनुम् । सौवर्णींनिर्मितांशक्त्यातुभ्यंसंप्रददेद्विजेति । अनघाद्याहमस्मीतित्रिवारंप्रजपेत्ततः । एवमस्त्वितितस्योक्तिंगृहीत्वास्वगृहंविशेदिति । सुवर्णशब्दोत्रजातिवाची । परिमाणंतुपलतदर्धार्धान्यतररूपंदानपरिभाषोक्तंग्राह्यम् ॥ ॥ अथप्रयोगः । स्नानाचमनेकृत्वाकन्यादेशकालौसंकीर्त्य वैधव्यहरंमहाविष्णुप्रतिमादानंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनस्वस्तिवाचनेकृत्वा आचार्यवरणंकृत्वायथाशक्तितंसंपूज्यतद्धस्तेनाग्न्युत्तारणपूर्वकंषोडशोपचारैःपूजनंचकारयेत्। वस्त्रार्पणसमयेपीतेवाससीदापनीये पुष्पार्पणंकुमुदोत्पलमालांच । पूजांतेदेवंकन्याप्रणम्यमंत्रंपठित्वाब्राह्मणायदद्यात् । ततःसुवर्णपरिमितंयथाशक्तिवाहेमदक्षिणांदत्वाअनघाद्याहमस्मीतित्रिर्वदेत् । एवमस्त्वितिब्राह्मणोपित्रिः । ततोयथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वाविवाहयोग्याभवेदिति । इतिवैधव्यहरप्रतिमादानविधिः ॥ ॥ अथवावैधव्यपरिहारायकुंभविवाहःकार्यः । यथोक्तंतत्रैव । विवाहात्पूर्वकालेचचंद्रताराबलान्विते । विवाहोक्तेयथालग्नेकन्यांकुंभेनचोद्वहेत् । सूत्रेणवेष्टयेत्पश्चाद्दशतंतुविधानतः । कुंभमालंकृतंदेहंतयोरेकांतमंदिरे । ततःकुंभं

चनिःसार्यप्रभज्यसलिलाशये । ततोऽभिषेचनंकुर्यात्पंचपल्लववारिभिरिति । आसमंताच्चंदनपुष्पादिभिरलंकृतंकुंभंकन्यादेहंचवेष्टयेदित्यर्थः । तदुभयसंबंधिनिमंदिरेइति । विवाहकर्तापित्रादिःकन्यावैधव्यहरंकुंभविवाहंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनादिनांदीश्राद्धांतंकृत्वा वरुणविष्णुप्रतिमयोरग्न्युत्तारणंकृत्वा महीद्यौरित्यादिविधिनाकुंभस्थापनवरुणपूजने विधाय तत्रस्थापितविष्णुप्रतिमायांविष्णोरावाहनादिषोडशोपचारैःपूजांविधायप्रार्थयेत् । वरुणांगस्वरूपायजीवनानां समाश्रय । पतिंजीवयकन्यायाश्चिरंपुत्रसुखंकुरु । देहिविष्णोवरंदेवकन्यांपालयदुःखतइति । ततोविष्णुरूपिणे कुंभायेमांकन्यांश्रीरूपिणींसमर्पयामीतिसमर्प्य परित्वेत्यादिमंत्रैरधस्तादुपरिष्टाचमंत्रावृत्त्याकुंभंकन्यांचपरिवेष्ट्य ततः कुंभंनिःसार्यसलिलाशयेप्रभंजयित्वा पंचपल्लवैःशुद्धजलेनसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिमंत्रैःकन्यामभिषिच्यब्राह्मणान्भोजयेत् । इतिकुंभविवाहप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथवरस्यजन्मकालीनग्रहसूचितमृतभार्यात्वपरिहारोपायः । महार्णवे—ज्येष्ठभ्रातर्यनूढेतुयोनुजोद्वहतिस्वयम् । सभवेन्मृतपत्नीकउष्णज्वरसमुद्भवात् । प्राजापत्यत्रयंकुर्यादैंदवंत्रयमेवच । तामग्निमितिवाज्येनचरुणाष्टोत्तरायुतम् । जुहुयाद्भोजयेद्विद्वानेवंपापात्प्रमुच्यतेइति । असकृन्मृतभार्यात्वसूचनेप्राजापत्यत्रयचांद्रायणत्रययोरावृत्तिः । तामग्निमितिजातवेदसइत्यनुवाकोलक्ष्यते । अस्यानुवाकस्ययाज्ञिकीदेवताउपनिषदऋषयः दुर्गाग्निविष्णवोयथायोग्यंदेवताः त्रिष्टुप्छंदः । अष्टोत्तरायुतहोमस्यार्धंचरुणार्धमाज्येन । प्रथमंचरोःपश्चादाज्यस्येतिक्रमोनविवक्षितः । प्रत्यृचंचहोमः । अग्निस्थापना

दिस्वगृह्योक्तमार्गेणेतिमहार्णवः । प्रायश्चित्तविधिनाप्राजापत्यचांद्रायणानिकृत्वा मृतभार्यात्वपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचर्वाज्यायुतहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्यअग्निस्थापनाद्यन्वाधानांतंकुर्यात् । चक्षुषीआज्येनेत्यंते दुर्गाग्निविष्णून्अष्टोत्तरायुतसंख्याभिश्चर्वाज्याहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिप्रतिदैवतंतूष्णींचतुःकृत्वोनिर्वापःप्रोक्षणंच । त्यागकालेऽष्टोत्तरायुतसंख्याहुतिपर्याप्तंचर्वाज्यद्रव्यंयथामंत्रलिंगंदुर्गायैअग्नयेविष्णवेचनममेतित्यागः । स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यदशब्राह्मणान्भोजयेदितिअयुतहोमप्रयोगः । यद्वाकस्यचिद्ब्राह्मणस्यविवाहंकुर्यादित्यपिमहार्णवः ॥ ॥ ॥

अथतादृशग्रहसूचितमृतपुत्रत्वहरंमहार्णवे—बालघातीचपुरुषोमृतवत्सःप्रजायते । ब्राह्मणोद्वाहनंचैवकर्तव्यंतेनशुध्यति । श्रवणंहरिवंशस्यकर्तव्यंचयथाविधि । महारुद्रजपंचैवकारयेच्चयथाविधि । जुहुयाच्चदशांशेनदूर्वामाज्यपरिप्लुताम् । एकादशस्वर्णनिष्काःप्रदातव्याश्चदक्षिणा । एकादशपशूंश्चैवदद्याद्वित्तानुसारतः । अन्येभ्योपियथाशक्तिद्विजेभ्योदक्षिणांदिशेत् । स्नापयेद्दंपतीपश्चान्मंत्रैर्वरुणदैवतैः । आचार्यायप्रदेयानिवस्त्रालंकरणानिचेति । ब्राह्मणोद्वाहनंहरिवंशश्रवणंरुद्रजपश्चेतित्रीण्यपिनिरपेक्षाणि शक्त्याद्यपेक्षयाव्यस्तानिसमस्तानियोज्यानि । पशुर्गौः । वारुणमंत्राः कस्यनूनमित्यादयः पवमानःसुवर्जनइत्यादयश्चग्राह्याइतिमहार्णवः ॥ ॥ अथहरिवंशश्रवणविधिस्तदुक्तएवोच्यते—–दंपत्योरनुकूलेसुदिनेविनायकशांतिंविनायकपूजांवास्वशक्त्यनुसारेणविधाय स्वस्तिवाचनंकुर्यात् । ततोदीर्घायुःपुत्रकामनयाहरिवंशश्रवणंकरिष्यावहेकरिष्येइतिवासंकल्प्य । उभयोर्दंपत्योःकर्तृत्वेप्रथमःसंकल्पः । एकस्यकर्तृत्वेद्वितीयः । ततोविभवा

नुसारेणश्रुताध्ययनसंपन्नंब्राह्मणंवस्त्रमुद्रिकाकुंडलतांबूलादिभिःसंपूज्यएभिश्चंदनतांबूलादिभिःहरिवंशश्रवणेश्रावयितारंत्वामहंवृणेइतिवरणंकुर्यात् । ततःप्रतिदिनंत्रायंतामित्यादिवैदिकमंत्रैः सुरास्त्वेत्यादिपौराणमंत्रैश्चसुस्नातावलंकृतौदंपतीतदैकचित्तौशृणुयाताम् । वाचयिताचप्रतिदिनंनारायणंनमस्कृत्येत्यादिपठित्वा नारायणायनमोनरायनरोत्तमायनमोदेव्यैसरस्वत्यैनमोव्यासायनमोगुरुभ्योनमइत्युक्त्वावाचयेत् । श्रोताप्रतिदिनमाचार्यंपुस्तकंचपूजयेत् । अंतेस्वलंकृतांगांपयस्विनींसवत्सांस्वर्णशृंगींरौप्यखुरांताम्रपृष्ठींकांस्यदोहनवस्त्रयुतांगोदानविधिनावाचकायदत्वा वाचकसंतोषावहपरिमाणंहेमदक्षिणांदत्वा न्यूनंसंपूर्णमस्त्वितिवाचयेत् । गोदानविधिःकार्तिककृत्येऽभिहितः । विनायकशांतिरुपनयनप्रकरणेऽभिहिता । इतिमृतपुत्रत्वहरम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथकन्यादानप्रशंसा । संवर्तः[1]—अलंकृत्यतुयःकन्यांभूषणाच्छादनादिभिः । दत्त्वास्वर्गमवाप्नोतिपूज्यते[2]वासवादिभिः ।

---

[1] ब्रह्मपुराणे—कन्यांतुपरयाभक्त्याह्यलंकृत्यप्रयत्नतः । कुलीनायासुपुत्रायगुणज्ञायविशेषतः । कन्यांवरयमाणायदद्यादेषविधिःस्मृतः । लैंगे—कन्यादानंप्रवक्ष्यामिसर्वदानोत्तमोत्तमम् । यद्दत्त्वासर्वदानानांफलमाप्नोतिमानवः । स्मृत्यंतरे—महीदातुश्चगोदातुःकन्यादातुश्चयेरथाः । कन्यादानानुगाःपश्चात्समंयांतित्रयोरथाः । बृहस्पतिः—सहस्रमेवधेनूनांशतंचानडुहांसमम् । दशानडुत्समंयानंदशयानसमोहयः । दशवाजिसमाकन्याभूमिदानंचतत्समम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकन्यादानंविशिष्यते । मनुः—अग्निहोत्रादिभिर्यःस्याल्लक्षतोब्राह्मणस्यवा । तत्कन्यांविधिवद्दत्त्वाफलमाप्नोतिमानवः । स्कांदे—वैवाहिकप्रदानंनायोददातिदयापरः । विमानेनविचित्रेणकिंकिणीजालमालिना । महेंद्रभवनंयातिवीज्यमानोऽप्सरोगणैः । इति । [2] बांधवादिभिः ।

कूकुदश्चाश्वमेधीचप्राणदाताभयेषुच । समंयांतिरथाएषांत्रयोवैनात्रसंशयइति । सालंकारकन्यादाताकूकुदः । सत्कृत्यालंकृतांकन्यांयोददातिसकूकुदइत्यभिधानात् । वह्निपुराणे—श्रुत्वाकन्याप्रदानंचपितरःसपितामहाः । विमुक्ताःसर्वपापेभ्योब्रह्मलोकंव्रजंतितेइति । अथतद्विधिर्गृह्यपरिशिष्टे——दातारमधिकृत्यवरंविधिवदभिषेचयेत् । अथदक्षिणतःपुरोधाःउदङ्मुखउपविश्य मध्येप्रागग्रोदगग्रान्दर्भानास्तीर्यतैजसमयंपूर्णकलशंनिधायव्रीहियवानोप्यगंधादिभिरलंकृत्यदूर्वापल्लवैर्मुखमवस्तीर्याब्लिंगाभिर्ऋग्भिरभिमंत्र्यताभिरद्भिःप्रयोजयेत् । अथदातापुण्याहादीन्वाचयित्वाशिवाआपःसंतु सौमनस्यमस्तु अक्षतंचारिष्टंचास्तु दीर्घमायुरस्तु शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रसंपदस्तु इत्युक्त्वा भार्यादिसमेतःकन्यांसंप्रगृह्य[1] वत्सगोत्रोद्भवाममुष्यप्रपौत्रीममुष्यपौत्रीममुष्यपुत्रींसुशीलांलक्ष्मीनाम्नींकन्यां वासिष्ठगोत्रोद्भवायामुष्यप्रपौत्रायामुष्यपौत्रायामुष्यपुत्रायश्रुतशीलनाम्नेऽस्मैवरायसंप्रददे कन्यांप्रतिगृह्णातुभवानितिब्रुवन्वरस्यपाणौहिरण्यमुपधायकलशोदकधारामासिंचन्[2]मनसाप्रजापतिःप्रीयतामितिब्रूयात् । अथवरःपुण्याहाशिषोवाचयित्वादक्षिणांसेकन्यामभिमृश्य कइदंकस्माअदात्कामःकामायादात्कामोदाताकामःप्रतिग्रहीताकामंसमुद्रमाविशकामेनत्वाप्रतिगृह्णामिकामैतत्तेवृष्टिरसिद्यौस्त्वाददातुपृथिवीप्रतिगृह्णातुइतिजपित्वाप्रजापतिमनुस्मृत्य धर्मप्रजासिद्ध्यर्थंकन्यांप्रतिगृह्णामीतिब्रूयादेवंत्रिःप्रत्युक्तेपुरोधाःदातृवरौप्रत्यृतस्याहिशुरुधःसंतिपूर्वीरितितिस्रोजपित्वैतद्वःसत्यंसमृद्ध[3]मितिब्रूयादिति ॥

---

[1] कन्यांप्रगृह्य, संप्रतिगृह्य । [2] सिंचेत् । [3] समृद्धमस्त्विति ।

अथवाग्दानादिप्रयोगः ॥ विवाहनक्षत्रयुतेसुदिनेवरस्यपित्रादिःसुहृद्भिःसहकन्यागृहंगत्वाआसनेप्रत्यङ्मुखउपविशेत् । ततोवृद्धःकश्चित्कन्यायाःपित्रादीन्प्रतिब्रूयात्—अस्यपुत्रोवरोस्ति तदर्थंभवत्कन्यांयाचितुंसुहृद्भिःसहायमागतः भवद्भिः स्वीयैःसहविचार्यकन्यापूजनार्थमनुज्ञैतेभ्योदेयेति । ततःकन्यापितामान्यजनाज्ञांगृहीत्वाऽनुज्ञाद्द्यात् । ततःकन्यायाः पुरोहितादिर्देवींवाचमित्यानयनपूर्वकंचतुरस्रपीठेशुद्धवस्त्रावृतेतांप्राङ्मुखीमुपवेशयेत् कन्यायाउत्तरतस्तत्पित्रादिःप्राङ्मुख उपविशेत् वरपितातुकन्यादक्षिणतउदङ्मुखःउभावाचम्यसुमुखश्चेत्यादिदेशकालसंकीर्तनांतेवरपिताकन्यापूजनंकरिष्ये तदंगत्वेनगणपतिपूजनंवरुणपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्य । कन्यापिताकरिष्यमाणकन्यादानांगवाग्दानं[1]करिष्येइतिसंकल्पंकुर्यात् । तदचिकीर्षायांगणपतिपूजनंवरुणपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्यउभौगणेशवरुणयोःपूजनंकुरुतः । ततोवरपित्रादिःकन्यायाअंजालिंसकुंकुमचंदनेनानुलिप्यमान्येभ्योदर्शयेत् । सर्वेमहालक्ष्मीरितिब्रूयुः । ततोगौरीर्मिमायेतिकन्यांचंदनेनाभ्यर्च्यस्वपक्षीयसुवासिन्यानीराजनंकारयेत्श्रियेजातइति वस्त्रार्पणंचयुवंवस्त्राणीति भूषणानिहिरण्यरूपइति आयुष्यमिति[2]च । ततःकन्यायैगुडादिनिवेदनंतत्पाणौफलार्पणंचकुर्यात् याःफलिनीःअर्वाचीसुभगेति। ततःकन्यापिता वरपितरंस्वस्थानउपवेश्यस्वयंतत्स्थानेउदङ्मुखउपविशेत् । ततोवरपितरंतन्मान्यैःसहगंधादिनापूजयेत् । तथावरपिता कन्यापितरंतन्मान्यैःसहपूजयेत् । ततःकन्यापितेत्थंकन्यायावाग्दानंकुर्यात् । पंचफलानिकुंकुमाक्तान्यादाय एतत्प्रव

---

१ दानांगभूतंवाग्दानं । २ मितिवा ।

रान्वितैतद्गोत्रोत्पन्नएतच्छर्माऽहं एतत्प्रवरान्वितैतद्गोत्रोत्पन्नायैतच्छर्मणःप्रपौत्रायैतच्छर्मणःपौत्रायैतच्छर्मणःपुत्रायैतच्छर्मणेश्रीधररूपिणेकन्यार्थिने एतत्प्रवरान्वितैतद्गोत्रोत्पन्नामेतच्छर्मणःप्रपौत्रीमेतच्छर्मणःपौत्रीमेतच्छर्मणःममपुत्रीमेतन्नाम्नींकन्यांश्रीरूपिणींवरार्थिनींज्योतिर्विदादिष्टेमुहूर्तेदास्ये तदस्तुमित्रावरुणागृहावैप्रतिष्ठेतिवरपितुर्वस्त्रप्रांतेवध्वाग्रंथिंचंदनलिप्तंकुर्यात् । पितामहकर्तृकेवाग्दानेममपौत्रीमितिपाठः । एवंसंकल्पत्वेनप्रपितामहकर्तृकेममप्रपौत्रीमिति । एवंभ्रात्रादिकर्तृकेममेतिनैवपाठः। ततः—अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबेदशदोषविवर्जिते। इमांकन्यांप्रदास्यामिदेवाग्निद्विजसन्निधावितिवाग्दानकर्त्रोक्ते वरस्यपित्रादिःपंचफलानिपूर्ववदादायएतद्गोत्रोत्पन्नवरविषयेभवंतोनिश्चिताइतिकन्यापित्रादेर्वस्त्रप्रांतेपूर्ववद्बध्नीयात् । तदस्तु० गृहावै० कन्यापित्रादिः—वाचादत्तामयाकन्यापुत्रार्थंस्वीकृतात्वया । कन्यावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभवेतिवदेत् । वरपित्रादिः—वाचादत्तात्वयाकन्यापुत्रार्थंस्वीकृतामया । वरावलोकनविधौनिश्चितस्त्वंसुखीभवेतिवदेत् । भ्रात्रादिंप्रतितस्यचयथार्थंभ्रात्रर्थंशिष्यार्थंमित्रार्थंवरार्थमित्यूहः । ततःसर्वेब्राह्मणाः हिंकृण्वती० समिद्धस्य० वनस्पते० इंदुर्देवाना०अस्यपिबक्षुमतः०घृतादुल्लुप्तं० तदस्तु०गृहावै०इतिकन्याशिरस्यक्षतप्रक्षेपणाशीर्दानंकुर्युः । ततःइंद्राणींपूजयित्वातत्प्रार्थनंकुमार्याकार्यम्—देवेंद्राणिनमस्तुभ्यंदेवेंद्रप्रियभामिनि । विवाहंभाग्यमारोग्यंपुत्रलाभंचदेहिमेइतिवाग्दानम्॥ ॥ततःसुमुहूर्तेवधूवरयोस्तैलहरिद्रारोपणंयथाचारंकार्यम्।रजकीतैलमादायकन्यकामभिषिंचति । निशायाःप्रथमेभागेनागवल्लीदलेनत्वितिज्योतिर्निबंधोक्तमप्याचारानुसारेणस्वीकार्यं वध्वातदारो

पणोत्तरंतच्छेषेणहरिद्रादिनावरस्यस्नानंकारणीयमित्याचारः॥ ॥अथविवाहदिनेतत्पूर्वदिनेवास्वस्तिवाचनादि । तत्रपरिशिष्टे—सुस्नातालंकृतोवरःस्वस्तिवाचयित्वेत्युपक्रम्यवधूगृहंप्रतिवरस्यगमनमुक्तम् । इदमेवशास्त्रमवलंब्यपारिजाते—ममदेवपित्रृणापाकरणहेतुभूतधर्मप्रजोत्पादनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंकन्याप्रतिग्रहणंकर्तुंतदंगभूतंस्वस्तिवाचनंकरिष्य इतिसंकल्पपूर्वकंवरकर्तृकंस्वस्तिवाचनमुक्त्वाततोविधिवत्पित्रा[1]नांदीश्राद्धंकारयेदित्युक्तम् । अन्येतुवधूगृहगमनारंभेस्वस्तिवाचनानंतरंपरिशिष्टेविधीयते भगवतातथैवस्मरणात् । विवाहंप्रकृत्यतेनह्युक्तम्—तत्राभ्युदयिकंश्राद्धंकुर्यात्स्वस्तिचवाचयेत् । अपरेद्युःकृतस्नानोधृतधौतांबरद्वयः। भूषितोगंधमाल्याद्यैर्वंदिताभीष्टदेवतः। ब्राह्मणान्भोजयित्वातैःकृतपुण्याहवाचनः। यानार्हयानमारुह्ययायाच्चैववधूगृहमिति। अतःप्रथमस्वस्तिवाचनंपित्रादिकर्तृकमेवेत्याह तदनुसारेणप्रयोगः॥

॥संस्कार्यस्यपित्रादिःपत्न्यासंस्कार्येणसहकृताभ्यंगस्नानोऽहतवासाःशुभासनेप्राङ्मुखउपविश्यस्वदक्षिणतःपत्नींतदग्रतःसंस्कार्यंचोपवेश्यदेशकालौसंकीर्त्य ममास्यपुत्रस्यदैवपित्रृणापाकरणहेतुभूतधर्मप्रजोत्पादनसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाख्यसंस्कारकर्मकरिष्ये । तदंगत्वेनस्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंनंदिन्यादिमंडपदेवताप्रतिष्ठापनंचकरिष्ये। तदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंकरिष्ये इतिपुत्रविवाहेसंकल्पंकुर्यात्॥ कन्याविवाहेतु ममास्याःकन्यायाःभर्त्रासहधर्मप्रजोत्पादनद्रव्यपरिग्रहेष्वधिकारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविवाहाख्यसंस्कारकर्मकरिष्येइतिविशेषः ।

---

[1] पित्रादिर्नांदी ।

शेषंपूर्ववत् । भ्रातृपितृव्यादिस्तु ममास्यभ्रातुरिति भगिन्याइतिवा भ्रातुःसुतस्येतिवा भ्रातुःकन्यायाइतिवोहेनसंकल्पं कुर्यात् । मातृकापूजनांते अजीवत्पितृमातृमातामहःपितास्वपित्राद्युद्देश्यकंपार्वणत्रयंकुर्यात् । मातरिजीवत्यांतत्पार्वणलोपः । मातामहेएवजीवतितत्पार्वणलोपः । तदापार्वणद्वयेनैवनांदीश्राद्धसिद्धिः । मातृमातामहजीवनेपितृपार्वणेनैव तत्सिद्धिः । अजीवत्पितृप्रपितामहोजीवत्पितामहः पितृप्रपितामहतत्पितृनुद्दिश्यपितृपार्वणंकुर्यात्—पितापितुःपितामहप्रपितामहौचनांदीमुखाइदंवःपाद्यमितिप्रयोगः । एवंप्रपितामहमात्रजीवनेपिपितृपितामहतत्पितामहानुद्दिश्यतत्कुर्यात्—पितृपितामहौपितुःप्रपितामहश्चनांदीमुखाइति । पितामहप्रपितामहयोरेवजीवने—पितरंपितामहस्यपितामहप्रपितामहौचोद्दिश्यतत्कुर्यात्—पितापितामहस्यपितामहप्रपितामहौचनांदीमुखाइति । एवमजीवन्मातृकस्यपितामहीमात्रजीवने—मातापितुःपितामहीप्रपितामह्यौचनांदीमुखाइतिमातृपार्वणेप्रयोगः । प्रपितामहीमात्रजीवनेमातृपितामह्यौपितुःप्रपितामहीचनांदीमुखाइति । पितामहीप्रपितामह्योर्जीवने—मातापितामहस्यपितामहीप्रपितामह्यौचनांदीमुखाइति॥ इदंचपितामहीप्रपितामहीसपत्न्योर्मृतयोर्दैवतात्वसंभवेताभ्यांसहैवपार्वणंकार्यम् । एवंमातामहपार्वणेमुख्यमातामह्यादिषुजीवतीषुतत्सपत्नीभिःसपत्नीकत्वगुणोपपत्तिः । नतुसपत्नमात्रामातृपार्वणनिर्वाहःपरिशिष्टविरोधात् । एवमजीवन्मातामहस्यमातुःपितामहजीवने—मातामहस्तत्पितामहप्रपितामहौचनांदीमुखाइति । मातुःप्रपितामहजीवने मातामहमातुःपितामहौमातामहस्यप्रपितामहश्चनांदीमुखाइति । तयोरुभयोर्जीवने—मातामहोमातुःपितामहस्यपिता

महप्रपितामहौचेतिप्रयोगः॥ ॥ अथजीवत्पितृकोऽजीवन्मातृमातामहश्च—मातृमातामहपार्वणद्वयमेवसुतसंस्कारारंभे कुर्यात् । तस्यामपिजीवत्यांमातामहपार्वणमेवकुर्यात् । मातामहएवजीवतिमातृपार्वणमेवदेवरहितंकुर्यात् । त्रिष्वपिजीवत्सुपितुःपित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात् बाधकपरिशिष्टाप्रवृत्तौविष्णुस्मृतेर्निःशंकप्रवृत्तेः । एवंस्वस्यद्वितीयादिविवाहांगत्वेनांदीश्राद्धंकुर्वन्अजीवत्पितृकः । जीवत्पितृकस्तुपितुःपित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात्—पितुःपितृपितामहप्रपितामहानांदीमुखाइति पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्यःनांदीमुखाः पितुर्मातामहमातुःपितामहमातुःप्रपितामहा इतिचप्रयोगः । जीवत्पितृपितामहस्तुपितामहस्यपित्रादीनुद्दिश्यकुर्यात् । तदुक्तवाक्येषुपितुरित्यस्यस्थानेपितामहस्यनिर्देशः । त्रयाणांजीवनेतुपितृपार्वणलोपः । सुतसंस्कारइवस्वीयमात्राद्युद्देश्यपार्वणद्वयेनैवश्राद्धसिद्धिः । नित्यवन्नांदीश्राद्धविधिनैवलोपशास्त्रसहकृतेनतत्प्रापणात् । एवंप्रथमविवाहेपिकर्त्रंतराभावेपारिजातोक्तरीत्यावरएवनांदीश्राद्धंकुर्वन् अजीवत्पितृकःस्वपित्रादीनुद्दिश्यजीवत्पितृकादिस्तुपितुःपितामहस्यवापित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात् । तत्राजीवत्पितृकस्यनस्वस्येतिसंबंधकीर्तनं स्वसंबंधिकत्वमहिम्नैवपित्रादिषुविशेषसिद्धेः । अदृष्टार्थतत्कीर्तनस्यनांदीश्राद्धेनिषेधात् । अतएवपरकीयपित्राद्युद्देश्यकनांदीश्राद्धविशेषलाभार्थस्यपितुरित्यादेःसंबंधकीर्तनस्यनिषेधः । यदातुपितृव्यमातुलादिः कन्याविवाहंकुमारस्योपनयनमुपनीतस्यप्रथमविवाहंवाकुर्यात्तदासंस्कार्यस्याजीवत्पितृकत्वेतत्पित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयं कुर्यात् । सोदरज्येष्ठभ्रातुःप्रयोगे नविशेषः तदीयपित्रादीनांसंस्कार्यपित्रादिभिरभेदात् । सापत्नज्येष्ठस्तुमातृपार्वणे

संस्कार्यस्यमातृपितामहीप्रपितामह्यइतिप्रयोगंकुर्यात् । पितृव्यादिस्तुसर्वपार्वणेषुसंस्कार्यस्येतिसविशेषणप्रयोगंकुर्यात् । संस्कार्यस्यजीवत्पितृकत्वेसंस्कार्यपितुःपित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात् । तस्यजीवत्पितृकत्वेतदीयमात्रादीन्तदीयमातामहादींश्चोद्दिश्यपार्वणद्वयंकुर्यात् । मात्रादिजीवननिमित्तोविशेषःपूर्ववद्बोध्यः मुख्यस्ययथाप्राप्तकार्येऽमुख्यकर्तृकाणांप्रवृत्त्यौचित्यात् । एवंआत्मीकृत्यसुवर्णेनपरकीयांतुकन्यकाम् । धर्मेणविधिनादातुःसमगोत्रोपियुज्यतेइतिस्कांदवचनात् । अनाथांकन्यकांदत्त्वासदृशेवाधिकेवरे । द्विगुणंफलमाप्नोतिकन्यादानेयदीरितमितिविष्णुधर्मोत्तरवचनाद्वाकेनापिहेतुनाकन्यांदातुमशक्नुवतादानाधिकारिणात्वंकन्यादानंकुर्वितिप्रार्थनाद्वा यःपरकीयकन्यांदातुमिच्छतिसोपिसंस्कार्यकन्यायाःपित्रादीनुद्दिश्यतस्याजीवत्पितृकत्वेतदीयमात्राद्युद्देश्यकपार्वणानुष्ठानंयथासंभवंकुर्यात् । दत्तककन्यायास्तुविवाहंकुर्वन्प्रतिग्रहीतास्वपित्रादीनुद्दिश्यैवपितृवन्नांदीश्राद्धंकुर्यात् । दत्तकन्यायाअसंभवसंकोचनिराकृतीशंकाचनिराकृतादत्तकनिर्णये । दत्तकपुत्रस्तुयदिलब्धबीजिरिक्थःतदोभौपितरौपितामहौप्रपितामहौचोद्दिश्यकुर्यात् । एवंमातृपार्वणेमातामहपार्वणेचबोध्यम् । यदितुबीजिरिक्थग्रहणेअधिकार्यंतरसंभवाद्वोत्ररिक्थेजनयितुर्नभजेद्दत्रिमःसुतइतिशास्त्रादलब्धतद्रिक्थस्तदाप्रतिग्रहीतृकुलसंबद्धपित्राद्युद्देश्यकमेवकुर्यात् । पिंडदोरिक्थहारीचपूर्वाभावेपरःपरइतिपिंडदानरिक्थग्रहणसाहचर्यस्यौत्सर्गिकत्वात् । एवंचानेकसंस्कार्यविषयानेकसंस्काराणांसहानुष्ठानंयत्रननिषिद्धंतदंगनांदीश्राद्धीयदेवतानामभेदश्च । तत्र—गणशःक्रियमाणानामेकंस्यान्मातृपूजनम् । वृद्धिश्राद्धंचतंत्रंस्याद्धोमस्तुस्यात्पृथक्पृथगि

तिस्मृत्यर्थसारवचनानुसारितंत्रानुष्ठानंबोद्धव्यम् ॥ इतिनांदीश्राद्धेदेवतानिर्णयः ॥ ॥ प्रदेयस्यान्नादेरपरोक्षत्वेइदमन्नमितिप्रयोगः । परोक्षत्वेदास्यमानमिति । अन्नासंभवेआममिति । तच्चचतुर्गुणंद्विगुणंसमंवा । आमासंभवेहिरण्यमितिवा । हिरण्यासंभवेपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतंद्रव्यमितिवा । इतिहविर्निर्णयः । परकीयपित्राद्युद्देश्यकेपितुर्मातापितामहीचेतिश्लोकपाठः । लुप्तपार्वणसंबंधिश्लोकलोपश्चपूर्वोक्तोनुसंधेयः । इतिनांदीश्राद्धम् ॥ ॥ ॥

पूर्ववन्मंडपदेवताप्रतिष्ठापनंब्राह्मणसुवासिनीभोजनसंकल्पंभूयसीदानसंकल्पंचकृत्वाविष्टरंदधिमधुपाद्यादिपात्राणिवरस्यवस्त्रयज्ञोपवीतालंकारान्वरायदक्षिणांभोजनपात्राणिजलपात्रंत्रिसूत्रींक्षीरंमांगलिकजीरकादिद्रव्यंइध्मंबर्हिःआज्यलाजान्दृषदुपलौउदकुंभंआम्रादिपल्लवान्प्रणीतादिपात्राणिगौरीहरपूजोपयोगिप्रतिमादिकन्यापितोपकल्पयेत् ॥ विष्टरलक्षणंपरिशिष्टे—पंचाशताभवेद्ब्रह्मातदर्धेनतुविष्टरः । ऊर्ध्वकेशोभवेद्ब्रह्मालंबकेशस्तुविष्टरः । दक्षिणावर्तकोब्रह्मावामावर्तस्तुविष्टरइति। केशाअग्राणि । निर्माणकालेतदूर्ध्वत्वादिपंचविंशतिदर्भाणांवेण्यग्रेग्रंथिभूषितः। विष्टरःइत्यन्यत्र ॥ ॥ तत्पूजाविधिःसंग्रहे—लग्नाहेमातृकाःपूज्याःपूज्यागौरीहरान्विता । पीठेवातदलाभेतुसवस्त्रेतंडुलान्विते । पंकजंकारयित्वातुतत्रगौरीहरौयजेत् । कलशैःकलशैःकार्यापिधानोत्तरश्रेणिका । दिशांचतुर्षुकोणेषुस्थापयेत्तंदुलोपरि । प्रतिमांपलहेम्नातुकुर्याद्गौरीहरौयतः । यतःयस्यांप्रतिमायांउभौमीलितावित्याशयः । पलद्वयेनरौप्येणकुर्यान्नंदिनमग्रतः ।

अशक्तस्तुतदर्धेनपादेनशक्तितोथवा । अलाभेकुंकु[1]माद्यैस्तुलेखयित्वाप्रपूजयेत् । ध्यात्वामंत्रेणदेवौद्वौभक्त्यासंपूजयेत्सुधीरिति। ध्यानमंत्रस्तत्रैव—सिंहासनस्थांदेवेशींसर्वा[2]लंकारसंयुताम्। पीतांबरधरंदेवंरुद्रंचंद्रार्धशेखरं। करेणाधःसुधापूर्णंकलशंदक्षिणेनतु । वरदंचाभयंवामेनाश्लिष्यचतनुप्रियाम् । एवंध्यात्वापूज्यगौरींपुण्यभाजस्तथास्त्रियः । कन्यांसमुद्वहेत्पश्चादिति । पूजामंत्रस्तत्रैव—गौरीहरमहेशानसर्वमंगलदायक । पूजांगृहाणदेवेशसर्वदामंगलंकुर्विति । कन्यादेहप्रमाणेनसप्तविंशतितंतुभिः । वर्तिकांदीपयेत्पश्चाद्व्रतसंपत्तिहेतवे । भोजनीयाब्राह्मणाश्चसुवासिन्यःसुपूजिताः । दशाष्टपंचयुग्मंवाहिरण्येनाथतोषयेदिति । तथा—व्रतांतेमंडपेस्थाप्यमंचकंसोपधानकम्। चतुष्कोणेषुमंचस्यस्थाप्याभांडप्रभातत(?)इति । अतोलग्नदिनेकन्यापितोक्तगौरीहरमूर्तिकात्यायनीमहालक्ष्मीशचीप्रतिमाभिःसहाग्न्युत्तारणेनसंस्कृत्य । कोणचतुष्टयस्थापितकलशश्रेणीनांमध्येउपलयुक्तदृषदिसूत्रितायांपीठेवस्त्रेवातंडुलैःपंकजंकारयित्वा तत्रगौरीहरौउक्तध्यानपूर्वकमुक्तमंत्रेणपूजयित्वा प्रतिमात्रयेदेवतात्रयंयथाविभवंसंपूज्य कन्ययासहप्रणम्यदीपंप्रज्वालयित्वाब्राह्मणसुवासिनीश्चभोजयेद्दक्षिणांचदद्यादिति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथकन्यादातावरगृहंगतः आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमाणकन्याविवाहांगत्वेनवरस्यसीमांतपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशवरुणपूजनेकृत्वा अस्मिन्राष्ट्रेश्रियमितिपत्नीप्रक्षिप्तजलेनतदीयदक्षिणवामपादौप्रक्षाल्याचम्यगं

---

[1] तंडुलाद्यैस्तु । [2] लंकारभूषितां ।

धपुष्पनीराजनवस्त्रैर्यथाविभवंसंपूज्ययथाचारंदुग्धादिप्राशनंकारयेत् । ततोवरोदेवताःपित्रादिमान्यांश्चप्रणम्य स्वस्तिनो मिमीतामितिकनिक्रददितिचब्राह्मणैःसहपठन्पदातिर्वाहनारूढोवावधूगृहंगत्वासुवासिनीभिर्यथाचारंपूर्णकुंभनीराजनादिनाकृतमंगलोवधूगृहेप्रविशेत् । ततोवरपितागणेशवरुणौसंपूज्य कन्यां । याःफलिनीरितिमंत्राभ्यांफलैस्तांबूलैश्चयथाचारंपूजयेत् । ब्राह्मणाःहिंकृण्वतीत्यादिमंत्रैःपूर्ववदाशिषोदद्युः । पूर्वंवाग्दानंनकृतंचेत्फलपूजानंतरंकर्तव्यम् ॥

॥अथमधुपर्कः।परिशिष्टे—वरस्ययाभवेच्छाखातच्छाखागृह्यचोदितः । मधुपर्कःप्रदातव्योह्यन्यशाखेपिदातरीति । दध्यलाभेपयोजलंवा।पयोवामधुसंसृष्टमभावेउदकमितिधर्मप्रश्नात्प्रतिनिधिः।सर्पिर्मध्वलाभे तदलाभेगुडः[1]। कन्यादातादेशकालसंकीर्तनांतेगृहागतंस्नातकंवरंमधुपर्केणार्हयिष्येइतिसंकल्पयेत्। द्वितीयविवाहार्थमागमनेतुस्नातकमितिपदलोपः। दाता विष्टरोविष्टरोविष्टरःप्रतिगृह्यतामितिविष्टरंदद्यात् । वरः प्रतिगृह्णामीतिदक्षिणहस्तेनप्रगृह्य । अहंवर्ष्मेत्यस्यवामदेवोविष्टरोनुष्टुप् आसनकरणेविनियोगः । अहंवर्ष्मसजातानांविद्युतामिवसूर्यः । इदंतमधितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति। ( इत्युदगग्रेविष्टरउपविशेत् )। ततोवरोलौकि[2]कजलेनाचामेत् । स्वगृहागतस्यप्रथमंचरणप्रक्षालनंकुर्वन्दातापि । गंधाक्षतपुष्पयुक्तंपाद्यपात्रेजलमादायपाद्यंपाद्यंपाद्यं प्रतिगृह्यतामितिदातापाद्यंदद्याद्धस्तयोर्वरःप्रतिगृह्णामीति । अस्मिन्राष्ट्रइतिदाता[3]पत्नीप्रक्षिप्तजलेनदक्षिणपादप्रक्षालनपूर्वंप्रतिग्रहीतुःपादौप्रक्षालयेत् । अ[3]र्घ्यपात्रेगंधाक्षतपुष्पफलयुतंजलं

---

१ गुडोवा । २ लौकिकजलेनैवपाद्यादिष्वाचमनं । ३ पादप्रक्षालनेदातुर्वामतःपत्नीतिसंग्रहे ।

दात्राअर्घ्यमर्घ्यमर्घ्यंप्रतिगृह्यतामितिनिवेदितमंजलिनावरोगृह्णीयात्प्रतिगृह्णामीति । पात्रांतरस्थंशुद्धजलंदात्राचमनीयमाचमनीयमाचमनीयं ‘प्रतिगृह्यतामितिदत्तंदक्षिणहस्तेनप्रतिगृह्यवामेतत्पात्रंनिधायतज्जलंतृतीयांशंवरोऽमृतोपस्तरणमसीतिपिबेत्। अथमधुपर्कमानीयमानमपसारितापिधानंवरोऽवेक्षेत मित्रस्यत्वाचक्षुषाप्रतीक्षइति । दातामधुपर्कोमधुपर्कोमधुपर्कःप्रतिगृह्यतां वरोदेवस्यत्वा० भ्यांप्रतिगृह्णामीत्यंजलिनाप्रतिगृह्यतत्स्थमेवमध्वितितृचेनावेक्षेत । मधुवाताइतितृचस्यराहूगणोगोतमोविश्वदेवागायत्री मधुपर्कावेक्षणेविनियोगः । ॐमधुवाता० माध्वीर्गावोभवंतुनः ३ इति सव्यहस्तस्थापितेमधुपर्कपात्रेऽगुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यांमधुपर्कंप्रदक्षिणंत्रिरालोड्य । वसवस्त्वागायत्रेणच्छंदसाभक्षयंत्विति [१]पुरस्तान्निमार्ष्टि । रुद्रास्त्वात्रैष्टुभेनेतिदक्षिणस्यां। आदित्यास्त्वाजागतेनेतिप्रतीच्यां । विश्वेत्वादेवाआनुष्टुभेनेत्युदीच्यां । आलोडनसंजातांगुलिलेपस्यैवदिक्चतुष्टयेप्यपनयनंनतुपुनर्ग्रहणं । ताभ्यामेवमध्यात्रिर्गृहीत्वाभूतेभ्यस्त्वेतित्रिरावृत्तेन त्रिरूर्ध्वंक्षिपेत् ।—भूमौपात्रनिधानंचभूतेभ्यस्त्वेतिमंत्रतः। निमृज्यांजलिलेपंतुभूतेभ्यस्त्वेतिमंत्रतः । त्रिरुद्धृत्यत्रिरुत्क्षिप्यभूमौपात्रंनिधायचेतिकारिकोक्तेः । यद्वासकृद्गृहीतस्यैवत्रिःसमंत्रकउत्क्षेपः ।—ततोमध्याच्चकिंचन । आदायभूतेभ्यस्त्वेतिमंत्रमुक्त्वात्रिरुत्क्षिपेदिति । मंत्रस्योत्क्षेपणस्यापित्रिरभ्यासंसमाचरेदितिभगवत्स्मृतेः । वृत्तिस्वरसादपीदृशार्थप्रतीतेः । ततो[२]विराजोदोहोसीतिमधुपर्कैकदेशंप्रथमंप्राश्नीयात् । विराजोदोहमशीयेतिद्वितीयं । मयिदोहःपद्यायैवि

---

[१] पूर्वस्यांनिमार्ष्टि । [२] प्राशनेतुविराजोदोहोसीतिप्रथममुद्राहंप्राश्नामीति । एवंद्वितीयेतृतीयेपि ।

राजःइतितृतीयं । स्वयंगृहीतस्यपरेणवाहस्तेप्रक्षिप्तस्यप्राशनत्रयमेतत् । यद्वामधुपर्कोपरिभागात्पात्रत्रयेभूतेभ्यस्त्वेतिमंत्रावृत्त्यात्रिरादाययथाक्रमंमंत्रत्रयेणप्राश्नीयात् । अयंप्रकारोग्रंथकारैरनादृतोपिसूत्रस्वरससिद्धोन्यायसिद्धश्च । निमार्ष्टीत्यनुषंगाभावात्उद्गृह्येत्यत्रगृह्णातेःक्षेपणार्थत्वकल्पनाभावाच्च प्रथमद्वितीयादिपदानांसार्थकत्वलाभाच्च दृष्टरूपस्योपयोक्ष्यमाणसंस्कारस्यलाभाच्च । मधुपर्कशेषमुत्तरतउपविष्टायब्राह्मणायदद्यात् । अप्सुवाक्षिपेत् । तृतीयप्राशनकालेसर्वंवाप्राश्नीयात् । अथाचमनीयशेषार्धममृतापिधानमसीतिप्राश्यलौकिकजलेनाचामेत् । सर्वंतदादाय सत्यंयशःश्रीर्मयिश्रीःश्रयतामितिप्राश्यलौकिकजलेनद्विराचामेत् । दातागौर्गौर्गौःप्रतिगृह्यतामितिगांनिष्क्रयंवादद्यात् । वरःमातारुद्राणामित्यस्यभार्गवोजमदग्निर्गौस्त्रिष्टुप् । उत्सर्जनेविनियोगः । ॐ मातारुद्राणां० वधिष्टओमुत्सृजतेत्युत्सृजेत् । अत्रजयंतः—गोःप्रतिनिधित्वेनछागआलभ्यते उत्सर्जनपक्षेपिच्छागएवनिवेदनीयइति । अत्रापिमतेछागस्यप्रतिनिधित्वान्निष्क्रयइव नीवारेषुव्रीहिशब्दइवगौर्गौरितिमातारुद्राणामितिवाविकृतंभवतिगविमनसिधृतायांद्वात्रिंशत्पणात्मकनिष्क्रयवच्च छागे मनसिधृतेपणाष्टकात्मकोनिष्क्रयोदेयः। ततःकर्तव्यमाहभगवान्—दाताथगंधमाल्याद्यैर्विधितोभ्यर्चयेद्वरम् । पश्चात्तेनसहायातांस्तद्बंधूनपिपूजयेदिति । वृद्धाआहुः—गंधमाल्यवस्त्रयुगोपवीतयुगाभरणादिभिःयथाविभवंपूजयेदिति । विधितइतिपदात्आदिभिरितिबहुवचनाच्चभोजनात्पूर्वंधूपदीपौतदुत्तरतांबूलदक्षिणेअपिदातुमुचिते । नामांसोमधुपर्कोभवतिइतिसूत्रादुत्सर्जनपक्षे अन्येनमांसेनभोजनदानमितिवृत्तिकृज्जयंतादिभिरभिधानाच्च मांसप्रतिनिधित्वेनमाष

विकारोभोजनेदेयः । विनायकशांत्यादौमांसप्रतिनिधित्वेनतस्यैवमहार्णवादिभिरभिधानाच्च । इत्याश्वलायनोक्तोमधुपर्कः ॥ ॥ अथापस्तंबोक्तः । दाताकूर्चंददाति वरःराष्ट्रभृदस्याचार्यासंदीमात्वघोषंतस्मिन्नुपविशति । आपःपाद्याइत्युदकंप्रयच्छति आपःपादावनेजनीर्द्विषंतंनिर्दहंतुमे अस्मिन्कुलेब्रह्मवर्चस्यसानिइतिपाद्यमवेक्षते । यजमानस्तेनोदकेनवरस्यपादौप्रक्षालयतिब्राह्मणोदक्षिणंपूर्वं । वरःप्रक्षालयितारमुपस्पृश्य मयिमहोमयियशोमयींद्रियंवीर्यम् । आत्मानंप्रत्यभिमृश्यअपउपस्पृश्य पुष्पगंधादियुक्तमर्घ्यंमृन्मयेनिधायकूर्चाभ्यांपरिगृह्यार्हणीयाआपइतिप्रयच्छति । आमागन्यशसावर्चसासꣳसृज[1]पंयसातेजसाच । तंमाप्रियंप्रजानांकुर्वधिपतिंपशूनां । अभिमंत्र्यविराजोदोहोसि विराजोदोहमशीय मयिदोहःपद्यायैविराजः । अंजलावेकदेशआनीयमानेजपति समुद्रंवःप्रहिणोम्यक्षितास्वांयोनिमपिगच्छत । अच्छिद्रःप्रजयाभूयासंमापरासेतिमत्पयः । शेषंपुरस्तान्निनीयमानं । केचिदस्मिन्कालेभोजनांतेवापूज्यायवस्त्रालंकरणादिदातव्यम् । अन्यथायं पूजितएवनस्यादितिसुदर्शनः । दधिमधुसंसृष्टंकांस्येवर्षीयसापिधायकूर्चाभ्यांपरिगृह्यमधुपर्कइत्याहवरोमधुपर्कंपरिगृह्यपिधानमपनीय त्रय्यैविद्यायैयशोसियशसोयशोसिब्रह्मणोदीप्तिरसितंमाप्रियंप्रजानांकुर्वधिपतिंपशूनां आमागन्निति[2]चद्वाभ्यामभिमंत्रयते । दाताआचमनीयाअपःआवेदयति वरस्तदेकदेशंपिबतिअमृतोपस्तरणमसि । ततःअपआचम्येत्थंसुदर्शनः । यन्मधुनोमधव्यंपरममन्नाद्यंवीर्यंतेनाहंमधुनोमधव्येनपरमेणान्नाद्येनवीर्येणपरमोन्नादोमधव्योसानि इतित्रिः

---

[1] यशसा । [2] न्नितिद्वाभ्यां ।

प्राश्य सकृन्मंत्रेणद्विस्तूष्णींप्राश्य हस्तौप्रक्षाल्यामृतापिधानमसिपूर्वशेषंपिबति पुनराचामतिशेषमनुकंपयाब्रह्मचारिणेप्रयच्छति । अस्मिन्कालेवस्त्रालंकरणादिभिरलंकृत्यगौरित्युक्तेवरः यज्ञोवर्धतांयज्ञस्यवृद्धिमनु[1]वर्धापचितिरस्यापचितिंमाकुर्वेपचितोऽहंमनुष्येषुभूयासंगौर्धेनुर्भव्या । मातारुद्राणांदुहितावसूनाꣳस्वसा० प्रनुवोचं० वधिष्टपिबतूदकंतृणान्यत्तु उपांशूक्त्वा ॐमुत्सृजतउच्चैरियंगौरुत्सर्गपक्षेपिभोक्तुरेवेतिसुदर्शनः । सिद्धमन्नंभूतमित्युक्तेः । भूतंसाविराट्तन्मआक्षायितस्यतेशीयतन्मऊर्जंधाः उपांशूक्त्वा ॐकल्पयतउच्चैर्ब्रूयात् । एवंवरस्यमधुपर्कंकृत्वातत्पित्रादेर्मधुपर्कःकार्यः । आपस्तंबशाखिनाविवाहेगौर्गृहेषुगौस्तयावरमतिथिवदर्हयेद्योस्यापचितस्तमितरयेत्यापस्तंबीयगृह्यसूत्रात् विवाहस्थानेगौःसंनिधाय गृहशालायामन्यापूर्वयोत्सर्गद्वारेणांगभूतयायुक्तेनमधुपर्केणवरमभिपूजयेत् । योस्यवरस्यपित्रादिःसंबंधीलोकेचापचितोविद्यादिना यद्वावरस्यापचितःपूज्यः तमितरयापूर्ववदंगभूतयायुक्तेनमधुपर्केणपूजयेत् । एतन्मधुपर्कद्वयमपिविवाहांगमित्युदाहृतंसूत्रव्याख्यावसरे सुदर्शनोक्तेश्च।यत्रक्वचाग्निमितिविधिनाग्निंप्रतिष्ठाप्यकन्याशालांगत्वावरोयथार्हंयथाविधिमधुपर्कंगृह्णाति एवंवरापचितोपीतिप्रदेशांतरेतदुक्तेश्च । यथार्हमितिएतौसांगशाखाध्यायिनौचेद्दक्षिणार्थाधिकगवासहैताभ्यांमधुपर्कोदेयः अन्यथाकेवलइति । गोमधुपर्कार्हौवेदाध्यायइतिधर्मप्रश्नव्याख्यावसरेगांचदक्षिणामितिउ

---

[1] वर्धायचिति ।

ज्ज्वलोक्तेः । दक्षिणार्थंगोराधिक्यंप्रकृत्यवरापचितस्नातकमधुपर्केषुउक्तव्यवस्थायाःसुदर्शनेनाप्युक्तेश्च । आश्वलायनशाखिनागंधादिनातत्पित्रादेःपूजनंकार्यं । अनंतरोदाहृतभगवद्वचनात् ॥ [१]इत्यापस्तंबोक्तोमधुपर्कः ॥ ॥

अथकन्यादानम् । मदनरत्नेऋष्यशृंगः—वरगोत्रंसमुच्चार्यप्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्तयेद्विद्वान्कन्यायाश्चैवमेवहि । तिष्ठेत्पूर्वमुखोदातावरःप्रत्यङ्मुखोभवेत् । मधुपर्कार्हणेकन्यांतस्मैदद्यात्सदक्षिणामिति । तत्रैववृद्धवसिष्ठः—नामगोत्रेसमुच्चार्यसंप्रदानस्यचात्मनः । संप्रदेयंप्रयच्छंतिकन्यादानेतुपुंस्त्रयमिति । पुंस्त्रयकीर्तनंचप्रपितामहपूर्वकम् । नांदीमुखेविवाहेचप्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्तयेदितिवचनात् । अत्रनांदीमुखेतत्पूर्वकत्वविधिर्यच्छाखायांतद्विधिस्तद्विषय इति तत्रैव ॥ दानपरिभाषायांतत्रैवषट्त्रिंशन्मते—नामगोत्रेसमुच्चार्यप्राङ्मुखोदेयकीर्तनात् । उदङ्मुखायविप्रायदत्वातत्स्वस्तिवाचयेदिति । देयस्यसदेवताकस्यकीर्तनानंतरंदत्वेत्यन्वयः । अयंदिङ्नियमोनकन्यादाने । प्राक्प्रत्यगास्यतोद्वाहेदातृग्राहकयोःस्थितिरितिवचनादित्यपितत्रैवोक्तम् । प्रतिग्रहेविशेषस्तत्रैवोक्तोविष्णुधर्मोत्तरे—प्रतिग्रहीतासावित्रंसर्वत्रैवानुकीर्तयेत् । ततस्तुकीर्तयेत्सार्धंद्रव्येणद्रव्यदेवताम् । समापयेत्ततःपश्चात्कामस्तुत्याप्रतिग्रहम् । तदंतेकीर्तयेत्स्वस्तिप्रतिग्रहविधिस्त्वयमिति । सावित्रंयजुःदेवस्यत्वेति । यजुःशाखिविषयस्तद्विधिः । कन्यायादेवताविशेषःविष्णुधर्मोत्तरे—कन्यादासस्तथादासीप्राजापत्याप्रकीर्तितेति । तथा—कन्यादानेतुनपठेद्द्रव्याणांतुपृथक्पृथक् । प्रतिग्रहंद्विजश्रेष्ठ

---

[१] इत्यापस्तंबोक्तोमधुपर्क इतिक्वाचित्कम् ।

तत्रैवांतर्भवंतितेइति । सुवर्णादिद्रव्याणांद्विजस्यचसंवंधघटितंप्रतिग्रहमंत्रंपृथक्नपठेदित्यर्थः ॥ ॥ अथतत्प्रयोगः । तत्रहेमाद्रिरित्थंदानवाक्यमुदाजहार—ॐ अद्यामुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःप्रपौत्रायामुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःपौत्रायामुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःपुत्रायामुकसगोत्रायामुकप्रवरायामुकशर्मणेवराय अमुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःप्रपौत्रींअमुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःपौत्रीं अमुकसगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणःपुत्रीं अमुकसगोत्राममुकप्रवराममुकाभिधानामिमांकन्यांसालंकारांप्रजापतिदैवतांअमुककामस्तुभ्यमहंसंप्रददे इति । संमतंचेदृशदानवाक्यंमदनरत्नकृतोपिवरप्रपितामहनामकीर्तनावसरेगोत्रप्रवरोच्चारणंप्रदर्शयता । अनेनतयैवरीत्या पितामहादिनामोच्चारणावसरेपितदुच्चारणकर्तव्यतासूचनात् । किमत्रमूलमितिचेत् उभाभ्यामुदाहृतमृष्यशृंगवाक्यम्—वरगोत्रंसमुच्चार्यप्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्तयेद्विद्वान्कन्यायाश्चैवमेवहीति । नचात्रवरविशेषणत्वेनैवगोत्रोच्चारणं विहितंनप्रपितामहादिविशेषणत्वेनेतिशंक्यम् । दानसामान्यविषयेणवृद्धवसिष्ठवचनेनैवकन्यादानेपितत्प्राप्तेः । अतः प्रपितामहपूर्वकनामोच्चारणेप्रत्येकंवरगोत्रोच्चारणांगत्वेनविधीयतइतिनिबंधकृतोरभिप्रेतम् । तथान्योपिविशेषोमदनरत्नएवोक्तः—प्रजापतिदैवतामित्यंतेअक्षय्यब्रह्मलोककामस्तुभ्यमहंप्रतिपादयामीतिवरहस्तेकुशाक्षतजलानिकन्याकरेण सहदत्वाकन्यांकनकसंपन्नामितिमंत्रंपठेदिति । ततोदक्षिणादानमुक्तम् । हेमाद्रिस्तुदक्षिणादानोत्तरंगौरींकन्यामिति दानमंत्रोच्चारणमाह । तत्रमूलमुदाहृतऋष्यशृंगवाक्यशेषः—मधुपर्कार्चितायैनांतस्मैदद्यात्सदक्षिणाम् । उदपात्रंततो

गृह्यमंत्रेणानेनदापयेत् ॥ ॥ अथगृह्यपरिशिष्टानुसारीपारिजातोक्तदानप्रकारउच्यते । दानदेशेपुरोधावधूवरयोर्दक्षिणतउदङ्मुखउपविश्य वधूवरयोर्मध्यदेशेप्रागग्रोदगग्रान्दर्भानास्तीर्य तेषुतैजसंपूर्णकलशंनिधाय तस्मिन्व्रीहियवानोप्यगंधादिभिरलंकृत्यदूर्वापल्लवैर्मुखमवच्छाद्याब्लिंगाभिरापोहिष्ठेत्यादिभिर्ऋग्भिरभिमंत्रयेत् । अथदातापुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वित्येवंपुण्याहंस्वस्त्यृद्धिवाक्यत्रयंब्राह्मणद्वारावाचयित्वाशिवाआपःसंत्वित्याशिषःप्रयुज्य भार्यासमेतःपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य ममसमस्तपितृणांनिरतिशयसानंदब्रह्मलोकावाप्तिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंकन्यादानंकरिष्येइतिसंकल्प्य वरंकन्यांचयथाशक्त्यलंकृत्य वरहस्तेहिरण्यंनिधायपूर्वार्चितकलशोदकमादायकन्यांहस्ताभ्यांसंप्रगृह्य—कन्यांकनकसंपन्नामितिमंत्रौपठित्वा वत्सगोत्रोद्भवाममुष्यप्रपौत्रीममुष्यपौत्रीममुष्यपुत्रींममकन्यांसुशीलानाम्नींश्रीरूपांप्रजापतिदेवतां वसिष्ठगोत्रोद्भवायामुष्यप्रपौत्रायामुष्यपौत्रायामुष्यपुत्रायसुशीलनाम्नेश्रीधररूपिणेवरायतुभ्यं ममसमस्तपितृणांनिरतिशयसानंदब्रह्मलोकावाप्तिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीतिकामःप्रजासृजत्वकर्मभ्यःसंप्रददेप्रतिगृह्णातुभवानितिब्रुवन्वरस्यपाणावुदकंनिषिच्यप्रजापतिःप्रीयतामितिमनसास्मरन् ॐ स्वस्तीत्युक्त्वागौरींकन्यामितिमंत्रद्वयेनप्रार्थयेत् । अथवरः ॐ पुण्याहमित्यादिदातृवदुक्त्वा कन्यादक्षिणांसमभिमृश्यकइदमितिमंत्रंपठेत् प्रजापतिमनुस्मृत्य धर्मप्रजासिद्ध्यर्थंकन्यांप्रतिगृह्णामीतिब्रूयादिति । कारिकायांकन्यादानस्येत्थंविधिरुक्तः—वरेणैववृतांकन्यांतत्पिताप्रददातिताम् । पुत्रायास्यप्रपौत्रायनप्त्रेस्यामुकगोत्रिणे । पुत्रस्यामुकगोत्रीयास्यप्रपौत्र्यस्यनप्त्रिका । श्रीरूपेयंमयादत्तातुभ्यंश्रीधररूपिणे ।

इत्युक्त्वोदकपूर्वांतांदद्यात्स्वस्तिपदंपठन् । वरोथप्रतिगृह्णीयात्स्पृशेत्कइतिमंत्रतइति । शौनकीयेपि—उपलिप्यतथोल्लिख्यस्थंडिलेग्निंनिधायच । पश्चादग्नेःप्रतिष्ठाप्यपेषणीभस्मनिर्मिता । प्रागुत्तरेऽग्नेःसंस्थाप्यपूर्णकुंभमथोवरः । उत्थायप्राङ्मुखःस्थित्वाप्रत्यगुत्तरतोजलात् । तदानीमात्मनादत्तंनूतनंवसनद्वयम् । वसित्वाचांतसलिलांभूषितांकुसुमादिभिः । प्रत्यङ्मुखःप्राङ्मुखींतांस्थितामात्मसमीपतः । कन्यकामभिगृह्णातिदत्तांपित्रादिभिर्वरः । कन्यादानप्रकारश्चपूर्वाचरितउच्यते । तद्यथागार्ग्यगोत्रायपरमेश्वरशर्मणे । आत्रेयगोत्रप्रभवांपार्वतींप्रददाम्यहम् । कन्यांसहत्वकर्मभ्यःकरोतिप्रतिपादनम् । ततोमंगलसूत्रंचध्यायन्निष्टांचदेवताम् । वध्वाःकंठप्रदेशेस्याभूषणानिचशक्तितः । कन्यकांप्रतिगृह्यैववरःपूर्ववदासने । तत्रैवोपविशेत्पश्चात्तांवधूंमातुलादिकः । स्वजनःपरिगृह्याग्नेरुत्तरेणवरस्यतु । पश्चिमेनयथानीत्वातस्मिन्नेववरासने । वरस्यदक्षिणेपार्श्वेप्राङ्मुखीमुपवेशयेत् । समाधायपुरस्तंत्रमन्वाधानादिकंक्रमात् । इत्यादि । अत्राग्निप्रतिष्ठापनोत्तरमन्वाधानात्पूर्वंकन्यादानमितिप्रतीयते । जयंतस्त्वाह—आज्यसंस्कारांतंकृत्वापरिहितधौताभिनववासोयुगुलमाचांतामलंकृतामभितःस्वस्त्ययनांकुमारीमग्निसमीपमानयंति । ततोवरोप्युत्थायप्राङ्मुखःस्थित्वोदकपूर्वांकन्यांप्रतिगृह्यतस्मिन्नेवासनेउपविशति । तांचाग्नेरुत्तरतएवनीत्वावरस्यबहिःप्रतिपाद्य तस्मिन्नेवासनेदक्षिणतउपविशति । केचिदस्यांतरंगत्वंवर्णयंति । अथवापूर्वमेवोदकपूर्वांकन्यांप्रतिगृह्यतामात्मनःसमीपेकृत्वादक्षिणतउपवेश्योपलेपनादिप्रक्रमतइति । केचिदित्यनेनसंस्कार्यत्वेनभार्यायाअंतरंगत्वाद्वराग्न्योर्मध्यमार्गेणसीमंतइवनयनपक्षःसूच्यते ॥ ॥अत्रग्रंथानांविरोधेकिमु

चितमित्यपेक्षायांपारिजातेउक्तं—कारिकागृह्यपरिशिष्टविरोधेपरिशिष्टोक्तमेवानुसंधेयं आचार्येणोक्तत्वात् । तथैवलौकिकंवाक्यंस्मृतिबाधेपरित्यजेदितिवचनाच्चेति । तथागृह्यपरिशिष्टकारशौनकयोर्विरोधेपरिशिष्टोक्तमेवानुसंधेयंआचार्येणोक्तवचनत्वादितिच । एवंचहेमाद्र्यादिनिबंधोदाहृतस्मृतिविरोधेगृह्यपरिशिष्टोक्तमेवसुतरामुचितमाश्वलायनशाखिनां बह्वल्पंवास्वगृह्योक्तमितिशास्त्रात् स्मृतीनांशाखांतरविषयत्वसंभवाच्च । आश्वलायनशाखिकुलेषुसर्वशिष्टैःप्रपितामहादिपुरुषेषुप्रत्येकंगोत्रादिसंकीर्तनस्यानादृतत्वाच्च । तान्विवाहेप्रतीयादितिगृह्यविरुद्धकुलधर्माणामपिसंग्रहार्थमितिवृत्तिकृतोक्तत्वात् तदनुसारिकुलधर्माणांसुतरांसंग्राह्यत्वात् । एवंचहेमाद्र्याद्युदाहृतंप्रतिपुरुषंगोत्रादिकीर्तनंबह्वृचान्यशाखिविषयम् । अतएवहरिहरेणहेमाद्र्यनुसारेणप्रतिपुरुषगोत्रादिसंकीर्तनयुक्तमेवदानप्रयोगमुक्त्वा द्यौस्त्वाददातुपृथिवीप्रतिगृह्णात्वितिवरःप्रतिगृह्य कइदमितिकामस्तुतिंपठेदित्युक्त्वासुवर्णंगोमिथुनंदक्षिणांगांचदद्यादित्युक्तं प्रत्यङ्मुखेनवरेणप्राङ्मुख्याःकन्यायाःस्वीकारश्चशौनकोक्तआश्वलायनशाखि[1]भिन्नबह्वृचविषयः । कारिकायास्तुपुरुषेयत्तायामेवतात्पर्यं नपित्रादिक्रमे बहुग्रंथविरोधात् । एवंसत्यपिसकलग्रंथानादृत्याचारानुसरणमेवेच्छतांपरितोषाययथाचारमपिप्रयोगो लिख्यते ॥ ॥ हस्तांतरालंविहायप्रत्येकंप्रस्थपरिमिततंदुलराशीपूर्वापरौविधायपूर्वस्मिन्प्रत्यङ्मुखंवरंअपरस्मिन्प्राङ्मुखीं कन्यामवस्थाप्य तयोर्मध्येकुंकुमादिकृतस्वस्तिकांकितमंतःपटमुदग्दशंधारयेयुः । कन्यावरयोःपित्रादिर्ज्योतिर्विदोवस्त्रा

---

[1] भिन्नविषयः ।

दिनापूजांविधाय तद्दत्तान्सपूगीफलान्कुंकुमाक्षतान्कन्यावरयोरंजलौदद्यात् । तावुभौयथाचारंतद्धारणंकुर्वंतौस्वस्तिकालोकनसमाहितचक्षुर्मनसौस्वस्वेष्टदेवताममुष्यैनमइत्येवंध्यायंतौतिष्ठतः । ज्योतिर्विदामंगलपद्यपाठांतेतदेवलग्नमितिपठित्वासुमुहूर्तमस्तु ॐ प्रतिष्ठेत्युक्तेंऽतःपटमुत्तरतोऽपसारयेयुः । ततःकन्यावरौपरस्परशिरसोरक्षतप्रक्षेपंपरस्परेक्षणंचकुर्याताम् । वरः अभ्रातृघ्नींवरुणापतिघ्नींबृहस्पते । इंद्रापुत्रघ्नींलक्ष्म्यंतामस्यैसवितुःसवेतिजपन्वीक्षेत । तयावीक्ष्यमाणःअघोरचक्षुरितिमंत्रंजपेत् । अथतस्याभ्रुवोर्मध्येदर्भाग्रेण ॐ भूर्भुवःस्वरितिपरिमृज्यदर्भंनिरस्यापउपस्पृशेत् । अथ वैदिकैःपठ्यमानब्राह्मणखंडवाक्यांतेकन्यापूर्वकंताभ्यामक्षतारोपणंकार्यम् । तत्रऋक्चवाइतिखंडद्वयं २ उत्तमाप्रतिष्ठा० १ यच्चार्वाचो० २ ततोनुदेतां० ३ महीद्यौः० ४ धारयन्धारयन्० ५ दक्षिणाअनु० ६ हिरण्यकशिपावासीनआचष्टे० ७ साम्राज्यंभौज्यं० ८ एतानिवाक्यानि । दक्षिणाअन्वित्यस्यस्थानेवाग्वाइतिखंडंकेचित्पठंति । अनृक्षराऋजवःसंत्विति विपर्यासेनप्राङ्मुखंवरंप्रत्यङ्मुखींकन्यांकृत्वा दातावरदत्तवस्त्रादिरहितांस्वदेयाहतवस्त्रालंकारमात्रयुतांअलंकारभिन्नकनकयुतहस्तांवरपूजावशिष्टचंदनलिप्तहस्तचरणांकन्यामित्थंदद्यात् । वधूवरयोर्दक्षिणतःस्वदक्षिणस्थितपत्नीसहितउदङ्मुखः पीठेउपविश्यबद्धशिखआचम्यकुशहस्तःप्राणानायम्यदेशकालसंकीर्तनांते अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोऽमुकशर्माहं मम समस्तपितृणांनिरतिशयसानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तये अनेनवरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्याद्वादशावरान्द्वादशपरान्पुरुषांश्चपवित्रीकर्तुंआत्मनश्चलक्ष्मीनारायणप्रीतयेब्राह्मविवाहविधिनाकन्यादानमहंक

रिष्ये इतिसकुशाक्षतजलप्रक्षेपेणसंकल्प्य सपत्नीकउत्थायोदङ्मुखएवकन्यांसंप्रगृह्य—कन्याकनकसंपन्नाकनकाभरणैर्युताम् । दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया । विश्वंभरःसर्वभूताःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः । इमांकन्यांप्रदास्यामिपितृणांतारणायचेतिपठित्वा नवकांस्यपात्रस्थकन्यांजलेरुपरिवरांजलिंनिधाय तत्रदक्षिणेहस्तेयथाशक्तिहिरण्यंनिधाय स्वदक्षिणस्थितपत्न्यानूतनपात्रस्थितानुच्छिष्टशुद्धोदकधारामविच्छिन्नांक्रियमाणांसहिरण्येतद्धस्तेक्षिपन्वदेद्ब्राह्मणैःसह । कन्यातारयतु पुण्यंवर्धतां शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु पुण्याहंभवंतोब्रुवंतु स्वस्तिभवंतोब्रुवंतु ऋद्धिंभवंतोब्रुवंतु श्रीरस्त्विति भवंतोब्रुवंत्वेतद्वाक्यचतुष्टयांते ॐ पुण्याहमित्याद्युत्तराणिब्राह्मणाःपठेयुः । अमुकप्रवरोमुकगोत्रोमुकशर्माहं ममसमस्तेत्यादिप्रीतयेइत्यंतमुक्त्वा अमुकप्रवरोपेतामुकगोत्रायामुकशर्मणःप्रपौत्रायामुकशर्मणःपौत्रायामुकशर्मणःपुत्रायामुकशर्मणेश्रीधररूपिणेवरायकन्यार्थिने अमुकप्रवरामुकगोत्राममुकशर्मणःप्रपौत्रीममुकशर्मणःपौत्रीममुकशर्मणःममपुत्रीं अमुकनाम्नींकन्यांश्रीरूपिणींवरार्थिनींप्रजापतिदेवत्यांप्रजासृजत्वकर्मभ्यस्तुभ्यमहंसंप्रददे इतिसहिरण्यहस्तेसाक्षतजलंक्षिपेत् । प्रजापतिःप्रीयतामितिध्यात्वा कन्यांप्रतिगृह्णातुभवानितिवदेत् । वरः ॐ स्वस्तीत्युक्त्वाकन्यायादक्षिणांसमभिमृशेत् कइदंकस्मा० प्रतिगृह्णात्वितित्रिर्वदेत् । अथधर्मप्रजासिद्ध्यर्थंकन्यांप्रतिगृह्णामीतिवदेत् । ततोदाता—गौरींकन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषिताम् । गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय । कन्येममाग्रतोभूयाःकन्येमेदेविपार्श्वयोः । कन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् । ममवंशकुलेजातापालितावत्सराष्टकम् । तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रप्रवर्धिनी ।

धर्मेचार्थेचकामेचनातिचरितव्यात्वयेयमिति । नातिचरामीतिवरः । दातोपविश्यकृतस्यकन्यादानस्यप्रतिष्ठाफल
सिद्ध्यर्थंइदंसुवर्णमग्निदैवत्यंदक्षिणात्वेनसंप्रददेइतिदद्यात् । ॐ स्वस्तीतिवरः । ततःकृतस्यकन्यादानस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंजल
पात्रंभोजनपात्रंतदुपपात्रेचसंप्रददेइति । दानपात्रेषुकांस्यादिजातिभेदेनमंत्रभेदाअग्रेद्रष्टव्याः ॐ स्वस्तीतिवरःइत्थंपित्रा
दानंकार्यम् । ( [1]अथान्यदातृनिर्णयः ) । पितामहस्तुदानंकुर्वन् पौत्रीमित्यतःपूर्वंममेतिवदेत् पुत्रीमित्यतःपूर्वंनवदेत् ।
भ्रात्रादिर्दानंकुर्वन्पुरुषत्रयसंकीर्तनमेवकुर्यात् ममेतिक्वापिनवदेत् । सकुल्यत्वेनप्रपितामहःकुर्वन् प्रपौत्रीमित्यतः
पूर्वंममेतिवदेन्नोत्तरत्र । जननीदानंचेत्कुर्यात् गोत्रामुकनाम्न्यहमितिविकारः । भर्तृगोत्रमेवेत्थंवदे[2]न्नगोत्रोत्पन्नेति । पितृ
गोत्रंनैववदेदितिनिषेधात् । पुत्रिकागांधर्वादिविवाहोढाचपितृगोत्रमेववदेत् पुंस्त्रयसंकीर्तनेममेतिनवदेच्च । मातामह
मातुलादिःसंबंधीअसंबंधीवायःकश्चिद्गोत्रांतरीयःकन्यादानंकुर्वन्स्वगोत्रंस्वविशेषणत्वेनसंकीर्त्य अमुकशर्मणःसमस्तपि
तृणामितिकन्यापितृनामषष्ठ्यंतमुक्त्वाकन्याविशेषणत्वेनतदीयप्रवरगोत्रकीर्तनमेवकुर्यात् । ममवंशकुलेजातेतिश्लोके
पिममेत्यस्यस्थानेकन्यापितृनामैववदेच्च । कुलशब्दस्यपितृवंशपरत्वेनैवसाफल्यात् । अतएव—पितादद्यात्स्वयंकन्यां
भ्रातावानुमतेपितुः । मातामहोमातुलश्चसकुल्योबांधवस्तथा । मातात्वभावेसर्वेषांप्रकृतौयदिवर्तते । तस्यामप्रकृति
स्थायांदद्युःकन्यांसजातयः । इतिनारदव्याख्यावसरे—सकुल्याःपितृपक्षीयाः बांधवा मातृपक्षीयाः सजातयोब्राह्मणाद

---

१ इदंवाक्यंकेषुचित्पुस्तकेषुदृश्यते । २ स्वगोत्रोत्पन्नेति ।

यइतिव्याख्यातंमदन[1]पारिजाते । यद्यप्यत्रभ्रात्रनंतरंसकुल्यात्पूर्वंमातामहमातुलयोःसंकीर्तनमौरसकन्याविषयेपुत्रिकाविषयेचवेदितव्यमितितत्रैवोक्तं तथापिपुत्रिकाविषयमेवैतत् । औरसकन्यायांयाज्ञवल्क्योक्तश्रौतक्रमस्यबलवत्त्वात् । अतएवनारदवाक्येभ्रातुःपूर्वंपितामहोपसंहारः । पुत्रिकाकरणंचकलौनोचितम् । दत्तौरसेतरेषांतुपुत्रत्वेनपरिग्रहइतिकलिवर्ज्येषुपाठात् । यदिदत्तकःस्वौरसकन्यादानंकुर्यात् प्रतिगृहीतोयेनतद्गोत्रमेवस्वस्यकन्यायाश्चविशेषणत्वेनवदेत् । प्रतिग्रहीतुःपितुरनंतरंच[2]प्रपितामहस्थानेपितामहगोत्रंवदेत् । दत्तककन्यादानेपिस्वगोत्रस्यकन्याविशेषणत्वेनसंकीर्तनं । श्लोकेजातेत्यस्यस्थानेस्वदत्तेत्येवमूहः । एवंदत्तकवरायकन्यादानेसयेनप्रतिगृहीतःतदीयगोत्रस्यतत्कुलगतपुरुषाणामेववरविशेषणत्वेनसंकीर्तनंबोद्धव्यम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथकन्यादानांगत्वेनगवादिदानंयःकुर्यात्संकल्पपूर्वकंतत्तन्मंत्रेणतत्तद्दानंकुर्यात्——यज्ञसाधन[3]भूतायाविश्वस्याघौघनाशिनी । विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा । गोः १ । सर्वसस्याश्रयाभूमिर्वराहेणसमुद्धृता । अनंतसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमे । भूमेः २ । इयंदासीमयातुभ्यंश्रीवत्सप्रतिपादिता । सदाकर्मकरीभोग्यायथेष्टंभद्रमश्नुते । दास्याः ३ अशून्यंशयनंनित्यमनूनांश्रियमुन्नतिम् । सौभाग्यंदेहिमेनित्यंशय्यादानेनकेशव । शय्यायाः ४ । हिरण्यगर्भसंभूतंसौवर्णंचांगुलीयकम् । सर्वप्रदंप्रयच्छामिप्रीणातुकमलापतिः । अंगुलीयकस्य ५ । क्षीरोदमथनेपूर्वमुद्धृतंकुंडलद्वयम् ।

---

१ मदनरत्ने । २ प्रपितामहेत्यत्रकन्यायाः, पितामहेत्यत्रस्वीयजनकगोत्रमितिभाति । ३ साधनसंभूताविश्वस्याघप्रणाशिनी ।

श्रियासहसमुद्भूतंददेश्रीःप्रीयतामिति । कुंडलयोः ६ । महार्णवसमुत्पन्नउच्चैश्रवःसपुत्रक । मयात्वंविप्रमुख्यायदत्तःशांतिंप्रयच्छमे । अश्वस्य ७ । रजतंसर्वभूतानांपितृणांपरमंहितम् । शिवनेत्रोद्भवंयस्मादतःशांतिंप्रयच्छमे । रजतस्य ८ । सुप्रतीकगजेंद्रत्वंसरस्वत्याभिषेचित । इंद्रस्यवाहनंशश्वत्सर्वदेवैश्चपूजित । दानेनानेनदत्तेनमुहुःशांतिंप्रयच्छमे । गजस्य ९ । इदंगृहंगृहाणत्वंसर्वोपस्करसंयुतम् । तवविप्रप्रसादेनममास्त्वभिमतंफलम् । गृहस्य १० । इंद्रादिलोकपालानांयाराज्यमहिषीशुभा । महिषासुरस्यजननीसास्तुमेसर्वकामदा । महिष्याः ११ । परापवादपैशुन्यादभक्षस्यचभक्षणात् । उत्पन्नपापंदानेनताम्रपात्रस्यनश्यतु । ताम्रपात्रस्य १२ । यानिपापानिकाम्यानिकामोत्थानिकृतानिच । कांस्यपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदा । कांस्यपात्रस्य १३ । अगम्यागमनंचैवपरदाराभिमर्शनम् । रौप्यपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदा । रौप्यपात्रस्य १४ । जन्मजन्मसहस्रेषुयत्कृतंपातकंमया । स्वर्णपात्रप्रदानेनशांतिस्तस्यास्तुमेसदा । स्वर्णपात्रस्य १५ । पूरितंपूगपूगेननागवल्लीदलान्वितम् । पूर्णेनचूर्णपात्रेणकर्पूरपिटकेनच । सपूगखंडनंदिव्यंगधर्वाप्सरसांप्रियम् । करकत्वंनिरातंकंत्वत्प्रसादात्कुरुष्वमाम् । करकस्य १६ । कांचनंहस्तवलयंरूपकांतिसुखप्रदम् । विभूषणंप्रदास्यामिविभूषयतुमांसदा । वलयस्य १७ । सर्वविद्याश्रयंज्ञानकारणंललिताक्षरम् । पुस्तकंसंप्रयच्छामिप्रीताभवतुभारती । पुस्तकस्य १८ । धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदकारक । अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःशांतिंप्रयच्छमे । वृषस्य १९ । एवंदानंकृत्वाकुक्ष्यभिमर्शनपक्षे—यत्कक्षीवांसंवननंविश्वेदेवाअनुष्टुप् दक्षिणकुक्ष्यभिमर्शनेविनियोगः । ॐ यत्कक्षीवांसंवननमितिमं

त्रेणकन्यादक्षिणकुक्षिमभिमृशेत् । अथकांस्यपात्रेकलशजलमासिच्य । अनाधृष्टमित्यस्यवामदेवआपोबृहतीउदकाभिमंत्रणेविनियोगः । अनाधृष्टमित्यभिमंत्र्य सकुशदूर्वयौदुंबर्याऽर्द्रयाशाखयावावधूवरावभिषिंचेत् । आनःप्रजामितिचतसृणांसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्री आद्याजगतीद्वितीयात्रिष्टुप् अंत्येद्वेअनुष्टुभौ अभिषेकेविनियोगः ॐआनःप्रजां०अघोरचक्षु० इमांत्वामिंद्र० सम्राज्ञी० ४ । समुद्रज्येष्ठाइतिचतसृणांवसिष्ठआपस्त्रिष्टुप् अभिषेके० ॐ समुद्रज्येष्ठाःस० ४ । आपोहिष्ठेतितिसृणांसिंधुद्वीपआपोगायत्री अभिषकेवि० ॐ आपोहिष्ठा० ३ एवमभिषिच्य । अथैशानीमारभ्यदुग्धाक्तंसूत्रंवधूवरयोःकंठदेशेकटिदेशेचतुर्वारंपंचवारंवाप्रदक्षिणं परित्वागिर्वणो० १ तान्वोमहो० २ दशावनिभ्यो० ३ तेसोमादो० ४ वृषावो० अजुषध्वमध्वर ५ मित्येतैर्मंत्रैर्वेष्टयित्वा कंठदेशस्थमधोनिष्कास्यकटिदेशस्थमुपरिनिष्कास्यऊर्णां[1]हरिद्राखंडंवध्वाकंठदेशस्थंसूत्रंवधूवामहस्तेवरोबध्नीयात् नीललोहितमित्यनेनमंत्रेण । तथाकटिदेशस्थंसूत्रंवरदक्षिणहस्तप्रकोष्ठेवधूर्बध्नीयात् तेनैवमंत्रेण । यद्वापूर्वसंपादितंकौतुकबंधसूत्रंविश्वेत्तातेइत्यनेनमंत्रेण ऊर्णास्तुकेकेशपक्षयोर्बद्धेभवत इतिसूत्रात् पक्षेविहितस्य अग्नेविश्वेभिःस्वनीकदेवैरितिमंत्रेणवरोदक्षिणोत्तरकेशपक्षयोर्मंत्रावृत्त्या ऊर्णादशांबध्नीयात् । इदंकृताकृतमिति ॥ ततोऽक्षतारोपणम् । तत्रायंक्रमः—तैजसपात्रेणक्षीरमानीयघृतमासिच्यपात्रांतरेणार्द्राक्षतशुक्लशालितंडुलानादायवरःक्षालितपाणिःप्रक्षालितवध्वंजलौक्षीरघृतंपाणिनाद्विरुपस्तीर्यद्विवारंतंडुलानोप्यद्विवारंतथैवा[2]भिघार

---

[1] प्रत्वामुंचामीतिमंत्रावृत्त्याउभयोःपक्षयोर्ग्रंथिंविसृज्य । [2] तेनैवाभि ।

येत् । एवंवरांजलावन्येनापूरितेदातातदंजल्योःसुवर्णंनिधायवरांजलिंकन्यांजल्युपरिनिधाय कन्यातारयत्वित्यादिमुहूर्तेन क्षत्रसंपदस्त्वित्यंतंपठित्वाकन्यांजलिस्थितानक्षतान्वरमूर्धन्यारोपयेत् भगोमेकामःसमृध्यतामिति। वरःस्वांजलिस्थानक्षतान्वधूशिरसिक्षिपेत् यज्ञोमेकामःसमृध्यतामिति। एवंपुनर्द्विवारंकुर्यात् तत्रश्रियोमेकामःसमृध्यतामितिवधूःधर्मोमेकामःसमृध्यतामितिवरः इतिद्वितीयेकुर्यात्। प्रजामेकामःसमृध्यतामितिवधूः यशोमेकामःसमृध्यतामितिवरः । एवंतृतीये कुर्यात्। तूष्णींचतुर्थंचकुर्यात्। सप्तवारंकुर्यादितिकेचित् अन्येतुअक्षतारोपणेमंत्रान्नेच्छंति। एवमक्षतारोपणंकृत्वा—वरः स्वशेखर[2]पुष्पमादायक्षीरघृतेनाप्लाव्यकन्याललाटेतिलकंकुर्यात् । सापिपूर्वोक्तंतिलकंवरस्यकुर्यात्। पुष्पमालांवरकंठेनिदध्यात् ततोकन्याकंठेवरोमालांनिदध्यात्। ततोवधूवरौप्राङ्मुखावुपविश्यअष्टपुत्रीसंज्ञकंवस्त्रद्वयंसकंचुकंमांगल्यतंतुयुक्तंनीराजनपुरःसरंसुवासिनीभिःसमर्प्य। वरः—मांगल्यतंतुनानेनममजीवनहेतुना।कंठेबध्नामिसुभगेसाजीवशरदांशतमितिमंत्रेणकंठेबध्वा कुलदेवतांचस्मृत्वाआयुष्यमितिसूक्तेनभूषणैर्भूषयेत्।ततःविवाहव्रतनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंकरिष्ये।

---

[1] ततःकन्यावरांजलिंद्विरुपस्तीर्यद्विस्तंडुलैरापूर्यद्विरभिघारयेत् । ततोदात्रान्येनवापूरितेपूर्ववत्कन्यांजलौदातापूर्ववद्धिरण्यंनिधायकन्यांजलिं वरांजलौनिधाय पूर्ववत्कन्यातारयत्वित्यादिवाक्यषट्कंवदेत् । ततोवरोयज्ञोमेकामःसमृध्यतामितिकन्यामूर्धन्यक्षताःप्रक्षिपेत् । कन्याभगोमेकामःसमृध्यतामितिवरमूर्धनि । एवंपुनर्द्विवारंकुर्यात् । द्वितीयेधर्मोमेइतिवरःश्रियोमेइतिवधूः । तृतीयेयशोमेइतिवरःप्रजामेइतिवधूः । अथवरोवध्वंजलिंपूर्ववदापूर्यस्वांजलिमन्येनपूरयित्वाउभौवधूपूर्वकंतूष्णीमक्षतारोपणं कुर्यातां । एवंसप्तवारमक्षतारोपणंकार्यं । [2] शिरसिपुष्पं ।

गणानांत्वाआतूनइंद्रक्षुमंतमितिमंत्रद्वयेनहरिद्राखंडपूगीफललड्डुकादिनिधायषोडशोपचारैःसंपूज्य पुनःपूर्वोक्तमंत्राभ्यां वस्त्रप्रांतेवध्वाउत्तरीयांते[1]परस्परंबध्नीयात् । ततोवधूवरौमहालक्ष्मींशचींपार्वतींचप्रणमेतां षोडशोपचारैश्चपूजयेतां । ततोदेशकालसंकीर्तनांतेविवाहव्रतंकरिष्यावहेइतिसंकल्प्य ततःप्रथमदिवसेरोहिणीसोमौभूत्वादाक्षायणीमावाहनादिभिःपूजयेत् । ततोवधूर्मंगलद्रव्यपरिपूर्णानिवायवानिदेवतात्रयोद्देशेनसुवासिनीभ्योदद्यात् । ततोद्विजैराशीर्देया—भद्रं कर्णेभिः० २ द्रविणोदाद्रवि० २ सवितापश्चातात्० ३ नवोनवोभवति० ४ उच्चादिवि० ५ दक्षिणावता० ६ इतिपठेयुः[2] ॥

॥ अथविवाहहोमः । ततोवधूवरौपूर्वोक्तलक्षणांवेदिंमंत्रघोषेणगच्छेतां । वरःस्वयमासनेउपविश्यपश्चिममार्गेणनियमितवाचंवधूमानीय दक्षिणतउपवेश्य आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यप्रतिगृहीतायामस्यांवध्वांभार्यात्वसिद्ध्येगृह्याग्निसिद्ध्येचविवाहहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्य स्थंडिलोपलेपनाद्यग्निप्रतिष्ठापनांतंकर्मकृत्वाप्रत्यगग्नेर्दृषदंसोपलांप्रतिष्ठाप्यप्रागु

---

[1] उत्तरीयवस्त्रप्रांते ।

[2] अथकन्यादानानुक्रमकारिकाः—वधूप्रत्यङ्मुखत्वेचदान संकल्पकीर्तनम् । अष्टवर्गोवधूदानंदक्षिणापारिबर्हकम् । कुक्षिस्पर्शोऽभिषेकश्चमिथःकौतुकबंधने । ऊर्णास्तुकाभ्यांग्रंथीचकुर्याद्यःकेशपक्षयोः । वधूपूर्वंभगोयज्ञःश्रियोधर्मःप्रजायशः । वरपूर्वंतुयज्ञादिः स्यान्मेकामःसमृद्ध्यताम् । एवंषडक्षतारोपान्मंत्रैस्तूष्णींतुसप्तमम् । अन्योन्यपुष्पतिलकौतथान्योन्यस्रगर्पणे । कंचुकीवस्त्रमांगल्यतंतुभूषार्पणंस्त्रियै । गणेशपूजादंपत्योःपटयोर्लड्डुबंधनम् । तथोत्तरीयपटयोस्तद्वद्ग्रंथिनियोजनम् । आशिषार्द्राक्षतारोपोज्ञातिस्त्रीबांधवेष्टया । तंडुलाद्यत्रयेलक्ष्म्यागौर्याः शच्याश्चपूजनम् । द्विजार्चाजीरधान्याकवायमंवेदिकागमः । इत्यनुक्रमकारिकाः ।

दीच्यामुदकुंभंधान्यराशेरुपरिनिधायपल्लवैरपिधायगंधपुष्पैरलंकृत्यउदगग्नेःसप्ततंडुलराशीनुपकल्प्य समिद्द्वयमादायदेश
कालौसंकीर्त्यअस्मिन्विवाहहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानमित्यादिआघारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रिरग्निंपवमानंसकृदग्निंप्र
जापतिंचाज्येन । अर्यमणमग्निंवरुणमग्निंपूषणमग्निंप्रजापातिंचलाजद्रव्येणशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि आज्याधिश्रपणांतंपू
र्ववत्कृत्वाऽऽज्यंलाजैःसहपर्यग्निकृत्वाज्योत्पवनादिस्रुक्स्रुवसंमार्गांतेहविरासादनाभ्यर्चनपूर्वकमाघारांतंकृत्वावध्वान्वार
ब्धः अग्नआयूंषीतितिसृभिःपूर्ववद्धोमत्यागौकृत्वा त्वमर्यमेतिमंत्रस्यवसुश्रुतऋषिः अग्निर्देवतात्रिष्टुप्छंदः आज्यहो
मेवि० ॐ त्वमर्यमाभवसि० कृणोषिस्वाहा अग्नयइदं० । प्रजापतेनत्वदेतामितिपंचभिराज्याहुतीर्हुत्वाप्रत्यङ्मुख
स्तिष्ठन्प्राङ्मुख्यावध्वाउत्तानहस्तांगुष्ठादिप्रदेशमवाङ्मुखेनकरेणगृभ्णामीतिमंत्रस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीत्रिष्टुप्अस्या
वध्वाःपाणिग्रहणेविनियोगः ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वाय० यदेवाइतिमंत्रेणगृहीत्वावध्वाकरौप्रक्षाल्यांजलिंकारयि
त्वास्रुवेणाज्यमादायोपस्तीर्यवधूभ्रात्राभ्रातृस्थानीयेनवातिष्ठताशूर्पस्थाँल्लाजान्मुष्टिपरिमितान्द्विरोप्य स्वयंपात्रस्थानभि
घार्यांजलिस्थानप्यभिघार्य अर्यमणमितिमंत्रस्यवामदेवोर्यमाग्निरनुष्टुप् विवाहप्रधानलाजहोमे० ॐअर्यमणंनुदेवंकन्याअ
ग्निमयक्षत । सइमांदेवोअर्यमाप्रेतोमुंचातुनामुतस्वाहा अर्यम्णेऽग्नयइदं० इतिमंत्रमुक्त्वातिष्ठन्नविच्छिन्नांजलिनांगुल्यग्रै
हावयेत् । ततोदृषदमुपलांचवर्जयित्वाकुंभसहितमग्निं अमोहमस्मिसात्वंसात्वमस्यमोहंद्यौरहंपृथिवीत्वंसामाहमृक्त्वं
तावेहविवहावहै । प्रजांप्रजनयावहैसंप्रियौरोचिष्णूसुमनस्यमानौजीवेवशरदःशतमितिमंत्रेणाग्रेस्वयंगच्छन्वध्वासहप्रद

क्षिणीकृत्यतांप्राङ्मुखीं—इममश्मानमारोहाश्मेवत्वंस्थिराभव । सहस्वपृतनायतोभितिष्ठपृतन्यतइतिमंत्रेणद्वाभ्यामपिपादाभ्यांदृषदमारोप्य । अश्मानमारोहयत्युत्तरतोग्नेर्दक्षिणपादेनेतिकात्यायनः । पुनःपूर्ववत्तदंजलिमुपस्तीर्यलाजावदानंद्विःकारयित्वाभिघार्य वरुणमितिमंत्रस्यवामदेवोवरुणाग्निरनुष्टुप् विवाहप्रधानलाजहोमे० ॐ वरुणंनुदेवंकन्याअग्निमयक्षत । सइमांदेवोवरुणःप्रेतोमुंचातुनामुतस्वाहा । वरुणाग्नयइदंनममेतिमंत्रेणपूर्ववद्धावयित्वा । पुनस्तेनैवमंत्रेणवध्वासहप्रदक्षिणीकृत्यअश्मानमारोप्यपुनर्लाजावदानंपूर्ववत्कारयित्वा । पूषणमितिमंत्रस्यवामदेवः पूषाग्निरनुष्टुप् विवाहप्रधानलाजहोमे० ॐ पूषणंनुदेवंकन्याअग्निमयक्षत । सइमांदेवःपूषाप्रेतोमुंचातुनामुतस्वाहा । पूष्णेग्नयइदं० इतिमंत्रमुक्त्वाहावयित्वापुनर्मंत्रेणप्रदक्षिणीकृत्यअश्मानमारोप्यस्वयंप्रजापतयेस्वाहेतिस्मरन्नवशिष्टाँल्लाजानात्माभिमुखशूर्पकोणेनैवनिरवशेषंतथैवहावयेत् । ततोवधूंपरिगृह्यअग्नेरुदक्सप्ततंडुलराशिष्वपि—इषएकपदीभवसामामनुव्रताभव । पुत्रान्विंदावहैबहूंस्तेसंतुजरदष्टयइतिप्रथमराशिं । ऊर्जेद्विपदीभवेत्यादिनाद्वितीयराशिं । रायस्पोषायत्रिपदीभवेत्यादिनातृतीयराशिं । मायोभव्यायचतुष्पदीभवेत्यादिनाचतुर्थराशिं । प्रजाभ्यःपंचपदीभवेत्यादिनापंचमराशिं । ऋतुभ्यःषट्पदीभवेत्यादिनाषष्ठराशिं । सखासप्तपदीभवेत्यादिनासप्तमराशिं । प्रत्यगादितःक्रमेणाभ्युत्क्रमय्य तस्याःशिरसास्वशिरःसंयोज्यकलशोदकमादायप्रथममात्मशिरःपश्चाद्वधूशिरःपूर्वोक्तशांतिरस्त्वित्यादिपंचदशवाक्यैरभिषिच्य पूर्ववदासित्वा

ज्येनस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य पूर्ववद्धोत्तरीयांतौतूष्णींविस्रस्य रात्रौध्रुवमरुंधतींसप्तर्षींश्चवध्वासहदृष्ट्वाजीवपत्नीप्रजां विंदेयेतिमंत्रंपत्न्यावाचयेत् । ततोवधूर्वाचंविसृजेत् । एतदादिविवाहाग्निंरक्षेत् । इतिविवाहहोमः ॥ ॥ ॥

अथौपासनम् । ततःसायंसंध्यामुपास्यविवाहाग्निंप्रज्वाल्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य अस्मिन्विवाहाग्नौयथोक्तकाले श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंयावज्जीवमुपासनंकरिष्येइतिसंकल्प्यौपासनंकुर्यात् । तत्राऽयंक्रमः—शुद्धदेशेचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणं षोडशांगुलप्रमाणंवाचतुरस्रंप्रत्येकंचतुरंगुलोत्सेधंमेखलात्रययुक्तमायतनंनिर्माय गोमयेनोपलिप्योल्लिख्य तत्रयथालाभं सिकतापद्मपत्रादिसंभारान्निःक्षिप्य तत्रगृह्याग्निंपूर्ववत्प्रतिष्ठाप्यविवाहदिनस्यसायंकालादारभ्यौपासनंकुर्यात् । तदित्थम्—यजमानःकृतसंध्यावंदनआचम्याग्नेःपश्चिमतउपविश्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं औपासनंकरिष्येइतिसंकल्प्य अस्तमानात्पूर्वकालेप्रज्वालिताग्नौचत्वारिशृंगेतिमंत्रेणयज्ञपुरुषमूर्तिंध्यात्वासोदकेनपाणिनाससंतात्प्रदक्षिणंपुनःपुनरुदकमादायत्रिःपरिमृज्यपरिस्तीर्य त्रिरुदकमादायत्रिःपर्युक्ष्य होमद्रव्यंप्रक्षाल्यपात्रेनिक्षिप्यतत्पात्रमग्नेरुत्तरतोनिधायज्वलतादर्भेणावज्वाल्य प्रोक्ष्यतेनैवदर्भेणज्वलतात्रिःपर्यग्निकृत्वातदुल्मुकंनिरस्यापउपस्पृश्य अग्नेःपश्चिमतःकुशानास्तीर्यतत्रसमिधासहहविर्निधायविश्वानिनइत्यादिऋग्भिर्गंधादिभिरग्निमभ्यर्च्यदक्षिणंजान्वाच्यतत्समिधंतूष्णीमग्नौप्रक्षिप्यापउपस्पृश्य समिधिप्रदीप्तायांसत्यांविधूमेप्रज्वलिताग्नौ शतसंख्याकान्प्रस्थधान्यस्यचतुःषष्टितमभागरूपान्वातंडुलान्दक्षिणहस्तेनादायसव्यपाणिंहृदिनिधायांगुल्युत्तरपार्श्वेनसमिन्मूलतोद्व्यंगुलप्रदेशेऽग्नयेस्वाहेतिहुत्वाऽग्न

यइदंनममेतित्यक्त्वा तस्याआहुतेरैशानदेशेपूर्वाहुतेर्भूयसीमाहुतिंप्रजापतिपदंचतुर्थ्यंतंमनसाध्यायन्स्वाहेत्युच्चार्यपूर्वाहुत्यसंसृष्टांहुत्वा पूर्ववदुपविश्यपरिस्तरणंविसृज्यपरिसमूहनपर्युक्षणेकृत्वा अग्नआयूंषीतिमंत्रत्रयस्यशतंवैखानसाऋषयःअग्निपवमानोदेवतागायत्रीच्छंदः अग्न्युपस्थानविनि० अग्नआयूंषि० १ अग्निर्ऋषिः० २ अग्नेपवस्वस्वपा० ३ अग्नेत्वंनइति ४ प्रजापतेनत्वदिति १ तंतुंतन्वन्नित्यस्यवामदेवऋषिःअग्निर्देवताजगतीछंदः उपस्थानेविनियोगः ॐ तंतुंतन्वन्रजसो० । हिरण्यगर्भइत्यस्यहिरण्यगर्भऋषिःप्रजापतिर्देवतात्रिष्टुप्छंदः उपस्थानेविनियोगः । हिरण्यगर्भःसमवर्तता० विधेमएतैर्मंत्रैर्वायव्यदेशेप्रह्वीभूतःकृतांजलिःस्थित्वाग्निंसमीक्षमाणउपस्थाय पुनरुपविश्यन्यूनातिरिक्ततापरिहारार्थंविष्णुंस्मृत्वाऽनेनहोमेनश्रीभगवान्परमेश्वरःप्रीयतामित्युचारयेत् । एवंप्रातरुदयात्पूर्वमग्निप्रादुष्करणंकृत्वाहोमकालेपूर्वांगानिकृत्वा पूर्वसंकल्पितप्रातरौपासनंकरिष्येइत्युक्त्वा सूर्यायस्वाहेतिपूर्वद्रव्येणैवप्रथमाहुतिंहुत्वा सायंकालीनद्वितीयाहुतिवदत्रापिद्वितीयाहुतिंहुत्वापरिसमूहनादिकंकृत्वोपस्थानंकुर्यात् । तत्रायंक्रमः—सूर्योनइतिचक्षुःसूर्योगायत्री सूर्योपस्थानेवि० ॐ सूर्योनोदिवस्पातु० १ उदुत्यं० चित्रंदेवानां० नमोमित्रस्येत्यस्यसौर्योभितपाःसूर्योजगतीसूर्योपस्थाने० ॐ नमोमित्रस्य० एतैश्चतुर्भिर्मंत्रैःपूर्वोक्तप्राजापत्यैश्चोपस्थायाचामेत् । इत्यौपासनम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथगृहप्रवेशनीयहोमः । स्वमंदिरंगच्छन्वधूंयानमारोहयेत्पूषात्वेतोनयतुहस्तगृह्यस्येतिसूर्यासावित्रीऋषिर्देवताचत्रिष्टुपयानारोहणेवि० ॐ पूषात्वेतोनयतु० वदासीतिमंत्रेणगृहंगत्वाश्वशुरगृहेवा । पुनस्तिथ्यादिसंकीर्त्यममाग्नेर्गृह्याग्नित्व

सिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंगृहप्रवेशाख्यंहोमंकरिष्ये इतिसंकल्प्यचत्वारिंशंगेतिध्यात्वा तत्रदेवतापरिग्रहार्थमित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रप्रधानं—सूर्यासावित्रींचतुर्वारमाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्युक्त्वाऽन्वाधाय प्रत्यगग्नेः स्वदक्षिणदेशेप्राग्ग्रीवमुत्तरलोमानडुहंचर्मास्तीर्यतस्मिन्वधूमुपवेश्य पात्रासादनाद्यश्व्यलंकरणपर्यंतंकृत्वा तयान्वारब्धः सन्नृइध्माधानाद्याज्यभागांतंकृत्वा आनःप्रजामितिचतसृणांसूर्यासावित्रीऋषिःसूर्यासावित्रीदेवता प्रथमाजगतीद्वितीयात्रिष्टुप् अंत्येद्वेअनुष्टुभौ गृहप्रवेशनीयप्रधानाज्यहोमेविनि० ॐ आनःप्रजांजनयतु० चतुष्पदेस्वाहा सूर्यासावित्र्या इदं० १ । अघोरचक्षुरपति० ष्पदेस्वाहा सूर्यासावित्र्या० २ । इमांत्वामिंद्रमीढ्वः० कृधिस्वाहा सूर्यासावित्र्याइदं० ३ । सम्राज्ञीश्वशुरेभव० देवृषुस्वाहा सूर्यासावित्र्याइदं० ४ । इतिचतसृभिराज्याहुतीर्हुत्वा । समंजंत्वित्यस्यसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीत्रिष्टुप्हृदयांजनेविनियोगः ॐ समंजंतु० [1](अविधंवाभव० जनयद्बहुपुत्राणिइतितृचा) हुतशिष्टाज्येनस्वस्य वध्वाश्चहृदयेअंक्त्वाहस्तंप्रक्षाल्यस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य पतिपुत्रवतीभिःसुवासिनीभिर्नीराजितोब्राह्मणेभ्यआशिषोगृहीत्वावध्वासहाभिनंदन्नासीत । ततोद्वितीयाहेवधूवरौअप्सरोगंधर्वौभूत्वामहादेवीं तृतीयाहेस्वाहाग्नीभूत्वाकालिकां चतुर्थाहेमानवौभूत्वाशांकरीमावाहनादिभिःपूजयेतां । एवंचतुर्षुदिवसेषुवस्त्रहेमदानसहितंचकृत्वाबहुब्राह्मणभोजनवेदोक्ताशीर्वादपूर्वकंव्रताचरणंकुर्यातााम् । ततस्त्रिरात्रंवधूवरौब्रह्मचारिणावलंकुर्वाणावधःशायिनौअक्षारालवणाशिनौभूत्वा

---

१ अयंचिह्नितोभागःप्राचीनपुस्तकेऽधिकः ।

तिष्ठेताम् । ततोवरःव्रताचरणांतेविवाहकालेवध्वापरिहितंवस्त्रंसत्येनोत्तभिताभूमिरितिसूक्तेनतदर्थविदेब्राह्मणायदत्वा व्रतसंपूर्त्यर्थंब्राह्मणान्भोजयित्वा ॐ स्वस्तीतितानुक्त्वापुनरोंस्वस्तीतितेनैववाचयेत् । अयंगृह्यपरिशिष्टमतेनविवाहप्रयोगः । अर्धरात्रेव्यतीतेतुपरेद्युःप्रातरेवहि । गृहप्रवेशनीयःस्यादितियज्ञविदोविदुरितिसंग्रहे । इतिगृहप्रवेशनीयहोमः ॥ [ अथौपासनप्रायश्चित्तानि—तत्रआचम्यप्राणानायम्यअग्न्यनुगमननिमित्तंप्रायश्चित्तंकरिष्यइतिसंकल्प्याज्यंसंस्कृत्य अयाश्चेतिविमदोयाअग्निःपंक्तिःऔपासनाग्न्यनुगमननिमित्तप्रायश्चित्ताज्यहोमेवि० ॐ अयाश्चाग्ने० भेषजंस्वाहेतिहुत्वा भूर्भुवःस्वःस्वाहेतिसर्वप्रायश्चित्तंहुत्वाविष्णुस्मरणंकुर्यात् । इदंप्रायश्चित्तमेकादशदिनपर्यंतं । अतऊर्ध्वंपुनःसंधानं नित्यानुगृहीतः । स्याद्यदितूपशाम्येत्पत्न्युपवसेदित्येकेइतिसूत्रंच । तदर्थःपत्नीतुतस्माद्धोमकालादारभ्याज्यहोमपर्यंतमुपवसेत् । यजमानोपवासपक्षेपिद्वादशरात्रपर्यंतमिदमेवप्रायश्चित्तम् । कारिकायांतु—औपासनोनुगच्छेच्चेदुपलेपादिपूर्ववत् । आहृत्य श्रोत्रियागारात्प्रतिष्ठाप्यहविर्भुजं । अन्यस्माद्धोमकालात्स्त्रीनाश्नीयाद्यदिवागृही । पर्यूहनादिनाशक्तौसंस्कृत्याज्यंचपूर्ववत् । अयाश्चेत्यनयाहुत्यायथापूर्वंजुहोत्यथेति । गृहीतोपिवायुकोद्वादशरात्रमतिक्रांतस्तदुक्तक्रिययापश्चाद्गृहीतोभवतीतिवृत्तावुक्तत्वात् । उक्तयाक्रिययालाजहोमादियुक्तपुनःसंधानेनेत्यर्थः ॥ ॥ अथान्वाहिताग्नावनुगमनप्रायश्चित्तम् । अन्वाहिताग्नेःप्राग्यागादनुगमनेपूर्ववदग्निमुत्पाद्यसमिधावाधायभूर्भुवःस्वरित्युपस्थायप्रायश्चित्तंहुत्वास्थालीपाकंकुर्यात् ॥ ॥ अत्रकारिकाः—अन्वाधानेकृतेयागात्प्राक्चेदनुगतोभवेत् । प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरन्वादधात्यथ । व्याहृत्या

ज्याहुतिंदद्याद्भूर्भुवःस्वरितीहतु ॥ ॥ अन्वाधानोत्तरंप्रयाणोपपत्तौप्रायश्चित्तं । अन्वाहिताग्नेःप्रयाणोपपत्तौपृथगग्नीन्नयेयुरितिसूत्रं । कारिकायातु—अन्वाधानेकृतेपश्चादग्निमारोपयेद्यदि । तुभ्यंताइत्यृचाहुत्वावह्निमारोपयेत्ततइति ॥ ॥ औपासनहोमलोपेतुकारिकायां—नित्यहोमेत्वतिक्रांतेसंस्कृत्याज्यंचपूर्ववत् । चतुर्गृहीत्वाआज्यंतुमनस्वत्याजुहोत्यथ । आद्वादशदिनादेवमूर्ध्वंविच्छिद्यतेऽनलः । प्रायश्चित्तंतुयत्प्रोक्तमग्नित्यागोपपातके । मनुनातत्प्रकुर्वीततत्तत्कालानुसारतः । त्रैमासिकंगोवधूक्तंत्यक्ताग्नेर्निष्कृतिर्भवेत् । चांद्रायणंवाहोम्यस्यदानंवापिसमाचरेत् । संवत्सरंतुत्यक्त्वाग्निंकुर्याच्चांद्रायणंव्रतमिति । समारूढेसमिन्नाशेपुनराधेयमिष्यते । उपलेपादिकंकृत्वासंस्कृत्याज्यंचपूर्ववत् । स्रुवेणजुहयादाज्यमयाश्चेत्यनयैकयेतिपुनराधेयं ॥ ॥ स्वाग्नावन्ययजनेतुकारिकायाम्—स्थालीपाकेत्वतिक्रांतेयद्यन्याग्नौस्वयंयजेत् । स्वाग्नावन्योयजेद्यद्वाकार्यःपथिकृतश्चरुः । यद्यमावास्यांपौर्णमासींवातीयाद्यदिवान्यस्याग्निषुयजेतयदिवास्यान्योग्निषुयजेतेतिसूत्रं । स्रुचिद्वादशगृहीतेनस्रुवंपूरयित्वाग्नयेपथिकृतेस्वाहेतिजुहुयात् । आज्यंद्वादशकृत्वस्तुगृहीत्वापूरयेत्स्रुचम् । तयावाज्याहुतिःकार्यासापूर्णाहुतिरिष्यते । स्रुवपूर्णाहुतिर्वास्यादिहैकेयाज्ञिकाविदुरितिकारिकायाम् ॥ ॥ अग्नेरायतनाद्वहिःपातेकारिकाकारः—अर्वाक्शम्यापरासात्तुबहिरायतनाद्गते । प्रायश्चित्तसमाप्स्यंतंसमर्थंजीवितुंयदि । इदंतइत्यृचातस्यस्थानेग्निंप्रक्षिपेत्पुनः । आज्याहुतिंचजुहुयाद्व्याहृत्याख्यैश्चपूर्ववत् । इतिप्रायश्चित्तम् ॥ ॥ अथेध्माधानोत्तरंहविर्दोषनिमित्तेकारिकाकारः—इध्माधानेकृतेदुष्टंप्रधानंहविरत्रचेत् । तत्स्थानेजुहुयादाज्यमदुष्टंचजुहोत्यथ । एवंसमाप्ययद्दुष्टं

तदप्सुप्रक्षिपेदपि । अन्वाधानादिकोयागःपुनःकर्तव्यएवतु । पर्वणिव्रतलोपेतुप्रायश्चित्तंचपर्वणि । व्रतलोपेतुयःकुर्यादग्नेव्रतपतेचरुम् । समानतंत्रःकुर्वीतपार्वणेनतुकर्मणा । इतिकारिकायाम् ॥ ॥ पवित्रनाशे—अग्नयेपवित्रवतेस्थालीपाकंपूर्णाहुतिंवा । अकृताग्रयणनवान्नप्राशने अग्नयेवैश्वानरायस्थालीपाकंपूर्णाहुतिंवाजुहुयात् ॥ ॥ हूयमानाहुतिस्कन्दनेप्रायश्चित्तम् । देवांजनमगन्यज्ञस्तस्यमाशीरवतुवर्धतां । भूतिर्घृतेनमुंचतुयज्ञोयज्ञपतिमंहसः । भूपतयेस्वाहा । भुवनपतये स्वाहा । भूतानांपतयेस्वाहा । यज्ञस्यत्वाप्रमयोन्मयाभिमयाप्रतिमयाद्रप्सश्चस्कंदेतिप्रक्षिप्यभूर्भुवःस्वःस्वाहेतिसर्वप्रायश्चित्तं कृत्वाविष्णुंस्मरेत् ॥ ॥ देवताहविर्मंत्रादिविपर्यासे यद्वोदेवेतिप्रायश्चित्तम् । कृत्स्नहविर्दाहेतु—कृत्स्नंदग्धंयदातुस्यात्पुनरुत्पादयेद्धविः । सएवयागःकर्तव्यःपुनर्यागस्तुनेष्यतइतिकारिकायाम् ॥ ॥ चरौश्रप्यमाणेप्राग्दिशितापादुत्सिक्तेप्रायश्चित्तम्—यस्यैयस्यैदिश्युत्सेकस्तस्यैतस्यैदेवतायैस्रुवाहुतिं यदिप्रागग्नये यदिदक्षिणतोयमाय यदिपश्चाद्वरुणाय यद्युत्तरतः सोमायाथ यदिसर्वतएवोत्सिच्येतताभ्यःसर्वाभ्योदेवताभ्यःस्रुवाहुतिंजुहुयात्तमाज्येनाप्यायस्वसमेतुते आप्यायमानोअमृतायसोमेतिद्वाभ्यांमिंदाहुतीच यन्मआत्मनः पुनरग्निरितिजुहुयात् । प्रधानहविषांविपर्यासेमिंदादिगणः । दुष्टंहविरप्सुक्षिप्यमिंदाहुतीचव्याहृतीर्हुत्वाशूर्पादानप्रभृतिहविरंतरमुत्पादयित्वायजेत ॥ ॥ पिंडपितृयज्ञाकरणेतुकात्यायनः—पितृयज्ञात्ययेचैववैश्वदेवात्ययेपिच । भोजनेपतितान्नस्यचरुर्वैश्वानरोभवेदिति । स्थालीपाकत्रयातिपत्तौपुनराधेयम् । इत्यनंतदेवीयेसंस्कारकौस्तुभेऔपासननिमित्तानिप्रायश्चित्तानि ॥ ] ॥ ॥ ॥

अथैरिणीदानं । वधूपिताचतुर्थदिनेप्राणानायम्यतिथ्यादिसंकीर्त्यममोमामहेश्वरलक्ष्मीनारायणप्रीतिद्वारासकलकामनासिद्ध्यर्थंकन्यादानस्यसंपूर्णफलावाप्त्यर्थं वरस्यतत्पितृमात्रादीनांतत्पक्षीयाणांचयथाविभवंवस्त्रादिभिःपूजनंवंशाभिवृद्ध्यर्थमैरिणीपूजनं वरमात्रे[1]ऐरिणीदानंचकरिष्ये । वस्त्रदानांतंकृत्वाऐरिणीपूजनंकरिष्ये तदंगंगणपतिपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्य ऐरिणित्वमुमादेवीमहेशोगिरिजापतिः ।अतस्त्वांपूजयिष्यामिऐरिणींसर्वकामदामितिमंत्रेणषोडशोपचारैरभ्यर्च्य ऐरिणीदानंवरमात्रेकुर्यात् । तत्रमंत्रः—महद्वेणुमयंपात्रंनानापक्वान्नसंयुतम् । सवस्त्रफलतांबूलंदंपतीवंशवर्धनम् । सदक्षिणंसदीपंचशूर्पैःषोडशभिर्युतम् । वरमात्रेप्रयच्छामिकन्यादानस्यसिद्धये । ऐरिण्याख्यंवंशपात्रंपक्वान्नैःपरिपूरितम् । करकैरुद्रसंख्याकैःसुवर्णपरिपूरितैः । एतावदैरिणीरूपंकर्तव्यंकिलसूरिभिः । वंशोवंशकरःश्रेष्ठोवंशोवंशसमुद्भवः । अनेन वंशदानेनश्रीशऋद्धिंकरोतुमे । वंशपात्रमिदंपुण्यंवंशजातसमुद्भवम् । वंशानामुत्तमंदानमतःशांतिंप्रयच्छमे । अनेनवंशपात्रदानेनश्रीलक्ष्मीनारायणौप्रीयेताम् । वंशपात्राणिसर्वाणिमयासंपादितानिवै । उमाकांतायदास्यामिममवंशाभिवृद्धये । वंशवृद्धिकरंदानंसौभाग्यादिसमन्वितम् । वस्त्रेणाच्छादितंपूगफलहेमसमन्वितम् । सर्वपापक्षयकरंनानाद्रव्यैश्चपूरितम् । दानानामुत्तमंदानमतःशांतिंप्रयच्छमे । इतिवंशदानंकृत्वा । ततः कन्यांवरमातुरुत्संगयोरुपवेश्यवरमातरं प्रार्थयेत् । अष्टवर्षात्वियंकन्यापुत्रवत्पालितामया । इदानींतवपुत्रायदत्तास्नेहेनपाल्यतामिति । वधूमात्रादिःतत्पक्षसु

---

[1] वरमातूरजोदोषेतस्याःशुद्धिप्रतीक्षाकरणासंभवेमनसापात्रमुद्दिश्येतिरीत्यातांमनसोद्दिश्यैरिणीदानम् ।

वासिनीभ्योयथाचारंकंचुकीक्षुद्रशूर्पवायनादिदद्यात् । इदंवधूपितृभ्यामभुक्तवद्भ्यामभुक्तवत्यैवरमात्रेकार्यंयथाचारं ज्ञेयम् । इत्यैरिणीदानं । देवकोत्थापनंतुपूर्वोक्तोपनयनप्रकरेणज्ञेयम् ॥ ॥ ॥ ॥

[अथचतुर्थीकर्म॥ आचम्यप्राणानायम्यदेशकालावुत्कीर्त्य परिगृहीतायाअस्यावध्वाःसोमाद्युपभुक्तदोषनिवृत्त्यर्थंव्रतसमाप्तिविहितंचतुर्थीकर्मकरिष्येइतिसंकल्प्य समिद्द्वयमादाय अस्मिन्कर्मण्यन्वाधानंकरिष्ये । अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिचक्षुष्यंतमुक्त्वाअत्रप्रधानं——अग्निंपृथिवींमहांतं वायुमंतरिक्षंमहांतं आदित्यंदिवंमहांतं चंद्रमसंनक्षत्राणिदिशोमहांतं पुनराग्निंवायुंसूर्यंचएताःप्रधानदेवताआज्यद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिचक्षुष्यंतंकर्मकृत्वा महाव्याहृतिभिर्जुहुयात् । स्रुवेणाज्यंगृहीत्वा ॐ भूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहा अग्नयेपृथिव्यैमहतइदं० । ॐ भुवोवायवेचांतरिक्षायमहतेचस्वाहा वायवेंतरिक्षायमहतइदं० । ॐ सुवरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा आदित्यायदिवेमहतइदं० । ॐ भूर्भुवःसुवश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहतेचस्वाहा चंद्रमसेनक्षत्रेभ्योदिग्भ्योमहतइदं० । ॐ अग्नेप्रायश्चित्तिरसित्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसियास्याअपतिघ्नीतनूस्तामस्यामपजहिस्वाहा अग्नयइदं० । ॐ वायोप्रायश्चित्तिरसित्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसियास्याअपुत्र्यातनूस्तामस्यामपजहिस्वाहा वायवइदं० । ॐ सूर्यप्रायश्चित्तिरसित्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसियास्याअपशव्यातनूस्तामस्यामपजहिस्वाहा सूर्यायेदं० । एतामहाव्याहृतयः । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत् । कन्यासुसोमाद्युपभुक्तदोषप्रशांतयेकर्मचतुर्थिकाख्यम् । कुर्वीतपाणिग्रहणाच्चतुर्थेदिनेरजन्याःपरतोविभागे । तच्चतुर्थ्यामपररात्रेद्वादशरात्रेसंवत्सरेवाकार्य । इतिवसिष्ठकल्पेचतुर्थीकर्म ॥

अथवधूप्रवेशः—मासषट्कंविवाहादौव्रतप्रारंभणेनच । जीर्णभांडादिनत्याज्यंगृहसंमार्जनंतथा । ऊर्ध्वंविवाहात्पुत्रस्यतथाचव्रतबंधनात् । आत्मनोमुंडनंचैववर्षंवर्षार्धमेववा । गंगायांभास्करक्षेत्रेमातापित्रोर्मृतेहनि । आधानेसोमपानेचषट्सुक्षौरंविधीयते । अभ्यंगेसूतकेचैवविवाहेपुत्रजन्मनि । मांगल्येषुचसर्वेषुनधार्यंगोपिचंदनम् ॥ ज्योतिर्निबंधे—उद्वाहात्प्रथमेशुचौयदिवसेद्भर्तुर्गृहेकन्यकाहन्यात्तज्जननींक्षयेनिजतनुंज्येष्ठेपतिज्येष्ठकम् । पौषेचश्वशुरंपतिंचमलिनेचैत्रेस्वपित्रालयेतिष्ठंतीपितरंनिहंतिनभयंतेषामभावेभवेत् ॥ निबंधे—विवाहात्प्रथमेपौषेआषाढेचाधिमासिके । नसाभर्तुर्गृहेतिष्ठेच्चैत्रेपितृगृहेतथा ॥ जयंतः—मार्गशीर्षेतथामाघेमाधवेज्येष्ठसंज्ञके । सुप्रशस्तेभवेद्वेश्मप्रवेशोनवयोषिताम् । नववध्वाःप्रवेशस्तुरात्रौशस्ततरःसदा ॥ नारदः—आरभ्योद्वाहदिवसात्षष्ठेवाप्यष्टमेदिने । वधूप्रवेशःसंपत्त्यैदशमेऽथसमेदिने ॥ संग्रहे—विवाहमारभ्यवधूप्रवेशोयुग्मेतिथौषोडशवासरांतात् । ऊर्ध्वंततोऽब्देयुजिपंचमांतादतःपरस्तान्नियमोनचास्ति ॥ नारदः—समेवर्षेसमेमासेयदिनारीगृहंव्रजेत् । आयुष्यंहरतेभर्तुःसानारीमृत्युमाप्नुयात् ॥ प्रयोगरत्ने—वधूप्रवेशःप्रथमेतृतीयेशुभप्रदःपंचमकेतथाह्नि । द्वितीयकेवाथचतुर्थकेवाषष्ठेवियोगामयदुःखदःस्यात् ॥ वृद्धवसिष्ठोपि—षष्ठाष्टमेवादशमेदिनेवाविवाहमारभ्यवधूप्रवेशः । पंचांगसंशुद्धिदिनंविनापिविधावतद्गोचरगेपिकार्यः ॥ लल्लः—स्वभवनपुरप्रवेशेदेशानांविप्लवेतथोद्वाहे । नववध्वागृहगमनेप्रतिशुक्रविचारणानास्ति ॥ मांडव्यः—नित्ययानेगृहेजीर्णेप्राशनांतेषुसप्तसु । वधूप्रवेशमांगल्येनमौढ्यंगुरुशुक्रयोः ॥ ज्योतिःप्रकाशे—वामेशुक्रेनवोढायाःसुखंहानिश्चदक्षिणे । धनधा

न्यंचपृष्ठस्थेसर्वनाशःपुरःस्थिते । नवोढायास्तुवैधव्यंयदुक्तंसंमुखेभृगौ । तदेवंविबुधैर्ज्ञेयंकेवलंतुद्विरागमे । पूर्वतोभ्युदिते शुक्रेप्रयायाद्दक्षिणेपरे । पश्चादभ्युदितेचैवयायात्पूर्वोत्तरेदिशौ ॥ व्यवहारतत्वे—पौष्णात्कभाच्चश्रवणाच्चयुग्मेहस्तत्रये मूलमघोत्तरासु । पुष्येचमैत्रेचवधूप्रवेशोरिक्तेतरव्यर्ककुजेचशस्तः ॥ गर्गः—व्यतीपातेचसंक्रांतौग्रहणेवैधृतावपि । श्राद्धं विनाशुभंनैवप्राप्तकालेपिमानवः । अमासंक्रांतिविष्ट्यादौप्राप्तकालेपिनाचरेत् । इतिवधूप्रवेशः ॥ ॥ ॥

अथद्विरागमनम् । ऋक्षोच्चये—माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने । गुर्वादित्यविशुद्धौस्यान्नित्यंपत्नीद्विरागमः ॥ बादरायणः—नीहारांशुदिनोत्तरादितिगुरुर्ब्रह्मानुराधाश्विनीशक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ । कुंभाजालिगतेरवौ शुभकरेनष्टेगुरौभार्गवेजीवज्ञास्फुजितांदिनेनववधूवेश्मप्रवेशःशुभः ॥ अत्रविशेषः—भार्गवेप्रतिमुखेनववध्वाभर्तृगेहगमनं द्वितीयकं । वर्जयेच्चशुभदंशुभग्रहैःसत्स्थितैरुदितजीवशुक्रयोः । आषाढचैत्राधिकपुष्यमासेसिंहस्थितेज्येगुरुभार्गवास्ते । पाणिग्रहादूर्ध्ववधूप्रवेशमेकादशाहेमुनयोवदंति । विवाहदिनमारभ्यरुद्रावानृपवासराः । द्विरागमनकालेचप्रतिशुक्रोनविद्यते । द्विरागमंप्रकुर्वीतजीवेशुक्रेचसंमुखे । विवाहमारभ्यवधूप्रवेशोयुग्मेतिथौषोडशवासरांतान् । नवात्रऋक्षंनतिथिर्नयोगोनवारशुद्ध्यादिविचारणीयम् ॥ वृत्तशते—नैतेषांप्रतिशुक्रयानमशुभंयेवत्सभृग्वंगिरोभारद्वाजवसिष्ठकश्यपकुलोत्पन्नास्तथात्रेःकुले । दुर्भिक्षेविषयप्लवेप्रतिसितेतस्माद्विवाहेतथातीर्थानांगमनेतथैकनगरेग्रामेचसौम्येतथा । नवोढायाश्चवैधव्यं

यदुक्तंसंमुखेभृगौ । तदत्रविबुधैर्ज्ञेयंकेवलंतुद्विरागमे । मासेधिकेवापिहरौप्रसुप्तेद्वितीयवर्षेगुरुशुक्रमौढ्ये । नवोढजायानवमंदिरेचद्विरागमंसंमुखगेस्तगेवा ॥ इतिद्विरागमनम् ॥ ॥ ॥ ॥

अथविवाहमध्येआशौचेनिर्णयः । विधिवत्कृतेकन्यावरणेत्रिरात्रादिव्रतसमाप्तिपर्यंतंमध्येआशौचप्राप्तौतदपोह्यसद्यःशौचं विधीयतइतिचंद्रिकाकारआह ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः—दानेविवाहेयज्ञेचसंग्रामेदेशविप्लवे । आपद्यपिचकष्टायांसद्यः शौचं विधीयतइति । दातुर्वरस्यकन्यायश्चसद्यःशौचंविवाहइत्यर्थः ॥ ॥ ॥ ॥

अथाशौचेहोमविधिः । तत्रजननशावाशौचयोःऋत्विगादिनासायंप्रातर्होमौकारयेत् । स्वयंचद्रव्यत्यागंकुर्यात् । ऋत्विगाद्यन्याभावेतुआशौचपातात्पूर्वंहोमांतेवक्ष्यमाणप्रकारेणाग्निसमारोपणंकृत्वासूतकनिवृत्तौस्नात्वाकृतनित्यक्रियोऽग्निंप्रतिष्ठाप्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य । ममनित्यहोमातिक्रमजन्यदोषपरिहारार्थंप्रायश्चित्तपूर्वकमतिक्रांतहोमान्करिष्येइतिसंकल्प्य परिसमूहनादिकृत्वाअग्नेःपश्चिमतःसपवित्रेपात्रेआज्यमासिच्यांगारानायतनादुत्तरतोबहिःकृत्यतेष्वाज्यपात्रंनिधायतृणेनावज्वल्यदर्भाग्रद्वयंक्षिप्त्वातेनैवत्रिःपर्यग्निकृत्वोल्मुकंनिरस्य कर्षन्निवोदगुद्वास्यांगारानग्नावतिसृज्य सवितुष्ट्वेतिमंत्रेणसकृद्विस्तूष्णीमेवत्रिरुत्पूयपवित्रेप्रोक्ष्याग्नौप्रहृत्याज्यंपश्चिमतोदर्भेष्वासाद्यस्रुक्स्रुवयोःसंमार्जनंकृत्वाज्यंस्रुवेणस्रुचिचतुर्गृहीत्वा ॐ मनोज्योतिर्जुषतामाज्यंमेविच्छिन्नंयज्ञंसमिमंदधातु । याइष्टाउषसोयाअनिष्टास्ताःसंतनोमिहविषाघृतेनस्वाहा । मनसेज्योतिषइदंइतिहुत्वा नित्यहोमार्थंपूर्ववत्तंडुलान्संस्कृत्य होमवत्परिसमूहनादिसमित्प्रक्षेपणांततंत्रपूर्वकंअतीतकालादारभ्यक्रमेणद्वे

द्वेआहुतीहुत्वातत्कालहोमंचकृत्वाऽग्निंसूर्यंप्रजापतिंचोपस्थायपरिसमूहनाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् । इत्याशौचेहोमविधिः ॥ ॥
अथहोमद्वयसमासप्रयोगः । सोप्यापत्कालेकर्तव्यः । पूर्ववत्सायंकालीनमाहुतिद्वयंहुत्वापर्युक्षणादिकंकृत्वाकिंचित्कालंनिमील्यानिमील्यवापुनःपर्युक्षणादिसमित्प्रक्षेपणांतंकृत्वा तत्रकर्तव्यप्रातराहुतिद्वयमपकृष्यहुत्वोपस्थानंकुर्यात् । एकैवसमित्सायंहोमादावेव ॥ ॥ उपस्थानमंत्राः—ह॒विष्पांत॑म॒जरं॑स्व॒र्विदिं॑दि॒वि॒स्पृश्या॑हु॑तं॒जुष्ट॑म॒ग्नौ । तस्य॒भर्म॑णे॒भुव॑नायदे॒वाधर्म॑णे॒कंस्व॒धया॑पप्रथंत ॥ गी॒र्णंभुव॑नं॒तम॒सापं॑गूढ्हमा॒विःस्वं॑रभवज्जा॒तेअ॒ग्नौ । तस्यं॑दे॒वाःपृ॑थि॒वीद्यौरु॒तापो॑रंणय॒न्नोषं॑धीःस॒ख्येअं॑स्य ॥ दे॒वेभि॒र्न्विषि॒तोय॒ज्ञियै॑भिर॒ग्निंस्तो॑षाण्य॒जरं॑बृ॒हंत॑म् । योभा॒नुना॑पृथि॒वींद्यामु॒तेमामा॑त॒तान॒रोद॑सीअं॒तरिं॑क्षम् ॥ योहोतासी॑त्प्रथ॒मोदे॒वजुं॑ष्टो॒यंस॒मांज॒न्नाज्यै॑नावृणा॒नाः ॥ सपं॑त॒त्रीत्व॒रंस्थाजग॒द्यच्छ्वा॒त्रम॒ग्निरं॑कृणोज्जा॒तवे॑दाः ॥ यज्जा॑त॒वेदो॒भुव॑नस्यमू॒र्धन्नति॑ष्ठोअग्नेस॒हरो॑च॒नेन॑ ॥ तंत्वा॑हेमम॒तिभि॑र्गी॒र्भि॑रु॒क्थैःसय॒ज्ञियो॑अभवोरोद॒सिप्राः ॥ इत्यंतंपठित्वापर्युक्षणाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् ॥
अथगुर्वापदिपक्षहोमः । तत्रप्रतिपदिसायंकालेसमित्प्रक्षेपणांतंपूर्वांगजातंकृत्वाआहुतिप्रमाणेनतंडुलान्पात्रद्वयेप्रतिपात्रंचतुर्दशवारंगृहीत्वाहोममंत्रैःकालेप्रथमपात्रस्थानग्नयेस्वाहेतिसर्वान्जुहुयात् । ततःप्रजापत्यर्थंगृहीतान्प्रजापतिशब्दंचतुर्थ्यंतंमनसाध्यायन्स्वाहेतिहुत्वोपस्थानाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् । एवंद्वितीयायांप्रातःसमित्प्रक्षेपणादिपूर्ववत्कृत्वा सूर्यायस्वाहेतिहुत्वासायंकालीनोत्तराहुतिवद्द्वितीयाहुतिंचहुत्वोपस्थानाद्यंगजातंसकृत्कुर्यात् । पक्षमध्येवापत्तावागामिचतुर्दशीसायंकालीनहोमांतंशेषहोमंसायंसमस्येत् । पूर्ववत्प्रातर्होमांतांश्चप्रातःशेषहोमान्समस्येत् । सर्वथापर्वसायंहोमःप्रतिपत्प्रातर्होमश्चपृ

थगेवहोतव्यौ । अत्रपूर्ववदग्निमभिरक्षेत् । अंतरायनिवृत्तौतुतदारभ्यपूर्ववत्सायंप्रातर्होमानंतरं अयंतेयोनिरित्यस्यविश्वामित्रोग्निरनुष्टुप्अग्निसमारोपणेविनियोगः । अ॒यंते॒योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒यतो॑जा॒तोअरो॑चथाः। तंजा॒नन्न॑ग्न॒आसी॒दाथा॑नोवर्धया॒गिरः॑ । इत्यनेनारणिद्वयेग्निंसमारोपयेत् । अथवातेनैवाश्वत्थसमिधिसमारोपयेत् । यद्वा याते॑अग्ने॒यज्ञिया॑त॒नूस्तये॒ह्यारो॑हा॒त्मामानं॑ । अच्छा॒वसू॑निकृ॒ण्वन्न॒स्मेनर्या॑पु॒रूणि॑ । य॒ज्ञोभू॒त्वाय॒ज्ञमासी॑द॒स्वांयोनिं॒जात॑वेदो॒भुव॒आजाय॑मानः । इतिमंत्रेणपाणीप्रताप्यात्मनिसमारोपयेत् । तत्रप्रादुष्करणकालेऽरणिसमारोपेअरणीनिर्मथ्य प्रत्यवरोहजातवेदःपुनःस्त्वंदे॒वेभ्यो॑ह॒व्यंव॑हनःप्रजा॒नन् । प्र॒जां॑पु॒ष्टिंर॒यिम॒स्मासु॑धे॒ह्यथा॑भव॒यज॑माना॒यशंयोः ॥ इत्यनेनस्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठापयेत् । अश्वत्थसमित्समारोपणपक्षेश्रोत्रियागारादग्निमाहृत्यसंस्कृतेस्थंडिलेप्रतिष्ठाप्यप्रत्यवरोहेतिमंत्रेणतांसमिधंनिदध्यात् । आत्मसमारोपणपक्षेसर्वदास्पृश्यस्पर्शनंजलेनिमज्ज्यस्नानंस्त्रीगमनंचाकुर्वन्मूत्रपुरीषोत्सर्गशौचमकृत्वाचिरकालमतिष्ठंश्चहोमकालेआत्मसमारूढमग्निमुच्छ्वासरूपेणप्रत्यवरोहेतिमंत्रेणलौकिकेग्नौनिदध्यात् । एवंयथाधिकारमग्निंप्रतिष्ठाप्य कालद्वयेएककालेवापूर्ववज्जुहुयात् । इदंसमारोपणं द्वादशरात्रमेवकुर्यात् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथपुरुषस्यैवप्रवासकालेकर्तव्यम् । प्रवासश्चसाग्निकेनद्रव्यार्जनादीष्टकार्यार्थमेवकेवलेनपुरुषेणकार्यःनतुतीर्थयात्राद्यदृष्टार्थकार्यार्थं । तत्रहोमांतेपूर्वोक्तमंत्रैरुपस्थायपुनःप्रवासार्थं अभयंवोभयंमेस्त्विवतिमंत्रेणाग्निमुपस्थायद्विमासमध्यवर्तिकालेषुअन्यतमकालपर्यंतंप्रोष्यपुनःस्वगृहसमीपमेत्यगृहामाबिभीतोपवस्वस्त्येवोस्मासुचप्रजायध्वंमाचवोगोपतीरिषदितिमंत्रेणगृहंनि

रीक्ष्य गृहानहंसुमनसःप्रपद्येवीरघ्नोवीरवतःसुवीरान् । इरांवहंतोघृतमुक्षमाणास्तेष्वहंसुमनाःसंविशानीतिमंत्रेणगृहंप्रविश्य शिवंशग्मंशंयोःशंयोरितिपुनस्त्रिरनुवीक्ष्यहोमकालेउपस्थानांतंकृत्वा ॐ अभयंवोभयंमेस्त्वितिपुनरग्निमुपतिष्ठेत् । ततोज्येष्ठपुत्रमुभाभ्यांपाणिभ्यांपरिगृह्यअंगादंगादितिमंत्रंजपित्वामूर्धानंत्रिराजिघ्रेत् । एतत्पुत्रेप्रतिपुत्रेपिप्रोष्यागतेभवति । अवगतमप्यप्रियंप्रवासादागतंप्रतितदहर्ननिवेदयेयुः । इतिसमारोपणप्रवासौ ॥ ॥ ॥ ॥

अथप्रवासादिषुनिर्णयः । अग्नीननुगतेयस्यहोमकालद्वयंव्रजेत् । उभयोर्विप्रवासोवालौकिकाग्निर्विधीयते । विनाग्निभिर्यदा पत्नीनदीमंबुधिगामिनीम् । अतिक्रमेत्तदाग्नीनांविनाशःस्यादितिश्रुतिः । पत्न्यंतरेथवापत्न्योर्हुताशनसमीपगे । तदापत्नीयथाकाममतिक्रामेन्नदीमपि । पत्नीसीमामतिक्रांतायजमानोगृहेयदि । आहोमाद्यदिनागच्छेत्पुनराधानमर्हति । विहायाग्निंसभार्यश्चेत्सीमामुल्लंघ्यगच्छति । होमकालात्ययेतस्मिन्पुनराधानमिष्यते । अन्यग्रामांतरंगत्वानत्वातिक्रममागतः । सीमांतातिक्रमादेवकेवलंनाशमब्रुवन् । यदासीमामतिक्रामेद्विनामंत्राग्निभिःसह । तत्रनाशःपरेत्वाहुर्भयाद्यानेनदुष्यति । आत्मारोपणपक्षेषुनवान्वारंभणंमिथः । नक्वाप्यारंभणंकेचिल्लौगाक्ष्यस्यनिबंधनात् । कूलद्वयांतरालंतुनदीशब्देनचोच्यते । किंतुतद्देशवर्त्येवजलसंघोनदीभवेत् । अष्टौधनुःसहस्राणिप्रस्रवंतिचयज्जलं । नदीशब्दाभिधेयत्वंतस्येच्छंतीहसूरयः । एकेननामधेयेनशतयोजनगामियत् । उदकंतन्नदीशब्दवाच्यमित्यपरेजगुः । कर्तव्यंपुनराधानंपुनःपरिणयेसति । अग्न्याधेयमुशंतीहकेचिदुद्वाहकर्मणि । लौगाक्षिणानिबंधत्वादुभयंनेतिकेचन । तत्रौपासनमग्निश्चभूयात्पूर्वाग्निहोत्रिणः । पुनःपरि

णयेऽग्नीनामुत्पत्तावीदृशोविधिः । इतित्रिकांडोक्तानि । अन्यान्यपिग्रंथातरेभ्योज्ञेयानि । श्रौतादेशस्तुस्मार्तेज्ञातव्यइति ॥]

अथद्विभार्याग्निसंयोगप्रयोगः । शौनकः—अथाग्न्योर्गृह्ययोर्योगंसपत्नीभेदजातयोः । सहाधिकारसिद्ध्यर्थमहंवक्ष्यामिशौनकः[1] । पृथक्स्थंडिलयोरग्नीसमाधाययथाविधि । तंत्र[2]कृत्वाज्यभागांतमन्वाधानादिकंततः । पूर्वपत्न्यग्नौजुहुयात्तयान्वारब्धआहुतीः । अग्निमीळेपुरोहितंसूक्तेननवकेनच । समिध्येनंसमारोप्यअयंतेयोनिरित्यृचा । प्रत्यवरोहेत्यनयाकनिष्ठाग्नौनिधायच । आज्यभागांतमत्रापिकृत्वारभ्यतदादितः । समन्वारब्धएताभ्यांपत्नीभ्यांजुहुयाद्धुतम् । चतुर्गृहीतमेताभिर्ऋग्भिश्चैवयथाक्रमम् । अग्नावग्निश्चरतिअग्निनाग्निःसमिध्यते । अस्तीदमितितिसृभिःपाहिनोअग्नएकया । ततःस्विष्टकृदारभ्यहोमशेषंसमापयेत् । गोयुग्मंदक्षिणांदद्याच्छ्रोत्रियायाहिताग्नये[3] । पत्न्योरेकायदिमृतादग्ध्वातेनैवतांपुनः । आदधीतान्ययासार्धमाधानविधिनागृहीति ॥ ॥ अथप्रयोगः । देशकालौसंकीर्त्यममद्वाभ्यांभार्याभ्यांसहनिष्पन्नगृह्याग्न्योस्ताभ्यांसहाधिकारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंअग्निद्वयसंसर्गंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनंस्वस्तिवाचनंचकृत्वोदगपवर्गस्थंडिलयोर्गृह्याग्नीप्रतिष्ठाप्यप्रथमेऽग्नौज्येष्ठपत्न्यन्वारब्धोऽन्वाधानंकुर्यात् । अग्निद्वयसंसर्गार्थेप्रथमाग्निहोमकर्मणिदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानं अग्निंनवभिर्ऋग्भिराज्याहुतिभिः शेषेणेत्यादिषट्पात्रासादनादिआज्यभागांते अग्निमीळइतिनवानांमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री अग्निद्वयसंसर्गार्थेप्रथमाग्नौप्रधाना

---

१ अरोगामुद्वहेत्कन्यांधर्मलोपभयात्स्वयम् । कृतेतत्रविवाहेचव्रतांतेतुपरेहनि । २ तंत्रंकृत्वा । ३ श्रोत्रियायकुटुंबिने ।

ज्यहोमेवि० स्वाहांतेनवभिःस्रुवेणनवाहुतीर्जुहुयात् । अग्नयइदंनममेतिसर्वत्रत्यागः । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य अयंतेयोनिरितितमग्निंसमिधिसमारोप्यप्रत्यवरोहेतिद्वितीयाग्नौतंप्रत्यवरोह्यद्वाभ्यामन्वारब्धोन्वाधानंकुर्यात् । अग्निद्वयसंसर्गार्थंप्रथमसंसृष्टद्वितीयाग्नौविहितहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये । चक्षुषीआज्येनेत्यंतेऽत्रप्रधानं अग्निंषड्वारमाज्येनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि पात्रासादनेप्रोक्षणींकुशान्दर्वींस्रुवौप्रणीताज्यपात्रेइध्माबर्हिषीतिपात्राष्टकमासाद्य आज्यसंस्कारांतेकुशैर्दर्वीस्रुवयोःसंमार्गः । आज्यभागांतेदर्व्यांचतुर्गृहीतमाज्यंगृहीत्वापत्नीद्वयान्वारब्धोजुहुयात् । अग्नावग्निरित्यस्यहिरण्यगर्भोग्निरष्टीअग्निद्वयसंसर्गार्थेसंसृष्टाग्नौप्रधानाज्यहोमेविनियोगः ॐ अग्नावग्निश्चरतिप्रविष्टऋषीणांपुत्रोअधिराजएषः । तस्मैजुहोमिहविषाघृतेनमादेवानांमोमुहद्भागधेयंमोअस्माकंमोमुहद्भागधेयंस्वाहा अग्नयइदं० । शिष्टपंचहोमेषुचतुर्गृहीतमाज्यग्रहणं । विनियोगस्त्यागश्चपूर्ववत् । अग्निनाग्निःकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्निद्वयसंसर्गहोमे० ॐ अग्निनाग्निःसमिध्यते० जुह्वास्यःस्वाहा १ । अस्तीदमितितिसृणांविश्वामित्रोऽग्निरनुष्टुप् अंत्येत्रिष्टुभौ अग्नि० होमे० ॐ अस्तीदमधिमंथ० पूर्वथाःस्वाहा २ । ॐ अरण्योर्निहितो० मनुष्येभिरग्निःस्वाहा ३ । ॐ उत्तानायामवभरा० जनिष्टस्वाहा ४ । पाहिनोअग्नइत्यस्यभर्गःप्रगाथोऽग्निर्बृहती अग्नि० होमे० ॐ पाहिनोअग्नएकया० चतसृभिर्वसोस्वाहा ५ । सर्वत्रस्वाहाकारसमकालमाहुतिः । ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यश्रोत्रियायआहिताग्नयेगोमिथुनं दद्यात् । ब्राह्मणान्भोजयेत् । इतिद्विभार्याग्निद्वयसंसर्गप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥

अथार्कविवाहयोगः ॥ कर्तारविवारेहस्तर्क्षेशनिवारेवाऽन्यस्मिन्शुभदिनेवाग्रामात्प्राच्यामुदीच्यांवापुष्पफलसंयुतमर्कंपरीक्ष्य अर्ककन्यादातारमाचार्यंपरिकल्प्यस्नात्वालंकृतवासाःरक्तगंधादिभूषितःअर्कसंनिधिमागत्य आचम्यप्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्य ममतृतीयमानुषीविवाहजन्यदोषपरिहारार्थंतृतीयमर्कविवाहंकरिष्येइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनंकृत्वा । हिरण्येननांदीश्राद्धंकृत्वाआचार्यवरणंकृत्वा अष्टवर्गान्पूजयेत् । दातामधुपर्केणयज्ञोपवीतवस्त्रहस्तकर्णभूषणैःउष्णीषगंधमाल्यादिभिश्चवरंपूजयेत् । वरःस्वशाखोक्तप्रकारेणमधुपर्कंसमाचरेत् । अर्कस्यपुरतस्तिष्ठन्—त्रिलोकवासिन्सप्ताश्वछाययासहितोरवे । तृतीयोद्वाहजंदोषंनिवारयसुखंकुरु । इतिसूर्यंसंप्रार्थ्य छाययासहितंरविंतत्राध्यारोप्यार्ल्लिंगमंत्रैरभिषिच्यवस्त्रमाल्यगंधैस्तत्तन्मंत्रैःसंपूज्य श्वेतवस्त्रेणकार्पासतंतुभिश्चसंवेष्ट्यगुडौदनंनिवेद्यतांबूलंसमर्पयेदिति । ततः—ममप्रीतिकराचेयंमयास्पृष्टापुरातनी । अर्कजाब्रह्मणासृष्टाह्यस्मान्संप्रतिरक्षतु । इतिमंत्रेणार्कंप्रदक्षिणीकृत्य । पुनः—नमस्तेमंगलेदेविनमःसवितुरात्मजे । त्राहिमांकृपयादेविपत्नीत्वंमइहागता । अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायच । वृक्षाणामादिभूतस्त्वंदेवानांप्रीतिवर्धन । तृतीयोद्वाहजंपापंमृत्युंचाशुविनाशय । इतिमंत्रेणप्रदक्षिणीकुर्यात् । ततःकन्यादानपर्यंतविधिंकृत्वा कन्यादाताआदित्यस्यप्रपौत्रींसवितुःपौत्रींअर्कस्यपुत्रीं काश्यपगोत्रां अमुकगोत्रायवरायतुभ्यमहंसंप्रददे । अर्ककन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषिताम् । गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय । इतिमंत्रेणदद्यात् । अंजलयक्षतकर्माणिकृतकंकणपूर्वकम् । यावत्पंचकृतंसूत्रंतावदर्कंप्रवेष्टयेत् । स्वशाखोक्तेनमंत्रेणगायत्र्यावाथवेष्टयेत् । पंचीकृत्यपुनःसूत्रंस्कं

धेबध्नातियततः । बृहत्सामेतिमंत्रेणसूत्ररक्षांप्रकल्पयेत् । अर्कस्यपूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तराग्नेयादिचतुष्टयेषुकुंभानष्टौनिधायप्रतिकुंभंवस्त्रसूत्राभ्यांवेष्टयेत् । गंधहरिद्रायुक्तशीतजलैस्तान्कुंभानापूर्य प्रतिकुंभंनाममंत्रेणमहाविष्णुंपाद्यार्घ्यादिनैवेद्यांतंपूजयेत् । ततःअर्कस्यउत्तरदिग्भागेअर्कभार्ययान्वारब्धः—वरःप्राणानायम्य अस्याःसम्यग्भार्यात्वसिद्ध्यर्थंपाणिग्रहहोमंकरिष्ये । तदंगंस्थंडिलोल्लेखनादिआघारदेवतेआज्येनेत्यंतमुक्त्वा । अत्रप्रधानं बृहस्पतिं अग्निं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिंचैताआज्यद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमित्याद्याघारांतंतंत्रंकृत्वा संगोभिरित्यस्यांगिरसोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् आज्यहोमेवि० ॐ संगोभिरांगिरसोनक्षमाणोभगइवेदर्यमणंनिनाय । जनेमित्रोनदंपतीअनक्तिबृहस्पतेवाजयाशूँरिवाजौस्वाहा बृहस्पतयइदं० १ । यस्मैत्वाकामकामायेत्यस्यवामदेवोग्निरनुष्टुप् आज्यहोमेविनियोगः । ॐ यस्मैत्वाकामकामायवयं सम्राड्यजामहे । तमस्मभ्यंकामंदत्वाथेदंत्वंघृतंपिबस्वाहा अग्नयइदं० २ । ततोव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चहुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य प्रदक्षिणांकृत्वा । मयाकृतमिदंकर्मस्थावरेषुजरायुणा । अर्कापत्यानिनोदेहितत्सर्वंक्षंतुमर्हसीत्युक्त्वा शांतिसूक्तानिपठित्वागोयुग्मंश्रोत्रियायाचार्यायदत्वा इतरेभ्योपिविप्रेभ्योयथाशक्तिदक्षिणांदत्वा धारितवस्त्राणित्यक्त्वान्यानिधारयेत् । त्यक्तवस्त्राणिगुरवेदद्यात् । चतुर्थदिवसानंतरंहोमममग्निंचविसृज्यपुण्याहंवाचयित्वामानुषीं विधिनोद्वहेत् । इत्यर्कविवाहप्रयोगः ॥ ॥ ॥ ॥

[ अथनास्तिक्यादग्नित्यागेप्रयोगः । नास्तिक्याद्द्वादशाहमग्नित्यागेयथाशक्तिसुवर्णदानंमासद्वयपर्यंतंकृच्छ्रंमासचतुष्टयपर्यंतमतिकृच्छ्रंषण्मासपर्यंतंपराकमब्दपर्यंतंमासंपयोव्रतंपूर्णेब्देत्रैमासिकंव्रतंपूर्ववत्संकल्पपूर्वकंकृत्वातीतहोमादिद्रव्यंअग्निहोत्रिणेदत्वा अपराह्णेआयतनोपलेपादिसंभारनिधानांतंकृत्वा इदंतएकं० इतिमंत्रेणव्याहृत्याचाग्निंप्रतिष्ठाप्य समिद्द्वयमादायदेशकालौसंकीर्त्यममनास्तिक्याद्विसृष्टाग्नेःपुनःसंधानांगभूतमन्वाधानंकरिष्यइतिसंकल्प्य अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिआघारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रप्रधानं अग्निंअष्टवारंअग्निंपावकंअग्निंशुचिंअग्निंपथिकृतंअग्निंतंतुमंतंआज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्याद्याघारांतंकृत्वा स्रुवेणाज्यंचतुर्गृहीत्वा त्वमग्नेसप्रथाअसीत्यस्यात्रेयःसुतंभरोग्निर्गायत्रीआज्यहोमे० । योअग्निमित्यस्यकाण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्रीआज्यहोमे० । सत्वंनोअग्नइत्यस्यगौतमोवामदेवोग्निस्त्रिष्टुप् आज्यहोमे सप्ततेअग्ने० मनोज्योति० पुनस्त्वादि० इत्येभिर्मंत्रैरष्टवारंयथाक्रमंतथैवस्रुवेणजुहुयात् । ततःस्रुवेणअग्नयेपवमानाय० अग्नयेपावकाय० अग्नयेशुचये० अग्नयेपथिकृते० अग्नयेतंतुमते० यथादैवतमुद्दिश्यत्यक्त्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य आहिताग्नयेनड्वाहंदक्षिणांदद्यात् ।]

अथाग्निसंसर्गदोषप्रायश्चित्तप्रयोगः । स्वगृह्याग्निरन्यगृह्याग्निनासंसृष्टश्चेदग्निंविभज्यउभौसमिधिसमारोपणंकुर्याताम् । ततःप्रत्यवरोहणंकृत्वापूर्वंहोमात्प्राणानायम्यतिथ्यादिसंकीर्त्य समिद्द्वयमादाय अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिचक्षुषीआज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रप्रधानं अग्निंविविचिंचरुद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिपूर्णपात्रनिधानांतंकृत्वा पवित्रवतिशूर्पेऽग्नये विविचयेत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिचतुरोमुष्टीन्निरुप्यप्रोक्षणाद्याज्यभागांतंकृत्वा अग्नयेविविचयेस्वाहेत्युद्देश्यत्यागौकृत्वास्विष्ट

कृदादिहोमशेषंसमापयेत् । अनुपक्रांतदर्शपूर्णमासश्चेत्पूर्ववदाज्यंसंस्कृत्यस्रुवेणद्वादशवारंस्रुचिगृहीत्वाअग्नयेविविचये स्वाहेतिस्रुवेणैवहुत्वाकालेहोमंचरेत्। पश्चाद्धोताऽग्नयेपथिकृतेजुहुयात्। (शवाग्निनासंसृष्टश्चेदग्नयेशुचयेस्वाहेतिजुहुयात्) पचनाग्निसंसृष्टश्चेदग्नयेसंवर्गायजुहुयात् । वैद्युतेनसंसृष्टश्चेदग्नयेऽप्सुमतेचजुहुयात् । इतिसंसर्गदोषप्रायश्चित्तप्रयोगः ।

अथस्थालीपाकप्रयोगः ॥ यजमानआधानदिनेस्त्रियासहस्नात्वाकृतनित्यक्रियोविधिवत्प्रातरौपासनंकृत्वाचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य ममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपूर्णमासस्थालीपाकेनयक्ष्ये । चत्वारिश्रृंगागौतमोवामदेवोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निमूर्तिध्यानेविनियोगः ॐ चत्वारिशृंगा० सप्तहस्तश्चतु० हुताशनइतिमंत्रैः । तत्रस्थालीपाकहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्येइतिसंकल्प्य समिद्द्वयंगृहीत्वा अस्मिन्नन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निमिध्मेनप्रजापतिंप्रजापतिंचाघारदेवतेआज्येनअग्नीषोमौचक्षुषीआज्येनेत्युक्त्वा अत्रप्रधानं अग्निमग्नीषोमौचरुद्रव्येण शेषेणस्विष्टकृतमग्निमिध्मसंनहनेनरुद्रमयासमग्निंदेवान्विष्णुमग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचैताःप्रायश्चित्तदेवताआज्येनज्ञाताज्ञातदोषनिवर्हणार्थंत्रिवारमग्निमाज्येनव्युत्क्रमादिदोषपरिहारार्थंमरुतआज्येनएवंसांगेनकर्मणाश्वोयक्ष्ये सद्यस्कालेतुसद्योयक्ष्ये । व्याहृतीनांपरमेष्ठीप्रजापतिःप्रजापतिर्बृहतीआन्वाधानसमिद्धोमेविनियोगः । ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदं० समिद्द्वयमग्नावाधायेध्माबर्हिषोश्चसंनहनंकुर्यात् । तत्रायंक्रमः—प्रादेशमात्रान्दर्भान्षट्त्रिंशत्संख्यान्रज्जुकरणार्थंगृहीत्वा तत्रद्वादशदर्भैःसंधित्रयवतींरज्जुंप्रादक्षिण्येनकृत्वा पुनरन्यांरज्जुमेवंकृत्वा तद्रज्जुद्वयमप्रादक्षिण्येनसमस्य पुनरन्यांरज्जुंपूर्ववत्कृत्वा प्रादक्षिण्येनत्रिवृतं

समस्याग्रेप्रदक्षिणंग्रंथिंकृत्वा तांरज्जुमुदगग्रांवितत्य तत्रप्रादेशमात्रान्मुष्टिपरिमितान्दर्भान्निधाय तयारज्ज्वातान्दर्भान्द्विरावेष्ट्यतद्रज्ज्वग्रेणतद्रज्जुमूलंसकृदावेष्ट्यतद्रज्ज्वग्रशेषंपूर्ववेष्टितरज्ज्वाऽधस्तान्निनीयअन्यैर्दर्भैःसहायतनात्पश्चाद्भागेउपरिनिदध्यात् । ततःपूर्ववदन्यांत्रिवृतांरज्जुंकृत्वोदगग्रांवितत्यतत्रपलाशखदिराद्यन्यतमयज्ञियवृक्षद्विप्रादेशप्रमाणपंचदशसमिधात्मकेध्मंप्रागग्रंनिधाय तयारज्ज्वासकृदाबध्य आयतनात्पश्चाद्भागेउपरिनिधाय । ततःउभौस्वशरीरेगंधादिभिरलंकृत्य तद्दिवसेकलहंक्रयविक्रयमनृतंसाहसंबहुभाषणंनृत्यगीतवादित्रव्यसनंपर्यंकशयनंदंतधावनंदध्यन्नंकुलित्थकोद्रवसकुचणकमसूरवृंताकक्षारलवणंमधुमासमाषपरान्नमेतानिवर्जयित्वा घृतमिश्रहविष्यान्नंदिवैवसकृद्भुंजीयाताम् । ततोयजमानः सायंहोमंकृत्वाअग्नेःसकाशादष्टांगुलपरिमितेदेशेपरिसमुह्य प्राच्यामुदगग्रैर्दक्षिणस्यांप्रागग्रैःप्रतीच्यामुदगग्रैरुदीच्यांप्रागग्रैर्दर्भैःपरिस्तृणीयात् । पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरिदक्षिणपरिस्तरणं पूर्वपश्चिमपरिस्तरणाग्रयोरधस्तादुत्तरपरिस्तरणं एवमग्निंपरिस्तीर्यपर्युक्ष्य ब्रह्मचारीभूत्वाधःशयीत । ततःपरेद्युःप्रातर्होमानंतरंअग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मासनार्थमुत्तरतःपात्रासादनार्थंदर्भान्प्रागग्रानास्तीर्यअग्नेरीशानीमारभ्यपूर्ववत्परिमृज्य अग्नेरुत्तरतःपूर्वमास्तीर्णेषुदर्भेषुचरुस्थालींप्रोक्षणपात्रंदर्वींस्रुवंप्रणीतापात्रमाज्यपात्रमिध्मंबर्हिःशूर्पंकृष्णाजिनमुलूखलंमुसलंचैतानिपात्राणिद्वंद्वशउदगपवर्गंप्राक्संस्थंन्यग्बिलमासादयेत् । ततःप्रोक्षणपात्रमुत्तानीकृत्यप्रादेशमात्रेपवित्रेनिधायशुद्धाभिरद्भिःपूरयित्वाअंगुष्ठानामिकाभ्यांतेपवित्रेउदगग्रेअसंसृष्टेगृहीत्वात्रिरुत्पूयपात्राण्युत्तानानिकृत्वाइध्मंविस्रस्यसर्वाणिपात्राणित्रिःप्रोक्षयेत् । ततईशानदिगवस्थितंविप्रंअस्मि

न्कर्मणिब्रह्माणंत्वांवृणेइतितत्पाणिंपाणिनागृहीत्वावृणुयात् । ततोब्रह्मावृतोस्मीत्युक्त्वाप्राङ्मुखोयज्ञोपवीत्याचम्य समस्तपाण्यंगुष्ठोभूत्वाग्रेणाग्निंपरीत्याग्नेर्दक्षिणतउदङ्मुखः स्थित्वा पूर्वमासनार्थंनिहितदर्भेषुदक्षिणभागस्थितमेकंदर्भमंगुष्ठानामिकाभ्यांगृहीत्वा निरस्तःपरावसुरितिमंत्रेणनैर्ऋत्यांनिरस्यापउपस्पृश्य इदमहमर्वावसोःसदनेसीदामीत्युक्त्वोदङ्मुखोवामोपरिदक्षिणपादंसंस्थाप्योपविश्ययजमानेनगंधादिभिरर्चितःसन् ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्माब्रह्मसदनआशिष्यतेबृहस्पते यज्ञंगोपाय(सयज्ञंपाहिसयज्ञपतिंपाहिसमांपाहि)इतिजपित्वा यज्ञावेक्षणेरतोभूयात् । ततोयजमानः अग्नेःपश्चात्प्रणीतापात्रंनिधायतत्रपवित्रेनिधायपूर्वमुत्पूताभिरद्भिःपूरयित्वागंधपुष्पाक्षतान्निक्षिप्याह––ब्रह्मन्नपःप्रणेष्यामीति । ब्रह्माॐभूर्भुवःस्वर्बृहस्पतिप्रसूतइत्युपांशु उच्चैराहॐप्रणयेति । यजमानस्तत्पात्रंमुखसममुद्धृत्य अग्नेरुत्तरतोदर्भेषुनिधाय तेपवित्रे गृहीत्वातत्पात्रमन्यैर्दर्भैराच्छाद्य अग्नेःपश्चाच्छूर्पंनिधायशूर्पेपवित्रेनिधाय पवित्रोपरिअग्नयेत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिमंत्रावृत्त्याचतुरश्चतुरोमुष्टीन्निरुप्याऽग्नीषोमाभ्यांत्वाजुष्टंनिर्वपामीतितथैवनिरुप्यतेपवित्रेनिरुप्तव्रीहीणामुपरिनिधाय उत्पूताभिरद्भिर्निर्वापसंख्ययाप्रोक्ष्य प्राग्ग्रीवेऊर्ध्वलोम्निकृष्णाजिनेउलूखलंनिधाय उलूखलेनिरुप्तव्रीहीनोप्यतान्मुसलेनपत्न्यावहत्यत्रिःफलीकृत्यत्रिःप्रक्षाल्य अविदग्धमबहिर्गतकंचुकंसुशृतंचरुंश्रपयेत् । ततस्तेपवित्रेआज्यपात्रेनिधायतत्पात्रंपुरतः संस्थाप्यतस्मिन्नाज्यमासिच्याऽग्नेरुत्तरतःस्थितांगारान्भस्मनासहाग्नेरुदक्परिस्तरणाद्बहिर्निरुह्य तेष्वाज्यस्थालीमधिश्रित्य ज्वलतादर्भोल्मुकेनावज्वल्यांगुष्ठपर्वमात्रंप्रक्षालितंदर्भाग्रद्वयमाज्येप्रक्षिप्यपुनर्ज्वलतातेनैवदर्भोल्मुकेनचरुणासहाज्यंत्रिः

पर्यग्निकृत्वातदुल्मुकमपास्यापःस्पृष्ट्वा आज्यस्थालींभुविकर्षन्निवोदगुद्वास्यागारान्प्रत्यूह्यापःस्पृष्ट्वा तत्रस्थितमेवाज्यं । सवितुष्ट्वेत्यस्यहिरण्यस्तूपःसवितापुरउष्णिक्आज्यस्योत्पवनेविनियोगः ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेण वसोःसूर्यस्यरश्मिभिरितिमंत्रेणैकवारंद्विस्तूष्णींपवित्राभ्यांप्रागुत्पूय तेपवित्रेअद्भिःप्रोक्ष्यअग्नौ[1]प्रहृत्य अग्नेःपश्चात्परिस्तरणाद्बहिरात्मनोऽग्रेभुवंप्रोक्ष्यभुविबर्हिःसंनहनींरज्जुमुदगग्रांवितत्यतस्यांबर्हिःप्रागग्रमुदगपवर्गंनिबिडमास्तीर्यतत्राज्यपात्रंनिधाय दक्षिणहस्तेनदर्वींस्रुवौगृहीत्वासव्येनकांश्चिद्दर्भानादायसहैवाग्नौप्रताप्यदर्वींनिधाय सव्यहस्तेस्रुवंगृहीत्वादक्षिणेनपाणिनादर्भाग्रैःस्रुवबिलंप्रादक्षिण्येनप्रागादिप्रागपवर्गंत्रिःसंमृज्यस्रुवस्याधस्ताद्दर्भाग्रैरभ्यात्मंबिलपृष्ठंत्रिःसंमृज्यदर्भमूलैःस्रुवदंडाधस्ताद्बिलपृष्ठादारभ्ययावदुपरिबिलंतावत्रिःसंमृज्याद्भिःप्रोक्ष्यस्रुवंनिष्टप्य आज्यस्थाल्याउत्तरतःदर्व्यसंसृष्टंनिधायापःस्पृष्ट्वा तैरेवदर्भैर्दर्वींतद्वत्संमृज्यतांस्रुवस्योत्तरतोनिधायदर्भानद्भिःप्रोक्ष्याग्नावनुप्रहरेत् । ततःशृतंचरुंस्रुवगृहीतेनाज्येनाभिघार्य चरुस्थालीमुदगुद्वास्य अग्न्याज्ययोर्मध्येननीत्वाज्याद्दक्षिणतोबर्हिषिसांतरमासाद्यपुनश्चरुमभिघार्यचरोरुद्धरणायचर्वाज्ययोर्मध्येपात्रांतरंनिधायगंधाक्षतपुष्पैरग्नि[2]मर्चयेत्। विश्वानिनइतितिसृणांवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्यर्चनेविनियोगः ॐ विश्वानिनो० तनूनाम् यस्त्वाहृदाकीरिणा० मृतत्वमश्यामितिऋग्भ्यांप्रतिपादंप्रतिदिशंप्राचीमारभ्याभ्यर्च्य यस्मैत्वंसुकृते० शतेस्वस्तीत्युपस्थायात्मानंचालंकृत्यहस्तंप्रक्षाल्य इध्मबंधनरज्जुंतत्रैवनिधायदक्षिणपाणिने

---

[1] अत्रप्रोक्ष्यपवित्रं ॐ स्कंदायस्वाहेतिमंत्रस्यप्रचुरआचारोदृश्यते। [2] अग्नेरायतनादेकादशांगुलपरिमितेदेशे ।

ध्ममादायत्रिरिध्ममभिघार्य मूलमध्ययोर्मध्यभागेगृहीत्वा अयंतइध्मेत्यस्यवामदेवोजातवेदाअग्निस्त्रिष्टुप् इध्महोमेविनियोगः ॐ अयंतइध्मआत्माजातवेदस्तेनेध्यस्ववर्धस्वचेद्धवर्धयचास्मान्प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येनंसमेधयस्वाहाइतीध्मंहुत्वा जातवेदसेग्नयइदंनममेत्युद्दिश्यत्यजेत् । अथस्रुवेणाज्यंगृहीत्वापरिस्तरणवायव्यकोणतोनीत्वा वायव्यकोणमारभ्याग्नेयीपर्यंतंप्रजापतयेइतिमनसास्मरन्स्वाहेत्युच्चार्य अविच्छेदेनाज्यधारांप्रदीप्तेऽग्नौइध्मदारुणिपरिप्लावयन्हुत्वा पुनराज्यंगृहीत्वापरिस्तरणनैर्ऋत्यकोणतोनीत्वानैर्ऋतीमारभ्यऐशानीपर्यंतंतथैवहुत्वा उभयत्रप्रजापतयइदंनममेत्युद्देशत्यागौकृत्वा स्रुवेणाज्यमादायाग्नयेस्वाहेत्यग्नेरुत्तरपार्श्वपूर्वभागेहुत्वा पुनराज्यंगृहीत्वासोमायस्वाहेत्यग्नेर्दक्षिणपार्श्वेततसमप्रदेशेहुत्वा यथादैवतमुद्देशत्यागौकृत्वा चरुंपूर्वनिहितपात्रांतरेपृथक्कृत्य इदमग्नयेइदमग्नीषोमाभ्यामितिचरुभागद्वयमुत्तरसंस्थमभिमृश्य स्रुवेणदर्व्यामुपस्तीर्य प्रथमप्रधानदेवताचरोर्मध्यादंगुष्ठपर्वमात्रंतिरश्चीनाभिरंगुष्ठमध्यमानामिकाभिरुदगग्राभिर्नखसंस्पर्शमकृत्वाअवदायदर्व्यामोप्य ततःपूर्वभागंप्रागग्राभिस्ताभिस्तथैवावदायदर्व्यामोप्य स्थालीस्थंहविरभिघार्यपश्चाद्दर्वीस्थितमभिघार्यविधूमाल्पज्वालांगाराग्नौ अग्नयेस्वाहेतिआज्यभागयोर्मध्येप्राग्देशेवादर्व्याःपार्श्वेनाच्छादयन्निवहुत्वा अग्नयइदंनममेतित्यक्त्वा पुनस्तथैवगृहीत्वाॐअग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतिपूर्वाहुतेःप्राग्भागेहुत्वाअग्नीषोमाभ्यामिदंनममेतित्यागमुक्त्वादर्व्यामुपस्तीर्यप्रथमहविषउत्तरार्धात्पूर्वावदानतो भूयोऽनूचीनाभिरेवावदायदर्व्यामोप्य । पुनर्द्वितीयहविषस्तथैवावदायस्थालीस्थितमनभिघार्यदर्वीस्थंद्विरभिघार्य यदस्येत्यस्यहिरण्यगर्भोग्निःस्विष्टकृदतिधृतिः

स्विष्टकृद्धोमेविनियोगः ॐ यदस्यकर्मणोत्यरीरिचंयद्वान्यूनमिहाकरं । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्सर्वँस्विष्टंसुहुतंकरोतुमे । अग्नयेस्विष्टकृतेसुहुतहुतेसर्वप्रायश्चित्ताहुतीनांकामानांसमर्धयित्रेसर्वान्नःकामान्समर्धयस्वाहा इत्यग्नेरैशानदेशेजुहुयात् । अग्नयेस्विष्टकृतइदं० । पंचावत्तीतुप्रधानहोमेमध्यात्पूर्वार्धात्पश्चार्धात्त्रिवारमवद्यति स्विष्टकृत्युत्तरार्धाच्चद्विरवद्यति इतरत्सर्वँसमानम् । ततःअग्नेरुत्तरतःस्थितामिध्मबंधनरज्जुंविस्रस्यरुद्रायपशुपतयेस्वाहेतिहुत्वा रुद्रायेदंनममेतित्यक्त्वा अपः स्पृष्ट्वास्रुवेणाज्यमादाय । अयाश्चाग्नेरित्यस्यविमदोअयाळग्निःपंक्तिः प्रायश्चित्ताज्यहोमेविनियोगः ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमयाअसि । अयासावयसाकृतोयासन्हव्यमूहिषेयानोधेहिभेषजंस्वाहा अयसेऽग्नयइदं० । अतोदेवा इत्यस्यमेधातिथिर्देवागायत्रीप्रायश्चित्ताज्यहोमे० ॐ अतोदेवाअवंतुनो० मभिःस्वाहा देवेभ्यइदं० । इदंविष्णुरित्यस्यमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे० ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे० सुरेस्वाहा विष्णवइदं०। व्यस्तसमस्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजप्रजापतयोऽग्निवायुसूर्यप्रजापतयोगायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहत्यःप्रायश्चित्ताज्यहोमे०ॐभूःस्वाहा अग्नयइदं० । ॐ भुवःस्वाहा वायवइदं० । ॐ स्वःस्वाहा सूर्यायेदं० । ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहाप्रजापतयइदं० इतिसप्ताज्याहुतीर्जुहुयात् । ततोब्रह्माऽग्नेर्वायव्यदेशेस्थित्वाएताःसप्ताज्याहुतीर्हुत्वा । मंत्रविपर्यासादिनियतनिमित्ते[१]प्राप्ते । अनाज्ञा

---

[१] सर्वत्रान्वाधानेप्रायश्चित्तीयसप्तमंत्रोहोत्तरंत्रिवारमग्निंमरुतश्चाज्येनेतिक्रमोल्लेखेपिलिखितमुद्रितग्रंथेषु मंत्रविपर्यासादिनियतनिमित्तेप्राप्ते इत्यस्याग्रेपूर्वं यद्वोदेवा० मरुद्भ्यइदंइतिमरुदाहुतिः ततःपरंचानाज्ञातमित्याद्याहुतित्रयमुपक्लृप्तमुपलभ्यते तच्चक्रमविपर्यासकरमित्यस्माभिर्बहुविद्वत्संमत्यातदनुकूलप्रमाणैश्चयथास्थानंनिवेशितंवेदितव्यम् ।

तमितिमंत्रद्वयस्यहिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप् प्रायश्चित्ताज्यहोमे० ॐ अनाज्ञातंयदाज्ञातंयज्ञस्यक्रियतेमिथु । अग्नेतदस्यकल्पयत्वꣳहिवेत्थयथातथꣳस्वाहा अग्नयइदं०।ॐ पुरुषसंमितोयज्ञोयज्ञःपुरुषसंमितः। अग्नेतदस्यकल्पयत्वꣳहिवेत्थयथातथꣳस्वाहा अग्नयइदं० । यत्पाकत्रेत्यस्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप् प्रायश्चित्ताज्य० ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्यमन्वतेमर्त्यासः । अग्निष्टद्धोताक्रतुविद्विजानन्यजिष्ठोदेवाꣳऋतुशोयजातिस्वाहाअग्नयइदं० यद्वोदेवाअभितपामरुतत्रिष्टुप् । प्रायश्चित्ताज्यहोमे० ॐ यद्वोदेवाअतिपातयानिवाचाचप्रयुतीदेवहेळनम् । अरायोअस्माँअभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा मरुद्भ्यइदं० । ततःस्कन्नभिन्नाद्यनियतनिमित्तेसतिवक्ष्यमाणप्रकारेणतत्तत्प्रतिपदोक्तजपहोमान्कुर्यात्।(ततोयजमानःसर्वकर्मप्रपूरणींभद्रद्रव्यदांपूर्णाहुतिंजुहुयात्। यथा—स्रुवेणाज्यंगृहीत्वास्रुचंसमविलांपूरयित्वातस्यांस्रुवमूर्ध्वविलंनिधायपुनरधोनिक्षिप्यस्रुवाग्रेकुसुमाक्षतंनिधायसव्यपाणिनास्रुक्स्रुवमूलेधृत्वादक्षिणपाणिनास्रुवंशंखमुद्रयागृहीत्वातिष्ठन्समपादऋजुकायःस्रुवाग्रेन्यस्तदृष्टिःप्रसन्नात्मा )। समुद्रादूर्मिरित्येकादशर्चस्यवामदेवआपस्त्रिष्टुबंत्याजगतीपूर्णाहुतिहोमेविनियोगः । ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँउदारदुपांशुनासममृतत्वमानट् । घृतस्यनामगुह्यंयदस्तिजिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः । वयंनामप्रब्रवामाघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः । उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानंचतुःशृंगोवमीद्गौरएतत् । चत्वारिशृंगात्रयोअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोअस्य । त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्याँआविवेश । त्रिधाहितंपणिभिर्गुह्यमानंगविदेवासोघृतमन्वविंदन् । इंद्रएकंसूर्यएकंजजानवेनादेकंस्वधयानिष्टतक्षुः । एताअर्षंतिहृ

द्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे । घृतस्यधाराअभिचाकशीमिहिरण्ययोवेतसोमध्यआसाम् ॥ १ ॥ सम्यक्स्रवंति
सरितोनधेनाअंतर्हृदामनसापूयमानाः । एतेअर्षँत्यूर्मयोघृतस्यमृगाइवक्षिपणोरीषमाणाः । सिंधोरिवप्राध्वनेशूघनासो
वातप्रमियःपतयंतियह्वाः । घृतस्यधाराअरुषोनवाजीकाष्ठाभिंदन्नूर्मिभिःपिन्वमानः । अभिप्रवंतसमनेवयोषाःकल्या
ण्यः १ स्मयमानासोअग्निम् । घृतस्यधाराःसमिधोनसंतताजुषाणोहर्यतिजातवेदाः । कन्याइववहतुमेतवाउअंज्यंजा
नाअभिचाकशीमि । यत्रसोमःसूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराअभितत्पवंते । अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणा
निधत्त । इमंयज्ञंनयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवंते । धामंतेविश्वंभुवनमधिश्रितमंतःसमुद्रेहृद्यं१तरायुषि । अपाम
नीकेसमिथेयआभृतस्तमश्याममधुमंतंतऊर्मिँस्वाहेतिपठन्यवपरिमितधारांसंततांदर्व्यग्रेणसावशेषंहुत्वा अग्नयइदंनममे
तित्यक्त्वा । विज्योतिषेत्यस्यजारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप् अवशिष्टहोमे० ॐ विज्योतिषाबृहताभात्यग्निराविर्विश्वानिकृणुतेम
हित्वा । प्रादेवीर्मायाःसहतेदुरेवाःशिशीतेशृंगेरक्षसेविनिक्षेस्वाहा इत्यनेनावशिष्टंसर्वँहुत्वा अग्नयइदंनममेत्युक्त्वाविश्वे
भ्योदेवेभ्यःस्वाहेतिसंस्रावंहुत्वाविश्वेभ्योदेवेभ्यइदंनममेतित्यजेत् ( ततस्तंडुलकणान्समिद्र्भशकलान्यद्भिःप्रोक्ष्यअग्नौप्रह
रेत् । पूर्णाहुत्याद्येतदंतंसमूलंप्रयोगपारिजातकारेणलिखितमपीदंशिष्टानकुर्वँति । अथावभृथस्थानीयंपूर्णपात्रजलेनमार्ज
नंकुर्यात् । तद्यथा ) । ततःपूर्वासादितप्रणीतापात्रंआस्तीर्णेबर्हिषिदक्षिणपाणिनानिधाय तत्रगंगादिपुण्यनदीःस्मृत्वाद
क्षिणपाणिनास्पृशन् । ॐ पूर्णमसिपूर्णँमेभूयाःसुपूर्णमसिसुपूर्णँमेभूयाःसदसिसन्मेभूयाःसर्वमसिसर्वँमेभूयाः । अक्षितिर

सिमामेक्षेष्ठाःइतिजपित्वाकुशाग्रैःप्रागादिपंचदिक्षुप्रादक्षिण्येनजलमंत्रैर्यथालिंगंसिंचेत् । प्राच्यांदिशिदेवाऋत्विजोमार्जयंतां दक्षिणस्यांदिशिमासाःपितरोमार्जयंतां अपःस्पृष्ट्वा प्रतीच्यांदिशिग्रहाःपशवोमार्जयंतां उदीच्यांदिश्यापओषधयोवनस्पतयोमार्जयंतां ऊर्ध्वायांदिशियज्ञःसंवत्सरःप्रजापतिर्मार्जयतामित्येकश्रुत्यापठन्प्रतिदिशंसिक्त्वा स्वशिरसिकुशाग्रैर्मार्जयेत् । आपोअस्मानित्यस्यदेवश्रवाआपस्त्रिष्टुप् मार्जनेविनियोगः ॐ आपोअस्मान्मातरःशुंधयंतुघृतेननोघृतप्वः पुनंतु । विश्वंहिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरुदिराभ्यःशुचिरापूतएमि । इदमापइत्यस्यासिंधुद्वीपआपोनुष्टुप् मार्जनेविनियोगः ॐ इदमापःप्रवहत० शेपउतानृतम् सुमित्र्यानआपओषधयःसंतु एतैर्मंत्रैर्मार्जयित्वा निर्ऋतिदेशेदुर्मित्र्यास्तस्मैसंतुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मस्तंहन्मीतिकुशाग्रैरपःसिंचेत् । ततोयजमानस्यवामपार्श्वस्थितपत्न्यंजलौप्रणीतापात्रस्थजलम्—माहंप्रजापरासिचंयानःसयावरीस्थन समुद्रेवोनिनयानिस्वंपाथोअपीथ । इत्येकश्रुत्योच्चारितेनप्रत्यङ्मुखंनिषिच्य तदंजलिस्थजलैःपापनिरसनाय आत्मानंयजमानंतत्पत्नींचप्रोक्षेत् । पत्नीतज्जलंबर्हिषिनिषिंचेत् । ( अथवायजमानएवस्ववामपाणिमुत्तानंबर्हिषिनिधायतत्रदक्षिणपाणिनापूर्णपात्रमादायमाहंप्रजामित्यनेनतज्जलंप्रत्यङ्मुखंनिषिंच्यताआपःसमुद्रंगच्छंतीतिध्यात्वापाणिस्थजलैरात्मानंपत्नींचप्रोक्षेत् । ततः ) यजमानःअग्नेर्वायव्यदेशेस्थितःसंस्थाजपेनोपतिष्ठेत । तद्यथा अग्नेत्वंनइतिचतसृणांगौपायनालौपायनावाबंधुःसुबंधुःश्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्चैकर्चाऋषयः अग्निर्देवताद्विपदाविराट्छंदः अग्न्युपस्थानेविनियोगः ॐ अग्नेत्वंनोअंतम० वसुरग्निर्वसुःश्रवा० सनोबोधिश्रुधीहव० तंत्वाशोचिष्ठदीदिवः० सखिभ्यः

ॐ इत्युपस्थायपरिस्तरणंविसृज्यपर्युक्ष्यपरिषिंच्यअलंकृत्य [ संपूज्य ततःकर्ताचारांचमानस्तोकेइत्यस्यकुत्सोरुद्रोजगतीविभूतिग्रहणेविनियोगः। ॐ मानस्तोकेतनयेमानआयौमानोगोषुमानोअश्वेषुरीरिषः । वीरान्मानोरुद्रभामितोवधीर्हविष्मंतःसदमित्त्वाहवामहे इतिस्रुवबिलपृष्ठेविभूतिंगृहीत्वात्र्यायुषमित्यादिशतायुषमित्यंतंललाटेकंठेनाभ्यांदक्षिणस्कंधेवामस्कंधेशिरसिधारयेत्। ततः ॐ चमेस्वरश्चमेयज्ञोपचतेनमश्च । यत्तेन्यूनंतस्मैतउपयत्तेतिरिक्तंतस्मैतेनमः । अग्नयेनमः ॐ स्वस्ति ॥ श्रद्धांमेधांयशःप्रज्ञांविद्यांबुद्धिंश्रियंबलं । आयुष्यंतेजआरोग्यंदेहिमेहव्यवाहन । देहिमेहव्यवाहनोन्नम इतिपठित्वाब्रह्मापितत्रैवस्थित्वाएवमेवोपतिष्ठेत् । ततो ) घृतादिहिरण्यंचब्राह्मणायदक्षिणांदत्वायस्यस्मृत्येतिविष्णवर्पणंकुर्यात्। इतिपौर्णमासस्थालीपाकप्रयोगः॥ ॥ ॥ ॥

अथदर्शस्थालीपाकप्रयोगः। यजमानःसायंहोमंकृत्वापूर्ववद्व्रतनियमपरिस्तरणादिकंकृत्वापरेद्युःप्रातर्होमंविधायप्रणीता प्रणयनांतेअग्नयेत्वाजुष्टंनिर्वपामिइंद्राग्निभ्यांत्वाजुष्टंनिर्वपामीतिपूर्ववन्निरुप्यप्रोक्षणादिहविरवदानांतंकृत्वा अग्नयेस्वाहा इंद्राग्निभ्यांस्वाहेतिहुत्वायथादैवतमुद्देशत्यागौकृत्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमापयेत्। इतिदर्शस्थालीपाकप्रयोगः॥ ॥

अथपिंडपितृयज्ञः। प्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यपितृतृप्तिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपिंडपितृयज्ञंकरिष्येइतिसंकल्प्य आग्नेय्यभिमुखोऽग्निंध्यात्वा अग्नेराग्नेयींदिशमारभ्याप्रदक्षिणमेवाग्निंपरिसमुह्यप्राग्दक्षिणाग्रैर्दर्भैःपरिस्तीर्यपर्युक्ष्य अग्नेरीशान्यां

---

१ विभूतिधारणमाचारप्राप्तमितिप्रमाणविदः।

वायव्यांवाप्राग्दक्षिणाग्रान्दर्भानास्तीर्य तेषुस्थालींशूर्पंस्फ्यमुलूखलंमुसलंस्रुवंध्रुवांकृष्णाजिनंसकृदाच्छिन्नंवर्हिरिध्मंमेक्षणंकमंडलुमेकैकशःप्राग्दक्षिणापवर्गाणिपात्राणिसादयेत् । शूर्पेस्थालींनिधायव्रीहिपूर्णांनिमृज्यशूर्पस्थान्व्रीहीन्शकटेनिधायस्थालीस्थान्व्रीहीन्कृष्णाजिनेउलूखलेकृत्वापत्न्यावघात्यविवेचनंसकृत्फलीकृतान्सकृत्प्रक्षाल्याऽग्नौचरुंश्रपयेत् । अग्नेरुल्मुकंपृथक्कृत्वाप्रदीप्तंतत् । येरूपाणिप्रतिमुंचमानाअसुराःसंतःस्वधयाचरंति । परापुरोनिपुरोयेभरंत्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्वस्मात्इतिमंत्रेणअग्नेराग्नेयींदिशंनिनयेत्तदुल्मुकं । पूर्ववद्दर्भैःपरिस्तीर्यतस्मादर्वाक् अपहताअसुरारक्षांसिवेदिषदइतिमंत्रेणस्फ्येनलेखामाग्नेयीसंस्थास्पष्टामुल्लिखेत् । तांचलेखामभ्युक्ष्यपूर्वासादितसकृदाच्छिन्नवर्हिषावस्तीर्य आज्यंक्वचित्पात्रेनिषिंच्य तेनैवपात्रेणध्रुवायांनिधायध्रुवाज्येनचरुमभिघार्य अग्नेरुत्तरतोदक्षिणतोवाउद्वास्यपुनरभिघार्याऽग्नेःपश्चिमदेशेआस्तीर्णेवर्हिषिनिदध्यात् । ध्रुवामंजनाभ्यंजनेकशिपूपवर्हणानिचाग्नेर्दक्षिणतःसादयित्वाग्निंप्रज्वाल्य प्राचीनावीतीभूत्वातमिध्मंतूष्णीमग्नौहुत्वास्रुवेणध्रुवाज्यंगृहीत्वा आज्येनमेक्षणमुपस्तीर्यमेक्षणेनचरुंद्विरवदायस्रुवेणचरुमभिघार्यावदानंप्रत्यभिघार्य सोमायपितृमतेस्वधानमइतिमंत्रमुच्चार्याग्नौहुत्वासोमायपितृमतइदंनममेतित्यक्त्वा पुनस्तथैवावदायअग्नयेकव्यवाहनायस्वधानमइतिमंत्रमुच्चार्याग्नौहुत्वा अग्नयेकव्यवाहनायेदंनममेतित्यक्त्वा यज्ञोपवीतीभूत्वामेक्षणमग्नौप्रहृत्यप्राचीनावीतीसन् तांलेखांआदौमध्येअंतेचशुंधंतांपितरःशुंधंतांपितामहाःशुंधंतांप्रपितामहाः इतित्रिरुदकेनपरिषिच्य तस्यांपितृतीर्थेन एतत्तेअस्मत्पितःअमुकशर्मन्नमुकगोत्रवसुरूपयेचत्वामत्रानुएतत्तेअस्मत्पित्रेऽमुकशर्मणेऽमुकगो

त्रायवसुरूपायअयंपिंडःस्वधानमः येचत्वामत्रानुगच्छंतितेभ्यश्चेतिपित्रेपिंडं पितामहप्रपितामहयोरपिरुद्रादित्यरूपयोः
पिंडौ आदिमध्यांतेषुदत्वा ततःपिंडान्सकृदत्रपितरोमादयध्वंयथाभागमावृषायध्वमित्यनुमंत्रयेत् । ततःस्वपाणिंपिंड
वर्हिर्मूलेनिमृज्यसव्यपार्श्वेनव्यावृत्त्ययथाशक्तिवायुंनियम्यतथैवपर्यावृत्य अमीमदंतपितरोयथाभागमावृषायीषतेतिपुन
स्ताननुमंत्र्यपिंडशिष्टचरोःकिंचिदादायअवघ्रायत्यजेत् । ततोहस्तंप्रक्षाल्यशुंधंतामित्यादिमंत्रैःपिंडेषुपितृतीर्थेनजलंनि
षिंचेत् । ततःपिंडेषुदर्भेणपितृतीर्थेनतैलंअस्मत्पितःअमुकशर्मन्नमुकसगोत्रवसुरूपाऽभ्यंक्ष्वेति एवंपितामहप्रपितामहयो
रपिसंबुद्ध्यंतेअभ्यंक्ष्वेत्यंतंचोक्त्वादत्वा तथैवसंबुद्ध्यंतानिनामगोत्राण्युक्त्वाअंक्ष्वेतिचोक्त्वातथैवअंजनंदद्यात् । अथवा
सःवस्त्रांतंसूत्रच्छेदंवापंचाशद्वर्षाधिकत्वेदातुःस्वप्रकोष्ठस्थंलोमवा । एतद्वःपितरोवासोमानोतोऽन्यत्पितरोयुंग्ध्वमित्यने
नप्रत्येकंपिंडेषुसमर्प्यपूजयित्वा । नमोवःपितरइषेनमोवःपितरऊर्जेनमोवःपितरःशुष्मायनमोवःपितरोघोरायनमोवः
पितरोजीवायनमोवःपितरोरसाय । स्वधावःपितरोनमोवःपितरोनमएतायुष्माकंपितरइमाअस्माकंजीवावोजीवंतइहसं
तःस्याम । मनोन्वाहुवामहेनाराशंसेनसोमेन पितृणांचमन्मभिः। आतएतुमनःपुनःक्रत्वेदक्षायजीवसे ज्योक्चसूर्यंदृशे । पुन
र्नःपितरोमनोददातुदैव्योजनः जीवंव्रातंसचेमहि । इत्यनेनपिंडानुपतिष्ठेत । अथपिंडस्थान्पितृन्याम्यांदिशमनुव्रजन्
परेतनपितरःसोम्यासोगंभीरेभिःपथिभिःपूर्विणेभिः । दत्वायास्मभ्यंद्रविणेहभद्रंरयिंचनःसर्ववीरंनियच्छतइत्यनेनोद्वास
येत् । अथाऽग्निंप्रत्येयात् । अग्नेतमद्याश्वंनस्तोमैःक्रतुंनभद्रंहृदिस्पृशम् । ऋध्यामातओहैः । यदंतरिक्षंपृथिवीमुतद्यां

यन्मातरंपितरंवाजिहिंसिम । अग्निर्मातस्मादेनसःप्रमुंचतुकरोतुमामनेनसम् । वीरंमेदत्तपितरइतिजघ्न्यापिंडानांमध्यमं
पिंडपत्नी—आधत्तपितरोगर्भंकुमारंपुष्करस्रजम् । यथायमरपाअसदितिप्राशयेत् अप्स्वतिप्रणीतेवाइतरौपिंडौप्रक्षिपेत् ।
अन्नारुचिमान्महारोगग्रस्तोवापिंडावुभौप्राश्नीयात् । रोगान्मुक्तिर्मृतिर्वाऽस्यभवेत् । उपयुक्तावशिष्टपात्राणांद्विर्द्वि
रुत्सर्गः । द्वंद्वातिरिक्तमेकंतृणेनसहोत्सृजेत् । इतिपिंडपितृयज्ञः ॥ ॥ ॥
अथव्यतिषंगप्रयोगः ॥ योऽनाहिताग्निरौपासनाग्निमान्मृतपितृकःसवक्ष्यमाणंपार्वणश्राद्धंपिंडपितृयज्ञंचव्यतिषंगेणैवकु
र्यात् । व्यतिषंगोनामद्वयोर्विच्छिद्यविच्छिद्यसहानुष्ठानात्मकस्तंत्रविशेषः । पार्वणश्राद्धंपिंडपितृयज्ञंचव्यतिषंगेणकरिष्ये ।
इध्माधानात्प्राक्तनपिंडपितृयज्ञंकृत्वाब्राह्मणपच्छौचाद्याच्छादनांतमग्नौकरणपूर्वकंसर्वंश्राद्धंकुर्यात् । पुनरिध्माधानादिपि
तृयज्ञःआमेक्षणानुप्रहरणं अथपार्वणमन्नानुज्ञानात् अथोभयशेषंक्रमेणसमापयेदितिक्रमः । आहिताग्निस्तुसर्वाधानी
अर्धाधानीवादक्षिणाग्नावेवपिंडपितृयज्ञंकृत्वापार्वणश्राद्धंपृथगेवकुर्यात् ॥ इतिव्यतिषंगप्रयोगः ॥ ॥ इतिश्रीमदनंत
देवसुतापदेवतनयेनानंतदेवेनविरचितःसंस्कारकौस्तुभःसमाप्तिमगमत् ॥ ॥ ॥ ॥

अयं ग्रंथो मुंबय्यां श्रीतुकारामजावजीश्रेष्ठिभिः स्वीये निर्णयसागराख्यमुद्रणालयेंऽकयित्वाप्रकाशितः । शके १८३५, सन १९१३.
Published by Tukaram Javaji Proprietor Nirnaya Sagar Press, 23 Kolbhat Lane, Bombay.

Printed by R. Y. Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 23 Kolbhat Lane, Bombay,

इतिसंस्कारकौस्तुभः समाप्तः ॥

3080

# ॥ अथ कुंडरत्नावलीप्रारंभः ॥

प्रकाशक खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स
संस्कृत बुकडिपो
कचौड़ी गली, वाराणसी

# प्रास्ताविकम् ।

२०८०

२०८०

यज्ञेन यज्ञमयजन्त पुरापि देवा यज्ञार्थमेव निगमागमसंप्रवृत्तिः ।
ते कुण्डमण्डपविवेकमृते न साध्यास्तस्मादयं परिकरोऽखिलकुण्डसिद्ध्यै ॥

इह जगति निजनिजप्राक्तनप्रारब्धायत्तैर्भ्रमिमत्संसारचक्रपरिवर्तपरवत्त्वेन संप्राप्तैस्त्रैवर्णिकैर्विशेषतश्च ब्राह्मणैर्निश्रेयससाधनीभूतपुरुषार्थचतुष्टयसिसाधयिषुभिरखिलजीवातुत्वेन धर्मएव समादरणीयः । धर्मव्यवस्थायां चैहिंकामुष्मिकफलदत्वेन निर्णीताः श्रौतस्मार्तयज्ञा एव धर्मसेतुबन्धैकबद्धपरिकरैर्महर्षिभिरिति निर्विवादमेव । तत्र श्रौतकाण्डमग्न्याधानादिचयनान्तं स्वतन्त्रमेवैतरेयब्राह्मणाश्वलायनश्रौत्रसूत्रादिषु शुक्लयजुर्वाजसनेयिसंहितायामप्यामूलान्तमखिलं व्यक्तं दरीदृश्यते । इष्टापूर्तादिकर्मकाण्डं श्रुतिनिर्दिष्टमपि विशेषतः स्मृत्याद्युपजीवित्वात्स्मार्तत्वेन जेगीयते । श्रौतस्मार्तोभयविधमपि यज्ञजातमुपक्रम्य श्रीभगवद्गीतासु तत्रतत्र ‘यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र’ ‘यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः’ ‘यज्ञो दानं तपश्चैव’ ‘सह यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा’ ‘यज्ञाद्भवति पर्जन्यः’ ‘इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः’ इत्यादिप्रमाणैर्यज्ञमेव प्रशशंस श्रीभगवान् । तत्सिद्धं निखिलैर्निश्रेयसार्थिभिर्यज्ञा एवाचरणीया इति । यज्ञप्रवृत्तावपि तत्रावश्यकमङ्गोपाङ्गद्रव्यदेवताग्न्यायतनकुंडवेदिकास्थंडिलमण्डपाद्यारादुपकारकज्ञानमतीवावश्यकम् । यदंतरा न यज्ञादीनां प्रतिपत्तिः । यद्यपि कुण्डादिविषयप्रतिपादका

निबन्धाः कुण्डार्कादयः प्राचीनाः सन्ति तत्र च केचन वृत्तसाध्याः कतिपये चतुरस्रसाध्यास्तथापि तेषां दुरूहत्वात्सर्वैर्विशेषतश्चाल्पधीबलैर्नहि ते यथावदाकलयितुं शक्याः सन्ति । यथावदनवगमादङ्गवैकल्ये तावन्न ह्याचरितकर्मणां फलसिद्धिः किंत्वनर्थापत्तिरेवापतेत् । तथाच वसिष्ठसंहितायाम्—अनेकदोषदं कुण्डमत्र न्यूनाधिकं यदि । तस्मात्सम्यक्परीक्ष्यैव कर्तव्यं शुभमिच्छता ॥ इति ॥ क्रियासारे—न्यूनाधिकप्रमाणं यत्कुण्डं कुर्युरमेखलम् । शृङ्गाररहितं यच्च यजमानविनाशकृत् ॥ इति ॥ इत्याद्यनेकशो दोषा यथोक्तमानन्यूनाधिक्ये तत्रतत्र निर्दिष्टाः सन्ति । अतः सुकुमारमतीनामपि कुण्डमण्डपादिज्ञानायायं समुद्यम आवश्यकः । वृत्तचतुरस्रोभयविधयोर्वृत्तपद्धतिरेव ज्यायसीति महाशयैः कुण्डार्ककारादिभिः प्रतिपादितमदोनाम्निग्रन्थे । सैवैतद्ग्रन्थप्रणेत्रोरीकृता । सत्सु नैकशः कुण्डप्रतिपादकग्रन्थेषु कुतोऽयं ग्रन्थप्रणयनाडम्बर इति न शंक्यम् । किंचिज्ज्ञेष्वस्य चारिताार्थ्यात् । अत्रच सौलभ्याय सूत्रपातनिकादिंतत्तदाकृतिवृत्तानि कृत्वा तत्तदाकृत्यनुकूलरेखाविन्यासादियथावद्विहितमस्ति । सर्वा अप्याकृतयः साधकानामाकलनाय सूत्रविशिष्टाः पूर्वं विन्यस्यानंतरं रेखामार्जनेन सिद्धाश्चेत्येवमुभयविधा अप्याकृतयस्तत्तदुदाहरणसमकालं महता परिश्रमेण निर्माय योजिताः संति यासामालोचनेनाल्पाभ्यासा अपि कुंडमंडपादिविधातुं पारयेयुः । अयं ग्रंथः सव्याख्यः परमपूज्यैरस्मत्तातचरणैर्जंडे इत्युपाह्वै **रामचंद्रदीक्षितै**र्निर्मित आसीत् । परंत्वयं नैःस्व्येन मुद्रणप्रकाशनाद्यसामर्थ्यात्कथमयमखिलवैदिकयाज्ञिकविद्वद्द्विजसरस्वतीकोशभवनमंडलमंडलीभूय सर्वोपकाराय भूयादिति विचिंत्य निर्णयसागरग्रंथशोधनाधिकृतपणशीकरोपाह्वविद्वद्वरलक्ष्मणशर्मतनूजवासुदेवशर्मद्वारा पुनर्मुद्रणादिसर्वाधिकारैःसह मुंबापुरस्थ श्रीमत् **तुकाराम जावजी**श्रेष्ठिभ्यः समर्पितः । सच तैः स्वीयनिर्णयसागराख्यमुद्रणशालायामानङ्क्य प्रकाशितो द्विजकुलादरणीयः स्यादित्याशास्ते ।

प्रार्थयतेच मुहुः सविनयं यदस्य मुद्रणारंभोत्तरमनव्यवहितकालमेवैतद्ग्रंथप्रणेतारः परमपूज्या अस्मत्पितृचरणाः कृत्स्नविश्वकलनव्यापृतकालात्मेशपारवश्येनास्मन्ममतामुज्झित्य दिवमारुरुहुरित्यत्यंतदूयमानेनापि मयोर्वरितग्रंथस्य स्निग्धविद्वन्मित्रसाहाय्येन यथामति शोधितेऽप्यस्मिन्ग्रंथे यदि मतिमांद्यानवधानादिसंभूतोऽशुद्धिदोषोऽवशिष्टो दृष्टिसरणिमापतेत्तर्हि निसर्गदयालुभिर्विद्वद्धुरीणैः परिशोध्य ग्राह्य इति ।

श्रीकाशीक्षेत्रवासी जडेइत्युपाह्वयः
बाबुदीक्षितशर्मा ।

# कुंडरत्नावलीविषयानुक्रमः ।

| विषयः | श्लो. | पत्रं. |
|---|---|---|
| मंगलाचरणं | १–७ | १ |
| परिभाषा | ८ | २ |
| भूशुद्धिपूर्वकं दिक्साधनं | १२ | ३ |
| वृत्ताष्टधाकरणं | १४ | ४ |
| साध्यसिद्धवृत्ताकृती |  | ४ |
| वृत्तव्यासाः | १५ | ४ |
| ग्रहपीठाकारा कुंडवृत्तव्यासाः | १८ | ५ |
| उत्कलिकानामनुक्तभुजानां व्यासाः | २० | ५ |
| सूर्यादीनां पीठवृत्तव्यासाः | २१ | ५ |
| तुलादाने मंडपमानं | २६ | ७ |
| गृहादौ मंडपमानं | २७ | ७ |
| स्वल्पकृत्ये मंडपमानं | २८ | ८ |
| प्रतिष्ठादौ नवविधा मंडपाः | २९ | ८ |
| कोटिहोमादौ मंडपाः | ३० | ९ |
| वेदिकरणदेशः | ३१ | ९ |
| रुद्रहवने वेदिः | ३२ | ९ |
| द्वादशास्रा भद्रिकावेदिः | ३४ | १० |
| श्रीधरीवेदिः | ३९ | १२ |
| समविंशत्यस्रा श्रीधरी | ४१ | १२ |
| सैवोत्कलिका | ४३ | १३ |
| पद्मवेदिः | ४६ | १४ |
| अस्याः प्रकारांतरं | ४७ | १४ |
| कर्मविशेषे वेदिस्थलानि | ४८ | १५ |
| स्तंभप्रमाणं | ४९ | १५ |
| स्तंभोपरि वलिकाः | ५० | १५ |
| शतहस्ते मंडपव्यवस्था | ५१ | १६ |
| कस्मिन्मंडपे कियंतः स्तंभाः | ५२ | १७ |

| विषयः | श्लो. | पत्रं. |
|---|---|---|
| स्तंभानां स्थूलता | ५५ | १८ |
| पद्धतिकृन्मतेन मंडपः | ५६ | १८ |
| कनिष्ठादिमंडपेषु द्वाराणि | ५८ | १९ |
| मंडपाच्छादनप्रकारः | ५९ | १९ |
| तोरणानि | ६० | १९ |
| तोरणमध्यावकाशः | ६१ | २० |
| तोरणे फलकत्रिशूलादिनिवेशनं | ६२ | २० |
| कीलानां मानं | ६३ | २० |
| कीलविकल्पाः | ६४ | २० |
| तोरणविकल्पाः | ६५ | २० |
| ध्वजप्रमाणं | ६७ | २१ |
| ध्वजः पताकाश्च | ६८ | २१ |
| लोकेशवर्णशस्त्राणि | ६९ | २२ |
| वाहनानि | ७० | २२ |
| ध्वजपताकानिवेशनं | ७१ | २२ |
| स्नानमंडपमानं | ७७ | २४ |
| मंडपे वेदित्रितयं | ७८ | २४ |
| मंडपभूषणं | ७९ | २४ |
| कुंडानां स्थानान्याकाराश्च | ८० | २४ |
| आचार्यकुंडस्थलं पंचकुंडीपक्षश्च | ८१ | २५ |
| एककुंडपक्षे स्थलं | ८२ | २५ |
| कर्मपरत्वेनएककुंडस्य मध्ये विधानं | ८३ | २५ |
| कामनापरत्वेन कुंडानि | ८४ | २५ |
| ब्राह्मणादिपरत्वेन कुंडानि | ८६ | २६ |
| कुंडवेद्योरंतरं | ८७ | २६ |
| कुंडमानं होमानुसारेण | ८८ | २७ |
| चतुरस्रादिनवकुंडी | ९४ | २८ |
| अश्वत्थपत्राकृति योनिकुंडं | ९५ | २९ |
| प्रकारांतरेण योनिकुंडं | ९७ | २९ |
| अर्धचंद्रकुंडं | ९९ | ३० |
| त्र्यस्रकुंडं | १०० | ३० |
| प्रकारांतरेण त्र्यस्रं | १०१ | ३१ |
| वृत्तकुंडं | १०२ | ३१ |
| षडस्रकुंडं | १०३ | ३१ |
| पद्मकुंडं | १०४ | ३२ |
| प्रकारांतरेण पद्मं | १०७ | ३३ |
| बापूदेवकल्पितं पद्मकुंडं | १०९ | ३३ |
| अष्टास्रकुंडं | १११ | ३४ |
| कुंडार्कोक्ताष्टास्रं | ११३ | ३५ |

| विषयः | श्लो. | पत्रं. |
|---|---|---|
| ग्रहपीठाकारकुंडानि | ११४ | ३६ |
| दिक्क्रमेण कुंडेशाः | ११६ | ३६ |
| शूर्पाकारं कुंडं | ११८ | ३७ |
| धनुष्याकारं कुंडं | १२० | ३८ |
| ध्वजाकारं कुंडं | १२१ | ३९ |
| दीर्घचतुरस्रं | १२२ | ३९ |
| वाणाकारं कुंडं | १२३ | ४० |
| ग्रहकुंडानां निवेशनं | १२५ | ४० |
| ग्रहपीठप्रकारः | १२६ | ४१ |
| पंचास्रादावुत्कलिकानि | १२७ | ४३ |
| षडस्राद्युत्कलिकानि | १२८ | ४४ |
| समत्र्यस्रादौ वृत्ते ज्योत्पादनं | १२९ | ४५ |
| ज्यानां वृत्ते लेखनं | १३३ | ४५ |
| खातादिकुंडांगानि | १३४ | ४६ |
| नाभिकंठप्रकारः | १३५ | ४६ |
| त्रिमेखलापक्षांतराणि | १३६ | ४६ |
| पंचमेखलापक्षः | १३७ | ४७ |
| एकमेखलाद्विमेखलापक्षः | १३८ | ४७ |
| मेखलानामुत्तमत्वादि | १३९ | ४८ |
| कुंडानां योनिः | १४० | ४८ |
| चतुरंगुलमेखलापक्षे योनिः | १४१ | ४८ |
| षडंगुलैकमेखलापक्षे योनिः | १४२ | ४८ |
| नवांगुलैर्मेखलात्रयपक्षे | १४३ | ४८ |
| द्वादशांगुलमेखलापक्षे योनिः | १४४ | ४९ |
| पंचमेखलापक्षे योनिः | १४५ | ४९ |
| योनिफलानि | १४६ | ४९ |
| योनिव्यासानयनं | १४७ | ४९ |
| योनिसामान्यलक्षणं | १४८ | ४९ |
| दिग्विशेषकुंडेषु योनिस्थानानि | १४९ | ४९ |
| गजोष्ठसदृशयोनिः | १५० | ५० |
| अंगभूता ग्रहवेदिः | १५१ | ५१ |
| आग्नेय्यादिविदिक्षु वेदिकरणं | १५३ | ५१ |
| द्विहस्तादिकुंडव्यासः | १५४ | ५१ |
| व्यासस्य सपादसार्धसत्रिपादद्वि. | १५५ | ५२ |
| कुंडस्य ताम्रादिना बंधनं | १५७ | ५२ |
| स्थंडिललक्षणं | १५८ | ५३ |
| उक्तादौ न्यूनाधिक्ये दोषः | १५९ | ५३ |
| ग्रंथकारपूर्वजादिवर्णनं | १६० | ५४ |
| ग्रंथोपसंहारः | १६२ | ५५ |

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुर्विजयतेतरां ॥ अविघ्नमस्तु ॥ पाशांकुशेषुकोदंडान्बिभ्रच्चारुचतुर्भुजैः । जपाकुसुमसंकाशं महः किंचिदुपास्महे ॥ १ ॥ ज्योतिर्वित्तमसां सूर्यं गणितामृतविग्रहं । दिवाकराब्जयो रूपं श्रीगौरीशंकरं नुमः ॥ २ ॥ महाजनिं गणेशाख्यं वंदे ज्योतिर्विदांवरं । यत्पादपंकजरजो बुधेभ्यो भूतिदं सदा ॥ ३॥ प्रारिप्सितस्य विघ्नविघातपूर्वकं समाप्तिमिच्छुः शिष्टाचरितं मंगलं वितनोति ॥ वंद इति ॥ देवं द्योतनशीलं वंदे इत्यन्वयः । ईशश्च ईश्वरी च तयोः कुमारं । अथवा ईशः शिवस्तस्येश्वरी नियंत्री त्रिपुरसुंदरीत्यर्थः । तस्याः कुमारं । अनंतकोटिब्रह्मांडसार्वभौमस्य श्रीकामे-

श्रीः ॥ वंदे मोदकपाणिं मोदकरं मोदकप्रियं देवं ।
ईशेश्वरीकुमारं लेखशिरोमुकुटरत्नशोभिपदं ॥ १ ॥

श्वरशिवस्य युवराजं महागणपतिमित्यर्थः । ललितोपाख्यानादौ तथैवोक्तत्वात् । तथाच । कुमारः स्याच्छुके स्कंदे युवराजे इति मेदिनी । लेखा देवास्तेषां मुकुटरत्नैः शोभि शोभायुक्तं पदकमलं यस्येत्यर्थः । लेखा अदितिनंदनाः इत्यमरः । मोदकः खाद्यविशेषः । मोदकः खाद्यभेदेऽस्त्रीति कोशात् । सः करे यस्य । मोदो हर्षः स्वभक्तानां हर्षं करोतीति मोदकः प्रियो यस्य । मोदकः हर्षुकः प्रियो यस्येति वा । अत्र सर्वविघ्नाटवीदवरूपश्रीगजाननवंदनत्वान्नमनात्मकं मंगलमिति॥१॥

मौलौ यस्य कलानिधेः किल कला शीर्षे च जह्नोः सुता कंठे तद्गरलं करेष्वहिधनुर्बाणत्रिशूलास्तथा । वामांके गिरिजा गजाननयुता दक्षे गुहो भैरवः पार्श्वे द्वीप्यजिनांबरः स जयति श्रीसप्तकोटीश्वरः ॥ २ ॥

करुणार्द्रकटाक्षां तां तरुणादित्यसन्निभां । बिंबवर्णारुणां नौमि श्रीमत्त्रिपुरसुंदरीं ॥ ३ ॥

आर्यादुर्गां नौमि धर्मानिलेंद्रस्वर्वैद्यानां संततेः कौरवैश्च । युद्धे पंडोः शूरपुत्रान् समृद्धिदात्रीं ब्रह्मेंद्राग्निविष्णवीशवंद्यां ॥ ४ ॥

अथ कुलदेवतां सप्तकोटीश्वराख्यं शिवं शार्दूलविक्रीडितेन स्तौति ॥ मौलाविति ॥ तत्प्रसिद्धं हालाहलाख्यं गरलं विषं । जयतीत्यर्थे नमस्कार आक्षिप्यते । शेषं सुगमं ॥ २ ॥ अथ स्वेष्टदेवतामनुष्टुभा नमति ॥ करुणेति ॥ करुणया कृपया आर्द्रौ पूरितौ कटाक्षौ अपांगदर्शने यस्याः । तरुणो य आदित्यस्तद्वत्सन्निभां आसमंतात्तेजोभिर्व्याप्तामित्यर्थः । बिंबवर्णवदरुणा कान्तिर्यस्याः । बिंबं तु प्रतिबिंबे स्यान्मंडले पुंनपुंसकं । बिंबिकायाः फले क्लीबमिति मेदिनी । तां त्रिपुरसुंदरीं नौमि । नमस्कारं करोमीत्यर्थः ॥ ३ ॥ अथ कुलदेवतां शालिनीवृत्तेन नमति ॥ आर्यादुर्गामिति ॥ धर्मादीनां यमादीनां संततिः पांडवाः । समृद्धिदात्रीं युद्धे जयदात्रीं । शेषं स्पष्टं ॥ ४ ॥

पुनः शार्दूलविक्रीडितेन च स्तौति । शूलेत्यादि स्पष्टं ॥ ५ ॥ अथ गुरुमनुष्टुभा स्तौति ॥ भक्तेति ॥ भक्ताः शिष्या अस्मदादयस्तेषां नानाशास्त्राध्यापनेनाभीष्टं करोतीति । वेदशास्त्रेषु ये सिद्धांतास्तेषां पारगं । सर्वज्ञमिति यावत् । वंशीधरं एतन्नामविशिष्टं । परब्रह्ममहः गुरुरेव परं ब्रह्मेत्यादिवाक्यैर्गुरुरूपं तेजः किंचिदनिर्वचनीयं उपास्महे उपासनां कुर्म इत्यर्थः । अथ कृष्णपक्षे । भक्ताः पूजकास्तेषामभीष्टं वरदानादि । वेदशास्त्रसिद्धांतास्तेषां पारगं । यः सर्वज्ञः सर्वविदि-

शूलास्यब्जकरोटयश्च दधतीं दक्षादधस्तात्करैस्त्र्यक्षां पद्मगतां महाटविरतां स्वर्णोज्ज्वलांगीं शुभां । शीर्षोद्यद्भुजगादपिच्छमुकुटां पंडोः सुतान्कौरवात्त्रायंतीं भजतामशेषसुखदामार्याख्यदुर्गां नुमः ॥ ५ ॥ भक्ताभीष्टकरं वेदशास्त्रसिद्धांतपारगं । परब्रह्ममहः किंचिद्वंशीधरमुपास्महे ॥६॥ कृष्णाख्यतातपदपद्मयुगं च नत्वा ध्यात्वा गुरोर्हृदि मुदा पदपद्मयुग्मं । ज्ञात्वा च पूर्वविदुषां सुकृतीः समस्ता वक्ष्येऽत्र कुंडकरणं सह मंडपेन ॥७॥

त्युक्तत्वात् । शेषं सुगमं ॥ ६ ॥ एवं मंगलानि विधाय पितृवंदनपूर्वकं स्वकरणीयं वसंततिलकया प्रतिजानीते ॥ कृष्णेति ॥ कृष्णेत्याख्या यस्य तत्पदयुगमेव पद्मयुगं नत्वा प्रणम्य तथा गुरोरपि पदपद्मयुग्मं मुदा हर्षेण हृदि ध्यात्वा पूर्वाचार्याणां सुकृतीः कुंडनिबंधान् ज्ञात्वा मनस्यवधार्य कुंडानां एककुंड्यादिनवकुंड्यंतानां तथा ग्रहकुंडानां

द्विमुखदशमुखशतमुखादीनां तथा प्रसंगाच्छ्रीधर्यादिवेदीनां ग्रहपीठानां च करणं करणप्रकारं मंडपेन त्रिहस्तादिशतहस्तांतेन सह वक्ष्ये वक्ष्यामीत्यर्थः । नन्वत्र संबंधचतुष्टयाभावात्कथं प्रेक्षावत्प्रवृत्तिरिति चेन्न । कुंडमित्यादिना विषयः । करणं प्रयोजनं । तद्वक्ष्ये इति संबंधः । एतज्जिज्ञासुरधिकारीत्यतो नाप्रवृत्तिरिति ॥ ७ ॥ अथ वक्ष्यमाणोपयोगिनीं परिभाषामनुष्टुप्चतुष्टयेनाह ॥ पादेति ॥ पादस्याग्रे तिष्ठतीति सचासौ उद्बाहुरूर्ध्वौ बाहू यस्य कर्तुर्यजमानस्य शरलवः पंचमो भागः करो हस्त इत्यर्थः । इषवः पंचेत्यादिसंज्ञा लोकप्रसिद्धा ज्ञेयाः । तस्य हस्तस्य सि-

पादाग्रतिष्ठदुद्बाहोः कर्तुः शरलवः करः । तत्सिद्धांशोऽगुलं तस्य गजांशो यव उच्यते ॥ ८ ॥
यूका तस्याष्टमस्तस्या लिक्षा नागांशको मता । कंठादौ चतुरस्रस्य जिनांशोऽगुलमिष्यते ॥९॥

द्धांशश्चतुर्विंशतितमो भागोऽगुलं । तस्य गजांशोऽष्टमांशो यव उच्यते । प्राचीनैरिति शेषः ॥ ८ ॥ यूकेति ॥ तस्य यवस्याष्टमोऽष्टमांशो यूका । तस्या नागांशोऽष्टमांशो लिक्षेत्यादिः । एवमुत्तरोत्तरा अपि वालाग्रादिसंज्ञाः संति ता अनुपयुक्ता अतो नोक्ताः । तथाचादित्यपुराणे । वालाग्रमष्टलिक्षा तु यूका लिक्षाष्टकं मतं । अष्टौ यूका यवं प्राहुरंगुलं तु यवाष्टकमिति । तथा चतुर्विंशत्यंगुलको हस्त इत्याद्यन्यत्र । कंठादौ आदिपदेन योनिनाभिमेखलानां संग्रहः । चतुरस्रस्य एकहस्तादिचतुरस्रकुंडस्य चतुर्विंशांशः अंगुलं । मंडपादौ त्वादिपदेन ध्वजपताकास्तंभादीनां संग्रहः । तत्र हस्तस्यैव जिनांशो-

मंडपादौ तु हस्तस्य तदेवांशोऽपि कथ्यते । कुंडादौ वृत्तकरणे व्यासो व्यासार्धमिष्यते ॥१०॥
दिक्साधने च यश्शंकुस्तच्छंकोर्द्विगुणा स्तृतिः। अनुक्तौ मध्यतो वृत्तमित्येतत्पारिभाषिकं ॥११॥

ऽगुलं तदेवागुलमंश इत्यपि कथ्यते । अंशो भागो लवोँऽगुलमिति च पर्यायाः । एवं द्विहस्तकुंडादौ कुंडचतुर्विँशांशोँऽगुलमित्यादि ज्ञेयं । उक्तंच कामिके । कुंडानां यश्चतुर्विँशो भागः सोँऽगुलसंज्ञकः । विभज्यानेन कर्तव्या मेखला कंठनाभय इति । सिद्धांतशेखरेऽपि । चतुर्विँशतिमो भागः कुंडानामंगुलं स्मृतमिति ॥ ९॥ कुंडादाविति ॥ कुंडानामादिपदेन पीठादौ च यद्वृत्तकरणं तस्मिन् । वृत्तं वृतिर्गोलं वलयमित्यनर्थांतरं । व्यासः व्यासार्धं ग्राह्यं । व्यासो विस्तृतिर्विस्तारस्ततिरिति च पर्यायाः । सतु सर्वकुंडव्यासकथनावसरे वक्ष्यमाणः ॥ १० ॥ दिगिति ॥ दिक्साधने प्राच्यादिदिक्साधनार्थे यः शंकुस्तच्छंकोर्मानात् द्विगुणा स्तृतिर्दिक्साधनवृत्तव्यासः स्यात् । यत्र कुत्राचिद्वृत्तं कार्यमित्यत्र कस्मात्कार्यमित्यपेक्षायाः सत्वान्मध्यतः मंडपकोष्ठमध्यतः मंडपे यस्मिन्कोष्ठे कुंडं विवक्षितं तस्य मध्यतः कोष्ठमध्य एव कुंडमध्य इति कुंडोद्योतादावुक्तत्वात्तस्मात्कार्यमित्यर्थः । अत्र शंकुमानाद्वृत्तमानं गणितविपरीतं तद्वचनबलात्स्वल्पांतरत्वाल्लाघवाच्चोन्नेयं । तथाच कात्यायनशुल्बे।समे शंकुं निखाय शंकुसंमितया रज्ज्वा मंडलं परिलिख्य यत्र रेखयोः शंक्वग्रच्छाया निपतति तत्र शंकुं निहंति सा प्राचीति । परशुरामोपि । प्रमाणमंगुलस्योक्तं शंकुः स्याद्द्वादशांगुलः । एकांगुलप्रमाणं तु शंकुं भुवि

विनिक्षिपेत् । रज्वा तन्मितया वृत्तं कृत्वास्मिंश्छंकुभा यतः । शंकुद्वयं पुनर्देयं प्राह्णापराह्णकालिकं । तयोरुपरिसूच्यस्था प्राची ज्ञेया सपश्चिमेति ॥ ११ ॥ अथ वक्ष्यमाणोपयोगि भूशुद्धिपूर्वकदिक्साधनं स्रग्धरयाह ॥ देश इति ॥ प्राक्पूर्वं संभाविते कल्पिते देशे विधिवदित्यनेन दहनखननसंप्लावनादिभिर्भूमिं समां विधाय कृत्वा अथानंतरं विधिवदित्यनुवर्तते तेन भूमिं वराहानंतकूर्मादींश्च संपूज्य । अत्रैव भूम्यां मध्ये विरचितं कृतं यद्वलयं तस्मिन्साग्रशंकुं अग्रेण सहितं शंकुं रोपयेद्दृढं स्थापयेत् । तस्य शंकोः छायाग्रं वलये वृत्ते यस्मिन्देशे विशति प्रवेशं करोति । तथा यस्माद्देशाद्याति निर्गच्छति

देशे संभाविते प्राग्विधिवदिह समां संविधायाथ भूमिं संपूज्यात्रैव मध्ये विर-
चितवलये रोपयेत्साग्रशंकुं । तच्छायाग्रं च यस्मिन्विशति च वलये याति
यस्माच्च देशात्तौ प्रत्यक्पूर्वदेशौ तदनुगतगुणः प्राग्गुणोऽसौ प्रदिष्टः ॥ १२ ॥

तौ देशौ प्रत्यक्पूर्वदेशौ स्तः । तद्देशानुगतगुणो योऽसौ प्राग्गुणः कथित इत्यर्थः । शारदातिलके । नक्षत्रराशिवाराणामनुकूले शुभेऽहनि । ततो भूमितले शुद्धे तुषारांगारवर्जिते । पुण्याहं वाचयित्वा तु मंडपं रचयेच्छुभमिति । भूम्यादिपूजा मात्स्ये । वराहं कूर्मशेषौ च क्षितिं चैव विधानतः । पूजयेद्वास्तुकार्येषु विधिना साधकोत्तम इति । शंकुलक्षणं वाजपेय्यां । सूच्यग्रः सरलः शंकुः पृथुर्मूले धृतः स्थिरः । अधोपि वा सूक्ष्ममुखो निहितः प्रविशेद्भुवीति ॥ १२ ॥

एवं प्राचीं प्रतीचीं च संसाध्य दक्षिणोदक्साधनं विदिक्साधनं च शालिन्याह ॥ तस्येति ॥ तस्य सूत्रस्य प्राग्गुणस्य यौ अंतौ पूर्वपश्चिमचिह्ने ताभ्यां सकाशाद्वृत्तपार्श्वतः द्वौ तिमी मत्स्यौ कार्यौ पूर्वचिह्ने कर्कटस्य सूत्रस्य वा एकं प्रांतं निधायापरप्रांतेन द्वितीयांकाद्धनुरुत्पाद्यैवं पश्चिमचिह्ने प्रांतं निधाय पूर्वचिह्नाद्धनुरुत्पादयेत्। तयोर्यौ संपातौ तावेव लोके मत्स्यसंज्ञौ । तयोर्वक्राद्यत्सूत्रं केंद्रलग्नं वृत्तमध्यः केंद्रसंज्ञः तेन सूत्रेण याम्यसौम्यौ दक्षिणोदग्दिशौ स्फुटौ प्रकटीभूतौ स्यातां। तथा सूत्रद्वंद्वं प्राग्गुणोदग्गुणरूपं तयोरग्रान्मत्स्यानुत्पाद्य तैर्मत्स्यैः पूर्वोक्तवद्विकाष्ठाः विदिशः स्फुटाः स्युरित्यर्थः ॥१३॥

वृत्तस्वरूपं

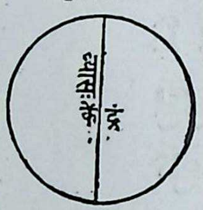

तस्यांताभ्यां द्वौ तिमी पार्श्वतोऽत्र तद्वक्राद्यत्सूत्रकं
केंद्रलग्नं । तेन स्यातां याम्यसौम्यौ स्फुटौ स्युः सूत्र-
द्वंद्वाग्रात्तु मत्स्यैर्विकाष्ठाः ॥ १३ ॥ वृत्ते चिह्नान्यष्टदिक्षु
स्युरष्टौ तेषु प्राचीपश्चिमे वक्रपुच्छे।वक्राद्दक्षा दोःशिरः-
पार्श्वकट्यः पुच्छाद्वामाः श्रोणिपार्श्वांसकाश्च ॥ १४ ॥

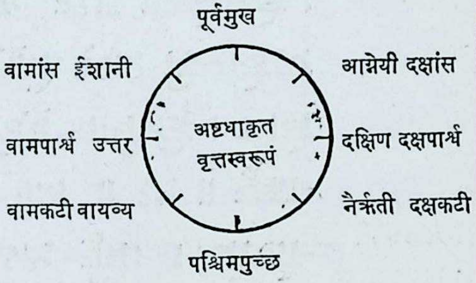
पूर्वमुख
वामांस ईशानी
आग्नेयी दक्षांस
वामपार्श्व उत्तर
अष्टधाकृत
वृत्तस्वरूपं
दक्षिण दक्षपार्श्व
वामकटी वायव्य
नैर्ऋती दक्षकटी
पश्चिमपुच्छ

अथ वृत्ताष्टधाकरणं तच्चिह्नसंज्ञाश्च शालिन्याह ॥ वृत्तइति ॥ वृत्ते कृते तस्मिन्नष्टसु दिक्षु अष्टौ चिह्नानि कुर्यात्। तेष्वष्टसु चिह्नेषु ये प्राचीपश्चिमचिह्ने ते वक्रपुच्छे स्तः। प्राच्यां वक्रं पश्चिमायां पुच्छमित्यर्थः । ततो वक्राद्दक्षिणाः प्रादक्षिण्येन प्रथमं दोःशिरः

भुजसंज्ञं। ततो दक्षिणपार्श्वस्ततो दक्षिणश्रोणिः। ततः पुच्छात्प्रादक्षिण्येन वामाः वामश्रोणिः वामपार्श्वः वामोंऽसो भुजश्चेत्यष्ट चिह्नसंज्ञाः तेन प्राच्यादीनां वक्रादिसंज्ञांतराणीति फलितं । स्कंधो भुजशिरोंऽसोऽस्त्रीत्यमरः ॥ १४ ॥ अथ वक्ष्यमाणप्राकृतनवकुंडानां वृत्तव्यासान् इंद्रवज्रावसंततिलकोपगीतिभिराह ॥ स्यादिति ॥ अत्रांकलेखनमेव व्याख्या ।

स्यात्पंचयूकायवसप्तसंयुतैर्व्यासोंऽगुलीभिर्गुणवह्निभि ३३।७।५ र्बुधैः । प्रोक्तो-
ऽब्धिकोणे हवने सहस्रके योनौ खरामैर्यवयुग्म ३०।२ केन ॥ १५ ॥ यूका-
त्रिकेणसहितैर्यवयुग्मकेन नागाग्निभिश्च ३८।२।३ स भवेदिह चार्धचंद्रे । त्र्यस्रे
तु विद्धि सयवेन यमाब्धिभिश्चा ४२।१ न्ये सार्धषट्कदहनै ३६।४ स्त्रिभुजेऽथ
वृत्ते ॥ १६ ॥ षड्यूकासहभै २७।०।६ रथ षड्यवसहगोयमैः २९।६ षडस्रेऽब्जे ।
त्रियवयुतभूमिरामै ३१।३ रथ वस्वस्रे च सार्धगजनेत्रैः २८।४ ॥ १७ ॥

अथ चतुरस्रव्यासः ३३।७।४ योनेः ३०।२ अर्धचंद्रस्य ३८।२।३ त्र्यस्रस्य ४२।१ अन्यत्र्यस्रस्य ३६।४ वृत्तस्य २७।०।६ षडस्रस्य २९।६ पद्मस्य ३१।३ अष्टास्रस्य २८।४ इति नवकुंडीवृत्तव्यासाः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

अथग्रहपीठाकारकुंडवृत्तव्यासान्भुजंगप्रयातोपेंद्रवज्राभ्यामाह ॥ग्रहाणामिति ॥ अत्र सूर्यशशिभौमानां वृत्तचतुरस्रत्र्यस्रकुंडानि तेषां व्यासाःपूर्वमेव तत्तद्वृत्तव्यासकथनावसरे उक्ता अतःपुनर्नोक्ता इति। पंचास्रिवृत्तव्यासस्तूत्कलिककुंडवृत्तव्यासकथनावसरे वक्ष्यमाणत्वादत्र नोक्त इति। अथ राहोः शूर्पाकारकुंडस्य ३८।३।२ द्वितीयशूर्पाकारस्य ३९।०।६ शनेर्धनुराकारकुंडस्य २९।२।४केतोर्ध्वजाकारकुंडस्य ५८।१।४गुरोर्बृहस्पतेर्दीर्घचतुरस्रस्य ३६।३।७ बुधस्य ध्वजाकारकुंडस्य ५८।७ इति ग्रहपीठाका-

ग्रहाणां मखे खेटपीठाभकुंडेंऽगयूकोनसार्धाष्टरामै ३८।३।२ स्तु चाद्ये। अथ स्याद्द्वितीयेंऽगयूकायुतैश्च
नवोषर्बुधैः ३९।०।६ शूर्पकुंडेऽथ चापे ॥ १८ ॥ सवेदयूकाद्वियवांकयुग्मैः २९।२।४ सवेदयूकैकयवा-
ष्टबाणैः ५८।१।४॥ ध्वजेऽथ सार्धर्तुगुणैर्वियूकै ३६।३।७ र्गुरोर्नवाक्षैर्वियवैः ५८।७ शराभे ॥१९॥ उत्क-
लिकानां व्यासाः शरास्रकादिमगजास्रकांतानां। अंतर्बहिर्वृतीनां वक्ष्यंतेऽमी क्रमात्सम्यक् ॥२०॥

रकुंडवृत्तव्यासाः॥१८॥१९॥ अथोत्कलिकानामनुक्तसमभुजकानां च व्यासानार्यैंद्रवज्राभुजंगप्रयातैराह ॥ उत्कलिकेति ॥ उत्कलिकानामुत्फुल्लकलिकेव यानि तेषां शरास्रकं पंचास्रमादिर्येषां। तथा गजास्रकमष्टास्रमंते येषां। पंचषट्सप्ताष्टास्राणामित्यर्थः। अंतर्बहिर्या वृतयः वृत्तानि तेषां व्यासाः क्रमात्सम्यग्वक्ष्यंते। पंचास्रांतर्वृत्तस्य २० बहिर्वृत्तस्य ३९।२ षडस्रां-

तर्वृत्तस्य २० बहिर्वृत्तस्य ३८।३।२ सप्तास्रांतर्वृत्तस्य २० बहिर्वृत्तस्य ३६ अष्टास्रांतर्वृत्तस्य २० बहिर्वृत्तस्य ३८ तथा समपंचास्रे समसप्तास्रे चेत्यर्थः। समभुजपंचास्रस्य ३१।१ समभुजसप्तास्रस्य २९ इति कुंडवृत्तव्यासाः ॥ २० ॥ अथ सूर्यादीनां पीठवृत्तव्यासानयनप्रकारमिंद्रवज्रयाह ॥ व्यासस्येति ॥ व्यासस्य ग्रहकुंडवृत्तव्यासस्य वर्गः वक्ष्यमाणग्रहकुंडक्रमेण

अंतःस्थवृत्तेषु नखो २० न्मितोसौ बाह्यस्थवृत्तेषु तु पंचकोणे। अंकाग्निभिः स्या ३९।२ द्वियवैर्धितैश्च
विबाणयूकैः सदलाष्टरामैः ३८।३।३ ॥२१॥ षडस्रे तथा षट्गुणैः ३६ सप्तकोणे वस्वग्निभि ३८
श्चैव तथाष्टकोणे । समे बाणकोणे यवाढ्यैः कुरामै ३१।१ स्तथैवांकपक्षै २९ रगास्रे समे
स्यात् ॥ २२ ॥ व्यासस्य वर्गाद्रवि १२ गो ९ जिना २४ ब्धि ४ तत्वां २५ ग ६ नागां ८ ग
६ युगै ४ र्विनिघ्नात् । पीठस्तृतिः स्यात्फलभक्तमूलं वेद्या जिनां २४ शोंऽगुलमत्र चेष्टं ॥ २३ ॥

रव्याद्यंकैर्विनिघ्नः गुणितः फलभक्तः फलं षट्सप्तत्युत्तरपंचशतं एकहस्तसर्वकुंडानां प्रसिद्धं तेन भक्तः तस्मान्मूलं तदेव पीठस्तृतिः व्यासः स्यादित्यर्थः। अत्र पीठव्यासादिषु ग्रहवेद्याश्चतुर्विंशांशोंऽगुलमिष्टं स्यादित्यर्थः। पीठानि देहलब्धांगुलैर्न स्युरिति किंतु ग्रहवेद्याश्चतुर्हस्तैकहस्तादेश्चतुर्विंशांशोंगुलं परिकल्प्य तदंगुलैः कार्याणीति भावः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

अत्रोदाहरणं यथा ॥ सूर्यकुंडव्यासः २७।०।६ अस्य वर्गः ७३४।०।४ अयं रविनिघ्नः ८८०८।६ फलेनानेन ५७६ भक्तो लब्धः सूर्यपीठवृत्तव्यासवर्गः १५।२।३ अस्य मूलं ३।७।२।३ इदमेव सूर्यपीठव्यासः ॥ ॥ अथ शुक्रस्य । तत्र तत्कुंडांतर्वृत्तव्यासः २० अस्य वर्गः ४०० अयं नवगुणः ३६०० फलभक्तः ६।२ अस्य मूलं २।४।२।५ इदमेव शुक्रपीठांतर्वृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ शुक्रकुंडबहिर्वृत्तव्यासः ३९।२ अस्य वर्गः १५४०।४।४ अयं नवगुणः १३८६५।०।४ फलभक्तः २४।०।४।४ अस्य मूलं ४।७।२ इदमेव शुक्रपीठबहिर्वृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ समपंचास्रशुक्रकुंडवृत्तव्यासः ३१।१ अस्य वर्गः ९६८।६।१ अयं नवगुणः ८७१८।७।१ फलभक्तः १५।१।०।६ अस्य मूलं ३।७।१।०।६ इदमेव समपंचास्रशुक्रपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ चंद्रपीठवृत्तव्यासः ३३।७।५ अस्य वर्गः ११५२।६।४। अयं चतुर्विंशत्या गुणितः २७६६७।४ फलभक्तः ४८।०।२।१ अस्य मूलं ६।७।३।४ इदमेव चंद्रपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ भौमपीठवृत्तव्यासः ४२।१ अस्य वर्गः १७७४।४।१ अयं चतुर्गुणः ७०९८।०।४ फलभक्तः १२।२।४।५ अस्य मूलं ३।४।२।५ इदमेव भौमपीठवृत्तव्यासः ॥ अयमेवान्यत्र्यस्रस्याद्यवृत्तव्यासोऽपि ॥ अथ द्वितीयत्र्यस्रस्यवृत्तव्यासः ३६।४ अस्य वर्गः १३३२।२ चतुर्गुणः ५३२९ फलभक्तः ९।२ अस्य मूलं ३।१।२ जातोऽयमन्यत्रयस्राकारपीठवृत्तव्यासः ॥ अथ राहुपीठवृत्तव्यासः । तत्र तत्कुंडवृत्तव्यासः ३८।३।२ अस्य वर्गः १४७५।०।२ पंचविंशत्या गुणितः ३६८७५।६।२ फलसक्तः ६४।०।१ अस्य मूलं ८ इदमेव राहुपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ द्वितीयशूर्पकुंडवृत्तव्यासः ३९।०।६ अस्य वर्गः १५२८।२।४।४ पंचविंशतिगुणः ३८२०८

फलभक्तः ६६।२।५।२ मूलं ८।१।४ इदमेव द्वितीयशूर्पकुंडवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ शनिपीठवृत्तव्यासः । तत्र तत्कुंडवृत्तव्यासः २९।२।४ अस्य वर्गः ८५९।१।६ षड्गुणितः ५१५५।२।४ फलभक्तः ८।७।४।६।४ अस्य मूलं २।७।७।३।६ इदमेव शनिपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ जथ केतुपीठवृत्तव्यासः । तत्र तत्कुंडवृत्तव्यासः ५८।१।४ अस्य वर्गः ३३८५।६।२ अष्टगुणः २७०८६।२ फलभक्तः ४७।०।१।५ अस्य मूलं ६।६।७ इदमेव केतुपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ गुरुपीठवृत्तव्यासः । तत्र तत्कुंडवृत्तव्यासः ३६।२।२ अस्य वर्गः १३१६।२।५ षड्गुणितः ७८९७।७।६ फलभक्तः १३।५।५।४ अस्य मूलं ३।५।५।४

जिना २४ कृति २२ नखै २० र्धृति १८ क्षितिपतीं १६ द्र १४ तुल्यैस्तथा
दिनेश १२ हरि १० दृष्टभिः ८ प्रवरमध्यमाल्पाः करैः । अमी गदितमंडपा-
स्तद्वनेः करेणोच्चता तदर्धमथवा कुरु त्वामिह नंद ९ खंडानि वै ॥ २४ ॥

इदमेव गुरुपीठवृत्तव्यासः ॥ ॥ अथ बुधपीठवृत्तव्यासः । तत्र तत्कुंडवृत्तव्यासः ५८।७ अस्य वर्गः ३४६६।२।१ चतुर्गुणितः १३८६५।०।४ फलभक्तः २४।०।४।४।४ अस्य मूलं ४।७।२।०।३।५ इदमेव बुधपीठवृत्तव्यासः ॥ इति सूर्यादीनां पीठवृत्तव्यासानयनप्रकारः ॥ ७ ॥ ७ ॥ अथ वक्ष्यमाणकुंडानांस्थलसापेक्षत्वादादौ मंडपविस्तारं भूमेरुच्चतां च पृथ्वीवृत्तेनाह ॥ जिनेति ॥ जिनाश्चतुर्विंशतिः २४ आकृतिर्द्वाविंशतिः २२ नखानि विंशतिः २० एतद्धस्तैस्तथा धृतिक्षितिपतींद्रतुल्यैः अष्टादश १८ षोडश १६ चतुर्दशभिः १४ करैः तथा द्वादश १२ दश १० ष्ट ८ हस्तैश्च श्रेष्ठमध्यमकनिष्ठा

मंडपास्तेषामवनेर्भूमेः उच्चता करेण हस्तेन स्यादथवा तदर्धं करार्धं उच्चता स्यात् । अत्र मंडपे नवानि खंडानि कुरु । मंडपं समनवभागं कुर्वित्यर्थः । भो इति संबुद्धिः । रुद्रप्रसादे । पूर्णहस्ताश्चतुर्द्वाराश्चाष्टहस्तादितः क्रमात् । चतुर्विंशतिहस्तांता हीनमध्योत्तमाः क्रमादिति । कपिलपंचरात्रे मंडपं प्रकृत्य । उच्छ्रायो हस्तमानं स्यात्सुसमं च सुशोभनमिति । सिद्धांतशेखरे । स्थलादर्कांगुलोच्छ्रायं मंडपस्थलमीरितमिति ॥ २४ ॥ अथ वर्णपरत्वेन मंडपाञ्छालिन्याह ॥ नखेति ॥ विंशतिषोडशद्वादशाष्टहस्तैर्यथाक्रमेण ब्राह्मणक्षत्रविट्शूद्राणां हीनवर्णानां च मंडपाः स्युरिति

नख २० नृप १६ रवि १२ काष्ठा १० नाग ८ हस्तैः क्रमेण द्विजनृपति-
विशां वै ह्यंघ्रिभूहीनयोश्च । अथ च हरि १० दिनै १२ र्वा सूर्य १२ शक्रै-
१४ स्तथा वा नृपति १६ धृति १८ करैर्वा स्वल्पमध्योत्तमास्ते ॥ २५ ॥

शेषः । अथानंतरं दशद्वादशहस्तैः स्वल्पः हीनः, द्वादशचतुर्दशहस्तैर्मध्यमः, षोडशाष्टादशहस्तैरुत्तम इत्यर्थः । तदुक्तं विश्वकर्मणा । विप्राणां मंडपः कार्यो हस्तैर्विंशतिसंमितैः । राज्ञां षोडशभिर्हस्तैर्हस्तैर्द्वादशभिर्विशां । शूद्राणां दशभिर्हस्तैरष्टाभिर्हीनवर्णिनामिति । पंचरात्रे । दशद्वादशहस्तास्तु स्वल्पाः प्रोक्ता मनीषिभिः । रवींद्रहस्ता मध्याः स्युः सर्वकर्मसु शोभनाः । तथा षोडशभिर्हस्तैर्मंडपः स्यादिहोत्तम इति । मंत्रमुक्तावल्यामपि । उत्तमं मानमित्याहुर्हस्तषोडशकं पुनरिति । तथा । श्रेष्ठाः प्रोक्ताः कलाहस्ता धृतिहस्ताश्च मंडपा इति ॥ २५ ॥

अथ तुलादाने मंडपमानमनुष्टुभाह ॥ तुलेति ॥ तुलादाने कर्तव्ये विंशतिहस्तैर्वाष्टादशहस्तैः षोडशहस्तैः स मंडपः स्यादिति । यदि चेदपरो मंडपः स्यात्तदा पूर्वमंडपतुल्यमंतरं त्यक्त्वा भवेदित्यर्थः । लिंगपुराणे तुलादानप्रकरणे । विंशद्धस्तप्रमाणेन मंडपं कूटमेव वा । तथाष्टादशहस्तेन कलाहस्तेन वा पुनरिति । वास्तुशास्त्रे । मंडपांतरमुत्सृज्य कर्तव्यं मंडपांतरमिति ॥ २६ ॥ अथ गेहादौ मंडपकरणे विशेषं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ गेह इति ॥ यदि गेहे मंडपः स्यात्तदा गेहसममथवा गेहपंचगुणमंतरं त्यक्त्वा तं मंडपं रचयेत् । प्रासादेऽपि तत्समं प्रासादसमं विवरमंतरं त्यक्त्वा तं रचयेत् । अल्पदेशे संकीर्णदेशे

तुलादाने नखै२० र्वापि धृतिभि १८ र्वा नृपै १६ श्च सः । यदिचेदपरोऽपि स्यात्पूर्वतुल्यांतरे
भवेत् ॥ २६ ॥ गेहे वा यदि मंडपो गृहसमं पंचघ्नमत्रांतरं प्रासादेऽपि
च तत्समं हि विवरं त्यक्त्वाल्पदेशे तयोः । संश्लिष्टं युगुलं जलाशयविधौ
सोपानतो दिक्करे शक्रेशांबुपसोमदिक्षु रचयेदन्यत्र तं वेश्वरे ॥ २७ ॥

यदि तयोर्युगुलं तदा संश्लिष्टं संलग्नं रचयेत् । अपिच जलाशयविधौ जलाशयोत्सर्गविधौ सोपानतो दशकरे पूर्वेशानपश्चिमोत्तरदिक्षु वा रचयेत् । अन्यत्र गृहप्रासादादिषु ईश्वरे ईशान्यां वा रचयेदित्यर्थः । वेति विकल्पेन पूर्वोत्तरे वेति । तदुक्तं सिद्धातशेखरे । हर्म्याग्रे मंडपं कुर्यात्त्यक्त्वा हर्म्यसमां क्षितिं । हर्म्यात्पंचगुणं वापि सोपानाद्दशहस्तकानिति । सोपानादिति तु तडागादिप्रतिष्ठाविषयमिति कल्पलता । रुद्रयामले । गृहे देवालये वापि संकीर्णं यत्र दृश्यते । तत्र कार्यं मंडपज्ञैः

संश्लिष्टं मंडपद्वयमिति । हयशीर्षपंचरात्रे । वापीकूपतडागानां पश्चिमे यागमंडपमिति । अपराजितपृच्छायां । तडागाग्रेऽथ वैशाने उत्तरे यागमंडपमिति । मात्स्ये । गृहस्योत्तरपूर्वेण मंडपं कारयेद्बुध इति ॥ २७ ॥ अथ प्रकारांतरेण कनिष्ठादिकत्वं स्वल्पकृत्ये मंडपमानं च शिखरिण्याह ॥ कनिष्ठेति ॥ द्वादशहस्तादारभ्य हस्तयुग्मैः क्रमेण प्रवृद्धा अष्टाविंशतिकरास्ते कनिष्ठाद्याः मंडपा रुचिराः स्युरित्यर्थः । तत्र द्वादशचतुर्दशषोडशहस्ताः कनिष्ठाः । अष्टादशविंशतिद्वाविंशतिकराः मध्यमाः । चतुर्विंशतिषड्विंशत्यष्टाविंशतिहस्ता उत्तमा इति ज्ञेयं । अथवा कनिष्ठकृत्ये स्वल्पहोमे शांत्यादौ एककुंडपक्षे वा

कनिष्ठाद्यास्ते वा रवि १२ करमिताद्धस्तयुगुलैः २ प्रवृद्धा ह्यानागद्वय २८ मितक-
रास्ते च रुचिराः । कनीयान्कृत्ये स्युस्त्र्यु ३ दधि ४ शर ५ तर्का ६ चल ७ गजा ८
र्कै १२ विश्व १३ क्ष्माभृद्भिः १६ क्वचिदिह मता वापि च करैः ॥ २८ ॥

त्रिभिश्चतुर्भिः पंचभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्द्वादशभिस्त्रयोदशभिः षोडशभिर्हस्तैः क्वचित्ते वा मताः स्युरित्यर्थः । अत्रापि सप्तहस्तांताः कनिष्ठाः, अष्टद्वादशत्रयोदशहस्ता मध्यमाः, षोडशहस्ताद्या उत्तमा इति ज्ञेयं । प्रतिष्ठासारसंग्रहे । स्वल्पो द्वादशहस्तोऽयं द्विद्विवृध्या ततः क्रमात् इति । रुद्रप्रसादे । यद्वा द्वादशहस्ताद्या द्विहस्तवृद्धितो नव । अष्टाविंशतिहस्तांताः कैश्चिदुक्ता मनीषिभिरिति । वसिष्ठसंहितायां मूलशांतिमभिधाय । ईशान्यामथ वा प्राच्यामुदीच्यामथ कल्पयेत् । मंडपं चाष्टभिर्हस्तैश्चतुर्भिर्वा समंतत इति । तथा तत्रैव । षट्द्वादशाष्टभिर्हस्तैः षोडशैर्वापि संमितमिति । कल्पलतायामपरा-

जितपृच्छायां । त्रिपंचसप्तहस्तं वा नवैकादशभिस्तथा । त्रयोदशकरं वापि द्विरष्टौ वा तथोत्तममिति ॥ २८ ॥ अथ मंडपविशेषान्नव नंदिन्याह ॥ अथेति ॥ अथवा त्रिंशद्धस्तैरुत्तमः । विंशतिहस्तैर्मध्यमः । दशहस्तैः कनिष्ठ इति । अथवा मखस्य यागस्य पूर्तिकृत् समाप्तिकृद्यैर्हस्तैर्भवति तैर्हस्तैर्मंडपः स्यादिति । अथवा य उक्ता मंडपास्ते सर्वे सर्ववर्णानां यथासंभवं स्युः । ते सर्वेऽपि मंडपाः समकोणाः समभुजैश्च युताश्चतुष्कोणा भवंतीत्यर्थः । सिद्धांतशेखरे । त्रिषूत्तमेषु चैवोक्तस्त्रिंशद्धस्तप्रमाणतः । विंशत्या मध्यमेषूक्तस्त्वन्येषु दशभिः करैरिति । तथा तत्रैव । कामतो मंडपो वा स्यादिति मंडपविस्तृतिरिति । कात्यायनोऽप्यर्थात्परिमाणमिति । विश्वकर्मा । सर्वे वा सर्ववर्णानां कार्याः कार्यानुसारत इति । अ-

अथवाऽश्रराम ३० नख २० दिग्मित १० हस्तैर्मखपूर्तिकृद्भवति यैरपि तैर्वा ।
सकलाश्च वा सकलवर्णजनानां समकोणबाहुयुतसागरकोणाः ॥ २९ ॥

पराजितपृच्छायां । चतुरस्रं समं शुद्धं भुजकर्णविशोधितमिति मंडपप्रकरणे उक्तं । तथा सिद्धांतशेखरे । चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणभूषितमिति । गौतमीयतंत्रेऽपि । चतुर्द्वारसमायुक्तं चतुरस्रं समंतत इति । सच मंडप आयामविस्ताराभ्यां चतुरस्र उक्त इति कल्पलता । अथैतेषां श्रेष्ठादित्रैविध्यमुक्तं मंत्रमुक्तावल्यां । अथ मंडपनिर्माणं ब्रह्माण्डे ब्रह्मणोदितं । श्रेष्ठमध्यमहीनैस्तु मानैस्तच्च त्रिधा मतमिति । पंचरात्रेऽपि । मंडपाः कर्मसु प्रोक्ता अल्पा मध्यास्तथोत्तमाः । यथादेशं यथाकालं प्रयोज्यास्ते विचक्षणैरिति । तेषां व्यवस्था हयशीर्षपंचरात्रे । हीनस्तु मंडपः कार्यो हीने चायतने सदा । उत्तमे

तूत्तमः कार्यो मध्यमे मध्यमस्तथा । पंचरात्रेऽपि । अथवाल्पेषु मध्याः स्युर्मध्येष्वल्पा भवंति हि । उत्तमेषूत्तमाः कार्या मध्यमा वा विचक्षणैः । अधमेषूत्तमाः कार्या मंडपास्तत्त्ववेदिभिरिति ॥ २९ ॥ एवं प्रतिष्ठादिकर्मसु मंडपानुक्त्वा ग्रहाणां कोटिहोमादौ तानुपजातिकयाह ॥ कोट्याहुताविति ॥ कोटिहोमे कर्तव्ये यथासंख्यं शतकुंडपक्षे शतहस्तैः दशकुंडपक्षे पंचाशत्करैर्द्विकुंडपक्षे पंचविंशतिकरैः । आद्ये शतमुखे एवोक्तास्त्रयो मंडपाः अपि श्रेष्ठादिकाः श्रेष्ठमध्यमाधमा वा स्युरित्यर्थः । तदुक्तमपराजितपृच्छायां । शुभे काले प्रकुर्वीत मंडपं च शतानने । पंक्त्येधितैः शतकरैर्मापयित्वा समंततः ।

कोट्याहुतौ स्युः शतवक्रपक्षे दशास्यपक्षे द्विमुखेऽपि वा स्युः । खव्योमचंद्रैः १०० खशरै ५०
श्च तत्वै २५ राद्ये त्रयो वापि वरादिकास्ते ॥ ३० ॥ अथ प्रधानादपि यत्र पूर्वं ग्रहाधिवासश्च
तदा प्रधानं । ईशानदेशे च ततस्त्ववाच्यां श्रीखेटवेदिः करविस्तृतोच्चा ॥ ३१ ॥

दशधा विभजेत्प्राज्ञ इति । तथा दशाननमुपक्रम्य । पंचपंचाशता हस्तैः पंचाशद्भिस्तथापि वेति । तथा द्व्याननेति । पंचविंशतिहस्तैस्तामित्यादिकल्पलतायां । तथा भविष्यपुराणे शतमुखादिहवनं प्रकृत्य । ततस्तु सहितो विप्रैः सूत्रयेन्मंडपं शुभं । उत्तमं शतहस्तेन तदर्धेन तु मध्यमं । जघन्यं तु तदर्धेन शक्तिकालाद्यपेक्षयेति ॥ ३० ॥ अथ वेदिं वक्तुं तद्देशमुपजात्याह ॥अथेति॥ यत्र प्रधानावाहनात्पूर्वं ग्रहाधिवासः ग्रहस्थापनं तत्रेशानदेशे प्रधानं प्रधानवेदिः । ततः प्रधानवेद्याः सकाशादवाच्यां दक्षिणस्यां दिशि श्रीखेटवेदिर्ग्रहवेदिः । सा करेण हस्तेन विस्तृता उच्चा च स्यादित्यर्थः । यथा महारुद्रवा-

स्तुशांत्यादौ प्रधानमीशान्यां तद्दक्षिणे ग्रहा इत्याद्युक्तं भट्टकृतमहारुद्रपद्धतौ ॥ ३१ ॥ अथ कर्मविशेषे वेदिमानं शार्दूलविक्रीडिताभ्यामाह ॥ रुद्रादाविति ॥ अथ वेदिः रुद्रादौ महारुद्रादिहवने चतुःषट्सप्तकरैर्दीर्घा विस्तृता च कथिता ब्राह्मणानां । राजादिषु राजविट्शूद्रादिषु तु यथासंख्यमेकद्वित्रिभिरंगुलैः न्यूना सा पादोच्चा स्वविस्तृतेः पादोच्चा स्यादित्यर्थः । अथ तुलाविधौ तु नवभिरष्टाभिः सप्तभिः करैर्दीर्घा विस्तृता च । अपि वा सा क्रमेण द्वाभ्यां हस्ताभ्यां सार्धकरेण हस्तेन च उच्चा स्यात् । अथ वाप्यादिष्वग्रे वक्ष्यत इति शेषः ॥ अथ वेदिलक्षणं सुबोधिन्यां । इष्टकाभिश्चिता

रुद्रादौ हवनेऽथ वेदिरथ वा वेदां ४ ग ६ नागैः ८ करैरेक १ द्वि २ त्रिभि ३ रंगुलैश्च
कथिता राजादिषु न्यूनता । पादोच्चाथ तुलाविधौ तु नवभि ९ र्नागैः ८ स्वरै ७ र्वापि
सा द्वाभ्यां २ सार्ध $\frac{१}{२}$ करेण हस्त १ विमिताप्युच्चाथ वाप्यादिषु ॥ ३२ ॥

रम्या समंताद्ब्राह्मणस्य च । एकद्वित्र्यंगुलैर्न्यूना सैव क्षत्रादिषु त्रिषु । महामंडपवेदिः स्याच्चतुःषडष्टहस्तका । सकृत्सार्धद्विहस्तोच्चा हीनमध्योत्तमाः क्रमादिति । लिंगपुराणे तुलाप्रकरणे । कृत्वा वेदिं तथा मध्ये नवहस्तप्रमाणतः । अष्टहस्तेन वा कुर्यात्सप्तहस्तेन वा पुनः । द्विहस्ताध्यर्धहस्तां वेति । अत्र वेदित्रयस्य द्विहस्तः सार्धहस्तो हस्तश्चेत्युच्छ्रायो विधेय इति कल्पलता । तथा द्विहस्ताध्यर्धहस्ततः । विस्तारश्चोच्छ्रयो वापिकासिकेपि ॥ ३२ ॥

वेदैरिति ॥ सा वेदी चतुर्भिः पंचभिरथ वा सप्तभिर्हस्तैर्मिता । अथवा मध्ये मंडपमध्ये मंडपनवमांशेन विमिता तुल्या हस्तोच्चकेति प्रतिष्ठादिविषये ज्ञेयं। सापि सर्वत्र चतुरस्रेत्यर्थः । अथच सा भूपानां प्रवरं यदभिषेचनं राज्याभिषेकस्तद्विधौ सर्वतोभद्रिका ज्ञेया। जलाशयविधौ जलाशयोत्सर्गादौ पद्मिनी पद्माकारा। पाणिग्रहे श्रीधरी स्यादित्यर्थः। तदुक्तं राजकौस्तुभधृतमात्स्ये। पंचसप्तचतुर्वापि करां कुर्वीत वेदिकामिति। क्रियासारे। त्रिभागं मंडपं कृत्वा मध्यभागस्तु वेदिकेति। पूर्वपश्चिमोदग्दक्षिणत्रित्रिसूत्रैस्त्रिभागं मंडपं कृत्वा तेन मंडपनवमांशो वेदिरिति तात्पर्यं। क्रियासारे वेदिं प्रकृत्य। हस्तमात्रं तदुत्सेधं चतुरस्रं समंतत इति । तथा हस्तोन्नता च विस्तीर्णा चतुर्हस्तैः समंतत इति । सामान्येन स्वस्तिकापरपर्यायाश्चतुरस्रवेद्या

वेदैः४साथ शरै५स्तथाप्यथ हयै७ र्हस्तैर्मिता वाथवा मध्येमंडपरंध्रभाग ९ विमिताऽब्ध्यस्रापि हस्तोच्चका ॥
भूपानां प्रवराभिषेचनविधौ स्यात्सर्वतोभद्रिका ज्ञेया पद्मनिभा जलाशयविधौ पाणिग्रहे श्रीधरी ॥३३॥

मानमुक्तं । सिद्धांतशेखरे तु वेद्याश्चातुर्विध्यमुक्तं। वेदी चतुर्विधा प्रोक्ता चतुरस्रा च पद्मिनी । श्रीधरी सर्वतोभद्रा दीक्षासु स्थापनादिषु । चतुरस्रा चतुःकोणा वेदी सर्वफलप्रदा। तडागादिप्रतिष्ठायां पद्मिनी पद्मसंनिभा। राज्ञां स्यात्सर्वतोभद्रा चतुर्भद्राभिषेचने। विवाहे श्रीधरी वेदी विंशत्यस्रसमन्विता । दर्पणोदरसंकाशा निम्नोन्नतविवर्जितेति चतुर्विधवेद्या आकार उक्तः। तथा वर्णपरत्वेनापि चतुर्विधवेद्या मानमुक्तं वास्तुशास्त्रे । चतुर्विधा भवेद्वेदी सर्वशांतिकरी नृणां। स्वस्तिका भद्रिका चान्या श्रीधरी पद्मिनी तथा। स्वस्तिका चतुरस्रा च भद्रिका भद्रसंनिभा । श्रीधरी विंशतिः

कोणा पद्मिन्यष्टदलान्विता । विप्रेषु सप्तहस्ता च षड्ढस्ता क्षत्रियेषु च । पंचहस्ता भवेद्वैश्ये शूद्रे वेदाः प्रकीर्तिता इति ॥३३॥ अथोक्तवेदित्रयकरणप्रकारेषु प्रथमं द्वादशास्रां भद्रिकावेदिं सार्धोपजातिवृत्ताभ्यामाह ॥ वेदीति ॥ यद्धस्ता इष्टवेदिस्तस्या भुजकोटिघातेन फलं विधाय तत् स्वचतुर्विंशांशेनाष्टगुणेन युक्तं कृत्वा द्विगुणं कार्यं । तस्माद्यन्मूलं भवति तन्मानेन वेदिस्थलमध्याद्वृत्तं प्रविधेहि कुर्वित्यर्थः । तस्मिन्वृत्ते दिक्कोणकं चतुरस्रं प्रविधाय तत्र चतुरस्रे विदि-

भद्रिकावेद्याः पूर्वरूपं

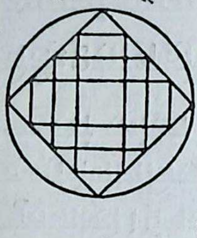

वेदीफलं स्वाब्धिकरां २४ शकेनाऽष्टघ्नेन युक्तं च पुनर्द्विनिघ्नं । तन्मूलमित्या वलयं तु वेदिस्थलस्य मध्यात्प्रविधेहि तस्मिन् ॥३४॥ दिक्कोणकं वारिधिकोण ४ मेकं तस्मिन्विकाष्ठास्रकमब्धिकोणं । विधाय चाद्यस्य भुजांघ्रिचिह्नात्सूत्रं च संलग्नभुजांघ्रिचिह्ने ॥ ३५ ॥ बाह्यार्धकोष्ठभ्रमिमार्जनेन स्यात्सूर्यकोणा किल भद्रिकैवं। राज्याभिषेके नृवराधिपानां प्रोक्ता मुनींद्रैरपि वास्तुशास्त्रे ॥ ३६ ॥

भद्रिकावेद्याः सिद्धरूपं

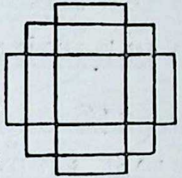

कोणकं चतुरस्रं कृत्वा तत आद्यं पूर्वं कृतं यच्चतुरस्रं तस्य ये भुजास्तेषु प्रति चतुर्थांशे चिह्नं कृत्वा तस्माच्चिह्नात्संलग्नो योऽपरो भुजस्तच्चतुर्थांशचिह्ने सूत्रं दद्यादेवं चतुर्षु भुजेषु ज्ञेयं । ततो बाह्ये यान्यर्थकोष्ठानि भ्रमिः वृत्तं तेषां मार्जनेन नाशेन सूर्यास्रा द्वादशास्रा भद्रिकावेदिः स्यादित्यर्थः । अत्र चतुर्भद्राभिषेचने । भद्रिका भद्रसन्निभेत्यादिवचनात्समास्रो-

त्कलिकयोर्निवृत्तिः। शेषं स्पष्टं। अथास्याः फलानयनं। तत्र भद्रिकावेदी राज्याभिषेक उक्तत्वात् षड्ढस्ता क्षत्रियेषु चेति वचनात्षड्ढस्तोदाह्रियते। तत्रेष्टषड्ढस्तवेदिफलं हस्तात्मकं ३६ तथांगुलात्मकं फलं २०७३६ अस्य चतुर्विंशांशः ८६४ अष्टगुणः ६९१२ अनेन युक्तं फलं २७६४८ द्विगुणं ५५२९६ अस्य मूलं २३५।१।२ अयं व्यासः। अनेन कृतवृत्ते उक्तवद् यच्चतुरस्रमुत्पद्यते तस्य फलं वृत्तव्यासवर्गार्धतुल्यं २७६४८ अस्मादुक्ताष्टगुणितचतुर्विंशांशोने सर्वं फलं २०७३६ अथवा युक्तफलं २७६४८ अस्य द्वात्रिंशदंशः ८६४ अष्टगुणः ६९१२ अनेनोनं युक्तफलं २०७३६ जातं सर्वं फलं। अथात्र किंचिदुच्यते। भद्रिकावेद्यां समानावयवानि चतुर्विंशतिकोष्ठानि संति परंतु करणप्रकारे तादृशकोष्ठसमान्यष्टौ कोष्ठान्यधिकानि संति। अतश्चतुर्विंशांशोऽष्टगुणः वेदीफले युक्तस्तेनैककोष्ठतुल्यानि द्वात्रिंशत्कोष्ठानि भवंति। अतो युक्तफलस्य द्वात्रिंशदंशोऽष्टगुणो युक्तफलादूनितश्चेज्जायते सर्वं फलमिति स्पष्टं॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ अथ प्रकारांतरेण भद्रिकावेदिं स्रग्विणीवृत्ताभ्यामाह॥ इष्टेति॥ इष्टवेद्याः द्वादशास्रायाः फलं वह्निभिस्त्रिभिः गुणितं तथा लोचनाभ्यां द्वाभ्यां हृतं सद्यत्तन्मूलं ततिर्व्यासः स्यात्। अनया तत्या व्यासेन यन्मंडलं वृत्तं भवेत्तस्मिन्वृत्ते विदिक्कोणकं चतुष्कोणं कुरु॥ ३७॥ अथो अनंतरं पूर्वदिशि या नागकोणस्याष्टकोणस्य ज्या तस्याः द्व्यंततः द्वयोरंतयोः सकाशात्सूत्रयुग्मं अप-

इष्टवेदीफलं वह्निभि ३ र्व्याहतं लोचनाभ्यां २ हृतं तस्य मूलं ततिः। मंडलं चानया यच्च
तस्मिन्समं वेदकोणं विकाष्ठास्रकं कुर्वथो॥ ३७॥ पूर्वदिङ्नागकोणज्यकाद्व्यंततः सूत्रयुग्मं
विधेह्यापरज्यांतकं। दक्षिणोदग्ज्यकाप्रांतयुग्मे तथा तेन वेदी भवेत्सूर्यकोणाथवा॥ ३८॥

रज्या पश्चिमदिग्ज्या तदवधिकं विधेहि विस्तारयेति भावः । तथैवाष्टकोणस्य ये दक्षिणोदग्ज्ये तयोर्यत्प्रांतयुग्मं दक्षिणज्याप्रातयुग्ममुदग्ज्याप्रांतयुग्मं चेति तस्मिन्नपि सूत्रयुग्मं विधेहीति। तेन सूर्यकोणा द्वादशकोणा वेदी भवेदित्यर्थः। अथवेति प्रकारांतरार्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्रेष्टवेदीफलं २०७३६। गुणकेना ३ नेन गुणितं ६२२०८ भाजकेना २ नेन भक्ते लब्धं ३११०४ अस्य मूलं व्यासः १७६।३ व्यासवर्गार्धे मध्यचतुरस्रफलं १५५५२ अस्य मूलं वृत्तस्थचतुरस्रज्या १२४।५।६ अनयोनव्यासः ५१।५।२ अस्यार्धं बृहच्छरः २५।६।५ अथ व्यासवर्गस्य सप्तमांशः ४४४३।३।४ अस्य चत्वारिंशदंशः १११।०।६ सप्तमांशे युक्तः ४५५४।४।२ अस्य मूलं वृत्तस्थाष्टास्रिज्याभुजः ६७।४।२ अथ ज्याव्यासयोगः २४३।७ अंतरं च १०८।७ द्वयोर्घातः २६५५२ मूलं १६३ अनेनोनव्यासः १३।२ दलितो लघुशरः ६।५।४ अनेनोनो बृहच्छरः कोटिः १९।१।१ भुजकोटिघातः १२९६ चतुर्गुणः ५१८४।१ मध्यचतुरस्रफले युक्तः २०७३६।१ जातं सर्वं फलं। अत्र किंचिन्न्यूनं फलमायाति । अतः संपूर्णफलार्थे भुजकोटी किंचिद्वर्धिते इति ज्ञेयं ॥ ३८ ॥

प्रकारांतरेणोक्तभद्रिका
वेद्याः पूर्वरूपं

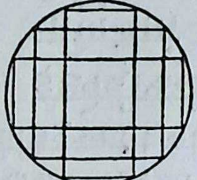

प्रकारांतरेणोक्त-
भद्रिकावेद्याः
सिद्धरूपं

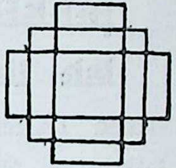

अथ श्रीधरीवेदिं द्वाभ्यामिंद्रवज्रावृत्ताभ्यामाह ॥ वेदीति ॥ वेदीफलं स्वषष्ठ्यंशेन द्वादशगुणेन युक्तं कृत्वा द्विगुणं कार्यं । ततो मूलमित्याद्युक्तवच्चतुरस्रद्वयोत्पादनांतं कृत्वा तत आद्यचतुर्भुजस्य भुजार्धं त्रेधा विभज्य भुजार्धस्य समानानि त्रीणि खंडानि कृत्वा मध्यचिह्नद्वयात्पूर्वोक्तवत्सूत्रपाताद्विंशत्यस्रा श्रीधरीवेदिर्भवेत् । नयने अभिरमयतीति सुंदरेत्यर्थः ॥ ३९ ॥ अथ फलानयनं । तत्र कन्याहस्तैः पंचभिः सप्तभिर्वेति समानविकल्पोक्तत्वात्पंचहस्तोदाह्रियते । तत्र पंचहस्तवेदीफलं १४४०० अस्य षष्ठ्यंशः २४० द्वादशगुणः २८८० वेदीफले युक्तः १७२८० द्विगुणः ३४५६० अस्य मूलं १८५।७।२ अनेन कृतवृत्ते यच्चतुरस्रमुत्पद्यते तत्फलं १७२८० अस्मादुक्तद्वादशगुणितषष्ठ्यंशोने सर्वं फलं १४४०० अथ सप्तहस्ते उदाहरणं । तत्रेष्टवेदिफलं हस्तात्मकं ४९ तथांगुलात्मकं २८२२४ अस्य षष्ठ्यंशः ४७०।३।१।५ द्वादशगुणः ५६४४।६।३।४ इष्टफले युक्तः ३३८६८।६।३।४ द्विगुणः ६७७३७।४।७

विंशत्यस्रश्रीधरीवेद्याः पूर्वरूपं

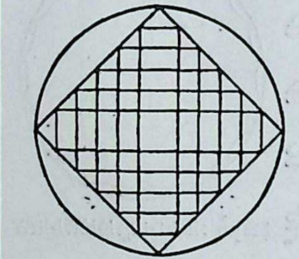

वेदीफलं स्वाभ्ररसां ६० शकेनार्क १२ घ्नेन युक्तं च
पुनर्द्विनिघ्नं । तन्मूलमित्यादिविदिक्स्थकोणवेदास्र-
कांतं तनुयात्ततश्च ॥ ३९ ॥ आद्याब्धिकोणस्य भुजा-
र्धमत्र त्रेधा विभज्यापि च सूत्रपातात्। पूर्वोक्तवच्छ्री-
धरीवेदिरत्र (स्याद्वै) भवेन्नखास्रा नयनाभिरामा॥४०॥

विंशत्यस्रश्रीधरीवेद्याः सिद्धरूपं

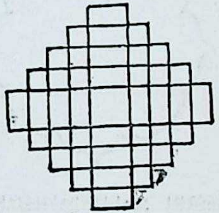

मूलं २६०।२।१ अयं व्यासः अनेन कृतवृत्ते यच्चतुरस्रमुत्पद्यते तत्फलं ३३८६८।६।३।४ अस्मादुक्तद्वादशगुणितषष्ठ्यंशोने सर्वं फलं २८२२४ ॥ ४० ॥ अथ समविंशत्यस्रां श्रीधरीमिंद्रवज्रावृत्ताभ्यामाह ॥ वेदीति ॥ इष्टवेद्याः फलं पंचसप्तत्युत्तराष्टत्रिंशच्छतैर्गुणितं तस्मादष्टाशीत्युत्तरैकोनत्रिंशच्छतैर्विभक्ते यल्लभ्यते तन्मूलं समाभ्राश्विमितास्रवेद्या विंशत्यस्रवेद्याः व्यासो भवति तेन कृतवृत्ते व्यासस्य यः षष्ठांशः स्वषोडशांशोनः सा ज्या भवति तन्मितकर्काटकेन प्राक्तः

समविंशत्यस्रश्रीधरीवेद्याः पूर्वरूपं

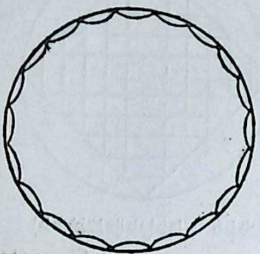

समविंशत्यस्रश्रीधरीवेद्याः सिद्धरूपं

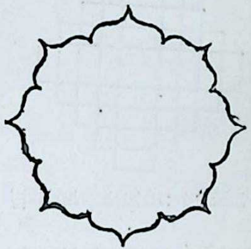

वेदीफलात्पंचनगाष्टराम ३८७५ निघ्नाद्द्हीभांककरा २९८८
प्तमूलं । व्यासः समाभ्राश्वि २० मितास्रवेद्या व्यासांगभागः
स्वनृपां १६ शहीनः ॥ ४१ ॥ जीवा भवेत्तन्मितकर्कटेन प्रा-
क्तस्तु वृत्तं नखधा २० विभज्य । ज्याविंशतिं तत्र समां
प्रदद्याद्वितर्दिरेवं नखकोणका वा ॥ ४२ ॥

वृत्तं नखधा विंशतिधा विभज्य विंशतिचिह्नानि कृत्वेत्यर्थः । तत्र परस्परचिह्नस्पृक्ज्याविंशतिं समानां प्रदद्यात्तेन विंशत्यस्रा वितर्दिर्वेदिर्भवेदित्यर्थः । वेति पूर्वाकारेण विकल्प्यते । स्याद्वितर्दिस्तुवेदिकेत्यमरः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्रेष्टफलं पंचहस्तवेद्याः १४४०० गुणकेनानेन गुणितं ३८७५ ५५८००००० भाजकेन २९८८ अनेन भक्ते लब्धं १८६७।५।४ अस्य ॥ १२ ॥

मूलं १३६।५।२ अस्य षष्ठांशः २२।६।१ अस्य षोडशांशः १।३।२ अनेनोनः षष्ठांशः २१।२।६ जातेयं विंशत्यस्रिज्या ॥ अथ ज्याव्यासयोगः १५८ अंतरं ११५।२।४ द्वयोर्घातः १८२१९।३ अस्य मूलं १३४।७।६ इदं गर्भसूत्रं अनेन ज्या गुणिता २८८०।६ जातमिदं चतुरूयस्रफलं । इदं पंचगुणं १४४०३।६ जातं सर्वं फलं । स्वल्पांतरत्वाददोषः । एवं सप्तहस्तादावपि ॥ ४२ ॥ अथोत्कलिकविंशत्यस्रां श्रीधरीं वैतालीयछंदसा त्रिभिः पद्यैराह ॥ फलमिति ॥ फलमिष्टवे-

फलमष्टयुगा ४८ हतं शराश्वि २५ हृतं तत्पदमेव विस्तृतिः । अनया
कृतमंडलं समं नख २० धा तद्विभजेत्तु पूर्ववत् ॥४३॥ सुरराजदिगंकतः
क्रमान्नवमांके गुणदानतो मुहुः । नखसंख्यसमत्रिकोणकानि हि याव-
त्प्रभवंति मंडले ॥ ४४ ॥ वृतिमार्जनतोऽपि वा भवेन्नखकोणोत्कलिका
वितर्दिका । कुरुतां च विवाहसंस्कृतौ वरवध्वोर्विपुलर्द्धिवर्धिनीं ॥ ४५ ॥

दीफलमष्टचत्वारिंशता निघ्नं पंचविंशत्या भक्तं तस्य यन्मूलं तदेव विस्तृतिर्व्यासः स्यात् ॥ ४३ ॥ अनेन कृतं यन्मंडलं तत् सुरराजदिक्प्राची तच्चिह्नात्क्रमेण नवमनवमचिह्नैर्मुहुः वारंवारं गुणदानतः सूत्रदानेन विंशतिधा विभजेत् । यावद्विंशति समत्रिकोणानि मंडले प्रभवंति तावदित्यर्थः ॥ ४४ ॥ ततो वृतेर्वृत्तस्य मार्जनेन विंशत्यस्रोत्कलिका वितर्दिका वेदी भवेत् । तां विवाहसंस्कारे वरवध्वोर्विपुला पुष्कला या ऋद्धिः समृद्धिस्तां वर्धयतीत्येतादृशीं कुर्वित्यर्थः । अपिवेति पूर्व-

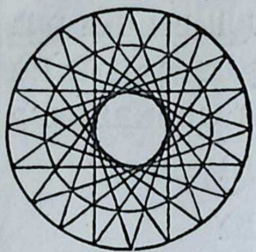

विंशत्यस्रश्रीधरीवेद्याःपूर्वरूपं

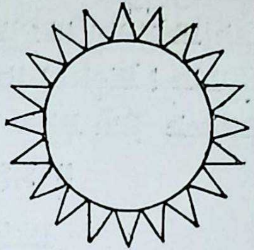

श्रीधरीवेद्याःसिद्धरूपं

प्रकारेण विकल्पः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्रेष्टवेदीफलं पंचहस्ते १४४०० अष्टचत्वारिंशता४८गुणितं ६९१२०० पंचविंशत्या २५ भक्ते लब्धं २७६४८ अस्य मूलं १६६।२।२ अयं वृत्तव्यासः । अथ फलानयनार्थमस्य त्र्यंशः ५५।३।३ अनेनोनव्यासोंऽतर्व्यासः ११०।६।७ अस्य षष्ठांशः १८।३।६।४ अस्य षोडशांशः १।१।१।७।२ अनेनोनः षष्ठांशः १७।२।४।४ जातेयं मध्यवृत्तस्य विंशत्यस्रिज्यका । बहिर्व्यासः १६६।२।२ अनेन गुणिते सति जातं त्र्यस्रचतुष्टयफलं २८८०।२।२।३ पंचगुणमिदं जातं १४४०१।३।४ सर्वं फलं । अधिकं ध्वजायः स्वल्पांतरत्वाददोषोऽपि ॥ ४५ ॥

वेद्याः फलं भूमिसमुद्र ४१ निघ्नं वेदाक्षि २४ भिस्तद्विभजेच्च लब्धेः ।
मूलं व्यासः पद्मिनीवेदिकायाः सा दिक्कोणा पद्मकुंडोक्तवत्स्यात् ॥ ४६ ॥

अथ पद्मिनीवेदिमुपजातिवृत्तेनाह ॥ वेद्या इति ॥ इष्टवेद्याः फलं चैकचत्वारिंशता गुणितं तच्चतुर्विंशत्या भक्तं या लब्धिर्भवति तस्याः मूलं पद्मिनीवेदिकायाः व्यासो भवति । तेन व्यासेन वृत्तं कृत्वा पद्मकुंडोक्तवद्वक्ष्यमाणपद्मकुंडो-

क्तवत्सर्वकरणेन सा पद्मिनीवेदिः दिक्कोणकाऽष्टदिक्षु कोणा यस्याः स्यादित्यर्थः । अत्र पद्मिनीवेद्याः दिग्विदिक्कोणकत्वं पद्मकुंडस्य दिग्विदिगंतरकोणकत्वमिति भेदः । अन्यत्सर्वं पद्मकुंडोक्तवदित्याशयः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्रेष्टवेदिफलं

पद्मिनीवेद्याः पूर्वरूपं

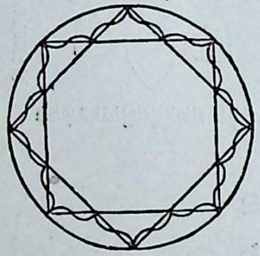

२०७३६ एकचत्वारिंशता गुणितं ८५०१७६ अस्माच्चतुर्विंशत्या भक्ते लब्धं ३५४२४ अस्य मूलं १८८।१।५ इदमेव पद्मिनीवेदिव्यासः । अस्य सूक्ष्मचतुरस्रज्या १३३ अस्य वर्गः १७६८९ इदं मध्यचतुरस्रफलं अचतुरस्रबाह्यत्रिकोणफलं यथा चतुरस्रज्या १३३ अनयोनव्यासार्धं लंबः । बहिस्त्रिकोणस्य भुजद्वयकोणद्वयस्य च समत्वात्तद्द्वयोर्योगे यच्चतुरस्रं तदपि समचतुष्कोणं अतस्तच्चतुरस्रस्य कर्णावपि समावेव । अस्यार्धं ऊनव्यासार्धं च समानमेव भूम्यर्धमपि तत्समं ॥ तथाच न्यासः ॥ व्यासः १८८।१।५ अस्य सूक्ष्मचतुरस्रज्या १३३ अनयोनव्यासः ५५।१।५ अस्यार्धं २७।४।६।४ लंबः भूम्यर्धमपि लंबसमं २७।४।६।४ अनयोर्घातः ७६१।३।३।१ चतुर्गुणः ३०४७।३।०।४ चतुरस्रफले युक्तं जातं सर्वं फलं २०७३६।३।०।४ स्वल्पांतरत्वाददोषः ॥ ४६ ॥

पद्मिनीवेद्याः सिद्धरूपं

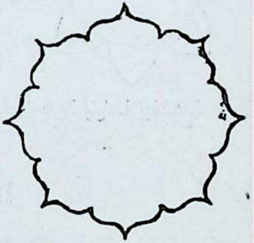

अथ प्रकारांतरेण वक्ष्यमाणपद्मकुंडाकृतिपद्मिनीवेदिमिंद्रवज्रावृत्तेनाह ॥ वेदीति ॥ इष्टवेदीफलमेकोत्तरशतेन निघ्नं तस्माच्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतेन भक्ताद्यन्मूलं तत् व्यासो भवेत् । तेन व्यासेन वक्ष्यमाणं यद्द्वितीयपद्मकुंडं तदाकृतिः पद्मिनीवेदिः स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र गुणकः १०१ भाजकः १४४ इष्टवेदीफलं २०७३६ गुणकेन १०१ गुणितं

वेदीफलाद्भूमिखभूमि १०१ निघ्नाद्वेदाब्धिचंद्रै १४४ र्विहृताच्च मूलं ।
व्यासो भवेत्तेन च वक्ष्यमाणान्यत्पद्मकुंडाकृतिपद्मिनी स्यात् ॥४७॥

२०९४३३६ भाजकेन भक्ते लब्धं १४५४४ अस्य मूलं १२०।४।६ अस्याष्टास्रिज्या द्विद्वीत्यादिना ४६।१।१ अस्या दलं २३।०।४।४ व्यासदलं ६०।२।३ अष्टास्रिज्यार्धवर्गः ५३२।२ व्यासार्धवर्गः ३६३५।५।६ वर्गयोरंतरं ३१०३।२।३ अस्य सूक्ष्ममूलं लंबः ५५।५।४ लंबगुणमष्टास्रिज्यार्धं १२८४।५।६ अष्टगुणमिदं १०२७७।६ जातमिदं मध्याष्टास्रिफलं॥अथाष्टास्रिज्यैव द्विगुणा धनुर्वृत्तव्यासः ९२।२।२ अस्य परिधिः २९०।०।४ अस्य त्र्यस्रिज्या त्रिघ्नं-केत्यादिना ७९।७।२।६ अस्या दलं ३९।७।५।३ अष्टास्रिज्याचतुर्थांशोनो धनुर्वृत्तव्यास एव लंबः ६९।१।५ लंबगुणं धनुर्वृत्तांतस्त्र्यस्रफलं २७६५।४।६।२ अथ वृत्तक्षेत्रे परिधीत्यादिना धनुर्वृत्तफलं ६६८९।४।४ अस्मात्र्यस्रफलमूनं ३९२४ अस्य त्र्यंशः १३०८ इदमेव धनुःफलं अष्टगुणं १०२७७।६ अष्टास्रिफले युक्तं जातं २०७४१।६ । अत्र पंचांगुलमधिकं तददोषायेति ॥ ४७ ॥

पद्मकुंडवत्पद्मिनीवेद्याः पूर्वरूपं

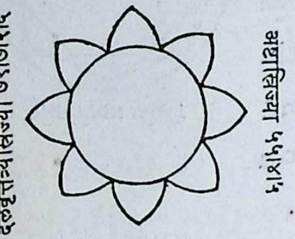

पद्मिनीवेद्याःसिद्धरूपं

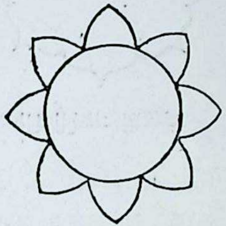

अथ कर्मविशेषे वेदिस्थलान्यनुष्टुभाह ॥ दानेति ॥ दानं तुलापुरुषदानादि । उत्सर्गो नूतनकृतजलाशयादौ स्नानपानाद्यधिकारार्थं कर्मविशेषः । प्रतिष्ठा शिवादिस्थापनं । एतेषु कर्मसु मंडपमध्ये वेदी कथिता । तथा शांतौ ग्रहयज्ञादौ प्राच्यां पूर्वस्यां दिशि तथोदीच्यां वा । सा दर्पणोदरवत्सम्यगाभा यस्याः । दर्पणोदरवत्सुसमेत्यर्थः । तदुक्तं मात्स्ये दानान्युपक्रम्य । सप्तहस्ता भवेद्वेदी मध्ये पंचकराथवेति । तथोत्सर्गं प्रकृत्य तत्रैव । चतुर्हस्तां शुभां वेदिं चतुरस्रां चतुर्मुखां । यथा

दानोत्सर्गप्रतिष्ठासु वेदी मध्ये प्रकीर्तिता ॥ प्राच्यामुदीच्यां शांतौ वा मुकुरोदरवत्समा ॥ ४८ ॥
स्तंभाः षोडश यज्ञदारुजदृढा वेदेर्विदिक्ष्वायताश्चत्वारोऽष्टकरा बहिः शर ५ करास्ते खंडकोणेष्विनाः । चूडाभिः सहिताश्च तन्निखननं
सर्वत्र पंचांशकं द्वात्रिंशद्वलिकाः समाश्च सबिलाः कार्यास्ततोंऽतद्वये ॥ ४९ ॥

षोडशहस्तः स्यान्मंडपश्च चतुर्मुखः । वेद्याश्च परितो गर्ता रत्निमात्रास्त्रिमेखला इति । प्रतिष्ठाविधौ तत्रैव । हस्तान्षोडश कुर्वीत दश द्वादश वा पुनः । मध्ये वेदिकया युक्तः परिक्षिप्तः समंतत इति । अथ ग्रहशांतिं प्रकृत्य गोभिलः । कुंडस्य प्रागुदीच्यां वा प्राच्यामुत्तरतोऽपि वा । चतुर्हस्तं चतुर्द्वारं कर्तव्यं ग्रहपीठकमिति । पीठं वेदिः ॥ ४८ ॥ अथ मंडपस्तंभान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्तंभा इति ॥ यज्ञदारु पलाशादि तस्माज्जाता उत्पन्नाश्च ते दृढा एतादृशाः स्तंभाः

षोडशसंख्याकाः कार्या इत्यंतेनान्वयः। ते वेदेर्विदिक्षु विदिशासु अग्न्यस्रपवाय्वीशानेषु आयता दीर्घाश्चत्वारोऽष्टकराः। तथा बहिः मंडपबाह्यदेशे खंडकोणेषु ते स्तंभाः इनाः द्वादशसंख्याकाः शरकराः पंचकरमिता इत्यर्थः। ते चूडाभिः शिखाभिः सहिताः मूलस्थूलत्वापेक्षयाग्रे सूक्ष्मा इत्यर्थः। तेषां स्तंभानां निखननं भूमौ प्रवेशनं पंचांशकं। पंचमांशं भूमौ प्रवेशयेदिति यावत्। सर्वत्रेत्यनेन यत्रयत्र निखननं तत्रतत्र पंचांशकमित्यर्थः। ततस्तदनंतरं द्वात्रिंशद्वलिकाः स्तंभोपरि देयानि काष्ठविशेषाणि ताः अंतद्वये द्वयोरप्यंतयोः सबिलाः बिलेन सहिताः। सच्छिद्रा इत्यर्थः। समा इत्यनेन स्तंभव-

अंतःस्तंभमुखेषु ताश्च विककुप्प्रांताश्चतस्रास्तिरश्चीना ऊर्ध्वमुखा निधेहि सुदृढे
काष्ठे तु कूटाह्वये। सूर्या १२ श्चापि बहिःस्थितेष्विन १२ मितस्तंभेषु पूर्वापरा
देया द्वादश दक्षिणोत्तरगता दिक्तः कृशानोः स्थिताः ॥ ५० ॥

त्सचूडका न भवंतीति। यज्ञदारूण्याह ब्रह्मपुराणे। पलाशाश्वत्थन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भवाः। श्रीपर्ण्युदुंबरो बिल्वश्चंदनः सरलस्तथा। शालश्च देवदारुश्च खदिरश्चेति याज्ञिकाः। इति। शारदातिलकेपि। षोडशस्तंभसंयुक्तं चत्वारस्तेषु मध्यमाः। अष्टहस्तसमुच्छ्रायसंख्याश्चूडासमन्विताः। अष्टहस्तसमुच्छ्रायाः संस्थाप्या द्वादशैव ते। पंचहस्तप्रमाणा वै निश्छिद्रा ऋजवः शुभाः। इति। वास्तुशास्त्रे। पंचमांशं न्यसेद्भूमौ सर्वसाधारणो विधिरिति ॥ ४९ ॥ अथ स्तंभोपरि वलिकानिवेशनं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ अंतरिति ॥ ताः पूर्वोक्ता वलिकाश्चतस्रः विककुप्प्रांता विदिक्षु प्रांता

यासां ताः अंतःस्तंभशिखासु वेदिकोणस्थस्तंभचतुष्टये तथा चतस्रः तिरश्चीनाः कर्णाकारा इत्यर्थः । ऊर्ध्वं मुखानि यासां ताः सुदृढे कूटाह्वये शिखराह्वये काष्ठे मध्यवेद्युपरि वलिकानिवेशनार्थं यत्काष्ठं तस्मिन्निधेहि । प्रवेशयेत्यर्थः । सूर्याः द्वादश वलिकाः बहिःस्थितेषु इनमितस्तंभेषु द्वादशस्तंभेषु पूर्वापराः प्राक्प्रत्यक्प्रांताः तथा द्वादशवलिका दक्षिणोत्तरगताः अवागुदक्प्रांता देयाः । निवेशनीया इत्यर्थः । ता वलिकाश्च कृशानोरग्नेर्दिक्तः स्थिताः स्युरित्यर्थः । तदुक्तं कुंडकल्पलतायां । मध्यस्तंभास्तु ये वेदसंख्याश्चूडान्वितास्तथा । वलिकामूर्धतस्तेषां न्यस्य मध्योच्छ्रितं सृजेत् । द्वादशानामपि तथा चूडासु वलिका न्यसेत् । मंडपायामविस्तारा मध्यस्तंभाग्रतो न्यसेत् । कोणस्तंभाग्रसंलग्ना-

स्तंभानां नहि षोडशत्वकथनं ख॰व्योमचंद्रे १०० करे तत्र स्युस्त्विह मंडपार्धविमिता मध्यास्तु रामां३शतः।
बाह्याश्चेदपरास्ततोऽपि लघवः स्युश्चार्थतः स्यान्मितिस्तद्वद्द्वारमपीह मध्यलवतः स्यात्पंचमांशेन च ॥५१॥

श्चतस्रो वलिकाः पुरा । द्वेद्वे तूभयतोऽन्ये च तासां स्तंभाग्रसंस्थिते । वलिका अपि संस्थाप्याः कृतोपर्यंकुशाकृति ॥५०॥ अथ शतहस्तमंडपादौ स्तंभव्यवस्थां शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्तंभानामिति ॥ शतहस्ते मंडपे स्तंभानां षोडशत्वकथनं तन्नहि । तत्र तु इह मंडपार्धेन विमिताः । मध्याः मंडपतृतीयांशेन । बाह्याः स्युश्चेदपरा अपि स्तंभाः ते ततोऽपि पूर्वस्तंभापेक्षया लघवः न्यूनाः स्युरित्यर्थः । अर्थतः मितिर्मानं स्यात्सर्वत्र । अर्थात्परिमाणमिति सूत्रात् । तद्वत् द्वारमपि वक्ष्यमाणं मंडपद्वारमपि मध्यभागतः पंचमांशेन यथा शतहस्तमंडपे मध्यभागो विंशद्धस्तः तत्पंचमांशश्चतुर्हस्तस्तन्मितं द्वारं स्यादित्यर्थः । तथाच कुंडकल्पलतायां पंचरात्रे । मंडपार्धोच्छ्रितान्वेदसंख्यांश्चूडासमन्वितान् । तथा । स्तंभान्समं

च संस्थाप्य स्तंभद्वादशकं पुनः । बाह्ये पीठप्रमाणेन तत्र तत्र विभागत इति । अस्यार्थः कल्पलतायां । मंडपार्धप्रमाणेन मध्यस्तंभनिवेशनं दशहस्तमारभ्य शतहस्तपर्यंतं समानमेव । दशहस्ताद्यो वेति वाक्येन दशहस्तस्यैव विधानात् । तन्न्यूनेषु त्रिहस्तादिनवहस्तांतेषु स्तंभपरिमाणमार्थिकं । समवेधेन बाह्यस्तंभपरिमाणमाह ॥ स्तंभद्वादशकमिति ॥ द्वादशकमिति द्वादशेत्युपलक्षणं । विस्तरे तु यथाशोभमपरा अपि धारका इति स्मरणात् । बाह्ये बाह्यपरिधौ । सच द्विभूमिके द्वितीयस्त्रिभूमिके तृतीयश्चतुर्भूमिके चतुर्थ इत्याद्यूह्यं । तथा तत्रैव तन्निवेशस्थानमाह गौतमीये । तत्रतत्र विभागत इति । अत्रापि पीठप्रमाणेनेत्यनुषज्यते । ततश्च पीठप्रमाणेन तृतीयांशेन विभागः । तत्र स्तंभा निवेश्याः । सूत्रविभागत इति पाठे तु स्पष्टमेव । त्रिहस्तमारभ्य नवहस्तपर्यंतं अर्थात्परिमाणमिति न्यायेन ऋत्विक्प्रचारयोग्यं स्तंभपरिमाणं कल्पनीयं । तथाग्रेऽपि तत्रैव । तथाऽपराजितपृच्छायां दशानने कोटिहोमे । मंडपे मध्यमाः स्तंभा मंडपार्धप्रमाणतः । समंततस्त्रिभागेन परितो द्वादशापर इति । भागेन चतुर्थांशेनेत्यनुकल्पः । ह्याननेच । शालवृक्षोद्भवाः स्तंभा मंडपार्धप्रमाणतः । समंततस्त्रिभागेन द्वादशान्ये च वेदित इत्युक्तत्वात् । षट्त्रिंशत्स्तंभेषु तु मंडपे बाह्यपरिधिस्थानां स्तंभानां मंडपत्रिभागेनैव परिमाणं मध्यस्तंभचतुष्टयस्य मंडपार्धेन मध्यपरिधिस्थानां तु मध्यस्तंभापेक्षया न्यूनत्वं अंत्यस्तंभापेक्षया चाधिक्यं युक्त्या कल्पनीयमित्युक्तं प्राक् । एवं चतुर्भूमिकस्तंभादावित्यंतमुक्तं । तथाग्रेऽपि तत्रैव ॥ अथ द्वारपरिमाणं मंत्रमुक्तावल्यां । दिक्षु द्वाराणि चत्वारि विदध्यात्पंचमांशतः । पंचमांशो मध्यसूत्रस्येत्यारभ्य मध्येऽन्यमतमुक्त्वाग्रे चत्वारीत्यस्य मंत्रमुक्तावलीवाक्यस्य तदितरमंडपविषयत्वमित्यंतमुक्तं । अन्यमंडपः शतहस्तादिः ॥ ५१ ॥

अथ कस्मिन्मंडपे कति भूमिभागाः कियत्स्तंभा इत्यादिशिखरिणीवसंततिलकाशिखरिणीभिराह ॥ त्रीति ॥ त्रिहस्तमंडपमारभ्य सप्तहस्तमंडपांतं भूमेर्मंडपभूमेर्विभजनं भागो नहि भवति तथाष्टहस्तादष्टादशहस्तांतं त्रेधा विभागः प्रागपरोदग्दक्षिणसूत्राभ्यां त्रिधा विभागः । तथा विंशतिहस्तादष्टाविंशतिहस्तांतं पूर्ववत् शरैः पंचभिर्विभागः । तद्वत् त्रिंशद्धस्तात्पंचसप्ततिहस्तांतं हयैः सप्तभिर्विभागः । शते हस्ते मंडपे तु दिग्भिर्दशभिर्विभाग इत्यर्थः । अथच उक्तवद्भागेषु कृतेषु

त्रिहस्तात्सप्तांतं नहि भवति भूमेर्विभजनं गजा ८ त्रेधा धृत्यंत १८ मपि नखतो
२० ष्टाश्वि २८ विमितं । शरै ५ स्तद्वत्खाग्नेः ३० शरहय ७५ मितांतेऽपि च
हयैः ७ शते हस्ते दिग्भि १० स्त्वथ च गुणसंपातविमितान् ॥ ५२ ॥

ये सूत्रसंपाता भवंति तद्विमितान् स्तंभान्विनिवेशयेदित्युत्तरेणान्वयः । तथा हि । सप्तहस्तांतमंडपे भूमिविभागाभावात्संपाताभाव एव । तत्रापि बाह्याश्चत्वारः स्युः । बाह्ये चेति वक्ष्यमाणत्वात् । तथाष्टाद्यष्टादशपर्यंतं चत्वारः सूत्रसंपाताः बाह्या द्वादश । विंशत्यारभ्याष्टाविंशतिपर्यंतं षोडश सूत्रसंपाताः बाह्या विंशतिः । त्रिंशदारभ्य पंचसप्ततिपर्यंतं षट्त्रिंशत्सूत्रसंपाताः बाह्या अष्टाविंशतिः । तेन संपातस्तंभबाह्यस्तंभयोगे या संख्या भवति साग्रे स्वयमेव वक्ष्यति ॥ ५२ ॥

सर्वानिति ॥ सर्वान्स्तंभान्पूर्वगदितेन सुष्ठुलक्षणेन लक्षितान्गुणसंधिषु मंडपस्य बाह्ये सूत्रसमाप्तिसमानदेशे च तान्स्तंभान्संवेशयेत् । दृढं स्थापयेदित्यर्थः । अथच तेषां उक्तस्तंभानां मितिं संख्यां वच्मि कथयामीत्यर्थः ॥५३॥ हयेति ॥ सप्तहस्तमंडपांतं चत्वारः स्तंभाः । तदुपर्यष्टहस्ताद्यष्टादशांतं नृपाः षोडश । ततो विंशत्यारभ्याष्टाविंशतिपर्यंतं षट्त्रिंशत् । ततस्त्रिंशदारभ्य पंचसप्ततिपर्यंतं जलनिधिरसाः चतुःषष्टिः स्युरित्यर्थः । शते हस्ते धरित्रीसूर्याः एकविंशत्युत्तरशतं स्तंभाः स्युरित्यर्थः । तैः स्तंभैः क्रमेण सप्तहस्तांतं एकभूः । ततोष्टाद्यष्टादशांतं द्विभूः । ततो विंशत्याद्यष्टाविंशत्यंतं त्रिभूः । ततस्त्रिंशदारभ्य पंचसप्ततिपर्यंतं चतुर्भूरित्यर्थः । शतहस्तमंडपस्तु दशभूः सर्वमते स्यात् । तत्रापि मध्यकोष्ठचतुष्टयस्यैकीकरणेन पंचभूरपि सैव भवतीत्यर्थः । यदा कोष्ठचतुष्टयैकीकरणं तदा विंशत्युत्तरशतं स्तंभा इति बुद्धिमतोह्यं । तदुक्तं कल्पलतायां ।

सर्वांश्च पूर्वगदितेन सुलक्षणेन तान्लक्षितान्हि गुणसंधिषु मंडपस्य । बाह्ये च सूत्रपरिपूर्तिसमानदेशे संवेशयेदथ च वच्मि मितिं हि तेषां ॥ ५३ ॥
हयांतं ७ चत्वारस्तदुपरि नृपा १६ ह्याधृति १८ मितं ततः षट्त्रिंशत्स्याद्वसुनयन २८ हस्तांतमपि च । ततो बाणाश्वांतं ७५ जलनिधिरसाः ६४ स्युस्त्विह शते [1]धरित्रीसूर्या १२१ स्ते कु १ यम २ गुण ३ वेदा ४ भ्रकु १० भुवः १ ॥५४॥

---

[1] क्विना १२१ वात्रेनाः क्ष १ श्वि २ गुण ३ निगमा ४ शा १० शुग ५ भुवः इति पाठांतरं.

चतुरस्रं समं शुद्धं भुजकर्णविशोधितमित्यादिवाक्यैस्त्रिहस्तादयो नवहस्तांता मंडपा उक्तास्तेषां मध्ये सप्तहस्तांतानां नामाकारविशेषस्यानुक्तत्वात्षोडशादिस्तंभनिवेशासंभवादौचित्याच्च चतुःस्तंभत्वमेव युक्तं। उक्तंच सिद्धांतशेखरे। एकभौमं द्विभौमं वा त्रिभौमं पंचभूमिकमिति। वाशब्दाच्चतुर्भूमिकमपि। एकभौमत्वं चतुःस्तंभमंडपानामेव संभवति। अष्टहस्तमारभ्याष्टादशहस्तपर्यंतं षोडशस्तंभत्वं। विंशतिहस्तमारभ्याष्टाविंशतिहस्तपर्यंतं षट्त्रिंशत्स्तंभत्वं। त्रिंशद्धस्तमारभ्य चतुःषष्टिस्तंभत्वं। तादृशपरिमाणस्तंभासंभवे षोडशस्तंभत्वमेव वा। सर्वेषां यथावचनं व्यवस्था। सा चाग्रे दर्शयिष्यते। तेषां नामान्यपि तत्रैवोक्तानि। घनो घोषो विराजश्च कांचनः कामराजकः। सुघोषो घर्घरो दक्षो गहनो नव मंडपा इति। तथा। चत्वारिंशत्करा भूमिः पंचाधिक्येन विभ्रमः। पंचाशत्करविस्तारो विपुलो विपुलास्त्रय इति। विपुलास्त्रय इति पंचाशत्करपंचसप्ततिहस्तः शतहस्तश्चेति। तत्र पंचसप्ततिहस्तो जपाभिषेके पंचसप्ततिहस्ते वेद्याम्नानात्सिध्यति। शतहस्तस्तु हेमाद्रौ शांतिकांडेऽभिहितः। भूमिभागे समे शुद्धे प्रागुदक्प्रवणे तथा। पुण्याहं वाचयेत्पूर्वं कृत्वा विप्रान्सुपूजितान्। ततस्तु सहितो विप्रैः सूत्रयेन्मंडपं शुभं। उत्तमं शतहस्तं तु तदर्धेन तु मध्यमं। जघन्यं च तदर्धेन शक्तिकालाद्यपेक्षयेत्यंतमुक्तं। तथा तत्रैव सिद्धांतशेखरमते तु षोडशहस्तादीनां मंडपानां कनिष्ठत्वादिकमुक्त्वा स्तंभसंख्यांतरमप्युक्तं। षोडशस्तंभसंयुक्तं षट्त्रिंशत्स्तंभसंयुतं। चतुःषष्ट्यंघ्रिसंयुक्तं मंडपावाधमादिकमिति। अंघ्रयः स्तंभाः। शतहस्तादीनां रचनाप्रकारस्तु प्रतिपदोक्त एव। प्रयोजनवशाच्छतहस्ताधिकप्रमाणे मंडपे यथाशोभमधिका अपि स्तंभाः कर्तव्या इत्युक्तं। हेमाद्रौ भविष्यपुराणे। चतस्रो धारिकाः कोणे द्वेद्वे द्वारेषु पार्श्वयोः। विस्तारे तु यथाशोभमपरा अपि धारिका इति। धारिकाः स्तंभाः।

तेच स्तंभा उक्ताः पंचरात्रे । सारदारूद्भवान्स्तंभान्दृढान्कुर्यादृजून्समानिति । कालोत्तरेऽपि । स्तंभा यज्ञियवृक्षस्य शोभना ऋजवः शुभाः । अलाभे यज्ञकाष्ठानां सारदारुमयाः शुभाः । कर्तव्या दारुमात्रस्य तदलाभेऽपि यत्नत इति ॥ ५४ ॥ अथ स्तंभस्थूलतामुपेंद्रवज्रयाह ॥ दशेति ॥ ते सर्वे पूर्वोक्ता वक्ष्यमाणतोरणस्तंभा अपि दशांगुलसूत्रेण संवेष्टनयोग्याः स्युरिति शेषः । कुंडोद्योतेऽप्येवमेवोक्तं । पद्धतीकृत् कोटिहोमपद्धतीकारः तेन सूत्रेण कुगुणेनैकत्रिंशदंगुलात्मकेन वेष्टनयोग्याः स्युरित्याहुरित्यर्थः । तथाच शारदातिलके । दशांगुलप्रमाणेन तत्परीणाह ईरित इति । तथात्र पद्धतिरपि ।

दशांगुलैः संमितसूत्रकेणाभितस्तु संवेष्टनशालिनस्ते । अथापि सर्वे कुगुणेन ३१ तेन
संवेष्ट्यमाना इति पद्धतीकृत् ॥ ५५ ॥ यद्यप्युक्तं कल्पवल्लीकृतापि स्तंभानां वै
मंडपार्धादिमानं ॥ अत्युच्चत्वात्पद्धतीकृन्मते नो तस्मादत्र प्रोच्यते तन्मतेन ॥ ५६ ॥

परिणाहो विशालता । ज्योतिःशास्त्रोक्तप्रकारेण चैकत्रिंशदंगुलपरिधिसूत्रेण स्थूलता ज्ञेयेति । अत्रोत्तमाधममंडपेन व्यवस्था ज्ञेयेति मम प्रतिभाति ॥ ५५ ॥ अथ पद्धतीकृन्मतेन शतहस्तमंडपकरणं शालिन्युपजातिकाभ्यामाह ॥ यद्यपीति ॥ यद्यपि कुंडलताकारेण स्तंभानां मंडपार्धादिमानं यत्पूर्वमुक्तं तदत्युच्चत्वात्कोटिहोमपद्धतीकारमते नो । न संमतमित्यर्थः । तस्मादत्र ग्रंथे तन्मतेन पद्धतीकृन्मतेन तत्करणं प्रोच्यत इत्यर्थः ॥ ५६ ॥

मंडपमिति ॥ मंडपं शतहस्तमंडपं दशधा पूर्वपश्चिमदक्षिणोदक्सूत्रैर्दशधा विभज्य तेन दशदशहस्तपरिमितानि शतकोष्ठानि भवंति। तेषु यत्र यत्र स्थाने गुणसंधिः सूत्रसंपातो भवति तत्रतत्र तस्मिंस्तस्मिन्स्थाने दशहस्तान्स्तंभान् विनिवेशयेत्। बहिरपि शरहस्तान्पंचहस्तान्विनिवेशयेदित्यर्थः ॥ तथाच कोटिहोमपद्धतिः ॥ तत्र शतहस्ते मंडपे बहिः पंचहस्तान्स्तंभान् मध्ये स्तंभचतुष्टयमष्टहस्तं दशहस्तं वा दत्त्वा मध्ये दशदशहस्तोपरि मध्यस्तंभसमांस्तंभान्दत्त्वोपरि तिर्यक्काष्ठानि दद्यात्। ततो मध्यस्तंभचतुष्कोपरि किंचिदुच्चं कुर्यात्। अस्याशास्त्रीयत्वेऽपि सौकर्यार्थत्वादिति । दशमुखद्विमुखादौ तु पूर्वोक्तवदिति

मंडपं तु दशधा विभज्य वै यत्र यत्र च भवेद्गुणसंधिः ॥
तत्र तत्र विनिवेशयेद्दशहस्तकानपि बहिः शरहस्तान् ॥ ५७ ॥
द्वाराणि दिक्षु द्विकराणि चाल्पे मध्ये तु वेदांगुलवर्धितानि ॥
श्रेष्ठे तु नागां ८ गुलवृद्धिरुक्ता तं छादयेत्तानि तु वर्जयित्वा ॥ ५८ ॥

ज्ञेयं ॥ ५७ ॥ अथ कनिष्ठादिमंडपेषु द्वाराणींद्रवज्रयाह ॥ द्वाराणीति ॥ मंडपस्य द्वाराणि दिक्षु पूर्वाऽवाक्प्रत्यगुदक्सु कुर्यात्। तान्यल्पे कनिष्ठे मंडपे द्विकराणि द्विहस्तोन्मितानि। मध्ये मध्यमसंडपे वेदांगुलैश्चतुरंगुलैर्वर्धितानि। श्रेष्ठे उत्तममंडपे तु नागांगुलैरष्टांगुलैर्वृद्धिर्वर्धनं उक्ता कथितेत्यर्थः। तानि द्वाराणि वर्जयित्वा तं मंडपं छादयेदित्यर्थः। तदुक्तं पंचरात्रे। कनिष्ठे द्विकरं द्वारं चतुरंगुलवृद्धितः। मध्यमोत्तमयोरिति। क्रियासारे। आच्छाद्या मंडपाः सर्वे द्वारवर्जंतु सर्वतः इति ॥५८॥

अथ मंडपाच्छादनं वसंततिलकयाह ॥ वंशैरिति ॥ ततो द्वारकरणानंतरं सरलैः ऋजुभिः वंशैर्वेणुभिः सुकटैः 'चटाई' इतिख्यातैस्तृणकृतपट्टिकाविशेषैरथापि नारिकेलकदलैः पत्रैरथवा पद्मैः कमलैः तं मंडपमाच्छादयेदिति पूर्वेणान्वयः। स्थूणाः स्तंभान् सुदर्पणकैः सुष्ठु आदर्शैः सुपटैः सुवस्त्रैर्घंटिकाभिश्च संभूषयेच्छोभायुक्तान्कुर्यादित्यर्थः। तदुक्तं क्रियासारे। नारिकेलदलैर्वापि पंकजैर्वाथ वेणुभिः। आच्छाद्या मंडपाः सर्वे द्वारवर्जं तु सर्वतः इति। वास्तुशास्त्रे। कटैः सद्भिश्च संच्छाद्या विजयाद्याश्च मंडपाः इति। हयशीर्षपंचरात्रे। दर्पणैश्चामरैर्घंटैः स्तंभान्वस्त्रैर्विभूषयेदिति। अथ स्थूणाः स्यात्सू-

वंशैस्ततश्च सरलैः सुकटैरथापि तं नारिकेलकदलैरथवापि पद्मैः। स्थूणाः सुचामरसुदर्पणकै-
रथापि संभूषयेत्तु सुपटैरथ घंटिकाभिः ॥ ५९ ॥ तस्मात्करे वा द्विकरेऽपि हस्तैर्दीर्घाणि वाहां-
७ ग ६ शरै ५ स्तु काष्ठैः। अश्वत्थयज्ञांगजटीवटानां श्रेष्ठादिषु स्युः खलु तोरणानि ॥ ६० ॥

र्म्यां स्तंभे गृहस्य चेति मेदिनी ॥ ५९ ॥ अथ तोरणानींद्रवज्रयाह ॥ तस्मादिति ॥ तस्मान्मंडपात्करे हस्तांतरे द्विहस्तांतरे वा पंचषट्सप्तहस्तैर्दीर्घाणि अश्वत्थः पिप्पलः यज्ञांग औदुंबरः जटी प्लक्षः वटो न्यग्रोधस्तेषां काष्ठैः श्रेष्ठादिषु मंडपेषु तोरणानि बहिर्द्वाराणि कुर्यादित्यग्रेणान्वयः। उदुंबरो जंतुफलो यज्ञांगो हेमदुग्धकः। प्लक्षो जटी पर्कटी स्यात्। तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारमिति चामरः। तदुक्तमाग्नेये। पंचषट्सप्तहस्तानि खाताद्धस्ते स्थितानि त्विति। पिंगलामते। हस्तद्वयं बहिस्त्यक्त्वा तोरणानि निवेशयेदिति। महाकपिलपंचरात्रे। अश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटशाखाकृतानि च। मंडपस्य प्रतिदिशं द्वाराण्येतानि

कारयेदिति । द्वाराणि तोरणानि ॥६०॥ अथ तोरणमध्यावकाशमनुष्टुब्वृत्तेनाह ॥ द्विकरेति ॥ तानि तोरणानि द्विकराण्यायतानि द्विकरपरिमितायामानि अल्पे कनिष्ठमंडपे मध्यमोत्तममंडपयोस्तानि षडंगुलैर्द्वादशांगुलैश्च वर्धितानि दिक्षु चतुर्दिक्षु कुर्यादित्यन्वयः । मध्यमे मंडपे षडंगुलोत्तरद्विहस्तानि । उत्तमे द्वादशांगुलोत्तरद्विहस्तानीत्यर्थः । तदाह वसिष्ठः । कनिष्ठमंडपे कुर्याद्द्विकरायतिकानि च । करपादार्धमानेन वृध्द्या मध्योत्तमेषु चेति कल्पलतायां ॥ ६१ ॥ अथ तोरणे फलकत्रिशूलादिनिवेशनमिंद्रवज्रयाह ॥ प्राच्यादीति ॥ प्राच्यादिचतुर्दिक्षु तेषां तोरणानां चूडासु शिखासु उपरितः मनोज्ञं सुंदरं

द्विकराण्यायतान्यल्पे मध्यमोत्तमयोरपि । षट्द्वादशांगुलैः कुर्याद्वर्धितानीह दिक्षु च ॥ ६१ ॥
प्राच्यादिदिक्षूपरितो मनोज्ञं चूडासु देयं फलकं हि तेषां । तदर्धमानं तु निवेशनीया मध्ये
सजातीयकदारुकीलाः ॥ ६२ ॥ अल्पादिके दि १० ग्रवि १२ शक्र १४ पर्वैर्दीर्घास्तताः स्वांघ्रि-
मिता मनोज्ञाः । विष्णवायुधाभा अथ विष्णुयागे शैवे त्रिशूलाश्च धरां १ गुलोनाः ॥ ६३ ॥

फलकं काष्ठकृतपट्टिकाकारं तस्मात्तोरणदैर्घ्यादर्धमानं मितिर्यस्य तद्देयं निवेशनीयं । ततस्तदनंतरं तोरणसजातीयकाष्ठानां कीलाः इह फलकमध्ये निवेशनीया इत्यर्थः । अर्थात्फलकस्येति । तदुक्तं शारदातिलके । तिर्यक्फलकमानं स्यात्स्तंभानामर्धमानतः इति । महाकपिलपंचरात्रे । देवास्तोरणरूपेण संस्थिता यज्ञमंडपे । सर्वविघ्नविनाशार्थं रक्षार्थं चाध्वरस्य चेति ॥ ६२ ॥ अथ कीलानां मानमिंद्रवज्रयाह ॥ अल्पेति ॥ अल्पमध्यश्रेष्ठमंडपेषु दशद्वादशचतुर्दशपर्वैरंगुलीभिर्दीर्घाः

स्वाग्रिणा स्वचतुर्थांशेन मितास्तताः विस्तृताः कीलाः। विष्णुयागे विष्णुयजने विष्णवायुधाभाः विष्णवायुधानि शंखचक्रगदांबुजानि तदाभास्तद्वदाकाराः। शैवे शिवयजने तु सर्वेपि त्रिशूलाकाराः धरांगुलोना एकांगुलोनाः। विष्णवायुधापेक्षयेति शेषः। एतादृशाः स्वजातीयकं तोरणकाष्ठजातीयकं यद्दारु काष्ठं तस्य कीलाः। निवेशनीया इति पूर्वेणान्वयः। तदुक्तं वास्तुशास्त्रे। मस्तके द्वादशांशेन शंखचक्रगदांबुजं। मानादिक्रमयोगेन न्यसेत्तेषां स्वदारुजमिति। पिंगलामते। शूलेन चिह्निताः कार्या द्वारशाखास्तु मस्तके। शूले नवांगुलं दैर्घ्यं तुरीयांशेन विस्तृतिरिति ॥ ६३ ॥ अथ कीलानां निवेशने विकल्पानुपेंद्रवज्रयाह ॥ अथेति ॥ अथ विष्णुयजने एकं चक्रमेव सर्वत्र कुरु। तथा शिवस्य यजनेऽपि करेण दीर्घांस्त्रींस्त्रिशूलान्प्रतितोरणं कुरु। अथवा यस्य यज्ञस्तदायुधानि षोडशांगुलैर्दीर्घाणि कुर्वित्यर्थः। यथा गणेशस्यांकुशादि। तदुक्तं हयशीर्षे। तोरणस्तंभमूलेषु कलशान्मंगलांकुरान्। प्रदद्यादुपरिष्टात्तु कुर्यात्क्षेत्रं सुदर्शनमिति। मंत्रमुक्तावल्यां। अग्रयोर्मध्यभागे च पट्टिकायां त्रिशूलकानिति। क्रियासारेऽपि। तोरणं घटयित्वैवं मूर्ध्नि शूलत्रयं न्यसेत्। शूलं हस्तायतं तेषामिति। अपराजितपृच्छायां तु विशेषः। यद्दैवत्यः क्रतुः कार्यो वाहनान्यायुधानि वा। तत्र तस्य न्यसेद्धीमानंगुलैः षोडशाधिकैरिति ॥ ६४ ॥ अथ तोरणविकल्पानेकरूपभुजंगप्रयातवृत्ताभ्यामाह ॥ अथवेति ॥ तोरणानि वा स्युरित्यर्थः।

अथापि विष्णोर्यजने सुचक्रं त्रिशूलकांस्त्रीनथ वा शिवस्य। करेण दीर्घान्कुरु यस्य यज्ञ-
स्तदायुधान्येव नृपांगुलै १६ र्वा ॥ ६४ ॥ अथवापि हि तोरणानि वा स्युस्त्वधमेऽपि
करेण चौच्च्यमेषां। द्विकरौच्च्यमितः समे वरे स्यात्फलकं तु तदर्धताधिकं वा ॥ ६५ ॥

एषा तोरणानां औच्चयं उच्चतां अधमेऽपि मंडपे करेणैकहस्तेन इतो मंडपद्वारात् समे मध्यमे वरे श्रेष्ठे द्विकरौच्चयं स्यादिति । तत्फलकं तेषां फलकं तु तदर्धताधिकं वा उच्चतापेक्षया अर्धाधिकं वेत्यर्थः । तदुक्तं कुंडकल्पलताधृताऽपराजितपृच्छायां । तोरणान्यपि चत्वारि द्वारादधिकराणि तु । परिधिस्तंभतोच्चानि युगुलैर्युगुलैः करैरिति । द्वारादधिकरोंतरं येषां तानि स्तंभत उच्चानीति पदच्छेदः संधेश्छांदसत्वादिति । युगुलैर्युगुलैरिति वीप्सा तु दशहस्तमारभ्य शताधिकहस्तमंडपाभिप्रायेणेति । तथाग्रेपि तत्रैव । ततश्च द्वारापेक्षया तोरणस्य न्यूनताया लोकविरोध इत्यंतमुक्तं । शारदातिलके । तिर्यक्फलकमानं स्यात्स्तंभानामर्धमानतः इति । कुंडरत्नाकरस्तु स्तंभांतरालतिर्यक्फलकमानयोस्तुल्यत्वेन फलकनिवेशासंभवादसंगतमित्युक्तवांस्तन्न । चूडासु फलकनिवेशस्य इष्टार्थत्वेनार्थिकत्वात्तदर्थमुक्ताधिककल्पनेपि दोषाभावादित्यंतमुक्तं कल्पलतायां ॥ ६५ ॥

वटोदुंबराश्वत्थजव्युद्भवानि ह्यलाभे शमीखादिराम्रैश्च वा स्युः ।
तथैकेन वा यज्ञियेनैव कुर्यादिहैवोच्चतार्धस्तृतान्येव दिक्षु ॥ ६६ ॥

वटेति ॥ वटोदुंबराश्वत्थप्लक्षोद्भवानि उक्तकाष्ठालाभे शमीखादिराम्रकाष्ठैरथ वैकेनैव यज्ञियेन यज्ञियवृक्षेण पूर्वोक्तचतुर्णां मध्ये एकेनैव तानि तोरणानि स्युरित्यर्थः । इह मंडपे दिक्षु चतुर्दिक्षु उच्चतार्धस्तृतानि स्तंभोच्चत्वापेक्षयार्धस्तृतानि विस्तृतानि अर्धाधिकानि वेति कुंडकल्पलतामतं पूर्वमेवोक्तं । सिद्धांतशेखरे । न्यग्रोधतोरणं पूर्वे याम्ये त्वौदुंबरं मतं । पश्चिमेऽश्वत्थसंभूतमुत्तरे प्लक्षतोरणमिति । क्रियासारे । प्लक्षोदुंबरजाश्वत्थवटजास्तोरणाः क्रमात् । पूर्वादितो विधातव्या यद्वाद्यंतविपर्ययः इति । सिद्धांतशेखरे । एकमेषामलाभे स्यात्तदभावे शमीद्रुमः । खादिरो वा रसा-

लश्च तालो वा तोरणे स्मृतः इति । तथा तोरणानां च सर्वेषामुच्छ्रायार्धेन विस्तृतिरिति । आग्नेयेऽपि तोरणं प्रकृत्य । तदर्धविस्तृतानि स्युर्युतान्यग्रे ध्वजादिभिरिति ॥ ६६ ॥ अथ ध्वजान्स्रग्धरावृत्तेनाह ॥ वंशेष्विति ॥ अष्टौ ध्वजाः दिक्षु वंशेषु वेणुषु स्युरित्यन्वयः । ते ध्वजाः स्वहरितः स्वदिशः तासामभिमुखाः संमुखा इत्यर्थः । दिशः पांतीति ते इंद्रादयस्तेषां वाहाः वाहनानि गजादीनि तैरंकिताश्चिह्निता इत्यर्थः । ये दैर्घ्ये दीर्घतायां पंचहस्ताः येषां ततिर्विस्तृतिर्हस्तद्वयेन

वंशेष्वष्टौ ध्वजाश्च स्वहरिदभिमुखा दिक्पवाहांकितास्ते दैर्घ्ये ये पंचहस्तास्ततिरपि गदिता
हस्तयुग्मेन येषां । वर्णैस्ते पीतरक्तासितविसितसिताश्वेतशुभ्रातिशुभ्राः स्युश्चैते चाष्टदिक्षु
प्रभवति नवमो मंडपस्यैव मध्ये ॥ ६७ ॥ अत्युच्चे सुविचित्रितो गुणकरव्यासस्तु दीर्घस्तथा
हस्तैः स्याद्दशभिः सुचामरयुतप्रांतेऽपि घंटान्वितः । दिक्पालास्त्रयुता दिगीशरुचयस्ताः स्युः
पताकाः शुभा दैर्घ्यं सप्तकरं तथा यतिरथो तासां करेणोन्मिता ॥ ६८ ॥

गदिता कथिता । तेषां वर्णानाह । ते ध्वजाः वर्णैः पीतः प्रसिद्धः रक्तोऽरुणः असितः कृष्णः विसितोऽपि कृष्णः सितः श्वेतः अश्वेतोऽपि धूम्रः । अल्पत्वस्यापि नञर्थत्वात् । शुभ्रः श्वेतः अतिशुभ्रश्चापि श्वेत इत्यर्थः । नवमो ध्वजः मंडपमध्ये एव भवति । तदुक्तं गरुडपुराणे । पंचहस्ताध्वजाः कार्या वैपुल्येन द्विहस्तका इति । प्रतिष्ठासारसंग्रहे । पीतरक्तादिवर्णाश्च पंचहस्तध्वजाः स्मृताः इति ॥ ६७ ॥ अथ पूर्वोक्तं नवमं ध्वजं पताकाश्च शार्दूलविक्रीडितवृत्तेनाह ॥ अतीति ॥

सर्वध्वजवंशापेक्षया द्विगुणे त्रिगुणे वा वंशे सुष्ठु विचित्रितः। अनेकवर्णयुक्त इति भावः। त्रिकरैर्विस्तृतः तथा दशभिः करैर्दीर्घः स्यादित्यर्थः। सुष्ठु चामरेण युतं यत्प्रांतं वंशस्याग्रं तस्मिन्घंटयान्वित इत्यर्थः॥ दिगिति॥ अथो पताकाः दिक्पालानामस्त्राणि शस्त्राणि तैर्युताश्चिह्निताः दिगीश्वरा इंद्रादयस्तन्निभाः वर्णैस्तत्तुल्याः। तासां पताकानां दैर्घ्यं सप्तकरं। तथा यतिर्विस्तृतिः करेणोन्मिता हस्तमात्रेत्यर्थः। एतादृश्यः पताकाः स्युर्भवेयुः। उक्तंच रुद्रप्रसादे। एको महाध्वजः कार्यो मंडपोपरि मध्यतः। अत्युच्चो दशहस्तः स्याद्दीर्घस्त्रिहस्तविस्तृतः। चामरेण युतः शीर्षे प्रांते सक्षुद्रघंटिक इति। पताका

पीतस्वर्णरुची ततोऽजनरुची श्वेतः शुकाभः सितः श्वेतश्चेति शतक्रतुप्रभृ-
तयः स्युश्चोक्तवर्णाः शुभाः। वज्रं शक्तिरथापि दंडक इति स्युः खड्गपाशां-
कुशाः शस्त्राण्येव गदा त्रिशूल इति वै शक्रादिकानां क्रमात्॥ ६९॥

अपि मात्स्ये। लोकेशवर्णाः परितः पताका मध्ये ध्वजः किंकिणिकायुतः स्यादिति। सारसंग्रहेऽपि। प्रतिकुंडं पताकास्तु प्रोक्ताः शास्त्रार्थकोविदैः। दीर्घास्ताः सप्तहस्ताः स्युः सप्तमांशेन विस्तृताः। लोकपालानुवर्णेनेति॥ ६८॥ अथ लोकेशवर्णशस्त्राणि शार्दूलविक्रीडितवृत्तेनाह॥ पीतेति॥ पीतश्च स्वर्णरुचिश्च तौ। अंजनं कृष्णवर्णोपलक्षकं तद्वत् कांतिर्ययोः। ततः श्वेतः सितः शुकाभो हरितः सितः श्वेतश्चेति उक्तवर्णा येषां एतादृशाः शतक्रतुप्रभृतयः शुभाः शोभनाः स्युरित्यर्थः। अथ शक्रादिकानां क्रमात् वज्रं शक्तिर्दंडः कोदंडः खड्गश्च पाशश्चांकुशश्चेति ते गदा त्रिशूलश्चेति शस्त्राणि स्युरि-

त्यर्थः । अत्रोदग्दिक्स्वामी कुबेरपक्षे ततोंजनरुची श्वेतो हरित्स्वर्णभ इति पाठांतरं कल्प्यं । वर्णाः पुराणांतरे । इन्द्रः पीतो यमः श्यामो वरुणः स्फटिकप्रभः । कुबेरश्च सुवर्णाभो वह्निश्चापि सुवर्णभः । तथैव निर्ऋतिः श्यामो वायुर्धूम्रः प्रशस्यते । ईशानस्तु भवेद्गौर इति ॥ ६९ ॥ अथ तेषां वाहनानि प्रमाणिकावृत्तेनाह ॥ गज इति ॥ दिगीशवाहनान्युच्यंत इति शेषः । गजः प्रसिद्धः हुडुर्मेषः रजस्वलो महिषः मरुत्पवः सिंहः वल्कवान्मत्स्यः कुरंगमो हरिणः हयवृषौ प्रसिद्धौ । मेषस्तु रोमशः । संस्फालहुडुभेडाश्चेति । महिषस्तु रजस्वल इति । सिंहः कंठीरवो भीमविक्रांतः करिमाचलः । पंचशि-

गजो हुडू रजस्वलो मरुत्पवश्च वल्कवान् । कुरंगमो हयो वृषो दि-
गीशवाहनान्यमी ॥ ७० ॥ न्यसेत्तांस्तान्हरित्स्वाशा १० करवंशस्य
मूर्धनि । नवमीमपि सुश्वेतां मध्ये रुद्रेंद्रयोर्न्यसेत् ॥ ७१ ॥

खश्च शैलाटः पारींद्रः श्वेतपिंगलः । मरुत्पवश्चेति । अनिमेषो वल्कलवानपि मीन इति । एणः कुरंगमो रिश्य इति च त्रिकांडशेषः । क्रियासारे । मातंगवस्तमहिषसिंहमत्स्यैणवाजिनः । वृषभं च यथान्यायं ध्वजमध्ये क्रमालिखेत् इति ॥ ७० ॥ अथ ध्वजपताकानिवेशनं वंशमानं चानुष्टुब्वृत्तेनाह ॥ न्यसेदिति ॥ तान्पूर्वोक्तान्ध्वजान्पताकाश्च हरित्स्वष्टदिक्षु दशकरवंशस्य मूर्धन्यग्रे न्यसेत्स्थापयेदित्यर्थः । तथा नवमीमपि पताकां शुभ्रवर्णां रुद्रेंद्रयोरीशानीपूर्वयोर्मध्ये न्यसेदित्यर्थः । उक्तंच क्रियासारे । मंडपस्य बहिर्दंडैर्दशहस्तायतैः सह । पूर्वाद्यष्टहरित्स्वष्टौ ध्वजान्संस्थापयेत्क्रमादिति । प्रतिष्ठासार-

संग्रहे । द्विपंचहस्तैर्दंडैस्ते वंशजैः संयुतास्तथेति । सोमशंभौ । दशहस्ताः पताकानां दंडाः पंचांशवेशिताः । पताका आयुधांकाश्च पुष्पचंदनचर्चिता इति । नवमी तुहिनप्रभेति सारसंग्रहे ॥ ७१ ॥ अथ ध्वजपताकानां मतांतराणींद्रवज्रोपजातींद्रवज्राभुजंगप्रयातानुष्टुब्वृत्तैराह ॥ शक्रेति ॥ चतुर्दशद्वादशदशकरैः श्रेष्ठाः । द्वादशदशाष्टकरैर्मध्याः । नवाष्टसप्तकरैरधमाः । सप्तषट्पंचकरैरधमाधमाश्चेत्यर्थः ॥ ७२ ॥ दीर्घा इति ॥ ते ध्वजाः उक्तकरैर्दीर्घाः नेत्रायतिका द्विहस्तविस्तृता

शक्रे १४ न १२ पंक्ति १० प्रमितैः करैस्तु श्रेष्ठास्तथा सूर्य १२ हरि १० द्रजै ८ स्तु ।
मध्या अथो गो ९ ष्ट ८ नगैः ७ कनिष्ठा मुन्यं ७ ग ६ बाणै ५ रधमाधमाश्च ॥ ७२ ॥
दीर्घास्तु नेत्रा २ यतिकास्तथैषामग्रं तु वेदै ४ र्विमितं त्रिकोणं । अथापि वा नेत्र-
२ करोन्मितास्ते नखांगुलैरायतिकास्तथा च ॥ ७३ ॥ सर्वेऽथवा बाहुमिता ध्वजाः स्युः
सूर्यां १२ गुलैरायतिका दशैव । पक्षे यदा दिक्प्रमिता १० स्तदा तु रंध्र ९ स्तु रक्तो
दशमः सितश्च ॥ ७४ ॥

इत्यर्थः । एषामग्रं तु वेदैश्चतुःकरैस्त्रिकोणं स्यात् । अथवा ते सर्वे ध्वजाः द्विहस्तदीर्घाः विंशत्यंगुलैर्विस्तृताश्चेत्यर्थः ॥ ७३ ॥ ॥ सर्वे इति ॥ अथवा सर्वे ध्वजाः बाहुमात्रदीर्घाः । द्वादशांगुलैर्विस्तृताः दशैव स्युरित्यर्थः । यदा पक्षांतरे दिक्प्रमिताः दशैव कार्यास्तदा रंध्रो नवमो ध्वजः मेघवर्णः दशमः श्वेतश्चेति विशेषः ॥ ७४ ॥

तथेति ॥ अथो पताकाः ध्वजानां च तुल्या दैर्घ्यविस्ताराभ्यामित्यर्थः । तदाकाराः ध्वजाकाराः त्रिकोणादिरूपास्तद्वर्णा पूर्वोक्तवर्णाः स्युरिति शेषः। यत्र ता अपि दशैव तदा रंध्रा नवमी सर्ववर्णा तथा दशम्यपि पंचवर्णा प्रदिष्टा स्यादित्यर्थः । तथाच सुबोधिन्यां ध्वजपताकालक्षणं। ध्वजाः पताका यत्रोक्ताश्चतुर्दशकरा मताः । द्विहस्तविस्तृता बद्धाश्चतुर्हस्ताचलांचलाः । हस्तद्वयेन हीनास्ता मध्यमा अधमास्ततः । मध्यमात्करतो हीना अधमाच्च त्रिसंज्ञकाः । अधमाधमतो हस्तहीनास्ते च करादयः । सप्तहस्ता यदा कार्याः सप्तमांशेन विस्तृताः। द्विहस्तसंमिता वापि विंशत्यंगुलविस्तृताः । यथाविभवतः कार्याः पूर्वाभावे पराः

तथाथो पताकाध्वजानां च तुल्यास्तदाकारवर्णा दशैवापि यत्र । तदा सर्ववर्णा
तु रंध्रा प्रदिष्टा तथा पंचवर्णा दशम्येव च स्यात् ॥७५॥ पताकाश्च ध्वजाश्चैव
दशैवेति विनिश्चितं । सुबोधिनीमतं त्वत्र पद्धत्या च विरुध्यते ॥ ७६ ॥

स्मृताः । प्रकारांतरं तत्रैव । पंचहस्ता ध्वजाः प्रोक्ता विस्तृताश्च द्विहस्तकाः । अथवा वाहुमात्राः स्युः सर्वा विस्तृतिविस्तृताः इति । तथा तत्रैव । इंद्रायुधप्रभा रक्ता धूम्रा कृष्णासितासिता । श्वेता चैव तु मेघाभा रक्ता गौरा क्रमाद्दशेति ॥ ७५ ॥ ॥ पताका इति ॥ ताः पताकाः ध्वजाश्च दशैवेति यद्विनिश्चितं तत्र सुबोधिनीमतं कोटिहोमपद्धत्या सह विरुध्यत इत्यर्थः । तथाच सुबोधिनी । दशदिक्पतिमंत्रैश्च दशदिक्षु यथाक्रमं । ध्वजाः पताकाः संस्थाप्यास्तत्तन्मंत्रैः स्वशाखजैरिति । तथाच पद्धतिः । अनयोः पताके अपि भवत इति केचित् । तत्र मूलं मृग्यं । नच लोकेशवर्णा इति मूलं । तेषां

प्राक्परिगणितत्वात्, ऊर्ध्वं तु ब्रह्मणे देय इति पार्थक्येन गणनाच्चेति ॥ ७६ ॥ अथोत्तमादिमंडपे स्नानमंडपमानं शालिनीवृत्तेनाह ॥ श्रेष्ठेति ॥ पूर्वमंडपादुत्तरस्यां दिशि देवस्नापनार्थं स मंडपः स्यादित्यर्थः । स मंडपः श्रेष्ठे मंडपे तदर्धेन, मध्ये मध्यममंडपे त्र्यंशेन, अल्पे चतुर्थांशेन पूर्वमंडपापेक्षयेत्यर्थः । तस्मात्स्नानमंडपादुत्तरस्यां तदर्धां स्नानमंडपार्धां तद्वत्कारुशालां प्रकुर्यादित्यर्थः । तदुक्तं हेमाद्रौ कौस्तुभे च । मंडपस्योत्तरे कार्यः स्नानाख्यो मंडपः परः । मंडपस्यार्धमानेन

श्रेष्ठेऽर्धेनाग्र्यं ३ शमानेन मध्ये ह्यल्पे वेदां ४ शेन च स्नापनार्थं । पूर्वात्कुर्यान्मंडपाच्चोत्तरस्यां तस्मादर्धां कारुशालां ततश्च ॥ ७७ ॥ प्रतिष्ठायां द्वयं तच्च प्राच्यां तस्मिंश्च वेदिकाः । तिस्रो हस्तेन दीर्घाः स्युस्तताश्चांघ्रिमितोच्छ्रिताः ॥ ७८ ॥ कुंभैर्गंगांबुपूर्णैः ससुफलसुदलैरावृतं चामरौघै रंभास्तंभैः सपुष्पैः सुसुरभिकुसुमस्रग्भिराबद्धकूटं । उल्लोचादर्शचूतद्रुमभवकिसलैः संवृतं विप्रवृंदैः पद्मैश्चांपेयमुक्ताफलकृतजलजैर्भूषयेत्तं समंतात् ॥ ७९ ॥

तदर्धेनाथ वा पुनः । तदुत्तरे कारुशालां स्नानाख्यस्यार्धमानत इति । मात्स्येऽपि । तस्याप्युत्तरतः कुर्यात्स्नानमंडपमुत्तमं । तदर्धेन त्रिभागेन चतुर्थांशेन वा पुनरिति ॥ ७७ ॥ अथास्मिन्मंडपे वेदित्रितयं कुर्यादित्यनुष्टुब्वृत्तेनाह ॥ प्रतिष्ठेति ॥ शिवादिप्रतिष्ठायां तद्द्वयं स्नानमंडपः कारुशाला चेति द्वयं स्यात् । तस्मिन्मंडपे तिस्रो वेदिकाः स्युरित्यर्थः । ताः हस्तेन दीर्घाः तताः विस्तृताश्च अंघ्रिमितेन स्वपादतुल्येन मानेनोच्छ्रिता इत्यर्थः ॥ ७८ ॥ अथ मंडपभूषणं स्रग्धरावृत्तेनाह ॥ कुंभै-

रिति ॥ गंगायाः अंबु पानीयं तेन पूर्णैः कुंभैः सुष्ठु च तानि फलानि तैः सह तानि च सुष्ठु दलानि तैरावृतं समंताद्व्याप्तं । चामराणां वनगोपुच्छानां ओघैः समूहैः सपुष्पै रंभास्तंभैः सुष्ठु सुरभिर्गंधो येषां तानि च कुसुमानि पुष्पाणि तेषां स्रग्भिर्मालाभिरासमंताद्बद्धः कूटः शिखरं यस्य । कूटोऽस्त्री शिखरं शृंगमित्यमरः । उल्लोचो वितानः आदर्शो दर्पणं चूतद्रुम आम्रद्रुमस्तदुद्भवानि च तानि किसलानि पल्लवास्तैरावृतमित्यत्राप्यनुवर्तते । अस्त्री वितानमुल्लोच इत्यमरः । अथ पल्लवः । विसलं किसलं चाथो इति त्रिकांडशेषः । विप्राणां वृंदैः समूहैरावृतं व्याप्तं । पद्मैः कमलैः चांपेयं सुवर्णं मुक्ताफलानि मौक्तिकानि तैः कृतानि च तानि जलजानि तैर्मंडपं समंतात्सर्वत्र संभूषयेद्रमणीयं कुर्यादित्यर्थः । स्वर्णं लोहवरं

प्राक्तोऽथ वेदास्रिवरांगमर्धेंद्वग्न्यस्रिवृत्तानि षडस्रि पद्मं ।
कुंडानि चाष्टास्र्यथ वात्र सर्वाण्याम्नायकोणानि च वर्तुलानि ॥ ८० ॥

चाग्निबीजं चांपेयमित्यपीति त्रिकांडशेषः । सिद्धांतशेखरे । चूतपल्लवमालाढ्यं वितानैरुपशोभितं । विचित्रवस्त्रसंछन्नं पट्टकूलादिभूषितं । सफलैः कदलीस्तंभैः क्रमुकैर्नारिकेलजैः । फलैर्नानाविधैर्भोज्यैर्दर्पणैश्चामरैरपि । भूषितं मंडपं कुर्याद्रत्नपुष्पसमुज्ज्वलमिति ॥ ७९ ॥ अथ कुंडानि वक्तुं तेषां स्थानान्याकारांश्चेंद्रवज्रावृत्तेनाह ॥ प्राक्त इति ॥ अथ कुंडानि पूर्वदिशमारभ्य वक्ष्यमाणानि कुंडानि । तानि पूर्वस्यां वेदास्रं । वह्निदिशि वरांगं योनिकुंडं । दक्षिणस्यामर्धेंदु अर्धचंद्रं । निर्ऋतौ अग्न्यस्रि त्रिकोणं । प्रतीच्यां वृत्तं । वायव्यां षडस्रि । उदीच्यां पद्मं पद्माकारं । ईशान्यामष्टास्रीति । अथवा सर्वाणि आम्नाय-

कोणानि चतुरस्राणि । अथवा वर्तुलानि च भवंतीति शेषः । अस्रशब्दः कोणवाची । अस्रः कोणे कचे पुंसीति मेदिनीकोशात् । शारदातिलके । अष्टास्वाशासु रम्याणि कुंडान्येतान्यनुक्रमात् । चतुरस्रं योनिरर्धचंद्रं त्र्यस्रं च वर्तुलं । षडस्रं पंकजाकारमष्टास्रं तानि नामतः इति । पंचरात्रे । सर्वाणि तानि वृत्तानि चतुरस्राणि वा सदेति ॥ ८० ॥ अथाचार्यकुंडस्थलं पंचकुंडीपक्षं चोपजातिवृत्तेनाह ॥ इंद्रेति ॥ इंद्रश्च ईशानश्च तयोर्दिशोर्मध्ये अब्धिकोणं चतुरस्रं अथवा वृत्तं स्यादित्यर्थः । एतद्गुरोः कुंडमाचार्यकुंडमिति यावत् । तदाचार्यकुंडं पंचकुंडीपक्षे ईशदिगीशानी तस्यां स्थितं भवतीत्यर्थः । वि-

इंद्रेशमध्ये ह्यथवाब्धिकोणं वृत्तं गुरोः स्यात्खलु कुंडमेतत् । तत्पंचकुंड्यां भवतीशादिक्स्थं
विदिक्स्थकुंडैस्तु विनेषु ५ कुंडी ॥ ८१ ॥ यदैककुंडपक्षोऽस्ति तदा
प्राच्यामथापि वा । प्रतीच्यामुत्तरस्यां वा श्रीशंभुदिशि वा कुरु ॥ ८२ ॥

दिक्स्थकुंडैः विदिशः आग्नेयीनैर्ऋतीवायव्यैशान्यः तासु कुंडानि योनित्र्यस्रषडस्राष्टास्राणि तैर्विना इषुकुंडी पंचकुंडी स्यादिति । तदुक्तं सिद्धांतशेखरे । पुरंदरेशयोर्मध्ये वृत्तं वा चतुरस्रकं । तदाचार्यविनिर्दिष्टमिति । शारदातिलकेऽपि । आचार्यकुंडं मध्ये स्याद्गौरीपतिमहेंद्रयोरिति । पंचकुंडी नारदीये । यत्रोपदिश्यते कुंडचतुष्कं तत्र कर्मणि । वेदास्रमर्धचंद्रं च वृत्तं पद्मनिभं तथा । कुर्यात्कुंडानि चत्वारि प्राच्यादिषु विचक्षणः । पंचमं कारयेत्कुंडमीशदिग्गोचरं बुध इति ॥ ८१ ॥ अथैककुंडपक्षे कुंडस्थलान्यनुष्टुब्वृत्तेनाह ॥ यदेति ॥ यदैककुंडपक्षः स्वीकृतस्तदा प्राच्यां प्रतीच्यां वोत्तरस्यां श्रीशंभुदिशि ऐशान्यां

वा कुर्वित्यर्थः । तदुक्तं सोमशंभौ । एकं वा शिवकाष्ठायां प्रतीच्यां कारयेद्बुध इति । क्रियासारे । उत्तरस्या भवेत्कुंडं वृत्तं वा चतुरस्रकमिति । तथा । भुक्तौ मुक्तौ तथा पुष्टौ जीर्णोद्धारे तथैव च । सदा होमे तथा शांतावेकं वरुणदिग्गतमिति ॥ ८२ ॥ अथ कर्मपरत्वेनैककुंडस्य मध्ये विधानमार्याछंदसाह ॥ एकमिति ॥ एकं चेत् कुंडं शांतौ शांतिकर्मणि जपांगहवनेषु । जपांगमित्युपलक्षणं । वेदपारायणांगहवननवशतसहस्रचंड्यादिहवनेषु तथैकादशिनीमारभ्य लघुरुद्रमहारुद्रातिरुद्रहवनेषु मध्ये मंडपमध्ये कार्यं तदेव शुभदमित्यर्थः । ग्रहशांतिमुपक्रम्य वसिष्ठः । कुंडं तन्मध्यभागे तु कारयेच्चतुरस्रकमिति । तथा मंडपे च मध्यभागे कुंडं कुर्यादिति रुद्रपद्धत्यां श्रीमद्भट्टनारायणचरणाः ॥ ८३ ॥ अथ कामनापरत्वेन तानि शार्दूलविक्रीडितवृत्ताभ्यामाह ॥ शांतीति ॥ शांत्याद्युक्तकृत्येषु चतुरस्रं स्यात् । भोगादित्रितये भगं योनिकुंडं स्यात् । अथो वश्यादित्रितये अर्धेंद्वाभमर्धचंद्रं । अथ रिपुनाशादित्रितये त्र्यस्रि कुंडं स्यात् । अथ वश्यादिचतुष्टये वृत्तिर्वलयं स्यात् ॥ ८४ ॥

एकं कुंडं शुभदं मध्ये शांतौ जपांगहवनेषु । आरभ्यैकादशिनीं लघुमहदतिरुद्रहवनविधौ ॥ ८३ ॥
शांतिस्तंभनसिद्धिभद्रयशसां कृत्ये तु वेदास्रकं भोगाकर्षणपुत्रकृद्भगमथो वश्ये च शांतौ मृतौ ।
अर्धेंद्वाभमथारिनाशनविधौ द्वेषे तथाऽऽकर्षणे त्र्यस्रि स्यादथ वश्यपुष्टिकरणे संपत्तिशांत्योर्वृतिः ॥ ८४ ॥

शत्रूच्चाटनमारणादिविषये स्यात्स्तंभनेंऽगास्रकं पद्मं पुष्टिधनागमाद्यगदकृद्वश्यार्थमानप्रदं । सर्वाप्तौ च तथा गजास्रमपि तद्योगार्थमुक्तिप्रदं संपत्कृद्गुरुकुंडमत्र तु शरास्रि स्याच्च भूतादिहृत् ॥ ८५ ॥

शत्रिवति ॥ शत्रूच्चाटनादिविषये अंगास्रकं षडस्रि स्यात् । अथ पुष्ट्यादि सर्वाप्तिपर्यंतं पद्मं स्यात् । तथा योगार्थादिद्वितये गजास्रमष्टास्रि स्यात् । गुरुकुंडमाचार्यकुंडं संपत्कृत्स्यात् । अत्र शरास्रि तु भूतादिदोषहृदित्यर्थः । तदुक्तं जयपृच्छाधिकारे । शांतिके चतुरस्रं स्याद्वश्ये चैवार्धचंद्रकं । षट्कोणं मारणे चैव स्तंभने च विशेषतः । आकर्षणे त्रिकोणं स्याद्वर्तुलं चाभिचारिके । मानसिद्धिप्रजननं पद्मं कुंडं न संशयः । पुत्रदं योनिकुंडं स्यादष्टास्रं चैव मुक्तिदं । पंचास्रं भूतदोषघ्नं सप्तास्रमभिचारहृत् । उत्तरे शांतिकं कुर्यात्स्तंभनं चैव पूर्वतः । मारणं दक्षिणे प्रोक्तं वश्यं चैव तु पश्चिमे । आग्नेय्यां दायमुत्साद्यं विद्वेषं नैर्ऋतेन तु । उच्चाटनं च वायव्ये ईशान्ये सर्वसिद्धिदमिति । सिद्धांतशेखरेऽपि । ऐंद्र्यां स्तंभे चतुष्कोणमग्नौ भोगे भगाकृति । चंद्रार्धं मारणे याम्ये द्वेषे निर्ऋतित्रिकोणकं । वारुण्यां शांतिके वृत्तं षडरुयुच्चाटनेऽनिले । उदीच्यां पौष्टिके पद्मं रौद्र्यामष्टास्रि मुक्तिदमिति । पिंगलामते । कुंडं कुशेशयाकारमुत्तरे वश्यकर्मणि । षडरुयुच्चाटने वायात्रर्धेंदु मारणे यमे । वेदास्रं स्तंभने प्राच्यामाकर्षेऽग्नौ भगाकृति । वारुण्यां शांतिके वृत्तमीशे त्वष्टास्रि मुक्तिदमिति । सिद्धांतशेखरे । योन्याख्यमुच्यते कुंडमाग्नेय्यामुत्तरामुखं । प्रजावृद्धौ च तापे स्यादर्धचंद्रमथोच्यते । याम्ये तन्मारणे शस्तमुत्तराभिमुखं

तथा । निर्ऋते त्र्यस्त्रि कुंडं स्याद्विद्वेषे पूर्ववक्रकमिति । अन्यत्रापि । यशः श्रेयस्तथा शांतिश्चतुरस्रेण सिध्यति । भगाकारेण चाकृष्टिः शांतिः स्यादर्धचंद्रके । त्रिकोणे रिपुनाशः स्यात्संपत्पुष्टिश्च वर्तुले । उच्चाटनं तु षट्कोणे वित्तारोग्यं च पंकजे । अष्टास्रे योगसिद्धिः स्यादाचार्ये सर्वसंपद इति परशुरामः । अत्र सर्वत्रादिपदेन वृष्टिदं रोगनाशनमित्यादि तारतम्येन फलान्यूह्यानि ॥८५॥ अथ ब्राह्मणादिपरत्वेन कुंडान्यनुष्टुब्वृत्तेनाह ॥ वेदेति ॥ वेदास्रं चतुरस्रं वृत्तमर्धेंदु अर्धचंद्रं रामास्रं त्र्यस्रं क्रमेण विप्रक्षत्रियवैश्यशूद्रविषयेषु स्युः । अथवा सर्वेषां चतुरस्रं वृत्तं वेति । योषितां स्त्रीणां तु विशेषतो योन्याकाराणीत्यर्थः । तदुक्तं शारदातिलके । विप्राणां चतुरस्रं स्याद्राज्ञां वर्तुलमिष्यते । वैश्यानामर्धचंद्राभं शूद्राणां त्र्यस्रमीरितं । चतुरस्रं तु सर्वेषां केचिदिच्छंति सूरय इति । पंचरात्रे । सर्वाणि तानि वृत्तानि चतुरस्राणि वा सदेति । सनत्कुमारः । स्त्रीणां कुंडानि विप्रेंद्र योन्याकाराणि कारयेदिति ॥ ८६ ॥ अथ कुंडवेद्योरंतरमिंद्रवज्रावृत्तेनाह ॥ वेद्या इति ॥ वेद्याः सकाशादष्टसु दिक्षु अष्टकोष्ठेषु यः कोष्ठमध्यः अथवा वेद्याः सकाशान्मेखलांतं सपादहस्तमथवा वेद्याः पादं वा त्रिचंद्रांगुलं त्रयोदशांगुलमंतरं स्यादित्यर्थः । एवमंतरं ज्ञात्वा कुंडानि कुर्यादिति भावः । तदुक्तं शारदातिलके । प्राक्प्रोक्ते मंडपे विद्वान्वे-

**वेदास्रं वृत्तमर्धेंदु रामास्रं ३ ब्राह्मणादिषु । वृत्तं वाब्ध्यस्त्रि सर्वेषां भगाभानि तु**
**योषिताम् ॥८६॥ वेद्याः सकाशादिह वाष्टदिक्षु कोष्ठस्य मध्यः सहि कुंडमध्यः ।**
**स्यान्मेखलांतं तु सपादहस्तं पादं त्रिचंद्रां १३ गुलमंतरं वा ॥ ८७ ॥**

दिकाया बहिस्त्रिधा । क्षेत्रं विभज्य मध्येंशे पूर्वादि परिकल्पयेत् । अष्टास्वाशासु कुंडानि रम्याकाराण्यनुक्रमादिति । एवमेव कुंडकल्पलतायां कुंडदीपके कुंडोद्द्योते च । वेदीपादांतरं त्यक्त्वा कुंडानि नव पंच वेति सोमशंभुः । त्यक्त्वा वेदीचतुर्भागं कुंडानि नव पंच वेति क्रियासारे । कुंडवेद्यंतरं चैव सपादकरसंमितमिति नारदीयाच्चेति । वसिष्ठसंहितायां । त्रयोदशांगुलं त्यक्त्वा वेदिकायाश्चतुर्दिशमिति । वेदीभित्तिं परित्यज्य त्रयोदशभिरंगुलैरिति च । सपादहस्ताद्यंतरपक्षे कुंडमध्यकेंद्राणि समानानि न भवंतीति ॥ ८७ ॥ अथ होमानुसारेण कुंडमानं भुजंगप्रयातोपजातिकागीत्येंद्रवज्रावृत्तैराह ॥ सहस्र इति ॥ सहस्रहवने कर्तव्ये हस्तमात्रं कुंडं कर्तव्यं । तथाऽयुते दशसहस्रे द्विहस्तं । ततोऽयुतादारभ्य दश-

सहस्रेऽयुते हस्तमात्रं द्विहस्तं ततो दि१०ग्गुणे हस्तयुग्मस्य वृद्धिः ।
धराहस्तकं लक्षहोमे ततोऽथ करर्ध्या प्रकुर्यात्तु दि१०ग्लक्षकांतं ॥ ८८ ॥

गुणे हवने हस्तद्वयवृद्धिः कार्या । तथाहि लक्षे चतुर्हस्तं दशलक्षे षड्ढस्तं कोटौ अष्टहस्तमित्यर्थः । अथवा लक्षहोमे धराहस्तकं एकहस्तं ततो लक्षात्प्रतिलक्षं हस्तस्य ऋद्धिर्वृद्धिस्तया दशलक्षकांतं कुंडं प्रकुर्यादित्यर्थः । तदुक्तं भविष्ये । मुष्टिमात्रं शतार्धे स्याच्छते चारत्निमात्रकं । सहस्रे त्वथ होतव्ये कुंडं कुर्यात्करात्मकं । द्विहस्तमयुते तच्च लक्षहोमे चतुःकरं । दशलक्षमिते होमे षट्करं संप्रचक्षते । अष्टहस्तात्मकं कुंडं कोटिहोमे तु नाधिकमिति । एकहस्तमितं कुंडं लक्षहोमे विधीयते । लक्षाणां दशकं यावत्तावद्धस्तेन वर्धयेदिति शारदातिलके ॥ ८८ ॥

लक्षार्धेति ॥ लक्षार्धे पंचाशत्सहस्रे तत्कुंडं त्रिकरं प्रशस्यते युक्तमिति यावत् । तथा लक्षे चतुर्हस्तं प्रयुते दशलक्षे इषुहस्तं पंचहस्तं विंशतिलक्षे द्वाभ्यां गुणितास्त्रयः षडिति यावत् षड्ढस्तं । पंचाशल्लक्षे सप्तकरं विदः पंडिताः विदुः कथयामासुरित्यर्थः । अथवेति सर्वैः सह विकल्प्यते । सिद्धांतशेखरे । लक्षार्धे त्रिकरं कुंडं लक्षहोमे चतुःकरं । कुंडं पंचकरं प्रोक्तं दशलक्षाहुतौ क्रमात् । षड्ढस्तं लक्षविंशत्यां कोट्यर्धे सप्तहस्तकमिति ॥ ८९ ॥ ॥ अयुतेति ॥ अथानंतरं अयुते दशसहस्रे लक्षे प्रयुते दशलक्षे कोटौ अर्बुदे दशकोटौ च क्रमेण एकेन हस्तेन द्वाभ्यां तथैव चतुर्भिः षड्भिरष्टभिः करै-

लक्षार्धके तत्रिकरं प्रशस्यते लक्षेऽब्धिहस्तं प्रयुतेषु हस्तकं । द्विघ्नत्रि६हस्तं नखलक्षकेऽथवा
खपंच५०लक्षेऽश्वकरं विदो विदुः ॥ ८९ ॥ अयुते लक्षे प्रयुते कोटौ वाप्यर्बुदे तथैव करैः ।
एकेनैव द्वाभ्यां चतुर्भिरथ षड्भिरष्टभिस्तानि ॥ ९० ॥ कोट्याहुतौ स्यादृतुभू१६करं तदाशा-
१०करं वापि विशिष्यतेऽत्र । उक्तेषु पक्षेष्वधिकोनकेषु त्रैराशिकेणैव विधेयमेतत् ॥ ९१ ॥

स्तान्युक्तानि कुंडानि वा स्युरित्यर्थः । सिद्धांतशेखरे । तथाऽयुते च नियुते प्रयुते कोटिसंमिते । अर्बुदे च करैः कुंडं चंद्रद्व्यब्ध्यंगनागकैरिति ॥९०॥ ॥ कोट्याहुताविति ॥ कोटिहवने ऋतुभूकरं षोडशहस्तं । अथवा आशाकरमपि विशेषेण शस्यते युक्तमित्यर्थः । तथाच स्कांदे । कोटिहोमे चतुर्हस्तं चतुरस्रं समंततः । योनिवक्त्रद्वयोपेतं तदप्याहुस्त्रिमेखलमिति । अत्र कोटिहोमपद्धतौ समंततश्चतुर्हस्तोक्त्या षोडशहस्तमिति रामकृष्णभट्टाः । मयूखकल्पलतादयोऽप्येवमेवाहुः ॥ उक्तेष्विति ॥

ये पक्षा उक्तास्तेष्वधिकेषु ऊनेषु वा सत्सु त्रैराशिकेणैव एतत्कुंडं विधेयमित्यर्थः । तथाच रुद्रप्रसादे । उक्तहोमाधिकोने तद्धोमेऽधिकोनमंगुलैः । यथोक्तफलभाक्तेन कर्ता स्यादन्यथान्यथेति । विश्वकर्मापि । आदौ कुंडं समुत्पाद्यमाहुतीनां यथोदितं । एतन्मध्ये विभागं यत्सर्वं तदनुपातत इति ॥ ९१ ॥ कल्पेति ॥ कुंडकल्पद्रुमनामग्रंथः एवं पूर्वोक्तं त्रैराशिकादिकरणं युक्तं सदिति जगाद । अन्ये बुधाः न इति कथयंति । तत्र कुंडव्यवस्थातु द्रव्यस्य होमद्रव्यस्य स्थूलसूक्ष्ममानात् स्वबुद्ध्यैव सुधीभिः कार्या कल्प्येत्यर्थः । इदं सर्वं सुविस्तृतं श्रीमत्तातचरणकृतकुंडार्कपद्मिनीटीकायां

कल्पद्रुरेवं निजगाद युक्तं नेतीति चान्ये कथयंति संतः । कुंडव्यवस्था पृथुसूक्ष्ममानाद्रव्यस्य
कार्या स्वधिया सुधीभिः ॥ ९२ ॥ यन्मंडपे यत्करकुंडमिष्टं ज्ञात्वैव कुंडादिकमारभेत ।
न्यूनेऽथ कुंडेऽप्यधिको विधेयो न्यूनो न होमस्त्वधिके प्रशस्तः ॥ ९३ ॥

कोटिहोमपद्धतौ च द्रष्टव्यं ॥ ९२ ॥ ॥ यदिति ॥ यन्मंडपे यद्धस्तादिपरिमितमंडपे यत्करं यद्धस्तादि यथेष्टं कुंडं ज्ञात्वा कुंडादिकमारभेत प्रारंभं कुर्यात् । यथाष्टहस्तदशहस्तमंडपे एकहस्तात्मकनवकुंडानां न समावेशः अतस्तत्र पंचकुंड्येव कार्या न नवकुंडी । एवं द्विहस्तादिकुंडादावपि ज्ञात्वा कुंडानि कुर्यादिति भावः । अथ न्यूने न्यूनमाने कुंडे अधिकः अधिकसंख्याकहोमो विधेयः यथा एकहस्तकुंडे एकोनायुतपर्यंतं होमः तद्वन्न्यूनसंख्याकहोमः अधिकमानके कुंडे न प्रशस्तः । उक्तंच कोटिहोमपद्धतौ । न्यूनसंख्योदिते कुंडेऽधिको होमो विधीयते । अनुक्तकुंडो न्यूनस्तु नाधिके

शस्यते क्वचिदिति । न्यूनसंख्येऽपि स्थूलद्रव्यपरिमाणाधिक्यादौ अधिकं मानमपि कुंडं भवत्येव । अर्थात्परिमाणमित्युक्तेः । अतएवोक्तं पूर्वश्लोके कुंडव्यवस्थापृथुसूक्ष्मेत्यादि ॥९३॥ अथ एकोनविंशतिभिर्गीतिभिश्चतुरस्रादिनवकुंडीकरणप्रकारमाह ॥ दक्षेति ॥ चतुरस्रवृत्तव्यासः ३३।७४ अस्यार्धं १६।७६।५ अनेन वृत्ते कृते तस्मिन्नष्टसु दिक्षु चिह्नितेषु सत्सु यः वृत्तदक्षांऽसस्तस्मादारभ्य आदक्षश्रोणिपर्यंतं तथा सव्यांसतोऽर्थाद्वृत्तवामकटिस्तस्यां लग्नं । एवं बाहुद्वयस्पृष्टमन्यत्सूत्रं तथा कटिद्वयस्पृष्टं एतैश्चतुर्भिः सूत्रैर्वेदकोणकं चतुरस्रं कुंडं स्यादित्यर्थः । यत्तु चतुरस्रमिदं प्रोक्तं सर्वकुंडेषु कारणमित्यादिवचनबलेऽपि रघुवीरदीक्षितैः कुंडार्कटीकायां चतुरस्रप्रकृतीनि सर्वकुंडानि ये व्याचख्युस्तेषां भुजसाम्यं क्वापि नास्तीति

दक्षांसादादक्षश्रोणिं सव्याच्च सव्यकटिलग्नं । बाहुद्वयकटियुग्मस्पृक्सूत्रैर्वेदकोणकं कुंडं ॥९४॥

चतुरस्रपूर्वस्वरूपं

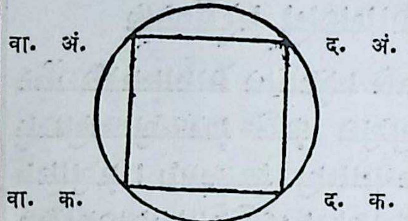

स्पष्टमित्युक्तं तच्च चतुरस्रप्रकृतौ कुंडकरणे बहुप्रयासस्तथा त्रिभुजादौ क्वचिद्भुजसाम्याभावःक्वचित्फलेऽप्यंतरं दृश्यते तथापि वृत्तकुंडादिषु वृत्तं विना गतिरेव नास्तीति । वृत्तप्रकृतौ तु स्वल्पायासेन कुंडसिद्धिर्भुजसाम्यं फलेऽप्यंतराभावोऽतस्तैरुक्तं सुवचमिति । नच शारदातिलकादौ प्रकृतिचतुरस्रमेवोक्तं मात्स्यादावप्येवं । प्रकृतिवृत्तं तु क्वापि न श्रूयत इति वाच्यं । शारदातिलकादौ तु कुंडसिद्धौ तात्पर्यं न सूत्रपातादावित्यनेकग्रंथकाराणामनेकोक्तिभिः स्पष्टत्वात् । अनेनैव प्रकारेण कुंडं कुर्यादिति मानाभावात् । कुंडार्कादौ सर्वकुंडप्रकृ-

चतुरस्रसिद्धस्वरूपं

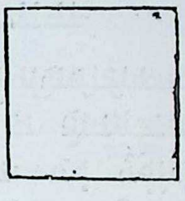

तिकत्वेन वृत्तस्यैव विधानात् । वचनस्य क्षेत्रफलांशे विनियोगाच्चेति दिक् ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ३३।७।५ अयं त्रिबाणाष्टयुगाष्टभिः ८४८५३ एभिर्निघ्नो जातः २८८१०२४ अयं खखखाभ्रार्कैः १२०००० रेभिर्भक्ते लब्धो भुजाः २४।०।०।४ समश्रुतिचतुरस्रे भुजकोटिघातः फलं ५७६।२ अधिकेन ध्वजायसिद्धिः । उक्तंच। स्थापने सर्वकुंडानां ध्वजायः सर्वसिद्धिद इति ॥ ९४ ॥ अथास्मिन्नेव चतुरस्रेऽश्वत्थपत्राकृति योनिकुंडमाह ॥ सिद्ध इति ॥ चतुरस्रे सिद्धे सति अस्मिन्नेव वृत्ते वामात्पार्श्वतः परिधिबाह्ये चतुरस्रवृत्तव्यासस्य भूधृतिलवं एकाशीत्युत्तरशततमांशं वर्धय तस्माद्वर्धितदेशात् गुणद्वयं सूत्रद्वयं सुसमं यथा स्यात्तथा वेदास्रस्य चतुरस्रस्य पुच्छं च आस्यं च स्पृशतीति एतादृशं गुणद्वयं देहीति शेषः ॥ ९५ ॥ ततश्चतुरस्रस्य कर्णदलमेव व्यासस्तेन वृत्तदलस्य युग्मं युगुलं चतुरस्रस्येति देहलीदीपन्यायेनोभयतः संबंधस्तेन चतुरस्रस्यैव मुखपुच्छदक्षपार्श्वे परिधिसंलग्नं कार्यं तेन बोधिपत्रवदश्वत्थपत्रसदृशी योनिः योनिकुंडं स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ वृत्तव्यासः ३३।७।४ अस्याब्ध्यस्त्रिज्या २४ इयं व्यासादूना ९।७।४ अस्यार्धं ४।७।६ अनेन युक्ता

सिद्धे चतुरस्रेऽस्मिन्वृत्ते वामाच्च पार्श्वतो बाह्ये । व्यासस्य भूधृति १८१
लवं वर्धय तस्माद्गुणद्वयं सुसमं ॥९५॥ वेदास्रपुच्छास्यस्पृक्कर्णदलं व्यास-
वृत्तदलयुग्मं । पुच्छास्यदक्षपार्श्वस्पृष्टं स्याद्बोधिपत्रवद्योनिः ॥ ९६ ॥

कुंडमध्यज्या २८।७।६ अथ व्यासस्य भूधृतिलवः ०।१।४ अनेन सहिता युक्तज्या २९।१।२। अयमेव लंबः दक्षज्यार्धं भूम्यर्धं १२ लंबगुणमित्यादिना त्र्यस्रद्वयफलं ३४९।७। अथ वृत्तदलद्वयफलं। तत्र चतुरस्रकर्णार्धं व्यास एव १६।७।६ अस्य वर्गः २८८।१।५ एकादशगुणितः ३१७०।२ शक्रहृतः २२६।३।५ संपूर्णं वृत्तफलमिदं अतो वृत्तार्धद्वयफलमपीदमेव द्वयोर्योगे संपूर्णं योनिकुंडफलं ५७६।२।५ अधिकं ध्वजायः ॥ ९६ ॥ अथ प्रकारांतरेण योनिकुंडमाह ॥ दक्षादिति ॥ दक्षपार्श्वमारभ्येत्यर्थः । परिधिवृत्तरेखा तस्यां प्राप्ते लग्ने व्यासार्धेन १५।१ अनेन द्वे चिह्ने कर्तव्ये उभयत इति शेषः । तथा वामात्पार्श्वाच्चिह्नसंलग्ने द्वे सूत्रे देये यथाक्रमं चिह्नद्वयसंलग्ने इति भावः ॥ ९७ ॥

योनिकुंडसाध्यरूपं

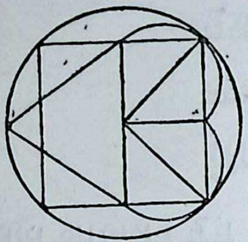

दक्षात्पार्श्वात्परिधिप्राप्ते व्यासार्धेकेन चिह्ने द्वे ।
कुर्याद्वामात्पार्श्वाद्देये सूत्रे च चिह्नसंलग्ने ॥ ९७ ॥

योनिकुंडसिद्धरूपं

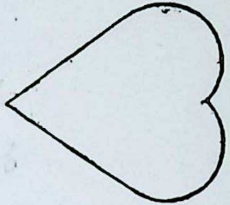

मध्ये तयोरग्रे लग्नं अन्यत्सूत्रं देयं एवं त्रिकोणकं तस्याधः दक्षिणपार्श्वश्च चिह्नं च ते एव ज्ये यस्येत्येतादृशं गोलदलयुग्मं वृत्तार्धद्वयं तेन युक् योनिर्वा भवतीत्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ३०।२ अयं त्रिघ्नंकाग्निनभश्चंद्रै १०३९२३ रेभिर्निघ्नः ३१४३६७०६ खखखाभ्रार्क १२०००० संभक्ते लब्धस्त्र्यस्रभुजः २६।१४ एतन्मितत्रिभुजैः समभुजं त्रिकोणमेकं तथाधिककोणं लघुत्रिभुजमेकं तत्र बृहत्त्रिभुजे चतुर्थांशोनवृत्तव्यास एव लंबः २२।५।४ एवं लघुत्रिभुजे व्यासचतुर्थांशो लंबः ७।४।४ द्वयोस्त्र्यस्रयोर्भूमिर्बृहत्त्रिभुजभुजः अस्यार्धं भूम्यर्धं १३।०।६ इदं बृहल्लंबेन गुणितं २९७।०।४ तथा लघुलंबेन च ९९।०।१। अथ वृत्तार्धफलं तत्र लघुत्र्यस्रभुजो व्यास एव १५।१ अस्य वर्गः २२८।६।१ अयं भनवाग्निभि ३९२७ रेभिर्निघ्नः ८९८३६२ अयं पंचसहस्रेण ५००० भक्ते लब्धं वृत्तार्धद्वयफलं १७९।५।२ त्रयाणां योगे सर्वं क्षेत्रफलं ५७६।०।१ अधिकं ध्वजायः ॥ ९८ ॥

द्वि. योनिकुंडसाध्यरूपं

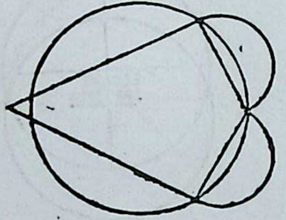

मध्ये तु चिह्नयुग्मस्पृष्टं चान्यत्ततोऽपि दक्षिणतः ।
वामान्यपार्श्वचिह्नज्यगोलदलयुग्मयुक्त योनिर्वा ॥ ९८ ॥

द्वि. योनिकुंडसिद्धरूपं

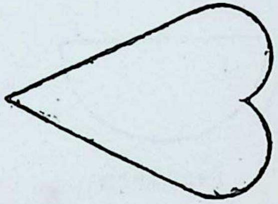

अथार्धचंद्रकुंडमाह ॥ केंद्रादिति ॥ केंद्रान्मध्यादुदग्दिशि गुणांघ्रौ व्यासचतुर्थांशे पूर्वोक्तव्यासेन वृत्तं कुर्यात् तस्मिन्वृत्ते पुच्छं च आस्यं च ते स्पृशतीति एतादृशी ज्या तस्याः दानेन अर्धचंद्रं कुंडं भवतीत्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ३८।२।३ अस्य वर्गः १४६६।५।२। भनवाग्निनिघ्नः ५७५९५५५९।१ पंचसहस्रभक्ते लब्धं सर्ववृत्तफलं ११५२।०।०।२ अस्यार्धमर्धचंद्रफलं ५७६।०।०।१ लिक्षाधिकं ध्वजायः ॥ ९९ ॥ अथ त्र्यस्रकुंडमाह ॥ पुच्छादिति ॥ पुच्छादारभ्य परिधिप्राप्ते लग्ने उक्तव्यासार्धेन द्वे चिह्ने लक्षणे कुर्यात् । तथा मुखतः वक्रादारभ्य कृतचिह्नस्पृष्टे द्वे सूत्रे देये इति शेषः ॥ तथा तयोर्मध्ये चिह्नद्वयलग्नं अन्यत्सूत्रं देयं । तेन अश्र्यस्रि त्र्यस्रि स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ४२।१ अस्य त्रिघ्नंकेत्यादिना भुजः ३६।४ त्रयाणां तुल्यत्वाद्भुजार्धमेव भूम्यर्धं १८।२ अत्र चतुर्थांशोनवृत्तव्यासो लंबः ३१।४।६ अनेन गुणितं भूम्यर्धं फलं ५७६।४।५ अधिकं ध्वजायः ॥ १०० ॥

अर्धचंद्रपूर्वरूपं

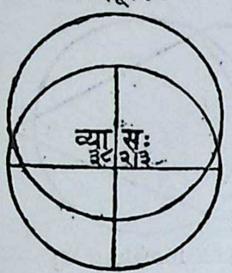

केंद्रादुदग्गुणांघ्रावुक्तव्यासेन गोलके तु कृते ।
तस्मिन्पुच्छास्यस्पृग्ज्यादानेनार्धचंद्रकुंडं तत् ॥ ९९ ॥
पुच्छात्परिधिप्राप्ते कुर्याद्व्यासार्धकेन चिह्ने द्वे ।
मुखतोऽकस्पृक्सूत्रे मध्येन्यच्चिह्नलग्नमश्र्यस्रि ॥ १०० ॥

अर्धचंद्रसिद्धरूपं

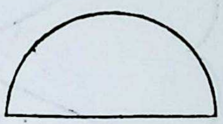

अथ प्रकारांतरेण त्र्यस्रमाह ॥ केंद्रादिति ॥ केंद्रात्कोष्ठमध्यात्प्रत्यक् पश्चिमदिशि स्वीयसप्तमांशेन ऊना या त्रिज्या व्यासार्धं तन्मितप्रदेशे सार्धषट्त्रिंशदंगुलव्यासेन वृत्तं कुर्यात् । तद्वृत्तस्य यत्पार्श्वयुग्मं तस्मात् उक्तव्यासः षट्त्रिंशदंगुलस्तेन

केंद्रात्प्रत्यक्स्वहयांऽशोनत्रिज्यामितप्रदेशे च।उक्तव्यासेन वृतिं तत्पार्श्वाभ्यां तिमिं च पूर्वस्यां ॥१०१॥

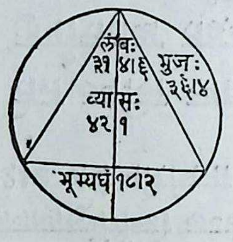
प्रथमत्रिकोणपूर्वरूपं
लंबः
३१।४।६
भुजः
३६।४
व्यासः
४२।१
भूम्यर्धं १८।२

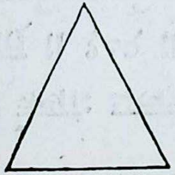
प्रथमत्रिकोणसिद्धरूपं

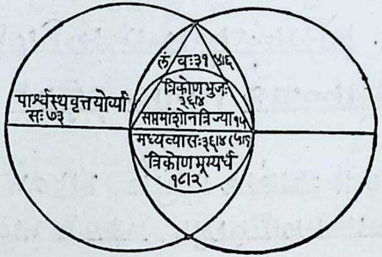
द्वितीयत्रिकोणस्य पूर्वरूपं
लंबः३१।४।६
त्रिकोणभुजः
३६।४
पार्श्वस्थवृत्तयोर्व्यासः ७३
सप्तमांशोनत्रिज्या१५
मध्यव्यासः३६।४।५।१५
त्रिकोणभूम्यर्धं
१८।२

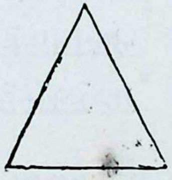
द्वितीयत्रिकोणसिद्धरूपं

द्विगुणेन पूर्वस्या दिशि मत्स्यं कुर्यात् । तत्तु वृत्तद्वयकरणेन भवति तस्य वक्त्रान्मुखात् सूत्रद्वितयं प्रथमवृत्तपार्श्वद्वयस्पृक् लग्नं कुर्यात् । तेन त्र्यस्रं त्र्यस्रकुंडं वेति पूर्वत्र्यस्रेण विकल्पः भवतीत्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ प्रथमवृत्तव्यासः ३६ । ४

स्वसप्तांशोनत्रिज्या १५।५।१ केंद्रादेतन्मितदेशे उक्तव्यासेन वृत्ते कृते वृत्तद्वयसंपातसकाशात्पूर्ववृत्तपार्श्वस्पृक् सूत्रमानं ३६।४ पूर्ववृत्तव्यासार्धं भूम्यर्धं १८।२ अनयोर्वर्गांतरमूलं लंबः ३१।४।६ लंबगुणं भूम्यर्धं फलं ५७६।४।६ ॥ १०१ ॥ अथ वृत्तकुंडमाह ॥ ॥ पश्चादिति ॥ वेद्याः पश्चात्पश्चिमदिशि उक्तव्यासार्धेन वृत्तं कुंडं कुर्वित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः २७।०।६ अयं भनवाग्निनिघ्नः खबाणसूर्यैर्भक्तो लब्धो वृत्तपरिधिः ८५।०।५ वृत्तक्षेत्रे परिधिगुणितव्यासपादः फलमित्यादिना फलं तत्र व्यासपादः ६।६।१।४ अयं परिधिना गुणितः जातं फलं ५७६।२ अधिकं ध्वजायः ॥ अथ षडस्रमाह ॥ पार्श्वादिति ॥

तेन त्र्यस्रि स्याद्वा वेद्याः प्रत्यक्तु वृत्तकुंडं स्यात् । उक्तव्यासद्विगुणस्तृत्या
कुर्यात्ततश्च तद्वक्रात् ॥ १०२ ॥ गुणयुग्मं तन्मध्येऽन्यत्सूत्रं पूर्ववृत्तपार्श्व-
स्पृक् । पार्श्वाद्विस्तृतिदलमितषड्भिर्ज्याभिः षडस्रमतिसाधु ॥ १०३ ॥

पार्श्वादिति सामान्योक्त्या कस्मादपि पार्श्वाद्विस्तृतिर्व्यासस्तस्य दलं अर्धं तन्मिताभिः षड्भिर्ज्याभिरतिसमीचीनं षडस्रं स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः २९।६ षडस्रे तु व्यासार्धमेव ज्या १४।७ अस्यार्धं ७।३।४। अथ व्यासार्धवर्गः २२१।२।१ भुजार्धवर्गः ५५।२।४ अनयोरंतरं १६५।७।५ अस्य मूलं १२।७।३ इदमेव लंबः तेन ज्यार्धे गुणिते जातमेकत्र्यस्रफलं ९६।०।७ इदं षड्गुणं सर्वं क्षेत्रफलं ५७६।५।२ अधिकं ध्वजायः ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

अथ पद्मकुंडमाह ॥ चिह्नेति ॥ उक्तव्यासवृत्तेऽष्टसु चिह्नेषु द्वयोर्द्वयोर्मध्यतः युगभुजं चतुर्भुजं तयोर्युगलं युग्मं समकोणं विधेहि कुरु इति कृतेऽष्टत्र्यस्राणि भवंति तेषु प्रतित्र्यस्रे यौ कर्णौ तयोर्दलमर्धं ज्या ययोरेतादृशं

चिह्नद्वितयांतरितो युगभुजयुगलं विधेहि समकोणं ।
त्र्यस्राष्टकेषु कुर्यात्प्रतिकर्णदलज्यचापयुगलं तत् ॥ १०४ ॥

वृत्तकुंडस्य पूर्वरूपं सिद्धरूपं चैकं

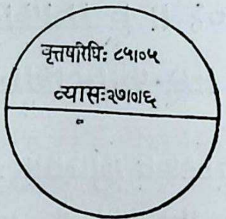

षडस्रपूर्वरूपं

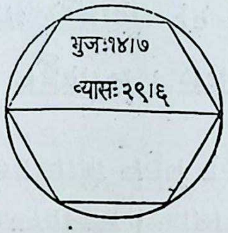

षडस्रसिद्धरूपं

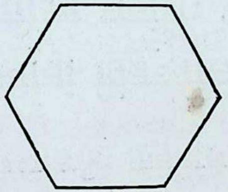

चापयोर्धनुषोर्युगं युग्मं कुरु। तद्युग्मं अंतर्बाह्ये च ज्या ययोस्त्र्यस्रस्यांतरे त्र्यस्रबाह्ये च ज्या ययोरेतादृशं चापयुग्मं कुर्वित्यर्थः । तेन वहुशोभायुक्तं पद्मं पद्मकुंडं भवतीत्यर्थः ॥ तस्मिन्पद्मे रसांशैः षडंगुलैः कर्णिकापद्ममध्यप्रदेशः । तस्याः

षडंगुलैः पिंडः उच्चता व्यासो विस्तृतिश्च स्यातां । तद्बहिर्द्वादशांशैः केसराणां वृत्तं ततोऽष्टादशांशैर्दलमध्यभूवृत्तं ततश्चतुर्विंशांशैर्दलकोटिवृत्तं इतो वृत्ताद्यस्रकृतिव्यासवृत्तं तद्दलाग्रकाणां स्यादित्यर्थः । तत्र या कर्णिका तां न खनेत् । उक्तंच शारदायां । वृत्तानि कर्णिकादीनां बहिस्त्रीणि प्रकल्पयेदिति । कामिकेपि । चतुरस्राष्टभागेन कर्णिका स्याद्विभागतः । तद्बहिस्त्वेकभागेन केसराणि प्रकल्पयेत् । तृतीये दलमध्यानि चतुर्थे दलकोटयः । चतुरस्राद्बहिः कुर्याद्दलाग्राण्यपि यत्नतः

अंतर्बाह्यज्याकं तेन स्यात्पद्ममत्र बहुशोभं । तत्र रसांशैः ६ स्यातां पिंडव्यासौ तु
कर्णिकाया वै ॥ १०५ ॥ तत्परितः सूर्यांशैः १२ केसरवृत्तं ततोऽथ धृत्यंशैः १८ ।
दलमध्यवृत्तमेतत्सिद्धांशैः २४ पर्णकोटिवृत्तं स्यात् ॥ १०६ ॥

इति ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र व्यासः ३१।३ अस्य चतुरस्रज्या २२।१।४ अस्य वर्गश्चतुरस्रफलं ४९२।२।२ अथावशिष्टं लघुत्र्यस्रचतुष्टयफलं तद्यथा यच्चतुर्विंशत्यंशैर्दलकोटिवृत्तं कृतं तस्याष्टास्रिज्या ९।१।४ अस्यार्धं भूम्यर्धं ४।४।६, अथ चतुरस्रज्योनबृहद्व्यासः ९।१।४ अस्यार्धं लघुकोणलंबः ४।४।६ लंबगुणमितिफलं २१।४ चतुर्गुणं ८४।४ पूर्वफले योजिते सर्वं फलं ५७६।६।२ अधिकं ध्वजायः । धनुर्द्वयस्य तु समानांतरयोगे समतैवेति नियमात्तत्फलकरणप्रयासो वृथैवेति ॥ १०४ ॥

॥ १०५ ॥ १०६ ॥ अथ प्रकारांतरेण पद्ममाह ॥ अथवेति ॥ यत्पूर्वपद्मकुंडे तृतीयं वृत्तमष्टादशांशैः कृतं तदत्र सयवनखैरेकयवसहितैर्विंशत्यंगुलैः कृत्वाऽष्टधा विभजेत्। ननु अत्र पारिभाषिकमष्टधाकरणं पूर्वमुक्तमपि पुनः कथमुक्तमितिचेत् तच्च पूर्वपद्मकुंडवच्चिह्नद्वितयमध्यादष्टौ भागान् कुर्यादिति ध्वननार्थमित्यर्थः। तत्प्रतिचिह्नाच्चिह्नद्वयमिता या ततिर्व्यासार्धं तेन धनुर्द्वयं तनुयाद्विस्तारयेत्। तदनुलोमविलोमं एकमनुलोमं द्वितीयं विलोमं तद्विपरीतं तनुयात्। तेनात्र सुष्ठु सुंदरं पंकजं पद्मकुंडं स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः २०।१ अष्टास्रिज्या ७।५।४ इयमेव भूमिः अस्यार्धं ३।६।६

प्रकृतिस्तृतिवृत्तमितो दलाग्रकाणां च कर्णिकां न खनेत् । अथवा तृतीयवृत्तं
सयवनखैः २०।१ कल्प्य चाष्टधा विभजेत् ॥ १०७ ॥ प्रतिचिह्नाच्चिह्नद्वयमितततिनापि
च धनुर्द्वयं तनुयात्। अनुलोमविलोमं तत्तेन स्यादत्र पंकजं सुष्ठु ॥१०८॥

व्यासार्धं १०।०।४ अनयोर्वर्गांतरमूलं लंबः ९।२।४ लंबगुणमितिफलं ३५।६।२ इदमष्टगुणं मध्याष्टास्रिफलं जातं २८।६।२ अथ धनुःफलं तत्राष्टास्रिज्यैव व्यासार्धं तयैव धनुःकृतत्वात् अस्यार्धं शरः ३।६।६ द्विगुणाष्टास्रिज्यैव व्यासः १५।२ व्यासाच्छरोनादित्यादिना ज्या १३।२।५।५ व्यासपादस्य शरत्वात्तदूनव्यास एव लंबः ११।४।२ भूम्यर्धं च ज्यार्धं ६।५।२।६।४ लंबगुणमिति वृत्तांतस्त्र्यस्रफलं ७७। अथ धनुर्व्यासवर्गः २३७।२।६ रुद्राहत इत्यादिना फलं १८५।५।६ फलयोरंतरं १०८।५।६ अस्य त्र्यंशो धनुःफलं ३६।१।७ इदमष्टगुणं २८९।७ पूर्वाष्टास्रिफले युक्तं जातं संपूर्णं फलं ५७६।२। ध्वजायोपि

धनुर्वृत्ते या ज्या सा तद्वृत्तगतत्र्यस्त्रिज्यैव व्यासपादस्य शरत्वात् । अतस्तद्वृत्तफलं तद्गतत्र्यस्त्रफलोनं शेषं धनुस्त्रयफलं तस्य त्र्यंश एव धनुःफलमिति स्पष्टमेव ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ अथ श्रीमद्बापूदेवकल्पितं पद्मकुंडमाह ॥ अंभ इति ॥

अंभोनिधिवन्ह्यंशैः ३४ खखमुनिकु १७० लवेन चापि संयुक्तैः ।
वृत्ते चिह्नद्वितयेत्याद्यब्ध्यस्त्रांतमुक्तवत्कृत्वा ॥ १०९ ॥

प्रथमपद्मकुंडस्य पूर्वरूपं

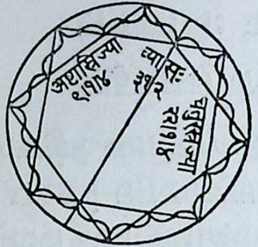
अष्टास्त्रिज्या
९।१।८
व्यासः
२।२
चतुरस्त्रज्या
३।०।४

प्रथमपद्मकुंडस्य सिद्धरूपं

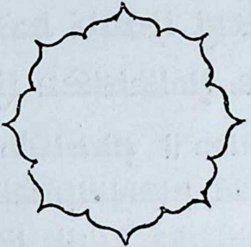

द्वितीयपद्मकुंडस्य पूर्वरूपं

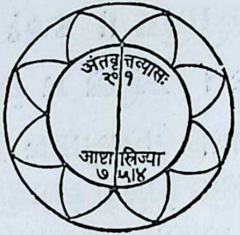
अंतर्वृत्तव्यासः
२।१
आष्टास्त्रिज्या
७।५।४

द्वितीयपद्मकुंडस्य सिद्धरूपं

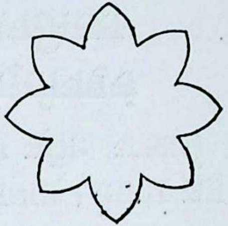

अंभोनिधिवह्न्यंशैश्चतुस्त्रिंशदंगुलैः स्वस्य यः खमुनिकुलवः सप्तत्युत्तरशततमो भागस्तेन युक्तैर्वृत्ते कृते सति । पूर्वोक्तपद्मकुंडे चिह्नद्वितयेत्यादिसमचतुरस्रद्वयकरणांतं कृत्वा तद्भुजार्धाद्भुजमध्यतः भुजार्धेनैवांतः वृत्तस्य अष्टौ दलानि वि-

लिखेत्तथा केंद्रान्मध्याद्दलसंधिस्तदंतमवधीकृत्य कर्णिकादीनि कर्णिकाकेसरपत्रमध्यभूसंज्ञानि त्रीणि वृत्तानि विलिखेत्तेन पद्मं पद्मकुंडं भवतीति श्रीमद्बापूदेवैः प्रकल्पितं सुंदरं रमणीयमित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ३४।१।४।६ अस्य वर्गः ११६९।४।६।२।२ अस्यार्धं ५८४।६।३।१।१ अस्य मूलं २४।१।३।५।४ इदमेवाष्टौ वलयार्धानां व्यासः । अस्यैव मध्यव्यास इति संज्ञांतरं । अथास्य वर्गः ५८४।६।३।१।१ भनवाग्निनिघ्नः २२९६५०५।७।५।२ पंचसहस्रभक्तः लब्धं फलं वृत्तस्य ४५९।२।३।२ अथ बृहद्व्यासार्धं १७।०।६।२ इदं मध्यवृत्तांतश्चतुरस्रभुजः अस्य वर्गश्चतुरस्रफलं २९२।३।१।२ इदं वृत्तफलादूने शेषं १६६।७।२ दलद्वयफलं । अथ मध्यव्यासवर्गः ५८४।६।३।१।१ तथास्यैवाष्टास्रिज्या द्विद्वीत्यादिना ९।२।०।२ अस्यावर्गः ८५।५।०।५ द्वयोरंतरं ४९९।१।२।४।१ अस्यमूलं २२।२।६।४ अष्टास्रिज्यया गुणितं २०६।६।६ द्विगुणमिदमंतरष्टास्रफलं ४१३।५।४ इदं वृत्तफलादूनं ४५।४।७।२ अस्यार्धं लघुवृत्तांतर्मध्यार्धवृत्तसंपातोत्पन्नलघुदलानां फलं २२।६।३।५ इदं दलद्वयफलादूनिते शेषं १४४।०।६।२ चतुर्गुणमिदं ५७६।३।१।४ अथवा दलद्वयफलं १६६।७।२ चतुर्गुणं ६६७५ वृत्तफलादंतरष्टास्रिफलं शोधिते शेषं ४५।४।७।२ द्विगुणमिदं ९१।१।६।४ चतुर्गुणितदलद्वयफलादूनं जातं ५७६।३।१।४। अधिकं ध्वजायः । अथवा वृत्तसंपातपर्यंतं केंद्राद्वृत्तं प्रकल्पितं तद्व्यासमानं पूर्वोक्ताष्टास्रिज्याद्विगुणं १८।४।०।४ अस्य लघुव्यास इति संज्ञा । अस्याप्यष्टास्रिज्या ७।०।५।२ तद्दलं ३।४।२।५ अस्य वर्गः १२।४।२।४ लघुव्यासा-

बाह्वर्धाह्वाह्वर्धैर्नैवांतोऽष्टौ दलानि वृत्तस्य । केंद्राद्दलसंध्यंतं वृत्तानि त्रीणि कर्णिकादीनि ॥ ११० ॥

र्धवर्गः ८५।५ द्वयोरंतरं ७३।०।५।४ मूलं ८।४।४ जातोऽयं लंबः अनेन गुणं ज्यार्धरूपं भूम्यर्धं ३०।२।४।८ अष्टगुणं २४२।४।४ जातमिदं लघ्वष्टास्रिफलं । अथ पत्रचतुर्थांशद्वयमेलनेनैकं धनुस्तन्मानं यथा मध्यव्यासः २४।१।३।५।४ अस्य परिधिः ७६ अस्याष्टमांशो धनुर्दलं ९।४ मध्यव्यासदलं १२।०।५।६।६ द्वयोर्घातः ११४।७ अंतरष्टास्रिज्यार्धमेव शरः ३।४।२।५ शरोनमध्यत्रिज्या ८।४।३।१।६ धनुर्ज्या तु बृहज्ज्यासार्धादंतर्लंबोने सति शेषं धनुर्ज्यामानं ८।४।३।१।२ अनयोर्घातः ७३।०।६ घातयोरंतरं ४१।६।२ अष्टगुणं ३३४।०।६ लघ्वष्टास्रिफले युक्तं सत् ५७६।५।२ जातं सर्वफलं ध्वजायोपि ॥१०९॥११०॥

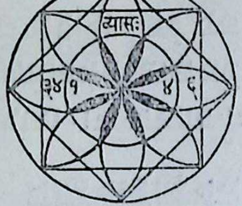

वापूदेवकल्पितपद्मकुंडस्य पूर्वरूपं

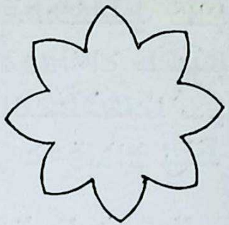

वापूदेवकल्पितपद्मकुंडस्य सिद्धरूपं

**विलिखेदिति वा बापूदेवोक्तं स्याच्च सुंदरं पद्मं। वक्त्रांसयोस्तु मध्यादष्टज्याभिःसमाभिरष्टास्रं ॥१११॥**

अथाष्टास्रमाह ॥ वक्रेति ॥ वक्त्रं मुखं अंसो बाहुस्तयोर्मध्यः मध्यदेशस्तस्मात्तुल्याभिरष्टज्याभिरष्टास्रं अष्टकोणकुंडं भवतीत्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः २८।४ अस्यार्धं १४।२ तथा द्विघ्नीत्यादिनाष्टास्रिज्या १०।७।५ अस्यार्धमाबाधा ५।३।६।४ अथ व्यासार्धकृतिः २०३।०।४ आबाधाकृतिः ३०. अनयोरंतरं १७२।७।४ अस्य मूलं लंबः १३।१।३ अनेन भूम्यर्धं गुणितं जातमेकत्र्यस्रफलं ७२।०।२ इदमष्टगुणं सर्वकुंडफलं ५७६।२ अधिकं ध्वजायः ॥ १११ ॥

कुंडेति ॥ अत्र कुंडस्याकृतिराकारः सिद्धौ सत्यां अधिकं यच्चिह्नं रेखादि तत्प्रमृज्य तत् अभीष्टं कुंडं स्यादित्यर्थः। तथा कुंडानां करणे रेखादिकरणे कर्तुः कर्ता तस्य सर्वत्र प्राग्वक्रता प्राङ्मुखता स्यादित्यर्थः ॥ ११२ ॥ अथ कुंडार्कोक्तमष्टास्रं स्रग्धरयाह ॥ मध्यादिति ॥ मध्यात्केंद्रात्त्रियवयुतचतुश्चत्वारिंशदंगुलैर्वृत्तं कुर्यात्तत्र वृत्ते काष्ठा दिक्

कुंडाकृतिसिद्धौ तद्ध्यधिकांकादिकमिह प्रमृज्यात्र। कुंडानां करणे स्यात्कर्तुः प्राग्वक्रता च सर्वत्र ॥११२॥

अष्टास्रपूर्वरूपं

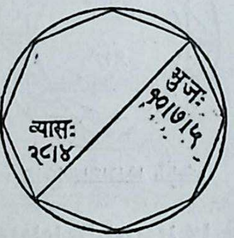

मध्याद्वृत्तं प्रकुर्यात्त्रियवयुतखसिंध्वं ४०।३ गुलैरत्र काष्ठा व्याशाम-
ध्यास्रमेवं युग ४ भुजयुगलं २ तस्य दोर्मध्यतः स्यात्। अष्टौ ज्याः
स्युस्तदंतात्सशरमुनियवाभ्राब्जपर्वै १०।७।५ ज्यैकाभिः कुंडार्कोक्तं
नृपालोन्मित १६ गुण ३ भुजकानि प्रमार्ज्योरगा ८ स्रं ॥ ११३ ॥

अष्टास्रसिद्धरूपं

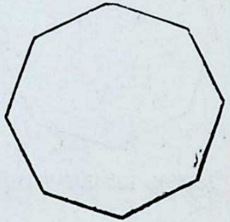

व्याशा विदिक् तयोर्मध्ये अस्राः कोणा यस्यैवं युगभुजयुगलं चतुर्भुजद्वयं कुर्यात्तस्य चतुर्भुजद्वयस्य ये दोषो भुजास्तेषां मध्यादष्टौ ज्याः स्युस्तदंतात्तासामपि मध्यात्सशरमुनियवाभ्राब्जपर्वैः दशांगुलसप्तयवपंचयूकात्मकाभिः १०।७।५ ज्याभिः नृपालोन्मितानि यानि गुणभुजकानि त्र्यस्राणि उत्पद्यंते तानि प्रमार्ज्य प्रोंछ्य उरगास्रमष्टास्रं यत्कुंडार्के उक्तं तत्स्यादि-

त्यर्थः। तथाच कुंडार्कः। युगभुजयुगलं दिग्विदिक्कोणकं स्याद्बाह्यत्र्यस्राष्टकोनं त्रियवयुतखसिंध्वंगुले ४०।३ ऽष्टास्रि
कुंडमिति। अत्र तातचरणकृतपद्मिनीटीका। यवत्रयाधिकचत्वारिंशदंगुले वृत्ते दिग्विदिशोंतरालेऽष्टौ चिह्नानि कार्याणि॥
॥ ३५ ॥ तत्र समचतुरस्रद्वयं कार्यं। तत्र यानि बाह्याष्टकोणानि भवंति तदेकत्रिकोणभूमिमध्यादारभ्य तत्समीपस्थद्वितीयत्रिकोण-
भूमिमध्यपर्यंतमेको भुजो देयः। एवं तत्र त्रिकोणाष्टकद्वयमुत्पन्नं भवति तत्परिमार्ज्य मध्ये ज्याष्टकं रम्यं कुंडमुत्पद्यते

कुंडार्कोक्ताष्टास्रस्य पूर्वरूपं

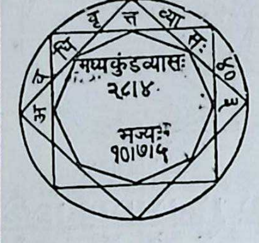

अयमेव मूलाशय इति भाति। यथाश्रुतार्थकरणस्यादोषावहत्वादित्यादि-
सुविस्तृतमुक्तं जिज्ञासुभिस्तत एवोह्यं। अत्र तात्पर्यांशः। युगभुजयुगलमिति
वाक्यस्थदिग्विदिक्पदे दिगंतरालसमासमंगीकृत्य त्र्यस्राष्टकपदस्य लक्षणया
त्र्यस्राष्टकद्वयमित्यर्थः कृतः। अयमेवार्थः साधीयान्। अतएव कुंडार्कस्य
प्राचीनटीकाकारै रघुवीरदीक्षितैरप्यस्य श्लोकस्य व्याख्यानावसरेऽस्य प्रकृतिवृत्तं
सार्धाष्टाविंशत्यंगुलं प्रागेवोक्तं। इदं स्थितिवृत्तं पूर्वं क्रियावृत्तमिति भेद इत्युक्तं।

कुंडार्कोक्ताष्टास्रस्य सिद्धरूपं

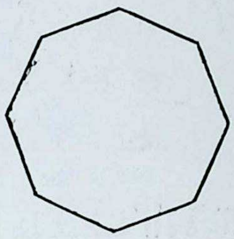

यत्तु द्वियवयुतमुनित्र्यंगुलेति। तथा त्रयवियुतखसिंध्वंगुलेति पाठकल्पकाः स्वभ्रांतिमजानाना मंदबुद्धीनां व्यामोहकर्ता- ॥ ३५ ॥
रस्तत्कल्पितपाठोऽपपाठ इत्युपेक्षणीयः॥ अथ फलानयनं॥ तत्र व्यासः ४०।३ अस्य चतुरस्रिज्याः २८।४ इयमेवांतर्ग-
ताष्टास्रस्य व्यासः सतु पूर्वोक्ताष्टास्रिकुंडे उक्तस्तत्रोक्तवत्फलं ५७६।२ अधिकं ध्वजायः॥ ११३॥

एवं नवकुंड्यादिषु कुंडान्युक्त्वाधुना ग्रहयज्ञोपयोगीनि ग्रहपीठाकारकुंडानि वक्तुं शालिन्योपक्रमते ॥ खेटेति ॥ खेटा ग्रहास्तेषां क्षेत्राणि पीठानि तेषामाकार इवाकारो येषां तानि कुंडानि पूर्वैः प्राचीनैः पारिजातग्रंथविशेषे प्रोक्तानि कथितानि स्युरित्यर्थः । अथ नव्यैस्तु अत्र कुंडग्रंथादौ न प्रोक्तानि अतो हेतोस्तानि वच्मि कथयामीत्यर्थः । वृत्तं कुंडादौ करणीयं । क्षेत्राकारो वर्तुलादिः । उन्मानं क्षेत्रोन्मानं क्षेत्रफलमिति यावत् । तानि पूर्वं येषु एतादृशानि ग्रहकुंडानि सम्यगुक्तमप्रकारेणेत्यर्थः । तथाच शांतिमयूखे । अत्रैकाग्निब्रह्माचार्यपक्षमुक्त्वा तेषां नवसंख्यकुंडेषु तत्तद्ग्रहाकारांश्चाह प्रयोगपारिजाते भगवान् । मनोरमे

खेटक्षेत्राकारकुंडानि पूर्वैः प्रोक्तानि स्युः पारिजातेऽथ नव्यैः । नात्र प्रोक्तानीत्यतो वच्मि
वृत्तक्षेत्राकारोन्मानपूर्वाणि सम्यक् ॥ ११४ ॥ मध्ये वृत्तं पूर्वदिक्तः शरास्त्रमब्ध्यस्त्रं च
त्र्यस्त्रशूर्पाकृतीह । चापं केतुर्दीर्घरत्नाकरास्त्रं बाणाकारं त्रीणि चोक्तानि तेषु ॥ ११५ ॥

शुचौ देशे होमशालामलंकृतां । कृत्वा तु संवृतं प्राज्ञो ग्रहस्थानं प्रकल्पयेत् । तन्मध्ये भास्करस्थानं भवेत्पूर्वोत्तरे बुधः । पूर्वस्मिन्भार्गवस्थानं सोमो दक्षिणपूर्वके । दक्षिणस्यां कुजस्थानं राहोर्दक्षिणपश्चिमे । शनेस्तु पश्चिमे स्थानं केतोरुत्तरपश्चिमे । उत्तरस्यां गुरोः स्थानमेवं च स्थंडिलं भवेदिति । स्थंडिलमद्ध्यर्थं कुंडमिति ॥ ११४ ॥ अथ ग्रहकुंडस्थानान्याकारांश्च शालिन्याह ॥ मध्य इति ॥ मध्ये मंडपमध्यकोष्ठे वृत्तं वलयं पूर्वदिक्त आरभ्य प्रादक्षिण्येनाष्टसु कोष्ठेषु शरास्त्रं पंचकोणं अब्ध्यस्त्रं चतुरस्त्रं त्र्यस्त्रि त्रिकोणं शूर्पाकृति शूर्पाकारं च ते चापं धनुः केतुर्ध्वजः दीर्घरत्नाकरास्त्रमायतचतुरस्त्रं बाणाकारं

शराकारमित्येतानि नव कुंडानि तेषूक्तकुंडेषु त्रीणि वृत्तचतुरस्रत्रिकोणानि पूर्वमेवोक्तान्यतोऽग्रे नोच्यन्त इत्यर्थः । उक्तं च शांतिमयूखे प्रयोगपारिजाते च । भास्करस्य तु वृत्तं स्याच्चंद्रस्य चतुरस्रकं । कुजस्य तु त्रिकोणं स्याद्बाणाकारं बुधस्य तु । गुरोर्दीर्घचतुष्कोणं पंचकोणं सितस्य तु । चापाकारं शने राहोः शूर्पं केतोर्ध्वजाकृति । नवधा विभजेदग्निं श्रौतकमविधानतः । ऋत्विजश्च यथायोगं कुंडेषु ब्राह्मणाः पृथगिति । अत्रैव च स्थंडिलं भवेदित्यनेन स्थंडिलानां कुंडानां च स स आकारस्तत्तद्दिक्षु निवेशश्चोक्तः । ब्राह्मणाः पृथगित्यनेन नवाचार्या ब्रह्माणाश्च नवेत्युक्तं । अत्रार्थसंक्षेपः प्रयोगपारिजाते ।

तेषामीशाः सूर्यशुक्रेंदुभौमा राहुर्मंदः केतवो जीवसौम्यौ ।
रक्तः श्वेतः श्वेतरक्तौ त्रयोऽथ कृष्णाभाः स्युः पीतवर्णौ क्रमेण ॥ ११६ ॥

मध्यकुंडे स्मार्ताग्निं प्रणीयाज्यभागांतेऽर्कादिसमिद्भिर्गुडौदनादिहविर्भिराज्येन च ग्रहादिमंत्रैर्हुत्वा व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्च तिलान्हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं कृत्वा पूर्णाहुतीर्जुहुयुरिति ॥ ११५ ॥ अथ दिक्क्रमेण कुंडेशान्ग्रहांश्छालिन्याह ॥ तेषामिति ॥ तेषां कुंडानामित्यादिस्पष्टं । ग्रहाणां वर्णानाह । रक्त इत्यादि । तदुक्तं वृद्धपराशरेण । रक्तः कश्यपजो भानुः शुक्लो ब्रह्मसुतः शशी । रक्तो रुद्रसुतो भौमः पीतः सोमसुतो बुधः । पीतो ब्राह्मः सुराचार्यः शुक्लः शुक्रो भृगूद्वहः । कृष्णः शनी रवेः पुत्रः कृष्णो राहुः प्रजापतेः । कृष्णः केतुः कृशानूत्थः कृष्णाः पापास्त्रयोप्यमीति ॥ ११६ ॥

अथ ग्रहाणा दिगभिमुखत्वं शालिन्याह॥ एतेष्विति ॥ एतेषूक्तग्रहेषु प्राङ्मुखावित्यादिस्पष्टं। तदुक्तं स्कांदे। शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ
ज्ञेयौ गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ। प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः शेषा दक्षिणतोमुखाः इति ॥ ११७॥ अथ राहोः शूर्पाकारकुंडं स्रग्धरयाह
॥ वक्रादिति ॥ वृत्ते कृते सति वक्रात्पुच्छात्पार्श्वादिति सामान्योक्त्या पार्श्वद्वयादि च त्रिभुजकुंडे यथोक्तं पुच्छात्परिधि-

शूर्पकुंडपूर्वरूपं

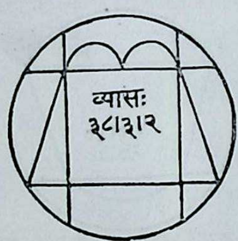

एतेष्वत्र प्राङ्मुखौ सूर्यशुक्रौ भौमो राहुः केतवोऽवाङ्मुखाश्च ।
प्रत्यक्कात्मा चंद्रसौरी ततो द्वौ जीवज्ञौ त्वं विद्धि चोदङ्मुखाब्जौ
॥११७॥ वक्रात्पुच्छाच्च पार्श्वात्त्रिभुजवदिह भो ज्याचतुष्कं प्रदेहि
ताभिर्मध्ये युगास्रं प्रभवति खलु तत्पूर्वसंपातयुग्मात् । पुच्छा-
दस्मिन्कृतज्याग्रगमिह सुसमं सूत्रयुग्मं ततश्च वेदा ४ स्रप्राग्ज्य-
कार्धज्यकवृतिदलयुग्मेन शूर्पं च राहोः ॥ ११८ ॥

शूर्पकुंडसिद्धरूपं

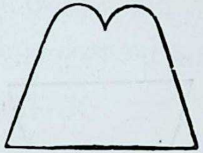

प्राप्तेत्याद्युक्तरीत्या यथा तत्र पुच्छाद्व्यासार्धेन चिह्नद्वयं कृत्वा ज्या दत्ता तद्वदत्रापि मुखात्पुच्छात्पार्श्वद्वयाच्च ज्याचतुष्कं
सूत्रचतुष्टयं प्रदेहि। ताभिर्ज्याभिः मध्ये युगास्रं चतुर्भुजं सुसमं भवति। तस्य पूर्वदिग्ज्या संपातद्वयात् पुच्छात्कृता या
ज्या तस्याग्रद्वयं गच्छतीति। स्पृशतीति यावत्। एतादृशं सुसमं सूत्रद्वयं प्रदेहि। ततश्च मध्यचतुरस्रस्य या प्राग्ज्या त-

स्यार्धमेव ज्या यस्येत्येतादृशं वृत्तार्धद्वयं प्रदेहि । तेन राहोः शूर्पं शूर्पाकारकुंडं स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र व्यासः ३८।३।२ त्रिघ्नंकेत्यादिना गुणितः ३९९६५६९।७।५।६ खखेत्यादिना भक्ते लब्धा त्र्यस्रिज्या ३।२।३।४ तथा षडस्रिज्या १९।१।५ द्वयोर्योगः ५२।४।०।४ अस्य दलं २६।२।०।२ लंबरूपया षडस्रिज्यया गुणितं ५०४।१।२ इदं विषमचतुर्भुजफलं । अथ वृत्तार्धद्वयफलं । तत्र षडस्रिज्यार्धमेव व्यासः ९।४।६।४ अस्य वर्गः ९२।१।१।५ रुद्राहतः १०१३।५।२

द्वितीयशूर्पकुंडस्यपूर्वरूपं

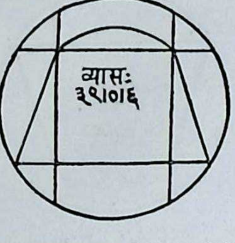

द्वितीयशूर्पकुंडस्य सिद्धरूपं

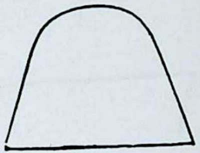

वृत्ते पूर्वोक्तवदिह ज्याग्रस्पृक्सूत्रयुगुलकांतं च ।
केंद्रादथ पूर्वाशासंपातद्वयगतेन धनुषा तत् ॥ ११९ ॥

शक्रहृतः ७१।५।४।१ फलयोर्योगः ५७५।६।६।१ यवोनं फलं तददोषाय स्वल्पांतरत्वात् ॥ ११८ ॥ अथ प्रकारांतरेण शूर्पकुंडं गीत्यार्ययाह ॥ वृत्त इति ॥ वृत्ते कृते सति सर्वं पूर्वोक्तवद्दक्षपार्श्वात्कृतज्याग्रद्वयस्पृक् सूत्रद्वयातं कुर्यात् । अथ ततः केंद्रान्मध्यात्पूर्वस्यां दिशि यत्संपातद्वयं तस्मिन्गतेन लग्नेन धनुषा तत् शूर्पाकारं कुंडं स्यादित्यर्थः । अथ फलानयनं । व्यासः ३९।०।६ त्र्यस्रिज्या ३३।६।६।६ अथ व्यासदलं १९।४।३ योगः ५३।३।१।६ दलं २६।५।४।७ लंबरूपेण

व्यासदलेन गुणितं जातं विषमचतुर्भुजफलं ५२१।७।३ ॥ अथ धनुःफलानयनार्थं मध्यचतुरस्रस्य भुजवर्गः ३८२।०।०।५ इदं
मध्यचतुरस्रफलमपि द्विगुणं ७६४।०।१।२ अस्य मूलं धनुर्व्यासः २७।५।१।२ परिधिः ८६।७।०।४ धनुर्व्यासांघ्रिः
६।७।२।२ परिधिगुणः ६००।३।५।३ इदं धनुर्वृत्तफलं अस्मान्मध्यचतुरस्रफलोनात् २१८।३।०।३ चतुर्थांशः ५४।५।६।०।६
विषमचतुरस्रफले युक्तः ५७६।४।१।०।६ अधिकं ध्वजायः ॥११९॥ अथ शनेर्धनुराकारं कुंडं स्रग्धरयाह ॥ मध्यादिति॥
मध्यादुक्तव्यासस्य अग्निभागे तृतीयांशे स्वकीयो यो रविलवः द्वादशांशस्तेन युक्ते एतादृशे देशे निर्ऋतौ दिशि एकं वृत्तं
तथा तदनु तस्मिन्वृत्ते सव्यपार्श्वं मध्यं प्रकल्प्य वृतिं वृत्तं कुरु । तयोर्वृत्तयोर्दक्षवामपार्श्वाद्बाह्ये बहिस्तृतेर्व्यासस्य रसांशः

मध्याद्व्यासाग्नि ३ भागे स्वरवि १२ लवयुते निर्ऋतौ वृत्तमेकं तस्मिन्सव्याच्च पार्श्वा-
त्तदनु कुरु वृतिं वृत्तयोर्दक्षसव्यात् । पार्श्वात्कृत्वा च बाह्ये स्तृतिरस ६ लवगौ द्वौ
गुणौ तत्सकाशात्पार्श्वस्कंधांतरस्पृग्गुणमपि कुरु पार्श्वांतरे ज्यां धनुः स्यात् ॥ १२० ॥

षष्ठांशस्तं गच्छत इति तादृशलवगौ द्वौ गुणौ कृत्वा ताभ्यां सकाशात् पार्श्वश्च स्कंधश्च तयोरंतरं मध्यं स्पृशतीत्येवं गुणं
सूत्रमपि कुर्वित्यर्थः । तथा वर्धितपार्श्वयोरंतरे ज्यां ज्यारूपं सूत्रं कुर्वित्यर्थः । तेन धनुःकुंडं स्यादिति ॥ अथ फलानयनं ॥
व्यासः २९।२।४ तत्र पूर्वदिक्संपातात्परिधिद्वयस्य दक्षसव्यपार्श्वावधिज्यादाने धनुर्मध्ये बृहत्त्रिभुजमुत्पद्यते । तथा द्वे ध-
नुषी उत्पद्येते । तस्य भूमिः सार्धव्यासः ४४ अस्यार्धं २२ अथ वृत्तद्वयसंपातमध्ये समभुजत्र्यस्रद्वयमुत्पद्यते तस्य भुजो
व्यासार्धमेव । व्यासार्धोनं बृहत्त्र्यस्रभूम्यर्धं अंतस्त्रिभुजाबाधा ताभ्यां लंबमानं १२।६ लंबवर्गभूम्यर्धवर्गयोगमूलं धनुर्ज्या-

मानं २५।३।२ लंबगुणमित्यादिना बृहत्त्र्यस्रफलं २८०।४ अथ द्वयोर्धनुषोः फले तत्र ज्याव्यासयोगांतरघातमूलं व्यासस्तदूनो दलितः शरः स्यादित्यादिना शरः ७।२। धनुर्मानानयनं स्वल्परीत्याहाऽऽर्यभट्टः। शरवर्गात्षड्गुणिताज्ज्याकृतियुक्तात्पदं चापमित्यादिना चापमानं ३०।४।५ ॥ धनुःफलानयनेऽस्मत्तातचरणकृतश्लोकः। धनुर्दलं व्यासदलेन हत्वा शरोनया त्रिज्यकया ज्यकार्धं। तयोर्द्वयोर्यद्विवरं तदेव धनुःफलं स्पष्टतरं भवेच्चेत्यादिना धनुःफलं १३५।२ इदं द्विगुणं धनुषोः फलं २७०।४ अथ परिधिद्वयबाह्यतः लघुत्र्यस्रद्वयं तस्य फलं यथा व्यासषष्ठांशः ४।७।१ अस्याग्रात्पार्श्वश्रोणिमध्यस्पृगन्यभुजे कल्पिते त्रिभुजमुत्पद्यते। तस्य भूमिरष्टास्त्रिज्या तन्मानं द्विद्विनंदेत्यादिना ११।१।६ ज्याव्यासेत्यादिनाशरः १।०।६।७ अनेन सहितो व्यासषष्ठांशो लंबः ५।७।७।७ अष्टास्त्रिज्यार्धमान्बाधा ५।४।७ लंबगुणमिति बहिस्त्रिभुजद्वयफलं ३३।५।१।२ अथ शरवर्गेत्यादिना धनुर्मानं ११।४।३।२।४ धनुर्दलमित्यादिना धनुःफलं ८।५।१।६ इदं बहिस्त्र्यस्रफलोने शेषं त्र्यस्रफलं सर्वेषां योगे धनुःकुंडफलं ५७६ सूक्ष्मगणितेन ध्वजायोऽपि ॥ १२० ॥

धनुःकुंडपूर्वरूपं

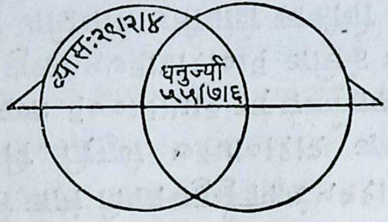

धनुःकुंडसिद्धरूपं

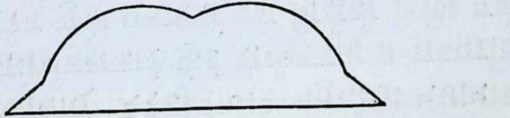

ध्वजकुंडपूर्वरूपं

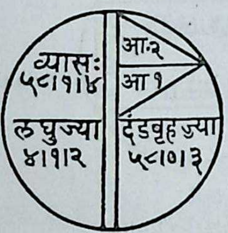

मध्याद्वायोर्दिशायां ततिगुण ३ लवके स्वेन १२ भागेन युक्ते
देशे वृत्तं प्रकुर्यान्मुखत उभयतः पुच्छतोऽष्टद्विभागे ।
चिह्नान्येष्वब्धिसूत्राण्यपि च यमगुणस्याग्रतो मध्यतश्च सूत्रे
दक्षांसतोधः परिधियुगकरांशे च लग्ने ध्वजाभं ॥ १२१ ॥

ध्वजकुंडसिद्धरूपं

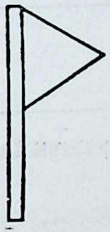

अथ केतोर्ध्वजाकारं कुंडं स्रग्धरयाह ॥ मध्यादिति ॥ मध्यात्केंद्राद्वायोर्दिशायां ततेर्व्यासस्य यो गुणलवस्तृतीयांशः स्वस्य य इनभागो द्वादशांशस्तेन युक्ते देशे वृत्तं कुर्यात्तस्य मुखादुभयतः पुच्छतश्चापि अष्टाविंशत्यंशे चिह्नानि कुर्यात्तेष्वब्धिसूत्राणि कुर्यात्तेषु सूत्रेषु यो यमगुणः दक्षिणदिक्सूत्रं तस्याग्रतो मध्यतश्च द्वे सूत्रे दक्षांसतोधःपरिधेर्युगकरांशश्चतुर्विंशांशस्तस्मिन्लग्ने सति केतोर्ध्वजाभं ध्वजाकारं कुंडं स्यादित्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ व्यासः ५८।१४ अस्याष्टाविंशत्यंशः २।०।५ द्विगुणो लघुज्या ४।१।२ व्यासयोगः ६२।२।६ अंतरं च ५४।०।२ घातः ३३६८।४।१ मूलं बृहज्ज्या ५८।०।३ लघुज्यया गुणितं २४१।२ जातमिदं ध्वजदंडफलं । अथास्य वृत्तस्य त्र्यस्रिज्या ५०।३।१ अस्यार्धं २५।१।४।४ लघुज्यार्धोनं २३।०।७।४ जातोयं लंबः। अथ बृहज्ज्याचतुर्थांशो भूम्यर्धं १४।४।०।६ लंबगुणमिति ध्वजत्र्यस्रफलं ३३५।३।६ फलयोर्योगः ५७६।५।६ अधिकं ध्वजायः । अथवा बृहज्ज्यार्धं २९।०।१।४ षडस्रिज्यार्धोनं १४।४।३ जातेयं प्रथमाबाधा ।

तथानयोनं बृहज्ज्यार्धं १४।३।६।४ अपराबाधा । अथ लंबेन प्रथमाबाधागुणिते जातं ३३६।२।२ अस्यार्धं १६८।१।१ तथापरामपिगुणिते जातं ३३४।६।४ अस्याप्यर्धं १६७।३।२ अर्धयोर्योगः ३३५।४।३ पूर्वानीतदंडफले युक्तं५७६।६।३ जातमिदं सर्वफलं अधिकं ध्वजायः ॥१२१॥ अथ गुरोर्दीर्घचतुरस्रं शालिन्याह ॥ वृत्तेति ॥ उक्तव्यासेन कृतं यद्वृत्तं तस्मिन्दक्षात्पार्श्वात्सव्यपार्श्वाच्च ऊर्ध्वाधःस्थितं यत्खंडयुग्मं पारिभाषिकखंडाष्टकेषु तत् त्रेधा कृत्वा त्रिधा विभज्य ततः पार्श्वद्वयात् अधोर्ध्व

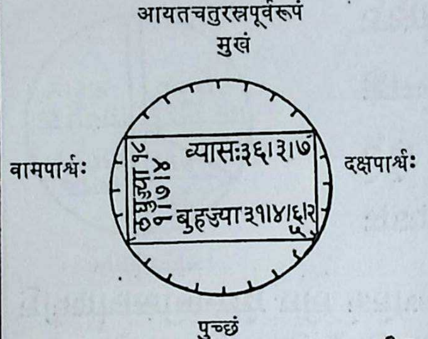
आयतचतुरस्रपूर्वरूपं
मुखं
वामपार्श्वः
दक्षपार्श्वः
व्यासः३६।३।७
लघुज्या १८।१।७।४
बृहज्या ३१।४।६।२।५
पुच्छं

वृत्ते चोक्ते दक्षिणाच्चैव सव्यात्पार्श्वादूर्ध्वा-
धःस्थितं खंडयुग्मं । त्रेधा कृत्वा पार्श्वतोधो-
र्ध्वचिह्नयुग्मस्पृग्ज्याभिर्गुरोरब्धिकोणं ॥ १२२ ॥

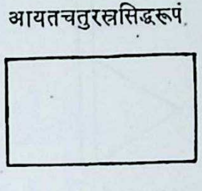
आयतचतुरस्रसिद्धरूपं

यच्चिह्नद्वयं तत्स्पृक् चतसृभिर्ज्याभिः श्रीगुरोर्बृहस्पतेरब्धिकोणं चतुरस्रमित्यर्थः । श्रीगुरोरित्यनेनायतचतुरस्रमुक्तं भवतीति ॥ अथ फलानयनं ॥ अत्र व्यासः ३६।३।७ तत्र लघुज्यामानं व्यासार्धं कल्पितं १८।१।७।४ अथ ज्याव्यासेत्यादिना शरः २।३।४।२।५।३ अयं द्विगुणः ४।७।०।५ अनेनोनव्यासाच्छेषं ३१।४।६।२।५ इयमेव बृहज्ज्या । आयते तद्भुजकोटिघात इति

फलं ५७६।३।३।६।०।५ अधिकं ध्वजायः॥ १२२॥ अथ बुधस्य बाणाकारकुंडं स्रग्धरायुग्मेनाह॥ वृत्तेति॥ वृत्ते कृते पार्श्वद्वयं स्पृशतीत्येतादृशं ततिना व्यासेन सुसमं समानं गुणं सूत्रं संप्रसार्य विस्तार्याष्टकोणज्यां कृतवृत्ताष्टास्रिज्यां दक्षे सव्ये चापि । दक्षभागे सव्यभागे चापीत्यर्थः । तां अंसयुगुलस्य कटीयुगुलस्य पार्श्वयुगुलस्य चांतरं मध्यं स्पृशंतीं दत्वा अथ तदनंतरं वामभागे मुखस्कंधश्रोणिपुच्छानामंतरं मध्यं गच्छतीत्येतादृशं गुणं सूत्रं तनु विस्तारय। अथ तत्सूत्रव्याससूत्रयोः संपातात्पूर्वापरदिशि पूर्वस्यां पश्चिमायामपि वसुकोणाष्टकोणस्य ज्यायाः जीवाया अंघ्रौ चरणे चरणमितदेश इत्यर्थः। एवं दक्षात्पार्श्वा-

वृत्ते पार्श्वद्वयस्पृक् ततिसुसमगुणं संप्रसार्याष्टकोणज्यां दक्षे चापि सव्येऽस-
कटियुगुलपार्श्वांतरं च स्पृशंतीं । वक्त्रांसश्रोणिपुच्छांतरगमथ गुणं वामभागे
तनु त्वं तत्संपाताच्च पूर्वापरदिशि वसुकोणज्यकांघ्रौ च चिह्ने ॥ १२३ ॥

दपि अष्टास्रिज्यांघ्रिदेशे चिह्ने लक्षणे कुर्यादित्यर्थः । अथ तदनंतरं गुणयुगुलं सूत्रद्वयं चिह्नलग्नं प्रदद्यात् । ततस्तन्मूलादक्षसंपातः दक्षज्यासंपातं गच्छतीत्येतादृशं गुणयुगं सूत्रयुग्मं देहि । अथो अनंतरं वामभागे मध्यात्संपाततः मध्यसंपातादित्यर्थः । तथा प्रागपरदिशि भुजंगाख्यष्टास्रिणः जीवायाः अष्टमांशात्रिगुणात् सव्यज्यका वामज्याया अंतर्गतं मध्यगतं गुणयुगुलं कुरु । अनेन बाणं बाणकुंडं स्यादिति शेषः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र व्यासः ५८।७ अस्याष्टास्रिज्या २२।४।०।२ योगः ८१।३।०।२ अंतरं ३६।२।७।६ घातः २९५९।६।५।६ मूलं बृहज्ज्या ५४।३।२।०।५ अनयोनं व्यासार्ध

मध्यशरः २।१।६।७।५।४ अष्टास्रिज्योनव्यासार्धं बृहच्छरः १८।१।३।७ शरयोर्योगः २०।३।२।६।५।४ अनेनोनव्यासो बृह-
द्भुजः ३८।३।५।१।२।४ अष्टास्रिज्यार्धं लघुभुजः ११।२।०।१ घातः४३२।५।५ मध्यशरोनबृहच्छरस्त्रिकोणलंबः१५।७।४।७।२।४
अष्टास्रिज्याष्टमांशः २।६।४ त्रिगुणो भूम्यर्धं ८।३।४ घातः १३४।४।६ ॥ अथ व्यासः ५८।७ अस्याष्टास्रिज्यार्धं ज्या ११।२।०।१
योगः ७०।१।०।१ अंतरं ४७।४।७।७ घातः ३३३९।५।२ मूलं ५७।६।२।४ अनेनोनव्यासार्धं लघुशरः ०।४।२।६ लघुशरो-

बाणकुंडपूर्वरूपं

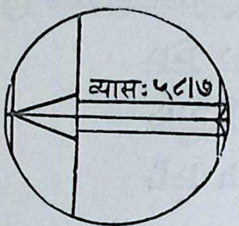

बाणकुंडसिद्धरूपं

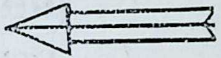

एवं दक्षाच्च पार्श्वादथ गुणयुगुलं चिह्नलग्नं प्रदद्यात्तन्मूलाद्दक्षसं-
पातगतगुणयुगं देह्यथो वामभागे । मध्यात्संपाततः प्रागपरदिशि
भुजंगास्रि जीवाष्टमांशात्त्रिघ्नात्सव्यज्यकांतर्गतगुणयुगुलं कुर्व-
नेनात्र बाणं ॥ १२४ ॥ पंचास्त्रं च त्र्यस्त्रकं बाणकुंडं दीर्घा-
म्नायास्त्रीति सौम्याग्रकाणि । चापं शूर्पं पश्चिमज्यं च केतुर्द-
क्षाग्रः स्यात्सौमिकं चोत्तरास्यं ॥ १२५ ॥

नमध्यशरो भूम्यर्धं १।५।४।१।५ अष्टास्रिज्याचतुर्थांशो लंबः ५।५।०।४ घातः ९।४।०।६ घातत्रययोगः सर्वं फलं ५७६।६।३।६
अधिकं ध्वजायः ॥ १२३ ॥ अथ ग्रहकुंडानां निवेशनं शालिन्याह ॥ पंचास्त्रमिति ॥ स्पष्टं दीर्घाम्नायास्त्रीति बृहस्पतेर्दी-
र्घचतुरस्रं । सौमिकं चंद्रस्य चतुरस्रमिति । नात्र ग्रहवत्तत्तद्दिगभिमुखत्वं कुंडानां कल्पनीयं । अनुक्तस्थले योनिपातात् ।
तथाच निर्णयसिंधुटीकायां रांगनाथिः । यष्टिर्बाणः सौम्यदिश्यग्र एव त्र्यस्रं तादृक् शूर्पकं पश्चिमास्यं । बार्हस्पत्यं

सौम्यदीर्घं धनुस्तत्पश्चाद्दिग्ज्यं शुक्रियं सौम्यकोणं ॥ इतिदिक् ॥ १२५ ॥ अथ ग्रहकुंडप्रसंगाद्ग्रहपीठकरणप्रकारमपि शालिन्याह ॥ पीठानीति ॥ खेटवेद्यां पीठानि स्युः तत्तत्कुंडाकाराणि यस्य ग्रहस्य यथा कुंडाकारः तथैव पीठमित्यर्थः। अनेन ग्रहदिगभिमुखत्वमपि पीठानां बोध्यं।तान्यमेखलानि मेखलारहितानि अखातकानि खातो गर्तस्तेन रहितानि तेषु पीठेषु योनिर्न स्यात्तानि अंशेन ग्रहवेदिचतुर्विंशांशोंऽशस्तेनोच्चानि यज्ञे ग्रहयज्ञे कुर्वीतैवेत्यर्थः । अथैतेषां पीठानामाकारादिनियमे ग्रहपीठमालायां वसिष्ठः। वृत्तं मंडलमादित्ये चतुरस्रं निशाकरे। भूमिपुत्रे त्रिकोणं स्याद्बुधे वै बाणसन्निभं । गुरौ तु पट्टिशाकारं पंचकोणं तु भार्गवे । शनौ स्याद्धनुषाकारं शूर्पाकारं तु राहवे । केतोश्चैव ध्वजाकारं मंडलानि यथाक्रममिति । गोभिलोऽपि पीठानामंगुलनियममाह । द्वादशांगुलकं सूर्ये मध्ये वृत्तं तु कारयेत् । चतुर्विंशांगुलं सोमे आग्नेय्यां चतुरस्रकं । वेदांगुलं तु भौमस्य पैत्र्यां कुर्यात्रिकोणकं। वेदांगुलं बुधे कार्यं रौद्र्यां बाणाकृतिस्तथा। षडंगुलमुदग्जीवे पट्टाकारं

पीठानि स्युः खेचराणां तु तत्तत्कुंडाकाराणीह चामेखलानि ।
योनिर्न स्यात्तेषु चाखातकानि ह्यंशेनैवोच्चानि कुर्वीत यज्ञे ॥ १२६ ॥

ग्रहवेदिरियं

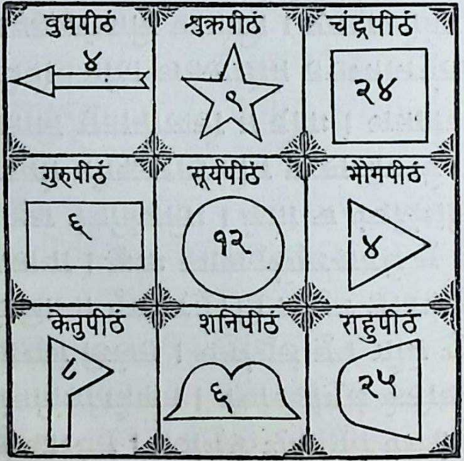

तु कारयेत् । नवांगुलं भृगौ पूर्वे पंचकोणं तु कारयेत् । पश्चिमे द्व्यंगुलं सौरेर्धनुषाकृति कारयेत् । शूर्पाकारं लिखेद्राहोः
पंचविंशतिनैर्ऋते । पंचविंशांगुलं केतोर्वायव्ये च ध्वजाकृतीति । ग्रंथांतरे पीठांगुलनियमः । द्विषडंगुलकं सूर्ये सोमे तु
द्विगुणं लिखेत् । चतुरंगुलं बुधे भौमे गुरौ मंदे षडंगुलं। भृगौ नवांगुलं लेख्यं राहौ सोममितागुलं। केतौ द्विरदसंख्याकं
लिखित्वा पूजयेदनु। द्विषडंगुलं द्वादशांगुलं। आश्वलायनगृह्यपरिशिष्टेप्यंगुलसंख्या । द्वादशांगुलकः सूर्यः सोमस्तु द्विगु-
णस्तथा । कुजः स्याच्चतुरंगुलस्तदर्धं तु बुधः स्मृतः । षडंगुलो भवेज्जीवो भार्गवस्तु नवांगुलः । सौरी स्याच्चतुरंगुलो
राहुश्च पंचविंशतिः । केतौ च पंचविंशतिरिति । अत्रांगुलसंख्यानियमकार्षवाक्यानां कतिपयपीठांगुलसंख्यायां विसंवादो
दृश्यते तत्रैकतरालंबनेन परस्परवैयर्थ्यं। अतः सर्वानुसरणं श्रेय इति कृत्वा कानिचित्पीठानि सर्वसंमतानि कानिचिदेकसं-
मतानि धृतानीत्यतो न दोषः । अत्रार्षवाक्यानां सप्रामाण्यमित्यंतमुक्तं । तथा तत्रैव । होमपरत्वेन वेदिमानं भिन्नंभिन्नं
तत्रैवोक्तमस्ति अतस्तद्धोमे तत्तन्मानयुतां ग्रहवेदीं विधाय तांतु एकहस्तमितां प्रकल्प्य तच्चतुर्विंशोंशोंगुलमित्यादिकृत्यो-
क्तवद्ग्रहपीठानि कार्याणि । एतदाशयेनैव करमितां ग्रहवेदीमिति ग्रंथकारोक्तिरित्युक्तं ॥ अथैतेषां पीठानां फलानयन-
प्रकारः ॥ ॥ तत्र सूर्यपीठव्यासः ३।७।२।३ अस्य वर्गः १५।२।३।४ भनवाग्निनिघ्नः ६०१०१ पंचसहस्रभक्ते लब्धं
सूर्यपीठफलं १२।०।१ अधिकं ध्वजायः ॥ ॥ अथ शुक्रपीठांतर्वृत्तव्यासः २।४।२।५ वेदाग्निबाणेत्यादिना पंचास्रिभुजः
१।३।७। अयमेव त्र्यस्रद्वयभूमिः अस्यार्धमाबाधा ०।५।७।४।२।४ द्वयोस्त्र्यस्रयोर्लंबः बहिर्व्यासार्धमेव २।३।५ लंबगुणमिति-
फलं १।६।४ इदं पंचगुणं पंचास्रि शुक्रपीठफलं ९।०।६।४ ॥ अथ समपंचास्रपीठफलं व्यासः ३।७।१ वेदाग्निबाणेति

गुणिता २७४४२११२ खखेति भक्ते लब्धा पंचास्रिज्या २।२।२ अस्यार्धमाबाधा १।१।१ व्यासार्ध एव कर्णः १।७।४।४ आबा-
धावर्गः १।२।३ कर्णवर्गः ३।६।२।१ अंतरं २।३।७।१। मूलं लंबः १।४।७।६ लंबगुणं फलं १।६।६।३ पंचगुणं ९।१।६ ॥ ॥ अथ-
चंद्रपीठव्यासः ६।७।२ त्रिबाणेत्यादिना चतुरस्रज्या ४।७।१।५ अनया समावेव भुजकोटी तयोर्घातः फलं २४।०।१
॥ ॥ अथभौमपीठव्यासः ३।४।२।५ त्रिद्व्यंकेत्यादिना त्र्यस्रिज्या ३।०।४।२ समभुजत्र्यस्रे भुजार्धमाबाधा १।४।२।१ अन-
योर्वर्गांतरमूलं लंबः २।५।४।७ लंबगुणमितिफलं ४।१।१ ॥ ॥ अथराहुपीठवृत्तव्यासः ८ त्रिद्व्यंकेत्यादिना त्र्यस्रिज्या
६।७।३।३।२ तथा षडस्रिज्या ४ द्वयोर्योगः १०।७।३।३। दलं ५।३।५।५ षडस्रिज्यागुणितं २१।६।६।६।४ अथ षडस्रिज्यार्धं
वृत्तव्यासः २ अस्य वर्गः ४ रुद्रहतः ४४ शक्रहृतः ३।१।१ पूर्वफले युक्तः २४।७।७।७।५ स्वल्पांतरत्वाददोषः ॥ अथ प्रका-
रांतरेणोक्तशूर्पपीठव्यासः ८।१।४ अस्य त्र्यस्रिज्या ७।०।५।६ तथा षडस्रिज्या ४।०।६ योगः ११।१।३।६ अस्यार्धं
५।४।५।७ षडस्रिज्यया गुणितं २२।७।१ षडस्रिज्यावर्गः १६।६ द्विगुणः ३३।४। अस्य मूलं ५।६।२।५ इदं धनुर्व्यासः अस्य
परिधिः १८।१।४।६ व्यासपादः १।३।४।५।२ परिधिगुणः २६।२।६।२ इदं वृत्तफलं अस्मात्षडस्रिज्यावर्ग ऊनः ९।४।६।२
अस्य चतुर्थांशो धनुःफलं २।३।१।४ विषमचतुर्भुजफले युक्तं जातं सर्वं फलं २५।२।२।४ ॥ ॥ अथ शनिपीठव्यासः
२।७।७।३।६ अत्र पूर्वदिक्संपाताद्धनुर्ज्याग्रद्वयावधिभुजद्वये कृते धनुर्मध्ये त्रिभुजमुत्पद्यते तथा द्वे धनुषी उत्पद्येते । तत्र
बृहत्त्रिभुजभूमिः सार्धव्यास एव ४।३।७।१।५ अस्यार्धमाबाधा २।१।७।४।६ अथ पूर्वदिक्संपातमध्येऽन्यत्समभुजत्रिभुजमु-
त्पद्यते तस्य भुजाः व्यासार्धसमाः केंद्रात्परिधिलग्नत्वात् । अतोऽस्य व्यासस्य चतुर्थांशो भूम्यर्धं ताभ्यां लंबमानं १।२।३।२

द्वयोस्त्र्यस्रयोरयमेव लंबः। अनेन गुणितो व्यासचतुर्थांशो बृहत्त्रिभुजफलं २।७।३।०।४ अथ धनुषोः फले तत्र बृहत्त्रिभुजभूम्यर्धलंबवर्गयोर्योगमूलं धनुर्ज्यामानं २।४।७।६।३ ज्याव्यासेत्यादिना शरः ०।५।७।१ शरवर्गेत्यादिना धनुर्मानं ३।२।१।०।४ धनुर्दलमित्यादिना धनुःफलं १।३।४।५ इदं द्विगुणं धनुषोः फलं २।७।१।२ अथ बाह्यत्र्यस्रफलं तत्र वर्धितभुजाग्रात्पार्श्वश्रोणिमध्यस्पर्श्यन्यभुजे कल्पिते त्रिभुजमुत्पद्यते तस्य भूमिरष्टास्रिज्या द्विद्विनंदेत्यादिना १।१।१।२ वर्धितभुजो व्यासषडंशः ०।३।७।७।२ ज्याव्यासेत्यादिना शरः ०।०।७ अनेन सहितो व्यासषडंशो लंबः ०।४।६।७।२ अष्टास्रज्यार्धमाबाधा ०।४।४।५।०।४ लंबगुणमितिफलं २।६।२।१।२ इदमष्टास्रिधनुःफलोनं तत्र शरवर्गेत्यादिना धनुर्मानं १।१।३।७ धनुर्दलमित्यादिना धनुःफलं ०।१।१।१।६ इदं बहिस्त्र्यस्रफलोनं बहिस्त्र्यस्रफलं ०।१।६।७।४।२ सर्वेषां योगे सर्वं फलं ६।०।३।२ ध्वजायोऽपि ॥ ॥ अथ केतुपीठव्यासः ६।६।७ अस्याष्टाविंशत्यंशः ०।२ द्विगुणो धनुः ०।४ लघुज्यापि स्थूला ०।३।७।७ ज्याव्यासयोगः ७।२।६।७ अंतरं ६।६।७।१ घातः ४६।६।३।३ मूलं बृहज्ज्या ६।६।७ लघुज्यया गुणिता ३।३।२।५ जातं दीर्घचतुरस्रफलं। अथ बृहज्ज्यादलं ३।२।६।३।५।४ वर्गः ११।१।६।५।१।४ बृहज्ज्यापादः २।६।३।५।४ वर्गः ८।३।२।७।५।४ वर्गयोरंतरं २।६।३।५।४ अस्यमूलं लंबः १।५।४।७।३। लंबगुणो बृहज्ज्यापादस्त्र्यस्रफलं ४।६।१।६।४ फलयोर्योगः ८।१।४।३।४ इति केतुपीठफलं ॥ ॥ अथ गुरुपीठव्यासः ३।५।५।५।४ अस्यार्धं १।६।६।६।६ इदं षडस्रिभुजः। अथ ज्याव्यासेत्यादिना शरः ०।१।५।३।५।६ अयं द्विघ्नः ०।३।२।७।३।४ अनेनोनो व्यासो बृहद्भुजः ३।२।२।६।०।४ चतुरस्रे भुजकोटिघातः फलं ६।०।७।३ ध्वजायोऽपि ॥ ॥ अथ बुधपीठफलानयनं ॥ तत्र व्यासः ४।७।२।०।३।५ अस्याष्टास्रिज्या १।७।०।१।४ अंतरं

३।०।१।६।७।६।६ घातः २०।४।३।३।३।२ अस्य मूलं बृहज्ज्या ४।४।३।४।२।५।१ अनेनोनव्यासार्धं मध्यशरः ०।१।३।२।०।३।७।४ अष्टास्त्रिज्योनव्यासार्धं बृहच्छरः १।४।०।७।३।७।३ शरयोर्योगः १।५।४।१।४।३।२।४ अनेनोनव्यासो बृहद्भुजः ३।१।५।७ अष्टास्त्रिज्यार्धं लघुभुजः ०।७।४।०।५।७।१ द्वयोर्घातः ३।०।१।२।३।४ मध्यशरोनबृहच्छरस्त्रिकोणलंबः १।२।५।५।३।३।३।४ अष्टास्त्रिज्याष्टमांशः ०।१।७।०।१।३।६।२ त्रिगुणभूम्यर्धं ०।५।५।०।४।३।२।६ लंबगुणमितिफलं ०।७।४।२।५।४ अथ व्यासः ४।७।२।०।३।५ अष्टास्त्रिज्यार्धं ज्या ०।७।४।०।५।७।५।६ योगः ५।६।६।१।१।४।१ अंतरं ३।७।५।७।५।६ घातः २३।१।४।५।४।५

व्यासाभ्यां वृत्तयुग्मं विरचय सुकृतिन्बाह्यमध्यस्थितित्वं वक्रात्पुच्छात्तयोर्वै
कुरु बुध परिधेः खंडकानीह पंच । बाह्यांकात्सूत्रयुग्मं वितनु सुमतिमन्मध्यम-
स्यांकयुग्मे स्यात्तत्पंचास्त्रि कुंडं भृगुजमखविधौ चाभिचारोपशांतौ ॥ १२७ ॥

मूलं ४।६।४।३।६।०।४ अनेनोनव्यासार्धं लघुशरः ०।०।५।४।५।४।४ लघुशरोनमध्यशरो भूम्यर्धं ०।०।५।५।२।७।३।४ अष्टास्त्रिज्याचतुर्थांशो लंबः ०।३।६।०।३ लंबगुणमितिफलं ०।०।२।५।२।३।१ फलत्रयाणां योगः ४।०।०।२।३।३।१ सर्वं फलं ध्वजायोऽपि ॥ १२६ ॥ एवं प्रासंगिकानि ग्रहपीठान्युक्त्वाऽऽथोत्कलिकादौ पंचास्रं स्रग्धरयाह ॥ व्यासाभ्यामिति ॥ पूर्वमेवोत्कलिककुंडानां द्वौ व्यासावुक्तौ तत्र मध्याद्बहिर्व्यासेन बाह्यमंतर्व्यासेनांतर्वृत्तं एवं वृत्तयुग्मं विरचय कुर्वित्यर्थः। सुकृतिन्नित्यादिसंबुद्धयः। तद्वृत्तयुग्मं बाह्यमध्यस्थिति बाह्ये च मध्ये च स्थितिर्वर्तनं यस्य। एवं कृते तयोर्वृत्तयोः क्रमाद्ब-

क्रान्मुखमारभ्य पुच्छमारभ्य च परिधेः पंच खंडानि कुरु । अत्र बाह्यस्य वक्रान्मध्यस्य पुच्छादिति क्रमः । तत्र खंडे कृते बाह्ये वृत्ते योऽकश्चिह्नं तस्मादारभ्य सूत्रयुग्मं सूत्रद्वयं मध्यमस्य मध्यवृत्तस्य चिह्नयुग्मे विस्तारय । तेन पंचास्रि पंचकोणं स्यादित्यर्थः । तत्पंचास्रि भृगुजः शुक्रस्तस्य यो मखविधिर्यज्ञविधिस्तस्मिन्नभिचारोपशांतौ च प्रशस्तं युक्तमित्यर्थः । तदुक्तं विज्ञानललिते । धनुर्ज्याकृतिभिः पंचसूत्रैः पंचास्रि कुंडकं । होमः प्रशस्यते भूतशाकिनीग्रहनिग्रहे इति ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्रांतर्वृत्ते समपंचास्रिकल्पनेन दशत्रिकोणान्युत्पद्यंते । तत्र त्रिकोणद्वयफलं पंचगुणं सर्वकुंडफलं भवत्येव । अथांतर्वृत्ते व्यासः २० वेदाग्निबाणेत्यादिना पंचास्रभुजः ११।६ अयमेव त्र्यस्रद्वयभूमिः अस्यार्धमाबाधा ५।७ द्वयोर्लंबस्तु बहिर्व्यासार्धमेव १९।५ अनेन गुणितं भूम्यर्धं जातं त्र्यस्रद्वयफलं ११५।२।३ इदं पंचगुणं सर्वफलं ५७६।३।७ अधिकं ध्वजायः ॥ १२७ ॥

उत्कलिकपंचास्रपूर्वरूपं

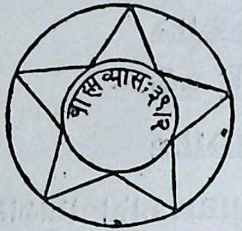

उत्कलिकपंचास्रसिद्धरूपं

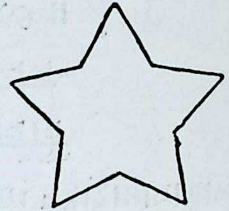

अथोक्तप्रकारेण षडस्रादीनि शार्दूलविक्रीडितेनाह । एवमुक्तप्रकारेण षडस्रसप्तास्राष्टास्त्रीणि उत्कलिकानि स्युरिति शेषः । तत्र विशेषमाह । यथा पंचास्रे बाह्यमध्यवृत्तयोर्वक्रपुच्छाच्च पंच खंडानि कृतानि तथेहापि षडस्रे पार्श्वात्पुच्छाच्च षट् खंडानि कुरु तेन षडस्रि स्यादिति । अत्र सर्वेषूत्कलिकेषु पूर्वश्लोकस्य प्रथमतृतीयौ पादावनुवर्तनीयौ । तथा

उत्कलिकषडस्रपूर्वरूपं

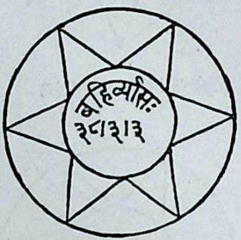

एवं चोत्कलिकानि ष ६ ण्नग ७ गजा ८ स्त्रीणीह पा-
र्श्वात्तथा पुच्छात्षट् कुरु खंडकान्यपि रसा ६ स्त्रि
स्यात्तथागा ७ स्त्रकं । वक्रात्तत्किल पुच्छतोऽपि हि
नगांशैः स्यात्तथास्यांसयोर्मध्यात्तन्मुखतो वदंति वि-
बुधाश्चाष्टांशतोऽष्टा ८ स्त्रकं ॥ १२८ ॥

उत्कलिकषडस्रसिद्धरूपं

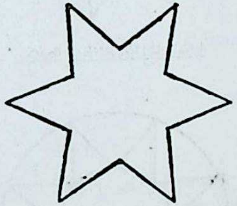

वक्रात्पुच्छाच्च सप्तभागैः सप्तास्रं तथा वक्रांसयोर्मध्यान्मुखतश्चाष्टांशतः अष्टभागैः कृत्वाऽष्टास्रकं विबुधा वदंतीत्यर्थः ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र व्यासः ३१।१ वेदाग्निबाणेत्यादिना पंचास्रिभुजः १८।२ अस्यार्धमाबाधा ९।१ तथा व्यासार्धं कर्णः १५।४।४ द्वयोर्वर्गयोरंतरं १५९।७।३ अस्य मूलं लंबः १२।५।१ लंबगुणमितिफलं ११५।२।६ पंचगुणं ५७६।६ अधिकं

ध्वजायः द्वयोस्त्र्यस्रयोर्बहिर्व्यासार्धमेव लंबः १९।१।५।४ लंबगुणमितित्र्यस्रद्वयफलं ९६।०।३।४ इदं षड्गुणं सर्वं फलं ५७६।२।५ ॥ अथ सप्तास्रांतर्वृत्तव्यासः ॥ २० बाणेषुनखबाणैश्चेत्यादिना सप्तास्रिभुजः ९।१।३ अस्यार्धं भूम्यर्धं ४।४।५ बहिर्व्यासार्धं लंबः १८ लंबगुणमितिफलं ८२।३।२ इदं सप्तगुणं ५७६।६।६ ॥

॥ अथाष्टास्रफलं तत्रांतर्व्यासः ॥ २० द्विद्विनंदेत्यादिनाष्टास्रिभुजः ७।४।५ अस्यार्धं भूम्यर्धं ३।६।२।४ बहिर्व्यासार्धं लंबः १९ लंबगुणमितिफलं ७२ अष्टगुणं ५७६ अधिकेन सर्वत्र ध्वजायः ॥ १२८ ॥

उत्कलिकसप्तास्रपूर्वरूपं

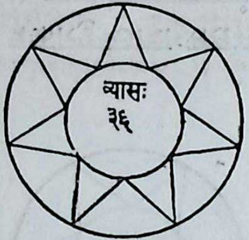

उत्कलिकाष्टास्रपूर्वरूपं

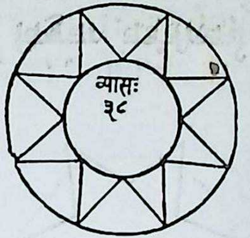

उत्कलिकसप्तास्रसिद्धरूपं

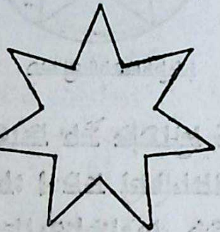

उत्कलिकाष्टास्रसिद्धरूपं

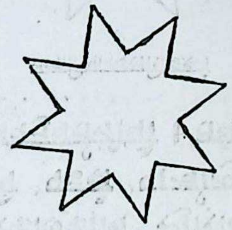

अथ प्रकारांतरेण समत्र्यस्रादिसाधनादौ वृत्ते ज्योत्पादनं वैतालीयाभ्यामाह ॥ सुरेति ॥ हे बुध द्वाविंशत्या ततिं व्यासं हतां गुणितां तत्। सप्तभिः विभजेत् तेन यदाप्तं लब्धं तत् परिधिसंज्ञं कुंडकोणैः यत्कुंडे यन्मिताः कोणाः भवंति तैरित्यर्थः। १९ यथा त्रिभुजे त्रिभिः कोणैश्चतुर्भुजे चतुर्भिरित्यादिः ॥१२९॥ तत्रापि यल्लब्धं तदेव धनुरित्युदीर्यते प्राचीनैः। तद्धनुः क्रमेण वक्ष्यमाणैर्निजभागैरूनितं सत् शिंजिनीं ज्यां कथयंति पूर्वाचार्याः ॥१३०॥ अथोक्तलवान् चित्राख्याभ्यां वैतालीयभेदाभ्यामाह ॥ त्रिभुजइति ॥ त्रिभुजे धनुषस्त्रिपंचाशदुत्तरत्रिशतांशेनैकषष्ट्या गुणितेन धनुरूनं सत् त्रिभुजे ज्या भवतीति। एवं सागरकोणे चतुर्भुजे स्वदशांशेन मार्गणभुजे पंचभुजे इषुभूलवात्पंचदशांशेन ॥१३१॥ षड्भुजे द्विकरांशमितेन द्वाविंशतितमांशेन अश्वकोणे सप्तास्रे एकोनत्रिंशदंशेन अंतिमे अष्टकोणे षट्चत्वारिंशदंशेन ऊनितमिति पूर्वेणान्वयः। तैर्जाता या ज्यास्ताः यथाग्रे उच्यते तथा सन् लिखेत्यर्थः। सन्निति संबुद्धिः ॥

सप्तास्रपूर्वरूपं

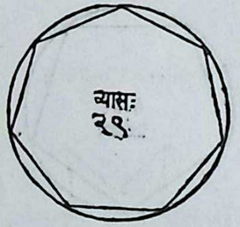

सुरवैद्यकरा २२ हतां ततिं विभजेच्चाथ बुधेह स७प्तभिः। परिधिर्यदिहाप्तमुच्यते विभजेत्तत्किल कुंडकोणकैः ॥१२९॥ यदिहाप्तमुदीर्यते धनुस्त्रिभुजादौ क्रमशस्तदूनितं। अथ तां कथयंति शिंजिनीं निजभागैरथ वक्ष्यमाणकैः ॥ १३० ॥ त्रिभुजे दहनेषुपावकां ३५३ शेन भूरस ६१ हतेन बुद्धिमन्। अथ सागरकोणके दशांशेन मार्गणभुजेषुभू १५ लवात् ॥ १३१ ॥

सप्तास्रसिद्धरूपं

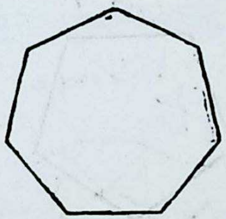

॥ यथोदाहरणं ॥ त्र्यस्रव्यासः ४२।१ अयं द्वाविंशत्या गुणितः ९२६।६ सप्तभिर्भक्ते लब्धः परिधिः १३२।३।१ त्रिभिर्भक्तः ४४।१ इदमेव धनुः अस्य त्रिपंचाशदुत्तरत्रिशतांशः ०।१ एकषष्ट्या गुणितः ७।५ अनेनोनं धनुर्जाता ज्या ३६।४ फलं ५७६।४।५ ॥ अथ चतुरस्रव्यासः ॥ ३३।७।४ पूर्ववत्परिधिः १०६।५।५।२ चतुर्भिर्भक्ते धनुः २६।५।३।२ अस्य दशांशः २।५।२।६ अनेनोनं २४।०।०।५ इयं ज्या उक्तवत्फलं ५७६।४।५ पंचास्रव्यासः ३१।१ परिधिः ९७।६।४।४ पंचभक्तः १९।४।५।१ अस्य

पंचास्रपूर्वरूपं

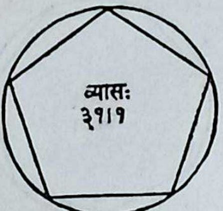

द्विकरांश २२ मितेन षड्भुजे नंदपक्ष २९ लवतोऽश्वकोणके ।
रसवेद्लवेन ४६ चांतिमे ताश्च सन्लिख यथोच्यतेऽग्रतः॥१३२॥

पंचास्रसिद्धरूपं

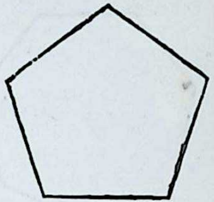

पंचदशांशः १।२।३।४ अनेनोना ज्या १८।२।१।५ अत्र फलं ५७६।३।४।४ ॥ अथ षडस्रव्यासः॥ २९।६ परिधिः ९३।४ षट्भक्ते धनुः १५।४।५ अस्य द्वाविंशत्यंशः ०।५।५ अनेनोनं ज्या १४।७ अत्र फलं ५७६ ॥ अथ सप्तास्रव्यासः ॥ २९ परिधिः ९१।१।१।१ सप्तभक्तः १३।०।१।१ अस्यैकोनत्रिंशदंशः ०।३।५ अनेनोना ज्या १२।४।४।१ अत्र फलं ५७६ अष्टास्रव्यासः २८।४ परिधिः ८९।४।४।४ अष्टभक्तः ११।१।४।४ अस्य षट्चत्वारिंशत्तमोंशः ०।१।७।४। अनेनोनं धनुर्ज्या

१०।७।५ अत्र फलं ५७६।२ अत्र सर्वत्राधिकेन ध्वजायः। क्वचित्स्थले किंचिन्न्यूनाधिकमप्यदोषाय। उक्तमपि यवादूनं तु यन्मानं मंडपादौ न चिंतयेत्। सूत्रस्याधो विलीयंते यूकालिक्षादयः शतमिति। तथा प्रासादमंडने। अंगुलं सार्धमर्धं वा कुर्याद्धीनं तथाधिकं। आयदोषविशुद्ध्यर्थं ह्रासो वृद्धिर्न दुष्यतीति। तथा शतांशोनाधिकन्यूने ह्रासवृद्धी न दूषयेदिति। तथा मानादूनाधिकं क्षेत्रं कार्यं पर्वयवादिभिरिति च परशुरामकारिकास्वपि वेति पूर्वोक्तप्रकारेण विकल्प्यते ॥ १३२ ॥ अथवा उक्ता ज्यास्तासां वृत्ते लेखनं गीत्याह ॥ वक्त्रादिति ॥ त्र्यस्रादारभ्य वक्त्रान्मुखादंसात्स्कंधात्तथा

वक्त्रादंसाद्वक्त्रात्पार्श्वाद्वक्त्रान्मुखांसयोर्मध्यात्।
उक्तज्याभिस्तान्यथ पंचागास्रेऽभिचारशांतौ वा ॥ १३३ ॥

वक्त्रात् तथा पार्श्वात्तथा वक्त्रात्तथा मुखांसयोर्मध्यादुक्तज्याभिर्दत्ताभिस्तानि पूर्वोक्तानि कुंडानि स्युरिति शेषः। पंचास्रसप्तास्रे त्वभिचारस्य शांतौ स्यातामित्यर्थः। तदुक्तं विज्ञानललिते। समीपसूत्रं तादृक्स्यात्सप्तास्रं सूत्रसप्तकात्। अभिचारोपशांत्यर्थे होमे कुंडं भवेत्स्फुटमिति। अथ समभुजपंचास्रसप्तास्रफले तत्र पंचास्रव्यासः ३१।१ उक्तवज्ज्या १८।२।१।५ इयमेव त्र्यस्रभूमिः अस्यार्धव्यासार्धवर्गांतरमूलं लंबः १२।५ लंबगुणं भूम्यर्धं फलं ११५।२।३ पंचगुणं पंचास्रफलं ५७६।४ अथ सप्तास्रव्यासः २९ उक्तवज्ज्या १२।४।४।१ पंचास्रवन्मध्यत्र्यस्रफलं ८२।२।३ सप्तगुणं सर्वं फलं ५७६।०।५ ध्वजा-

योऽपि ॥ १३३ ॥ एवं कुंडकरणप्रकारातराण्युक्त्वा प्रकृतानि खातादिकुंडागान्याह गीत्या ॥ खातमिति ॥ कुंडस्य खातः कुंडगर्तः सः तिथ्यंशैः पंचदशांशैश्चतुर्विंशत्यंशैर्वा स्यात् । पंचदशभागैरिति नवांगुलोच्चमेखलापक्षे ज्ञेयमतो वक्ष्यति मेखलानामित्यादि । मेखलानामुच्छ्रितिरौच्च्यं तेन सह जिनलवैश्चतुर्विंशत्यंगुलैर्वा स्यादथवा केवलं चतुर्विंशतिलवैर्भूम्यां यथा कुंडाकारस्तथा कुर्यादित्यर्थः । तदुक्तं शारदातिलके । यावान्कुंडस्य विस्तारः खननं तावदीरितमिति । तथा गणेशविमर्शिन्यां । चतुर्विंशांगुलायामं तावत्खातसमन्वितमिति । सिद्धांतशेखरे । खातं कुंडप्रमाणं स्यादूर्ध्वमेखलया सहेति ।

खातं कुंडाकारं तिथ्यंशै १५ र्वा जिनांशकैः २४ कुर्यात् । कुंडस्य मेखलानामुच्छ्रितिसहजिनलवैरथ स्याद्वा ॥ १३४ ॥ तेषां मध्ये वेद ४ भागैस्ततश्च द्व्यंशेनोच्चः कुंडवन्नाभिरुक्तः । अब्जाकारो वा न पद्मेथ खाताद् द्व्यंशाभ्यां वांशेन वै कंठ उक्तः ॥ १३५॥

प्रतिष्ठासारसंग्रहेऽपि । त्रिपंचमेखलापक्षं ज्ञात्वा शेषमधः खनेदिति ॥ १३४॥ अथ नाभिकंठौ शालिन्याह ॥ तेषामिति ॥ तेषां कुंडानां मध्ये वेदभागैश्चतुर्भिरंशैस्ततो विस्तृतः द्व्यंशाभ्यामुच्चः कुंडवत्कुंडाकारः तथाब्जाकारः पद्माकारो वा नाभिः स्यादित्यर्थः । स नाभिः पद्मे पद्मकुंडे न स्यात् । तत्र कर्णिकायाः सत्वात्। अथानंतरं खातात्कुंडगर्तात् द्व्यंशेन द्व्यंगुलेन अथवांशेन एकांगुलेन कंठ उक्तः कथित इत्यर्थः । तदुक्तं शारदातिलके । कुंडानां कल्पयेदंतर्नाभिमंबुजसन्निभां । तत्कुंडाद्यनुरूपां वा मानमस्य निगद्यते । मुष्ट्यरत्न्येकहस्तानां नाभिरुत्सेधतो मता । नेत्रवेदांगुलो वापि पद्मे नाभिं च वर्जये-

दिति । कंठमानं सोमशभौ । बहिरेकांगुलः कंठो द्व्यंगुलः क्वचिदागम इति । पिंगलामतेपि । खातादेकांगुलं त्यक्त्वा मेखलानां स्थितिर्भवेदिति । क्रियासारे । नाभियोनिसमायुक्तं कुंडं श्रेष्ठं त्रिमेखलमिति ॥ १३५ ॥ त्रिमेखलापक्षांतराणि शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ तस्मादिति ॥ तस्मात्कंठान्नवषट्त्रिभागैः क्रमेणोन्मितं मेखलानामौच्चयं उच्छ्रायः अथवा नवपंचद्विमितं औच्चयं चतुस्त्रिद्व्यंशैः क्रमेण ततिर्विस्तारः स्यादित्यर्थः । ताः मेखलाः तिस्रः स्युरथवा क्रमात् द्वादशाष्टचतुर्भिरुच्छ्रिताः चतुर्भिर्विस्तृताश्च कुंडानुरूपाः कुंडाकारा अमूः मेखलाः सुसमा अवक्राः स्युरित्यर्थः । कुंडार्के मेखलालक्षणं ।

तस्माद्रंध्र ९ रसा ६ ग्नि ३ भागविमितं स्यान्मेखलानामिहाप्यौच्चयं वाथ च गो ९ शरा ५
क्षि २ विमितं वेदा ४ ग्नि ३ नेत्रै २ स्ततिः । तिस्रस्तास्त्वथवार्क १२ नाग ८ जलनिध्यं
४ शैः क्रमादुच्छ्रिता वेदैः ४ स्युः किल विस्तृताश्च सुसमाः कुंडानुरूपा अमूः ॥ १३६ ॥

स्युर्बहिर्मेखलास्ता नंदां ९ ग ६ त्र्यु ३ च्चवेद ४ त्रि ३ कर २ विततय इति । अत्र श्रीमत्तातचरणाः कुंडार्कपद्धिन्यां । कंठाद्बहिर्मेखला भवंति तत्राद्या मेखला नवांगुलोच्चा चतुरंगुलविस्तारा तस्या बहिः षडंगुला त्र्यंगुलविस्तारा तस्या बहिः तृतीया त्र्यंगुला द्व्यंगुलविस्तारेति । एवमेव रघुवीरदीक्षितैस्तट्टीकायामप्युक्तं । तथैव श्रीमद्रामवाजपेयिभिरप्युक्तं । नव ९ र्तु ६ रामांश ३ कतुंगतामतेति । प्रमाणमपि तट्टीकायां प्रथमाऽब्ध्यंगुलायामा उन्नता सा नवांगुलैः । मध्यमा त्र्यंगुला कार्या तृतीया तु यमांगुलैरिति । द्वितीयतृतीययोरुच्चता प्रथमातस्त्रिभागोनतयार्थादेवेति पक्षो बहुभिरिष्ट इत्यंतमुक्तं ।

तर्कै ६ षु ५ वेदा ४ ग्नि ३ यमां २ शकैर्वा व्यासस्तु तासामथ चोन्नताश्च ।
अंकै ९ स्तदाद्या ह्यपराः शरां ५ शैरूनाश्च पंचापि सुमेखलाः स्युः ॥ १३७ ॥

अत्र कुंडार्के कैश्चित्पाठांतरं कल्पितं सूर्याक्षद्व्युच्चेति तत्प्राचीनपुस्तकबाहुल्ये तथानुक्तत्वादुपेक्ष्यं । अथ द्वितीयपक्षः क्रियासारे । प्रधानमेखलोत्सेधमुक्तमत्र नवांगुलं । तद्बाह्यमेखलोत्सेधं पंचांगुलमिति स्मृतं । तद्बाह्यमेखलोत्सेधमंगुलद्वितयं क्रमात् । चतुस्त्रिद्व्यंगुलो व्यासो मेखलात्रितयस्य त्विति । द्वादशांगुलमेखलापक्षः प्रयोगसारे । सात्विकी मेखला पूर्वा विस्तृता द्वादशांगुला । द्वितीया राजसी प्रोक्ता मेखलाष्टांगुलैस्ततः । तृतीया मेखला ख्याता तामसी चतुरंगुला । पृथग्विस्तारमेतासां चतुरंगुलमानतः इति । तथाचाचार्याः । सत्वपूर्वकगुणान्विताः क्रमाद्द्वादशाष्टचतुरंगुलोन्नताः । सर्वतोंऽगुलचतुष्कविस्तृता मेखलाः सकलसिद्धिदा मताः इति ॥ १३६ ॥ अथ पंचमेखलापक्षमिंद्रवज्रयाह ॥ तर्केष्विति ॥ षट्पंचचतुस्त्रिद्व्यंगुलैस्तासां मेखलानां प्रथमादिक्रमेण व्यासो विस्तारः । अथच आद्या नवभिरंशैरुन्नतोच्चेत्यर्थः । अपराः द्वितीयाद्याः पूर्वपूर्वापेक्षया पंचमांशैरूनाः तत्राद्याया उच्चता ९ द्वितीयायाः ७।१।२ तृतीयायाः ५।६।१ चतुर्थ्याः ४।४।७ पंचम्याः ३।५।४ एवं पंच सुष्ठु मेखलाः स्युरित्यर्थः । सिद्धांतशेखरे । षड्बाणाब्धिवह्निनेत्रैर्मिताः स्युः पंचमेखला इति । लक्षणसंग्रहे । पंच वा मेखलाः कार्याः षट्पंचाब्धित्रिपक्षकैः । प्रथमा कुंडसहितांतरोत्सेधनवांगुलेति ॥ १३७ ॥

अथैकमेखलाद्विमेखलापक्षमनुष्टुभाह ॥ एकेति ॥ यदैकमेखला तदा चतुरंगुलोत्सेधविस्तृता अथवा षडंगुलोत्सेधविस्तृता कार्या। यदा द्वे मेखले कर्तव्ये तदा तु प्रथमा चतुरंगुलोच्चा द्वितीया त्र्यंगुलोच्चा तथैव चतुर्भिस्तिसृभिरंगुलैश्च पुष्टा विस्तृता इत्यर्थः। तदुक्तं लक्षणसंग्रहे। चतुरंगुलविस्तारोत्सेधा वैकैव मेखलेति। पिंगलामते। एका षडंगुलोत्सेधविस्तारा मेखला मतेति। तंत्रांतरे। षष्ठांशेनाष्टमांशेन मेखलाद्वितयं विदुरिति ॥ १३८ ॥ अथोक्तमेखलानामुत्तमत्वादींद्रवज्रयाह ॥ ता

एका वेदां ४ गुला वापि तर्कां ६ गुलमथापि वा।
द्वे मेखले वेद ४ गुणां ३ शैस्ताः पुष्टास्तथैव ताः ॥ १३८ ॥
ताः पंच मुख्या अथ मध्यमोत्तमास्तिस्रस्तथा द्वे इह मध्यमाधमे।
एका तु चोक्ता ह्यधमाधमाधमाः कर्तुः स्थलाधिक्यत एव शक्तितः ॥ १३९ ॥

इति ॥ ता उक्तमेखलाः पंच मुख्याः श्रेष्ठाः तथा तिस्रः मध्यमा उत्तमाश्च द्वे मेखले मध्यमाधमे एका मेखला त्वधमाधमाधमाश्चेत्यर्थः। ताः सर्वा अपि स्थलस्य मंडपदेशस्य आधिक्यं प्रशस्तता यथा तथा ज्ञात्वा कार्याः। अथवा कर्तुर्यजमानस्य शक्तितः शक्त्या वा स्युरिति शेषः। उक्तं लक्षणसंग्रहे। मुख्यास्तु पंच ताः प्रोक्ता मध्यमास्तिस्र एव तु। द्वे स्यातामधमे पक्षे एका सा त्वधमाधमेति। तथा क्रियासारेऽपि। नाभियोनिसमायुक्तं कुंडं श्रेष्ठं त्रिमेखलं। कुंडं द्विमेखलं मध्यं

नीचं स्यादेकमेखलमिति ॥ १३९ ॥ अथ कुंडाना योनिं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ योनिरिति ॥ योनिः कुंडयोनिः तस्याः विस्तृतिर्विस्तारश्च दैर्घ्यं च तयोर्घातः गुणनं तदेव फलं यस्या एतादृशी स्यात्। सा सूरिभिः पंडितैर्द्वेधा द्विप्रकारा स्मृता कथिता। तत्राद्याश्वत्थपत्राकृतिर्यस्याः पुनः अन्या द्वितीया गजोष्ठाकृतिः सा द्वेधापि मेखलानां भिदा पक्षांतरभेदेन पंचधा पंचप्रकारा कथ्यते। तासां सर्वासां योनीनां करणं करणप्रकारं यथा प्राक्तनैः रुचिरं यथा साधितं तथा ब्रवीमि कथया-

योनिर्विस्तृतिदैर्घ्यघातफलका द्वेधा स्मृता सूरिभिश्चाद्याश्वत्थदलाकृतिः पुनरिहान्या स्याद्गजोष्ठाकृतिः। अत्र स्यादपि मेखलोद्भवभिदा सा पंचधा कथ्यते सर्वासां करणं ब्रवीमि रुचिरं यत्प्राक्तनैः साधितं ॥१४०॥ तत्राश्वत्थदलाकृतिर्वृतिभवा ह्यब्ध्यस्रिजा वोच्यते कुण्डार्कोक्तमतेन वृत्तकरणाद्युक्तं यथा पूर्ववत्। सा चाश्वत्थदलाकृतिः पुनरियं सा कुण्डसिद्ध्युक्तवच्चाब्ध्यस्राद्भवतीह हस्त्यधरवद्विस्तारदैर्घ्या भवेत् ॥ १४१ ॥ दीर्घा रसांशै ६ स्तु तथैव चोच्चा स्थलात्तथा वेदलवैस्तता च। एकाब्धिभागैर्यदि मेखला स्यात्तदा च योनिर्भवतीयमेव ॥ १४२ ॥

मीत्यर्थः। योनेर्दैर्घ्यविस्तारघातकरणमुक्तं विश्वकर्मणा। परस्परवधे जातं तत्र क्षेत्रफलं बुधाः (स्फुटं)। आनयेत्तत्फलं क्षेत्रे विभागं परिकल्प्य चेति। सिद्धांतशेखरे। अश्वत्थपत्रवद्योनिर्गजोष्ठप्रतिमाथवेति ॥१४०॥ स्पष्टम् ॥१४१॥ अथ चतुरंगुलमेखलापक्षे योनिमुपजात्याह ॥दीर्घेति॥ षडंशैर्दीर्घास्तथा षडंशैरेव स्थलादुच्चा तथा चतुर्भिर्भागैस्तता विस्तृता योनिः स्यात्।

यदा चतुर्भिर्भागैर्विस्तृतोच्चा एकैव मेखला स्यात्तदेयमेव योनिर्भवतीत्यर्थः। तदुक्तं कोटिहोमपद्धत्यां। षडंगुलैकमेखलापक्षेऽन्यथोक्ता तंत्रांतरे। तुर्यषष्ठद्वादशांशैर्योनिः कुंडायतेर्भवेत्। आयता विस्तृता तुंगा जिनांशेन तदग्रकमिति। कुंडस्य चतुर्थांशेन षडंगुलैर्दीर्घा षडंशेन चतुरंगुलैर्विस्तृता द्वादशांशेन द्व्यंगुलेनोच्चेत्यर्थ इति॥ अथ फलानयनं॥ तत्र फलं २४। अस्य मूलं भुजः ४।७।२ अस्य मूलं चतुर्विंशत्यंशः १।०।१।५ पंचगुणः १।०।१ अस्य रदांशः ०।०।२ अयं पंचगुणे युतः १।०।३ इदं भुजे युक्तं ५।७।५ अथ भुजार्धं २।३।५ अनेन युक्तो भुजो गुणितः १४।४।६ जातं त्र्यस्रद्वयफलम्॥ अथ क्षेत्रकर्णः ७१ अस्यार्धं वृत्तार्धव्यासः ३।४ अस्य वर्गः १२।२ एकादशगुणः १३४।६ शक्रहृतः ९।५ इदं वृत्तार्धद्वयफलं

एका षडंशैस्त्वथ मेखले द्वे ४ स्यातां(ष्टांशे) तदा सूर्य १२ लवैस्तु दीर्घा।
षड्भिर्लवैः सात्र तथा तथोच्चा स्यादष्टभागैरथवांक ९ भागैः॥ १४३॥

त्र्यस्रद्वयफले युक्तं २४।४।६ यवोनं अदोषाय स्वल्पांतरत्वात् पक्षांतरे २३।७॥ १४२॥ अथ षडंगुलैकमेखलापक्षे अष्टांशैर्द्विमेखलापक्षे च योनिमिंद्रवज्रयाह॥ एकेति॥ एकैव मेखला षडंशैरथवा द्वे मेखले यदा स्याता तदा योनिः द्वादशांशैर्दीर्घा षडंशैर्विस्तृता तथाष्टभागैरष्टांगुलैरथवा नवभागैरुच्चा। अत्र षडंगुलैकमेखलापक्षेऽष्टांशैर्द्विमेखलापक्षे तु नवभिरंशैरुच्चेति ज्ञेयं। गर्गः। योनिं षडंगुलां तिर्यक् द्वादशांगुलदैर्घ्यकां। अश्वत्थदलसंकाशां किंचिदुन्नमितांगुलामिति। वृद्धवसिष्ठः। योनिश्च पश्चिमे भागे प्राङ्मुखी मध्यसंस्थिता। षडंगुलैश्च विस्तीर्णा चायता द्वादशांगुलैरिति॥

अथ फलानयनं ॥ तत्र क्षेत्रफलं ९६ अस्य मूलं भुजः ९।६ अस्य चतुर्विंशत्यंशः ०।३।२ पंचगुणः २।०।२ । अस्य रदांशः ०।०।४ पंचगुणः चतुर्विंशांशे युतः २।०।६ अयं भुजे युक्तो जातः त्र्यस्रद्वयलंबः ११।६।६ । अथ भुजार्धं ४।७ अनेन लंबो गुणितः ५८।१।२ जातं त्र्यस्रद्वयफलं । अथ क्षेत्रकर्णः १४ अर्धं वृत्तव्यासः ७ वर्गः ४९ एकादशगुणः ५३९ शक्रहृतः जातं वृत्तार्धद्वयफलं ३८।४ त्र्यस्रद्वयफले युक्तं ९६।५।२ । स्वल्पांतरत्वाददोषः ॥ १४३ ॥ अथ नवांगुलैर्मेखलात्रयपक्षे योनिमिंद्रवज्रयाह ॥ तिस्र इति ॥ यदा नवांशैस्तिस्रो मेखलास्तदा सूर्यैर्द्वादशभागैर्दैर्घ्यमेव तथाष्टभिर्लंवैरत्र विस्तृता तथा सूर्यैर्लंवैरुच्चा योनिरुदीरिता कथितेत्यर्थः । तदुक्तं प्रयोगसारे । त्रिभागं मध्यतो योनिमायामे द्वांदशागुलां । द्वांदशांशोच्छ्रितां कुर्यात्किंचित्कुंडनिवेशिनीमिति ॥

तिस्रो नवांशैर्यदि मेखलास्ताः सूर्यैं १२ स्तदा स्यात्खलु दैर्घ्यमेव ।
स्यादष्टभागैरिह विस्तृतोच्चा सूर्यैं १२ र्लंवैर्योनिरुदीरिता च ॥ १४४ ॥

अथ फलानयनं ॥ तत्र क्षेत्रफलम् १५० अस्य मूलं भुजः १२।२।१।२ चतुर्विंशत्यंशः ०।३।६।५ पंचगुणः २।३।१।१ अस्य रदांशः ०।०।५ पंचगुणे युक्तः २।३।६।१ अयं भुजे युक्तः १४।६ जातोयं त्र्यस्रद्वयलंबः । अथभुजार्धमेव भूम्यर्धं ६।१।०।५ लंबेन गुणितं ९०।४ जातं त्र्यस्रद्वयफलं । अथ क्षेत्रकर्णः १७।२।६ अस्यार्धं ८।५।३ वर्गः ७५।१।५ एकादशगुणः ८२७२ । शक्रहृतः ५९।०।६ जातं वृत्तफलं त्र्यस्रद्वयफले युक्तं १४९।४।६ त्रियवोनं । स्वल्पांतरत्वाददोषः ॥ १४४ ॥

अथ द्वादशांगुलमेखलापक्षे योनिमिंद्रवज्रयाह ॥ तिस्र इति ॥ यदा तिस्रः सूर्यलवैर्मेखलाः स्युस्तदा तत्र तिथिभागैः पंचदशभागैर्दीर्घा तथा दशभिर्भागैस्तता विस्तृता चतुर्दशभागैरुच्चा योनिर्बुधैः पंडितैः कथितेत्यर्थः । तदुक्तं प्रयोगसारे । स्थितां प्रतीच्यामायामे सम्यक्पंचदशांगुलां । द्विपंचांगुलविस्तारां षट्चतुर्थ्यंगुलां क्रमात् । उक्ताश्वत्थदलाकारां निम्नां कुंडे निवेशितां । त्रयोदशांगुलोत्सेधां योनिं कुंडस्य कारयेदिति ॥ अथ फलानयनं ॥ तत्र क्षेत्रफलं २८० अस्य मूलं भुजः १६।५।५ अस्य चतुर्विंशत्यंशः ०।५।५ पंचगुणः ३।४।१ अस्य रदांशः ०।०।७ पंचगुणे युक्तं ३।५ इदं भुजे युक्तं २०।२।५

तिस्रो यदा सूर्य १२ लवैस्तताः स्युस्तत्रैव योनिस्तिथि १५ भागदीर्घा । दिग्भि १०
र्लवैरत्र तता तथोच्चा स्याच्छक्र १४ भागैः कथिता बुधैः सा ॥ १४५ ॥ स्वपक्षतिलवैर्दीर्घा
शक्र १४ भागैस्तता मता। उच्चा रुद्र ११ लवैर्योनिर्यत्र स्युः पंच मेखलाः ॥१४६॥

जातोयं लंबः । अथ भुजार्धं ८।२।६।४ लंबेन निघ्नं १६९।६।१।२ जातं त्र्यस्रद्वयफलं। अथ द्विघ्नक्षेत्रफलं मूलं क्षेत्रकर्णः २३।५।२।५ अर्धं ११।६।५।२ वर्गः १४० एकादशगुणः १५४० शक्रहृतः ११० जातं वृत्तार्धद्वयफलं त्र्यस्रद्वयफले युक्तं २७९।६।१।२ जातं सर्वं फलं यवद्वयोनमदोषाय स्वल्पांतरत्वात् ॥ १४५ ॥ अथ पंचमेखलापक्षे योनिमनुष्टुभाह । यदा पंचमेखलास्तदा योनिर्विंशतिलवैर्दीर्घा चतुर्दशभिर्विस्तृता एकादशलवैरुच्चेत्यर्थः । तथाच पद्धत्यां । पंचमेखलापक्षे तद्विस्तारसमदैर्घ्या योनिः कार्येति सिध्यतीत्युक्तं ॥ १४६ ॥

तासां फलानि क्रमशो जिना २४ श्च द्वासप्ततिः ७२ षण्णवतिः ९६ ख-
तिथ्यः १५०। अभ्राष्टयुग्मा २८० न्यथ बोधिपत्राकारा यदा कर्तुरिहाप्यभीष्टा
॥१४७॥ तदा यम २ घ्नाच्च फलात्तु मूलं व्यासो भवेत्तेन तु कुंडवत्सा । अथो
यदान्या तु शराभ्ररामै ३०५ र्निघ्नाच्च दस्रांकशशी १९२ विभक्तात् ॥ १४८ ॥

अथ तासां फलानींद्रवज्रयाह ॥ तासामिति ॥ तासामुक्तयोनीनां क्रमशः फलानि यथा प्रथमायाश्चतुर्विंशतिः २४ द्वितीयायाः ७२ द्वासप्ततिः तृतीयायाः षण्णवतिः ९६ चतुर्थ्याः खतिथ्यः १५० सार्धशतं पंचम्याः अशीत्युत्तरशतद्वयं २८० फलानि स्युः। यदा कर्तुः बोधिपत्राकारा इष्टेत्याद्युत्तरेणान्वयः ॥ १४७ ॥ अथ योनिव्यासानयनमुपजात्याह ॥ तदेति ॥ तदा द्विनिघ्नात्फलाद्यन्मूलं तदेव व्यासस्तेन योनिकुंडवत्सा स्यादित्यर्थः। अथो यदोक्तान्ययोनिकुंडवदिष्टा तदा पंचोत्तरशतत्रयेण गुणिताद्विनवत्युत्तरशतेन भक्तात्फलान्मूलं व्यास इत्यादिपूर्वोक्तवत्स्यादित्यर्थः। यथोदाहरणं। तत्रादौ सिद्धे चतुरस्र इत्युक्तरीत्या योनिकरणे नवांशैस्त्रिमेखलपक्षे फलं ९६ द्विगुणं १९२ अस्य मूलं १३।७ इदं चतुरस्रवृत्तव्यासः अस्य चतुरस्रज्या त्रिबाणेत्यादिना ९।६।२ एतन्मितचतुर्भुजैर्यच्चतुरस्रं तस्मिन्पूर्वोक्तयोनिकुंडवत्करणेन योनिर्भवतीत्यर्थः। अथ प्रकारांतरेणोक्तरीत्या योनिकरणे नवांशैस्त्रिमेखलपक्षे फलं ९६ पंचोत्तरत्रिशतेन गुणितं २९२८० द्विनवत्युत्तरशतेन

भक्तं १५३ अस्य मूलं १२।३।१ इदमेवान्ययोनेर्व्यासः अनेन कुंडोक्तवत्करणे योनिः स्यादित्यर्थः ॥ १४८ ॥ अथ योनिसामान्यलक्षणं स्रग्धरयाह ॥ मूलेति ॥ तस्याः योनेर्मूलेऽधोभागे यत्स्थौल्यं स्थूलता तस्मादुपरि भुवि स्वल्पसंकोचेन युक्ता मध्ये उच्चा अथवा मध्ये सगर्ता सा योनिः भगे योनिकुंडे नच भवति। तथा कुंडानां कोणेऽपि सा नो न स्यादित्यर्थः। तस्या योनेः एका मेखला लवेनैकांशेन विस्तृता एकांशेनैवोच्चा रम्या कार्या । अथ योनेः पश्चात्सछिद्रं नालं कार्यं। सा योनिर्मेखलोपरि भवति सबिलवती मध्यमेखलोपरि परिधिस्पृष्टदेशे परिधिपरिस्तरणनिवेशार्थं छिद्रं तेन सहिता।

मूलस्थौल्याच्च तस्यास्तदुपरि भुवि च स्वल्पसंकोचयुक्ता मध्योच्चा वासगर्ता न
च भवति भगे कुंडकोणेऽपि नो सा। रम्या तन्मेखलैका लव १ मितविततोच्चाथ
नालं तु पश्चात्सच्छिद्रं मेखलोपर्यपि सबिलवती चांशतोऽग्रे विशंती ॥ १४९ ॥

वचने परिध्युपलक्षणेन परिस्तरणस्यापि ग्रहणं। दृश्यतेच याज्ञिकानामपि तथैव संप्रदाय इति। लवेनैकांशेनाग्रे यत्कुंडं तस्मिन्विशंती प्रवेशं कुर्वती विरचयेदित्यर्थः। अत्रैकांगुलवर्धनमुक्तं तत्कंठतः खातमध्य एवान्यथा द्व्यंगुलकंठपक्षे त्र्यंगुलयोन्यग्रवर्धनस्यासंभवाद्वक्ष्यमाणवचनविरोधाच्च। तदुक्तं मात्स्ये। वितस्तिमात्रा योनिः स्यात्षट्सप्तांगुलविस्तृता। कूर्मपृष्ठोन्नता मध्ये पार्श्वयोश्चांगुलोच्छ्रिता। गजोष्ठसदृशी तद्वदायता छिद्रसंयुता । एतत्सर्वेषु कुंडेषु योनिलक्षणमुच्यते। मेखलोपरि सर्वत्र अश्वत्थदलसन्निभेति। स्वायंभुवेऽपि। मेखलामध्यतो योनिः कुंडार्धा त्र्यंशविस्तृता। अंगुष्ठमानोष्ठकंठा

कार्याश्वत्थदलाकृतिरिति । अंगुष्ठमानमोष्ठोऽग्रं कंठो मेखला यस्या इति कुंडकल्पलता । शारदातिलके । नार्पयेत्कुंडकोणेषु योनिं तां तंत्रवित्तम इति । तथा । योनिकुंडे तथा योनिं पद्मे नाभिं च वर्जयेदिति । प्रयोगसारे । योन्याः पश्चिमतो नालमायामे चतुरंगुलं । द्वित्र्येकांगुलविस्तारं क्रमाद्व्यूनाग्रमिष्यत इति । सोमशंभुरपि । तासामुपरि योनिः स्यान्मध्येश्वत्थदलाकृतिरिति । शारदातिलके । एकांगुलं तु योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखमिति । जिनांशेन तदग्रकमिति तंत्रांतरे। सिद्धांतशेखरे तु स्यादोष्ठः कंठेन संमित इति। अत्र कल्पलता । कंठेन संमितः कंठसमो नाधिक इत्यर्थः । किंचित्कुंडनिवेशितामित्यनेन एकांगुलकंठपक्षे यवेन यवाभ्यां वाधिक्यं कल्प्यमित्यनेन वर्धने विकल्प इति। त्रैलोक्यसारेऽपि ।एकांगु-

इंद्रपावकार्कभूदिग्गता स्यादुदङ्मुखीप्राङ्मुखीतरा ।
सा गुरोरथो कुंडके स्मृता दक्षिणेथवा पश्चिमेथवा ॥ १५० ॥

लोच्छ्रिता सा तु प्रविष्टाभ्यंतरे तथेति । पंचरात्रे । स्थलादारभ्य नालं स्याद्बाह्यमेखलया सममिति । शारदातिलके । स्थलादारभ्य नालं स्याद्योन्या रंध्रे सरंध्रकमिति । आगमकल्पलतायां यामले । नालमेखलयोर्मध्ये परिधिस्थापनाय च । रंध्रं कुर्यात्तथा विद्वान्द्वितीयमेखलोपरीति ॥ १४९ ॥ अथ दिग्विशेषकुंडेषु योनिस्थानानि लोचनाख्यवृत्तेनाह ॥ इंद्रेति ॥ इंद्रवह्नियमानां दिक्षु चतुरस्रयोन्यर्धचंद्राकारकुंडेषु सा योनिरुदङ्मुखी कार्या इतरा त्र्यस्रवृत्तषडस्रपद्माष्टास्रेषु तु प्राङ्मुखी कार्येत्यर्थः । अत्राग्नेयकुंडे योनिविधानं सर्वचतुरस्रवृत्ताद्यभिप्रायेण । गुरोराचार्यकुंडे सा योनिर्दक्षिणे अथवा पश्चिमे

कार्येत्यर्थः । अत्र पंचकुंडीपक्षे दक्षिणे योनिराचार्यकुंडस्य अन्यत्र पश्चिमे इति ज्ञेयं । सोमशंभौ । पूर्वाग्नियाम्यकुंडानां योनिः स्यादुत्तरानना । पूर्वानना तु शेषाणामीशान्येन्यतरा मतेति । सिद्धांतशेखरे । इंद्राग्नियाम्यकुंडेषु योनिः सौम्यमुखी स्मृता । योनिः पूर्वाननान्येषु पूर्वेशानैतरा स्मृतेति । त्रैलोक्यसारेपि । नवमस्यापि कुंडस्य योनिर्दक्षिणतः स्थितेति ॥ १५० ॥ अथ गजोष्ठसदृशीयोनिकरणं कामदयाह ॥ अथेति ॥ योनेर्दीर्घताज्ञापकं यत्सूत्रं तदेव लंबको लंबो येन प्रकारेण भवति तथा येन प्रकारेण योनेर्विस्तृतिर्भूमिका भवति तथा गुणास्त्रकं त्र्यस्रं कुरु । ततो विस्तृतेर्दलेन वृत्तार्धद्वये

अथच दीर्घतासूत्रलंबको भवति विस्तृतिर्येन भूमिका । कुरु गुणास्त्रकं
विस्तृतेर्दलाद्वृतिदलद्वये स्याद्गजाधरी ॥ १५१ ॥ कोटिलक्षायुते होमे
द्विसार्धकरसंमिता । वर्जयित्वा रुद्रहोममीशान्यां ग्रहवेदिका ॥ १५२ ॥

कृते सति गजाधरी गजोष्ठसदृशी योनिर्भवतीत्यर्थः । उक्तंच पद्धतौ । अत्र योनेर्गजोष्ठसदृशत्वं पश्चिमतो विस्तारचतुर्थांशेन वृत्तद्वयकरणादवगंतव्यमिति । तेन गजोष्ठसदृश्या योनेः फलस्यावश्यकत्वं नास्तीति ध्वन्यते ॥ १५१ ॥ अथांगभूता ग्रहवेदीमनुष्टुब्वसंततिलकाभ्यामाह ॥ कोटीति ॥ कोटिहोमे द्विहस्ता लक्षहोमे सार्धहस्तायुतहोमे करसंमितेत्यर्थः । अन्यत्रायुतादिग्रहहोमातिरिक्ते एकहस्तैव । महारुद्रहोमं वर्जयित्वा हित्वा सा ग्रहवेदीशान्यां स्यादित्यर्थः । रुद्रपद्धतौ तत्र रुद्रवेद्युक्तत्वात् । तदुक्तं ग्रहपीठमालायां मात्स्ये । गर्तस्योत्तरपूर्वेण वितस्तिद्वयविस्तृतां । वप्रद्वयावृतां वेदिं वितस्त्युच्छ्राय-

संमितां । संस्थापनाय देवानां चतुरस्रामुदक्प्लवां । लक्षहोमग्रहमखे वितस्तित्रयसंमितां । कोटिहोमग्रहमखे तां वितस्तिचतुष्टयामिति ॥ १५२ ॥ कर इति । करः एकहस्त अर्धदोर्वा अर्धहस्तो वा वेदेरुच्छ्रय उच्चता । सा वेदिरेकहस्ता तता च विस्तृता च कार्या । तस्याः परितः द्व्यंगुलत्र्यंगुलोच्चौ द्वौ वप्रौ चयौ कार्यौ । यदि तृतीयोपि कर्तव्यस्तदा द्वितीयतुल्यः कार्यः । ते त्रयोपि द्व्यंगुलाभ्यां विस्तृताः कार्या इत्यर्थः । उक्तंच ग्रहपीठमालायां मात्स्ये । वप्रद्वयावृतां वेदिं वितस्त्युच्छ्रायसंमितामिति । तथा तत्रैव । द्व्यंगुलेनोच्छ्रितो वप्रः प्रथमः समुदाहृतः । त्र्यंगुलोच्छ्रायसंयुक्तं वप्रद्वयमथोपरि । द्व्यंगुलश्चैव विस्तारः

करोऽर्धदोर्वोच्छ्रय एकहस्ता तता च तस्याश्वि २ गुणां ३ गुलोच्चौ । वप्रौ तृतीयो यदि
चेद्द्वितीयतुल्यस्ततास्ते च यमांगुलाभ्यां ॥ १५३ ॥ एवं वेद्यश्चापि तिस्रः प्रकुर्याच्छोचिष्केशः
क्रव्यभुग्वायुदिक्षु । स्थाप्यान्खेटान्मातृकाश्चापि वास्तून्क्षेत्रेशं च स्थापयेत्तासु यागे ॥ १५४ ॥

सर्वेषां कथ्यते बुधैरिति ॥ १५३ ॥ एवमाग्नेयादिविदिक्षु वेदीकरणं शालिन्याह ॥ एवमिति ॥ एवमुक्तप्रकारेण तिस्रो वेद्यः अग्निनिर्ऋतिवायूनां दिक्षु प्रकुर्यादित्यर्थः । तासु कृतचतुर्वेदीषु स्थाप्यान् स्थापनयोग्यांस्तल्लक्षणलक्षितान्क्रमेण यागे प्रतिष्ठादौ खेटान्ग्रहान् षोडश सप्त वा मातृकाः वास्तून् शिख्यादिवास्तुदेवताः क्षेत्रेशं क्षेत्रपालं च स्थापयेत् । तदुक्तं मात्स्ये । मंडपैशानभागे तु ग्रहवेदी करोन्मितेति । मंथानभैरवतंत्रे । शेषवेद्यां ततः ख्यातं हस्तमेकं तु विस्तरे । उच्छ्रायोर्कांगुलः प्रोक्तः स्नानवेदी द्विहस्तका । आग्नेय्यां मातृकावेदी वास्तुवेदी च नैर्ऋते । क्षेत्रपालस्य वायव्यामीशान्यां च नवग्रहा इति ॥ १५४ ॥

द्विगुणादौ कर्तव्ये द्व्यादिघ्नव्यासवर्गमूलं यत् । इष्टो व्यासः स्यादिति जयति श्रीमद्गुरोरुक्तिः
॥ १५५ ॥ सपादे स्तृतेरब्धिवज्र्यं १४४ शकस्तु विनिघ्नो धरातर्कचंद्रै १६१ स्तृतिः स्यात् ।
खवेदांशक ४० स्तान ४९ निघ्नोऽपि सार्धे रसांकां ९६ शकः सप्तसूर्यै १२७ र्विंनिघ्नः ॥ १५६ ॥

अथायुतहोमादौ द्विहस्तादिकुंडं पूर्वमुक्तमतस्तत्तद्व्यासानयनमार्ययाह ॥ द्विगुणादाविति ॥ कुंडव्यासे द्वित्रिगुणादिकर्तव्ये द्व्यादिभिर्निंघ्नो गुणितो यो व्यासवर्गस्तस्य मूलं यद्भवति तदेवेष्टव्यासः स्यादित्यर्थः । तथाहि । द्विहस्तकुंडव्यासे कर्तव्ये एकहस्तकुंडवृत्तव्यासवर्गः द्विगुणः कार्यस्तन्मूलं द्विहस्तकुंडवृत्तव्यासः स्याद्भवति । एवं त्रिहस्ते त्रिगुणश्चतुर्हस्ते चतुर्गुण इत्यादिः । इत्येवंप्रकारेण श्रीमद्गुरोस्तातचरणानामुक्तिः कुंडार्कपद्मिन्यां सर्वोत्कर्षेण वर्तते । अत्रोदाहरणं । यथैकहस्ते चतुरस्रवृत्तव्यासः ३३।७५ अस्य वर्गः ११५२ अयं द्विगुणः २३०४ अस्य मूलं ४८ अयं द्विहस्तचतुरस्रवृत्तव्यासः । अस्यार्धेन वृत्तं कृत्वा तस्मिन्पूर्वोक्तचतुरस्रवत्सर्वं कृते दशसहस्रहवनोपयोगिद्विहस्तचतुरस्रमुत्पद्यत इति दिक् ॥ १५५ ॥ अथ व्यासस्य सपादसार्धसत्रिपादद्विगुणादिकरणं भुजंगप्रयाताभ्यामाह ॥ सपादेति ॥ व्यासे स्वपादेन सहिते कर्तव्ये स्तृतेरेकहस्तव्यासस्य चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतांशः एकषष्ठ्युत्तरशतेन निघ्नः सन् स्वचतुर्थांशेन सहितो व्यासः स्यादित्यर्थः । तथा सार्धे कर्तव्ये स्तृतेश्चत्वारिंशदंशः एकोनपंचाशतानिघ्नो व्यासः स्यात् । तथा सत्रिपादे कर्तव्ये स्तृतेः षण्णवत्यंशः सप्तविंशत्युत्तरशतेन निघ्नो व्यासः स्यात् । तथा द्विगुणे कर्तव्ये स्तृतेर्द्वादशांशः सप्तदशभिर्निंघ्नो व्यासः स्यादित्यर्थः । तथा

ज्यकाः भुजा अपि अनया व्यासानयनरीत्या क्रमेण स्युरित्यर्थः । अयं प्रकारः श्रीगुरोस्तातचरणप्रसादान्मया उक्तः कल्पित इत्यर्थः । तथा चोदाहरणं व्यासः ३३।७।५ अस्य चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमो भागः ०।१।७।०।६ अयमेकषष्ठ्युत्तरशतेन निघ्नः ३७।७।६ अयमेव सपादव्यासः।तथा सार्धे व्यासखवेदांशः ०।६।६।२ अयमेकोनपंचाशता निघ्नः ४१।४।२।२ तथा सत्रिपादे व्यासषण्णवत्यंशः ०।२।६।५ अयं सप्तविंशत्युत्तरशतेन निघ्नः ४४।७।१ तथा द्विघ्ने व्यासद्वादशांशः २।६।५ अयं सप्तदशनिघ्नः ४८।०।५ अत्र पंचयूकाधिक्यं तददोषाय यवोनत्वात् । अथ भुजार्थे किंचिदुदाहरणं तत्रैकह-

भवेत्सत्रिपादे द्विनिघ्ने त्विनांशो १२ विनिघ्नः स वै सप्तभू १७ भिः स्तृतिः स्यात् ।
तथा स्युर्ज्यकाव्यासरीत्या क्रमेण प्रकारोऽयमुक्तो गुरोर्हि प्रसादात् ॥ १५७ ॥

स्तचतुरस्रभुजः २४ अस्य चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमोंशः ०।१।२।५।२ एकषष्ठ्युत्तरशतेन निघ्नः २६।६।३।५।२ जातोयं सपादहस्तकुंडभुजः । अथ सार्धे भुजचत्वारिंशदंशः ०।४।६।३।२ताननिघ्नः २९।३।२ जातोयं सार्धहस्तकुंडभुजः । अथ सत्रिपादे भुजरसांकांशः ०।२ सप्तसूर्यैर्निघ्नः ३१।६ जातोयं सत्रिपादहस्तकुंडभुजः । अथ द्विनिघ्ने भुजद्वादशांशः २ अयं सप्तदशगुणितो जातो द्विहस्तभुजः ३४ अत्र यूकात्रयमधिकं तददोषाय । तथास्य द्वादशांशः २।६।५ सप्तदशनिघ्नः ४८।०।५ अयं चतुर्हस्तकुंडभुज एवं योन्यादिषु ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

अथैवं कुंडं निर्माय ताम्रादिना निर्बध्येत्यादि पंचचामरेणाह ॥ विधायेति ॥ उक्तवदुत्तमं कुंडं विधाय ताम्रपत्रैर्विबध्य तत्कुंडं आम्लजीवनेनाम्लजलेन समुज्वलं कुरु ताम्रपत्राभावतः मृदिष्टिकाभिः विबध्य गोशकृज्जलैः समुज्वलं कुरु सुधामयं चेत्सुधा चुनाइति ख्यातस्तज्जलैः समुज्वलं कुरु । अशक्तितः शक्त्यभावेन यदा तत्कुंडं न कृतं तदा सुचत्वरं स्थंडिलं कुर्वित्यर्थः । उक्तंच पद्धतौ–सर्वं कुंडं ताम्रादिना कार्यं । ताम्रेण लक्षणोपेतं कुर्यान्मृत्तिकयापि वा । तदभावे त्विष्टिकाभिः संबध्य सुदृढं तथेति क्रियासारात् । ताम्रादिकुंडानां शुद्धिरपि त-

विधाय कुंडमुत्तमं विबध्य ताम्रपत्रकैः समुज्वलं तदाम्लजीवनेन कुर्वभावतः । मृदि-
ष्टिकाभिरत्र गोशकृज्जलैः सुधामयं सुधाजलैरशक्तितो यदा न तत्सुचत्वरं ॥ १५८ ॥
शुद्धमृत्तिकारजोभिरेव वा समेखलं स्थंडिलं सयोनिकं तु कुंडसंमितं कुरु ।
प्राक्प्लवं तु सागरास्त्रमंगुलोच्चमत्र वा योनिमेखलावियुक्तसागरांगुलोच्चकं ॥ १५९ ॥

त्रैव । आम्लेन ताम्रजं कुंडं मृन्मयं गोमयांभसा । सौधं च सुधया सम्यक् शोधयेदमरर्षभेति । सौधमितीष्टकासंधिषु सुधादानेन कृतमिति पद्धतिः । समे स्थंडिलचत्वर इत्यमरः ॥ १५८ ॥ अथ पूर्वोक्तस्थंडिलं सलक्षणं रूपकेनाह ॥शुद्धेति॥ शुद्धदेशोद्भवा या मृत्तिका तस्या रजोभिः पांसुभिः समेखलं मेखलासहितं योनिसहितं च करेण सम्मितं हस्तमात्रं प्राक्प्लवं चतुष्कोणमंगुलोच्चं चतुरंगुलोच्चं वा स्थंडिलं वा कुरु । अथवा योनिमेखलाभ्यां वियुक्तं रहितं चतुरंगुलोच्चं

कुर्वित्यर्थः । अत्र प्रथमवाकारः कुंडस्थंडिलयोर्विकल्पार्थकः । स्थंडिलेऽपि मेखलादिराहित्यसाहित्यविकल्पार्थं द्वितीयः । पद्धतौ हस्तमात्रेणेत्युपलक्षणं होमबहुत्वे स्थंडिलं महत्कार्यं । अर्थात्परिमाणमिति कात्यायनवचनादिति । कल्पलताया अप्येवमेवाशयः । स्थंडिले मेखला उक्ताः सूतसंहितायां । स्थंडिले मेखलाः कार्या कुंडोक्तस्थंडिलाकृति । योनिस्तत्र प्रकर्तव्या कुंडवत्तंत्रवेदिभिरिति । तंत्रांतरेपि । समेखलं स्थंडिलं तु प्रशस्तं होमकर्मणि । कंठं तु वर्जयेत्तत्र खाते कंठः प्रकीर्तित इति । अन्यत्रापि । स्थंडिले मेखलादीनां प्राप्तिरस्त्येव शास्त्रतः । अग्न्यायतनधर्मा हि यतस्ते मेखलादय इति । ननु अग्न्यायतनधर्मत्वेनैव सर्वत्रापि प्राप्तौ पुनर्वचनारंभो व्यर्थ इतिचेन्न । वचने स्थंडिल इति विशेषोपादानात् आयतनांतरनिवृत्तिः । बौधायनोपि । कुंडवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परं । बौधायनमते प्रोक्तं स्थंडिलं चतुरस्रकमिति । व्यतिरेकमुखेनास्यावश्यकता तत्रैवोक्ता । मेखलारहिते होमः सर्वकर्मसु गर्हितः । हविराधारतस्तासां मेखलानां प्रयोजनमिति । नचात्रवाक्ये स्थंडिलशब्दाश्रवणात्कुंडविषयमेवास्येति वाच्यं । तत्र मेखलारहिते शोक इति वाक्येन दोषांतरप्रतीतेरित्यंतमुक्तं। पद्धतौ तु अत्र कश्चित्कुंडवत्स्थंडिलेपि मेखलायोन्यादि कार्यमित्याह तदज्ञानविजृंभितमित्यारभ्य तस्मात्स्थंडिले मेखलादयो न भवंतीति सिद्धं । एतेन स्थंडिले योन्याकारत्वमपि परास्तं । चतुरस्रत्वस्य विशेषश्रुतत्वादित्यलमतिक्षोदेनेत्यंतं सविस्तृतमुक्तं विस्तरभयादत्र न लिखितं । वायवीयसंहितायां । अथाग्निकार्यं वक्ष्यामि कुंडे वा स्थंडिलेपि वेति । क्रियासारे । कुंडमेवंविधं न स्यात्स्थंडिलं च समाश्रयेदिति । सूतसंहितायां । मध्यवेद्याश्चतुर्दिक्षु कुर्यात्कुंडचतुष्टयं । कुंडाभावे स्थंडिलेषु होमः कार्यो यथाविधिरिति । इत्यादिवचनचयैः कुंडस्थंडिलयोर्विकल्पवत्तदंगानामपि तथात्वाद्वि-

कल्पो युक्तः । क्रियासारे । होमेष्टदिक्षु प्राक्प्रहः प्रागुदक्प्रवणेथ वा । उदक्प्रहः प्रदेशो वा स्थंडिलस्य स्थलं स्मृतमिति । शारदायां । हस्तमात्रेण तत्कुर्याद्वालुकाभिः सुशोभनं । अंगुलोत्सेधसंयुक्तं चतुरस्रं समंतत इति । पदार्थादर्शे । चतुःकोणमब्ध्यंगुलोत्सेधमेक इति । कुंडसिद्धिटीकायामपि तंत्रांतरे । मृदा सुवर्णया वापि सूक्ष्मवालुकयापि वा । अंगुलोच्चं तथा वेदांगुलोच्चं स्थंडिलं विदुरिति ॥ १५९ ॥ अथोक्तमुपसंहरन्नुक्तमंडपादौ न्यूनाधिककरणे दोषमनुष्टुभाह ॥ अथेति ॥ मंडपादीनामादिपदेन कुंडवेदिध्वजपताकादीनां संग्रहः । यथायथोक्तं तत्तथैव कार्यमन्यथा करणे न्यूनाधिकत्वे सति बहवो दोषाः स्युर्भवंतीत्यर्थः । शिवमितिपदं समाप्तिद्योतकं । जयद्रथयामले । सूत्राधिके सुहृद्द्वेषो मानहीने दरिद्रता । वाग्रोधः कंठहीने स्यादसिद्धिर्न्यूनखातके । अधिके चासुरो भोगो मानेनाधिकमेखले । व्याधयः संप्रवर्तंते वीतोष्ठे स्यादपस्मृतिः ।

**अथात्र मंडपादीनां यद्यदुक्तं तु तत्तथा । कार्यं न्यूनाधिकत्वे तु दोषाः स्युर्बहवः शिवं ॥ १६० ॥**

उच्चाटः स्फुटिते छिद्रे संकुले वाच्यता भवेदिति । विश्वकर्मापि । खातेधिके भवेद्रोगी हीने धेनुधनक्षयः । वक्रकुंडे च संतापो मरणं छिन्नमेखले । मेखलारहिते शोकोभ्यधिके वित्तसंक्षयः । भार्याविनाशनं प्रोक्तं कुंडं यत्कंठवर्जितमिति । क्रियासारेपि । न्यूनाधिकप्रमाणं यत्कुंडं कर्करमेखलं । शृंगाररहितं यच्च यजमानविनाशकृदिति । आगमांतरेपि । मानाधिके भवेन्मृत्युर्मानहीने दरिद्रतेत्यादि । सिद्धांतशेखरेपि । मानहीने महाव्याधिरधिके शत्रुवर्धनं । योनिहीने त्वपस्मारो वाग्दंडः कंठवर्जित इति । वसिष्ठसंहितायामपि । अनेकदोषदं कुंडमत्र न्यूनाधिकं यदि । तस्मात्सम्यक्परीक्ष्यैव कर्तव्यं शुभमिच्छतेति सर्वं शिवं ॥ १६० ॥

अयं ग्रंथो मुंबय्यां **पाण्डुरङ्ग जावजी** इत्येतैः स्वीये निर्णयसागरमुद्रालये रामचंद्र येसु शेडगेद्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।
शकः १८४१ सन १९१९.
द्वितीयावृत्तिः ।

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the "Nirnaya-sagar" Press, No. 23, Kolbhat Lane, Bombay.
Published by Pandurang Jawaji Proprietor N. S. Press, No. 23, Kolbhat Lane, Bombay.

( *Registered according to act XXV of 1867.* )
( All rights reserved by the Publisher. )

॥ इति कुंडरत्नावली समाप्ता ॥

3082 3082

# ॥ अथ मन्त्रमहोदधिः सटीकः प्रारभ्यते ॥

इस ग्रंथका सब प्रकारका रजिस्टरी हक् "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खाहै.

## अग्निपूजनयन्त्रम् ॥ १ ॥ त. १ प. ८ श्लो. ११३

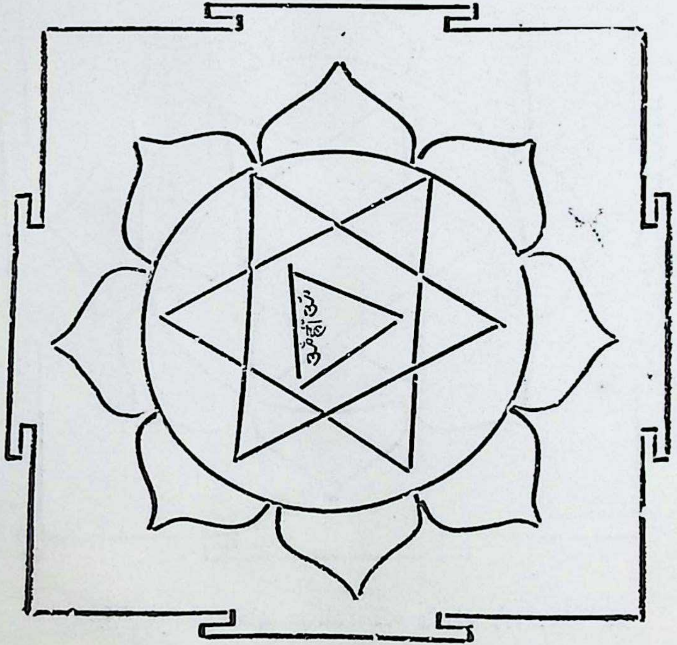

गणपतिपूजनयन्त्रम् ॥१॥ त० २ प० १५ श्लो० १९

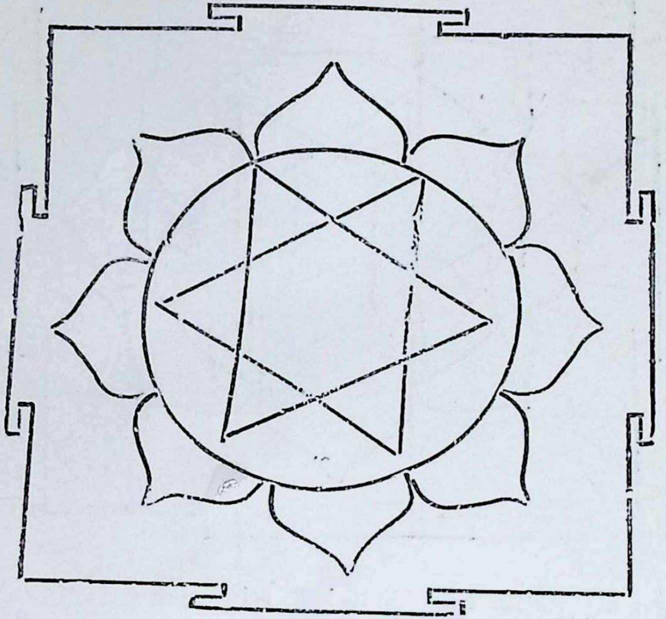

कालीपूजनयन्त्रम् ॥३॥ त. ३ प. २४ श्लो० ११

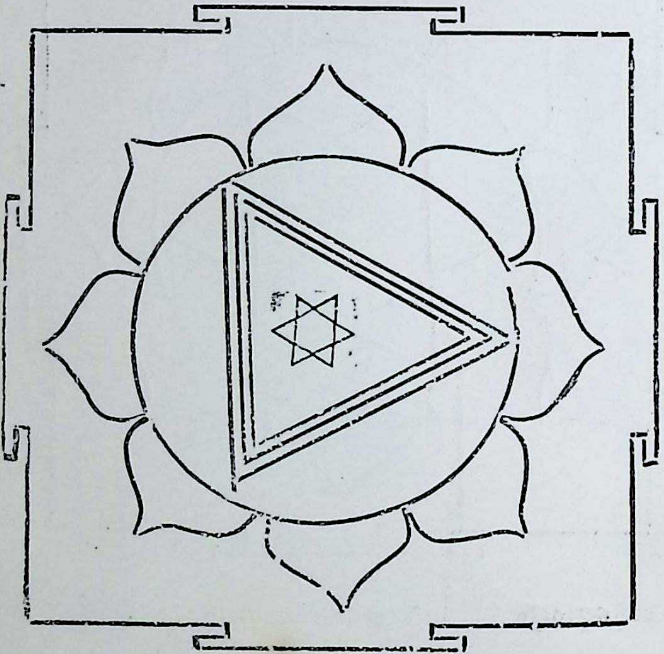

सुमुखीपूजनयन्त्रम् ॥४॥ त० ३ प० २७ श्लोक: ५६

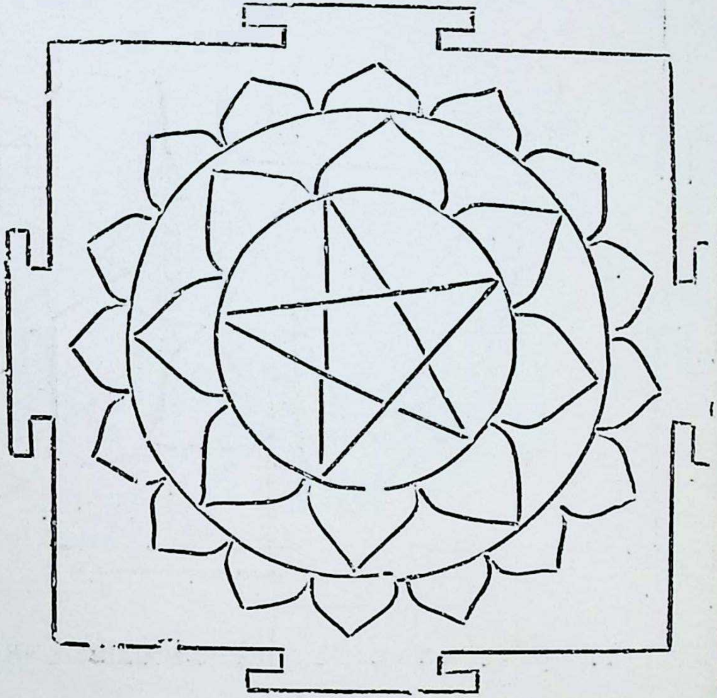

तारापूजनयन्त्रम् ॥५॥ त. ४ प. ३५ श्लो० ८७

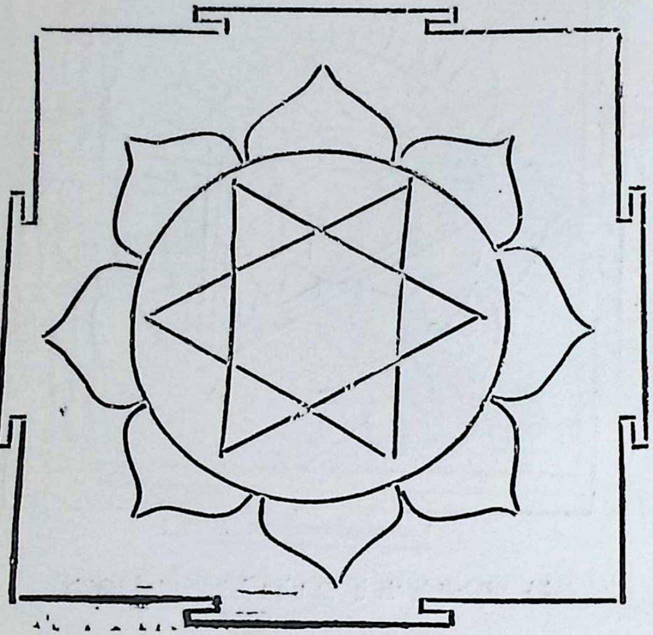

ताराधारणयन्त्रम् ॥ ६ ॥ त० ४ प. ३७ श्लो० ११८

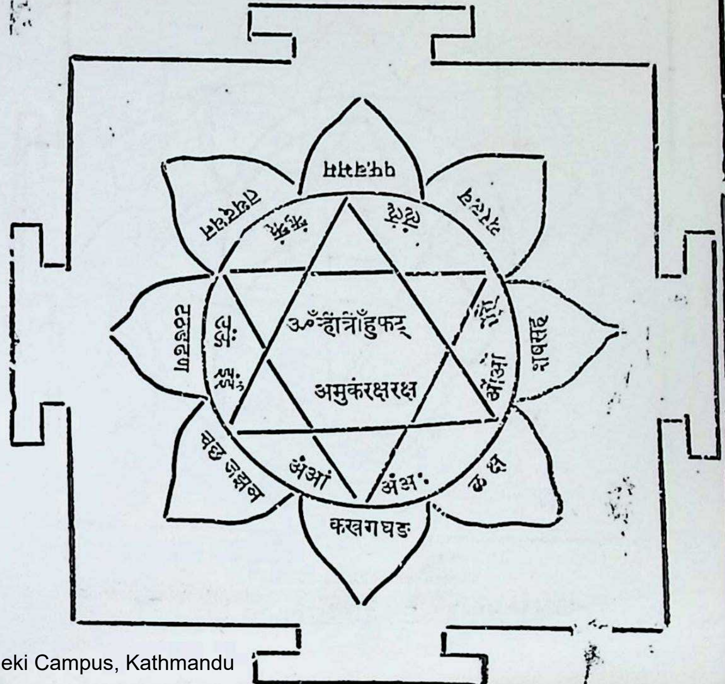
पफबभम
यरलव
तथदधन
ॐ ह्रींत्रींहुंफट्
अमुकंरक्षरक्ष
टठडढण
शषसह
ओंऔं
चछजझञ
अंआं
अंअः
ळक्ष
कखगघङ

विद्याराज्ञीपूजनयन्त्रम् ॥ ७ ॥ त० ५ प० ४० श्लो० ३२

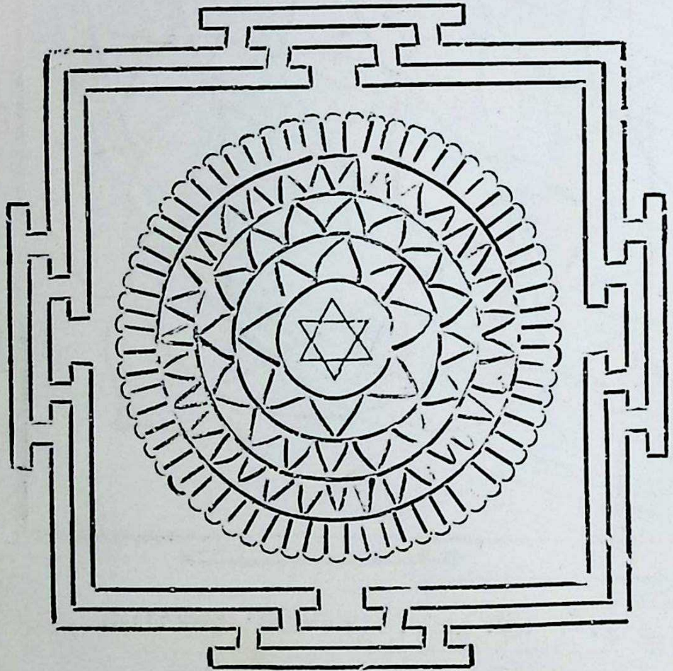

छिन्नमस्तापूजनयन्त्रं ॥ ८ ॥ त० ६ प० ४५श्लोक१२

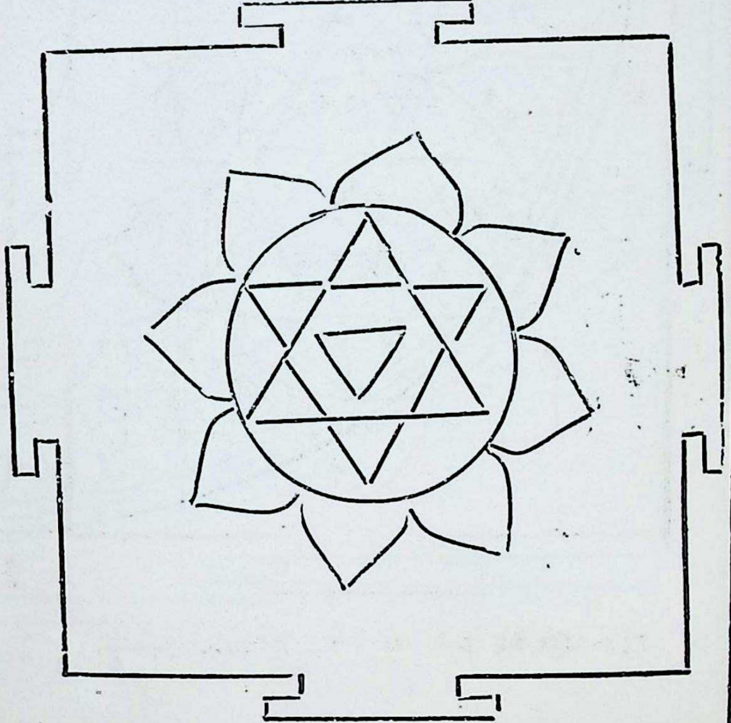

स्वरकलापूजनयन्त्रम् ॥ १ ॥ त० ९ प० ४८ श्लोक ६०.

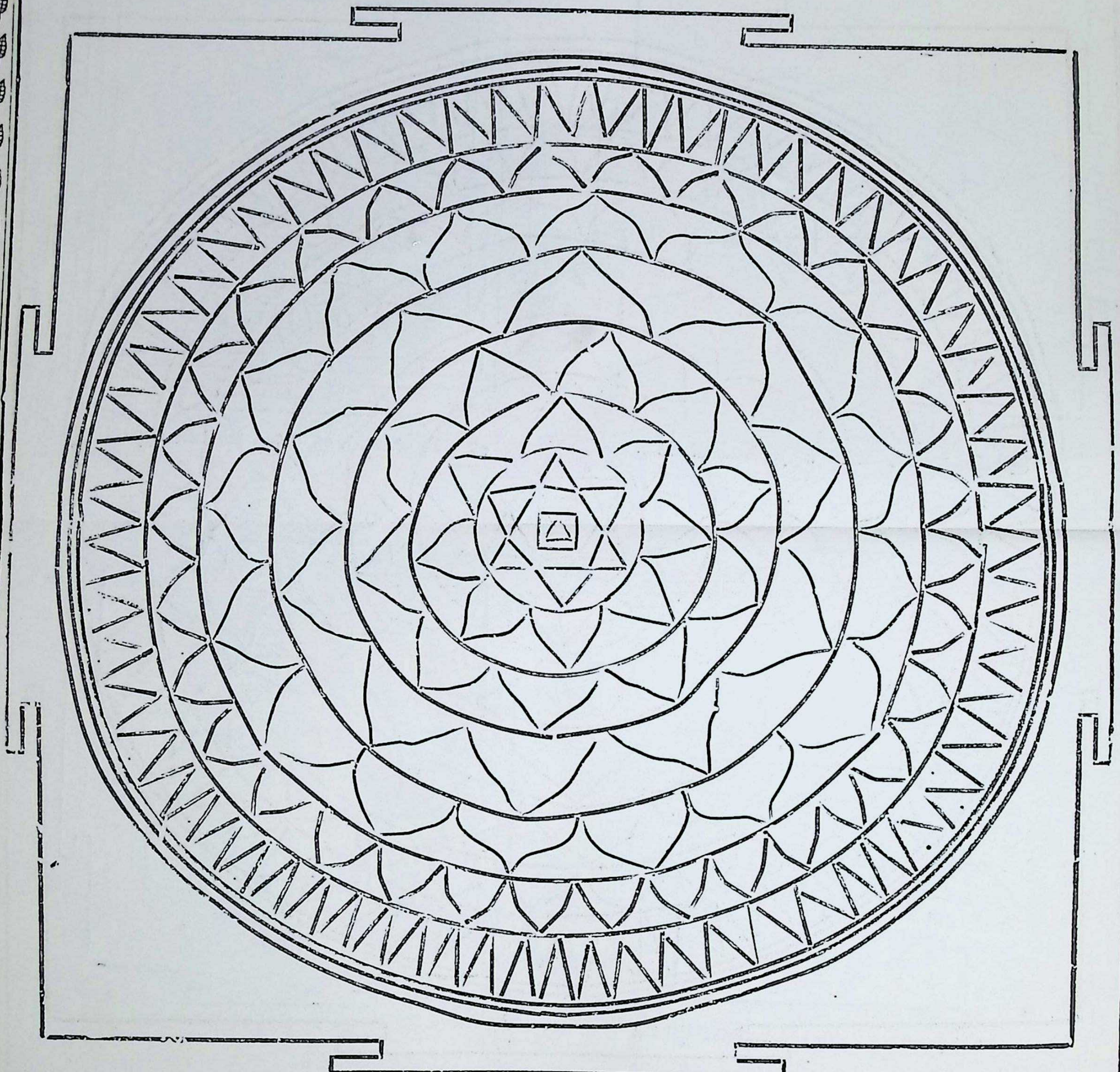

मधुमतीपूजनयन्त्रं ॥ १० ॥ त० ६ प० ४९ श्लो० ७४

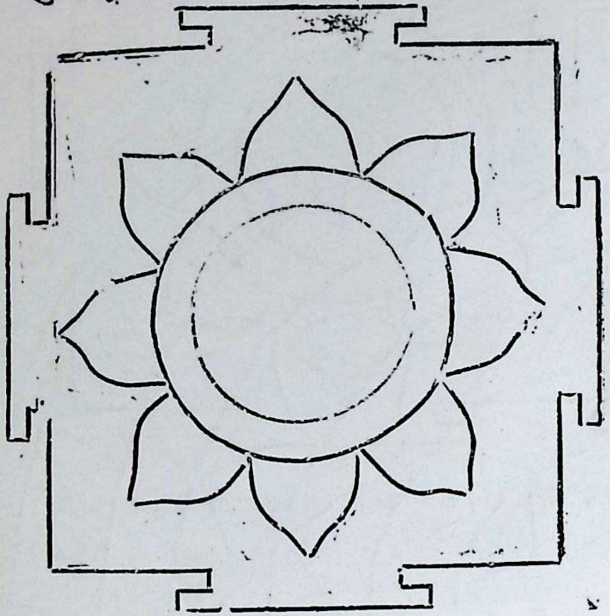

बंधनमोक्षकरंयन्त्रम्॥११॥ त.६ प.५०श्लो.९४.

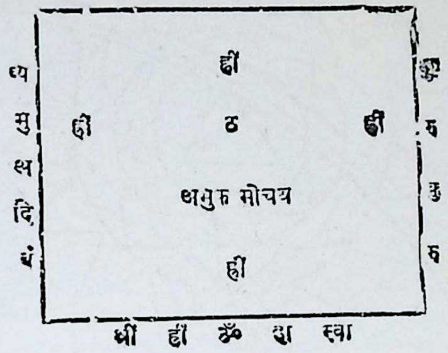
ध्य
मु
क्ष
दि
धं
ह्रीं
ह्रीं
ठ
ह्रीं
अमुक मोचय
ह्रीं
हुं
फ
हुं
फ
श्रीं ह्रीं ॐ ठः स्वा

वटयक्षिणीपूजनयन्त्रम् ॥१२॥ त. ७ प. ५१ श्लो० ११

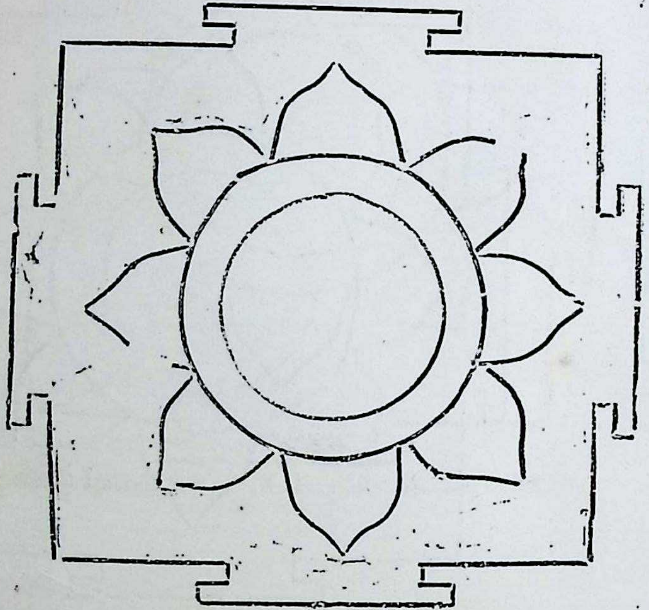

मातङ्गीपूजनयन्त्रम् ॥१३॥ त. ७ प. ५१ श्लो० ७२

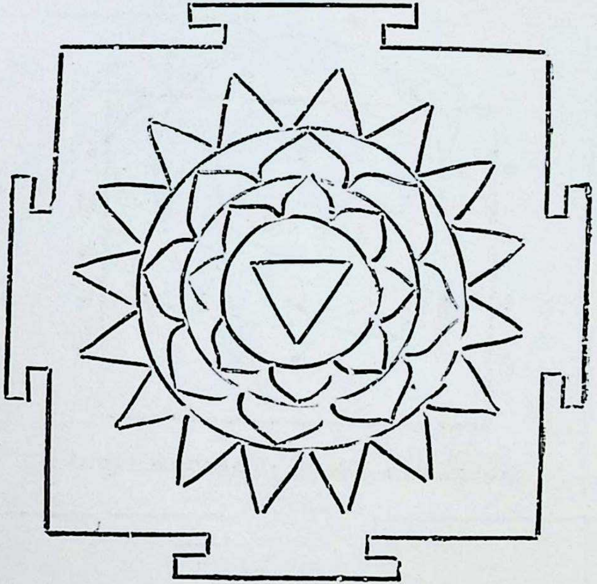

वाणेश्वरीपूजनयन्त्रम् ॥ १४ ॥ त० ७ प ५७ श्लोक १०१

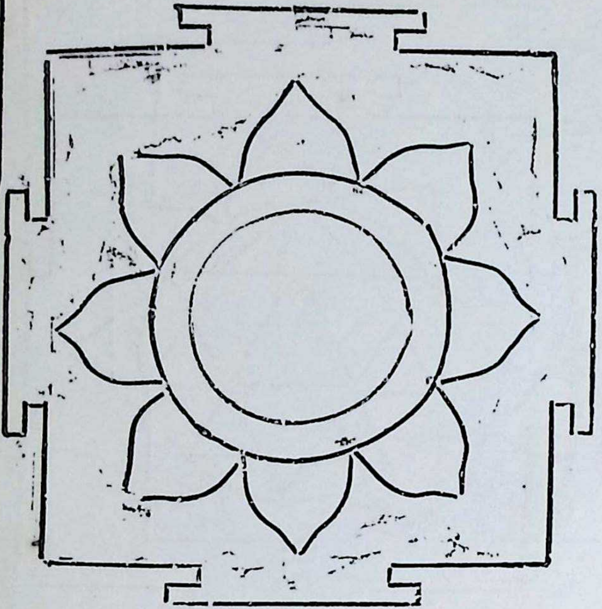

कामेशीपूजनयन्त्रं ॥१५॥ त० ७ प० ५७ श्लो० १११

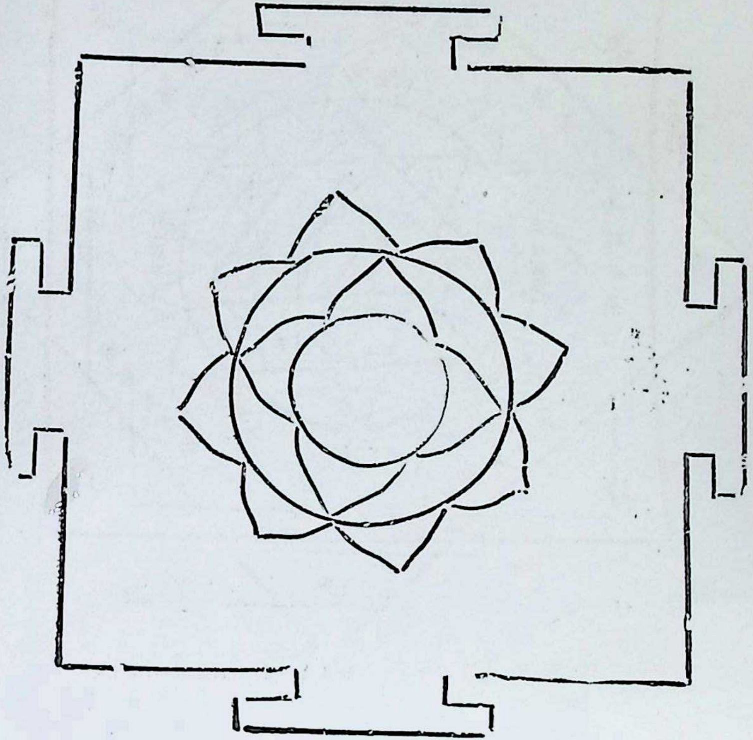

वालापूजनयन्त्रम् १६ त. ८ प. ५९ श्लो० १७

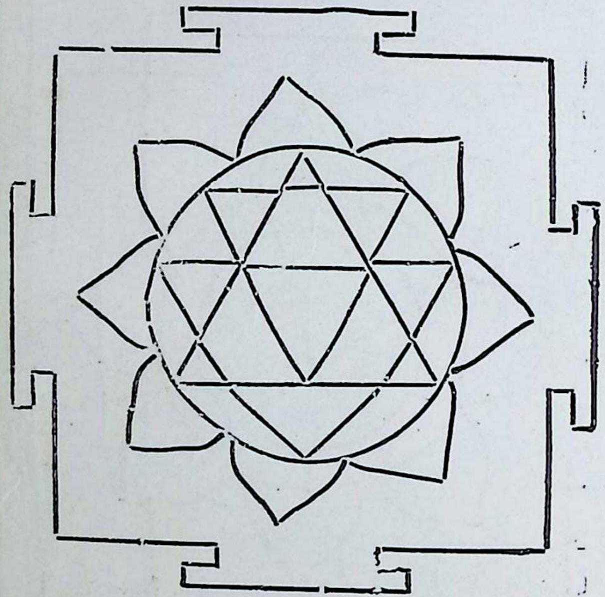

बालाधारणयन्त्रम् ११ त० ८ प० ६३ श्लोक ७५

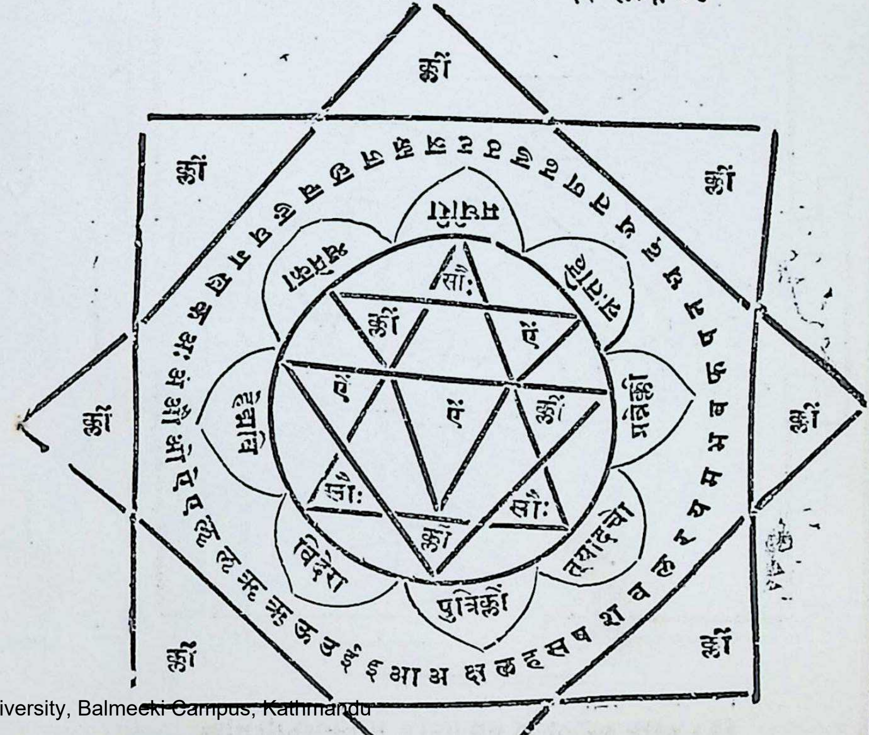
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
सौः
ऐं
ऐं
ऐं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
सौः
सौः
पुत्रिक्लीं

वाणेश्वरीपूजनयन्त्रम ॥ १४ ॥ त० ७ प ५७ श्लोक १०१

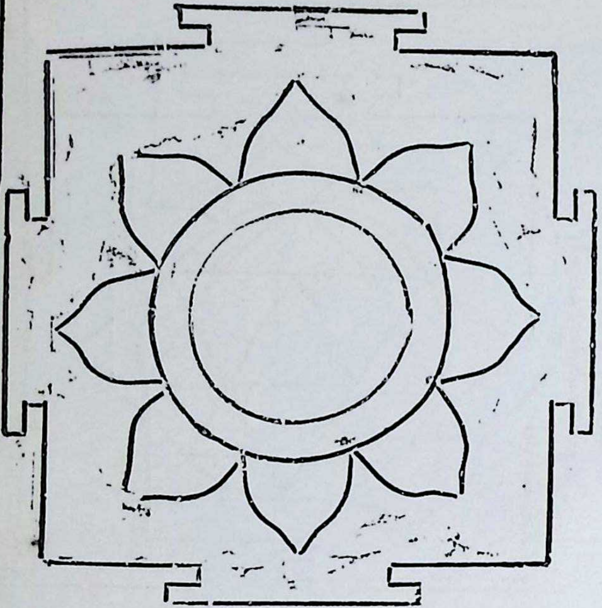

कामेशीपूजनयन्त्रं ॥१५॥ त० ७ प०:५७ श्लो० १११

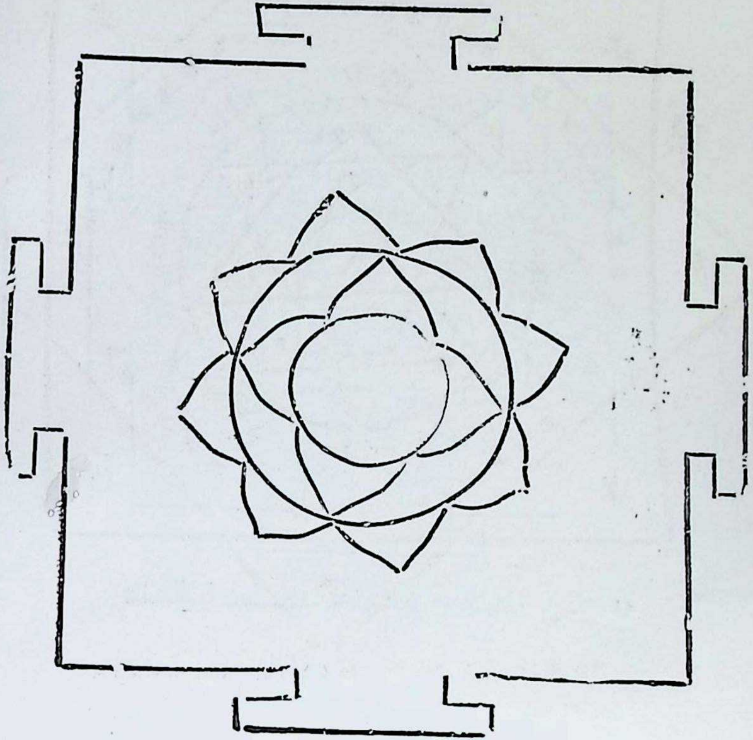

वालापूजनयन्त्रम् १६ त. ८ प. ५९ श्लो० १७

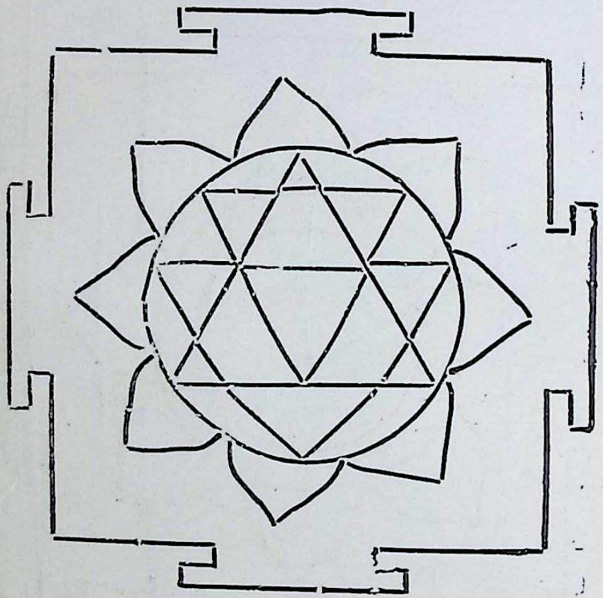

बालाधारणयन्त्रम् ११ त० ८ प० ६३ श्लोक ७५

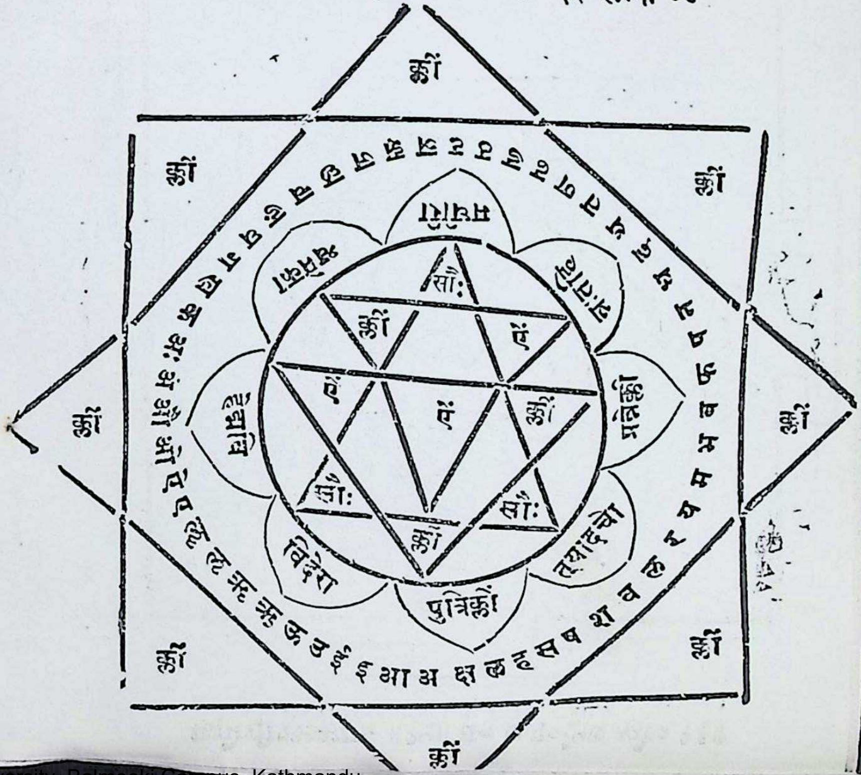
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
क्लीं
सौः
क्लीं
ऐं
ऐं
ऐं
क्लीं
सौः
सौः
क्लीं
पुत्रिक्लीं
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष

लघुश्यामापूजनयन्त्रम १८ त० ८ प० ६७ श्लो० १:१

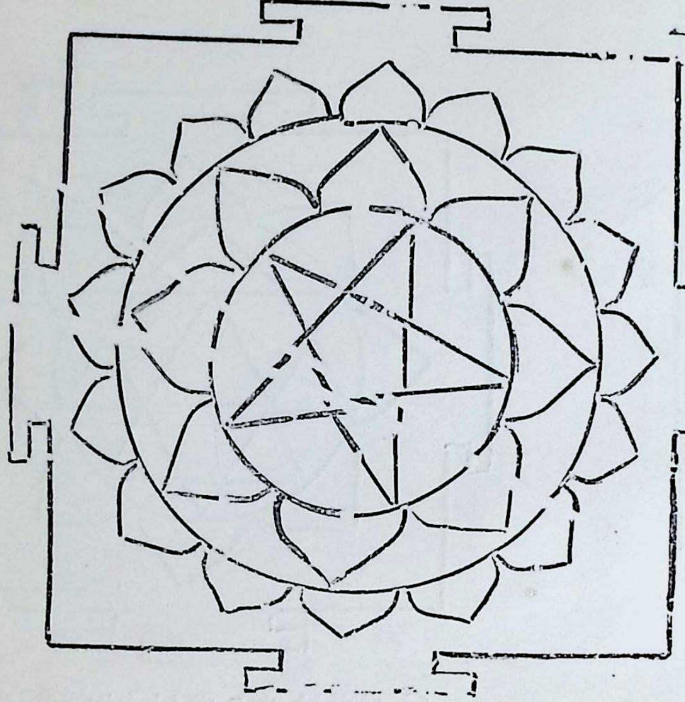

अन्नपूर्णेश्वरीयन्त्रम् १२ त. ९ प. ६९ श्लो० ९

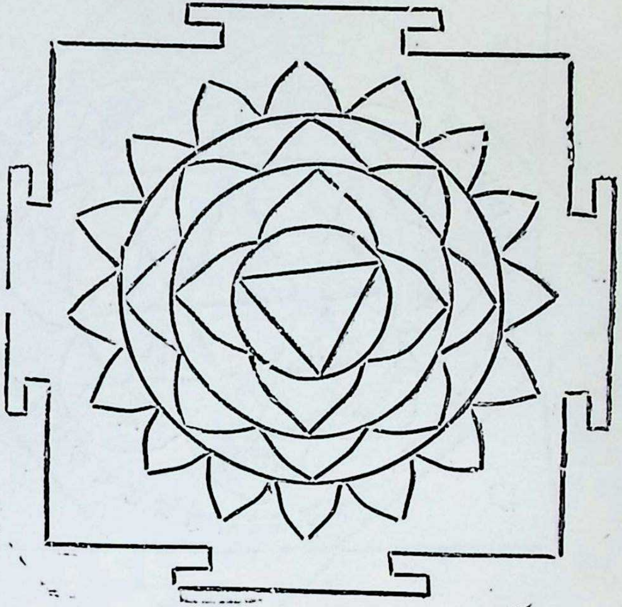

स्वप्नवाराहीवशीकरणयन्त्रम् २४ त. १० प. ८१ श्लो. ५०.

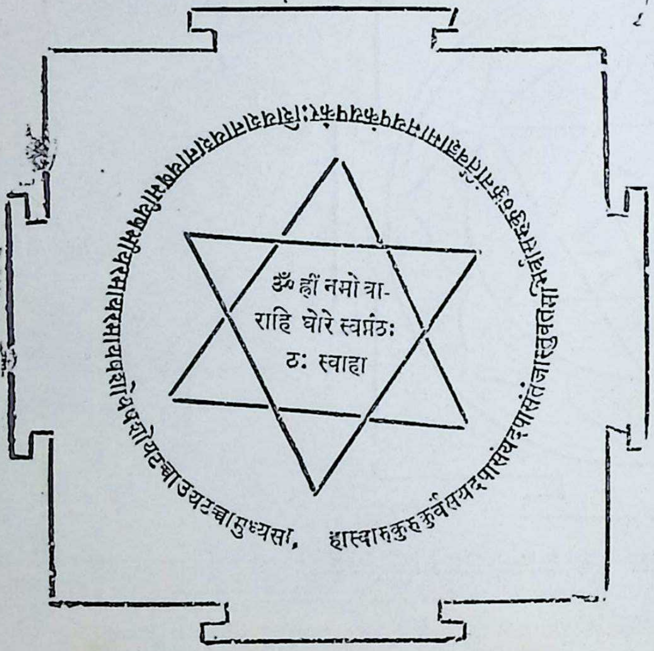
ॐ ह्रीं नमो वा-
राहि घोरे स्वप्नं ठः
ठः स्वाहा

स्वप्नवाराही धारण यन्त्रम् २५. त१० प. ८२ श्लो० ५८

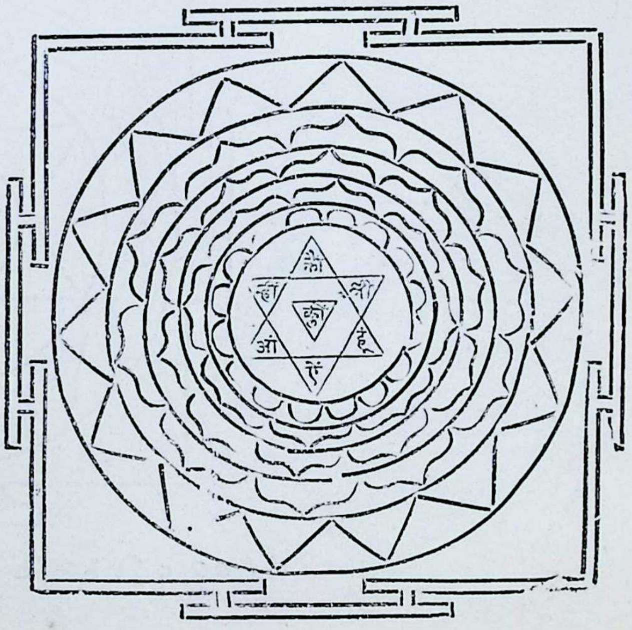
क्लैं
ह्रीं
श्रीं
क्लीं
अं
हूं
ऐं

धातोलीपूजलयन्त्रम् २६ त. १० प. ८२ श्लो० ८७

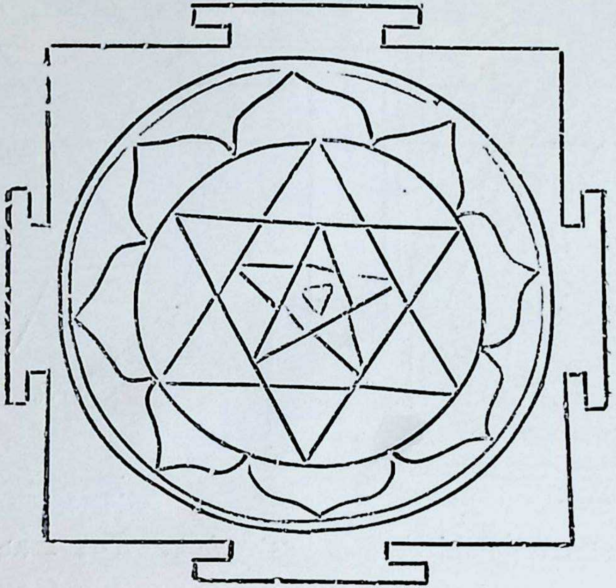

त्रैलोक्यमोहिनीपूजनयन्त्रम् २० त० ९ प० ७१ श्लोक ३८

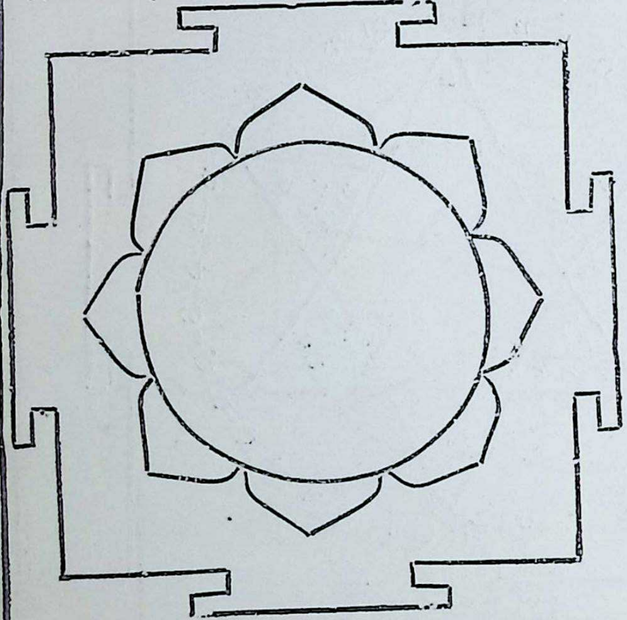

बगलामुखीपूजनयन्त्रं २१ त. १० प. ७९ श्लो० ७

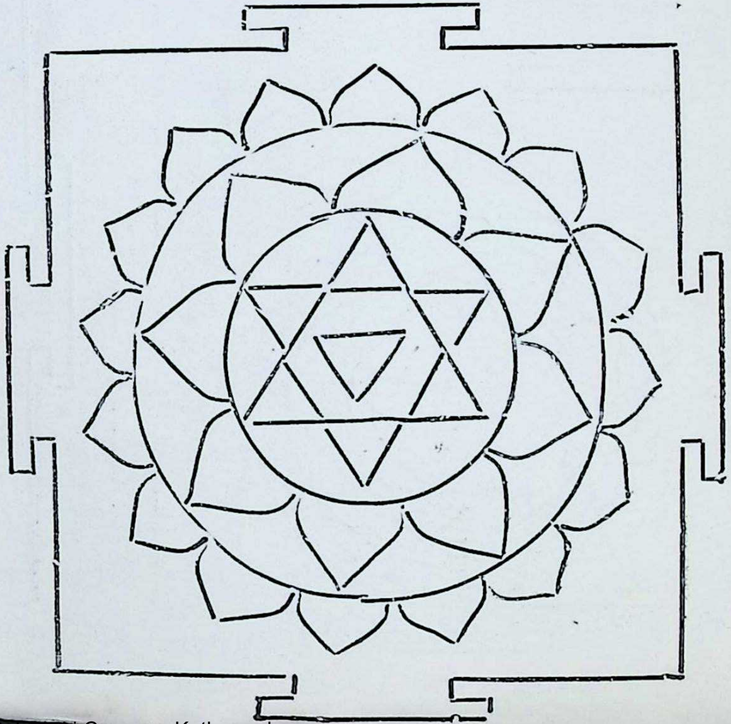

बगलामुखीस्तंभनयन्त्रं २२ त. १० प. ८० श्लो० २५

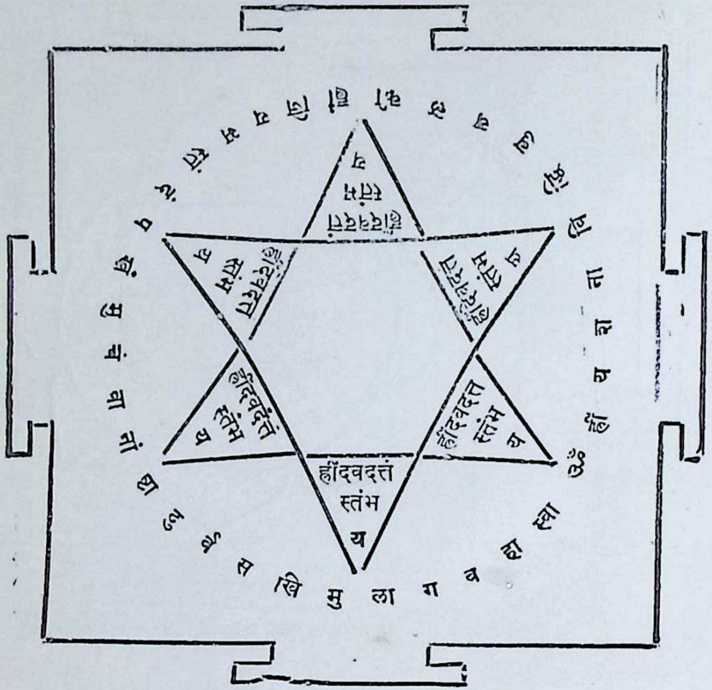
ॐ स्वा हा ब ग ला मु खि स र्व दु ष्टा नां वा चं मु खं प दं स्तं भ य जि ह्वां की ल य बु द्धिं वि ना श य ह्लीं
ह्लींदेवदत्तं स्तंभ य
ह्लींदेवदत्तं स्तंभ य
ह्लींदेवदत्तं स्तंभ य
ह्लींदवदत्तं स्तंभ य
ह्लींदवदत्तं स्तंभ य
ह्लींदवदत्तं स्तंभ य

स्वप्नवाराहीपूजा यन्त्रम् २३त० १० प० ८१ श्लो० ४१

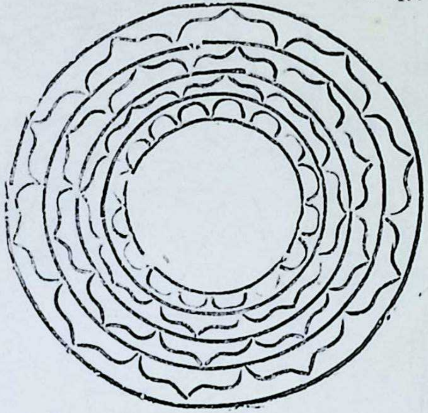

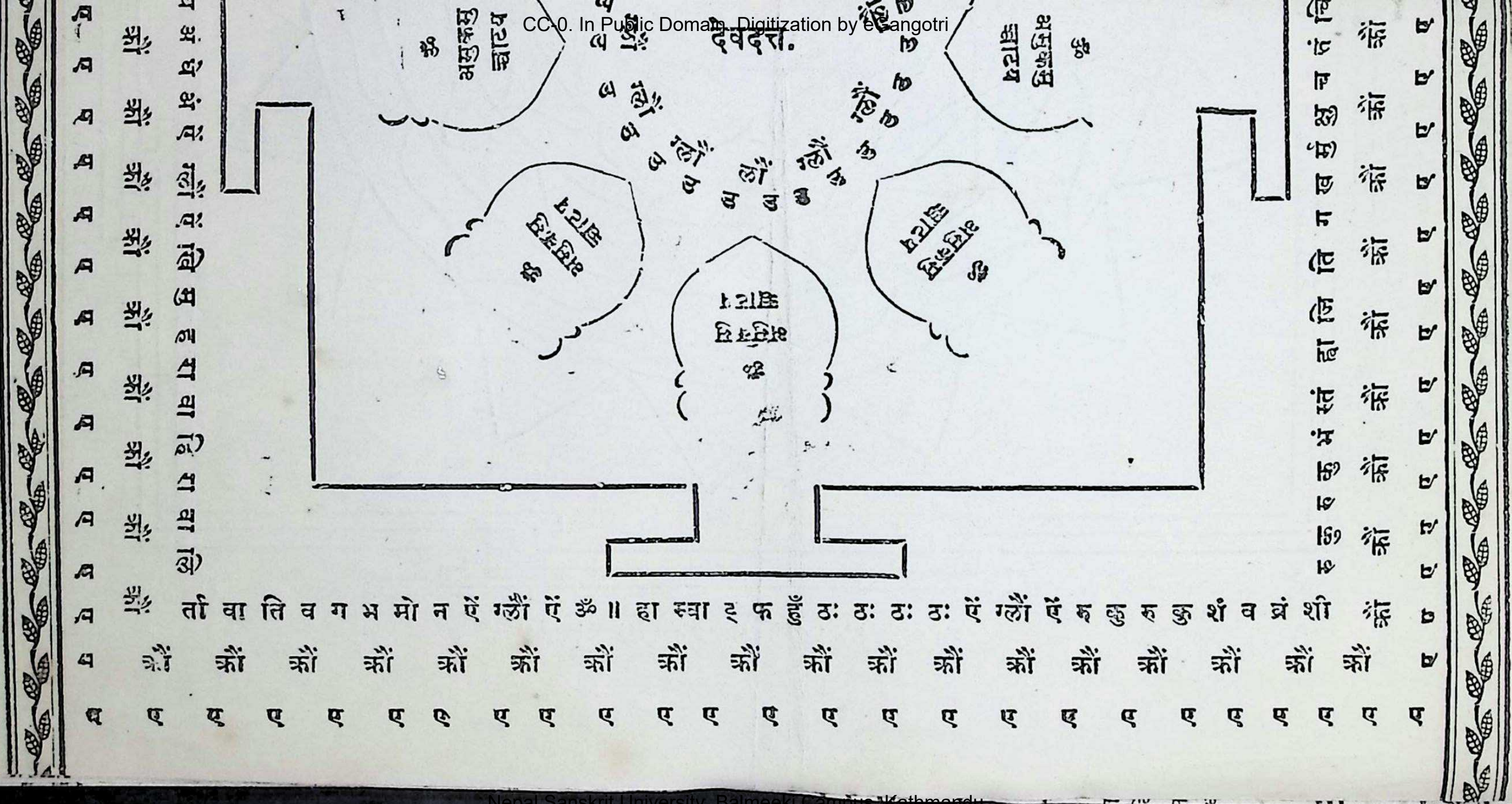
देवदत्ता.
ॐ अमुकमुकं खादय
ॐ अमुकमुकं खादय
ॐ अमुकमुकं खादय
ॐ अमुकमुकं खादय
ॐ अमुकमुकं खादय
ता वा ति व ग भ मो न ऐं ग्लौं ऐं ॐ ॥ हा स्वा ह फ हुँ ठः ठः ठः ठः ऐं ग्लौं ऐं रू कु रु कु शं व ब्रं शी
क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं
ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए

श्रीपूजनयन्त्रम् २८ त. ११ प. ९४ श्लो० ५३

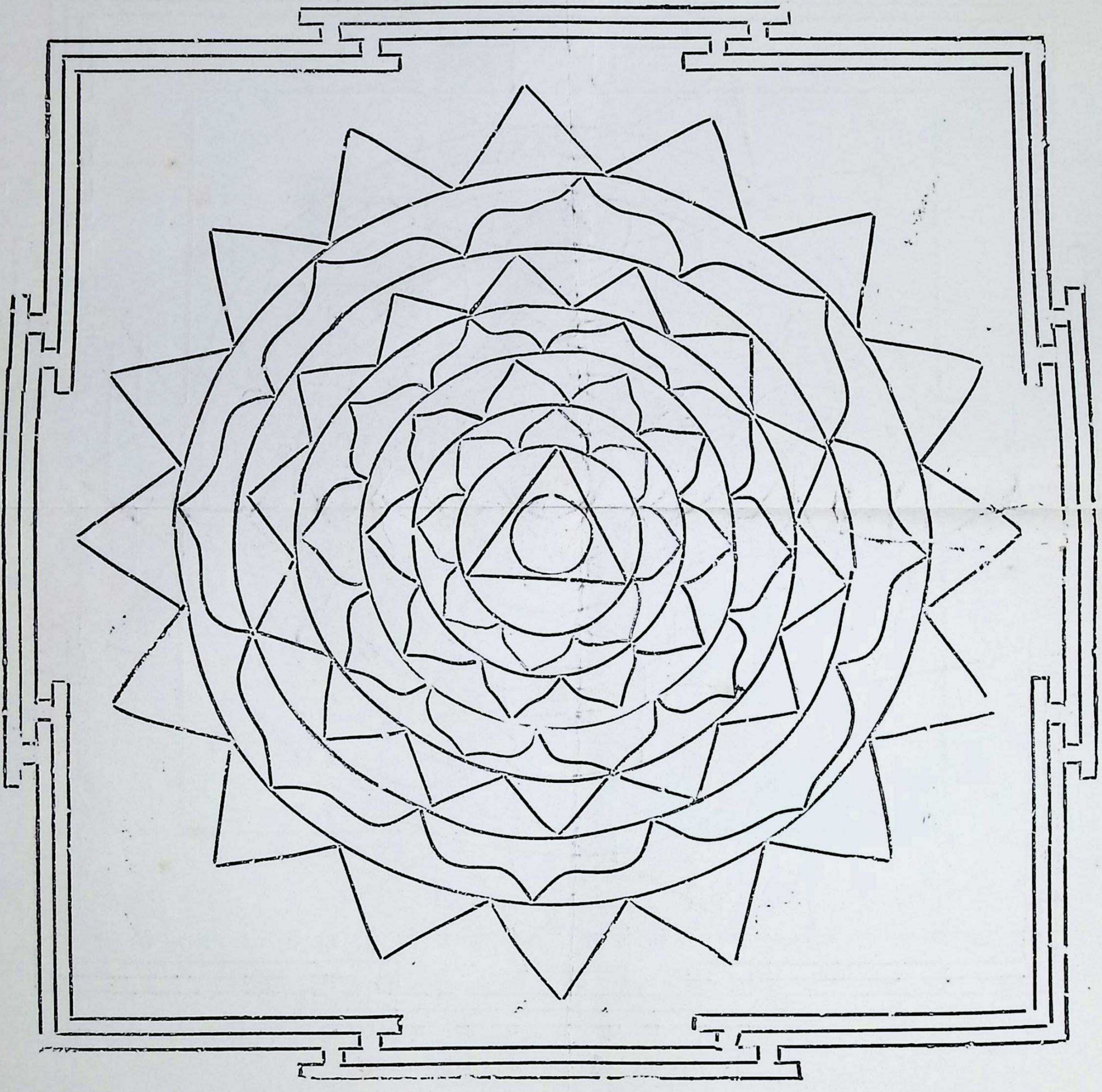

## वार्तालीस्तंभनयन्त्रम् । ५७त ०१०५?.२ श्लो०१११

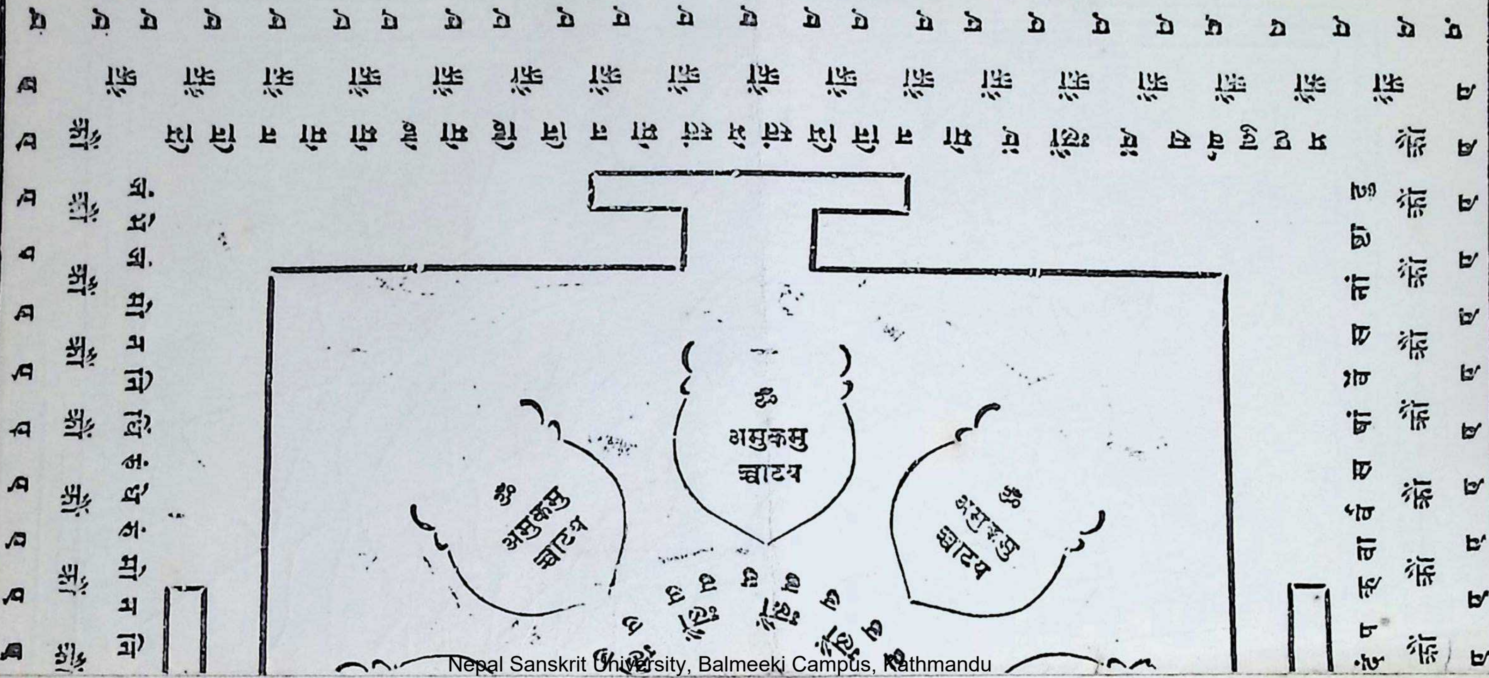
ॐ अमुकमुखाटय
ॐ अमुकमुखाटय
ॐ अमुकमुखाटय

गोपालसुन्दरीपूजनयन्त्रम् २९ त० १२ प० ११३ श्लो० ६८

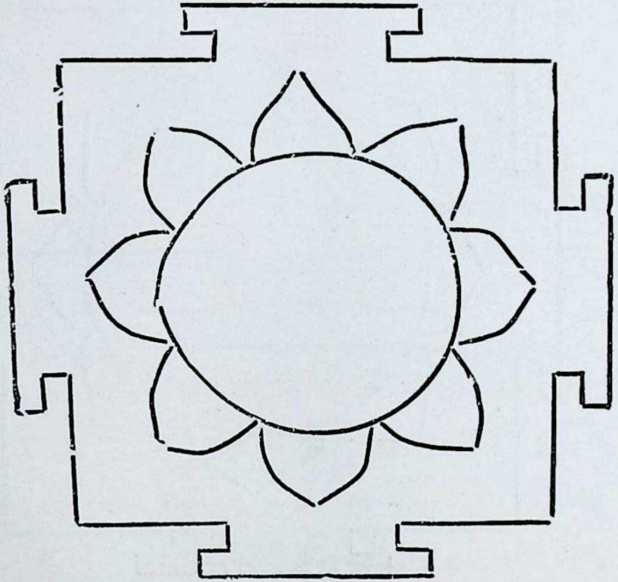

हनुमत्पूजनयन्त्रम् ॥ ३० ॥ त. १३ प. ११४ श्लोक।

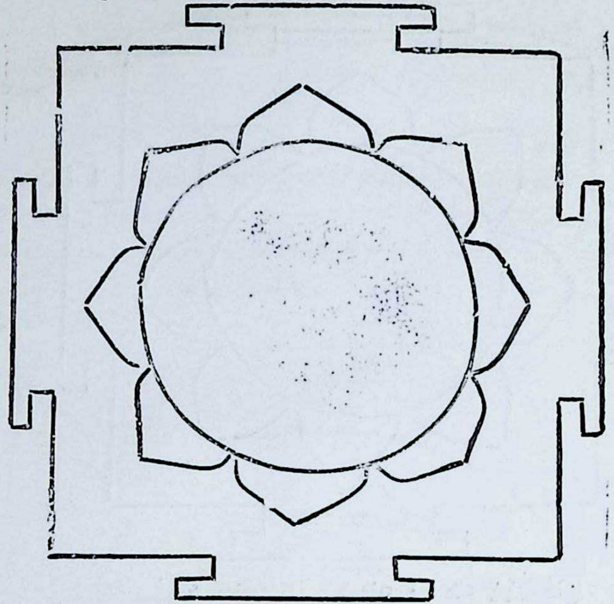

हनुमताधारण यन्त्रम् ३१ त० १३ प० ११२ श्लोक ४६.

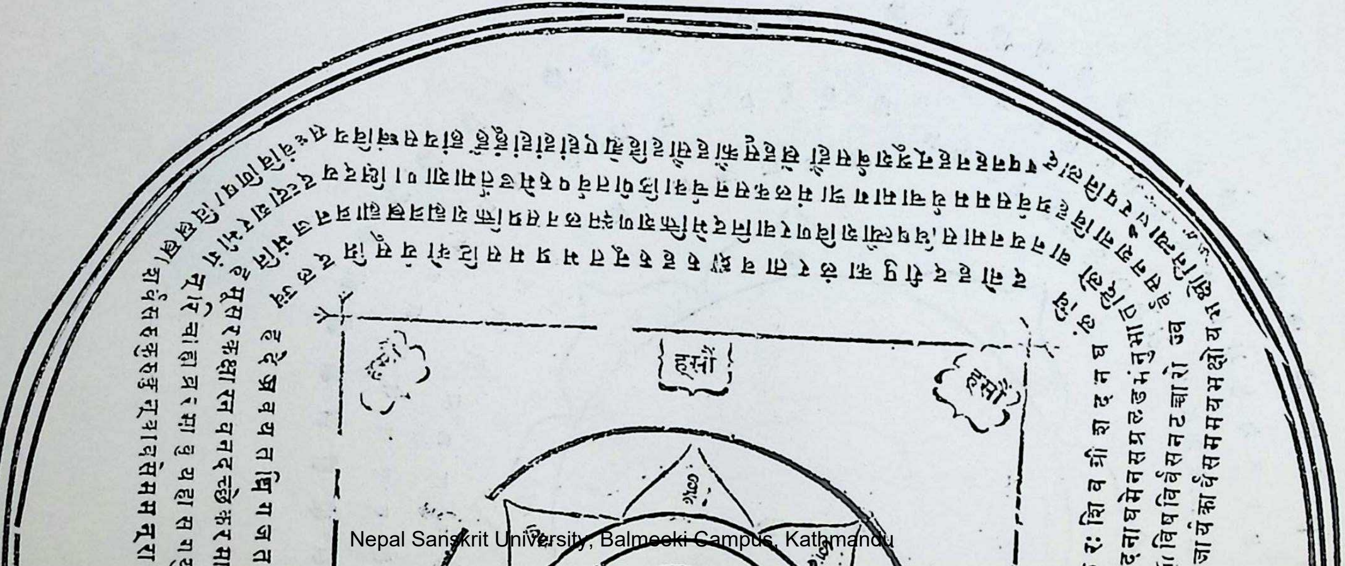

हनुमताधारण यन्त्रम् ३१ त० १३ प० ११२ श्लोक ४६.

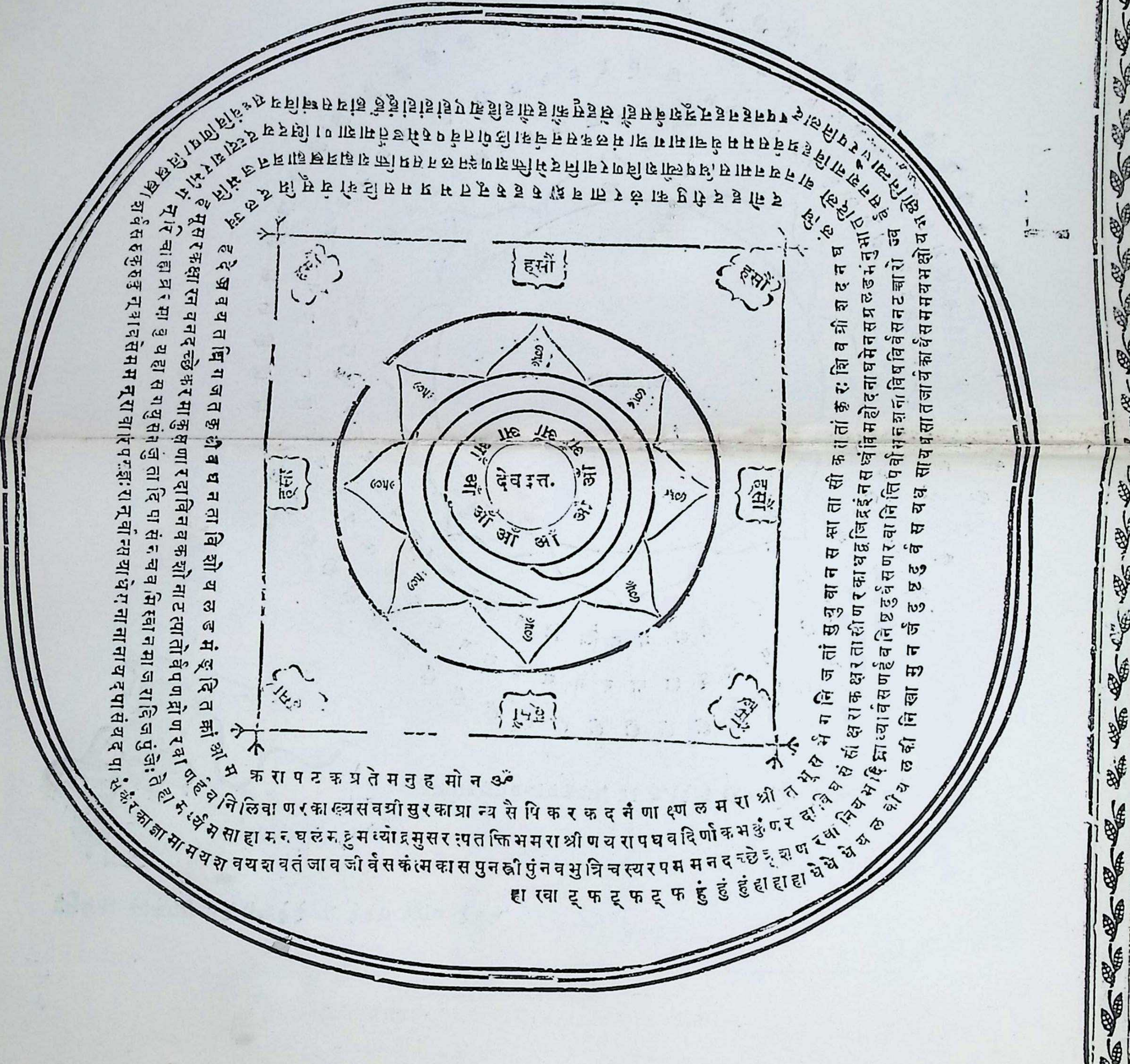
देवदत्त.
हसौं
ॐ न मो ह नु म ते प्र क ट प रा क्र म
हा खा ट् फ ट् फ ट् फ हुं हुं हुं हा हा हा

हनुमतः स्वरूपम् ३२ त· १३ प. १२० श्लो० १०९.

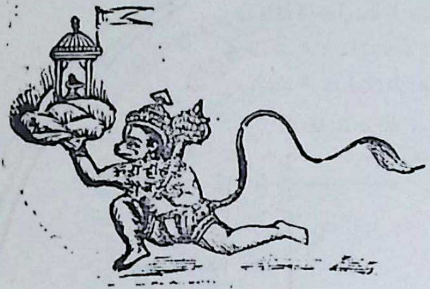

अथ हनुमतोरक्षाविधायकयन्त्रं ३३ त.१३ प.१२० श्लो० ११०.

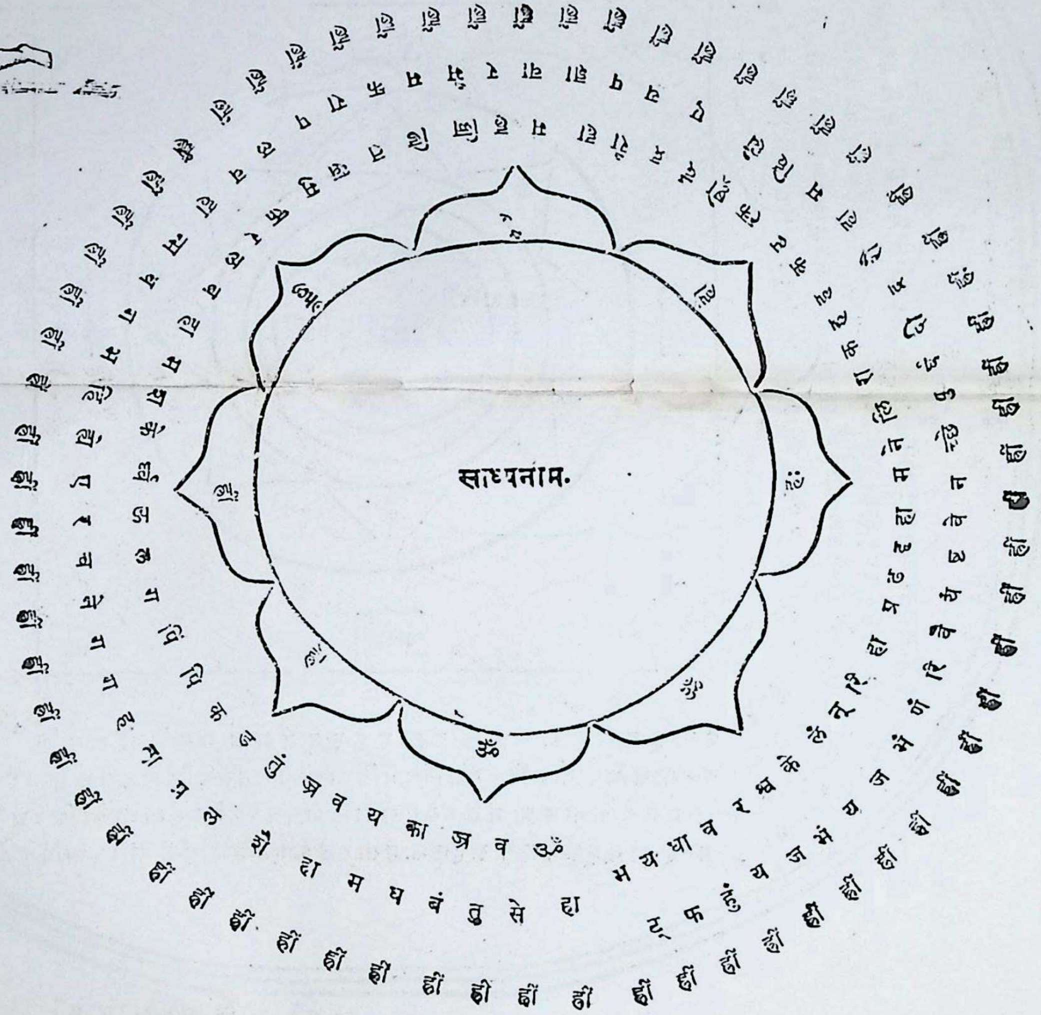

नृसिंहपूजनयन्त्रं ३४ त. १४ प १२१ श्लो० ७

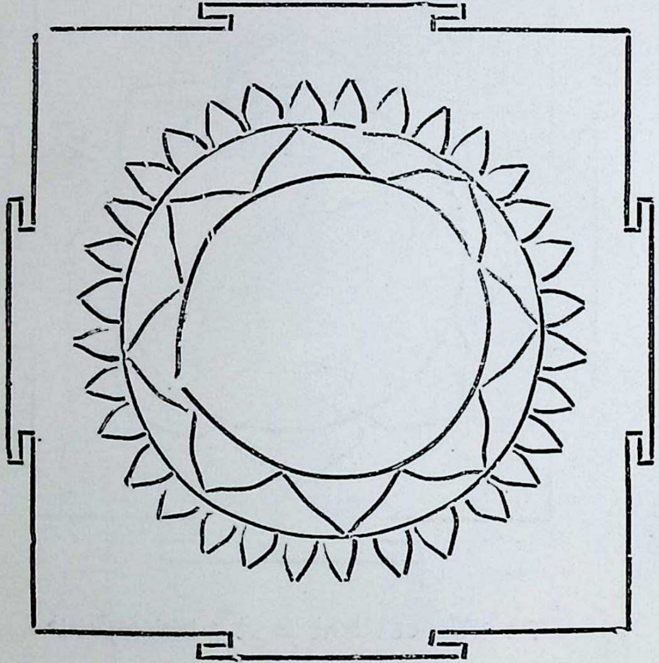

अथगोपालपूजनयन्त्रं ३५ त. १४ प. १२५ श्लो० ६०

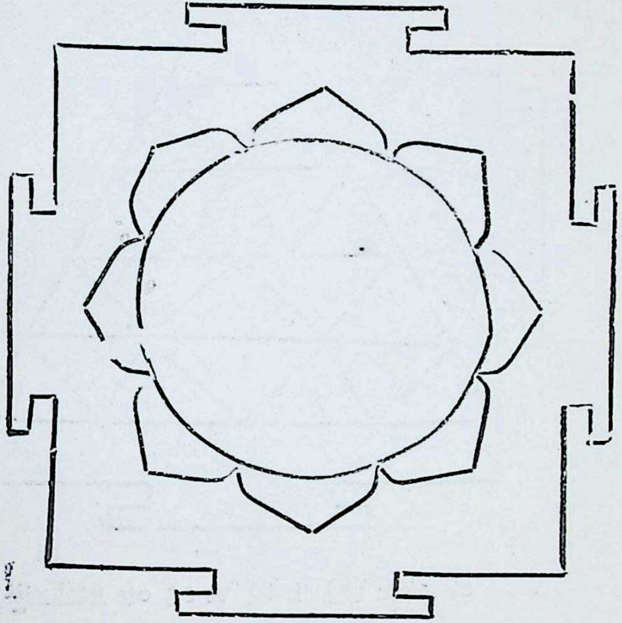

अथसूर्यपूजनयन्त्रं ३६ त. १५प. १३२ श्लो० २८

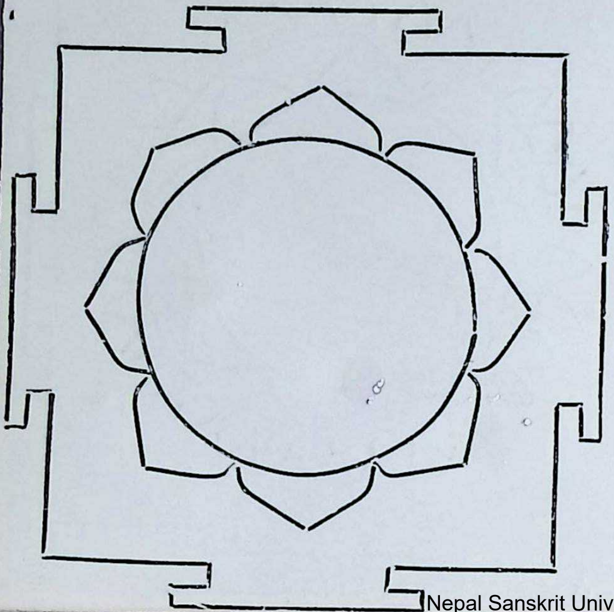

भौमपूजन य० ३७ त. १५ प. १३२ श्लो० ५०

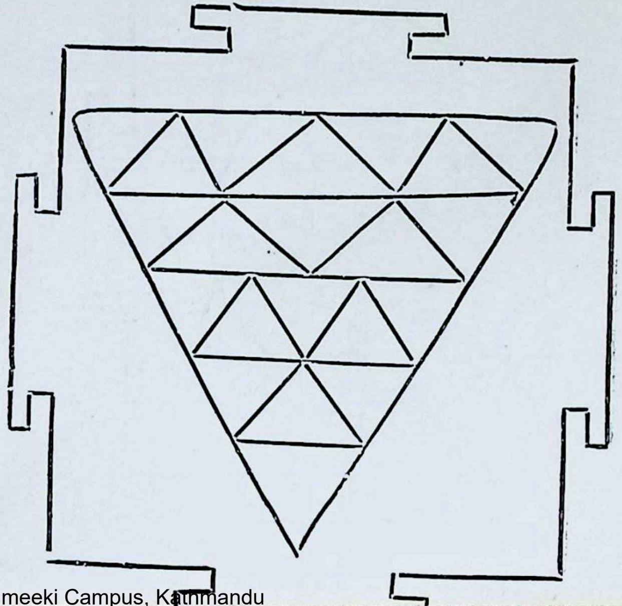

मृत्युंजयपूजनयन्त्रं २९ त. १६ प. १४० श्लो० २२

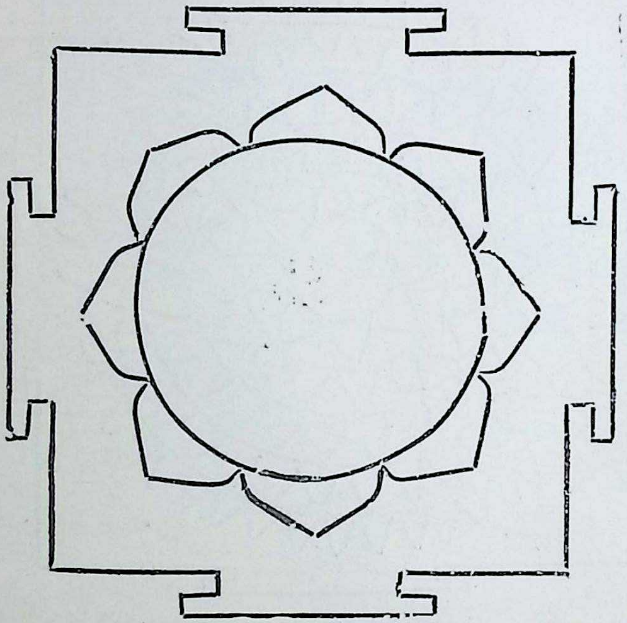

व्यासपूजनयन्त्र २८ त. १५ प. १३६ श्लो० १०३

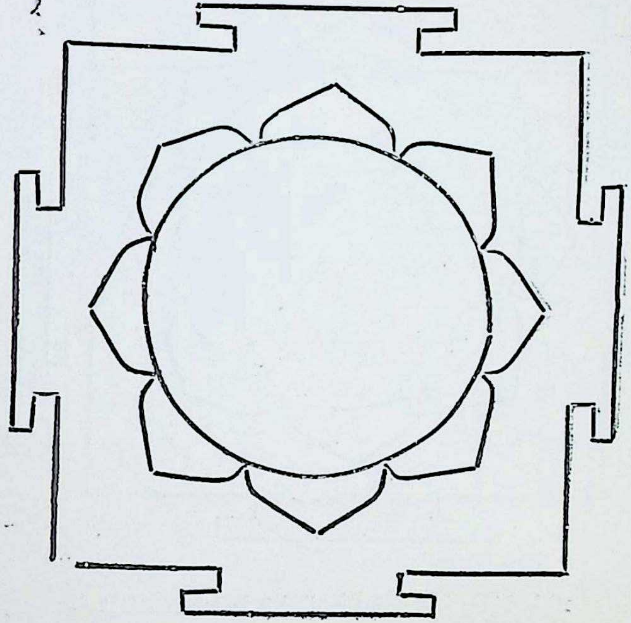

रुद्रपूजनयन्त्रम् ४० त. १६ प. १४४ श्लो० ७८

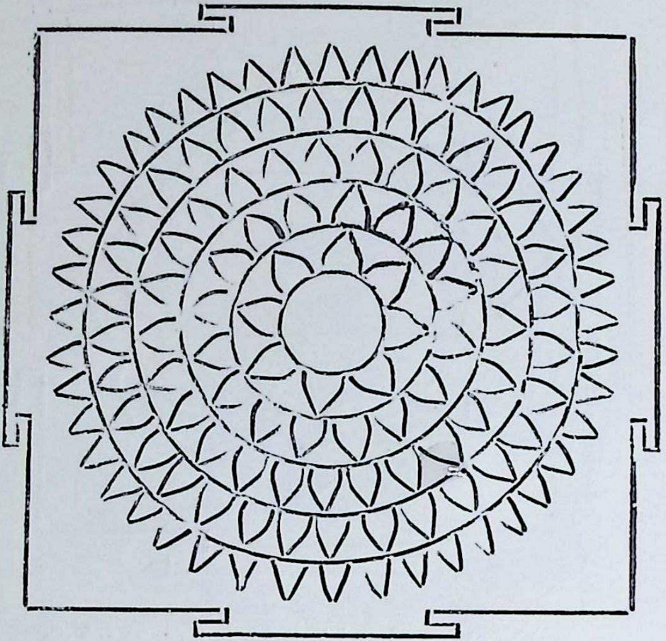

गंगापूजनयन्त्रं ४१ त. १६ प. १४७ श्लो० ११८

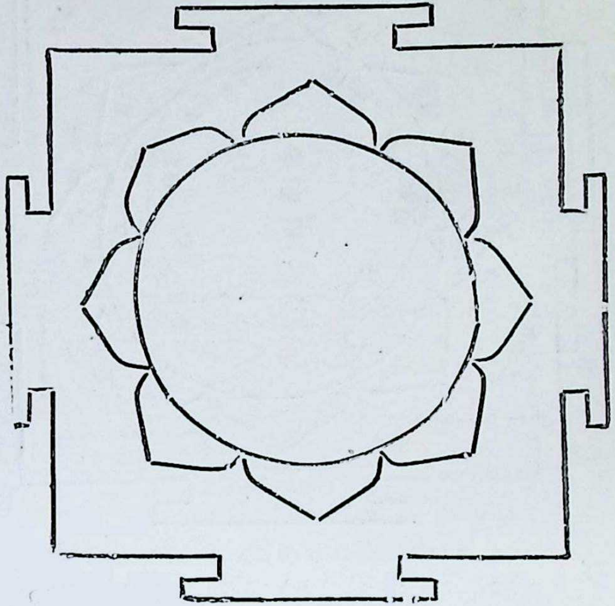

कार्तवीर्यपूजनयन्त्रं ४२ त. १७ प. १५० श्लो० २२

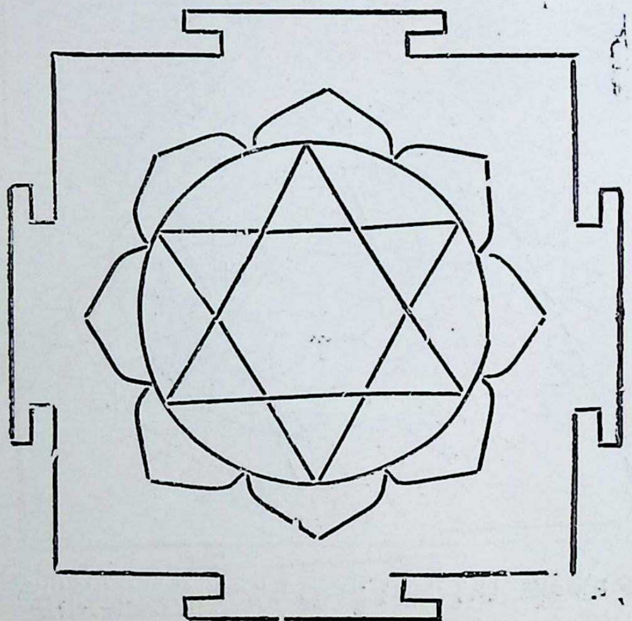

कार्तवीर्यस्यकाम्यप्रयोगार्थपूजनयन्त्रम् ४३
त० १७ प० १५० श्लोक २२

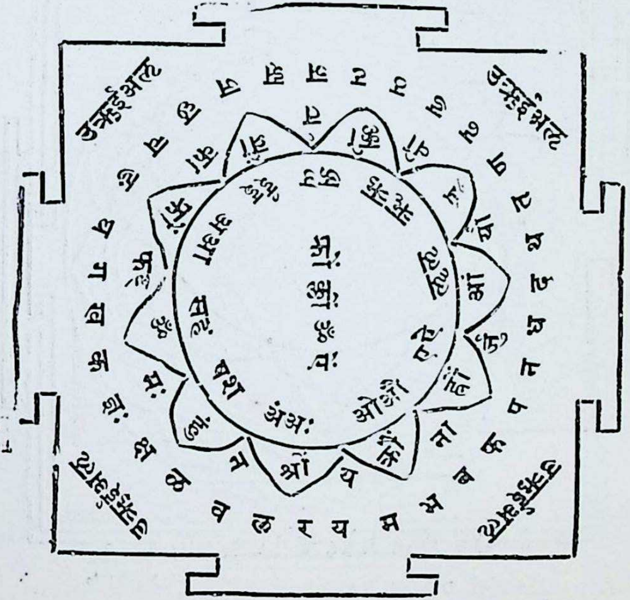

कार्तवीर्यदीपस्थापनयन्त्रम् ४४ त. १७ प. १५३ श्लो० ६५

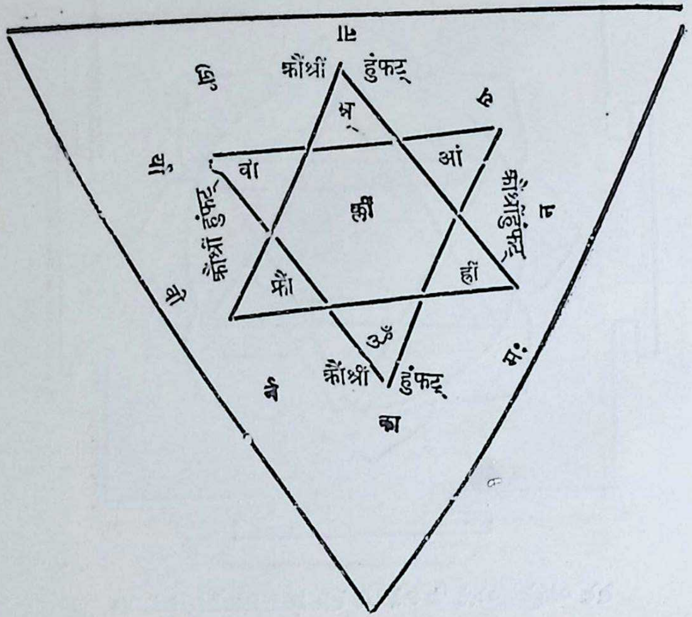
क्रौंश्रीं हुंफट्
भ्र्
वां
आं
क्लीं
फ्रौं
ह्रीं
ॐ
क्रौंश्रीं हुंफट्
क्रौंश्रीं हुंफट्
क्रौंश्रीं हुंफट्
मः
का

कालरात्रीपूजनयन्त्रं ४५ त० १८ प० १५८ श्लो० १३

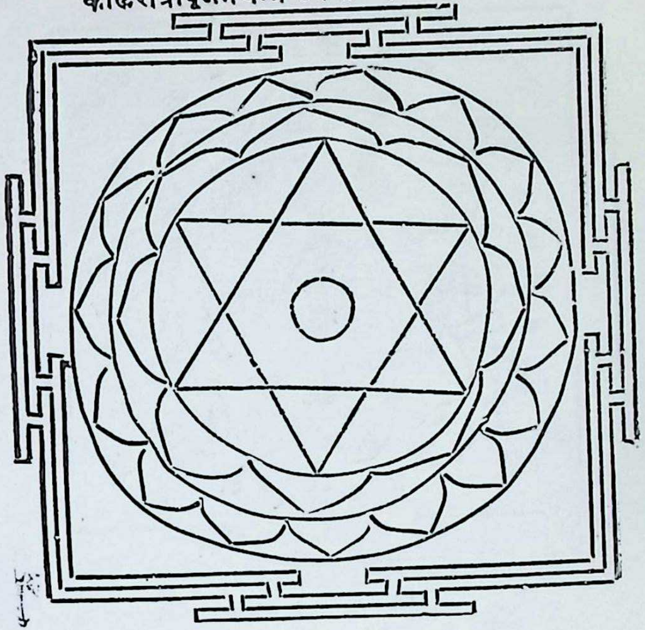

### कालरात्रीदीपस्थापनयन्त्रं ४६ त. १८ प. १५९ श्लो० ३९

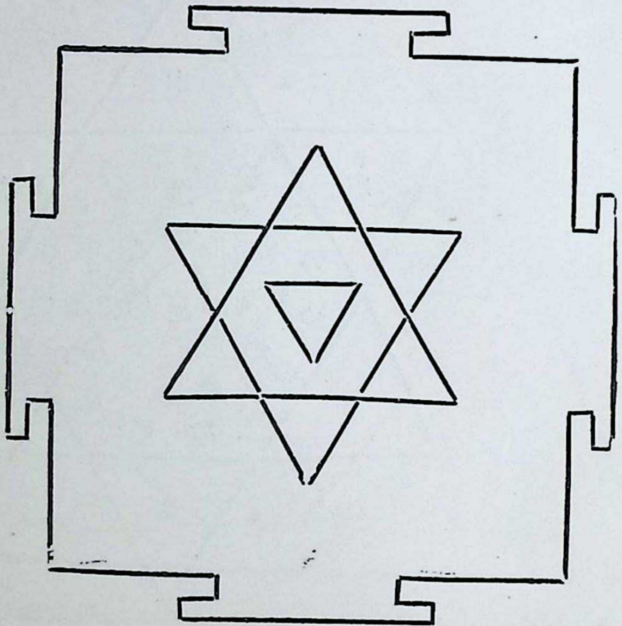

### कालरात्रिस्तंभनयन्त्रम् ४७ त० १८
### प० १६० श्लो० ५२

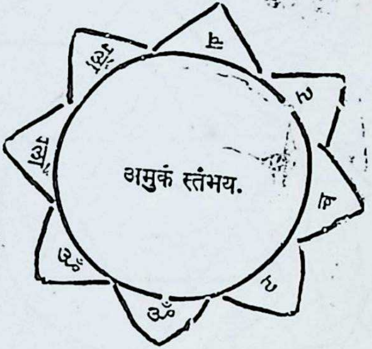
ॐ
ठ
ठ
ॐ
अमुकं स्तंभय.
ठ
ॐ
ठ
ॐ

कालरात्रीमोहनयन्त्रम् ४८ त. १८ प. १६१ श्लो० ६८

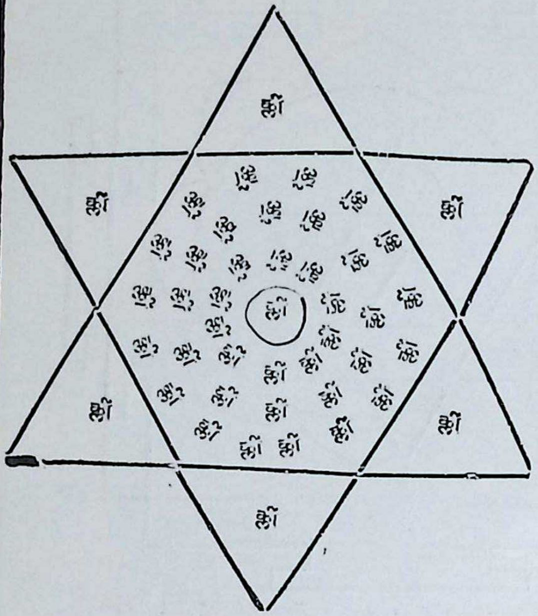
क्रीं
क्रीं
क्रीं
क्रीं
क्रीं
क्रीं
क्रीं

चंडीपूजनयन्त्रं ४९ त. १८ प. १६७ श्लो० १४८

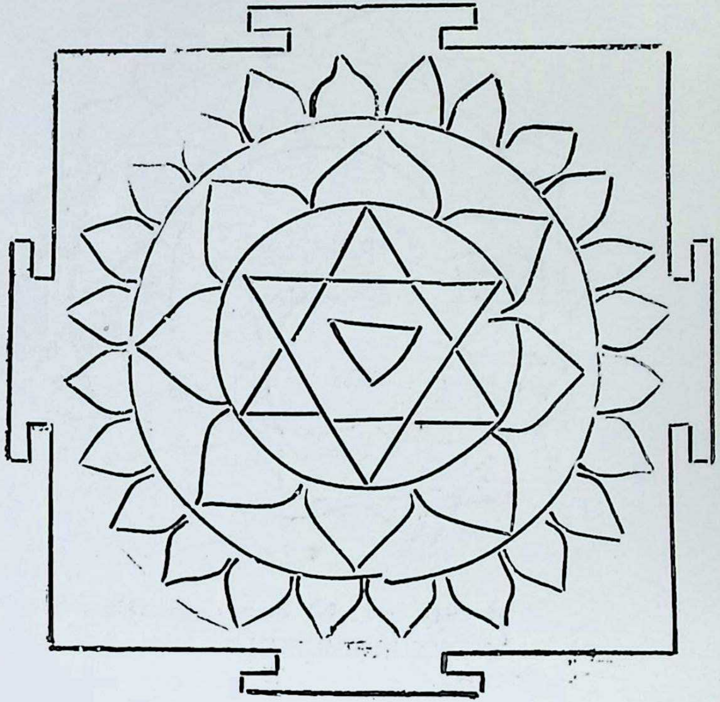

चरणायुधपूजनयन्त्रं ५० त. १९ प. १७२ श्लो० ११

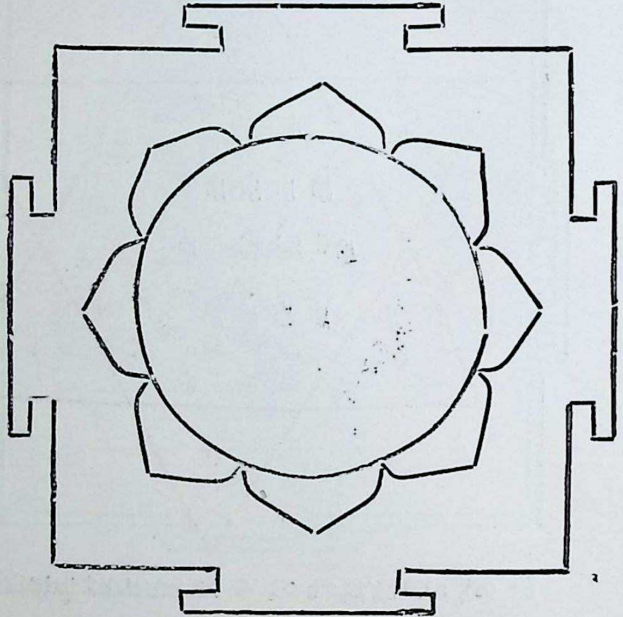

वश्यकरंयन्त्रं ५१ त० २० प. १८२ श्लो० १६

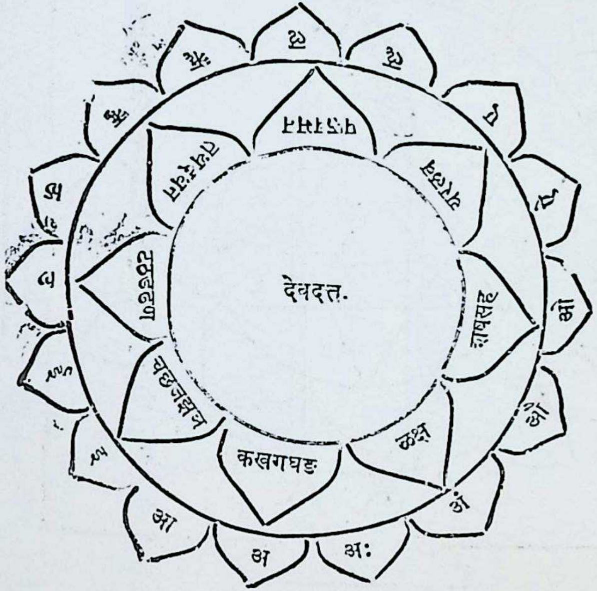
देवदत्त.
कखगघङ
चछजझञ
टठडढण
तथदधन
पफबभम
यरलव
शषसह
ळक्ष
अ
आ
इ
ई
उ
ऊ
ऋ
ॠ
ऌ
ॡ
ए
ऐ
ओ
औ
अं
अः

वश्यकरंद्वितीयंयन्त्रम् ५२ त. २० प. १८२ श्लो० २१

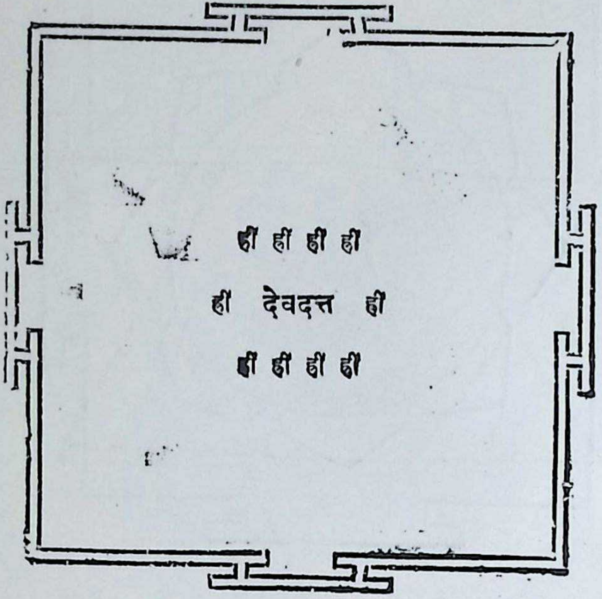
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं देवदत्त ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

स्वामिवश्यकरंयन्त्रं ५३ त. २० प. १८३ श्लो. २६

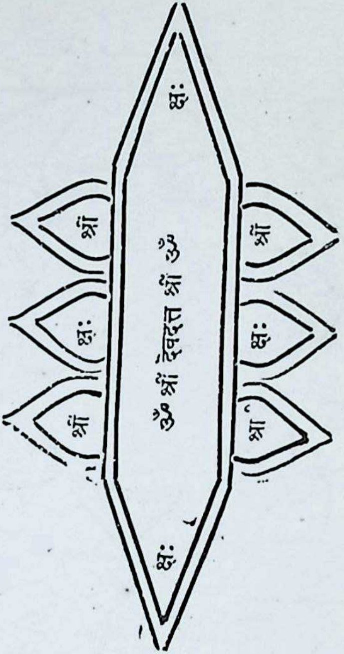
ॐ श्रीं देवदत्त श्रीं ॐ
क्षः
क्षः
श्रीं
क्षः
श्रीं
श्रीं
क्षः
श्रीं

दि० स्तंभनाख्यन्यत्रं ५४ त. २० प. १८३ श्लो० ३७

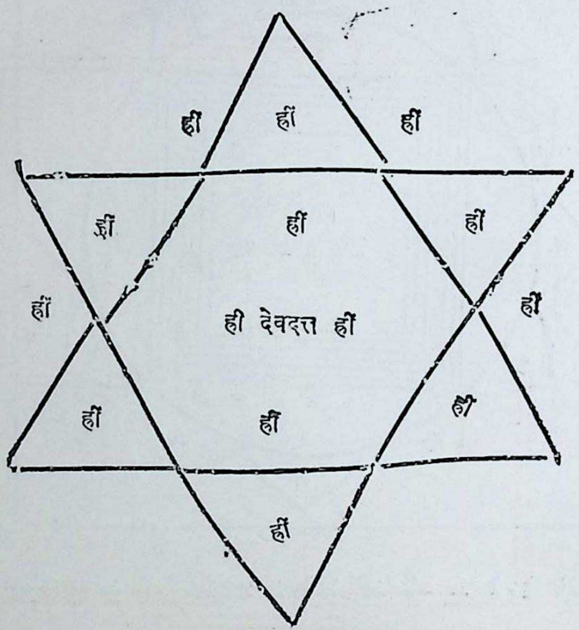
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्री देवदत्त ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं

राजमोहनायंपंचमख्यन्त्रम् ५५ त. २० प. १८३श्लो० ३४

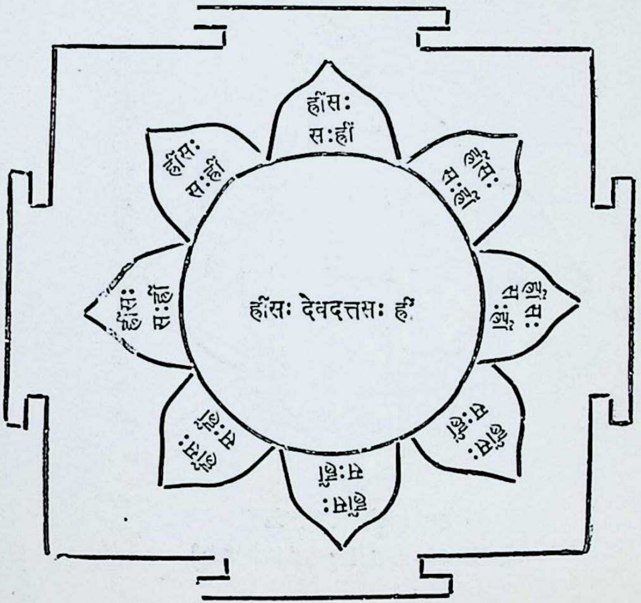
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः देवदत्तसः ह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं
ह्रींसः सःह्रीं

मृत्युंजयाख्यं मृत्युदूरकर यन्त्र ५६ त. २० प. १८३ श्लो. ३६

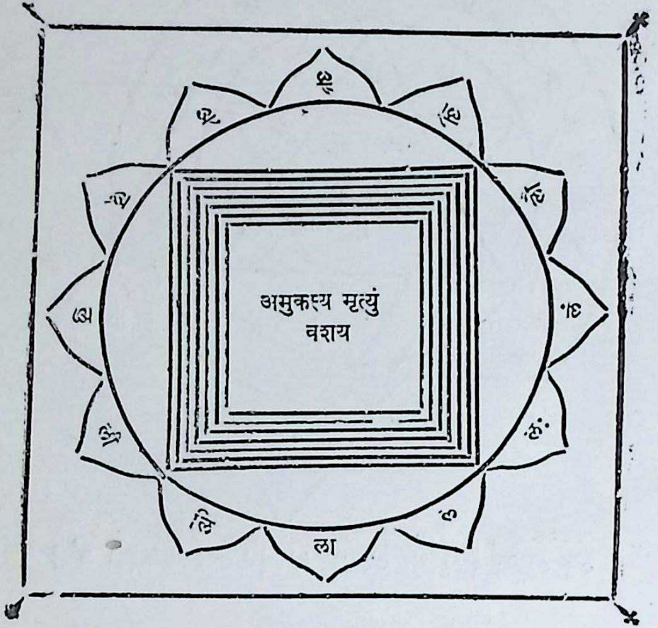
अमुकस्य मृत्युं
वशय
ला

विवादजयकरंयन्त्रम् ५७ त. २०
प. १८४ श्लो० ४३

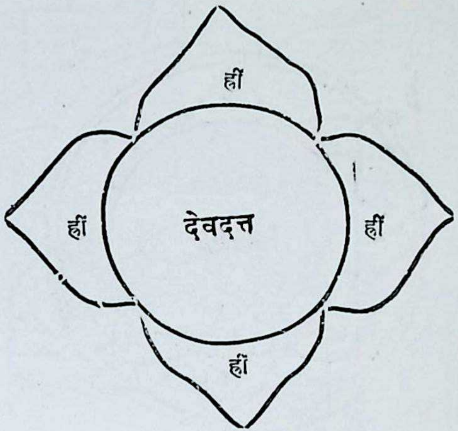
ह्रीं
ह्रीं
देवदत्त
ह्रीं
ह्रीं

धनिकवश्यकरं यन्त्रं ५८ त. २०प. १८४ श्लो० ४६

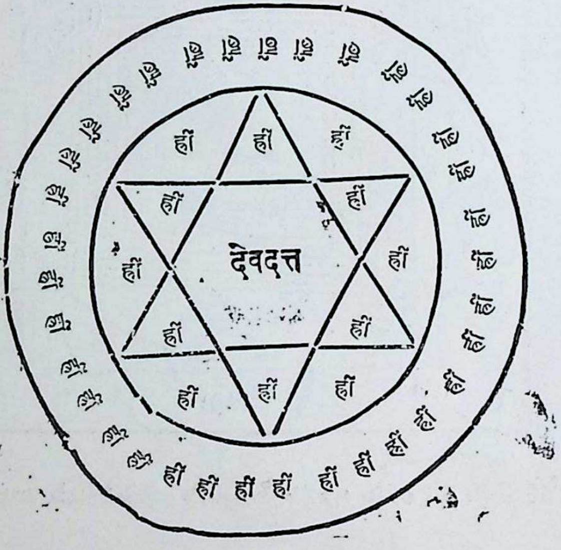
देवदत्त
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं

दुष्टमोहनाख्यंमोहनयंत्रं ५९ त. २०
प. १८४ श्लो० ५१

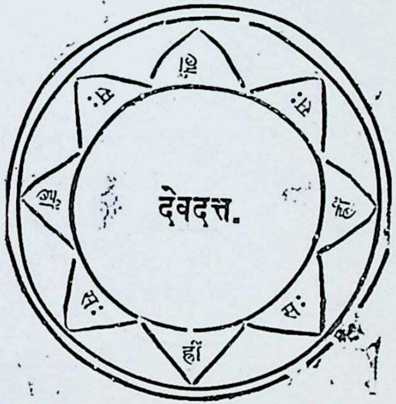
ह्रीं
सः
ह्रीं
सः
ह्रीं
सः
ह्रीं
सः
देवदत्त.

सर्वत्रजयदंयन्त्रम् ६० त. २० प. १८४ श्लो० ५३

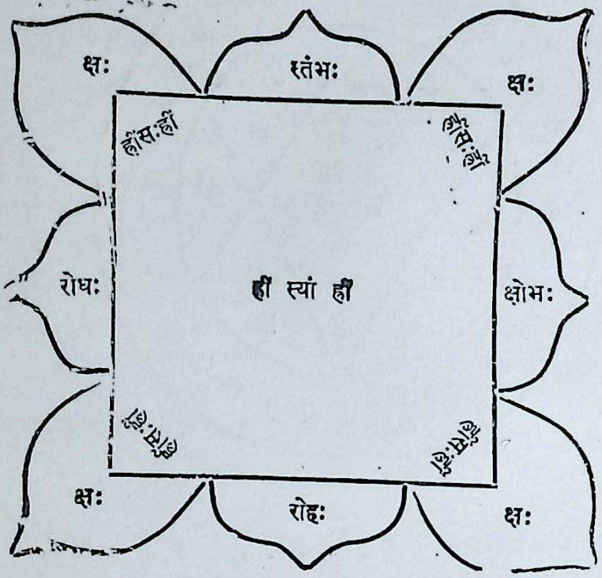
क्षः
स्तंभः
क्षः
ह्रींसःह्रीं
ह्रींसःह्रीं
रोधः
ह्रीं स्यां ह्रीं
क्षोभः
ह्रींसःह्रीं
ह्रींसःह्रीं
क्षः
रोहः
क्षः

यावज्जीववश्यकरं यन्त्रं ६१ त. २० प. १८५ श्लो. ५८

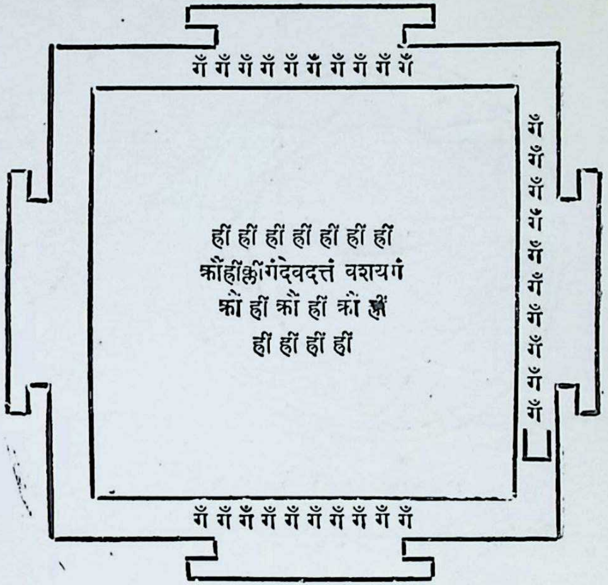
गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ
गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रौंह्रींक्लींगंदेवदत्तं वशयगं
क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं क्रौं क्लीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

नृपवश्यकरंयन्त्रम् ६२ त.२०प.१८५ श्लो. ६५

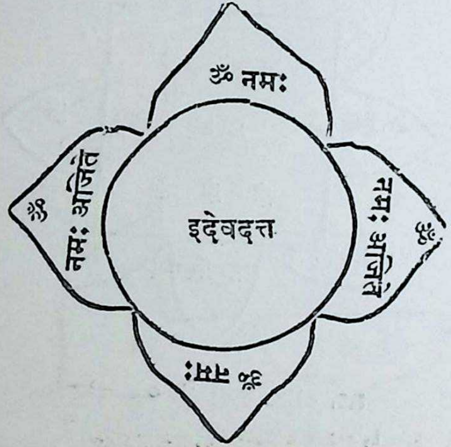
ॐ नमः
ॐ नमः अजिते
इदेवदत्त
नमः ॐ अजिते
ॐ नमः

भृत्यवश्यकरंयन्त्रम् ६३ त. २०
प. १८५ श्लो० ६८

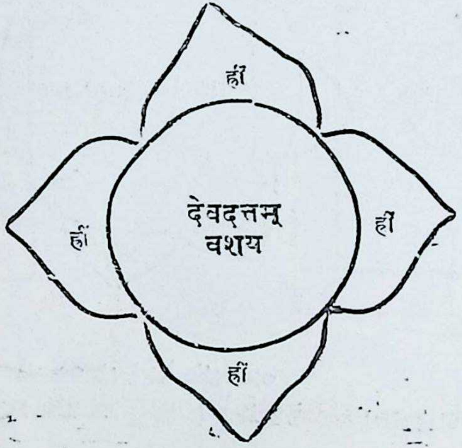
ह्रीं
ह्रीं
देवदत्तम्
वशय
ह्रीं
ह्रीं

दुष्टनृपवश्यकरंयन्त्रम् ६४
त.२०प.१८५ श्लो०७०

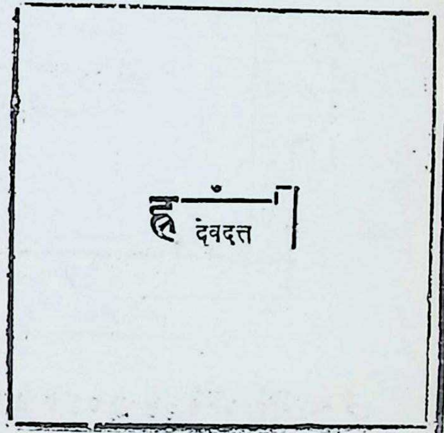

ललिताख्यंपतिवश्यकरयंत्रं ६५
त. २० प. १८६ श्लो० ७४

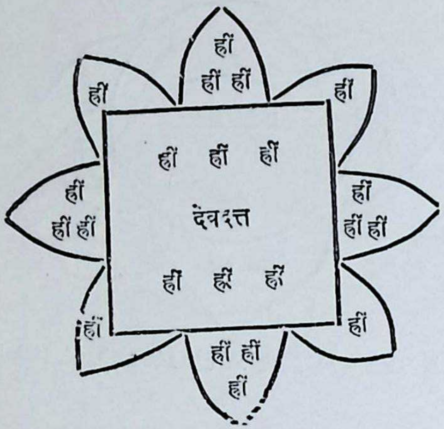
ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
देवदत्त
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं

पति वश्यकर द्वितीयं यन्त्र ६६
त. २० प. १८६ श्लो० ८०

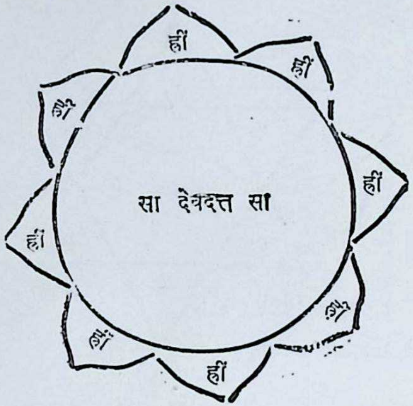
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
सा देवदत्त सा
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं

दौर्भाग्यनाशनबीजयंत्रं ६७ त. २० प. १८६ श्लो० ८२

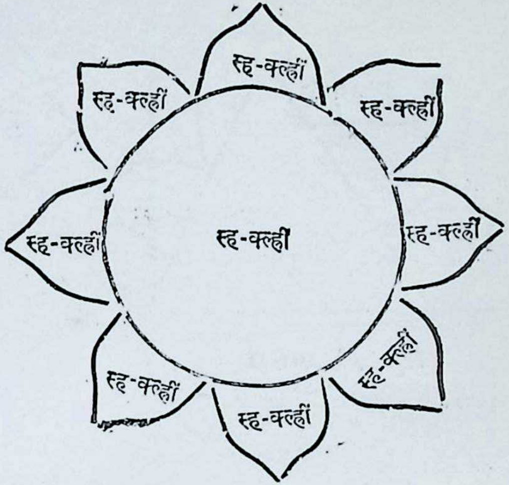
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं
स्ह-क्ल्हीं

आकर्षणयन्त्रम् ६८ त. २०
प. १८६ श्लो० ८४

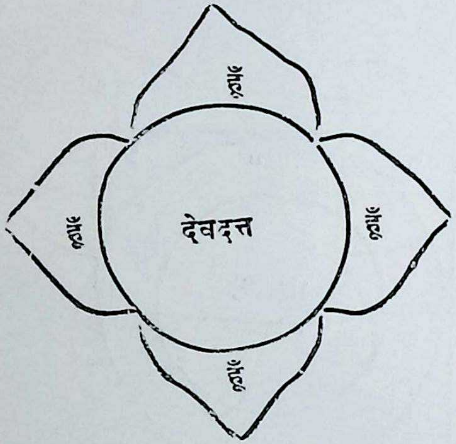
ह्रौँ
ह्रौँ
देवदत्त
ह्रौँ
ह्रौँ

त्रिपुराख्यमाकर्षणयन्त्रं ६९ त. २०
प. १८३.श्लो० ८५

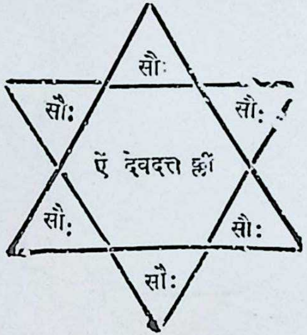
सौः
सौः
सौः
ऐं देवदत्त क्लीं
सौः
सौः
सौः

मुखमुद्रणयन्त्रं ७० त. २० प. १८६ श्लो. ८८

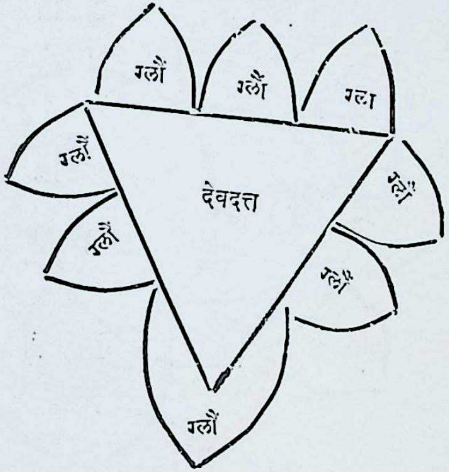
ग्लौं
ग्लौं
ग्ला
ग्लौं
देवदत्त
ग्लौं
ग्लौं
ग्लौं
ग्लौं

अग्निभयहरंयन्त्रं ७१ त. २०
प. १८७ श्लो० ९०

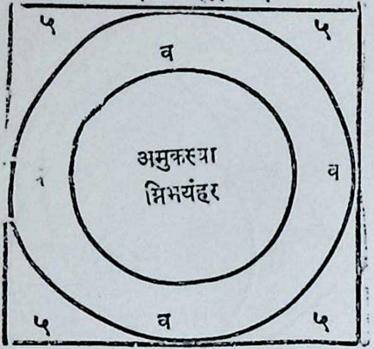
५
५
व
अमुकस्या
ग्निभयंहर
व
व
५
व
५

विद्वेषकरंयन्त्रम् ७२ त. २० प. १८७ श्लो० ९३

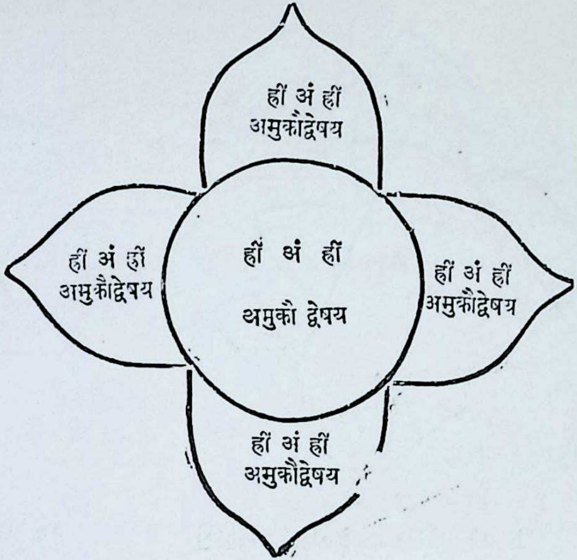
ह्रीं अं ह्रीं
अमुकौद्वेषय
ह्रीं अं ह्रीं
अमुकौद्वेषय
ह्रीं अं ह्रीं
अमुकौ द्वेषय
ह्रीं अं ह्रीं
अमुकौद्वेषय
ह्रीं अं ह्रीं
अमुकौद्वेषय

### मारणयन्त्रं ७३ त. २० प. १८७ श्लो० ९७

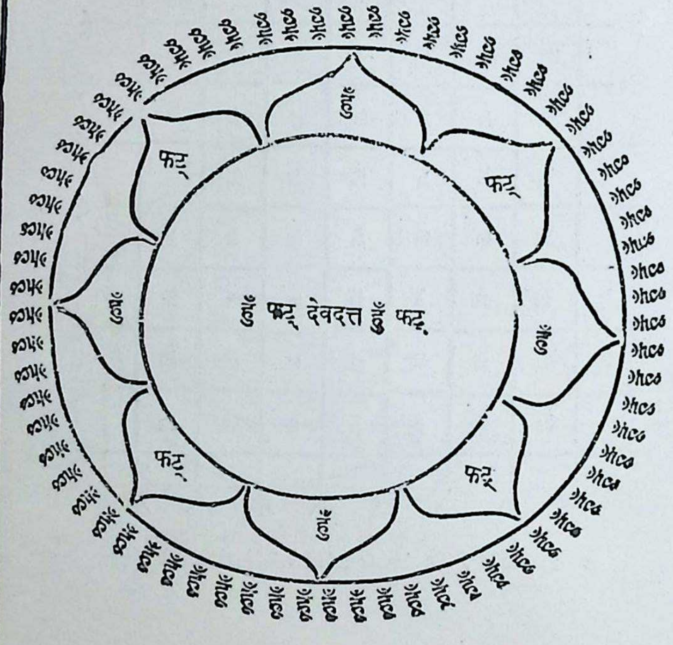
हूँ
फट्
फट्
हूँ
हूँ फट् देवदत्त हूँ फट्
हूँ
फट्
फट्
हूँ

### उच्चाटनकरंयन्त्रम् ७४ त. २० प. १८७ श्लो० १०१

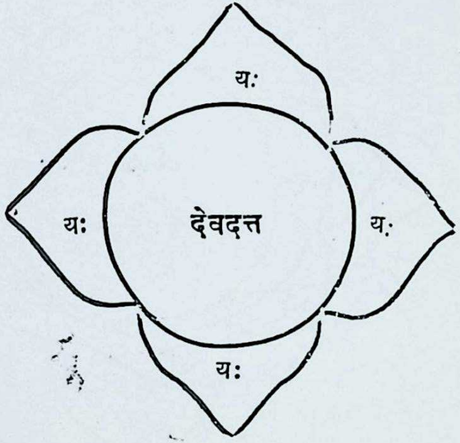

## शांतिकरंयन्त्रं ७५ त. २० प. १८८ श्लो० १०६

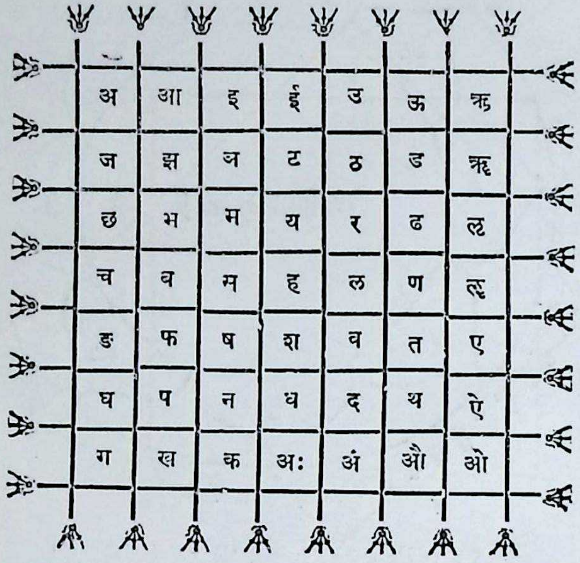

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ |
| ज | झ | ञ | ट | ठ | ड | ॠ |
| छ | भ | म | य | र | ढ | ऌ |
| च | व | म | ह | ल | ण | ॡ |
| ङ | फ | ष | श | व | त | ए |
| घ | प | न | ध | द | थ | ऐ |
| ग | ख | क | अः | अं | औ | ओ |

## शाकिनीनिवर्तकंयन्त्रं ७६ त. २० प. १८८ श्लो० ११२

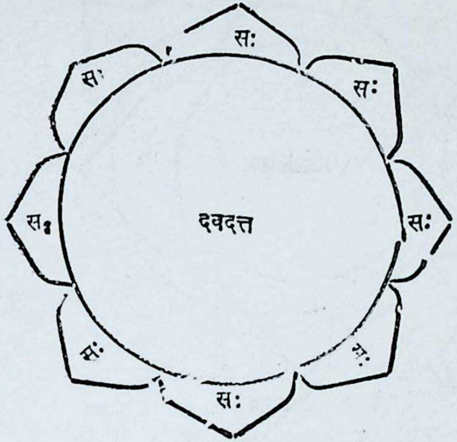
सः
सः
सः
सः
दवदत्त
सः
सः
सः
सः

ज्वरहरंयन्त्रम् ७७ त. २० प. १८८ श्लो० ११४

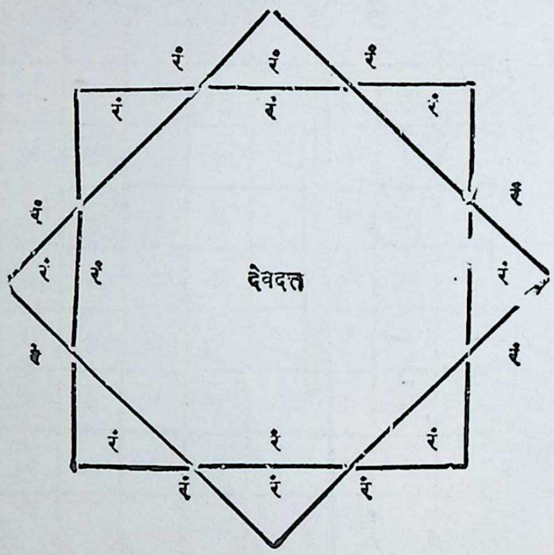
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
देवदत्त
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं
रं

सर्पभयहरंयन्त्रम् ७८ त. २० प. १८८ श्लो० ११६

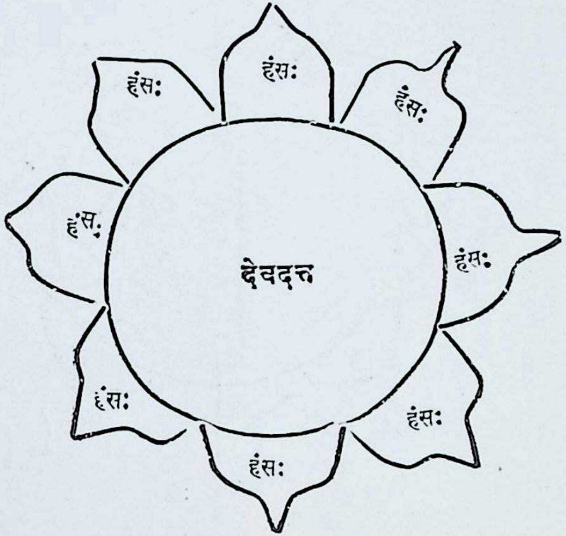
हंसः
हंसः
हंसः
हंसः
देवदत्त
हंसः
हंसः
हंसः
हंसः

बंधमोक्षकरंयन्त्रं ७२ त. २० प. १८९ श्लो० ११८

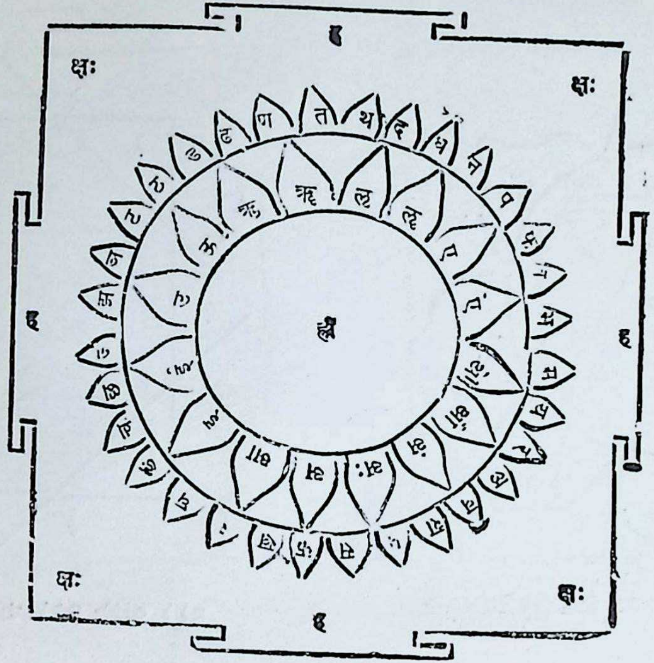
क्षः
क्षः
क्षः
क्षः
ह
ह
ह
ह

स्वगापूजनयन्त्रम् ८० त० २० प० १८९ श्लो० १२९

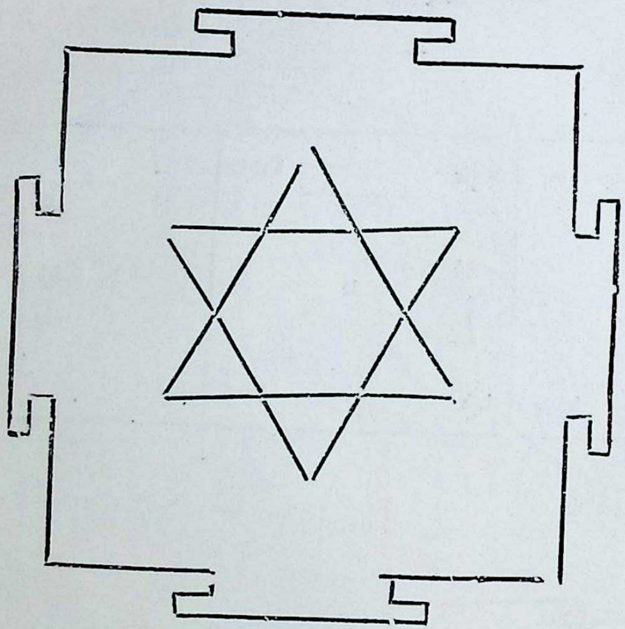

पात्रस्थापनयन्त्रम् ॥ ८१ ॥ त० २२ प० २०१ श्लोक १

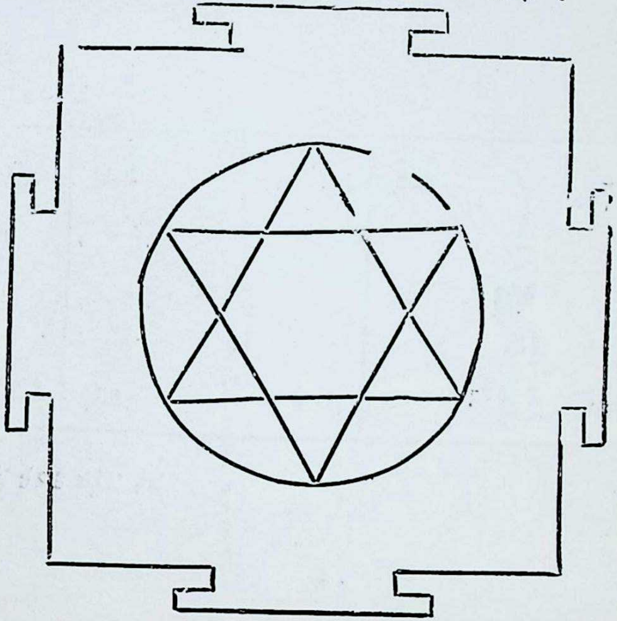

पृ. २०२ श्लो. ३९

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गणेश | | रवि | शिव | | रवि | गणेश | | विष्णु | शिव | | गणेश | रवि | | गणेश |
| | विष्णु | | | गणेश | | | रवि | | | शक्ति | | | शिव | |
| शिव | | शक्ति | विष्णु | | शक्ति | शिव | | शक्ति | विष्णु | | रवि | विष्णु | | शक्ति |

दमनपूजायन्त्रम् ८३ त० २३ प० २१३ श्लो० ११

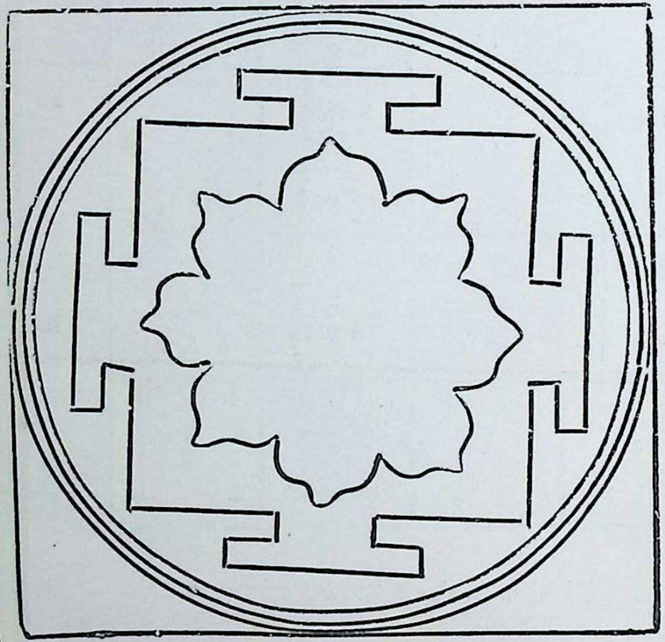

पवित्रयजनेयन्त्रं ८४ त. २२ प. २१५ श्लो. ५२

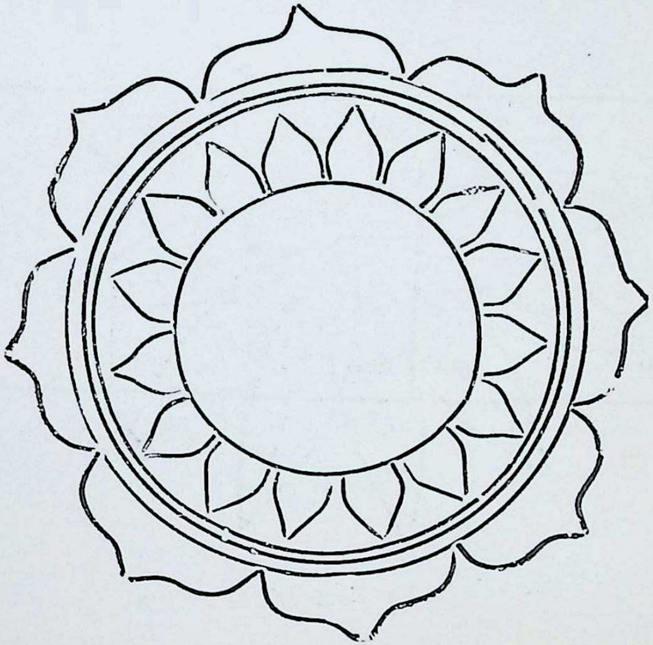

## अकथहचक्रम् ८५ त. २४ प. २१९ श्लो० ३

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ क<br>१<br>थ ह | उ ङ प<br>२<br>आ ख | आ ख<br>३<br>द क्ष | ऊ च फ<br>४ |
| ओ ड व<br>५ | ऌ झ म<br>६ | औ ठ श<br>७ | ॡ ञ य<br>८ |
| ई ध न<br>९ | ऋ ज भ<br>१० | इ ग घ<br>११ | ॠ छ ब<br>१२ |
| अः त स<br>१३ | ऐ ठ ल<br>१४ | अं ण ष<br>१५ | ए ट र<br>१६ |

## अकडम चक्रम् ८६ त. २४ प. २२० श्लो २१

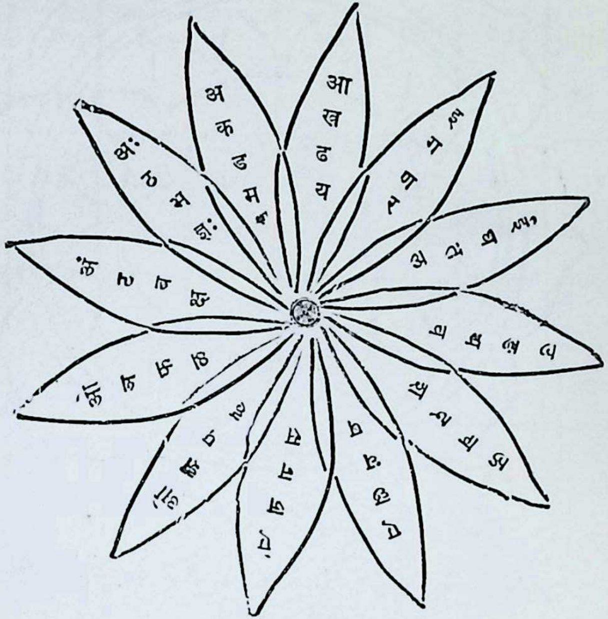

### साध्यारिशोधनेतृतीयचक्रम् ८७ त. २४ प. २२० श्लो. २५

| | |
|---|---|
| अ उ ऌ ओ<br>क ङ झ ड थ प म<br>वढ | आ ऊ ॡ औ<br>ख च ञ ढ द फ य<br>शळ |
| ई ॠ ऐ अः<br>घ ज ठ त न भ ल<br>सज्ञः | इ ऋ ए अं<br>ग छ ट ण ध व र<br>ष क्ष. |

### अशोधनचक्रम् ८८ त० २४ प. २२० श्लोकः २८

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ<br>अ आ | भ<br>इ | कृ<br>ई उ ऊ | रो<br>ऋ ॠ ऌ<br>ॡ | मृँ<br>ए | आ<br>ऐ | पु<br>ओऔ | पु<br>फ | अ<br>खग |
| म<br>घङ | पू<br>च | उ<br>छ ज | ह<br>झ ञ | चि<br>ट ठ | स्वा<br>ड | वि<br>ढण | अ<br>तथद | ज्ये<br>घ |
| मू<br>न प फ | पू<br>ब | उ<br>भ | श्र<br>म | ध<br>यर | श<br>ल | पू<br>वश | उ<br>ष<br>स ह | रे<br>क्षअंअः |

## ऋणधनशोधनचक्रम् ८९ त० २४ प. २२० श्लोकः ३२

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | २७ | २ | १२ | १५ | ६ | ४ | ३ | ५ | ८ | १ |
| अ | इ | उ | ऋ | ऌ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ | ट |
| ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ |
| ब | भ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह |
| १० | १ | ७ | ४ | ८ | ३ | ७ | ५ | ४ | १ | ७ |

मन्त्रशोधनचक्रम् ९० त. २४ प. २२२ श्लो. ५३

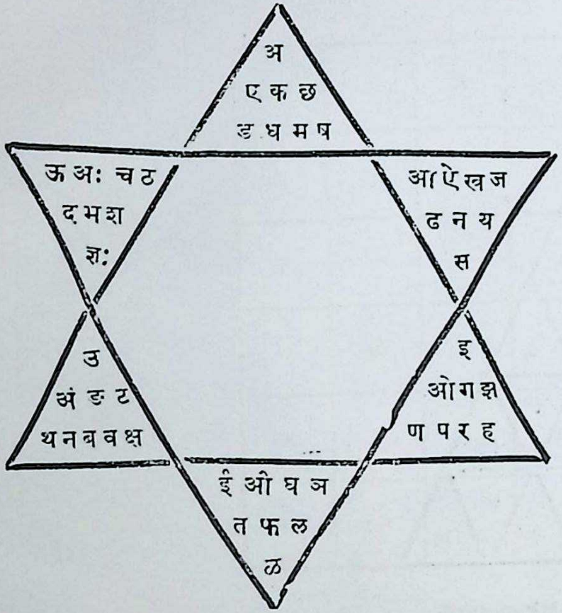
अ
ए क छ
ङ ध म ष
ऊ अः च ठ
द भ श
ञः
आ ऐ ख ज
ढ न य
स
उ
अं ङ ट
थ न ब व क्ष
इ
ओ ग झ
ण प र ह
ई औ घ ञ
त फ ल
ळ

भूतवर्णाः ९१ त. २४ प. २२३ श्लोकः ८०

| पृथ्वी | जल | अग्नि | वायु | आकाश |
|---|---|---|---|---|
| उ | ऋ | इ | अ | ऌ |
| ऊ | ॠ | ई | आ | ॡ |
| ओ | औ | ए | ऐ | अं |
| ग | घ | ख | क | ङ |
| ज | झ | छ | च | ञ |
| ड | ढ | ट | ट | ण |
| द | ध | थ | त | न |
| ब | भ | फ | प | म |
| ल | व | र | य | श |
| ळ | स | क्ष | ष | ह |

जननयन्त्रम् ९२ त. २४ प. २२४ श्लो. ९८

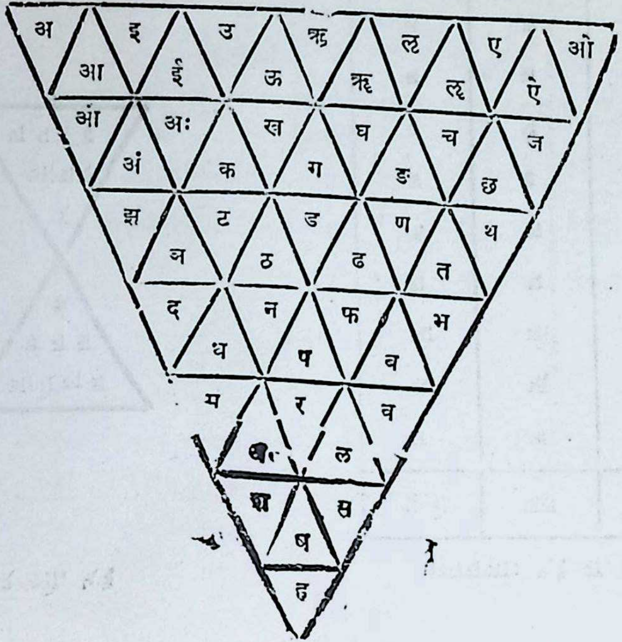
अ
आ
इ
ई
उ
ऊ
ऋ
ॠ
ऌ
ॡ
ए
ऐ
ओ
औ
अं
अः
क
ख
ग
घ
ङ
च
छ
ज
झ
ञ
ट
ठ
ड
ढ
ण
त
थ
द
ध
न
प
फ
व
भ
म
र
व
ल
श
स
ष
ह

3082

॥ श्रीः ॥

# अथ मन्त्रमहोदधिग्रन्थस्थविषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

## प्रथमस्तरंगः १.

| विषयाः | प०पृ० | |
|---|---|---|
| ग्रंथादौ मङ्गलाचरणम् .... | १ | १ |
| प्रातरारभ्य मंत्रिकृत्यवर्णनम् .... | १ | १ |
| तत्र द्वारपूजाक्रमः ... | १ | १ |
| प्राणायामविधिः ... | १ | २ |
| भूतशुद्धिः .... | १ | २ |
| प्राणप्रतिष्ठा .... | ३ | १ |
| न्यासविधिः .... | ३ | २ |
| पीठदेवतान्यासः .... | ४ | १ |
| प्राणशक्तिध्यानम् ... | ५ | १ |
| सप्तार्णमंत्रोद्धारः .... | ५ | २ |
| मातृकान्यासवर्णनम् .... | ६ | १ |
| पीठशक्त्यर्चनम् ... | ६ | २ |
| सृष्ट्यादिन्यासवर्णनम् ... | ६ | २ |
| पुरश्चरणधर्मकथनम् .... | ७ | १ |
| होमविधिवर्णनम् .... | ८ | १ |
| वह्निवार्णमन्त्रोद्धारः .... | ८ | १ |
| वह्निचतुर्विंशत्यक्षरमंत्रोद्धारः | ९ | १ |
| श्लोकमन्त्राग्निमंत्रोद्धारः ... | ९ | २ |
| जिह्वाबीजोद्धारः ... | ९ | २ |
| अग्निध्यानम् .... | १० | १ |

विषयाः प०पृ०

अग्न्यर्चनादिवर्णनम् .... १० २
अष्टभैरवनामकथनम् ... ११ १
ब्रह्ममंत्रोद्धारः .... ११ २
स्रुक्स्रुवसंस्कारः .... ११ २
शक्तित्रयम् ... ११ २
अग्निषट्संस्कारकरणम् ... ११ २
इष्टदेवपीठपूजनादिकथनम् ... १३ २
पवित्रप्रतिपत्तिः ... १३ २
तर्पणादिकथनम् ... १४ १

श्लो०२०६

## द्वितीयस्तरंगः २.

गणेशमंत्रकथनम् .... १४ २

विषयाः प०पृ०

गणेशषडक्षरमंत्रसाधनकथनम् १४ २
गणेशध्यानम् .... .... १४ २
गणेशमंत्रसिद्धिविधानम् .... १५ १
गणेशस्यपञ्चावरणपूजाविधिः... १५ १
काम्यप्रयोगसाधनम् .... १५ २
मंत्रान्तरकथनम् .... .... १५ २
अभीष्टप्रदायकएकत्रिंशद्वर्णात्मको मन्त्रः १६ १
षडक्षरोऽपरोमंत्रः .... .... १६ १
नवाक्षरोमंत्रः .... .... १६ १

विषयाः प०पृ०

उच्छिष्टविनायकविधानम् ... १६ २
कुलालवल्मीकमृत्तिकादीनांकृताप्रतिमाराज्यादिदात्रीभवति १७ १
एकोनविंशतिवर्णात्मको बलिदानमंत्रः .... १७ २
द्वादशार्णोऽपरो मंत्रः .... १७ २
नवार्णमंत्रस्यदशवर्णात्मकंद्वैविध्यम् १७ २
एकोनविंशतिवर्णात्मकउच्छिष्टविनायकमंत्रः ... १८ १
धनधान्याद्यतुलयशोदाताऽष्ट

विषयाः प०पृ०
त्रिंशदक्षरात्मक उच्छिष्टगणनाथमंत्रः .... ... १८ १
अस्यमंत्रस्यानुष्ठानेन राजसभावश्यादयस्तथा अर्युच्चाटनादयो नानासिद्धयः .... १८ २
द्वात्रिंशद्वर्णात्मकोऽपरोमंत्रः १९ २
चतुरक्षरः शक्तिविनायकमंत्रः २० १
अस्य घृताक्तान्नादिहोमेन .... अन्नलक्ष्म्यादिप्राप्तिः २० २
अष्टाविंशत्यर्णात्मको लक्ष्मीगणेशमंत्रः ... २० २
अस्यमंत्रस्य सिद्धिकरणविधिः
विषयाः प०पृ०
धनवृद्ध्यादिफलानिच २१ १
त्रयस्त्रिंशद्वर्णात्मकस्त्रैलोक्यमोहनो गणेशमंत्रः .... २१ २
अस्यमंत्रस्य कमलकुसुमादिहवनेन राजमंत्र्यादयोवशमायांति २२ २
द्वात्रिंशद्वर्णात्मकोहरिद्रागणेशमंत्रः २२ २
अस्यमंत्रस्य विधानाद्वंध्यापुत्रप्राप्त्यादिनानासिद्धयः .... २३ १
श्लोकसं० १३५

## तृतीयस्तरंगः ३.

कालिकायाद्वाविंशत्यर्णात्मकोमंत्रः २३ २
ध्यानंपीठाद्यावरणपूजा
विषयाः प०पृ०
पीठदेवता च .... २४ १
अस्यमंत्रस्यनानाविधानानिनानाफलदानि .... २५ १
अथकालीमंत्रभेदास्तत्र एकविंशत्यर्णात्मको मंत्रः .... २५ १
चतुर्दशार्णकोमंत्रो नृसुराद्याकर्षणक्षमः .... .... २५ २
द्वाविंशत्यर्णोमंत्रःवशीकरणक्षमः २६ १
पंचदशार्णमंत्रः, षडर्णमंत्रः, पंचार्णमंत्रः, सप्तार्णमंत्रश्च २६ १
द्वाविंशत्यर्णात्मको गायत्रीसुमुखीमंत्रः ध्यानंच .... २६ २
मंत्रसिद्धेर्विधानं प्रयोगफलकथनंच २७ १

विषयाः प०पृ०

श्लोकसं० ८९

## चतुर्थस्तरंगः ४.

तारामंत्रः .... .... २८ १
ताराया मंत्रांतरम् .... .... २८ १
षडंगन्यासः ... .... २८ २
ग्रहंन्यासः .... .... २९ १
ताराध्यानम् .... .... .... ३१ १
तारापीठमंत्रः .... .... ३१ २
नित्यवलिदानमंत्रः .... .... ३१ २
जलग्रहणादिमंत्रोद्धाराः .... ३२ १
भूशोधनविघ्ननिवारणमंत्रकथनम् .... ३२ २
भूतशुद्धिमंत्रकथनम् .... .... ३२ २
भूमिनिमंत्रणमंत्रः .... .... ३२ २
मंडलमंत्रः .... .... ३२ २
चित्तशोधनमंत्रः .... .... ३३ १
पुष्पशोधनमंत्रः .... .... ३३ १
अर्घस्थापनम् .... .... ३३ १
मंत्रचतुष्टयेनमहाशंखपूजा .... ३३ २
अर्कमंडलपूजा .... .... ३४ १
चंद्रमंडलपूजा .... .... ३४ २
एकादशार्णमंत्रोद्धारः .... ३४ २
तर्पणमंत्रः .... .... ३५ १
पीठेशक्तिपूजायांगणेशध्यानादिकथनम् .... .... ३५ १
नित्यपूजांतेबलिदानंद्विपंचाशदर्णमंत्रः .... .... ३६ १
तस्यमंत्रस्यप्रयोगांतरम् .... ३६ २
बलिदानेऽन्यः षोडशार्णमंत्रः ३६ २
अस्यमंत्रस्य प्रयोगांतराणि.... ३७ १
यंत्रकथनं तत्फलानिच .... ३७ १

श्लोकसं० १२४

विषयाः प० पृ०
अष्टादशवर्णात्मकःसएवमंत्रः ५० २

श्लोक० ९९

## सप्तमस्तरंगः ७.

सर्वेष्टसिद्धिदोवटयक्षिणीमंत्रः ५१ १
षडंगन्यासोंगन्यासश्च .... ५१ १
ध्यानजपहोमावरणदेवतादिकथनम् .... ५१ १
देव्याःप्रत्यक्षदर्शनादिफलकथनम् .... ५१ २
सर्वसौख्यप्रदोऽपरोयक्षिणीमंत्रः .... .... ५२ १
भूमिगतनिधिदर्शनदो मे-
विषयाः प० पृ०
खलायक्षिणीमंत्रः .... ५२ २
रोगनाशकोविशालायक्षिणीमंत्रः .... ५२ २
वाराहीमंत्रःशत्रुनिग्रहकरः .... ५२ २
वाराहिध्यानम् .... ५३ १
धूमावतीविधाने धूमावत्यष्टार्णमन्त्रः .... .... ५३ १
धूमावतीमंत्रस्यर्षिदेवतादिकथनम् .... ५३ २
धूमावतीमन्त्रफलम् .... ५३ २
कर्णपिशाचिनीमन्त्रस्तद्विधानवर्णनम् .... ५४ १
विषयाः प०पृ०
शीतलामन्त्रस्तद्विधानवर्णनम् ५४ १
स्वप्नेश्वरीमंत्रस्तद्विधानवर्णनम् ५४ २
मातंगीमंत्रविधानवर्णनम् .... ५५ १
पीठमन्त्रपीठपूजाविधिवर्णनम् .... ५५ २
वाणेशीमन्त्रस्तद्विधानवर्णनम् .... .... ५६ २
कामेशीमन्त्रस्तद्विधानवर्णनम् .... .... ५७ २

श्लोकांकाः ११२

## अष्टमस्तरंगः ८.

बालात्रिपुरामन्त्रकथनम् .... ५८ १

विषयाः प० पृ०
न्यासविधिवर्णनम् .... ५८ १
ध्यानकथनम् .... .... ५९ १
पूजामंत्रवर्णनम् .... ५९ १
पीठमंत्रकथनम् .... ५९ २
अंगपूजाकथनम् .... ५९ २
फलानुसारेण प्रयोगकल्पना ६० १
वश्यकरातिलककथनम् .... ६० २
फलांतरानुरोधाद्वचनभेदानांवर्णनम् .... ६० २
सप्तादिव्यौघवर्णनम् .... ६२ १
पंचसिद्धौघवर्णनम् .... ६२ १
त्रैपुराख्ययन्त्रकथनम् ... ६३ १

विषयाः प० पृ०
बालात्रिपुरागायत्रीमन्त्रोद्धारः ६३ १
तंत्रांतरगुप्तानांचतुर्दशबालाभेदानां चतुर्दशमंत्रकथनम् ६३ १
तेषांमंत्राणामृष्यादिकथनन् ६५ १
ध्यानवर्णनम् .... ६५ १
लघुश्यामामंत्रकथनम् .... ६५ २
न्यासकथनम् .... ६६ १
बाणेशीबीजानि ... ६६ १
अष्टमातृकान्यासः .... ६६ १
अष्टाप्सरसांनामानिन्यासश्च ६६ २
यक्षादिकन्यान्यासकथनम् .... ६६ २

विषयाः प० पृ०
मातंगीध्यानकथनम् .... ६७ १
प्रयोगकथनम् .... ६७ १
चतुःषष्टियोगिनीकथनम् .... .... ६७ २
लघुश्यामायाःद्वादशावरणपूजागायत्रीकथनंच .... ६८ १
अस्यविधानस्यनानाफलकथनम् .... .... ६८ २
श्लो० ४४

## नवमस्तरंगः ९.

अन्नपूर्णेश्वरीमंत्रः .... .... ६८ २

विषयाः प०पृ०

## पंचमस्तरंगः ५.

ब्रह्मोपासितताराविद्याकथनम् ३७ २
विष्णूपासितताराविद्याकथनम् ३८ १
विष्णूपासिताद्वितीयताराविद्या ३८ १
चतुर्मुखोपासिताविद्याद्वयकथनम् .... .... ३८ १
एकजटाविद्याद्वयम् .... ३८ १
नारायणीयाताराविद्या .... ३८ १
उक्तानामष्टविद्यानामृष्यादिकथनम् .... ३८ २
ध्यानवर्णनम् .... ३८ २
प्रयोगवर्णनम् .... ३८ २
एकजटामंत्रः .... ३८ २
नीलसरस्वतीमंत्रः .... ३९ १
नीलसरस्वत्याअपरोमन्त्रः .... ३९ २
विद्याराज्ञीमंत्रः .... ३९ २
ध्यानवर्णनम् .... ४० १
प्रयोगवर्णनम् .... ४० १
अष्टसिद्धिकथनम् .... ४० २
अष्टभैरवकथनम् .... ४० २
सप्तमातृकाकथनम् .... ४० २
चतुःषष्टिशक्तिकथनम् .... ४० २
द्वात्रिंशच्छक्तिकथनं पूजाविधिश्च .... ४१ १
षोडशशक्तिपूजनम् .... ४१ २
अष्टसरस्वतीपूजनंमंत्राश्च .... ४१ २
डाकिन्यादिषण्णांपूजनम् .... ४३ १
परादितिसृणांपूजनम् .... ४३ २
तारेशीपूजनफलकथनम् .... ४३ २
तारेश्याःसात्त्विकादित्रिविधध्यानानि ४३ २

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| अस्यमंत्रस्यनानाफलकथनम् | ४३ | २ |
| श्लोकांकाः २५ | | |
| षष्ठस्तरंगः ६. | | |
| छिन्नमस्तामंत्रः .... | ४४ | २ |
| अस्त्रमंत्रः .... | ४५ | १ |
| ध्यानवर्णनम् .... | ४३ | १ |
| अस्यमंत्रस्यप्रयोगकथनम् | ४५ | १ |
| पीठस्थनवदेवताकथनं पूजनविधिश्च .... | ४५ | १ |
| पीठमंत्रःशिवापूजनविधिरावरणदेवताश्च .... | ४५ | २ |
| अस्याविधानस्यनानासिद्धिकथनम् .... | ४६ | १ |
| प्रयोगांतरेणफलकथनम् .... | ४६ | २ |
| छिन्नमस्तायाउत्कीलनम् .... | ४७ | १ |
| रेणुकाशबरीविद्यामंत्रः .... | ४७ | १ |
| ध्यानवर्णनंजपादिपूजाविधानंच .... | ४७ | १ |
| विवाहसिद्धिदःस्वयंवरकलामंत्रः .... | ४७ | २ |
| अस्यमंत्रस्यषडंगन्यासप्रकारः | ४८ | १ |
| ध्यानवर्णनंपूजाविधानंच .... | ४८ | १ |
| समृद्धिप्रदोमधुमतीमंत्रः .... | ४८ | २ |
| ध्यानंपूजनादिविधिश्च .... | ४९ | १ |
| नानाभोगप्रदोऽपरोमधुमतीमंत्रः | ४९ | १ |
| इष्टप्राप्तिदःप्रमदामंत्रः .... | ४९ | २ |
| ध्यानजपपूजादिविधानंच .... | ४९ | २ |
| प्रमोदादर्शनदःप्रमोदामंत्रः.... | ४९ | २ |
| कार गृहमोक्षणक्षमोबंदीमंत्रः | ५० | १ |
| ध्यानजपपूजाप्रकारादि .... | ५० | १ |
| प्रयोगांतरकथनम् .... | ५० | २ |

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| ध्यानवर्णन | ६९ | १ |
| जपहोमपूजादिकथनम् | ६९ | १ |
| शिववाराहमाधवमंत्रकथनम् | ६९ | १ |
| श्रीबीजभूवजादिकथनम् मंत्रफलकथनंच | ७० | १ |
| माहेश्वर्यन्नपूर्णामन्त्रः | ७० | २ |
| अपरोमन्त्रः | ७० | २ |
| प्रसन्नपारिजातेश्वर्यन्नपूर्णामन्त्रः | ७० | २ |
| प्रसन्नवरदान्नपूर्णामन्त्रः | ७१ | १ |
| त्रैलोक्यमोहनगौरीमन्त्रः | ७१ | १ |
| षडंगकथनप्रकारोऽपरः | ७१ | २ |
| ध्यानजपहोमाद्यनुष्ठानफलकथनंच | ७१ | २ |
| रविमंडलमध्यस्थदेव्यनुष्ठानफलंच | ७२ | १ |
| मंत्रषट्ककथनम् | ७२ | १ |
| साध्यनक्षत्रवृक्षेसाध्याकृतिप्रयोगः | ७२ | २ |
| ज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रः | ७२ | २ |
| मंत्राक्षरन्यासकथनम् | ७३ | १ |
| ध्यानंपीठदेवतागायत्र्यादिकथनम् | ७३ | १ |
| अन्नदमंत्रकथनम् | ७३ | २ |
| वैष्णवीया अष्टपीठशक्तयः | ७४ | १ |
| बलाकादयोऽन्या अष्टशक्तयः | ७४ | २ |
| कुबेरमंत्रोद्धारःध्यानादिच | ७४ | २ |
| प्रत्यंगिरामंत्रः | ७५ | १ |
| ध्यानप्रयोगादिकथनम् | ७५ | २ |
| बलिमंत्रपूर्वकंबलिदानम् | ७६ | १ |
| दिक्षुबलिदानप्रकारकथनम् | ७६ | १ |
| प्रत्यंगिरामालामंत्रः | ७६ | २ |
| ध्यानजपादिमंत्रसिद्धिकथनम् | ७६ | २ |

विषयाः प० पृ०

शत्रुनाशकमंत्रः .... .... ७७ १
षडंगक्रमेणध्यानवर्णनम् .... ७७ २
अस्यमंत्रस्यप्रयोगकथनम् .... ७८ १

श्लो० १३२

## दशमस्तरंगः १०.

बगलामुखीमंत्रः .... ७८ २
ध्यानजपादिविधानम् .... ७९ १
अष्टषोडशपीठदेवताकथनम् .... .... ७९ १
अस्यमंत्रस्यनानाविधानेननानासिद्धयः .... ७९ २
यंत्रादिसाधनप्रकारः .... ८० १
स्वप्नवाराहीजनवशकरणोमन्त्रः .... ८० २
ध्यानजपपीठदेवतादिपूजाकथनम् .... ८१ १
यंत्रादिप्रयोगसाधनकथनम् .... ८१ २
सिद्धिप्रदमहायंत्रकथनम् .... ८२ १
दिक्पालानांबीजानि.... .... ८२ १
वार्तालीमंत्रः .... .... ८२ २
ध्यानजपपीठदेवतापूजादिकथनम् ८३ १
वाराहीमंत्रकथनम् .... .... ८४ १
योगिनीगणेशादीनांमंत्राः.... ८४ २
बटुकस्यबलिमंत्रः .... .... ८४ २
क्षेत्रपालबलिमंत्रकथनम् .... ८४ २
योगिनीगणेशादीनांबलिमंत्रकथनम् .... ८५ १
तत्तद्देवतानांमुद्राकथनम् ८५ १
एषांमंत्राणांसाधनप्रकारः .... .... ८५ २
शकटाभिधंमहादेव्यायंत्रम् .... .... ८५ २
शत्रुवाक्स्तंभनविधानम् .... ८६ १

श्लो० ११९

विषयाः प० पृ०

## एकादशस्तरंगः ११.

मंगलपूर्वकंश्रीविद्याकथनम् .... ८६ २
आदौमंत्रोद्धारः .... ८६ २
कूटत्रयकथनंतत्संज्ञाच .... ८६ २
षोडशाक्षरीत्रिपुरसुंदरीश्रीविद्याकथनम् .... ८७ १
मुन्यादिन्यासकथनम् .... ८७ १
आसनबीजमुद्रादिन्यासकथनम् .... ८८ १

विषयाः प० पृ०

वर्णन्यासःसंमोहनन्यासश्च .... ८८ १
सृष्टिन्यासःस्थितिन्यासः पंचावृत्तिन्यासश्च .... ९० २
टीकायांषोढान्यासकथनम् .... ९१ १
गणेशमातृकान्यासः ... ९१ २
ग्रहमातृकान्यासः .... ९१ २
नक्षत्रमातृकान्यासः .... ९२ १
योगिनीमातृकान्यासः .... ९२ १
राशिमातृकान्यासः .... ९२ २

विषयाः प० पृ०

पीठमातृकान्यासः .... ९२ २
वश्यादिचतसृणां मुद्राणांलक्षणानि .... ९३ २
ध्यानजपपूजादिप्रकारः तदंतर्गतमंत्राश्च .... ९४ १
धूम्रार्चीदीनामग्नेर्दशकलानामर्चनकथनम् .... ९४ २
कलशार्चनमंत्रः .... ९५ १
तापिन्यादिद्वादशसूर्यकलाकथनम् .... ९५ १

विषयाः प० पृ०
अमृतादिषोडशचन्द्रकलाकथनम् .... ९५ २
भैरवमन्त्रःसुधादेवीमन्त्रश्च .... ९६ १
अष्टवर्णमंत्रकथनम् .... ९६ २
ज्योतिर्मयीदेव्यायजनप्रकारः .... ९६ २
मायाकलादितत्त्वानां कथनम् .... ९७ १
पीठमन्त्रोद्धारः .... ९७ २
पुष्पांजालिमन्त्रः .... ९८ १
विषयाः प० पृ०
तर्पणध्यानादिकथनम् .... ९८ २
श्लो० १११.

द्वादशस्तरंगः १२.

श्रीविद्यायाःपरिवारपूजनप्रकारः .... ९८ २
पंचदशनित्यादेवीमन्त्रास्तेषुकामेश्वरीमंत्रः ... ९९ १
भगमालिनीमंत्रः .... ९९ २
नित्याक्लिन्नामंत्रः .... ९९ २
भेरुंडामंत्रः ... १०० १
विषयाः प० पृ०
वह्निवासिनीमंत्रः .... १०० १
महाविद्येश्वरीमंत्रः .... १०० १
शिवदूतीमंत्रः त्वरितामंत्रः... कुलसुन्दरीमन्त्राश्च .... १०० १
नित्यानीलपताकिनीविजयानां मन्त्राश्च .... १०१ १
सर्वमंगलाज्वालामालिनीविचित्राणां मंत्राः .... १०१ २
आसांमध्येत्रिपुरसुन्दर्या यजनम् .... १०१ २
नानाविधगुरुकथनंतेषांपू- ....

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| जनप्रकारश्च … | १०२ | १ |
| आम्नायेदेवतायजनम् … | १०२ | २ |
| देवतापंचपंचकयजनप्रकारः.... | १०२ | २ |
| प्रथमपंचके लक्ष्म्यादिमंत्रदेवताकथनम् .... | १०२ | २ |
| द्वितीये कोशपंचकेपरंज्योतिर्देवताकथनम् .... | १०३ | २ |
| तृतीयेकल्पलतापंचके देवताकथनम् .... | १०४ | १ |
| चतुर्थकामधेनुपंचके देवताकथनम् .... | १०४ | २ |
| पंचमेरत्नपंचके देवताकथनम् .... | १०५ | १ |
| षड्दर्शनयजनप्रकारः .... | १०५ | २ |
| नवावरणपूजनाविधिः .... | १०६ | १ |
| होमविधानबटुकादिबलिदानप्रकारः .... | ११० | १ |
| साधकाभीष्टसिद्धिदाः प्रयोगाः .... | ११० | १ |
| टीकायांकूटत्रयस्यपद्धात्रिंशद्भेदकथनम् .... | १११ | १ |
| गोपालसुन्दरीमंत्रः .... | १११ | २ |
| अस्यमन्त्रस्यन्यासत्रयकथनम् .... | ११२ | २ |
| ध्यानजपादिपीठपूजाविधानम् | ११३ | १ |
| श्लो० १७३ | | |

## त्रयोदशस्तरंगः १३.

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| हनूमन्मन्त्रकथनम् .... | ११३ | २ |
| हनूमद्द्वादशाक्षरमंत्रकथनम् .... | ११३ | २ |
| तस्यर्ष्यादिजपांतसाधनकथनम् .... | ११४ | १ |
| फलपरत्वेनप्रयोगविधिवर्णनम् | ११४ | २ |
| विद्वेषणवश्यादिषुमंत्रयोजना | ११६ | १ |
| हनूमद्यंत्रकथनम् .... | ११६ | २ |
| हनूमन्मालामंत्रकथनम् .... | ११७ | १ |
| हनूमन्मंत्रांतरकथनम् .... | ११८ | २ |

विषयाः प०पृ०
षडङ्गन्यासादिकथनम् .... ११८ २
हनूमन्मंत्रांतरतद्विधिविविधप्रयोगवर्णनम् .... ११९ १
उदररोगनाशकमंत्रकथनम् .... ११९ २
प्लीहरोगनाशकप्रयोगकथनम् १२० १
शत्रुविजयकरप्रयोगकथनम् .... १२० १
हनूमद्यंत्रकथनम् .... १२० २
हनूमदष्टाक्षरमंत्रः .... १२० २
हनूमन्मालामंत्रः .... १२० २
अष्टार्गमालामंत्रयोः स्वतंत्रत्वकथनम् .... १२१ १
श्लो० २२१

### चतुर्दशस्तरंगः १४.

विषयाः प०पृ०
विष्णुमंत्रकथनम् .... १२१ १
नारसिंहैकाक्षरमंत्रकथनम् .... १२१ १
त्र्यर्णमंत्रद्वयकथनतदृषिच्छंदआदिकथनंच .... १२१ २
उक्तमंत्रप्रयोगविधिवर्णनम् .... १२२ १
मन्त्रप्रभावाद्वैरिमरणेप्रायश्चित्तकथनम् .... १२२ २
नृसिंहाष्टाक्षरमंत्रतद्विधिकथनम् .... १२२ २
नृसिंहत्रिंशदर्णमंत्रतद्विधिकथनम् .... १२३ १
नृसिंहनवनवत्यक्षरमंत्रतद्विधिकथनम् .... १२३ २
अभयनृसिंहमंत्रकथनम् .... १२४ २
गोपालदशाक्षरमंत्रकथनम् .... १२४ २
पंचांगन्यासवर्णन्यासध्यानकथनम् .... १२५ १
पीठपूजाप्रकरणकथनम् .... १२५ १
फलपरत्वेन प्रयोगांतरकथनम् १२५ २
द्वितीयगोपालाष्टवर्णमंत्रतद्विधिपीठपूजाप्रकारकथनम् १२६ १
स्त्रीवशीकारिगोपाल-

विषयाः प०पृ०
मंत्रकथनम् .... १२७ १
गोपालद्वादशाक्षरमंत्रकथनंतद्विधिश्च .... १२७ १
अष्टाक्षरगोपालमंत्रतद्विधिकथनम् .... १२७ २
चतुरक्षरकृष्णमन्त्रतद्विधिकथनम् .... १२८ १
पुत्रप्रदकृष्णमन्त्रतद्विधिवर्णनम् .... १२८ २
विषहरोगरुडमंत्रःतद्विधिवर्णनम् .... १२८ २
पठिं३ त ... १२९ २
विषयाः प० पृ०
श्लो० १३०

## पंचदशस्तरंगः १५.

रोगदारिद्र्यनाशनोरविमंत्रः ....१२९ २
षडङ्गाष्टांगपंचांगवर्णमंडलाग्निषामहंसग्रहात्मका अष्टन्यासाः १३० १
ध्यानावरणादिपूजाकथनम् .... १३१ २
अर्घ्यदानप्रकारवर्णनम् .... १३२ २
सुतधनप्रदोमंगलमंत्रस्ताद्विधिवर्णनम् .... १३३ १
पुत्रप्राप्तिकरंभौमव्रतम् .... १३३ २
अंगारकगायत्रीकथनम् .... १३५ १
गुरुमंत्रस्तद्विधिकथनंच .... १३५ १
विषयाः प०पृ०
शुक्रमंत्रस्तद्विधिश्च .... १३६ १
व्यासमंत्रःमृत्युजयपुटितेन सहितः .... .... १३६ २
श्लो० १०८

## षोडशस्तरंगः १६.

महामृत्युंजयमंत्रः( संजीविनीविद्या ) .... १३७ २
मुनिन्यासवर्णादिन्यासविधिकथनम् .... १३८ १
ध्यानवर्णनम् .... १३९ २
दशावरणपूजाप्रकारः .... १४० १
प्रयोगकथनम् .... १४१ १

विषयाः प०पृ०
रुद्रजपांगभूतोऽपरोदशार्णमंत्रः १४१ २
रुद्रविधानेएकविंशतिऋचात्मकन्यासः .... १४१ २
अक्षरादिन्यासकथन .... १४३ १
रुद्रपूजनप्रकारःअष्टकानिच .... १४४ १
नागानांवर्णजातिफणादिकथनम् १४५ २
कुबेरमंत्रस्तद्विधिश्च .... १४६ १
सर्वदारिद्र्यनाशनोऽपरःकुबेरमंत्रः .... १४६ २
गंगामंत्रास्तद्विधिश्च ... १४६ २
मणिकर्णिकामंत्रौ .... १४७ २
श्लो० १३६
विषयाः प०पृ०

## सप्तदशस्तरंगः १७.

अभीष्टसिद्धिदःकार्तवीर्यार्जुनमंत्रः .... १४८ २
अस्यमंत्रस्यन्यासकथनपूर्वकपूजाप्रकारः .... १४९ १
दशदलात्मकेयंत्रेबीजादिस्थापनम् .... १५० २
नानाप्रयोगसाधनम् .... १५१ १
दशमंत्रभेदानांकथनम् .... १५१ २
मंत्रांतरकथनम् .... १५२ २
हृतनष्टलाभदोऽन्योमंत्रः .... १५३ १
कार्तवीर्यार्जुनगायत्री .... १५३ १
विषयाः प० पृ०
अखिलेप्सितदीपाविधानकथनम् .... १५३ १
देवानांतोषकराणिनमस्कारादान ... १५७ १
श्लो० ११७

## अष्टादशस्तरंगः १८.

कालरात्रिमंत्रस्तद्विधिकथंनच १५७ १
पूजायंत्रप्रकारःआवरणदेवताश्च १५८ १
वशीकरणांगत्वेनजलौकापूजनम् .... १५९ १
स्तंभनकथनमंत्र .... १६० १
मोहनंतस्यमंत्रश्च .... १६१ १

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| आकर्षणंतद्विधिकथनम् | १६१ | २ |
| उच्चाटनमंत्रस्तद्विधिकथनंच | १६२ | २ |
| विद्वेषणंतत्प्रयोगश्च | १६३ | १ |
| मारणमंत्रःपुत्तलीकरणविधिश्च | १६४ | १ |
| अथचंडीविधानम् | १६४ | २ |
| नवार्णमंत्रस्यदेवतादिकथनम् | १६५ | १ |
| सारस्वताद्येकादशन्यासास्तेषांफलानिच | १६५ | १ |
| त्रैलोक्यविजयकरोमातृगणन्यासः | १६५ | २ |
| अन्येन्यासास्तेषांफलानि | १६६ | १ |
| महाकाल्यादितिसृणांध्यानानि | १६७ | १ |
| आवरणदेवताकथनंपूजनंच | १६७ | २ |

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| चरित्रत्रयनित्यपठनस्यफलम् | १६८ | १ |
| शतचंडीविधानम् | १६८ | २ |
| जपकर्तॄणांदेयवस्तून | १६९ | १ |
| नवार्णमंत्रजपप्रमाणम् | १६९ | २ |
| कन्यकापूजनप्रकारस्तासांमंत्राश्च | १६९ | २ |
| पंचमदिनेहवनकृत्यम् | १७० | १ |
| शतचंडीविधानस्यफलकथनम् | १७० | २ |
| सहस्रायुतादिचंडीविधानंफलच | १७१ | १ |
| श्लो० २१२ | | |

## एकोनविंशस्तरंगः १९.

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| कुक्कुटमंत्रकथनम् | १७१ | २ |
| ध्यानवर्णनंबलिदानप्रकारश्च | १७२ | १ |

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| नृपवश्यादिफलकथनम् | १७२ | २ |
| शत्रूच्चाटनंप्रयोगांतरकथनम् | १७३ | १ |
| प्रयोगांतराणि | १७३ | २ |
| शत्रोर्गोमयमूर्तिकरणप्रयोगः | १७४ | १ |
| उपासकसमृद्धिदः शास्तृमंत्रस्तद्विधिश्च | १७४ | २ |
| पार्थिवलिंगविधानं बालगणेश्वरमंत्रश्च | १७५ | १ |
| लिंगमानकथनंकुमारमंत्रश्च | १७६ | १ |
| ध्यानंपूजाविधिःआवरणदेवताश्च | १७६ | २ |
| हरादिमंत्रकथनम् | १७७ | १ |
| लक्षलिंगपूजाफलकथनम् | १७७ | २ |

विषयाः प०पृ०
लिंगपूजायानानाफलानि .... १७८ १
नरकरोधकरो यमधर्ममंत्रः ध्यानादि च .... १७८ २
चित्रगुप्तमंत्रस्तद्विधिश्च .... १७९ १
आसुरीमंत्रःध्यानं तद्विधिश्च .... १७९ २
अस्य मंत्रस्यनानाफलानि .... १८० १
ग्रंथकर्तुर्मंत्रकथनोपसंहारविषयकप्रार्थना .... १८१ १

श्लो० १४९

## विंशस्तरंगः २०

यंत्राणांकथनंतत्र यंत्रसाधारणी क्रिया ... १८१ १
यंत्रावयवाःगायत्रीकथनं च .... १८१ २
भूतलिपिकथनम् .... १८२ १
वश्यकरयंत्रकथनम् .... १८२ १
वशीकरणंद्वितीयंतृतीयंयंत्रम् १८२ १
चतुर्थस्तंभनयंत्रम् .... .... १८३ १
पंचमंराजमोहनयंत्रम् ... १८३ २
षष्ठंमृत्युंजययंत्रम् .... १८३ २
जयावहसप्तमयंत्रकथनम् .... १८४ १
धनिवश्यकराष्टमयंत्रकथनम् .... १८४ १
दुष्टमोहने नवमयंत्रकथनम् .... १८४ १
जयदंदशमयंत्रकथनम् .... १८४ २
एकादशंगणेशयंत्रकथनम् ..., १८४ २
द्वादशंनृपवश्यकरयंत्रकथनम् .... .... १८५ १
भृत्यवशंकरदुष्टवशंकरे त्रयोदशचतुर्दशे यंत्रे .... १८५ २
ललितायंत्रंच .... .... १८६ १
सुंदरीयंत्रमाकर्षणयंत्रं च ... १८६ २
त्रिपुरायंत्रंमुखमुद्रणयंत्रंच .... १८६ २
एकविंशतितममाग्निभययहरं यंत्रम् .... १८७ १
विद्वेषणयंत्रकथनम् .... १८७ १
मारणोच्चाटनेयंत्रे .... १८७ २
शांतिकरंपंचविंशतितमयंत्रकथनम् .... १८८ १

विषयाः प० पृ०
शाकिनीनिवर्तकयंत्रम् .... १८८ २
ज्वरहरंसप्तविंशंयंत्रम् .... १८८ २
सर्पभयहरमष्टाविंशतितमंयंत्रम् .... १८८ २
बंधमोक्षकृदेकोनविंशंयंत्रम् ... १८९ १
सिद्धयंत्रेषुमातृकादीनांपूजावीधिः ... १८९ १
स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः ... १८९ २
श्लो० १३१

## एकविंशस्तरंगः २१.

नित्यपूजाविधिकथनम् .... १९० १
श्लोकद्वयेनेष्टदेवताप्रार्थनम् .... १९० २
विषयाः प० पृ०
आंतरबाह्यस्नानकथनम् .... १९० २
मंत्रस्नानकथनम् .... १९० २
देवमनुष्यपितृतर्पणम् .... १९१ २
वैष्णवशैवयोस्तिलकाविधिः .... १९१ २
मंत्रसंध्याविधिः .... १९२ २
द्वारपालपूजनम् .... १९३ १
पूजागृहप्रवेशोत्तरमासनादिविधिः १९४ २
सुदर्शनमंत्रः .... १९५ २
ध्यानादिकथनम् .... १९६ १
मातृकान्यासकथनम् .... १९६ १
षडंगन्यासः .... १९७ १
विष्णुध्यानादिकथनम् .... १९७ १
विषयाः प० पृ०
गणेशमातृकान्यासः .... १९८ १
गणेशध्यानादिकथनम् .... १९८ १
कलामातृकाषडंगन्यासकथनम् १९९ १
विष्णवाद्यंगमुद्राकथनम् .... १९९ २
पीठन्यासकथनम् .... २०० १
स्वागताद्युपचारैर्मानसपूजाविधिकथनम् ... २०० २
श्लो० १८०

## द्वाविंशस्तरंगः २२.

नित्यार्चनाविधिवर्णनम् .... २०१ १
घटस्थापनप्रकारवर्णनम् .... २०१ १
देहमयपीठेऽन्तर्यागकरणविधिः २०२ २

विषयाः प० पृ०
बाह्यपूजनेपीठादिपूजाविधिवर्णनम् .... २०३ १
पीठशक्तिध्यानकथनम् .... २०३ २
पंचायतनपूजाविधिवणनम् .... २०३ २
आवाहनाद्युपचारमंत्रमुद्रादिकथनम् .... २०४ १
पाद्यद्रव्यकथनम् .... २०५ १
आचमनीयद्रव्यकथनम् .... २०५ १
अर्घ्यद्रव्यकथनम् .... २०५ १
मधुपर्कद्रव्यकथनम् .... २०५ १
स्नानवस्त्राभरणाद्युपचारकथनम् २०५ २

विषयाः प०पृ०
विहितनिषिद्धपुष्पपूजाकथनम् २०६ १
आवरणपूजाप्रकारप्रयोगकथनम् .... २०७ १
धूपदीपविधिविशेषकथनम् .... २०८ १
नैवेद्यसमर्पणविधिवर्णनम् ... २०८ २
उच्छिष्टभोजिदेवताकथनम् ... २१० २
आरार्तिकतांबूलाद्युपचारकथनम् २१० २
देवपरत्वेन प्रदक्षिणासंख्याकथनम् .... २११ १
ब्रह्मार्पणमंत्रकथनम् .... २११ १
देवस्य संहारमुद्रयाहृदयेस्थापनम् २११ २
ब्रह्मयज्ञपूर्वकयोगक्षेमादिकथनम् २११ २

विषयाः प०पृ०
पूजाया आवश्यकत्वादिकथनम् .... २११ २
साधनाभाविनीत्रासंदौबौंधीसूतक्यातुरीभेदेनपंचप्रकारपूजाकथनम् .... २१२ १
श्लो० १७९

### त्रयोविंशस्तरङ्गः २३.

पवित्रदमनार्चनविधिवर्णनम् .... २१२ २
तत्र कामरतिमंत्रकथनम् .... २१३ १
कामनामकथनम् .... २१३ २
पूजाद्रव्यकथनम् .... ११३ २
कामगायत्रीकथनम् .... २१३ २
दमनेन देवपूजाविधिकथनम्.... २१४ १

विषयाः प०पृ०

पवित्रविधिकथनम् ... २१४ २
अधिवासनकथनम् .... २१५ २
पवित्रकेणभगवदाराधनाविधिवर्णनम् .... २१६ २
पवित्रधारणविधिकथनम् .... २१७ १
पवित्रार्पणकालनिर्णयः .... २१७ १
देवोत्सवविशेषमासकालकथनम् .... २१७ १

श्लो० १००

### चतुर्विंशस्तरंगः २४.

मन्त्रशुद्धिप्रकरणम् .... २१८ २
सिद्धादिचक्रकथनम् .... २१८ २

विषयाः प०पृ०

सिद्धादिकोष्ठफलकथनम् ... २१९ २
प्रकारांतरेणसिद्धादिकथनम् .... २१९ २
अकडमचक्रकथन .... २२० १
प्रकारांतरकथनम् .... २२० २
नक्षत्रेषुवर्णविभागकथनम् .... २२० २
ऋणधनशोधनवर्णनम् ... २२० २
प्रकारांतरेणऋणधनशोधनम् .... २२१ २
पुनःप्रकारांतरवर्णनम् .... २२१ २
मन्त्रस्य ऋणित्वेहेतुकथनम् .... २२२ १

विषयाः प०पृ०

प्रकारांतरेण मन्त्रशोधनवर्णनम् .... २२२ १
शोधनानपेक्षमन्त्रकथनम् .... २२२ १
अरिमन्त्रत्यागप्रकारकथनम्.... २२२ १
मन्त्रत्रैविध्यकथनम् .... २२३ १
बाल्यतारुण्यवार्द्धक्येषुसिद्धिदामन्त्राः .... २२३ १
वर्णानांजलाग्नेयादिसंज्ञाः .... २२३ २
वर्णानांस्वकुलान्यकुलत्वम् .... २२४ १
पुनर्मंत्रत्रैविध्यकथनम् .... २२४ १

विषयाः प० पृ०

मन्त्रदोषशांत्यर्थमन्त्रस्यसंस्कारदशककथनम् .... २२४ २

मन्त्रस्यजननम् .... २२४ २

दीपनबोधनताडनाभिषेकाविमलीकरणानि .... २२५ १

जीवनतर्पणगोपनाप्यायनानि .... २२५ १

कलौयेसिद्धिप्रदामन्त्रास्तेषांकनथम् .... २२५ २

विप्रादित्रिवर्णेभ्योदेयामन्त्राः २२६ १

विषयाः प० पृ०

विप्रक्षत्रियेभ्योदेयामन्त्राः .... २२६ १

वर्णचतुष्टयायदेयामन्त्राः .... २२६ १

वर्णानुक्रमेणबीजाक्षरदानकथनम् .... २२६ १

अथसाधारणहोमद्रव्यकथनम् ... २२६ २

ग्रहणादौसंक्षेपपुरश्चरणप्रकाराः .... २२७ १

श्लो० १३१

## पञ्चविंशस्तरंगः २५.

शांत्यादिषट्कर्मणामुपक्रमः .... २२७ १

विषयाः प० पृ०

कर्मणादेवताद्येकोनविंशतिपदार्थकथनम् ... २२७ २

देवतास्तासां वर्णा ऋतवोदिशश्च २२७ २

कर्मानरूपदिनासनादिकथनम् २२८ १

विन्यासकथनम् .... २२८ १

जलादिमण्डलकथनम् .... २२९ १

पद्मादिषणमुद्राकथनम् .... २२९ १

मृगयादिहोममुद्राकथनम् .... २२९ २

कर्मानुरूपवर्णानांकथनम् .... २२९ २

| विषयाः | प० | पृ० |
|---|---|---|
| जातिरूपवर्णकथनम् .... | २३० | १ |
| भूतोदयकथनंसमित्कथनंच .... | २३० | १ |
| मालाकथनं मालागणनाप्रकारः मणिसंख्याच .... | २३० | २ |
| शांत्यादिकर्मणिअग्निकथनम् .... | २३० | २ |
| प्रसंगात्काष्ठकथनमग्निजिह्वापूजनंच .... .... | २३१ | १ |
| विप्रभोजनसंख्याकथनम् .... | २३. | १ |
| विप्रलक्षणंलेखनद्रव्यंविषाष्टकंच .... .... .... | २३१ | २ |
| भूर्जपत्रादिलेखनाधारकथनम् .... | २३१ | २ |
| कुंडकथनंस्रुक्स्रुवादिकथनं लेखनीकथनंच .... | २३२ | १ |
| शांत्यादौभक्ष्यान्नादिकथनम् .... | २३२ | १ |
| शांत्यादौतर्पणजलपात्रकथनम् .... | २३२ | २ |
| आसनप्रकारः .... | २३२ | २ |
| काम्यकर्मोपसंहारकथनम् .... | २३२ | २ |
| निष्कामभजनेफलकथनम् .... | २३३ | १ |
| वेदोक्तकर्मकरणस्योत्कृष्टता .... | २३३ | १ |
| देवतोपास्तिकुर्वतामविष्यद्विचार्यप्रवर्तितव्यम् .... | २३३ | २ |
| शिवंमनसिध्यात्वानिद्रांकुर्वतोस्वप्नप्रकारः .... | २३३ | २ |
| शुभस्वप्नकथनम् .... | २३४ | १ |
| अशुभस्वप्नकथनम् .... | २३४ | १ |
| मंत्रसिद्धेर्लक्षणम् .... | २३४ | २ |
| लब्धज्ञानिनःकृतार्थताकथनम् .... | २३४ | २ |
| ग्रंथसमाप्तौमंगलाचरणम् .... | २३४ | २ |
| ग्रंथकर्तुस्तरङ्गानुक्रमणिका- | | |

विषयाः .... प० पृ०
कथनम् .... २३५ १
ग्रंथकर्तुःस्ववंशकथनम् .... २३५ २
ग्रंथांतेआशीःकथनम् .... २३६ १
विषयाः .... प० पृ०
श्लोकत्रयेणदेवप्रार्थना .... २३६ १
ग्रंथनिर्मितिकालकथनम् .... २३६ २
श्लो० १३२
विषयाः .... प० पृ०
अथ मातृकाकोशकथनम्
( अयं मन्त्रमहोदधिग्रंथबहिर्भूतो ग्रन्थः ... २३७ १

इति मन्त्रमहोदधेरनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीभवानीशङ्कराभ्यांनमः ॥ नत्वालक्ष्मीपतिंदेवंस्वीयेमन्त्रमहोदधौ ॥ नावंविरचये रम्यांतरणायगुणैर्युताम् ॥ १ ॥ तत्रतावन्मंत्रहोदधिनामकंतंत्रंचिकीर्षुराचार्यः शिष्टाचारपरिपालनायनिर्विघ्नग्रंथसमाप्तयेचेष्टदेवतानमस्कारपूर्वकंग्रंथकरणंप्रतिजानीते ॥ प्रणम्येति । लक्ष्म्यायुक्तो नृहरिर्लक्ष्मीनृहरिः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐनमःशिवाय ॥ ॐनमोभगवत्यै ॥ प्रणम्यलक्ष्मीनृहरिंमहागणपतिंगुरुम् ॥
तंत्राण्यनेकान्यालोक्यवक्ष्येमंत्रमहोदधिम्॥ १॥प्रातरुत्थायशिरसिध्यात्वागुरुपदांबुजम्।आवश्यकं
विनिर्वर्त्यस्नातुंयायात्सरित्तटे॥ २॥ श्रौतेनविधिनास्नात्वामंत्रस्नानंसमाचरेत् ॥ स्मार्तसंध्यांमंत्र
संध्यांकृत्वादेवंविचिंतयेत् ॥ ३ ॥ गृहद्वारमथागत्यद्वारपूजांसमाचरेत् ॥ द्वारमस्त्रांबुनाप्रोक्ष्यगणेशं
चोर्द्धतोयजेत् ॥४॥ महालक्ष्मींदक्षभागेवामभागेसरस्वतीम् ॥ पुनर्दक्षेयजेद्विघ्नंगंगांचयमुनामपि ॥
॥ ५ ॥ पुनर्वामेक्षेत्रपालंस्वःसिंधुयमुनेअपि ॥ पुनर्दक्षेतुधातारंविधातारं तु वामतः ॥ ६ ॥

मध्यमपदलोपीसमासः गुरुंश्रीनृसिंहाश्रमम् । मंत्रा एव महांत्युदकानिधीयंतेऽस्मिन्निति मन्त्रमहोदधिः ग्रन्थः ॥ ॥ १ ॥ तत्रप्रातरारभ्यमंत्रिणःकृत्यमाह । प्रातरिति । स्पष्टम् । गुरुपादांबुजगलिताऽमृतधारयामानसंस्नानंकुर्यात्-इत्यादिपूजातरंगेवक्ष्याति ॥ २ ॥ ३ ॥ अस्त्रांबुना । अस्त्रायफडित्याभिमंत्रितजलेन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

शंखपद्मौ निधीतद्वद्दक्षवामयोःद्वारपालांस्तत्तद्देवानांवक्ष्यमाणान् ॥ ७॥८ ॥ द्वात्रिंशद्वारंप्रणवंजपन्प्राणंपूरयेत् ॥ चतुः
षष्टिवारंजपन्कुंभयेत्॥षोडशवारंजपन्रेचयेदित्यर्थः॥९॥ मूलाधारात्कुंडलिनीमुत्थाप्यसमाहितःसन्ध्यायेत् ॥१०॥
हृदोजीवंगृहीत्वासुषुम्नामार्गेणब्रह्मरंध्रंनीत्वाब्रह्मणिस्थापयेदितिगुरूपदेशगम्योऽर्थो योगिना ज्ञेयः ॥ योगाभावे

तद्वन्निधीशंखपद्मौततोऽर्चेद्द्वारपालकान् ॥द्वारपूजांविधायेत्थंप्रविश्यार्चनमंदिरम्॥७॥उपविश्यास
नेनत्वागणेशगुरुदेवताः ॥ प्राणानायम्यतारेणपूरकुंभकरेचकैः ॥८॥ द्वात्रिंशताचतुःषष्ट्याक्रमात्षो
डशसंख्यया॥देवार्चायोग्यताप्राप्त्यैभूतशुद्धिंसमाचरेत्॥९॥मूलाधारस्थितांदेवींकुंडलींपरदेवताम्
बिसतंतुनिभांविद्युत्प्रभांध्यायेत्समाहितः॥१०॥मूलाधारात्समुत्थाप्यसंगतांहृदयांबुजे ॥ सुषुम्नामा
र्गमाश्रित्यादायजीवंहृदंबुजात्।११।प्रदीपकलिकाकारंब्रह्मरंध्रगतंस्मरेत्॥ जीवंब्रह्मणिसंयोज्यहंसमं
त्रेणसाधकः॥१२॥पादादिब्रह्मरंध्रांतंस्थितंभूतगणंस्मरेत्।स्ववर्णबीजाकृतिभिर्युक्तंतद्विधिरुच्यते१३

स्मरणमात्रं विधेयम् ॥ ११ ॥ १२ ॥ वर्णाःपीतादयः ॥ बीजानिलमित्यादीनि ॥ आकृतयश्चतुष्कोणादयः ॥
तद्युक्तंभूतगणम् ॥ १३ ॥

---

१ संखनिधयेनमः । पद्मनिधयेनमः ।

तदेवदर्शयति ॥ पादादीति ॥ १४ ॥ भूमंडले यदिंद्रियं गमनं घ्राणं गन्धः ब्रह्मानिवृत्तिः समानः गंतव्यो देशोपि

पादादिजानुपर्य्यंतंचतुष्कोणंसवज्रकम्॥भूबीजाढ्यंस्वर्णवर्णंस्मरेदवनिमंडलम्॥ १४॥जान्वाद्यानाभिचंद्रार्द्धनिभंपद्मद्वयांकितम्॥वंबीजयुक्तंश्वेताभमंभसोमंडलंस्मरेत्॥१५॥नाभेर्हृदयपर्य्यन्तंत्रिकोणंस्वस्तिकान्वितम्॥रंबीजेनयुतंरक्तंस्मरेत्पावकमंडलम् ॥ १६ ॥ हृदोभ्रूमध्यपर्य्यंतंवृत्तंषड्बिंदुलांछितम्॥यंबीजयुक्तंधूम्राभंनभस्वन्मंडलंस्मरेत् ॥ १७॥ आब्रह्मरंध्रभ्रूमध्याद्वृत्तंस्वच्छंमनोहरम्॥ हंबीजयुक्तमाकाशमंडलंप्रविचिंतयेत्।१८।पद्धस्तपायूपस्थावाक्क्रमाद्ध्येयाधरादिगाः।स्वकीयंविषयैर्युक्तागमनग्रहणादिभिः।१९।घ्राणंचरसनाचक्षुस्पर्शनंश्रोत्रमिंद्रियम्। क्रमाद्ध्येयंधरादिस्थंगंधादिगुणसंयुतम्२०।ब्रह्मविष्णुशिवेशानाःसदाशिवइतीरिताः। धरादिभूतसंघेशाध्येयास्तन्मंडलेषुते२१।

एवमष्टौपदार्थाश्रित्याः ॥ एवंजलमंडले ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

---

१ स्वकीयाविषयसंयुक्तागमनग्रहणादिभिश्चयुक्ता इत्यर्थः । विषयास्तु गंतव्यदेशग्राह्यवस्तुविसर्जनीयविटस्त्रीयोनिवक्तव्यवस्तुमात्रात्मकाः। गमनादयस्तु गमनग्रहणविसर्गस्त्रीयोनिस्पर्शवर्जनानंदवदनरूपाइतिसांप्रदायिकाः ।

हस्तग्रहणग्राह्यरसनारसविष्णुप्रतिष्ठोदानाः ॥ तेजसि–पायुविसर्गविसर्जनीयचक्षूरूपशिवविद्याव्यानाः ॥ वायौ–उपस्थानंदस्त्रीस्पर्शनस्पर्शेशानशांत्यपानाः ॥ नभसि–वाग्वक्तव्यवदनश्रोत्रशब्दसदाशिवशांत्यतीताप्राणाः ॥

निवृत्तिश्चप्रतिष्ठाचविद्याशांतिश्चतुर्थिका॥शांत्यतीतेतिपंचैवकलाध्येयाधरादिगाः ॥ २२॥ समानो
दानव्यानाश्चापानप्राणौचवायवः ॥ धरादिमंडलगताःपंचध्येयाःक्रमादिमे ॥ २३ ॥ एवंभूता[1]निसं
चिंत्यप्रत्येकंप्रविलापयेत्॥भुवंजलेजलंवह्नौवह्निंवायौनभस्यमुम् ॥२४॥ विलाप्यखमहंकारेमहत्त
त्त्वेप्यहंकृतिम्॥महांतंप्रकृतौमायामात्मनिप्रविलापयेत् ॥२५॥ शुद्धसच्चिन्मयोभूत्वाचिंतयेत्पापपू
रुषम्॥दक्षकुक्षिस्थितंकृष्णमंगुष्ठपरिमाणकम् ॥ २६ ॥ विप्रहत्याशिरोयुक्तंकनकस्तेयबाहुकम् ॥म
दिरापानहृदयंगुरुतल्पकटीयुतम् ॥२७॥ पापिसंयोगिपद्द्वंद्वमुपपातकरोमकम्॥खड्गचर्मधरंदुष्टमधो
वक्त्रंसुदुःसहम्॥२८॥वायुबीजं(यं)स्मरन्वायुंसंपूर्य्यैनंविशोषयेत्।स्वशरीरयुतंमंत्रीवह्नि(रं)बीजेननि
र्दहेत्॥२९॥कुंभकेपरिजप्तेनततःपापनरोद्भवम् ॥ बहिर्भस्मसमुत्सार्य्यवायुबीजेन(यं)रेचयेत्॥३०॥

॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वायुबीजं यं वह्निबीजं रं ॥ २९ ॥ ३० ॥

---

[1] एवमितिचतुष्कोणंसवज्रकंभूबीजाढ्यंस्वर्णवर्णपदाद्यष्टकयुक्तभूमंडलंचिंतयेदेवमवाग्निमेषुचतुर्ष्वितिभावः ।

सुधाबीजं वं भूबीजं लं नभोबीजं हं तेनशरीरंसावयवं कुर्यात् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ चितःब्रह्मणःसकाशात् ॥ ३३ ॥

सुधाबीजेन ( वं ) देहोत्थंभस्मसंप्लावयेत्सुधीः ॥ भूबीजेन ( लं ) घनीकृत्यभस्मतत्कनकांडवत् ॥
॥३१॥ विशुद्धमुकुराकारंजपन्बीजंविहायसः ( हं ) ॥ मूर्द्धादिपादपर्य्यंतान्यंगानिरचयेत्सुधीः॥
॥ ३२ ॥ आकाशादीनिभूतानिपुनरुत्पादयेच्चितः[1] ॥ सोहंमंत्रेणचात्मानमानयेद्धृदयांबुजे ॥ ३३ ॥
कुंडलींजीवमादायपरसंगात्सुधामयम् ॥ संस्थाप्यहृदयांभोजेमूलाधारगतांस्मरेत् ॥ ३४ ॥ भूतशुद्धिंविधायैवंप्राणस्थापनमाचरेत् ॥ [2]प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्यमुनयोजेशपद्मजाः ॥३५ ॥ छंदऋग्यजुषंसामप्राणशक्तिस्तुदेवता ॥ पाशो ( आं ) बीजंत्रपा ( ह्रीं ) शक्तिर्विनियोगोऽसुसंस्थितौ ॥ ३६ ॥

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ पाशः आं त्रपा ह्रीं असुसंस्थितौ प्राणस्थापने विनियोगः ३६ ॥

---

१ चितइति । विलापनव्युत्क्रमेणचिदादितोमायादिप्रादुर्भावंभावयेत् । अहंकारादितआकाशादीनि प्रादुर्भूतानि भावयेदित्यर्थः । २ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य अजेशपद्मजाऋषयः । ऋग्यजुःसामानिच्छंदांसि । प्राणशक्तिर्देवता । आंबीजम् । ह्रींशक्तिः । क्रौंकीलकम् । प्राणस्थापनेविनियोगः ।

कवर्गौंति क्रमतःपञ्चममतिप्रयोगः ङंकंखंघंगंआकाशवायुतेजोजलपृथिव्यात्मनेहृदयायनमइत्यादि ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

ऋषीञ्छिरसिवक्रेतुछंदांसिहृदिदेवताम्॥ गुह्येबीजं पदोःशक्तिंन्यस्यकुर्य्यात्षडंगकम् ॥३७॥कव
र्गनभआद्यैर्हृच्चशब्दाद्यैःशिरःस्मृतम् ॥ टश्रोत्राद्यैःशिखाप्रोक्तातवर्गाद्यैस्तनुच्छदम् ॥ ३८ ॥ पवक्त
व्यादिभिर्नेत्रमस्त्रंयेनांतारिंद्रियैः ॥ आत्मनेतान्मनूनंगान्विन्यसेद्धृदयादिषु ॥ ३९ ॥पंचमंप्रथमंप
श्चाद्द्वितीयंचचतुर्थकम् ॥ तृतीयमित्थंक्रमतोवर्गवर्णान्समुच्चरेत् ॥ ४० ॥ यवर्गेप्येवमुच्चार्य्यनभः
(हं)श्वेतों ( षं )तिमो ( शं ) भृगुः ( सं )॥ विमलश्चेति ( लं ) चोच्चार्य्याःक्रमाद्वर्णाःसबिंदवः ॥
॥ ४१ ॥ नभोवाय्वग्निवार्भूमिनभआदयईरिताः ॥शब्दस्पर्शौरूपरसगंधाःशब्दादयोमताः ॥४२॥
श्रोत्रंत्वङ्नयनंजिह्वाघ्राणंश्रोत्रादयःस्मृताः ॥ वाक्पाणीपादपायूचोपस्थोवागादयःपुनः ॥ ४३ ॥
वक्तव्यादानगमनविसर्गानंदसंज्ञकाः॥वक्तव्याद्याबुद्धिमनोहंकाराश्चित्तसंयुताः ॥४४॥ अंतारिंद्रिय
संज्ञाःस्युरेवमुक्तंषडंगकम् ॥ नाभेरारभ्यपादांतंपाशबीजंप्रविन्यसेत् ॥ ४५ ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

---

१ प्रयोगस्तुङंकंखंघंगंनभोवाय्वाग्निवार्भूम्यात्मनेहृदयायनमइत्यादि । एवमेवाग्रेपिस्वस्वजातियुक्तंन्यसेत् ॥ तथाहि ॥ ञंचंछंझंजंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मनेशिरसे स्वाहा ॥ णंटंठंढंडंश्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाप्राणात्मनोशिखायैवषट् ॥ नंतंथंधंदंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेकवचायहुं ॥ मंपंफंबंवक्तव्यादानगमनविसर्गानंदात्मने नेत्रत्रयायवौषट् ॥ शंयंरंवंलंहंषंक्षंसंलंबुद्धिमनोहंकारचित्तात्मनेअस्त्रायफट् ॥

शक्तिंह्रींशृणिंक्रौं ॥ ४६ ॥ आत्मनेइति ॥ आत्मनेनम इत्यंतानित्वगादीनि हृदि न्यसेत् यादिवर्णपूर्वाणियंत्वगात्मनेनम इत्यादि ॥ सद्यॐकारस्तदन्वितआकाशोहःतदाद्यमोजः हौंओजआत्मनेनमः ॥ खंहःतदादिकंप्राणं हं प्राणात्मनेनमः ॥ ४७ ॥ भृगुः सः ॥ तदादिकंजवात्मनेनमः ॥ यादयोवर्णाश्चंद्रेणानुस्वारेणभूषितायुताः

नाभ्यंतंहृदयाच्छक्तिं(ह्रीं)हृदंतंमस्तकाच्छृणिम् (क्रौं) ॥ [1]त्वंगसृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणिविन्यसेत्।४६।आत्मनेहृदयांतानियादिसप्तादिकान्यपि॥ओजःसद्यान्विताकाशपूर्वंप्राणंतुखादिकम् ॥ ॥४७॥भृग्वादिकंन्यसेज्जीवमेतान्हृदयदेशतः॥[2]यंकाराद्याआद्यवर्णाःसर्व्वेस्युश्चंद्रभूषिताः ॥ ४८ ॥ ततःसमस्तमूलेनमूर्द्धादिचरणावधि ॥ विधायव्यापकन्यासंविन्यसेत्पीठदेवताः ॥४९॥ [3]मंडूकश्चाथकालाग्नीरुद्रआधारशक्तियुक् ॥ कूर्मोधरासुधासिंधुःश्वेतद्वीपंसुरांघ्रिपाः ॥ ५० ॥

कार्याः ॥ ४८ ॥ मंडूकइत्यादिपीठदेवताः ॥ सुधासिंधुरित्यत्रसमुद्रविशेषंवक्ष्यति ॥ विरागतावैराग्यम् । न ज्ञादिकाअधर्मायनम इत्यादि ॥ ४९ ॥ ५० ॥

---

[1] यंत्वगात्मनेनमः रंअसृगात्मननेमइत्यादि ।[2] यंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंमूर्द्धादिचरणात्वधिव्यापकंकुर्यात् ।[3] मंमंडूकायनमःकंकालाग्निरुद्रायहौंओजात्मने, हं प्राणात्मने । सञ्जीवात्मने एवंसर्वत्राधर्मपूर्वेषुचतुर्षुनञ्समासः । अंअधर्माय अंअज्ञानाय अंअविरागाय अंअनैश्वर्यायनमः ।

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ पीठदेवतानांन्यासस्थानानिबहिर्यागेचपूजास्थानानिएकविंशोतरंगे

मणिहर्म्यंहेमपीठंधर्मोज्ञानंविरागता॥ऐश्वर्यंधर्म्मपूर्वास्तुचत्वारस्तेनञादिकाः।५१। धर्म्मादयःस्मृताः पादाःपीठगात्राणिचेतरे ॥ मध्येनंतस्तत्त्वपद्ममानंदमयकन्दकम्॥ ५२ ॥ संविन्नालं[1]ततःप्रोक्ताविकारमयकेसराः॥प्रकृत्यात्मकपत्राणिपंचाशद्वर्णकर्णिका॥ ॥ ५३ ॥ सूर्य्य[2]स्येंदोःपावकस्यमंडलत्रितयंततः॥सत्त्वंरजस्तमःपश्चादात्मयुक्तोंतरात्मना॥ ५४ ॥परमात्माथज्ञानात्मातत्त्वेमाया[3]कलादिके ॥ विद्यातत्त्वंपरंतत्त्वंकथिताःपीठदेवताः॥५५॥पूजनेसर्वदेवानांपीठेताःपरिपूजयेत् ॥ न्यासस्थानानिचैतासांशरीरेबहिरर्चने ॥५६॥ पूजातरङ्गेवक्ष्यन्तेसेंद्वाद्यर्णयुताश्चताः॥ प्राणशक्तेस्ततःपूज्याअष्टौपीठस्यशक्तयः ॥ ५७॥हृदयांभोजपत्रेषुनवमीत्वधिकार्णिकम् ॥ जयाख्याविजयापश्चादजिताँचाऽपराँजिता ॥ ५८ ॥

वक्ष्यंते । ताः मंडूकाद्याःसेंद्वाद्यर्णयुताः ॥ सानुस्वारप्रथमाक्षरयुताः । मंमंडूकाय नम इत्यादि ॥ ५७ ॥ हृदयपद्मपत्रेष्वष्टौ । नवमीकार्णिकायाम् । ताएवाह । जयेति ॥ ५८ ॥

---

१ संसंविन्नालायनमः, विंविकारमयकेसरेभ्योनमः । २ संसूर्यमंडलाय, चंद्रमं०अग्निमं० । ३ मंमायातत्त्वाय, कलातत्त्वाय० ।

पाशादीति॥ आंह्रींक्रौमितिपीठमंत्रः॥ ५९ ॥ ६० ॥ ध्यानमाह । पाशामिति ॥ षड्हस्तादेवीपाशधनुःशूलानिवामहस्तेषुरक्तकपालांकुशबाणान्दक्षेषु रक्तमयोयउदन्वान् समुद्रस्तत्रपोतोनौस्तत्ररक्तपद्मंतत्रास्थिताम् ॥ ६१ ॥

नित्यां[५]विलासिनी[६]दोग्ध्री[७]त्वघोरा[८]मङ्गलां[९]तिमा ॥ पाशादिबीजत्रितयं ( आंह्रींक्रौं ) प्रोच्यपीठंदिशे
त्ततः ॥ ५९ ॥ एवंदेहमयेपीठेध्यायेद्देवीमसुप्रदाम्॥ नवयौवनगर्वाढ्यांपीवरस्तनशोभिनीम् ६०॥
पाशंचापासृक्कपालेसृणीषूञ्छूलंहस्तैर्बिभ्रतींरक्तवर्णाम् ॥रक्तोदन्वत्पोतरक्तांबुजस्थांदेवींध्यायेत्प्रा
णशक्तिंत्रिनेत्राम्॥ ६१ ॥अष्टपत्रस्थषट्कोणेध्यात्वैवंपूजयत्तुतान्॥प्राग्रक्षोवायुकोणेषुब्रह्मविष्णुशि
वान्यजेत् ॥६२॥ अग्निवारुणशैवेषुवाणीलक्ष्मीहिमाद्रिजाः॥ केसरेषुषडंगानि[१]पत्रेष्वष्टौतुमातरः॥
॥ ६३ ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचापिकौमारीवैष्णवीतथा ॥ वाराहीचतथेंद्राणीचामुंडासप्तमीमता॥ ६४॥
अष्टमीतुमहालक्ष्मीःप्रोक्ताविश्वस्यमातरः॥देवतापूजनेप्राचीमध्येपूजकपूज्ययोः ॥ ६५ ॥ इंद्राद
यःस्वदिक्ष्वेवपूजनीयादिगीश्वराः॥इंद्रः[२]कृशानुःकीनाशोनिर्ऋतिर्वरुणोनिलः ॥ ६६ ॥ सोमईशान
नामाधोनंतऊर्ध्वंचतुर्म्मुखः ॥ ततइंद्रादिकाष्ठासुपूज्यादिक्पालहेतयः ॥ ६७ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इंद्रादयःप्रसिद्धदिक्ष्वेवार्च्याः ॥ अन्यावरणे पूज्यपूजकयोर्मध्येप्राची ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

---

[१] अग्नीशासुरवायव्यमध्यदिक्ष्वंगपूजनमितिवक्ष्यमाणप्रकारेणेतिभावः । [२] पूर्वेइंद्रायनमःइतिबोध्यम् । अग्नयेनमःवायवेनमः ।

मन्त्रमुद्धरति । पाशमिति ॥ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसं तारान्वितंनभः हों सप्तार्णौवक्ष्यमाणः । अजपा हंसः ॥

वज्रंशक्तिर्दंडखङ्गौपाशोंकुशगदेअपि ॥ त्रिशूलचक्रपद्मानिदशदिक्पालहेतयः ॥६८॥ एवमिष्ट्वाप्राण
शक्तिंपंचावरणसंयुताम् ॥ ध्यायन्हृदिकरंधृत्वात्रिर्जपेतन्मनुंसुधीः ॥६९॥ वक्ष्येधुनामनोस्तस्यो
द्धारंध्यातृसुखावहम् ॥ पाशं(आं) मायां (ह्रीं) सृणिं (क्रौं) प्रोच्ययादीन्सप्तेन्दुसंयुतान् ॥ ७० ॥
तारान्वितंनभःसप्तवर्णमंत्रं ततोऽजपाम् ॥ ममप्राणाइहप्राणाममजीवइहस्थितः ॥ ७१ ॥ ममसर्वे
न्द्रियाण्युक्त्वाममवाङ्मनईरयेत् ॥ चक्षुःश्रोत्रघ्राणपदात्प्राणाइहसमीर्य्यच ॥ ७२ ॥ आगत्यसुखमु
च्चार्य्यचिरंतिष्ठंतिवदंपठेत् ॥ वह्निजायां (स्वाहा) चसप्तार्णमंत्रमंतेपुनर्व्वदेत् ॥ ७३॥ प्राणप्रतिष्ठा
मंत्रोयंस्मृतःप्राणनिधापने ॥ ममेत्यस्यपदस्यादौपाशादीनिसमुच्चरेत् ॥७४॥ यंत्रेषुप्रतिमादौवाप्रा
णस्थापनमाचरन् ॥ ममस्थानेतस्यतस्यषष्ठ्यंतामभिधांवदेत् ॥ ७५ ॥ सबिंदवोमेरुहंसाकाशाः
सर्गीभृगुःपुनः ॥ मायेतितारुरुद्धोयंमंत्रःसप्ताक्षरोमतः ॥ ७६ ॥

॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ सप्तार्णमुद्धरति । सबिंदवइति । मेरुः क्षः

---

१ मंत्रोद्धारः। आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहोंॐ क्षंसंहसंःह्रींॐहंसः ममप्राणाइहप्राणाः । आं० ममजीवइहस्थितः। आं० ममसर्वेन्द्रियाणीह स्थितानी । आं०ममवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यसुखंचिरंतिष्ठंतुस्वाहा ॐसंसंहंसःह्रीं ॐ ।

हंसः सः आकाशोहः भृगुः सः माया ह्रींताररुद्धःप्रणवपुटितः तेनॐक्षंसंहंसःह्रींःओमितिसत्तार्णः॥७६॥मातृका
माह॥अकाराद्याइति प्रसिद्धा इत्यर्थः ॥ ७७ ॥ षडंगमाह । पंचेति । क्लीबाऋॠऌॡतद्धीनाःसानुस्वारायेह्रस्वदी

एवंप्राणान्प्रतिष्ठाप्यमातृकान्यासमाचरेत् ॥ अकाराद्याःक्षकारांता वर्णाःप्रोक्तातुमातृका ॥ ७७ ॥
प्रजापतिर्म्मुनिस्तस्यागायत्रीछंदईरितम् ॥सरस्वतीदेवतोक्ताविनियोगोऽखिलाप्तये ॥ हलोबीजानि
चोक्तानिस्वराः शक्तयईरिताः ॥७८॥ मूर्ध्निवक्रेहृदिन्यस्येद्दष्यादीन्साधकोत्तमः॥पंच[3]वर्गैर्यादिभि
श्चषडंगानिसमाचरेत् ॥७९॥ क्लीबहीनशशांकाढ्यह्रस्वदीर्घांतरस्थितैः ॥ सानुस्वारैर्ज्जातियुक्तै
र्ध्यायेद्देवीं हृदंबुजे ॥८०॥ पंचाशदर्णैरचितांगभागांधृतेंदुखंडांकुमुदावदाताम् ॥ वराभयेपुस्तकमक्ष
सूत्रंभजेगिरंसंदधतींत्रिनेत्राम् ॥ ८१ ॥

र्घांत्तदंतरस्थितैःसाबिंदुभिःजातयोहृदयायनमइत्यादयस्तद्युक्तैःषड्वर्गैःषडंगं अंकंखंगंघंङंआंहृदयायनमइत्यादि ॥
७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ध्यानमाह ॥ पंचाशदिति । वर्णैरंगरचनान्यासाद्बोध्या :। वराक्षस्रजौदक्षयोः ॥ पुस्तका

---

१ अव्यक्तंकीलकम् । २ मूर्ध्नीत्यादि । शक्तिबीजयोरपिपूर्वोक्तस्थानोपलक्षणम्।ओंक्षंसंहंसःह्रींओं ब्रह्मऋषयेमूर्ध्निगायत्रीछंदसेनमःवक्रे सरस्वतीदेवता
यै नमो हृदि हंबीजेभ्योनमो गुह्ये स्वरशक्तिभ्योनमः पादयोः । एवमृष्यादि । ३ प्रयोगस्तु–अंकंखंगंघंङंआंअंगुष्ठाभ्यांनमः । इंचं५ईं तर्ज०इत्यादि ।
अंकं ५आंहृदयायनमः इत्यादि । नमःस्वाहावषट्चैवहुंवौषट्फट्क्रमेणतु ।

भंयेवामयोः । गिरंसरस्वतीम् ॥८१॥ पूर्वमीरितामण्डूकाद्याः ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ आसनमन्त्रमाह । वियत् हः ॥

ध्यात्वैवंपूजयेत्पीठेदेवताःपूर्वमीरिताः॥पीठशक्तीस्तदुपरिसरस्वत्यानवार्चयेत् ॥ ८२ ॥ मेधाप्रज्ञा
प्रभाविद्याश्रीधृतिस्मृतिबुद्धयः ॥ विद्येश्वरीतिसंप्रोक्तामातृकापीठशक्तयः ॥८३॥ वियद्भृगुस्थमनु
युग्विसर्गाढ्यंचमातृका ॥ योगपीठायनत्यंतोमं[1]नुरासनदेशने ॥८४॥ मूर्तिसंकल्प्यमूलेनतस्यांवा
णींप्रपूजयेत् ॥ आदावंगानिसंपूज्यद्वितीयेपूजयेत्स्वरौ॥८५॥द्वौद्वौतृतीयेवर्गांश्चवर्गशक्तीश्चतुर्थके
व्यापिनीपालिनीचापिपावनीक्लेदिनीपुनः ॥८६॥ धारिणीमालिनीपश्चाद्धंसिनीशंखिनीतथा ॥
वर्गशक्तयइत्युक्ताःपञ्चमेत्वष्टमातरः ॥८७॥ षष्ठेशक्रादयोदेवाःसप्तमेवज्रपूर्वकाः ॥ इत्थंसंपूज्यदेवे
शींन्यसेद्वर्णान्निजांगके ॥८८॥ ललाटेमुखवृत्तेक्षिश्रवोनासासुगंडयोः॥ ओष्ठयोर्दंतपंक्त्योश्चमूर्ध्नि
वक्त्रेन्यसेत्स्वरान् ॥८९॥ बाह्वोः संधिषुसाग्रेषुकचवर्गौन्यसेत्सुधीः॥टतवर्गौपदोस्तद्वत्पार्श्वयोःपृ
ष्ठदेशतः॥९०॥नाभौकुक्षौपवर्गंचहृदंसंककुदंततः॥न्यस्य[2]यादिचतुर्वर्णाञ्छादिषट्कंततोन्यसेत् ९१

भृगुः सःमनुरौ तेनहसौः मातृकायोगपीठायनम इति ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥

---

[1] हसौःमातृकायोगपीठायनमः । [2] यंहृदि । रंदक्षांगे । लंककुदि । वंवामांसे ।

हृदादीनिकरपादोदरमुखेषुसंबध्यंते ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ स्थितिन्यासेध्यानमाह । मृगेति । मृगविद्येवामयोः ॥ वराक्ष

हृदादिकरयोरंघ्र्योर्ज्जठरेवदनेतथा॥सृष्टिन्यासंविधायैवंस्थितिन्या[1]संसमाचरेत् ॥९२॥ ऋषिश्छंद
श्चपूर्व्वोक्तोदेवताविश्वपालिनी॥उपविष्टांवल्लभांकेध्यायेद्देवीमनन्यधीः ॥ ९३ ॥ मृगबालंवरंविद्या
मक्षसूत्रंदधत्करैः ॥ मालाविद्यालसद्धस्तांवहन्ध्येयःशिवोगिरम् ॥ ९४ ॥ एवंध्यात्वाडकाराद्यान्व
र्णांनंगेषुविन्यसेत्॥ ॥गुल्फादिजानुपर्य्यंतंस्थितिन्यासोयमीरितः ॥ ९५ ॥ न्यासेसंहारसंज्ञेतुऋ
षिश्छंदश्चपूर्व्ववत् ॥ संहारिणीसपत्नानांशारदादेवतास्मृता ॥९६॥ अक्षस्रक्टंकसारंगविद्याहस्तां
त्रिलोचनाम् ॥ चंद्रमौलिंकुचानम्रांरक्ताब्जस्थांगिरंभजे ॥ ९७ ॥

सूत्रेदक्षयोः ॥ देव्यामालाविद्येदक्षवामयोः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ संहारन्यासेध्यानमाह ॥ अक्षेति । मृगविद्ये वामयोः ॥अक्षस्रक्टंकौदक्षयोः ॥ टंकः परशुः ॥९७ ॥

---

[1] नमःस्वाहेत्यादि० । शंषंकरयोः । संहं अंघ्र्योः । लंक्षंवदनेजठरे च । हृदयादाविवजठरवदनयोर्न्यसेदित्यर्थः । [2] दक्षिणगुल्फादिक्रमेणपूर्वोक्त स्थानेस्थितिन्यासः ।

॥ ९८ ॥ नत्यंताः ॥ अंनमःतारसंपुटाः ॥ॐइत्यादि॥९९॥१०० ॥१०१॥१०२॥१०३॥ दीपस्थानमाह।नवधेति। जपस्थानभूमिंनवधा कृत्वा ॥ पूर्वादिकोष्ठेषुकचटतपयशवर्गान् लक्ष इत्यष्टमेविलिख्यमध्यकोष्ठमपि नवधा

ध्यात्वैवंविन्यसेद्वर्णान्क्षांद्यानांतान्[1]विलोमतः॥सृष्टिन्यासेतुसर्गांताःसर्गबिंद्वंतिकाःस्थितौ ॥९८॥
बिंद्वंताःसंहृतौचैषापूर्ववच्चांगपूजने ॥ न्यस्याःसर्वत्रनत्यंतावर्णावातारसंपुटाः ॥९९॥ सृष्टिन्यासं
स्थितिन्यासंपुनःकुर्यात्प्रयत्नतः॥ अन्येतुमातृकान्यासाःकथ्याःपूजातरंगके ॥ १०० ॥ मंत्रस्नानादिविधयोगद्यास्तत्रैवतेमया॥भारतीमेवमाराध्यभजेदिष्टान्मनून्सुधीः ॥ १ ॥ विष्णुःशिवोगणेशोर्कोदुर्गापंचैवदेवताः॥आराध्याःसिद्धिकामेनतत्तन्मंत्रैर्य्यथोदितम्॥२॥आदौदेवंवशीकर्तुंपुरश्चरणमाचरेत्॥तीर्थादौनिर्जनेस्थानेभूमिग्रहणपूर्वकम् ॥३॥नवधातांधरांकृत्वापूर्व्वादिषुसमालिखेत्॥
कोष्ठेषुसप्तवर्गांश्चलक्षौ[2]मध्येतथास्वरान् ॥ ४ ॥ क्षेत्रनामादिमोवर्णस्तत्रकोष्ठेभवेत्ततः ॥ उपविश्यजपंकुर्य्यान्नान्यस्मिन्दुःखदेस्थले ॥ १०६ ॥

विधाय तत्र पूर्वादिषुस्वरद्वंद्वंक्षेत्रनामादिवर्णौयत्रकोष्ठेतदेवजपस्थानंसिद्धिदम् ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

---

[1] क्षकारादिककारांतानीतिनवस्थानादारभ्यविलोमक्रमेणसंहारन्यासः । मालादक्षे । विद्यावामे । [2] लक्षावीश इति शेषः । मध्ये मध्यकोष्ठेतथापूर्वोक्तप्रकारेण मवधाविभज्यपूर्वादिक्रमेणद्वौद्वौस्वरौलिखेत् ।

पुरश्चरणधर्मानाह आमध्याह्नमिति ॥उपांशु शनैर्वर्णोच्चारणं मानसं मनसैव।त्रिःस्नायीत्रिषवणस्नानंशीलः॥१०६ अन्यैःसंभाषणमन्यभाषाम् ॥ अंत्यजानामीक्षांदर्शनंत्यजेत् ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ होम

आमध्याह्नंजपंकुर्यादुपांशुत्वथमानसम्॥हविष्यंनिशिभुंजीतत्रिःस्नाय्य[1]भ्यंगवर्जितः।१०६।व्यग्रतालस्यनिष्ठीवक्रोधपादप्रसारणम् ॥ अन्यभाषांपरेक्षांचजपकालेत्यजेत्सुधीः ॥७॥ स्त्री[2]शूद्रभाषणंनिंदांतांबूलंशयनंदिवा ॥ प्रतिग्रहंनृत्यगीतेकौटिल्यंवर्जयेत्सदा ॥८॥ भूशय्यांब्रह्मचर्य्यंचत्रिकालंदेवतार्च्चनम् ॥नैमित्तिकार्चनंदेवस्तुतिंविश्वासमाश्रयेत् ॥९॥ प्रत्यहंप्रत्यहंतावन्नैवन्यूनाधिकंक्वचित्॥ एवंजपंसमाप्यांतेदशांशंहोममाचरेत्॥११०॥तत्तत्कल्पोदितैर्द्रव्यैस्तद्विधानमुदीर्यते ॥ प्राणायामंषडंगंचकृत्वामूलेनमंत्रवित्॥११॥कुंडेवास्थंडिलेकुर्यात्संस्काराणांचतुष्टयम्॥मूलेनेक्षणमस्त्रेणप्रोक्षणंताडनंकुशैः ॥ १२ ॥ वर्म्मणाभ्युक्षिना सिच्यलिखेद्यंत्रंतदन्तरे ॥ वह्निकोणषडस्राष्टदलभूमंदिरात्मकम् ॥१३॥मध्येतारपुटां[3]मायांलिखित्वापीठमर्चयेत्॥मंडूकात्परतत्त्वांतंपीठशक्तीर्जयादिकाः ॥११४॥

विधिमाह । प्राणायाममिति ॥ १११ ॥ अस्त्रंफट्वर्मणाहुंकारेण ॥ भूमंदिरंचतुष्कोणम् ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

---

[1] त्रिकालस्नायी । [2] स्त्रीत्यादि अन्यभावेऽन्यस्यैवप्रपंचइतिनपौनरुक्त्यम् । [3] ॐ ह्रीं ॐ ।

॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ क्रव्यादांशंमांसाशिनोवह्नेर्यस्तत्रभागस्तमस्त्रेण त्यजेत् ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ वाह्निबी

वागीशीवागीश्वरयोर्योगपीठात्मनेनमः॥मायादिकः पीठमंत्रस्तयोस्तेनासनं दिशेत् ॥ ११५ ॥ यजेत्तौतारमायाभ्यांगंधाद्यैरुपचारकः॥ लक्ष्मीनारायणौत्वर्चेद्वैष्णवेहोमकर्मणि ॥१६॥ सूर्यकांतादरणितः श्रोत्रियागारतोपिवा ॥ पात्रेणपिहितेपात्रेवह्निमानाययेत्ततः॥१७॥ अस्त्रेणादायतत्पात्रंवर्मणोद्घाटयेत्तुतम्॥अस्त्रमंत्रेणनैर्ऋत्येक्रव्यादांशंततस्त्यजेत् ॥ १८॥ मूलेनपुरतोधृत्वासंस्कारांश्चततश्चरेत् ॥ वीक्षणाद्यान्पुराप्रोक्तानलंप्रोक्षणमाचरन् ॥ १९ ॥ परमात्मानलेनाथजाठरेणापिवह्निना॥ स्मरन्नैक्यंवह्निबीजाच्चैतन्यंयोजयेत्ततः ॥ १२०॥ तारेणचाभिमंत्र्याग्निंसुधयाधेनुमुद्रया॥अमृतीकृत्यसंरक्षेदस्त्रमंत्रेणमंत्रवित् ॥२१॥ मुद्रयात्ववगुंठिन्याकवचेनावगुंठयेत् ॥ कुंडोपरिततोवह्निंभ्रामयेत्त्रिध्रुवं ( ॐ ) पठन् ॥ ॥ १२२ ॥

जात् रमितिबीजात् ॥ १२० ॥ सुधया वंबीजेन । धेनुमुद्रालक्षणंवक्ष्यते ॥ १२१ ॥ अवगुंठिन्या अपि वक्ष्यते ॥ कवचेनहुंबीजेन । त्रिध्रुवं प्रणवम् ॥ १२२ ॥

---

१ ॐ ह्रींवागीशीवागीश्वरयोर्योगपीठात्मनेनमः। २ ॐ ह्रींलक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः ।

॥ १२३ ॥ १२४ ॥ नवार्णमुद्धरति ॥ अर्धेंशेन्दुःऊः ॥ गगनंहः । शेषंस्वरूपम् ॥ हृदयांतोनमोंतः ॥ नहूंवह्निचैतन्यायनमइत्यग्निस्थापनेनवाक्षरोमन्त्रः ॥ १२५ ॥ विश्राण्यदत्त्वा ॥ १२६ ॥ चतुर्विंशतिवर्णमुद्धरति । चिदिति ॥ चित्पिंगलहन २ दह २ पच २ सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहा । वेद ४ भुजा २ शरश्चतुर्विंशतिवर्णः ॥ १२७ ॥

शय्यागतामृतुस्नातांनीलेंदीवरधारिणीम् ॥ देवेनभुज्यमानांतांस्मृत्वातद्योनिमंडले ॥ १२३ ॥
ईशरेतोधियावह्निंस्थापयेदात्मसंमुखम् ॥ मूलंनवार्णंचपठञ्जानुस्पृष्टधरातलः ॥ २४ ॥ रेफार्धेशें
दुसंयुक्तंगगनंवह्निचैततः ॥ तन्यायहृदयांतोयंनवार्णोग्निनिधापने ॥ २५ ॥ विश्राण्याचमनंदेवी
देवयोर्ज्वालयेद्वसुम्[2] ॥ चतुर्विंशतिवर्णेनमंत्रेणश्रपणादिभिः[3] ॥२६॥ चित्पिंगलहनद्वंद्वंदहयुग्मंपच
द्वयम् ॥ सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहामंत्रोवेदभुजाक्षरः ॥२७॥ प्रदर्श्यज्वालिनींमुद्रामुत्थायविहितांजलिः ॥
श्लोकरूपेणमंत्रेणह्युपतिष्ठेद्धुताशनम् ॥ १२८ ॥

ज्वालिनीमुद्रालक्षणम्–मणिबंधयुतौकृत्वाप्रसृतांगुलिकौकरौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठयुगलेमिलित्वांतःप्रसारिते ॥ ज्वालिनीनाममुद्रेयं वैश्वानरप्रियंकरीति ॥ १२८ ॥

---

[1] वह्निचैतन्यायनमः । [2] अग्निम् । [3] काण्डादिभिः ।

श्लोकरूपंमन्त्रमाह ॥ १२९ ॥ अग्निमन्त्रमाह ॥ वैश्वानरजातवेदइहावहलोहिताक्षसर्वकर्माणिसाधयस्वाहेति ॥ १३० ॥ १३१ ॥ ठद्वयंस्वाहा ॥ १३२ ॥ ङेन्ताश्चतुर्थ्यंताः ॥ १३३ ॥ जिह्वाबीजान्युद्धरति ॥ दीपिकेति ॥ दीपिकाऊ ॥ ॥ अनलोरः ॥ वायुर्यः ॥एतेषुस्थिताःसकाराद्याविलोमवर्णाः ॥ सषशवलरयेति ॥ सेंदवो

अग्निंप्रज्वलितंवंदेजातवेदंहुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णममलंसमिद्धंविश्वतोमुखम् ॥१२९॥ अथाग्निमंत्रं
विन्यस्येत्तद्विधानमुदीर्यते ॥ वैश्वानरांतेजातेतिवेदांतेस्यादिहावह ॥ ३० ॥ लोहिताक्षपदात्सर्वं
कर्माण्यंतेतुसाधय ॥ वह्निप्रियांतोमंत्रोयंषड्विंशत्यक्षरान्वितः ॥ ३१॥ ऋषिश्छंदोदेवतास्यभृगुर्गा
यत्रपावकाः॥ रंबीजंठद्वयंशक्तिर्हवनेविनियोजनम् ॥३२॥ लिंगेपायौमूर्ध्निवक्त्रेनसिनेत्रेखिलांगके ॥
वह्नेर्जिह्वाः स्वबीजाढ्यान्यसेन्ङेन्तानमोन्विताः॥३३॥ हिरण्यागगनारक्ताकृष्णासुप्रभयान्विता॥
बहुरूपातिरक्तेतिजिह्वादमुनसोमताः॥३४॥ दीपिकानलवायुस्थाःसाद्यावर्णाविलोमतः ॥ सेन्दवः
सप्तजिह्वानांसप्तानांबीजतांगताः ॥ १३६ ॥

नुस्वाराद्याइमेसप्तहिरण्यादिजिह्वानांबीजानीत्यर्थः ॥ ततश्चस्र्यूंहिरण्यायैनमः ॥ ष्र्यूंगगनायै नमः ॥ श्र्यूं रक्तायैनमः ॥ व्र्यूंकृष्णायैनमः ॥ ल्र्यूंसुप्रभायैनमः ॥ र्र्यूंबहुरूपायैनमः ॥ य्र्यूंअतिरक्तायैनमः ॥ १३४॥ १३५ ॥

---

१ अग्नेःसप्तजिह्वानामानि । २ स्र्यूँष्र्यूँश्र्यूँव्र्यूँल्र्यूँर्र्यूँय्र्यूँअग्नेर्जिह्वाबीजानि ।

गीर्वाणादयोजिह्वाधिदेवाजिह्वास्थानेषुन्यस्याः ॥ सुरेभ्योनमः लिंगे इत्यादिप्रयोगः ॥ १३६ ॥ मस्तकंशिरोमंत्रः ॥१३७ १३८॥१३९॥१४०॥ तारेति ॥ प्रणवाग्नयेपदपूर्वाः ॥ङेनमोंताः॥ॐअग्नयेजातवेदसेनमोमूर्ध्नीत्यादि ॥ १४१॥

गीर्वाण[1]पितृगंधर्वयक्षनागपिशाचकाः॥राक्षसाश्चेतिजिह्वानांदेवतास्तत्स्थलेन्यसेत्॥१३६॥[2]न्यासे
चैनेव्युत्क्रमःस्याद्बहुरूपातिरिक्तयोः॥नेत्रेतिरिक्तान्यस्तव्यासर्वांगेबहुरूपिका॥३७॥सहस्रार्चिषेहृ
दयंस्वस्तिपूर्णायमस्तकम्॥उत्तिष्ठपुरुषायेतिशिखामंत्रोयमीरितः॥३८॥धूमांते[3]व्यापिनेवर्मसप्तजिह्वा
यनेत्रकम्॥अस्त्रंधनुर्धरायेतिषडंगानिसमाचरेत्॥३९॥मूर्ध्नि[4]वामेंसकेपार्श्वेकटौलिंगेकटौपुनः॥दक्षे
पार्श्वेंसकेन्यस्येन्मूर्तीरष्टौविभावसोः॥१४०॥ताराग्नयेपदाद्यास्ताश्चतुर्थीनमसान्विताः॥ जातवेदाः
सप्तजिह्वोहव्यवाहनइत्यपि ॥४१॥ अश्वोदरजसञ्ज्ञोन्यस्तथावैश्वानराह्वयः ॥ कौमारतेजाःस्याद्वि
श्वमुखोदेवमुखस्तथा ॥ ४२ ॥ ततोन्यसेन्निजेदेहेपीठंहाटकरेतसः ॥ वह्निमंडलपर्यंतमंडूकादि
यथोदितम् ॥ १४३ ॥

॥ १४२ ॥ हाटकरेतसोवह्नेः ॥ मंडलपर्यंतमेवंपीठदेवताः पूज्याः ॥ ततः पीताद्याः पीठशक्तयः ॥ १४३ ॥

---

१ जिह्वाधिदेवतानामानि । २ प्रयोगस्तुस्प्रूँष्प्रूँश्प्रूँङ्प्रूँलप्रूँर्प्रूँय्प्रूँहिरण्यायैनमोलिंगेष्प्रूँगगनायैनमःपायावित्यादि ।३ धूमव्यापिनेकवचायहुम् ।४ अग्नयेजातवेदसेमूर्ध्नि इत्यादि ।

॥ १४४ ॥ बीजमिति ॥ रंवह्न्यासनायनमः इतिपीठमंत्रः ॥ १४५ ॥ ध्यानमाह ॥ त्रिनेत्रमिति ॥ वरस्वास्तिका

पीताश्वेतारुणाकृष्णाधूम्रातीव्रास्फुलिंगिनी॥रुचिराज्वालिनीचेतिकृशानोःपीठशक्तयः॥१४४ ॥
बीजंवह्न्यासनायेतिहृदंतःपीठमंत्रकः॥एवंविन्यस्यपीठान्तंपावकंचिंतयेत्तनौ ॥ ४५ ॥ त्रिनेत्रमा
रक्ततनुंसुशुक्लवस्त्रंसुवर्णस्रजमग्निमीडे ॥ वराभयस्वस्तिकशक्तिहस्तंपद्मस्थमाकल्पसमूहयुक्तम्
॥ ४६ ॥एवंध्यात्वार्चनंकुर्यान्मानसंविधिवद्वसोः॥ पारिषिंचेत्ततस्तोयैःकुंडंस्थंडिलमेववा ॥४७॥
दर्भैःपारिस्तरेदग्निंप्रागग्रैरुदगग्रकैः ॥ प्रत्यग्दक्षिणसौम्यासुन्यसेत्रीन्परिधीन्क्रमात् ॥ ४८ ॥ पाला
शान्बिल्वजांस्तेषुब्रह्मविष्णुशिवान्यजेत्॥ वह्नौतत्पीठमभ्यर्च्यावाहयेत्स्वहृदोनलम् ॥४९॥ गंधा
दिभिःसमभ्यर्च्यपूजयेत्पावकंव्रती ॥ षट्सुकोणेषुमध्येचजिह्वास्तद्देवतायजेत् ॥१५०॥ ईशानादि
षुवाय्वंतकोणेषुषट्समर्चयेत् ॥ हिरण्याद्यतिरक्तांतामध्येतुबहुरूपिणीम् ॥ ५१ ॥ केसरेष्वंगपूजा
स्याद्दलेष्वष्टसुमूर्त्तयः ॥ मातरोष्टौदलांतेषुभैरवाःस्युस्तदग्रतः ॥ १५२ ॥

दक्षयोः ॥ अभीतिशक्तीवामयोः ॥ आकल्पाआभरणानितत्संघयुतम् ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥
॥ १५१ ॥ १५२ ॥

॥ १९३ ॥ भैरवानाह ॥ असितांगइति ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ तीर्थमंत्रेण ॥ गंगेचयमुनेचैवगोदाव
रिसरस्वति ॥ नर्मदेसिंधुकावेरिजलेस्मिन्संनिधिंकुर्वित्यनेन ॥ सृण्याअंकुशमुद्रया ॥ ऋज्वींमध्यमिकांकृत्वा

धरापुरेतुशक्राद्यावज्राद्यायुधसंयुताः ॥ एवमावरणैर्युक्तंसप्तभिःपावकंयजेत् ॥ १९३ ॥ असितांगो
रुरुश्चंडःक्रोधउन्मत्तसंज्ञकः॥ कपालीभीषणश्चापिसंहारश्चाष्टभैरवाः ॥ ९४ ॥ वामेकुशानथास्तीर्य
तत्रवस्तूनिनिःक्षिपेत् ॥ प्रणीताप्रोक्षणीपात्रेआज्यस्थालींस्रुवंस्रुचम् ॥ ९५ ॥ अधोमुखानिचैतानि
होमद्रव्यंघृतंकुशान् ॥ समिधःपंचपालाशीरन्यदप्युपयोगियत् ॥९६॥ कृत्वापवित्रेमूलेनप्रोक्षेत्ता
निशुभांभसा ॥ उत्तानानिविधायाथप्रणीतांपूरयेज्जलैः ॥ ९७ ॥ तीर्थमंत्रेणतीर्थानिसृण्यातत्राह्वये
त्सुधीः ॥ पवित्रे ह्यक्षतांस्तत्रनिःक्षिप्योत्पवनंचरेत् ॥९८॥ अथोदीच्यांनिधायैतांप्रोक्षण्यांतज्जलं
क्षिपेत् ॥ हवनीयंद्रव्यजातमुक्षेत्तोयैः पवित्रगैः ॥९९॥ मूलेनमूलगायत्र्यायद्वाहृदयमंत्रतः ॥ दक्षि
णेपीठमासाद्यतत्रब्रह्माणमाह्वयेत् ॥ १६० ॥

तर्जनींमध्यपर्वाणि ॥ संयोज्याकुंचयेत्किंचिन्मुद्रैषांकुशसंज्ञिकेतिलक्षणम् ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥

अणिमाद्या अष्टमेवक्ष्यंते ॥ ब्रह्ममंत्रमुद्धरति ॥ तारेति ॥ ॐ नमोब्रह्मणे इति ॥ १६१ ॥ स्त्रुक्स्त्रुवसंस्कारमाह हस्ताभ्यामिति ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ शक्तित्रयमाह ॥ इच्छेति ॥ दीर्घत्रयम् आईऊ। व्योम हः ॥ तत्पूर्वकां

अणिमाद्याः सिद्धयोष्टौब्रह्मणःपीठदेवताः ॥ तारहृत्पूर्वकोङेन्तोब्रह्मा[1]मंत्रोस्यपूजने ॥१६१॥ हस्ता
भ्यांस्त्रुक्स्त्रुवौधृत्वातापयेत्त्रिरधोमुखौ ॥ वामहस्तेनतौधृत्वादर्भैर्दक्षेणमार्जयेत् ॥१६२॥ संप्रोक्ष्यप्रो
क्षणीतोयैः प्रतप्यपूर्ववत्पुनः ॥ न्यस्याग्नौमार्जनान्दर्भांस्तयोःशक्तित्रयंन्यसेत् ॥ ६३ ॥ इच्छा
ज्ञानक्रियासंज्ञाचतुर्थीनमसान्विता ॥ दीर्घत्रयेंदुयुग्व्योमपूर्वकंस्थानकत्रये ॥६४॥ हृदास्त्रुचिन्यसे
च्छक्तिंस्त्रुवेशंभुं[2]ततस्तुतौ ॥ सूत्रत्रयेणसंवेष्ट्यसंपूज्यकुसुमादिभिः ॥ ६५ ॥ कुशोपरिन्यसेद्दक्षेत
योःसंस्कारईरितः॥ अभ्योक्षितायामाज्यस्यस्थाल्यामाज्यंविनिःक्षिपेत्॥६६॥ वीक्षणादिकसंस्का
रसंस्कृतंमूलमंत्रतः ॥ गोमुद्रयामृतीकृत्यषट्संस्कारांस्ततश्चरेत् ॥ १६७ ॥

ह्रांइच्छाशक्त्यैनमोमूले ॥ ह्रींज्ञानशक्त्यैनमःमध्ये ॥ ह्रूंक्रियाशक्त्यैनमः अन्ते ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ गोमुद्रा धेनुमुद्रा ॥ १६७ ॥

---

१ॐ नमोब्रह्मणे । २ नमःशक्त्यै नमःशंभवे ।

॥ १६८ ॥ .१६९ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥। नाडीत्रयमिति ॥ इडापिंगलासुषुम्णाख्या ॥ तृतीयामध्ये

कुंडोद्धृतेवायुकोणेस्थितेंगारेविनिःक्षिपेत्॥हृदेतितापनंप्रोक्तंदर्भयुग्मंप्रदीपितम् ॥१६८ ॥ आज्ये
क्षिप्त्वाहृदावह्नौपवित्रीकरणंक्षिपेत् ॥६९॥ आज्यंनीराजयेद्दीप्तदर्भयुग्मेनवर्मणा ॥ अभिद्योतनमु
क्तंतद्दीप्तंदर्भत्रयंघृते ॥१७० ॥ दर्शयेदस्त्रेणोद्द्योतेगृहीत्वाघृतपात्रकम् ॥ संयोज्याग्नौतदंगारान्स
लिलंसंस्पृशेत्सुधीः॥७१॥अंगुष्ठानामिकाभ्यांतुदर्भावादायनिःक्षिपेत् ॥ त्रिरग्निसंमुखेत्वाज्यमस्त्रे
णोत्पवनंत्विदम् ॥७२॥ हृदात्मसंमुखंतद्वदाज्यक्षेपस्तुसंप्लवः॥ नीराजनादिसंस्कारेष्वग्नौदर्भान्वि
निःक्षिपेत् ॥७३॥ दर्भद्वयंग्रंथियुतंघृतमध्येविनिःक्षिपेत् ॥ वामदक्षिणयोःपक्षौस्मृत्वानाडीत्रयंस्म
रेत् ॥ दक्षिणाद्वामतोमध्याद्धृदादायघृतंसुधीः ॥ ७४ ॥ अग्नयेग्निप्रियासोमायस्वाहेत्यग्निनेत्रयोः॥
जुहुयादग्नीषोमाभ्यांस्वाहेत्यक्षिणतृतीयके ॥ १७५ ॥

चिंत्या ॥ हृदा नमइतिमंत्रेण ॥ १७४ ॥ अग्नयेस्वाहेतिदक्षनेत्रे ॥ सोमायस्वाहेतिवामे तदाहुतिचतुष्टयेनाग्नेर्नेत्र
मुखप्रकाशोभवतीत्यर्थः ॥ १७५ ॥

॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ ॐ अस्याग्नेर्गर्भाधानसंस्कारंकरोमिस्वाहेत्यादि ॥१८०॥ पंचसमिधांहोमाद्वसोरग्नेः नालापनयनाख्यःसंस्कारः ॥ १८१ ॥ देवाभिधानेनेदवनाम्नाशुष्मणोग्नेर्नामपूर्ववत् ॥ घृताहुत्यष्टकेन

पातयेदाहुतेःशेषमाहुतिग्रहणस्थले ॥ भूयोहृदादक्षभागादादायाज्यंमुखेयजेत् ॥१७६॥ अग्नयेस्विष्टकृते तन्नेत्रास्योद्घाटनंमतम् ॥ नरसिंहंविनाविष्णुंमंत्रेनेत्रद्वयंयजेत् ॥७७॥ नरसिंहान्यदेवेषुवह्नेनेंत्रत्रयं स्मृतम् ॥ महाव्याहृतिभिर्व्यस्तसमस्ताभिश्चतुष्टयम् ॥ ७८ ॥ आहुतीनांत्रयंवह्निमंत्रेणैवतत श्चरेत् ॥ घृताहुतिभिरष्टाभिरेकैकांसंस्कृतिंचरेत्॥७९॥ओमस्याग्नेरमुंसंस्कारंकरोम्यग्निवल्लभा ॥ इत्थंमनुंजपन्गर्भाधानंपुंसवनंततः॥१८०॥ सीमंतोन्नयनंजातकर्मकृत्वाततश्चरेत्॥वह्नौपंचसमिद्धोमान्नालापनयनंवसोः॥८१॥कुर्याद्देवाभिधानेनपूर्ववन्नामशुष्मणः॥नामानंतरमेतस्यपितरौस्वेर्पयेद्धृदि॥८२॥अन्नप्राशंतथाचौलोपनयौदारयोजनम्॥संस्काराःस्युर्विवाहांतामृत्यंताःक्ररकर्मणि१८३॥

कुर्यात्-रामाग्निकृष्णाग्निरित्यादि ॥ एतस्याग्नेः पितरौवागीशीवागीशौकुण्डात्स्वहृदिन्यसेत् ॥ १८२ ॥ उपनयमुपवीतम् । दारयोजनं विवाहः ॥ १८३ ॥

---

१ भूःस्वाहा भुवःस्वाहा स्वःस्वाहा भूर्भुवःस्वःस्वाहा । २ वैश्वानरजातवेदइहावहलोहिताक्षसर्वकर्माणिसाधयस्वाहा ।

॥ १८४ ॥ १८५ ॥ कुसुमंपुष्पम् ॥ १८६ ॥ दशधाव्यस्तेनविभक्तेन ॥ १८७ ॥ तमेवविभागमाह ॥ पूर्वेति ॥ बीजषट्कम् ॥ बाणाःपंचवर्णाः ॥ सायकाःपंचैव । मुनयःसप्त ॥ मार्गणाःपञ्च ॥ गणेशमन्त्रमाह ॥ तारइति॥तारः

एकैकामाहुतिंकुर्याद्दह्नेर्जिह्वांगमूर्तिभिः ॥इंद्रादिभिश्चवज्राद्यैर्द्दिठांतैर्जुहुयात्ततः ॥ १८४॥ स्रुवेणाज्यं
चतुर्वारंनिधाय स्रुचितांसुधीः ॥अपिधायस्रुवेणैतौगृह्णीयात्करयुग्मतः ॥ ८५॥तिष्ठन्मूलंतयोर्नाभौ
कृत्वाग्रेकुसुमंक्षिपेत् ॥ वामस्तनांतंतन्मूलंकृत्वाग्निमनुनासुधीः ॥ ८६ ॥ जुहुयाद्वौषडंतेनसंपत्त्यर्थं
मतंद्रितः ॥ महागणेशमंत्रेणव्यस्तेनदशधाततः ॥८७॥ जुहुयाच्चसमस्तेनचतुर्वारंघृताहुतीः ॥ पूर्वं
पूर्वयुतंबीजषट्कंबाणाश्चसायकाः।८८।मुनयोमार्गणाश्चेतिविभागस्तन्मनोःस्मृतः॥तारोलक्ष्मीर्गि
रिसुताकामोभूर्गणनायकः॥८९॥चतुर्थ्यन्तोगणपतिर्वरांतंवरदेतिच॥सर्वांतेजनमित्युक्त्वामेवशान्ते
तुमानय।१९०।स्वाहांतोवसुयुग्मार्णोमहागणपतेर्मनुः ॥एवंकृत्वाग्निसंस्कारंपीठंदेवस्यपूजयेत् १९१

ॐ॥लक्ष्मीःश्रीं॥गिरिसुताह्रीं॥कामःक्लीं॥भूःग्लौं ॥ गणनायकःगं॥इतिबीजषट्कम् ॥ गणपतयेवरवरदसर्वजनंमेवशमानयस्वाहेतिविभागाः पूर्वयुताःकार्याः ॥ ॐ ॐ श्रीं ॐ श्रींह्रीं ॐ इत्यादि ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥

---

१ जिह्वेति । स्वदेवतानामप्युपलक्षणम् । २ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगंगणपतयेवरवरदसर्वजनंमेवशमानयस्वाहा । प्रयोगस्तु-ॐ स्वाहा । ॐ श्रींस्वाहा । ॐ श्रींह्रींस्वाहेत्यादि ।

आवाहनादिकाअग्नेर्वक्तव्याः ॥ १९२ ॥ पञ्चनेत्रसंख्या पंचविंशतिः ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥

तत्रेष्टदेवमावाह्यमुद्राआवाहनादिकाः॥प्रदर्श्यवह्निरूपस्यदेवस्यवदनेपुनः।१९२।मूलेनजुहुयात्पंचने
त्रसंख्याघृताहुतीः॥वक्त्रैकीकरणंत्वग्निर्देवयोस्तेनजायते ॥९३॥ नाडीसंधानसिद्ध्यर्थंवह्निदेवतयो
स्ततः॥जुहुयान्मूलमंत्रेणरुद्रसंख्याघृताहुतीः ॥ ९४॥ इष्टदेवस्यावृतीनामेकैकामाहुतिंचरेत् ॥ तत
स्तुमूलमंत्रेणदशधाजुहुयाद्घृतम् ॥९५॥ ततःकल्पोक्तद्रव्येणदशांशंजुहुयाज्जपात् ॥ होमंसमाप्यकु
र्वीतपूर्णाहुतिमनन्यधीः ॥९६ ॥ होमावशिष्टेनाज्येनपूरयित्वास्रुचंसुधीः ॥ पुष्पंफलंनिधायाग्रेस्रुवे
णाच्छाद्यतांपुनः ॥ ९७ ॥ उत्थितोवौषडंतेनमूलेनजुहुयादसौ ॥ तद्द्रव्येणावृतीनांचजुहुयादाहु
तिंपृथक् ॥ ९८ ॥ देवंविसृज्य स्वहृदिवह्नेर्जिह्वांगमूर्तिभिः ॥ जुहुयाद्व्याहृतीर्हुत्वाप्रोक्षेत्तंप्रोक्षणी
जलैः॥ ९९ ॥संप्रार्थ्यानेनमनुनानत्वातंविसृजेद्धृदि॥ भोभोवह्नेमहाशक्तेसर्वकर्मप्रसाधक॥२००॥
कर्मांतरेपिसंप्राप्तेसान्निध्यंकुरुसादरम् ॥ वह्नौपवित्रंनिःक्षिप्यप्रणीतांभुवुविक्षिपेत् ॥ २०१ ॥

॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥ पवित्रादिप्रतिपत्तिमाह ॥ वह्नाविति ॥ विधिं ब्रह्माणंविसृज्यदक्षिणां दत्त्वेतिशेषः ॥
सकुशान्परिस्तरणसहितान्वसौवह्नौ ॥ २०१ ॥

तर्पणमन्त्रमाह ॥ मूलमन्त्रान्ते कृष्णंतर्पयामि नम इतितर्पणे ॥ कृष्णमभिषिंचामीत्यभिषेके ॥ २०२ ॥ जपाद्दशांशाद्धोमः तद्दशांशेनतर्पणं तद्दशांशेनाभिषेकः तद्दशांशेनविप्रभोजनमिति पंचांगपुरश्चरणमितिउत्तमः पक्षः ॥ अभिषेकवर्जोमध्यमः ॥ तर्पणाभिषेकवर्जद्व्यंगःकनीयान्पक्षः होमदशांशंद्विजभोजनमिति ॥ किंबहुना ॥ बहु

विधिंविसृज्यसकुशान्परिधीन्विन्यसेद्वसौ॥एवंहोमंसमाप्याथतर्प्पयेद्देवतांजले॥२०२॥आवाह्यतद्द
शांशेनतर्पणादभिषेचनम्॥तर्पयामिनमश्चेतिद्वितीयांतेष्टपूर्वकम् ॥ ३ ॥ मूलांतेतुपदंदेयंसिंचामीत्य
भिषेचने ॥ततोनानाविधैरन्नैस्तर्पयेद्द्विजसत्तमान् ॥४॥ इष्टरूपान्समाराध्यतेभ्योदद्याच्चदक्षिणाम् ॥
न्यूनंसंपूर्णतामेति ब्राह्मणाराधनान्नृणाम् ॥ ५ ॥ देवताश्चप्रसीदंतिसंपद्यंतेमनोरथाः ॥ २०६ ॥
इतिश्रीमहीधरविरचितेमन्त्रमहोदधौभूतशुद्ध्यादिकथनंनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥ ॥ छ ॥

ब्राह्मणभोजनेदेवताप्रसादोनभवति किमिति ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ इति श्रीमहीधरविरचितमंत्रमहोदधेःव्याख्यायां नौकायांभूतशुद्ध्यादिकथनंनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

---

१· ब्रह्माणम् ।

आदौसकलविघ्ननिवर्तकस्यश्रीगणेशस्यमन्त्रान्वक्तुंप्रतिजानीते ॥ गणेशस्येति ॥ मनून्मन्त्रान् मन्यंतेसर्वे यैरिति ! मन्त्रमुद्धरति ॥ जलंवः ॥ चक्रीकः ॥ वह्निःरः ॥ तेनयुतःतेनयुक्तः ॥ कामिकात् ॥ कर्णेंद्वाढचाउ ॥ बिंदुयुता ॥ तेनतुं ॥ दीर्घआ ॥ तेनयुतोदारकोडः ॥ वायुर्यः ॥ कवचपश्चिममंतेयस्यसतथा वक्रतुंडायहुमितिसविधुभिः

गणेशस्यमनून्वक्ष्येसर्वाभीष्टप्रदायकान्॥ जलं(व)चक्री(क)वह्नि(र)युतःकर्णेंद्वाढयाचकामिका(तुं)
दारको(ड)दीर्घसंयुक्तो(आ)वायुः(य)कवच(हुं) पश्चिमः।।षडक्षरोमंत्रराजोभजतामिष्टसिद्धिदः।।२।।
भार्गवोमुनिरस्योक्तश्[2]छंदोनुष्टुबुदाहृतः।।विघ्नेशोदेवताबीजंवंशक्तिर्यमितीरितम् ।।३।। षडक्षरैःसवि
धुभिःप्रणवाद्यैर्नमोंतकैः।। प्रकुर्याज्जातिसंयुक्तैःषडंगविधिमुत्तमम् ।।४।। भ्रूमध्यकंठहृदयनाभिलिंग
पदेषुच।। मनोर्वर्णान्क्रमान्न्यस्यव्यापय्याथोस्मरेत्प्रभुम् ।।५।। उद्यद्दिनेश्वररुचिंनिजहस्तपद्मैःपाशां
कुशाभयवरान्दधतंगजास्यम्।।रक्तांबरंसकलदुःखहरंगणेशंध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ।।६।।

सानुस्वारैः॥ ॐवंनमःहृदयायनमःइत्यादि ॥ व्यापय्यसर्वमंत्रंसर्वशरीरेन्यस्येत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ध्यानमाह । उद्यदिति ॥ पाशाभयेवामयोः ॥ वरांकुशावन्ययोः ॥ ६ ॥

---

१ वक्रतुंडायहुं । २ अस्यश्रीगणेशमंत्रस्यभार्गवऋषिरनुष्टुप्छंदःविघ्नेशोदेवतावंबीजंयंशक्तिर्ममाभीष्टसिद्धयेजपेविनियोगः ।

वाडवान्विप्रान् ॥ ७ ॥ द्रव्याष्टकमाह इक्षवइति ॥ ८ ॥ ९ ॥ पीठमंत्रमाह ॥ गंसर्वशक्तिकमलासनाय
ऋतुलक्षंजपेन्मंत्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः॥ जुहुयान्मंत्रसंसिद्ध्यैवाडवान्भोजयेच्छुचीन्॥७॥ इक्षवःसक्त
वोरंभाफलानिचिपिटास्तिलाः ॥ मोदकानारिकेलानिलाजाद्रव्याष्टकंस्मृतम् ॥८॥ पीठमाधारश
क्त्यादिपरतत्त्वांतमर्चयेत् ॥ तत्राष्टदिक्षुमध्येचसंपूज्यानवशक्तयः॥९॥तीव्राचचालिनीनंदाभोग
दाकामरूपिणी ॥ उग्रातेजोवतीसत्यानवमीविघ्ननाशिनी ॥ १०॥ विनायकस्यमंत्राणामेताःस्युः
पीठशक्तयः ॥ सर्वशक्तिकमांतेतुलासनायहृदंतिकः॥११॥पीठमंत्रस्तदीयेनबीजेनादौसमन्वितः ॥
प्रदायासनमेतेनमूर्तिंमूलेनकल्पयेत् ॥ १२ ॥ तस्यांगणेशमावाह्यपूजयेदासनादिभिः ॥ अभ्यर्च्य
कुसुमैरीशंकुर्यादावरणार्चनम्॥१३॥ आग्नेयादिषुकोणेषुहृदयंचशिरःशिखाम्॥वर्माभ्यर्च्याग्रतोनेत्रं
दिक्ष्वस्त्रंपूजयेत्सुधीः॥१४॥ द्वितीयावरणेपूज्याःप्रागाद्यष्टैवशक्तयः ॥ विद्यादिमाविधात्रीचभोगदा
विघ्नघातिनी॥१५॥निधिप्रदीपापघ्नीपुण्यापश्चाच्छशिप्रभा ॥ दलाग्रेषुवक्रतुंडएकदंष्ट्रोमहोदरः
॥ १६ ॥ गजास्यलंबोदरकौविकटोविघ्नराजकः ॥ धूम्रवर्णस्तदग्रेषुशक्राद्याआयुधैर्युताः॥ १७ ॥
नमः ॥ एतेनासनंदत्त्वातद्देशेमूलेनमूर्तिंकल्पयेत् ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ प्रयोगानाह ब्रह्मेति ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ मंडलादेकोनंपचाशद्दिनमध्येइष्टंप्राप्नुयात् ॥ २५ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ रायस्पोषेति ॥ स्वरूपं भृगुः सः ॥ याढचोयकारयुतः ॥ मेषोन् ॥ सात्वतोध् ॥

एवमावरणैःपूज्यःपंचभिर्गणनायकः।।पूर्वोक्ताचपुरश्चर्याकार्यामंत्रस्यसिद्धये।।१८।।ततःसिद्धेमनो
काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान् ।।ब्रह्मचर्यरतोमंत्रीजपेद्द्विसहस्रकम्।।१९।।षण्मासमध्याद्दारिद्र्यंना
शयत्येवनिश्चितम्।।चतुर्थ्यादिचतुर्थ्यंतंजपेद्दशसहस्रकम् ।।२०।। प्रत्यहंजुयादष्टोत्तरंशतमतंद्रितः।।
पूर्वोक्तंफलमाप्नोतिषण्मासाद्भक्तितत्परः।।२१।।आज्याक्तान्नस्यहोमेनभवेद्धनसमृद्धिमान्।।पृथुकै
र्नारिकेलैर्वामरिचैर्वासहस्रकम्२२प्रत्यहंजुह्वतोमासाज्जायतेधनसंचयः ।। जीरसिंधुमरीचाक्तैरष्ट
द्रव्यैःसहस्रकम् ।। २३।।जुह्वन्प्रतिदिनंपक्षात्स्यात्कुबेरइवार्थवान्।।चतुःशतं चतुश्चत्वारिंशदा४४४
ढ्यंदिनेदिने ।।२४।। तर्पयेन्मूलमंत्रेणमंडलादिष्टमाप्नुयात् ।।अथमंत्रांतरंवक्ष्येसाधकानांनिधिप्रदम्
।।२५।।रायस्पोषभृगुर्याढ्योददितामेषसात्वतौ ।। सद्दशौदोरत्नधातुमान्त्रक्षोगगनंरतिः ।। २६ ।।

तौसद्दशौइयुतौ ॥ गगनंहः ॥ रतिर्णः ॥ ससद्या ॐयुता ॥ शार्ङ्गीगः ॥ खंहः ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ षडक्षरःपूर्वोक्तः यथा रायस्पोषस्यददितानिधिदोरत्नधातुमान्रक्षोहणोवलगहनोवक्रतुंडायहुमित्येकत्रिंशद्वर्णः ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ पूर्ववत्षड्वर्णवत् ॥ २९ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ पद्मेति ॥ भानुर्मः ॥ पद्मनाभए ॥ तद्युतःमे । धाधः ॥ सद्यॐ ॥ तद्युतालकौलकारककारौ ॥ अनन्तमाकारमारूढौ ॥ वायुर्यः ॥ पावकगेहिनीस्वाहा ॥ मेधोल्कायस्वाहेति षड्वर्णः ॥ ३० ॥ मन्त्रांतरमाह ॥ ॥ लकुलीति ॥ लकुलीहकारः ॥ भृगुतौसकारतकारौदृशमारूढौइकारयुतौ

ससद्याबलशार्ङ्गीखंनोषडक्षरसंयुतः ॥ एकत्रिंशद्वर्णयुक्तोमंत्रोभीष्टप्रदायकः॥ २७ ॥ सांयकैस्त्रि[३]भि
रष्टाभिश्च[४]तुर्भिःपञ्चभीरसैः ॥ मंत्रोत्तिथतैःक्रमाद्वर्णैःषडंगसमुदीरितम् ॥२८॥ ऋष्याद्यर्चाप्रयोगाः
स्युःपूर्ववन्निधिदो[१]ह्ययम् ॥ पद्मनाभयुतोभानुर्मेधा[२]सद्यसमन्विता ॥ २९ ॥ लकावनंतमारूढौवायुः
पावकगेहिनी ॥ षडक्षरोयमादिष्टोभजतामिष्टदोमनुः ॥३०॥ पूर्ववत्सर्वमेतस्यसमाराधनमीरितम्॥
लकुलीदृशमारूढौभृगुतौलोहितःसदृक् ॥ ३१ ॥ वकःसदीर्घश्चःसाक्षिर्लिखेन्मंत्रःशिरोंतिमः ॥
नवा[३]क्षरोमनुश्चास्यकंकोलःपरिकीर्तितः ॥ ३२ ॥

तेनास्ति । लोहितःपःसदृक् इयुतः ॥ वकः शः ॥ सदीर्घःआयुतः ॥ चस्वरूपम् ॥ साक्षीइयुतः ॥ लिखेस्वरूपंशिरोंतिकःस्वाहांतः ॥ हस्तिपिशाचिलिखेस्वाहेतिनवार्णः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

---

१ रायस्पोषस्यददितानिधिदोरत्नधातुमान्रक्षोहणोवलगहनोवक्रतुंडायहुम् । २ मेधोल्कायस्वाहा । ३ हस्तिपिशाचिलिखेस्वाहा ।

पञ्चांगमाह ॥ द्वाभ्यामिति ॥ हास्तिहृदयायनमइत्यादि ॥ ३३ ॥ ध्यानमाह ॥ चतुर्भुजमिति ॥ अंकुशमोदकपा

विराट्छंदोदेवतातुस्याद्वैचोच्छिष्टनायकः ॥ द्वाभ्यांत्रिभिर्द्वयेनाथद्वाभ्यांसकलमंत्रतः ॥३३॥ पंचां
गान्यस्यकुर्वीतध्यायेत्तं[१]शशिशेखरम् ॥ चतुर्भुजंरक्ततनुंत्रिनेत्रंपाशांकुशौमोदकपात्रदंतौ॥करैर्दधानं
सरसीरुहस्थमुन्मत्तमुच्छिष्टगणेशमीडे ॥३४॥ लक्षमेकंजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः॥ पूर्वोक्तेपूजये
त्पीठेविधिनोच्छिष्टविघ्नपम् ॥ ३५ ॥ आदावंगानिसंपूज्यब्राह्म्याद्यान्दिक्षुपूजयेत् ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरी
चैवकौमारीवैष्णवीपरा ॥ ३६ ॥ वाराहीचतथेंद्राणीचामुंडारमयासह ॥ ककुप्सुवक्रतुंडाद्यान्दश
सुप्रतिपूजयेत् ॥३७॥ वक्रतुंडैकदंष्ट्रौचतथालंबोदराभिधः ॥ विकटोधूम्रवर्णश्चविघ्नश्चापिगजाननः
॥३८॥ विनायकोगणपतिर्हस्तिदंताभिधोंतिमः ॥ इंद्राद्यानपिवज्राद्यान्पूजयेदावृतिद्वये ॥ ३९ ॥
एवंसिद्धेमनौमंत्रीप्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ स्वांगुष्ठप्रतिमांकृत्वाकपिनासितभानुना ॥ ४० ॥

त्रेदक्षयोः ॥ अन्ययोरन्ये ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ प्रयोगानाह ॥ स्वेति ॥ कपिनारक्तचंदनेन ॥
सितभानुनाश्वेतार्केणवाप्रतिमाकार्य्या ॥ ४० ॥

---

[१] गणेशम् ।

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ अनावृतोनिर्वस्त्रः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ वल्मीकमृत्तिकाप्रतिमैवंपूजितालाभदेति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

गणेशप्रतिमां रम्यामुक्तलक्षणलक्षिताम् ॥ प्रतिष्ठाप्यविधानेनमधुनास्नापयेच्चताम् ॥ ४१ ॥ आरभ्य
कृष्णभूतादियावच्छुक्लाचतुर्दशी ॥ सगुडंपायसंतस्मैनिवेद्यप्रजपेन्मनुम् ॥ ४२ ॥ सहस्रंप्रत्यहं
तावज्जुहुयात्सघृतैस्तिलैः ॥ गणेशोहमितिध्यायन्नुच्छिष्टेनावृतोरहः ॥ ४३ ॥ पक्षाद्राज्यमवाप्नोति
नृपजोन्योपिवानरः ॥ कुलालमृत्स्नाप्रतिमापूजितैवंसुराज्यदा ॥ ४४ ॥ वल्मीकमृत्कृतालाभमेव
मिष्टान्प्रयच्छति ॥ गौडीसौभाग्यदासैवंलावणीक्षोभयेदरीन् ॥ ४५ ॥ निंबजानाशयेच्छत्रून्प्रतिमैवं
समर्चिता ॥ [1]मध्वक्तैर्होमतोलाजैर्वशयेदखिलंजगत् ॥ ४६ ॥ सुप्तोधिशय्यमुच्छिष्टोजपञ्च्छत्रून्
वशंनयेत् ॥ कटुतैलान्वितैराजीपुष्पैर्विद्वेषयेदरीन् ॥ ४७ ॥ द्यूतेविवादेसमरेजप्तोयंजयमावहेत् ॥
कुबेरोस्यमनोर्जापान्निधीनां स्वामितामयात् ॥ ४८ ॥ लेभातेराज्यमनारिवानरेशबिभीषणौ ॥ रक्तवस्त्रांगरागाढ्यस्तांबूलंनिश्यदञ्जपेत् ॥ ४९ ॥ यद्वानिवेदितंतस्मैमोदकंभक्षयञ्जपेत् ॥ पिशितंवा

अधिशय्यंशय्यायाम् ॥ कटुतैलंसर्षपतैलम् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ अनारिशत्रुहीनम् ॥ ४९ ॥ तेनताम्बूलादिना ॥

---

[1] घृतमधुशर्कराक्तैः ।

॥५०॥ बलिमंत्रमाह ॥ स्मृतिर्गः॥ सेन्दुस्सानुस्वारः ॥आकाशंहः॥ तथासानुस्वारः॥ सृष्टिलौककारलकारौ॥कीदृशौ मन्विद्धाढ्यौऔकारानुस्वारयुतौ ॥ तेनक्लौं॥पंचांतकशिवौगकारलकारौतद्वन्मन्विद्धाढ्यौग्लौं ॥ उच्छिष्टगस्वरूपम् ॥ भगान्वितःउमाकांतः ॥ एकारयुतोणःणे ॥ सबिंदुर्यःसानुस्वारोयकारः ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ मन्त्रो यथा ॥ गंहंक्लौंग्लौंउच्छिष्टगणेशायमहायक्षायायंबलिः इत्येकोनविंशत्यर्णोबलिमंत्रः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ मन्त्रांतर

फलंवापितेनतेनबलिंहरेत् ॥ ५० ॥ सेंदुःस्मृतिस्तथाकाशंमन्विद्धाढ्यौचसृष्टिलौ॥पंचांतकशिवौ
तद्वदुच्छिष्टगभगान्वितः ॥ ५१ ॥ उमाकांतःश्यायमांतेहायक्षायासबिंदुयः ॥ बलिरित्येषकथि
तोनवेंद्वर्णोबलेर्मनुः ॥ ५२ ॥ ध्रुवोमायासेंदुशार्ङ्गिबीजाढ्योनववर्णकः ॥ द्वादशार्णोमनुःप्रोक्तःस
र्वमस्यनवार्णवत् ॥५३॥ ताराद्यश्चगणेशाद्योनवार्णोदशवर्णकः ॥ द्विविधोस्योपासनंतुप्रोक्तमन्य
न्नवार्णवत् ॥ ५४ ॥

माह ॥ ध्रुवइति ॥ ध्रुव ॐ। मायाह्रीं । शार्ङ्गिगःसेन्दुःअनुस्वारसहितः ॥ गंत्रिबीजाढ्यः ॥ स्पष्टम् । यथा ॐ ह्रींगंहस्तिपिशाचिलिखेस्वाहेतिद्वादशार्णः ॥ ५३ ॥ ताराद्योयथा ॥ ॐ हस्तिपिशाचिलिखेस्वाहा ॥ गणेशाद्यो यथा ॥ गंहस्तिपिशाचिलिखेस्वाहा ॥ ५४ ॥

मन्त्रान्तरमाह ॥ ध्रुवेति ॥ ध्रुवःप्रणवः हृन्नमः स्वरूपमन्यत् ॥ मन्त्रः ॥ ॐनमउच्छिष्टगणेशायहस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा इत्येकोनविंशतिवर्णः ॥ मुन्यादीति ॥ ऋषिश्छंदोदेवताःनवार्णवत् ॥ ५५ ॥ षडङ्गमाह ॥ त्रिभिरिति ॥ अर्च्चनंपुरापूर्ववदित्यर्थः ॥ ५६ ॥ मन्त्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ झिंटीशः ए ॥ चतुराननः कः ॥ दीर्घावियत् हा ॥

ध्रुवोहृदुच्छिष्टगणेशायतेतुनवाक्षरः ॥ एकोनविंशत्यर्णाढ्योमनुर्मुन्यादिपूर्ववत् ॥ ५५ ॥ त्रिभिः सप्तभिरक्षिभ्यांत्रिभिर्द्वाभ्यांद्वयेनच॥मंत्रोत्थितैःसुधीर्वर्णैः कुर्यादंगंपुरार्चनम्॥५६॥ तारोनमोभगवते झिंटीशश्चतुराननः॥दंष्ट्रायहस्तिमूर्च्चायखायलंबोदरायच ॥ ५७ ॥ उच्छिष्टमवियद्दीर्घात्मने पाशोंकुशःपरा॥सेंदुः शार्ङ्गीभगयुतेद्वेमेधेवह्निकामिनी ॥ ५८ ॥ उच्छिष्टगणनाथस्यमनुरद्रिगुणाक्षरः॥गणकोमुनिराख्यातोगायत्रीच्छंदईरितः ॥ ५९ ॥

पाशआं ५ अंकुशःक्रा पराह्रीं ॥ सेन्दुशार्ङ्गींगं ॥ भगयुतेद्वेमेधे ॥ एकारयुतघद्वयम् ॥ वह्निकामिनीस्वाहा ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ ॐ नमोभगवतेएकदंष्ट्रायहस्तिमुखायलम्बोदरायउच्छिष्टमहात्मनेआँक्रोंह्रींगंघेघेस्वाहा ॥ अद्रिगुणाक्षरःसप्तत्रिंशदक्षरः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

षडंगमाह ॥ सप्तेति ॥ ६० ॥ ध्यानमाह ॥ शरानिति ॥ धनुःपाशौवामयोः ॥ शरांकुशौदक्षयोः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

उच्छिष्टगणपोदेवोजपेदुच्छिष्टएवतम्॥सप्तदिंग्बाणंसप्ताब्धियुगार्णैरङ्गकंमनोः ॥६०॥ शरान्धनुः
पाशसृणीस्वहस्तैर्दधानमारक्तसरोरुहस्थम् ॥ विवस्त्रपत्न्यांसुरतप्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बासुतमाश्रयेहम् ॥
॥६१॥लक्षंजपेद्घृतैर्हुत्वातद्दशांशंप्रपूजयेत् ॥ पूर्वोक्तपीठेस्वाभीष्टसिद्ध्येपूर्ववद्विभुम् ॥ ६२ ॥
कृष्णाष्टम्यादितद्भूतंयावत्तावज्जपेन्मनुम् ॥ प्रत्यहंसाष्टसाहस्रंजुहुयात्तद्दशांशतः ॥ ६३ ॥
तर्पयेदपिमंत्रोयंसिद्धिमेवंप्रयच्छति ॥ धनंधान्यंसुतान्पौत्रान्सौभाग्यमतुलंयशः ॥ ६४ ॥ मू
र्तिंकुर्य्याद्गणेशस्यशुभाहेनिम्बदारुणा ॥ प्राणप्रतिष्ठांकृत्वाथतदग्रेमंत्रमाजपेत् ॥ ६५ ॥ यंध्यात्वा
दासवत्सोपिवश्योभवतिनिश्चितम्॥नदीजलंसमादायसप्तविंशतिसंख्यया ॥ ६६॥ मंत्रयित्वामुखं
तेनप्रक्षाल्येशसभांव्रजेत् ॥ पश्येद्यंदृश्यतेयेनसवश्योजायतेक्षणात् ॥६७॥ चतुःसहस्रंधत्तूरपुष्पाणि
मनुनार्पयेत्॥गणेशायनृपादीनांजनानांवश्यताकृते ॥ ६८ ॥ सुंदरीवामपादस्यरेणुमादायतत्रतु ॥
संस्थाप्यगणनाथस्यप्रतिमांप्रजपेन्मनुम् ॥ ६९ ॥

तद्भूतंयावत्कृष्णचतुर्दशीपर्य्यन्तम् ॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

धृतासुकां कृतप्राणप्रतिष्ठाम् ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ वज्री स्नुही ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

तांध्यात्वारविसाहस्रंसासमायातिदूरतः ॥ श्वेतार्केणाथनिम्बेनकृत्वामूर्तिंधृतासुकाम् ॥७०॥ चतु
र्थ्यांपूजयेद्रात्रौरक्तैःकुसुमचंदनैः ॥ जप्त्वासहस्रंतांमूर्तिंक्षिपेद्रात्रौसरित्तटे ॥ ७१ ॥ स्वेष्टंकार्य्यं
समाचष्टेस्वप्नेतस्यगणाधिपः ॥ सहस्रनिम्बकाष्ठानांहोमादुच्चाटयेदरीन् ॥ ७२ ॥ वज्रिणःसमिधांहो
माद्रिपुर्य्यमपुरंव्रजेत् ॥ वानरस्यास्थिसंजप्तंक्षिप्तमुच्चाटयेद्गृहे ॥७३॥ जप्तंनरास्थिकन्यायागृहेक्षि
प्तंतदात्तिकृत् ॥कुलालस्यमृदास्त्रीणांवामपादस्यरेणुना ॥ ७४ ॥ कृत्वापुत्तलिकांतस्याहृदिस्त्रीनाम
संलिखेत् ॥ निखनेन्मंत्रसंजप्तैर्निम्बकाष्ठैःक्षिताविमाम् ॥ ७५ ॥ सोन्मत्ताभवतिक्षिप्रमुद्धृतायांसुखं
भवेत्॥ शत्रोरेवंकृतासातुलशुनेनसमन्विता ॥७६ ॥ शरावान्तर्गतासम्यक्पूजिताद्वारिविद्विषः ॥
निखातापक्षमात्रेणशत्रूच्चाटनकृत्स्मृता ॥ ७७ ॥ विषमेसमनुप्राप्तेसितार्कारिष्टदारुजम् ॥ गणपं
पूजितंसम्यक्कुसुमैरक्तचन्दनैः ॥ ७८ ॥ मद्यभाण्डस्थितंहस्तमात्रंतंनिखनेत्स्थले ॥ तत्रोपविश्य
प्रजपेन्मंत्रीनक्तंदिवामनुम् ॥ ७९ ॥

॥ ७७ ॥ अरिष्टो निंबः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ हयमारजैः करवीरोत्थैः ॥ ८३ ॥ मन्त्रान्तरमाह ॥ तारइति ॥ तारः ॐ ॥ महात्माङे–म
हात्मने ॥ पाशादियुक्तम् ॥ आत्मभूःक्रीं ॥ मायाह्रीं ॥ वर्म्महूं ॥ दहनांगनास्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथाओंह

सप्ताहमध्येनश्यंतिसर्वेघोराउपद्रवाः ॥ शत्रवोवशमायान्तिवर्द्धन्तेधनसंपदः ॥ ८० ॥ दुष्टस्त्री
वामपादस्यरजसानिजदेहजैः॥मलैर्मूत्रपुरीषाद्यैःकुम्भकारमृदापिच॥८१॥ एतैःकृत्वागणेशस्यप्रति
मांमद्यभांडगाम्॥संपूज्यनिखनेद्भूमौहस्तार्द्धेपूरितेपुनः ॥ ८२ ॥ संस्थाप्यवह्निंजुहुयात्कुसुमैर्हयमा
रजैः ॥ सहस्रंसाभवेद्दासीतन्वाचमनसाधनैः ॥ ८३ ॥ एवमादिप्रयोगांस्तुनवार्णेनापिसाधयेत् ॥
तारोहस्तिमुखायाथङेन्तोलम्बोदरस्तथा ॥ ८४ ॥ उच्छिष्टान्तेमहात्माङेपाशाङ्कुशशिवात्मभूः॥
मायावर्म्मचघेघेउच्छिष्टायदहनाङ्गना ॥ ८५ ॥द्वात्रिंशदक्षरोमन्त्रोयजनंपूर्ववन्मतम् ॥ रसेषुसप्त
षट्षट्कनेत्रार्णैरङ्गमीरितम्॥८६॥उच्छिष्टगजवक्रस्यमन्त्रेष्वेषुनशोधनम् ॥ सिद्धादिचक्रंमासादेः
प्राप्तास्तेसिद्धिदागुरोः ॥८७॥ मनवोऽमीसदागोप्यानप्रकाश्यायतःकुतः॥ परीक्षितायशिष्यायप्रदे
यानिजसूनवे ॥ ८८ ॥

स्तिमुखायलम्बोदरायउच्छिष्टमहात्मनेआँक्रोंह्रींक्लींह्रींहूंघेघेउच्छिष्टायस्वाहा ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ द्वात्रिंशदर्णः ॥
षडंगमाह ॥ रस इति ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ उच्छिष्टगणेशाउक्ताः ॥ ८८ ॥

मायात्रिमूर्तिचंद्रस्थौपंचान्तकहुताशनौ ॥ तारादिशक्तिबीजान्तोमंत्रोयंचतुरक्षरः ॥ ८९ ॥ भार्गवोस्यंमुनिश्छंदोविराट्शक्तिर्गणाधिपः ॥ देवोमायाद्वितीयेतुशक्तिबीजेप्रकीर्तिते ॥ ९० ॥ षड्दीर्घयुग्द्वितीयेनताराद्येनषडङ्गकम् ॥ विधायसावधानेनमनसासंस्मरेत्प्रभुम् ॥ ९१ ॥ विषाणा[2]ङ्कुशाक्षसूत्रंचपाशंदधानंकरैर्मोदकंपुष्[3]करेण ॥ स्वपत्न्यायुतंहेमभूषाभराढ्यंगणेशंसमुद्यद्दिनेशाभमीडे॥ ॥९२॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षचतुष्कंतद्दशांशतः ॥ अपूपैर्जुहुयाद्धौमध्वक्तैस्तर्पयेच्चतम् ॥ ९३ ॥ पूर्वोक्तेपूजयेत्पीठेकेसरेष्वङ्गदेवताः ॥ दलेषुवक्रतुण्डाद्यान्ब्राह्मीत्याद्यान्दलाग्रगान् ॥ ९४ ॥

शक्तिविनायकसंज्ञं मन्त्रान्तरमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ पञ्चान्तकहुताशनौगकाररेफौ ॥ त्रिमूर्तिचन्द्रस्थौ इकारानुस्वारयुक्तौ ॥ तेनग्रींतारादिशक्तिबीजान्तः प्रणवादिर्मायाबीजान्तः ॥ यथा ॥ ॐ ह्रींग्रींह्रींइति चतुर्वर्णः ॥ ८९ ॥ देवइति ॥ पूर्वेणसम्बन्धः ॥ माया शक्तिः ॥ द्वितीयंबीजम् ॥ ९० ॥ षडङ्गमाह ॥ षडिति ॥ ॐ ग्रांहृत्॥ ॐ ग्रींशिरइत्यादि ॥ ९१ ॥ ध्यानमाह ॥ विषाणेति ॥ अंकुशाक्षसूत्रे दक्षयोः । अन्ये वामयोः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

---

[1] अस्यशक्तिगणाधिपमंत्रस्यभार्गवऋषिः विराट्छंदः शक्तिगणाधिपोदेवताह्रींशक्तिःग्रींबीजंममाभीष्टसिद्धयर्थेंजपेविनियोगः । [2] दन्त० । [3] शुंडाग्रेण।

ककुप्पालानिन्द्रादीन् ॥ ९५ ॥ परमान्नंपायसम् ॥ ९६ ॥ वामनेत्रानारी ॥ ९७ ॥ मंत्रांतरमाह । तारइति ॥ तारः ॐ । रमाश्रीं चन्द्रयुक्तःखान्तः गं ॥ समीरणोयः ॥ तोयंवः ॥ दीर्घोनः ॥ वायुर्यः ॥ पावककामिनी

ककुप्पालांस्तदस्त्राणिसिद्धएवंभवेन्मनुः ॥ घृताक्तमन्नंजुहुयादावर्षादन्नवान्भवेत् ॥९५॥ परमान्नैर्हुतालक्ष्मीरिक्षुदंडैर्नृपश्रियः ॥ रम्भाफलैर्नारिकेलैःपृथुकैर्वश्यताभवेत् ॥ ९६ ॥ घृतेनधनमाप्नोतिलवणैर्मधुसंयुतैः ॥ वामनेत्रांवशीकुर्य्यादपूपैःपृथिवीपतिम् ॥ ९७ ॥ तारोरमाचन्द्रयुक्तःखान्तःसौम्यासमीरणः ॥ ङेन्तोगणपतिस्तोयंरवरान्तेदसर्वंच ॥ ९८ ॥ जनंमेवशमादीर्घोवायुःपावककामिनी ॥अष्टाविंशतिवर्णोयंमनुर्द्धनसमृद्धिदः ॥ ९९ ॥ अन्तर्य्यामीमुनिश्छंदोगायत्रीदेवतामनोः ॥ लक्ष्मीविनायकोबीजंरमाशक्तिर्वसुप्रिया ॥ १०० ॥

स्वाहा ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ ॐश्रीगंसौम्यायगणपतयेवरवरदसर्वजनंमेवशमानयस्वाहेति अष्टाविंशत्यर्णोलक्ष्मीगणेशोमन्त्रः ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

---

१ अस्यलक्ष्मीविनायकमंत्रस्यअन्तर्य्यामिऋषिः गायत्रीछंदः लक्ष्मीविनायकोदेवताश्रींबीजंस्वाहाशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

षडंगमाह ॥ रमेति ॥ श्रांगांहृत्, श्रींगींशिरः, श्रूंगूंशिखेत्यादि ॥ ध्यानमाह ॥ दन्तेति ॥ दन्तशङ्खौदक्षयोः ॥

रमागणेशबीजाभ्यांदीर्घाढ्याभ्यांषडङ्गकम् ॥ दन्ताभयेचक्रदरौदधानंकराग्रगस्वर्णघटंत्रिनेत्रम् ॥
धृताब्जयालिङ्गितमब्धिपुत्र्यालक्ष्मीगणेशंकनकाभमीडे ॥ १०१ ॥चतुर्लक्षंजपेन्मंत्रंसमिद्भिर्बिल्व
शाखिनः ॥ दशांशंजुहुयात्पीठे पूर्वोक्तेतंप्रपूजयेत्॥१०२॥आदावङ्गानिसंपूज्यशक्तीरष्टाविमायजे
त् ॥बलाकाविमलापश्चात्कमलावनमालिका॥१०३॥विभीषिकामालिकाचशाङ्करीवसुबालिका॥
शंखपद्मनिधीपूज्यौपार्श्वयोर्दक्षवामयोः ॥१०४॥ लोकाधिपांस्तदस्त्राणितद्बहिःपरिपूजयेत् ॥ एवं
सिद्धमनौमंत्रीप्रयोगान्कर्तुमर्हति॥१०५॥उरोमात्रेजलेस्थित्वामंत्रीध्यात्वार्कमण्डले ॥ एवंत्रिलक्षंज
पतोधनवृद्धिःप्रजायते ॥ १०६ ॥ बिल्वमूलंसमास्थायतावज्जप्तेफलंहितत् ॥ अशोककाष्ठैर्ज्वलिते
वह्नावाज्याक्ततण्डुलैः ॥ १०७ ॥

अभयचक्रेवामयोः ॥ शुण्डाग्रेस्वर्णकुम्भः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ तावत्रिलक्षंतत्फ
लंधनवृद्धिः ॥ १०७ ॥

॥ १०८ ॥ त्रैलोक्यमोहनगणेशमन्त्रमाह ॥ वक्रेति ॥ स्वरूपम् ॥ णांतस्तः ॥ कर्णेंदुयुक् ॥ उर्बिंदुयुतः ॥ मन्मथःक्लीं॥ मायाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ गजमुखोगं ॥ भगीहरिः ॥ एयुतस्तः ॥ बालोवः ॥ अग्नीरः ॥ सत्योदः ॥ रेफारूढजलं वं ॥ स्थिराजः ॥ सेन्दुर्मेषः नं ॥ उषर्बुधप्रियास्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा ॥ वक्रतुंडैकदंष्ट्रायक्लींह्रीं श्रींगंगण

होमतोवशयेद्विश्वमर्ककाष्ठंशुचावपि ॥ खादिराग्नौनरपतिंलक्ष्मींपायसहोमतः ॥ १०८ ॥ वक्रकर्णेन्दुयुग्णान्तौडैकदंष्ट्रायमन्मथः।मायारमागजमुखोगणपान्तेभगीहरिः।१०९।वरवालाग्निसत्याःसरेफारूढंजलंस्थिरा॥सेन्दुर्म्मेषोमेवशान्तेमानयोषर्बुधप्रिया ॥११०॥ स्यात्त्रयस्त्रिंशदर्णाढ्योमनुस्त्रैलोक्यमोहनः ॥ गणकोस्यऋषिश्छंदोगायत्रीदेवतापुनः ॥१११॥ त्रैलोक्यमोहनकरोगणेशोभक्तसिद्धिदः ॥ [1]रविवेदैःशरोदन्वद्रसनेत्रैःषडङ्गकम् ॥ ११२ ॥ गदाबीजपूरेधनुःशूलचक्रेसरोजोत्पलेपाशधान्याग्रदन्तान् ॥ करैःसंदधानंस्वशुंडाग्रराजन्मणीकुम्भमङ्काधिरूढंस्वपत्न्या ॥ ११३ ॥

पते वरवरदसर्वजनंमेवशमानयस्वाहेतित्रयास्त्रिंशद्वर्णाः ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ षडंगमाह ॥ रवीति ॥ उदन्वन्तश्चत्वारः ॥ ११२ ॥ ध्यानमाह ॥ गदेति ॥ गदाबीजपूरशूलचक्रपद्मानिदक्षेषुअन्यान्यन्येषु ॥ धान्याग्रंव्रीहिमंजरी ॥ ११३ ॥

---

[1] अस्यत्रैलोक्यमोहनकरगणेशमंत्रस्यगणकऋषिःगायत्रीछंदःत्रैलोक्यमोहनकरोगणेशोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

किंभूतयापत्न्या ॥ सरोजन्मनापद्मेन भूषणसमूहेनचक्रमात् ॥ ज्वलन्दीप्यमानोहस्तोज्वलंतीतनुश्चयस्या
स्तया ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ दीर्घाद्यामातरः ॥ आंब्राह्म्यैनमः ॥ ईंमाहेश्वर्यैनमइत्यादि ॥

सरोजन्मनाभूषणानांभरेणोज्ज्वलद्धस्ततन्व्यासमालिङ्गिताङ्गम् ॥ करीन्द्राननंचन्द्रचूडंत्रिनेत्रंजग
न्मोहनंरक्तकान्तिंभजेत्तम्॥११४॥वेदलक्षंजपेन्मंत्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः॥हुत्वापूर्वोदितंपीठेपूजयेद्गणना
यकम् ॥११५॥ अङ्गार्चापूर्ववत्प्रोक्ताशक्तीःपत्रेषुपूजयेत्॥वामाज्येष्ठाचरौद्रीस्यात्कालीकलपदादि
का ॥ ११६ ॥ विकरिण्याह्वयातद्वद्बलाद्याप्रमथन्यपि॥सर्वभूतदमन्याख्यामनोन्मन्यपिचाग्रतः
॥ ११७ ॥ दिक्षुप्रमोदःसुमुखोदुर्मुखोविघ्ननाशकः॥दीर्घाद्यामातरःपूज्याइंद्राद्याआयुधान्यपि॥
॥११८॥एवंसिद्धेमनौकुर्य्यात्प्रयोगानिष्टसिद्धये॥वशयेत्कमलैर्भूपान्मन्त्रिणःकुमुदैर्हुतैः॥ ११९ ॥
समिद्धरैश्चलदलसमुद्भूतैर्धरासुरान्॥उदुम्बरोत्थैर्नृपतीन्प्लक्षैर्वाटैर्विशोन्तिमान्॥ १२० ॥ क्षौद्रेणक
नकप्राप्तिर्गोप्राप्तिःपयसागवाम् ॥ ऋद्धिर्दध्योदनैरन्नंघृतैःश्रीर्वेतसैर्जलम् ॥ १२१ ॥

॥ ११८ ॥ ११९ ॥ चलदलोश्वत्थस्तस्यसमिद्भिर्धरासुरान्विप्रान्वशयेत् ॥ औंदुंबरसमिद्भिर्नृपतीन्वशयेत् ॥ प्लक्षसमि
द्भिर्वैश्यान् ॥ वटजाभिरंतिमान् शूद्रान् ॥ १२० ॥ १२१ ॥

हरिद्रागणेशमनुमाह ॥ तारइति ॥ तार ॐ ॥ वर्महुं ॥ गणेशोगं ॥ भूःग्लौं ॥ लोहितःपः॥ आषाढीतः॥सत्योदः ॥ तर्जनीनः ॥ स्वर्णरेतसोवल्लभास्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा–ॐ हुंगंग्लौंहरिद्रागणपतयेवरवरदसर्वजनहृद

तारोवर्मगणेशोभूर्हरिद्रागणलोहितः॥आषाढीयेवरवरसत्यःसर्वजतर्जनी॥ १२२ ॥हृदयंस्तम्भय
द्वंद्वंवल्लभांस्वर्णरेतसः॥द्वात्रिंशदक्षरोमंत्रोमदनो[1]मुनिरीरितः ॥ १२३ ॥ छन्दोनुष्टुब्देवतातुहरिद्राग
णनायकः॥वेदाष्टशरसप्ताङ्गनेत्रैर्णैरङ्गमीरितम्॥ १२४ ॥ पाशाङ्कुशौमोदकमेकदन्तंकरैर्दधानंक
नकासनस्थम्॥हारिद्रखण्डप्रतिमंत्रिनेत्रंपीतांशुकंरात्रिगणेशमीडे ॥ १२५ ॥ वेदलक्षंजपित्वान्तेह
रिद्राचूर्णमिश्रितैः॥दशांशंतण्डुलैर्हुत्वाब्राह्मणानपिभोजयेत् ॥ १२६ ॥ पूर्वोक्तपीठेप्रयजेदङ्गमातृ
दिशाधवैः॥एवमाराधितोमंत्रस्सिद्धोयच्छेन्मनोरथान् ॥ १२७ ॥ शुक्लपक्षेचतुर्थ्यांतुकन्यापिष्टह
रिद्रया॥विलिप्यांगंजलेस्नात्वापूजयेद्गणनायकम् ॥ १२८ ॥

यंस्तंभयस्तंभय स्वाहेतिद्वात्रिंशद्वर्णः ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ षडंगमाह ॥ वेदेति ॥ १२४ ॥ ध्यानमाह ॥ पाशेति ॥ अंकुशमोदकौदक्षयोः ॥ पाशदन्तावन्ययोः ॥ रात्रिगणेशोहरिद्रागणपतिः ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥

---

[1] अस्यहरिद्रागणनायकमंत्रस्यमदनऋषिःअनुष्टप्छन्दःहरिद्रागणनायकोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

१२९ ॥ कुमारीरपीति॥भोजयेदित्यनेनान्वेति ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ मन्त्रांतरमाह ॥ शार्ङ्गीति ॥
शार्ङ्गी गः ॥ मांसस्थितःलकारस्थः ॥ ग्लमितिबीजं । हरिद्रागणपतेःपूजनंपूर्ववत् ॥१३४॥१३५ ॥ इतिमंत्रमहोदधि०

तर्पयित्वापुरस्तस्यसहस्रंसाष्टकंजपेत् ॥ शतंहुत्वाघृतापूपैर्भोजयेद्ब्रह्मचारिणः ॥१२९॥ कुमारीरपि
संतोष्यगुरुंप्राप्नोतिवांछितम् ॥ लाजैःकन्यामवाप्नोतिकन्यापिलभतेवरम् ॥१३०॥ वंध्यानारीरजः
स्नातापूजयित्वागणाधिपम् ॥ पलप्रमाणगोमूत्रेपिष्टाः सिंधुवचानिशाः ॥१३१॥ सहस्रंमंत्रयेत्कन्या
बटून्संभोज्यमोदकैः ॥ पीत्वातदौषधंपुत्रंलभतेगुणसागरम् ॥१३२॥ वाणीस्तम्भंरिपुस्तम्भंकुर्या
न्मनुरुपासितः ॥ जलाग्निचौरसिंहास्त्रप्रमुखानपिरोधयेत् ॥ १३३ ॥ शार्ङ्गीमांसस्थितःसेंदुर्बीजमु
क्तंगणेशितुः ॥ हरिद्राख्यस्ययजनंपूर्ववत्प्रोदितंमनोः ॥ १३४ ॥ प्रोक्ताएतेगणेशस्यमंत्राइष्टमभी
प्सता ॥ गोपनीयानदुष्टेभ्योवदनीयाःकथंचन ॥ १३५ ॥ इति श्रीमहीधरविरचितेमंत्रमहोदधौग
णेशमंत्रकथनंनामद्वितीयस्तरंगः ॥२॥ ॥छ॥ ॥ अथकालीमनून्वक्ष्येसद्योवाक्सिद्धिदायकान् ॥
आराधितैर्यैःसर्वेतंप्राप्नुवन्तिजनाभुवि ॥ १ ॥

नौकायांगणेशमंत्रकथनंनामद्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ कालीमंत्रान्वक्तुंप्रतिजानीते ॥ अथेति ॥ १ ॥

---

१ हरिद्रा ।

मंत्रमुद्धरति ॥ क्रोधीशेति ॥ क्रोधीशः कः ॥ तस्यत्रयंवह्निवामाक्षिविधुभिः रेफईकारानुस्वारैर्युतम् ॥ तेनक्रीं क्रींक्रीं ॥ वराहोहः ॥ वामकर्ण ऊं ॥ दक्षिणेस्वरूपं ॥ सृष्टिःकः ॥ दीर्घाआकारयुता ॥ क्रियालः ॥ सद्दक् इयुतः लिः ॥ चक्रीकः ॥ झिंटीशमारूढः एयुतःके ॥ प्रागुक्तं आदावुक्तं बीजानांसप्तकम् ॥ वह्निप्रियास्वाहा ॥

क्रोधीशत्रितयंवह्निवामाक्षिविधुभिर्युतम् ॥ वराहद्वितयंवामकर्णचन्द्रसमन्वितम् ॥ २ ॥ मायायुग्मं दक्षिणेचदीर्घासृष्टिः सद्दकक्रिया॥चक्रीझिंटीशमारूढःप्रागुक्तंबीजसप्तकम् ॥ ३॥ मंत्रोवह्निप्रियातो यंद्वाविंशत्यक्षरोमतः ॥ नचात्रसिद्धसाध्यादिशोधनंमनसापिच ॥४ ॥ नयतोतिशयःकश्चित्पुरश्चर्यानिमित्तकः॥ विद्याराज्ञ्याःस्मृतेरेवसिद्ध्यष्टकमवाप्नुयात्॥५॥भैरवोस्यंऋषिश्छंदउष्णिक्कालीतुदेवता ॥ बीजंमायादीर्घवर्मशक्तिरुक्तामनीषिभिः॥६॥षड्दीर्घाढ्याद्यबीजेनविद्यायाअङ्गमीरितम् ॥मातृकान्पंचधाभक्त्वावर्णान्दशदशक्रमात् ॥ ७ ॥

यथा ॥ क्रींक्रींक्रींहूँहूँह्रींह्रींदक्षिणेकालिकेक्रींक्रींक्रींहूँहूँह्रींह्रींस्वाहेति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ दीर्घवर्महूं ॥ ५ ॥ ६ ॥ षडंगमाह ॥ षडिति ॥ क्रांक्रीमित्यादि ॥ मातृकामिति ॥ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡं १० नमोहृदि ॥ एं१० दक्षभुजे ॥ डं१०वामभुजे ॥ णं १० दक्षपादे ॥ मं १० वामपादे इति ॥ ७ ॥

---

१ अस्यकालीमंत्रस्यभैरवऋषिःउष्णिक्छंदःकालीदेवताह्रींबीजंहूंशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ ८ ॥ ध्यानमाह ॥सद्यइति । खड्गवरौदक्षयोः ॥ सद्याश्छिन्नाशिरोऽभयेवामयोः ॥ सृक्किणोरोष्ठप्रांतयोरसृजो

हृदयेभुजयोःपादद्वयेमंत्रीप्रविन्यसेत् ॥ व्यापकंमनुनाकृत्वाध्यायेच्चेतसिकालिकाम् ॥ ८ ॥ सद्य
श्छिन्नशिरःकृपाणमभयंहस्तैर्वरंबिभ्रतींघोरास्यांशिरसांस्रजासुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् ॥ सृक्य
सृक्प्रवहांश्मशाननिलयांश्रुत्योःशवालंकृतिंश्यामांगींकृतमेखलांशवकरैर्देवींभजेकालिकाम् ॥ ९ ॥
एवंध्यात्वा जपेल्लक्षंजुहुयात्तद्दशांशतः॥प्रसूनैःकरवीरोत्थैःपूजायंत्रमथोच्यते ॥१०॥ आदौषट्[1]कोण
मारच्यत्रिकोणत्रितयंततः ॥ पद्ममष्टदलंबाह्येभूपुरंतत्रपूजयेत् ॥ ११ ॥ जयाख्याविजयापश्चाद
जिताचापराजिता ॥ नित्याविलासिनीचापिदोग्ध्र्यघोराचमंगला ॥१२॥ पीठशक्तयएताः स्युः
कालिकायोगपीठतः ॥आत्मनेहृदयांतोयंमायादिःपीठमंत्रे[2]कः ॥१३॥ अस्मिन्पीठेयजेद्देवींशवरू
पशिवस्थिताम् ॥ महाकालरतासक्तांशिवाभिर्दिक्षुवेष्टिताम् ॥ १४ ॥

रुधिरस्यप्रवाहोयस्यास्ताम् ॥ श्रुत्योः कर्णयोःशवालंकारयुताम् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ पीठंमंत्रमाह ॥ आत्म
नइति ॥ ह्रींआत्मनेनमइति ॥ १३ ॥ १४ ॥

---

[1] इदंयंत्रंगौणं , मुख्येतुत्रिकोणपंचकंलेखनीयम् । [2] ह्रींकालिकायोगपीठात्मनेनमः ।

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ महदाद्यांमहाभैरवीम् ॥ सिंहाद्यांसिंहभैरवीम् ॥ धूम्रपूर्विकांधूम्रभैरवीम् ॥ भीमोन्मत्तादिकांभीमभैरवीमुन्मत्तभैरवींच ॥ १९ ॥ मोहनाद्यां मोहनभैरवीम् ॥२०॥२१॥२२॥ मदनावासंभगम् ॥ २३ ॥

अंगानिपूर्वमाराध्यषट्पत्रेषुसमर्चयेत् ॥ कालींकपालिनींकुल्लांकुरुकुल्लांविरोधिनीम् ॥ १५॥ विप्रचित्तांचसंपूज्यनवकोणेषुपूजयेत् ॥ उग्रामुग्रप्रभांदीप्तांनीलांघनबलाकिके ॥१६ ॥ मात्रांमुद्रांतथामित्रांपूज्याःपत्रेषुमातरः ॥पद्मस्याष्टसुपत्रेषुब्राह्मीनारायणीत्यपि ॥१७ ॥ माहेश्वरीचचामुंडाकौमारीचापराजिता॥वाराहीनारसिंहीचपुनरेतास्तुभूपुरे ॥१८॥ भैरवींमहदाद्यांतां सिंहाद्यांधूम्रपूर्विकाम् ॥ भीमोन्मत्तादिकांचापिवशीकरणभैरवीम् ॥ १९ ॥ मोहनाद्यांसमाराध्यशक्रादीनायुधान्यपि ॥ एवमाराधिताकालीसिद्धाभवतिमंत्रिणाम् ॥ २० ॥ ततःप्रयोगान्कुर्वीतमहाभैरवभाषितान् ॥ आत्मनोर्थेपरस्यार्थेक्षिप्रसिद्धिप्रदायकान् ॥ २१ ॥ स्त्रीणांनिन्दांप्रहारंचकौटिल्यंवाप्रियंवचः ॥ आत्मनोहितमन्विच्छन्कालीभक्तोविवर्जयेत् ॥२२॥ सुदृशोमदनावासंपश्यन्यःप्रजपेन्मनुम् ॥ अयुतंसोचिरादेववाक्पतेःसमतामियात् ॥ २३ ॥

---

१ अंगार्चनमेकम् । काल्याद्याःषट्षट्अर्चयेदितिद्वितीयम् । उग्राद्यानवनवकोणेषुयजेदितितृतीयम् । अष्टपत्रेब्राह्म्याद्याअष्टयजेदितिचतुर्थम् ।भूपुरेऽष्टदिक्षुभैरव्याद्याअष्टयजेदितिपंचमम् ।

अधियामिनिरात्रौ ॥ २४ ॥ २५॥ २६ ॥ २७ ॥ त्रिगुणाःपंचाराःकोणायस्येदृशेपीठेमहाकालेनभर्त्रामारयुद्धं

दिगम्बरोमुक्तकेशःश्मशानस्थोधियामिनि ॥ जपेद्योयुतमेतस्यभवेयुःसर्वकामनाः ॥ २४ ॥ शावं
हृदयमारुह्यनिर्वासाःप्रेतभूगतः ॥ अर्कपुष्पसहस्रेणाभ्यक्तेनस्वीयरेतसा ॥ २५ ॥ देवींयःपूजयेद्भ
क्त्याजपन्नेकैकशोमन्नुम्॥सोचिरेणैवकालेनधरणीप्रभुतांव्रजेत्॥२६॥रजःकीर्णभगंनार्याध्यायन्यो
युतमाजपेत्॥सकवित्वेनरम्येणजनान्मोहयतिध्रुवम्।२७।त्रिपंचारेमहापीठेशवस्यहृदिसंस्थिताम् ॥
महाकालेनदेवेनमारयुक्तंप्रकुर्वतीम्॥२८॥तांध्यायन्स्मेरवदनांविदधत्सुरतंस्वयम् ॥ जपेत्सहस्रमपि
यःसशङ्करसमोभवेत्॥२९॥अस्थिलोमत्वचायुक्तंमांसंमार्जारमेषयोः ॥ उष्ट्रस्यमहिषस्यापिबलिंय
स्तुसमर्पयेत् ॥३०॥ भूताष्टम्योर्मध्यरात्रेवश्याःस्युस्तस्यजंतवः ॥ विद्यालक्ष्मीयशःपुत्रैःसचिरंसुख
मेधते॥३१॥योहविष्याशनरतोदिवादेवींस्मरञ्जपेत्॥ नक्तंनिधुवनासक्तोलक्षंसस्याद्धरापतिः॥३२॥
रक्तांभोजैर्हुतैर्मंत्रीधनैर्जयतिवित्तपम्॥बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यंरक्तपुष्पैर्वशीकृतिः॥३३॥ असृजामहिषा
दीनांकालिकांयस्तुतर्पयेत् ॥ तस्यस्युरचिरादेवकरस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ ३४ ॥

सुरतं कुर्वतीम् ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥३७॥ कालमिंत्रभेदानाह॥मायेति॥मायाह्रीं ॥ कूर्च्चंहूं ॥ करःस्वरूपम् ॥ शांतिरी ॥ विधुर्बिन्दुः ॥ क्रीं ॥ उक्तबीजानिव्युत्क्रमेण ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ ॐ ह्रींह्रींहूँहूँक्रींक्रींक्रींदक्षिणेकालिकेक्रींक्रींक्रींहूँहूँह्रींह्रीमित्येक

योलक्षंप्रजपेन्मंत्रंशवमारुह्यमंत्रवित् ॥ तस्यसिद्धोमनुःसद्यःसर्वेप्सितफलप्रदः ॥ ३५ ॥ तेनाश्वमेध
प्रमुखैर्यागैरिष्टंसुजन्मना॥ दत्तंदानंतपस्ततमुपास्तेयस्तुकालिकाम्॥३६॥ब्रह्माविष्णुःशिवोगौरील
क्ष्मीर्गणपतीरविः॥पूजिताःसकलादेवायःकालींपूजयेत्सदा॥३७॥अथकालीमंत्रभेदाउच्यन्तेसिद्धि
दायिनः॥मायायुगंकूर्चयुग्मंकरशांतिविधुत्रयम् ॥३८॥ दक्षिणेकालिकेपूर्वबीजानिस्युर्विलोमतः ॥
एकविंशतिवर्णात्मातारोद्यःपूर्ववद्यजिः ॥३९॥ बिल्वमूलेशवारूढोवटमूलेतथैवच ॥ लक्षंमनुमिमंज
प्त्वासर्वसिद्धीश्वरोभवेत्॥४०॥कालीकूर्चंचह्ल्लेखादक्षिणेकालिकेपठेत्।पुनर्बीजत्रयंवह्निवधूर्मन्व
क्षरोमनुः॥४१॥यजनंपूर्ववत्प्रोक्तमस्यमन्त्रस्यमंत्रिभिः॥ विशेषान्नृसुरादीनामयमाकर्षणेक्षमः ४२

विंशत्यर्णः ॥ ताराद्यःप्रणवाद्यः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मंत्रांतरमाह ॥ कालीति कालीक्रीं ॥ कूर्चंहूं ॥ ह्ल्लेखाह्रीं वह्निवधूःस्वाहा ॥ यथा ॥ क्रींहूँह्रींदक्षिणेकालिकेक्रींक्रींहूँह्रींस्वाहेति ॥ चतुर्दशार्णः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

मंत्रातरमाह ॥कूर्चेति ॥ कूर्चंहूं २ ॥ क्रीं ३ ॥ ह्रीं २ ॥ दक्षिणेकालिकेपुनर्बीजानिस्वाहेति द्वाविंशत्यर्णः वशीकृतौ ॥ ॥ क्षमइतिशेषः ॥४३॥ मंत्रातरमाह ॥ मंत्रराजेति ॥ क्रीं ३ हूं २ ह्रीं २ दक्षिणेकालिकेस्वाहेतिपंचदशार्णः ॥ ४४ ॥ मत्रांतरम् ॥ ब्रह्मेति ॥ ब्रह्माकः ॥ वामनेत्रेई ॥ क्रीं ॥ ४५ ॥ षडर्णमाह ॥ बीजमिति ॥ बीजंक्रीं ॥

कूर्चद्वंयंत्रयंकाल्यामायायुग्मंतुदक्षिणे ॥ कालिकेपूर्वबीजानिस्वाहामंत्रोवशीकृतौ ॥४३॥ मंत्रराजे पुनःप्रोक्तंबीजसप्तकमुत्सृजेत्॥ तिथिवर्णोमहामंत्रे³उपास्तिःपूर्ववन्मता ॥ ४४ ॥ ब्रह्मरेफौवामनेत्रंचंद्रारूढंमनुर्मतः ॥ एकाक्षरोमहाकाल्याः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ ४५॥ बीजंदीर्घयुतश्चक्रीपिनाकीनेत्रसंयुतः॥ क्रोधीशोभगवान्स्वाहाषडर्णोमंत्रईरितः॥४६॥कालीकूर्चंतथालज्जात्रिवर्णोमनुरीरितः ॥ हुंफडंतश्चपंचार्णःस्वाहांतःसप्तवर्णकः ॥ ४७ ॥ एतेषांपूर्ववत्प्रोक्तंयजनंनारदादिभिः ॥ निग्रहानुग्रहे शक्ताःकालीमंत्राःस्मृताइमे ॥ ४८ ॥

दीर्घयुतश्चक्रीका ॥ नेत्रयुतःपिनाकी लि । भगमेकारस्तद्युतःक्रोधीशःके । क्रींकालिकेस्वाहेति ॥४६॥ मंत्रांतरम्॥ कालीति ॥ क्रीं हूं ह्रीं ॥ क्रींहूंह्रींहुंफडितिपंचार्णः ॥ क्रींहूंह्रींहुंफट्स्वाहेतिसप्तार्णः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

---

१ हूँहूँक्रींक्रींक्रीं ह्रींह्रींदक्षिणेकालिकेहूँहूँक्रींक्रींक्रीं ह्रींह्रींस्वाहा । २ क्रींक्रींक्रींहूँहूँह्रींह्रींदक्षिणकालिकेस्वाहा ।

सुमुखींवक्ष्येप्रतिजानीते ॥ अथेति ॥ ४९ ॥ मंत्रमुद्धरति ॥ कर्णइति ॥ कर्णउ ॥ सनयनाद्युतिःइयुतश्छःच्छि ॥ जरासनः श्वेतशः ॥ टकारस्थः षःष्टः ॥ लक्ष्मीश्चः ॥ दीर्घेन्दुसंयुक्ताआबिंदुयुताचां ॥ दीर्घोनंदीडा ॥ सद्दक्या इयुतोलः लि ॥ समाधवोमेषः इयुतोनःनि ॥ कर्णोभृगुःसः उयुतःसु ॥ सेंधिकातंद्रीमःउयुतोमु ॥ खिदे

अथवक्ष्येपरांविद्यांसुमुखीमतिगोपिताम् ॥ यांलब्ध्वादेशिकोविद्वान्नशोचतिकृताकृते॥४९॥ कर्णो द्युतिःसनयनाश्वेतेशःस्याज्जरासनः ॥ लक्ष्मीर्दीर्घेंदुसंयुक्तानंदीदीर्घःसद्दक्क्रिया ॥ ५० ॥ मेषः समाधवःकर्णोभृगुस्तंद्रीचसेंधिका ॥ खिदेविमवियद्दीर्घंपिशाचिनिहिमाद्रिजा ॥ ५१ ॥ नन्दजत्रितयंसर्गिद्वाविंशत्यक्षरोमनुः ॥ स्मृताभैरवगायत्रीसुमुखीमुनिपूर्विका ॥ ५२ ॥मुनिरामद्विषट्चंद्रेवह्नयर्णैरंगकंमनोः ॥ विन्यस्यसुमुखींध्यायेद्धृत्तचित्तांबुजस्थिताम् ॥ ५३ ॥

विम ॥ स्वरूपंदीर्घवियत् ॥ हा पिशाचिनिस्वरूपम् ॥ हिमाद्रिजाह्रीं ॥ सर्गिनंदजत्रितयम् ॥ विसर्गयुक्तठकारत्रयम् ॥ यथा ॥ उच्छिष्टचांडालिनिसुमुखिदेविमहापिशाचिनिह्रींठःठःठःद्वाविंशत्यर्णः ॥ मुनिपूर्वाः ऋषिच्छंदोदेवताः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ षडंगमाह ॥ मुनाात ॥ ५३ ॥

---

१ अस्यसुमुखीमंत्रस्य भैरवऋषिर्गायत्रीच्छंदः सुमुखीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ॥

ध्यानमाह ॥ गुंजेति ॥ एवंविधांसुमुखींध्यायतांनृणांसर्वदासंपदःस्युरित्यन्वयः ॥ खड्गलतादक्षे कपालंवामे॥ ५४ ॥

गुंजानिर्मितहारभूषितकुचांसद्योवनोल्लासिनींहस्ताभ्यांनृकपालखड्गलतिकेरम्येमुदाबिभ्रतीम् ॥ रक्तालंकृतिवस्त्रलेपनलसद्देहप्रभांध्यायतांनॄणांश्रीसुमुखींशवासनगतांस्युःसर्वदासंपदः ॥ ५४ ॥ लक्षमेकं जपेन्मंत्रंदशांशंकिंशुकोद्भवैः ॥ पुष्पैःसमिद्भैर्वापिजुहुयान्मंत्रसिद्धये ॥५५॥ कालीपीठेयजेद्देवीं पंचकोणाढ्यकर्णिके ॥ अष्टपत्रेषोडशाब्जेवृत्तेभूपुरसंयुते ॥ ५६॥ मूलेनमूर्तिंसंकल्प्यपाद्यादीनिप्रकल्पयेत् ॥ चंद्रांचन्द्राननांचारुमुखींचामीकरप्रभाम् ॥ ५७॥ चतुरांपंचकोणेषुकेसरेष्वङ्गदेवताः ॥ ब्राह्म्याद्याअष्टपत्रेषुषोडशारेकलादिकाः ॥ ५८ ॥ कलाकलानिधिःकालीकमलाचक्रियाकृपा ॥ कुलाकुलीनाकल्याणीकुमारीकलभाषिणी ॥ ५९ ॥ करालाख्याकिशोरीचकोमलाकुलभूषणा ॥ कल्पदाभूपुरेपूज्याइन्द्राद्याहेतयोपिच ॥ ६० ॥ इत्थंजपादिभिःसिद्धेमनौकाम्यानिसाधयेत् ॥ भुक्त्वौदनमनाचम्यजपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ ६१ ॥

॥ ५५॥ कर्णिकायांपंचकोणम् ॥ उपर्यष्टपत्रम् ॥ तदुपरि षोडशदलम् ॥ तदुपरिचतुष्कोणमितिपूजायंत्रम् ॥
॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ प्रयोगानाह ॥ भुक्त्वेति ॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ उन्मत्तो धत्तूरः ॥ छदैः पक्षैः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

उच्छिष्टोयुतमेकंयःसभवेत्संपदांपदम् ॥ उच्छिष्टेनैवभक्तेनबलिंदद्यान्निरंतरम् ॥ ६२ ॥ दध्नाभ्यक्तैः
प्रजुहुयाल्लक्षंसिद्धार्थतंडुलैः ॥ राजानोमंत्रिणस्तस्यभवंतिवशगाःक्षणात् ॥ ६३ ॥ शस्त्राणिवशगा
निस्युर्हुतान्मार्जारमांसतः ॥ धनार्द्धैश्छागमांसेनविद्याप्राप्तिस्तुपायसैः ॥ ६४ ॥ मधुपायससंयुक्त
स्त्रीरजोयुक्तवाससा ॥ होममाचरतःपुंसोजनतावशवर्तिनी ॥ ६५ ॥ मधुसर्पिर्युतैर्नागवल्लीपत्रैर्महा
श्रियः ॥ सद्योनिहतमार्जारमांसेनमधुसर्पिषा ॥ ६६ ॥ युक्तेनांत्यजकेशाद्यैर्हुतैराकर्षतिस्त्रियः ॥
मध्वक्तशशमांसेनतत्फलंविद्ययासह ॥ ६७ ॥ उन्मत्ततरुभिर्दीप्तेचिताग्नौजुहुयाच्छदैः ॥ कोकिला
काकयोर्मैत्रीमाचरेदचिरादरीन् ॥ ६८ ॥ वायसोलूकयोःपत्रैर्होमाद्विद्वेषयेदरीन् ॥ गर्भपातःसगर्भा
णामुलूकच्छदनैर्भवेत् ॥ ६९ ॥ आज्याक्तैर्बिल्वपत्रैर्योमासमेकंसहस्रकम् ॥ प्रत्यहंजुहुयात्तेनवंध्या
पिलभतेसुतम् ॥ ७० ॥ सौभाग्यार्थंदुर्भगायाबंधूककुसुमैर्नवैः ॥ मधुनाक्तैःप्रजुहुयात्स्त्रीणामाकृष्टये
र्पितैः ॥ ७१ ॥ निर्जनेसदनेऽरण्येप्रेतावासेचतुष्पथे ॥ बलिंदत्त्वाप्रजपतःसहस्रंचाष्टसंयुतम्॥७२॥

उच्छिष्टस्यबलिंदत्त्वेतिपूर्वेणान्वयः ॥७३॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इतिमन्त्रमहोदधिव्या०नौकायांतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥ छ ॥ तारांवक्तुमुपक्रमते ॥ कीर्त्यन्तइति ॥ १ ॥ मन्त्रमुद्धरति ॥ आप्यायिनीति ॥ सरात्रीशा आप्यायिनी सबिंदुरोंकारः ॐ ॥ अग्नींदुशांतियुग्वियत् रेफबिंदुईयुतोहः ह्रीं ॥ पावकगोविंदचन्द्रमोभिरलंकृतोहरिः रेफ

उच्छिष्टस्यचसादेवीप्रत्यक्षाजायतेचिरात्॥यत्रनोक्ताहोमसंख्यायुतंतत्रविनिर्दिशेत्॥७३॥वाममा
र्गेणसुमुखीशीघ्रंकामविधायिनी ॥ भोजनांतेतथोच्छिष्टैर्जप्यासास्वेष्टसिद्धये॥७४॥ नशीघ्रफलदा
देवीसुमुखीसदृशीपरा॥यस्यामंत्रजपादेवप्रसिध्यंतिमनोरथाः ॥७५॥ इतिश्रीमहीधरविरचितेमंत्रम
होदधौकालीसुमुखीमंत्रोक्तिस्तृतीयस्तरंगः॥ ३ ॥छ॥ कीर्त्यन्तेसिद्धिदातारस्तारायाम्नवोधुना॥
गुरूपदेशाज्ज्ञातैर्यैःकृतार्थाःस्युर्नराभुवि ॥ १ ॥ आप्यायिनीसरात्रीशावियदग्नींदुशांतियुक्॥हरिः
पावकगोविंदचंद्रमोभिरलंकृतः ॥२॥ खमर्घीशशशांकाढ्येचमस्त्रंपंचाक्षरोमनुः॥ आदिबीजवियुक्ते
षाप्रोदितैकजटादिमैः ॥ ३ ॥

ईबिंदुयुतस्तकारः त्रीं ॥ गोविंदईकारः ॥ २ ॥ अर्घीशशशांकाढ्यंखं ॥ उबिंदुयुतोहः हुं ॥ अस्त्रंफट् ॐ ॥ ह्रींत्रींहुंफडितिपंचार्णः ॥ मंत्रांतरमाह ॥ आदीति ॥ इयमेवविद्या आदिबीजेन ॐकारेणवियुक्तारहितासती आदिमैःपूर्वाचार्यैरेकजटाप्रोदिता–ह्रींत्रींहुंफडिति ॥ ३ ॥

आद्यंतबीजाभ्यां ॐफड्भ्यांरहितानीलसरस्वतीसैव-ह्रींत्रींहुंइति ॥ सर्वातुतारा ॥ ४ ॥. द्वितीयतुर्येंह्रींहुमिति

आद्यंतबीजरहिताप्रोक्तानीलसरस्वती ॥ तारासर्वामनोरस्यमुनिरक्षोभ्यसंज्ञकः ॥ ४ ॥ छंदस्तुबृहतीतारादेवतापरिकीर्तिता॥द्वितीयतुर्येंक्रमतोबीजंशक्तिश्चसिद्धिदे ॥५॥ यद्वाक्रोधोबीजमुक्तमस्त्रंशक्तिरुदाहृता ॥ षड्दीर्घयुग्द्वितीयेनषडंगविधिरीरितः॥६॥षोढान्यासंततःकुर्याद्देवताभावसिद्धये ॥ देयंभक्तायशिष्यायनदेयंतुदुरात्मने ॥७॥ श्रीकंठादीन्[2]न्यसेद्रुद्रान्मातृकावर्णपूर्वकान् ॥ मातृकोक्तंस्थलेमायातृतीयक्रोधपूर्वकान् ॥ ८ ॥ चतुर्थीनमसायुक्तान्प्रथमोन्यासईरितः ॥ शवपीठसमासीनांनीलकांतिंत्रिलोचनाम् ॥ ९ ॥

क्रमाद्बीजंशक्तिश्च ॥ ५ ॥ षडंगमाह ॥ षाडिति ॥ ह्रांह्रीमित्यादि ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

---

[1] अस्यतारामंत्रस्यअक्षोभ्यऋषिःबृहतीछंदःतारादेवताह्रींबीजंहुंशक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः। [2] श्रीकण्ठादिनामानिएकार्विंशतितरंगेवक्ष्यंते। प्रयोगस्तु-ह्रींत्रींहुंअंश्रीकंठायनमोललाटे । ह्रींत्रींहुंआंअनंतायनमोमुखे । एवंसर्वत्र ।

अर्द्धेन्दुशेखरांनानाभूषणाढ्यांस्मरन्न्यसेत्॥द्वितीयन्तुग्रहन्यासंकुर्यात्तांसमनुस्मरन् ॥ १० ॥
त्रिबीजस्वरपूर्वंतुरक्तंसूर्यंहृदिन्यसेत्॥तथायवर्गपूर्वंतुसोमंशुक्लभ्रुवोर्द्वयोः॥ ११ ॥कवर्गपूर्वंरक्ताभंमंगलंलोचनत्रये॥
चवर्गाढ्यंबुधंश्यामंन्यसेद्वक्षःस्थलेबुधः ॥ १२ ॥ टवर्गाढ्यंपीतवर्णंकंठकूपेबृहस्पतिम्॥
तवर्गाढ्यंश्वेतवर्णंघंटिकायांतुभार्गवम्।१३॥नीलवर्णंपवर्गाढ्यंनाभिदेशेशनैश्चरम्।शवर्गाढ्यंधूम्रवर्णं
ध्यात्वाराहुंमुखेन्यसेत्॥ १४ ॥लक्षाढ्यंधूम्रवर्णाभंकेतुंनाभौपुनर्न्यसेत् ॥ त्रिबीजपूर्वकश्चैवंग्रहन्यासः
समीरितः।१५।तृतीयंलोकपालानांन्यासंकुर्यात्प्रयत्नतः॥मायादिबीजत्रितयपूर्वकंसर्वसिद्धये॥ १६॥
॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

---

१ ह्रींत्रींहुंअंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअःरक्तवर्णसूर्यंहृदि । १ ह्रींत्रींहुंयंरंलंवंशुक्लवर्णसोमंभ्रुवोर्द्वये ।२ ह्रींत्रींहुंकंखंगंघंङंरक्तवर्णमंगलंलोचनत्रये
॥ ३ ॥ ह्रींत्रींहुंचंछंजंझंञंश्यामवर्णबुधंवक्षःस्थले ॥४॥ ह्रींत्रींहुंटंठंडंढंणंपीतवर्णबृहस्पतिंकंठकूपे ॥ ५ ॥ ह्रींत्रींहुंतंथंदंधंनंश्वेतवर्ण भार्गवंघांटिकायाम् ॥ ६ ॥
ह्रींत्रींहुंपंफंबंभंमंनीलवर्णशनैश्चरंनाभिदेशे ॥ ७ ॥ ह्रींत्रींहुंशंषंसंहंधूम्रवर्णराहुंमुखे ॥ ८ ॥ ह्रींत्रींहुंलंक्षंधूम्रवर्णकेतुंनाभौ ॥ ९ ॥ इतिग्रहन्यासः ॥ २ ॥
ह्रींत्रींहुंअंइंउंऋंऌंएंओंअंललाटपूर्वेइन्द्रायनमः ॥ १ ॥ ह्रींत्रींहुंआंईंऊंॠंॡंऐंऔंअः ललाटाग्नेय्यांदिशिअग्नये नमः ॥ २ ॥ ह्रींत्रींहुंकंखंगंघंङंललाटदक्षिणे
यमान नमः ॥ ३ ॥ ह्रींत्रींहुंचंछंजंझंञंललाटनैर्ऋत्यांदिशिनिर्ऋतयेनमः ॥ ४ ॥ ह्रींत्रींहुंटंठंडंढंणंललाटपश्चिमायांदिशिवरुणायनमः॥ ५ ॥ ह्रींत्रींहुंतंथंदंधंनं
ललाटवायव्यांदिशि वायवे नमः ॥ ६ ॥ ह्रींत्रींहुंपंफंबंभंमंललाटोत्तरस्यांदिशिसोमायनमः ॥ ७ ॥ ह्रींत्रींहुंयंरंलंवंललाटैशान्यांदिशिईशानायनमः ॥ ८ ॥
ह्रींत्रींहुंशंषंसंहंललाटोर्ध्वायांदिशिब्रह्मणेनमः ॥ ९ ॥ ह्रींत्रींहुंलंक्षंललाटाधोदिशिअनंतायनमः ॥ १० ॥ इतिदिक्पालन्यासः ॥

स्वमस्तकेललाटादौदशदिक्ष्वधऊर्ध्वतः ॥ह्रस्वदीर्घकादिकाष्टवर्गपूर्वान्दिशाधिपान् ॥ १७ ॥
शिवशक्त्यभिधन्यासंचतुर्थंतुसमाचरेत्॥त्रिबीजपूर्वकान्न्यस्येत्षट्शिवाञ्छक्तिसंयुतान् ॥ १८ ॥
आधारादिषुचक्रेषुचक्रस्थाक्षरपूर्वकान्॥ब्रह्माणंडाकिनीयुक्तंवादिसांतार्णभूषितम् ॥१९॥ मूलाधारे
प्रविन्यस्येच्चतुर्दलसमन्विते॥श्रीविष्णुंराकिनीयुक्तंवादिलांतार्णपूर्वकम्॥ २० ॥ स्वाधिष्ठानाभिधे
चक्रेलिंगस्थेषड्दलेन्यसेत्॥रुद्रंतुलाकिनीयुक्तंडादिफांतार्णपूर्वकम् ॥ २१ ॥

॥ १७॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१॥

---

१ ह्रींत्रींहुंवंशंषंसंडाकिनीयुतब्रह्माणंचतुर्दलसमान्वितमूलाधारेन्यसेत्॥१॥ह्रींत्रींहुंबंभंमंयंरंलंराकिनीयुतश्रीविष्णुलिंगस्यषड्दलेस्वाधिष्ठानचक्रेन्यसेत्॥ २ ॥
ह्रींत्रींहुंडंढंणंतंथंदंधंनंपंफंराकिनीयुतरुद्रंदशदलचक्रनाभिस्थेमणिपुरकेन्यसेत् ॥ ३ ॥ह्रींत्रींहुंकंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठंकाकिनीयुतमीश्वरंअनाहतेद्वादशदलेचक्रेहृ
दिन्यसेत् ॥ ४ ॥ ह्रींत्रींहुंअंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः शाकिनीयुतसदाशिवंविशुद्धाख्यषोडशदले कंठस्थेविन्यसेत् ॥ ५ ॥ ह्रींत्रींहुंहंक्षंहाकिनी
युतं परशिवमाज्ञाचक्रेमनोहरेभ्रूमध्यसंस्थितेप्रविन्यसेत् ॥ ६ ॥ इतिषट्चक्रन्यासः ॥

चक्रेदशदलेन्यस्येन्नाभिस्थेमणिपूरके ॥ ईश्वरंकादिठांतार्णपूर्वंकंकाकिनीयुतम् ॥२२॥ विन्यसेद्वादशदलेहृदयस्थेत्वनाहते॥सदाशिवंशाकिनींचषोडशस्वरपूर्वकम् ॥ २३ ॥ कंठस्थेषोडशदलेविशुद्धाख्येप्रविन्यसेत्॥आज्ञाचक्रेपरशिवंहाकिनीसंयुतंजपेत् ॥ २४ ॥ लक्षार्णपूर्वंभ्रूमध्येसंस्थितेतिमनोहरे॥तारादिपंचमंन्यासंकुर्यात्सर्वेष्टसिद्धये ॥ २५ ॥ अष्टौवर्गान्स्वरद्वंद्वपूर्वकान्बीजसंयुतान्॥पूर्वंप्रयोज्यताराद्यान्यस्तव्याअष्टमूर्तयः ॥ २६ ॥ताराउग्रामहोग्रापिवज्राकालीसरस्वती॥कामेश्वरीचचामुण्डाइत्यष्टौतारिकाःस्मृताः ॥ २७ ॥ ब्रह्मरन्ध्रेललाटेचभ्रूमध्येकंठदेशतः ॥ हृदिनाभौलिंगमूलेमूलाधारेक्रमान्न्यसेत् ॥ २८ ॥

॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

---

१ ह्रींत्रींहुंअंआंकंखंगंवंङं तारायैनमोब्रह्मरंध्रे । ह्रींत्रींहुंइंईंचंछंजंझंञंउग्रायैनमोललाटे । ह्रींत्रींहुँउंऊंटंठंडंढंणंमहोग्रायैनमोभ्रूमध्ये । ह्रींत्रींहुंऋंॠंतंथंदंधंनंवज्रायै नमःकंठदेशे । ह्रींत्रींहुंऌंॡंपंफंबंभंमंमहाकाल्यैनमोहृदि । ह्रींत्रींहुंएंऐंयंरंलंवंशंसरस्वत्यैनमोनाभौ । ह्रींत्रींहुंओंऔंशंषंसंहंकामेश्वर्यैनमोलिंगमूले । ह्रींत्रींहुंअंअःलंक्षंचामुंडायैनमोलिंगमूले ॥ इतितारादिन्यासः ॥

षष्ठंन्यासंततःकुर्यात्पीठाख्यंसर्वसिद्धिदम् ॥ आधारेकामरूपाख्यंह्रस्वबीजार्णपूर्वकम् ॥ २९ ॥
हृदिजालंधरंपीठंदीर्घपूर्वंप्रविन्यसेत् ॥ ललाटेपूर्णगिर्य्याख्यंकवर्गाद्यंन्यसेत्सुधीः ॥ ३० ॥
उड्डियानंचवर्गाद्यंकेशसंधौप्रविन्यसेत्॥भ्रुवोर्वाराणसीपीठंटवर्गाद्यंसमाहितः ॥ ३१ ॥ तवर्ग
पूर्विकांन्यस्येदवन्तींनयनद्वये ॥ पवर्गपूर्वकंमायापुरीपीठंमुखेन्यसेत् ॥३२॥ कण्ठेतुमथुरापीठंयव
र्गाद्यंप्रविन्यसेत् ॥ अयोध्यापीठकंनाभौशवर्गादिकमुत्तमम् ॥ ३३ ॥ कट्योः कांचीपुरीपीठंद
शमंतुप्रविन्यसेत् ॥ षोढान्यासास्तुतारायाःप्रोक्तास्तेइष्टदायकाः ॥ ३४ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

---

१ ह्रीं ३ अंइंउंऋंलृंएंओंअंकामरूपपीठायनमआधारे । ह्रीं ३ आंईंऊंॠंलॄंऐंऔंअःजालंधरपीठायनमोहृदि । ह्रीं ३ कंखंगंघंङंपूर्णगिरिपीठायनमो ललाटे । ह्रीं ३ चंछंजंझंञंउड्डियानपीठायनमः केशसंधौ । ह्रीं ३ टंठंडंढंणंवाराणसीपीठायनमोभ्रुवोः । ह्रीं ३ तंथंदंधंनंअवंतिपीठायनमोनयनद्वये । ह्रीं ३ पंफंबंभंमंमायापुरीपीठायनमः मुखे। ह्रीं ३ यंरंलंवंमथुरापीठायनमःकंठे । ह्रीं ३ शंषंसंहंअयोध्यापीठायनमोनाभौ । ह्रीं ३ लंक्षंकांचीपुरीपीठाय नमः कट्योः ॥ इतिपीठन्यासः ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ध्यानमाह ॥ विश्वेति ॥ खड्गनीलसरोजेदक्षयोः ॥ कर्त्रींकपालेवामयोः ॥ ३९ ॥ श्वेतो

श्रीमतींहृद्येकजटांतारिणींशिरसिन्यसेत् ॥ वज्रोदकांशिखायांतुउग्रतारांतुवर्मणि ॥ ३५ ॥ महापरिसरेनेत्रेपिंगोग्रैकजटेस्त्रके ॥ षड्दीर्घयुक्तमायाद्याएतान्यस्याःषडंगके॥३६॥ अंगुष्ठादिष्वंगुलीषु पूर्वंविन्यस्ययत्नतः ॥ तर्जनीमध्यमाभ्यांतुकृत्वातालत्रयंततः ॥३७॥ छोटिकामुद्रयाकुर्याद्दिग्बंधंदेवतांस्मरन् ॥ विद्ययातारपुटयाव्यापकंसप्तधाचरेत् ॥ उग्रांतारांततोध्यायेत्सद्योवाक्सिद्धिदायिनीम् ॥ ३८ ॥ विश्वव्यापकवारिमध्यविलसच्छ्वेतांबुजन्मस्थितांकर्त्रींखड्गकपालनीलनलिनैराजत्करांनीलभाम् ॥ कांचीकुंडलहारकंकणलसत्केयूरमंजीरतामाप्तैर्नागवरैर्विभूषिततनूमारक्तनेत्रत्रयाम्॥३९॥ पिंगोग्रैकजटांलसत्सुरसनांदंष्ट्राकरालाननांचर्मद्वैपिवरंकटौविदधतींश्वेतास्थिपट्टालिकाम्।अक्षोभ्येणविराजमानशिरसंस्मेराननांभोरुहांतारांशवहृदासनांदृढकुचामंबांत्रिलोक्याःस्मरेत् ॥ ४० ॥

ऽस्थिपट्टोऽलिकेललाटेयस्यास्ताम् ॥ अक्षोभ्योमंत्रद्रष्टामुनिस्तेनशोभितमस्तकाम् ॥ ४० ॥

---

१ हाँत्रांहांएकजटायै हृदयायनमः ॥ १ ॥ हांत्रांहांतारिण्यै शिरसेस्वाहा ॥ २ ॥ हांत्रांहांवज्रोदकायै शिखायैवषट् ॥ ३ ॥ हाँत्राँहाँउग्रतारायै कवचायहुं ॥ ॥ ४ ॥ हाँत्राँहाँमहापरिसरायैनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ५ ॥ १ ॥ हांत्रांहांएकजटायै अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥२॥ हाँत्रांहांतारिण्यै तर्जनीभ्यांस्वाहा ॥ ३॥ हाँत्रांहांवज्रोदकायै मध्यमाभ्यांवषट् ॥ ४ ॥ हाँत्राँहाँउग्रतारायैअनामिकाभ्यांहुं ॥ ५ ॥ हाँत्राँहाँमहापरिसरायै कनिष्ठिकाभ्यांवौषट् ।

॥ ४१ ॥ महाशंखंकपालम् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ पीठमंत्रमुद्धराति ॥ भृग्विति ॥ भृगुर्मन्विंदुसंयुक्तं सकारः औंबिंदुयुतम् ॥ मेघवर्त्मेह: ॥ हादनमैं: ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ स ह्रौंसरस्वतीयोगपीठात्मननेमइति ॥ ४७ ॥

एवंध्यायन्नदन्भक्ष्यमनेकंदधिमध्वपि ॥ मधुमांसचतांबूलजपेल्लंक्षचतुष्टयम् ॥ ४१ ॥ दशांशंजुहुयाद्रक्तपद्मैःक्षीराज्यलोलितैः ॥ स्थापयित्वामहाशंखंजपस्थानेजपंचरेत् ॥ ४२ ॥ नारींपश्यन्स्पृशन्गच्छन्महानिशिबलिंददेत् ॥ नकार्यःसुभ्रुवांद्वेषोयत्नात्ताःपूजयेत्सदा ॥ ४३ ॥ जपेनकालनियमोनस्थितोस्र्वदाजपेत् ॥ श्मशानेशून्यसदनेदेवागारेथनिर्जने ॥ ४४ ॥ पर्वतेवनमध्येवाशवमारुह्यमंत्रवित् ॥ समरेशत्रुनिहतंयद्वाषाण्मासिकंशिशुम् ॥ ४५ ॥ विद्यांसंसाधयेच्छीघ्रंसाधितैवंप्रसिध्यति ॥ मेधाप्रज्ञाप्रभाविद्याधीर्धृतिस्मृतिबुद्धयः ॥ ४६ ॥ विद्येश्वरीतिसंप्रोक्ताःपीठस्यनवशक्तयः ॥ भृगुर्मन्विंदुसंयुक्तंमेघवर्त्मसरस्वती ॥ ४७ ॥ योगपीठात्मनेहार्दंपीठस्यमनुरीरितः ॥ ४८ ॥ दत्त्वानेनासनंमूर्तिंमूलमंत्रेणकल्पयेत् ॥ पूजयेद्विधिवद्देवींतद्विधानमथोच्यते ॥ ४९ ॥ तारोमायाभगंब्रह्माजटेसूर्यःसदीर्घखम् ॥ यक्षाधिपतयेतंद्रीमोपनीतंबलिंततः ॥ ५० ॥

॥ ४८ ॥ ४९ ॥ नित्यबलिदानमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारः प्रणवः ॥ मायाह्रीं ॥ भगमेकारः ॥ ब्रह्माकः ॥ जटेस्वरूपम् ॥ सूर्योमः ॥ सदीर्घखंहा ॥ तंद्रीमः शिवाह्रीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा–ॐ ह्रींएकजटे महायक्षाधिपतयेममोपनीतंबलिंगृह्णगृह्णह्रस्विाहेति ॥ अनेनानित्यंनिशीथेबलिंदद्यात् ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ जलग्रहणादिमंत्रानुद्धराति ॥ ध्रुवइति ॥ ॐवज्रोदकेहुंफडितिजलग्रहणमंत्रः ॥ ५२ ॥ तारेति ॐह्रीं स्वाहेतिपादक्षालनमंत्रः ॥ तारइति ॥ कर्णीभृगुः उयुतः सः ॥ ५३ ॥ श्वेतः षः नेत्रयुतंजलम्वि ॥ स्वरूपमन्यत॥ ॐह्रीं सुविशुद्धधर्मसर्वपापानिशाम्याशेषविकल्पानपनयस्वाहेत्याचमनमंत्रः ॥ ५४ ॥ ध्रुवइति ॥ अक्षियुतोमृत्युः

गृह्णयुग्मंशिवास्वाहाबलिमन्त्रोयमीरितः ॥ दद्यान्नित्यबलिंतेनमध्यरात्रेचतुष्पथे॥५१॥जलदानादिकंमंत्रैर्विदध्याद्दशभिस्ततः ॥ ध्रुवोवज्रोदकेवर्मफट्सप्तार्णैर्जलग्रहः ॥ ५२ ॥ ताराद्यावह्निजायांतामायांघ्रिक्षालनेस्मृता ॥ तारोमायाभृगुः कर्णीविशुद्धधर्मवर्णतः ॥ ५३ ॥ सर्वपापानिशाम्याशेश्वेतोनेत्रयुतंजलम् ॥ कल्पानपनयस्वाहाषड्विंशत्यक्षरोमनुः ॥ ५४ ॥ अनेनाचमनंकुर्याद्ध्रुवोमणिधरीतिच ॥ वज्रिण्यक्षियुतोमृत्युःखारिनेत्रयुतारतिः ॥ ५५ ॥ सर्वांतेववकःसेंदुःकारिण्यंतेशिरोऽर्धिखम् ॥ अस्त्रवह्निप्रियामंत्रस्त्रयोविंशतिवर्णवान् ॥ ५६ ॥

शि ॥ नेत्रयुतारतिः णि ॥ ५५ ॥ वकः शं ॥ शिरः कं ॥ अर्धि सेंदुः खं ॥ बिंदुयुतोहः हुं ॥ अस्त्रंफट् ॥ वह्निप्रिया स्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथाॐमणिधरिवज्रिणिशिखरिणिसर्ववशंकारिणिकंहुंफट्स्वाहेतिशिखाबंधनमंत्रः ॥ ५६ ॥

प्रणवइति ॥ दीर्घवर्महूं ॥ अस्त्रंफट् ॥ ठद्वयस्वाहा ॥ ॐरक्ष २ हूंफट्स्वाहेतिभूशोधनमंत्रः ॥ तारेति ॥ ॐसर्वविघ्नानुत्सारयहुंफट्स्वाहेतिविघ्नवारणमंत्रः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ भूतशुद्धिमाह ॥ मायेति ॥ ६० ॥ ६१ ॥

शिखाबंधंप्रकुर्वीतमंत्रेणानेनमंत्रवित् ।।प्रणवोरक्षयुगलंदीर्घंवर्मास्त्रठद्वयम्।।५७।।नववर्णेनमंत्रेणकुर्याद्भूमिविशोधनम्।।तारान्तेसर्वविघ्नानुत्सारयेतिपदंततः।५८।हुंफट्स्वाहागुणद्वेर्णोमनुर्विघ्ननिवारणे।। अनेनविघ्नानुत्सार्यभूतशुद्धिमथाचरेत्।।५९।।मायाबीजंजपापुष्पनिभंनाभौविचिंतयेत्।।तदुत्थेनाग्निनादेहंदहेत्सार्द्धस्वपाप्मना।।६०।।ताराबीजसुवर्णाभंचिंतयेद्धृदिमंत्रवित् ।।पवनेनतदुत्थेनपापभस्मक्षिपेद्भुवि।।६१।।तुरीयंचंद्रकुंदाभंबीजंध्यात्वाललाटतः।।तदुत्थसुधयोदंहरचयेद्देवतानिभम् ।।६२।। अनयाभूतशुद्ध्यातुदेवीसादृश्यमाप्नुयात् ।। तारः पवित्रवज्रेतिभूमेघींशेंदुयुग्वियत् ।। ६३।।वह्निप्रियामनुः प्रोक्तोरुद्रार्णोभूमिमंत्रणे।।तारोनंतोभृगुः कर्णीपद्मनाभयुतोबली ।।६४।। खेवज्ररेखेक्रोधाख्यंबीजंपावकवल्लभा ।। द्वादशार्णेनमंत्रेणरचयेन्मंडलंशुभम् ।। ६५ ।।

तुरीयामिति ॥ हूं ॥ ६२ ॥ तारइति ॥ अर्घीशेन्दुयुक्वियत् ॥ ऊबिंदुयुतोहः हूं ॥ ॐपवित्रवज्रभूमेहूंस्वाहेति भूमिनिमंत्रणमंत्रः ॥ ६३ ॥ तारइति अनंतआ कर्णीभृगुः ॥ सु ॥ पद्मनाभयुतोबली एयुतोरः रे ॥ क्रोधबीजम् हुं ॥ ॐ आसुरेखेवज्ररेखेहुंस्वाहेतिमंडलमंत्रः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

तारइति ॥ सहक्निद्रा इयुतोभः ।भिः ॥ भृगुःसः ॥ विषंमः ॥ सदीर्घमायुतम् ॥ स्मृतिरौंगकाररेफौ साक्षौइयुतौग्नि ॥ भगान्वितोमहाकालः एयुतोमः ॥ ६६ ॥ क्रोधोहुं ॥ अस्त्रंफट् ॥ ॐयथागताभिषेकसमाग्निमेहुंफाडितिपुष्पशोधनमंत्रः ॥ तारइाति ॥ पाशआं ॥ पराह्रीं ॥ ॐआंह्रींस्वाहेतिचित्तशोधनमंत्रः ॥ ६७ ॥ अर्घ्यस्थापनमाह ॥ सेंदुभ्यामिति ॥ मांसंलः ॥ तोयंवः ॥ ६८ ॥ साबिंदुभ्यामाभ्यांभूमिंसंशोध्यपूर्वोक्तेनमंडलमंत्रेणवृत्तत्रि

तारोयथागतानिद्रासहक्षेकभृगुर्विषम्॥सदीर्घंस्मृतिरौसाक्षौमहाकालोभगान्वितः ॥ ६६ ॥ क्रोधोस्त्रंमनुवर्णोयंमनुःपुष्पादिशोधने॥तारःपाशपरास्वाहापंचार्णश्चित्तशोधने ॥ ६७॥ मनवोदशसंप्रोक्ताअर्घ्यस्थापनमुच्यते॥ सेंदुभ्यांमांसतोयाभ्यांभुवंसंमृज्यभूग्रहम् ॥ ६८ ॥ वृत्तत्रिकोणसंयुक्तं कुर्यान्मंडलमंत्रतः॥यजेत्तत्राधारशक्तिकच्छपंनागनायकम् ॥ ६९ ॥ आधारंस्थापयेत्तत्रताराद्यस्त्रांगमायया ॥ वह्निमंडलमभ्यर्च्यमहाशंखंनिधापयेत् ॥ ७० ॥ वामकर्णेन्दुयुक्तेनफडंतेनविहायसा ॥ प्रक्षालितंभृगुंदंडित्रिमूर्तीन्दुयुतंपठन् ॥ ७१ ॥

कोणचतुष्कोणात्मकंमंडलंकुर्यात् ॥ तत्राधारशक्तिकूर्मशेषान्संपूज्य ॥ ६९ ॥ ॐह्रींफडितिमंत्रेणार्घ्याधारंस्थापयेत् ॥ मंवह्निमंडलायनमइतितत्संपूज्य ॥ ७० ॥ वामकर्णेंदुयुक्तेनउबिंदुयुतेनफडंतेनाविहायसा हकारेण ॥ हुंफडितिमंत्रेणप्रक्षालितंमहाशंखंनरकपालम् ॥ दंडित्रिमूर्तींदुयुतंथईबिंदुयुक्तंभृगुंसकारम् स्थीमितिबीजंपठन् ॥ स्थापयेदित्यन्वयः ॥ ७१ ॥

ततोमंत्रचतुष्टयेनमहाशंखपूजा ॥ मंत्रचतुष्टयमाह ॥ दीर्घेति ॥ दीर्घत्रयम् आईऊ ॥ तद्युतामाया सृष्टिःकः सदीर्घयःया ॥ प्रतिष्ठाआकारस्तद्युतंमांसंलः–ला ॥ पवनोयः ॥ हृदयंनमः ॥ ह्रांह्रींह्रूंकालिकपालायनमःइत्येकोमंत्रः ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ हंसइति ॥ हंसः सः ॥ हरिभुजंगेशौतरौ ताभ्यांयुतः तथादीर्घत्रयाबिंदुयुतश्च ॥

ततोर्चयेन्महाशंखंजपन्मंत्रचतुष्टयम्॥दीर्घत्रयान्वितामायाकालीसृष्टिःसदीर्घपः ॥ ७२ ॥ प्रतिष्ठा
संयुतंमांसंपवनोहृदयंततः ॥ एकादशार्णःप्रथमोमहाशंखार्चनेमनुः॥ ७३ ॥ हंसोहरिभुजंगेशयुतो
दीर्घत्रयेंदुयुक् ॥ तारिण्यंतेकपालायनमोंतोद्वादशाक्षरः॥ ७४ ॥ खंदीर्घत्रयबिंद्वाढ्यंमेषोवामहृग
न्वितः ॥ लोकपालायहृदयंतृतीयोयंशिवाक्षरः ॥ ७५ ॥

स्वरूपमन्यत् ॥ स्त्रांस्त्रींस्त्रूंतारिणीकपालायनम इति द्वितीयः ॥ ७४ ॥ खामिति ॥ खंहः ॥ दीर्घत्रयबिंदुयुतः ॥ वामदृगन्वितोमेषः ईयुतोनः नी ॥ स्वरूपमग्रे ॥ हाँहीँहूँनीलाकपालायनमइतितृतीयः ॥ ७५ ॥

चतुर्थमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ स्त्रीबीजंस्त्रीं ॥ अर्घ्रींदुयुतंखंहूं ॥ स्वर्गस्वरूपम् ॥ खादिमः कः ॥ पालायेत्यादिस्वरूपम् : ॥ सर्वःसर्वोद्भवःसर्वशुद्धिमयइतिपदत्रयंचतुर्थ्यंतम् ॥ स्वरूपमग्रे ॥ दीर्घारतिः णा ॥ वायुः यः ॥ शुभ्रास्वरूपम् ॥ अनिलोयकारः ॥ सुराभाजनायस्वरूपम् ॥ भगीसत्यः एयुतोदः ॥ देवीत्यादिस्वरूपम् ॥ हृन्नमः ॥ यथा–ह्रींस्त्रींहूंस्वर्गकपालायसर्वाधारायसर्वायसर्वोद्भवायसर्वशुद्धिमयायसर्वासुर

मायास्त्रीबीजमर्घ्रींदुयुतंखंस्वर्गखादिमः ॥ पालायसर्वाधारायसर्वः सर्वोद्भवस्तथा ॥७६॥सर्वशुद्धि
मयश्चेतिङेन्ताः सर्वासुरांततः॥रुधिरारुरतिर्दीर्घावायुः शुभ्रानिलःसुरा ॥ ७७ ॥ भाजनायभगीस
त्योवीकपालायहृन्मनुः ॥ तुर्योंरसेषुवर्णोयंमहाशंखप्रपूजने ॥७८॥ तत्रार्कमण्डलंचेष्ट्वासलिलमूल
मन्त्रतः ॥ प्रपूरयेत्सुधाबुद्ध्यागंधपुष्पाक्षतान्क्षिपेत् ॥ ७९ ॥

रुधिरारुणायशुभ्रायसुराभाजनायदेवीकपालायनमइतिचतुर्थोंमन्त्रः रसेषुवर्णः षट्पंचाशदक्षरः ॥ एभिर्मंत्रैर्महाशंखंसंपूज्यअंसूर्यमण्डलायनम इत्यर्कमंडलंसंपूज्यमूलमन्त्रंपठन्सुधाबुद्ध्यातोयंसंपूर्यतत्रगन्धपुष्पाक्षतान्क्षिपेत् ॥ सुधा सुरात्रेतिरहस्यम् ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

त्रिखंडांमुद्रांबद्ध्वा ॐसोममंडलायनमइतितोयेचन्द्रमण्डलंसंपूज्यैकादशार्णेनमन्त्रेणाष्टवारंजलंमंत्रयेत् ॥ त्रिखंडालक्षणंयथा ॥ परिवर्त्यकरौस्पष्टावंगुष्ठौकारयेत्समौ ॥ अनामांतर्गतेकृत्वातर्जन्यौकुटिलाकृती ॥ कनिष्ठिकेनियुंजीतनिजस्थानेमहेश्वरि ॥ त्रिखण्डेयंसमाख्यातात्रिपुराह्वानकर्मणीति ॥ एकादशार्णमाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ शक्तिःह्रीं ॥ पद्माश्रीं ॥ रेफानुग्रहबिंदुयुक्गगनम् रेफ औबिंदुयुतोहः ह्रौं ॥ मूलमन्त्रः पूर्वोक्तःपञ्चार्णः ॥ हंसमनुसर्गसमन्वितंवियत् ॥ सऔविसर्गयुतोहः हसौः ॥ दीपिकेंद्राढ्योवराहः ऊ ॥ बिंदुयुतोहः हूं ॥

मुद्रां त्रिखण्डांसंदर्श्यपूजयेच्चन्द्रमण्डलम् ॥ वाक्शक्तिपद्मागगनंरेफानुग्रहबिंदुयुक् ॥८०॥ मूलमन्त्रो
वियद्धंसमनुसर्गसमन्वितम् ॥ वराहोदीपिकेंद्राढ्योमनुरेकादशाक्षरः॥८१॥ अष्टकृत्वोमुनामन्त्रीमन्त्रयेत्प्रयतोजलम् ॥ माययामदिरांक्षिप्त्वाशंखंयोनिंचदर्शयेत् ॥ ८२ ॥

यथा-ऐंह्रींश्रीं ह्रौं ॐह्रःत्रींहूंफट्हसौःहूमिति ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ततोह्रींबीजेनतोयेसुरांप्रक्षिप्यशंखयोनिमुद्रेदर्शयेत् ॥ तयोर्लक्षणंयथा ॥ वामांगुष्ठंतुसंगृह्यदक्षहस्तस्यमुष्टिना ॥ कृत्वोत्तानंतथा मुष्टिमंगुष्ठंतुप्रसारयेत् ॥ वामांगुल्यस्तथाश्लिष्टाःसंयुताःसुप्रसारिताः ॥ दक्षिणांगुष्ठकेलग्नामुद्राशंखस्यभूतिदेतिशंखमुद्रालक्षणम् ॥ मिथःकनिष्ठिकेबद्ध्वातर्जनीभ्यामनामिके ॥ अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्टदीर्घमध्यमयोरधः ॥ अंगुष्ठाग्रद्वयंन्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरितेतियोनिमुद्रालक्षणम् ॥ ८२ ॥

तत्रार्घ्यजलेवृत्ताष्टषट्कोणरूपंयंत्रंविचिंत्यध्यानोक्तांदेवींचस्मृत्वामूलेनार्चयेत् ॥ ८३ ॥ ततोंगुष्ठयुताभिस्तर्जन्या
द्यंगुलीभिरर्घ्यजलेमूलेनतांतर्पयेत् ॥ ८४ ॥ खमिति ॥ खंहः ॥ मनुरौ ॥ भृगुःसः ॥ तथाहकारएवभृग्वादियुतः ॥
ध्रुव ॐ यथा- ॐ ह्रौंहूँसौंनमइत्यानंदभैरवंतर्पयेत् ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ इत्यर्घ्यविधिंकृत्वापूर्वोक्तेमेधादिनव

तत्रवृत्ताष्टषट्कोणंध्यात्वादेवींविचिंतयेत्॥पूर्वोक्तांपूजयित्वैनांमूलेनाथप्रतर्पयेत् ॥ ८३ ॥ तर्जनी
मध्यमानामाकनिष्ठाभिर्महेश्वरी ॥ सांगुष्ठाभिश्चतुर्वारंमहाशंखस्थितेजले ॥ ८४ ॥ खंरेफमनु
बिंद्वाढ्यंभृगुमन्बिंदुयुक्तथा ॥ध्रुवाद्येननमोंतेनतर्प्यादानंदभैरवम् ॥८५॥ ततस्तेनार्घ्यतोयेनप्रोक्षे
त्पूजनसाधनम् ॥ योनिमुद्रांप्रदर्श्याथप्रणमेद्भवतारिणीम् ॥८६॥ विधानमध्येसंप्रोक्तंसर्वसिद्धिप्रदा
यकम् ॥ पूर्वोक्तेपूजयेत्पीठेपद्मेषट्कोणकर्णिके ॥८७॥ धरागृहावृतेरम्येदेवींरम्योपचारकैः ॥ मही
गृहचतुर्दिक्षुगणेशादीन्प्रपूजयेत् ॥ ८८ ॥ पाशांकुशौकपालंचत्रिशूलंदधतंकरैः॥ अलंकारचयोपेतं
गणेशंप्राक्समर्चयेत् ॥८९॥

शक्तिकेपीठेतांपूजयेत् ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ गणेशादिध्यानमाह ॥ पाशेति ॥ अंकुशत्रिशूलेदक्षयोः ॥ पाशकपालेवा
मयोः ॥ अलंकाराणांचयःसमूहस्तद्युतम् ॥ ८९ ॥

बटुकस्यदक्षे शूलम् ॥ ९० ॥ क्षेत्रपालस्यासिशूलेदक्षयोः ॥ ९१ ॥ योगिनीनांपाशलिंगेदक्षयोः ॥ ९२ ॥ अक्षोभ्यवज्रपुष्पंप्रतीच्छस्वाहेतिमुनिमंत्रः ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ सबिंदुनामादिवर्णआद्योयासांईदृश्यःसंबोधनांताः प्रणवाद्यावज्राद्यंताअभिधानामान्येववैरोचनादिमंत्राः ॥ यथा-ॐ वैंवैरोचनवज्रपुष्पंप्रतीच्छस्वाहा ॥ ॐ अंअमि

कपालशूलेहस्ताभ्यांदधतंसर्पभूषणम् ॥ श्वयूथवेष्टितंरम्यंबटुकंदक्षिणेर्चयेत् ॥ ९० ॥ असिशूलकपालानिडमरुंदधतंकरैः ॥ कृष्णंदिगंबरंक्रूरंक्षेत्रपंपश्चिमेयजेत्॥९१॥कपालंडमरुंपाशंलिंगंसंबिभ्रतीकरैः ॥ अंत्राकल्पारक्तवस्त्रायोगिनीरुत्तरेयजेत्॥९२॥अक्षोभ्यंप्रयजन्मूर्ध्निदेव्यामंत्रऋषिंशुभम् अक्षोभ्यवज्रपुष्पंचप्रतीच्छानलवल्लभा ॥ ९३ ॥अक्षोभ्यपूजनेमंत्रः षट्कोणेषुषडंगकम्॥ वैरोचनंचामिताभंपद्मनाभाभिधंतथा।९४।शंखंपांडुरसंज्ञंचदिग्दलेषुप्रपूजयेत्॥लामकांमामकांचैवपांडुरांतारकांतथा।९५।विदिग्गताब्जपत्रेषुपूजयेदिष्टसिद्धये॥सबिंदुनामाद्यवर्णाद्याःसंबुध्यंतास्तथाभिधाः।९६

ताभवज्र० ॥ ॐ पंपद्मनाभव० ॥ ॐ शंशंखपांडुरव० ॥ ॐ लांलामकेवज्र० ॥ ॐ मांमामकेवज्र०इत्यादि ॥ पद्मांतकादिपूजायामप्येवमेवमंत्राः ॥ ९६ ॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ नित्यपूजांतेबालिदानमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तार ॐ ॥ मायाह्रीं ॥ वालोवः सनेत्रयुतः
वि ॥ गदीखः ॥ कूर्मश्चकारः ॥ दीर्घोग्निः रा ॥ मेरुःक्षः ॥ भृगुः सः ॥ रमाश्रीं ॥ मायाह्रीं ॥ अस्त्रंफट् ॥ अग्नि

वज्रपुष्पंप्रतीच्छाग्निप्रियांताःप्रणवादिकाः ॥ वैरोचनादिपूजायांमनवःपरिकीर्तिताः ॥ ९७ ॥ भूगृहस्यच
तुर्द्वार्षुपद्मांतकयमांतकौ ॥ विघ्नांतकाभिधंपश्चान्नारांतकमथोयजेत् ॥ ९८ ॥ शक्रादींश्चापिवज्रादी
न्पूजयेत्तदनंतरम् । एवंसंपूजयेद्देवींपांडित्यंधनमद्भुतम् ॥ ९९ ॥ पुत्रान्पौत्रान्सुखंकीर्तिंलभतेजन
वश्यताम् ॥ तारोमायाश्रीमदेकजटेनीलसरस्वति ॥ १०० ॥ महोग्रतारेदेवालःसनेत्रोगदियुग्मकम् ॥
सर्वभूतपिशाकूर्मोदीर्घोग्निर्मेरुसान्ग्रसः ॥ १०१ ॥ ग्रभृगुर्ममजाड्यंचच्छेदयद्वितयंरमा ॥ मायास्त्रा
ग्निप्रियांतोयंद्विपंचाशल्लिपिर्मनुः ॥ २ ॥ अनेननित्यपूजांतेऽन्वहंदेव्यैबलिंहरेत् ॥ एवंसिद्धेमनौ
मंत्रीप्रयोगान्विदधीतच ॥ ३ ॥ जातमात्रस्यबालस्यदिवसत्रितयादधः ॥ जिह्वायांविलिखेन्मन्त्रं
मध्वाज्याभ्यांशलाकया ॥ १०४ ॥

प्रियास्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा–ॐ ह्रीं श्रीमदेकजटेनीलसरस्वतिमहोग्रतारेदेविखखसर्वभूतपिशाचराक्षसान्
ग्रस ग्रस ममजाड्यंछेदय छेदय श्रींह्रींफट्स्वाहेतिद्विपंचाशदर्णः ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

॥ १०५ ॥ प्रयोगांतरमाह ॥ उपरागइति ॥ ग्रहणेतडागेतरत्काष्ठंदतादंतेनानीयतेनलेखनींकृत्वातैलमधुसुराभिः पद्मिनीपत्रेतयामनुमालिख्यमातृकावर्णैः संवेष्ट्यकुंडंनिखायतदुपर्यग्निंप्रतिष्ठाप्यगोदुग्धाक्तेनरक्तपद्मसहस्रेणतत्र हुत्वाषोडशार्णेनमांसैर्होमांतेबलिंदत्त्वामध्यरात्रेपूर्वोक्तमंत्रेणबलिंदद्यात् ॥ एवंकृते उक्तफलसिद्धिः ॥ १०६ ॥

सुवर्णकृतयायद्वामंत्रीधवलदूर्वया ॥ गतेष्टमेब्देबालोसौजायतेकविराट्ध्रुवम्॥१०६॥तथापरैरजेयो
पिभूपसंघैर्धनार्चितः॥ उपरागेदतानीयतरद्दारुसरोजले ॥६॥ निर्मायकीलकंतेनतैलमध्वमृतैर्लिखे
त् ॥ सरोजिनीदलेमन्त्रंवेष्टयेन्मातृकाक्षरैः ॥ ७ ॥ निखायतद्दलंकुंडेचतुरस्रेसमेखले ॥ संस्थाप्य
पावकंतत्रजुहुयान्मनुनाऽमुना ॥८॥सहस्ररक्तपद्मानांधेनुदुग्धजलाप्लुतम् ॥ होमांतेविविधैरन्नैःपलैर
पिबलिंहरेत्॥९॥बलिमंत्रेणविधिवद्बलिमंत्रःप्रकाश्यते॥तारपद्मेयुगंतंद्रीवियद्दीर्घंचलोहितः।११०॥
अत्रिर्विषभगारूढोवदेत्पद्मावतीपदम् ॥ झिंटीशाढ्योनिलःस्वाहाषोडशार्णोबलेर्मनुः ॥ १११ ॥

॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ षोडशार्णमाह ॥ तारइति ॥ तंद्रीमः ॥ दीर्घं वियत् हा ॥ लोहितःपः ॥ विषभगारूढोत्रिः ॥ मएयुतोदः द्मे ॥ अनिलोझिंटीशाढ्यःयएयुतःये ॥ यथा–ॐ पद्मे पद्मे महापद्मेपद्मावतीयेस्वाहेति ॥ ११० ॥ १११ ॥

---

१ ॐ पद्मेपद्मेमहापद्मेपद्मावतीयेस्वाहेतिषोडशार्णः ।

॥११२॥ अलिकेललाटेधरेत् तिलकंकुर्यादित्यर्थः ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ विरोधिनःशत्रूनुच्चाटयति निष्का
सयति ॥ क्षाराढ्यनिशया सैंधवयुक्तयाहरिद्रया ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ यंत्रमाह ॥ षडिति ॥ षट्कोणेसाध्यान्वितं

ततोनिशीथेपिबलिंपूर्वोक्तमनुनाहरेत्।एवंकृतेपंडितानामजेयःकविराड्भवेत्।११२।निवासोभारती
लक्ष्म्योर्जनतारंजनक्षमः ॥ शताभिजप्तांयोमंत्रीरोचनामलिकेधरेत् ॥ १३॥ सयंपश्यतितस्यासौदास
वज्जायतेक्षणात् ॥ श्मशानांगारमाहृत्यशर्वयांकुजवासरे ॥१४॥ कृष्णांबरेणसंवेष्ट्यनिबद्धंरक्ततं
तुभिः ॥ शताभिजप्तमूलेननिःक्षिपेद्वैरिवेश्मनि ॥ १५ ॥ उच्चाटयतिसप्ताहात्सकुटुंबान्विरोधिनः ॥
क्षाराढ्यनिशयामंत्रंलिखित्वापौरुषेस्थिनि ॥ १६ ॥ रविवारेनिशीथिन्यांसहस्रमभिमंत्रयेत् ॥
तत्क्षिप्तंशत्रुसदनेमंडलाद्भ्रंशकंभवेत् ॥ १७ ॥ क्षेत्रेक्षिप्तंसस्यहान्यैजवहृत्तुरगालये ॥ षट्कोणमध्ये
प्रविलिख्यमूलंसाध्यान्वितंकेसरगस्वराढ्यम् ॥ काद्यष्टवर्गान्वितपत्रमब्जंलिखेद्बहिर्भूमिपुरेणवीतम्
॥ १८ ॥ यंत्रमेतल्लिखेद्भूर्जेरसेनजतुजन्मना ॥ पीताम्बरेणसंवेष्ट्यबध्नीयात्पीतसूत्रतः ॥ ११९ ॥

मूलममुंकरक्षरक्षोतियुक्तंमूलमंत्रंविलिख्याष्टदलकेसरेषुअंआमित्यादिस्वराणांयुग्मपत्रेषुकचटतपयशलेतिवर्गान्विलि
ख्यबहिश्चतुष्कोणेनवेष्टयेत् ॥ ११८ ॥ जतुजन्मनालाक्षोत्थेनरसेन ॥ ११९ ॥

॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ तारेति ॥ गोप्या अहंतदुपासकइतिकस्याप्यग्रेनप्रकाशयेत् ॥ १२४ ॥ इति
श्रीमंत्रमहोदधिव्या०नौकायांतारामंत्रनिरूपणश्चतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥ ताराभेदानाह ॥ ब्रह्मोपासितांताषड्दाह ॥

शिशूनांकंठतोबद्धंरक्षकंभूतभीतितः ॥वामबाहौतुनारीणांपुत्रदंसुभगत्वकृत् ॥ १२० ॥ दक्षबाहौ
नृणांबद्धंनिर्द्धनानांधनप्रदम् ॥ ज्ञानदज्ञानमिच्छूनांराज्ञांतुविजयप्रदम् ॥ २१ ॥ एतद्यंत्रंपुराधृ
त्वागौतमाद्यामहर्षयः ॥ लेभिरेमोक्षसंसिद्धिंसाम्राज्यंभूमिनायकाः ॥ २२ ॥ किंभूरिणानृणामे
तद्वांछितांयच्छतिश्रियम् ॥ कवित्वंराजमानंचकीर्तिमायुररोगताम् ॥ २३ ॥ नैवतारासमाकाचिद्दे
वतासर्वसिद्धिदा॥कलौयुगेततोगोप्यावांछितांसिद्धिमीप्सुना ॥१२४॥ इति श्रीमंत्रमहोदधौतारामं
त्रोक्तिश्चतुर्थस्तरंगः॥४॥छ॥ ताराभेदाअथोच्यंतेशीघ्रसिद्धिप्रदायिनः॥ वह्निवामाक्षिबिंद्वाढ्याका
मिकाभुवनेश्वरी॥ १ ॥भुवनेशीवर्मरुद्धाफडंताप्रणवादिका॥सप्ताक्षरीमहाविद्याविरिंचिसमुपासिता २॥

वह्नीति ॥ रेफईबिंदुयुताकामिका ॥ तकारःत्रीं ॥ १ ॥ वर्मरुद्धाभुवनेशी वर्मद्वयमध्यंगतेत्यर्थः ॥ यथा ॐ त्रीं
ह्रींहुंह्रींहुंफडिति ॥ २ ॥

विष्णूपासितामाह ॥ वागिति ॥ कामः क्लीं ॥ अनुग्रहसर्गवान् हसः औविसर्गयुतःसः सौ ॥ यथा–ऐंह्रींश्रींक्लीं सौःहुंउग्रतारेहुंफडिति ॥ ३ ॥ द्वितीयांविष्णूपासितामाह ॥ तारेति ॥ शिवाह्रीं ॥ भृगुःसः ॥ यथा–ॐहुंह्रींक्लीं सौःहुंफडिति ॥ ४ ॥ चतुर्मुखोपासितंमंत्रद्वयमाह ॥ एतयोरिति ॥ एतयोरनंतरोक्तयोर्विष्णूपासितयोर्द्वादशाक्षरीसप्ताक्षरयोर्विद्ययोःपंचमेबीजेसौरूपेयदिआदौहकारः अंतेरेफःतदातदेवविद्याद्वयंचतुर्मुखसेवितंहः आदौ

वाक्शक्तिः कमलाकामोहंसोनुग्रहसर्गवान् ॥ वर्मोग्रतारेवर्मास्त्रंविष्णवर्चाद्वादशाक्षरी ॥ ३ ॥ तार
वर्मशिवाकामोमनुसर्गयुतोभृगुः॥वर्मास्त्रमेषासप्तार्णासिद्धिदाविष्णुसेविता ॥४॥ एतयोःपंचमेबीजे
सकारोहादिरांतिमः ॥ तदाविद्याद्वयंप्रोक्तंचतुर्मुखसमर्चितम् ॥ ५ ॥ तारोमायावर्ममायावर्मास्त्रंच
रसाक्षरी ॥ हरिरग्नित्रिमूर्तींदुयुग्वर्मपुटिताद्रिजा ॥ ६ ॥ अस्त्रांतापंचवर्णोयंप्रोक्तमेकजटाद्वयम् ॥
रेफशांतींदुयुङ्णांतोवर्मास्त्रंकामवाग्भवम् ॥ ७ ॥

यस्यरःअंतिमोयस्यसः हादिरांतिमः ॥ यथा–ऐंह्रींश्रींक्लींहसौःहुंउग्रतारेहुंफडित्याद्या ॥ ॐहुंह्रींक्लींहसौःहुंफडित द्वितीया ॥ ५ ॥ एकजटाद्वयमाह ॥ तारइति ॥ अग्नित्रिमूर्तींदुयुक्हरिःरईबिंदुयुक्तकारस्त्रीं ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ यथा–ॐ ह्रींहुंह्रींहुंफट्इतिप्रथमा ॥ त्रींहुंह्रींहुंफडितिद्वितीया ॥ नारायणीयामाह ॥ रेफेति ॥ रेफःरः ॥ शांतिः ईकारः ॥ अनुस्वारयुक्तोणांतस्तः त्रीं ॥ यथा–त्रींहुंफट्क्लींऐंमिति ॥ ६ ॥ ७ ॥

उक्तानामष्टविद्यानामृष्याद्याह ॥ अमूषामिति ॥८॥ गायत्रीछंदः ॥ तारादेवता ॥ पूर्ववत्षड्दीर्घाढ्यमायाबीजेनह्रांह्रींमित्यादि ॥ ९ ॥ ध्यानमाह ॥ श्वेतेति ॥ कर्त्रींदक्षे ॥ १० ॥ प्रयोगानाह ॥ मध्विति ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

नारायणोपासितेयंपंचार्णासर्वसिद्धिदा ॥ अमूषामष्टविद्यानामृ[1]षिःशक्तिर्वसिष्ठजः ॥ ८ ॥गायत्री
तारकेछंदोदेवतेपरिकीर्तिते ॥ न्यासंतुपूर्ववत्कृत्वाध्यायेत्तारांहृदंबुजे ॥९॥ श्वेतांबरांशारदचंद्रकां
तिंसद्भूषणांचंद्रकलावतंसाम् ॥ कर्त्रींकपालान्वितपाणिपद्मांतारांत्रिनेत्रांप्रभजेखिलर्द्ध्यै ॥ १० ॥
जपपूजादिकंसर्वमासांपूर्ववदाचरेत् ॥ मधुयुक्परमान्नेनहोमाद्विद्यानिधिर्भवेत् ॥ ११ ॥ रक्तांवश्ये
स्वर्णवर्णांस्तंभनेमारणेसिताम् ॥ उच्चाटनेधूम्रवर्णांशांतौश्वेतांस्मरेदिमाम् ॥ १२ ॥ भूरिणाकिमि
होक्तेनविद्याएताः प्रसाधिताः ॥ पूरयन्त्यखिलंनृणांमनोरथमिहध्रुवम् ॥ १३ ॥ मायाहृद्भगवत्येक
जटेममजलंस्थिरा ॥ वह्न्यासनगतापुष्पंप्रतीच्छानलवल्लभा ॥ १४ ॥

एकजटामाह ॥ मायेति ॥ जलंवः ॥ वह्न्यासनगतास्थिरा रेफयुतोजःज्र ॥ यथा—ॐ ह्रींनमोभगवत्येकजटेममवज्रपुष्पंप्रतीच्छस्वाहेति ॥ १४ ॥

---

[1] अष्टविद्यानांवसिष्ठऋषिःगायत्रीछंदःतारकादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेंजपेवि० ।

॥ १५ ॥ १६ ॥ नीलसरस्वतामिाह ॥ रमोति ॥ व्यापिन्यारूढौऔयुतौ ॥ नीलस्वरूपम् ॥ भृगुःसः ॥ रस्वत्यै स्वरूपम् ॥ ठद्वयं ॥ स्वाहा ॥ यथा–ॐ श्रींह्रींहसौः हुंफट्नीलसरस्वत्यैस्वाहा ॥ मनुवर्णश्चतुर्दशार्णः ॥ १७ ॥

द्वाविंशत्यक्षरोमंत्रस्तारादिःसर्वसिद्धिदः ॥ ऋषिः[1]पतंजलिश्छंदोगायत्र्येकजटापुनः ॥ १५ ॥ दे
वतादीर्घषट्काढ्यमाययास्यात्षडंगकम् ॥ ध्यानार्चनप्रयोगांस्तुकुर्यात्पूर्वोक्तमंत्रवत् ॥१६॥ रमां
मायाहसौव्यापिन्यारूढौसर्गसंयुतौ ॥ वर्मास्त्रंनीलभृगुरस्वत्यैठद्वयमीरितम् ॥१७॥ प्रणवाद्योमनुः
सर्वसिद्धिदोमनुवर्णकः॥ऋष्याद्या[2]ब्रह्मगायत्रीतथानीलसरस्वती ॥ १८ ॥ नेत्रंचंद्रेंदुनेत्रांगंनेत्रार्णैरं
गकल्पना॥मंत्रोत्थितैरथोध्यायेद्देवींसर्वेष्टसिद्धिदाम् ॥ १९ ॥ घंटाशिरःशूलमसिकराग्रैःसंबिभ्रतीं
चंद्रकलावतंसाम् ॥ प्रमथ्नतींपादतलेपशुंतांभजेमुदानीलसरस्वतीशाम् ॥ २० ॥

॥ १८ ॥ षडंगमाह ॥ नेत्रेति ॥ नेत्रशब्देनार्णद्वयंचंद्रएकः ॥ अंगानिषट् ॥ १९ ॥ ध्यानमाह घंटामिति ॥ शूलासीदक्षयोः ॥ घंटाशिरसीवामयोः ॥ २० ॥

---

[1] अस्यश्रीमदेकजटामंत्रस्यपतंजलिर्ऋषिःगायत्रींछदःएकजटादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः । [2] अस्यनीलसरस्वतीमंत्रस्यब्रह्माऋषिःगायत्री छंदःनीलसरस्वतीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ २१ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ मायेति ॥ सामायाअनंतसंयुता आकारसंयुता ह्रां ॥ ङेयुतातारा तारायै ॥ समहा
पदाद्या महातारायै ॥ भृगुःसः ॥ ब्रह्माकः ॥ अनलांतिमोलः ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ तथातारा द्या त्रींबीजाद्या ॥
यथा–ॐत्रींह्रांहुंनमस्तारायैमहातारायैसकलदुस्तरांस्तारय २ तर २ स्वाहेति ॥ २२ ॥ २३ ॥ द्वात्रिंशदर्णावि

जपपूजादिकंसर्वमस्याःपूर्ववदीरितम्॥विशेषाज्जयदावादेविद्येयंसाधितानृणाम् ॥२१ ॥ मायासानं
तसंयुक्तावर्मह्न्ङेयुतापुनः ॥ तारामहापदाद्यासाभृगुब्रह्मानलांतिमः ॥ २२ ॥ दुस्तरांस्तरयद्वंद्वंत
रयुग्मंचठद्वयम् ॥ द्वात्रिंशदर्णातारा द्यापूजास्याःपूर्ववन्मता ॥२३॥ विद्याराज्ञीमथोवक्ष्येसुरेंद्रस्या
पिदुर्लभाम् ॥ लब्ध्वायांमानवाःस्वेष्टंसाधयंत्यर्चनेरताः ॥२४॥ वाङ्मायाश्रीर्मनोजन्माहंसोनुग्रह
बिंदुयुक्॥कामःशक्तिश्ववाग्बीजंफांतोलाघींशबिंदुयुक् ॥ २५ ॥ स्त्रीबीजंनीलतारेस्यात्संबुद्धचंता
सरस्वती ॥ अत्रीसरेफौक्रमतःशेषवामाक्षिसंयुतौ ॥ २६ ॥

द्याराज्ञीमाह॥विद्येति ॥२४॥वागिति ॥ मनोजन्माक्लीं ॥ अनुग्रहाबिंदुयुक्हंसः सःसौं॥लाघींशबिंदुयुक्फांतःलऊ
बिंदुयुतोबःब्लूं ॥ २५ ॥ स्त्रीबीजंस्त्रींसरेफौरेफयुक्तौ शेषवामाक्षिसंयुतौ क्रमतआईसंयुतौ अत्रीदकारौ ॥ २६ ॥

सानुस्वारौद्रांद्रीमिति ॥ कामबीजंक्लीं ॥ मांसार्घीबिंदुयुग्लऊबिंदुयुक्तःफांतोबःब्लूं ॥ सर्गीभृगुःसः ॥ हृल्लेखा
ह्रीं यथा–ऐंह्रीं श्रींक्लींसौंक्लींह्रींऐंब्लूंस्त्रींनीलतोरसरस्वतिद्रांद्रींक्लींब्लूंसःऐंह्रीं श्रींक्लींसौःसौः ह्रींस्वाहेति ॥ २७ ॥

सानुस्वारौकामबीजंफांतोमांसार्घिबिंदुगः ॥ सर्गीभृगुर्वाग्हृल्लेखारमाकामोथसौद्वयम् ॥ २७ ॥
सर्गांतंभुवनेशानीस्वाहाद्वात्रिंशदक्षरी ॥ महाविद्याहिसाख्यातासेविताभोगमोक्षदा ॥२८॥ ब्रह्मानु
ष्टुप्सरस्वत्योमुन्याद्याअङ्गकल्पना ॥ पंचपंचार्घपंचेषुर्युगार्णैर्मंत्रसंभवैः ॥२९॥ शवासनांसर्पविभू
षणाढ्यांकर्त्रींकपालंचषकंत्रिशूलम् ॥ करैर्दधानांनरमुंडमालांत्र्यक्षांभजेनीलसरस्वतींताम् ॥ ३०॥
चतुर्लक्षंजपेद्विद्यांकिंशुकैर्मधुरान्वितैः ॥ दशांशंजुहुयाद्वह्नौश्रद्धापूर्वमतंद्रितः ॥ ३१ ॥ पूर्वोक्तेपूजये
त्पीठेवक्ष्यमाणेनवर्त्मना ॥ आदौत्रिकोणंषट्कोणमष्टषोडशपत्रकं ॥ ३२॥ द्वात्रिंशत्पत्रमब्जंस्याच्च
तुष्षष्टिदलंततः ॥ त्रिरेखाढ्यंधरागेहंचतुरस्रमतःपरम् ॥ ३३ ॥ एवंयंत्रंसमालिख्यबाह्यतःपूजनंच
रेत् ॥ चतुरस्रस्याग्निकोणेविघ्नेशंपरिपूजयेत् ॥ ३४ ॥

॥ २८ ॥ षडंगमाह ॥ पंचेति ॥ २९ ॥ ध्यानमाह । शवेति ॥ कर्त्रींत्रिशूलेदक्षयोः ॥ ३० ॥ किंशुकैः पलाश
पुष्पैः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

---

[१] ऐंह्रींश्रींक्लींसौंक्लींह्रींऐंब्लूंस्त्रींनीलतोरसरस्वतिद्रांद्रींक्लींब्लूंसःऐंह्रींश्रींक्लींसौःह्रींस्वाहा । [२] अस्यमहाविद्यामंत्रस्यब्रह्माऋषिःअनुष्टुप्छंदः । सरस्वतीदेवताम
माभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

वायुकोणेक्षेत्रपालमैशान्ये भैरवंतथा ॥ नैर्ऋते योगिनीः सर्वा वामभागे गुरुंयजेत् ॥ ३५ ॥ भूगृहस्या
द्यरेखायामणिमालघिमातथा ॥ महिमाचेशितापूज्यावशिताकामपूरणी ॥ ३६ ॥ गरिमाप्राप्ति
रित्येताःपूज्याःपूर्वादिदिक्क्रमात् ॥ धरागृहस्यरेखायांद्वितीयायांतुभैरवाः ॥ ३७ ॥ असितांगो
रुरुश्चंडःक्रोधोन्मत्तकपालिनः ॥ भीषणश्चाथसंहारएतेष्टौभैरवाः स्मृताः ॥ ३८ ॥ भूमिगेहेतृती
यायां रेखायांमातरः पुनः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा ॥ ३९ ॥ वाराहींद्राणिकाचै
वचामुंडासप्तमीस्मृता ॥ महालक्ष्मीस्तथेज्यास्ताःपूर्वादिषुयथाक्रमम् ॥ ४० ॥ इत्थमाद्यावृतिंचेष्ट्वा
योनिमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ चतुःषष्टिदलेपद्मेशक्तीरर्चेच्चतावतीः ॥४१॥ कुलेशीकुलनंदाचवागीशीभैर
वीतथा ॥ उमाश्रीः शांतयाचंडाधूम्राकालीकरालिनी ॥ ४२ ॥ महालक्ष्मीश्चकंकालीरुद्रकालीसर
स्वती ॥ वाग्वादिनीचनकुलीभद्रकालीशशिप्रभा ॥४३॥ प्रत्यंगिरासिद्धलक्ष्मीरमृतेशीचचंडिका॥
खेचरीभूचरीसिद्धाकामाक्षीहिंगुलाबला ॥४४॥ जयाचविजयाचाप्यजितानित्यापराजिता॥ विला
सिनीतथाघोराचित्रामुग्धाधनेश्वरी ॥ ४५ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ योनिमुद्रोक्ता ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ चतुःषष्टिदलेतावतीः शक्तीरभ्यर्च्यखेचरीमुद्रांदर्शयेत् ॥ तल्लक्षणंयथा ॥ सव्यंदाक्षिणहस्तेतुसव्यहस्तेतुदाक्षिणम् ॥ बाहूकृत्वामहादेविहस्तौसंपरिवर्त्यच ॥ कनिष्ठानामिकेदेवियुक्तातेनक्रमेणतु ॥ तर्ज

सोमेश्वरीमहाचंडाविद्याहंसीविनायिका ॥ वेदगर्भातथाभीमाउग्रावैद्याचसद्गतिः ॥४६॥ उग्रेश्वरीचंद्रगर्भाज्योत्स्नासत्यायशोवती ॥ कुलिकाकामिनीकाम्याज्ञानवत्यथडाकिनी॥४७॥राकिनीलाकिनीचाथकाकिनीशाकिनीत्यपि ॥ हाकिनीतिचतुःषष्टिशक्तयःसिद्धिदायिकाः॥४८॥दर्शयेत्खेचरीमुद्रांद्वितीयावरणेर्चिते ॥ द्वात्रिंशत्पत्रमध्येतुपूज्याएतास्तुशक्तयः ॥ ४९ ॥ किरातायोगिनीवीरावेतालायक्षिणीहरा ॥ ऊर्ध्वकेशीचमातंगीमोहिनीवंशवर्द्धिनी ॥ ५० ॥मालिनीललितादूतीमनोजापद्मिनीधरा ॥ वर्वरीछत्रहस्ताचरक्तनेत्राविचर्चिका ॥ ५१ ॥मातृकादूरदर्शीचक्षेत्रेशीरंगिनीनटी ॥ शांतिर्दीप्तावज्रहस्ताधूम्राश्वेतासुमंगला ॥ ५२ ॥

नीभ्यांसमाक्रांतेसर्वोर्ध्वमापिमध्यमे ॥ अंगुष्ठौतुमहादेविसरलावपिकारयेत् ॥ इयंसाखेचरीनामसुद्रासर्वोत्तमोत्तमेति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

तृतीयावरणंसंपूज्यबीजमुद्रांदर्शयेत् ॥ तल्लक्षणंयथा–परिवर्त्यकरौस्पष्टावर्द्धचंद्राकृतीप्रिये ॥ तर्जन्यंगुष्ठयुगलंयुगपत्कारयेत्ततः ॥ अधःकनिष्ठावष्टब्धेमध्यमेविनियोजयेत ॥ तथैवकुटिलेयोज्येसर्वाधस्तादनामिके ॥ बीजमुद्रेयमुदितासर्वसिद्धिप्रदायिनीति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ षोडशपत्रंसंपूज्यसृणिंमुद्रामंकुशमुद्रांदर्शयेत् ॥ सापूर्वमुक्ता ॥

इष्ट्वातृतीयावरणंबीजमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ ततःषोडशपत्रेषुपूज्याःषोडशशक्तयः ॥ ५३ ॥ मुग्धाश्रीः
कुरुकुल्लाचत्रिपुरातोतलाक्रिया ॥ रतिःप्रीतिस्तथाबालासुमुखीश्यामलाविला ॥ ५४ ॥ पिशाची
चविदारीचशीतलावज्रयोगिनी ॥ सर्वेश्वरीतिसंपूज्यसृणिमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ ५५ ॥ अष्टपत्रेस्वस्वमंत्रै
र्यजेदष्टसरस्वतीः ॥ तारोहल्लोहितःसत्योवैकुंठानंतसंयुताः ॥ ५६ ॥ भृगुर्नेशब्दरूपेवाङ्मायाकामो
वदद्वयम् ॥ वाग्वादिन्यग्निकांतेतिमंत्रोवेदाक्षिवर्णवान् ॥ ५७ ॥

॥ ५५ ॥ अष्टपत्रेसरस्वत्यष्टकंस्वमंत्रैर्यजेदित्युक्तम् ॥ तासांमंत्रान्क्रमेणवदन्नादौवागीश्वरीमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ लोहितः पः ॥ वैकुंठानंतसंयुतःसत्यःमआयुतोदःद्मा ॥ ५६ ॥ भृगुःसः ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ यथा–ॐ पद्मासनेशब्दरूपेऐंह्रींक्लींवद २ वाग्वादिनीस्वाहेति वेदाक्षिवर्णवान् चतुर्विंशत्यर्णः ॥ ५७ ॥

अनेनमनुनापूर्वपत्रेवागीश्वरींयजेत् ॥ वराहहंसचक्रींद्रसंयुताभुवनेश्वरी ॥ ५८ ॥ वदयुग्मंचचित्रेश्वरिवाग्बीजानलप्रिया ॥ द्वादशार्णेनमनुनावह्नौचित्रेश्वरींयजेत् ॥ ५९ ॥ वाग्बीजंकुलजेवाक्चसरस्वत्यनलांगना ॥ एकादशार्णमनुनाकुलजांदक्षिणेर्चयेत् ॥ ६० ॥ वाङ्मायाश्रींवदद्वंद्वंकीर्तीश्वरिवसुप्रिया ॥ त्रयोदशार्णेनयजेन्नैर्ऋत्येकीर्तिनायिका ॥ ६१ ॥ वाङ्मायाचांतरिक्षांतेसरस्वतिचठद्वयम् ॥ रव्यर्णेनयजेत्प्रत्यगंतरिक्षसरस्वतीम् ॥ ६२ ॥

चित्रेश्वरीमंत्रमाह ॥ वराहेति ॥ वराहहंसचक्रींद्रसंयुताभुवनेश्वरी हसकलह्रीं ॥ ५८ ॥ वद २ चित्रेश्वरि ऐंस्वाहेति ॥ प्रथमंषट्कूटम् ॥ यथा–क्लींवद २ चित्रेश्वरिऐंस्वाहा ॥ वह्नौअग्निकोणे ॥ ५९ ॥ कुलजामंत्रमाह ॥ वागिति ॥ ऐंकुलजेऐंसरस्वतिस्वाहेति ॥ ६० ॥ कीर्तीश्वरीमंत्रमाह ॥ वागिति ॥ ऐंह्रींश्रींवद २ कीर्तीश्वरिस्वाहेति । वसुरग्निः ॥ ६१ ॥ अंतरिक्षसरस्वतीमंत्रमाह ॥ वागिति ॥ ऐंह्रींअंतरिक्षसरस्वतिस्वाहेति ॥ ६२ ॥

घटसरस्वतीमंत्रमाह ॥ एवंविधायोनिरैकारः ॥ कीदृशी वराहहंसचंडीशजनार्दनकृशानुयुक् हसखफरयुता ।' सेंदुःसबिंदुश्च ॥ कूटमिदम् ॥ मनुरौकारः ॥ कीदृशः ॥ लकुलीभृगुवह्नींदुयुक् हसरबिंदुयुतः ॥ शांतिरीअरुणादियुता ॥ अरुणाहः ॥ भृगुःसः ॥ शिखीफः ॥ अग्नीरःएतैर्युता ॥ सबिंदुश्चवाक् ऐं मायाह्रींश्री श्रीः ॥ इषुबीजानिवाणबीजानि द्रांद्रींक्लींब्लूंसइति ॥ घ्रीमितिस्वरूपम् ॥ टायुतातृतीयांतारुद्राज्ञा ॥ कृष्णवर्त्मनोग्नेः प्रेयसी

वराहहंसचंडीशजनार्दनकृशानुयुक् ॥ सेंदुर्योनिश्चलकुलीभृगुवह्नींदुयुङ्मनुः ॥ ६३ ॥ अरुणाभृगु
शिख्यग्निसंयुताशांतिरिंदुयुक् ॥ वाङ्मायाश्रीषुबीजानिघ्रींघटांतेसरस्वतीम्॥ ६४॥ घटेवदतरद्वंद्वं
रुद्राज्ञाटायुतामम ॥ अभिलाषंकुरुद्वंद्वंप्रेयसीकृष्णवर्त्मनः ॥ ६५ ॥ गुणवेदार्णेनयजेद्वायौघटसर
स्वतीम् ॥ भूधरेंद्रयुतोघींशोबिंद्वाढ्योवेंवदद्वयम् ॥ ६६ ॥

स्वाहा ॥ यथा--ह्सष्फंह्स्रौः ह्स्फ्रींऐंह्रीं श्रींद्रांद्रींक्लींब्लूंसःघ्रींघटसरस्वतीघटेवद २ तर २ रुद्राज्ञयाममाभिलाषं कुरुकुरुस्वाहेति॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ गुणवेदार्णस्त्रिचत्वारिंशदक्षरः ॥ नीलामंत्रमाह ॥ भूधरेति ॥ अर्घींशऊ ॥ भूधरोबः ॥ इन्द्रोलः ॥ ताभ्यांयुतः बिंदुयुतश्चब्लूं ॥ वेंवदवदस्वरूपम् ॥ यथा--ब्लूंवेंवद २ त्रींहुंफडिति

किणिमंत्रमाह ॥ वाग्बीजमिति ॥ अधराक्रांतोनकुलीऐंयुतोहः ॥ शांतिचंद्राढ्यमाकाशमूर्द्धबिंदुयुतोहः ॥ सदृक्जलंवि ॥ भगाक्रान्तंकूर्मद्वंद्वम्ऐयुतंचद्वंद्वंच ॥ यथा–ऐं हैंह्लींकिणि २ विच्चेइति ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ एवंसरस्वत्यष्टकंसंपूज्य क्षोभमुद्रादर्शनम् ॥ तल्लक्षणम्--मध्यमांमध्यमेकृत्वाकानिष्ठांगुष्ठरोधिते ॥ तर्जन्यौदंडवत्कृत्वामध्य

त्रींहुंफट्नवार्णेननीलामर्चेदुदग्दिशि ॥ वाग्बीजमधराक्रांतोनकुलीबिंदुमान्पुनः ॥ ६७ ॥ शांतिचंद्राढ्यमाकाशंकिणिद्वंद्वंसदृग्जलम् ॥ कूर्मद्वंद्वंभगाक्रांतंनवार्णेनामुनायजेत् ॥ ६८ ॥ मंत्रेणेशानदिग्भागेकिणिसंज्ञांसरस्वतीम् ॥ पंचमावृत्तिमाराध्यक्षोभमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ ६९ ॥ डाकिन्याद्याः पूर्वमुक्ताःषट्कोणेषट्प्रपूजयेत् ॥ दर्शयेद्द्राविणींमुद्रांषष्ठावरणपूजने ॥ ७० ॥

मोपर्यनामिके ॥ क्षोभाभिधानामुद्रेयंसर्वसंक्षोभकारिणीति ॥ ६९ ॥ डाकिन्याद्याःपूर्वोक्ताः ॥ डाकिनीराकिनीलाकिनीकाकिनीशाकिनीहाकिन्यः ॥ द्राविणीमुद्रालक्षणं यथा--क्षोभमुद्रालक्षणमुक्त्वोक्तम् ॥ एतस्या एवमुद्रायामध्यमेसरलेयदा ॥ क्रियेतेपरमेशानितदाविद्राविणीमतेति ॥ ७० ॥

पराबालाभैरवीतिपूजनीयास्त्रिकोणके॥सप्तमावृतिपूजायांमुद्रांकुर्याच्चकर्षिणीम् ॥ ७१॥ इत्थंसंपूज्य
तारेशींमनोभीष्टमवाप्नुयात् ॥ गणेशक्षेत्रपालाभ्यांयोगिन्यैभैरवायच ॥७२॥ तारायैचापिवितरेद्बलिं
नित्यंचतुष्पथे॥मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकादिकम् ॥ ७३ ॥ बलिद्रव्यंसमाख्यातंतेनेष्टं
साप्रयच्छति ॥तस्याध्यानंत्रिधावच्मिसत्त्वादिगुणभेदतः ॥ ७४ ॥ श्वेतांबराढ्यांहंसस्थांमुक्ताभरणभूषिताम्
॥ चतुर्वक्त्रामष्टभुजैर्दधानांकुंडिकांबुजे ॥७५॥ वराभयेपाशशक्तीअक्षस्रक्पुष्पमालिके ॥
शब्दपाथोनिधौध्यायेत्सृष्टिध्यानमुदीरितम् ॥७६॥ रक्तांबरांरक्तसिंहासनस्थांहेमभूषिताम् ॥ एकवक्त्रां
वेदसंख्यैर्भुजैःसंबिभ्रतींक्रमात् ॥ ७७ ॥ अक्षमालांपानपात्रमभयंवरमुत्तमम् ॥ श्वेतद्वीपस्थितां
ध्यायेत्स्थितिध्यानमिदंस्मृतम् ॥ ७८ ॥

पराबालाभैरवीतिस्वस्वमंत्रैः—ह्रींपरायैनमः—ऐंक्लींसौःबालायैनमः—हसैंहक्लींहसौःभैरव्यैनमइति ॥ आकर्षिणीमुद्रालक्षणं यथा—मध्यमातर्जनीभ्यांतुकनिष्ठानामिकेसमे ॥ अंकुशाकाररूपाभ्यांमध्यमे परमेश्वरि ॥ इयमाकर्षिणीमुद्रात्रैलोक्याकर्षणेक्षमेति ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ सात्त्विकध्यानमाह ॥ श्वेतेति ॥ कमंडलुवराक्षस्रक्पुष्पमालादक्षेषु ॥ इतराणिवामेषु ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ राजसध्यानमाह ॥ रक्तेति ॥ अक्षमालावरौदक्षयोः ॥ अन्ययोरन्ये ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

तामसंध्यानमाह ॥ कृष्णेति ॥ परशुदर्वींखड्गमुसलकर्त्रींशूलवज्रपाशगदादक्षेषु ॥ शेषाष्टुणिवामेषु ॥ ७९ ॥ ८० ॥

कृष्णांबराढ्यांनौसंस्थामस्थ्याभरणभूषिताम् ॥ नववक्त्रांभुजैरष्टादशभिर्दधतींवरम् ॥७९॥ अभयं
परशुंदर्वींखड्गंपाशुपतंहलम् ॥ भिंडिंशूलंचमुसलंकर्त्रींशक्तिंत्रिशीर्षकम् ॥ ८० ॥ संहारास्त्रं
वज्रपाशौखट्वांगंगदयासह ॥ रक्तांभोधौस्थितांध्यायेत्संहारध्यानमीदृशम् ॥ ८१ ॥ कर्मसुक्रू
रसौम्येषुध्यायेन्मंत्रीयथातथा ॥ एवंसिद्धेमनौमंत्रीगिरावाचस्पतिर्भवेत् ॥८२॥ दूर्वोत्थयातुलेख
न्यारोचनारसयुक्तया ॥ बालस्याच्छिन्ननालस्यजिह्वायांविलिखेन्मनुम् ॥८३॥ संप्राप्तेचाष्टमेवर्षेस
र्वेशास्त्रज्ञतामियात् ॥ मन्त्रेणायुतसंजप्तांवचांबालस्यकंठतः ॥ ८४ ॥ बध्नीयात्पूर्वसंप्रोक्तंबलिंदत्त्वा
विधानतः ॥ द्वादशेवत्सरेप्राप्तेभक्षितासाकवित्वकृत् ॥ ८५ ॥ ज्योतिष्मतीभवंतैलंकर्षमात्रंसुमंत्रि
तम् ॥ उपरागेजलस्थोयोऽश्नीयाद्वाचस्पतिर्भवेत्॥८६॥चतुष्पथेश्मशानेवाहित्वालज्जाभयंतथा ॥
जपेच्छवंसमारुह्यविद्यातत्परमानसः ॥८७॥ शृणोत्यसावमुंशब्दंनिशीथेजपतत्परः ॥ पारगोभव
विद्यानांसर्वांसिद्धिमवाप्नुहि ॥ ८८ ॥

॥ ८१ ॥ क्रूरेषुमारणे तामसध्यानम् ॥ उच्चाटनवश्यादौरक्तम्॥शांतौपुष्टौश्वेतम् ॥ ८२–८८ ॥

॥ ८९ ॥ उभावपिशिशूनैयायिकवेदांतिनौभूत्वाविवादंकुर्वाते ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ निर्वासानग्नः वि
शिखोमुक्तकेशः ॥ कृष्णभूताहे कृष्णपक्षचतुर्दश्याम् ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिव्या० नौकायांतारा

विद्वत्कुलसमुद्भूतमष्टवर्षंशिशुद्वयम् ॥ उपवेश्यतयोर्मूर्ध्निकरौदत्त्वाजपेन्मनुम् ॥८९॥ वेदांतन्यायसं
युक्त्याविवदेतेउभावपि ॥ यःकौतुकीसआश्चर्य्यंविद्यायाःपश्यतुध्रुवम् ॥९०॥ विधायवेदिकांरम्यां
विजनेकदलीवने ॥ तत्रासीनोजपेद्विद्यामर्कलक्षंविधानतः ॥९१॥ दासीचालितदोलायामारूढांसु
स्मिताननाम्॥पुन्नागचंपकाशोकरंभाविपिनसंस्थिताम् ॥ ९२ ॥ एवंध्यायन्भगवतींबलिंदद्याज्ज
पांततः॥ एवंकुर्वन्नरःसर्वमभीष्टंलभतेचिरात् ॥९३॥ निर्वासाविशिखःप्रेतभूमिस्थोयोजपेन्मनुम् ॥
अयुतंकृष्णभूताहेसवाक्सिद्धिमवाप्नुयात् ॥९४॥ विद्यांसौख्यंधनंपुष्टिमायुःकीर्तिंबलंस्त्रियः ॥ रू
पंकामयमानेनतारासेव्यानिरंतरम् ॥९५ ॥ इति श्रीमन्मंत्रमहोदधौतारामंत्रभेदकथनंनामपंचमस्त
रंगः॥५॥छिन्नमस्तामनुंवक्ष्येशीघ्रसिद्धिविधायिनम्॥पद्मासनाशिवायुग्मंभौतिकःशशिशेखरः॥१॥

भेदोनामपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥ छिन्नमस्तामंत्रमाह ॥ पद्मेति ॥ पद्मासनाश्रीं ॥ शिवाह्रीं ॥ भौतिकःसबिंदुःऐं॥१ ॥

पद्मानिभयुतः सदागतिः एयुतो यः ये ॥ यथा ॐ श्रींह्रींह्रींऐंवज्रवैरोचनीये ह्रींह्रींफट्स्वाहेति ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ ४ ॥ अस्त्रमंत्रमाह ॥ विसर्गइति ॥ ॐ अः वसुरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्रंफडिति ॥ सर्वेस्वाहांताः ॥ ध्यान

वज्रवरोचनीपद्मनाभयुक्तःसदागतिः ॥ मायायुगास्त्रदहनप्रियांतःप्रणवादिकः ॥ २ ॥ मंत्रः सप्तदशार्णोयंभैरवोस्यमुनिर्मतः ॥ सम्राट्छंदश्छिन्नमस्तादेवताभुवनेश्वरी ॥ ३ ॥ आंखड्गायहृदाख्यातमींखड्गायशिरःस्मृतम् ॥ ऊंवज्रायशिखाप्रोक्ताऐंपाशायतनुच्छदम् ॥ ४ ॥ ओमंकुशायनेत्रंस्याद्विसर्गोवसुरक्षयुक् ॥ मायायुग्मंचास्त्रमंगमनवःप्रणवादिकाः ॥ ५ ॥ स्वाहांताःप्रोदिताएवमंगेविन्यस्यतांस्मरेत् ॥ भास्वन्मंडलमध्यगांनिजशिरश्छिन्नंविकीर्णालकं स्फारास्यंप्रपिबद्गलात्स्वरुधिरंवामेकरेबिभ्रतीम्॥याभासक्तरतिस्मरोपरिगतांसख्यौनिजेडाकिनीवर्णिन्यौपरिदृश्यमोदकलितांश्रीछिन्नमस्तांभजे ॥ ६ ॥ ध्यात्वैवंप्रजपेल्लक्षचतुष्कंतद्दशांशतः ॥पालाशैर्बिल्वजैर्वापिजुहुयात्कुसुमैःफलैः ॥ ७ ॥ आधारशक्तिमारभ्यपरतत्त्वांतपूजिते ॥पीठेजयाख्याविजयाजिताचाप्यपराजिता।८।नित्याविलासिनीषष्ठीदोग्ध्यघोराचमंगला॥दिक्षुमध्येचसंपूज्यावनपीठस्यशक्तयः।९।

माह ॥ भास्वादिति ॥ याभोमैथुनंतदासक्तरतिकामोपरिस्थिताम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

---

१ अस्यश्रीछिन्नमस्तामंत्रस्यभैरवऋषिः सम्राटछदः छिन्नमस्ताभुवनेश्वरीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

पीठमंत्रमाह ॥ सर्वेति ॥ सद्दक्भृगुः सिः ॥ सभौतिकः खड्गीशः ऐयुतोवःवै ॥ भगम् ए यथा–ॐसर्वबुद्धिप्रदेवर्ण
नीयेसर्वसिद्धिप्रदेडाकिनीयेॐवज्रवैरोचनयिएह्येहिनमः॥ वेदरामाक्षरश्चतुस्त्रिंशदर्णः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२॥ १३॥

सर्वबुद्धिप्रदेवर्णनीयेसर्वभृगुःसद्दक् ॥ द्धिप्रदेडाकिनीयेचतारोवज्रसभौतिकः ॥१०॥ खड्गीशोरोच
नीयेचभगंह्येहिनमोंतिकः ॥ तारादिः पीठमंत्रोयंवेदरामाक्षरोमतः ॥ ११ ॥ समर्प्यासनमेतेनतत्रसं
पूजयेच्छिवाम् ॥ त्रिकोणमध्यषट्कोणपद्मभूपुरमध्यतः ॥ १२ ॥ बाह्यावरणमारभ्यपूजयेत्प्रतिलो
मतः ॥ भूपुराद्बाह्यभागेषुवज्रादीनिप्रपूजयेत् ॥१३॥ तदंतःसुरराजादीन्पूजयेद्धरितांपतीन् ॥ भूपुर
स्यचतुर्द्वार्षुद्वारपालान्यजेदथ ॥ १४ ॥ करालविकरालाख्यावतिकालस्तृतीयकः ॥ महाकालश्चतु
र्थःस्यादथपद्मेष्टशक्तयः ॥१५॥ एकलिंगायोगिनीचडाकिनीभैरवीतथा ॥ महाभैरविकेंद्राक्षीत्वसि
तांगीतुसप्तमी।१६।संहारिण्यष्टमीचेतिषट्कोणेष्वंगमूर्तयः। त्रिकोणगच्छिन्नमस्तापार्श्वयोस्तुसखी
द्वयम्॥१७॥डाकिनीवर्णिनीसंज्ञेतारवाग्भ्यांप्रपूजयेत्॥एवंपूजादिभिःसिद्धेमंत्रेमंत्रीमनोरथान्१८॥

सुरराजादीन् इन्द्रादीन् ॥ हरितांदिशांपतीन् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥तारवाग्भ्याम् ॐऐंडाकिन्यैनमः॥१८॥

।। १९ ।। २० ।। करवीरस्यकुसुमैःपुष्पैः ।। प्रसूनंकुसुमंसुमामित्यमरोक्तेः ।।२१।। रक्तैःकरवीरैरितिपूर्वेण संबंधः।।
तत्संख्ययालक्षेण ।। २२ ।। गोमायुःशृगालः ।। तामेवलक्ष्मीमेव ।। पायसांधसापायसान्नेन ।। २३ ।। २४ ।। नार्या

प्राप्नुयान्निखिलान्सद्योदुर्ल्लभांस्तत्प्रसादतः ।। श्रीपुष्पैर्लभतेलक्ष्मींतत्फलैःस्वसमीहितम् ।। १९ ।।
वाक्सिद्धिंमालतीपुष्पैश्चंपकैर्हवनात्सुखम् ।। घृताक्तंछागमांसयोजुहुयात्प्रत्यहंशतम् ।।२०।। मास
मेकंतुवशगास्तस्यस्युःसर्वपार्थिवाः ।। करवीरस्यकुसुमैःश्वेतैर्लक्षंजुहोतियः ।। २१ ।। रोगजालंपरा
भूयसुखीजीवेच्छतंसमाः ।। रक्तैस्तत्संख्ययाहुत्वावशयेन्मंत्रिणोनृपान्।।२२।।फलैर्हुत्वाप्नुयाल्लक्ष्मी
मुदुंबरपलाशजैः ।। गोमायुमांसैस्तामेवकवितापायसांधसा ।।२३।। बंधूककुसुमैर्भाग्यंकर्णिकारैःस
मीहितम्।।तिलतंडुलहोमेनवशयेन्निखिलाञ्जनान्।।२४ ।। नारीरजोभिराकृष्टिर्मृगमांसैःसमीहितम्।।
स्तंभनंमाहिषैर्मांसैःपंकजैःसघृतैरपि ।। २५ ।। चिताग्नौपरभृत्पक्षैर्जुहुयादरिमृत्यवे।।उन्मत्तकाष्ठदी
प्तेग्नौतत्फलंवायसच्छदैः ।। २६ ।।

रजोभिर्ऋतुकालनिर्गतरुधिरैराकर्षणम् ।। सघृतैःपंकजैरपिस्तंभनमेव ।। २५ ।। परभृत्कोकिलः ।। उन्मत्तोधत्तूरः।।
तत्काष्ठज्वलितेऽग्नौकाकपक्षैर्होमात्फलमारिमृत्युरेवस्यात् ।। २६ ।।

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥ प्रयोगांतरमाह ॥ उषसीति ॥ कविंशुक्राचार्यम् ॥ ३७ ॥

द्यूतेवनेनृपद्वारेसमरेवैरिसंकटे ॥ विजयंलभतेमंत्रीध्यायन्देवींजपन्मनुम् ॥ २७॥भुक्तौमुक्तौसितां
ध्यायेदुच्चाटेनीलरोचिषम् ॥ रक्तांवश्येमृतौधूम्रांस्तंभनेकनकप्रभाम् ॥ २८ ॥ निशिदद्याद्बलिं
तस्यैसिद्धयेमदिरादिना ॥ गोपनीयःप्रयोगोथप्रोच्यतेसर्वसिद्धिदः ॥ २९ ॥ भूताहेकृष्णपक्षस्य
मध्यरात्रेतमोघने ॥ स्नात्वारक्तांबरधरोरक्तमाल्यानुलेपनः ॥ ३० ॥ आनीयपूजयेन्नारींछिन्नमस्ता
स्वरूपिणीम् ॥ सुंदरींयौवनाक्रांतांनरपंचकगामिनीम् ॥३१॥ सस्मितांमुक्तकबरींभूषादानप्रतोषि
ताम् ॥ विवस्त्रांपूजयित्वैनामयुतंप्रजपेन्मनुम् ॥ ३२ ॥ बलिंदत्त्वानिशांनीत्वासंप्रेष्यधनतोषि
ताम्॥ भोजयेद्विविधैरन्नैर्ब्राह्मणान्देवताधिया॥३३॥अनेनविधिनालक्ष्मींपुत्रान्पौत्रान्यशःसुखम्॥
नारीमायुश्चिरंधर्मामिष्टमन्यदवाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ तस्यांरात्रौव्रतंकार्यंविद्याकामेनमंत्रिणा॥मनोरथे
षुचान्येषुगच्छेत्तांप्रजपन्मनुम् ॥ ३५ ॥ किंबहूक्तेनविद्याया अस्याविज्ञानमात्रतः॥ शास्त्रज्ञानंपाप
नाशःसर्वसौख्यंभवेद्ध्रुवम् ॥ ३६ ॥ उषस्युत्थायशय्यायामुपविष्टोजपेच्छतम् ॥ षण्मासाभ्यंतरे
मंत्रीकवित्वेनजयेत्कविम् ॥ ३७ ॥

तारापुटांमायां ॐ ह्रीं ॐ इति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ रेणुकाशबरीमाह ॥ प्रणवइति ॥ कमलाश्रीं ॥ मायाह्रीं ॥ सृणिः क्रों ॥ इंदुयुतोऽधरः ऐं ॥ मंत्रोयथा–ॐ श्रींह्रींक्रोंऐं ॥ षडंगमाह ॥ पंचेति ॥ समस्तेनास्त्रम् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

शिवेनकीलिताविद्यातदुत्कीलनमुच्यते ॥ मायांतारपुटांमंत्रीजप्यादष्टोत्तरंशतम् ॥३८॥मंत्रस्यादौ
तथैवांतेभवेत्सिद्धिप्रदातुसा ॥ एषनूनंविधिर्गोप्यःसिद्धिकामेनमंत्रिणा ॥३९॥ उदिताछिन्नमस्तेयं
कलौशीघ्रमभीष्टदा ॥ रेणुकाशबरीविद्याताहश्येवोच्यतेधुना ॥४०॥प्रणवःकमलामायासृणिरिंदुयु
तोधरः ॥ पंचाक्षरीमहाविद्याभैरवोस्यमुनिर्मतः ॥४१॥ पंक्तिश्छंदोरेणुकाख्याशबरीदेवतोदिता ॥
पंचवर्णैःसमस्तेनकुर्वीतमनुनांगकम्॥४२॥हेमाद्रिसानावुद्यानेनानाद्रुममनोहरे॥रत्नमंडपमध्यस्थवे
दिकायांस्थितांस्मरेत्॥४३॥गुंजाफलाकल्पितहाररम्यांश्रुत्योः शिखंडंशिखिनोवहंतीम्॥कोदंडबा
णौदधतींकराभ्यांकटिस्थवल्कांशबरींस्मरेयम् ॥ ४४ ॥ ध्यात्वैवंप्रजपेल्लक्षपंचकंतद्दशांशतः॥फलै
बिल्वैःप्रजुहुयात्तत्काष्ठैरेधितेऽनले ॥ ४५ ॥

ध्यानमाह ॥ हेमाद्रीति ॥ मेरुशिखरे ॥ ४३ ॥ शिखिनोमयूरस्यपिच्छंकर्णयोर्दधतीम् ॥ कोदंडंधनुर्वामे ॥ बाणोदक्षे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

---

१ अस्यरेणुकाशवरीमंत्रस्यभैरवऋषिःपंक्तिश्छंदःरेणुकाशबरीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

पूर्वोदितेजयादिके ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ स्वयंवरकलामाह ॥ तारइति ॥ निद्राभकारः ॥

पूर्वोदितेर्चयेत्पीठेषडंगावृत्तिरादिमा ॥ द्वितीयावरणेपूज्याःशबर्य्याअष्टशक्तयः ॥ ४६ ॥ हुंकारी
खेचरीचाथचंडास्याच्छेदनीतथा ॥ क्षेपणास्त्रीचहुंकारीक्षेमकारीतथाष्टमी ॥ ४७ ॥ तृतीयेदशदि
क्पालावज्राद्यानिचतुर्थके ॥ एवंसिद्धंमनुंसम्यक्कार्य्येकर्मणियोजयेत् ॥४८॥ मल्लीपुष्पैर्जनावश्या
इक्षुखंडैर्धनाप्तयः॥पंचगव्यैर्धेनवःस्युरशोककुसुमैस्सुताः॥४९॥ इंदीवरैःकृतेहोमेनृपपत्नीवशंवदा॥
अन्नाप्तिरन्नैःसकलंमधूकैर्वांछितंभवेत् ॥५०॥ प्रोदिताशबरीविद्याकलौत्वरितसिद्धिदा॥अथोच्यते
विवाहाप्त्यैस्वयंवरकलाशिवा ॥५१॥ तारोमायायोगिनीतिद्वयंयोगेश्वरिद्वयम् ॥ योगनिद्रायंकरि
स्यात्सकलस्थावरेतिच॥५२॥जंगमस्यमुखंप्रोच्यहृदयंममसंपठेत्॥वशमाकर्षयाकर्षयपवनोवह्नि
सुंदरी ॥५३॥पंचाशद्वर्णविद्यायामुनिरस्याःपितामहः॥छंदोतिजगतीदेवीगिरिपुत्रीस्वयंवरा॥५४॥

पवनोयः ॥ वह्निसुन्दरीस्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा—ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगेश्वरि योगभयंकरि सकलस्थावरजंगमस्यमुखंहृदयंममवशमाकर्षयाकर्षयस्वाहेति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

---

[1] अस्यस्वयंवराकलामंत्रस्यब्रह्माऋषिःजगतीछंदःदेवीगिरिपुत्रीस्वयंवरादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

षडंगमाह॥जगत्रयेतीति ॥ ५५ ॥ तारमायादिकाः॥ वश्यमोहिन्यैपदंपश्चिममन्तर्वर्तियेषामीदृशाः ॥ षडंगमन्त्राइ

जगत्त्रयेतिहृदयंत्रैलोक्येतिशिरोमतम्॥उरगेतिशिखासर्वराजेतिकवचंतथा॥५५॥सर्वस्त्रीपुरुषेत्यक्षि
सर्वेत्यस्त्रंसमीरितम्॥तारमायादिकावश्यमोहिन्यैपदपश्चिमाः ॥ ५६ ॥ षडंगमंत्राउद्दिष्टामूलेनव्या
पकंचरेत्॥ध्यायेद्देवींमहादेववरींतुसमुपागताम्॥५७॥ शंभुंजगन्मोहनरूपपूर्णंविलोक्यलज्जाकुलि
तांस्मिताढ्याम् ॥ मधूकमालांस्वसखीकराभ्यांसंबिभ्रतीमद्रिसुतांभजेयम् ॥५८॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्ष
चतुष्कंतद्दशांशतः ॥ पायसान्नेनजुहुयात्पीठेपूर्वोदितेयजेत् ॥५९॥ त्रिकोणचतुरस्रांगकोणाष्टदल
दिग्दलम् ॥ दिक्कलादंतपत्राणिचतुष्षष्टिदलंपुनः ॥६०॥ वृत्तत्रयंचतुर्द्वारयुक्तंधरणिकेतनम् । पूजा
यंत्रंप्रकुर्वीतितत्रसंपूजयेदिमाम् ॥ ६१ ॥

त्युक्तत्वात् ॥ ॐह्रींजगत्त्रयवश्यमोहिन्यैहृदयायनमः–ॐह्रींत्रैलोक्यवश्यमोहिन्यैशिर०–ॐह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै
शिखेत्यादिबोध्यम् ॥ मायात्रदीर्घषट्कयुताकार्य्या ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

---

१ ॐ ह्रींजगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयायनमः ।ॐ ह्रींत्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसेस्वाहा । ॐ ह्रींउरगवश्यमोहिन्यै शिखायैवषट् । ॐ ह्रींसर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचायहुं ॐ ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयायवौषट् ॐ ह्रींसर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्रायफट् ।

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ कलापत्रेषोडशदले ॥ ताराद्येनरमान्तेनश्रीबीजेन ॐश्रींश्रीमितिमनुनाश्रियंयजेत् ॥ द्विरामारे
द्वात्रिंशद्दले ॥ पाशमायांकुशैः ॥ आंह्रींक्रोंशिवायैनमइतिद्वात्रिंशद्वारंतांयजेत् ॥ ६४ ॥ वेदांगपत्रेचतुष्षष्टिदले ॥
श्रीमायामदनैः श्रींह्रींक्लींत्रिपुरायैनमइतितांयजेत् ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ मधुमतीमाह ॥ नारायणइति ॥

त्रिकोणेपार्वतीमिष्ट्वाचतुरस्रेर्चयेदिमाः॥मेधांविद्यांपुनर्लक्ष्मींमहालक्ष्मींचतुर्थिकाम्॥६२॥षट्कोणे
षुषडंगानिस्वरानष्टदलेर्चयेत् ॥ दिग्दलद्वितयेदेवानिंद्रादीनायुधानिच ॥ ६३ ॥ ताराद्येननमोन्ते
नश्रीबीजेनरमांयजेत् ॥ कलापत्रेद्विरामारेपाशमायांकुशैःशिवा॥६४॥वेदांगपत्रेत्रिपुटांश्रीमायामदनै
र्यजेत् ॥ वृत्तत्रयेमहालक्ष्मींभवानींपुष्पसायकाम् ॥६५॥ चतुरस्रंचतुर्द्वार्षुविघ्नेट्क्षेत्रेशभैरवान्॥यो
गिनीःपूजयेदित्थंनवावरणमर्चनम्।६६।एवंयोभजतेदेवींवश्यास्तस्याखिलाजनाः॥लाजैस्त्रिमधुरो
पेतैर्जुहुयादयुतंतुयः।६७।लभतेवांछितांकन्यांधनमानसमन्विताम्॥ एवंस्वयंवराप्रोक्ताप्रोच्यतेमधुम
त्यथ ॥६८॥ नारायणोबिंदुयुतोहृल्लेखांकुशमन्मथाः॥ दीर्घवर्मध्रुवोवह्निप्रेयसीवसुवर्णवान्॥६९॥

बिंदुयुतोनारायणः आं ॥ हृल्लेखाह्रा ॥ अंकुशः क्रों ॥ मन्मथः क्लीं ॥ दीर्घवर्महूं ॥ ध्रुवः ॐ वह्निप्रेयसी स्वाहा ॥
मंत्रोयथा–आंह्रींक्रोंक्लींहूं ॐस्वाहा ॥ ६९ ॥

॥७० ॥ स्वाहान्तप्रणवेनास्त्रम् ॥ ७१ ॥ ध्यानमाह ॥ अहीति ॥ नागवल्लीदलंदक्षेनीलपद्मंवामे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

मुनि[1]रस्यमधुश्छन्दस्त्रिष्टुब्मधुमतीतिच ॥ मुन्याद्याःपंचभिर्बीजैःपंचांगानिप्रकल्पयेत् ॥ ७० ॥
अस्त्रंस्वाहांततारेणकृत्वादेवींस्मरेद्बुधः॥ नानाद्रुमलताकीर्णेकैलासगतकानने ॥ ७१ ॥ अहिलता
दलनीलसरोजयुक्करयुगांमणिकांचनपीठगाम् ॥ अमरनागवधूगणसेवितांमधुमतीमखिलार्थकरीं
भजे ॥७२॥ प्रजप्यवसुलक्षंतद्दशांशंजुहुयाद्दलैः॥ बिल्वोत्थैःपूजयेत्पीठेजयादिसर्वशक्तिके ॥७३॥
काणकायांषडंगानिशक्तयोवसुपत्रके ॥ निद्राच्छायाक्षमातृष्णाकांतिरार्याश्रुतिःस्मृतिः ॥ ७४ ॥
शक्रादयस्तदस्त्राणिपूज्यान्यंतेसुखाप्तये ॥ यइत्थंसेवतेदेवींससमृद्धेःपदंलभेत् ॥७५॥ रक्तांभोजैर्हु
तैर्म्मंत्रीभूपतीन्वश्यतांनयेत् ॥ नानाभोगान्पायसेनतांबूलैर्वामलोचनाम् ॥ ७६ ॥ दामोदरोबिंदु
युक्तोमधुमत्याःपरोमनुः ॥ पूर्ववद्यजनंचास्यध्यायेद्देवींकुमारिकाम् ॥७७॥ कोटिरर्द्धंजपंकुर्वन्वि
द्यापारंगमोभवेत्॥मधुमत्यासमानान्यानानाभोगसुखप्रदा ॥ ७८ ॥

॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ मन्त्रान्तरमाह ॥ दामोदर इति दामोदरएकारः ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

---

[1] अस्यमधुमतीमंत्रस्यमधुर्ऋषिःत्रिष्टुप्छन्दःमधुमतीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

प्रमदामंत्रमाह ॥ मायेति ॥ वह्न्यासनः शूरः॥ रेफयुतःपःप्र ॥ मदेस्वरूपम् ॥ पावकसुंदरी स्वाहा ॥ मंत्रोयथा ॥ ह्रींप्रमदेस्वाहेतिषडर्णः ॥ ७९ ॥ ८० ध्यानमाह ॥ केयूरेति । केयूरमंगदोवरोदक्षे ॥ संक्रंदनः इंद्रः तदाद्यै

मायावह्न्यासनःशूरोमदेपावकसुंदरी ॥ षडर्णोमनुराख्यातोमुनिःशक्तिःसमीरितः ॥ ७९ ॥ गायत्रीछंदआख्यातंदेवताप्रमदाभिधा ॥ षडंगानिप्रकुर्वीतदीर्घषट्काढ्यमायया ॥ ८० ॥ केयूरमुख्याभरणाभिरामांवराभयेसंदधतींकराभ्याम् ॥ संक्रंदनाद्यामरसेव्यपादांसत्कांचनाभांप्रमदांभजामि ॥ ८१ ॥ रसलक्षंजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयाद्घृतैः ॥ पूर्वोक्तेपूजयेत्पीठेषडंगाशाधवायुधैः ॥ ८२ ॥ निर्जनेकाननेरात्रावयुतंनियुतंजपेत् ॥ सहस्रंपायसान्नेनहुत्वाशयनमाचरेत् ॥८३॥ त्रिसप्तदिवसंयावदेवमाचरतोनिशि ॥ देवीदृग्गोचरीभूयदद्यादिष्टानिमंत्रिणे ॥ ८४ ॥ मायाप्रमोदेठद्वंद्वंषडर्णोमनुरुत्तमः ॥ ऋष्याद्यर्चनपर्य्यंतंप्रमदावदुदीरितम् ॥ ८५ ॥

देवैःसेव्यौपादौयस्याः ॥ ८१ ॥ आशाधवादिक्पालाः ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ प्रमोदामाह ॥ मायेति ॥ ठद्वयं स्वाहा ॥ मंत्रोयथा ॥ ह्रींप्रमोदेस्वाहेतिषडर्णः ॥ ८५ ॥

॥ ८६ ॥ बंदीमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ ॐ हिलि हिलि बंदीदेव्यैनमइत्येकादशाक्षरः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ध्यानमाह ॥

सरितोनिर्जनेतीरेमण्डलेचंदनैःकृते ॥ जपहोमौविधायोक्तौप्रमोदांपश्यतिध्रुवम् ॥ ८६ ॥ तारोहि
लियुगंबन्दीदेवीङेन्तानमोंतकः ॥ एकादशाक्षरोमंत्रोभैरवत्रिष्टुंभौपुनः॥ ८७ ॥ बन्दीमुन्यादयः
प्रोक्ताएकेनद्वन्द्वशोङ्गकम् ॥ विधायसंस्मरेद्बंदींरत्नसिंहासनस्थिताम् ॥८८॥ सतोयपाथोदसमान
कांतिमंभोजपीयूषकरीरहस्ताम् ॥ सुरांगनासेवितपादपद्मांभजामिबंदींभवबंधमुक्त्यै ॥८९॥ लक्ष
युग्मंजपेन्मन्त्रीपायसान्नैर्दशांशतः ॥ हुत्वापूर्वोदितेपीठेपूजयेद्बंधमुक्तये ॥९०॥ अंगपूजाकेसरेषुश
क्तयःपत्रमध्यगाः ॥ कालीताराभगवतीकुब्जाह्वाशीतलापिच ॥ ९१ ॥ त्रिपुरामातृकालक्ष्मीर्दिगी
शाआयुधान्यपि ॥ एवमाराधिताबंदीप्रयच्छेदीप्सितंनृणाम् ॥९२॥ एकविंशतिघस्रांतमयुतंप्रत्यहं
जपेत् ॥ ब्रह्मचर्य्यरतोमंत्रीगणेशार्चनपूर्वकम् ॥ ९३ ॥

सतोयेति ॥ सजलमेघश्यामांपीयूषकरीरोऽमृतकुंभःसदक्षे ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ वस्रोदिनम् ॥ ९३ ॥

---

१ अस्यबंदीमन्त्रस्यभैरवऋषिःत्रिष्टुपूछंदः बंदीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

प्रयोगांतरमाह ॥ चतुरस्रइति ॥ अपूपोपरिघृतेनचतुरस्रांतर्वर्तिठकारांविलिख्यतत्रामुकंमोचयेतिलिखेत् ॥ दिक्षु मायाबीजंच ॥ अष्टादशार्णमंत्रेणतंवेष्टयित्वातत्रदेवीमावाह्याभ्यर्च्यकारागृहस्थायाऽपूपंदद्यात् ॥ सचतज्जग्ध्वाबंधनान्मुच्यते ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ अष्टादशार्णमाह ॥ वागिति ॥ केशवःअकारः ॥ ठद्वयंस्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥

कारागृहनिबद्धस्यमोक्षएवंकृतेभवेत् ॥ चतुरस्रेठकारांतरपूपोपरिसंलिखेत् ॥ ९४ ॥ साध्यनामघृतेनैवमायाबीजंचदिक्ष्वपि ॥ मनुनाष्टादशार्णेनचतुरस्रंप्रवेष्टयेत् ॥ ९५ ॥ वाग्बीजंभुवनेशानीरमाबंदिचकेशवः॥मुष्यबंधन्ततोमोक्षंकुरुयुग्मंचठद्वयम्॥९६॥ वसुचन्द्रार्णमन्त्रोयंक्षिप्रंबन्धविमोक्षदः॥ तस्मिन्नपूपेसंपूज्यबन्दीमावरणान्विताम् ॥९७॥ कारानिकेतनस्थायमित्रायप्रददीततम् ॥ सशुद्धोवाक्यतोभुत्वाभक्षयेत्तमपूपकम् ॥ ९८ ॥ तस्मिन्संभक्षितेबद्धोमुच्यतेबन्धनाद्द्रुतम् ॥ एवंसंप्रोदिताबन्दीस्मरणाद्बंधमुक्तिदा ॥९९॥ इति श्रीमन्महीधरविरचितेमन्त्रमहोदधौछिन्नमस्तादिमंत्रकथनंनामषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

स्पष्टंच ॥ यथा ॥ ऐंह्रींश्रींबंदिअमुष्यबंधमोक्षंकुरु कुरु स्वाहेति ॥ वसुचंद्रार्णोऽष्टादशार्णः ॥९६ ॥ ९७॥९८॥९९॥ इतिमंत्रमहोदधिनौकायांछिन्नमस्तादिकथनंनामषष्ठस्तरंगः॥ ६ ॥

अथवटयाक्षिणमाह ॥ पद्मनाभइति ॥ पद्मनाभए ॥ झिंटीशस्थौवियद्वायूएस्थितौहकारयकारौह्ये ॥ सद्दक्वािय
ताहि ॥ १ ॥ यक्षीत्यादिस्वरूपम् ॥ सनासिकंतोयम् ऋयुतोवः ॥ वृक्षेत्यादिस्वरूपंस्पष्टम् ॥ यथा ॥ एह्येहिय
क्षियक्षिमहायक्षिवटवृक्षनिवासिनिशीघ्रंमेसर्वसौख्यंकुरुकुरुस्वाहा ॥ द्वात्रिंशदर्णः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ वर्ण

अथसर्वेष्टसंसिद्ध्यैप्रवक्ष्येवटयक्षिणीम् ॥ पद्मनाभोवियद्वायूझिंटीशस्थौसदृग्वियत् ॥ १ ॥ यक्षि
यक्षिमहायक्षिवटतोयंसनासिकम्॥ क्षनिवासिनिशीघ्रंमेवसर्वसौख्यंकुरुद्वयम्।२।स्वाहाद्वात्रिंशदर्णो
यंमन्त्रोऽखिलसमृद्धिदः ॥ ऋषिः[१]स्याद्विश्रवाश्छंदोनुष्टुब्देवीतुयक्षिणी ॥३॥ वह्निभिःश्रुतिभिर्वेदैर्व
सुभिःसप्तभीरसैः॥प्रकुर्वीतषडंगानिमन्त्रवर्णान्न्यसेत्ततः।४।मस्तकेनेत्रयोर्वक्त्रेनासांकर्णासेयुग्मतः॥
स्तनयोःपार्श्वयोर्द्वन्द्वेहृदिनाभौशिवोदरे॥ ५ ॥कटचूरुनाभिजंघासुजानुनोर्मणिबन्धयोः॥ हस्ते
योर्मूर्ध्निविन्यस्यध्यायेद्देवींवटास्थिताम् ॥ ६ ॥ अरुणचन्दनवस्त्रविभूषितांसजलतोयदतुल्यतनूरु
चम् ॥ स्मरकुरंगदृशंवटयक्षिणींक्रमुकनागलतादलयुक्कराम् ॥ ७ ॥

न्यासमाह ॥ मस्तकइति ॥ नेत्रयोर्द्वौ ॥ नासाकर्णासस्तनपार्श्वकटचूरुजंघाजानुमणिबंधहस्तेषुद्वौद्वौ ॥ अन्य
त्रैकः ॥ शिवंलिंगम् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ध्यानमाह ॥ अरुणेति ॥ क्रमुकंपूगीफलंदक्षे ॥ ७ ॥

---

[१] अस्य यक्षिणीमंत्रस्यविश्रवाऋषिरनुष्टुप्छंदःयक्षिणीदेवताममाभीष्टासिद्ध्यर्थेजपोविनियोगः ।

॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥पद्मेति॥पद्माद्वयंश्रींश्रीं॥यक्षिणीस्वरूपम्॥सचंद्रंगगनत्रयंहंहंहं ॥ १८॥

लक्षद्वयंजपेन्मंत्रंबन्धूकैस्तद्दशांशतः ॥ हुत्वापीठेयजेद्देवीमुच्यंतेपीठशक्तयः ॥८॥ कामदामानदानक्तामधुरामधुरानना ॥ नर्मदाभोगदानंदाप्राणदापीठशक्तयः ॥ ९॥ मनोहराययक्षिण्यायोगपीठायहृन्मनुः ॥ पीठस्योक्तस्तत्रदेवींपूजयेद्वटयक्षिणीम् ॥१०॥कर्णिकायांषडंगानिपत्रेष्वेतायजेत्पुनः॥ सुनंदाचंद्रिकाहासासुलापामदविह्वला ॥ ११॥ आमोदाचप्रमोदापिवसुदेत्यष्टशक्तयः॥इंद्रादीनथवज्रादीन्संपूज्यलभतेसुखम् ॥१२॥ एवमाराधितोमंत्रःप्रयोगेषुक्षमोभवेत्॥निर्मनुष्येवनेगत्वान्यग्रोधाधस्तलेजपेत् ॥ १३ ॥ प्रतिघस्रंतमस्विन्यांसहस्रंनियतेंद्रियः ॥ सप्तमेदिवसेप्राप्तेकृत्वाचन्दनमण्डलम् ॥१४॥ तत्राज्यदीपंकृत्वास्मिन्पूजयेद्वटयक्षिणीम्॥तदग्रेप्रजपेन्मंत्रमानिशीथंसमाहितः॥ ॥ १५ ॥ शृणोतिनूपुरारावंमंत्रीगीतध्वनिंततः ॥ श्रुत्वैवप्रजपेन्मंत्रंवीतत्रासश्चतांस्मरेत् ॥ १६ ॥ ततःप्रत्यक्षतोदेवीमीक्षतेसुरतार्थिनीम्॥तत्कामपूरणात्सातुददातीष्टानिमन्त्रिणे ॥ १७॥ किंबहूक्तेनसर्वेष्टपूरणीवटयक्षिणी ॥ पद्माद्वयंयक्षिणीतिसचन्द्रंगगनत्रयम् ॥ १८ ॥

---

१ मनोहराययक्षिणीयोगपठायनमः।

वैश्वानरप्रियास्वाहा ॥ १९ ॥ चंपकानांकांतारेवने ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ क्रोधीशेति ॥ मन्विंदु

वैश्वानरप्रियांतोयंदशवर्णोमनु[1]र्मतः॥ऋषिःपूर्वोदितं[2]श्छंदःपंक्तिर्देवीतुयक्षिणी ॥१९॥ चं[1]द्रैकैं[1]त्रि[3]त्रियु[3]ग्[2]मेनसर्वेणांगक्रियामता ॥ स्मरेच्चंपककांतारेरत्नसिंहासनस्थिताम्॥२०॥ सुवर्णप्रभांरत्नभूषाभिरामां जपापुष्पसच्छायवासोयुगाढ्याम् ॥चतुर्दिक्षुदासीगणैःसेवितांघ्रिंभजेसर्वसौख्यप्रदांयक्षिणींताम् ॥ ॥ २१ ॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षंजपापुष्पैर्दशांशतः ॥ जुहुयात्पूर्ववत्पीठेपूर्वोक्तेप्रयजेदिमाम् ॥ २२ ॥ क्रोधीशवह्नीमन्विन्दुयुक्तौमदनमेखले ॥ हृदयाग्निप्रियांतोयताराद्योद्वादशाँ[3]क्षरः॥२३॥अस्येज्या पूर्ववत्सर्वामेखलायक्षिणीत्वियम् ॥ चतुर्दशाहपर्य्यंतंमधूकावनिरुट्तले ॥ २४ ॥ प्रजपेदयुतंनित्यं सहस्रंहवनंचरेत् ॥ मधूकपुष्पैर्मध्वक्तैस्तत्काष्ठैश्चहुताशने ॥ २५ ॥संतुष्टैवंकृतेदेवीप्रयच्छेदंजनंशुभम् ॥ येनाक्तनयनोमंत्रीनिधिंपश्येद्धरागतम् ॥ २६ ॥

युक्तौ ॥ औंबिन्दुयुक्तौ क्रोधीशवह्नीकरतेनक्रौं ॥ मदनमेखलेस्वरूपम् ॥ हृदयंनमः ॥ अग्निप्रियास्वाहा ॥ २३ ॥ मधूकावनिरुट्तले ॥ मधूकवृक्षाधस्तात् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

---

[1] श्रींश्रींयक्षिणीहंहंस्वाहेतिदशार्णः । [2] अस्यवटयाक्षिमंत्रस्यविश्रवाऋषिःपङ्क्तिश्छंदःयक्षिणीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः। [3] ॐक्रौंमदनमेखलेनमःस्वाहेतिद्वादशार्णः ।

मंत्रान्तरमाह ॥ प्रणवइति ॥ वाकऐं ॥ विशालेस्वरूपं॥मायाह्रीं ॥ पद्माश्रीं ॥ मनोभवःक्लीं ॥ ठद्वयंस्वाहा ॥ २७ ॥

प्रणवोवाग्विशालेचमायापद्मामनोभवः॥ ठद्वयांतोदशार्णोयंविशालायक्षिणीमनुः॥२७॥ मुन्यादि
पूजापर्य्यंतंपूर्ववत्समुदीरितम् ॥ चिंचातरोरधःस्थित्वाशुचिर्लक्षंजपेन्मनुः ॥२८॥ शतपत्रैर्दशांशेन
जुहुयात्तोषिताततः ॥ रसंददातियेनासौनीरोगायुरवाप्नुयात् ॥२९॥ वाक्चंद्रशेखरौशार्ङ्गीपिनाकी
शौमनुस्थितौ ॥ लांगलित्रितयंसेंदुवर्मदीर्घंशुचिप्रिया ॥३०॥ वस्व[2]क्षरमनोःशत्रु[3]घातिनःकपिलोमु
निः ॥ छन्दोनुष्टुप्चवाराहीवार्तालीदेवतोदिता ॥ ३१ ॥ द्वि[२]चंद्रं[१]भूं[१]मिचंद्रै[१]कं[१]युगै[३]मार्णैरंगकल्पना ॥
वाराहींचेतसिध्यायेच्छत्रुनिग्रहकारिणीम् ॥ ३२ ॥

॥२८॥२९॥वाराहीमाह ॥ वागिति ॥ मनुस्थितौचंद्रशेखरौशार्ङ्गीपिनाकीशौ ॥ औंबिंदुयुतौगलौ ॥ ग्लौं ॥ सेंदु लांगलित्रयंठत्रयं ठंठंठं दीर्घवर्महूं ॥ शुचिप्रियास्वाहा ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

---

[१] ॐ ऐंविशालेह्रींश्रींक्लींस्वाहेतिदशार्णः । [२] ऐंग्लौंठंठंठंहूँस्वाहा । [३] अस्यशत्रुघातिनःमंत्रस्यकपिलऋषिःअनुष्टुप्छन्दःवाराहीवार्त्तालीदेवताममाभीष्टसिद्धयर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥ विद्युदिति ॥ पाशमुद्गरादक्षयोः ॥ अंकुशशक्तीवामयोरूर्ध्वाधःस्थयोः॥नेत्रजैर्वीतिहोत्रैरग्निभिरस्माकमरिसमूहंनाशयतु ॥ ३३॥ वसुलक्षमष्टलक्षंहयारिजैःकरवीरैः ॥ हूयादित्याशीर्लिङ् ॥ ३४ ॥ दिगिना

विद्युद्रोचिर्हस्तपद्मैर्दधानापाशंशक्तिमुद्गरंचांकुशंच॥ नेत्रोद्भूतैर्वीतिहोत्रैस्त्रिनेत्रावाराहीनःशत्रुवर्गंक्षिणोतु ॥ ३३ ॥ वसुलक्षंजपित्वांतेबिल्वपत्रैर्हयारिजैः॥धात्रीफलैर्भृंगराजैःकुशैर्हूयाद्दशांशतः ॥३४॥ पूर्वोदितेयजेत्पीठेषडंगैर्दिगिनायुधैः ॥ एवंसिद्धंमनुंमंत्रीयोजपेच्छत्रुनिग्रहे ॥ ३५ ॥सृणिनाशत्रुमानीयबद्ध्वापाशेनतंदृढम् ॥ मुद्गरेणघ्नतींमूर्ध्नितांस्मरन्नयुतंजपेत् ॥३६॥ जुहुयादयुतंशुद्धैर्वनशुष्कैस्तुगोमयैः॥ प्रक्षिपेद्धोमजंभस्मवापीकूपादिपाथसि ॥३७॥ तत्पानीयस्यपातारोम्रियंतेरिपवोध्रुवम्॥ निर्यांतिहित्वास्थानंवाविद्विषंतःपरस्परम् ॥ ३८ ॥ शत्रुनिग्रहणेदक्षास्मरणादपिमंत्रिणाम् ॥ प्रकीर्तितेयंवाराहीधूमावत्यधुनोच्यते ॥ ३९ ॥ सात्वतत्रितयंसार्धितत्राद्यौचन्द्रशेखरौ ॥ वैकुंठोऽनन्तसंयुक्तोजलंनेत्रयुतोहारिः ॥ ४० ॥

दिक्पालाः ॥ ३५ ॥ सृणिनांकुशेन ॥ ३६ ॥ पाथसिजले ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ज्येष्ठामंत्रमाह ॥ सात्वेतति ॥ सार्धिउयुतं ॥ सात्वतात्रितयं धत्रयं ॥ तेषुद्वौसाबिंदू ॥ धूंधूंधू ॥ अनंतसंयुतोवैकुंठः आयुतोमः ॥ मा ॥ जलंवः ॥ नेत्रयुतोहारिः ॥ इयुतस्तः ॥ ४० ॥

वह्निजायास्वाहा ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥४५॥ रुषा ॥ अक्षमा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ क्षपाशनोरात्रिभोजी॥४८॥४९॥

अष्टार्णोवह्निजायान्तोमंत्र[1]ःशत्रुविनाशनः ॥ पिप्पलादोनिचृज्ज्येष्ठामुनिश्छंदोस्य[2]देवता ॥ ४१ ॥
आद्यबीजद्वयांतस्थैःषड्वर्णैरंगमीरितम् ॥ श्मशानेसंस्थितांध्यायेज्ज्येष्ठांवायससंस्थिताम् ॥४२॥
अत्युच्चामलिनांबराखिलजनोद्वेगावहादुर्मनारूक्षाक्षित्रितयाविशालदशनासूर्योदरीचंचला॥प्रस्वेदांबुचिताक्षुधाकुलतनुःकृष्णातिरूक्षप्रभाध्येयामुक्तकचासदाप्रियकलिर्धूमावतीमंत्रिणा ॥ ४३ ॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षंश्मशानेविगतांबरः । निशाभोजीदशांशेनतिलैर्हवनमाचरेत् ॥ ४४ ॥ पूर्वोक्तेपूजयेत्पीठेज्येष्ठांशत्रुविनष्टये ॥ केसरेषुषडंगानिपत्रस्थाअष्टशक्तयः॥ ४५ ॥ क्षुधातृष्णारतिर्निद्रानिर्ऋतिर्दुर्गतीरुषा ॥ अक्षमेतिततोदेवाइंद्राद्याआयुधानिच ॥ ४६ ॥ एवंज्येष्ठांसमाराध्यसिद्धमंत्रःप्रजायते ॥ उपोष्यकृष्णभूताहेनग्नोमुक्तशिरोरुहः ॥ ४७ ॥ शून्यागारेश्मशानेवाकांतारेभूधरेथवा ॥ प्रत्यहंप्रजपेन्निर्भीर्ध्यायन्देवींक्षपाशनः ॥ ४८ ॥ एवंलक्षंजपन्मंत्रीनाशयेदचिरादरिम् ॥ जुहुतालवणोपेतांराजिकंनिशितत्फलम् ॥ ४९ ॥

---

[1] धूँधूँधूमावतिस्वाहेत्यष्टार्णः । [2] अस्यधूमावतीमंत्रस्यपिप्पलादऋषिःनिचृच्छंदःज्येष्ठादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

कर्णपिशाचिनीमाह ॥ तारइति ॥ तार ॐ ॥ मायाह्रीं कर्णपिशा स्वरूपम् ॥ कूर्मधांतिमौचनौ ॥ सदृशौ इयुतौ ॥
चिनि ॥ कर्णेमेस्वरूपम् ॥ विधिःकः ॥ दंडीथः ॥ इरोयःद्वठयंस्वाहा ॥ ५० ॥ षडंगमाह ॥ एकेति ॥ अंगानिषट्

तारोमायाकर्णपिशासदृशौकूर्मधांतिमौ ॥ कर्णेमेविधिदंडीरोठद्वयंषोडशार्णकम् ॥ ९० ॥ मनु[1]र्ऋ
ष्यादिपूर्वोक्तंदेवतातुपिशाचिनी॥ एं[1]कै[1]कांगाग्निरै[3]मा[3]क्षि[2]वर्णैरंगंमनोमतम्॥९१॥ चितासनस्थांनरमुं
डमालांविभूषितामस्थिमणीन्कराब्जैः ॥ प्रोतांनरांत्रैर्दधतींकुवस्त्रांभजामहेकर्णपिशांचिनींताम् ॥
॥९२॥ श्मशानस्थःशवस्थोवाजपेल्लक्षंसमाहितः ॥ दशांशंजुहुयाद्वह्नौबिभीतकसमिद्वरैः ॥ ९३ ॥
यजेत्पूर्वोदितेपीठेषडंगामरहेतिभिः॥सिद्धमंत्रेजपंकुर्य्यादधस्ताद्बदरीतरोः।९४।अशुचिर्लक्षसंख्या
तंतेनतुष्टापिशाचिनी॥परचित्तस्थितांवार्तांभाविनींचवदेच्छुतौ।९५।ध्रुवःशिवारमाशीतलायैहार्दंन
वा[3]क्षरः।उपमन्युश्चबृहतींशीतलामुनिपूर्विका॥षड्दीर्घयुक्छिवालक्ष्मीबीजाभ्यांस्यात्षडंगकम्।९६।

अग्नयस्त्रयोरामाश्च ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ शीतलामाह ॥ ध्रुवइति – ध्रुव ॐ ॥ शिवाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥
शीतलायैस्वरूपम् ॥ हार्दंनमः षडंगमाह ॥ षडिति ॥ ह्रींश्रींहृत् ॥ ह्रींश्रींशिरइति ॥ ५६ ॥

---

[1] ॐ ह्रींकर्णपिशाचिनिकर्णेमेकथयस्वाहेतिषोडशार्णः । [2] अस्यकर्णपिशाचिनीमंत्रस्यपिप्पलादऋषिःनिचृच्छंदः कर्णपिशाचिनीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेंजपेविनियोगः । [3] ॐह्रींश्रींशीतलायैनमइतिनवार्णः । अस्यशीतलामंत्रस्यउपमन्युर्ऋषिःबृहतीछंदःशीतलादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेंजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥ दिगिति ॥ मार्जनीदक्षे ॥ शूर्पवामे ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ स्वप्नेश्वरीमाह ॥ प्रणवइति ॥ प्रणव ॐ ॥

दिग्वाससंमार्जनिकाचशूर्पंकरद्वयेसंदधतींघनाभाम्॥श्रीशीतलांसर्वरुजार्तिनष्टौरक्तांगरागस्रजमर्चयामि ॥५७॥ अयुतंप्रजपेन्मंत्रंपायसेनसहस्रकम् ॥ जुहुयात्पूर्ववत्पीठेस्फोटानांनाशिनीत्वियम् ॥ ॥ ५८ ॥ नाभिमात्रेजलेस्थित्वायःसहस्रंजपेन्मनुम् ॥ तेनसंमार्जितास्तीव्राःस्फोटानश्यंतितत्क्षणात् ॥५९॥ प्रणवःकमलास्वप्नेश्वारिकार्य्यं[1]चमेवद ॥ स्वाहात्रयोदशार्णोयंमन्त्रोमुन्यादिपूर्ववत्॥६०॥ अ[३]क्षिवेदा[४]क्षि[२]भूं[१]यु[२]गमनेत्रा[२]र्णैरंगकंमनोः ॥ विन्यस्यदेवतांध्यायेत्स्वप्नेशीमिष्टसिद्धये॥६१॥वराभयेपद्मयुगंदधानांकरैश्चतुर्भिःकनकासनस्थाम्॥सितांबरांशारदचंद्रकांतिंस्वप्नेश्वरींनौमिविभूषणाढ्याम्६२॥

कमलाश्रीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ध्यानमाह ॥ वरेति ॥ वरोदक्षे ॥ ६२ ॥

---

[1] ॐ श्रींस्वप्नेश्वरिकार्यंमेवदस्वाहेतित्रयोदशार्णः ।

त्रिदशाइंद्रादयः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ मातंगीमाह ॥ तार इति ॥ तार ॐ ॥ मायाह्रीं ॥ वाक्ऐं ॥ लक्ष्मीः श्रीं ॥ हृत्नमः ॥ निद्राभः ॥ स्मृतिर्गः ॥ लांतिमोवः ॥ सनेत्रोहरिःति ॥ उच्छिष्टचांडास्वरूपम् ॥ नेत्रयुता क्रिया

लक्षंजपेद्बिल्वपत्रैर्जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ पूर्वोदितेयजेत्पीठेषडंगत्रिदशायुधैः ॥ ६३ ॥ रात्रौसंपूज्यदेवेशीमयुतंपुरतोजपेत् ॥ शयीतब्रह्मचर्य्येणभूमौदर्भास्थिताजिनैः ॥६४॥ देव्यैनिवेद्यस्वंहार्दंसास्वप्नेवदतिध्रुवम् ॥ यक्षिण्याद्याइतिप्रोच्यमातंगीगद्यतेधुना ॥६५॥ तारोमायाचवाग्लक्ष्मीहृन्निद्रास्मृतिलांतिमाः ॥ सनेत्रोहरिरुच्छिष्टचांडानेत्रयुताक्रिया ॥ ६६ ॥ श्रीमातंगेश्वरिपदंसर्वंशूलीनलांतशम् ॥ करिवह्निप्रियामंत्रोद्वात्रिंशद्वर्णवानयम् ॥ ६७ ॥ मतंगोमुनिरस्योक्तोनुष्टुप्छंदस्तुदेवता ॥ मातंगीसर्वजनतावशीकरणतत्परा ॥६८॥ चतुर्भिःषड्भिरङ्गैश्चषडर्णैर्नयनैरपि ॥ मंत्रोस्यवर्णैरंगानिन्यस्यदेवींविचिंतयेत् ॥ ६९ ॥

लि ॥ ६६ ॥ श्रीमातंगेश्वरिसर्वैतिस्वरूपम् ॥ शूलीजः ॥ नस्वरूपम् ॥ लांतोवः ॥ शंस्वरूपम् ॥ करिस्वरूपम्॥ वह्निप्रियास्वाहा ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

---

१ ॐह्रींऐंश्रींनमोभगवतिउच्छिष्टचांडालिश्रीमातंगेश्वरिसर्वजनवशंकरिस्वाहा।अस्यमंत्रस्यमतंगऋषिरनुष्टुप्छंदोमातंगीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

॥ ७०॥७१॥७२॥ मातङ्ग्यताइमाः ॥ विभूत्यैनमइत्यादिकाः ॥ ७३ ॥ पीठमन्त्रमाह ॥ सर्वेति ॥ ॐह्रींऐंश्रींसर्वश

घनश्यामलांगींस्थितांरत्नपीठेशुकस्योदितंशृण्वतींरक्तवस्त्राम् ॥ सुरापानमत्तांसरोजस्थितांश्रींभजे
वल्लकींवादयंतींमतंगीम् ॥ ७० ॥ जपोयुतंसहस्रंतुहोमःपुष्पैर्मधूकजैः ॥ मध्वक्तैःपूजयेत्पीठेवक्ष्य
माणविधानतः ॥ ७१ ॥ त्रिकोणाष्टदलद्वंद्वंकलास्रचतुरस्रकम् ॥ पीठंकृत्वायजेत्तस्मिन्पीठशक्तीर्नि
वेष्टदाः ॥७२॥ विभूतिरुन्नतिःकान्तिःसृष्टिःकीर्तिश्चसन्नतिः ॥ व्युष्टिरुत्कृष्टिऋद्धीचमातंग्यंताःसमी
रिताः ॥७३॥सर्वशक्तिकमस्यांतेलासनायहृदंतिकः॥तारमायावाग्रमाद्यःपीठमंत्रःकलार्णकः॥७४॥
विश्राण्यासनमेतेनपाद्यादीनिप्रकल्पयेत्॥ मूलेनपुष्पपूजांतेकुर्य्यादावरणार्चनम् ॥७५ ॥ त्रिकोणे
ष्वर्चयेत्तिस्रोरतिप्रीतिमनोभवाः॥ केसरेषुषडंगानिमातॄश्चदलमध्यगाः ॥ ७६ ॥ द्वितीयेष्टदलेपूज्या
असितांगादिभैरवाः ॥ षोडशाख्येनुवामाख्याज्येष्ठारौद्रीप्रशांतिका ॥ ७७ ॥ श्रद्धामाहेश्वरीचापि
क्रियाशक्तिश्चसप्तमी ॥ सुलक्ष्मीःसृष्टिमोहिन्यौप्रमथाश्वासिनीतथा ॥७८॥ विद्युल्लताचचिच्छक्तिः
सुंदरीनंदयासह ॥ नंदबुद्धिःषोडशीतुपूजनीयाःप्रयत्नतः ॥ ७९ ॥

क्तिकमलासनायनमइति ॥ ७४ ॥ विश्राण्यदत्त्वा ॥ ७५ ॥ ७६ ७७ ॥ ९८ ॥ ७९ ॥

सामहादिका॥ उद्य[illegible]तंगी ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ध्रुवमिति ॥ आवरणदेवतानामादौध्रुवादीन् अंतेमातंगीपदंचयो

चतुरस्रेचतुर्दिक्षुमातंगीसामहादिका ॥ महालक्ष्मीस्तथासिद्धंपुनर्वह्न्यादिकोणतः ॥८०॥ विघ्नेश
दुर्गाबटुकक्षेत्रेशादिग्धवास्ततः ॥ वज्राद्याःपूजनीयाःस्युरित्थंसिद्धिर्मनोर्भवेत् ॥८१॥ ध्रुवंभवानी
वाग्बीजंरमामादौप्रयोजयेत् ॥ सर्वावरणदेवानांमातंगीपदमंततः ॥ ८२ ॥ मल्लिकाकुसुमैर्होमाद्भो
गोराज्यंचबिल्वजैः ॥ पत्रैःफलैर्वावश्यास्याज्जनताब्रह्मवृक्षजैः॥८३॥रोगनाशोमृताखण्डैर्निंबैःश्री
स्तंडुलैरपि ॥ आकृष्टिर्लवणैर्विद्यात्तगरैर्वेतसैर्जलम् ॥ ८४ ॥ लवणैर्निम्बतैलाक्तैःशत्रुनाशोंधसाश
नम् ॥ निशाचूर्णयुतैर्लोणैर्होमात्स्यात्स्तंभनंनृणाम् ॥८५॥ रक्तचन्दनकर्चूरमांसीकुंकुमरोचनाः॥
चन्दनागुरुकर्पूरैर्गंधाष्टकमुदीरितम्॥८६ ॥ एतद्धोमाज्जगद्वश्यंजायतेमंत्रिणोध्रुवम् ॥ एतत्पिष्टाश
तंजप्त्वातिलकेनजगत्प्रियः ॥ ८७ ॥ कदलीफलहोमेनसर्वेष्टसमवाप्नुयात् ॥ किंबहूक्तेनमातंगीपूजि
ताकामदानृणाम् ॥ ८८ ॥

जयेत् ॥ ॐ ह्रींऐंश्रींरित्यैमातंग्यैनमइत्यादि ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ अमृताखंडैर्गुडूचीशकलैः ॥ ८४ ॥ अंधसान्नेनहुते
नाशनमन्नंप्राप्यते ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ बाणेशीमाह ॥ सत्यइति ॥ सत्योदः ॥ अग्नियुक्तोरेफयुतः ॥ अनंतेंदुसंयुतः आबिंदुयुतश्च
तेनद्रामित्यादिबीजं ॥ सएवरेफयुतोदः आस्थानेशांतिरीत्तिन्नयुतोद्रीं ॥ ९२ ॥ इंद्रशांतिबिंद्वाढ्योब्रह्मालई

मध्वक्तलोणरचितांपुत्तलींदक्षिणांघ्रितः ॥ हूयादष्टोत्तरशतंखादिराग्नौवशंनिशि ॥८९॥ शालिपिष्ट
मयींतांतुभक्षयेत्स्त्रीवशीकृतौ॥कृष्णभूतनिशिध्वांक्षोदरेक्षिप्त्वासमुद्रजम्॥९०॥नीलसूत्रेणसंवेष्ट्यचि
ताग्नौप्रदहेदमुम् ॥ सहस्रजप्तंतद्भस्मयस्मैदद्यात्सदासवत् ॥९१॥ सत्योग्नियुक्तोनंतेंदुसंयुक्तंबीजमा
दिमम् ॥ एतस्यानंतसंस्थानेशांतियुक्तोद्वितीयकम् ॥९२ ॥ब्रह्मेन्द्रशांतिबिंद्वाढ्यस्तृतीयंबीजिमीरि
तम् ॥ भूधरोवसुधाघींशचन्द्राढ्यस्तत्तुरीयकम् ॥९३॥ सर्गीहंसःपंचमःस्यात्पंचबीजात्मकोमंनुः[1] ॥
ऋषिःसंम्मोहनश्छंदोगायत्रीदेवतापुनः ॥९४॥ बाणेशीव्यस्तवर्णेनमंत्रेणोक्तंषडंगकम् ॥ मूर्ध्निपा
देमुखेगुह्यहृदयेपंचदेवताः ॥ ९५॥ न्यस्तव्याःपंचबीजाद्याद्राविणीक्षोभिणीपुनः ॥ वशीकरण्याक
र्षण्यौसंमोहिन्यपिपञ्चमी ॥ ९६ ॥

बिंदुयुतःकःक्लीं॥वसुधाघींशचन्द्राढ्योलऊ॥ बिंदुयुतोभूधरोबः॥ब्लूँ॥९३॥सर्गीहंसःसः॥९४॥ व्यस्तवर्णैनपंचबीजैः
पंचांगानिसर्वैशास्त्रम्॥पञ्चबीजाद्याद्राविण्याद्यादेवता मूर्द्धादौन्यस्याः॥ द्रांद्राविण्यै नमोमूर्ध्नीत्यादि॥९५॥९६॥

---

[1] द्रांद्रींक्लीं [illegible] अस्यबाणेशीमंत्रस्यसंमोहनऋषिःगायत्रीछंदः बाणेशीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥ उद्यादिति ॥ बाणांकुशौदक्षयोः ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ अनंगाद्याकुसुमापराअनं

उद्यद्भास्वत्संनिभारक्तवस्त्रानानारत्नालंकृतांगीवहंती ॥ हस्तैःपाशंचांकुशंचापबाणौबाणेशीनःकाम
पूर्तिंविधत्ताम् ॥ ९७ ॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षपंचकंतद्दशांशतः ॥ हुत्वाबाणेश्वरींदेवींपूजयेद्विधिपूर्व
कम्॥९८॥मोहिनीक्षोभिणीत्रासीस्तंभिन्याकर्षिणीतथा॥द्राविण्याह्लादिनीक्लिन्नाक्लेदिनीपीठशक्त
यः॥९९॥बाणेशीयोगपीठायनमोमूलादिकोमनुः॥दत्त्वातेनासनंमंत्रीतस्मिन्देवींप्रपूजयेत्॥१००॥
आदौषडंगान्याराध्यदिक्ष्वग्रेद्राविणीमुखाः ॥ दलेष्वनंगरूपास्यादनंगमदनातथा ॥ १ ॥ अनंग
मन्मथानंगकुसुमामदनापरा ॥ अनंगाद्यातथानंगशिशिरानंगमेखला ॥ २ ॥ अनंगदीपिकेत्यष्टौ
शक्राद्याआयुधान्यपि॥एवंसिद्धंमनुंमंत्रीकाम्येषुविनियोजयेत् ॥३॥ दधियुक्तैरशोकस्यपुष्पैर्योदि
वसत्रयम् ॥ सहस्रंजुहुयात्तस्यवश्याःस्युःप्राणिनोखिलाः ॥४॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मन्त्रीकन्यामवा
प्नुयात् ॥ कन्यापिवरमाप्नोतिमासद्वितयमध्यतः ॥ १०६ ॥

गकुसुमेत्यर्थः ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

ससंपातम् आहुतिशेषस्यपात्रांतरेप्रक्षेपःसंपातःतद्युतंहुत्वासंपाताज्यंस्त्रियैदद्यात् ॥ किंभूतायै ॥ विश्राणिताश्रियै दत्तदक्षिणायै ॥ दक्षिणामादावादायपश्चादाज्यंदद्यादित्यर्थः ॥ अन्यथाफलाभावात् ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ कामेशीमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ मन्मथः क्लीं ॥ वाग्बीजंऐं ॥ ब्लूँ स्त्रींस्वरूपम् ॥ १०८ ॥ ध्यानमाह ॥ पाशाङ्कु

गव्याज्येनससंपातंहुत्वासाष्टशतंनरः॥आज्यंसंपातितंदद्यात्स्त्रियैविश्राणितश्रियै।१०६।सातदाज्यंनिजंकांतंभोजयित्वावशंनयेत् ॥ सुगंधकुसुमैर्हुत्वाधनमाप्नोतिवांछितम् ॥७॥ मायामन्मथवाग्बीजेब्लूंस्त्रींपञ्चाक्षरोमनुः॥ऋषिश्छंदश्चपूर्वोक्तेकामेशीदेवतास्मृता॥८॥पाशांकुशाविक्षुशरासबाणौकरैर्वहंतीमरुणांशुकाढ्याम्॥उद्यत्पतंगाभिरुचिमनोज्ञांकामेश्वरींरत्नचितांप्रणौमि ॥९॥ भूतलक्षंजपित्वैनामर्धलक्षंपलाशजैः॥ कुसुमैर्जुहुयात्पीठेपूर्वोक्तेपूजयेदिमाम्।११०।आदावंगानिसंपूज्यदिक्षुमध्येमनोभवम् ॥ मकरध्वजकन्दर्पौमन्मथंकामदेवकम्॥१११॥ततोह्यनंगरूपाद्याइंद्राद्यस्त्राणितद्बहिः॥एवंसिद्धमनुर्मंत्रीपूर्वोक्तंयोगमाचरेत्।११२।इतिमंत्रमहोदधौयक्षिण्यादिमंत्रकथनंनामसप्तमस्तरङ्गः ॥७॥

शेति ॥ पाशेक्षुचापोवामयोः ॥ उद्यन्यःसहस्रांशुरादित्यस्तत्समकांतिरत्नैश्चितांव्याप्तांप्रणौमिप्रकर्षेण स्तौमि ॥ ॥ १०९ ॥ भूतलक्षंपंचलक्षम् ॥ ११० ॥ कामदेवंमध्ये ॥ १११ ॥ योगं प्रयोगम् ॥ ११२ ॥ इतिमन्त्रमहोदधिव्याख्यायां नौकायां यक्षिण्यादिकथनंनाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

---

१ ह्रींक्लींऐंब्लूंस्त्रीं । इतिपंचार्णः । अस्यकामेशीमंत्रस्यसंमोहनऋषिःगायत्रीछंदःकामेशीदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ १ ॥ बालामंत्रमाह ॥ दामोदरइति ॥ दामोदरऐ ॥ चंद्रयुतोबिंदुयुतःऐं ॥ वागितिसंज्ञास्य ॥ विधिःकः॥वासवशांतींदुयुतः ॥ लईबिंदुयुतःक्लीं ॥ भृगुः सः ॥ संकर्षणऔ ॥ तेनाविसर्गेणचयुतःसौः ॥ २ ॥ ३ ॥ मध्यांतेमध्यं

अथबालांप्रवक्ष्यामिमंत्रीसंसेव्ययांद्रुतम्॥बृहस्पतिःकुबेरश्चजायतेविद्ययाधनैः॥१॥दामोदरश्चंद्रयुत
आद्यंवाग्बीजमीरितम्॥विधिर्वासवशांतींदुयुक्तंकामाभिधंपरम्॥२॥संकर्षणविसर्गाढ्योभृगुस्तातीं
यमीरितम्॥त्रिबीजीगदिताबा[1]लाजगत्रितयमोहिनी।३।दक्षिणामूर्तिपंक्तीचमु[2]निश्छंदःक्रमात्स्मृतम्
देवतात्रिपुराबालामध्यांतेशक्तिबीजके ॥ ४ ॥ नाभेरापादमाद्यंतुनाभ्यंतंहृदयात्परम् ॥ मूर्ध्निहृदं
तंतातींयंक्रमाद्देहेप्रविन्यसेत्॥५॥आद्यंवामकरेदक्षकरेन्यदुभयोःपरम्॥पुनर्बीजत्रयंन्यस्येन्मूर्ध्निगुह्ये
चवक्षसि।६।नवयोन्यभिधन्यासेनवकृत्वोमनुंन्यसेत्॥कर्णयोश्चिबुकेन्यस्येच्छंखयोर्मुखपंकजे।७।

शक्तिः अंते बीजम् ॥४॥ नाभेः पादांतमाद्यंबीजंन्यस्येत् ॥ एवमग्रेपि ॥ ५ ॥ दक्षकरेऽन्यद्द्वितीयम् ॥ परंतृतीयंतूभयोः करयोर्न्यस्येत् ॥ ६ ॥ कर्णौचिबुकमित्याद्यवयवानांत्रिकोणाकारत्वाद्योनिन्यासोयम् ॥ ७ ॥

---

[1] ऐंक्लींसौःइतित्रिवर्णः। [2] अस्यबालामंत्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिःपंक्तिश्छंदःत्रिपुराबालादेवतामध्येक्लींशक्तिःअंतेसौःबीजंममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

॥ ८ ॥ ९ ॥ वागिति ॥ ऐं रत्यैनमोगुह्ये ॥ अंत्यादिकां॥सौः प्रीत्यैनमोहृदि ॥ क्लींमनोभवायैनमोभ्रमध्ये॥१०॥ पुनर्वाक् ॥ अंत्यकामाद्याअमृतेशीयोगेशीविश्वयोनीःएष्वेवगुह्यहृद्भ्रूमध्येपुन्यसेत् ॥ ऐंअमृतेश्यैनमइत्यादि ॥

नेत्रयोर्नासिकायांचस्कंधयोरुदरेतथा॥न्यसेत्कूर्परयोर्नाभौजानुनोर्लिंगमस्तके॥८॥पादयोरपिगुह्ये चपार्श्वयोर्हृदयेपुनः ॥ स्तनयोःकंठदेशेचवामांगादिप्रविन्यसेत्॥९॥वाग्भवाद्यारतिंगुह्येप्रीतिमंत्यादिकांहृदि ॥ कामबीजादिकांन्यस्येद्भ्रूमध्येतुमनोभवा ॥ १० ॥ पुनर्वागंत्यकामाद्यास्तिस्रएष्वेव विन्यसेत्॥अमृतेशींचयोगेशींविश्वयोनिंतृतीयकाम् ॥११॥मूर्ध्निवक्रेहृदिन्यस्येद्गुह्येचरणयोरपि॥ कामेशीपंचबीजाद्यान्स्मरान्मनोभवादिकान् ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥ मूर्ध्नीति ॥ कामेशीपञ्चबीजानि ह्रींक्लींऐंब्लूँस्त्रीमित्युक्तानि॥ तदाद्यान्मनोभवादिकान् ॥ मनोभवमकरध्वजकन्दर्पमन्मथकामदेवाख्यान्स्मरान्शिरोमुखहृद्गुह्यपत्सुन्यसेत् ॥ ह्रींमनोभवायनमइत्यादि ॥ १२ ॥

---

१ ह्रींमनोभवायनमःशिरासि । ह्रींमकरध्वजायनमःमुखे । ऐंकंदर्पायनमःहृदि । ब्लूंमन्मथायनमःगुह्ये । स्त्रींकामदेवायनमःचरणयोः ।

शिरइति ॥ बाणेशीबीजानि॥ द्रांद्रींक्लींब्लूंसइति ॥ तत्पूर्वाद्राविण्याद्या द्राविणीक्षोभणीवशीकरण्याकर्षणीसंमोहनीसंज्ञाःबाणदेवताःशिरःपादमुखगुह्यहृत्सुन्यसेत् ॥ द्रांद्राविण्यैनमःशिरसीत्यादि ॥ १३ ॥ षडंगमाह ॥ तार्ती

शिरःपन्मुखगुह्येषुहृदयेपंचदेवताः ॥ द्राविण्याद्याःक्रमान्न्यस्येद्बाणेशीबीजपूर्विकाः ॥१३॥ तार्तीयवाग्मध्यगेनकामेनस्यात्षडंगकम् ॥ षड्दीर्घस्वरयुक्तेनततोदेवींविचिंतयेत् ॥ १४ ॥ रक्तांबरांचंद्रकलावतंसांसमुद्यदादित्यनिभांत्रिनेत्राम् ॥ विद्याक्षमालाभयदामहस्तांध्यायामिबालामरुणांबुजस्थाम् ॥ १५ ॥ लक्षत्रयंजपेन्मंत्रंदशांशंकिंशुकोद्भवैः ॥ पुष्पैर्हयारिजैर्वापिजुहुयान्मधुरान्वितैः ॥ ॥ १६ ॥ नवयोन्यात्मकंयंत्रंबहिरष्टदलावृतम् ॥ भूगृहेणपुनर्वीतंपूजनायलिखेत्सुधीः ॥ १७ ॥ मध्ययोनौतुतार्तीयमष्टयोनिषुमन्मथम् ॥ केसरेषुस्वरान्न्यस्येद्वर्गानष्टौदलेष्वपि ॥१८॥ दलाग्रेषुत्रिशूलानिपद्मंमातृकयावृतम् ॥ एवंविलिखितेयंत्रेपीठशक्तीःप्रपूजयेत् ॥ १९ ॥ इच्छाज्ञानक्रियाचैव कामिनी कामदायिनी ॥ रतीरतिप्रियानंदामनोन्मन्यपिचांतिमा ॥ २० ॥

येति ॥ तार्तीयंसौः ⁄ वाक्ऐ ॥ तन्मध्यगतेनदीर्घाढ्येनकामेनषडंगम् ॥ सौः क्लांऐंहृत्॥सौःक्लींऐंशिरः ॥ सौःक्लूंऐंशिखेत्यादि ॥ १४ ॥ ध्यानमाह ॥ रक्तेति ॥ विद्याभयेवामयोः ॥ अन्ययोरन्ये ॥ १५ ॥ १६ ॥ पूजायंत्रमाह॥ नवेति ॥ स्पष्टम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

पीठमंत्रमाह ॥ व्योमह: तत्पूर्वंतृतीयं ॥ हूसौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनायनमइति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अंगपूजा
माह ॥ योनीति ॥ मध्येयोनिमध्येएवाग्निनिर्ऋतिवाय्वीशानेषुहृच्छिरःशिखावर्माणिसंपूज्याग्नेयादित्रिदिक्ष्वस्त्रं

पीठशक्तीरिमाइष्ट्वापीठंतमनुनादिशेत् ॥ व्योमपूर्वंतुतार्तीयंसदाशिवमहापदम् ॥२१॥ प्रेतपद्मासनं
ङेंतंनमोंतःपीठमंत्रकः ॥ षोडशार्णस्ततोमूर्त्तौक्लृप्तायांमूलमंत्रतः ॥ २२ ॥ आवाह्यपूजयेद्देवीमुपचा
रैःपृथग्विधैः ॥ देवीमिष्ट्वामध्ययोनौत्रिकोणेरतिपर्विकाः ॥ २३॥ वामकोणेरतिंदक्षेप्रीतिमग्रेमनोभ
वाम् ॥ योन्यंतर्वह्निकोणादावंगानिपरिपूजयेत् ॥२४॥ मध्ययोनेर्बहिःपूर्वादिक्षुचाग्रेस्मरानपि ॥
बाणदेवीस्तद्वदेवशक्तीरष्टसुयोनिषु ॥ २५ ॥ सुभगाख्याभगापश्चात्तृतीयाभगसर्पिणी ॥ भगमाली
तथानंगानंगाद्याकुसुमापरा॥२६॥अनंगमेखलानंगमदनेत्यष्टशक्तयः ॥ पद्मकेसरगाब्राह्मीमुखाःपत्रे
षुभैरवाः॥२७॥दीर्घाद्यामातरःपूज्याह्रस्वाद्याश्चाष्टभैरवाः॥ दलाग्रेष्वष्टपीठानिकामरूपाख्यमादिम
म् ॥२८॥मलयंकोल्लगिर्य्याख्यंचौहाराख्यंकुलांतकम् ॥जालंधरंतथोड्यानंकोट्टपीठमथाष्टमम्॥२९

यजेत् ॥ २४ ॥ मध्ययोनेर्बहिर्भागेदिक्षुचतुरःपंचममग्रेएवंकामान्यजेत् ॥ बाणदेवीद्राविण्याद्यास्तद्वत्कामवत् ॥
दिक्ष्वग्रेचशक्तीःसुभगाद्यादीर्घाद्यामातरःआंब्राह्म्यैनमइत्यादि ॥ ह्रस्वाद्याभैरवाःअंअसितांगायनमइत्यादि ॥
॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

दशदिक्षुहैतुकादयोगणाः॥३०॥शक्राद्यान्स्वस्वदिक्ष्वित्युक्तेःपूर्वावरणानिकल्पितदिक्ष्वेव ॥ एवंसर्वत्र ॥ ३१ ॥ वि

भूगृहेदशदिक्ष्वर्चेद्धैतुकंत्रिपुरांतकम् ॥ वेतालमग्निजिह्वंचकालांतककपालिनौ ॥ ३० ॥ एकपादंभीमरूपंमलयंहाटकेश्वरम् ॥ शक्राद्यानायुधैःसार्द्धंस्वस्वदिक्षुसमर्चयेत् ॥ ३१ ॥ तद्बहिर्दिक्षुबटुकंयोगिनीक्षेत्रपालकम् ॥ गणेशंविदिशास्वर्चेद्वसून्सूर्य्याञ्छिवांस्ततः ॥ ३२ ॥ भूतांश्चेत्थंभजेद्बालानीशःस्याद्धनविद्ययोः ॥रक्तांभोजैर्हुतेनार्योवश्याःस्युःसर्षपैर्नृपाः ॥ ३३ ॥ नंद्यावर्तैराजवृक्षैःकुंदैःपाटलचंपकैः ॥ पुष्पैर्बिल्वफलैर्वापिहोमाल्लक्ष्मीःस्थिराभवेत् ॥३४॥ अपमृत्युंजयेन्मंत्रीगुडूच्या दुग्धयुक्तया ॥ पयोक्तदूर्वाहोमात्तुनीरोगायुःसमश्नुते ॥३५॥ ज्ञानंकवित्वंलभतेचंद्रागुरुपुरैर्हुतैः ॥द्विजेन्द्रावश्यतांयांतिकुसुमैरपराजितैः ॥३६॥ कह्लारैःक्षत्रियाःकर्णिकारजैःक्षितिपांगनाः ॥ कोरंटकुसुमैर्वैश्याःपादजाःपाटलैर्हुतैः ॥ ३७ ॥

दिशासु ॥ अग्न्यादिषु वस्वादयः ॥ वसुभ्योनमइत्यादि ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ नंद्यावर्तस्तगरः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ चंद्रःकंपूरः ॥ पुरंगुग्गुलु ॥ अपराजितायोन्याकारपुष्पवल्लीतदीयान्यपराजितानितैः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

सारघंमधु ॥ ३८ ॥ तिलकमाह ॥ रक्तेति ॥ मांसीजटामांसी ॥ ३९ ॥ भागानाह ॥ भूमिरेकः ॥ नंदानव ॥
अब्धयश्चत्वारः ॥ दिशोदश ॥ निगमाश्चत्वारः ॥ रक्तचंदनमेकभागमित्यादि ॥ एतान्येकीकृत्यकृष्णचतुर्दशी

पालाशपुष्पैर्वाक्विसद्भिरन्नाप्तिभर्क्तहोमतः ॥ सारघक्षीरदध्यक्ताँल्लाजान्हुत्वारुजोजयेत् ॥ ३८ ॥
रक्तचंदनकर्पूरकचूरागुरुरोचनाः॥चंदनंकेसरंमांसीक्रमाद्भागैर्नियोजयेत् ॥ ३९ ॥भूमिचन्द्रैकनंदा
ब्धिदिक्संप्तनिगमोन्मितैः॥श्मशानेकृष्णभूतस्यनिशिनीहारपाथसा ॥ ४० ॥ कुमार्य्यापेषयेत्ता
निमंत्रणाप्यभिमंत्रयेत्॥विदध्यात्तिलकंतेनदर्शनाद्वशयेज्जनान् ॥ ४१॥ गजसिंहादिभूतानिराक्षसा
न्डाकिनीरपि ॥ प्रयोगेष्वेषुकथ्यंतेक्रमाद्ध्यानानिसिद्धये ॥ ४२ ॥ मातुलिंगपयोजन्महस्तांकन
कसन्निभाम् ॥ पद्मासनगतांबालांलक्ष्मीप्राप्तौविचिंतयेत् ॥ ४३ ॥ वरपीयूषकलशपुस्तकाभीतिधा
रिणीम् ॥ सुधांस्रवंतींज्ञानाप्तौब्रह्मरंध्रेविचिंतयेत् ॥४४॥ शुक्लांबरांशशांकाभांरोगनाशेस्मरेच्छिवा
म् ॥ अकारादिक्षकारांतवर्णावयवरूपिणीम् ॥ ४५ ॥

रात्रौ कुमार्यासंपेष्यमूलेनाभिमंत्र्यतिलकंकुर्यात् ॥ वशयेदितिशाकिन्यंतानित्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ध्यानभे
दानाह ॥ मातुलिंगेति ॥ मातुलिंगंबीजपूरंतदक्षे ॥ ४३ ॥ रोगनाशध्याने ॥ वरामृतकुंभौदक्षयोः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

वशीकरणध्याने ॥ पाशोदक्षे ॥ ४६ ॥ बीजानामिति ॥ त्रयाणामित्यर्थः ॥४७॥ वाग्बीजध्यानमाह ॥ विद्येति ॥

सृणिपाशधरांदेवींरत्नालंकारभूषिताम् ॥ प्रसन्नामरुणांध्यायेद्वशीकरणसिद्धये ॥४६ ॥ अथप्रत्येक
मंत्रस्यजपध्यानविधिंब्रुवे ॥ शापोद्धारप्रकारंचबीजानांदीपिनीरपि ॥ ४७ ॥ विद्याक्षमालासुकपाल
मुद्राराजत्करांकुंदसमानकांतिम् ॥ मुक्ताफलालंकृतिशोभितांगींबालांस्मरेद्वाङ्मयसिद्धिहेतोः ॥४८॥
ध्यात्वैवंवाग्भवंलक्षत्रयंशुक्लांबरावृतः ॥ शुक्लचंदनलिप्तांगोमौक्तिकाभरणान्वितः ॥ ४९ ॥ जपित्वा
तद्दशांशेनपालाशकुसुमैर्नवैः ॥ जुहुयान्मधुराक्तैर्यःसकविर्युवतिप्रियः ॥ ५० ॥ भजेत्कल्पवृक्षाधउ
द्दीप्तरत्नासनेसन्निषण्णांमदाघूर्णिताक्षीम् ॥ करैर्बीजपूरंकपालेषुचापंसपाशांकुशांरक्तवर्णंदधानाम्
॥ ५१ ॥ ध्यात्वादेवींजपेल्लक्षत्रयंयोमध्यबीजकम् ॥ रक्तवस्त्रावृतोरक्तभूषणोरक्तलेपनः ॥ ५२ ॥
दशांशंमालतीपुष्पैश्चंद्रचंदनलोलितैः ॥ जुहुयात्तस्यवश्याः स्युस्त्रिलोकीजनताःक्षणात् ॥ ५३ ॥

अक्षमालाज्ञानमुद्रेदक्षयोः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ कामबीजध्यानमाह ॥ कल्पेति ॥ बीजपूरबाणांकुशादक्षेषु ॥
कपालचापपाशावामेषु ॥ निषण्णांस्थिताम् ॥ षड्ढस्तेयम् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

तृतीयबीजध्यानमाह ॥ व्याख्यानेति ॥ व्याख्यानमुद्राक्षस्रजौदक्षयोः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ शापोद्धारप्रकारमाह ॥ योजयेदिति ॥ आद्येएतान् योजयेत् ॥ वाराहोहः ॥ भृगुःसः ॥ पावकोरः ॥ तेनह्स्रौं द्वितीय

व्याख्यानमुद्रामृतकुंभविद्यामक्षस्रजंसंदधतींकराग्रैः ॥ चिद्रूपिणींशारदचंद्रकांतिंबालांस्मरेन्मौक्तिक
भूषिताङ्गीम् ॥ ५४ ॥ ध्यात्वैवंचरमंबीजंजपेल्लक्षत्रयंसुधीः ॥ सितवस्त्रानुलेपाढ्यमात्मानंदेवतांस्म
रेत् ॥ ५५ ॥ मालतीकुसुमैर्हुत्वाचंदनाक्तैर्दशांशतः ॥ लक्ष्मींविद्यासुकीर्तींनामाधारोजायतेचिरात्
॥५६॥ देव्याशप्ताकीलिताचविद्येयंतन्नसिद्धिदा ॥ शापोद्धारमथोत्कीलंविधायजपमाचरेत् ॥५७॥
योजयेदादिबीजेनवराहभृगुपावकान् ॥ मध्यमादौनभोहंसौमध्यमांतेनपावकम् ॥५८॥ आदावंते
चतातीयैकमात्खंधूमकेतनम् ॥ एवंजप्ताशतंविद्याशापहीनाफलप्रदा ॥ ५९ ॥ यद्वाद्येचरमेबीजेनैव
रेफंनियोजयेत् ॥ शापोद्धारप्रकारोन्योयद्वायंकीर्तितोबुधैः ॥ ६० ॥

स्यादौ नभोहंसौहसौ ॥ अंतेरेफः ॥ तेनहसकलरीमितिकूटम् ( ? ) ॥ तृतीयस्यादौ ॥ खंहः ॥ अंतेधूमकेतनो रेफः ( ? ) ॥ तेनह्रसौः ॥ एवंभैरवीजाता ॥ अस्यांशतंजप्तायांबालाशापहीनास्यात् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ यद्वात्रैवाद्येंत्येचबीजेरेफयोगाभावः ॥ तेनह्सौः ॥ मध्यमंतदेव ॥ ६० ॥

शापोद्धारेप्रकारांतरम् ॥ नवार्णजपमाह ॥ आद्यमिति ॥ ऐंऐंसौः क्लीं क्लीं ऐंसौःसौःक्लीं एवं[1]नवार्णः ॥ शतंजप्तः शापनिवर्तकः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ चेतनीमंत्रमाह ॥ त्रीति ॥ अधरऐं ॥ शांतिरी ॥ अनुग्रहऔं ॥ एतेत्रयः स्वराः केवलाश्चेतनीमंत्रः ॥ शतंजप्तोबालांनिष्कीलांकरोति ॥ आह्लादिनीमंत्रमाह ॥ तारादीति ॥ ॐ क्लींनमइति ॥

आद्यमाद्यंचतार्तीयंकामःकामोथवाग्भवम् ॥ अंत्यमंत्यमनंगंचनवार्णःकीर्तितोमनुः ॥६१॥ जप्तोयंशतधाशापंबालायाविनिवर्तयेत् ॥ चेतन्याह्लादिनीमंत्रौजप्तौनिष्कीलताकरौ ॥६२॥ त्रिस्वराश्चेतनीमंत्रोधरःशांतिरनुग्रहः ॥ तारादिहृदयांतःस्यात्कामआह्लादिनीमनुः ॥६३॥ तथात्रयाणांबीजानांदीपनैर्मनुभिस्त्रिभिः ॥सुदीप्तानिविधायादौजपेत्तानीष्टसिद्धये ॥ ६४ ॥ वदयुग्मंसदीर्घांबुस्मृतिबालावनंतगौ ॥ सत्यःसनेत्रोनस्तादृग्वाङ्नवार्णाद्यदीपिनी ॥ ६५ ॥

अयमप्युत्कीलनकरः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ वाग्बीजस्यदीपिनीविद्यामाह ॥ वदे[2]ति ॥ सदीर्घांबुवा ॥ अनंतगौस्मृति बालौ आस्थितौगवौ ॥ तेनग्वा ॥ सनेत्रः सत्यो दि ॥ तादृग्नःनिः ॥ वाक् ऐं ॥ इयमाद्यस्यबीजस्यदीपिनी प्रकाशकर्त्री ॥ ६५ ॥

---

१ ऐंऐंसौःक्लींक्लींऐंसौःसौःक्लीं इति नवार्णः । २ वदवदवाग्वादिनिऐं ।

कामबीजस्यदीपिनीमाह ॥ क्लिन्नेइति ॥ स्वरूपम् ॥ वैकुंठोमः ॥ दीर्घखंह्वाः अंतिमः क्षः सद्यगः ओगतःक्षो सचंद्रानिद्राभं ॥ कुरुस्वरूपं ॥ शिवार्णाएकादशवर्णा ॥ मध्यबीजस्यदीपिनी ॥ ६६ ॥ तारइति ॥ तारःप्रणवः ॥

क्लिन्नेक्लेदिनिवैकुण्ठोदीर्घखंसद्यगोंतिमः ॥ निद्रासचन्द्राकुर्वंताशिवार्णामध्यदीपिनी ॥६६॥ तारो मोक्षंचकुर्वंतापंचार्णांत्यस्यदीपिनी ॥ दीपिनीमंतराबालाराधितापिनसिध्यति ॥६७॥ इदंरहस्यं नाख्येयंकृतघ्नेकितवेशठे ॥ परीक्षितायदातव्यमन्यथादातृदोषदम् ॥६८॥ वागंत्यकामान्प्रजपेदरीणांक्षोभहेतवे ॥ कामवागंत्यबीजानित्रैलोक्यस्यवशीकृतौ ॥६९ ॥ कामांत्यवाणीबीजानिमुक्तये नियतोजपेत् ॥ पूजाविधौतुबालायास्त्रिविधानर्चयेद्गुरून् ॥ ७० ॥

मोक्षंकुर्विंतिस्वरूपम् ॥ अंत्यस्यबीजस्यदीपिनी ॥ उक्तांदीपिनीम् अंतराविना आराधितापिबालानसिद्ध्यति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ जपभेदान्काममभेदेनाह ॥ वागिति ॥ ऐंसौंक्लींमित्यरिनाशाय ॥ क्लींऐंसौरितिवशीकरणे ॥ ॥ ६९ ॥ क्लींसौः ऐमितिमुक्त्यै ॥ ७० ॥

---

१ क्लिन्नेक्लेदिनिमहाक्षोभंकुरु । २ ॐ मोक्षंकुरु ।

दिव्यौघानाह ॥ परप्रकाशइति ॥ आनंदपदपश्चिमाइतिवक्ष्यमाणत्वात्परप्रकाशानंदायनमइत्यादिप्रयोगः ॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥ सिद्धौघानाह ॥ ईशानाख्यइति ॥ ७३ ॥ यंत्रमाह ॥ नवेति ॥ गायत्र्यास्त्रिपुरागायत्र्यावक्ष्यमाणा

दिव्यौघश्चेतिसिद्धौघोमानवौघइतित्रिधा ॥ परमप्रकाशःपरमेशानःपरशिवस्तथा ॥७१॥ कामेश्वर
स्ततोमोक्षःषष्ठःकामोमृतोंतिमः ॥ एतेसप्तैवदिव्यौघाआनंदपदपश्चिमाः ॥ ७२॥ ईशानाख्यस्तत्पु
रुषोघोराख्योवामदेवकः ॥ सद्योजातइमेपंचसिद्धौघाख्याःस्मृताबुधैः ॥ ७३॥ मानवौघःप्रविज्ञे
यःस्वगुरोःसंप्रदायतः ॥ नवयोन्यात्मकेयंत्रेविलिखेन्मध्ययोनितः ॥ ७४ ॥ प्रादक्षिण्येनबीजानि
त्रिवारंसाधकोत्तमः ॥ त्रींस्त्रींन्वर्णांस्तुगायत्र्याअष्टपत्रेषुसंलिखेत् ॥७५॥ बहिर्मातृकयावेष्टयतद्बहि
र्भूपुरद्वयम् ॥ कामबीजलसत्कोणंव्यतिभिन्नंपरस्परम् ॥ ७६॥ यन्त्रंत्रैपुरमाख्यातंजप्तंसंपातसाधि
तम् ॥ बाहुनाविधृतंदद्याद्धनंकीर्तिःसुखंसुतान् ॥ ७७ ॥

यावर्णत्रयंप्रतियंत्रंलिखेत् ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ भूपुरद्वयंचतुष्कोणद्वयम् ॥ कीदृशंपरस्परंव्यतिभिन्नम् एकंविदिग्गतको
णम् अपरंदिग्गतकोणमित्यर्थः ॥ ७६ ॥ संपातसाधितम् आहुतिशेषघृतेनसंयोजितम् ॥ ७७ ॥

गायत्रीमुद्धराति ॥ कामान्तइति ॥ कामःक्लीं ॥ भगिएयुतंविषमःमे ॥ बकःशः खङ्गीशं वकारमारूढः श्वः ॥ सनेत्रःअग्निःरि ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ बालाभेदप्रथमंमंत्रांतरमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ कामःक्लीं तार्ती

कामांतेत्रिपुरा[1]देविविद्महेकाविषंभगि ॥ बकःखङ्गीशमारूढःसनेत्रोग्निश्चधीमहि ॥७८॥ तन्नःक्लिन्ने
प्रचोदांतेयादंताकीर्तिताबुधैः ॥ गायत्रींत्रैपुरीसर्वसिद्धिदासुरसेविता ॥७९॥ अथवक्ष्यामिबालाया
भेदानागमगोपितान् ॥ मायाकामोंबरारूढंतार्तीयंत्र्यक्षरो[2]मनुः ॥ ८० ॥ अनुलोमप्रतिलोमाभ्यां
बालमन्त्रःषडक्षरः ॥ बालाश्रीकामहृल्लेखासंपुटोयंनवाक्षरः[3] ॥ ८१ ॥

यंसौः अंबरारूढंहयुतं हसौः प्रथमः ॥ ८० ॥ मंत्रांतरमाह ॥ अनुलोमेति ॥ ऐंक्लींसौःसौःक्लींऐंद्वितीयः ॥ मंत्रांतरमाह ॥ बालेति ॥ श्रींक्लींह्रींऐंक्लींसौःह्रींक्लींश्रीमितितृतीयः ॥ ८१ ॥

---

[1] क्लींत्रिपुरादेविविद्महेकामेश्वरिधीमहि । तन्नःक्लिन्नेप्रचोदयात् ।[2] ह्रींक्लींह्सौः इतित्र्यक्षरः । [3] श्रींक्लींह्रींऐंक्लींसौःह्रींक्लींश्रीं ।

मन्त्रांतरमाह ॥ बालेति ॥ ऐंक्लींसौः बालात्रिपुरेस्वाहेतिचतुर्थः ॥ पञ्चममाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ कामःक्लीं व्योमभृग्विंदुयुङ्मनुःहसबिंदुयुतऔं ह्सौं दीर्घभूधरः बा ॥ पिनाकीला ॥ ८२ ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ षष्ठमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ लक्ष्मीःश्रीं ॥ मनोजन्माक्लीं ॥ ठद्वयंस्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ सप्तममाह ॥ कमलेति ॥

बालांतेबालत्रिपुरेस्वाहांतोदशवर्णवान्[1]॥वाक्कामोव्योमभृग्विन्दुयुङ्मनुर्दीर्घभूधरः ॥८२॥ पिनाकी
त्रिपुरेसिद्धिंदेहिह्न्मनुर्[2]वर्णवान् ॥ मायालक्ष्मीर्मनोजन्मात्रिपुरांतेतुभारती॥८३॥कवित्वंदेहिठद्वंद्वं
षोडशार्णोमनुः[3]स्मृतः ॥ कमलापार्वतीकामस्त्रिपुरांतेचमालती ॥८४॥ मह्यंसुखंततोदेहिस्वाहासप्त
दशाक्षरः ॥ भृगुब्रह्मक्रियावह्नियुक्ताशांतिस्सरात्रिपा ॥८५॥ दहनांत्यमहाकालभुजंगपुरुषोत्तमाः॥
मन्वर्घीशेंदुसंयुक्ताद्वितीयंबीजमीरितम् ॥ ८६ ॥

कमला श्रीं ॥ पार्वतीह्रीं ॥ कामःक्लीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ अष्टममाह॥भृग्विति ॥ भृगुःसः ॥ ब्रह्माकः ॥ क्रियालः ॥ वह्नीरः ॥ एतैर्युक्ताशांतिरीकारः सरात्रिपा सबिंदुः स्क्लरीं ॥ ८५ ॥ दहनोरः ॥ अंत्यःक्षः ॥ महाकालोमः॥ भुजंगोरः ॥ पुरुषोत्तमोयः॥ एतेमन्वर्घीशेंदुसंयुक्ताऔं बिंदुयुताः ॥ तेनक्ष्म्र्यौं ॥ ८६॥

---

[1] ऐंक्लींसौःबालात्रिपुरेस्वाहा । [2] ऐंक्लींह्सौंबालात्रिपुरेसिद्धिंदेहिनमइतिचतुर्दशार्णः । [3] ह्रींश्रींक्लींत्रिपुराभारतीकवित्वंदेहिस्वाहेतिषोडशार्णः ।

वाग्बीजंऐं ॥ हृत्नमः ॥ स्वरुपंशेषम् ॥ वह्निप्रियास्वाहा ॥ ८७ ॥ नवममाह ॥ हृल्लेखेति ॥ हृल्लेखात्रितयंह्रीं ३ ॥ अनंतआ स्वरूपमपरम् ॥ ८८ ॥ दशममाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ मन्मथःक्लीं ॥ स्वरुपं शेषम् ॥

वाग्बीजंत्रिपुरेसर्ववांछितंदेहिहृत्ततः ॥ वह्निप्रियासप्तदशवर्णोयंकीर्तितोमनुः ॥ ८७ ॥ हृल्लेखात्रित
यंप्रौढत्रिपुरेनंतारोग्यमै ॥ श्वर्यंदेहिप्रियावह्नेर्मनुरष्टादशाक्षरः ॥८८॥ मायारमामन्मथांते त्रिपुराम
दनेपदम् ॥ सर्वंशुभंसाधयाग्नेःप्रियान्तोष्टादशाक्षरः ॥८९॥ हृल्लेखाकमलानंगोबालांतेत्रिपुरेपदम्॥
मदायत्तांततोविद्याकुरुहृद्वह्निवल्लभा ॥ ९० ॥ मंत्रोविंशतिवर्णोयंमायापद्मामनोभवः ॥ परापरेंतेत्रि
पुरेसर्वमीप्सितमुच्यताम् ॥ ९१ ॥

॥ ८९ ॥ एकादशमाह ॥ हृल्लेखेति हृल्लेखाह्रीं ॥ कमलाश्रीं ॥ अनंगःक्लीं हृत्नमः ॥ वह्निवल्लभा स्वाहा ॥ शेषं स्वरूपम् ॥ ९० ॥ द्वादशमाह ॥ मायेति ॥ माया ह्रीं ॥ पद्माश्रीं ॥ मनोभवःक्लीं ॥ ९१ ॥

---

[१] स्क्लींक्ष्म्यौंऐंत्रिपुरेसर्ववांछितंदेहिनमःस्वाहेतिसप्तदशार्णः । [२] ह्रींह्रींह्रींप्रौढत्रिपुरेआरोग्यमैश्वर्यंदेहिस्वाहेत्यष्टादशार्णः । [३] ह्रींश्रींक्लीं त्रिपुरामदनेसर्वशुभंसाधयस्वाहेत्यष्टादशाक्षरः । [४] ह्रींश्रींक्लींबालत्रिपुरेमदायत्तांविद्यांकुरुनमःस्वाहेतिविंशत्यर्णः ।

साधयानलकांतायमन्योविंशतिवर्णकः ॥ कामद्वंद्वंरमायुग्मंमायायुक्तित्रिपुरापदम् ॥ ९२ ॥ ललितें तेमदीप्सीतितामंतेयोषितंपदम् ॥ देहिवांछितमित्युक्त्वाकुरुज्वलनकामिनी ॥९३॥ अष्टाविंशति वर्णोयंमनुरिष्टप्रियाप्रदः ॥ कामपद्माद्रिपुत्रीणांप्रत्येकंत्रितयंवदेत् ॥ ९४ ॥ त्रिपुरांतेसुंदरीतिसर्वजगदिनद्वयम् ॥ वशंकुरुद्वयंमह्यंबलंदेह्यनलांगता ॥ ९५ ॥ सर्वाभीष्टप्रदोमंत्रउक्तोबाणगुणाक्षरः॥ चतुर्दशानामेतेषांमनूनामृषिरीरितः ॥९६॥ दक्षिणामूर्तिसंज्ञस्तुच्छंदोगायत्रमुच्यते ॥ त्रिपुरादेवता बालाषडंगंमातृकासमम् ॥ ९७ ॥

**अनलकांतास्वाहा ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ त्रयोदशमाह ॥कामेति ॥ कामद्वंद्वंक्लीं २ रमायुग्मंश्रीं २ ॥ मायायुक्ह्रीं ॥ त्रिपुराललितेमदीप्सितांयोषितंदेहिवांछितंकुरु इति स्वरूपम् ॥ ज्वलनकामिनीस्वाहा ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ चतुर्दशमाह ॥ कामेति ॥ कापपद्माद्रिपुत्रीणांप्रत्येकंत्रयं क्ला ३ श्रीं ३ ह्रीं ३॥९४॥इनद्वयंमद्वयंमम ॥अनलांगनास्वाहा ॥ स्वरूपमपरम् ॥ ९५ ॥ एतेचतुर्दशबालाभेदाः ॥तेषाम् ॥ ९६ ॥ ऋष्याद्याह ॥ दक्षिणेति ॥ ९७ ॥**

---

ह्रींश्रींक्लींपरापरेत्रिपुरेसर्वमीप्सितंसाधयस्वाहेतिविंशत्यर्णः । २ क्लीं क्लींश्रींश्रींह्रींत्रिपुराललितेमदीप्सितांयोषितंदेहिवांछितंकुरुस्वाहेत्यष्टाविंशत्यर्णः । ३ क्लीं क्लींक्लींश्रींश्रींह्रींह्रींह्रींत्रिपुरसुंदरिसर्वजगन्ममवशंकुरुकुरुमह्यंबलंदेहिस्वाहेतिपंचत्रिंशदर्णः। ४ अस्यबालामंत्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्रीछंदः त्रिपुराबालादेवता ममाभीष्टसिद्धयर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥पाशेति ॥ अंकुशाक्षसूत्रेदक्षयोः ॥ ९८ ॥ हयारिःकरवीरः ॥ सायकैःपंचबाणदेवताभिः ॥ ९९ ॥ दिगधीशास्त्रैरिति । दिशामीशैस्तदस्त्रैश्चेत्यर्थः ॥ १०० ॥ बालामुक्त्वालघुश्यामामाह ॥ वाग्बीजमिति वाग्बीजंऐं॥

पाशांकुशौपुस्तकमक्षसूत्रंकरैर्दधानासकलामरार्च्या ॥ रक्तात्रिनेत्राशशिशेखरेयंध्येयाखिलर्द्ध्यैत्रिपुरात्रबाला ॥ ९८ ॥ जपेल्लक्षंदशांशेनहोमःपुष्पैर्हयारिजैः॥ पूजापूर्वोदितेपीठेंगैरत्याद्यैश्चसायकैः॥ ॥ ९९ ॥ मातृभिर्दिगधीशास्त्रैःप्रयोगाः पूर्ववन्मताः॥लघुश्यामामथोवक्ष्येस्मरणादिष्टदायिनीम्॥ ॥ १०० ॥ वाग्बीजंहृदयंकर्णएकनेत्रःसनेत्रकः ॥ वृषोमुकुंदमारूढोकूर्मोदीर्घेंदुसंयुतः ॥ १०१ ॥ नंदीदीर्घोलिमातंगिसर्वांतेस्याद्वशंकरि ॥ वैश्वानरप्रियांतोऽयंमंत्रोविंशतिवर्णवान् ॥२॥ मदनोस्य[२] मुनिःप्रोक्तोगायत्रीनिचृदादिका॥छंदोदेवीलघुश्यामाबीजंवाग्वह्निवल्लभा ॥ शक्तिरुक्ताखिलाभीष्टसाधनेविनियोजनम् ॥ १०३ ॥

हृदयंनमः ॥ कर्णउ ॥ सनेत्रकएकनेत्रःइयुतश्चिच्छःच्छि ॥ मुकुंदमारूढोवृषः टस्थितःषःष्ट ॥ [१]दीर्घेंदुसंयुतःकूर्मः चः चां ॥ १ ॥ दीर्घोनंदी डा ॥ लिमातंगिसर्ववशंकरिस्वरूपम् ॥ वैश्वानरप्रियास्वाहा॥ २॥ऐंबीजंस्वाहाशक्तिः॥ १०३॥

---

[१] ऐंनमउच्छिष्टचांडालिमातंगिसर्ववशंकरिस्वाहेतिविंशत्यर्णः । [२] अस्यलघुश्यामामंत्रस्यमदनऋषिःनिचृद्गायत्रीछंदः देवीलघुश्यामादेवताऐंबीजंस्वाहाशक्तिःममाखिलाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

न्यासानाह ॥ वागिति ॥ ऐंरत्यैनमःमूर्ध्नि ॥ ह्रींप्रीत्यैनमोहृदि ॥ १०४॥ क्लींमनोभवायैनमःपादयोः ॥ इच्छेति ॥ ऐंइच्छाशक्त्यैनमोमुखे ॥ ह्रींज्ञानशक्त्यैनमःकंठे ॥ क्लींक्रियाशक्त्यैनमोलिंगे ॥ ५ ॥ बाणेशीबीजानि-द्रांद्रीं क्लींब्लूंसःइति ॥ तत्पूर्वकान् ॥ द्रावणाद्यान्बाणान् कास्यहृद्गुह्यपादेन्यसेत् ॥ द्रांद्रावणबाणायनमइत्यादि ॥ कंशिरः ॥ आस्यंमुखं ॥६॥७॥ षडङ्गमाह । रामेति ॥ मातृकान्यासमाह॥ङेइति॥दीर्घस्वराआद्यायस्येदृशांवि

वाक्पूर्विकांरतिंमूर्ध्निप्रीतिंमायादिकांहृदि ॥१०४॥ पादयोर्विन्यसेन्मंत्रीकामपूर्वांमनोभवाम् ॥ इच्छाशक्तिंज्ञानशक्तिंक्रियाशक्तिंक्रमान्न्यसेत् ॥५॥ वाङ्मायाकामबीजाद्यांमुखेकंठेशिवेतथा ॥ द्रावणंशोषणंबाणंतापनंमोहनाभिधम् ॥६॥उन्मादनंक्रमात्पंचबाणेशीबीजपूर्वकान् ॥ कास्यहृद्गुह्यपादेषुन्यस्यकुर्य्यात्षडङ्गकम् ॥ ७॥ रां[३]मां[३]ग्निगुणै[३]रामां[३]गं[६]नेत्रै[२]वर्णैर्मनूत्तिथतैः॥ ङेनमोंताःकन्यकांता ब्राह्म्याद्याअष्टमातरः ॥ ८ ॥ दीर्घस्वराद्यदीर्घक्षाद्यष्टकाद्याविलोमतः ॥ विन्यस्यमूर्ध्निवामांसेवामपार्श्वेषुनाभितः ॥ ९ ॥ दक्षपार्श्वेदक्षिणांसेककुद्धृदययोरपि ॥ तारवागादिकाअष्टौसिद्धयःकन्यकांतिमाः ॥ ११० ॥

लोमतोदीर्घक्षादीनामष्टकमाद्यंयासांतामातरोमूर्द्धादिषुन्यस्याः ॥ तथाकीदृश्योमातरः ॥ ङेनमोंताःकन्यकांताः चतुर्थीनमोंतंकन्यकापदमंतेयासांताः ॥ यथा-आंक्षांब्राह्मीकन्यकायैनमोमूर्ध्नि ॥ ईंलांमाहेश्वरीकन्यकायैनमोवामांसे ॥ ऊंहांकौमारीक०वामपार्श्वे ॥ ॠंसांवैष्णवीक०नाभौ । ॡंषांवाराहीक०दक्षपार्श्वे । ऐंशांइंद्राणीक०

दक्षांसे ॥ ओंवांचामुंडाकन्यकायै०ककुदि ॥ अःलांमहालक्ष्मीकन्यकायै०हृदि ॥ सिद्धिन्यासमाह । तारेतिॐऐंअणिमासिद्धिकन्यकायैनमोमूर्ध्नीत्यादि ॥ सिद्धयइति ॥ अनुपदंवक्ष्यमाणाः ॥१०८॥९॥१०॥ अलिकंललाटम् चिह्लिभ्रूः॥ ११ ॥ अष्टसिद्धीराह ॥ अणिमेत्यादि ॥ १२ ॥ अप्सरोन्यासमाह ॥ कामाद्याइति ॥ क्लींउर्वशीकन्यकायैन

चतुर्थीनमसायुक्तान्यस्याःकालिकचिह्लिषु ॥कंठेचहृदयेनाभावाधारेलिंगमूर्द्धनि॥ १११ ॥ अणिमामहिमाचापिलघिमागरिमेशिता ॥ वशिताचाथप्राकाम्यंप्राप्तिरित्यष्टसिद्धयः ॥१२॥ कामाद्याःकन्यकाःप्रीताअष्टावप्सरसोन्यसेत् ॥ केभालेनेत्रयोर्वक्रेकर्णयोःकाकुदेपिच ॥१३॥ उर्वशीमेनकारंभाघृताचीपुंजकस्थला॥सुकेशीमंजुघोषाचमहारंगवतीरिताः ॥१४॥ यक्षगंधर्वसिद्धानांकन्यकानरनागयोः ॥विद्याधरःकिंपुरुषःपिशाचानामपीहताः ॥ १५ ॥ अंसयोर्हृदयेन्यस्येत्स्तनयोर्जठरेक्रमात् ॥ गुह्येप्याधारदेशेचनमोंतामदनादिकाः ॥ ११६ ॥

मोमूर्ध्निइत्यादि ॥ नेत्रयोर्द्वे ॥ कर्णयोर्द्वे॥अप्सरसआह ॥ उर्वशीति ॥ कन्यान्यासमाह यक्षेति ॥ नमोंतामदनादिकाः ॥ कामबीजाद्यायक्षादीनांकन्यका अंसादिषुन्यसेत् ॥ अंसयोर्द्वेस्तनयोर्द्वेएकैकान्यत्र ॥ क्लींयक्षकन्यकायैनमोदक्षांसे–क्लींगंधर्वकन्यकायैनमोवामांसे–इत्यादिप्रयोगः॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ११६ ॥

वर्णन्यासमाह ॥ तारेति ॥ प्रणवाद्यान् ॥ नमांतान्साबिंदुकान्॥ ॥ मंत्रवर्णान् ॥ करपादसंधिषुसाग्रेषुन्यसेत् ॥
ॐक्लींनमोदक्षेंसे ॥ ॐनमोदक्षकूर्परेइत्यादि ॥ ११७ ॥ सुरार्णवस्यांतरीपंद्वीपंतत्रयद्रत्नमंदिरंतन्मध्यगे सिंहासने

तारााद्यान्नमसायुक्तान्मूलवर्णान्सबिंदुकान् ॥ न्यसेत्संधिषुसाग्रेषुकरयोःपादयोरपि॥ ११७॥न्यासा
नेवंविधान्कृत्वामातंगीमासनेस्मरेत्॥सुराणंवांतरीपस्थरत्नमंदिरमध्यगे ॥ १८ ॥ माणिक्याभरणा
न्वितांस्मितमुखींनीलोत्पलाभांबरांरम्यालक्तकलितपादकमलांनेत्रत्रयोल्लासिनीम् ॥ वीणावादनत
त्परांसुरनतांकीरच्छदश्यामलांमातंगींशशिशेखरामनुभजेत्तांबूलपूर्णाननाम् ॥ १९ ॥ लक्षंजपेन्मधू
कोत्थैर्जुहुयाद्दयुतंशुभैः ॥ मातंगीप्रोदितेपीठेलघुश्यामांप्रपूजयेत् ॥ १२० ॥ त्रिकोणपंचकोणाष्टद
लषोडशपत्रके ॥ वेदद्वारधरागेहावृत्तेयंत्रेविधानतः ॥ २१ ॥ देव्याअग्रेपार्श्वयोश्चतिस्रोचेंद्रतिपू
र्विकाः ॥ इच्छाज्ञानक्रियाशक्तीःकोणेष्वग्रादिषुत्रिषु ॥ २२ ॥ बाणान्पंचसुकोणेषुकेसरेष्वंगदे
वताः ॥ ब्राह्म्याद्याअष्टपत्रेषुपत्राग्रेष्वणिमादिकाः ॥ १२३ ॥

स्थितांध्यायेत् ॥ ११८ ॥ माणिक्येति ॥ कीरच्छदश्यामलांशुकपिच्छनीलाम् ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ रतिपू
र्विकारातिप्रीतिमनोभवाः ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

र्वश्याद्याअष्टौ ॥ कन्याअष्टौयक्षादीनाम् ॥ न्यासवत्प्रयोगान् ॥ न्यासेयथाप्रयोगास्तथापूजायामपि ॥ १२४ ॥

यजेत्षोडशपत्रेषूर्वश्याद्याःकन्यकाअपि ॥ प्रयोगान्न्यासवत्कुर्य्याद्गत्यादीनांप्रपूजने ॥ १२४ ॥
भूगृहस्यचतुर्दिक्षुयोगिनीःपरिपूजयेत् ॥ गजाननासिंहमुखीगृध्रास्याकाकतुंडिका ॥ २५ ॥ उष्ट्रग्री
वाहयग्रीवावाराहीशरभानना ॥ उलूकिकाशिवारावामयूरीविकटानना ॥ २६ ॥ अष्टवक्राकोटरा
क्षीकुब्जाविकटलोचना ॥ समर्चयेद्दिशिप्राच्यामेताःषोडशयोगिनीः ॥ २७ ॥ शुष्कोदरीललज्जि
ह्वाश्वदंष्ट्रावानरानना ॥ ऋक्षाक्षीकेकराक्षीचबृहत्तुंडासुराप्रिया ॥ २८ ॥ कपालहस्तारक्ताक्षीशुकी
श्येनीकपोतिका ॥ पाशहस्तादंडहस्ताप्रचंडेत्यपिषोडश ॥ २९ ॥ पूज्याकीनाशदिग्भागेप्रतीच्यां
चंडविक्रमा ॥ शिशुघ्नीपापहंत्रीचकालीरुधिरपायिनी ॥ १३० ॥ वसाधयागर्भभक्षाशवहस्तांत्रमा
लिनी ॥ स्थूलकेशीबृहत्कुक्षिःसर्पास्याप्रेतवाहना ॥ ३१ ॥ दंदशूककराक्रौंचीमृगशीर्षेतिषोडश॥
संपूज्याउत्तरस्यांतुषोडशैववृषानना ॥ १३२ ॥

योगिनीराह ॥ गजाननेत्यादि ॥ १२५ ॥ प्रतिदिशंषोडशयथार्थनाम्न्यःसर्वाः ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ कीनाशदिग्भागेदक्षिणस्याम् ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥

॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ स्वस्वमंत्रेणेति ॥ बटुकादीनांमंत्राउक्ताः ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ तद्गायत्रीमाह ॥

व्यात्तास्याधूमनिःश्वासाव्योमैकचरणोर्द्धदृक् ॥ तापनीशोषणीदृष्टिःकोटरीस्थूलनासिका॥१३३॥
विद्युत्प्रभाबलाकास्यामार्जारीकटपूतना ॥ अट्टाट्टहासाकामाक्षेत्रत्यर्चनीयाअभीष्टदाः॥३४॥नश्यं
तिभूतशाकिन्यआसांनामश्रुतेरपि ॥ भूमंदिरस्यकोणेषुवह्न्यादिषुयजेत्क्रमात् ॥ ३५ ॥ स्वस्वमंत्रे
णबटुकंगणेशंक्षेत्रपालकम् ॥ दुर्गांतद्बहिरिंद्रादीन्वज्रादीनपिपूजयेत् ॥ ३६ ॥ भूगृहस्यचतुर्दिक्षुच
तुर्वाद्यानिपूजयेत्॥तत्तत्संज्ञंचविततंघनंचसुषिराभिधम्॥३७॥द्वादशावरणैरेवंलघुश्यामांयजेत्तुयः॥
सर्वासांसंपदांपात्रमचिराज्जायतेसना ॥ ३८ ॥ वाणीशुकप्रियाङेंताविद्महेमीनकेतनः ॥ कामेश्वरीं
धीमहीतितन्नःश्यामाप्रचोदयात् ॥ ३९ ॥ एषोदितातुमातंगीगायत्रीसर्वसिद्धिदा ॥ अनयायागव
स्तूनिप्रोक्षेत्तस्यास्समर्चने ॥१४०॥ मातंगीमंत्रसंप्रोक्ताःप्रयोगाअत्रकीर्तिताः ॥ राजानोराजपुत्रा
श्चसुदृशोमदमंथराः ॥ ४१ ॥

वाणीति ॥ वाणीऐं ॥ शुकप्रियाङेंता शुकप्रियायै ॥ मीनकेतनःक्लीं ॥ स्वरूपंशेषम् ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥

---

१ ऐंशुकप्रियायैविद्महेक्लींकामेश्वरींधीमहि । तन्नःश्यामाप्रचोदयात् ।

॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिनौकायांबालाश्यामानिरूपणमष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥ अन्नपूर्णेश्वरमिंत्रंवक्तुंप्रतिजानीते ॥ फलंकथयन् मंत्रमुद्धरति ॥ वेदादिरिति ॥ वेदादिःप्रणवः ॥ गिरिजाह्रीं ॥ पद्माश्रीं ॥

दासामनोवचःकायैर्भवंत्यस्याउपासितुः ॥ शाकिनीप्रेतभूताश्चधर्षितुंतंनशक्नुयुः ॥१४२॥ भूरिणाकिमिहोक्तेनदेवीयमखिलेष्टदा ॥ यन्मनुस्मरणादेवनरोदेवोपमोभवेत् ॥४३॥ देव्याउपासकैःपुंभिःस्त्रियोनिंद्यानजातुचित् ॥ देवीवन्माननीयास्तामनोभीष्टमभीप्सुभिः ॥१४४॥ इतिश्रीमहीधरविरचितेमंत्रमहोदधौबालालघुश्यामानिरूपणमष्टमस्तरंगः॥८॥अन्नपूर्णेश्वरीमंत्रंवक्ष्येभीष्टप्रदायकम् ॥ कुबेरोयामुपास्याशुलब्धवान्निधिनाथताम् ॥ १ ॥ शंभोःसख्यंदिगीशत्वंकैलासाधीशतामपि ॥ वेदादिर्गिरिजापद्मामन्मथोहृदयंभग ॥२॥ वातिमाहेश्वरिप्रांतेन्नपूर्णेदहनांगना ॥ प्रोक्ताविंशतिवर्णेयंविद्यास्याद्द्रुहिणोमुनिः ॥ ३ ॥

मन्मथःक्लीं ॥ हृदयंनमः ॥ भगवतिमाहेश्वरिअन्नपूर्णेस्वरूपम् ॥ दहनांगनास्वाहा ॥ द्रुहिणोब्रह्मा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

---

१ ॐ ह्रींश्रींक्लींनमःभगवतिमाहेश्वरिअन्नपूर्णेस्वाहा २० । अन्नपूर्णामंत्रस्यद्रुहिणऋषिःकृतिश्छंदःअन्नपूर्णेशीदेवताममाखिलसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

॥४॥५॥ भूमीत्यादितद्वर्णसंख्या ॥ ६ ॥ ध्यानमाह ॥ दर्वींदक्षे:स्वर्णपात्रंवामे ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
कृतिश्छंदोन्नपूर्णेशीदेवतापरिकीर्तिता ॥ षड्दीर्घाढ्येनहृल्लेखाबीजेनस्यात्षडंगकम् ॥४॥ मुखनासा
क्षिकर्णांध्रुगुदेषुनवसुन्यसेत् ॥ पदानिनवतद्वर्णसंख्येदानीमुदीर्य्यते ॥५॥ भू$^{१}$मिचंद्र$^{१}$ध$^{५}$रैका$^{१}$क्षि$^{२}$वेदा$^{४}$ब्धि$^{४}$यु$^{४}$
गबाहुभिः ॥ पदसंख्यामितैर्वर्णैस्ततोध्यायेत्सुरेश्वरीम् ॥६॥ तप्तस्वर्णनिभाशशांकमुकुटारत्नप्रभाभासु
रानानावस्त्रविराजितात्रिनयनाभूमीरमाभ्यांयुता ॥ दर्वींहाटकभाजनंचदधतीरम्योच्चपीनस्तनीनृ
त्यंतंशिवमाकलय्यमुदिताध्येयान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥ लक्षंजपोयुतंहोमश्चरुणाघृतसंयुतः ॥ जयादिनवश
क्त्याढ्येपीठेपूजासमीरिता ॥ ८ ॥ त्रिकोणवेदपत्राष्टपत्रषोडशपत्रके ॥ भूपुरेणयुतेयंत्रेप्रदद्यान्मायया
सनम् ॥ ९ ॥ अग्न्यादिकोणत्रितयेशिववाराहमाधवान् ॥ अर्चयेत्स्वस्वमंत्रैस्तुप्रोच्यंतेमनवस्तुते
॥ १० ॥ प्रणवोमनुचंद्राढ्यंगगनहृदयंशिवा ॥ मारुतःशिवमंत्रोयंसप्तार्णःशिवपूजने ॥ ११ ॥
शिवमन्त्रमाह ॥ प्रणव इति ॥ गगनंहकारः मनुचन्द्राढ्यम्औंबिंदुयुतंहौंहृदयंनमः ॥ शिवास्वरूपम् ॥
मारुतोयः ॥ ११ ॥

---

ॐह्रौंनमःशिवायेतिसप्तार्णः

वराहमन्त्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ नमोभगवतेवराहस्वरूपम् ॥ अर्घीशयुग्वसुः ॥ ऊयुतोरः ॥ रूपायभूर्भुवः स्वंःस्वरूपम् ॥ शूरःपः ॥ कामिका ॥ तयेभूपातित्वंमेदेहिददापयस्वरूपम् ॥ शुचिप्रियास्वाहा ॥ १२ ॥ १३ ॥ नारायणमन्त्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ हृदयंनमः ॥ नारायणायस्वरूपम् ॥ वसुवर्णोऽष्टार्णः ॥ १४ ॥ धराश्रियोर्मंत्र

तारंनमोभगवतेवराहार्घींशयुग्वसुः॥ पायभूर्भुवरन्तेस्वोथशूरःकामिकाचये॥१२॥भूपतित्वंचमेदेहि ददापयशुचिप्रिया॥त्रयस्त्रिंशद्वर्णमन्त्रःप्रोक्तोवाराहपूजने॥१३॥प्रणवोहृदयंनारायणायवसुवर्णकः॥ नारायणार्चनेमंत्रःषडंगानिततोर्चयेत् ॥ १४ ॥ धरांवामेस्वमनुनादक्षभागेश्रियंतथा ॥ अन्नंमह्यन्न मित्युक्त्वामेदेह्यन्नाधिपार्णका ॥ १५ ॥ तयेममान्नप्राणांतेदापयानलसुंदरी ॥ द्वाविंशत्यक्षरोमन्त्रो भूमीष्टौभूमिसंपुटः ॥ १६ ॥

माह ॥ अन्नामीति ॥ अन्नंमह्यन्नंमेदेह्यन्नाधिपतयेममान्नंप्रदापयस्वरूपम् ॥ अनलसुन्दरीस्वाहा ॥ अयंमंत्रोभूमीष्टौ भूमिपूजनेभूमिबीजेनसंपुटः॥ १५ ॥ १६ ॥

---

१ ॐ नमोभगवतेवराहरूपायभूर्भुवःस्वःपतयेभूपतित्वंमेदेहिददापयस्वाहोतित्रयस्त्रिंशद्वर्णः । २ॐ नमोनारायणायेत्यष्टार्णः।३ ग्लौंअन्नंमह्यन्नंमेदेह्यन्नाधिपतयेममान्नंप्रदापयस्वाहाग्लौंमितिद्वात्रिंशत्यर्णः।

श्रीपूजायांश्रीबीजेनसंपुटितः ॥ भूबीजमाह ॥ स्मृतिरीति ॥ स्मृतिर्गः ॥ लमनुचंद्रयुक् ॥ लऔ ॥ बिंदुयुतः ॥ ग्लौं ॥ एतद्भुवोबीजम् ॥ श्रीबीजमाह ॥ वह्नीति ॥ रेफई ॥ बिंदुयुतोबकः शः ॥ श्रींइतिश्रियोबीजम् ॥ १७ ॥ वेदास्रेचतुरस्रेमंत्राद्यचतुर्बीजाद्याश्चतस्रःशक्तीःपूजयेत् ॥ ताएवाह ॥ परेति ॥ ॐ परायैनमः ॥ ह्रीं भुवनेश्वर्यै ॥

लक्ष्मीपुटस्तत्पूजायांस्मृतिर्लमनुचंद्रयुक् ॥ भुवोबीजंवह्निशांतिर्बिंदुयुक्तोबकःश्रियः ॥ १७ ॥ मंत्रादि
स्थचतुर्बीजपूर्विकाःपरिपूजयेत् ॥ शक्तीश्चतस्रोवेदास्रेपराचभुवनेश्वरी ॥ १८ ॥ कमलासुभगाचेति
ब्राह्म्याद्याअष्टपत्रगाः ॥ षोडशारेऽमृताचैवमानदातुष्टिपुष्टयः ॥ १९ ॥ प्रीतीरतिर्ह्रीःश्रीश्चापिस्वधास्वा
हादशम्यथ ॥ ज्योत्स्नाहैमवतीछायापूर्णिमाःसहनित्यया ॥ २० ॥ अमावास्येतिसंपूज्यामंत्रशेषार्ण
पूर्विकाः ॥ भूपुरेलोकपालाःस्युस्तदस्त्राणितदग्रतः ॥ २१ ॥

॥ १८ ॥ श्रींकमलायै ॥ क्लींसुभगायै ॥ मंत्रस्यशेषायेवर्णाःचतुर्बीजव्यतिरिक्ताः ॥ तत्पूर्विकाअमृताद्याःषोडशदलेपूज्याः ॥ अंअमृतायैनमः ॥ मांमानदायैइत्यादि ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

मंत्रांतरमाह ॥ अयमिति ॥ अयंविंशत्यर्णः॥ श्रीकामहीनः॥ षडंगमाह ॥ द्वीति॥ २२॥ २३ ॥ मंत्रांतरमाह॥ पूर्वोक्तेति ॥ विंशत्यर्णैर्मन्वर्णाच्चतुर्दशाक्षरात् ॥ माहेश्वरीत्यंते ॥ ममाभिमतमन्नंदेहिदेहीतिवर्णानुच्चारयेत् ॥ अन्नपूर्णेस्वाहेत्यंतेऽस्त्येव ॥ ततएकगुणार्णवानेकत्रिंशदर्णः ॥ २४ ॥ षडंगमाह ॥ युगेति ॥ मंत्रांतरमाह ॥ प्रणव

इत्थंजपादिभिःसिद्धेमंत्रेस्मिन्धनसंचयैः॥कुबेरसदृशोमंत्रीजायतेजनवंदितः ॥२२॥ अयंरमा[1]काम
बीजरहितोष्टादशाक्षरः ॥ द्विनेत्रवेदवेदाब्धिनेत्रार्णैरंगमीरितम् ॥ २३ ॥ पूर्वोक्तमंत्रेमन्वर्णान्ममा
भिमतमुच्चरेत् ॥ अन्नंदेहियुगंचापिभवेदेकगु[2]णार्णवान् ॥ २४ ॥ युगांगवेदसप्ताब्धिषड्वर्णैरंगकल्प
नम् ॥ प्रणवःकमलाशक्तिर्नमोभगवतीतिच ॥ २५ ॥ प्रसन्नपारिजातेश्वर्यन्नपूर्णेनलांगना ॥ चै[3]तु
र्विंशतिवर्णात्मामंत्रःसर्वेष्टसाधकः ॥ २६ ॥ रामाक्षिवेदनिधिभिर्वेदद्व्यर्णैःषडंगकम् ॥ तारश्रीशक्ति
हृदयंभगांभःकामिकासहृक् ॥ २७ ॥

इति ॥ कमलाश्रीं ॥ शक्तिःह्रीं ॥ अनलांगनास्वाहा ॥२५॥२६ ॥ षडंगमाह ॥ रामेति ॥ निधयोनव ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तारेति ॥ तारॐ ॥ श्रीःश्रीं ॥ शक्तिःह्रीं ॥ हृदयंनमः॥ भगस्वरूपम्॥ अंभोवः॥सदृक्कामिकाति॥२७॥

---

[1] ॐ ह्रींनमःभगवतिमाहेश्वरिअन्नपूर्णेस्वाहेत्यष्टादशार्णः । [2] ॐ ह्रींश्रींक्लींनमःभगवतिमाहेश्वरिममाभिमतमन्नंदेहिदेहिअन्नपूर्णेस्वाहेत्येकत्रिंशदर्णः ।
[3] ॐ श्रींह्रींनमोभगवतिप्रसन्नपारिजातेश्वरिअन्नपूर्णेस्वाहेतिचतुर्विंशत्यर्णः ।

अग्निपत्नीस्वाहा ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ २८ ॥ षडंगमाह ॥ रामेति ॥ अन्यत्तुध्यानपूजाप्रयोगःपूर्ववत् ॥ २९ ॥ गौरि

माहेश्वरीप्रसन्नेतिवरदेपदमुच्चरेत् ॥ अन्नपूर्णेग्निपत्नीतिपंचं[१]विंशतिवर्णवान् ॥२८॥ रां[३]म्षं[६]ड्युं[४]गषड्[६]वे
दं[४]ने[२]त्रार्णैः स्यात्षडंगकम्॥एषांचतुर्णांमंत्राणामन्यत्सर्वंतुपूर्ववत् ॥ २९ ॥ त्रैलोक्यमोहनोगौरीमंत्रः
संकीर्त्यतेधुना ॥ मायानमोंतेब्रह्मश्रीराजितेराजपूजिते ॥ ३० ॥ जयेतिविजयेगौरीगांधारीतिवदेत्प
दम् ॥ त्रिभुतोयंमेषवशंकरिसर्वससद्यलः ३१ ॥ कवशंकरिसर्वस्त्रीपुरुषांतेवशंकरि ॥ सुद्वयंदुद्वयंद्वे
युग्वायुग्मंहरवल्लभा ॥ ३२ ॥ स्वाहांतएकं[२]षष्ट्यर्णोमन्त्रराजःसमीरितः ॥ अजोमुं[३]निर्निचृच्छंदो
गौरीत्रैलोक्यमोहिनी ॥ ३३ ॥

मन्त्रमाह ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ ३० ॥ तोयंवः ॥ मेषोनः ॥ ससद्यलः ॥ लो ॥ ३१ ॥ सुदुधेवाएषांयुग्मंसु २ दु २ घे २ वा २ हरवल्लभाह्रीं ॥ स्वरूपंशेषम् ॥ ३२ ॥ अजोब्रह्मा ॥ ३३ ॥

---

[१] ॐश्रींह्रींनमःभगवतिमाहेश्वरिप्रसन्नवरदेअन्नपूर्णेस्वाहेतिपंचविंशत्यर्णः। [२] ह्रींनमोब्रह्मश्रीराजितेराजपूजितेजयविजयेगौरिगांधारित्रिभुवनशंकरिसर्वलोकवशंकरिसर्वस्त्रीपुरुषवशंकरिसुसुदुदुघेघेवावाह्रींस्वाहेत्येकषष्ट्यर्णः। [३] ॐअस्यमन्त्रस्यअजऋषिःनिचृद्गायत्रीछन्दः गौरीत्रैलोक्यमोहिनीदेवताह्रींबीजंस्वाहाशक्तिः ममाखिलकामसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

षडंगमाह ॥ चतुर्दशेति ॥ दीर्घषट्कयुक्तैश्चतुर्दशाद्यक्षरैःषडगंम् ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ध्यानमाह ॥ गीर्वाणेति ॥ गीर्वाणादेवास्तत्समूहैःपूजितंपादपद्मंयस्याः ॥ अंकुशंदक्षे ॥ ३६ ॥ गौर्यामंत्रांतरमाह ॥ नभइति ॥ नभोहकारः ॥

देवताबीजशक्तीतुमायास्वाहापदेक्रमात् ॥ चतुर्दशदशाष्टाष्टदशैकादशवर्णकैः ॥ ३४ ॥ दीर्घाढ्यमायययायुक्तैःषडंगानिसमाचरेत् ॥ मूलेनव्यापकंकृत्वाध्यायेत्त्रैलोक्यमोहिनीम् ॥ ३५ ॥ गीर्वाणसंघार्चितपादपंकजारुणप्रभाबालशशांकशेखरा ॥ रक्तांबरालेपनपुष्पयुङ्मुदेसृणिंसपाशंदधती शिवास्तुनः ॥३६॥ अयुतंप्रजपेन्मन्त्रंसहस्रंघृतसंयुतैः ॥ पायसैर्जुहुयात्पीठेप्रागुक्तेगिरिजांयजेत् ॥ ॥ ३७ ॥ केसरेष्वंगमाराध्यब्राह्म्याद्याःपत्रमध्यगाः ॥ लोकेश्वरास्तदस्त्राणितद्बहिःपरिपूजयेत् ॥ ॥ ३८ ॥ इत्थमाराधितादेवीप्रयच्छेत्सुखसंपदः ॥ तंदुलैस्तिलसंमिश्रैर्लवणैर्मधुरान्वितैः ॥ ३९ ॥

कीदृक्नभःहसानलयुतम् ॥ हसःस ॥ अनलोरः ॥ ताभ्यांयुतम् ॥ ऐस्थंबिंदुयुतम् ॥ तेनहस्रैं ॥ तोयंवः ॥ कीदृक्वायुर्यः ॥ अग्नीरः ॥ कर्णऊः ॥ इंदुर्बिंदुः तैर्युतम् ॥ व्य्रूं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ मायाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ आत्मभूः क्लीं ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ वह्निप्रियास्वाहा ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ अंगमंत्राःषट् ॥ दीर्घयुक्मायाबीजंपरंयेषामी

फलैरम्यैरक्तपद्मैर्जुहुयाद्योदिनत्रयम् ॥ तस्यविप्रादयोवर्णावश्याःस्युर्मासमध्यतः ॥४०॥ रविमंड
लमध्यस्थांदेवींध्यायञ्जपेन्मनुम् ॥ अष्टोत्तरशतंतावद्धुत्वाग्नौवशयेज्जगत् ॥४१॥ नभोहंसानलयु
तमैकारस्थंशशांकयुक्॥तोयंवाय्वग्निकर्णेन्दुयुतंराजमुखीतिच ॥ ४२ ॥ राजाधिमुखिवश्यांतेमुखि
मायास्मात्मभूः॥देविदेविमहादेविदेवाधिदेविसर्वंच ॥४३॥ जनस्यचमुखंपश्चान्ममवशंकुरुद्वयम्॥
वह्निप्रियांतोमंत्रोष्टँचत्वारिंशल्लिपिर्मतः ॥४४॥ ऋषिच्छंदोदेवतास्तुपूर्ववत्परिकीर्तिताः ॥ हृदे[११]का
दशभिःप्रोक्तंशिरःस्यात्सप्तँवर्णकैः ॥४५॥ शिखावर्मापिवेदा[४]र्णैःपंचभिर्नेत्रमीरितम् ॥अस्त्रंसप्त[१७]ँदशा
र्णैःस्याद्ध्यानजप्यादिपूर्ववत् ॥ ४६ ॥ अङ्गमंत्रास्तुदीर्घाढ्यभुवनेशीपरामताः ॥ एवंसिद्धमनुर्मंत्री
प्रयोगान्कर्तुमर्हति॥४७॥कुर्य्यात्सर्वजनस्थानेमनोःसाध्याभिधानकम्॥जपेहोमेतर्पणेचवशीकरण
कर्मणि॥४८॥ससपातंघृतंहुत्वासहस्रंसप्तवासरम् ॥ संपाताज्यंतुसाध्यस्यप्राशितंवश्यकारकम्४९॥

हशाः ॥ ४७ ॥ मनोर्मंत्रस्यसर्वजनस्थानेसर्वजनस्येतिपदस्थानेसाध्याभिधानकंसाध्यनामोच्चरेत् ॥ देवदत्तस्यमु
खमित्यादि ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

---

१ ह्सैंन्य्ह्लूंराजमुखिराजाधिमुखिवश्यमुखिह्रींश्रींदेविदेविमहादेविदेवाधिदेविसर्वजनस्यमुखंममवश्यंकुरुकुरुस्वाहेत्यष्टचत्वारिंशदर्णः ।

प्रयोगान्तरमाह ॥ साध्यनक्षत्रेति ॥ साध्यस्ययन्नक्षत्रम् ॥ जन्मनक्षत्रंतत्संबंधीयोवृक्षस्तेनसाध्याकृतिंसाध्यप्रतिमांकुर्यात् ॥ तत्रप्राणान्प्रतिष्ठाप्य ॥ तामंगणेखात्वातदुपर्यग्निंनिधायरक्तचन्दनाक्तैर्जपापुष्पैः सहस्रंहुत्वातांनिष्कास्यनदीतटेनिखनेत् ॥ सदासःस्यात् ॥ नक्षत्रवृक्षायथा–कारस्करोथधात्रीस्यादुदुंबरतरुःपुनः ॥ जंबूःखादिरकृष्णाख्यौवंशपिप्पलसंज्ञकौ ॥ नागरोहिणनामानौपलाशप्लक्षसंज्ञकौ ॥ अंबष्ठबिल्वार्जुनाख्यविकंकतमहीरुहाः ॥ बकुलःसरलःसर्जोवंजुलःपनसार्ककौ ॥ शमीकदंबनिंबाम्रमधूकावृक्षशाखिनः ॥ इतिशारदोक्ताः ॥ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रमाह ॥ वागिति ॥ वाग्बीजंए ॥ भुवनेशानीह्रीं ॥ श्रीः श्रीं ॥ अनंतआ ॥ द्यलक्ष्मिस्वरूपम् ॥ ५३ ॥

साध्यनक्षत्रवृक्षेणकुर्य्यात्साध्याकृतिंशुभाम्॥तस्यामसून्प्रतिष्ठाप्यप्रांगणेनिखनेच्चताम् ॥ ५० ॥
तत्रानलंसमाधायरक्तचंदनसंयुतैः ॥ जपापुष्पैर्निशीथिन्यांजुहुयात्सप्तवासरम् ॥ ५१ ॥ सहस्रंप्रत्य
हंपश्चात्तानिष्कास्यसरित्तटे ॥ निखनेत्साधकस्तस्यसाध्योदासोभवेद्ध्रुवम् ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठलक्ष्मी
महामंत्रःप्रोच्यतेधनवृद्धिदः ॥ वाग्बीजंभुवनेशानीश्रीरनंतोद्यलक्ष्मिच ॥ ५३ ॥

स्वयंभुवेस्वरूपम् ॥ शंभुजायाह्रीं ॥ ज्येष्ठायैस्वरूपम् ॥ हृदयंनमः ॥ ५४ ॥ श्रींशक्तिः ॥ ह्रींबीजम् ॥ पदोन्मितिः

स्वयंभुवेशंभुजायाज्येष्ठायैहृदयांतिकः ॥मनुः[1]सप्तदशार्णोयंमुनिर्ब्रह्मा[2]स्यकीर्तितः ॥ ५४ ॥ छंदोष्टि
ज्येष्ठलक्ष्मीस्तुदेवताशक्तिबीजके ॥श्रीमायेमूलतोहस्तौप्रमृज्यांगसमाचरेत् ॥ ५५ ॥ रामवेदयुगै
कत्रिनेत्रार्णैर्मनुसंभवैः ॥ पदानामष्टकंन्यस्यैच्छिरोभ्रूमध्यवक्त्रके ॥ ५६ ॥ हृन्नाभ्याधारकेजानुपाद
योस्तत्पदोन्मितिः ॥ भूचंद्रैकैचतुर्वेदभूमिरामाक्षिवर्णकैः ॥५७॥ उद्यद्भास्करसन्निभास्मितमुखी
रक्तांबरालेपनासत्कुंभंधनभाजनंसृणिमथोपाशंकरैर्बिभ्रती ॥ पद्मस्थाकमलेक्षणादृढकुचासौंदर्य्य
वारांनिधिध्यातव्यासकलाभिलाषफलदाश्रीज्येष्ठलक्ष्मीरियम् ॥ ५८ ॥ लक्षंजपेत्पायसेनजुहुयात्त
द्दशांशतः ॥ आज्याक्तेनयजेत्पीठेवक्ष्यमाणेमहाश्रियम् ॥ ५९ ॥

पदवर्णसंख्याभूरित्यादिवर्णैर्ज्ञेया ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ध्यानमाह ॥ उद्यदिति ॥ धनपात्रांकुशौदक्षिणयोः ॥
कुंभपाशौवामयोः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

---

[1] ऐंह्रींश्रींज्येष्ठालक्ष्मिस्वयंभुवेह्रींज्येष्ठायैनमइतिसप्तदशार्णः। [2] अस्यज्येष्ठालक्ष्ममिंत्रस्यब्रह्माऋषिःअष्टिश्छंदःज्येष्ठालक्ष्मीर्देवताश्रींशक्तिःह्रींबीजंममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

पीठशक्तीराह ॥ लोहिताक्षीति ॥ ६० ॥ ६१ ॥ गायत्रीमाह ॥प्रणवइति ॥ स्पष्टम् ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ लोकेशाइन्द्रादयः ॥ हेतयोवज्राद्याः ॥ ६४ ॥ अन्नदमन्त्रमाह ॥ अथेति ॥ योमन्त्रःअन्नपूर्णावरणपूजनेभूमिश्रियोःपूजने

लोहिताक्षीविरूपाचकरालीनीललोहिता ॥ समदावारुणीपुष्टिरमोघाविश्वमोहिनी ॥ ६० ॥ तत्पी
ठशक्तयःप्रोक्तादिक्षुमध्येचतायजेत् ॥ प्रयच्छेदासनंतस्यैगायत्र्यावक्ष्यमाणया ॥ ६१ ॥ प्रणवो
रक्तज्येष्ठायैविद्महेपदमंततः ॥ नीलज्येष्ठापदंपश्चाद्धेधीमहिततः पदम् ॥ ६२ ॥ तन्नोलक्ष्मीः पदं
प्रोच्यचोदयादितिचोच्चरेत् ॥ गायत्र्येषा[1]समाख्याताकेसरेष्वंगपूजनम् ॥ ६३ ॥ मातरःपत्रमध्येषु
बाह्येलोकेशहेतयः ॥ इत्थंजपादिभिःसिद्धोमनुर्दद्यादभीप्सितम् ॥ ६४ ॥ अथान्नदमनोर्वक्ष्येसाध
नंयःपुरोदितः ॥अन्नपूर्णावृतौभूमिश्रीयागेद्वियमाक्षरः ॥ ६५ ॥ तारभूश्रीपुटोजप्यो[2]मुनिरस्यै[3]चतु
र्मुखः ॥ छन्दोनिचृतिराख्यातंदेवतेवसुधाश्रियौ ॥ ६६ ॥

द्वियमाक्षरोद्वाविंशत्यर्णःपुराकथितः सोन्नदोमनुः ॥ अन्नंमह्यन्नंमेदेह्यन्नाधिपतयेममान्नंप्रदापयस्वाहेतिसप्रणवभूबीजश्रीबीजसंपुटोष्टाविंशतिवर्णः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

---

[1] ॐरक्तज्येष्ठायैविद्महेनीलज्येष्ठायैधीमहि।तन्नोलक्ष्मीःप्रचोदयात्। [2] ॐग्लौंश्रींअन्नंमह्यन्नंमेदेह्यन्नाधिपतयेममान्नंप्रदापयस्वाहाश्रींग्लौंओमित्यष्टाविंशत्यर्णः

[3] अस्यज्येष्ठालक्ष्मीमंत्रस्यब्रह्माऋषिःनिचृद्गायत्रीछन्दःवसुधाश्रियौदेवतेग्लौंबीजंश्रींशक्तिःममाभीष्टप्राप्तौ जपेविनियोगः ।

षडङ्गमाह ॥ अन्नंमहीति ॥ षडंगमन्त्राः ॥ ध्रुवादिकाःप्रणवाद्याः ॥ दीर्घयुक्तेभूश्रीबीजेअन्तेयेषांते ॥ विनेत्राने

भूबीजंबीजमस्योक्तंश्रीबीजंशक्तिरीरिता ॥ अन्नंमहीतिहृदयमन्नंमेदेहिमस्तकम् ॥ ६७॥ शिखात्वन्ना
धिपतयेममान्नचप्रदापय ॥ वर्मोक्तंस्वाहयाचास्त्रमंगमंत्राध्रुवादिकाः ॥ ६८॥ षड्दीर्घारूढभूमिश्री
बीजांताःपरिकीर्तिताः ॥ विनेत्राअपदुग्धाब्धौस्वर्णदीपेतुतेस्मरेत् ॥ ६९ ॥ कल्पद्रुमाधोमणिवेदि
कायांसमास्थितेवस्त्रविभूषणाढ्ये ॥ भूमिश्रियौवांछितवामदक्षेसंचिंतयेद्देवमुनींद्रवंद्ये ॥ ७० ॥ लक्ष
मेकंजपेन्मंत्रंतद्दशांशंघृतप्लुतैः ॥ अन्नैर्हुत्वायजेत्पीठंवैष्णवेवसुधाश्रियौ ॥ ७१ ॥ विमलोत्कर्षिणी
ज्ञानक्रियायोगाभिधातथा ॥ प्रह्वीसत्यातथेशानानुग्रहापीठशक्तयः ॥ ७२ ॥

त्रहीनाःपञ्चैव ॥ पञ्चांगानिमनोर्यत्रतत्रनेत्रमनुंत्यजेदित्युक्तेः ॥ ॐ अन्नंमहिग्लांश्रींहृत् ॥ ॐ अन्नंदेहिग्लींश्रींशिर
इत्यादि ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ वैष्णवीपीठशक्तीराह ॥ विमलेति ॥ ७२ ॥

पीठमंत्रमाह ॥ तारमिति ॥ ॐ नमोभगवतेविष्णवेसर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मनेनमः ॥ ७३ ॥ ९४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

तारंनमोभगवतेविष्णवेसर्ववर्णकाः ॥ भूतात्मसंयोगपदंयोगपद्मपदंततः ॥ ७३ ॥ पीठात्मनेनमोंतो
यंपीठस्यमनुरीरितः ॥ दद्यादासनमेतेनमूलेनावाहनादिकम् ॥७४॥ अङ्गानीष्ट्वार्चयेद्दिक्षुभूवह्निज
लमारुतान् ॥ निवृत्तिंचप्रतिष्ठांचविद्यांशांतिंविदिक्षुच ॥ ७५ ॥ अष्टशक्तीर्बलाकाचविमलाकमला
तथा ॥ वनमालाबिभीषाचमालिकाशांकरीपुनः ॥ ७६ ॥पूर्वादिदिक्षुप्रयजेदष्टमविसुमालिका ॥
शक्राद्यानायुधैर्युक्तान्स्वस्वदिक्षुसमर्चयेत् ॥ ७७ ॥ इत्थंसपरिवारेयोधरालक्ष्म्यौजपादिभिः ॥
आराधयेत्सलभतेमहतींमन्त्रसंपदम् ॥ ७८ ॥ आज्याक्तैश्चतिलैर्बिल्वसमिद्भिर्जुहुयाच्छ्रिये ॥ साज्ये
नपायसेनापिफलैःपत्रैश्चबिल्वजैः ॥ ७९ ॥ जपतामुंमहामंत्रंहोमःकार्योदिनेदिने ॥ दशसंख्यःकुबेर
स्यमनुनेध्मैर्वटोद्भवैः ॥ ८० ॥ तारोवैश्रवणायाग्निप्रियांतोष्टाक्षरोमनुः ॥ होमकालेकुबेरंतुचिंतयेद
ग्निमध्यगम् ॥ ८१ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ इध्मैस्सामिद्भिः ॥ ८० ॥ कुबेरमन्त्रमाह ॥ तारइति ॥ तार ॐ ॥ अग्निप्रियास्वाहा ॥ ८१ ॥

---

१ ॐवैश्रवणायस्वाहेत्यष्टार्णः ।

कुबेरध्यानमाह ॥ धनेति ॥ रत्नकरण्डोदक्षे ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ प्रत्यंगिरामाह ॥ दीर्घेति ॥ मरुत्यकारः ॥ दीर्घेन्दुयुक् ॥ आबिंदुयुतः यां ॥ ब्रह्माकः ॥ लोहितःपः ॥ तत्संस्थंमांसलः ॥ ल्प ॥ यंतिनोरयः ॥ क्रूरांकृत्यांव

धनपूर्णंस्वर्णकुंभंतथारत्नकरंडकम् ॥ ८२ ॥ हस्ताभ्यांविप्लुतंसर्वांकरपादंचतुंदिलम् । वटाधस्ताद्रत्नपीठोपविष्टंसुस्मिताननम् ॥ ८३ ॥ एवंकृतहुतोमंत्रीलक्ष्म्याजपतिवित्तपम् ॥ अथप्रत्यंगिरांवक्ष्येपरकृत्याविमर्दिनीम् ॥ ८४ ॥ दीर्घेन्दुयुग्मरुद्ब्रह्मामांसलोहितसंस्थिताम् ॥ यंतिनोरयउच्चार्यक्रूरांकृत्यांसमुच्चरेत् ॥ ८५ वधूमिवपदंपश्चात्तांब्रह्मांतेसदीर्घणः । अपनिर्णुद्मइत्यंतेप्रत्यक्कर्त्तारमृच्छतु ॥ ८६ ॥ तारमायापुटोमन्त्रःस्यात्सप्तत्रिंशदक्षरः ॥ ब्रह्मानुष्टुम्मुनिश्छंदोदेवीप्रत्यंगिरेरिता ॥ ८७ ॥

धूमिवतांब्रह्मस्वरूपम् ॥ सदीर्घोणःणा ॥ अपनिर्णुद्मइतिस्वरूपम् ॥ प्रत्यक्कर्तारमृच्छतुस्वरूपम् ॥ प्रणवमायाबीजसंपुटः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

---

ॐह्रींयांकल्पयंतिनोरयःक्रूरांकृत्यांवधूमिवह्रांब्रह्मणाअपनिर्णुद्मःप्रत्यक्कर्त्तारमृच्छतुह्रींओमितिसप्तात्रिंशदक्षरः। २अस्यप्रत्यंगिरामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छन्दः देवीप्रत्यंगिरादेवताओंबीजंह्रींशक्तिःममाखिलावाप्तयेजपेविनियोगः ।

षडङ्गमाह ॥ अष्टभिरिति ॥ तोयनिधिभिश्चतुर्भिः ॥ दीर्घयुक्पार्वतीमायाबीजंपरंयेषाम् ॥ प्रणवआद्योयेषाम् ॥ जातयोहृदयायनमइत्यादयस्तत्संयुतैरष्टादिवर्णैःषडंगम् ॥ ८८ ॥ पदन्यासमाह ॥ शिरइति ॥ प्रणवमायासंपुटा निचतुर्दशपदानिशिरआदिषुन्यसेत् ॥ तेषांवर्णसंख्याक्रमात् ॥ एकचतुरेकत्रिद्विद्विद्विद्वयेकत्रिपञ्चद्वित्रित्रिवर्णै

बीजशक्तितारमायेकृत्वानाशेनियोजनम् ॥ अष्टभिस्तोयनिधिभिर्युगैर्वेदैश्चपंचभिः ॥ ८८ ॥ वसुभिर्मं
त्रजैर्वर्णैर्दीर्घयुक्पार्वतीपरैः ॥ प्रणवाद्यैःषडंगानिकल्पयेज्जातिसंयुतैः ॥ ८९ ॥ शिरोभ्रूमध्यवक्त्रेषुकंठबाहु
द्वयेहृदि ॥ नाभावूर्वोर्जानुनोश्चपदानिपद्योर्न्यसेत् ॥ ९० ॥ चतुर्दशक्रमान्मंत्रीतारमायापुटान्यपि ॥
आशांबरामुक्तकचाघनच्छविर्ध्येयासचर्मासिकराहिभूषणा ॥ दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिताहितान्वयाप्रत्यंगि
राशंकरतेजसेरितः ॥ ९१ ॥ ध्यायन्नेवंजपेन्मंत्रमयुतंतद्दशांशतः ॥ अपामार्गोध्मराज्यहविर्भिर्जुहुया
त्ततः ॥ ९२ ॥ अन्नपूर्णासनेचार्चेदंगलोकेश्वरायुधः ॥ एवंसिद्धमनुर्मंत्रीप्रयोगेषुशतंजपेत् ॥ ९३ ॥

बोध्या ॥ ॐह्रींयांह्रींशिरसीत्यादि ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ध्यानमाह ॥ आशेति ॥ आशांबरानग्ना ॥ घनच्छविर्मेघश्यामा ॥ ग्रसितोऽहितानांरिपूणामन्वयोवंशोयया ॥ असिर्दक्षिणे ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

बलिमन्त्रमाह ॥ योमइति ॥ ॐयोमेपूर्वगतःपाप्मापापकेनेहकर्मणाइन्द्रस्तंदेवराजोभञ्जयतुअंजयतुमोहयतुनाशयतुमारयतुकलिन्तस्मैप्रयच्छतुकृतंममाशिवंममशान्तिःस्वस्त्ययनंचास्तु ॥ इतिबलिमन्त्रः ॥ अनेनप्राच्यांबलिंदद्यात् ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ अस्मिन्मन्त्रे ॥ पूर्वैत्यस्यस्थानेअग्न्यादिपदम् ॥ इन्द्रइत्यस्यस्थानेअग्निरि

जुहुयाच्चशतंदिक्षुदशमंत्रैर्हरेद्बलिम् ॥ योमेपूर्वगतःपाप्मापापकेनेहर्मणा ॥ ९४ ॥ इंद्रंस्तंदेवउच्चार्य
राजांतेभंजयत्विति॥ अंजयत्वितिचोच्चार्यमोहयत्वितिचोच्चरेत् ॥९५॥नाशयतुपदंश्चान्मारयत्वि
त्यतोबलिम् ॥ तस्मैप्रयच्छतुकृतंममांतेचशिवंमम ॥ ९६ ॥ शांतिःस्वस्त्ययनंचास्तुबलिमंत्रउदा
हृतः ॥ प्रणवाद्योघृषघृच्चर्णस्तेनैववितरेद्बलिम् ॥९७॥ अस्मिन्मंत्रेपूर्वपदस्थानेग्न्यादिपदंवदेत् ॥
अग्निरित्यादिचपठेदिन्द्रइत्यादिकेस्थले ॥ ९८ ॥ एवंतुदशमंत्राःस्युस्तैस्तत्तद्दिग्बलिंहरेत् ॥ इत्थं
कृतेशत्रुकृताकृत्याक्षिप्रंविनश्यति ॥ ९९ ॥

त्यादि ॥देवराजइत्यत्रतेजोराजइत्यादिऊहान्कृत्वादशमंत्राविधेयास्तैस्तस्यांतस्यांदिशिबलिंदद्यात्॥यथा॥योमेऽग्निगतःपाप्मापापकेनेहकर्मणाअग्निस्तंतेजोराजोभञ्जयात्वित्यादियोमेदक्षिणगतःयमस्तंप्रेतराजइत्यादि ।९८।९९।

प्रत्यंगिरामालामंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारःप्रणवः ॥ मायाह्रीं ॥ सद्दक्जलम् ॥ इयुतोवः वि ॥१००॥ १०१ ॥
॥ १०२ ॥ १०३॥ १०४ ॥ शरसूर्य्याक्षरः ॥ पञ्चविंशत्याधिकशतार्णः ॥ ॐ ह्रींनमःकृष्णवाससेशतसहस्रहिंसिनि
सहस्रवदनेमहाबलेअपराजितेप्रत्यंगिरेपरसैन्यपरकर्माविध्वंसिनिपरमन्त्रोत्सादिनिसर्वभूतदमनिसर्वदेवान्बन्धबन्ध

अथप्रत्यंगिरामालामंत्रसिद्धिःप्रकीर्त्यते ॥ तारोमायानमःकृष्णंवाससेशतवर्णकाः॥ १०० ॥सहस्र
हिंसिनिपदंसहस्रवदनेपुनः॥महाबलेपदंपश्चादुच्चरेदपराजिते ॥ १ ॥ प्रत्यंगिरेपरंसैन्यपरकर्मसद्दग्ज
लम् ॥ध्वंसिनिपरमंत्रोत्सादिनिसर्वपदंततः ॥२॥ भूतांतेदमनिप्रांतेसर्वदेवान्समुच्चरेत् ॥ बंधयुग्मं
सर्वविद्याश्छिधियुक्क्षोभयद्वयम्॥ ३॥परयंत्राणिसंकीर्त्यस्फोटयद्वितयंपठेत्॥सर्वांतेशृंखलाउक्त्वा
त्रोटयद्वितयंज्वलत् ॥४॥ज्वालाजिह्वकरालांतेवदनेप्रत्यमुच्चरेत्॥ गिरेमायानमोंतोयंशरसूर्य्याक्षरोम
नुः॥५॥ऋष्यादिकंपूर्वमुक्तंमाययास्यात्षडंगकम्॥ध्यायेत्प्रत्यंगिरांदेवींसर्वशत्रुविनाशिनीम्॥ ६ ॥
सिंहारूढातिकृष्णंत्रिभुवनभयकृद्रूपमुग्रंवहंतीज्वालावक्त्रावसानानववसनयुगंनीलमण्याभकांतिः ॥
शूलंखड्गंवहंतीनिजकरयुगलेभक्तरक्षैकदक्षासेयंप्रत्यंगिरासंक्षपयतुरिपुभिर्निर्मितंवोभिचारम्॥ १०७॥

सर्वविद्याश्छिधि २ क्षोभय२परयन्त्राणिस्फोटय २ सर्वशृंखलास्त्रोटयत्रोटयज्वलज्ज्वालाजिह्वेकरालवदनेप्रत्यंगिरे
ह्रींनमइति ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ ध्यानमाह ॥ सिंहेति ॥ खड्गोदक्षिणे ॥ १०७ ॥

॥ १०८ ॥१०९ ॥ शत्रुनाशकमंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ प्रणवः ॐ ॥ सेन्दुःकेशवः ॥ अं ॥ सेन्दवः पंचवर्गाद्याः कंचंटंतंपं ॥ ११० ॥ चन्द्रान्वितंवियतहं ॥ रान्तंलः ॥ सद्योजातः ॥ शशांकोबिन्दुस्ताभ्यांयुक्तःलों ॥ मायाह्रीं ॥

अयुतंप्रजपेन्मंत्रंसहस्रंतिलराजिकाः ॥ हुत्वासिद्धमनुंमंत्रंप्रयोगेषुशतंजपेत् ॥१०८ ॥ग्रहभूतादिका विष्टंसिंचेन्मंत्रंजपञ्जलैः ॥ विनाशयेत्परकृतंयंत्रमंत्रादिकर्मणाम् ॥९॥ मंत्रंविरोधिशमकंप्रवक्ष्येषोडशाक्षरम् ॥ प्रणवःकेशवःसेंदुर्वर्गाद्याःपंचसेंदवः ॥ १० ॥ वियच्चंद्रान्वितंरांतंसद्योजातःशशांकयुक् ॥ मायात्रिकर्णचंद्राढ्योभृगुःसर्गीसवर्मफट्॥ ११॥स्वाहांतःषोडशार्णोयंमंत्रःशत्रुविनाशनः॥ विधाताष्टि[2]र्ऋषिश्छंदःपर्वताब्ध्यग्निवायवः ॥१२ ॥ धराकाशौमहापूर्वा देवताःपरिकीर्तिताः॥हुंबीजंपार्वतीशक्तिर्माययातुषडंगकम्॥ ॥ ११३ ॥

कर्णचंद्राढ्यःउ ॥ बिन्दुयुतोऽत्रिर्डुः ॥ सर्गीभृगुःसः ॥वर्महुं ॥ १११ ॥ फट्स्वाहास्वरूपम् ॥ विधाताब्रह्मा ॥ महापूर्वाः पर्वतादयः ॥ महापर्वतमहासमुद्रमहाग्निमहावायुमहापृथ्वीमहाकाशाः षड्देवताः॥ पार्वतीह्रीं॥ माययादीर्घाढ्ययाषडङ्गम् ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

---

१ ॐ अंकंचंटंतंपंहंलोंह्रींडुंसःहुंफट्स्वाहेतिषोडशार्णः । २ अस्यमंत्रस्यब्रह्माऋषिःअष्टिश्छंदःमहापर्वतमहाब्धिमहाग्निमहावायुमहाधरामहाकाशाःषड्देवताः हुंबीजंह्रींशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

षडङ्गक्रमेण ध्यानान्याह ॥ नानेति ॥ ११४ ॥ अकूपारं समुद्रम् ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ प्राणरूपेणविश्वंजीवयतीति

नानारत्नार्चिराक्रांतवृक्षांभःस्रवणैर्युतम् ॥ व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तंसानुयुक्तंगिरिंस्मरेत् ॥ ११४॥म
त्स्यकूर्मादिबीजाढ्यंनवरत्नसमन्वितम् ॥ घनच्छायंसकल्लोलमकूपारंविचिंतयेत् ॥ १५ ॥ ज्वाला
वतीसमाक्रांतजगत्त्रितयमद्भुतम् ॥ पीतवर्णमहावह्निंसंस्मरेच्छत्रुशांतये ॥ १६ ॥ धारासमुत्थरेण्वौघ
मलिनरुद्धभूदिवम् ॥ पवनसंस्मरेद्विश्वजीवनंप्राणरूपतः ॥१७॥ नदीपर्वतवृक्षादिफलिताग्रामसं
कुला ॥ आधारभूताजगतोध्येयापृथ्वीहमंत्रिणा ॥१८॥ सूर्यादिग्रहनक्षत्रकालचक्रसमन्वितम् ॥नि
र्मलंगगनंध्यायेत्प्राणिनामाश्रयप्रदम् ॥ १९ ॥ एवंषड्देवताध्यात्वासहस्राणितुषोडश ॥ जपेन्मंत्रंद
शांशेनषड्द्रव्यैर्होममाचरेत् ॥ १२० ॥

विश्वजीवनम् ॥ ११७॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

यथाभागंसप्तषष्ट्यधिकंशतद्वयंप्रत्येकम् ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ प्रयोगमाह ॥ अकारमिति ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ तदग्निंमचकारंयाम्येदाक्षिणस्याम् ॥ रब्धआरब्धोजगद्दाहोयेनलंकृतेतिवापाठः ॥ १२५ । ततीयेतिटम् ॥ १२६ ॥

व्रीहयस्तंडुलआज्यंसर्षपाश्चयवास्तिलाः॥एतैर्हुत्वायथाभागपीठेपूर्वोदितेयजेत् ॥१२१॥ अङ्गदिक्पालवज्राद्यैरेवंसिद्धोभवेन्मनुः॥शत्रूपद्रवमापन्नोयुंज्यात्तन्नष्टयेमनुम् ॥ २२ ॥ अकारंपर्वताकारंधावंतंशत्रुसम्मुखम् ॥ पतनोन्मुखमत्युग्रंप्राच्यांदिशिविचिंतयेत् ॥२३॥ ककारंक्षुब्धकल्लोलंप्लाविताखिलभूतलम् ॥ समुद्ररूपिणंभीमंप्रतीच्यांदिशिसंस्मरेत् ॥ २४ ॥ वर्णंतदग्निमंज्वालासंघव्याप्तनभस्तलम् ॥ याम्येरब्धजगद्दाहंस्मरेत्प्रलयपावकम् ॥ २५ ॥ तृतीयवर्गप्रथमंप्रकंपितजगत्त्रयम्॥युगांतपवनाकारमुत्तरस्यांदिशिस्मरेत् ॥२६ ॥ तुरीयपंचमाद्यार्णौपृथ्वीगगनरूपिणौ ॥ शत्रुवर्गंबाधमानौचिन्तयेन्नियतात्मवान्।२७॥तदग्निमंत्रवर्णयुगंशत्रोर्निःश्वासपद्धतिम्॥निरुंधानंस्मरेन्मन्त्रीविदधद्रिपुमाकुलम् ॥ २८ ॥ मायादिवर्णत्रितयंशत्रोर्नेत्रश्रुतीमुखम् ॥ प्रत्येकंतुनिरुंधानंचिन्तयेत्साधकोत्तमः ॥ १२९ ॥

तुरीयेति ॥ चतुर्थपञ्चमवर्गयोरादिमार्णौतंपं ॥ १२७ ॥ तदग्निमवर्णयुगंद्वयं हंलोमिति ॥ १२८ ॥ मायादिवर्णत्रितयंह्रींहुंसइति ॥ १२९ ॥

वर्मणाहुंकारेणक्षोभितमस्त्रंफट्कारंरिपोराधारादग्निमुत्थाप्यरिपुदेहंदहंतंस्मरेत् ॥ १३० ॥ मंडलमेकौनपंचाशद्दिनानि ॥ १३१ ॥ मारणंकुर्वतःप्रायश्चित्तमाह ॥ एवमिति॥१३२ ॥ इतिमन्त्रमहोदधिनौकायामन्नपूर्णादिनिरूपणंनामनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥ बगलामुखीमाह ॥ गगनंहः ॥ पृथ्वीलः ॥ शांतिः ई ॥ बिंदुश्चतैर्युतंह्लीं ॥

वर्मसंक्षोभितंत्वस्त्रंरिपोराधारदेशतः॥उत्थाप्यवह्नितद्देहंप्रदहन्समनुस्मरेत् ॥१३०॥ एवंवर्णान्स्मरन्मंत्रंजपेन्मंत्रीसहस्रकम्॥ मण्डलत्रितयादर्वाङ्मारयत्येवविद्विषम् ॥३१॥ एवंयःकुरुतेकर्मप्राणायामजपादिभिः॥ सशोंधयित्वास्वात्मानंस्वरक्षायैहरिंस्मरेत् ॥ १३२॥ इति श्रीमन्त्रमहोदधावन्नपूर्णादिमन्त्रप्रकाशनंनामवमस्तरंगः ॥ ९॥ अथप्रवक्ष्येशत्रूणांस्तंभिनीबगलामुखी।प्रणवोगगनंपृथ्वीशांतिबिंदुयुतंबग ॥ १॥ लामुसाक्षोगदीसर्वदुष्टानांवाहलींदुयुक् ॥ मुखंपदंस्तंभयांतेजिह्वांकीलयवर्णकाः॥२॥बुद्धिंविनाशयांतेतुबीजंतारोग्निसुन्दरी॥ षट्त्रिंशदक्षरोमंत्रोनारदोमुनिरस्यतु॥३॥

बगलामुखस्वरूपं ॥ गदीखः ॥ साक्षइयुतःखि ॥ सर्वदुष्टानांवास्वरूपम् इंदुयुक्हलचिं ॥ मुखंपदमित्यादिस्वरूपम् ॥ बीजंह्लीं॥ तारॐ ॥ अग्निसुन्दरीस्वाहा ॥ १ ॥ २ ॥ ३॥

---

ॐह्लींबगलामुखिसर्वदुष्टानांवाचंमुखंपदंस्तंभयजिह्वांकीलयबुद्धिंविनाशयह्लींॐस्वाहेतिषट्त्रिंशदर्णः । २ अस्यश्रीबगलामुखीमन्त्रस्यनारदऋषिःबृहतीछंदः बगलामुखीदेवताममाखिलावाप्तयेजपेविनियोगः ।

षडंगमाह ॥ नेत्रेति ॥ अक्षाणिपंच ॥ ४ ॥ ध्यानमाह ॥ सौवर्णेति ॥ मुद्गरवज्रौदक्षयोः ॥ पाशरिपुजिह्वेवामयोः

छंदोपिबृहतीज्ञेयंदेवताबगलामुखी ॥ नेत्रौंक्षिसार्यकनैवपंचकौंष्ठाभिरंगकम् ॥ ४ ॥ सौवर्णासनसंस्थितांत्रिनयनांपीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचिंशशांकमुकुटांसच्चंपकस्रग्युताम् ॥ हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाःसंबिभ्रतींभूषणैर्व्याप्तांगींबगलामुखींत्रिजगतांसंस्तंभिनींचिंतयेत् ॥ ५ ॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षमयुतंचंपकोद्भवैः ॥ कुसुमैर्जुहुयात्पीठेपूर्वोक्तेपूजयेदिमाम् ॥ ६ ॥ चन्दनागुरुचंद्राद्यैःपूजार्थंयंत्रमालिखेत् ॥ त्रिकोणषड्दलाष्टास्रषोडशारधरापुरम् ॥ ७ मध्येसंपूजयेद्देवींकोणेसत्त्वादिकान्गुणान् ॥ षट्कोणेषुषडंगानिमातॄर्भैरवसंयुताः ॥ ८ ॥ संपूज्याष्टदलेपद्मेषोडशारेयजेदिमाः ॥ मंगलास्तंभिनीचैवजृंभिणीमोहिनीतथा ॥ ९ ॥ वश्याचलाबलाकाचभूधराकल्मषाभिधा ॥ धात्रीचकलनाकालकर्षिणीभ्रामिकापिच ॥ १० ॥ मंदगमनाचभोगस्थाभाविकाषोडशीस्मृता ॥ भूगृहस्यचतुर्दिक्षुपूर्वादिषुयजेत्क्रमात् ॥ ११ ॥ गणेशंबटुकंचापियोगिनींक्षेत्रपालकम् ॥ इंद्रादींश्चततोबाह्येनिजायुधसमन्वितान् ॥ १२ ॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ८ ॥ भैरवसयुतामातॄरष्टदलेसंपूज्यषोडशदलेइमामङ्गलाद्यायजेत् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

इत्थंसिद्धमनुर्मंत्रीस्तंभयेद्देवतादिकान् ॥ पीतवस्त्रस्तदासीनःपीतमाल्यानुलेपनः॥ १३॥ पीतपुष्पै
र्यजेद्देवींहारिद्रोत्थस्रजाजपन्॥पीतांध्यायन्भगवतींप्रयोगेष्वयुतंजपेत् ॥१४॥त्रिमध्वक्ततिलैर्होमो
नृणांवश्यकरोमतः ॥ मधुरत्रितयाक्तैःस्यादाकर्षोलवणैर्ध्रुवम् ॥ १५ ॥ तैलाभ्यक्तैर्निंबपत्रैर्होमो
विद्वेषकारकः॥ताललोणहारिद्राभिर्द्विषांसंस्तंभनंभवेत्।१६।अंगारधूमंराजीश्चमाहिषंगुग्गुलंनिशि।
श्मशानपावकेहुत्वानाशयेदचिरादरीन् ॥ १७॥ गरुतोगृध्रकाकानांकटुतैलंबिभीतकम्॥गृहधूमंचि
तावह्नौहुत्वाप्रोच्चाटयेद्रिपून्॥ १८ ॥ दूर्वागुडूचीलाजान्योमधुरत्रितयान्वितान्॥जुहोतिसोखिलान्रो
गान्छमयेद्दर्शनादपि ॥ १९ ॥ पर्वताग्रेमहारण्येनदीसंगेशिवालये॥ ब्रह्मचर्यव्रतोलक्षंजपेदखिलसि
द्धये॥२०॥ एकवर्णगवीदुग्धंशर्करामधुसंयुतम् ॥ त्रिशतंमंत्रितंपीतंहन्याद्विषपराभवम् ॥२१ ॥
श्वेतपालाशकाष्ठेनरचितेरम्यपादुके ॥ अलक्तरंजितेलक्षंमंत्रयेन्मनुनामुना ॥ २२ ॥ तदारूढः पुमा
न्गच्छेत्क्षणेनशतयोजनम् ॥ पारदंचशिलांतालपिष्टंमधुसमन्वितम् ॥ २३ ॥ मनुनामंत्रयेल्लक्षंलिपे
त्तेनाखिलांतनुम् ॥ अदृश्यःस्यान्नृणामेषआश्चर्यंदृश्यतामिदम् ॥ २४ ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ गरुतःपक्षान् ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

यंत्रमाह ॥ षट्कोण इति ॥ धत्तूररसाक्तहरिद्राचूर्णेनषट्कोणेऽमुकंस्तंभयेतिवर्णयुतंह्लीमितिबीजंविलिख्यमंत्रशेषा
र्णैःसंवेष्टचोपरिचतुरस्रेणवेष्टितंपीतसूत्रवर्तितंकृत्वा भ्रमत्कुंभकारचक्रस्थमृदारचितवृषोदरेप्रक्षिप्यहरितालेनसंलिप्य

षट्कोणेविलिखेद्बीजंसाध्यनामान्वितंमनोः ॥ हरितालनिशाचूर्णैरुन्मत्तरससंयुतैः॥२५॥शेषाक्षरैः
समावीतंधरागेहविराजितम् ॥ तद्यंत्रंस्थापितप्राणंपीतसूत्रेणवेष्टयेत् ॥ २६ ॥ भ्राम्यत्कुलालचक्र
स्थांगृहीत्वामृत्तिकांतया ॥ रचयेद्वृषभंरम्यंयंत्रंतन्मध्यतःक्षिपेत् ॥२७॥ हरितालेनसंलिप्यवृषंप्र
त्यहमर्चयेत् ॥ स्तंभयेद्विद्विषांवाचंगतिंकार्य्यपरंपराम् ॥२८॥ आदायवामहस्तेनप्रेतभूमिस्थखर्प
रम् ॥ अंगारेणचितास्थेनतत्रयंत्रंसमालिखेत् ॥ २९ ॥ मंत्रितंनिहितंभूमौरिपूणांस्तंभयेद्गतिम् ॥
प्रेतवस्त्रेलिखेद्यंत्रमंगारेणैवतत्पुनः ॥ ३० ॥ मंडूकवदनेन्यस्येत्पीतवस्त्रेणवेष्टितम्॥पूजितंपीतपुष्पै
स्तद्वाचंसंस्तंभयेद्द्विषाम् ॥ ३१ ॥

वृषंप्रत्यहंपूजयेत् स्तम्भनफलम् ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

वृषाआटरूषकः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ स्वप्नवाराहीमाह ॥ वेदादीति॥ वेदादिबीजम् ॐ ॥ मायाह्रीं ॥ हृत्नमः ॥
जलंवः ॥ पावकोरः ॥ तौदीर्घौवारा ॥ सहक्खंहःहि ॥ मेधाघः ॥ सद्ययुक्ओयुताघो ॥ रेस्वप्नंस्वरूपम् ॥ सर्गिणौठौ ॥ ठःठः ॥ कृशानुवल्लभास्वाहा ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वर्णन्यासमाह ॥ पादेति ॥ लिंगेकंठेमूर्ध्निए
केकः ॥ अन्यत्र द्वौद्वौ ॥ ३८ ॥

यद्भूमौभवितादिव्यंतत्रयंत्रंसमालिखेत् ॥ मार्जिततद्वृषापत्रैर्दिव्यस्तंभनकृद्भवेत्॥३२॥इंद्रवारुणि
कामूलंसप्तशोमनुमंत्रितम् ॥ क्षिप्तंजलेदिव्यकृतांजलस्तंभनकारकम् ॥ ३३॥ किंभूरिणासाधकेन
मंत्रःसम्यगुपासितः ॥ शत्रूणांगतिबुद्ध्यादेःस्तंभनोनात्रसंशयः ॥३४ ॥ उच्यतेस्वप्नवाराहीजनता
वशकारिणी ॥ वेदादिबीजंमायाचहृद्दीर्घौजलपावकौ ॥३५ ॥ खंसहक्सद्ययुग्मेधारेस्वप्नंसर्गिणौ
चठौ ॥ कृशानुवल्लभांतोयंमंत्रःपंचदशाक्षरः ॥३६॥ ईश्वरोजगतीस्वप्नवाराहीमुनिपूर्वकाः ॥तारो
बीजंचहल्लेखाशक्तिष्ठौकीलकंमतम् ॥३७॥ द्विपंचनेत्रहस्ताक्षियुग्मार्णैरंगकंमनोः ॥ पादलिंगकटी
कंठगंडाक्षिश्रुतिनासिके ॥ विन्यस्यमंत्रजान्वर्णांश्चिन्तयेत्परदेवताम् ॥ ३८ ॥

---

[1] ॐह्रींनमोवाराहिघोरेस्वप्नंठःठःस्वाहेतिपंचदशार्णः। [2] अस्यस्वप्नवाराहीमंत्रस्यईश्वरऋषिः जगतीछंदःस्वप्नवाराहीदेवताॐबीजंह्रींशक्तिःठःठःकीलकंममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

ध्यानमाह ॥ मेघेति ॥ कोलास्यांवराहवदनाम् ॥ दंष्ट्रातलेवर्तमानयाऽचलयावसुधयाशोभिताम् ॥ असिलतां

मेघश्यामरुचिंमनोहरकुचांनेत्रत्रयोद्भासितांकोलास्यांशशिशेखरामचलयादंष्ट्रातलेशोभिनीम् ॥ बि
भ्राणांस्वकरांबुजैरसिलतांचर्मापिपाशंसृणिंवाराहीमनुचिंतयेद्धयवरारूढांशुभालंकृतिम् ॥ ३९ ॥
लक्षंजपेद्दशांशेननीलपद्मैस्तिलैःशुभैः ॥ जुहुयात्पूर्वसंप्रोक्ते पीठेसंपूजयेदिमाम् ॥ ४० ॥ त्रिकोणे
तांसमाराध्यषट्कोणेष्वङ्गदेवताः॥ षोडशारेयजेच्छक्तीर्वक्ष्यमाणास्तु षोडश ॥४१॥उच्चाटनीतदी
शीचशोषणीशोषणीश्वरी ॥ मारणीमारणीशीचभीषणीभीषणीश्वरी॥४२॥त्रासनीत्रासनीशीचकं
पनी कंपनीश्वरी॥ आज्ञाविवर्तिनीपश्चादाज्ञाविवर्तिनीश्वरी॥४३॥वस्तुजातेश्वरीचाथसर्वसंपादनी
श्वरी ॥ एताःपूज्याश्चतुर्थ्यंताःप्रणवाद्यानमोन्विताः ॥ ४४ ॥ यजेदष्टदलेपद्मेमातृभैरवसंयुताः ॥
लोकपालान्दशदलेद्वितीयेहेतिसंयुतान् ॥ ४५॥ एवंसिद्धंमनुंमंत्रीकाम्यकर्मणियोजयेत्॥ तर्पयेन्ना
रिकेलोत्थैर्जलैस्तीर्थोद्भवैरपि ॥ ४६ ॥

कुशौदक्षयोः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

कृष्णपक्षे[४७]इत्यारभ्यवशगाध्रुवम्[५६]इत्यंतएकोवश्यार्थप्रयोगः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ नृकाकाजानांनरवायसमेषाणामसृजा

मानयेत्तरुणीवर्गान्सर्वकामार्थसिद्धये ॥ कृष्णपक्षेष्टमीघस्रेभूताहेवाकृतव्रतः ॥ ४७ ॥ चतुष्पथान्न
दीकूलद्वयात्कौलालवेश्मनः ॥ मृदमानीयधत्तूररससंयुक्तयातया ॥ ४८ ॥ रचयेत्पुत्तलींरम्यांसा
ध्यासुस्थापनान्विताम् ॥ ततःप्रेतांबरेयंत्रंनृकाकाजासृजालिखेत् ॥ ४९ ॥ चितांगारयुजायोनिंषट्
कोणंभूपूरान्विताम् ॥ तदंतमंत्रमालिख्यवेष्टयेन्मनुनामुना ॥ ५० ॥ साध्यं[१]मुच्चाटययुगंशोषयद्वितयं
ततः ॥ मारयद्वितयंचाथभीषयद्वितयंततः ॥ ५१ ॥ नाशयद्वितयंपश्चाच्छिरःकंपययुग्मकम् ॥
ममाज्ञावर्तिनंपश्चात्कुरुसर्वाभिमार्णकाः ॥ ५२ ॥ तवस्तुजातंशब्दांतेसंपादययुगंततः॥ सर्वंकुरु
युगंस्वाहामुनिसप्ताक्षरोमनुः ॥ ५३ ॥

रुधिरेण ॥ ४९ ॥ ५० ॥ वेष्टनमन्त्रमाह ॥ साध्यमिति ॥ ५१ ॥ शिरःस्वाहा॥ स्पष्टमन्यत् ॥ ५२ ॥ मुनिसप्ताक्षरः सप्तसप्तत्यर्णः ॥ ५३ ॥

---

[१] साध्यमुच्चाटयोच्चाटयशोषयशोषयमारयमारयभषियभषियनाशयनाशयस्वाहाकंपयकंपयममाज्ञावर्तिनंकुरुसर्वाभिमतवस्तुजातंसंपादयसम्पादयसर्वं कुरुकुरुस्वाहा ७७

उक्तमार्गतःपूर्वोक्तविधिना ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ यन्त्रमाह ॥ कृत्वेति ॥ ५८ ॥ कामःक्लीं ॥ वाग्भवंवम् ऐं ॥
॥ ५९ ॥ पाशमूआं ॥ मायांह्रीं ॥ सृणिंक्रां ॥ श्रियंश्रीं ॥ दीर्घकवचंहूं ॥ ६० ॥ पूर्वोक्ताउच्चाटनाद्याः ॥ ६१ ॥

अनेनवेष्टितंयंत्रंकृतंदेवीप्रतिष्ठितम् ॥ पुत्तल्याहृदिविन्यस्ययजेत्तामुक्तमार्गतः ॥५४॥तदग्रेप्रजपे
न्मन्त्रंरात्रावेकांतमाश्रितः ॥ सहस्रंसाष्टकंभूयःपूजयेत्तांसमाहितः ॥५५॥ एवंकृतेनरानार्य्योराजानो
राजवल्लभाः ॥ सिंहागजामृगाःक्रूराभवेयुर्वशगाध्रुवम्॥५६ ॥ चित्तेध्यात्वानिजंकार्य्यंशयीतविजने
व्रती ॥ यथाभावितथादेवीस्वप्नेवदतिमंत्रिणे ॥ ५७ ॥ अथैतस्यामहायंत्रंप्रवक्ष्येसिद्धिदंनृणाम्॥
कृत्वात्रिकोणंषट्कोणषोडशारंवसुच्छदम् ॥५८॥ दशारद्वितयंपंचदशास्रंभूपुरद्वयम् ॥ त्रिकोणेकाम
बीजस्थंवाग्भवंविलिखेत्पुनः॥५९॥षट्सुकोणेषुवाग्बीजंपाशंमायांसृणिंश्रियम्।दीर्घंचकवचंपश्चा
द्विलिखेत्षोडशच्छदे।६०।शक्तीःषोडशपूर्वोक्ताब्राह्म्याद्याअष्टपत्रके।भैरवैःसंयुतान्न्यस्येद्दशारेदिक्प
तीन्क्रमात्॥६१॥स्वस्वबीजादिकान्बीजसमूहःकथ्यतेऽधुना॥मांसंरक्तंविषंमेरुर्जलंवायुर्भृगुर्वियत्
एतानिशशियुक्तानिपाशोमायांतिमामता॥६२॥वज्राद्यान्विलिखेत्सम्यक्पंक्तिपत्रेद्वितीयके॥६३॥

दिक्पालबीजान्याह ॥ मांसमिति ॥ मांसंलः ॥ रक्तंरः ॥ विषंमः ॥ मेरुःक्षः ॥ जलं वः ॥ वायुर्यः॥ भृगुःसः ॥
वियतहः ॥ ६२ ॥ एतानिशशियुक्तानिबिंदुयुतानि ॥ पाशःआं ॥ अंतिमान्चरमामायाह्रीं ॥ ६३ ॥

तिथिपत्रेपंचदशदले ॥ गायत्र्यर्णैर्वैदिकगायत्रीवर्णैः ॥ भूमिमिति ॥ चतुरस्रद्वयकोणेषुवाय्वग्नी यरेफौलिखेत् ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ वार्तालीमाह ॥ वागिति ॥ भूमिःग्लौं ॥ सावाग्बीजेनपुटिता तन्मध्यस्थऐंग्लौंऐमिति ॥ ६६ ॥

तिथिपत्रेमूलवर्णान्गायत्र्यर्णैःप्रवेष्टयेत्॥वाय्वग्नीविलिखेद्भूमिमंदिरद्वितयास्त्रिषु ॥ ६४ ॥ भूर्जादौ यन्त्रमालिख्यजपंसंपातसाधितम् ॥ बाह्वादौविधृतंदद्यान्नृणांकीर्तिंधनंसुखम् ॥ ६५॥ बहुनाकिमिहोक्तेनवाराहीष्टंप्रयच्छति ॥ वाग्बीजपुटिताभूमिर्नमोंतेभगवत्यथ॥६६॥वार्तालिवाराहगनंसदृग्वाराहिवापदम्।राहसुखिततोबीजत्रयंपूर्वोदितंवदेत्।६७॥अन्धेअन्धिनिहृदयंरुंधेरुंधिनिहृत्तथा॥जंभेजंभिनिहृत्पश्चान्मोहेमोहिनिहृत्पुनः॥६८॥स्तंभेस्तंभिनिहार्दांते ऽनर्बीजत्रयंवदेत्॥सर्वदुष्टप्रदुष्टानांसर्वेषांसर्ववाक्पदम् ॥ ६९ ॥

सदृक्गगनांह । पूर्वोदितंबीजत्रयम् ॥ ऐंग्लौंऐमिति ॥ ६७ ॥ हृदयंनमः ॥ हृन्नमः ६८ ॥ हार्दंनमः ॥ बीजत्रयं ऐंग्लौंऐमिति ॥ ६९ ॥

त्रिबीजो ऐंग्लौंऐमिति ॥ सर्गाढ्यं ठचतुष्टयं ठःठःठःठः ॥ ७० ॥ वेदरुद्राक्षरः चतुर्दशोत्तरशतार्णः ॥ ७१ ॥

चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तंभंकुरुद्वयम् ॥ शीघ्रंवश्यंकुरुद्वंद्वंत्रिबीजीठचतुष्टयम् ॥७० ॥सर्गाढ्यंव
मंफट्स्वाहावेदरुद्राक्षरोमनुः ॥ प्रणवादिर्मुनिश्छंदःशिवोतिजगतीतथा॥७१॥वार्तालीदेवताप्रोक्ता
वार्तालीहृदयंस्मृतम् ॥ वाराहीतिशिरःप्रोक्तंशिखावाराहमुख्यपि॥७२ ॥अंधेअंधिनिवर्मोक्तंरुंधेरुं
धिनिनेत्रकम्॥ जंभेजंभिनिचास्त्रंस्यात्ततोध्यायेत्तुदेवताम् ॥ ७३ ॥ रक्तांभोरुहकर्णिकोपरिगतेशा
वासनेसंस्थितांमुंडस्रक्परिराजमानहृदयांनीलाश्मसद्रोचिषम्॥ हस्ताब्जैर्मुसलंहलाभयवरान्संबिभ्र
तींसत्कुचांवार्तालीमरुणांबरांत्रिनयनांवंदेवराहाननाम् ॥७४॥ तत्सप्तदशसाहस्रंप्रजपेत्तद्दशांशतः ॥
तिलैर्बंधूककुसुमैर्जुहुयान्मधुरान्वितैः ॥७५॥ पूजायंत्रमथोवक्ष्येजपादिनवशक्तिकम् ॥ स्वर्णेरूप्ये
तथाताम्रेभूर्जपत्रेथदारुणि ॥७६ ॥

॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ध्यानमाह ॥ रक्तेति ॥ मुसलवरौदक्षयोः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

---

१ ॐ ऐंग्लौंऐंनमोभगवतिवार्तालिवाराहिवाराहिवाराहमुखिऐंग्लाऐंअंधेअंधिनिनमोरुंधेरुंधिनिनमोजंभेजंभिनिनमोमोहेमोहिनिनमःस्तंभेस्तंभिनिनमोऐंग्लौंऐंसर्वदुष्टप्रदुष्टानांसर्वेषांसर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तंभंकुरुकुरुशीघ्रंवश्यंकुरुकुरुऐंग्लौंऐंठःठःठःठःहुंफट्स्वाहा ११४ ॥ २ अस्यश्रीवार्तालीमंत्रस्यशिवऋषिरतिजगतीछंदःवार्तालीदेवताममाखिलावाप्तयेजपेविनियोगः ।

रात्रिर्हरिद्रा ॥ पूजायंत्रमाह ॥ योनीति ॥ योनिस्त्रिकोणम् ॥ ७७ ॥ भूबिंबंचतुरस्रम् ॥ ७८ ॥ तदग्न्यादिषु तस्यारेव्याअग्न्यादिषु अग्निनिर्ऋतिवाय्वीशानाग्निंदिशासु ॥ अंगकं षडंगानि ॥ यजेदितिपूर्वेणान्वयः ॥ ७९ ॥

लिखेद्गोरोचनारात्रिचंदनागुरुकुंकुमैः ॥ योनिपंचास्रषट्कोणाष्टपत्रशतपत्रकम् ॥ ७७ ॥ सहस्रदल
भूबिंबसंवीतद्वारसंयुतम् ॥ कैलासाचलमध्यस्थंपीठमेतद्विचिंतयेत् ॥७८॥ तत्रावाह्ययजेद्देवीमुप
चारैर्मनोहरैः ॥ त्रिकोणमध्येदेवेशींतदग्न्यादिषुचांगकम् ॥७९॥ वार्तालीचापिवाराहीपूज्यावाराह
मुख्यपि॥त्रिकोणेष्वथपंचास्रेष्वंधिनीरुंधिनीतथा ॥ ८०॥ जंभिनीमोहिनीचापिस्तंभिनीज्यातु
पंचमी ॥ षट्कोणेषुपुनःपूज्याडाकिनीराकिनीतथा ॥ ८१ ॥ लाकिनीकाकिनीचापिशाकिनीहा
किनीपुनः ॥ षट्कोणपार्श्वयोःपूज्यंस्तंभिनीक्रोधिनीद्वयम् ॥ ८२ ॥ मुसलेष्टवरौत्वाद्याकपालह
लभृत्परा॥षट्कोणाग्रेयजेच्चंडोच्चंडंतस्याःसुतोत्तमम् ॥ ८३ ॥

॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ स्तंभिनीध्यानेइष्टोवरोदक्षेमुसलंवामे ॥ पराक्रोधिनी ॥ कपालहलभृत कपालंदक्षे ॥ देवीसुतायचंडोच्चंडायनमइतिसुतपूजा ॥ ८३ ॥

सुतध्यानमाह शूलमिति ॥ डमरुकपालेदक्षयोः ॥ शूलनागौवामयोः ॥ ८४ ॥ वार्तालीमुखं वार्ताल्यादि ॥ देव्यष्टकमनंतरोक्तं वार्तालीवाराहीवाराहमुख्यंधिनीरुंधिनीजंभिनीमोहिनीस्तंभिनीसंज्ञकम् ॥ रुद्राः एकादश वीरभद्रादयः ॥ अर्काःद्वादश धात्रादयः ॥ वसवोष्टौधराद्यः ॥ अश्विनौनासत्यदस्रौ ॥ ८५ ॥ एकैकःपत्रात्रिके

शूलंनागंचडमरुंकपालंदधतंकरैः ॥ इन्द्रनीलनिभंनग्नंजटाभारविराजितम्॥ ८४॥ अष्टपत्रेषुवार्ता
लीमुखदेव्यष्टकयजेत् ॥ शतपत्रेषुसपूज्यारुँद्रा[११]र्कां[१२]वसँवोश्विनौ ॥ ८५ ॥ त्रिरेकैकोंत्यपत्रेतुजंभिनी
स्तंभिनीयुता ॥ शतकोणाग्रतःपूज्यःसिंहोमहिषसयुतः ॥ ८६ ॥ सहस्रपत्रेवाराहींपूजयेत्तुसह
स्रशः ॥ अकुशोङेंतवाराहीनमोंतस्तन्मनुःस्मृतः ॥८७॥ भूपुरद्वारदेशेतुबटुकंक्षेत्रपालकम् ॥ योगि
नींगणनाथंचतत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ॥८८॥ फांतःसबिंदुर्बटुकोङेंतोहृत्सप्तवर्णकः ॥ मेरुःशशियुतः
क्षेत्रपालायनमसान्वितः ॥८९॥

पूज्यः ॥ एवंनवनवतिः ॥ चरमपत्रेतुजंभिनीस्तंभिनीभ्यांनमइति ॥ ८६ ॥ वाराहीमंत्रमाह ॥ अंकुश इति ॥ क्रौंवाराह्यैनमःइतिमंत्रेणसहस्रवारंवाराहीमेवपूजयेत् ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ बटुकमंत्रमाह ॥ फांतइति ॥फांतोबः॥ बंबटुकायनमइति ॥ क्षेत्रपालमंत्रमाह ॥ मेरुरिति ॥ मरुःक्षः ॥ क्षंक्षेत्रपालायनमःइति ॥ ८९ ॥

योगिनीमंत्रमाह ॥ अष्टार्णइति ॥ वायुर्यः शेषयुक्आयुतःसचंद्रोबिंदुयुतश्च यांयोगिनीभ्योनमइति ॥ गणेशमंत्रमाह ॥खांतइति ॥ खांतोगः ॥ गंगणपतयेनमइति ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ बटुकस्यबलिमंत्रमाह ॥ एहीति ॥ ॥ ९३ ॥ सदृक्जलमियुतोवः ॥ वि ॥ ९४ ॥ वह्निपत्नीस्वाहा ॥ स्वरूपमपरं ॥ शरपंचाक्षरः पंचपंचाशदर्णः ॥

अष्टार्णःशेषयुग्वायुःसचन्द्रोयोगिनीपदम् ॥ भ्योनमोंतःसप्तवर्णःखांतश्चंद्रान्वितोगण ॥ ९० ॥पतयेहृच्चाष्टवर्णाःप्रोक्तास्तेमनवःक्रमात् ॥ दिक्पालानायुधैर्युक्तान्दिक्षुसंपूजयेत्ततः ॥९१॥ पूजांते बटुकादिभ्योबलिमंत्रैर्बलिंहरेत् ॥ बलिदानोचितामंत्राःकीर्त्यंतेखिलसिद्धिदाः॥९२ ॥ एह्येहीतिपदंप्रोच्यदेवीपुत्रेतिकीर्तयेत् ॥ बटुकांतेनाथकपिलजटाभारभासुर ॥ ९३ ॥ त्रिनेत्रज्वालाशब्दांतेमुखसर्वजलंसदृक् ॥ घ्नान्नाशययुगंसर्वोपचारसहितंबलिम् ॥ ९४ ॥गृह्णयुग्मंवह्निपत्नीशरपंचाक्षरो मनुः ॥ बटुकस्यबलिंदद्यादनेनश्रद्धयान्वितः ॥ ९५ ॥ मेरुःषड्दीर्घयुग्वर्मस्थानक्षेत्रपदंवदेत्॥पालेशसर्वकामंचपूरयाननवल्लभा ॥ ९६ ॥ त्रयोविंशतिवर्णाढ्यःक्षेत्रपालमनुर्मतः ॥ योगिनीनामथो मंत्रःपद्यरूपःप्रपद्यते ॥९७ ॥

यथा–एह्येहिदेवीपुत्रबटुकनाथकपिलजटाभारभासुरत्रिनेत्रज्वालामुखसर्वविघ्नान्नाशय २ सर्वोपचारसहितंबलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥ ९५ ॥ क्षेत्रपालबलिमंत्रमाह ॥ मेरुरिति ॥ मेरुःक्षः ॥ षड्दीर्घयुक् क्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षः हुंस्थान क्षेत्रपालशसर्वकामंपूरयस्वाहेति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

योगिनीबलिमन्त्रमाह ॥ ऊर्ध्वमित्यादि ॥ ९८ ॥ स्वाहांतःस्वरूपमेव ॥ भूमिनन्दाक्षरः एकनवतिवर्णः पद्येनसह ॥ ९९ ॥ गणेशबलिमंत्रमाह ॥ दीर्घेति ॥ शार्ङ्गिगः दीर्घत्रयेंदुयुक् गांगींगूं ॥ सेंदुर्ग मारुतो यः भगवान्एयुतः ॥ये तोयंवः ॥ १०० ॥ लोहितःपः ॥ दीर्घोंहलींचा ॥ शिरःस्वाहा ॥ १०१ ॥ गगनश्रुति

ऊर्द्धंब्रह्मांडतोवादिविगगनतलेभूतलेनिष्कलेवापातालेवातलेवासलिलपवनयोर्यत्रकुत्रस्थितावा ॥
क्षेत्रेपीठोपपीठादिषुचकृतपदाधूपदिपादिकेनप्रीतादेव्यःसदानःशुभबलिविधिनापांतुवीरेंद्रवंद्याः ॥
॥९८॥ यांयोगिनीभ्यःस्वाहांतोभूमिनंदाक्षरोमनुः॥ योगिनीनांबलिंदद्यादनेनविधिपूर्वकम्॥९९॥
दीर्घत्रयेंदुयुक्सेंदुःशार्ङ्गीगणपतार्णकाः ॥ मारुतोभगवांस्तोयंरवरांतेदसर्वंच॥ १००॥जनंमेवशमा
नांतेयःसर्वोंलोहितोहली॥दीर्घोरसहितंग्रांतेबलिंगृह्णयुगंशिरः ॥ १ ॥ गणेशबलिमंत्रोयंगगनश्रुति
वर्णवान् ॥ एवंतेभ्योबलिंदत्त्वास्वस्वमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ २ ॥ अंगुष्ठंतर्जनीयुक्तंदर्शयेद्बटुकेबलौ ॥
अंगुष्ठानामिकेवामेक्षेत्रपालबलौमता ॥ १०३ ॥

पर्णवान् चत्वारिंशद्वर्णः ॥ यथा–ॐ गांगींगूंगंगणपतयेवरवरदसर्वजनंमेवशमानयसर्वोंपचारसहितंबलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहेति ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

॥ १०४ ॥ १०५॥ १०६॥ १०७ ॥ १०८ ॥ तापिच्छंनामतमालपुष्पम्॥ लाजानांचूर्णयुतैस्तिलैःखरमेषरुधिरयुतैः
॥ १०९ ॥ सपत्नसदनंशत्रुगृहम् ॥ एतस्मैपिंडाय ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ यंत्रमाह ॥ विलि

किंचिद्वक्रीकृतामध्यागणनाथबलौस्मृता।अनामामध्यमांगुष्ठायोगिनीनांबलौपुनः॥१०४॥एवंसंपू
ज्यसंस्तुत्यनत्वात्मन्युपसंहरेत् ॥ सिद्धमंत्रःप्रकुर्वीतप्रयोगाञ्छिवभाषितान्॥१०५॥हरिद्रयाचन्द
नेनलाक्षयागुरुणापिच॥ पुरेणविविधैर्मांसैर्जुहुयादिष्टसिद्धये ॥१०६ ॥ हरिद्रामालयाकुर्य्याज्जपं
स्तंभनकर्मणि ॥ स्फाटिकैःपद्मबीजैश्चरुद्राक्षैःशुभकर्मणि ॥१०७॥ स्वर्णादिपात्रैःसुरयाबंधूककुसु
मैस्तिलैः ॥ वाराहींतर्प्पयेत्सम्यक्कामसंपूर्तयेनरः ॥१०८॥ चतुःशतंतुतापिच्छैर्जुहुयात्स्तंभनेच्छ
या ॥ लाजचूर्णतिलैःकुर्य्यात्खरमेषासृजान्वितैः ॥१०९॥पिंडंमनोहरंतंतुपूजयेत्तर्पयेदपि॥सपत्नस
दनंसांगमेतस्मैविनिवेदयेत्॥११० ॥ कुंडेपिंडंनिधायामुंजुहुयात्तत्रचायुतम्॥एकविंशतिरात्रीषुला
जैरक्तसमन्वितैः॥१११॥एवंकृतेवैरिवृंदंभक्ष्यतेयोगिनीगणैः॥अथयंत्रंमहादेव्याःप्रोच्यतेशकटाभि
धम्॥११२॥विलिख्यतारंसाध्याख्यंभूबीजेनप्रवेष्टयेत्॥उकारेणचसंवेष्ट्यभूपुरंपार्श्वतोलिखेत् ११३

ख्येति ॥ तारंप्रणवं ॥ साध्याख्यंसाध्यनाम ॥ भूबीजेन ग्लौमितिबीजेन ॥ ११३॥

कर्मसमान्वितम् अमुकमुच्चाटयेतिक्रियायुतम् ॥ ११४ ॥ धराबीजंतद्देव ॥ अंकुशःक्रों ॥ झिंटीशः एकारः ॥ ११५ ॥ नूतनेनवीने ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ रात्र्याहरिद्रया ॥ पाषाणेलिखित्वाग्नौनिःक्षिप्तंतापकारि ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ साध्यर्क्षतरवः साध्यस्ययज्जन्मनक्षत्रंतस्यवृक्षमध्येक्षिप्तंतेषांदुःखदम् ॥ तेचपूर्वमुक्ताः ॥ साधितं

अष्टवज्रान्वितंवज्रप्रांतेप्रणवमालिखेत् ॥वज्रमध्येसाध्यनामलिखेत्कर्मसमन्वितम् ॥११४॥ धराबीजेनसंवेष्टचभूपुरंमूलविद्यया ॥ बहिरंकुशसंवीतंझिंटीशेनप्रवेष्टयेत् ॥ ११५॥एतद्यंत्रंसमालिख्यनूतेकौलालखर्परे ॥ कृष्णपुष्पैःसमभ्यर्च्यनिःक्षिपेत्त्वारिवेश्मनि ॥११६॥ रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रंस्थितंवर्षशतान्यपि ॥ वादित्रेयंत्रमालिख्यवादयेत्समरांतरे ॥ ११७॥श्रुत्वातद्रवसंत्रस्ताःपलायंतेविरोधिनः ॥पाषाणेलिखितंरात्र्यापीतपुष्पेषुनिःक्षिपेत् ॥ ११८ ॥ संपूजितमधोवक्त्रंवाचंसंस्तंभयेद्द्विषाम् ॥ तापकार्यग्निनिःक्षिप्तंजलेदोषप्रदंभवेत् ॥११९॥साध्यर्क्षतरुगर्भस्थंशत्रूणांदुःखदायकम् ॥ किंबहूक्तेनसर्वेष्टंसाधयेत्साधितंनृणाम् ॥१२०॥ इतिश्रीमहीधरविरचितमंत्रमहोदधौबगलादिमंत्रकथनंनामदशमस्तरंगः ॥१०॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

संपातादिनाप्रतिष्ठितमेतद्यंत्रंसर्वेष्टंसाधयेत् ॥ १२० ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांबगलादिनिरूपणंनामदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीविद्यांवक्तुंमंगलमाचरति ॥ त्रिनेत्रमिति ॥ मंत्रनायिकां त्रिलोकीवार्तिनांसर्वमंत्राणांस्वामिनीम् ॥ उत्पादिकामित्यर्थः ॥ १ ॥ अपरीक्षितायशिष्यायतांविद्यांनदद्यात् ॥ आत्मादयःशिरोदेयंनदेयाषोडशाक्षरीति वचनात् ॥ २ ॥ मंत्रमुद्धरति ॥ तारमिति ॥ तार ॐ ॥ मायाह्रीं ॥ कमलाश्रीं ॥ एतद्बीजत्रयंकूटत्रयादौ पठेत्॥ आद्यकूटमाह ॥ ब्रह्मेति ॥ ब्रह्माकः ॥ झिंटीश ए ॥ गोविंद ई ॥ धरा लः ॥ मायेति-प्रथमंकूटं

ॐ त्रिनेत्रंकमलाकातंनृसिंहंचंद्रशेखरम् ॥ नत्वासंक्षेपतोवक्ष्येश्रीविद्यांमंत्रनायिकाम् ॥ १ ॥ अपरीक्षितशिष्यायतांनदद्यात्कदाचन ॥ यदुच्चारणमात्रेणपापसंघःप्रलीयते ॥ २ ॥ तारंमायांचकमलामादौबीजत्रयंपठेत् ॥ ब्रह्मझिंटीशगोविंदधरामायेतिचादिमम् ॥ ३ ॥ आकाशभृगुचक्र्यभ्रमांसमायाद्वितीयकम् ॥ हंसधातृक्षमामायातृतीयंबीजमीरितम् ॥ ४ ॥

कएइलह्रीमिति ॥ ३ ॥ द्वितीयमाह ॥ आकाशेति ॥ आकाशोहः ॥ भृगुःसः ॥ चक्रीकः ॥ अभ्रंहः ॥ मांसंलः ॥ मायेति-द्वितीयंकूटं हसकहलह्रीमिति ॥ तृतीयमाह ॥ हंसेति ॥ हसः सः ॥ धाताकः ॥ क्षमालः॥ मायाचेति-तृतीयंकूटं सकलह्रीमिति ॥ ४ ॥

कूटत्रयस्यसंज्ञाआह ॥ वागिति ॥ प्रथमंवाग्बीजं ॥ द्वितीयंकामबीजं ॥ तृतीयंशक्तिबीजं॥श्रीःश्रीबीजं ॥ माया ह्रीं॥ कामःक्लीं ॥ वाक्ऐं ॥ शक्तिःसौः ॥ एतैः पञ्चबीजैःक्रमोत्क्रमाभ्यांसंपुटापूर्वोक्तषडर्णा ॥ ५ ॥ षोडशाक्षरी श्रीविद्याभिधामहाविद्या ॥ ६ ॥ भृगुःसः ॥ औःस्वरूपं ॥ तेनसौःशक्तिः ॥ कामबीजंक्लीं॥७॥ न्यासानाह ॥

वाक्कामशक्तिसंज्ञंतुक्रमाद्बीजत्रयंभवेत् ॥ इयंषडर्णाश्रीमायाकामवाक्छक्तिसंपुटा ॥ ५ ॥ अनेकपुण्यसंप्राप्याश्रीविद्याषोडशाक्षरी ॥ मुनिःस्याद्दक्षिणामूर्तिःपंक्तिश्छंदःसमीरितम् ॥ ६ ॥ देवताजगतामादिःश्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥ बीजमैंभृगुरौःशक्तिःकामबीजंतुकीलकम् ॥ ७ ॥ मूर्द्धास्यहृद्गुह्यपादेनाभौमुन्यादिकान्न्यसेत् ॥ न्यासान्सर्वान्प्रकुर्वीतमायाश्रीबीजपूर्वकान् ॥ ८ ॥

मूर्धेति ॥ दक्षिणामूर्तयेनमोमूर्ध्नि ॥ पंक्त्यैनमोमुखे ॥ त्रिपुरसुन्दर्यैनमोहृदि॥ऐंबीजायनमोगुह्ये॥ सौःशक्तयेनमः पादयोः ॥ क्लींकीलकायनमोनाभौ ॥ इतिमुन्यादिन्यासः ॥ ८ ॥

---

[१] श्रींह्रींक्लींऐंसौः ॐह्रींश्रींकएईलह्रींहसकहलह्रींसकलह्रीं।सौःऐंक्लींह्रींश्रींमितिषोडशाक्षरी। [२] अस्यत्रिपुरसुंदरीमंत्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिःपंक्तिश्छंदःश्रीमत्रिपरसुंदरीदेवताऐंबीजंसौःशक्तिःक्लींकीलकंममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

अन्यान्न्यासानाह ॥मध्येति ॥ इमानश्रीकण्ठादिनमोंतान्द्विर्वारद्वयंमध्यानामिकाकनिष्ठांगुष्ठतर्जनीतलपृष्ठेषुन्यसेत् ॥ ९ ॥ इमान्कानित्यतआह ॥ श्रीति ॥ श्रीकंठोऽकारः ॥ अनंतआकारः ॥ सौस्वरूपम् ॥ क्रमाद्विंद्वादियुतान् अंआंएतौसबिंदू ॥ सौःसर्गी ॥ तथा–मायाश्रीबीजपूर्वकानिति सर्वन्यासेषुसंबद्धयते ॥ ह्रींश्रींअंमध्यमाभ्यांनमः ॥ ह्रींश्रींआंअनमिकाभ्यांनमः॥ ह्रीं श्रींसौःकनिष्ठिकाभ्यांनमः ॥ ह्रींश्रींअंअंगुष्ठाभ्यांनमः ॥

मध्यानामाकनिष्ठासुज्येष्ठयोस्तर्जनीद्वयोः॥तलेपृष्ठेचकरयोर्विन्यसेद्विष्क्रमादिमान् ॥ ९ ॥ श्रीकण्ठानंतसौवर्णान्बिंदुसर्गसमन्वितान् ॥नमोंतान्करशुद्ध्याख्योन्यासोयंपरिकीर्तितः ॥ १० ॥ देव्यासनंचप्रथमंतथाचक्रासनंक्रमात् ॥ सर्वमन्त्रासनंसाध्यसिद्धासनमितिन्यसेत् ॥ ११ ॥ ङेनमोंतंचबीजाढ्यंपज्जंघाजानुलिंगके ॥ मायांकामंशक्तिबीजंप्रथमासनपूर्वकम् ॥ १२ ॥ वियदारूढवाक्कामशक्तिबीजानिपूर्वतः ॥ द्वितीयेसंप्रयोज्यानिसहपूर्वाणितत्परे ॥ १३ ॥

ह्रींश्रींआंतर्जनीभ्यांनमः ॥ ह्रींश्रींसौःकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥ अयंकरशुद्धिन्यासः ॥ १० ॥ आसनन्यासमाह देव्येति ॥ देव्यासनाद्यासनचतुष्कं ङेनमोंतं चतुर्थीनमोंतंबीजाद्यं मायामित्यादिवक्ष्यमाणप्रातिस्विकबीजपूर्वं पज्जंघाजानुलिंगेषुन्यसेत् ॥ प्रथमासनबीजान्याह ॥ मायामिति ॥ शक्तिःसौः॥चक्रासनबीजान्याह ॥ वियदिति ॥ वियत्हः ॥ तद्युतानिवागादीनि ॥ तत्परे तृतीयासने ॥ सहपूर्वाणि वागादीनि ॥ ११॥१२॥१३ ॥

चतुर्थासनबीजान्याह ॥ मायामिति ॥ फांतमांसेबलौं. ॥ भगेंद्राढचेएबिंदुयुतेतेनब्ले ॥ यथा–ह्रींश्रींह्रींक्लींसौः देव्यासनायनमःपादयोः ॥ ह्रींश्रींहैंक्लींसौःचक्रासनायनमःजंघयोः ॥ ह्रींश्रींहैंक्लींसौःसर्वमंत्रासनायनमःजान्वोः॥ ह्रींश्रींह्रींक्लींब्लेंसाध्यसिद्धासनायनमोलिंगेइत्यासनन्यासः ॥१४ ॥ षडंगमाह ॥ ततइति ॥ श्रींह्रींक्लीं ऐंसौःहृदयं ॥ ॐ ह्रींश्रींशिरः ॥ आद्यकूटेनशिखा ॥ मध्यकूटेनकवचं ॥ तृतीयकूटेननेत्रं ॥ सौःऐंक्लींह्रींश्रींअस्त्रम्

मायांकामंफांतमांसेभगेंद्राढचेप्रयोजयेत् ॥ तुरीयासनपूर्वाणीत्यासनन्यासईरितः ॥ १४ ॥ ततः
षडंगंकुर्वीतपंचभिस्त्रिभिरेकतः॥एकेनैकेनपंचार्णैर्मंत्रस्यक्रमतःसुधीः॥१५ ॥ मूलविद्यांसमुच्चार्य्य
प्रणवादिनमोंतिकाम्॥मध्यमानामिकाभ्यांतुब्रह्मरंध्रेप्रविन्यसेत् ॥ १६ ॥ सुधांस्रवंतींवर्णेभ्यःप्लाव
यंतींनिजांतनुम् ॥ प्रदीपकलिकाकारांमहासौभाग्यदांस्मरेत् ॥ १७॥ मुद्रांकृत्वावामकर्णेपरसौभा
ग्यदंडिनीम् ॥ वाममूर्द्धादिपादांतंतथामूलंप्रविन्यसेत् ॥ १८ ॥

इतिषडंगन्यासः ॥ १५ ॥ मंत्रवर्णेभ्योऽमृतंक्षरंतींतेननिजंशरीरमाप्लावयंतींप्रदीपकलिकाकारांब्रह्मरंध्रस्थांसौभाग्यदांदेवींध्यायन्सतारादिनमोंतंमूलंमध्यमानामिकाभ्यांशिरसिन्यसेत् ॥ १६ ॥ १७ ॥ पुनर्वामकर्णेपरसौभाग्यदंडिनींमुद्रांकृत्वावामपार्श्वेमूर्धादिपादांतंतारादिनमोन्तं मूलंन्यसेत् ॥ १८॥

रिपुजिह्वाग्रहांमुद्रांदर्शयन्सर्वशत्रून्निगृह्णामीतिसंचिंत्यपादमूलेतारादिनमोंतंमूलंन्यसेत् ॥सकललोककर्ताहमिति बीजंविचिंत्यत्रिखंडयामुद्रयाललाटेतारादिनमोंतंमूलंन्यसेत्॥ १९ ॥ २० ॥ मुखेसंवेष्टयंस्तारादिनमोंतंमूलंन्यसेत् । दक्षकर्णतोवामांतंन्यस्यकंठान्मुखांतमेवमेवन्यसेत् ॥२१॥ पुनःप्रणवपुटांविद्यांसर्वांगेन्यसेत्॥मुखेयोनिमुद्रां

त्रिखंडयामुद्रयातुभालेमूलंन्यसेत्तथा ॥ त्रैलोक्यस्याखिलस्याहंकर्त्तेतिस्वंविचिंतयेत् ॥ १९ ॥
रिपुजिह्वाग्रहांमुद्रांदर्शयन्सर्वविद्विषः ॥ निगृह्णामीतिसंचिंत्यपादमूलेतथान्यसेत् ॥ २० ॥ मुखे
संवेष्टयन्न्यस्येत्पुनर्दक्षिणकर्णतः ॥ विन्यस्यवामकर्णांतंकंठाद्वक्त्रंततोन्यसेत् ॥ २१ ॥ तारसं
पुटितांविद्यांसर्वांगेविन्यसेत्पुनः ॥ योनिमुद्रांमुखेबद्ध्वानमेत्त्रिपुरसुंदरीम् ॥ २२ ॥ ब्रह्मरंध्रेहस्तमूले
भालेविद्यांप्रविन्यसेत् ॥ अंगुष्ठानामिकाभ्यांतुन्यासःसम्मोहनाभिधः ॥ २३ ॥

बद्ध्वातथैवदेवींनमेत् ॥ २२ ॥ अयं जगद्वशीकरणन्यासः देवीकांत्याविश्वंरक्तंध्यायन्नंगुष्ठानामिकाभ्यांब्रह्मरंध्रे मणिबंधेललाटेविद्यांन्यसेत् ॥ इतिसंमोहनोन्यासः ॥ २३ ॥

परसौभाग्यदंडिनीमुद्रोक्ता ॥ तल्लक्षणंयथा–वामेमुष्टिंदृढंबद्ध्वातर्जनींप्रविसारयेत् ॥ भ्रामयेद्वामकर्णांतंमुद्रासौभाग्यदंडिनीति ॥ रिपुजिह्वाग्रहणमुद्रालक्षणंतु–अंगुष्ठगर्भितां मुष्टिंबध्नीयाद्दक्षपाणिना ॥ रिपुजिह्वाग्रहाख्येयंमुद्रोक्ताशत्रुनाशिनीति ॥ मुद्रावाम ( पाद ) तलेकृतेति त्रिखंडालक्षणंताराातंत्रेउक्तम् ॥ २४ ॥ अक्षरन्याससंहाराख्यमाह ॥ पादयोरिति ॥ पादादिष्वेकैकमक्षरंन्यसेत् ॥ कर्णवेष्टःकर्णशष्कुली ॥ श्रींनमःपादयोः ॥ ह्रींनमो

जगद्वश्यकराख्योयंन्यासःसंकीर्तितोमया ॥ संस्मरन्नरुणामूलं सुंदरीप्रभयाजगत् ॥२४॥ पादयो
जंघयोर्न्यस्येज्जान्वोश्चकटिभागयोः ॥लिंगेपृष्ठेनाभिदेशेपार्श्वयोःस्तनयोरपि॥२५॥अंसयोःकर्ण
योर्ब्रह्मरंध्रेवक्रेचनेत्रयोः ॥ कर्णयोःकर्णवेष्टेपिमूलस्यैकैकमक्षरम्॥ २६ ॥संहारन्यासउक्तोयंततोवा
ग्देवतांन्यसेत् ॥ तासांबीजानिनामानिन्यासस्थानानिचब्रुवे ॥२७॥ अग्निभूधरमांसाढ्योघींशो
बीजंशशांकयुक् ॥ षोडशस्वरबीजाढ्यांवशिनींशिरसिन्यसेत् ॥ २८ ॥

जंघयोरित्यादिप्रयोगः ॥२५॥॥२६॥ अयंसंहारन्यासः ॥२७॥ वाग्देवतान्यासमाह ॥ अग्नीति ॥ अग्नीरेफः॥भूधरोवः ॥ मांसलः ॥ एतैर्युतोघींशऊकारःशशांकयुक् बिंदुयुतः ॥ तेनब्लूं ॥ षोडशस्वरपूर्वकं तद्बीजपूर्वांवशिनींशिरसिन्यसेत् ॥ यथा–अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः‍ब्लूंवशिनीवाग्देवतायैनमःशिरसि ॥ २८ ॥

क्रोधीशेति ।। क्रोधीशः कः ।। मांसंलः ।। एताभ्यांयुतामायाकलह्रीं ।। कवर्गःपूर्वोयस्येदृशमेतद्बीजमाद्यंयस्यास्तांकामेश्वरींभालेन्यसेत् ।। यथा-कंखंगंघंङंकलह्रींकामेश्वरीवाग्देवतायैनमोललाटे ।। २९ ।। दीर्घेति ।। दीर्घोनकारः ।। खड्गीशोबः ।। रांतोलः ।। एतैर्युताशांतिरीकारः ।। बिंदुयुतातेनब्लीं ।। चवर्गेणतद्बीजेनचयुतांमोहिनींभ्रूमध्येन्यसेत् ।। यथा-चंछंजंझंञंःब्लींमोहिनीवाग्देवतायैनमोभ्रूमध्ये ।।३०।। अर्घीशेति ।। अर्घीशिऊ ।। कीदृशः ।।

क्रोधीशमांसयुङ्मायाद्वितीयंबीजमीरितम् ॥ कवर्गपूर्वबीजाद्यांभालेकामेश्वरींन्यसेत् ॥२९॥ दीर्घखड्गीशरांताढ्यशांतिबिंदुसमन्विताम् ॥ चवर्गतद्बीजयुतांभ्रूमध्येमोहिनींन्यसेत् ॥ ३० ॥ अर्घीशोवायुमांसस्थोबिंद्वाढ्यस्तत्तुरीयकम् ॥ टवर्गबीजपूर्वांतुविमलांविन्यसेद्गले ॥ ३१॥ शूलिवैकुंठरेफस्थंवामनेत्रंसबिंदुतत् ॥ तवर्गबीजसंयुक्तांविन्यसेदरुणांहृदि ॥ ३२ ॥

वायुमांसस्थः ।। यलौस्थितौयस्मिन् ।। बिंदुयुतस्तत्तुरीयंचतुर्थंवाग्देवताबीजं ॥ तेनय्लूं ॥टवर्गस्तद्बीजंचपूर्वंयस्यास्तांविमलांकंठेन्यसेत् ।। यथा-टंठंडंढंणंय्लूं विमलावाग्देवतायैनमःकंठे ॥ ३१ ॥ शूलीति ॥ वामनेत्रमी ॥ कीदृशं ॥ शूलीजः-वैकुंठोमः-रेफस्तेस्थितायत्रतत् सबिंदुच ॥ ईदृशंतद्बीजं ॥ तेनज्म्रीं ॥ तवर्गबीजाभ्यांयुतामरुणांहृदिन्यसेत् ॥ यथा-तंथंदंधंनंज्म्रींअरुणावाग्देवतायैनमोहृदि ॥ ३२ ॥

वामेति ॥ वियत्‌हः ॥ हंसःसः ॥ मांसंलः ॥ वालोवः ॥ अनिलोयः ॥ इंदुर्बिंदुः ॥ एतैर्युक्तोवामकर्णऊकारः ॥ तेनह्ल्स्ल्व्यूं ॥ पवर्गएतद्बीजंचपूर्वंयस्यास्तांजयिनींनाभौन्यसेत् ॥ यथा–पंफंबंभंमंह्ल्स्ल्व्यूंजयिनीवाग्देवतायैनमो नाभौ ॥ ३३ ॥ पाशीति ॥ दीपिकाऊकारः कीदृशी ॥ पाशीझः ॥ तंद्रीमः ॥ रेफः ॥ वायुर्यः ॥ तैःसंयुताइंदुयुक् ॥ तेन झ्म्र्यूं ॥ यवर्गोबीजंचाद्यंयस्यास्तांसर्वेश्वरींमूलाधारेन्यसेत् ॥ यथा–यंरंलंवंझ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायैनमो

वामकर्णोवियद्धंसमांसवालानिलेंदुयुक् ॥ पवर्गतद्बीजपूर्वांजयिनींनाभितोन्यसेत्॥३३॥पाशीतंद्री
रेफवायुसंयुतादीपिकेंदुयुक्॥ यवर्गबीजाद्यांमूलाधारेसर्वेश्वरींन्यसेत् ॥ ३४ ॥ संवर्तकमहाकालरे
फस्थाशांतिरिंदुयुक् ॥ कौलिनीशादिबीजाद्यांन्यसेत्पादांतमूरुतः ॥३५॥ वाग्देवतायैहार्दांतनामां
तेप्रोच्चरेत्पदम् ॥ उक्तोवाग्देवतान्यासःसृष्टिन्यासमथाचरेत् ॥३६ ॥

मूलाधारे ॥ ३४ ॥ संवर्तकेति ॥ संवर्तकःक्षः ॥ महाकालोमः ॥ रेफः ॥ एतैर्युताबिंदुयुताचशांतिःई ॥ तेनक्ष्म्रीं शादयोबीजंचाद्यंयस्यास्तांकौलिनीमूर्वादिपादांतंन्यसेत् ॥ शंषंसंहंळंक्षंक्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायैनमऊर्वादिपादांतम् ॥ ३५ ॥ वागिति ॥ हार्दंनमः ॥ वाग्देवतायैनमइतिपदं नामांते वशिन्यादिनामांते प्रोच्चरेत् इति तत्त्रयोगेषुलिखितम् ॥ ३६ ॥

सृष्टिन्यासमाह ॥ ब्रह्मरंध्रइति ॥ ब्रह्मरंध्रादिष्वेकैकंवर्णंन्यसेत् ॥ आद्यंब्रह्मरंध्रे ॥ द्वितीयंललाटे ॥ तृतीयंदृशोः ॥ चतुर्थंकर्णयोः ॥ पंचमंनसोः ॥ षष्ठंगंडयोः ॥ सप्तमंदंतेषु ॥ अष्टममोष्ठयोः ॥ नवमंजिह्वायाम् ॥ दशमंमुखमध्ये ॥ एकादशंपृष्ठे ॥ द्वादशंसर्वांगे ॥ त्रयोदशंहृदि ॥ चतुर्दशंस्तनयोः ॥ पंचदशं कुक्षौ ॥ षोडशंलिंगे ॥ ३७ ॥

ब्रह्मरंध्रेललाटेचनेत्रयोःकर्णयोर्नसोः ॥ गंडदंतोष्ठजिह्वासुमुखकूपेचपृष्ठतः॥३७॥ सर्वाङ्गेहृदयेन्यस्येत्स्तनकुक्षिध्वजषुच ॥ एकैकार्णमथोमूर्ध्निसर्वैर्णव्यापकंचरेत् ॥३८॥ सृष्टिन्यासंविधायैवंस्थितिन्यासमथाचरेत् ॥ करांगुष्ठाद्यंगुलीषुब्रह्मरंध्रेमुखेहृदि ॥ ३९ ॥ नाभ्यादिपादपर्य्यंतंनाभ्यंतंकंठदेशतः॥ ब्रह्मरंध्राच्चकंठांतंपादांगुलिषुपंचवा ॥ ४० ॥ अथपंचविधंन्यासंवक्ष्येसर्वेष्टसिद्धिदम्॥मंत्रंपंचावृत्तिरूपंयेनतद्रूपतांव्रजेत् ॥ ४१॥ मूर्ध्निवक्त्रेदृशोःश्रुत्योर्नसोर्गंडोष्ठयोरपि॥वक्त्रमध्येदंतपंक्त्योर्वदनेविन्यसेत्क्रमात् ॥ ४२ ॥

॥ ३८ ॥ स्थितिन्यासमाह ॥ करेति ॥ पंचकरांगुलीषु ॥ षष्ठंब्रह्मरंध्रे ॥ सप्तमंमुख ॥ अष्टमंहृदि ॥ ३९ ॥ नवमंनाभ्यादि पादांतम् ॥ दशमंकंठादिनाभ्यंतम् ॥ एकादशंब्रह्मरंध्रात्कंठांतं ॥ पंचपादांगुलीषु ॥ ४० ॥ पंचावृतिन्यासमाह ॥ मूर्ध्नीति ॥ दृशोर्द्वे ॥ श्रुत्योर्द्वे ॥ नसोर्द्वे ॥ गंडयोर्द्वे ॥ ओष्ठयोर्द्वे ॥ दंतयोर्द्वे शेषेष्वेकैकम् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

द्वितीयमाह ॥ शिखेति ॥ शिखाशिरोभालभ्रूनासामुखेषुषट् ॥ ४३ ॥ दक्षकरसंध्यग्रेषुपंच ॥ एवंवामेपंच ॥ तृतीयमाह ॥ शिरोभालनेत्रास्याजिह्वासुषट् ॥ ४४ ॥ दक्षपादसंध्यग्रेषुपंच ॥ वामपादेपंच॥चतुर्थमाह ॥ स्वरेति॥

एकैकवर्णांविद्यायाइत्येकोन्यासईरितः ॥ ।शिखाशिरोललाटंभ्रूर्घ्राणवक्त्रेषडर्णकान् ॥ ४३ ॥ करसंधिषुसाग्रेषुदशेतिस्याद्द्वितीयकः ॥ शिरोललाटनेत्रास्यजिह्वायांषण्न्यसेत्पुनः ॥ ४४ ॥ पादसंधिषुसाग्रेषुदशेतिस्यात्तृतीयकः ॥ स्वरंस्थानेचतुर्थस्तुललाटेचगलेहृदि ॥४५॥ नाभौचमूलाधारेपि ब्रह्मरंध्रेमुखेगुदे ॥ आधारेहृद्ब्रह्मरंध्रेकरयोःपादयोर्हृदि॥ ४६ ॥ एवंपंचविधंकृत्वाविद्याप्रणवसंपुटाम् ॥ सर्वस्मिन्व्यापयेदंगेनमोंतांतांहृदिन्यसेत् ॥ ४७ ॥

मातृकान्यासेस्वरस्थानान्युक्तानि ॥ तेषुषोडशबीजानिन्यसेत् ॥ पंचममाह ॥ ललाटइति ॥ ४५ ॥ करयोर्द्वे ॥ पादयोर्द्वे ॥ अन्यत्रैकैकम् ॥ ४६ ॥ प्रणवपुटितांविद्यांसर्वांगेन्यसेत् ॥ नमोंतांहृदिच ॥ ४७ ॥

---

१ स्वरस्थानेमंत्रवर्णान्न्यसेदित्यर्थः ।

षोढान्यासादयोविस्तरभयान्नोक्तास्तेउच्यंते ॥ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठलक्षणाः षोढान्यासाः॥गणेशमातृकामंत्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिःगायत्रीछंदःश्रीमातृकासुंदरीदेवताममोपास्यश्रीविद्यांगत्वेनषोढान्यासेविनियोगः॥ अंकं ५ आंऐंहृत्॥ इंचं५ ईंक्लींशिरः ॥उंटं ५ ऊँसौःशिखा ॥ एंतं ५ ऐंसौःकवचम् ॥ ओं पं ५ औंक्लींनेत्रम् ॥ अंयं १० अःऐंअस्त्रम् ॥ ध्यानम्–उद्यत्सूर्यसहस्राभांपीनोन्नतपयोधराम् ॥ रक्तमाल्यांबरालेपरक्तभूषणभूषिताम् ॥ पाशांकुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम् ॥ रक्तनेत्रत्रयांस्वर्णमुकुटोद्भासिचंद्रिकाम् ॥ एवंध्यात्वान्यसेद्बीजपूर्वंगंअंविघ्नेशह्रींभ्यांनमः ॥ गंआंविघ्नराजश्रीभ्यांनमःइत्यादिमातृकास्थलेन्यसेत्॥गणेशाःशक्तियुक्ताएकाविंशतरंगेमूलेग्रंथकारेणैवोक्ताः ॥ इतिगणेशमातृकान्यासः ॥(१)॥

षोढान्यासादयोन्यासाःकार्य्याःसौभाग्यवांछया ॥नोच्यंतेविस्तरभयान्नैवचावश्यकाश्चते॥४८॥

अथग्रहमातृकामंत्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिरित्यादिपूर्ववत्। षडंगंच ॥ ग्रहरूपिणीसुंदरीदेवता ।ध्यानम् ॥ रक्तंश्वेतंतथारक्तंश्यामंपीतंचपांडुरम् ॥ धूम्रकृष्णंचधूम्रंचधूमधूम्रंविचिन्तयेत् ॥ रविमुख्यान्कामरूपान्सर्वाभरणभूषितान्॥ वामोरुन्यस्तहस्तांश्चदक्षिणेनवरप्रदान् ॥एवंध्यात्वामातृकापूर्वान्ग्रहान्न्यसेत् ॥ अं १६ सूर्यायरेणुकांबायैनमःहृदि ॥ १ ॥ यं ४ चंद्रायामृतांबायैनमःभ्रूमध्ये ॥२॥ कं ५मंगलायधामांबायैनमोनेत्रयोः ॥ ३ ॥ चं ५ बुधायज्ञानरूपांबायैनमोहृदि ॥४ ॥ टं ५ बृहस्पतयेयशस्विन्यंबायैनमोहृदयोपरिभागे ॥ ५ ॥ तं ५ शुक्रायशांकर्यंबायैनमःकंठे ॥ ६ ॥ पं ५ शनैश्चरायशक्त्यंबायैनमोनाभौ ॥ ७ ॥ शं ४ राहवेकृष्णांबायैनमोमुखे ॥ ८ ॥ ळंक्षंकेतवेधूम्रांबायैनमोगुदे ॥ ९ ॥ इतिग्रहमातृकान्यासः ॥

( २ ) नक्षत्रमातृकामन्त्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्गायत्रीछंदः। नक्षत्ररूपिणीसुंदरीदेवता। श्रीविद्यांगत्वेनन्यासेविनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ ज्वलत्कालाग्निसंकाशाःसर्वाभरणभूषिताः ॥ नातिपाण्योऽश्विनीमुख्यावरदाभयपाणयः ॥ एवंध्यात्वामातृकापूर्वंनक्षत्राणिन्यसेत् ॥ यथा–अंआंआश्विन्यैनमोललाटे ॥ १ ॥ इंभरण्यैनमोदक्षनेत्रे ॥ २ ॥ ईंउंऊंकृत्तिकायैनमोवामनेत्रे ॥ ३ ॥ ऋंॠंऌंॡंरोहिण्यैनमोदक्षनेत्रे ॥ ४ ॥ एंमृगशिरसेनमोवामकर्णे ॥ ५ ॥ ऐंआर्द्रायैनमोदक्षनासि ॥ ६ ॥ॐ औंपुनर्वसवेनमोवामनासि ॥ ७ ॥ कंपुष्यायनमः कण्ठे ॥ ८ ॥ खंगंआश्लेषायैनमोदक्षस्कन्धे ॥ ९ ॥ घंङंमघायैनमोवामस्कन्धे ॥ १० ॥ चंपूर्वाफाल्गुन्यैनमोदक्षकूर्परे ॥ ११ ॥ छंजंउत्तराफाल्गुन्यैनमोवामकूर्परे ॥ १२ ॥ झंञंहस्तायनमोदक्षमणिबंधे ॥ १३ ॥ टंठंचित्रायैनमोवाममणिबन्धे ॥ १४ ॥ डंस्वात्यैनमोदक्षहस्ते ॥ १५ ॥ ढंणंविशाखायैनमोहस्ते ॥ १६ ॥ तंथंदंअनुराधायैनमोनाभौ ॥ १७ ॥ धंज्येष्ठायैनमोदक्षकटौ ॥ १८ ॥ नंपंफंमूलायनमोवामकटौ ॥ १९ ॥ बंपूर्वाषाढायैनमोदक्षोरौ ॥ २० ॥ भंउत्तराषाढायैनमोवामोरौ ॥ २१ ॥ मंश्रवणायनमोदक्षजानुनि ॥ २२ ॥ यंरंधनिष्ठायैनमोवामजानुनि ॥ २३ ॥ लंशतभिषायैनमोदक्षजंघायाम् ॥ २४ ॥ वंशंपूर्वाभाद्रपदायैनमोवामजंघायाम् ॥ २५ ॥ षंसंहंउत्तराभाद्रपदायैनमोदक्षपादे ॥ २६ ॥ ळंक्षंअंअःरेवत्यैनमोवामपादे ॥ २७ ॥ इतिनक्षत्रमातृका० ॥ ( ३ ) ॥ सर्वेषुन्यासेष्वादौमायाश्रीबीजेयोज्ये ॥ न्यासान्सर्वान्प्रकुर्वीतमायाश्रीबीजपूर्वकानित्युक्तत्वात् ॥ योगिनीन्यासस्यमुनिच्छंदसीपूर्वोक्ते ॥ योगिनीरूपासुंदरीदेवताश्रीविद्यांगत्वेनन्यासेविनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ सितासितारुणाबभ्रूचित्रापीताश्चचिंतयेत् ॥ चतुर्भुजाःसमै

वंक्रैःसर्वाभरणभूषिताः ॥ एवंध्यात्वान्यसेत्॥ ह्रींश्रींडांडींडंमलवरयूंपूंडाकिन्यैनमः ॥ अं १६ ॥ ममत्वचंरक्ष २ वामात्मनेनमःकंठदेशेविशुद्धे.॥ १ ॥ ह्रींश्रींराँरींरंमलवरयूंपूंराकिन्यैनमःकं १२ ॥ ममरक्तंरक्ष २ असृगात्मनेनमः हृद्यनाहते ॥ २ ॥ लांलींलंमलवरयूंपूंलाकिन्यैनमःङं १० मममांसंरक्ष २ मांसात्मनेनमः नाभौमाणिपूरे ॥ ३॥ कांकींकंमलवरयूंपूंकाकिन्यैनमः वं ६ ॥ मममेदोरक्ष२ मेदआत्मनेनमःलिंगमूलेस्वाधिष्ठाने ॥ ४॥ शांशींशंमलवरयूंपूंशाकिन्यैनमःवं ४ ममास्थिरक्ष २ अस्थ्यात्मनेनमःगुदेमूलाधरे ॥ ५ ॥ हांहींहंमलवरयूंपूंहाकिन्यैनमःहंक्षंममज्जांरक्ष २ मज्जात्मनेनमोभ्रूमध्यआज्ञाचक्रे ॥ ६ ॥ यांयींमलवरयूंपूंयाकिन्यैनमअंममशुक्रंरक्ष २ शुक्रात्मनेनमः ब्रह्मरंध्रे ॥ ७ ॥ इतियोगिनीमातृकाः ( ४ ) ॥ राशिमातृकामंत्रस्यमुनिच्छंदसीपूर्वोक्ते ॥ राशिरूपासुंदरीदेवता । श्रीविद्यांगत्वेनन्यासेविनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ रक्तश्वेतहरिद्वर्णपांडुचित्रासितान्स्मरेत् ॥ पिशांगपिंगुलौबभ्रुकर्बुराशितधूम्रभान् ॥ एवंध्यात्वान्यसेत् ॥ अंआंइंईंमेषायनमःदक्षपादगुल्फे ॥ १ ॥ उंऊंॠंवृषायनमः दक्षजानुनि ॥ २ ॥ ॠंऌंॡंमिथुनायनमःदक्षवृषणे ॥ ३ ॥ एंऐंकर्कायनमःदक्षकुक्षौ ॥ ४ ॥ ओंऔंसिंहाय० दक्षस्कंधे ॥ ५ ॥ अंअःशंषंसंहंळंकन्यायैनमःदक्षशिरोभागे ॥ ६ ॥ कंखंगंघंङं तुलायैनमोवामाशिरोभागे ॥ ७ ॥ चंछंजंझंञंवृश्चिकायनमःवामस्कंधे ॥ ८ ॥ टंठंडंढंणंधनुषेनमःवामकुक्षौ ॥ ९ ॥ तंथंदंधंनंमकरायनमः वामवृषणे ॥ १० ॥ पंफंबंभंमंकुंभायनमः वामजानुनि ॥ ११ ॥ यंरंलंवंक्षं मीनायनमोवामगुल्फे ॥ १२ ॥ इतिराशिमातृकाः ॥ ( ५ ) ॥ पीठमातृकामंत्रस्यमुनिच्छंदोंगानिपूर्ववत ॥ पीठरूपिणीसुंदरीदेवता । श्रीविद्यांगत्वेनन्यासेविनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ॥ पुनरे

तत्क्रमाद्देवीपंचाशत्स्थानसंचये ॥ पीठानीहस्मरेद्विद्वान्सर्वकामार्थसिद्धये ॥ एवंध्यात्वामातृकास्थानेषुमातृकावर्णपूर्वाणिपीठानिन्यसेत् ॥ तानियथा-ह्रींश्रींअंकामरूपपीठायनमः ॥ १ ॥ आंवाराणसीपीठायनमः॥२ ॥ इंनेपालपीठायनमः ॥ ३ ॥ईंपौंड्र वर्धनपी० ॥ ४ ॥ उंकाश्मीरपी० ॥ ५ ॥ ऊंकान्यकुब्जपी० ॥ ६ ॥ ऋंपूर्णगिरिपी० ॥ ७ ॥ ॠंअर्बुदाचलपी० ॥ ८ ॥ लृंआम्रातकेश्वरपी० ॥ ९ ॥ ॡंएकाम्रपीठा० ॥ १० ॥ एंत्रिस्रोतःपीठा० ॥ ११ ॥ ऐंकामकोटिपीठा० ॥ १२ ॥ ॐकैलासपी० ॥ १३ ॥ औंभृगुपी० ॥ १४ ॥ अंकेदारपी० ॥ १५॥ अः चंद्रपुरपीठा० ॥ १६ ॥ कंश्रीपी० ॥ १७ ॥ खंॐकारपी० ॥ १८ ॥ गंजालंधरपी० ॥ १९ ॥ घंमालवपी० ॥ २० ॥ ङंकुलांतपी० ॥ २१ ॥ चंदेवीकोट्टकपी० ॥ २२ ॥ छंगोकर्णपी० ॥ २३ ॥ जंमारुतेश्वरपी० ॥ २४ ॥ झंअट्टहासपी० ॥ २५ ॥ ञंविरजपी० ॥ २६ ॥ टंराजगृहपी० ॥ २७ ॥ ठंमहापथपी० ॥ २८ ॥ डंकोल्लागिरिपी० ॥ २९ । ढंएलापुरपी० ॥ ३० ॥ णंकालेश्वरपी० ॥ ३१ ॥ तंजयंतीपी० ॥ ३२ ॥ थंउज्जयिनीपी० ॥ ३३ ॥ दंचरित्रपी०॥३४॥ धंक्षीरिकापी० ॥ ३५ ॥ नंहस्तिनापुरपीठा० ॥ ३६ ॥ पंउड्डीशपी० ॥ ३७ ॥ फंप्रयागपी० ॥ ३८ ॥ बंषष्ठीशपी० ॥ ३९ ॥ भंमायापुरीपी० ॥ ४० ॥ मंमलयपी० ॥ ४१ ॥ यंश्रीशैलपी० ॥ ४२ ॥ रंमेरुपी० ॥ ४३ ॥ लंगिरिपी० ॥ ४४ ॥ वंमाहेंद्रपी० ॥ ४५ ॥ शंवामनपी० ॥ ४६ ॥ षंहिरण्यपुरपी० ॥ ४७ ॥ संमहालक्ष्मीपी० ॥ ४८ ॥ हंउड्डियाणपीठाय० ॥ ४९ ॥ ळंछायापी० ॥ ५० ॥ क्षंक्षत्रपुरपी० ॥ ५१ ॥ इति पीठमातृकापीठन्यासः( ६ ) ॥ इतिषोढान्यासः ( ६ ) ॥ आदिशब्दात्काममातृकादयोज्ञेयाः ॥ ५८ ॥

मुद्राःप्रदर्शयेत्कृत्वाषडङ्गंप्राणसंयमम् ॥ संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशाः ॥ ४९ ॥
खेचरीबीजयोन्याख्यामुद्रादेवीप्रियानव ॥ ततोध्यायेद्भगवतींश्रीमत्त्रिपुरसुंदरीम् ॥ ५० ॥

एवंन्यासान्कृत्वामुद्राःप्रदर्शयेदित्याह ॥ मुद्राइति ॥ नवानांमुद्राणांमध्येसंक्षोभद्रावणाकर्षखेचरीबिजाख्यानांपंचानांलक्षणमुक्तम् ॥ चतसृणामुच्यते ॥ तत्रवश्यमुद्रालक्षणं यथा–पुटाकारौकरौकृत्वातर्जन्यावंकुशाकृती ॥ परिवर्त्यक्रमेणैवमध्यमेतदधोगते ॥ क्रमेणदेवितेनैव[1]कनिष्ठानामिकादयः ॥ संयोज्यनिबिडाःसर्वाअंगुष्ठा[2]वग्रदेशतः॥ मुद्रेयंपरमेशानिसर्ववश्यकरीमतेति ॥ उन्मादमुद्रालक्षणंयथा –संमुखौतुकरौकृत्वामध्यमामध्यमे[3]नुजे ॥ अनामिकेतुसरलेतदधस्तर्जनीद्वयम् ॥ दंडाकारौततोंगुष्ठौमध्यमानस्वदेशगौ ॥ मुद्रैषोन्मादिनीनामक्लेदिनीसर्वयोषितामिंति ॥ महांकुशमुद्रालक्षणंयथा–अस्यास्त्वनामिकायुग्ममधःकृत्वांकुशाकृति ॥ तर्जन्यावपितेनैवक्रमेणविनियोजयेत् ॥ इयंमहांकुशामुद्रासर्वकामार्थसाधिनीति ॥ योनिशब्देनात्रमहायोनिमुद्रा ॥ तल्लक्षणंयथा–मध्यमेकुटिलेकृत्वातर्जन्युपरिसंस्थिते ॥ अनामिकामध्यगतेतथैवाहिकानिष्ठिके ॥ सर्वाएकत्रसंयोज्याअंगुष्ठपरिपीडिताः ॥ एषातुप्रथमामुद्रामहायोन्यभिधामतेति ॥ मुद्राएवंप्रदर्श्यध्यायेत् ॥ ४९ ॥ ५० ॥

---

कनिष्ठानामिकादयइतिकनिष्ठानामिकापदंदक्षहस्तकनिष्ठानामिकापरम् । आदिपदेनवामहस्तकनिष्ठानामिकापरिग्रहः । २ अंगुष्ठावग्रदेशतइति । अंकुशाकारयोस्तयोस्तर्जन्योरग्रदेशेंगुष्ठौयोजयेदितिशेषः। ३ अनुजेकनिष्ठे। दक्षिणहस्तकनिष्ठांवामहस्तमध्यमयाबद्ध्वावामहस्तकनिष्ठांदक्षिणहस्तमध्यमयाबद्ध्वातयोर्नखदेशयोरंगुष्ठौनिःक्षिपेदित्यर्थः ।

ध्यानमाह ॥ बालेति ॥ नानालंकृतयोविविधाभरणानितैराजमानंशोभमानंवपुर्यस्यास्ताम् ॥ बालउडुराट्चंद्रः
शेखरेयस्यास्ताम् ॥ सृणिमंकुशं ॥ सुमशरंपुष्पबाणं ॥ बाणांकुशौदक्षयोः ॥ इक्षुधनुःपाशौवामयोः ॥ श्रीचक्रं
वक्ष्यमाणं ॥ तत्रस्थितांसुंदरींत्रिपुरसुंदरींध्यायेत् ॥ ५१ ॥ हयमारःकरवीरः ॥ ५२ ॥ श्रीचक्रमाह ॥ श्रीचक्र

बालार्कायुततेजसंत्रिनयनांरक्तांबरोल्लासिनींनानालंकृतिराजमानवपुषंबालोडुराट्शेखराम् ॥ हस्तै
रिक्षुधनुःसृणिसुमशरंपाशंमुदाबिभ्रतींश्रीचक्रस्थितसुंदरींत्रिजगतामाधारभूतांस्मरेत् ॥ ५१ ॥ लक्ष
मेकंजपेन्मंत्रंदशांशंहयमारजैः ॥ पुष्पैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयात्पूजितेनले ॥ ५२ ॥ श्रीचक्रस्योद्धृतिंव
क्ष्येतत्रपूजनसिद्धये॥बिंदुगर्भंत्रिकोणंतुकृत्वाचाष्टारमुद्धरेत् ॥ ५३ ॥ दशारद्वयमन्वस्राष्टारषोडश
कोणकम् ॥ त्रिरेखात्मकभूगेहवेष्टितंयंत्रमालिखेत् ॥५४॥तत्रपूजांप्रवक्ष्यामिपात्रस्थापनपूर्वकम्॥
वहन्नाडीस्थहस्तेनस्वाग्रतोयंत्रमालिखेत् ॥५५॥ त्रिकोणमध्यषट्कोणवृत्तभूमंडलात्मकम् ॥ बाल
यापूजयेन्मध्यंतद्बीजैःकोणकत्रयम् ॥५६॥ अनुलोमविलोमैस्तैःषट्कोणान्पूजयेत्ततः ॥ अस्त्रप्रक्षा
लितंमध्येपात्राधारंनिधापयेत् ॥५७॥

स्येति ॥ ५३ ॥ मन्वस्रंचतुर्दशारम् ॥ ५४ ॥ पात्रस्थापनमाह ॥ वहदिति ॥ वहंतीयानाडीदक्षावामावातद्धस्तेन
स्वाग्रेत्रिकोणादियंत्रमालिख्य तत्रास्त्रक्षालितंपात्राधारंस्थापयेत् ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

एकत्रिंशदक्षरमंत्रेणाधारंपूजयेत् ॥ तमाह ॥ वह्निरिति ॥ वह्निरेफः दीर्घत्रयेन्दुयुक्तः रांरींरूं ॥ रस्वरूपम् ॥ भां
तोमः ॥ लवरस्वरूपम् ॥ अनिलोयः ॥ ५८ ॥ एतेवामकर्णेंदुसंयुताःऊबिंदुयुताः वायुर्यः कलात्माङेसमान्वितश्च
तुर्थ्यंतः ॥ वाग्बीजंऐं ॥ पवनोयः ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा-अँरांरींरूंम्ल्व्यूंरंअग्निमंडलायधर्मप्रददशकलात्मनेऐं
कलशाधारायनमः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ प्रादक्षिण्यादिति ॥ तदुपरिपात्राधारोपरिआग्नेयीर्दशकलाअर्चयेत् ॥ ताए

एकत्रिंशार्णमनुनातमाधारंसमर्चयेत् ॥ वह्निर्दीर्घत्रयेंद्वाढ्योरभांतलवरानिलाः ॥ ५८ ॥ वामकर्णें
दुसंयुक्ताःरःसेंदुश्चाग्निमंडला ॥ वायुर्धर्मप्रददशकलात्माङेसमन्वितः ॥५९॥ वाग्बीजंकलशाधारा
पवनोनमसान्वितः॥ तारादिरीरितोमंत्रोभाजनाधारपूजने ॥६० ॥ प्रादक्षिण्याद्दशाग्नेयीस्तदुपर्य्य
र्चयेत्कलाः ॥ धूम्रार्च्चिरूष्माज्वलिनीज्वालिनीविस्फुलिंगिनी॥६१॥ सुश्रीःसुरूपाकपिलाहव्य
कव्यादिकावहा ॥ सबिंदुयादिवर्णाद्यादशाग्नेरीरिताःकलाः ॥ ६२ ॥ कलाश्रीपादुकांपूजयामीति
पदमुच्चरेत् ॥ नाम्नामंतेततस्तासांप्राणस्थापनमाचरेत् ॥ ६३ ॥

वाह ॥ धूम्रार्चिरिति ॥ ६१ ॥ हव्यकव्यादिकावहा हव्यवहाकव्यवहाच ॥ कीदृश्यस्ताः ॥ सबिंदवोयादिदश
वर्णाआद्यायासाम् ॥ ६२ ॥ कलेति ॥ नाम्नांधूम्रार्चिरित्यादिनाम्नामंतेकलेत्यादिपदमुच्चरेत्॥ यंधूम्रार्चिःकलाश्री
पादुकांपूजयामि-रंऊष्माकलाश्रीपादुकांपूजयामीत्यादिप्रयोगः ॥ ६३ ॥

स्वर्णादिनिर्मितंकलशम् अस्त्रायफडितिप्रक्षाल्यतत्राधारेन्यसेत् ॥ तंत्रिंशद्वर्णमंत्रेणार्चयेत् ॥ तमुद्धरति ॥ वियदिति ॥ वियत्हकारंदीर्घत्रयाढंच हांहींहूं ॥ हमस्वरूपम् ॥ मांसलः ॥ वरस्वरूपम् ॥ अनिलोयः ॥ ६४ ॥ अर्घीशाबिन्दुयुक्तःयूं ॥ सेंदुखंसबिंदुहम् ॥ वायुर्यः ॥ ६५ ॥ मन्मथःक्लीं ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ यथा–ॐ हांहींहूंहमलवर

स्वर्णादिपात्रमस्त्रेणक्षालितंतत्रविन्यसेत् ॥वियद्दीर्घत्रयेंद्वाढयंहममांसंवरानिलः ॥ ६४ ॥ अर्घी
शबिंदुसंयुक्तःसेंदुखंसूर्य्यमंडला ॥ वायुर्वसुप्रदांतेस्याद्द्वादशांतेकलात्मने ॥ ६५ ॥ मन्मथः
कलशायेतिनमोंतःप्रणवादिकः ॥ त्रिंशद्वर्णात्मकोमंत्रःकलशस्यार्च्चनेमतः ॥ ६६ ॥ कलाद्वा
दशसूर्य्यस्यकलशोपरिपूजयेत् ॥ तपिनीतापिनीधूम्रामरीचिज्वालिनीरुचिः ॥६७॥ सुषुम्नाभोग
दाविश्वाबोधिनीधारिणीक्षमा ॥ अनुलोमविलोमाभ्यांकादिभाद्यर्णयुग्युता ॥६८ ॥

यूंहंसूर्यमंडलायवसुप्रदद्वादशकलात्मनेक्लींकलशायनमइति ॥ ६६ ॥ सूर्यकलाआह ॥ तपिनीति ॥ ६७ ॥ कीदृश्यस्ताः ॥ अनुलोमेति ॥ क्रमोत्क्रमाभ्यां येकादयोभादयश्चवर्णाः तेषांयुजोयुग्मानितैर्युताः ॥ कंभंतपिन्यैनमः खबंतापिन्यैनमः–गंफंधूम्रायैनमः इत्यादि ॥ ६८ ॥

पूर्ववत् ॥ तपिनीकलाश्रीपादुकांपूजयामीतिप्रयोगः ॥ ६९ ॥ दंताक्षरेणद्वात्रिंशदक्षरेण ॥ तमेवोद्धरति ॥ भृगुरिति ॥ भृगुःसः दीर्घत्रययुतः सांसींसूं ॥ अंबुवः ॥ अग्निरिः ॥ वायुर्यः ॥ एते ॥ ७० ॥ अर्घीशेंदुयुताःऊबिंदुयुताः ॥ ङेयुतश्चतुर्थ्यंतः ॥ ७१ ॥ भृगुःसःमनुरौं ॥ ङेयुतंकलशामृतं कलशामृताय ॥ तारादिहृदयांतःप्रण

पूर्ववत्ताःसमापूज्याःकलशेपूरयेज्जलम् ॥ उच्चरन्मातृकावर्णान्मूलविद्यांचमंत्रवित् ॥६९॥दंताक्षरे
णमनुनाकलशोदकमर्च्चयेत् ॥ भृदीर्घगुत्रयेंद्वाब्यःसमलांब्वग्निवायवः ॥ ७० ॥ अर्घीशेंदुयुताःसें
दुहंसांतेसोममंडला ॥ यकामप्रदषोडांतेशकलात्मातुङेयुतः ॥७१॥ भृगुर्मनुर्विसर्गाढ्योङेयुतंक
लशामृतम् ॥ तारादिहृदयांतोयंमनुःपानीयपूजने ॥ ७२ ॥ चांद्रीःकलाःस्वराद्यास्तुयजेत्षोडशत
ज्जले ॥ अमृतामानदापूषातुष्टिपुष्टिरतिर्धृतिः॥७३॥ शशिनीचंद्रिकाकांतिज्योत्स्नाश्रीःप्रीतिरंगदा॥
पूर्णापूर्णामृताचेतिपूजनंपूर्ववन्मतम् ॥ ७४ ॥

वादिनमोंतः ॥ ॐसांसींसूंम्मूल्व्र्यूँसंसोममंडलायकामप्रदषोडशकलात्मनेसौः कलशामृतायनमः ( ३२ ) मंत्रोयंजलार्चने ॥ ७२ ॥ षोडशस्वराद्याश्चांद्रीः कलास्तज्जलेर्चयेत् ॥ ताआह ॥ अमृतेति ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

भैरवमंत्रमाह ॥ हसेति ॥ हसक्षमलेतिस्वरूपम् ॥ पानीयंवः ॥ वह्नीरः ॥ ईरोयःअर्घीशऊबिन्दुश्च एतैर्युतम् ७५ बीजम् ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा-ह्म्क्ष्म्ल्व्र्यूँआनंदभैरवायवौषट्-दशार्णः॥ सुधादेवीमंत्रमाह ॥ हसयोरिति पूर्वोक्तबीजेहसयोर्वैपरीत्यं सहक्ष्म्ल्र्यूँसुधादेव्यैवौषट्-मुन्यक्षरःसप्तार्णः ॥ मत्स्येति ॥ मत्स्यमुद्रालक्षणं यथा-वामोपरिष्टात्संस्थाप्यदक्षहस्तंप्रसारयेत् ॥ अंगुष्ठौयुतयोः पार्श्वेमत्स्यमुद्रेयमीरितेति ॥ अस्त्रकवचमुद्रेवक्ष्येते

भैरवंचसुधादेवींस्वमंत्राभ्यांयजेज्जले ॥ सहक्षमलपानीयवह्नीरार्घीशबिंदुमत् ॥ ७५ ॥ बीजमानं
दभैरवांतेवायुवौषण्मनुर्मतः ॥ हसयोर्वैपरीत्येनबीजंपूर्वोदितंसुधा ॥ ७६ ॥ देव्यैवौषट्तयोर्मंत्रौ
दशमुन्यक्षरौक्रमात् ॥ ततोमत्स्यास्त्रकवचधेनुमुद्राःप्रदर्शयेत् ॥ ७७ ॥ संरोधिन्यासंनिरुध्यमुस
लंचक्रसंज्ञकम् ॥ महामुद्रांयोनिमुद्रांकुर्य्यात्कुंभामृतेपुनः ॥ ७८ ॥

धेनुमुद्रोक्ता ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ संरोधिनीवक्ष्यते ॥ मुसलमुद्रा यथा-मुष्टीकृत्वातुहस्ताभ्यांवामस्योपरिदक्षिणम् । कुर्यान्मुसलमुद्रेयंसर्वविघ्ननिवारिणीति ॥ चक्रमुद्रायथा-हस्तौतुसंमुखौकृत्वासलग्नौसुप्रसारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठ कौलग्नौमुद्रैषाचक्रसंज्ञितेति ॥ महामुद्रावक्ष्यते ॥योनिमुद्रोक्ता ॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥ अर्घ्यंइति ॥ कादयःषोडशस्वराः॥कादयःषोडशतांताः ॥ थादयःषोडशसांताः ॥ तैरर्घ्यैत्रिकोणं। संचिंत्य ॥ कीदृशम् ॥ हक्षाभ्यांमध्येशोभितम् ॥ तत्र ऐंक्लींसौरितिबालांसंपूजयेत ॥८०॥अष्टवर्णमाह॥तारइति

एवंकलशमास्थाप्यतस्यदक्षिणदेशतः ॥ शंखंचापिविशेषार्घ्यंस्थापयेत्पूर्ववत्क्रमात् ॥७९ ॥ अर्घ्यं
त्रिकोणंसंचित्याऽकथाद्यैः षोडशाक्षरैः ॥ हक्षाभ्यांशोभितंमध्येतत्रबालांप्रपूजयेत् ॥८० ॥ अष्टवर्णे
नमंत्रेणदेवींज्योतिर्मयींयजेत् ॥ तारोमायेंदुयुग्व्योमभृगुसर्गीससद्यसः ॥८१॥वराहोबिंदुयुक्स्वाहा
वसुवर्णःस्मृतोमनुः ॥मूलंत्रिरभिजप्याथकुर्यान्मुद्राःसमीरिताः ॥८२॥ शंखार्घ्यस्थापनेकार्य्यंऊहः
कलशनामनि॥ एवंपात्राणिसंस्थाप्यगृहीत्वार्घ्योदकंततः ॥ ८३ ॥ पूजावस्तूनिचात्मानंप्रोक्षेन्मूल
मनुंस्मरन् ॥ विधायमानसींपूजांपीठपूजामथाचरेत् ॥ ८४ ॥

तारॐ ॥ मायाह्रीं ॥ इंदुयुग्व्योमहं ॥ सर्गीभृगुः-सः ससद्यः औयुतःसः सौः ॥ ८१ ॥ बिंदुयुग्वराहोहः हं॥स्वाहास्वरूपम् ॥ समीरितामुद्रामत्स्याद्यानवमुद्राःकुर्यात् ॥ ८२॥ शंखस्थापनेऽर्घ्यपात्रस्थापनेचकलशनाम्निऊहःशंखपदमर्घ्यपदंचप्रयोज्यम् ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

पीठपूजामाह ॥ मंडूकामिति ॥ कालवह्नीशंकालाग्निरुद्रम् ॥ ८५ ॥ स्वर्णाद्रिर्मेरुः ॥ ८६ ॥ घर्मवारणंछत्रम् ॥ धर्मादिकान्धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्याणि ॥ ८७ ॥ नञ्पूर्वानधर्मादीन् ॥ ८८ ॥ तारमात्रात्रयाद्यम् अंउंमंपूर्वंसूर्यसोमाग्निमंडलम् ॥ गुणान्सत्त्वरजस्तमांसि ॥ स्ववर्णाद्यान्संसत्त्वायनमइत्यादिरूपान् ॥ आत्मानमित्यादीन् मात्रात्रया

मंडूकंकालवह्नीशंतन्मूलप्रकृतिंयजेत् ॥ आधारशक्तिंकूर्मंचशेषवाराहमेदिनीः ॥ ८५ ॥ सुधाब्धि
रत्नदीपंचस्वर्णाद्रिंनंदनंवनम् ॥ इक्ष्वाकल्पतरून्मध्येविचित्रानंदभूमिकाम् ॥ ८६॥ श्रीरत्नमंदिरंरत्न
वेदिकांघर्मवारणम्॥ रत्नसिंहासनंतस्यपादान्धर्मादिकान्यजेत् ॥८७ ॥ गात्राणितांश्चनञ्पूर्वान्प
द्मंचानंदकंदकम् ॥ज्ञाननालंकर्णिकांचसूर्य्यसोमाग्निमंडलम् ॥ ८८ ॥ तारमात्रात्रयाद्यंतत्स्ववर्णा
द्यान्गुणान्यजेत् ॥ मात्रात्रयाद्यमात्मानमंतरात्मानमेवच ॥ ८९॥तृतीयंपरमात्मानंज्ञानात्मानंपरा
दिकम्॥मायातत्त्वंकलातत्त्वंविद्यातत्त्वंचपूजयेत् ॥ ९० ॥

दीन् अंआत्मने–उंअंतरात्मने ॥ ८९ ॥ मंपरमात्मने ॥ परादिकंमायाबीजाद्यम् ज्ञानात्मानम् ह्रीं ज्ञानात्मनेइति मायातत्त्वादीनिस्ववर्णाद्यानि मांमायातत्त्वायनमइत्यादिरूपाणि ॥ ९० ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवान्प्रेतशब्दांतान्वंब्रह्मप्रेतायनमइत्यादिरूपान् ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ काष्ठासुदिक्षु ॥ पीठशक्तीराह ॥ इच्छेति ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ पीठमंत्रमुद्धरति ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ केशवः अः ॥ ९५ ॥ वालीयः दामो

परतत्त्वंस्ववर्णाद्यंब्रह्मविष्णुशिवांस्ततः ॥ प्रेतांतानीश्वरंतुर्यंपंचमंचसदाशिवम्॥ ९१ ॥ सुधार्णवासनंपश्चाद्यजेत्प्रेतांबुजासनम् ॥ दिव्यासनंचक्रासनंसर्वमंत्रासनंततः ॥ ९२ ॥ साध्यसिद्धासनंप्रार्च्यंचक्रराजंप्रपूजयेत् ॥ पीठशक्तिस्ततःकाष्ठास्विच्छाज्ञानंक्रियातथा ॥९३ ॥ कामिनीकामदायिन्यौरतिरेवंरतिप्रिया ॥ नंदामनोन्मनीचेतिवराभयकरास्तुता ॥ ९४ ॥ ततआसनमंत्रेणपूजयेच्चक्रनायकम् ॥ वाक्परायैकेशवोऽथपरायैचपरापरा ॥ ९५ ॥ वालीदामोदरारूढस्तार्तीयंचसदाशिव॥ महाप्रेतंपठेत्पद्मासनायहृदयांतिकः ॥ ९६ ॥ एकोनत्रिंशदर्णाढ्योमनुरासनसंज्ञकः ॥ एवंपीठंसमभ्यर्च्यदद्यात्पुष्पांजलिंततः ॥ ९७ ॥

दरारूढःऐंयुतःयैं ॥ तार्तीयंह्सौः ॥ हृदयांतिकःनमोंतः ॥स्वरूपमन्यत् ॥यथा—ऐंपरायैअपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनायनमइति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

पुष्पांजलिमंत्रमाह ॥ प्रकटेति ॥ नेत्रयुक्मेषः नि ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ मायारमादिकः ह्रींश्रीमादिकः ॥ यथा ह्रींश्रीं प्रकटगुप्तगुप्ततरसंप्रदायकुलनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्यसंज्ञकश्रीचक्रगतयोगिनीपादुकाभ्योनमइति धरा

प्रकटांतंगुप्तगुप्ततरांतेसंप्रदायच ॥ कुलांतेनेत्रयुङ्मेषोगर्भेरेतिततःपठेत्॥ ९८ ॥हस्यांतेतिरहस्यार्णा
परापररहस्यच ॥ संज्ञकःश्रीचक्रगतोयोगिनीपादुकापदम् ॥ ९९॥ भ्योनमोंतोधराबाणवर्णोमाया
रमादिकः ॥ मंत्रपुष्पांजलेर्दानेसर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १०० ॥ मुद्रांत्रिखण्डांकृत्वाथपुष्पाण्यादाय
चांजलौ ॥ ध्यात्वापूर्वोदितांदेवींमूलविद्यांसमुच्चरेत्॥१॥ चैतन्यंहृत्कमलतोनासिकारंध्रनिर्गतम्॥
ब्रह्मरंध्रस्यमार्गेणयोजितंकुसुमांजलौ ॥ २॥ महापद्मवनांतस्थेकारणानंदविग्रहे ॥ सर्वभूतहिते
मातरेह्येहिपरमेश्वरि ॥ ३ ॥ महःपूजाभचैतन्यसंयुक्तकुसुमांजलिम् ॥ श्रीचक्रराजेसंयोज्यततः
श्लोकद्वयंपठेत् ॥४॥ देवेशिभक्तिसुलभेसर्वावरणसंयुते ॥ यावत्त्वांपूजयिष्यामितावत्त्वंसुस्थिरा
भव ॥ ५ ॥ इदमावाहनंप्रोक्तंततःस्थापनमाचरेत् ॥भैरवीमंत्रमुच्चार्यश्रीमत्रिपुरसुंदरि ॥ १०६ ॥

बाणवर्णः एकपंचाशदक्षरः ॥ १०० ॥ त्रिखंडामुद्रोक्ता ॥ १०१ ॥ आवाहनमंत्रमाह ॥ चैतन्यमिति ॥ १०२ ॥ ॥१०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

स्थापन्याद्यामुद्रावक्ष्यंते ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ इतिमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायामेकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥ श्रीविद्यायाआवरणार्चनंवक्तुंप्रतिजानीते ॥ श्रीविद्यायाइति॥ येनमनोरथाधिकमा

चक्रेस्मिन्कुरुसान्निध्यंनमोंतःस्थापनेमनुः।। दर्शयेत्स्थापनींमुद्रांसन्निधिंसन्निरोधनम्।। १०७।।संमुखीकरणंतत्तन्मुद्राभिर्मंत्रविच्चरेत् ।।न्यसेत्षडंगंदेव्यंगेसकलीकरणंत्विदम्।।८।।अवगुंठामृतीकारपरमीकरणानिच ।।तत्तन्मुद्राभिराराध्यमूलेनत्रिःप्रपूजयेत् ।।९।।ततःपाद्यादिकान्सम्यगुपचारान्प्रकल्पयेत् ।। मूलमंत्रेणपुष्पांतान्पुनःसंतर्पयेत्रिधा ।।१० ।। पुष्पांजलिंविधायाथध्यात्वादेवींयथाविधि।। अनुज्ञांप्रार्थयेन्मंत्रीपरिवारसमर्चने ।।१११।। इति श्रीमन्महीधरविरचितेश्रीमंत्रमहोदधौश्रीविद्याकथनंनामैकादशस्तरंगः।।११।।श्रीविद्यायाअथोवक्ष्येपरिवारप्रपूजनम्।।कृतेनयेनमंत्रज्ञोलभतेवांछिताधिकम्।।१।।शुक्लपक्षेयजेन्नित्याःकामेश्वर्यादिषोडश।।कृष्णपक्षेविचित्राद्याःकामेश्वर्य्यवसानकाः।२। षोडशींचयजेन्मध्येवक्ष्येतद्यजनक्रमम्।।एकैकंस्वरमुच्चार्य्यनित्यामंत्रंसमुच्चरेत् ।। ३ ।। कामेश्वर्य्या

प्नोति १ शुक्लपक्षेकामेश्वर्यादिविचित्रांतांतांबिंदुंपरितःकल्पितेत्रिकोणेप्रतिपार्श्ववामावर्तेनपंचपंचसंपूज्यबिंदौषोडशीं मूलेनपूजयेत्कृष्णपक्षेतुविचित्राद्याःकामेश्वर्यंताःस्वस्वमंत्रेणतथैवसंपूज्यमध्येषोडशींयजेत् २ तत्रविधिमाहएकैकमिति

॥ एकैकंस्वरमुक्त्वावक्ष्यमाणमेकैकंनित्यामंत्रंचप्रोच्य नित्यानामांते अमुकनित्याश्रीपादुकांपूजयामीतिदक्षहस्तेन पुष्पचंदनाक्षतानितर्पयामीतिवामहस्तेनजलंचार्पयेत् ॥ ३ ॥ ४ ॥ अंभःजलंगोक्षीरंवा ॥ ५ ॥ जलेक्षीरेवाआर्द्रकंप्रास्यमितिकेचित् ॥ ६ ॥ नित्यामंत्रेषुकामेश्वरीमंत्रमाह ॥ बालेति ॥ बालाऐं

दिनामांतेनित्याश्रीपादुकांपठेत्॥ पूजयामितर्पयामिहृदयंप्रोच्यपूजयेत् ॥४॥ बिंदुपरितआकल्प्य त्रिकोणेबिंदुतोंतिमम् ॥ दक्षहस्तेनपुष्पादिवामेनांभोविनिःक्षिपेत्॥५॥केचिदाहुरिहाचार्य्यांआर्द्रकेणजलंक्षिपेत् ॥ वामावर्तेनसंपूज्याःकोणपार्श्वेषुपंचशः॥६॥नित्यामंत्राःप्रवक्ष्यंतेस्मृताःसर्वेष्टसिद्धिदाः ॥ बालातारोनमःकामेश्वरिहृग्दीर्घजादिमः॥७॥कामफलप्रदेसर्वसत्त्ववशंकरि ॥सर्वांते तुजगद्वर्णात्क्षोभणांतेकरीतिच ॥८॥वर्मत्रयंपंचबाणाःप्रतिलोमाकुमारिका ॥ कामेश्वरीमनुःप्रोक्तः षट्चत्वारिंशदर्णवान् ॥ ९ ॥

क्लींसौः ॥ तारःप्रणवः ॥ हकूइ ॥ दीर्घश्वासौजादिमश्चछ ॥ ७ ॥ ८ ॥ वर्महुं ३॥ पंचबाणाः द्रांद्रींक्लींब्लूंसःइति ॥ कुमारिकाबालाप्रतिलोमा ॥ अंसौः क्लींऐंकामेश्वरीनित्याश्रीपादुकांपूजयामितर्पयामिनमइति ॥ ९ ॥

---

१ ॐऐंक्लींसौः ॐनमःकामेश्वरिइच्छाकामफलप्रदेसर्वसत्त्ववशंकरिसर्वजगत्क्षोभणकरिहुंहुंहुंद्रांद्रींक्लींब्लूंसःसाःक्लींऐं(४६)कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकांपूजयामितर्पयामिनमःइत्येवप्रयोगः ।

भगमालिनीमाह ॥ वागिति ॥ वाग्बीजंऐं ॥ ॥ कर्णाढ्यानिद्राउयुतोभःभुः ॥ १०॥ ११ ॥ सदीपकःआग्निः ऊयुतोरःरूः ॥ दीर्घास्मृतिःगा ॥ अग्नीरेफः ॥ १२ ॥ सझिंटीशःपावकः एयुतोरःरे ॥ केशवःअः ॥ १३ ॥ वाक्ऐं ॥ १४ ॥ मारुतोयः ॥ १५ ॥ मायाह्रीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ अंगत्रिभूवर्णाषट्त्रिंशदुत्तरशतार्णाभगमालिनी ॥

वाग्बीजंभगकणाढ्यानिद्रागेभगिनीतिच॥भगोदरीतिवर्णांतेभगमालेभगावहे ॥१०॥ भगगुह्येभगां
तेस्याद्योनेभगनिपातिनि॥ सर्वांतेभगशब्दांतेवशंकारिभगेतिच॥११॥रूपेनित्यपदंक्लिन्नेभगस्वाग्निः
सदीपकः॥पेसर्वभस्मृतिर्दीर्घानिमेह्यानयवाग्नयः॥ १२ ॥ देरेतेसुसझिंटीशःपावकस्तेभगार्णकाः॥
क्लिन्नेक्लिन्नद्रवेक्लेदयद्रावयचकेशवः॥१३॥ मोघेभगांतेविच्चेचक्षुभक्षोभयसर्वंच ॥ सत्त्वान्भगेश्वरिप्रां
तेवाग्ब्लूंजंब्लूंचभेंपुनः।१४।ब्लूंमोंब्लूंहेंपुनब्लूंहेंक्लिन्नेसर्वाणिभाक्षरम्॥गानिमेवशमानांतेमारुतःस्त्रीं
हरेतिच॥१५॥ब्लेंमायांगत्रिभूवर्णाप्रोदिताभगमालिनी॥नित्यक्लिन्नमदद्रांतेपद्मनाभयुतंजलम्॥१६।

यथा—आंऐंभगभुगेभगिनिभगोदरिभगमालेभगावहेभगगुह्येभगयोनेभगनिपातिनिसर्वभगवशंकरिभगरूपेनित्याक्लिन्नभगस्वरूपेसर्वभगानिमेह्यानयवरेदेरेतेसुरेतेभगक्लिन्नेक्लिन्नद्रवेक्लेदयद्रावयअमोघेभगविच्चेक्षुभक्षोभयसर्वसत्त्वांन्भगेश्वरिऐंब्लूंजंब्लूंभेंब्लूंमोंब्लूंहेंब्लूंहेंक्लिन्नेसर्वाणिभगानिमेवशमानयस्त्रींहरब्लेंह्रीं ( १३६ ) भगमालिनीनित्याश्रीपादुकांपूजयामिनमः ॥ नित्यक्लिन्नामंत्रमाह ॥ नित्येति ॥ पद्मनाभयुतंजलम् ॥ एयुतोवःवे ॥ १६ ॥

मायाह्रीं तदाद्या ॥ अग्निप्रियास्वाहांतदंता ॥ शिवाक्षरएकादशार्णः ॥ यथा--इंह्रींनित्यक्लिन्नेमदद्रवेस्वाहा (११)
नित्यांक्लिन्नानित्याश्रीपादुकांपूजयामि ॥ भेरुंडामंत्रमाह ॥ बांतइति ॥ बांतोभः रेफयुतः तारसंयुतः ओंकारसं
युतः भ्रों ॥ स कीदृशः ॥ अंकुशसंपुटः क्रोमितिबीजेनादावंतेयुतः ॥ १७ ॥ चवर्गस्यचत्वारोवर्णाःवह्निमन्बिदु
संयुतारऔबिंदुयुताः च्रौंछ्रौंज्रौंझ्रौं ॥ स्वाहांतःप्रणवाद्योदशवर्णः ॥ यथा--ईॐक्रोंभ्रोंक्रोंच्रौंछ्रौंज्रौंझ्रौंस्वाहा( १० )

मायाद्याग्निप्रियांतेयंनित्यक्लिन्नाशिवाक्षरः ॥ बांतोरेफासनस्तारसंयुतोंकुशसंपुटः १७॥ चवर्ग
वर्णाश्चत्वारोवह्निमन्बिदुसंयुताः ॥ वह्निप्रियांतस्ताराद्योभेरुंडायादशाक्षरः ॥१८॥ मायांतेवह्निवा
सिन्यैप्रणवाद्योनमोंतिकः॥ मंत्रोयंवह्निवासिन्यानववर्णःसमीरितः ॥ १९ ॥तारोमायाशिखीवह्नि
पद्मनाभेंदुसंयुतः ॥ सविसर्गोभृगुर्नित्यक्लिन्नपश्चान्मदद्रवे ॥ २० ॥

भेरुंडानित्याश्रीपादुकांपूजयामि ॥ १८ ॥ वह्निवासिनीमंत्रमाह ॥ मायेति ॥ स्पष्टं ॥ यथा--उंॐह्रींवह्निवासिन्यै
नमः ( ९ )वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकांपू० ॥ १९ ॥ महाविद्येश्वरीमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ माया
ह्रीं ॥ शिखीफः वह्निपद्मनाभेंदुसंयुतः रएबिंदुयुतःफ्रें ॥ सविसर्गोभृगुःसः ॥ २० ॥

मनुवर्णश्चतुर्दशार्णः ॥ यथा--ऊं ॐह्रींफ्रेंसःनित्यक्लिन्नेमदद्रवेस्वाहा ( १४ ) महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपादुकांपू० ॥ २१ ॥ शिवदूतीमंत्रमाह ॥ शिवेति ॥ यथा--ॐह्रींशिवदूत्यैनमः ( ७ ) शिवदूतीनित्याश्रीपादुकांपू० ॥ त्वरितामंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ पराह्रीं ॥ वर्महुं ॥ खेचछेक्षःस्त्रीस्वरूपम् ॥ वामकर्णयुक् ॥ २२ ॥ शशियुतं चगगनं ( १२ ) ऊबिंदुयुतोहः हूं ॥ मेरुःक्षः भगंए तद्युतः क्षे ॥ अद्रिजाह्रीं ॥ यथा—ॐॐह्रींहुंखेचछेक्षःस्त्रीहूं

स्वाहांतोमनुवर्णोयंमहाविद्येश्वरीमनुः ॥ शिवदूतीचतुर्थ्यंतामायाद्याहृदयांतिका ॥२१॥ शिवदूतीमनुःप्रोक्तःसप्तवर्णोखिलेष्टदः ॥ तारःपरावर्मखेचछेक्षःस्त्रीवामकर्णयुक् ॥२२ ॥ गगनंशशिसंयुक्तंमेरुर्भगयुतोद्रिजा ॥ फडंतोद्वादशार्णोयंत्वरितायामनुर्मतः ॥२३ ॥ दामोदरोबिंदुयुतःकलौशांतींदुसंयुतौ ॥ भृगुर्मनुविसर्गाढ्यस्त्र्यक्षराकुलसुन्दरी ॥ २४ ॥

क्षेह्रींफट् ( १२ ) त्वरितानित्याश्रीपादुकांप० ॥ २३ ॥ कुलसुंदरीमंत्रमाह दामोदरइति ॥ दामोदरः ऐ बिंदुयुतः ऐं ॥ कलौशांतींदुसंयुतौ ईबिंदुसंयुतौ क्लीं ॥ मनुविसर्गाढ्योभृगुःसः औ सर्गयुतःसौः ॥ यथा—ऌंऐंक्लींसौः ( ३ ) कुलसुंदरीनित्याश्रीपादुकांपू० ॥ २४ ॥

नित्यामंत्रमाह ॥ भैरवीति ॥ प्राक्क्रमात्पश्चिमादुत्क्रमाद्बालयायुतात्रिपुरभैरवी ॥ ततःपंचबाणबीजानि ॥ एषा मन्वक्षराचतुर्दशा[illegible]नि[illegible]रिता ॥ यथा-ऌंऐंक्लींसौःह्सौंस्क्लींहूस्रौंसौःक्लींऐंद्रांद्रींक्लींब्लूंसः ( १४ ) नित्याश्रीपादुकां[illegible]५ ॥ नीलप[illegible]मित्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ मायाह्रीं ॥ फांतरेफौफरौतौझिंटीशशशिसंयुतौ ए[illegible]युतौ फ्रें ॥ हंसःस्रुअन्न यर्घीशबिंद्वाढचःरबिंदुयुतःस्त्र ॥ हल्लखाह्ला ॥ अकुशःक्रों ॥ नित्यमदद्रवेस्वरूपम्॥

भैरवीबालयायुक्ताप्राक्पश्चाच्चक्रमोत्क्रमात् ॥ तदंतेपंचबाणाःस्युर्नित्यामन्वक्षरेरिता ॥२५॥ तारो
मायाफांतरेफौझिंटीशशशिसंयुतौ॥ हंसोऽन्यर्घीशबिंद्वाढचोहल्लेखांकुशनित्यम ॥ २६ ॥ दद्रवेवर्म
सृण्यंताप्रोक्तानीलपताकिनी ॥ चतुर्दशाक्षरासर्वत्रैलोक्याकर्षणक्षमा ॥ २७ ॥ वराहहंसचंडीशज
नार्दनकृशानवः॥ पद्मनाभेंदुसंयुक्ताविजयायैनमोंतिकः ॥ २८ ॥

घर्महुं ॥ सृणिःक्रों ॥ यथा-ए ॐ ह्रींफ्रेंस्त्रंह्रींक्रोंनित्यमदद्रवेहुंक्रों ( १४ ) नीलपताकिनीनित्याश्रीपादुकांपू० ॥ २६ ॥ २७ ॥ विजयामंत्रमाह ॥ वराहेति ॥ वराहाहः॥ ॥हंसः सः॥चंडीशः खः॥जनार्दनःफः॥ कृशानूरः ॥ एते पद्मनाभेंदुसंयुक्ताः एबिंदुनायुताः ॥ एतत्कूटंहस्ख्फ्रें ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा-ऐंह्स्ख्फ्रेंविजयायैनमः ( ७ ) विजायनित्याश्रीपादु० ॥ २८ ॥

सर्वमंगलामंत्रमाह ॥ ताराढ्याविति ॥ भृगुखड्गीशौस्वौ ताराढ्यौ ओंयुतौ स्वों ॥ ङेन्ताचतुर्थ्येकवचनांता ॥ २९ ॥ यथा–ओंॐस्वोंसर्वमंगलायैनमः ( ९ ) सर्वमंगलानित्याश्रीपा० ॥ ज्वालामालिनीमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ स्वरूपमग्रे ॥ कवचंहुं ॥ पावकद्वयंरंरं ॥ वर्मास्त्रांताहुंफडंता॥अष्टयुगाक्षराअष्टचत्वारिंशद्वर्णा–

विजयायामनुःप्रोक्तःसप्तवर्णोखिलार्थदः ॥ ताराढ्यौभृगुखड्गीशौङेंतास्यात्सर्वमंगला ॥ २९ ॥
नमोंतोमनुराख्यातोनंवार्णःसर्वमंगलः ॥ तारोनमोभगवतिज्वालामालिनितत्परम् ॥ ३० ॥ देव्यं
तसर्वभूतांतेसंहारांतेतुकारिके ॥ जातवेदसिवर्गांतेज्वलतिप्रज्वलंतिच ॥ ३१ ॥ ज्वलद्वयंप्रज्वल
तेकवचंपावकद्वयम् ॥ वर्मास्त्रांतोदिताज्वालामालिन्यष्टयुगाक्षरा॥ ३२ ॥ कूर्मःक्रोधीशमन्विंदुसंयुतो
ह्येकवर्णकः ॥ विचित्रायामनुश्चैतानित्याःपंचदशोदिताः ॥ ३३ ॥

ज्वालामालिनीउदिता यथा[illegible]ॐनमोभगवतिज्वालामालिनिदेविसर्वभूतसंहारकारिकेजातवेदसिज्वलंतिप्रज्वलंतिज्वल[illegible]लप्रज्वलहुंरंरंसंयुतौ ( ४८ ) ज्वालामालिनीनित्याश्रीपा० ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ विचित्रामंत्रमाह ॥ कूर्मेति ॥ कूर्मश्चकारः क्रोधीशमान्बिंदुयुतः कऔबिंदुयुतः च्कौं ॥ अत्रप्रथमश्चकारः ॥ यथा–अंच्कौं (१) विचित्रानित्याश्रीपा० ॥ एताःपंचदशनित्याः ॥ ३३ ॥

एतास्त्रिकोणेपंचदशसंपूज्यबिंदौमूलेनषोडशींयजेत् ॥ यथा–अंमूलंमहात्रिपुरसुंदरीनित्याश्रीपादुकांपूजयामितर्पयामिनमः ॥ बिंदुत्रिकोणयोर्मध्येत्रिभंगीभिःपंक्तित्रयेणगुरून्यजेत् ॥ ३४ ॥ तेत्रिविधाइत्याह ॥ दिव्यौघाइति ॥

मूलेनषोडशींमध्येयजेत्त्रिपुरसुंदरीम् ॥ बिंदुत्रिकोणयोर्मध्येत्रिभगीभिर्गुरून्यजेत्॥३४॥ दिव्यौघाश्चापिसिद्धौघामानवौघास्त्रिधाहिते ॥ परप्रकाशःप्रथमस्ततःपरशिवाभिधः ॥३५॥ परशक्तिश्चकौलेशःशुक्लादेवीकुलेश्वरः ॥ कामेश्वरीतिसप्तैवदिव्यौघागुरवःपराः ॥ ३६ ॥ भोगःक्रीडश्चसमयःसहजश्चपरावरः ॥ सिद्धौघगुरवश्चैतेचत्वारःपरिकीर्तिताः ॥३७॥ गगनोविश्वविमलौमदनोभुवनस्तथा ॥ लीलास्वात्माप्रियेत्यष्टौमानवाअपरामताः ॥ ३८ ॥ आनंदनाथशब्दांताःपुरुषागुरवःस्मृताः ॥ अंबांतास्तुस्त्रियःकार्य्याःसर्वसिद्धिप्रदायिकाः ॥ ३९ ॥

दिव्यौघानाह ॥ परप्रकाशइति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ सिद्धौघानाह ॥ भोगइति ॥ ३७ ॥ मानवौघानाह ॥ गगनइति ॥ ३८ ॥ पुमांसोगुरवःआनंदनाथशब्दांताःकार्याः ॥ स्त्रियोगुरवस्तुअंबाशब्दांताः ॥ ३९ ॥

कतिस्त्रियःकतिनराइत्यत्राह ॥ परशक्तिरिति ॥ दिव्यगुरुषुपरशक्तिशुक्लादेवीकामेश्वर्यस्तिस्रःस्त्रियश्चत्वारोन्येपुमांसः
॥ मानवगुरुषुप्रियालीलेद्वास्त्रियौ, षडन्येनराः ॥ सिद्धगुरुषुचत्वारोपिपुमांसएव ॥ तथाचप्रयोगः
-परप्रकाशानंदनाथश्रीपादुकांपूजयामिनमः ॥ परशक्त्यंबाश्रीपादुकांपूजयामीत्यादि० ॥ ४० ॥ बिंदोः

परशक्तिस्तथाशुक्लादेवीकामेश्वरीतिच ॥ तिस्रःस्त्रियस्तुदिव्येषुप्रियालीलेतिमानवे ॥ ४० ॥श्रीपादुकां
पूजयामीत्यंतेसर्वत्रयोजयेत्॥ततोबिंदोश्चतुर्दिक्षुयजेदाम्नायदेवताः ॥४१॥ पूर्वदक्षिणमाम्नायंपश्चिमं
चोत्तरंतथा ॥ ततःप्रपूजयेद्दिक्षुमध्येंतःपंचपंचिकाः॥४२॥ आद्यांमध्येचतस्रोन्याःपूर्वाद्याशासु
पूजयेत् ॥ पंचस्वपिगणेष्वत्रश्रीविद्याद्याप्रकीर्तिता ॥४३ ॥ श्रीविद्याचतथालक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तृतीयका
॥ त्रिशक्तिःसर्वसाम्राज्यापंचलक्ष्म्यः प्रकीर्तिताः ॥ ४४ ॥

प्रागादिदिक्षुपूर्वाम्नायदेवताश्रीपादुकांपू० ॥ दक्षिणाम्नायदेवतेत्यादिचतस्रःआम्नायदेवताःपूजयेत् ॥ ततःपंचपंचिकाः
पूजयेत् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ आद्यांमूलेन, मध्येद्वितीयाद्यास्वस्वदिक्षुस्वस्वमंत्रैरितिवक्ष्यते ॥ एवमन्याःपंचिकाः
॥ ४३ ॥ तासुप्रथमपांचिकामाह ॥ श्रीविद्येति ॥ आद्यपंचकंलक्ष्मीसंज्ञम् ॥ ४४ ॥

द्वितीयंपंचकंकोशसंज्ञम् ॥ ४५ ॥ तृतीयंपंचकंकल्पलतासंज्ञम् ॥ ४६ ॥ चतुर्थंपंचकंकामधेनुसंज्ञम् ॥ ४७ ॥ पंचमं पंचकंरत्नसंज्ञकम् ॥ ४८ ॥ तासांक्रमान्मंत्रान्वदति ॥ श्रीविद्यामिति ॥ तत्राद्यपंचके मूलेनश्रीविद्यामध्ये

श्रीविद्याचपरंज्योतिःपरनिष्कलशांभवी ॥ अजपामातृकाचेतिपंचकोशाइमेस्मृताः ॥ ४५ ॥ श्रीविद्यात्वरिताचैवपारिजातेश्वरीपुनः ॥ त्रिपुटापंचबाणेशीपंचकल्पलताइमाः ॥४६॥ श्रीविद्यामृतपीठेशीसुधाश्रीरमृतेश्वरी ॥ अन्नपूर्णेतिविख्याताःपंचैताःकामधेनवः॥४७॥ श्रीविद्यासिद्धलक्ष्मीश्चमातंगीभुवनेश्वरी ॥ वाराहीचस्मृतंचैतन्मुनिभीरत्नपंचकम् ॥ ४८ ॥ श्रीविद्यांमूलमंत्रेणमध्येसंयोज्यपूजयेत् ॥ क्रमतोन्याश्चतुर्दिक्षुतासांमंत्रान्क्रमाद्बु ॥ ४९ ॥ वेबकेशोवह्निमारूढोवामनेत्रेंदुसंयुतः ॥ लक्ष्मीमंत्रोयमेकार्णस्तेनलक्ष्मींप्रपूजयेत् ॥ ५० ॥

पूज्या दिक्षुलक्ष्म्याद्याः ॥ ४९ ॥ तत्रलक्ष्मीमंत्रमाह ॥ बकेशइति ॥ बकेशःशः ॥ वह्नीरेफस्तद्युतंवामनेत्रमीइन्दुबिंदुस्तद्युतश्चश्रीं ॥ तेन–श्रीं ( १ ) लक्ष्मीश्रीपादुकां पू० इतिपूर्वं ॥ ५० ॥

महालक्ष्मीमंत्रमाह ॥ तारेति ॥ तारॐ ॥ पद्माश्रीं ॥ शक्तिःह्रीं ॥ पद्माश्रीं ॥ लक्ष्मीःश्रीं ॥ मायाह्रीं॥पद्माश्रीं॥ ध्रुवःॐ ॥ स्वरूपंशेषम् ॥ यथा–ॐ श्रींह्रींश्रींकमलेकमलालयेप्रसीद २ श्रींह्रींश्रींॐमहालक्ष्म्यैनमः ( २८ ) महालक्ष्मीश्रीपा०इतिदक्षिणे ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ त्रिशक्तिमंत्रमाह ॥ लक्ष्मीःश्रीं ॥ मायाह्रीं ॥ मनोजन्माक्लीं ॥ यथा–श्रींह्रींक्लीं ॥ ३ ॥ त्रिशक्तिश्रीपा०पाश्चिमे ॥ ५३ ॥ सर्वसाम्राज्यामंत्रमाह ॥ भृग्विति॥ भृगुःसः ॥ आकाशोहः ॥

तारपद्माशक्तिपद्माकमलेकमलालये ॥ प्रसीदयुगलंलक्ष्मीर्मायापद्माध्रुवोमहा ॥५१॥ लक्ष्म्यैनमों
तोमंत्रोयमष्टाविंशतिवर्णवान् ॥ पूज्यानेनमहालक्ष्मीःश्रीविद्यादक्षिणेस्थिता ॥ ५२॥ लक्ष्मीर्माया
मनोजन्मात्रिशक्तिर्मनुरीरितः ॥ त्रिवर्णोनेनसपूज्यात्रिशक्तिःपश्चिमेस्थिता ॥५३॥ भृग्वाकाशक-
लामायारूढापद्मालयापुटाः ॥ त्रिवर्णाःसर्वसाम्राज्यातांयजेदुत्तरस्थिताम् ॥५४॥ तारोमायात
तोहंसःसोहंवह्निप्रियांतिमः ॥ अष्टवर्णःपरंज्योतिर्मनुस्तांपूर्वतोयजेत् ॥ ५५ ॥

कलाएतेमायास्थिताः ॥ पद्मालयाश्रीं ॥ तेनपुटिताः ॥ यथा–श्रींसहकलह्रींश्रीं ( ७ ) सर्वसाम्राज्याश्रीपा० उत्तरे ॥ ५४ ॥ द्वितीयपंचकेपरज्योतिर्मंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ मायाह्रीं ॥ यथा–ॐह्रींहंसः सोहं स्वाहा ॥ ८ ॥ परंज्योतिःश्रीपा०पूर्वे ॥ ५५ ॥

परनिष्कलशांभवीमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ प्रणवस्तन्मंत्रः ॥ यथा–ॐपरनिष्ककलशांभवी ( ८ ) श्रीपा०दक्षिणे ॥ अजपामाह ॥ नभइति ॥ नभोहः ॥ भृगुःसः यथा–हंसः ( २ ) अजपाश्रीपा०पश्चिमे ॥ ५६ ॥ आदिक्षांतवर्णास्तुमातृका ॥ अंआंइंईं०क्षं ( ५१ ) मातृकाश्रीपा० उत्तरे ॥ कल्पलतापंचकेत्वरितामंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ भुवनेशीह्रीं ॥ ५७ ॥ मेरुःक्षःसझिंटीशःएयुतःक्षे ॥ यथा–ॐह्रींहुंखेचछेक्षःस्त्रींहुंक्षेह्रींफट् ( १२ ) त्वरिताश्री

तारःपरोनिष्कलश्चशाम्भवीज्यातुदक्षिणे ॥ नभःसबिंदुसर्गाढ्योभृगुद्वयर्णाजपाऽपरे ॥ ५६ ॥
अकारादिक्षकारांतावर्णाःप्रोक्तातुमातृका ॥ प्रणवोभुवनेशीहुंखेचछेक्षःपदंपुनः ॥ ५७ ॥ स्त्रींहुंमेरुः
सझिंटीशोमायास्त्रंद्वादशाक्षरः ॥ त्वरितायामनुःप्रोक्तस्तेनतांपुरतोर्चयेत् ॥५८ ॥ आकाशहंसक्रो
धीशपिनाकीशहराधराः ॥ सेंदवस्तारमायाभ्यांसंपुटाश्चसरस्वती ॥ ५९ ॥ ङेंतोहृदंतोमंत्रोयंप्रोक्त
एकादशाक्षरः ॥ अनेनपारिजातेशींदक्षिणस्यांप्रपूजयेत् ॥ ६० ॥

पा०पूर्वे ॥ ५८ ॥ पारिजातेश्वरीमंत्रमाह ॥ आकाशोति ॥ आकाशोहः ॥ हंसःसः ॥ क्रोधीशःकः ॥ पिनाकीशोलः॥ हर् स्वरूपम् ॥ अधरऐ ॥ एतेसबिंदवः कूटं तारमायासंपुटम् ॥ यथा–ॐह्रींहंसंकंलंहैंह्रीं ॐसरस्वत्यैनमः ( ११–१५ ) पारिजातेश्वरीश्रीपा०दक्षिणे ॥ ५९ ॥ ६० ॥

त्रिपुटामंत्रमाह ॥ रमोति ॥ मनोभूमिः क्लीं ॥ यथा-श्रींह्रींक्लीं ( ३ ) त्रिपुटाश्रीपा०पश्चिमे ॥ द्रांद्रींक्लींब्लूंसः ( ५ ) पंचबाणेशीश्रीपा०उत्तरे ॥ कामधेनुपंचके अमृतपीठेशीमंत्रमाह ॥ वागिति॥ यथा-ऐंक्लींसौः ( ३ ) अमृतपीठेशीश्रीपादुकांपूर्वे० ॥ सुधाश्रीमंत्रमाह॥ नभइति ॥ नभोहः ॥ भृगुःसः ॥ अग्निरः ॥एतेवामनेत्रमीकारस्तद्युताःसबिंदवश्चह्स्रौं ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३॥ सार्णाद्याभुवनेशानीसह्रीं ॥ श्रींकलाद्या ॥ भुवनेश्वरीक्लीं ॥ वेदार्ण

रमामायामनोभूमिस्त्रिवर्णात्रिपुटोदिता ॥ तांयजेत्पश्चिमभागेबाणेशीमुत्तरेपुनः ॥ ६१ ॥द्रांद्रींक्लीं ब्लूंभृगुःसर्गीसोदितापंचवर्णका॥ वाक्कामौभृगुरौसर्गयुक्तोमंत्रस्त्रिवर्णकः ॥ ६२॥प्रोदितोऽमृतपीठेशीतेनतांपूर्वतोयजेत् ॥ नभोभृग्वग्नयोवामनेत्राढ्याश्चन्द्रभूषिताः ॥ ६३ ॥ सार्णाद्याभुवनेशीश्रीं कलाद्याभुवनेश्वरी ॥ सुधाश्रीमंत्रउदितोवेदार्णस्तांयजेदवाक्॥६४॥सकारोनुग्रहीसर्गीकामोवागभ्रपूर्विका ॥ त्रिवर्णमनुनापश्चात्पूजयेदमृतेश्वरीम् ॥ ६५ ॥

श्चतुर्वर्णोयंसुधाश्रीमंत्रः ॥ तेनतामवाक्दक्षिणेयजेत्॥ यथा ह्स्रौंसह्रींश्रींक्लीं ( ४ ) सुधाश्रीपी० ॥ ६४ ॥ अमृतेश्वरीमंत्रमाह ॥ सकारइति ॥ अनुग्रहीऔयुतः ॥ अभ्रपूर्विकावाक् हयुतंवाग्बीजंहें ॥ यथा-सौःक्लींहें ( ३ ) अमृतेश्वरीश्रीपा० पश्चिमे ॥ ६५ ॥

अन्नपूर्णानवमेतरंगेउक्ता ॥ तेनोत्तरेतांयजेत् ॥ यथा–ॐह्रींश्रींक्लींनमोभगवतिमाहेश्वरिअन्नपूर्णेस्वाहा ( २० ) अन्न
पूर्णाश्रीपादुकांपू० उत्तरे ॥ ६६ ॥ रत्नपंचकेसिद्धलक्ष्ममिंत्रमाह ॥ वाणीति ॥ वाणीबीजंऐं ॥ कामबीजंक्लीं ॥
वराहहंसाग्निवर्णाहसराःऔसर्गयुताह्स्रौः ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा–ऐंक्लिन्नेक्लींमदद्रवेकुले ह्स्रौः ( ११ ) सिद्धि
लक्ष्मीश्रीपा०पूर्वे ॥ ६७ ॥ दक्षिणेमातंगी ॥ ६८ ॥ तन्मन्त्रमाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ कामःक्लीं ॥ वाणीऐं ॥

विंशत्यर्णान्नपूर्णोक्तातरंगेनवमेमया ॥ तन्मंत्रणोत्तरस्यांतुपूजयेदन्नदायिनीम् ॥६६॥ वाणीबीजं
ततःक्लिन्नेकामबीजंमदद्रवे ॥ कुलेवराहहंसाग्निवर्णाऔसर्गसंयुताः ॥६७॥ एकादशाक्षरोमंत्रःसिद्धि
लक्ष्म्याःसमीरितः ॥ तेनतांपूजयेत्पूर्वेमातंगींदक्षिणेपुनः ॥६८॥ वाक्कामःसौःपुनर्वाणीमायालक्ष्मी
ध्रुवोनमः॥भगवांतेतिमातंगीश्वरिसर्वजनार्णकाः ॥६९॥ मनोहरिपदंप्रोच्यसर्वराजवशंकरि॥सर्वां
तेमुखरंज्यंतेमेषोनेत्रसमन्वितः ॥ ७० ॥ सर्वस्त्रीपुरुषान्तेतुवशंकरिपदंवदेत्॥सर्वदुष्टमृगप्रांतेवशंक
रिपुनःपदम्।सर्वलोकवशंपश्चात्करिमायांरमांगजः।वाक्त्रिसप्ततिवर्णोयंमातंग्याउदितोमनुः ॥७१॥

मायाह्रीं ॥ लक्ष्मीःश्रीं ॥ ध्रुवॐ ॥ ६९ ॥ नेत्रसमन्वितोमेषोनःनि ॥ रमाश्रीं ॥ अंगजःक्लीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥
यथा–ऐंक्लींसौःऐंह्रींश्रींॐ नमोभगवतिमातंगीश्वरिसर्वजनमनोहारिसर्वराजवशंकारिसर्वमुखरंजिनिसर्वस्त्रिपुरुष
वशंकारिसर्वदुष्टमृगवशंकारिसर्वलोकवशंकारिह्रींश्रींक्लींऐं ( ७३ ) मातंगीश्रीपा० ॥ ७० ॥ ७१ ॥

भुवनेश्वरीमाह ॥ गगनमिति ॥ गगनंहः वह्निनारेफेणवामनेत्रेंदुभ्यांईबिंदुभ्यांयुतः ॥ यथा–ह्रीं ( १ ) भुवनेश्वरीश्रीपादुकांपू०पश्चिमे ॥ ७२ ॥ दशमेतरंगेवेदरुद्राक्षरश्चतुर्दशोत्तरशताणोंवाराहीमनुरुक्तः ॥ तेनतामुत्तरेयजेत् ॥ ॐऐंग्लौंऐंनमोभगवतिवार्तालिवाराहिवाराहवाराहमुखिऐंग्लौंऐंअंधेआंधिनिनमःरुंधेरुंधिनिनमः जंभेजंभिनिनमः मोहेमोहिनिनमःस्तंभेस्तंभिनिनमःऐंग्लौंऐंसर्वदुष्टप्रदुष्टानांसर्वेषांसर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तं

गगनंवह्निनावामनेत्रेंदुभ्यांसमन्वितम् ॥भुवनेशीमनुःप्रोक्तस्तेनतांपश्चिमेयजेत्॥ ७२॥तरंगेदशमेप्रो
क्तोवेदरुद्राक्षरोमनुः ॥ वाराह्यास्तेनतांदेव्यावामभागे समर्चयेत् ॥ ७३॥पंचिकाएवमाराध्यदर्शना
नियजेच्चषट् ॥ आद्यंमध्येचतुर्दिक्षुचत्वारिपुरतोंतिमम् ॥ ७४ ॥ शैवंशाक्तंतथाब्राह्मंवैष्णवंसौ
रसौगतम् ॥ दर्शनान्येवमाराध्यमूलेनत्रिःप्रतर्पयेत् ॥ ७५॥अंगुष्ठानामिकाभ्यांतांयच्छेत्पुष्पंतुमुद्र
या ॥ ज्ञानाख्ययासाचांगुष्ठतर्जनीयोगतोमता ॥ ७६ ॥एवंसंपूज्यबिंदुस्थांश्रीमत्रिपुरसुंदरीम् ॥
ततोंगाद्यावृतीनांतुपूजनंसम्यगाचरेत् ॥ ७७ ॥

भंकुरु२ शीघ्रंवशंकुरु २ ऐंग्लौंऐंठःठःठःठःहुंफट्स्वाहावाराहीश्रीपादु०–उत्तरे॥७३॥एवंपंचपंचिकाःसंपूज्यदर्शनानियजेत् ॥ अग्रेस्पष्टम् ॥ ७४ ॥ शिवदर्शनश्रीपा० इत्यादि० ॥ ७५ ॥ ज्ञानमुद्रामाह ॥ साचेति॥ अंगुष्ठतर्जनीयोगेज्ञानमुद्रा ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

भूबिंबमारभ्यबिंदुपर्यंतं प्रतिलोमेनवावरणपूजा ॥ आवरणेदेवतानामादौमायाश्रीबीजे अंतेतुश्रीपादुकांपूजयामीतिप्रयोगः ॥ आग्नेयेहृत् ॥ ईशेशिराः ॥ नैर्ऋत्येशिखा ॥ वायौकवचं ॥ पुरोनेत्रं ॥ दिक्ष्वस्त्रं ॥ यथा-श्रींह्रींक्लीं ऐंसौः हृदयंवाग्देवताश्रीपा० ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ त्रिरेखंभूगृहमस्ति ॥ कस्याधररेखायामष्टदिक्षुऊर्ध्वमधश्चाणिमाद्या

भूबिंबाद्बिंदुपर्य्यंतंनवावृतिसमर्चनम् ॥ मायाश्रीबीजपूर्वाणांनाम्नामंतेनियोजयेत् ॥७८॥ श्रीपादुकां
पूजयामीत्येतद्वर्णांश्चसर्वतः ॥ अग्नीशासुरवायव्यपुरोदिक्ष्वंगपूजनम्॥७९॥ भूबिंबस्याऽऽद्यरेखायां
दिक्षूर्द्धाधःक्रमाद्यजेत् ॥सिद्धोर्दशाणिमात्वाद्यामहिमालघिमेशिता॥ ८० ॥ वशित्वसिद्धिःप्राका
म्याभुक्तिरिच्छाष्टमीपुनः ॥ प्राप्तिश्चसर्वकामाख्यासिद्धयोदशकीर्तिताः॥८१॥ तप्तहेमसमानाभाः
पाशांकुशधराःशुभाः ॥ साधकेभ्यःप्रयच्छंतिरत्नौघंताविचिंतयेत् ॥ ८२ ॥ भूपुरेमध्यरेखायांपश्चि
माद्यर्चयेदिमाः ॥ ब्राह्मींमाहेश्वरींचापिकौमारींवैष्णवीमपि ॥ ८३ ॥

दशसिद्धीर्यजेत् ॥ ह्रींश्रींअणिमासिद्धिश्रीपादुकांपूजयामीत्यादिप्रयोगः ॥ ८० ॥ ८१ ॥ तासांध्यानमाह ॥ दक्षेंकुशधराः ॥ वामेपाशधराः॥ साधकेभ्योरत्नसमूहान्ददति ॥ ८२ ॥ भूगृहद्वितीयरेखायांपश्चिमादिषुदिक्षु ब्राह्म्याद्याअष्टमातॄर्यजेत् ॥ ह्रींश्रींब्राह्मीमातृकाश्रीपादुकांपूजयामीत्यादि० ॥ ८३ ॥

तासांध्यानमाह ॥ इमाइति ॥ ८४ ॥ क्रमाद्विद्यादीन्यायुधानिदधतीः॥ ८५ ॥ तस्यांभूपुरस्थतृतीयरेखायांदिक्षुऊर्ध्वमधश्चदशसंक्षोभणाद्यादशमुद्रायजेत् ॥ ह्रींश्रींक्षोभणमुद्राश्रीपा० ॥ ८६ ॥ मुद्राणांलक्षणान्युक्तानि ॥ एवंप्रथमावरणमाराध्य ॥ ८७ ॥ त्रैलोक्यमोहनेचक्रे इमाःप्रकटयोगिन्यः पूजितास्तर्पिताइष्टदाःसंत्वितिप्रार्थ्यमूले

वाराहींचतथैंद्राणींचामुंडामथसप्तमीम् ॥ महालक्ष्मीमिमाध्यायेत्सर्वाभरणसंयुताः ॥ ८४ ॥ विद्यांशूलंशक्तिचक्रेगदांवज्रंहिदंडकम्॥ पद्मंक्रमेणदधतीःसर्वाभीष्टप्रदायिकाः ॥८५ ॥ तस्यांतृतीयरेखायांदशमुद्राःप्रपूजयेत् ॥ क्षोभणद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशाः ॥ ८६ ॥ खेचरीबीजयोनीचत्रिखण्डेतिस्मृताइमाः ॥ एवंभूबिंबमाराध्यक्षोभमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥८७ ॥त्रैलोक्यमोहनेचक्रेयोगिन्यःप्रकटाइमाः ॥ पूजितास्तर्पिताःसंतुस्वेष्टदाइतिप्रार्थयेत् ॥८८॥ बिंदौपुष्पांजलिंदत्त्वामूलेनान्यवृतिंयजेत् ॥ षोडशारेपश्चिमादिविलोमेनक्रमादिमाः ॥ ८९ ॥

नबिंदौपुष्पांजलिंदद्यात् ॥ ततःषोडशारेविलोमेनपश्चिमादिषोडशकामाकर्षणाद्याःशक्तीःपूजयेत् ॥ ह्रींश्रींकामाकर्षणीशक्तिश्रीपा०इत्यादि० ॥ एवंद्वितीयावरणंसंपूज्यसर्वाशापूरकेचक्रेएताःषोडशगुप्तयोगिन्यःपूजितास्तर्पिताःसंत्वित्युक्त्वा ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४ ॥ द्राविणीमुद्रांदर्शयेत् ॥ सागादिता ॥ ९५ ॥ अष्टवर्गान्वितेष्टारेपूर्वाद्यनुलोमेनानंगकुसु
माद्याःपूजयेत् ॥ ह्रींश्रींअनंगकुसुमाश्रीपा० ॥ एवंतृतीयावरणंसंपूज्यसर्वसंक्षोभणेचक्रेएताअष्टौगुप्ततरयोगिन्यः

कामाकर्षणिकात्वाद्याबुद्ध्याकर्षणिकाततः ॥ अहंकाराकर्षिणीचशब्दाकर्षणिकापुनः ॥ ९० ॥
स्पर्शाकर्षणिकातद्वद्रूपाकर्षणिकापिच ॥ रसाकर्षणिकाचान्यागंधाकर्षणिकातथा ॥९१ ॥चित्ता
कर्षणिकाचापिधैर्य्याकर्षणिकापरा॥नामाकर्षणिकाचापिबीजाकर्षणिकातथा ॥ ९२॥ अमृताक
र्षणीचान्यास्मृत्याकर्षणिकातथा ॥ शरीराकर्षणीचैवमात्माकर्षणिकापरा ॥९३॥ सर्वाशापूरकेच
क्रेषोडशस्वरसंयुते ॥ गुप्ताएतास्तुयोगिन्यःपूजिताःसंत्विदंवदेत् ॥९४॥ दर्शयेद्द्राविणींमुद्रांद्विती
यावरणार्चने ॥ काद्यष्टवर्गसंयुक्तेष्टारेपूज्याइमाःपुनः ॥९५॥ पूर्वादिष्वनुलोमेनबंधूककुसुमप्रभाः॥
अनङ्गकुसुमात्वाद्याद्वितीयानंगमेखला॥९६॥अनङ्गमदनातद्वदनंगमदनातुरा॥अनंगरेखाचानंगवे
गानंगांकुशापुनः ॥९७॥ अनंगमालिनीत्यष्टौपाशांकुशलसत्कराः॥सर्वसंक्षोभणेचक्रेदेव्योगुप्ततरा
भिधाः।९८।पूजिताःसंत्वितिप्रोच्याःकर्षमुद्रांप्रदर्शयेत्।चतुर्दशारेसंपूज्याःकादिढांतार्णराजिते।९९

पूजिताःसंतु इत्युक्त्वाकर्षणमुद्रांदर्शयेत् ॥ ततश्चतुर्थावरणेचतुर्दशारेकादिचतुर्दशार्णयुते ॥ ९६॥ ९७ ॥ ९८॥ ९९॥

इंद्रगोपेत्यादि ॥ उक्तरूपाःदर्पणपाशधरवामकराः–पानपात्रांकुशधरदक्षकराः ॥ १०० ॥ सर्वसंक्षोभिण्याद्याश्चतुर्दशशक्तयः शक्तिपदादिकाःपश्चिमादिविलोमतःपूज्याः ॥ ह्रींश्रींकंसंक्षोभणीशक्तिश्रीपा० इत्यादि० ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ एवंचतुर्थावरणमाराध्यमूलं ततःसर्वसौभाग्यदेचक्रेइमाश्चतुर्दशसंप्रदाययोगिन्यःपूजि

इंद्रगोपनिभारम्यामदोन्मत्ताःसभूषणाः ॥ बिभ्रत्योदर्पणंपानपात्रंपाशांकुशावपि ॥ १०० ॥ पश्चिमादिविलोमेनचतुर्थावरणस्थिताः॥ ३॥ सर्वसंक्षोभिणीपूर्वासर्वविद्राविणीपरा॥ १॥ सर्वाकर्षिणिकाचान्यासर्वाह्लादकरीपुनः ॥ सर्वसंमोहिनीचापिसर्वस्तंभनकारिणी ॥२॥ सर्वजृंभणिकानामाष्टमीसर्ववशंकरी ॥ सर्वरंजिनिकाचापिसर्वोन्मादिनिकातथा ॥ ३ ॥ सर्वार्थसाधिनीचाथसर्वसंपत्तिपूरणी ॥ सर्वमंत्रमयीचांत्यासर्वद्वंद्वक्षयंकरी ॥४॥ मूलेनपुष्पंदत्त्वाथवश्यमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥सर्वसौभाग्यदेचक्रेसंप्रदायाभिधाइमाः॥५ ॥योगिन्यःपूजितास्तृप्तामंगलानिदिशंतुमे॥संप्रार्थ्येतिदशारेऽथणादिभांतार्णभूषिते॥६॥संपूज्यादशयोगिन्योजपापुष्पसमप्रभाः॥स्फुरन्मणिविभूषाढ्याःपाशांकुशलसत्कराः।७।पश्चिमादिविलोमेनसाधकाभीष्टसिद्धिदाः॥सर्वसिद्धिप्रदापूर्वासर्वसंपत्प्रदाततः १०८।

ताःसंत्वितिचोक्त्वापुष्पांजलिंदत्त्वावश्यमुद्रांदर्शयेत् ॥ णादिदशवर्णयुतेदशारेपश्चिमादिव्युत्क्रमेणसर्वसिद्धिप्रदाद्यदेवीपदाद्यादशपूजयेत् ॥ ह्रींश्रींणंसर्वसिद्धिप्रदादेवीश्रीपा० ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

एवंपंचमावरणंसंपूज्यपुष्पांजलिंदत्त्वाचसर्वार्थसाधकेचक्रेइमादशकुलयोगिन्यःपूजिताःसंत्विंतिसंप्राथ्योंन्मादमुद्रां

सर्वप्रियंकरीचान्यासर्वमंगलकारिणी ॥ सर्वकामप्रदापश्चात्सर्वदुःखविमोचनी ॥१०९॥ सर्वमृत्युप्रशमनीसर्वविघ्ननिवारिणी॥ सर्वांगसुन्दरीचान्यासर्वसौभाग्यदायिनी ॥१०॥बिंदौपुष्पंसमर्प्यार्थोन्मादमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ सर्वार्थसाधकेचक्रेपंचमेसर्वतःस्थिताः ॥११॥पूजिताःकुलयोगिन्यःसंतुमेभीष्टसिद्धिदाः॥ इतिसंप्रार्थ्यसंपूज्यमादिक्षांतविभूषिते ॥१२॥ परेदशारेयोगिन्यउद्यद्भास्करसन्निभाः ॥ ज्ञानमुद्राटंकपाशवरधारिकरांबुजाः॥१३ ॥ सर्वज्ञासर्वशक्तिश्चसैवैश्वर्य्यफलप्रदा ॥सर्वज्ञानमयीपश्चात्सर्वव्याधिविनाशिनी ॥ १४ ॥ सर्वाधारस्वरूपाचसर्वपापहरापरा॥सर्वानंदमयीदेवीसर्वरक्षास्वरूपिणी ॥ ११५॥

दर्शयेत् ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ततोपरेदशारेमादिवर्णयुतेज्ञानमुद्रावरदक्षकराः टंकपाशवामकराः उद्यद्रविनिभाः सर्वज्ञादेव्याद्या दश पूजयेत् ॥ ह्रींश्रींमं सर्वज्ञादेवीश्रीपा० ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥

एवंषष्ठमावरणमभ्यर्च्यमूलेनपुष्पांजलिंदत्त्वासर्वरक्षाकरेचक्रेइमादशनिगर्भयोगिन्यःपूजिताःसंत्वितिसंप्रार्थ्यांकुशमुद्रांदर्शयेत्॥ततोष्टारेरक्तवस्त्रबाणवरदक्षकराधनुर्विद्यावामकरान्यासोक्ताअष्टवशिन्याद्याउक्तबीजपूर्विकायजेत्॥ ह्रींश्रींअंआं इंईं उंऊं ऋंॠं लृंॡं एंऐं ओंऔं अंअः वशिनीवाग्देवताश्रीपा० ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

सर्वेप्सितार्थफलदापश्चिमादिविलोमगाः ॥ पुष्पंमूलेनदत्त्वाथोकुर्य्यान्मुद्रांमहांकुशाम् ॥ ११६ ॥
सर्वरक्षाकरेचक्रेनिगर्भाःपूजिताइमाः ॥ योगिन्यस्तर्पिताःसंतुममाभीष्टफलप्रदाः ॥१७॥ संप्रार्थ्यै
वमथाष्टारेदाडिमीपुष्पसन्निभाः ॥ रक्तांशुकाधनुर्बाणविद्यावरलसत्कराः ॥१८॥ अकाराद्यष्टवर्गा
द्याःपश्चिमादिविलोमतः ॥ पूजयेत्पूर्वसंप्रोक्ताबीजाद्याअष्टदेवताः॥१९॥ वशिनीचापिकौमारीमो
दिनीविमलारुणा ॥ जयिनीचापिसर्वेशीकौलिनीत्युदिताःपुरा॥१२०॥ सर्वरोगहरेचक्रेरहस्याःपू
जितामया ॥ तर्पिताःपूजिताःसन्त्वित्युक्त्वादद्यात्सुमांजलिम् ॥ २१॥ खेचरींदर्शयेन्मुद्रांसुंदरींतो
षयेत्ततः ॥ त्रिकोणेत्वकथाद्यर्णरचितेपश्चिमादितः ॥ १२२ ॥

॥ १२० ॥ एवंसप्तमावरणमिष्ट्वासर्वरोगहरेचक्रेइमाअष्टारेरहस्ययोगिन्यःपूजिताःसंत्वितिप्रार्थ्य० खेचरीमुद्रांदर्शयेत् ॥ १२१ ॥ १२२ ॥

ततोऽकथादिवर्णरचितेत्रिकोणेपश्चिमाद्यनुलोमेनचतुर्दिक्षु स्वस्वबीजपूर्वकान् जंभमोहवशस्तंभविशेषणविशिष्टाःकामेश्वरकामेश्वर्योर्बाणधनुःपाशांकुशान्पूजयेत् ॥ बीजान्याह ॥ बाणेति ॥ बाणादौपंचबाणबीजानि ॥ चापादौसबिंदुमीनकृष्णौधकारथकारौ ॥ पाशमायेआंह्रीमितिपाशादौ ॥ अंकुशस्यादौत्वंकुशंक्रोमिति ॥ हेतिदेवता आयुधदेवताः ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ तासांध्यानमाह ॥ नानेति ॥ स्वस्वायुधानिबाणादीनितैःसंयुताबाण

यजेत्कामेशकामेश्योर्बाणांश्चापंचपाशकम् ॥ अंकुशंचानुलोमेनचतुर्दिक्षुसमाहितः ॥ १२३ ॥
जंभमोहवशस्तंभपदाद्यान्बीजपूर्वकान् ॥ बाणबीजानिबाणादौमीनकृष्णौसबिंदुकौ ॥२४॥ चापा
दौपाशकस्यादौपाशमायेनियोजयेत् ॥ अंकुशंत्वंकुशस्यादौस्मर्तव्याहेतिदेवताः ॥२५॥ नानारत्न
विभूषाढ्याःस्वस्वायुधसमन्विताः ॥ विद्युद्दामसमानांग्योयौवनोन्मदमंथराः ॥ १२६ ॥

धराइत्यादि० ॥ प्रयोगोयथा–यांरांलांवांशांद्रांद्रींक्लींब्लूंसःकामेश्वरकामेश्वरीजंभनबाणश्रीपा० पश्चिमे ॥ धंथं कामेश्वरकामेश्वरीमोहनधनुःश्रीपा०उत्तरे ॥ आंह्रींकामेश्वरकामेश्वरीवशीकरणपाशश्रीपा०पूर्वे । क्रोंकामेश्वरकामेश्वरीस्तंभनांकुशश्रीपा०दाक्षिणे ॥ १२६ ॥

अग्नीति ॥ अग्निदक्षिणवामकोणेषुकूटत्रयंपूर्वं ॥ रुद्रविष्णुब्रह्मणांशक्तयश्चतिस्रःकामेश्वरावज्रेश्वरीभगमालिनी संज्ञाःपूज्याः ॥ १२७ ॥ तासांध्यानान्याहश्लोकत्रयेण ॥ कामेति॥वामयोःपुस्तकाभये ॥ वराक्षमालेदक्षयोः ॥ उद्यन्मार्तंडोभानुस्तेनसमानाप्रभायस्याः ॥ वरपुष्पबाणौदक्षयोः ॥ इक्षुधनुरभयेवामयोः ॥ भगेति ॥ हाटकं कनकंतत्तुल्यंकांतिः ॥ ज्ञानमुद्रावरौदक्षयोः ॥ पाशांकुशौवामयोः ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ प्रयोगोयथा–

अग्न्यादिकोणत्रितयेपूज्याःकूटत्रयादिकाः॥कामेश्वरीचवज्रेशीतृतीयाभगमालिनी॥ १२७ ॥ कामे
श्वरीरुद्रशक्तिःशरच्चंद्रशतप्रभा॥ स्मर्तव्यादधतीहस्तैःपुस्तकाऽभीवरस्रजः ॥ २८ ॥ वज्रेश्वरीविष्णु
शक्तिरुद्यन्मार्तंडसप्रभा ॥ इक्षुचापवराभीतिपुष्पबाणलसत्करा ॥ २९ ॥ भगमालाब्रह्मशक्तिस्तप्त
हाटकसप्रभा ॥ ज्ञानमुद्रांवरंपाशमंकुशंदधतीकरैः ॥ ३० ॥ एवंत्रिकोणंसंपूज्ययच्छेत्पुष्पाञ्जलिं
ततः॥ बीजमुद्रांप्रदर्श्याथप्रार्थयेत्सुंदरीमिदम् ।' ३१ ॥ सर्वसिद्धिप्रदेचक्रेयोगिन्यःपूजितामया ॥
दिशंत्वतिरहस्याख्यामंगलंमेनिरंतरम् ॥ १३२ ॥

कएईलह्रींकामरूपपीठेकामेश्वरीरुद्रशक्तिश्रीपा० ॥ हसकलह्रींपूर्णगिरिपीठेवज्रेश्वरीविष्णुशक्तिश्री० ॥ सकलह्रींजालंधरपीठेभगमालिनीब्रह्मशक्तिश्रीपा० ॥ एवमष्टमावरणमिष्ट्वासर्वसिद्धिप्रदेचक्रेमूलेनपुष्पांजलिंदत्वाइमा अतिरहस्ययोगिन्यःपूजिताःसंत्वितिसंप्रार्थ्यबीजमुद्रांदर्शयेत् ॥ १३१ ॥ १३२ ॥

ततोमूलविद्यांपठित्वाध्यात्वाबिंदौश्रीमात्रिपुरसुंदरीश्रीपादुकांपूजयामीतियजेत् ॥ १३३ ॥ एवंनवमावरणमाराध्यसर्वकामप्रदेचक्रेसर्वाभीष्टदायिनीपरापररहस्ययोगिनी श्रीमात्रिपुरसुंदरीपूजितास्त्वितिसंप्रार्थ्ययोनिमुद्रां

बिन्दौसंपूजयेत्पश्चाच्छ्रीमत्रिपुरसुंदरीम् ॥ मूलविद्यांसमुच्चार्य्यध्यात्वापूर्वोक्तवर्त्मना १३३ ॥ सर्वानंदमयेचक्रेसर्वाभीष्टविधायिनीम्॥ परापररहस्याख्यायोगिनीपूजितास्तुमे ॥ ३४॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्याथतर्पणंत्रिःसमाचरेत् ॥ धूपंदीपंचनैवेद्यमन्नैर्नानाविधैर्दिशेत् ॥ ३५ ॥वह्निंसंपूज्यपूर्वोक्तविधिनातत्रसुंदरीम् ॥ आवाह्यजुहुयाद्द्रव्यंपंचविंशतिसंख्यया ॥३६॥ श्रीचक्रस्यबलिंदद्याद्धुतशेषेनसंयुतः॥ईशानाग्नेयनैर्ऋत्यवायुकोणेषुचक्रमात्॥ ३७॥बटुकस्यचयोगिन्याःक्षेत्रेशगणनाथयोः॥ निजैर्मंत्रैःस्वमुद्राभिःपूर्वसंकीर्तितैर्मया ॥३८ ॥ प्रदक्षिणानतीःकृत्वामूलविद्यांततोयजेत्॥एवंश्रीसुंदरींनित्यंपूजयन्विजितेंद्रियः ॥१३९ ॥

प्रदश्यत्रिस्तर्पयित्वाधूपदीपादीनिदत्त्वाअग्नावावाह्यहुत्वोद्वासयेत् ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ ततईशानादिकोणेषु हुतशेषेणबटुकयोगिनीक्षेत्रपालगणेशेभ्यःपूर्वोक्तैःस्वस्वमंत्रैस्त त्तन्मुद्रादर्शनपूर्वकंबलिंदद्यात् ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ नतीर्नमस्कारान् ॥ १३९ ॥

नवावृतियुतांनवावरणैरुक्तैर्युताम् ॥ १४० ॥ प्रयोगानाह ॥ नवेति ॥ १४१ ॥चंद्रःकर्पूरम् ॥ कामाधिको
भवेद्रूपेणेतिशेषः ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ दधीति ॥ दध्नारोग्यम् ॥ आज्येनसंपदम् ॥ दुग्धेनग्रामम् ॥ मधुनाधन

नवावृतियुतांसर्वान्कामानिष्टानवाप्नुयात् ॥ अथप्रयोगावक्ष्यंतेसाधकाभीष्टसिद्धिदाः ॥ १४० ॥
नवलक्षजपेनास्यरुद्ररूपोनरोभवेत् ॥ मल्लिकामालतीपुष्पैर्होमाद्वागीशतामियात् ॥ ४१ ॥ करवी
रैर्जपापुष्पहोमान्मोहयतेजगत् ॥ चन्द्रकुंकुमकस्तूरीहोमात्कामाधिकोभवेत् ॥ ४२ ॥ चंपकैःपाट
लैर्विश्वंवशमानयतेऽचिरात् ॥ लाजाहोमोराज्यदायीमधुनोपद्रवक्षयः ॥४३॥ निशिच्छागपलैर्हो
मोरिपुसैन्यविनाशकृत् ॥ दध्याज्यदुग्धमधुभिःक्रमाद्धोमादवाप्नुयात् ॥४४॥ आरोग्यंसंपदंग्रामं
धनंशर्करयासुखम्॥कमलैर्धनसंपत्तिर्दाडिमैराजवश्यताम् ॥ ४५॥ क्षत्रियामातुलिंगैस्तुवैश्यानारं
गजैःफलैः ॥ शूद्राःकूष्मांडसंभूतैर्वश्याःस्युरचिराद्धुतैः ॥ १४६ ॥

मितिक्रमः ॥ राजवश्यतामवाप्नुयादितिपूर्वेणसंबंधः ॥ मातुलिंगैर्बीजपूरैर्हुतैःक्षत्रियावश्याः ॥ एवम
ग्रेपि ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥

॥ १४७ ॥ १४८ ॥ धराभूमिर्वशातत्स्थाःप्राणिनावश्याःस्युरित्यर्थः ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ मध्येमंत्र
मध्येयत्कूटत्रयंतत्रान्यवर्णयोगात्कुबेरोपासितयोर्द्वात्रिंशद्भेदास्तेग्रंथगौरवभीत्यानोक्ताः ॥ अनयैवोपासितया
सर्वेष्टसिद्धेश्चमुख्यैषैवकामराजविद्या ॥ तेभेदायथा–हसकलएईलह्रीं हसकलएईलह्रीं सहकएईलह्रीं हसकह

पनसानांलक्षहोमाद्वश्यास्स्युश्चक्रवर्तिनः ॥ द्राक्षाफलैरिष्टसिद्धीरंभाभिर्मंत्रिणोवशाः ॥ १४७ ॥
नारिकेलैस्तुसंपत्तिस्तिलैःसर्वेष्टसिद्धयः ॥ गुग्गुलैर्दुःखनाशःस्यात्सर्वेष्टंशर्करागुडैः॥४८॥पायसैर्ध
नधान्याप्तिर्बंधूकैःप्राणिनोवशाः ॥ पक्वैश्चूतफलैर्होमाल्लक्षमात्राद्धरावशा ॥४९॥ लवणैराजिकायुक्तै
र्होमाद्दुष्टविनाशनम् ॥ कर्पूरहोमाल्लभतेवाक्पतित्वंनरोऽचिरात् ॥ ५० ॥ करंजफलहोमेनभूतप्रेता
दयोवशाः ॥ बिल्वैःस्यादतुलालक्ष्मीरिक्षुदंडैःसुखाप्तयः ॥ ५१॥ घृतहोमादीप्सिताप्तिःशांतिःस्या
त्तिलतंडुलैः ॥ किंबहूक्तेनदेवेशिसर्वेष्टंसाधितंनृणाम् ॥ ५२ ॥ मध्येकूटत्रिकेभेदावर्णान्तरनियोज
नात् ॥ बहवोन्येनगदिताग्रंथगौरवभीतितः ॥ १५३ ॥

एईलह्रीं सहकहएईलह्रीं कहसहएईलह्रीं ॥ एतत्कौबेरद्वियंकूटद्वयंरामराजीयम् ॥ सहसकलह्रीं सहसकलह्रीं
हसकहलह्रींसकलह्रीं ॥ एतद्द्वयमगस्त्योपासितम् ॥ हसकलह्रींअंतेकामराजीयेआद्यद्वयंकामराजीयं सहस

कलह्रीं ॥ एतद्द्वयंलोपामुद्रोपासितम् ॥ हसकएईलह्रींसहएकईलह्रींहसकएईलह्रीं ॥ हसकएईलह्रीं सह
कएईलह्रीं । तृतीयमीदृशमेव ॥ चान्द्रीद्वयमेतत् ॥ सकलह्रीं ॥ सकलहलह्रीं ॥ हसकलहह्रीं ॥ कएईल
हसकहलहह्रींह्रींहीलसकहलह्रीं ॥ एतद्द्वयंदुर्वासोर्चितम् ॥ तदुक्तंज्ञानार्णवे--कामराजाख्यविद्यायास्त्रिकूटेषु
वरानने ॥ यास्थिताभुवनेशानीद्विधाकुरुमहेश्वरि ॥ बिंदुहीनानादहीनादुर्वासोपासिताभवेत् ॥ संहिता
यांच--वाग्भवस्थंचतुष्कंचकामराजस्थपंचकम् ॥ शक्तिकूटंत्रिकार्यचकामराजस्यसंलिखेत् ॥ मायास्थानेहरीवर्ण
युगलंचक्रमाल्लिखेत् ॥ दुर्वाससापूजितेयंपुरुषार्थप्रदायिनीति ॥ कएईलहरीहसकहलहरीसहलहरी ॥ एतद्द्वयं
दुर्वाससार्चितम् ॥ आद्याकामराजतुल्या ॥ सहकलह्रीं० अंत्येएतादृशेएव ॥ ऐंद्रीद्वयमेतत् ॥ सएईलह्रीं हकहक
हलह्रीं०सकलह्रीं ॥ सहसकलह्रींसहसकलकहलह्रीं ॥ आद्यमेवतृतीयम् ॥ नंदिविद्याद्वयमेतत् ॥ हसकहलह्रीं ॥
सकहसकलह्रींसहकहलह्रीं ॥ १५ ॥ हसएकलह्रींद्वयमेतद्देवस्कांदीद्वयमेतत् ॥ १६ ॥ कहएईलहींहकएईलह्रींसक
एईलह्रीं ॥१७॥ मानवी॥ कएकलह्रींहकहलह्रींसहकलह्रीं ॥ १८ ॥ धर्मराजी ॥ आद्यंकामराजीयं ॥ द्वितीये
तृतीयेधार्मराजीये ॥ १९ ॥ एषावारुणी ॥ कसकलह्रींहसकलह्रींसकलरह्रीं ॥ २० ॥ आग्नेयी ॥ हसकलह्रींहस
कलह्रींतृतीयमाग्नेयम् ॥ २१ ॥ एषाशैषी ॥ कएरलारह्रींहकलरहलह्रींसरकलरह्रीं ॥ २२ ॥ वायवीयम् ॥ कएईर
लह्रींहकहलह्रींसहकलरह्रीं ॥ २३ ॥ सौमीयम् ॥ कहलह्रींहकहललरह्रींसकलह्रीं ॥ २४ ॥ ऐशीयम् ॥ कएकल

ह्रीं ॥ अन्तेकामराजीयम् ॥२५॥ शाक्तीयम् ॥ आद्यंकामराजद्वयम् ॥ अन्त्यंसकलह्रीमिति ॥२६॥ रतिपूजिता॥ हसकलह्रींहकसरह्रींआद्यमेवतृतीयम् ॥ २७ ॥ जैवीयम् ॥ आद्यंकामराजीयं ॥ हकहसरह्रींहसकलह्रीं ॥ २८ ॥ ब्राह्मीयं ॥ सहलह्रींसहकलहलह्रीं ॥ २९ ॥ वैष्णवीयम् ॥ आद्यंकामराजीयं ॥ हकहलह्रींहसकलह्रीं ॥ ३० ॥ उन्मनीयं ॥ हसकलह्रींसहकलह्रींकलह्रींसकलहलह्रीं ॥३१॥ सौरी ॥ एतेभेदाः ॥ एषांश्रीबीजादिभिःसंपुटिताः॥

अपरीक्षितशिष्यायनदेयेयंकदाचन ॥ पुत्रायवासुशिष्याय दत्त्वाभीष्टप्रदायिनी ॥१५४॥ गोपालसुंदरींवक्ष्येभोगमोक्षप्रदायिकाम् ॥ मायारमाचित्तजन्माकृष्णायेतिपदंततः॥५५॥ आद्यंवाक्कूटमुच्चार्य्यगोविंदायपदंवदेत् ॥ द्वितीयंतुततःकूटंगोपीजनपदंततः॥५६॥ वल्लभायपदान्तंतुतृतीयंकूटमुच्चरेत् ॥ स्वाहांतावह्नियुग्माणीस्मृतागोपालसुंदरी ॥ ५७॥ विद्यायाद्यौमुनीउक्तौविधात्रानंदभैरवौ ॥ छंदस्तुदैवीगायत्रीदेवतासुंदरीयुता ॥ १५८ ॥

कामराजवदेवउपासनमपि ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ गोपालसुन्दरीमिति ॥ मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ चित्तजन्माक्लीं ॥ कृष्णाय ॥ १५५ ॥ प्रथमकूटं ॥ गोविंदायद्वितीयंकूटं ॥ गोपीजनवल्लभाय तृतीयं ॥ स्वाहांता ॥ वह्नियुग्माणांत्रयोविंशतिवर्णा ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥

---

१ अस्यगोपालसुंदरीमंत्रस्य । विधात्रानंदभैरवौऋषी । देवीगायत्रीछंदः । गोपालसुंदरीदेवता । क्लींबीजं । स्वाहाशक्तिः । ममाभीष्ट० ।

षडंगमाह ॥ मायेति ॥ १५९ ॥ १६० ॥ वर्णन्यासमाह ॥ मूर्ध्नीति ॥ हृदादिबाह्वंतःस्थितिन्यासः ॥ पादादिमूर्द्धांतःसंहारन्यासः ॥ एवंन्यासत्रयंकृत्वा पुनःसृष्टिस्थितिन्यासौकुर्यात् ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ कर

गोपालोमन्मथोबीजंशक्तिःपावकवल्लभा ॥ मायाश्रीर्मन्मथैर्हृत्स्यात्कृष्णायशिरईरितम् ॥१५९॥
गोविंदायशिखागोपीजनेतिकवचंमतम् ॥ वल्लभायस्मृतंनेत्रमस्त्रंपावकभार्य्यया ॥ ६० ॥ मू
र्ध्निभालेभ्रुवोरक्ष्णोःकर्णयोर्नासयोर्मुखे ॥ चिबुकेचगलेबाह्वोर्हृदयेजठरेन्यसेत् ॥ ६१ ॥ नाभौ
लिंगेगुदेसक्थ्नोर्जान्वोर्जंघयोरपि ॥ गुल्फयोःपादयोर्वर्णान्कूटत्रयविवर्जितान् ॥६२॥ सृष्टिन्यासो
ऽयमुदितोहृदाद्यंसांतिकास्थितिः ॥ संहारोंघ्र्यादिमूर्द्धांतःपुनःसृष्टिंस्थितिंचरेत् ॥ ६३ ॥ करशु
द्ध्यासनन्यासौन्यासंवाग्देवताभिधम् ॥ कृत्वापूर्वोदितान्कूटत्रयंकास्यहृदिन्यसेत् ॥ ६४ ॥
कूटत्रयद्विरावृत्त्याषडंगंपुनराचरेत् ॥ कमलावसुधायुक्तंध्यायेच्छ्रीचक्रगंहरिम् ॥ १६५ ॥

शुद्धिन्यासासनन्यासवाग्देवतान्यासान्सुंदर्युक्तान्कृत्वामूर्धमुखहृत्सुकूटत्रयंन्यसेत् ॥ १६४ ॥ १६५ ॥

ध्यानमाह ॥ क्षीरेति ॥ क्षीरसमुद्रस्यकल्पद्रुमवनेविलसन्रत्नयुक्योमंडपस्तदंतःप्रोद्यत्यत्श्रीपीठंतत्रस्थितमष्टकरं पद्मचक्रबाणवेणुदक्षकरंचापपाशांकुशवीणावामकरमवनिमाभ्यांधरालक्ष्मीभ्यां शोभितंब्रह्मादिसुरैःस्तूयमानंगो

क्षीरांभोधिस्थकल्पद्रूमवनविलसद्रत्नयुङ्मंडपांतःप्रोद्यच्छ्रीपीठसंस्थंकरधृतजलजारीक्षुचापांकुशेषु
म् ॥ पाशंवीणांसुवेणुंदधतमवनिमाशोभितंरक्तकांतिंध्यायेद्गोपालमीशंविधिमुखविबुधैरीडचमानं
समंतात् ॥ १६६ ॥एवंध्यात्वाजपेल्लक्षंदशांशंपायसांधसा ॥ जुहुयाद्वैष्णवेपीठेपूजयेत्सुंदरींहरिम्
॥ ६७ ॥ आदावंगानिसंपूज्यप्रागाद्याशासुपूजयेत् ॥ वासुदेवंसंकर्षणंप्रद्युम्नमनिरुद्धकम् ॥६८॥
पूज्यावह्न्यादिकोणेषुशांतिःश्रीश्चसरस्वती ॥ रतिःपुनर्दिक्षुपूज्यारुक्मिणीसत्यभामिका ॥६९ ॥
कालिंदीजाम्बवत्याख्यामित्रविंदासुनंदया ॥ सुलक्षणानाग्निजितीततोर्च्यानिधयोपिच ॥ ७० ॥
महापद्मश्चपद्मश्चशंखोमकरकच्छपौ ॥मुकुंदकुंदनीलाश्चखर्वश्चनिधयोनव॥७१॥ततश्चसुंदरीप्रो
क्तावृतिपूजांसमाचरेत् ॥ प्रयोगानपितत्रोक्तान्कुर्यादिष्टप्रसिद्धये ॥ १७२ ॥

पालंध्यायेत् ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ विधीनाह ॥ महापद्मश्चेति ॥ १७१ ॥ ततःसुंदरीमंत्रोक्तानिनवावरणानियजेत् ॥ १७२ ॥

ब्रह्मणःसायुज्यंब्रह्मरूपंप्राप्नोति ॥ १७३ ॥ इतिश्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांसुंदरीपूजनंनामद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥ श्रीहनुमतोमंत्रान्वक्तुंप्रतिजानीते ॥ अथेति ॥ मंत्रमुद्धरति ॥ इंद्रेति ॥ वराहोहः इंद्रस्वरऔबिंदुस्ताभ्यांयुतः[१]हौं ॥ हसफस्वरूपम् ॥ अग्निरःएते ॥ १ ॥ झिंटीशाबिंदुयुताः एबिंदुयुताः ॥ तेनह्[२]स्फ्रें ॥ गदीखः ॥

एवंयोभजतेनित्यंश्रीमद्गोपालसुंदरीम् ॥ सर्वान्कामानवाप्यांतेसायुज्यंब्रह्मणोव्रजेत् ॥१७३॥इति
श्रीमहीधरविरचितेमंत्रमहोदधौश्रीचक्रस्थत्रिपुरसुंदरीगोपालसुंदर्योःपूजनंनामद्वादशस्तरंगः॥१२॥
अथोच्यंतेहनुमतोमंत्राःसर्वेष्टसिद्धये ॥ इन्द्रस्वरेंदुसंयुक्तोवराहोहसफाग्नयः ॥ १ ॥ झिंटीशबिंदुसं
युक्ताद्वितीयंबीजमीरितम् ॥ गदीपांताग्निरुद्रेंदुसंयुतःस्यात्तृतीयकम्॥२॥ हसरामनुचंद्राढ्याश्चतु
र्थंहसखाःफराः ॥ शिवेंद्राढ्याः पंचमःस्याद्धसौमन्बिंदुगौपरम् ॥ ३ ॥

पांताग्निरुद्रेंदुयुतः ॥ पांतःफःअग्नीरःरुद्रए ॥ इंदुर्बिंदुःतैर्युतः ॥ [३]ख्फ्रें ॥ २ ॥ हसरा मनुचंद्राढ्याः औबिंदुयुताः ह्[४]स्रौं ॥ हसखफराःशिवेंद्राढ्याःएबिंदुयुताः ॥ तेनह्[५]स्ख्फ्रें ॥ हसौमान्बिन्दुगौ औबिंदुयुतौ[६]ह्सौं ॥ परंततः॥ ३ ॥

ङेयुतोहनुमान्हनुमते ॥ हार्दंनमः ॥ यथा–ह्रौंह्स्फ्रेंख्फ्रेंह्स्रौंह्स्ख्फ्रेंह्सौंहनुमतेनमः ॥ ४ ॥ षष्ठंह्सौमितिबीजं ॥ द्वितीयंह्स्फ्रेमितिशक्तिः ॥ ह्रौंहृत् ॥ ह्स्फ्रेंशिरः ॥ ख्फ्रेंशिखेत्यादि० ॥ वर्णन्यासमाह ॥ मूर्ध्नीति ॥ एकैकंसर्वत्र०

ङेयुतोहनुमान्हार्दमंत्रोयंद्वादशाक्षरः ॥ रामचंद्रोमुनिश्चास्यजगतीछंदईरितम् ॥ ४ ॥ हनुमान्देवताबीजंषष्ठंशक्तिर्द्वितीयकम् ॥ षड्बीजैरंगषट्कंस्यान्मूर्ध्निभालेदृशोर्मुखे ॥ ५ ॥ कंठेचबाहुद्वितये हृदिकुक्षौचनाभितः॥लिंगेजानुद्वयेपादद्वयेवर्णान्क्रमान्न्यसेत् ॥ ६॥ षड्बीजानिपदद्वंद्वंमूर्ध्नि भाले मुखेहृदि ॥ नाभावूर्वोर्जंघयोश्चपादयोर्विन्यसेत्क्रमात् ॥७॥बालार्कायुततेजसंत्रिभुवनप्रक्षोभकंसुन्दरंसुग्रीवादिसमस्तवानरगणैःसंसेव्यपादाम्बुजम् ॥ नादेनैवसमस्तराक्षसगणान्संत्रासयंतंप्रभुंश्रीमद्रामपदांबुजस्मृतिरतंध्यायामिवातात्मजम् ॥ ८ ॥ एवंध्यात्वाजपेदर्कसहस्रंजितमानसः ॥ दशांशंजुहुयाद्व्रीहीन्पयोदध्याज्यसंयुतान् ॥ ९ ॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ पदन्यासमाह ॥ षाडिति ॥ पदद्वंद्वंहनुमतेनमइति ॥ ७ ॥ ध्यानमाह ॥ बालेति ॥ वातात्मजंहनुमंतम् ॥ ८ ॥ ९ ॥

---

१ अस्यश्रीहनुमन्मंत्रस्य रामचंद्रऋषिः । जगतीच्छंदः । हनुमान्देवता । ह्सौंबीजं । ह्स्फ्रेंशक्तिर्ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

दलेषुतदाह्वयान् हनुमन्नामानि ॥ १० ॥ तानाह ॥ रामभक्तइत्यादि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

विमलादियुतेपीठेपूजाकार्याहनूमतः॥केसरेष्वंगपूजास्याद्दलेष्वन्यांस्तदाह्वयान् ॥ १० ॥ रामभ
क्तोमहातेजाकपिराजोमहाबलः ॥ द्रोणाद्रिहारकोमेरुपीठकार्चनकारकः ॥ ११ ॥ दक्षिणाशा
भास्करश्चसर्वविघ्ननिवारकः ॥ एवंनामानिसंपूज्यदलाग्रेषुचवानरान् ॥१२॥ सुग्रीवमंगदंनीलंजां
बवंतंनलंतथा ॥ सुषेणंद्विविदंमैंदंपूजयेद्दिक्पतीनपि ॥ १३ ॥ एवंसिद्धेमनौमंत्रीस्वपरेष्टंप्रसाधये
त् ॥कदलीबीजपूराम्रफलैर्हुत्वासहस्रकम् ॥ १४ ॥ द्वाविंशतिब्रह्मचारिविप्रान्संभोजयेदथ ॥ एवं
कृतेमहाभूतविषचौराद्युपद्रवाः ॥१५॥ नश्यंतिक्षणमात्रेणविद्वेषिग्रहदानवाः ॥ अष्टोत्तरशतंवारि
मंत्रितंविषनाशनम् ॥ १६ ॥ रात्रौनवशतंमंत्रंजपेद्दशदिनावधि ॥ योनरस्तस्यनश्यंतिराजशत्रूत्थ
भीतयः ॥ १७ ॥ अभिचारोत्थभूतोत्थज्वरेतन्मंत्रितैर्जलैः॥भस्मभिःसलिलैर्वापिताडयेज्ज्वरिणः
क्रुधा ॥ १८॥ दिनत्रयाज्ज्वरान्मुक्तःससुखंलभतेनरः॥तन्मंत्रितौषधंजग्ध्वानीरोगोजायतेध्रुवम्॥
॥ १९ ॥ तन्मंत्रिततंपयःपीत्वायोद्धुंगच्छेन्मनुंजपन्॥तज्जप्तभस्मलिप्तांगःशस्त्रसंघैर्नबाध्यते ॥२०॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

शस्त्रक्षतादयोवारत्रयमंत्रितेनभस्मनामार्जिताअचिराच्छुष्यंतिनश्यंति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ देहचंदनंदेहेधृतंय
च्चंदनंतेनयुतं भस्मांबुचमंत्रितंयस्मैदीयतेसवश्यःस्यात् ॥ २४ ॥ ईशानेत्यादितद्गृहंचिरमित्यतंएकःप्रयोगः ॥ भूतां

शस्त्रक्षतंव्रणःशोफोलूतास्फोटोपिभस्मना ॥ त्रिमंत्रितेनसंस्पृष्टाःशुष्यंत्यचिरतोनृणाम् ॥ २१ ॥
सूर्य्यास्तमयमारभ्यजपेत्सूर्योदयावधि ॥ कीलकंभस्मचादायसप्ताहावधिसंयतः ॥ २२ ॥ निखने
द्भस्मकीलौतौविद्विषांद्वार्य्यलक्षितम् ॥ विद्वेषमिथआपन्नाःपलायंतेऽरयोऽचिरात् ॥ २३ ॥ अभिमंत्रि
तभस्माम्बुदेहचंदनसंयुतम् ॥ खाद्यादियोजितंयस्मैदीयतेसचदासवत् ॥ २४ ॥ क्रूराश्वजंतवोनेनभवं
तिविधिनावशाः ॥ ईशानदिक्स्थमूलेनभूतांकुशतरोःशुभाम् ॥ २५ ॥ अंगुष्ठमात्रांप्रतिमांप्रविधायह
नूमतः ॥ प्राणसंस्थापनंकृत्वासिंदूरैःपरिपूज्यच ॥ २६ ॥ गृहस्याभिमुखेद्वारेनिखनेन्मंत्रमुच्चरन् ॥
भूताभिचारचौराग्निविषरोगनृपोद्भवाः ॥ २७ ॥ संजायंतेगृहेतस्मिन्नकदाचिदुपद्रवाः ॥ प्रत्यहंधन
पुत्राद्यैरेधतेतद्गृहंचिरम् ॥ २८ ॥

कुशतरोःकरंजस्यअरिष्टस्यईशानदिशिस्थितेनमूलेनांगुष्ठमितांहनुमत्प्रतिमांकृत्वाप्राणान्संस्थाप्यासिंदूरैरभ्यर्च्यय
द्गृहद्वारिनिखन्यतेतत्रसर्वोपद्रवनाशस्तद्गृद्धिश्च ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ शिवावितं शिवेनापिरक्षितं शत्रुमेवंकुर्वन्हन्यात् ॥ अर्द्धचंद्रेत्यादिरिपुमुद्धतमित्यंतएकोमा

निशिश्मशानभूमिस्थौभस्मनामृत्स्नयापिवा ॥ शत्रोःप्रतिकृतिंकृत्वाहृदिनामसमालिखेत्॥२९ ॥
कृतप्राणप्रतिष्ठांतांभिंद्याच्छस्त्रैर्मनुंजपन् ॥ मंत्रांतेप्रोच्चरेच्छत्रोर्नामछिंधिचभिंधिच ॥ ३० ॥ मारये
तिचतस्यांतेदंतैरोष्ठंनिपीड्यच ॥ पाण्योस्तलेप्रपीड्याथत्यक्त्वातांसदनंव्रजेत् ॥ ३१ ॥ एवंसप्त
दिनंकुर्वन्हन्याच्छत्रुंशिवावितम्॥अर्द्धचंद्राकृतौकुंडेस्थंडिलेवाहुतंचरेत् ॥३२ ॥ मुक्तकेशःश्मशा
नस्थेलवणैराजिकायुतैः ॥ उन्मत्तफलपुष्पैश्चनखरोमविषैरपि ॥ ३३ ॥ काककौशिकगृध्राणांपक्षैः
श्लेष्मातकाक्षजैः ॥ समिद्भिरैश्चत्रिशतंदक्षिणाशामुखोनिशि ॥ ३४ ॥ सप्तघस्रानिदंकुर्वन्मारयेद्रिपु
मुद्धतम् ॥ शतषट्कंजपेद्रात्रौश्मशानेदिवसत्रयम् ॥ ३५ ॥ततोवेतालउत्थायवदेद्भाविशुभाशुभम् ॥
उदितंकुरुतेसर्वंकिंकरीभूयमंत्रिणः ॥ ३६ ॥

रणप्रयोगः ॥ उन्मत्तोधत्तूरः ॥ श्लेष्मातकश्चिक्कणफलोवृक्षः ॥ अक्षोबिभीतकस्तदुत्थसामीद्भिश्चहुतंचरेज्जुहुयात्सप्त घस्रान् दिवसान् ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥ ३८ ॥ पराधीनोबद्धोनिगडाच्छृंखलातोमुच्यते ॥ विद्वेषणादीनिविद्वेषमारणोच्चाटान्तत्कृतपल्लवंलिखन्नेवंकुर्यात् ॥ अमुकंद्वेषय २ इतिद्वेष्ये मारय २ इतिमारणे इत्यादिपल्लवलेखनम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ कुबेराक्षः

हनुमत्प्रतिमांभूमौविलिखेत्तत्पुरोमनून् ॥ साध्यनामद्वितीयांतंविमोचयविमोचय ॥ ३७ ॥ तत्सर्वंमार्जये
द्वामहस्तेनाथपुनर्लिखेत् ॥ एवमष्टोत्तरशतंलिखित्वामार्जयेत्पुनः ॥ ३८ ॥ एवंकृतेपराधीनोमुच्यते
निगडात्क्षणात् ॥ एवंविद्वेषणादीनिकुर्यात्तत्पल्लवंलिखन् ॥ ३९ ॥ वश्यार्थेसर्षपैर्होमोविद्वेषकरवीरजैः
॥ कुसुमैरिध्मकाष्ठैर्वाजीरकैर्मरिचैरपि ॥ ४० ॥ ज्वरेदूर्वागुडूचीभिर्दध्नाक्षीरेणवाघृतैः ॥ शूलेहोमः
कुबेराक्षैरेरंडसमिधातथा ॥ ४१ ॥ तैलाक्ताभिश्चनिर्गुंडीसमिद्भिर्वाप्रयत्नतः ॥ सौभाग्येचंदनैश्चंद्रैरोचनै
लालवंगकैः ॥ ४२ ॥ सुगंधिपुष्पैर्वस्त्राप्त्यैतत्तद्धान्यैस्तदाप्तये ॥ तत्पादरजसाराजीलवणाक्तेनमृत्यवे
॥ ४३ ॥ किंबहूक्तैर्विषेव्याधौशांतौमोहेचमारणे ॥ विवादेस्तंभनेद्यूतभूतभीतौचसंकटे ॥ ४४ ॥
वश्येयुद्धेनृपद्वारेसमरेचौरसंकटे ॥ मंत्रोयंसाधितोदद्यादिष्टसिद्धिंध्रुवंनृणाम् ॥ ४५ ॥

सूक्ष्मकणास्तिक्तक्षुपाविशेषः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ यद्धान्यैर्होमस्तदाप्तिः ॥ राजीलवणयुतेनयत्पादरजसाहूयतेसाम्रियते ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मंत्रमाह ॥ वलयेति ॥ पुच्छाकारंवलयत्रयंविलिख्यमध्येआमितिबीजेनवेष्टितंसाध्यनामलिखेत् ॥ तदुपर्यष्टदले षुहुमिति ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ बहिरेकंवलयंकृत्वोपरिचतुरस्रंकृत्वातदग्राणिसंवर्ध्यतत्रत्रिशूलानिकृत्वात्रिशूलेषुक्रोमि

वक्ष्येहनुमतोयंत्रंसर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ वलयत्रितयंलेख्यंपुच्छाकारसमन्वितम् ॥४६॥ साध्यनाम लिखेन्मध्येपाशबीजप्रवेष्टितम् ॥ उपर्य्यष्टदलंकृत्वावर्मपत्रेषुसंलिखेत् ॥४७॥वलयंबहिरालिख्यत द्बहिश्चतुरस्रकम् ॥ चतुरस्रस्यरेखाग्रेत्रिशूलानिसमालिखेत्॥४८॥भूपुरस्याष्टवज्रेषुह्सौबीजंतुलिखे त्ततः॥ कोणेष्वंकुशमालिख्यमालामंत्रेणवेष्टयेत् ॥ ४९ ॥ तत्सर्वंवेष्टयेद्यंत्रंवलयत्रितयेनच ॥ वस्त्रे शिलायांफलकेताम्रपात्रेथकुड्यके ॥५०॥ भूर्जेवाताडपत्रेवारोचनानाभिकुंकुमैः ॥ यंत्रमेतत्समालि ख्यत्यक्ताशोब्रह्मचर्य्यवान् ॥५१॥ कपेःप्राणान्प्रतिष्ठाप्यपूजयेत्तंयथाविधि ॥ सर्वदुःखनिवृत्त्यैतद्यं त्रमात्मनिधारयेत् ॥५२॥ ज्वरमार्य्यभिचारघ्नंसर्वोपद्रवशांतिकृत् ॥ योषितामपिबालानांधृतंजन मनोहरम् ॥ ५३ ॥

ति वज्रेषुह्सौमिति विलिख्यतन्मालामंत्रणवक्ष्यमाणेनसंवेष्ट्यतत्पुनर्वलयत्रयेणवेष्टयेत् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ नाभिःकस्तूरी ॥ त्यक्ताशउपवासी ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

मालामंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ वाक्ऐं ॥ हरिप्रियाश्रीं ॥ मायादीर्घत्रयान्विता ह्रांह्रींह्रूं ॥ पूर्वोक्तंमूलमंत्रस्थम् ॥
मालामंत्रमथोवक्ष्येप्रणवोवाग्घरिप्रिया ॥ दीर्घत्रयान्वितामायापूर्वोक्तंकूटपंचकम् ॥ ५४ ॥
तारोनमोहनुमतेप्रकटांतेपराक्रम ॥ आक्रांतदिङ्मंडलतोयशोवीतिचतानच ॥ ५५ ॥ धवलीकृतव
र्णान्तेजगत्त्रितयवज्रच ॥ देहज्वलदग्निसूर्यकोटयन्तेतुसमप्रभ॥ ५६ ॥तनूरुहपदंरुद्रावतारपदमीर
येत् ॥ लंकापुरीदहांतेनोदधिलंघनवर्णकाः ॥ ५७ ॥ दशग्रीवशिरःपश्चात्कृतांतकपदंततः ॥ सीता
श्वासनवाय्वंतेसुतशब्दमुदीरयेत् ॥ ५८॥ अंजनागर्भसंभूतश्रीरामांतेतुलक्ष्मणा ॥ नंदकांतेरकपिच
सैन्यप्राकारवर्णकाः ॥ ५९ ॥ सुग्रीवसख्यकावर्णारणवालिनिबर्हण॥कारणद्रोणपर्वांतेतोत्पाटनप
दंवदेत् ॥ ६० ॥ अशोकवनवीत्यंतेदारणाक्षकुमारक॥ च्छेदनांतेवनपदंरक्षाकरसमूहच ॥ ६१ ॥
विभंजनांतेब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्तिग्रसेतिन ॥ लक्ष्मणांतेशक्तिभेदनिवारणपदंपुनः ॥ ६२ ॥ विशल्यौषधि
वर्णांतेसमानयनवर्णकाः ॥ बालोदितांतेभान्वंतेमंडलग्रसनेतिच ॥ ६३ ॥मेघनादेतिहोमांतेविध्वं
सनपदंवदेत् ॥ इन्द्रजिद्वधकारांतेणसीतारक्षकेतिच ॥ ६४ ॥
॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ अत्रिःङ्ः वायुःयः ॥ स्वस्वरूपमन्यत ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥७२॥७३॥७४॥ ७५॥७६॥

राक्षसीसंघवणांतेविदारणचकुंभच ॥ कर्णादिवधशब्दांतेपरायणपदंवदेत् ॥ ६५ ॥ श्रीरामभक्तिशब्दांतेतत्परेतिसमुद्रच ॥ व्योमद्रुमलंघनेतिमहासामर्थ्यमेतिच ॥ ६६ ॥ हातेजःपुंजवीत्यंतेराजमानपदंपुनः ॥ स्वामिवचनसंपादितार्जुनांतेचसंयुग ॥६७॥ सहायांतेकुमारेतिब्रह्मचारिन्पदंवदेत् ॥ गंभीरशब्दोऽत्रिर्वायुर्दक्षिणाशापदंपुनः ॥ ६८ ॥ मार्तंडमेरुशब्दांतेपर्वतेतिपदंवदेत् ॥पीठिकार्चनशब्दांतेसकलेतिपदंपुनः ॥ ६९ ॥ मंत्रागमाचार्य्यममसर्वग्रहविनाशन॥ सर्वज्वरोच्चाटनेतिसर्वविषविनाशन ॥ ७० ॥ सर्वापत्तिनिवारणसर्वदुष्टेतिसंपठेत् ॥निबर्हणपदंसर्वव्याघ्रादिभयतत्परम् ॥ ॥ ७१ ॥ निवारणसर्वशत्रुच्छेदनेतिपदंमम ॥ परस्यचत्रिभुवनपुंस्त्रीनपुंसकात्मकम् ॥ ७२ ॥ सर्वजीवपदंपश्चाज्जातंवशययुग्मकम् ॥ ममाशाकारकंपश्चात्संपादयपदद्वयम् ॥ ७३ ॥ नानानामपदंधेयान्सर्वांत्राज्ञःससंपठेत् ॥ परिवारान्ममेत्यंतेसेवकान्कुरुयुग्मकम् ॥ ७४ ॥ सर्वशस्त्रास्त्रवीत्यंतेषाणिविध्वंसयद्वयम् ॥ मायादीर्घत्रयोपेताहात्रयंचैहियुग्मकम्॥७५॥विलोमपंचकूटानिसर्वशत्रून्हनद्वयम् ॥ परदांतेलानिपरसैन्यानिक्षोभयद्वयम् ॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ चतुर्विंशतिश्लोकैर्निष्पन्नोमालामंत्रो यथा–ॐऐंश्रींह्रांह्रींह्रूंह्रौंह्स्फ्रेंख्फ्रेंह्स्रौंह्स्ख्फ्रेंह्सौं ॐनमोहनुमते प्रकटपराक्रमआक्रांतदिङ्मंडलयशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितयवज्रदेहज्वलदग्निसूर्यकोटिसमप्रभतनूरुहरुद्रावतार लंकापुरीदहनोदधिलंघनदशग्रीवशिरःकृतांतकसीताश्वासनवायुसुतांजनागर्भसंभूतश्रीरामलक्ष्मणानंदकरकपिसैन्यप्राकारसुग्रीवसख्यकारणवालिनिबर्हणकारणद्रोणपर्वतोत्पाटनाशोकवनविदारणाक्षकुमारकच्छेदनवनरक्षाकरसमूहविभंजनब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्तिग्रसनलक्ष्मणशक्तिभेदनिवारणाविशल्यौषधिसमानयनबालोदितभानुमंडलग्रसनमेघनादहोमविध्वंसनइंद्रजिद्वधकारणसीतारक्षकराक्षसीसंघविदारणकुंभकर्णादिवधपरायणश्रीरामभक्तितत्परसमुद्रव्योमद्रुमलंघनमहासामर्थ्यमहातेजःपुंजविराजमानस्वामिवचनसंपादितार्जुनसंयुगसहायकुमारब्रह्मचारिन्गंभीरशब्दोदयदक्षिणाशामार्तंडमेरुपर्वतपीठिकार्चनसकलमंत्रागमाचार्यममसर्वग्रहविनाशनसर्वज्वरोच्चाटनसर्वविषविनाशनसर्वापत्तिनिवारणसर्वदुष्टनिबर्हणसर्वव्याघ्रादिभयानिवारणसर्वशत्रुच्छेदनममपरस्य

ममसर्वकार्य्यजातंसाधयद्वितयंततः ॥ सर्वदुष्टदुर्जनांतेमुखानिकीलयद्वयम् ॥ ७७ ॥ घेत्रयंहात्रयं
वर्मत्रितयंफट्त्रयंततः ॥ वह्निप्रियांतोमंत्रोयंमालासज्ञोखिलेष्टदः ॥७८॥ अष्टाशीत्युत्तराःपंचशत
वर्णामनोःस्मृताः॥महोपद्रवसंपातेस्मृतोयंदुःखनाशनः ॥७९॥ द्वादशार्णांतिमान्वर्णान्षट्त्यक्त्वै
कंतथादिमम् ॥ पंचकूटात्मकोमंत्रोनिखिलाभीष्टसाधकः ॥ ८० ॥

चत्रिभुवनपुंस्त्रीनपुंसकात्मकसर्वजीवजातंवशय २ममाज्ञाकारकंसंपादय२नानानामधेयान्सर्वान्राज्ञःसपरिवारान्ममसेवकान्कुरु २ सर्वशस्त्रास्त्रविषाणिविध्वंसय२ह्रांह्रींह्रूंह्रां३एह्येहिह्सौंह्स्ख्फ्रेंह्स्त्रौंख्फ्रेंह्स्फ्रेंह्सौंसर्वशत्रून्हन २परदलानिपरसैन्यानिक्षोभय२ममसर्वकार्यजातंसाधय २ सर्वदुष्टदुर्जनमुखानिकीलय २ घे ३ हा ३ हुं ३ फट् ३ स्वाहामालामंत्रोयमष्टाशीत्यधिकपंचशतवर्णः ( ५८८ ) ॥ मंत्रांतरमाह ॥ द्वादशेति ॥ द्वादशाक्षरस्यांतिमानषड्

मुनीरा[1]मोथगायत्रीछंदोदेवःकपीश्वरः ॥ पंचबीजैःसमस्तेनषडंगंमुनिभिःस्मृतम्॥ ८१॥रामदूतो
लक्ष्मणांतेप्राणदातांजनासुतः ॥ सीताशोकविनाशोथलंकाप्रासादभंजनः ॥ ८२ ॥ हनूमदाद्याः
पंचैतेबीजाद्याङेसमन्विताः ॥ षडंगमंत्राःसंदिष्टाध्यानपूजादिपूर्ववत् ॥ ८३ ॥

वर्णान् हनुमतेनमइति ॥ प्रथममेकंह्रौमितित्यक्त्वाशेषःपंचार्णोमंत्रः–ह्स्फ्रेंख्फ्रेंह्स्त्रौंह्स्ख्फ्रेंह्सौमिति ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ षडंगमाह ॥ रामदूतइति ॥ हनुमदाद्याश्चतुर्थ्यंताबीजपूर्वाःषडंगमंत्राः ॥ यथा–ह्स्फ्रेंहनुमतेहृत् ॥ ख्फ्रेंरामभक्तायशिरः ॥ ह्स्त्रौंलक्ष्मणप्राणदात्रेशिखेत्यादि० ॥ ८२ ॥ पूर्ववद्द्वादशवर्णवत् ॥ ८३ ॥

---

[1] अस्यहनुमत्पंचकूटमंत्रस्यरामचंद्रऋषिःगायत्रीछंदःकपीश्वरोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ वाक्ऐं ॥ कमलाश्रीं ॥ मायादीर्घत्रयाद्या ह्रांह्रींह्रूं ॥ पंचकूटानिचइदानी
मुक्तानि ॥ रुद्रार्णएकादशाक्षरः ॥ ८४ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ हृदयामिति ॥ तद्वत् ॥ ङेंतोनमोभगवतेआंजनेयायम

तारोवाक्कमलामायादीर्घत्रयसमन्विताः ॥ पंचकूटानिमंत्रोयंरुद्रार्णोऽभीष्टसिद्धिदः ॥ ८४ ॥ अर्च
नापूर्ववच्चास्यपरोमंत्रोभिधीयते ॥ हृदयंभगवान्ङेंतंआंजनेयमहाबलौ ॥ ८५ ॥ तद्वद्वह्निप्रियांतोयं
मनुरष्टादशाक्षरः ॥ मुनिरीश्वरएवास्यानुष्टुप्छंदःसमीरितम् ॥ ८६ ॥ हनूमान्देवताबीजहुंशक्तिर्व
ह्निवल्लभा ॥ आंजनेयोरुद्रमूर्तिर्वायुपुत्रस्तथैवच ॥ ८७ ॥ अग्निगर्भोरामदूतोब्रह्मास्त्रविनिवारणः ॥
एतैर्ङेंतैःषडंगानिकृत्वाध्यायेत्कपीश्वरम् ॥ ८८ ॥ दहनतप्तसुवर्णसमप्रभंभयहरंहृदयेविहितांजलिम् ॥
श्रवणकुंडलशोभिमुखांबुजंनमतवानरराजमिहाद्भुतम् ॥ ८९ ॥ अयुतंप्रजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः ॥
वैष्णवेपूजयेत्पीठेपूर्ववत्कपिनायकम् ॥ ९० ॥ जितेंद्रियोनक्तभोजीप्रत्यहंसाष्टकंशतम् ॥ जपित्वा
क्षुद्ररोगेभ्योमुच्यतेदिवसत्रयात् ॥ ९१ ॥

हाबलायस्वाहेति ॥ षडंगमाह ॥ आंजनेयइति ॥ आंजनेयायहृत् ॥ रुद्रमूर्तयेशिरइत्यादि० ॥ ८५ ॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ध्यानमाह ॥ दहनेति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ प्रयोगानाह ॥ जितेंद्रियइति ॥ ९१ ॥

---

[१] ॐऐंश्रींह्रँह्रींह्रूँह्स्फ्रेंख्फ्रेंह्स्त्रौंह्स्ख्फ्रेंह्सौं ।

॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ध्रुवंओंकारः ॥ ९८ ॥ उदररोगनाशकमंत्रमाह ॥ पवनेति ॥ सद्योजातओंकारस्तद्युतंपवनद्वयंयोयो ॥ हनूस्वरूपं ॥ शशांकाढ्योमहाकालःसबिंदुर्मः मं ॥ कामिका तः॥ फलस्वरूपः

भूतप्रेतपिशाचादिनाशायैवंसमाचरेत् ॥ महारोगनिवृत्त्यैतुसहस्रंप्रत्यहंजपेत् ॥ ९२ ॥ यताशनो
ऽयुतंनित्यंजपन्ध्यायन्कपीश्वरम् ॥ राक्षसौघंविनिघ्नंतमचिराज्जयतिद्विषम् ॥ ९३ ॥ सुग्रीवेणस
मंरामंसंदधानंस्मरन्कपिम्॥प्रजप्यायुतमेतस्यसंधिंकुर्य्याद्विरुद्धयोः ॥९४॥ लंकांदहंतंतंध्यायन्नयुतं
प्रजपेन्मनुम् ॥ शत्रूणांप्रदहेद्ग्रामानचिरादेवसाधकः ॥९५॥ प्रयाणसमयेध्यायन्हनूमंतंमनुंजपन्॥यो
यातिसोऽचिरात्स्वेष्टंसाधयित्वागृहंव्रजेत्॥९६॥यःकपीशंसदागेहेपूजयेज्जपतत्परः॥आयुर्लक्ष्म्यौ
प्रवर्द्धेतेतस्यनश्यंत्युपद्रवाः।९७।शार्दूलतस्करादिभ्योरक्षेन्मनुरयंस्मृतः॥प्रस्वापकालेचौरेभ्योदुःस्व
प्नादपिध्रुवम्॥९८॥पवनद्वितयंसद्योजातयुक्तंहनूपदम्॥महाकालःशशांकाढ्यःकामिकाफलफःक्रिया
॥ ९९ ॥ सनेत्राणांतमीनोगसात्वतोगितआयुरा ॥ षलोहितंरुडाहेतिवेदनेत्राक्षरोमनुः ॥ १०० ॥

न्तेसनेत्राक्रिया इयुतोलःलि ॥ णांतस्तः ॥ मीनोधः ॥ गस्त्ररूपं ॥सात्वतोधः ॥ गितआयुराषस्वरूपं ॥ लोहितंपः॥ रुडाहस्वरूपं ॥ वेदनेत्राक्षरः चतुर्विंशत्यर्णः॥ यथा–ॐयोयोहनुमंतफलफलितधगधगितःआयुराषपरुडा

हेति ॥ ९९ ॥ १०० ॥ प्लीहरोगः उदररोगः ॥ तन्नाशकप्रयोगमाह ॥ प्लीहेति ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ आरण्यप्रस्त
रोत्पन्नेवनपाषाणान्निष्कासितेग्नौबदर्युत्थांयष्टिंसप्तधामूलमंत्रेणतापयेत् ॥ १०३ ॥ तयोदरस्थितेवंशखंडेताडिते

प्लीहरोगहरश्चास्यमुन्याद्यंपूर्ववन्मतम् ॥प्लीहयुक्तोदरेस्थाप्यंनागवल्लीदलंशुभम्॥१०१॥ तदुपर्य्यष्ट
गुणितंवस्त्रमाच्छादयेत्ततः ॥ वंशजंशकलंतस्योपरिसुंचेत्कपिंस्मरन्॥२॥आरण्यप्रस्तरोत्पन्नेवह्नौ
यष्टिंप्रतापयेत् ॥ बदरीतरुसंभूतांमंत्रेणानेनसप्तशः ॥ ३ ॥ तयासंताडयेद्वंशंशकलंजठरस्थितम् ॥
सप्तकृत्वःप्लीहरोगोनश्यत्येवनृणांक्षणात्॥ ४ ॥ पुच्छाकारेसुवसनेलेखिन्याकोकिलोत्थया ॥ अष्ट
गंधैर्लिखेद्रूपंकपिराजस्यसुंदरम् ॥५ ॥ तन्मध्येष्टादशार्णंतुशत्रुनामयुतंलिखेत् ॥ तेनमंत्राभिजप्तेन
शिरोबद्धेनभूमिपः ॥६॥ जयत्यरिगणंसर्वंदर्शनादेवनिश्चितम्॥युद्धेजिगीषुर्नृपतिःपूर्वोक्तंलेखयेद्ध्वजे
॥ ७॥ ध्वजमादायोपरागेसंस्पर्शान्मोक्षणावधि ॥ मातृकांजापयेत्पश्चाद्दशांशेनचहावयेत्॥१०८॥

रोगोनश्यति ॥ १०४ ॥ प्रयोगांतरमाह ॥ पुच्छेति ॥ पुच्छाकारेवस्त्रेकोकिलापिच्छलेखिन्याऽष्टगंधैर्हनुमद्रूपंकृत्वा
तदुदरेऽष्टादशार्णंविलिख्याधिमंत्रितेनशिरोबद्धेनतेनारीञ्जयाति ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

॥ १०९ ॥ यंत्रमाह ॥ लिखेदिति ॥ ११० ॥ अष्टार्णमालामंत्रौवक्ष्यमाणौ ॥ १११ ॥ ११२ ॥ दुरोदरेद्यूते
॥ ११३ ॥ ११४ ॥ अष्टार्णमाह ॥ वियदिति ॥ वियत्हः ॥ अग्नीरः ॥ यथा–ॐह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः ॐइत्यष्टार्णः ॥
॥ ११५ ॥ मालामंत्रमाह ॥ वज्रेति ॥ यथा–ॐवज्रकायवज्रतुंडकपिलपिंगलऊर्ध्वकेशमहाबलरक्तमुखताडिजिह्व

सर्षपैस्तिलसमिश्रैः संस्पर्शान्मोक्षणाविभिः ॥ गजस्थंतंध्वजंदृष्ट्वापलायेतऽरयोऽचिरात् ॥ १०९ ॥ अथोह
नुमतोयंत्रंवक्ष्येरक्षाविधायकम् । लिखेदष्टदलंपद्मंसाध्याख्यायुतकर्णिकम् ॥ १० ॥ दलेष्वष्टार्णमालिख्य
मालामंत्रेणवेष्टयेत ॥ तद्बहिर्मायया वेष्ट्यप्राणस्थापनमाचरेत् । ११ । लिखितंस्वर्णलेखिन्यादलेभूर्ज
तरोः शुभे ॥ रोचनाकुंकुमाभ्यांतुवेष्टितंकनकादिभिः ॥ १२ ॥ संपातसाधितंयंत्रंभुजेवामूर्ध्निधारयेत् ॥
रणेजयमवाप्नोतिव्यवहारेदुरोदरे ॥ १३ ॥ ग्रहैर्विघ्नैर्विषैः शस्त्रैश्चौरैर्नैवाभिभूयते ॥ रोगान्सर्वानपाकृत्य
चिरंजीवतिभाग्यवान् ॥ १४ ॥ वियदग्नियुतंदीर्घषट्काद्यंतारसंपुटम् ॥ अष्टार्णोमंत्रआख्यातोमालामं
त्रोऽथकथ्यते ॥ ॥ १५ वज्रकायवज्रतुण्डकपिलेत्यथपिंगल ॥ ऊर्द्ध्वकेशमहावर्णबलरक्तमुखेतिच ११६ ॥

महारौद्रदंष्ट्रोत्कटकहहकरालिनेमहादृढप्रहारिन्लंकेश्वरवधायमहासेतुबंधमहाशैलप्रवाहगगनेचरएह्येहिभगवन्म
हाबलपराक्रमभैरवाज्ञापयएह्येहिमहारौद्रदीर्घपुच्छेनवेष्टयवैरिणंभंजय २ हुंफट् ॥ ११६ ॥

॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ बाणनेत्रेंदुवर्णः पंचाविंशत्युत्तरशतार्णः ॥ १२१ ॥ अष्टार्णमालामंत्रौस्वतंत्रा
वितिसूचयन्नाह अष्टार्णेति ॥ १२२ ॥ ॥ इतिश्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

तडिज्जिह्वमहारौद्रदंष्ट्रोत्कटकहद्वयम् ॥ करालिनेमहादृढप्रहारिन्निति वर्णकाः ॥ ११७॥ लंकेश्वरव
धायांतेमहासेतुपदंततः ॥ बंधांतेचमहाशैलप्रवाहगगनेचर ॥ १८ ॥ एह्येहिभगवन्नंतेमहाबलपरा
क्रम ॥ भैरवज्ञापयैह्येहिमहारौद्रपदंपुनः ॥१९॥ दीर्घपुच्छेनवर्णांतेवेष्टयांतेतुवैरिणम्॥भंजयद्वित
यंहुंफट्प्रणवादिसमीरितः ॥१२०॥ बाणनेत्रेंदुवर्णोयंमालामंत्रोखिलेष्टदः॥युद्धेजप्तोजयंदद्याद्व्याधौ
व्याधिविनाशनः ॥ २१ ॥ अष्टार्णमालामन्वोस्तुमुन्याद्यर्चातुपूर्ववत्॥भूरिणाकिमिहोक्तेनसर्वंद
द्यात्कपीश्वरः ॥ १२२ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधौहनुमन्मंत्रकथनंनामत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥ अथ
वक्ष्येमहाविष्णोर्मंत्रान्सर्वार्थसाधकान् ॥ ब्रह्माद्यायानुपास्याथससृजुर्विविधाःप्रजाः ॥१॥मेरुःकृ
शानुसंयुक्तोऽनुग्रहेंदुसमन्वितः ॥ एकाक्षरोनरहरेर्मंत्रःकल्पद्रुमोनृणाम् ॥ २ ॥

विष्णुमंत्रान्वक्तुंप्रतिजानीते ॥ अथेति ॥ १ ॥ मंत्रानाह ॥ मेरुरिति ॥ मेरुःक्षः ॥ कृशानूरः ॥ अनुग्रहऔ ॥
इंदुर्बिंदुः ॥ तेनक्ष्रौं ॥ २ ॥.

मायाह्रीं ।।तत्संपुटः प्रणवसंपुटश्चेति द्वौत्र्यणौं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ध्यानमाह ॥ तपनेति ॥ सूर्येंद्वग्निनेत्रं ॥ घनविरामः शरत्तत्रयोहिमांशुश्चंद्रस्तत्तुल्यकांतिः ।। घनसमानगलामितिपाठेनीलकंठं ॥ शशिसप्रभामितिपाठान्तरेशशिनास

त्र्यक्षर[1]ःसंपुटःप्रोक्तोमाययाप्रणवेन[2]च ॥ ऋषिरत्रिश्चगायत्रीछंदोदेवोनृकेसरी॥३॥षड्दीर्घयुक्तबीजे
नषडंगानिसमाचरेत् ॥ त्र्यर्णेमायापुटेनैवतारसंपुटितेनवा ॥ ४ ॥ तपनसोमहुताशनलोचनंघन
विरामहिमांशुसमप्रभम् ॥ अभयचक्रपिनाकवरान्करैर्दधतमिंदुधरंनृहरिंभजे ॥५॥ लक्षमेकंजपेन्मं
त्रंदशांशंघृतपायसैः ॥ जुहुयात्पूजयेत्पीठेविमलादिसमन्विते॥६॥केसरेष्वंगपूजास्यादिग्दलेषुखगे
श्वरम् ॥ शंकरंशेषनागंचशतानंदंप्रपूजयेत् ॥ ७ ॥ श्रियंह्रियंधृतिंपुष्टिंकोणपत्रेषुसाधकः॥द्वात्रिंश
त्पत्रमध्येषुनृसिंहांस्तावतोर्चयेत् ॥ ८ ॥

मानाप्रभायस्यतम् ॥ ऊर्ध्वयोर्दक्षवामयोश्चक्रपिनाकौ ॥ अधस्थयोर्वराभये ॥ इंदुधरंशशिशेखरम् ॥५॥ विमलादयउक्ताः ॥ ६ ॥ शतानंदंब्रह्माणम् ॥७॥ तावतोद्वात्रिंशत्संख्याकान् ॥ ८ ॥

---

[1] ह्रींक्ष्रौंह्रींइतित्र्यक्षरः । [2] ॐ क्ष्रौं ॐ इतित्र्यक्षरः ।

तानाह ॥ कृष्णइति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ प्रयोगानाह ॥ सहस्रेति ॥ शतपर्वांदूर्वा।१४।१५।१६।

कृष्णोरुद्रोमहाघोरोभीमोभीषणउज्ज्वलः ॥ करालोविकरालश्चदैत्यांतोमधुसूदनः ॥ ९ ॥रक्ताक्षः
पिंगलाक्षश्चांजनसंज्ञस्त्रयोदशः ॥ दीप्ततेजाःसुघोणश्चहनुश्च षोडशःस्मृतः ॥१०॥ विश्वाक्षोराक्षसांत
श्चविशालोधूम्रकेशवः ॥ हयग्रीवोघनस्वरोमेघनादस्तथापरः ॥ ११ ॥ मेघवर्णःकुंभकर्णःकृतांतक
इतीरितः॥ तीव्रतेजाअग्निवर्णोमहोग्रोविश्वभूषणः॥१२॥ विघ्नक्षमोमहासेनःसिंहोद्वात्रिंशदीरिताः॥
इंद्रादीन्वज्रमुख्यांश्चपूजयेच्चतुरस्रके ॥ १३ ॥ एवंसंसाधितोमंत्रःप्रयोगेषुक्षमोभवेत् ॥ सहस्राष्टकसं
ख्यातैःशतपर्वांत्रिकैस्तुयः ॥ १४ ॥ जुहुयादुदकेतस्यसर्वेनश्यंत्युपद्रवाः ॥ महोत्पातहरोप्येषहोमः
सर्वेष्टदोनृणाम् ॥ १५ ॥ संस्थाप्यविधिवत्कुंभंजपेदष्टसहस्रकम्॥अभिषिंचेद्विषाक्रांतंविषजार्तिनि
वृत्तये ॥ १६ ॥ विचरन्विपिनेचौरव्याघ्रसर्पाकुलेनरः ॥ जपन्नमुंमंत्रवरंनभयंप्रतिपद्यते ॥ १७ ॥
ईक्षितेनिशिदुःस्वप्नेजपन्मंत्रंनिशांनयेत् ॥ अवशिष्टंस्वप्नफलंसम्यगादिशतिध्रुवम्॥ १८ ॥ कर्णने
त्रशिरःकंठरोगान्मंत्रोविनाशयेत् ॥ अभिचारकृतांपीडांमनुमंत्रितभस्मच ॥ १९ ॥

॥ १७ ॥ निशिदुःस्वप्नेदृष्टे मंत्रंजपन्नवशिष्टांनिशांनयेत्॥ सदुःस्वप्नःसुस्वप्नस्यैवफलंददाति ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ २० ॥ २१ ॥ प्रसंगान्मारणप्रायश्चित्तमाह ॥ प्रजपेदिति ॥ अभिचारजातपापनिवृत्त्यैअयुतंजपेत ॥ २२ ॥ पुत्रजीवेद्धवह्नौपुत्रजीवतरुकाष्ठदीप्तेग्नौतत्फलैःपुत्रजीवफलैःपुत्राप्त्यैजुहुयात् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ मत्रांतरमाह

आत्मानंनृहरिंध्यात्वावैरिणंमृगबालकम् ॥ आदायप्रक्षिपेद्यस्यांदिशितस्यांसगच्छति॥ २० ॥ स्वकुटुंबंपरित्यज्यनचैवावर्त्ततेपुनः ॥ नृसिंहं संस्मरन्वादेरिपोःस्वस्यविनष्टये॥ २१॥ प्रजपेदयुतंमंत्रंमारणोत्थाघनष्टये ॥ प्रसूनैर्बिल्ववृक्षोत्थैःफलैस्तत्काष्ठसंभवैः॥२२॥सहस्रंजुहुयाद्वह्नौवांछितश्रीसमृद्धये॥पुत्रजीवेद्धवह्नौतुतत्फलैःपुत्रसंपदे॥२३॥ब्राह्मींवचांवामंत्रेणमंत्रितांशतसंख्यया॥संवत्सरमदन्प्रातर्विद्यापारंगतोभवेत्॥२४॥किंबहूक्तेननृहरिःसर्वेष्टफलदोनृणाम्॥अथोच्यतेनरहरिर्भीतिहारीष्टसाधकः॥२५॥जयद्वयंश्रीनृसिंहेत्यष्टार्णोमनुरीरितः[1]॥ऋषिर्ब्रह्मास्यगायत्रीछंदोदेवोनृकेसरी॥२६॥शक्तिर्नेत्रंवियद्बीजमुभेचंद्रसमन्विते ॥ वियतादीर्घयुक्तेनचंद्राढ्येनषडंगकम् ॥ २७ ॥

जयेति ॥यथा–जय २ श्रीनृसिंहेति ॥ २६ ॥ नेत्रंइःशक्तिः ॥ वियतहःबीजम् ॥ उभेशक्तिबीजेबिंदुयुते ॥ दीर्घयुतेनसबिंदुनावियताहेनषडंगं ॥ हांहृत हींशिरइत्यादि० ॥ २७ ॥

---

[1] जयजयश्रीनृसिंहेत्यष्टार्णः । अस्यजयनृसिंहमंत्रस्यब्रह्माऋषिःगायत्रीछंदःनृसिंहो देवताइंशक्तिःहंबीजंममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेवि० ।

ध्यानमाह ॥ श्रीमदिति ॥ साम्नांराजाईशः ॥ यद्वासामसुराजतेप्रकाशतेससामराजः ॥ सामगानेकृतेप्रत्यक्षोभवतीत्यर्थः ॥ तीव्रकरोरविः ॥ पिनाकपाणेइत्युपलक्षणंवराभचक्राणाम् ॥ वामोर्ध्वादिदक्षोर्ध्वांतंपिनाकाभयवरचक्रधरइत्यर्थः ॥ २८ ॥ अस्यपूजादिपूजाप्रयोगादिकमेकार्णवत् ॥ २९ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तार इति ॥

श्रीमन्नृकेसरितनोजगदेकबंधोश्रीनीलकंठकरुणार्णवसामराज॥वह्नींदुतीव्रकरनेत्रपिनाकपाणेशीतांशुशेखररमेश्वरपाहिविष्णो ॥ २८ ॥
एवंध्यात्वाजपेल्लक्षाष्टकंतस्यदशांशतः ॥ जुहुयात्पायसेनाग्नौ पूजाद्यस्यतुपूर्ववत् ॥ २९ ॥
तारःपद्माचहृल्लेखाजयलक्ष्मीप्रियायच ॥ नित्यप्रमुदितांतेतुचेतसेपदमीरयेत्॥३०॥
लक्ष्मीश्रितार्द्धदेहायरमामायेनमःपदम् ॥ एकाधिकस्त्रिंशदर्णोमनुःपद्मभवोमुनिः[1] ॥ ॥ ३१ ॥
छन्दोतिजगतीप्रोक्तंदेवःश्रीनरकेसरी ॥ बीजंरमाद्रिजाशक्तिःश्रीबीजेनषडंगकम्॥३२॥

तारॐ ॥ पद्माश्रीं ॥ हृल्लेखाह्रीं ॥ ३० ॥ रमामाये श्रींह्रीं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा–ॐश्रींह्रींजयलक्ष्मीप्रियायानित्यप्रमुदितचेतसेलक्ष्मीश्रितार्धदेहायश्रींह्रींनमः ॥ पद्मभवोब्रह्मा ॥ ३१ ॥ अद्रिजाह्रींश्रींबीजेनषड्दीर्घयुक्तेनश्रांश्रींश्रूमित्यादिना ॥ ३२ ॥

---

[1] अस्यश्रीलक्ष्मीनृसिंहमंत्रस्यपद्मभवऋषिः अतिजगतीछंदःश्रीनरकेसरीदेवताश्रींबीजंह्रींशक्तिःममाभीष्टसिध्यर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥ क्षीराब्धाविति ॥ क्षीरसमुद्रगतश्वेतद्वीपेवस्वादिदेवौघैरग्र्यादियथातथावेष्टितः ॥ अग्रेवसुभिः दक्षे
रुद्रैः पश्चिमेआदित्यैः वामेविश्वदेवैरित्यर्थः॥अधोवामदक्षयोः शङ्खचक्रे ॥ ऊर्ध्वयोर्गदापद्मे ॥ सितश्चंद्रवर्णः ॥

क्षीराब्धौवसुमुख्यदेवनिकरैरग्र्यादिसंवेष्टितःशंखंचक्रगदांबुजंनिजकरैर्बिभ्रंस्त्रिनेत्रःसितः॥सर्पाधीश
फणातपत्रलसितःपीतांबरालंकृतोलक्ष्म्याश्लिष्टकलेवरोनरहरिःस्तान्नीलकंठोमुदे ॥ ३३ ॥ एवंध्या
त्वाजपेल्लक्षत्रयंषष्टिसहस्रकम्॥मध्वक्तैर्मल्लिकापुष्पैर्जुहुयाज्जातवेदसि ॥३४॥षट्शतंत्रिसहस्राणिपी
ठेपूर्वोदितेयजेत्॥प्रथमावरणेङ्गानिपरशक्तिरिमाःपुनः॥३५॥भास्वतीभास्करीचिंताद्युतिरुन्मीलि
नीतथा ॥ रमाकांतीरुचिश्चेतिशक्राद्याहेतिसंयुताः ॥३६॥ इत्थंसिद्धमनौमंत्रीनिग्रहानुग्रहक्षमः ॥
मल्लिकाकुसुमैर्होमादिष्टसिद्धिमवाप्नुयात् ॥३७॥प्रणवोनृहरेर्बीजंनमोभगवतेपदम् ॥ नरसिंहायतार
श्चबीजंमत्स्येतिकीर्तयेत् ॥३८॥रूपायतारोबीजंचकूर्मरूपायवर्णकाः॥ तारबीजेवराहार्णारूपायता
रबीजके॥३९॥नृसिंहरूपायांतेतुतारोबीजंचवामनम्॥रूपायत्रिस्तारबीजेरामायेतिपदंवदेत्॥४०॥

शेषफणाएवातपत्रंतेनलसितोदीप्तः ॥ ईदृङ्नृसिंहोममुदेहर्षायस्तात्भूयात् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
मंत्रांतरमाह ॥ प्रणवइति ॥ नृहरेर्बीजंक्ष्रौं ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ त्रिस्त्रिवारंतारबीजे ॥ ४० ॥

---

१ घृतमधुशर्करायुक्तैःमालतीपुष्पैः ।

सनेत्रादीर्घाइयुतोनःनि ॥ ४१ ॥ ङेंतिमश्चतुर्थ्यंतः ॥ ४२ ॥ नवनवत्यर्णएकोनशताक्षरः ॥ मंत्रोयथा–ॐक्ष्रौं नमोभगवतेनरसिंहायॐक्ष्रौंमत्स्यरूपायॐक्ष्रौंकूर्मरूपायॐक्ष्रौंवराहरूपायॐक्ष्रौंनृसिंहरूपायॐक्ष्रौंवामनरूपायॐक्ष्रौंॐक्ष्रौंॐक्ष्रौंरामायॐक्ष्रौंकृष्णायॐक्ष्रौंकल्किनेजयजयशालग्रामनिवासिनेदिव्यसिंहायस्वयंभुवेपुरुषा

तारोबीजंचकृष्णायतारोबीजंचकल्किने ॥जयद्वयंततःशालग्रामदीर्घासनेत्रका॥४१॥वासिनेदिव्य
सिंहायस्वयंभूङेंतिमःस्मृतः॥पुरुषायनमस्तारोबीजमित्युदितोमनुः॥४२॥हरेर्नवनवत्यर्णोमुनिरात्रिः
किलास्यतु॥ छंदोतिजगतीदेवोनृकेसर्य्यवतारवान्॥४३॥बीजंपूर्वोदितंशक्तिराद्याबीजेनचांगकम्॥
कृत्वाषड्दीर्घयुक्तेनध्यायेत्क्षीरोदधिस्थितम् ॥४४ ॥सहस्रचंद्रप्रतिमोदयालुर्लक्ष्मीमुखालोकनलो
लनेत्रः ॥ दशावतारैःपरितःपरीतोनृकेसरीमंगलमातनोतु ॥४५॥जपोयुतंतदशांशेनहवनंपायसेनतु ॥
पीठेपूर्वोदितेपूर्वमंगानिपारिपूजयेत्॥४६॥दशावतारान्मत्स्यादीन्दिक्पालानायुधान्यपि॥प्रयोगाः
पूर्ववत्प्रोक्ताःसर्वसिद्धिप्रदेमनौ ॥ ४७॥

यनमःॐक्ष्रौं ॥ अवतारवान्दशावतारयुतोनृसिंहोदेवता ॥ ४३ ॥ ॐक्ष्रौंबीजम् ॥ आद्येति॥ ॐशक्तिः॥ क्ष्रांक्ष्रीमित्याद्यंगम् ॥४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

---

१ उभयोर्नरसिंहोदेवताक्ष्रौंबीजंॐशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ हृन्नमः ॥ ४८ ॥ वह्नेःकलत्रं स्वाहा ॥ ४९ ॥ बीजंक्ष्रौं ॥ यथा–ॐनमोभगवतेनरसिंहायनमस्तेजस्तेजसेआविराविर्भववज्रनखवज्रदंष्ट्रकर्माशयान्रन्धय २ तमोग्रस २ स्वाहाअभयमात्मनिभूयिष्ठा

।।अथाभयनृसिंहमंत्रः।। तारोनमोभगवतेनरसिंहायहृच्चते ।।जस्तेजसेआविराविर्भववज्रनखांततः।।
।।४८ ।। वज्रदंष्ट्रचकर्मातेत्वाशयान्रंधयद्वयम् ।। तमोग्रसद्वयंवह्नेःकलत्रमभयंपुनः।। ४९ ।। आत्म
न्यंतेचभूयिष्ठास्तारोबीजंमनुःस्मृतः ।। द्विषष्ट्यर्णैःशुकःप्रोक्तोमुनिश्छंदस्तुपूर्ववत्।।५० ।।अभयो
नारसिंहस्तुदेवतान्यत्तुपूर्ववत् ।। अथगोपालमनवःप्रोच्यतेस्वेष्टसाधकाः ।। ५१ ।।गोपीजनपद
स्यांतेवल्लभायाग्निसुंदरी ।। दशाक्षरोमनुःप्रोक्तोमनोरथफलप्रदः ।।५२ ।।नारदोस्यविराट्कृष्णो
मुनिपूर्वाः समीरिताः।। बीजशक्तीतुविज्ञेयेक्रमात्कामानलप्रिये ।। ५३ ।।

ॐक्ष्रौंमिति ॥ ५० ॥ अन्यत्पूजादि ॥ ५१ ॥ गोपालमंत्रमाह ॥ गोपीति ॥ अग्निसुंदरीस्वाहा ॥ यथा–गोपीजनवल्लभायस्वाहा ॥ ५२ ॥ विराट्छंदः ॥ क्लींबीजं ॥ स्वाहाशक्तिः ॥ ५३ ॥

---

१ अस्यदशावतारमंत्रस्यअत्रिर्ऋषिःजगतीछंदःनृकेसर्यवतारवान्देवताक्ष्रौंबीजम् ॐ शक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः । अस्य–अभयनरसिंहमंत्रस्यशुकऋषिःजगतीछंदः । २ अस्यगोपालमंत्रस्य नारदऋषिः विराट्छंदः कृष्णोदेवता क्लींबीजं स्वाहाशक्तिर्ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

पंचांगमाह ॥ आचक्रायहृत् ॥ विचक्रायाशिरः ॥ सुचक्रायाशिखा ॥ त्रैलोक्यरक्षणचक्रायकवचम् ॥ असुरांतकचक्रायअस्त्रम् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ वर्णन्यासमाह ॥ मस्तकइति ॥ ५६ ॥ तारपुटानिति ॥ ॐगों ॐनमःमस्तके ॐ

आचक्रायहृदाख्यातंविचक्रायशिरोपिच ॥ सुचक्रायशिखापश्चात्त्रैलोक्यरक्षणंततः ॥ ५४ ॥ चक्रायकवचंप्रोक्तमसुरांतकशब्दतः ॥ चक्रायास्त्रमिदंकुर्य्यादंगानांपंचकंमनोः ॥ ५५ ॥ सर्वांगेत्रिमनुंन्यस्यवर्णन्यासंसमाचरेत् ॥ मस्तकेनेत्रयोःश्रुत्योर्नसोर्वक्त्रेहृदंबुज ॥ ५६ ॥ जठरेलिंगदेशेचजान्वनोः पादयोरपि ॥ वर्णांस्तारपुटान्न्यस्यैद्विद्वान्व्यान्नमसायुतान् ॥ ५७ ॥ वृंदारण्यगकल्पपादपतलसद्रत्नपीठेंबुजेशोणाभेवसुपत्रकेस्थितमजंपीतांबरालंकृतम् । जीमूताभमनेकभूषणयुतंगोगोपगोपीवृतंगोविंदंस्मरसुंदरंमुनियुतंवेणुंरणंतंस्मरेत् ॥ ५८ ॥ एवंध्यात्वाजपेल्लक्षंदशांशंसरसीरुहैः ॥ जुहुयात्पूजयेत्पीठंवैष्णवेनंदनंदनम् ॥ ५९ ॥ अग्न्यादिकोणेष्वभ्यर्च्यहृदाद्यंगचतुष्टयम् ॥ दिशास्वस्त्रंदलेष्वष्टौमहिषीःपरिपूजयेत् ॥ ६० ॥

पॐनमःनेत्रयोरित्यादि० ॥ ५७ ॥ ध्यानमाह ॥ वृंदावनगतकल्पवृक्षतलेमणिपीठेरक्ताष्टपत्रेस्थितंध्यायेत् ॥ जीमूताभंमेघश्यामंस्मरादपिसुंदरम् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

अर्कजाकालिंदी ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ गोपाश्चगोपिकाश्चताः ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ मंचात् स्त्रस्तोगत

रुक्मिणीसत्यभामाचनग्नजित्तनयार्कजा ॥ मित्रविंदालक्ष्मणाचजांबवत्यासुशीलका ॥ ६१ ॥ महिष्योष्टौसुवर्णाभाविचित्राभरणस्रजः ॥ दलाग्रेवसुदेवश्चदेवकींनंदगोपतिम् ॥ ६२॥ यशोदांबलभद्रंचसुभद्रांगोपगोपिकाः॥इंद्रादीनपिवज्रादीन्पूजयेत्तदनंतरम् ॥ ६३॥ इत्थंसिद्धेमनौमंत्रीसाधयेत्स्वमनीषितम् ॥ गुडूचीशकलैरग्नौजुहुयाज्ज्वरशांतये॥ ६४ ॥ कृष्णंद्वेषंप्रकुर्वंतंबलदेवस्यरुक्मिणः ॥द्यूतासक्तस्यसंचिंत्यगोमयोद्भवगोलकान्॥ ६५ ॥ जुहुयाद्द्वेषसिद्ध्यर्थंनरयोःसुहृदोर्मिथः॥ पिचुमंदफलोत्पन्नतैलाभ्यक्तैःसमिद्वरैः ॥६६॥ अक्षजैर्जुहुयाद्रात्रावयुतंशत्रुशांतये ॥ अयुतंप्रजपेन्मंत्रमात्मानंसंस्मरन्हरिम् ॥ ६७ ॥ मंचस्त्रस्तगतप्राणाकृष्टकंसंरिपुंसुधीः ॥ शत्रुजन्मर्क्षवृक्षोत्थसमिद्भिरयुतंनिशि ॥६८॥ जुहुयादित्थमुग्रोपिसपत्नोनिधनंव्रजेत् ॥पलाशकुसुमैर्लक्षंविद्यासिद्ध्यैजुहोतुना॥६९॥तंडुलैःसितपुष्पाद्यैराज्याक्तैःप्रत्यहंनरः॥ हुत्वासप्तदिनां तद्भस्मभालेचमूर्द्धनि॥७०॥

प्राणआकृष्टश्चासौकंसश्चतथाभूतंरिपुंस्मरन्॥रिपुजन्मनक्षत्रवृक्षसामिद्भिर्जुहुयात॥ नक्षत्रवृक्षाउक्ताः॥६८॥६९॥७०॥

तच्चयौवतं युवतिसमूहःपुरुषान्वशयेत् ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥७४॥ मण्डलमेकोनपंचाशद्दिनानितन्मध्येवांछितंश्रियंप्राप्नोति ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ कामइति ॥ कामःक्लीं ॥ वियत्हःरेचिकाढ्यःऋयुतः ह्र ॥ पी

धारयन्वशयेत्सद्योयौवतंतच्चपूरुषान् ॥ पुष्पंवासोंजनंवापितांबूलमथचंदनम् ॥७१॥ सहस्रंमनुनाजप्तंदद्याद्यस्मैनरायसः॥ वशमेत्यचिरादेवसपुत्रपशुबांधवः ॥७२॥ वृन्दावनस्थंगायंतंगोपीभिःसंस्मरन्हरिम् ॥ अपामार्गसमिद्भिर्योजुहुयाद्वशयेज्जगत् ७३॥ रासक्रीडागतंकृष्णंध्यायन्योयुतमाजपेत् ॥ षण्मासाद्वांछितांकन्यामुद्वहेद्भक्तितत्परः ॥७४॥जपेत्सहस्रंध्यायंतीयाकदंबस्थितंहरिम् ॥ कन्यकावांछितंनाथंमंडलांतर्लभेतसा॥७५॥पत्रैःफलैःसमिद्भिर्वाबिल्वोत्थैर्मधुसंयुतैः॥कमलैःशर्करायुक्तैर्होमाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत्॥७६॥बहुनाकिमिहोक्तेनकृष्णःसर्वार्थदोनृणाम्।अथमंत्रांतरंवच्मिगोविंदस्येष्टदंनृणाम्।७७।कामोवियद्रेचिकाढ्यःपीतावामाक्षिसंयुता॥ चक्रीझिंटीशमारूढोबकोनंतान्वितोमरुत्।७८।हृदयांतोमनुश्रेष्ठोवसुवर्णोखिलेष्टदः।मुनिःसम्मोहनाद्योस्यनारदः[१]परिकीर्तितः७९

ताषः वामाक्षिसंयुता ईयुता षी ॥ चक्रीकः झिंटीशए तदारूढःके ॥ बकःशः अनंतान्वितःआयुतःशा ॥ मरुत्यः ॥ ७८ ॥ हृदयंनमः ॥ यथा–क्लींहृषीकेशायनमः ॥ ७९ ॥

---

[१] अस्यगोविन्दमन्त्रस्यसंमोहननारदऋषिःगायत्रीछंदःत्रैलोक्यमोहनोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

षडगमाह ॥ कामेति ॥ क्लांहृत् क्लींशिरइत्यादि० ॥ ८० ॥ ध्यानमाह कल्पेति ॥ कल्पवृक्षमूलस्थितगरुडासनं

गायत्रीछंदइत्युक्तंदेवस्त्रैलोक्यमोहनः ॥ कामबीजनषड्दीर्घयुक्तेनांगंसमाचरेत् ॥ ८० ॥कल्पानो
कहमूलसंस्थितवयोराजोन्नतांसस्थितंपौष्पंबाणमथेक्षुचापकमलेपाशांकुशेबिभ्रतम् ॥ चक्रंशंखगदे
करैरुदधिजासंश्लिष्टदेहंहरिं नानाभूषणरक्तलेपकुसुमंपीतांबरंसंस्मरेत् ॥ ८१ ॥एवंध्यात्वाजपेत्सूर्य
लक्षंत्रिमधुरप्लुतैः।पलाशपुष्पैर्जुहुयात्तत्सहस्रंहुताशने ॥ ८२ ॥ तर्पयेत्सलिलैस्तावत्पीठेपूर्वोदिते
यजेत्॥पक्षिराजायठद्वंद्वमनेनगरुडार्चनम् ॥ ८३ ॥ मुकुटंशिरसीष्ट्वाथकर्णयोःकुण्डलेयजेत् ॥
करेषुचक्राद्यस्त्राणिश्रीवत्संकौस्तुभंहृदि ॥ ८४ ॥वनमालांगलेश्रोणीदेशेपीतांबरंश्रियम्॥वामांगेभ्य
र्च्यवह्न्यादिदिग्विदिक्ष्वंगपूजनम् ॥ ८५ ॥ दिक्षुप्रपूज्यचतुरोबाणान्कोणेषुपंचमम् ॥ लक्ष्म्याद्याः
शक्तयःपूज्याःशक्राद्याआयुधान्यपि ॥ ८६ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीचापिरतिःप्रीतिश्चतुर्थिका ॥कीर्तिः
कांतिस्तुष्टिपुष्टीइतिलक्ष्म्यादयोमताः ॥ ८७ ॥

बाणपद्मांकुशशंखादक्षेषु॥अन्यान्यन्येषु ॥ ८१॥ सूर्यलक्षंद्वादशलक्षम्॥८२॥ठद्वयंस्वाहा ॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥

॥ ८८ ॥ ८९ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ कामेति॥ क्लीमिति गोपालमनुः॥ परिचर्यौंति ॥ तत्पूजोक्ताष्टार्णवादित्यर्थः॥ अयं स्त्रीवशीकारी ॥९० ॥ मंत्रांतरमाह ॥ रमेति ॥ रमाश्रीं ॥ भवानीह्रीं ॥ कंदर्पःक्लीं ॥ स्मृतिर्गः ॥ओयुता गो ॥

विजयापुष्पसंयुक्तैर्जलैःसंतर्पयेच्छतम्॥प्रातःप्रत्यहमेतस्यवांछितंमासतोभवेत्८८॥अयुतंतुघृतेना
ग्नौहुत्वासंपातजंघृतम्।तावज्जप्तंप्रियाकांतंभोजयेद्वशमेतिसः।८९।कामबीजेपिविज्ञेयापरिचर्य्योक्त
मंत्रवत्॥ विशेषात्कामिनीवर्गमोहकोमनुनायकः ॥९०॥रमाभवानीकंदर्पःकृष्णायस्मृतिरोयुता॥
विंदायवह्निजायांतोद्वादशार्णोमनुःस्मृतः ॥ ९१॥ मुनिर्ब्रह्मा[1]स्यगायत्रीछंदःकृष्णोस्यदेवता॥धरैक
चंद्ररामाब्धिनेत्रार्णैरंगमीरितम् ॥९२॥उपासनास्यमन्त्रस्यपूर्ववत्परिकीर्त्तिता॥अथवक्ष्येषोडशार्ण
मनुलोकविमोहनम् ॥ ९३ अथरुक्मिणीवल्लभमंत्रः ॥ तारोहृद्भगवतेंतेरुक्मिणीङेंतवल्लभः ॥ द्वि
ठांतःषोडशार्णोयंनार[2]दोमुनिरस्यतु ॥ ९४ ॥ छन्दोनुष्टुब्देवतातुरुक्मिणीवल्लभोहरिः॥एकद्वियुग
सप्ताक्षिवर्णैःपंचांगमीरितम् ॥ ९५ ॥

यथा–श्रींह्रींक्लींकृष्णायगोविंदायस्वाहेति ॥ ९१ ॥ षडंगमाह ॥ धरैकेति ॥ धराएकः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ ॐनमोभगवतेरुक्मिणीवल्लभायस्वाहेति ॥ ९४॥ पंचांगमाह ॥ एकेति ॥ ९५ ॥

---

[1] अस्य द्वादशार्णगोपालमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछंदःकृष्णोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।[2]अस्य षोडशार्णगोपालमंत्रस्यनारदऋषिःअनुष्टुप्छंदःरुक्मिणीवल्लभोहरिर्देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यानमाह ॥ चिंतेति ॥ चिंतामणियुतानिजहस्तेनालिंगिताकांतायेनतम् ॥ सपद्महस्तयापत्न्यालिंगितं ॥ स्वर्णयष्टियुतदक्षकरम् ॥ ९६ ॥ अंगैर्नारदादिभिः ॥ इंद्रादिभिः वज्रादिभिः॥ ९७॥९८॥ मंत्रांतरमाह ॥ कामइति ॥ क्लींगोवल्लभायस्वाहेति ॥ गायत्रीछंदः॥कृष्णोदेवता॥ब्रह्माऋषिः ॥ पंचांगमाह ॥ वर्णैरिति॥क्लींगोहृत् ॥वल्लशिरः ॥

चिंताश्मयुक्तनिजदोःपरिरब्धकांतमालिंगितंसजलजेनकरेणपत्न्या ॥ सौवर्णवेत्रयुतहस्तमनेकभूषं पीतांबरंभजतकृष्णमभीष्टसिद्ध्यै ॥ ९६ ॥ लक्षंजपेद्दशांशेनपद्मैर्होमंसमाचरेत् ॥अंगैर्नारदवृत्राारिवज्राद्यैःपूजयेद्धरिम् ॥९७॥ नारदंपर्वतंजिष्णुंनिशठोद्धवदारुकान् ॥ विष्वक्सेनंचशैनेयंदिक्ष्वग्रेविनतासुतम् ९८ ॥ अथाष्टाक्षरी ॥ कामोगोवल्लभोङेंतःस्वाहांतोष्टाक्षरोमनुः॥गायत्रीकृष्णधातारश्छंदोदेवर्षयोमताः ॥ वर्णयुग्मैःसमस्तेनपंचांगविधिरीरितः ॥ ९९॥ हरिंपंचवर्षंव्रजेधावमानंस्वसौंदर्यसंमोचितंस्वर्गयोषम् ॥ यशोदासुतंश्रीगणैर्दृष्टकेलिंभजेभूषितंभूषणैर्नूपुराद्यैः ॥ १००॥ अष्टलक्षंजपेदष्टसहस्रंब्रह्मवृक्षजैः ॥ समिद्वरैःप्रजुहुयादंगार्चादिग्विदिक्ष्वथ ॥ १०१ ॥

भायशिखा ॥ स्वाहावर्म ॥ सर्वेणास्त्रम् ॥ ९९ ॥ ध्यानमाह ॥ पंचेति ॥ निजसौंदर्यमोहिताप्सरसम्॥१००॥ब्रह्मवृक्षजैःपलाशोत्थैः ॥ १०१ ॥

---

१ अस्याष्टाक्षरकृष्णमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछंदः कृष्णोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ १०२ ॥ संक्रंदनादयइंद्रादयः ॥ १०३ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ कामेनेति ॥ क्लींकृष्णक्लींमितिवेदाक्षरश्चतुर्वर्णः ॥ १०४ ॥

वासुदेवःसंकर्षणःप्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः ॥ रुक्मिणीसत्यभामाचलक्ष्मणाजांबवत्यपि ॥ १०२ ॥
संक्रंदनादयःपूज्यावज्राद्यान्यायुधानिच ॥ एवंसिद्धेमनौमंत्रीसंपदामालयोभवेत् ॥ ३ ॥ कामसंपुटितं
कृष्णपदंवेदाक्षरोमनुः ॥ गायत्रीनारदःकृष्णश्छंदोमुनिरधीश्वरः ॥ ४ ॥ दीर्घारूढेनकामेनषडंगन्यासमाचरेत् ॥ कल्पद्रुमूलसंरूढपद्मस्थंचिंतयेद्धरिम् ॥ ५ ॥ कल्पद्रोरतिरमणीयपल्लवेभ्यःप्रोद्भूतैर्मणिनिकरैःप्रसिक्तमीशम् ॥ ध्यायेयंकनकनिभांशुकेवसानंभुंजानंदधिनवनीतपायसानि ॥ ६ ॥
चतुर्लक्षंजपेन्मंत्रंदशांशंबिल्वसंभवैः ॥ फलैःप्रजुहुयादग्नौयजेदंगानिपूर्ववत् ॥ ७ ॥ महापद्मंतथापद्मंशंखंमकरकच्छपौ ॥ मुकुंदकुंदनीलाश्चनिधीन्दिक्षुसमर्चयेत् ॥ ८ ॥ इन्द्रादीन्वज्रपूर्वांश्चप्रयजेत्तदनंतरम् ॥ इत्थंजपादिभिःसिद्धोमंत्रोनिधिरिवापरः ॥ १०९ ॥

॥ १०५ ॥ ध्यानमाह ॥ कल्पेति ॥ कल्पद्रोःकल्पवृक्षस्यप्रसिक्तमभिषिक्तम् ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

---

१ अस्यकृष्णमन्त्रस्यनारदऋषिर्गायत्रीछंदःकृष्णोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ ११० मंत्रांतरमाह ॥ देवकीति ॥ यथा–देवकीसुतगोविंदवासुदेवजगत्पते ॥ देहिमेतनयंकृष्णत्वामहंशरणंगत
इति १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ध्यानमाह ॥ विजयेनेति॥ अर्जुनेनयुतोंबुधिमध्यात्तनयानानीयद्विजायददत्ध्येयः॥

मंत्रेष्वेषुदशार्णोक्तान्प्रयोगान्विदधीतच ॥ अथपुत्रप्रदंवच्मिकृष्णमंत्रमनुष्टुभम्॥११०॥ देवकीसुत
वर्णांतेगोविंदपदमुच्चरेत्॥वासुदेवपदंप्रोच्यसंबुद्ध्यंतंजगत्पतिम् ॥१११॥ देहिमेतनयंप्रोच्यकृष्णत्वा
महमीरयेत्॥शरणंगतइत्युक्तोमंत्रोद्वात्रिंशदक्षरः ॥१२॥ नारदो[1]मुनिरस्योक्तोनुष्टुप्छंदःसमीरितम्॥
देवःसुतप्रदःकृष्णःपादैःसर्वेणचांगकम् ॥१३॥ विजयेनयुतोरथस्थितःप्रसमानीयसमुद्रमध्यतः॥प्रद
दत्तनयान्द्विजन्मनेस्मरणीयोवसुदेवनंदनः ॥ १४ ॥लक्षंजपोयुतंहोमस्तिलैर्मधुरसंयुतैः॥अर्चापूर्वो
दिताचैवंमंत्रःपुत्रप्रदोनृणाम्।१५नृसिंहोमा[2]धवारूढोलोहितोनिगमादिमः।कृशानुभार्यापंचार्णोम
नुर्विषहरःपरः॥१६अनन्त[3]पंक्तिपक्षीद्रामुनिश्छंदश्चदेवता।तारवह्निप्रियेबीजशक्तीमंत्रस्यकीर्तिते१७

॥ ११४ ॥ ११५ ॥ हरिप्रसंगात्तद्वाहनस्यगरुडस्यमंत्रमाह ॥ नृसिंहइति ॥ नृसिंहःक्षः माधवारूढः इयुतःक्षि ॥
लोहितः पः ॥ निगमादिमॐ ॥ कृशानुभार्यास्वाहा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

---

[1] अस्यगोपालमंत्रस्य नारदऋषिःअनुष्टुप्छंदः सुतप्रदःकृष्णोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनि०। [2] क्षिपॐस्वाहेतिपंचार्णः। [3] अस्यगरुडमन्त्रस्यअनन्तऋषिःपंक्तिश्छंदःपक्षीन्द्रोदेवताॐबीजंस्वाहाशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

ज्वलज्वलमहामतिस्वाहाहृदयमीरितम्॥ गरुडेतिपदस्यांतेचूडाननशुचिप्रिया ॥ ११८ ॥ शिरोमंत्रोगरुडतःशिखेस्वाहाशिखामनुः ॥गरुडार्णानुदित्वांतेप्रभंजययुगंवदेत् ॥ १९ ॥प्रभेदययुगंपश्चाद्वित्रासयविमर्दय ॥ प्रत्येकंद्विस्ततःस्वाहाकवचोमनुरीरितः॥२०॥उग्ररूपधरांतेतुसर्वविषहरेतिच॥ भीषयद्वितयंप्रोच्यसर्वंदहदहेतिच ॥ २१ ॥ भस्मीकुरुकुरुस्वाहानेत्रमंत्रोयमीरितः ॥ अप्रतिहतवर्णांतेबलाप्रतिहतेतिच ॥ २२ ॥शासनांतेतथाहुंफट्स्वाहास्त्रमनुरीरितः ॥ पादेकटौहृदिमुखेमूर्ध्नि वर्णान्प्रविन्यसेत्।२३।तप्तस्वर्णनिभंफणींद्रनिकरैःक्लृप्तांगभूषंप्रभुंस्मर्तॄणांशमयंतमुग्रमखिलंनृणांविषंतत्क्षणात्।चंच्वग्रप्रचलद्भुजंगमभयंपाण्योर्वरंबिभ्रतंपक्षोच्चारितसामगीतममलश्रीपक्षिराजंभजे।२४

षडंगमाह ॥ ज्वलेति ॥ ज्वल २ महामतिस्वाहाहृत् ॥ गरुडचूडाननस्वाहाशिरः ॥ ११८ ॥ गरुडशिखेस्वाहाशिखा ॥ गरुडप्रभंजय २ प्रभेदय २ वित्रासय २ विमर्दय २ स्वाहाहुं ॥११९॥ १२० ॥ उग्ररूपधरसर्वविषहरभीषय २ सर्वंदहदह भस्मीकुरुकुरुस्वाहानेत्रम् ॥ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासनहुंफट्स्वाहाअस्त्रम् ॥ वर्णन्यासमाह ॥ पादइति ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ ध्यानमाह ॥ तप्तेति ॥ स्मर्तॄणांनृणामुग्रंविषंतत्क्षणाच्छमयति ॥ दक्षेवरम् ॥ पक्षाभ्यामुच्चारिताःसाम्नांबृहद्रथंतरादीनांगीतयोयेनतम् ॥ बृहद्रथंतरेपक्षावितिश्रुतेः ॥ १२४ ॥

॥ १२५ ॥ पक्षिराजायस्वाहेतिपीठमंत्रः॥१२६॥१२७ ॥ गरलद्वयंविषद्वयंस्थावरजंगमाख्यम्॥१२८॥१२९॥ धरणी
धवैर्भूपतिभिःसेवितश्चिरंजीवित्वा तत्तनुक्षयेहरिसायुज्यंप्राप्नोति ॥ १३० ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौका

पंचलक्षंजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः ॥पूजयेन्मातृकापद्मेगरुडंवेदविग्रहम् ॥ १२५ ॥ चतुर्थ्यंतःप
क्षिराजःस्वाहापीठमनुःस्मृतः ॥इष्ट्वांगंकर्णिकामध्येनागान्पत्रेषुपूजयेत् ॥ २६ ॥ अनंतंवासुकिंचा
पितृतीयंतक्षकंपुनः॥कर्कोटकंतथापद्मंमहापद्मंसमर्चयेत् ॥ २७ ॥ शंखपालंचकुलिकमिंद्रादीन्वज्र
संयुतान्॥एवंसिद्धेमनौमंत्रीनाशयेद्गरलद्वयम् ॥२८ ॥विष्णुभक्तिपरोनित्यंयोभजेत्पक्षिनायकम्॥
शत्रून्सर्वान्पराभूयसुखीभोगसमन्वितः॥२९ ॥ जीवेदनेकवर्षाणिसेवितोधरणीधवैः॥कलेवरांतेश्री
नाथसायुज्यंलभतेतुसः ॥१३०॥इतिश्रीमंत्रमहोदधौविष्णुगरुडमंत्रनिरूपणंनामचतुर्दशस्तरंगः ॥
॥ १४ ॥ अथवक्ष्येरवेर्मंत्रंरोगदारिद्र्यनाशनम् ॥प्रणवोभुवनेशानीमेधारेचिकयान्विता ॥ १ ॥

यांविष्णुमंत्रकीर्तनंनामचतुर्दशस्तरङ्गः॥ १४ ॥ रविमंत्रमाह ॥ ॥ प्रणवइति ॥ प्रणवःॐ ॥ भुवनेशानीह्रीं ॥मेधा
घःरेचिकयान्विताऋयुताघृ ॥ १ ॥

अक्षियुक्इयुतःसर्गीचउमाकांतोणःणिः ॥ सूर्यआदित्यःस्वरूपम् ॥ इंदिराश्रीं ॥ ॐह्रीं घृणिःसूर्यआदित्यःश्रीं ॥ २ ॥ ३ ॥ षडंगमाह ॥ सत्येति ॥ सत्यतेजोज्वालामणेहुंफट्स्वाहाहृत् ॥ ब्रह्मतेजोज्वालाम० शिरः ॥ विष्णुतेजोज्वाला०शिखेत्यादि० ॥ भूयइति ॥ शिवाश्रियोः ॥ ह्रींश्रींबीजयोर्मध्यास्थितैःषड्वर्णैःपुनःषडंगंकृत्वाशेष

उमाकांतोक्षियुक्सगींसूर्यआदित्यइंदिरा ॥ दशवर्णोम[1]नुर्दैवभागोस्यमुनिरीरितः ॥ २ ॥गायत्रीछं
दउद्दिष्टंदेवतादिवसेश्वरः ॥मायाबीजंरमाशक्तिर्नियोगोऽभीष्टसिद्धये ॥ ३ ॥सत्येतिहृदयंब्रह्मशिरो
विष्णुशिखास्मृता॥रुद्रवर्माग्निनेत्रंस्यात्सर्वैंत्यस्त्रमुदीरितम् ॥ ४ ॥ तेजोज्वालामणेहुंफट्स्वाहांता
मनवोंगजाः॥भूयःषडंगषड्वर्णैःकृत्वांतःस्थैःशिवाश्रियोः ॥ ५ ॥ शेषार्णर्जठरेपृष्ठेङेंतनाम्नातयो
र्न्यसेत्॥ आदित्यंचरविंभानुंभास्करंसूर्य्यमेवच ॥ ६ ॥

वर्णैश्चतुर्थ्यंतैरुदरपृष्ठयोर्न्यसेत् ॥ यथा–ह्रींॐहृत् ॥ ह्रींघृंश्रींशिरः । ह्रींणिंश्रींशिखा ॥ ह्रींसूंश्रींवर्म ॥ ह्रींयं श्रींनेत्रम् ॥ ह्रींआंश्रींअस्त्रम् ॥ ह्रींदिंश्रींउदरायनमःउदरे। ह्रींत्यंश्रींपृष्ठायनमःपृष्ठे इत्यष्टांगम् ॥ पंचमूर्तिन्यासमाह ॥ आदित्यमिति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

---

[1] ॐह्रींघ्राणिःसूर्यआदित्यःश्रींमितिदशार्णः । अस्यश्रीसूर्यमंत्रस्यभृगुर्ऋषिःगायत्रीछंदः दिवाकरोदेवताह्रींबीजंश्रींशक्तिः ममाभीष्टसाधनेजपेविनियोगः ।

मूर्ध्निवक्त्रेहृदि शिवेपादयोश्चप्रविन्यसेत् ॥सद्यादिपंचह्रस्वाद्यांश्चतुर्थीनमसान्वितान् ॥ ७ ॥ माया
रमागतानष्टौवर्ममूर्धमुखेगले ॥ हृत्कुक्षिनाभिजंघेचपादयोश्चप्रविन्यसेत् ॥ ८॥ स्वरान्सबिंदूनुच्चा
र्य्यङेंतंशीतांशुमंडलम् ॥ शिखादिकंठपर्य्यंतंविन्यसेत्संस्मरन्विधुम् ॥९॥ स्पर्शान्सेंदून्समुच्चार्य्य
ङेंतंभास्करमंडलम् ॥ कंठादिनाभिपर्य्यंतंन्यसेद्ध्यायन्प्रभाकरम् ॥ १० ॥

सद्यॐकारस्तदादिका।विलोमेनपंचह्रस्वाः ॐ लंॠंउंइंअंएतदाद्याङ्ङेनमोंतानादित्यादीन्मूर्धादिषुन्यसेत् ॥ यथा–ॐलंआदित्यायनमोमूर्ध्नि ॥ ॐ ॠंरवयेनमोमुखे ॥ ॐ उंभानवेनमोहृदि ॥ ॐ इंभास्करायनमोलिंगे ॥ ॐअंसूर्यायनमःपादयोः ॥ ७ ॥ वर्णन्यासमाह ॥ मायेति ॥ नमोन्वितानित्यापिबोध्यम् ॥ यथा--ॐह्रींॐश्रींनमो मूर्ध्नि॥ ॐह्रींघूंश्रींनमोमुखे ॥ ॐह्रींणिंश्रींनमोगले ॥ ॐह्रींसूंश्रींनमोहृदि ॥ ॐह्रींयंश्रींनमःकुक्षौ ॥ ॐह्रींआंश्रींनमोनाभौ ॥ ॐह्रींदिंश्रींनमोलिंगे ॥ ॐ ह्रींत्यंश्रींनमः पादयोः ॥ ८ ॥ मंडलन्यासमाह ॥ स्वरानिति ॥ विधुंचंद्रस्मरन्चंद्रमंडलंन्यसेत् ॥ यथा–अ १६ सोममंडलायनमःशिखादिकंठांतम् ॥ ९ ॥ स्पर्शान्कादीन्मांतान्यथा–कं २५ सूर्यमंडलायनमः कंठादिनाभ्यंतम् ॥ १० ॥

यादीनि ॥ यं १० वह्निमंडलायनमोनाभ्यादिपादांतम् ॥ ११ ॥ अग्नीषोमन्यासमाह ॥ अकारादीति । अ-ठं २८ सोममंडलायनमोमूर्धादिहृदयांतम् ॥ १२ ॥ ङेइति २३ डं-क्षं २३ वह्निमंडलायनमोहृदादिपादांतम् ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ हंसन्यासमाह ॥ सबिंदूनिति अं-क्षं ५१ हंसःपुरुषात्मनेनमः सर्वांगे ॥ १५ ॥ ग्रहन्यासमाह ॥अष्टावष्टाविति ॥अं-८आदित्यायभगवतेनमःआधारे ॥ लं-८ सोमायभगवतेनमः लिंगे ॥ क-५अंगारकाय भ० नाभौ ॥ चं-५बुधायभ०हृदि०॥टं-५बृहस्पतयेभ०गले॥तं-५ शुक्रायभ० मुखमध्ये ॥ पं-५शनैश्चरायभ०भ्रूमध्ये ॥यं-४ राहवे भ०भाले॥शं-४केतवेभ०ब्रह्मरंध्रे ॥ खेचराग्रहास्तन्नामांतेभगवतेनमः इतिपदंवदेत् ॥ तच्चप्रयोगेलिखितम् ॥ हंसेति ॥ ग्रहन्यासानंतरंहंसाग्नीषोममंडलसंज्ञंन्यासत्रयंपुनःकुर्यात् ॥ प्रथमकरणाद्वैपरीत्येनेत्यर्थः ॥ १६ ॥ १७॥

यादीन्सँदूश्चतुर्थ्यंतवह्निमंडलमुच्चरन् ॥ नाभ्यादिपादपर्य्यंतंविन्यसेत्पावकंस्मरन् ॥ ११ ॥ मंडलत्रयविन्यासःप्रोक्तस्तेजोविधायकः ॥ अकारादिठकारांतवर्णाढ्यंसोममंडलम् ॥१२ ॥ङेनमोंतंन्यसेन्मंत्रीमूर्द्धादिचरणावधि ॥ ॥ डकारादिक्षकारांतवर्णाढ्यंवह्निमंडलम् ॥१३ ॥ हृदादिपादपर्य्यंतंविन्यसेन्ङेनमोन्वितम् ॥अग्नीषोमात्मकोन्यासःकथितःसर्वसिद्धिदः ॥१४॥ सबिन्दून्मातृकावर्णानजपांपुरुषात्मने ॥ नमोंतंव्यापकंन्यस्येद्धंसन्यासोऽयमीरितः ॥१५॥ अष्टावष्टौस्वरान्पंचपंचशःशेषवर्णकान् ॥ उक्तादित्यमुखान्न्यस्येच्चतुर्भिश्चग्रहान्नव ॥ १६ ॥ आधारलिंगनाभीहृत्कंठेचमुखमध्यतः ॥ भ्रूमध्येभालदेशेचब्रह्मरंध्रेक्रमान्न्यसेत् ॥१७॥

॥ १८ ॥ ध्यानमाह ॥शोणेति ॥ रक्तपद्मस्थांवेदत्रयीतनुं ॥ सैषात्रय्येवविद्यातपतीतिश्रुतेः ॥ ऊर्ध्वयोःवा०द० ॥ पद्मद्वयम् ॥अधोवामदक्षयोरभयदाने ॥ १९ ॥ २० ॥ पीठपूजायांधर्मादिकाष्टस्थानेषुपंचैवपूज्याः ॥ प्रभूताय० ॥

वदेत्खेचरनामांतेपदंभगवतेनमः ॥ हंसाख्यमग्नीषोमाख्यंमंडलत्रयसंज्ञकम् ॥ पुनर्न्यासत्रयंकुर्य्या
न्मूलेनव्यापकंचरेत् ॥ १८ ॥शोणांभोरुहसंस्थितंत्रिनयनंवेदत्रयीविग्रहं दानांभोजयुगाभयानिदध
तंहस्तैः प्रवालप्रभम् ॥ केयूरांगदहारकंकणधरंकर्णोल्लसत्कुंडलंलोकोत्पत्तिविनाशपालनकरंसूर्य्यंगु
णाब्धिंभजे ॥ १९ ॥ एवंध्यायञ्जपेल्लक्षदशकंतद्दशांशतः ॥ पद्मैस्तिलैर्वाजुहुयात्तर्पयेद्भोजयेद्द्विजान्
॥ २० ॥ प्रयजेत्पीठपूजायांधर्माद्यष्टस्थलेष्विमान् ॥प्रभूतंविमलंसारंसमाराध्यंविदिक्ष्वथ॥२१ ॥
परमादिसुखंमध्येनंतादीन्पर्ववद्यजेत् ॥ सोमाग्निमंडलेप्रोच्यरविमंडलमर्चयेत्॥ २२॥ ततोऽष्टदि
क्षुमध्येचपीठशक्तीरिमानव ॥ दीप्तासूक्ष्माजयाभद्राविभूतिर्विमलातथा ॥ २३ ॥

विमलाय० ॥ साराय०समाराध्यायेति अग्न्यादिषु संपूज्य परमसुखायनमःइतिमध्येचसंपूज्य पुनरनंतादीन्पूर्ववत् प्रथमतरंगोक्तवत् ॥तेचाष्टावेव ॥ ॥ ततः सोममंडलाय० वह्निमंडलायेत्यभ्यर्च्य सूर्यमंडलायनम इतियजेत् ॥ २१ ॥ २२ ॥ एतानावाह्यएव पीठदेवानिष्ट्वापीठशक्तीर्यजेत् ॥ ताआह ॥ दीप्तेति ॥ २३ ॥

तासांबीजान्याह ॥ ह्रस्वेति ॥ ह्रस्वत्रयम् अइउ ॥ क्लीबाःऋॠऌॡ द्व्यतिरिक्तारेफाबिंदुयुताःस्वराःक्रमात् तासांबीजानि रांरींरूंरेंरैंरांरौंरंरः इति ॥ तत्पूर्वास्तायजेत् ॥ रांदीप्तायैनमः ॥ रींसूक्ष्मायैइत्यादि० ॥ पीठमंत्रमाह ॥ ब्रह्मेति ॥ स्मृतिर्गः ॥ ॐब्रह्मविष्णुशिवात्मकायसौराययोगपीठात्मनेनमइति॥मूर्तिकल्पनेमंत्रमाह॥तारइति॥तारॐ ॥ सेंदुवियत्हं ॥ बिंदुयुतस्तद्रहितश्चेति द्वौकांतौखौ खंखः ॥ २४॥ २५॥ २६॥ खोल्कायस्वरूपं ॥ हृदयंनमः ॥ २७ प्राग्वदिति ॥ षडंगान्यग्न्यादिषुसंपूज्यदिक्ष्वष्टांगानिन्यासोक्तानियजेत् ॥ आदित्यादीन्पंचमध्येदिक्षुचन्यासवत् ॐकारादिपंचह्रस्वाद्यान् ॥ उषामिति आद्यर्णाद्याःउंउषायैनमइत्यादि० ॥ अष्टम्यामातुः स्थानेरुणमेवयजेदित्यर्थः ॥ सोंसोमायेत्यादिपूर्ववत्॥आद्यर्णाद्याः॥ रविपार्षदेभ्योनमइत्यादि ॥२८॥

अमोघाविद्युतासर्वतोमुखीपीठशक्तयः ॥ह्रस्वत्रयक्लीबहीनस्वरान्वह्नींदुसंयुतान् ॥ २४॥ बीजानि पीठशक्तीनांतदाद्यास्ताःप्रपूजयेत्॥ब्रह्मविष्णुशिवात्मांतेकायसौराययोस्मृतिः ॥ २५ ॥पीठात्मनेनमस्तारपूर्वःपीठमनुःस्मृतः ॥तारसेंदुवियत्कांतौबिंदुमद्बिन्दुवर्जितौ ॥ २६ ॥ खोल्कायहृदयंमंत्रोनवार्णो मूर्तिकल्पने॥अनेनमूर्तौक्लृप्तायांयजेत्प्रद्योतनंप्रभुम् ॥ २७ ॥प्राग्वत्षडंगंसंपूज्यदिक्ष्वष्टांगंप्रपूजयेत्॥ आदित्यंमध्यतोभ्यर्च्यरविंभानुंचभास्करम् ॥ २८ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ अर्घविधिमाह ॥ प्राणेति ॥ ३२ ॥ प्रस्थंषोडशपलानि ॥ ३३ ॥ मूलं विलोममेव ॥३४॥

सूर्यंदशासुसद्यादिंपंचह्रस्वादिकान्यजेत् ॥ उषांप्रज्ञांप्रभांसंध्यामाद्यर्णाद्याविदिक्ष्वपि ॥ २९ ॥ ब्राह्म्याद्यादिग्दलेष्वर्चेन्महालक्ष्मीस्थलेरुणम्॥सोमंबुधंगुरुंशुक्रंदिक्ष्वाद्यर्णादिकान्यजेत्॥ ३० ॥ अंगारकंशनिंराहुंकेतुकोणेषुपूजयेत् ॥ इंद्राद्यानायुधैर्युक्तान्पार्षदानर्चयद्रवेः ॥३१॥इत्थंसिद्धेमनौदद्याद्भानवेर्घ्यंचतद्दिने ॥[1]प्राणायामंषडंगंचकृत्वान्यासान्पुरोदितान्॥३२॥स्वमंडलेयजेदर्कमानसैरुपचारकैः॥सुताम्रघटितंप्रस्थतोयग्राहिमनोहरम् ॥३३॥ मंडलेस्थापयेत्पात्रंरक्तचंदनचर्चितम्॥ विलोमांमातृकांमूलंविलोमंचपठञ्जलैः॥३४॥रविमंडलनिर्गच्छत्सुधाबुद्धिविभावितैः॥ त्रयोदशैववस्तूनिप्रक्षिपेन्मूलमुच्चरन् ॥३५॥ तिलतंडुलदर्भाग्रशालिश्यामाकराजिका ॥ हयारिकुसुमंरक्तंचंदनंरक्तचन्दनम्॥३६॥गोरोचनंकुंकुमंचजयांवेणुयवानिति॥तज्जलेपीठमभ्यर्च्यबाह्यभानुंस्वमंडलात्॥३७॥अखिलैरुपचारैस्तंपूजयेदावृतीरपि ॥ प्राणायामत्रयंकृत्वाषडंगन्यासमाचरेत् ॥ ३८ ॥

सूर्यमंडलान्निर्गच्छद्यदमृतंतद्धियाचिंतितैः ॥ ३५ ॥ वस्तून्याह ॥ तिलेति ॥ रक्तं करवीरम् ॥ ३६ ॥ वेणुयवाःवंशोत्पन्नयवान् ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

---

[1] प्राणानायम्यसद्देशे इति ।

सुधाबीजंवमिति ॥ तेनदक्षकरेण ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥४५ ॥ मगंलमत्रंमाह ॥ तारइति ॥
तारॐ ॥ वियत् हं: दीर्घाबिंदुयुतंहाम् ॥ पुनस्तदेवावियत् चंद्रांकितहं॥ ४६॥ विसर्गीभृगुः सः ॥रात्रीशसर्गिणौ

चंदनेनसुधाबीजंदक्षेकरतलेन्यसेत्। आच्छादयेदर्घपात्रंवामाक्रांतेनतेनच ॥३९॥अष्टोत्तरशतावृत्त्या
मूलेनांभोभिमंत्रयेत्॥ पुनःपंचोपचारैस्तंपूजयेन्मूलमंत्रतः॥४० ॥ पाणिभ्यांपात्रमादायजानुनीभूत
लेन्यसेत्॥आमूर्धपात्रमुद्धृत्यदृष्टिंचाधायमंडले ॥ ४१ ॥ मनसापूजयेत्तत्रभानुमावरणान्वितम् ॥
अर्घ्यंदद्याद्रविंध्यायन्रक्तचंदनमंडले ॥ ४२ ॥ ततःपुष्पांजलिंदद्यान्मंडलस्थायभानवे॥ अष्टोत्तर
शतंमूलंजपेदासनसंस्थितः ॥४३॥ प्रत्यर्कंप्रातरेवंयोदद्यादर्घ्यंविवस्वते ॥ लक्ष्मीयशःसुतान्विद्या
मैश्वर्य्यंसोऽधिगच्छति॥४४॥ गायत्र्युपासनासक्तःसंध्यावंदनतत्परः॥दशवर्णजपन्विप्रोनैवदुःखम
वाप्नुयात् ॥४५॥अथवच्मिधरासूनुमंत्रंसुतधनप्रदम्॥तारोवियद्दीर्घबिंदुयुक्तंचंद्रांकितंपुनः ॥४६ ॥
भृगुर्विसर्गीचंडीशौक्रमाद्रात्रीशसर्गिणौ ॥ षड्वर्णोमनुराख्यातोभीष्टदायीऋणापहः ॥ ४७ ॥

बिंदुयुतौविसर्गयुतौ चंडीशौखौखंखः॥ ४७ ॥

---

१ ॐ हांहंसः खंसः। अस्य श्रीमंगलमन्त्रस्य विरूपा ऋषिः गायत्रीछंदःधरात्मजोदेवता ममा०।

धरात्मजो भौमः ॥ ४८ ॥ देवताध्यानमाह ॥ जपाभामिति ॥ शूलधरौदक्षयोः ॥ अन्ययोरितरे ॥ ४९ ॥ रसल
क्षंषड्लक्षम् ॥ शैवेपीठेमृत्युंजयोक्ते ॥५०॥ ककुभांनाथानिंद्रादीन् ॥कुलिशादीन्वज्रादीन्॥५१॥५२॥भौमव्रतमाह

मुनिर्निरूपागायत्रीछंदोदेवोधरात्मजः।षड्भिर्वर्णैःषडंगानिमनोःकुर्वीतसाधकः॥४८॥जपाभंशिव
स्वेदजंहस्तपद्मैर्गदाशूलशक्तीर्वरंधारयंतम्॥अवंतीसमुत्थंसुमेषासनस्थंधरानंदनंरक्तवस्त्रंसमीडे४९।
रसलक्षंजपोहोमःसमिद्भिःखदिरस्यच॥शैवेपीठेयजेद्भौमंप्रागंगानिप्रपूजयेत्॥५० ॥एकविंशतिको
ष्ठेषुमंगलादीन्प्रपूजयेत्॥तद्बहिःककुभांनाथान्कुलिशादींस्ततोर्चयेत् ॥ ५१ ॥इत्थंजपादिभिःसिद्धं
स्वेष्टसिद्धौप्रयोजयेत्॥नारीपुत्रमभीप्सन्तीभौमाहेतद्व्रतंचरेत् ॥५२॥मार्गशीर्षेथवैशाखेतस्यारंभः
प्रशस्यते॥अरुणोदयवेलायामुत्थायशुचिविग्रहा॥५३॥ दंतान्धावेदपामार्गसमिधामौनसेविनी ॥
नद्यादिसलिलेस्नात्वाधारयेद्रक्तवाससी॥ ५४ ॥ नैवद्यकुसुमालेपान्रक्तान्संपाद्यसंयता ॥ विधिज्ञं
विप्रमाहूयभौममर्चेत्तदाज्ञया ॥ ५५ ॥ रक्तगोगोमयालिप्तदेशेपीठनिषेविणी ॥ मंगलादीनिनामा
निस्वप्रतीकेषुविन्यसेत् ॥ ५६ ॥

माणैंति॥शुचिविग्रहाशरीरचिंतानिवर्तनानंतरंप्रक्षालितपाणिपादमुखा॥५३॥५४॥स्वप्रतीकेषुनिजांगेषु ॥५५॥५६॥

॥१॥

न्यासमवाह ॥ मंगलमिति ॥ ॐमंगलायनमः पादयोः इत्यादि० ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ।

मंगलंविन्यसेदंघ्र्योर्भूमिपुत्रंतुजानुनोः ॥ ऊर्वोश्चऋणहर्तारंकटिदेशेधनप्रदम् ॥ ५७ ॥ स्थिरासनं
गुह्यदेशेमहाकायमथोरसि॥वामबाहौततोन्यस्येत्सर्वकर्मविरोधकम् ॥५८॥लोहितंदक्षिणेबाहौलो
हिताक्षंगलेन्यसेत् ॥ वदनेविन्यसेत्साध्वीसामगानांकृपाकरम् ॥ ५९ ॥धरात्मजंनसोरक्ष्णोःकुजं
भौमंललाटतः॥ भूतिदंतुभ्रुवोर्मध्येमस्तकेभूमिनंदनम् ॥ ६० ॥ अंगारकंशिखादेशेसर्वांगेविन्यसे
द्यमम्॥ततोबाहुद्वयेन्यस्येत्सर्वरोगापहारकम् ॥ ६१ ॥ मूर्द्धादिपादपर्य्यंतंवृष्टिकर्तारमङ्गके ॥ वि
न्यसेद्वृष्टिहर्तारं मूर्द्धांतंचरणादितः ॥ ६२ ॥ दिक्षुप्रविन्यसेदंत्यंसर्वकामफलप्रदम्॥आरंवक्रंभूमिजं
चनाभौवक्षसिमूर्द्धनि ॥ ६३ ॥एवंन्यस्तशरीरोसौध्यायेद्धरणिनंदनम् ॥अर्घंसंस्थाप्यविधिवत्पूज
येदुपचारकैः ॥ ६४ ॥एकविंशतिकोष्ठाढ्येत्रिकोणेताम्रपात्रगे ॥ आवाह्यधरणीपुत्रंशोणैःपुष्पैश्चचं
दनैः॥ ६५ ॥ अंगानिपूजयेत्प्राग्वदेकविंशतिकोष्ठके ॥ मंगलादींस्त्रिकोणेषुवक्रमारंचभूमिजम् ॥
॥६६॥ब्राह्म्याद्यामातृकाबाह्येशक्रादीनायुधान्यपि॥धूपदीपौविधायाथगोधूमान्नंनिवेदयेत् ॥६७॥
जलपूर्णेताम्रपात्रेगंधपुष्पाक्षतान्विते॥फलंनिधायमंत्राभ्यांभौमायार्घ्यंनिवेदयेत् ॥ ६८ ॥

॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

मन्त्रमाह ॥ भूमिपुत्रेति ॥ ६९ ॥ ७० ॥ पूर्वनामभिर्मंगलाद्यैः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ रेखामार्जनमंत्रमाह ॥ दुःखेति ॥

भूमिपुत्रमहातेजःस्वेदोद्भवपिनाकिनः ॥सुतार्थिनीप्रपन्नात्वांगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ ६९ ॥ रक्तप्रवालसंकाशजपाकुसुमसन्निभ ॥ महीसुतमहाबाहोगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ ७० ॥ एकविंशतिकृत्वोथ प्रणमेत्पूर्वनामभिः ॥ प्रदक्षिणाविधातव्यास्तावत्योवसुधात्मजे ॥ ७१ ॥ खदिरांगारकेनाथकुर्य्याद्रेखात्रिकंसमम् ॥वामपादेनमंत्राभ्यामेताभ्यांतत्प्रमार्जयेत् ॥ ७२ ॥ दुःखदौर्भाग्यनाशायपुत्रसंतानहेतवे ॥कृतरेखात्रयंवामपादेनैतत्प्रमार्ज्म्यहम् ॥ ७३ ॥ऋणदुःखविनाशायमनोभीष्टार्थसिद्धये ॥ मार्जयाम्यसितारेखास्तिस्रोजन्मत्रयोद्भवाः ॥ ७४ ॥ ततःपुष्पांजलिकरास्तुवीतधरणीसुतम् ॥ ध्यायंतीचरणांभोजंपूजासांगत्वसिद्धये ॥ ७५ ॥ धरणीगर्भसंभूतंविद्युत्तेजःसमप्रभम् ॥कुमारंशक्तिहस्तंचमंगलंप्रणमाम्यहम् ॥ ७६ ॥ ऋणहर्त्रेनमस्तुभ्यंदुःखदारिद्र्यनाशिने ॥नभसिद्योतमानायसर्वकल्याणकारिणे॥ ७७ ॥ देवदानवगंधर्वयक्षराक्षसपन्नगाः॥सुखंयांतियतस्तस्मैनमोधरणिसूनवे ॥ ॥७८ ॥योवक्रगतिमापन्नोनृणांदुःखंप्रयच्छति ॥पूजितःसुखसौभाग्यंतस्मैक्ष्मासूनवेनमः ॥ ७९ ॥

॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ स्तुतिमाह ॥॥ धरणीति ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ ८१ ॥ उद्यापनमाह ॥ तिलैरिति ॥ ८२ ॥ मंडलस्थइति ॥ सर्वतोभद्रमंडलेकुंभंसंस्थाप्य तत्रभौममूर्ति
सौवर्णींमंगलप्रतिमांसंपूज्याचार्यायदद्यात् ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ गुरुमंत्रमाह ॥ खड्गीशाविति ॥

प्रसादंकुरुमेनाथमंगलप्रदमंगल॥मेषवाहनरुद्रात्मन्पुत्रान्देहिधनंयशः ॥ ८० ॥ एवंसंस्तूयसंपूज्य
गृह्णीयाद्ब्राह्मणाशिषः ॥गुरवेदक्षिणांदत्त्वाभुंजीतान्नंनिवेदितम् ॥८१ ॥ प्रतिभौमदिनेकुर्य्यादेवंसंव
त्सरावधि ॥तिलैस्संजुहुयाद्धोमंशतार्द्धंभोजयेद्द्विजान् ॥ ८२॥ माहेयमूर्तिंसौवर्णीमाचार्य्यायनिवे
दयेत्॥मंडलस्थेघटेऽभ्यर्च्यसुतसौभाग्यसिद्धये ॥८३ ॥ एवंव्रतपरानारीप्राप्नुयात्सुभगान्सुतान्॥ध
न्याप्त्यैऋणनाशायव्रतंकुर्य्यात्पुमानपि ॥ ८४॥ अग्निर्मूर्द्धेत्यपिमनुंवैदिकंब्राह्मणोजपेत्॥ तथांगार
कगायत्रींसर्वाभीष्टस्यसिद्धये ॥८५॥ अङ्गा[1]रकायशब्दान्तेविद्महेपदमुच्चरेत् ॥ शक्तिहस्तायचपदं
धीमहीतिततोवदेत् ॥८६॥ तन्नोभौमःप्रचोवर्णान्दयादितिचकीर्तयेत्॥ एषांगारकगायत्रीजप्ताभीष्ट
प्रदायिनी॥८७॥माहेयोपासनंप्रोक्तंगुरुमंत्रउदीर्य्यते॥खड्गीशौभारभूतिस्थौतत्राद्यःक्रूरसंयुतः ८८॥

खड्गीशौद्वौवकारौ भारभूतिस्थौऋवर्णस्थौ ॥ तयोराद्यःक्रूरेणबिंदुनायुतः ॥ ८८ ॥

---

१ अङ्गारकायविद्महेशक्तिहस्तायधीमहि । तन्नोभौमःप्रचोदयात् ।

नभोहः ॥ लोहितस्थोभृगुः पकारस्थः सकारः स्प ॥ हरिस्तकारः भगान्वितोवायुः एयुतोयःये ॥ ःहृदयं नमः ॥ यथा—बृंबृहस्पतयेनमःइति ॥ ८९ ॥ आदिमंबृमितिबीजम् ॥ षडंगमाह ॥ बराभ्यामिति ॥ ब्रांहृत् ॥ ब्रीं शिरइ

नभोभृगुर्लोहितस्थोहरिर्वायुर्भगान्वितः ॥ हृदयांतोष्टवर्णोयंमनुर्ब्रह्मामुनिःस्मृतः ॥८९॥ छंदोनुष्टुप्सुराचार्य्योदेवताबीजमादिमम् ॥ बराभ्यांदीर्घयुक्ताभ्यांषडंगानिप्रकल्पयेत् ॥ ९० ॥रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलंदक्षात्किरंतंकरादासीनंविपणौकरंनिदधतंरत्नादिराशौपरम् ॥पीतालेपनपुष्पवस्त्रमखिलालंकारसंभूषितंविद्यासागरपारगंसुरगुरुंवंदेसुवर्णप्रभम्॥ ९१ ॥ जपित्वाशीतिसाहस्त्रंहुत्वान्नेनघृतेनवा॥धर्माधर्मादिपीठेतंपूजयेदंगादिग्भवैः ॥ ९२ ॥ सिद्धेमनौप्रकुर्वीतप्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ हरिद्राकुंकुमैर्हुत्वाघृताक्तैर्दिवसत्रयम् ॥ ९३ ॥ सविंशतिशतंमंत्रीवासांसिलभतेमणीन्॥शत्रुरोगादिपीडासुस्वजनेकलहोद्भवे ॥ ९४ ॥

त्यादि० ॥ ९० ॥ ध्यानमाह ॥ रत्नेति ॥दक्षहस्ताद्रत्नहेमवस्त्रराशीन्निक्षिपंतम् ॥ वामकरंरत्नादिसमूहे आरोपयंतम् ॥ ९१ ॥ धर्माधर्मादिपीठेइति ॥ पीठशक्तयोभवंतीत्यर्थः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

---

१ अस्य श्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सुराचार्योदेवता बृंबीजं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

**शुक्रमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ॥ वस्त्रस्वरूपम् ॥ भगीसूर्यः एयुतोमः मे ॥ देहिशुक्रायस्वरूपम्॥ठद्वयं**

जुहुयात्पिप्पलोत्थाभिःसमिद्भिस्तन्निवृत्तये॥तारोवस्त्रंभगीसूर्य्योदेहिशुक्रायठद्वयम् ॥ ९५॥एकादशाक्षरोमंत्रोहेमवस्त्रप्रदायकः॥ब्रह्मामुनिर्विराट्छंदोदेवतादैत्यपूजितः ॥ ९६॥बीजंतारोग्निभार्य्यातुशक्तिरस्यप्रकीर्तिता॥एकद्विचंद्रनेत्राग्निनेत्रवर्णैःषडंगकम् ॥ मंत्रवर्णैस्तुकृत्वाथध्यायेद्विद्यानिधिंसितम्॥९७॥ श्वेतांभोजनिषण्णमापणतटेश्वेतांबरालेपनंनित्यंभक्तजनायसंप्रददतंवासोमणीन्हाटकम्॥ वामेनैवकरेणदक्षिणकरेऽव्याख्यानमुद्रांकितंशुक्रंदैत्यवरार्चितंस्मितमुखंवंदेसितांगप्रभम् ॥ ९८ ॥ ॥अयुतंप्रजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयाद्घृतैः ॥ यजेद्धर्मादिपीठेतंनगेंद्रादितदायुधैः ॥९९ ॥ सुगंधैःश्वेतकुसुमैर्जुहुयाच्छुक्रवासरे॥एकविंशतिवारंयोलभतेसोंशुकंमणीन् ॥१०० ॥

**स्वाहा ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ध्यानमाह ॥ श्वेताम्भोजेति:आपणतटे श्वेतपद्मस्थितम् ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥**

---

१ ॐ वस्त्रंमेदेहिशुक्रायस्वाहा । अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः विराट्छन्दःदैत्यपूज्योदेवता आंबीजंस्वाहाशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः।

व्यासमंत्रमाह ॥ बालइति ॥ बालोवः पवनदीर्घेन्दुयुतः यकाराकारबिंदुयुतः व्याम् ॥ जलंझिंटीशयुग्वकारएकारयुतः वे ॥ अत्रिर्दः ॥ व्यासायस्वरूपम् ॥ हृदयंनमः ॥ यथा—व्यांवेदव्यासायनमइति ॥ १०१ ॥

बालःपवनदीर्घेन्दुयुक्तोझिंटीशयुग्जलम्॥अत्रिर्व्यासायहृदयंमनुरष्टाक्षरोमतः ॥ १०१ ॥ ब्रह्मानुष्टुम्मुंनिश्छंदोदेवःसत्यवतीसुतः ॥ आद्यबीजंनमःशक्तिर्दीर्घाढ्येनादिनांगकम् ॥१०२ ॥व्याख्यामुद्रिकयालसत्करतलंसद्योगपीठस्थितंवामेजानुतलेदधानमपरंहस्तंसुविद्यानिधिम् ॥विप्रव्रातवृतंप्रसन्नमनसंपाथोरुहाङ्गद्युतिंपाराशर्य्यमतीवपुण्यचारतंव्यासंस्मरेत्तिसद्धये ॥१०३॥जपेदष्टसहस्राणिपायसैर्होममाचरेत्॥पूर्वोक्तपीठेव्यासस्यपूर्वमंगानिपूजयेत् ॥ १०४ ॥ प्राच्यादिषुयजेत्पैलंवैशंपायनजैमिनी॥सुमंतुंकोणभागेषुश्रीशुकंरोमहर्षणम्॥ १०५ ॥

॥ १०२ ॥ विप्रव्रातवृतंब्राह्मणसमूहपरिवेष्टितम् ॥ पाथोरुहांगद्युतिं नीलेंदीवरकांतिम् ॥ १०३ ॥ पूर्वोक्तपीठेधर्मादिके ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

---

१ अस्य श्रीव्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः सत्यवतीसुतोदेवता व्यांबीजंनमःशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः

उग्रश्रवसमन्यांश्चमुनीन्सेंद्रादिकायुधान् ॥ एवंसिद्धमनुर्मंत्रीकवित्वंशोभनाःप्रजाः ॥ १०६ ॥
व्याख्यानशक्तिकीर्तिंचलभतेसंपदांचयम् ॥ मृत्युंजयेनपुटितयोव्यासस्यमनुंजपेत् ॥ १०७ ॥
सर्वोपद्रवसंत्यक्तोलभतेवांछितंफलम् ॥ तारःशूलीवामकर्णबिंदुयुक्तःससर्गसः ॥ १०८ ॥ मृत्युंजयस्यमंत्रोयंत्रिवर्णोमृत्युनाशनः ॥ जप्तोयंकेवलोनॄणामिष्टसिद्धिंप्रयच्छति ॥ किंपुनस्तेनपुटितोवेदव्यासमनूत्तमः ॥ १०९ ॥ इतिश्रीमंत्रमहोदधौसूर्य्यादिलघुमृत्युञ्जयव्यासमंत्रनिरूपणंनामपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

॥ १०६ ॥ १०७ ॥ मृत्युंजयमंत्रमाह॥तारइति । तार ॐ॥ वामकर्णबिंदुयुतः ऊबिन्दुयुतः शूलीजः जूम् ॥ससर्गः सःसः ॥ १०८ ॥ केवलोप्ययंजप्तोनृणांमृत्युनाशनः ॥ किंपुनस्तत्पुटितः ॥ व्यासमंत्रः॥ अस्यमंत्रस्य कहोलऋषिःदैवीगायत्रीछंदः मृत्युंजयोदेवता जूंबीजं सःशक्तिः ॥ दीर्घाढ्यसकारेणषडङ्गम् ॥ १०९ ॥ इतिश्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांसूर्यादिमंत्रानिरूपणंनामपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

---

१ ॐँजूंसःव्यांवेदव्यासायनमःसःजूंॐँ ।

महामृत्युंजयंवक्ष्येदुरितापन्निवारणम् ॥ यंप्राप्यभार्गवःशंभोर्मृतान्दैत्यानजीवयत्॥१॥ तारःखंव्या
पिनीचंद्रयुक्तारश्चतुराननः ॥ अर्घीशबिंदुसंयुक्तोहंसःसर्गीचभूर्भुवः ॥ २ ॥ सकारोबालसर्गाढ्य
स्त्र्यंबकंवैदिकोमनुः ॥भूर्भुवःस्वर्भुजंगेशस्तारीजूंसर्गवान्भृगुः ॥ ३ ॥ आकाशोमनुबिंद्वाढ्यःप्रणवां
तोमनूत्तमः ॥ महामृत्युंजयाख्योयंपंचाशद्वर्णनिर्मितः ॥४॥ वामदेवकहोलाख्यवसिष्ठामुनयोस्य
तु ॥ छंदांस्युक्तानिरुद्रेणपंक्तिगायत्र्यनुष्टुभः॥ ५ ॥ सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रोस्यदेवता॥मायाश
क्तीरमाबीजंविनियोगोर्थसिद्धये ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ महामृत्युंजयमन्त्रमाह ॥ तारइति ॥ तारःॐ ॥ व्यापिनीचंद्रयुक् औबिंदुयुतंखंहःहौं तारःॐ ॥अर्घीशबिंदुयुक्तश्चतुराननः ऊबिंदुयुतोजःजूं ॥ सर्गीहंसःसः ॥ भूर्भुवःस्वरूपम् ॥ २ ॥ सकारोबालविसर्गाढ्योवविसर्गयुतःसकारःस्वः ॥ त्र्यंबकंवैदिकोमंत्रः ॥ यथा–त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतादिति ॥ भूर्भुवःस्वःस्वरूपम् ॥ तारयुतोभुजंगेशोरःरों ॥ जूंस्वरूपम् ॥ सर्गवान्भृगुःसः ॥ ३ ॥ मनुबिंद्वाढ्यःआकाशः औबिंदुयुतोहःहौं ॥ प्रणवांतश्चायमंत्रः ॥ यथा–ॐहौंॐजूंसःभूर्भुवः स्वःत्र्यंबकं०भूर्भुवः स्वःरोंजूंसःहौंॐइतिपंचाशदर्णः ॥ ४ ॥ ५ ॥ माया ह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ ६ ॥

---

१ अस्यश्रीमहामृत्युंजयमन्त्रस्यवामदेवकहोलवसिष्ठाऋषयःपंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसिसदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रोदेवताह्रींशक्तिःश्रींबीजंममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ।

मुन्यादिकानृष्यादीन्मूर्धादिषुन्यसेत् ॥ शिवेलिंगे ॥ षडंगन्यासमाह ॥ त्रिचतुरिति ॥ चतुर्भिः अनुष्टुभः त्र्यंब कमंत्रस्यआदिवर्णान् ॥मूलादिनववर्णाद्यान्मूलमंत्रस्यादौयेनववर्णास्ताराद्यास्तान् ॥ ॐनमोभगवतेरुद्रायेति पदान्वितान्–तथाशूलपाणयेइत्यादिप्रातिस्विकांगमंत्रयुतानुक्त्वाषडंगंकुर्यादित्यर्थः ॥ यथा–ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भु

मूर्ध्निवक्त्रेहृदिशिवेपदोर्मुन्यादिकान्न्यसेत् ॥ त्रिचतुर्वसुनंदेषुगुणवर्णाननुष्टुभः ॥ ७ ॥ तारोनमो
भगवतेरुद्रायेतिपदान्वितान् ॥ मूलादिनववर्णाद्यानुक्त्वाकुर्य्यात्षडंगकम् ॥८॥शूलांतेपाणयेस्वा
हाहृन्मंत्रांतेनियोजयेत् ॥ अमृतांतेमूर्त्तयेमांजीवयेतिशिरोंतिमम् ॥९ ॥ शिखांतेचंद्रशिरसेजटिने
वह्निवल्लभा॥ त्रिपुरांतकायहांहींकवचांतेमनुःस्मृतः ॥ १० ॥

वःस्वःत्र्यंबकंॐनमोभगवतेरुद्रायशूलपाणयेस्वाहाहृत् ॥ ॐयजामहेॐअमृतमूर्तयेमांजीवयशिरः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॐसुगंधिंपुष्टिवर्धनंॐचंद्राशिरसेजाटिनेस्वाहाशिखा ॥ ॐउर्वारुकमिवबंधनात् ॐत्रिपुरांतकायहांहीं कवचम् ॥ १० ॥

---

गमदेवकहोलवसिष्ठाऋषयःमूर्ध्नि । पंक्तिगायत्र्यऽनुष्टुभश्छन्दांसिवक्त्रे । सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायैनमःहृदि । ह्रींशक्त्यैनमःलिंगे श्रींबीजायनमःपादयोः इति ऋष्यादिन्यासः ।

ॐह्रौंमृत्योर्मुक्षीयॐनमोत्रिलोचनायऋग्यजुःसोममंत्रायनेत्रम् ॥ ११ ॥ ॐह्रौंमामृतात्ॐनमो०अग्नित्रयायज्वल२ मांरक्ष २ ॐअघोरास्त्रायअस्त्रम् ॥ १२ ॥ वर्णन्यासमाह ॥ द्वात्रिंशादिति ॥ प्रणवादिनववर्णाद्यान्साबिंदून्नमोंतां

प्रवदेत्रिपदस्यांतेलोचनायपदंपुनः ॥ ऋग्यजुःसाममंत्रायवर्णान्नेत्रमनोःपठेत् ॥ ११ ॥ अग्नित्रयाय ज्वलचज्वलमांरक्षरक्षच॥ अघोरास्त्रायमंत्रोयमस्त्रमंत्रस्ततःस्मृतः ॥ १२ ॥ द्वात्रिंशत्र्यंबकाद्यर्णान्न मोंतान्बिन्दुसंयुतान्॥तारादिनववर्णाद्यानंगेष्वेषुप्रविन्यसेत् ॥ १३ ॥ पूर्वपश्चिमयाम्योदङ्मुखेषू रसिकंठतः॥वदनेनाभिहृत्पृष्ठेकुक्षौलिंगेगुदेन्यसेत् ॥ १४ ॥

त्र्यमित्यादिद्वात्रिंशद्वर्णान्पूर्ववक्त्रादिष्वंगेषुन्यसेत् ॥ १ ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःत्र्यंनमःपूर्ववक्त्रे २ ॐह्रौं०बंनमः पश्चिमवक्त्रे इत्यादिप्रयोगः ॥ १३ ॥ अंगान्याह ॥ पूर्वेति ॥ पूर्ववक्त्रादिष्वेकैकंवर्णंन्यसेत् ॥ १४ ॥

---

( १ ) ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःत्र्यंनमःपूर्वमुखे १ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःबंनमःपश्चिममुखे२ ।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःकंनमःदक्षिणमुखे३।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःयंनमःउत्तरमुखे ४ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःजांनमःउरसि५ ।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमंनमःकंठे६ ।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःहेंनमःमुखे७। ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःसुंनमःनाभौ ८।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःगंनमःहृदि९। ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःधिंनमःपृष्ठे१०।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःपुंनमःकुक्षौ ११ ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःष्टिंनमःलिंगे१२ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःवंनमःगुदे१३।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःधंनमःदक्षिणोरुमूले१४।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःनंनमःवामोरुमूले१५।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःउंनमःदक्षिणोरुमध्ये१६ ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःवांनमःवामोरुमध्ये१७ ।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःरुंनमःदक्षिणजानुनि १८।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःकंनमःवामजानुनि१९।ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमिंनमःदक्षिणजानुवृत्ते२०। ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःवंनमः

ऊरुमूलोरुमध्यजानुवृत्तस्तनपार्श्वपादकरनासिद्वौद्वौ ॥ मूर्धन्येकैकम् ॥१५॥पदन्यासमाह ॥ अथैकेति॥शिवोलिंगे

ऊरुमूलोरुमध्येचजानुनोर्जानुवृत्तयोः॥स्तनयोःपार्श्वयोरंघ्र्योःकरयोर्नसिमूर्द्धनि ॥ १५ ॥ अथैकादशविन्यस्येत्पदानिशिरसिभ्रुवोः ॥नेत्रयोर्वदनेगंडेहृदयेजठरेशिवे॥१६ ॥ ऊर्वोर्जानुप्रदेशेचपादयोःक्रमशःपुनः ॥त्रिवेदगुणबाणाब्धिद्विरामाक्षिगुणेन्दुभिः॥१७॥ त्रिभिर्वर्णैश्चविज्ञेयापदसंख्याक्रमाद्बुधैः॥मूलेनव्यापकंकृत्वाततोध्यायेत्त्रिलोचनम् ॥ १८ ॥

॥ १६ ॥ पदेषु वर्णसंख्यामाह ॥ त्रिवेदेति ॥ त्र्यंबकंशिरसिइत्यादि० ॥ १७ ॥ १८ ॥

---

वामजानुवृत्ते २१ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःबंनमःदक्षिणस्तने २२ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःधंनमःवामस्तने २३। ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःनांनमःदक्षिणपार्श्वे २४ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमृंनमःवामपार्श्वे २५ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःत्योंनमःदक्षिणेपादे २६ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमुंनमःवामपादे २७ । ॐह्रौंॐ जूंसःभूर्भुवःस्वःक्षींनमःदक्षिणकरे २८। ॐ ह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःयंनमःवामकरे २९। ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमांनमःदक्षिणनासायाम् ३० । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमृंनमःवामनासायां ३१ । ॐह्रौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःतांनमःमूर्ध्नि ३२ । इत्यक्षरन्यासः ।

( १ ) त्र्यम्बकंशिरसि १ । यजामहेभ्रुवोः २ । सुगंधिंनेत्रयोः ३ । पुष्टिवर्धनंमुखे ४ । उर्वारुकंगंडयोः ५ । इवहृदये ६ । बंधनाज्जठरे७।मृत्योःलिंगे ८। मुक्षीयऊर्वोः ९ । माजान्वोः १० । अमृतात्पादयोः ११ ॥ इतिपदन्यासः ॥ (आअमृतादितिपदच्छेदःनदकालेएव )

ध्यानमाह ॥ हस्तेति ॥ अष्टहस्तविनियोगमाह ॥ अंकस्थकरयोःकुंभौदधतं तदूर्ध्वस्थकरयोःकुंभाभ्यांजलमुद्धृत्यकरद्वयेनस्वशिरोभिषिंचंतंकरयोर्मृगाक्षमालेचदधतमिति।।मूर्धनिस्थितोयश्चंद्रस्ततःस्रवतामृतेनोत्क्लिन्नातनुर्यस्य ॥ उंदीक्लेदनेइत्यस्यनिष्ठायामुन्नेतिरूपम् ॥सगिरिजंभवानीयुतम् ॥ त्रीण्यंबकानिनेत्राणियस्यतम् ॥ १९ ॥ मुद्राआह ॥ मुष्टीति ॥ मुष्टिंदक्षिणहस्तेनविधायोर्ध्वसमुन्नयेत् ॥ मुद्रामुष्ट्यभिधाख्यातासर्वविघ्नविनाशिनीति मुष्टिमुद्रालक्षणम् ॥ सारंगोमृगस्तन्मुद्रालक्षणं यथा–दक्षस्यानामिकांगुष्ठमध्यमाग्राणियोजयेत् ॥ शिष्टेद्वेउच्छ्रिते

हस्तांभोजयुगस्थकुंभयुगलादुद्धृत्यतोयंशिरः सिंचंतंकरयोर्युगेनदधतंस्वांकेसकुंभौकरौ ॥ अक्षस्र
ङ्मृगहस्तमंबुजगतंमूर्द्धस्थचंद्रस्रवत्पीयूषोन्नतनुंभजेसगिरिजंमृत्युंजयंत्र्यंबकम् ॥१९॥ मुष्टिसारंग
शक्त्याख्यालिंगपंचमुखाभिधाः॥मुद्राःप्रदर्श्यप्रजपेल्लक्षंतस्यदशांशतः ॥ २० ॥

कुर्यान्मृगमुद्रेयमीरितेति ॥ मुष्टीकरौविधायद्वौवामस्योपरिदक्षिणम् ॥ कृत्वाशिरसियुंजीतशक्तिमुद्रेयमीरितेति शक्तिमुद्रालक्षणम् ॥ उच्छ्रितंदक्षिणांगुष्ठंवामांगुष्ठेनबंधयेत् ॥ वामांगुलीर्दक्षिणाभिरंगुलीभिश्चबंधयेत् ॥ लिङ्गमुद्रेयमाख्याताशिवसांनिध्यकारिणीतिलिंगमुद्रा ॥ मणिबंधकरौयुक्तावंगुल्यग्राणिमेलयेत्॥ मुद्रापंचमुखाख्येयंदर्शिताशिवतोषिणीतिपंचमुखमुद्रालक्षणम् ॥ २० ॥

दशद्रव्याण्याह ॥ बिल्वेति ॥ २१ ॥ पीठशक्तीराह ॥ वामेति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४॥आसनमन्त्रमाह ॥ तारइति ॥ ॐनमोभगवतेसकलगुणात्मशक्तियुक्तायअनंताययोगपीठात्मनेनमइति ॥ २५ ॥ २६॥ आवरणपूजाप्रकारमाह ॥

दशद्रव्यैःप्रजुहुयात्तानिबिल्वफलंतिलाः ॥पायसंसार्पिषादुग्धंदधिदूर्वाचसप्तमी ॥ २१ ॥ वटात्पला
शात्खदिरात्समिधोमधुरप्लुताः॥वामादिशक्तिसंयुक्तेपीठेशैवेयजेच्छिवम् ॥ २२॥वामाज्येष्ठातथा
रौद्रीकालीप्रोक्ताचतुर्थिका॥ कलादिकाविकरिणीबलाद्याविकरण्यपि ॥२३ ॥ बलप्रमथनीचान्या
सर्वभूतदमन्यपि ॥ मनोन्मनीतिशर्वस्यनवोक्ताःपीठशक्तयः ॥२४॥तारोनमोभगवतेसकलेतिपदं
ततः ॥ गुणात्मशक्तियुक्तायअनंतायवदेत्पदम्॥ २५ ॥योगपीठात्मनेपीठमंत्रःप्रोक्तोनमोंतिकः ॥
पीठेपुष्पांजलिंदत्त्वामूर्तिंमूलेनकल्पयेत् ॥ २६ ॥ पाद्यादिकुसुमांतोपचारांतेत्वावृतीर्यजेत्॥ ईशा
नंशंभुकोणेतुयजेदीशानमंत्रतः ॥ २७ ॥

पाद्यादीति ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतचंदनपुष्पाणिदत्त्वावरणपूजांकुर्यात् ॥ तत्रेशानकोणेईशानःसर्वविद्यानामितितैत्तिरीयशाखोक्तंमंत्रंपठित्वेशानंयजेत् ॥ २७ ॥

तत्पुरुषायविद्महे अघोरेभ्योथघोरेभ्यः वामदेवायनमः सद्योजातंप्रपद्यामि इत्यादिभिश्चतुर्भिर्मंत्रैस्तत्पुरुषादीन्प्रागादिषुयजेत् ॥ तेषांसमीपेस्वनामाभिर्निवृत्त्याद्याःकलाद्वितीयावरणेंगानितृतीयेसूर्यादीनांमूर्तीः ॥ सूर्यमूर्त

तत्पुरुषमघोरंचवामदेवंतृतीयकम्॥सद्योजातंयजद्दिक्षुवेदोक्तस्वस्वमंत्रतः॥२८॥ ईशानादिसमीपेषुनिवृत्त्याद्याःकलाःक्रमात्॥निवृत्तिश्चप्रतिष्ठाचविद्याशांतिश्चतुर्थ्यपि ॥ २९ ॥ शांत्यतीतापंचमीतिततोंगानियजेच्चषट्॥ सूर्य्येंदुक्षितितोयाग्निपवनाकाशयज्वनाम् ॥ ३०॥ मूर्तयोऽष्टौक्रमात्पूज्यास्तृतीयावरणस्थिताः ॥ रमाराकाप्रभाज्योत्स्नापूर्णोषापूरणीसुधा ॥ ३१ ॥ चतुर्थावरणेपूज्याःशक्तयोधवलप्रभाः॥विश्वावंद्यासिताप्रह्वासारासंध्याशिवानिशा ॥३२॥ पंचमावरणेभ्यर्च्याःशक्तयःश्यामविग्रहाः ॥ आर्य्याप्रज्ञाप्रभामेधाशांतिःकांतिर्धृतिर्मतिः ॥ ३३ ॥ षष्ठावरणगाह्यष्टौसंपूज्याअरुणप्रभाः ॥ धरोमापावनीपद्माशांतामोघाजयामला ॥ ३४ ॥

[illegible]मइत्यादिप्रयोगः ॥ चतुर्थैरमादयः ॥ पंचमोविश्वादयः ॥ षष्ठेआर्यादयः ॥ सप्तमेधराद्याः ॥ अनंतादयोऽष्टमे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ नवमेउत्तरदिशमारभ्योमादयः ॥ दशमेमातरः इन्द्रादयश्च ॥ प्रयोगानाह ॥ जन्मभइति॥ ३७॥

सप्तमावृतिगाःपूज्याःशक्तयःकांचनप्रभाः ॥अनंतसूक्ष्मसंज्ञश्चतृतीयस्तुशिवोत्तमः ॥ ३५ ॥ एकनेत्रैकरुद्रौचत्रिमूर्तिःषष्ठईरितः॥श्रीकंठोऽथशिखंडीचसंपूज्याअष्टमावृतौ ॥३६॥ उत्तरादियजेत्पश्चादुमांचंडेश्वरंपुनः ॥ नंदिनंचमहाकालंगणेशंवृषभंपुनः ॥ ३७ ॥ यजेद्भृंगिरिटिंस्कन्दंनवमावरणस्थितान् ॥ब्राह्म्याद्यामातरःपूज्यादशमावरणेततः ॥ ३८ ॥ इंद्रादयश्चवज्राद्याएवंसिद्धोभवेन्मनुः ॥ जन्मभेदशमेतस्मात्पुनश्चैकोनविंशके ॥ ३९ ॥ जुहुयाद्यःसुधावल्ल्याःसमिधश्चतुरंगुलाः ॥ सरोगान्त्सकलाञ्छत्रून्पराभूयश्रियायुतः ॥ ४० ॥ मोदतेपुत्रपौत्राद्यैःशतवर्षाणि साधकः ॥ समिद्भिःश्रीफलोत्थाभिर्होमःसंपत्तिसिद्धये ॥ ४१ ॥ पलाशतरुजाभिस्तुब्रह्मवर्चससिद्धये ॥ वटोत्थाभिर्धनप्राप्त्यैखादिराभिस्तुकांतये ॥ ४२ ॥ तिलैरधर्मनाशायसर्षपःशत्रुनष्टये ॥ पायसेनकृतोहोमःकांतिश्रीकीर्तिदायकः ॥ ४३ ॥ कृत्यामृत्युक्षयकरोदध्नासंवादसिद्धिदः ॥ होमसंख्यातुसर्वत्रायुतमानेनकीर्तिता ॥ ४४ ॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ सुधावल्ल्यागुडूच्याः ॥ चतुरंगुलप्रमाणाः समिधः ॥४०॥ श्रीफलंबिल्वः ॥४१॥ ४२॥ ४३ ॥४४॥

रुजांरोगाणाम् ॥ ४५ ॥ ४६॥ जन्मतारात्रयेजन्मनक्षत्रेततोदशमैकोनविंशयोश्च ॥४७॥४८ ॥ रुद्रजपांगभूतंदशार्ण
माह ॥ तारइति ॥ भगवान्रुद्रोपिङेंतः ॥ पदद्वयंचतुर्थ्यंतं ॥ यथा-ॐनमोभगवतेरुद्रायेति ॥ ४९ ॥ रुद्रवि

अष्टोत्तरशतंदूर्वात्रिकहोमाद्रुजांक्षयः ॥ स्वजन्मदिवसेयस्तुपायसैर्मधुरान्वितैः॥४५ ॥जुहोतितस्य
वर्द्धतेकमलारोग्यकीर्तयः ॥गुडूचीबकुलोत्थाभिःसमिद्भिर्हवनंनृणाम् ॥ ४६॥ जन्मतारात्रयेरोगा
न्मृत्युंचापिविनाशयेत् ॥ प्रत्यहंजुहुयाद्दूर्वाअपमृत्युविनष्टये ॥ ४७ ॥ किंबहूक्तेनसर्वेष्टंप्रयच्छति
शिवोनृणाम् ॥ अपामार्गसमिद्भिश्चसिद्धान्नैर्ज्वरनष्टये ॥ ४८ ॥ दुग्धाक्तैरमृताखंडैर्मासहोमोखिला
प्तये ॥तारोहृद्भगवान्ङेंतोरुद्रायेतिदशाक्षरः ॥ ४९ ॥बोधायनोमुनिःपंक्तिश्छंदोरुद्रोऽस्यदेवता॥
पंचन्यासान्प्रकुर्वीतस्वस्वरुद्रत्वसिद्धये ॥ ५० ॥ यजुर्वेदस्थितान्मंत्रानेकत्रिंशत्स्थलेन्यसेत् ॥
यातेरुद्रशिखादेशेह्यस्मिन्महतिमस्तके ॥ ५१ ॥

धानमाह ॥ पंचेति ॥ ५० ॥ यातेरुद्रेत्यृचाशिखायांन्यसेत् १ ॥ अस्मिन्महत्यर्णवेशिरसि २ ॥५१ ॥

---

१ अस्यश्रीरुद्रमन्त्रस्य बोधायनऋषिः पंक्तिश्छंदः रुद्रोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

सहस्राणिसहस्रशःभाले ३ ॥ हँसःशुचिषत्० भ्रुवोः ४ ॥ त्र्यंबकंयजामहे०नेत्रयोः ५ ॥ नमः स्त्रुत्यायच पथ्यायचेतिकर्णयोः ६ ॥ ५२ ॥ मानस्तोके०नसोः ७ ॥ अवतत्यधनुः०मुखे ८ ॥ नीलग्रीवाः शितिकंठा दिवँ–नीलग्रीवाःशितिकंठाःशर्वाइतिऋग्द्वयंकंठे ९ ॥ ५३ ॥ नमस्तेअस्त्वायुधायानातताय०स्कंधयोः १० ॥ यातेहेति०बाह्वोः ११ ॥ येतीर्थानि०करयोः १२ ॥ ५४ ॥ सद्योजातमितितैत्तिरीयशाखोक्तंमंत्रपंचकमंगुष्ठा

सहस्राणिललाटेतुहँसःशुचिभ्रुवोर्न्यसेत्॥त्र्यंबकंनेत्रयोःश्रुत्योर्नमःस्त्रुत्यायविन्यसेत् ॥ ५२॥ मान
स्तोकेनासिकायामवतत्यमुखेतथा ॥नीलग्रीवाइतिऋचोर्द्वयंकंठेन्यसेद्बुधः॥५३॥ नमस्तेअस्त्वा
युधेतिमंत्रंसद्वयेन्यसेत्॥यातेहेतिरिमांबाह्वोर्येतीर्थानीतिहस्तयोः ॥ ५४ ॥ सद्योजातंप्रपद्यामी
त्यृचमंगुष्ठयोर्न्यसेत्॥वामदेवायतर्जन्योरघोरेभ्योऽथमध्ययोः ॥५५॥ तत्पुरुषायानामायामी
शानस्तुकनिष्ठयोः॥ नमोवःकिरिकेभ्यस्तुहृदिमंत्रमिमंन्यसेत् ॥५६॥ नमोगणेभ्यःपृष्ठेतुविन्यसे
त्साधकोत्तमः ॥ ततःपार्श्वद्वयेन्यस्येन्नमोहिरण्यबाहवे ॥ ५७ ॥

द्यंगुलीषु १३, १४, १५, १६, १७॥ नमोवःकिरिकेभ्योदेवाना ँ हृदयेभ्योनमोविचिन्वत्केभ्योनमोविक्षीणके भ्योनमआनिर्हतेभ्यइतिहृदि १८ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमइतिपृष्ठे १९॥ नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशांचपतयेनमइतिपार्श्वयोः २० ॥ ५७ ॥

हिरण्यगर्भःनाभौ २१ ॥ मीढुष्टमशिवायनमःकट्योः २२ ॥ येभूतानामधिपतयःगुह्ये २३ ॥ ५८ ॥ जातवेदसेइमामृचंशिरोयुतां–जातवेदसेसुनवामसोम० तामग्निवर्णामित्यस्यांतेस्तुतरसितरसेनमःस्तुतरसितरसेनमः इतिशिरोयुतामृग्द्वयमपाने २४ ॥ मानोमहांतमूर्वोः २५ ॥ एषतेरुद्रभागः जानुनोः २६ ॥ ५९ ॥ येपथां

हिरण्यगर्भोनाभौचकट्योर्मीढुष्टमेतिच॥ येभूतानामिमंगुह्येमंत्रंविन्यस्यसाधकः ॥ ५८ ॥ अपाने
शिरसायुक्तांजातवेदसइत्यृचम् ॥ मानोमहांतमित्यूर्वोरेषतेजानुनोर्न्यसेत् ॥ ५९ ॥येपथांपादयो
र्न्यस्याध्यवोचत्कवचेन्यसेत् ॥ मत्रंनमोबिल्मिनेचेत्युपवर्मणिविन्यसेत् ॥६०॥ नमोस्तुनीलग्री
वायतृतीयेऽक्षिणिसाधकः ॥प्रमुंचधन्वनइतिमंत्रेणास्त्रंप्रविन्यसेत् ॥ ६१ ॥ इत्येकत्रिंशदंगानां
न्यासःप्रथमईरितः ॥ ततःकुर्वीतदिग्बंधंयएतावंतइत्यचा ॥ ६२ ॥

पथिरक्षयःपदोः २७ ॥ अध्यवोचदधिवक्ता०कवचे २८ ॥ नमोबिल्मिनेचकवाचिने०इत्युपकवचे २९ ॥ ६० ॥ नमोअस्तुनीलग्रीवाय० तृतीयनेत्रे ३० ॥ प्रमुंचधन्वन०अस्त्रे ३१ ॥ ६१ ॥ इतिप्रथमोन्यासः ॥ यएतावंतश्च० दिग्बंधः ॥ ६२ ॥

अक्षरन्यासमाह ॥ मूलेति ॥ ॐ नमःशिरसि–नंनमः नसोरित्यादि० ॥ इतिप्रथमोन्यासः १ ॥ ६३ ॥ ॐ शिर
सेनमः–नांनासिकायैनमः ॥ इतिद्वितीयोन्यासः २ ॥ सद्योजातंप्रपद्यामीत्यादिकंमंत्रपंचकंपादादिषुन्यस्येत् ॥
हंसहंसइतिवदेत् ॥ इतितृतीयोन्यासः ३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ संपुटीकरणंकार्यमित्याह ॥ एवमिति ॥ संपुटं नाम त्राता

मूलवर्णांस्ततोन्यस्येन्मस्तकेनसिचालिके ॥ मुखेकंठेहृदिपुनर्हस्तयोर्दक्षवामयोः ॥ ६३ ॥ नाभौप
दोरितिन्यासोदशांगेषुद्वितीयकः ॥ पादोरुहृन्मुखेमूर्ध्निसद्योजातमुखाऋचः ॥ ६४ ॥ विन्यस्यप्रत्यृ
चंब्रयाद्धंसहंसेतिसाधकः ॥ तृतीयन्यासइत्युक्तः कृतेयस्मिञ्छिवोभवेत् ॥ ६५ ॥ एवंन्यासत्रयंकृत्वा
संपुटंरचयेत्ततः ॥ दिक्षुवासवमुख्यानांन्यासःसंपुटउच्यते ॥ ६६ ॥ त्रातारमिंद्रंमंत्रेणप्राच्यांन्यस्ये
द्विडौजसम् ॥ त्वन्नोअग्नेऋचावह्निंसुगंनइत्यृचायमम् ॥ ६७ ॥ असुन्वंतन्निर्ऋतिंचतत्त्वायामीतितो
यपम् ॥ आनोनियुद्भिर्वायुंचवयंसोमेत्यचाविधुम् ॥ ८ ॥ तमीशानमितीशानमाग्नेयादिषुविन्य
सेत् ॥ अस्मेरुद्राविधिंचोर्द्धंस्योनेतिपृथिवीमधः ॥ ६९ ॥ एवंयःसंपुटंकुर्य्यात्तस्यात्किल्बिषव
र्जितः ॥ तंदीप्यमानमीक्षंतेप्रेतचौराद्युपद्रवाः ॥ ७० ॥

रमिंद्रामित्यादिमंत्रैःपूर्वादिषुक्रमेणमुद्रितांजलिदर्शनंतेषांनतयोऽपिकार्याः ॥ एवंकृतेतेजस्वीभवतीत्यर्थः ॥ ६६–७० ॥

इतिसंपुटीकरणंतत्फलंचोक्त्वा चतुर्थन्यासमाह ॥ मनोजूति० गुह्ये ॥ अबोध्यग्निरुदरे ॥ ७१ ॥ः मूर्धानं दिवो ०
हृदि ॥ मर्माणितेवर्मभिश्छाद०मुखे ॥ जातवेदायदिवापावकोसि०शिरसि ॥ एवंपंचांगेषुन्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

नपराभवितुंशक्ताःपलायंतेतिदूरतः ॥मनोजूतिर्न्यसेद्गुह्येबोध्यग्निर्जठरानले ॥ ७१॥ मूर्द्धानंहृदये
न्यस्येन्मुखेमर्माणितेऋचम् ।जातवेदास्तुशिरसिन्यासःप्रोक्तश्चतुर्थकः ॥ ७२॥ हृदयंशिवसंकल्पं
शिरःपुरुषसूक्तकम्॥शिखाद्भ्यःसंभृतइतिवर्मप्रतिरथंमतम् ॥ ७३ ॥ विभ्राडितिस्मृतंनेत्रमस्त्रंतुशतरु
द्रियम् ॥ अयंतुपंचमोन्यासःकृतःसर्वेष्टसिद्धिदः ॥ ७४ ॥

॥ ७२ ॥ षडंगमाह ॥ हृदयमिति ॥॥यज्जाग्रतः०हृत् ॥ सहस्रशीर्षा०शिरः ॥ अद्भ्यःसंभृतः०शिखा ॥ आशुः
शिशानः० कवचम् ॥ ७३ ॥ विभ्राट्०नेत्रम् ॥ नमस्तेरुद्रमन्यवे इत्यादिशतरुद्रियं अस्त्रम् ॥ इतिपञ्चम
न्यासः ५ ॥ ७४ ॥

एवमिति ॥ इत्थंपंचांगन्यासंकृत्वाप्रणम्याष्टांगंनत्वात्मानंरुद्रस्वरूपंध्यायेत् ॥ नमस्कारश्चाष्टभिर्मंत्रैर्विधेयः॥
मंत्रोयथा–हिरण्यगर्भः० १ ॥ यःप्राणतः० २ ॥ ब्रह्मजज्ञानं० ३ ॥ महीद्यौः० ४ ॥ उपश्वासय० ५ ॥ अग्ने
नय० ६ ॥ यातेअग्ने० ७ ॥ इमंयम० ८ ॥ इमाअष्टावृचःपठन्नष्टांगंनमस्कुर्यात् ॥ अष्टांगानियथा–उरसा

एवंन्यस्यप्रणम्याथध्यायेदात्मनिशंकरम् ॥ ७५ ॥ कैलासाचलसंनिभंत्रिनयनंपंचास्यमंबायुतंनी
लग्रीवमहीशभूषणधरंव्याघ्रत्वचाप्रावृतम्॥ अक्षस्रग्वरकुंडिकाभयकरंचांद्रींकलांबिभ्रतंगंगांभोविल
सज्जटंदशभुजंवंदेमहेशंपरम् ॥७६ ॥ दशलक्षजपेन्मंत्रमयुतपरमान्नकैः ॥ सघृतैर्जुहुयादग्नौपीठेपूर्वो
दितेयजेत् ॥ ७७ ॥ पूजामंत्रमथोवक्ष्येतथावरणदेवताः ॥ अष्टपत्रंषोडशारंचतुर्विंशतिपत्रकम् ॥
॥ ७८ ॥दंतपत्रंततःकुर्य्याच्चत्वारिंशद्दलंततः ॥ तद्बहिर्भूपुरंकुर्यात्तत्ररुद्रंप्रपूजयेत् ॥ ७९ ॥

शिरसादृष्ट्यामनसाश्रद्धयापिच ॥ पद्भ्यांकराभ्यांवाचाचप्रणामोऽष्टांगईरितइति ॥ ७५ ॥ ध्यानमाह ॥ कैला
सेति ॥ अहीशावासुक्यादयएवभूषणानियस्यतम् ॥ अक्षमालावरौदक्षयोः॥ कुंडिकाकमंडलुरभयंचवामयोः ॥
परमान्नकैःपायसैः ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ दंतपत्रंद्वात्रिंशद्दलम् ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ ८१॥८२॥ कलाद्विकरणाभिधःकलविकरणः ॥८३॥ बलाद्विकरणोबलविकरणः ॥ तार्तीये तृतीयावरणे तत्त्वावरणेतत्त्वसंख्यांश्चतुर्विंशतिमितान् ॥ ८४ ॥ तानेवाह॥सिद्धयइति ॥ ताउक्ताः ॥ भवान् अष्टौ ॥ एवंनाग

इष्ट्वातंकर्णिकामध्येसद्योजातादिकान्यजेत् ॥ दिक्षुमध्येततोष्टारेनंद्यादीनष्टसेवकान् ॥ ८० ॥ नंदी महाकालसंज्ञोगणेशोवृषभस्तथा॥ततोभृंगीरिटिःस्कंदउमाचंडीश्वरोऽष्टमः ॥ ८१ ॥ ततस्तुषोडश दलेद्वितीयावरणेस्थिताः ॥ अनंतसूक्ष्मौचशिवएकपादेकरुद्रकः ॥ ८२ ॥ ततस्त्रिमूर्तिश्रीकंठौवाम देवोष्टमोमतः॥ ज्येष्ठःश्रेष्ठोरुद्रकालौकलाद्विकरणाभिधः ॥ ८३ ॥ बलोबलाद्विकरणोबलप्रमथन स्तथा॥ एतान्संपूज्यतार्तीयेतत्त्वसंख्यान्तसुरान्यजेत् ॥ ८४ ॥ सिद्धयोष्टौमातरोष्टौभैरवाष्टकमि त्यमून्॥ततश्चतुर्थावरणेभवान्नागान्नृपान्गिरीन् ॥ ८५ ॥ भवःशर्वस्तथेशानःपशुपोरुद्रएवच ॥ उग्रोभीमोमहादेवःशिवाष्टकमुदाहृतम्॥ ८६ ॥अनंतोवासुकिश्चाथतक्षकश्चकुलीरकः ॥ कर्कोटकः शंखपालःकंबलाश्वतरावपि ॥ ८७ ॥इमेनागावैन्यपृथूहैहयोर्जुनसंज्ञकः ॥ शाकुंतलेयोभरतोनलो रामोनृपाष्टकम् ॥ ८८ ॥

नृपतिगिरयोपिप्रत्येकमष्टौ॥८५॥तानेवाह॥भवइति॥८६॥नागानाह॥अनन्तइति॥८७॥नृपानाह वैन्येति ॥ ८८ ॥

गिरीनाह ॥ हिमवानिति ॥ ८९ ॥ वासवादयइति ॥ प्रत्येकमष्टौ ॥ ९० ॥ तानाह ॥ इन्द्रेति ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

हिमवान्निषधोविंध्योमाल्यवान्पारियात्रकः। मलयोहेमकूटश्चगंधमादनइत्यपि।८९।गिर्य्यष्टकंपंचमेतुचत्वारिंशत्सुरान्यजेत्।वासवादयइत्येषांशक्तयोह्यायुधान्यपि।वाहनानिगजाश्चेतिचत्वारिंशत्सुराःस्मृताः॥९०॥इंद्राग्नियमरक्षांसिवरुणानिलभाधिपाः।ईशानइतिदिक्पालाःशचीस्वाहावराहजा॥खड्गिनीवारुणीचापिवायवीचकुबेरजा॥९१ ॥ ईशानीशक्तयःप्रोक्ताःकुलिशंशक्तिदंडकौ ॥ खड्गपाशोंकुशंचैवगदाशूलेचहेतयः ॥ ९२ ॥ ऐरावतोजमहिषौप्रेतमीनपृषन्नराः ॥ वृषभोवाहनानिस्युर्दिक्पालानांक्रमादमी ॥ ९३ ॥ ऐरावतःपुंडरीकोवामनःकुमुदोंजनः ॥ पुष्पदंतःसार्वभौमःसुप्रतीकश्चदिग्गजाः ॥९४॥ पद्माब्जान्यवमापूज्यभूगृहेदिक्षुदिक्पतीन् ॥ पुनरभ्यर्चयेद्धीमान्षष्ठमावरणंस्मृतम्॥९५ ॥ आग्नेय्यांभूगृहस्याथविरूपाक्षंप्रपूजयेत् ॥ विश्वरूपंयातुधानंवायव्यांतुपशोःपतिम् ॥ ९६ ॥ ऊर्द्धलिंगमथैशान्यामथोभूसदनाद्बहिः ॥दिक्षुनागाष्टकंपूज्यमेवंसप्तावृतिर्यजिः ॥९७ ॥

॥ ९३ ॥ ९४ ॥ पंचाब्जानिपद्मानि ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ यजिः पूजा सप्तावृतिःसप्तावरणयुता ॥ ९७ ॥

नागाष्टकमाह ॥ शेषाख्यइति ॥ अहयोनागाः ॥ ९८ ॥ तेषांवर्णानाह॥ श्वेतइति ॥ पीतौद्वौवासुकिशंखपालौ॥ कृष्णौमहापद्मकंबलौ ॥ ९९ ॥ जातीराह ॥ विप्रइति ॥ १०० ॥ फणसंख्यामाह ॥ दिगिति ॥ शेषःसहस्रफणः॥

शेषाख्यस्तक्षकोनंतोवासुकिःशंखपालकः॥ महापद्मःकंबलश्चकर्कोटकइमेऽहयः ॥ ९८ ॥ श्वेतोनी
लःकुंकुमाभःपीतकृष्णावथोज्ज्वलः॥वर्णतःशेषमुख्याःस्युस्तेषांजातीःफणान्ब्रुवे ॥९९ ॥ विप्रोवै
श्यस्तथाविप्रःक्षत्रियोवैश्यशूद्रकौ॥शूद्रश्चक्रमतोज्ञेयाःशेषाद्याःपूजनेबुधैः॥ १००॥ दिग्बाणदशस
प्ताद्रिशरसंख्यानितुक्रमात्॥शतानित्रिंशत्रिंशच्चफणास्तेषांसमीरिताः ॥ १०१ ॥ एवमर्चन्महादेवं
पंचांगन्यासपूर्वकम्॥दशाक्षरजपासक्तोनसीदेत्स्वेष्टसाधने॥१०२॥मनोहराणिगेहानिसुंदर्य्योवाम
लोचनाः॥ धनमिच्छापूर्णांतंलभतेशिवसेवनात् ॥ १०३ ॥ प्रयोगान्पूर्वमंत्रोक्तान्कुर्वीतात्रदशा
क्षरे ॥ दशाक्षरंभजन्विप्रोरुद्रजापीभवेत्सदा ॥ १०४ ॥

तक्षकःपंचशतफणः ॥ अनंतःसहस्रफणः ॥ वासुकिशंखपालौसप्तशतफणौ ॥ महापद्मःपंचशतफणः॥कंबलकर्कोटकौत्रिंशत्फणौ ॥ तथाचैवंप्रयोगः—श्वेतायविप्रवर्णायसहस्रफणायशेषायनमइत्यादिः ॥ १०१ ॥ एवमिति ॥ इत्थंपंचांगन्यासंकृत्वा ॥१०२॥ १०३ ॥ १०४॥

कुबेरमंत्रमाह ॥ यक्षायेति ॥ यथा–यक्षायकुबेरायवैश्रवणायधनधान्याधिपतयेधनधान्यसमृद्धिंमेदेहिदापयस्वाहेति ॥ बाणरामाक्षरःपंचत्रिंशदर्णः ॥१०५॥ १०६॥ १०७॥ षडंगमाह ॥ त्रीति ॥ यक्षायहृदयायनमइत्यादि०॥

अथमंत्रंकुबेरस्यवक्ष्येसर्वसमृद्धिदम्॥यक्षायपदमुच्चार्यकुबेरायपदाच्चवै ॥ १०५ ॥ श्रवणायधनानां तेधान्याधिपतयेधनम्॥धान्यशब्दात्समृद्धिंमेदेहिदापयठद्वयम् ॥ १०६ ॥ बाणरामाक्षरोमंत्रोविश्रवामुनिरस्य[1]तु॥छंदस्तुबृहतीदेवःशिवमित्रंधनेश्वरः ॥१०७॥त्रिचतुःपंचवस्वष्टमुनिवर्णैर्मनूद्भवैः ॥ कृत्वाषडंगंधनदंचिंतयेदलकागतम् ॥ १०८ ॥मनुजवाह्यविमानवरस्थितंगरुडरत्ननिभंनिधिनायकम् ॥शिवसखंमुकुटादिविभूषितंवरगदेदधतंभजतुंदिलम्॥ १०९ ॥लक्षमेकंजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः ॥ धर्मादिपीठेप्रयजेदंगलोकपहेतयः ॥ ११० ॥शिवालयेजपेन्मंत्रमयुतंधनवृद्धये॥बिल्वमूलोपविष्टेनजप्तोलक्षंधनार्द्धिदः ॥ १११ ॥

॥ १०८ ॥ ध्यानमाह ॥ मनुजेति ॥ गरुडरत्नंगारुडमाणिः ॥ वरगदेदक्षवामयोः ॥ १०९ ॥ धर्मादयःपीठशक्तय उक्ताः ॥ ११० ॥ १११ ॥

---

[1] अस्यकुबेरमंत्रस्याविश्रवाऋषिःबृहतीछंदः शिवमित्रंधनेश्वरोदेवताममाभीष्टसिद्धयर्थेजपोविनियोगः ।

मंत्रांतरमाह ॥ आदाविति ॥ सैवरमैव ॥ यथा–ॐश्रींॐह्रींश्रींह्रींक्लींश्रींक्लींवित्तेश्वरायनमइति ॥ ११२ ॥ षडंग
माह ॥ त्रीति ॥ ॐश्रींॐहृत् ह्रींश्रींशिरइत्यादि० ॥ ११३ ॥ गंगामंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ शिवानारायणीतिपद
द्वयंङेंतम् ॥ दशहरागंगेतिपदद्वयमपिचतुर्थ्यंतम् ॥ वह्निजायास्वाहा ॥ यथा–ॐनमः शिवायैनारायण्यैदशहरा

आदौतारपुटालक्ष्मीस्ततोमायापुटारमा ॥ ततःकामपुटासैवङेंतोवित्तेश्वरोनमः ॥ ११२ ॥ षो
डशाक्षरमंत्रोयंसर्वदारिद्र्यनाशनः ॥ त्रिनेत्रनयनद्वीषुयुग्मार्णैरंगकंमनोः ॥ध्यानार्चनादिकंसर्वमस्य
पूर्ववदाचरेत् ॥ ११३ ॥ अथशंभोःशिरस्थायादेवसिंधोर्मनून्ब्रुवे ॥ प्रणवोहृदयंङेंतेशिवानाराय
णीपदे॥तद्वद्दशहरागंगेवह्निजायानवाक्षरः ॥ ११४ ॥ मनुर्व्यासोमुनिश्छंदःकृतिर्गंगास्यदेवता ॥
त्रिवह्निवेदबाणाग्निनेत्रवर्णैःषडंगकम् ॥ ११५ ॥उत्फुल्लामलपुंडरीकरुचिराकृष्णेशविंध्यात्मिकाकुं
भेष्टाभयतोयजानिदधतीश्वेतांबरालंकृता ॥ हृष्टास्याशशिशेखराखिलनदीशोणादिभिःसेविताध्ये
यापापविनाशिनीमकरगाभागीरथीसाधकैः ॥ ११६ ॥

यैगंगायैस्वाहेति नवाक्षरोविंशत्यर्णः ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ध्यानमाह ॥ उत्फुल्लेति ॥ इष्टोवरः ॥ वरपद्मेदक्षयोः ॥
कुंभाभयेवामयोः ॥ मकरगामकरवाहना ॥ ११६ ॥

---

अस्यगंगामंत्रस्यवेदव्यासऋषिःकृतिश्छंद ःगंगादेवताममाभीष्टसिद्धयर्थेजपेविनियोगः ।

जयादयः शक्तयउक्ताः ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ वाकूएं॥
गगनंहः सट्टकइयुतःहि ॥ क्रियालः ॥ तंद्री मः ॥ पिनाकीशो लः ॥ विषं मः ॥ लः स्वरूपं ॥ एतेसूक्ष्मसंता

लक्षंजपेद्दशांशेनजुहुयात्सघृतैस्तिलैः॥जयादिशक्तिभिर्युक्तेपीठेभार्गीरथींयजेत् ॥ ११७ ॥ प्रयजे
त्केसरेष्वंगंदलेरुद्रंहरिंविधिम्॥ सूर्य्यंहिमाचलंमेनांभगीरथमपांपतिम्॥ ११८ ॥ दलाग्रतोमीनकूर्म
मंडूकमकरानपि॥हंसान्कारंडवांश्चक्रवाकान्सारसकान्यजेत् ॥ ११९ ॥चतुरस्रेशक्रमुख्यानायुधैः
संयुतान्यजेत्॥एवंसंसाधितोमंत्रोभीष्टंयच्छतिमंत्रिणाम् ॥ १२० ॥ ज्येष्ठशुक्लदशम्यांतांविशेषेण
भजेद्बुधः ॥ दद्याद्दशभ्योविप्रेभ्योदशप्रस्थमितांस्तिलान् ॥ १२१ ॥ जप्त्वासहस्रंहुत्वाचोपोष्यतत्र
विकल्मषः ॥ सर्वभोगसमायुक्तोजायतेमानवोभुवि।१२२।तारोनमोभगवतिवाक्सद्दग्गगनंहिलि॥
क्रियातंद्रीपिनाकीशविषलाःसूक्ष्मसंयुताः॥ १२३ ॥गंगेमांपावयद्वंद्वमंतेहुतवहांगना ॥ गिरिनेत्रा
क्षरीविद्यास्मृतापातकसंघहृत् ॥ १२४ ॥

इयुताः ॥ तेनाहिलिहिलिमिलिमिलि ॥ हुतवहांगनास्वाहा ॥ गिरिनेत्राक्षरीसप्तविंशत्यर्णा ॥ यथा–ॐनमोभग
वतिऐंहिलि २ मिलि २ गंगेमांपावय २ स्वाहेति ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

षडंगमाह रामेति ॥ अंकानव ॥ इयमेवाविद्या ॥ आदिमाःप्रथमेयेसप्तार्णाः ॐनमोभगवतीतितद्धीनानखराक्ष
रीविंशतिवर्णा ॥ १२५ ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ ॐहिलि २ मिलि २ गंगेदेविनमइति ॥ १२६ ॥ तिथिवर्णः
पंचदशार्णः ॥ षडंगमाह ॥ अग्नीति ॥ मन्त्रान्तरमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ मायाह्रीं ॥ रमाश्रीं ॥ हार्दनमः
॥ १२७ ॥ स्मृतिर्गः ॥ अत्रिर्दः ॥ सदृग्वायुः इयुतोयः यि ॥ वर्महुं ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ यथा-ॐह्रींश्रींनमोभगवति

रामवेदांगवह्न्यंकनेत्रार्णैरंगमीरितम् ॥ इयमादिमसप्तार्णत्यक्तोक्तानखराक्षरी ॥ १२५ ॥ बाणवे
दाग्निरामाग्निनेत्रार्णैरंगमीरितम् ॥ तारोहिलिमिलिद्वंद्वेगंगेदेविनमोमनुः ॥ १२६ ॥ तिथिवर्णो
यमस्याग्निनेत्राक्ष्यक्षियुगाक्षिभिः ॥ तारोमायारमाहार्दततोभगवतीतिच ॥ १२७ ॥ गंस्मृत्यैत्रिस
दृग्वायुस्तेनमोवर्मफड्मनुः ॥ त्रिनेत्रवेदपंचाक्षियुग्मार्णैरंगमीरितम् ॥ १२८ ॥ एषांचतुर्णांमंत्राणामु
पास्तिःपूर्ववन्मता ॥ वाङ्मायाकमलाकामवेदाद्योविषमिंदुयुक् ॥ १२९ ॥

गंगेदयितेनमोहुंफट्इति अष्टादशार्णः ॥ षडंगमाह ॥ त्रीति ॥ १२८ ॥ उपास्तिःपूजा ॥ पूर्ववद्विंशत्यर्वणत् ॥
मणिकर्णिकामंत्रमाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ मायाह्रीं ॥ कमलाश्रीं ॥ कामःक्लीं ॥ वेदाद्यॐ ॥ इंदुयुक्विषंसबिं
दुर्मः मं ॥ १२९ ॥

मणिकर्णिस्वरूपम् ॥ भगीब्रह्माक एयुतःके ॥ हृदयंनमः ध्रुवसंपुटआद्यंतप्रणवयुतः ॥ १३० ॥ षडगमाह ॥
चंद्रेति ॥ ॐहृत् ऐंह्रींशिरः श्रींक्लींशिखेत्यादि ॥ १३१ ॥ ध्यानमाह ॥ फुल्लेति ॥ असव्येदक्षकरेइंदीवरमालां

मणिकर्णिभगीब्रह्माहृदयंध्रुवसंपुटः॥मंत्रः[1]पंचदशार्णोऽस्यमुनिर्व्यासोतिशक्करी ॥ १३० ॥ छंदःश्री
मणिकर्णीतुदेवतासुखपुत्रदा॥चंद्रनेत्राक्षिनेत्रेषुवह्निवर्णैःषडंगकम् ॥ १३१ ॥ फुल्लेंदीवरनिर्मितांकर
तलेमालामसव्येकरेबीजापूरफलंसितांबुजमयींमालांदधानांहृदि ॥श्वेतक्षौमवृताशरद्विधुनिभात्र्यक्षा
निबद्धांजलिर्ध्यातव्यामणिकर्णिकारविसमातोयेशकाष्ठामुखी ॥ १३२ ॥ लक्षत्रयंजपेन्मंत्रंजुहुयात्त
द्दशांशतः॥पुंडरीकैस्त्रिमधवक्तैर्यजेत्तांगंगयासमम् ॥ १३३ ॥ अयंमनुर्जनैर्जप्तोमोक्षलक्ष्मींप्रयच्छ
ति ॥ सुखंसमस्तंसंतानंसौभाग्यंधनसंचयम् ॥ १३४ ॥

दधतीअपरेवामेबीजपूरम् ॥ शरच्चंद्रकांतिः ॥ तेजसारवितुल्या ॥ तोयेशकाष्ठामुखीपश्चिमाभिमुखी ॥ १३२ ॥
पुंडरीकैःसितांभोजैः गंगयासमंयजेत् गंगामंत्रैरेवावरणपूजांकुर्यात् ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

---

[1] ॐऐंह्रींश्रींक्लींॐमंमणिकार्णिकेनमःॐइतिपंचदशार्णः । अस्यश्रीमणिकर्णिकामंत्रस्यवेदव्यासऋषिरातिशक्करीछंदः श्रीमणिकर्णिकादेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपे विनियोगः ।

तस्या एव मंत्रांतरमाह ॥ प्रणव इति ॥ मोबिंदुयुक् ॥ मं ॥ यथा–मं मणिकर्णिके प्रणवात्मिकेनमः ॥ मनुवर्णश्चतुर्दशार्णः ॥ अस्योपासनापञ्चदशार्णवाद्विधेया ॥ मणिकार्णिकोपासकःकुदेशेमगधादौमृतोपिब्रह्मैवस्यात् ॥ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ इतिश्रीमंत्रम०व्याख्यायांनौकायांशिवादिमंत्रकथनंनामषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥ अथकार्तवीर्यार्जुनमंत्रान्वक्तुंप्रतिजानीते ॥ अथेति ॥ गोपितानन्यैराचार्यैःशंकराचार्यप्रभृतिभिरप्रकाशितान् ॥ १ ॥

प्रणवोबिंदुयुङ्मोंतेमण्यंतेकार्णिकेप्रण ॥वात्मिकेहृदयंमंत्रोमनुवर्णोस्यपूर्ववत् ॥ १३५ ॥ विधेयोपासनासर्वामणिकर्ण्याउपासकः ॥कुदेशेपिमृतोयातिब्रह्मैवामलमव्ययम् ॥ १३६ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधौशिवादिमंत्रकथनंनामषोडशस्तरंगः ॥१६ ॥ अथेष्टदान्मनून्वक्ष्येकार्तवीर्यस्यगोपितान् ॥ यःसुदर्शनचक्रस्यावतारःक्षितिमंडले ॥ १ ॥वह्नितारयुतारौद्रीलक्ष्मीरग्नींदुशांतियुक् ॥ वेधाधरेंदुशांत्याढ्योनिद्राघींशाग्निबिंदुयुक् ॥ २ ॥

मंत्रराजमुद्धराति ॥ वह्नीति ॥ रौद्रीफः ॥ वह्नीरेफः तारओं ताभ्यांयुता ॥ तेनफ्रों ॥ लक्ष्मीःवःअग्नींदुशांतियुक् रबिंदुईयुता ॥ तेनव्रीं ॥ वेधाः कः धरेंदुशांत्याढ्यः लबिंदुईयुतः ॥ तेनक्लीं ॥ निद्राभः अर्घीशाग्निबिंदुयुक् ऊरबिंदुयुतः ॥ तेनभ्रूम् ॥ २ ॥

पाशम् ॥ आं ॥ मायाह्रीं ॥ अंकुशं क्रों ॥ पद्माश्रीं वर्महुं ॥ अस्त्रंफट् ॥ कार्तवीस्वरूपम् ॥ वाय्वासनोययुतः अनंतोयांयुंतोरेफः ॥ तेनर्या ॥ वह्निजौरेफजकारौ ॥ कर्णसंस्थितौउयुतौ ॥ तेनर्ज्जु ॥ ३ ॥ मेषोनःसदीर्घःना ॥ पवनोयः ॥ हृदंतिकोनमोंतोमनुः कथितः ॥ प्रणवाद्विविंशत्यर्णः ४ ॥ ध्रुवॐ-बीजम् ॥ नमः शक्तिः ॥ ५ ॥

पाशोमायांकुशंपद्मवर्मास्त्रेकार्तवीपदम् ।।रेफोवाय्वासनोनंतोवह्निजौकर्णसंस्थितौ ॥ ३ ॥ मेषःसदीर्घःपवनोमनुरक्तोहृदंतिकः ॥ ऊनविंशतिवर्णोयंतारादिर्नखवर्णकः ॥ ४ ॥ दत्तात्रेयोमुनिश्चास्यच्छंदोऽनुष्टुबुदाहृतम् ॥ कार्तवीर्य्यार्ज्जुनोदेवोबीजंशक्तिर्ध्रुवश्चहृत् ॥ ५ ॥ शेषाद्यबीजयुग्मेनहृदयंविन्यसेद्बुधः ॥ शांतियुक्तचतुर्थेनकामाढयेनशिरोंगकम् ॥ ६ ॥

षडंगमाह ॥ शेषेति ॥ शेषआ ॥ तद्युतेनाद्यबीजद्वयेनहृत् ॥ आकारयुतत्वादन्यस्वरनिवृत्तिः ॥ तेनआंफ्रोंव्रीं २ हृदयायनमः शांतीति ॥ ईयुतेनचतुर्थबीजेनकामबीजाढयेनशिरः ॥ ईक्लींभ्रूंशिरसेस्वाहा ॥ ६ ॥

---

१ ॐफ्रोंव्रींक्लींभ्रंआंह्रींक्रोंश्रींहुंफट्कार्तवीर्यार्जुनायनमः(२०)अस्यकार्तवीर्यार्जुनमन्त्रस्यदत्तात्रेयऋषिःअनुष्टुपूछन्दःकार्तवीर्यार्जुनोदेवता ॐ बीजंनम. शक्तिःममाभीष्ट० ।

इंद्राढयेति ॥ साबिंदुर्वामकर्णऊकारस्तेनआढयो यस्या ईदृशा अर्घीशयुक्तयाऊयुतयामाययाशिखाम् ॥ हुंशिखायैवषट् ॥ सवाग्भ्यामैंयुताभ्यामंकुशपद्माभ्यांवर्म ॥ क्रैंश्रैंकवचायहुं ॥ ७ ॥ वर्मास्त्राभ्यामस्त्रम्॥हुंफट्स्त्रायफट् ॥ शेषार्णैः कार्तवीर्यार्जुनायनमइतिव्यापकम् ॥ वर्णन्यासमाह ॥ हृदयइति ॥ सक्थ्नोरूर्वोर्जानुनोर्जं

इंद्राढयवामकर्णाढ्यमाययार्थीशयुक्तया ॥शिखामंकुशपद्माभ्यांसवाग्भ्यांवर्मविन्यसेत् ॥७॥ वर्मास्त्राभ्यामस्त्रमुक्तंशेषार्णैर्व्यापकंचरेत्॥हृदयेजठरेनाभौजठरेगुह्यदेशके ॥ ८ ॥ दक्षपादेवामपादेसक्थिजानुनिजंघयोः ॥ विन्यसेद्बीजदशकंप्रणवद्वयमध्यगम् ॥९ ॥ ताराद्यान्नवशेषार्णान्मस्तकेचललाटके ॥ भ्रुवोःश्रुत्योस्तथैवाक्ष्णोर्नसिवक्त्रेगलेंसके ॥ १० ॥ सर्वमंत्रेणसर्वांगेकृत्वाव्यापकमद्वयः ॥ सर्वेष्टसिद्धयेध्यायेत्कार्तवीर्य्यजनेश्वरम् ॥११॥

घयोरेकैकमेव प्रणवद्वयांतःस्थंबीजंन्यसेत् ॥ ॐफ्रोंॐहृदिॐव्रींॐजठरइत्यादि० ॥ ८ ॥ ९ ॥ ताराद्यानिति ॥ ॐकांमस्तके ॥ ॐतं०ललाटेइत्यादि० ॥ १० ॥ ११ ॥

ध्यानमाह ॥ उद्यादिति ॥ अखिलक्षोणीधवैः सर्वपार्थिवैर्नतः ॥ तावताहस्तशतपंचकेनेषून्बाणान्दधत् ॥ हाटकमा
लयास्वर्णस्रजास्यंदनगोरथस्थितः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ दिक्षुचोरमदविभंजनादींश्चतुरः ॥ ।विदिक्षुदुःख

उद्यत्सूर्य्यसहस्रकांतिरखिलक्षोणीधवैर्वंदितोहस्तानांशतपंचकेनचदधच्चापानिषूंस्तावता ॥ कंठेहाट
कमालयापरिवृतश्चक्रावतारोहरेःपायात्स्यंदनगोरुणाभवसनःश्रीकार्तवीर्य्योनृपः ॥१२॥लक्षमेकंज
पेन्मंत्रदशांशंजुहुयात्तिलैः॥सतंडुलैःपायसेनविष्णुपीठेयजेत्तुतम्॥ १३ ॥वक्ष्यमाणेदशदलेवृत्तभूपु
रसंयुते॥संपूज्यवैष्णवीःशक्तीस्तत्रावाह्यार्चयेन्नृपम् ॥ १४ ॥मध्येग्नीशासुरमरुत्कोणेषुहृदयादि
कान्॥चतुरंगंचसंपूज्यसर्वतोस्त्रंततोयजेत् ॥१५॥ खड्गचर्मधराध्येयाश्चंद्राभाअंगमूर्तयः ॥ षट्को
णेषुषडंगानिततोदिक्षुविदिक्षुच॥१६ ॥चोरमदविभंजनंमारीमदविभंजनम् ॥ अरिमदविभंजनंदै
त्यमदविभंजनम्॥१७॥ दुःखनाशंदुष्टनाशंदुरितामयनाशकौ ॥दिक्ष्वष्टशक्तयःपूज्याःप्राच्यादिषु
सितप्रभाः ॥१८॥ क्षेमंकरीवश्यकरीश्रीकरीचयशस्करी ॥आयुष्करीतथाप्रज्ञाकरीविद्याकरीपुनः
॥१९ ॥ धनकर्य्यष्टमीपश्चाल्लोकेशाअस्त्रसंयुताः ॥एवंसंसाधितोमंत्रःप्रयोगार्हःप्रजायते ॥२० ॥

ाशादीन् ॥ १६ ॥ १७ ॥ दुरितामयनाशकौ दुरितनाशकोरोगनाशकश्च ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ यंत्रमाह ॥ दिक्पत्रामिति ॥ दशदलंविलिख्यकर्णिकायांस्वबीजमदनश्रुत्यादिवाचोलिखेत् ॥ स्वबीजं फ्रों ॥ मदनःक्लीं ॥ श्रुत्यादिःॐ ॥ वाक्ऐं ॥ स्वबीजानिवागंतंर्लिखेत् ॥ वर्मांतानिप्रणवादीनिदशबीजानिदलेषु यस्यतत् ॥ तथाशेषार्णाःफट्कार्तवीर्यार्जुनायनमइतिदशपत्रांतरेषुयस्यतत् ॥ ऊष्माणःशषसहास्तैराढ्याःस्वराः केसरेषुयस्यतत् ॥ प्रतिकेसरंद्वौद्वौ ॥ शेषैःकादिभिरूष्महीनैर्वेष्टितम् ॥ स्वकोणषूल्लसंतोभूतार्णाः पंचभूतवर्णाः

कार्तवीर्य्यार्जुनस्याथपूजार्थंमंत्रउच्यते ॥२१॥ दिक्पत्रंविलिखेत्स्वबीजमदनश्रुत्यादिवाक्कर्णिकं वर्मांतप्रणवादिबीजदशकंशेषार्णपत्रांतरम् ॥ ऊष्माढ्यस्वरकेसरंपरिवृतंशेषैःस्वकोणोल्लसद्भूतार्णक्षितिमंदिरावृतमिदंयंत्रंधराधीशितुः ॥ २२ ॥

यत्रतादृशंयत्क्षितिमंदिरंचतुष्कोणं तेनावृतम् ॥ तृतीयवर्गगाः कर्णवोललाः [1]॥ कर्णौउऊ ॥ ॐललापार्थिवामता इत्यादि० ॥ भूतानांवर्णास्त्रयोविंशेतरंगेवक्ष्यंते ॥ तत्रस्तंभनेभूतवर्णालेख्याः ॥ शांतावाद्याः ॥ वश्येतैजसाः ॥ उच्चाटनेवायवीयाः ॥ विद्वेषणेतामसाः ॥ मारणेपितैजसाः ॥ जलस्यमंडलंप्रोक्तंप्रशस्तंशांतिकर्माणिइत्यादिवक्ष्यमाणत्वात् ॥ इदंधराधीशितुःकार्तवीर्यस्ययंत्रम् ॥ २२ ॥

---

[1] कर्णिकांतर्लिखेदित्यर्थः ।

अभिषेकमाह ॥ शुद्धेति ॥ अष्टगंधैः चंदनागुरुवालककुष्ठकुंकुमकर्पूररोचनाजटामांसीभिः ॥ तत्रयंत्रेतत्रकुंभे
॥ २३ ॥ २४ ॥ स्वजनरंजनंजनवश्यताम् ॥सुदृशोनारीः ॥ २५ ॥ पुटभेदनेनगरे ॥ २६ ॥ अरिष्टानि फेनिलफ

शुद्धभूमावष्टगंधैर्लिखित्वायंत्रमादरात् ॥ तत्रकुंभंप्रतिष्ठाप्यतत्रावाह्यार्चयेन्नृपम्॥२३॥स्पृष्ट्वाकुंभंज
पेन्मंत्रसहस्रंविजितेंद्रियः॥अभिषिंचेत्तदंभोभिःप्रियंसर्वेष्टसिद्धये॥ २४ ॥पुत्रान्यशोरोगनाशमायुः
स्वजनरंजनम्॥वाक्सिद्धिंसुदृशःकुंभाभिषिक्तोलभतेनरः ॥२५ ॥ शत्रूपद्रवमापन्नेग्रामेवापुटभेदने॥
संस्थापयेदिदंयंत्रमरिभीतिनिवृत्तये॥२६ ॥सर्षपारिष्टलशुनकार्पासैर्मार्य्यतेरिपुः ॥ धत्तूरैःस्तभ्यते
निंबैर्द्वेष्यतेवश्यतेंबुजैः॥ २७॥ उच्चाट्यतेविभीतस्यसमिद्भिःखदिरस्यच।कटुतैलमहिष्याज्यैर्होमोद्द
व्यांजनंस्मृतम्॥२८॥ यवैर्हुतैःश्रियःप्राप्तिस्तिलैराज्यैरघक्षयः॥ तिलतंडुलसिद्धार्थलाजैर्वश्योनृपो
भवेत्॥२९॥ अपामार्गार्कदूर्वाणांहोमोलक्ष्मीप्रदोऽघनुत्॥ स्त्रीवश्यकृत्प्रियंगूणांपुराणांभूतशांतिदः
॥ ३० ॥ अश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटबिल्वसमुद्भवाः ॥ समिधोलभतेहुत्वापुत्रानायुर्धनंसुखम् ॥ ३१ ॥

लानि ॥ पद्मैर्वश्यतेवशीक्रियते ॥ हुतैरितिसर्वत्रान्वयः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ पुराणांगुग्गुलूनाम् ॥ ३० ॥ ३१ ॥

निर्मोकः सर्पकंचुकः ॥ हेमधत्तूरः ॥ ३२ ॥ कार्यगौरवलाघवात् ॥ अधिककार्यॆहोमबाहुल्यमल्पेऽल्पम् ॥ ३३ ॥ मंत्रभेदानाह ॥ कार्तेति ॥ दशस्वपिमंत्रेषुङेंतंहृदंतंचतुर्थीनमोंतंकार्तवीर्यार्जुनंयोजयेत् ॥ ३४ ॥ आद्योदशवर्णः ॥ अन्येनवैकादशवर्णाः ॥ तानाह ॥ स्वेति ॥ फ्रौंकार्तवीर्यार्जुनायनमः इतिप्रथमः ॥ द्वितीयमाह ॥ आद्येति ॥

निर्मोकहेमसिद्धार्थलवणैश्चोरनाशनम् ॥ रोचनागोमयैःस्तंभोभूप्राप्तिःशालिभिर्हुतैः ॥ ३२ ॥होम
संख्यातुसर्वत्रसहस्रादयुतावधि ॥ प्रकल्पनीयामंत्रज्ञैःकार्य्यगौरवलाघवात् ॥३३ ॥कार्तवीर्य्यस्य
मंत्राणामुच्यंतेसिद्धिदाभिदाः॥ कार्तवीर्य्यार्जुनंङेंतमंतेचनमसान्वितम् ॥ ३४ ॥ स्वबीजाद्यचोद
शार्णोसावन्येनवशिवाक्षराः॥ आद्यबीजद्वयेनाऽसौद्वितीयोमंत्रईरितः ॥ ३५ ॥ स्वकामाभ्यांतृती
योसौस्वभूभ्यांतुचतुर्थकः ॥ स्वपाशाभ्यांपंचमोसौषष्ठःस्वेनचमायया ॥ ३६ ॥ स्वांकुशाभ्यां
सप्तमःस्यात्स्वरमाभ्यामथाष्टमः॥ स्ववाग्भवाभ्यांनवमोवर्मास्त्राभ्यांतथांतिमः ॥ ३७ ॥

फ्रांव्रीं कार्तवी० द्वितीयः ॥ ३५ ॥ फ्रौंक्लींकार्त० इतितृतीयः ॥ फ्रौंभ्रूंकार्त० इतिचतुर्थः ॥ फ्रौंआंकार्त० इतिपंचमः ॥ फ्रौंह्रींकार्त० इतिषष्ठः ॥ ३६ ॥ फ्रौंफ्रोंका० इतिसप्तमः ॥ फ्रौंश्रींकार्त० इत्यष्टमः ॥ फ्रौंऐंकार्त० इतिनवमः ॥ हुंफट् कार्त० इतिदशमः ॥ ३७ ॥

इमेदशमंत्रायदाप्रणवाद्यास्तदाऽऽद्यएकादशार्णःअन्येपि द्वादशार्णाः ॥३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ पूर्ववत् मंत्रराजवत् ॥
यजनंमतम् ॥ ४१ ॥ तेषांषडंगमाह ॥ दीर्घेति ॥ प्रांहृत् प्रींशिरइत्यादि० ॥ चतुर्दशार्णमाह ॥ तारइति ॥ ॐ

द्वितीयादिनवांतेतुबीजयोःस्याद्व्यतिक्रमः ॥मंत्रेतुदशमेवर्णानववर्मास्त्रमध्यगाः ॥ ३८ ॥एतेषुमंत्र
वर्य्येषुस्वानुकूलंमनुंभजेत् ॥एषामाद्येविराट्छन्दोन्येषुत्रिष्टुबुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ दशमंत्राइमेप्रोक्ताः
प्रणवादिपदानिच ॥तदादिमःशिवार्णःस्यादन्येतुद्वादशाक्षराः ॥ ४० ॥ एवंविंशतिमंत्राणांयजनं
पूर्ववन्मतम् ॥ त्रिष्टुप्छन्दस्तदाद्येस्यादन्येषुजगतीमता॥४१ ॥ दीर्घाढ्यमूलबीजेनकुर्य्यादेषांषडं
गकम् ॥ तारोहृत्कार्तवीर्य्यार्जुनायवमास्त्रठद्वयम्॥ चतुर्दशार्णोमंत्रोयमस्येज्यापूर्ववन्मता ॥४२॥
भूनेत्रसप्तनेत्राक्षिवर्णैरस्यांगपंचकम् ।।तारोहृद्भगवान्ङेंतःकार्तवीर्य्यार्जुनस्तथा ॥ ४३॥ वर्मास्त्राग्नि
प्रियामंत्रःप्रोक्तोष्टादशवर्णवान्॥त्रिवेदसप्तयुग्माक्षिवर्णैःपंचांगकंमनोः ॥ ४४ ॥

नमःकार्तवीर्यार्जुनायहुंफट्स्वाहेति ॥ इज्यापूजा ॥ ॥ ४२ ॥ पंचांगमाह ॥ भूनेत्रेति॥अष्टादशार्णमाह॥तारइति
हृतनमः ॥ कार्तवीर्यार्जुनस्तथेति ॥ ङेंतः ॥ ॐनमोभगवतेकार्तवीर्यार्जुनायहुंफट्स्वाहाइति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

मंत्रांतरमाह ॥ नमइति ॥ यथा–नमोभगवतेश्रीकार्तवीर्यार्जुनायसर्वदुष्टांतकायतपोबलपराक्रमपरिपालितसप्तद्वी
पायसर्वराजन्यचूडामणयेमहाशक्तिमतेसहस्रबाहवेहुंफट्इति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अस्यषडंगमाह ॥ राजन्ये
ति ॥ ङेंतैश्चतुर्थ्यंतैःपदैःषडंगंस्यात् ॥ यथा–राजन्यचक्रवर्तिनेहृत् ॥ वीरायशिरः ॥ शूरायशिखा ॥ माहिष्म

नमोभगवतेश्रीतिकार्त्तवीर्य्यार्जुनायच ।।सर्वदुष्टांतकायेतितपोबलपराक्रम ॥ ४५ ॥ परिपालितस
प्तांतेद्वीपायसर्वरापदभ्र ।।जन्यचूडामणांतेयेसर्वशक्तिमतेततः ।।४६ ॥ सहस्रबाहवेप्रांतेवर्मास्त्रांतोम
हामनुः ।। त्रिषष्टिवर्णवान्प्रोक्तःस्मरणात्सर्वविघ्नहृत् ॥ ४७ ॥ राजन्यचक्रवर्तीचवीरःशूरस्तृती
यकः ।।माहिष्मतीपतिःपश्चाच्चतुर्थःसमुदीरितः ॥ ४८ ॥ रेवांबुपरितृप्तश्चकारागेहप्रबाधितः।।दशा
स्यश्चेतिषड्भिःस्यात्पदैर्ङेंतैःषडंगकम् ॥ ४९ ॥ सिंच्यमानंयुवतिभिःक्रीडंतंनर्मदाजले ॥ हस्तै
र्जलौघैरुन्धंतंध्यायेन्मत्तंनृपोत्तमम्।।५०।। एवंध्यात्वायुतंमंत्रंजपेदन्यत्तुपूर्ववत् ॥पूर्ववत्सर्वमेतस्य
समाराधनमीरितम् ॥५१ ॥

तीपतयेवर्म ॥ ४८ ॥ रेवांबुपरितृप्तायनेत्रम् ॥ कारागेहप्रबाधितदशास्यायायास्त्रम् ॥ ४९ ॥ ५०॥स्मरन्नयुतंजपेत्।
अन्यत्प्रयोगादिकं ॥ पूर्ववच्चतुर्दशाष्टादशार्णवत् ॥ ५१ ॥

आनुष्टुभंमंत्रांतरमाह ॥ कार्तेति ॥ कार्तवीर्यार्जुनोनामराजाबाहुसहस्रवान् । तस्यसंस्मरणादेवहृतंनष्टंचलभ्यते इति ॥५२॥५३॥ गायत्रीमाह कार्तवीर्यायविद्महेमहावीर्यायधीमहि ॥ तन्नोऽर्जुनःप्रचोदयादिति ॥५४॥ ५५ ॥

कार्तवीर्य्यार्जुनोवर्णान्नामराजापदंततः॥उक्त्वाबाहुसहस्रांतेवान्पदंतस्यसंततः ॥ ५२ ॥ स्मरणादेववर्णांतेहृतंनष्टंचसंपठेत्॥लभ्यतेमंत्रवर्य्योयंद्वात्रिंशद्वर्णसंज्ञकः ॥ ५३॥ पादैःसर्वैणपंचांगध्यानयोगादिपूर्ववत्॥कार्तवीर्य्यायशब्दांतेविद्महेपदमीरयेत् ॥ ५४ ॥महावीर्य्यायवर्णांतेधीमहीतिपदंवदेत्॥ तन्नोर्जुनःप्रवर्णांतेचोदयात्पदमीरयेत्॥ ५५॥ गायत्र्येषार्जुनस्योक्ताप्रयोगादौजपेत्तुताम्॥ अनुष्टुभंमनुंरात्रौजपतांचौरसंचयाः॥ ५६ ॥ पलायंतेगृहाद्दूरंतर्पणाद्वचनादपि ॥ अथोदीपविधिंवक्ष्येकार्तवीर्य्यप्रियंकरम् ॥ ५७ ॥ वैशाखेश्रावणेमार्गेकार्तिकाश्विनपौषतः ॥ माघफाल्गुनयोर्मासेदीपारंभःप्रशस्यते ॥ ५८ ॥ तिथौरिक्ताविहीनायांवारेशनिकुजौविना ॥ हस्तोत्तराश्विरौद्रेषुपुष्यवैष्णववायुभे ॥ ५९ ॥

॥ ५६ ॥ दीपविधानमाह ॥ अथोइति ॥ ५७ ॥ आरंभमासानाह ॥ वैशाखइति ॥ ५८ ॥ रिक्ताश्चतुर्थीनवमीचतुर्दश्यस्ताद्भिन्नातिथौ ॥ नक्षत्राण्याह ॥ हस्तोत्तरेति ॥ रौद्रमार्द्रा ॥ वैष्णवंश्रवणं ॥ वायुभंस्वाती ॥ ५९ ॥

द्विदैवतंविशाखा ॥ योगानाह ॥ चरमइति ॥ चरमे वैधृतौ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ रात्रावाखिलायांपूर्वाह्णेच ॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥ विधिमाह ॥ आद्यइति ॥ कौभूमौ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ स्मरंक्लीं ॥ ६६ ॥ षड्वर्णान्ॐक्रोंव्रींभ्रूंआंह्रीमिति

द्विदैवतेचरोहिण्यांदीपारंभःप्रशस्यते ॥ चरमेचव्यतीपातेधृतौवृद्धौसुकर्मणि ॥ ६० ॥ प्रीतौहर्षेचसौ
भाग्येशोभनायुष्मतोरपि ॥ करणेविष्टिरहितेग्रहणेद्धोंदयादिषु ॥ ६१ ॥ एषुयोगेषुपूर्वाह्णेदीपारंभः
कृतःशुभः ॥ कार्तिकेशुक्लसप्तम्यांनिशीथेतीवशोभनः ॥ ६२ ॥ यदितत्ररवेर्वारःश्रवणंभंतुदुर्लभम् ॥
अत्यावश्यककार्येषुमासादीनांनशोधनम् ॥ ६३ ॥ आद्येह्नुपोष्यनियतोब्रह्मचारीशयीतकौ ॥ प्रातः
स्नात्वाशुद्धभूमौलिप्तायांगोमयोदकैः ॥ ६४ ॥ प्राणानायम्यसंकल्प्यन्यासान्पूर्वोदितांश्चरेत् । षट्कोणं
रचयेद्भूमौरक्तचंदनतंडुलैः ॥ ६५ ॥ अतःस्मरंसमालिख्यषट्कोणेषुसमालिखेत् ॥ मंत्रराजस्यषड्
वर्णान्कामबीजविवर्जितान् ॥ ६६ ॥ सृणिपद्मांवर्मचास्त्रंपूर्वाद्याशासुसंलिखेत् ॥ नवार्णैर्वेष्टयेत्तच्चत्रि
कोणंतद्बहिःपुनः ॥ ६७ ॥ एवंविलिखितेयंत्रेनिदध्याद्दीपभाजनम् ॥ स्वर्णजंरजतोत्थंवाताम्रजंतदभा
वतः ॥ ६८ ॥ कांस्यपात्रंमृन्मयंचकनिष्ठंलोहजंमृतौ ॥ शांतयेमुद्गचूर्णोत्थंसंधौगोधूमचूर्णजम् ॥ ६९ ॥

षट्कोणेषुस्वाग्रमारभ्यलिखेत् ॥ क्रोंश्रींहुंफडितिदिक्षु ॥ शेषैर्नवाक्षरैर्वेष्टयेत ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

पात्रमानमाह ॥ बुध्नइति ॥ बुध्नेमूले ॥ ऊर्ध्वंचपात्रंकुर्यात् ॥ कियत्तत्राह ॥ अर्कैति ॥ मूलेऊर्ध्वंचद्वादशादिमानैरंगुलैःकार्यम् ॥ ७०॥ ७१ ॥ शरार्कपलभाजनं पंचविंशत्युत्तरशतपलमितपात्रम् ॥ ७२ ॥ द्वीति ॥ सहस्रद्वयमिते

बुध्नेषूर्द्ध्वंसमानंतुपात्रंकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥अर्कदिग्वसुषट्पंचचतुराभांगुलैर्मितम्॥७०॥आज्यंपलसहस्रंतुपात्रंशतपलैःकृतम्॥आज्येयुतपलेपात्रंपलपंचशतीकृतम् ॥ ७१ ॥ पंचसप्ततिसंख्येतुपात्रंषष्टिपलंमतम् ॥ त्रिसहस्रेघृतपलेशरार्कपलभाजनम् ॥ ७२ ॥ द्विसहस्रेशरशिवंशतार्द्धंत्रिंशतामतम्॥ शतेक्षिशरसंख्यांतमेवमन्यत्रकल्पयेत् ॥ ७३ ॥ नित्यदीपेवह्निपलंपात्रमाज्यंपलंस्मृतम् ॥ एवंपात्रंप्रतिष्ठाप्यवर्तीःसूत्रोत्थिताःक्षिपेत् ॥ ७४ ॥ एकातिस्रोथवापंचसप्ताद्याविषमाअपि ॥ तिथिमानाद्यासहस्रांतंतुसंख्याविनिर्मिताः॥ ७५ ॥ गोघृतंप्रक्षिपेत्तत्रशुद्धवस्त्रविशोधितम्॥सहस्रपलसंख्याद्दिशांतंकार्य्यगौरवात् ॥७६ ॥

घृतेशरशिवंपंचदशोत्तरशतपलंताम्रपात्रम् ॥ अक्षिशरसंख्यातं द्विपंचाशत्पलमितम् ॥ अन्यत्रैवमेवघृतानुसारेण पात्रंकल्प्यम् ॥ ॥ ७३ ॥ वह्निपलंत्रिपलम् ॥ ७४ ॥ विषमवर्तिकाएकाद्याएकोत्तरशतान्ताज्ञेयाः॥ तिथीति ॥पंचदशादिसहस्रपर्यंतंयातंतुसंख्यातयाविनिर्मिताः कृताः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

तदर्धामष्टांगुलांतदर्धांचतुरंगुलाम् ॥ ७७ ॥ पात्राद्दक्षिणेचतुरंगुलभूमिंत्यक्त्वाछुरिकांभूमौनिःक्षिपेत् ॥ ७८ ॥अधोग्रंयस्यास्तांदक्षिणस्यांधारायस्यास्ताम् ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ द्वीषुभूमितोद्विपंचाशदुत्तरशताक्षरो दीपसंकल्पे

सुवर्णादिकृतांरम्यांशलाकांषोडशांगुलाम् ॥ तदर्द्धांवातदर्द्धांवासूक्ष्माग्रांस्थूलमूलकाम् ॥ ७७॥ विमुंचेद्दक्षिणेभागेपात्रमध्येकृताग्रकाम् ॥ पात्राद्दक्षिणदिग्देशेमुक्त्वांगुलचतुष्टयम् ॥ ७८ ॥ अधोग्रांदक्षिणाधारांनिखनेच्छुरिकांशुभाम् ॥ दीपंप्रज्वालयेत्तत्रगणेशस्मृतिपूर्वकम् ॥ ७९ ॥ दीपात्पूर्वेतुदिग्भागेसर्वतोभद्रमंडले॥तंडुलाष्टदलेवापिविधिवत्स्थापयेद्घटम् ॥ ८०॥ तत्रावाह्यनृपाधीशंपूर्ववत्पूजयेत्सुधीः॥ जलाक्षताःसमादायदीपंसंकल्पयेत्ततः ॥ ८१ ॥ दीपसंकल्पमंत्रोऽथकथ्यतेद्वीषुभूमितः ॥प्रणवःपाशमायेचशिखाभर्ताशराणिच ॥ ८२ ॥ वीर्य्यार्जुनायमाहिष्मतीनाथायसहस्रच ॥ बाहवेइतिवर्णान्तेसहस्रपदमुच्चरेत् ॥८३॥ क्रतुदीक्षितहस्तायदत्तात्रेयप्रियायच ॥ आत्रेयायानुसूयांतेगर्भरत्नायतत्परम् ॥ ८४ ॥

मन्त्रः ॥ तमाह ॥ प्रणवइति ॥ पाशआं ॥ मायाह्रीं ॥ शिखावषट् ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

वामकर्णेंदुस्थितौनभोग्नीऊबिंदुयुतौहरौ ॥ तेनहूं ॥ पाशआँ ॥ अमुकमितिपदस्थानेसाध्यनामोच्चार्यम् ॥ ८५ ॥
मायाह्रीं ॥ तारॐ ॥ स्वंबीजंफ्रों ॥ आत्मभूःक्लीं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ आकाशद्वयंहद्वयम् ॥ वामनेत्रचंद्रयुतंइबिं
दुयुतंहींहीं ॥ शिवाह्रीं ॥ वेदादिकामच्चामुंडाः ॐक्लाव्रीं ॥ तुःपुः तवर्गपवर्गौ॥ ८८ ॥ नेत्रबाणधराक्षरोद्विपंचाश
दुत्तरशतार्णः ॥यथा-ॐआंह्रींवषट्कार्तवीर्यार्जुनायमाहिष्मतीनाथायसहस्रबाहवेसहस्रक्रतुदीक्षितहस्तायदत्तात्रे

नभोग्नीवामकर्णेंदुस्थितौपाशइमंततः॥दीपंगृहाणत्वमुकंरक्षरक्षपदंपुनः।८५॥दुष्टान्नाशययुग्मंस्यात्त
थापातयघातय॥शत्रूञ्जहिद्वयंमायातारःस्वंबीजमात्मभूः ॥८६॥ वह्निजायाअनेनाथदीपवर्येणपश्चि
मा॥भिमुखेनामुकंरक्षअमुकांतेवरप्रदा।८७।नायाकाशद्वयंवाममनेत्रचंद्रयुतंशिवा॥वेदादिकामचामुंडा
स्वाहातुःपुःसबिंदुकौ॥८८॥प्रणवोग्निप्रियामंत्रोनेत्रबाणधराक्षरः॥दत्तात्रेयोमुनिर्मालामंत्रस्यपरिकी
र्तितः॥८९छंदोमितंकार्तवीर्य्यार्जुनोदेवःशुभावहः॥चामुंडयाषडंगानिचरेत्षड्दीर्घयुक्तया॥९०॥

यप्रियायआत्रेयायानुसूयागर्भरत्नायहूंआंइमंदीपंगृहाणअमुकंरक्ष २ दुष्टान्नाशय २ पातय २ घातय २ शत्रूञ्जहि
२ ह्रींॐफ्रोंक्लींस्वाहाअनेनदीपवर्येणपश्चिमाभिमुखेनअमुकंरक्ष अमुकवरप्रदानाय हींहींह्रींॐक्लींव्रींस्वाहा तंथं
दंधंनंपंफंबंभंमंॐस्वाहा ( १५२ ) इतिमंत्रः ॥ चामुडयाव्रीमितिबीजेनव्रांव्रींव्रूंव्रैंव्रौंव्रः इतिषडंगम्॥ ८९ ॥९० ॥

---

[१] अस्यकार्तवीर्यमालामंत्रस्यदत्तात्रेयऋषिःअमितंछंदःकार्तवीर्यार्जुनोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

ध्यात्वापूर्वोक्तविधिना ॥ ९१ ॥ नवाक्षरमाह ॥ तारइति ॥ तारॐ ॥ अनंतोबिंदुयुतःआं ॥ मायाह्रीं ॥ स्वं वामनेत्रयुक्स्रीं ॥ कूर्माग्नीवरौशांतिचंद्राढ्यौईबिंदुयुतौ ॥ तेनव्रीं ॥ वह्निनारीस्वाहा ॥ अंकुशंक्रों ॥ ध्रुवॐ

ध्यात्वादेवंततोमंत्रंपठित्वांतेक्षिपेज्जलम् ॥ ततोनवाक्षरंमंत्रंसहस्रंतत्पुरोजपेत् ॥ ९१ ॥तारोऽनंतो
बिंदुयुक्तोमायास्वंवामनेत्रयुक्॥ कूर्माग्नीशांतिचन्द्राढ्यौवह्निनार्य्यंकुशंध्रुवः ॥ ९२ ॥ [१]ऋषिःपूर्वः
स्मृतोनुष्टुप्छन्दोह्यन्यत्तुपूर्ववत्॥सहस्रंमंत्रराजंचजपित्वाकवचंपठेत् ॥ ९३ ॥ एवंदीपप्रदानस्यक
र्ताप्नोत्यखिलेप्सितम् ॥ दीपप्रबोधकालेतुवर्जयेदशुभांगिरम् ॥ ९४ ॥ विप्रस्यदर्शनंतत्रशुभदंपारि
कीर्तितम् ॥ शूद्राणांमध्यमंप्रोक्तंम्लेच्छस्यवधबंधदम् ॥ ९५ ॥ आख्वोत्वोर्दर्शनंदुष्टंगवाश्वस्यसु
खावहम्॥दीपज्वालासमासिद्ध्यैवक्रानाशविधायिनी ॥ ९६ ॥

॥ ९२ ॥ पूर्वोदत्तात्रेयः ॥ अन्यत्षडङ्गादिकम् ॥ कवचं ॥ हुंडामरोक्तम् '। ९३ ॥ दीपप्रारंभेशकुनमाह ॥ दीपप्रबोधेत्यादि ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ आख्वोत्वोर्मूषकमार्जारयोः ॥ ९६ ॥

---

[१] अस्यनवाक्षरकार्तवीर्यमंत्रस्यदत्तात्रेयऋषिः अनुष्टुप्छंदःकार्तवीर्यार्जुनोदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ वसुपलैरष्टपलैः ॥ अंतरायतोविघ्नेभ्यः ॥ १०१ ॥ भूशयंभूमिशयनम् ॥ १०२ ॥

सशब्दाभयदाकर्तुरुज्ज्वलासुखदामता ॥ कृष्णातुशत्रुभयदावमंतीपशुनाशिनी ॥ ९७ ॥ कृतेदी
पेयदापात्रंभग्नंदृश्येतदैवतः ॥ पक्षादर्वाक्तदागच्छेद्यजमानोयमालयम् ॥ ९८ ॥ वर्त्त्यंतरंयदाकु
र्य्यात्कार्यंसिद्ध्येद्विलंबतः ॥ नेत्रहीनोभवेत्कर्तातस्मिन्दीपांतरेकृते॥९९॥ अशुचिस्पर्शनेत्वाधि
र्दीपनाशेतुचौरभीः॥ श्वमार्जाराखुसंस्पर्शेभवेद्भूपतितोभयम्॥१००॥यात्रारंभेवसुपलैः कृतोदीपो
ऽखिलेष्टदः ॥ तस्माद्दीपः प्रयत्नेनरक्षणीयोंतरायतः ॥ १०१ ॥आसमाप्ते प्रकुर्वीतब्रह्मचर्य्यंचभूश
यम् ॥ स्त्रीशूद्रपतितादीनांसंभाषामपिवर्जयेत् ॥ १०२ ॥ जपेत्सहस्रंप्रत्येकंमंत्रराजंनवाक्षरम् ॥
स्तोत्रपाठंप्रतिदिनंनिशीथिन्यांविशेषतः ॥ १०३ ॥ एकपादेनदीपाग्रेस्थित्वायो मंत्रनायकम् ॥
सहस्रंप्रजपेद्रात्रौसोभीष्टंक्षिप्रमाप्नुयात्॥१०४॥समाप्यशोभनेघस्रेसंभोज्यद्विजनायकान् ॥ कुंभो
दकेनकर्तारमभिषिंचेन्मनुंस्मरन् ॥ १०५ ॥ कर्तातुदक्षिणांदद्यात्पुष्कलांतोषहेतवे ॥ गुरौतुष्टेददा
तीष्टंकृतवीर्य्यसुतोनृपः ॥ १०६ ॥

निशीथिन्यांरात्रौ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

रत्नादिदानेनगुरुंवृत्वाधरापतेःकार्तवीर्यस्यदीपदानंकारयेदित्यन्वयः ॥१०७॥ १०८ ॥१०९॥ अजदिघृतंकनीयोऽ
धमम् ॥११०॥१११॥११२॥११३॥११४॥यथाकथंचिदिति ॥ अनेननित्यदीपेपूर्वोक्तस्यपात्रघृतनियमस्यानावश्यक

गुर्वाज्ञयास्वयंकुर्य्याद्यदिवाकारयेद्गुरुम् ॥कृत्वारत्नादिदानेनदीपदानंधरापतेः ॥१०७॥गुर्वाज्ञामं
तराकुर्य्याद्योदीपंस्वेष्टसिद्धये॥प्रत्युतानुभवत्येषहानिमेवपदेपदे ॥ १०८ ॥ दीपदानविधिंब्रूयात्कृ
तघ्नादिषुनोगुरुः ॥ दुष्टेभ्यःकथितोमंत्रोवक्तुदुःखावहोभवेत् ॥ १०९॥उत्तमंगोघृतं प्रोक्तंमध्यमंम
हिषीभवम् ॥ तिलतैलेतुतादृक्स्यात्कनीयोजादिजंघृतम्॥ ११०॥ आस्यारोगेसुगंधेनदद्यात्तैलेन
दीपकम् ॥ सिद्धार्थसंभवेनाथद्विषतांनाशहेतवे ॥ १११ ॥ पलैर्दशशतैर्दीपेविहितेचेन्नदृश्यते ॥
कार्य्यसिद्धिस्तदात्रिस्तुदीपःकार्य्योयथाविधि ॥११२॥ तदासुदुर्लभंकार्य्यंसिद्ध्यत्येवनसंशयः ॥
यथा कथंचिद्यः कुर्य्याद्दीपदानंस्ववेश्मनि॥११३॥ विघ्नाःसर्वारंभिःसाकंतस्यनश्यंतिदूरतः॥सर्व
दाजयमाप्नोतिपुत्रान्पौत्रान्धनंयशः ॥ ११४ ॥ यथाकथंचिद्योदीपंनित्यंगेहेसमाचरेत् ॥कार्तवी
र्यार्जुनप्रीत्यैसोऽभीष्टंलभतेनरः ॥ ११५ ॥

तांदर्शयति ॥ त्रिपलामितेपात्रे एकपलघृतेननित्यंदीपोदेयः॥यथाकथंचिद्वा ॥ सर्वथादातव्य एवेतिभावः ॥११५॥

दीपदानप्रियोऽर्जुनः ॥ तत्प्रसंगादन्यदेवानांयद्ददातिप्रियंतदाह ॥ दीपेति ॥ मार्तंडःसूर्योनमस्कारप्रियः॥ ११६ ॥ दुर्गासुंदरी ॥११७॥ इतिमंत्रमहोदधिटीकायांनौकायांकार्तवीर्यार्जुनमंत्रनिरूपणंनामसप्तदशस्तरंगः॥ ११७ ॥अथ कालरात्रिमंत्रमाह ॥ तारेति ॥ तारॐ ॥ वाक्ऐं ॥ शक्तिःह्रीं ॥ कंदर्पःक्लीं ॥ रमाश्रीं॥ अग्रेस्वरूपम् ॥ यथा–ॐ

दीपप्रियःकार्तवीर्य्योमार्तंडोनतिवल्लभः ॥ स्तुतिप्रियोमहाविष्णुर्गणेशस्तर्पणप्रियः ॥११६॥दुर्गाऽर्चनप्रियानूनमभिषेकप्रियःशिवः ॥ तस्मात्तेषांप्रतोषायविदध्यात्तत्तदादृतः ॥११७ ॥इतिमंत्रमहोदधौकार्तवीर्य्यमंत्रकथनंनामसप्तदशस्तरंगः॥ १७॥ कालरात्रिमथोवक्ष्येसपत्नगणसूदनीम् ॥ तारवाक्छक्तिकंदर्परमाःकाह्लेश्वरीतिच ॥ १ ॥सर्वजनमनोवर्णाहरिसर्वमुखांततः ॥ स्तंभन्यंतेसर्वराजवशंकारिपदंततः ॥ २ ॥ सर्वदुष्टनिर्दलनिसर्वस्त्रीपुरुषार्णकाः॥कार्षिणीतिततोबंदीशृंखलात्रोटयद्वयम् ॥ ३ ॥ सर्वशत्रून्भंजयद्विर्द्वेष्टॄन्निर्दलयद्वयम् ॥सर्वस्तंभययुग्मंस्यान्मोहनास्त्रेणतत्परम्॥४॥

ऐंह्रींक्लींश्रींकाह्लेश्वरिसर्वजनमनोहारिसर्वमुखस्तंभनिसर्वराजवशंकारि सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बंदीशृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून्भंजय २ द्वेष्टॄन्निर्दलय २ सर्वस्तंभय २ मोहनास्त्रेणद्वेषिणउच्चाटय २ सर्ववशं कुरु२ स्वाहादेहि २ सर्वकालरात्रिकामिनिगणेश्वरिनमइति ॥ गुणरामधराशरात्रयस्त्रिदुशत्तरशतार्णा ॥१ ॥२ ॥ ३ ॥ ४ ॥

५॥६॥ कालिकाबीजंक्रीं ॥७॥८॥ वेदनेत्रार्णैश्चतुर्विंशतिवर्णैः ॥ बाणाक्षित्रर्णकःपंचविंशतिवर्णैः ॥ ९॥ नंदचंद्राक्षरैरेकोनाविंशत्यर्णैः ॥ १० ॥ ध्यानमाह उद्यदिति ॥ दंडवरौ दक्षयोः ॥ लिङ्गभुवने वामयोः ॥ भुवनंब्रह्मांडम् ॥

द्वेषिणःपदमुच्चार्य्यततउच्चाटयद्वयम् ॥ सर्ववशंकुरुद्वंद्वंस्वाहादेहियुगंपुनः ॥५ ॥ सर्वंचकालरात्रीति कामिनीतिगणेश्वरी ॥ नमोंतेयंमहाविद्यागुणरामधराक्षरा ॥ ६ ॥ ऋषिर्दक्षोतिजगतीछंदोलर्कनिवासिनी ॥ देवताकालरात्रिःस्यात्कालिकाबीजमीरितम् ॥ ७ ॥ मायाराज्ञीतिशक्तिःस्यान्नियोगःस्वेष्टसिद्धये ॥ पंचांगुलिषुताराद्यंविन्यसेद्बीजपंचकम् ॥८ ॥ हृदयंवेदनेत्रार्णैःशिरोबाणाक्षिवर्णकैः॥ प्रोक्ताशिखैकविंशत्यावर्माष्टादशभिःस्मृतम् ॥ ९ ॥ षड्विंशत्यानेत्रमस्त्रंनंदचंद्राक्षरैर्मतम्॥ विधायैव षडंगानिध्यायेद्विश्वविमोहिनीम् ॥१०॥ उद्यन्मार्तंडकांतिंविगलितकबरींकृष्णवस्त्रावृतांगींदंडंलिंगंकराब्जैर्वरमथभुवनंसंदधानांत्रिनेत्राम्॥ नानाकल्पौघभासांस्मितमुखकमलांसेवितांदेवसंघैर्मायांराज्ञींमनोभूशरविकलतनूमाश्रयेकालरात्रिम् ॥ ११ ॥ अयुतंप्रजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः॥पयोरुहैर्वाविप्रेंद्रान्संतर्प्यश्रेयआप्नुयात् ॥ १२ ॥

नानाकल्पैर्विभासांविविधाभरणसमूहशोभिताम् ॥ मनोभूशरविकलतनूंकामबाणव्याकुलशरीराम् ॥११॥१२॥

---

अस्यकालरात्रिमंत्रस्यदक्षऋषिः जगतीछंदः अलर्कनिवासिनीकालरात्रिर्देवताक्रींबीजंमायाराज्ञीतिशक्तिःममाभीष्ट० ।

कालिकापीठेजयादिशक्तियुते ॥ पूजायंत्रमाह ॥ बिंद्विति ॥ १३ ॥ कलापत्रंषोडशदलम् ॥ तिस्रोरेखायस्यतत
धरणीगृहंचतुष्कोणम् ॥ १४ ॥ कामनाभेदाल्लेखनभेदमाह ॥ तद्यन्त्रमिति॥ क्षीरद्रोःक्षीरवृक्षस्याश्वत्थोदुंबरप्लक्षव

तांयजेत्कालिकापीठेपूजार्थंयंत्रमुच्यते ॥बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलवृत्तकम् ॥१३॥ कलापत्रंपु
नर्वृत्तंत्रिरेखंधरणीगृहम् ॥चतुर्द्वारयुतंकृत्वाबिंदौदेवीमथार्चयेत् ॥१४॥ तद्यंत्रंविलिखेद्भूर्जेक्षीरद्रोः
फलकेपिवा ॥शांतयेत्यष्टगंधेनलेखिन्याचंपकोत्थया ॥१५॥ कर्चूरागुरुकर्पूररोचनारक्तचंदनम् ॥
कुंकुमंचंदनंचापिकस्तूरीत्वष्टगंधकम् ॥१६॥ सिंदूरहिंगुलाभ्यांचवश्यायविलिखेत्सुधीः॥सारसोद्भ
वलेखिन्यास्तंभनेकोकिलच्छदैः।१७।हरितालहरिद्राभ्यांमारणेवायसच्छदैः॥धत्तूरभानुनिर्गुंडीखरा
श्वमहिषासृजा॥१८एवंविलिखितेयंत्रेकुर्य्यादावरणार्चनम्॥त्रिकोणेदेवतास्तिस्रोवामावर्तेनपूजयेत्
॥१९॥संमोहिनींमोहिनींचतृतीयांचविमोहिनीम्॥षट्सुकोणेषुबहृयादिषडगानिततोयजेत्॥२०॥

टान्यतमस्य ॥ १५ ॥ १६ ॥ स्तंभनेकोकिलपक्षैः ॥ १७ ॥ हरितालहरिद्राभ्यामित्यन्वयः ॥ मारणेवायसच्छदैः
धत्तूररसादिभिर्लिखेत् इत्यस्यान्वयः ॥ भानुरर्करसः ॥ खरादीनामसृजारक्तेन ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

स्वराअंनमइत्यादयः ॥ हलोव्यंजनानिकंनमइत्यादीनि ॥ कलादेलषोडशपत्रे ॥ २१ ॥ मंजुघोषयासह घृताची ॥ २२ ॥ २३ ॥ मंत्रादिममिति ॥ मंत्रादौवर्तमानंबीजपंचकंस्वदेवतायुतंयजेत् ॥ यथा–ॐपरमात्मनेनमः॥ ऐंस

वृत्तेस्वराःसमभ्यर्च्यामातरोष्टौवसुच्छदे ॥ कादिक्षांताहलोवृत्तेउर्वश्याद्याःकलादले ॥२१॥ उर्वशी
मेनकारंभाघृताचीमंजुघोषया ॥सहजन्यासुकेशीस्यादष्टमीतुतिलोत्तमा ॥ २२ ॥ गंधर्वीसिद्धक
न्याचकिन्नरीनागकन्यका ॥विद्याधरीकिंपुरुषायक्षिणीतिपिशाचिका ॥ २३ ॥ पुनर्वृत्तेयजेन्मंत्री
देवतादशकंयथा॥मंत्रादिमंपंचबीजंस्वस्वदेवतयायुतम्॥२४॥पंचबाणान्स्वबीजाद्यानित्युक्त्वाद
शदेवताः ॥भूगृहांतःसमभ्यर्च्याअणिमाद्यष्टसिद्धयः ॥२५॥ भूगृहस्यत्रिरेखासुसंपूज्यानवदेवताः॥
इच्छाशक्तिःक्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिरितित्रयम् ॥ २६ ॥ आद्यरेखागतंपूज्यंद्वितीयायांशिवाजकाः॥
तृतीयायांतुरेखायांसत्त्वमुख्यंगुणत्रयम् ॥ २७ ॥ पूर्वादिषुचतुर्द्वार्षुगणेशंक्षेत्रपालकम् ॥ बटुकंयो
गिनीश्चापियजेदिंद्रादिकानपि ॥ २८ ॥

रस्वत्यैनमः ॥ ह्रींगौर्यै० ॥ क्लींकामायै० ॥ श्रींरमायै० इति ॥ २४ ॥ पंचेति ॥ स्वबीजाद्यान् ॥ पंचबाणान्द्रांद्रा वणबाणायनमःइत्यादिपूर्वोक्तान् ॥ अणिमादयउक्ताः ॥ २५ ॥ २६ ॥ शिवाजकारुद्रविष्णुब्रह्माणः ॥ सत्त्वमुख्यं सत्त्वरजस्तमांसि ॥ २७ ॥ २८ ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ वशीकरणमाह ॥ शनिवारइत्यादिहरिद्राक्षतपुष्पैश्चमन्त्रेणानेनपूजयेदित्यंतेन ॥

एवंबाह्यार्चनंकृत्वादेवीपार्श्वगताःपुनः॥देव्योद्वादशसंपूज्याःप्रतिदिक्त्रितयंत्रयम् ॥ २९ ॥ माया
द्याकालरात्रिश्चतृतीयावटवासिनी॥गणेश्वरीचकाह्लाख्याव्यापिकालार्कवासिनी ॥ ३० ॥मायारा
ज्ञीचमदनप्रियास्याद्दशमीरतिः॥लक्ष्मीःकाह्लेश्वरीचेतिदेव्योद्वादशकीर्तिताः ॥ ३१ ॥ नैवेद्यांतार्च
नंकृत्वादद्यान्मद्यादिनाबलिम्॥ एवसपूजितास्वेष्टंकालरात्रिःप्रयच्छति ॥ ३२ ॥ शनिवारेतुसंध्या
यांगच्छेद्रम्यंसरोवरम्॥हरिद्राऽक्षतपुष्पैस्तन्मंत्रेणानेनपूजयेत् ॥ ३३ ॥ तारोनमोजलौकायैद्वितयं
सर्वतःपरम्॥जनंवशंकुरुद्वंद्वंहुमंतोमनुरीरितः ॥ ३४ ॥ गृहमागत्यगोत्रायांस्वप्याद्देवींस्मरन्निशि ॥
प्रातस्तत्रैवगत्वाथजलौकाद्वितयंततः॥ ३५ ॥ गृहीत्वातत्प्रशोष्याथच्छायायांचूर्णयेत्पुनः ॥ जलौ
काचूर्णयुक्तेनकृष्णकार्पाससूत्रतः ॥ ३६ ॥ वर्तिंविधायमुंचेतभाजनेनिर्मितेमृदा॥ कुलालचक्रोत्थि
तयातत्रतैलंपुनःक्षिपेत्।३७।तैलंयंत्रात्समानीतंभ्रमतोनिर्मलंशुचि॥वारस्त्रीसदनाद्वह्निमानीयज्वाल
येत्तुतम्॥३८॥ दारुभिःकोकिलाक्षस्यप्रकुर्य्यात्तत्रदीपकम्॥वह्नेःपुरद्वयंक्षोणीपुरयंत्रेनिधापनम्॥३९

स्मष्टुरिति शेषः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ गोत्रायांभूमौ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कोकिलाक्षस्यकुचिलावृक्षस्य ॥ वह्नेः
पुरंत्रिकोणम् ॥ तद्द्वयंषट्कोणम् ॥ क्षोणीपुरंचतुरस्रम् ॥ ३९ ॥

॥ भूमिःग्लौं ॥ वसुसायकवर्णौष्टपंचाशदर्णः॥ प्रयोगोयथा–साधकःशनिवासरेसंध्याकालेतडागंगत्वा ॐनमोजलूकायैजलूकायैसर्वजनंवशंकुरु २ हुमितिमंत्रेणहारिद्राक्ताक्षतपुष्पैर्जलंपूज्यगृहंगत्वादेवींस्मरन्निशिभूमौशयीत प्रातस्तस्मात्सरसोजलौकाद्वयमादायच्छायाशुष्कंकृत्वासंचूर्ण्यतच्चूर्णयुक्तेनकृष्णकार्पाससूत्रेण वर्तिकांकृत्वाकुलालचक्रानीतमृन्निर्मितेपात्रे तां निधायभ्रमतस्तैलयंत्रात्तिलतैलमादायतत्रानिःक्षिपेत् ॥ वेश्यागृहादग्निमानीयकुचि

निशारसेनरचितेमध्येलाजासमन्विते॥कालरात्रिंततोदीपेसमावाह्यप्रपूजयेत् ॥ ४० ॥ युक्तामावर
णैःपश्चान्नवीनंखर्परंन्यसेत्॥दीपोत्थपात्रपतितमादद्यात्कज्जलंसुधीः॥ ४१ ॥ पश्चिमाभिमुखोमंत्री
कज्जलंतत्तुमंत्रयेत्॥वक्ष्यमाणेनमनुनाशतत्रितयसंमितम् ॥ ४२ ॥ तारोवाङ्मदनोमायारमाभूमिर्ब
लूंहसौः॥ नमःकाह्लेश्वरिपदंसर्वान्मोहयमोहय ॥ ४३ ॥ कृष्णेतेकृष्णवर्णेचकृष्णांबरसमन्विते ॥
सर्वानाकर्षयद्वंद्वंशीघ्रंवशंकुरुद्वयम् ॥ ४४ ॥

लाइतिकान्यकुब्जभाषाप्रसिद्धतरोःकाष्ठैस्तंप्रज्वाल्य तेनतत्पात्रेदीपंकृत्वाहरिद्रारसकृतेत्रिकोणषट्कोणचतुष्कोणात्मकेयंत्रेमध्येलाजान्प्रक्षिप्यतदुपरिदीपपात्रंस्थापयित्वादपिकालरात्रिमावाह्यसावरणामिष्ट्वाखर्परंदीपोपरिधृत्वांजनंपातयेत् ॥ तदंजनमादायपश्चिमाभिमुखः शतत्रयमनेनमंत्रेणमंत्रयेत् ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ मंत्रोयथा–ॐऐंक्लीं ह्रींश्रींग्लौंब्लूंहसौःनमः कह्लेश्वरिसर्वान्मोहय २ कृष्णेकृष्णवर्णेकृष्णांबरसमन्विते सर्वा

नाकर्षय २ शीघ्रंवशंकुरु २ ऐंह्रींक्लींश्रींइति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ततोदीपाद्देवीमात्मनिसंयोज्यतत्कज्जलंभौमवारेनवनीतमर्द्दितंपात्रेसंस्थाप्यतदग्रेवह्निंसंस्थाप्यसंस्कृत्यमधूकपुष्पैरष्टोत्तरशतंमूलेनहुत्वाकुमारबिटुकास्त्रियोभो

वाग्भवागिरिजाकामश्रीबीजांतोमहामनुः ॥ वसुसायकवर्णोयमंजनस्याभिमंत्रणे ॥ ४५॥ दीपादा
त्मनिसंयोज्यदेवतामंजनंपुनः ॥भौमवारेसमभ्यर्च्यनवनीतेनमर्दयेत् ॥ ४६ ॥ मूलेनाष्टोत्तरशतंपु
नर्होमंसमाचरेत्॥ मधूककुसुमैःसाष्टशतंवह्नौसुसंस्कृते ॥ ४७ ॥ कुमारींबटुकंनारींभोजयेन्मधुरा
न्वितम् ॥ तेनांजनेनरचिततिलकोमंत्रिसत्तमः ॥४८ ॥ दर्शनादेववशयेन्नरनारीनरेश्वरान् ॥ दुग्धे
नादौप्रदत्तंतन्नराणांवशकारकम् ॥ ४९ ॥ तेनस्पृष्टोनरोनूनंदासःस्प्रष्टुर्भवेत्सदा॥वशीकरणमाख्या
तंस्तंभनंप्रोच्यतेऽधुना ॥ ५० ॥ हरिद्रारंजितेवस्त्रेलिखेद्यंत्रमिदंशुभम्॥ निशागोरोचनाकुष्ठांजनै
र्गोमूत्रमर्दितैः॥ ५१ ॥

जयेत् ॥ तदंजनकृततिलकोजगद्वशयेदित्यादिफलंस्पष्टम् ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ स्तंभनमाह ॥ हरिद्रेति ॥ ५१ ॥

गगनक्षोण्यौहलौ ॥ चंद्रोबिंदुः ॥ तेनह्लांह्लींह्लूंइति ॥ अंतिमःक्षः भगीएयुतःक्षे॥ यथा–रवौहरिद्रारोचनाकुतद्व
रैर्गोमूत्रपिष्टैर्हरिद्रारंजितेवस्त्रेऽष्टदलंकृत्वामुकंस्तंभयेतिमध्ये ॐ ॐग्लौंग्लौंचटचटेतिवर्णान्दलेषुचालिखेत् ॥
स्वंपीतवस्त्रंसूत्रेणसंवेष्ट्यकोकिलतरोःसप्तकंटकैर्विद्ध्वार्कपत्रैः संवेष्ट्यवल्मीकरंध्रेप्रक्षिप्यमेषमूत्रमुपरिसिक्त्वा रंध्रोप

लिखेदष्टदलंपद्मंरिपुनामाढ्यकार्णिकम् ॥ दलेषुविलिखेत्तारद्वयंभूबीजयुग्मकम् ॥९२॥ चटद्वयंत
तोयंत्रंपोतसूत्रेणवेष्टयेत् ॥कोकिलाख्यतरोःसप्तकंटकैःपरिकीलितम् ॥९३॥ भानुवृक्षदलैःसम्यग्वे
ष्टितंनिःक्षिपेत्पुनः ॥वाल्मीकरंध्रेमेषस्यमूत्रेणोपरिपूरयेत्॥९४ ॥ अश्मानंरंध्रवदनेनिधायाश्मस्थि
तःसुधीः॥सहस्रंप्रजपेन्मंत्रंनिशाचरदिशामुखः॥९५ ॥ निशयानिर्मितैरक्षैःसमंत्रःप्रोच्यतेधुना॥प्रण
वोगगनक्षोण्यौचंद्रदीर्घत्रयान्वितौ।९६।कामाक्षिमायावर्णौतेरूपिणीतिपदंततः।सर्वान्तेचमनोहारि
ण्यंतेस्तंभययुग्मकम्।९७।रोधयद्वितयंपश्चान्मोहयद्वितयंपुनः॥दीर्घत्रयाढ्यकामस्यबीजंकामोंति
मोभगी।९८।कान्हेश्वरिततोवर्मंत्रयंपंचाशदक्षरः ॥प्रोक्तोमंत्रःप्रजप्तेस्मिञ्छत्रूणांस्तंभनंभवेत् ॥९९॥

रिशिलांसंस्थाप्यतत्रस्थितोऽमुंमंत्रंहरिद्रामाणिभिःसहस्रंजपेन्नैर्ऋत्याभिमुखः ॥ मंत्रोयथा–ॐह्लांह्लींह्लूं कामाक्षिमा
यारूपिणिसर्वमनोहारिणिस्तंभय २ रोधय २ मोहय २ क्लांक्लींक्लूंकामाक्षेकान्हेश्वरिहुंहुंहुंइति ॥ एवंकृते

रिपुस्तंभः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ मोहनमाह ॥
रवाविति ॥ अर्कमन्मथैर्द्वादशकामबीजैः ॥ यथा–रविवारेहरिद्रांनारीदुग्धेनपिष्ट्वातद्रसेनभूर्जपत्रमध्येकामबी

रवौहरिद्रामानीयपिष्ट्वादुग्धेनयोषितः॥तद्रसेनलिखेद्भूर्जेवृत्तमंतःस्मरान्वितम् ॥ ६० ॥ तद्वृत्तंवेष्टये
त्कामबीजैर्दशभिरादरात् ॥ पुनर्वृत्तंप्रकल्प्याथवेष्टयेदर्कमन्मथैः ॥ ६१ ॥ विरच्याथपुनर्वृत्तंवेष्टये
त्षोडशस्मरैः ॥ तस्योपरिष्टात्षट्कोणंकोणेषुमदनान्वितम् ॥ ६२ ॥ वाग्बीजमध्येतत्सर्वंयंत्रंमो
हनकारकम्॥ उपविश्याथतद्यंत्रेदशवर्णमनुंजपेत् ॥ ६३ ॥

जयुतंवृत्तंकृत्वादशकामबीजैः संवेष्ट्यपुनर्वृत्तंकृत्वाद्वादशकामबीजैः संवेष्ट्यपुनर्वृत्तंकृत्वाषोडशकामबीजैः संवे
ष्ट्योपरिकामबीजयुक्षट्कोणंकृत्वासर्ववाग्बीजमध्यस्थंकुर्यात् ॥ तद्यंत्रोपरिस्थित्वापंचादिनंप्रत्यहंसहस्रंदशाक्षरंज

पेत् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ मंत्रोयथा–ॐकामायक्लींक्लीं कामिन्यैक्लीमिति ॥ जपदशांशेनतिलतैलेनैवजुहुयात् ॥ तद्भस्मनातिलकेनतद्यंत्रधारणेनचाविश्वंमोहयेत् ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ आकर्षणमाह ॥

ङेंतःकामःकामबीजंकामिन्यैकामसंपुटः ॥ताराद्योदशवर्णोयंमनुर्लोकविमोहनः ॥ ६४ ॥ पंचाहंप्रजपेन्मंत्रंप्रत्यहंक्रुद्धमानसः ॥ तद्दशांशंप्रजुहुयात्तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ ६५ ॥ होमोत्थभस्मनाकुर्वंस्तिलकंनरसत्तमः ॥ मोहयेदखिलंविश्वंतद्यंत्रस्यापिधारणात् ॥ ६६ ॥ उक्तंमोहनमाकर्षंवक्ष्येकृष्णाष्टमीदिने ॥ भूतेवाभूमिजन्मार्कयुक्तेप्रातर्जलांतरे ॥६७॥ नाभिदघ्नेस्थितोमूलंसहस्रंसशतंजपेत् ॥ ततोगृहंसमागत्यतैलाभ्यक्तकलेवरः ॥ ६८ ॥ पीठादावंजनैःकृत्वारूयाकारंवानराकृतिम् ॥ इष्ट्वालज्जावतीपत्रैःप्रोक्षेत्तन्मूलजैरसैः ॥ ६९ ॥ तदग्रेप्रजपेच्चत्वारिंशदक्षरकंमनुम् ॥तारोनमःकालिकायैसर्वाकर्षपदंततः ॥ ७० ॥ रतिवायूभौतिकस्थावमुकीमितिवर्णतः ॥ आकर्षयद्वयंशीघ्रमानयद्वितयंततः ॥ ७१ ॥

उक्तमिति ॥ लज्जावतीलज्जालुः ॥ स्पर्शमात्रेणयत्पत्राणिसंकुचंतिसालज्जालुः ॥ रतिवायूणयौभौतिकस्थौऐयुतौ ॥ तेनण्यै ॥ आकर्षणमनुश्चत्वारिंशद्वर्णः ॥ प्रयोगश्च–कृष्णाष्टम्यांकृष्णचतुर्दश्यांवाकुजरव्यन्यतरयु

क्तायांप्रातर्नाभिमात्रेजलेस्थित्वा मूलमेकादशशतंप्रजप्य गृहमागत्यशरीरंतैलेनाभ्यज्यपीठंजैर्नराकारंयोषिदाकारंवाविलिख्यलज्जावतीपत्रैस्तंसंपूज्यलज्जावतीमूलरसेनसंप्रोक्ष्यतदग्रेऽमुंमंत्रंषष्ट्याधिकंशतंजपेत् ॥ मन्त्रो यथा–ॐनमः कालिकायैसर्वाकर्षण्यैअमुकीमाकर्षय २ शीघ्रमानय २ आंह्रींक्रोंभद्रकाल्यैनमःइति ॥ ततःपञ्चाशत्कर

पाशोमायांकुशंभद्रकाल्यैहृदयमंततः ॥ चत्वारिंशल्लिपिर्मंत्रःप्रोक्तआकर्षणक्षमः ॥ ७२ ॥ शतंषष्ट्याधिकंजप्त्वालोहितैःकरवीरजैः ॥पंचाशत्प्रमितैर्मंत्रीपूजयेल्लिखिताकृतिम् ॥७३॥ मातृकावर्णमेकैकंतन्नामाकर्षयद्वयम् ॥ नमइत्यभिसंजप्यपुष्पमेकैकमर्पयेत्॥७४॥धूपदीपनिवेद्यानिकृत्वाहोमंसमाचरेत् ॥ चणकैराज्यसंमिश्रैराकर्षमनुनाशतम् ॥ ७५ ॥ कृष्णकार्पाससूत्रस्यकुमारीनिर्मितस्यच ॥ गुणंदेहमितंकृत्वाअष्टाविंशतितंतुभिः ॥ ७६ ॥ आकर्षमनुनादद्याद्ग्रंथीनष्टोत्तरंशतम् ॥ तद्दोरकेधृतेशीघ्रमायातिस्त्रीनरोपिवा ॥ ७७ ॥

वीरपुष्पैःअंअमुकीम् आकर्षय २ नमःआंअमुकीमित्यादिपंचाशद्वर्णपूर्वकमेतज्जपंस्तमाकारंपूजयेत् ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ धूपदीपनैवेद्यंकृत्वातदग्रेऽग्निंप्रतिष्ठाप्यतत्राज्याक्तचणकैःशतमधुनोक्तमनुनाहुत्वाकुमारिकार्त्तितेनकृष्णकार्पाससूत्रेणाष्टाविंशतितंतुनिर्मितंस्वदेहामितंदोरकंकृत्वा कर्षमंत्रेणा

ष्टोत्तरशतंग्रंथीन्दत्त्वातद्धारणान्नरंनारींचाकर्षतीति ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ उच्चाटनमाह ॥ शून्यात् ॥ कुक्कुटासनलक्षणमंतेवक्तव्यम् ॥ ७९ ॥ ८० ॥ मंत्रांतरमाह ॥ तारइति ॥ भूधरोवः ॥ भृगुःसः ॥अर्कोमः ॥ संव

त्रिरात्राद्ग्रामभध्यस्थोन्यदेश्योनवरात्रतः ॥उक्तमाकर्षणमिदमुच्चाटनमथोच्यते ॥ ७८ ॥शून्यागारे
चतुर्दश्यांकृष्णायांकुक्कुटासनः ॥यमाशावदनोमुक्तकचोनीलांबरावृतः।७९।ग्रंथिसंयुतयामौंज्या
रज्ज्वामंत्रमिमंजपेत् ॥सहस्रद्वयसंख्यातंशबर्य्योदेवतांस्मरन् ॥८० ॥ तारोभूधरभृग्वर्कसंवर्ताःक्रि
ययान्विताः॥ प्रत्येकंदीपिकाचंद्रयुक्ताबीजचतुष्टयम्॥८१॥कालिरात्रिमहाध्वांक्षिपदांतेमुकमुच्चरेत्
आशूच्चाटययुग्मंतुछिंधिभिंधिशुचिप्रिया ॥८२॥ प्रासादबीजंकामाक्षिसृण्यंतोमनुरीरितः॥ षट्त्रिं
शद्वर्णसंयुक्तःशीघ्रमुच्चाटकोरिपोः ॥ ८३ ॥

र्तक्षः ॥ एतेचत्वारःप्रत्येकंक्रिययालकारेणयुतास्तथादीपिकाचंद्रयुताऊबिंदुयुताश्चत्वारिबीजानि ॥ तेनव्लूंस्लूंम्लूं क्ष्लूं ॥ ८१ ॥ शुचिप्रियास्वाहा ॥ ८२ ॥ प्रासादबीजंहौं ॥ सृणिःक्रों ॥ ८३ ॥

प्रयोगोयथा-कृष्णचतुर्दश्यांशून्यगृहेनीलवस्त्रावृतोमुक्तकच्छामुक्तशिखोदक्षिणामुखःकुक्कुटासनेनोपविश्यग्रंथियुक्तयामुंजरज्ज्वानिशिसहस्रद्वयममुंमंत्रंजपेत् ॥ मंत्रोयथा–ॐब्लूंस्लूंम्लूंक्ष्लूंकालरात्रिमहाध्वांक्षिअमुकमाशूच्चाटय२ छिंधि २ भिंधिस्वाहाहौंकामाक्षिक्रोंमिति ॥ ततःशतद्वयमनेनैवमंत्रेणसर्षपैर्हुत्वातैलोदकयुतेनसर्षपपिण्याकेनतेनमनुनाबलिंदद्यात् ॥ ८४ ॥ एवंसप्ताहंकृतेउच्चाटनासिद्धिः ॥८५॥ विद्वेषणमाह ॥ ययोरिति ॥ जन्मतरवोजन्म

जपांतेतद्दशांशेनसर्षपैर्जुहुयान्निशि ॥ ततःसर्षपपिण्याकैस्तत्तैलोदकसंयुतैः ॥ ८४ ॥ बलिंप्रदद्यात्तेनैवंमनुनाविशिखोभुवि ॥एवंकृतेसप्तरात्रंदेशाद्दूरंव्रजेदरिः॥८५॥ययोर्विद्वेषमन्विच्छेत्तयोर्जन्मतरूद्भवम् ॥ फलकद्वितयंकृत्वातत्राकारौतयोर्लिखेत् ॥८६॥विषाष्टकेनवालेयीदुग्धाक्तेनाभिधान्वितम्।'तत्स्पृष्ट्वाप्रजपेन्मंत्रंसहस्रमधियामिनि ॥८७॥वियत्पावकमन्बिंदुयुग्ग्लौंखंमनुहंसयुक्॥निद्राग्निमनुबिंदुस्थाभगवत्यन्तेतिदंडधा ॥ ८८ ॥

वृक्षाः ॥ तेउक्ताः ॥ ८६ ॥ विषाष्टकमंतेवक्ष्याति ॥ वालेयीरासभी ॥ अधियामिनिरात्रौ ॥ ८७ ॥ मंत्रमाह ॥वियदिति ॥ पावकमान्बिंदुयुक् रऔंबिंदुयुतंवियत्हः ह्रौं ॥ ग्लौं ॥ इंदुयुक्मनुरौंहंसःसःतैर्युक्तंखंहं हसौं ॥ अग्निमनुबिंदुस्था निद्राभःभ्रौं ॥ ८८ ॥

रमाश्रीं ॥ ८९ ॥ कवचहुं ॥ ९० ॥ सौरिभोमहिषः ॥ गन्धर्वोऽश्वः ९१ ॥ प्रयोगः प्रीतिमतोर्द्वयोर्जन्मवृक्षोत्थेफलकद्वयेतत्ररासभीक्षरिमार्दितेनाविषाष्टकेनोपरिनामयुक्तमाकारद्वयांवीलिख्यतत्स्पृष्ट्वानिशि सहस्रममुंमंत्रंजपेत्॥मंत्रो यथा–ॐह्रौंग्लौंहूसौंश्रौंभगवतिदंडधारिणिअमुकममुकंशीघ्रंविद्वेषय २ रोधय २ भंजय २ श्रींह्रींराज्यैॐहुंहुंहुं

रिण्यन्तेऽमुकममुकंशीघ्रंविद्वेषयद्वयम्॥रोधयद्वितयंपश्चाद्भंजयद्वितयंरमा ॥ ८९ ॥ मायाराज्ञीचतुर्थ्यंताप्रणवंकवचत्रयम् ॥ पंचाशदक्षरोमंत्रस्तारादिःसर्वसिद्धिदः ॥ ९० ॥ जपांतेफलकद्वंद्वंबद्धारज्ज्वापरस्परम् ॥ खरसैरिभगंधर्वपुच्छरोमसमुत्थया ॥९१॥वल्मीकरंध्रेनिखनेत्पुनस्तावज्जपेन्नरः॥ सप्ताहाज्जायतेवैरंतयोःप्रीतिमतोरपि ॥ ९२॥ मारणंतुप्रकुर्वीतब्राह्मणेतरविद्विषि ॥ तच्छुद्ध्यर्थंजपेन्मूलमंत्रमष्टोत्तरंशतम् ॥ ९३ ॥ कृष्णांगारचतुर्दश्यांगोपुराद्वाचतुष्पथात् ॥ श्मशानाद्वासमानीय मृदंतत्रविनिःक्षिपेत् ॥ ९४ ॥

इति ॥ ततःखरमाहिषाश्वपुच्छरोमकृतयारज्ज्वातत् फलकद्वयंमिथोबद्ध्वा वल्मीकरंध्रेनिखायपुनर्मंत्रंसहस्रंजपेत् ॥ एवंविद्वेषणासिद्धिः ॥ ९२ ॥ मारणमाह ॥ मारणामिति ॥ तद्विप्रेनिषिद्धम् ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

विडंगंकृमिघ्नम् ॥ हयारिः करवीरः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ मारणमन्त्रमाह ॥ दीर्घेति ॥ तंद्रीमःदीर्घत्रयम् अग्निः रात्रीशो बिंदुस्तैर्युक्तः ॥ तेनम्रांम्रींम्रूं सृणिःक्रों ॥ ९९ ॥ ध्रुवादिःप्रणवादिः ॥ १०० ॥ उग्रावचा

विडंगानिहयार्य्यर्ककुसुमान्यपिमंत्रवित्॥तन्मृदापुत्तलींकुर्य्याच्छ्मशानेनिर्जनालये ॥ ९५ ॥ उपविश्यशिखामुक्तोनीलवस्त्रावृतोनिशि ॥तद्वक्षसिरिपोर्नामलिखित्वास्थापयेदसून् ॥ ९६ ॥ श्मशानवाससाच्छाद्यतैलाभ्यक्तामथार्चयेत्॥स्नापयेत्पुत्तलींतांतुखराश्वमहिषासृजा ॥ ९७ ॥ रक्तचंदनधत्तूरकुसुमान्यर्पयेत्ततः॥मारणाख्येनमनुनाकुर्य्याद्धोमंचपूजनम्॥ ९८ ॥ दीर्घत्रयाग्निरात्रीशयुक्तातंद्रीमृतीश्वरि ॥कृंकृत्यंतेऽमुकंशीघ्रंमारयद्वितयंसृणिः ॥ ९९ ॥ त्रयोविंशत्यक्षराढ्योध्रुवादिर्मारणेमनुः॥अनेनमनुनापूजांकृत्वाहोमंसमाचरेत् ॥ १०० ॥ उग्रासर्षपभल्लातोन्मत्तबीजैःसुमिश्रितैः ॥ श्मशानाग्नौशतंसाग्रंच्छित्वातत्प्रतिमाशिरः ॥ १०१ ॥ तदग्नौप्रदहेन्मंत्रीपूर्णाहुतिमथाचरेत्॥ एवंकृतेत्रिसप्ताहाद्रिपुःस्यात्सूर्यजातिथिः ॥ १०२ ॥

उन्मत्तोधत्तूरः ॥ सूर्यजातिथिर्यमाऽतिथिःस्यात् ॥ म्रियतेइत्यर्थः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

प्रयोगश्च-कुजवारयुतायांकृष्णचतुर्दश्यांपुरद्वारचतुष्पथश्मशानान्यतमस्मान्मृदमानीयविडंगकरवीरार्कपुष्पयुतांकृत्वाश्मशानस्थोविशिखोनीलवस्त्रोनिशितयामृदापुत्तलींहृदितन्नामयुतांकृत्वाप्राणान्प्रतिष्ठाप्यश्मशानवस्त्रेणाच्छाद्यतैलेनाभ्यज्यखराश्वमहिषरुधिरेणसंस्नाप्यरक्तचंदनेनविलिप्यधत्तूरपुष्पैः संपूज्यतदग्रेश्मशानाग्निंसंस्थाप्यतदग्नौवचासर्षपभल्लातकधत्तूरबीजमिश्रितैरष्टोत्तरशतंजुहुयान्मंत्रेण ॥ यथाॐभ्रांभ्रींभ्रूंमृतीश्वारिकृंकृत्येअमुकंशीघ्रंमा

कर्मस्वेवंविधेष्वादौभैरवायबलिंदिशेत्॥माषान्नपलमद्याद्यैरेवंसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १०३ ॥योमंत्री
विदधातीहकर्मतेनप्रयत्नतः ॥ आत्मावनायसंसेव्योनरसिंहोहरोपिवा ॥ १०४ ॥ अथचंडीविधा
नम्॥अथोनवाक्षरंमंत्रंवक्ष्येचंडीप्रवृत्तये ॥वाङ्मायामदनोदीर्घालक्ष्मीस्तंद्रीश्रुतींदुयुक्॥॥ १०५ ॥
डायैसदृग्जलंकूर्मद्वयंझिंटीशसंयुतम्॥नवाक्षरोस्यऋषयोब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ १०६ ॥

रय २ क्रौंइति ॥ ततःपुत्तलीशिरश्छित्वाऽग्नौहुत्वापूर्णाहुतिंकुर्यात् ॥ एवमेकविंशतिरात्र्यंतेरिपुर्म्रियतइति ॥ ततःप्रायाश्चित्तंकुर्यात् ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ सप्तशतीपाठांगभूतंचंडीमन्त्रमाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ मायाह्रीं॥मदनःक्लीं ॥ दीर्घालक्ष्मीश्च ॥ तंद्रीमः श्रुतींदुयुग् उबिंदुयुक्तः मुं ॥ १०५ ॥ डायैस्वरूपम् ॥ सदृग्जलंत्वि ॥ कूर्मद्वयं चयुग्मंझिंटीशसंयुतंएयुतं च्चे ॥ १०६ ॥

महाकालमिहालक्ष्ममिहासरस्वत्योदेवताः ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ भगःसूर्यः ॥ १०९ ॥ ११० ॥ एकादशन्यासानाह ॥ ततइति ॥ पूर्वोक्तमार्गतःप्रथमपटलोक्तविधिना ॥ १११ ॥ सारस्वतन्यासमाह ॥ अथेति ॥ ११२ ॥

छंदांस्युक्तानिमुनिभिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः ॥ देव्यःप्रोक्तामहापूर्वाःकालीलक्ष्मीःसरस्वती॥१०७॥
नंदाशाकंभरीभीमाःशक्तयोस्यमनोःस्मृताः ॥ स्याद्रक्तदंतिकादुर्गाभ्रामर्य्योर्बीजसंचयः ॥१०८॥
अग्निर्वायुर्भगस्तत्त्वंफलंवेदत्रयोद्भवम्॥सर्वाभीष्टप्रसिद्ध्यर्थविनियोगउदाहृतः॥ १०९ ॥ ऋषि
श्छंदोदैवतानिशिरोमुखहृदिन्यसेत्॥शक्तिबीजानिस्तनयोस्तत्त्वानिहृदयेपुनः॥११०॥ ततएका
दशन्यासान्कुर्वीतेष्टफलप्रदान् ॥ प्रथमोमातृकान्यासःकार्य्यःपूर्वोक्तमार्गतः १११ ॥ कृतेनयेनदेव
स्यसारूप्यंयातिमानवः॥ अथद्वितीयंकुर्वीतन्याससारस्वताभिधम् ॥ ११२ ॥ बीजत्रयंतुमंत्राद्यं
तारादिहृदयांतिकम् ॥ क्रमादंगुलिषुन्यस्यकनिष्ठाद्यासुपंचसु ॥ ११३ ॥ करयोर्मध्यतःपृष्ठेमणि
बंधेचकूर्परे ॥ हृदयादिषडंगेषुविन्यसेज्जातिसंयुतम् ॥ ११४ ॥

बीजेति ॥ मन्त्रादिमंबीजत्रयंप्रणवादिनमोंतंकनिष्ठादिनवस्थानेषुन्यस्यहृदयादिषुजातियुक्तंन्यसेत् ॥ यथा–ॐऐंह्रींक्लींनमःकनिष्ठिकायामित्यादि० ॥ ॐऐंह्रींक्लींहृदयायनमइत्याद्यंगेष्वपि ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

फलमाह ॥ अस्मिन्निति ॥ ११५ ॥ मायेति ॥ ह्रींब्राह्मीपूर्वतोमांपातुइत्यादि० ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ एतत्फलमाह॥ तृतीयेइति ॥ चतुर्थन्यासमाह ॥ नंदजेति॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ फलमाह ॥ तुर्य्यमिति ॥ पञ्चमंन्यासमाह ॥ अथेति ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

अस्मिन्सारस्वतेन्यासेकृतेजाडचंविनश्यति ॥ ततस्तृतीयंकुर्वीतन्यासंमातृगणान्वितम् ॥ ११५॥ मायाबीजादिकाब्राह्मीपूर्वतःपातुमांसदा ॥ माहेश्वरीतथाग्नेय्यांकौमारीदक्षिणेऽवतु ॥ ११६ ॥ वैष्णवीपातुनैर्ऋत्येवाराहीपश्चिमेऽवतु ॥ इंद्राणीपावकेकोणेचामुंडाचोत्तरेऽवतु॥ ११७॥ ऐशानेतु महालक्ष्मीरूर्द्धंव्योमेश्वरीतथा॥सप्तद्वीपेश्वरीभूमौरक्षेत्कामेश्वरीतले॥ ११८॥तृतीयेस्मिन्कृतेन्यासे त्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥ न्यासंचतुर्थंकुर्वीतनंदजादिसमन्वितम् ॥११९॥ नंदजापातुपूर्वांगंकमलांकुशमंडिता ॥ खड्गपात्रकरापातुदाक्षिणेरक्तदंतिका ॥ १२० ॥ पृष्ठेशाकंभरीपातुपुष्पपल्लवसंयुता॥ धनुर्बाणकरादुर्गावामेपातुसदैवमाम् ॥ १२१ ॥ शिरःपात्रकराभीमामस्तकाच्चरणावधि ॥ पादादिमस्तकंयावद्भ्रामरीचित्रकांतिभृत् ॥ १२२॥ तुर्य्यंन्यासंनरःकुर्य्याज्जरामृत्यूव्यपोहति ॥ अथकुर्वीतब्रह्माख्यंन्यासंपंचममुत्तमम् ॥ १२३॥ पादादिनाभिपर्य्यंतंब्रह्मापातुसनातनः ॥ नाभेर्विशुद्धिपर्य्यंतंपातुनित्यंजनार्दनः ॥ १२४ ॥

॥ १२५ ॥१२६ ॥ फलमाह ॥ कृतेस्मिन्निति ॥ १२७ ॥ षष्ठमाह॥मध्यमिति॥अष्टादशभुजामहालक्ष्मीर्ममध्यंपां
त्वित्यादिप्रयोगः ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥सप्तमन्यासमाह ॥ मूलेति॥ ॐऐंनमःब्रह्मरंध्रेइत्यादिप्रयोगः॥१३१॥

विशुद्धेर्ब्रह्मरंध्रांतंपातुरुद्रस्त्रिलोचनः॥ हंसःपातुपदद्वंद्वंवैनतेयःकरद्वयम् ॥१२५॥चक्षुषीवृषभःपातुस
र्वांगानिगजाननः॥परापरौदेहभागौपात्वानंदमयोहरिः॥१२६॥ कृतेऽस्मिन्पंचमेन्यासेसर्वान्कामा
नवाप्नुयात्॥षष्ठंन्यासंततःकुर्य्यान्महालक्ष्म्यादिसंयुतम्॥१२७ ॥मध्यंपातुमहालक्ष्मीरष्टादशभुजा
न्विता ॥ऊर्द्ध्वंसरस्वतीपातुभुजैरष्टाभिरूर्जिता ॥ १२८॥ अधःपातुमहाकालीदशबाहुसमन्विता ॥
सिंहोहस्तद्वयंपातुपरंहंसोक्षियुग्मकम्।१२९॥महिषंदिव्यमारूढोयमःपातुपदद्वयम्॥महेशश्चंडिका
युक्तःसर्वांगानिममावतु॥१३०॥षष्ठेस्मिन्विहितेन्यासेसद्गतिंप्राप्नुयान्नरः॥मूलाक्षरन्यासरूपंन्यासं
कुर्वीतसप्तमम्॥१३१॥ब्रह्मरंध्रेनेत्रयुग्मेश्रुत्योर्नासिकयोर्मुखे।पायौमूलमनोर्वर्णास्ताराद्यान्नमसान्वि
तान्॥१३२॥विन्यसेत्सप्तमेन्यासेकृतेरोगक्षयोभवेत्॥पायुतोब्रह्मरंध्रांतंपुनस्तानेवविन्यसेत्।१३३।
कृतेस्मिन्नष्टमेन्यासेसर्वंदुःखंविनश्यति॥कुर्वीतनवमंन्यासंमंत्रव्याप्तिस्वरूपकम्॥१३४ ॥

॥ १३२ ॥ एतन्न्यासफलंरोगक्षयः ॥ पायुमारभ्यब्रह्मरंध्रांतंवर्णन्यासोष्टमः ॥ १३३॥ एतत्फलंदुःखनाशः॥१३४॥

नवममाह ॥ मस्तकेति ॥ १३५ ॥ शिरसः पादांतमष्टवारं मूलं विन्यसेत् ॥ एवं पादाच्छिरोंतमष्टशः एवं पुरो दक्षिण भागे पृष्ठे वामभागेप्येवं प्रत्यहमष्टशो मूलं न्यसेत् ॥ एतत्फलं देवत्वप्राप्तिः ॥ १३६ ॥ दशममाह ॥ मूलेति ॥ मूलं हृद

मस्तकाच्चरणं यावच्चरणान्मस्तकावधि॥ पुरो दक्षे पृष्ठदेशे वामभागेष्टशो न्यसेत्॥ १३५॥ मूलमंत्रकृतो न्यासो नवमो देवताप्तिकृत्॥ ततः कुर्वीत दशमं षडंगन्यासमुत्तमम् ॥ १३६॥ मूलमंत्रं जातियुक्तं हृदयादिषु विन्यसेत्॥ कृतेस्मिन्दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत्॥ १३७॥ दशन्यासोक्तफलदं कुर्य्यादेकादशं ततः॥ खड्गिनी शूलिनीत्यादि पठित्वा श्लोकपंचकम्। १३८। आद्यं कृष्णतरं बीजं ध्यात्वा सर्वांगके न्यसेत्। शूलेन पाहि नो देवीत्यादि श्लोकचतुष्टयम्। १३९। पठित्वा सूर्य्यसदृशं द्वितीयं सर्वतो न्यसेत्॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादि श्लोकपंचकम् १४० पठित्वा स्फटिकाभासं तृतीयं स्वतनौ न्यसेत्॥ ततः षडंगं कुर्वीत विभक्तैर्मूलवर्णकैः। १४१। एकेनैकेन चैकेन चतुर्भिर्युगलेन च। समस्तेन च मंत्रेण कुर्य्यादंगानि षट् सुधीः ॥ १४२। शिखायां नेत्रयोः श्रुत्योर्नसोर्वक्त्रे गुदे न्यसेत्॥ मंत्रवर्णान्समस्तेन व्यापकं त्वष्टशश्चरेत्॥ १४३॥

यायनमः इत्यादिकं जातियुक्तं षडंगेषु न्यसेत् ॥ एतत्फलं जगद्वश्यत्वम् ॥ १३७ ॥ एकादशमाह ॥ खड्गिनीति ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ षडंगमाह ॥ एकेनैकेनेति ॥ १४२ ॥ वर्णन्यासमाह॥ शिखायामिति ॥ नेत्रश्रुतिनासामुखगुदौ अष्टशोऽष्टवारम् ॥ १४३ ॥

महाकालीध्यानमाह ॥ खड्गमिति ॥ खड्गचक्रबाणशिरःशंखान्दक्षेषुदधतीम् ॥ इतराणिवामेषु ॥ आस्यपाददशकांदशवक्त्रां दशपादांदशभुजांत्रिंशन्नेत्रामित्यर्थः ॥हरौसुप्तेकमलासनोब्रह्मामधुकैटभौहंतुंयामस्तौत् तुष्टाव ॥ हरेर्निद्रावैष्णवीमायेत्यर्थः ॥ तदुक्तम् ॥ ययात्वयाजगत्स्रष्टाजगत्पात्यत्तियोजगत् ॥ सोपिनिद्रावशंनीतइति ॥ ॥ १४४ ॥ महालक्ष्मीध्यानमाह ॥ अक्षस्रगिति ॥ कुंडिकांकमंडलुम् ॥ जलजंशंखम् ॥ अक्षमालापद्मबाणखड्गवज्रगदाचक्रकमंडलुशंखादक्षेषु ॥ अन्येवामेषु ॥ सैरिभमर्दिनींमहिषासुरघातिनीं सरोजोद्भवांदेवदेहनिर्गततेजःसमुद्भवाम् ॥ १४५ ॥ महासरस्वतीध्यानमाह ॥ घंटेति ॥ शंखमुसलचक्रबाणादक्षेषु ॥ घंटाशूलहलधनूंषिवामेषु ॥ घनांतेति ॥ शरच्चंद्रसमप्रभाम् ॥ १४६ ॥

खड्गंचक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलंभुशुंडींशिरः शंखंसंदधतींकरैस्त्रिनयनांसर्वांगभूषावृताम्॥यामस्तौत्स्वपितेहरौकमलजोहंतुंमधुंकैटभंनीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकांसेवेमहाकालिकाम्॥ १४४॥अक्षस्रक्परशूंगदेषुकुलिशंपद्मंधनुःकुंडिकांदंडंशक्तिमसिंचचर्मजलजंघंटांसुराभाजनम्॥शूलपाशसुदर्शनेच दधतींहस्तैःप्रवालप्रभांसेवेसैरिभमर्दिनीमिहमहालक्ष्मींसरोजस्थिताम्॥ १४५॥ घंटाशूलहलानिशंखमुसलेचक्रंधनुःसायकंहस्ताब्जैर्दधतींघनांतविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवांत्रिजगतामाधारभूतांमहापूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजेशुंभादिदैत्यार्दिनीम् ॥ १४६ ॥

हेमरेतसिवह्नौ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ सबिंद्विति॥ ॐनंनंदजायैनमइत्यादिरूपावक्ष्यमाणाः

एवंध्यात्वाजपेल्लक्षचतुष्कंतद्दशांशतः ॥पायसान्नेनजुहुयात्पूजितेहेमरेतसि ॥१४७॥ जयादिशक्तिभिर्युक्तेपीठेदेवींयजेत्ततः ॥तत्त्वपत्रावृतत्र्यस्रषट्कोणाष्टदलान्विते ॥ १४८ ॥त्रिकोणमध्येसंपूज्यध्वात्वातांमूलमंत्रतः॥पूर्वकोणेविधातारंसुरयासहपूजयेत्॥ १४९ ॥विष्णुंश्रियाचनैर्ऋत्येवायव्येतूमयाशिवम्॥उदग्दक्षिणयोःसिंहंमहिषंचक्रमाद्यजेत्॥ १५० ॥षट्सुकोणेषुपूर्वादिनंदजांरक्तदंतिकाम्। शाकंभरींतथादुर्गांभीमांचभ्रामरींयजेत्॥ १५१॥सबिंदुनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्याश्चनमोंतिकाः ॥ नंदजाद्यायजेच्छक्तीर्वक्ष्यमाणाअपीदृशीः ॥ १५२ ॥ अष्टपत्रेषुब्रह्माणीपूज्यामाहेश्वरीपरा॥कौमारीवैष्णवीचाथवाराहीनारसिंह्यपि॥ १५३॥पश्चादैन्द्रीचचामुंडातथातत्त्वदलेष्विमाः ॥ विष्णुमायाचेतनाचबुद्धिर्निद्राक्षुधाततः ॥ १५४ ॥ छायाशक्तिःपरातृष्णाक्षांतिर्जातिश्चलज्जया ॥ शांतिःश्रद्धाकांतिलक्ष्म्यौधृतिर्वृत्तिःश्रुतिःस्मृतिः ॥ १५५ ॥

अपीदृशीःसबिंदुनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्यानमोंतायजेत् ॥ ॐब्रह्माण्यैनमइत्यादि० ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ तत्त्वदलेषुचतुर्विंशतिपत्रेषु विष्णुमायाद्याः ॥ १५४ ॥ १५५ ॥

॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८॥ अग्नितिथिंप्रतिपदम् ॥ १५९ ॥ १६० ॥ चंडीस्तवस्यमार्कंडेयपुराणोक्तस्यऋष्यादीनाह

तुष्टिः पुष्टिर्दयामाताभ्रांतिःशक्तिरितिक्रमात् ॥बहिर्भूगृहकोणेषुगणेशःक्षेत्रपालकः ॥ १५६॥ बटुक
श्चापियोगिन्यःपूज्याइंद्रादिकाअपि ॥एवंसिद्धमनौमंत्रीभवेत्सौभाग्यभाजनम् ॥१५७॥ मार्कण्डे
यपुराणोक्तंनित्यंचंडीस्तवंपठन्॥पुटितंमूलमंत्रेणजपन्नाप्नोतिवांछितम् ॥ १५८ ॥ आश्विनस्यसि
तेपक्षेआरभ्याग्नितिथिंसुधीः॥अष्टम्यंतंजपेल्लक्षंदशांशंहोममाचरेत् ॥१५९॥ प्रत्यहंपूजयेद्देवींपठे
त्सप्तशतीमपि ॥ विप्रानाराध्यमंत्रीस्वमिष्टार्थंलभतेऽचिरात् ॥१६०॥ सप्तशत्याश्चरित्रेतुप्रथमेब्र
भूमुनि[1]ः॥ छंदोगायत्रमुदितंमहाकालीतुदेवता १६१॥वाग्बीजंपावकस्तत्त्वंधर्मार्थेविनियोजनम्॥
मध्यमेतुचरित्रेऽत्रमुनिर्विष्णु[2]रुदाहृता ॥१६२ ॥ उष्णिक्छंदोमहालक्ष्मीर्देवताबीजमद्रिजा ॥ वायु
स्तत्त्वंधनप्राप्त्यैविनियोगउदाहृतः ॥ १६३ ॥

सप्तशत्याइति ॥ प्रथमंचरित्रंमधुकैटभवधः ॥ १६१ ॥ मध्यमं महिषासुरवधः ॥ १६२ ॥ अद्रिजाह्रीं ॥ १६३ ॥

---

[1] अस्यश्रीप्रथमचरित्रस्यब्रह्माऋषिःगायत्रीछंदःमहाकालीदेवताऐंबीजमाग्निस्तत्त्वंधर्मार्थेजपेवि० ।

[2] अस्यश्रीमध्यमचरित्रस्यविष्णुऋषिःउष्णिक्छंदःमहालक्ष्मीर्देवताह्रींबीजंवायुस्तत्त्वंधनप्राप्त्यैजपेवि० ।

उत्तरंशुंभनिशुंभवधः ॥ १६४ ॥ कामःक्लीं ॥ १६५ ॥ सार्थस्मृतिअर्थस्मरणपूर्वकम् ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ यशश्चयैः

उत्तरस्यचरित्रस्यऋषिः[1]शंकरईरितः ॥ त्रिष्टुप्छन्दोदेवतास्यप्रोक्तामहासरस्वती ॥ १६४ ॥ कामोबी
जंरविस्तत्त्वंकामाप्त्यैविनियोजनम् ॥ एवंसंस्मृत्यऋष्यादीन्ध्यात्वापूर्वोक्तमार्गतः ॥ १६५ ॥ सार्थ
स्मृतिपठेच्चंडीस्तवंस्पष्टपदाक्षरम् ॥ समाप्तौतुमहालक्ष्मींध्यात्वाकृत्वाषडंगकम् ॥ १६६ ॥ जपेदष्टश
तंमूलंदेवतायैनिवेदयेत् ॥ एवंयःकुरुतेस्तोत्रंनावसीदतिजातुचित् ॥ १६७ ॥ चंडिकांप्रभजन्मर्त्यो
धनैर्धान्यैर्यशश्चयैः ॥ पुत्रैःपौत्रैरुतारोग्यैर्युक्तोजीवेद्बहूःसमाः ॥ १६८ ॥ अथशतचंडीविधानम् ॥
शतचंडीविधानंतुप्रवक्ष्येप्रीतयेनृणाम् ॥ नृपोपद्रवआपन्नेदुर्भिक्षेभूमिकंपने ॥ १६९ ॥ अतिवृष्ट्याम
नावृष्टौपरचक्रभयेक्षये ॥ सर्वेविघ्नाविनश्यंतिशतचंडीविधौकृते ॥ १७० ॥ रोगाणांवैरिणांनाशोधन
पुत्रसमृद्धयः ॥ शंकरस्यभवान्यावाप्रासादान्निकटेशुभम् ॥ १७१ ॥ मंडपद्वारवद्याद्यंकुर्य्यात्सध्वज
तोरणम् ॥ तत्रकुंडंप्रकुर्वीतप्रतीच्यांमध्यतोपिवा ॥ १७२ ॥

कीर्तिसमूहैः ॥ समावर्षाणि ॥ १६८ ॥ शतचंडीविधानमाह ॥ शतेति ॥ तत्रनिमित्तान्याह ॥ नृपोपद्रवइति १६९-१७२

---

[1] अस्यश्रीमदुत्तरचरित्रस्यरुद्रऋषिस्त्रिष्टुप्छंदःमहासरस्वतीदेवताक्लींबीजंसूर्यस्तत्त्वंकामाप्त्यैजपेवि० ।

अथप्रयोगः—शास्त्रोक्तविधिनाशंकरालयेभवान्यालयेवा मण्डपंवेदिमध्येनिर्माय प्रतीच्यांकुंडंमध्येवाकृत्वाकृतानित्यक्रियोमुककामःशतचंडीविधानमहंकरिष्यइतिसंकल्पंविधायमातृस्थापनंनांदीश्राद्धंविधायस्वस्तिवाचनंकृत्वा उक्तलक्षणान्दशविप्रान्मधुपर्कवस्त्रहेमदानादिनावृणुयात्॥तेचयजमानदत्तासनेषुदत्तमालाभिःसमाहिताःसुमनसो भगवतींस्मरंतः सप्तशतीमूलमंत्रेणवेद्यांकुंभंस्थापयित्वातत्रदुर्गामावाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्यतदग्रेप्रत्येकंदशकृत्वाः सप्तशतीमयुतंचनवार्णजपेयुः ॥हविष्यभोजनब्रह्मचर्यभूशयनास्पृश्यास्पर्शादिनियमांश्चचरेयुः ॥यजमानश्चद्विवर्षा

स्नात्वानित्यकृतिंवृणुयाद्दशवाडवान्। जितेंद्रियान्सदाचारान्कुलीनान्सत्यवादिनः ॥ १७३ ॥
व्युत्पन्नांश्चंडिकापाठरताँल्लज्जादयावतः ॥ मधुपर्कविधानेनवस्त्रस्वर्णादिदानतः॥१७४॥जपार्थमा
सनंमालांदद्यात्तेभ्योपिभोजनम् ॥ तेहविष्यान्नमश्नंतोमंत्रार्थगतमानसाः ॥१७५ ॥ भूमौशयानाः
प्रत्येकंजपेयुश्चंडिकास्तवम् ॥ मार्कंडेयपुराणोक्तंदशकृत्वःसुचेतसः ॥ १७६ ॥

द्याउक्तलक्षणाअधिकांगीमित्यादिदुर्लक्षणरहिताः कुमारीत्रिमूर्तिकल्याणादिनाम्नीर्दशकन्या भोजनवस्त्रहेमदानादिना मंत्राक्षरमयीमित्यादिमन्त्रेणावाह्यजगत्पूज्येत्यादिस्वस्वमन्त्रैःपूजयेत्॥एवंचत्वारिदिनानिजपंकुमारीपूजांचसमाप्यपंचमेह्निकुंडेआगमोक्तपूर्वविधिनावह्निंसंस्थाप्यपायसान्नादिभिरुक्तैर्द्रव्यैर्जुहुयुः ॥ सप्तशत्याःप्रतिश्लोकं दशवारंनवार्णेनायुतंचहोमसंख्या॥ एकैकोद्विजःसकृत् सप्तशतप्रतिश्लोकंसहस्रंमूलेनचजुहुयादित्यर्थः ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥

नवार्णंचंडिकामंत्रंजपेयुश्चायुतंपृथक् ॥ यजमानः पूजयेच्चकन्यानांदशकंशुभम्॥१७७॥द्विवर्षाद्या
दशाब्दांताःकुमारीःपरिपूजयेत् ॥नाधिकांगींनहीनांगांकुष्ठिनांचव्रणांकिताम् ॥ १७८ ॥ अंधांका
णांकेकरांचकुरूपांरोमयुक्ततनुम्॥ दासीजातांरोगयुक्तांदुष्टांकन्यांनपूजयेत्॥ १७९ ॥ विप्रांसर्वेष्टसं
सिद्ध्यैयशसेक्षत्रियोद्भवाम् ॥ वैश्यानांधनलाभायपुत्राप्त्यैशूद्रजांयजेत् ॥ १८० ॥ द्विवर्षासाकु
मार्य्युक्तात्रिमूर्तिर्हायनत्रिका॥चतुरब्दातुकल्याणीपंचवर्षातुरोहिणी ॥१८१॥ षडब्दाकालिकाप्रो
क्ताचंडिकासप्तहायनी॥ अष्टवर्षाशांभवीस्याद्दुर्गाचनवहायनी॥१८२॥सुभद्रादशवर्षोक्तास्तामंत्रैः
परिपूजयेत् ॥एकाब्दायाःप्रीत्यभावोरुद्राब्दास्तुविवर्जिताः॥ १८३ ॥ तासामावाहनेमंत्राःप्रोच्यंते
शंकरोदिताः॥मंत्राक्षरमयींलक्ष्मींमातॄणांरूपधारिणीम्॥१८४॥नवदुर्गात्मिकांसाक्षात्कन्यामावाह
याम्यहम् ॥ कुमारिकादिकन्यानांपूजामंत्रान्ब्रुवेऽधुना ॥ १८५ ॥ जगत्पूज्येजगद्वंद्येसर्वदेवस्वरू
पिणि ॥ पूजांगृहाणकौमारीजगन्मातर्नमोस्तुते ॥१८६॥ त्रिपुरांत्रिपुराधारांत्रिवर्गज्ञानरूपिणीम्॥
त्रैलोक्यवंदितांदेवींत्रिमूर्तिंपूजयाम्यहम् ॥१८७॥ कालात्मिकांकलातीतांकारुण्यहृदयांशिवाम् ॥
कल्याणजननींदेवींकल्याणींपूजयाम्यहम् ॥ १८८ ॥

॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनंतशक्तिकांलक्ष्मींरोहिणींपूजयाम्यहम् ॥१८९॥
कामचारांशुभांकांतांकालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदांकरुणोदारांकालिकांपूजयाम्यहम् ॥१९० ॥
चंडवीरांचंडमायांचंडमुंडप्रभंजनीम् ॥ पूजयामिमहादेवींचंडिकांचंडविक्रमाम् ॥ १९१ ॥ सदानं
दकरींशांतांसर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकांदेवींशांभवींपूजयाम्यहम्॥१९२॥ दुर्गमेदुस्तरेका
र्य्येभवार्णवविनाशिनि॥पूजयामिसदाभक्त्यादुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीम्॥१९३॥सुंदरींस्वर्णवर्णाभांसु
खसौभाग्यदायिनीम्॥सुभद्रजननींदेवींसुभद्रांपूजयाम्यहम्॥१९४॥एतैर्मंत्रैःपुराणोक्तैःस्नातांकन्यां
प्रपूजयेत्॥ गंधैःपुष्पैर्भक्ष्यभोज्यैर्वस्त्रैराभरणैरपि ॥१९५ ॥ वेद्यांविरचितेरम्येसर्वतोभद्रमंडले॥घटं
संस्थाप्यविधिवत्तत्रावाह्यार्चयेच्छिवाम् ॥१९६ ॥ तदग्रेकन्यकाश्चापिपूजयेद्ब्राह्मणानपि॥ उपचारै
स्तुविविधैःपूर्वोक्तावरणान्यपि॥१९७॥एवंचतुर्दिनंकृत्वापंचमेहोममाचरेत् ॥पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तै
द्राक्षारंभाफलैरपि॥१९८॥मातुलिंगैरिक्षुखंडैर्नारिकेलैःपुरैस्तिलैः।जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तु
भिः॥१९९॥सप्तशत्यादशावृत्त्याप्रतिश्लोकहुतंचरेत्।अयुतंचनवार्णेनस्थापिताग्नौविधानतः२००

कृत्वावरणदेवानांहोमंतन्नाममंत्रतः ॥ कृत्वापूर्णाहुतिंसम्यग्देवमग्निंविसर्ज्यच ॥ २०१॥ अभिषिंचेच्चयष्टारंविप्रौघःकलशोदकैः ॥ निष्कंसुवर्णमथवाप्रत्येकंदक्षिणांदिशेत् ॥२०२॥ भोजयेच्चशतंविपान्भक्ष्यभोज्यैःपृथग्विधैः ॥ तेभ्योपिदक्षिणांदत्त्वागृह्णीयादाशिषस्ततः ॥२०३ ॥ एवंकृतेजगद्धश्यंसर्वेनश्यंत्युपद्रवाः ॥ राज्यंधनंयशःपुत्रानिष्टमन्यल्लभेतसः॥२०४॥ एतद्दशगुणंकुर्य्याच्चंडीसाहस्रजंविधिम् ॥ विद्यामतःसदाचारान्ब्राह्मणान्वृणुयाच्छतम्॥२०५॥ प्रत्येकंचंडिकापाठान्विदध्युस्तेदिशामितान् ॥ अयुतंप्रजपेयुस्तेप्रत्येकंनववर्णकम् ॥ २०६ ॥

ततः आवरणदेवतानांनाममंत्रैस्तारादिस्वाहांतैरेकैकामाहुतिंहुत्वापूर्णाहुतिंकृत्वादेवींकुंभस्थांसंपूज्यबलिदानंविधायऋत्विग्भ्यःप्रत्येकंनिष्कमशक्तौसुवर्णमितंसुवर्णंदद्यात् ॥ २०१ ॥ २०२ ॥ ततोविप्राःकलशोदकेनयजमानंनिगमपुराणोक्तमंत्रैराभिषिंचेयुराशिषश्चदद्युः ॥ ततःशतंविप्रान्नानाविधान्नैर्भोजयेत् ॥ तेभ्योपि यथाशक्तिदक्षिणांदद्यात् ॥ इतिशतचंडीविधिः ॥ २०३ ॥ शतचंडीविधेःफलमाह ॥ एवंकृतइति ॥ २०४ ॥ सहस्रचंडीविधानमाह एतद्दशगुणमिति ॥ शतचंडीविधानदशगुणंसहस्रचंडीविधानमित्यर्थः ॥ शतंविप्रवरणम् ॥ २०५ ॥तेशतविप्राःप्रत्येकंदशदशसप्तशतीपाठान्कुर्युः—अयुतमयुतंनवार्णजपंचकुर्युः ॥ २०६ ॥

शतकन्याश्चभोज्याः ॥ एवंदशदिनेषुसंपाद्यएकादशेह्निसप्तशतीशतावृत्त्याप्रतिश्लोकंतल्लक्षसंख्यंनवार्णेनचहोमः ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ ऋत्विग्भ्योपिदशदशनिष्कमितंसुवर्णदक्षिणांप्रत्येकंदद्यात्॥ शेषंपूर्वोक्तवत् ॥इति सहस्रचण्डीविधिः ॥ २०९ ॥ एतत्फलमाह ॥एवंसहस्रसंख्याकइति ॥ एतदयुतचंडीविधानलक्षचंडीविधानयोरुपलक्ष णम्॥

पूर्वोक्ताःकन्यकाःपूज्याःपूर्वमंत्रैःशतंशुभाः॥एवंदशाहंसंपाद्यहोमंकुर्य्युःप्रयत्नतः ॥ २०७ ॥ सप्तशत्याःशतावृत्त्याप्रतिश्लोकंविधानतः ॥लक्षसंख्यंनवार्णेनपूर्वोक्तैर्द्रव्यसंचयैः ॥ २०८ ॥ होतृभ्योदक्षिणांदत्त्वापूर्वोक्तान्भोजयेद्द्विजान्॥सहस्रसंमितान्साधून्देव्याराधनतत्परान् ॥ २०९ ॥ एवंसहस्रसंख्याकेकृतेचंडीविधौनृणाम्॥सिद्धत्यभीप्सितंसर्वंदुःखौघश्चविनश्यति ॥ २१० ॥ मारीदुर्भिक्षरोगाद्यानश्यंतिव्यसनोच्चयाः॥नेमंविधिंवदेद्दुष्टेखलेचौरेगुरुद्रुहि ॥ २११ ॥ साधौजितेंद्रियेदांतेवदेद्विधिमिमंपरम् ॥ एवंसाचंडिकातुष्टावक्तॄञ्छ्रोतॄंश्चरक्षति ॥ २१२ ॥ इतिमंत्रमहोदधौकालरात्रिचंडीमंत्रशतचण्ड्यादिनिरूपणनामाष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

सहस्रचंडीदशगुणोऽयुतचंडीविधिः ॥ सदशगुणोलक्षचंडीविधिः ॥ जपेहोमेदक्षिणायां कन्यासुविप्रभोजनेचदशगुणत्वम् ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ इतिमन्त्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायामष्टादशस्तरंगः॥ १८ ॥

कुक्कुटमंत्रंवक्तुंप्रतिजानीते ॥ चरणेति ॥ १ ॥ मन्त्रमुद्धरति ॥ तीक्ष्णइति ॥ तीक्ष्णःयकारः अर्घीशेंदुयुक्तः ऊबिंदुयुतः ॥ तेनयूम् ॥ विधिःकः सद्योजातयुतओयुतः को ॥ पिनाकीलः सूक्ष्मयुक्इयुतःलि एतद्वर्णत्रयंपुनर्वारद्वयम् ॥ यूंकोलियूंकोलीति ॥ २ ॥ उत्कारी वकारः दीर्घआ ॥ तेनसंयुक्ता वा ॥ मायाबीजंह्रीं ॥ पूर्वोदितंतथावारद्वयं

चरणायुधमंत्रस्यविधानमभिधीयते॥मंत्रीयद्विधिनाकृत्वासाधयेत्स्वमनोरथान् ॥ १ ॥ तीक्ष्णोर्घीशेंदुसंयुक्तःसद्योजातयुतोविधिः ॥पिनाकीसूक्ष्मयुग्वर्णत्रयमेतत्पुनःपठेत् ॥ २॥ उत्कारीदीर्घसंयुक्तामायाबीजंततोवदेत् ॥ द्विरभ्यस्तंपुनर्वर्णत्रयंपूर्वोदितंपुनः ॥३॥ कूर्मःसकर्णोवोदीर्घोमंत्रोयंसमुदीरितः ॥ पाशाद्योंकुशबीजांतोष्टादशाक्षरसंयुतः ॥४॥महारुद्रोमुनिश्चास्यच्छंदोतिजगतीरितम् ॥ मायाबीजंसृणिःशक्तिर्देवताचरणायुधः ॥५॥ वेदरामाक्षिरामाग्निवह्निवर्णैःषडंगकम्॥कृत्वावर्णान्प्रविन्यस्येन्मूर्ध्निभालेभ्रुवोर्द्वयोः ॥ ३ ॥

द्विरभ्यस्तंपुनर्वदेदित्यन्वयः ॥ ३ ॥ कूर्मःचः सकर्णउयुतःचु ॥ दीर्घोवोवा ॥पाशाद्यः आंआद्यः ॥ अंकुशबीजांतः क्रोंअंतः ॥ यथा–आंयूंकोलियूंकोलिह्रांह्रींयूंकोलियूंकोलिचुवाक्रोंइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ षडंगमाह ॥ वेदेति॥आंयूंकोलिहृदयायनमइत्यादि० ॥ वर्णन्यासमाह ॥ मूर्ध्नीति ॥ भ्रुवोराक्षिश्रुतिनासासुचद्वेद्वे ॥ अन्यत्रैकैकम् ॥ ६ ॥

---

अस्यचरणायुधमंत्रस्यमहारुद्रऋषिःअतिजगतीछंदःह्रींबीजंक्रोंशक्तिःचरणायुधोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थे० ।

॥ ७ ॥ ध्यानमाह ॥ सर्वेति ॥ सर्वालंकारैर्दीप्तःकंठश्चरणौचयस्यनिजान्सेवकान्पायाद्रक्षतु ॥ ८ ॥ ९ ॥ शैवपीठे

अक्ष्णोःश्रुत्योर्नसोर्वक्त्रेकण्ठेकुक्षौचनाभितः॥लिंगेगुदेजानुपादेन्यस्यवंसंस्मरेत्प्रभुम्॥७॥सर्वालं
कृतिदीप्तकंठचरणोहेमाभदेहद्युतिःपक्षद्वंद्वविधूननेऽतिकुशलःसर्वामराभ्यर्च्चितः॥गौरीहस्तसरोजगो
रुणशिखःसर्वार्थसिद्धिप्रदोरक्तंचंचुपुटंदधच्चलपदःपायान्निजान्कुक्कुटान्॥८॥एवंध्यात्वासमासीनः
शैलाग्रेसरितस्तटे ॥ वृषशून्येपश्चिमस्थेयद्वाशंकरसद्मनि॥९॥लक्षंजपेद्दशांशेनतिलैर्हवनमाचरेत्॥
शैवपीठेयजेत्ताम्रचूडंगौरीकरस्थितम्॥१०॥आदावंगानिसंपूज्यजलेषुप्रयजेदिमान् ॥ शंभुंगौरींग
णपतिंकार्तिकेयंततःपरम् ॥११॥ मंदारंपारिजातंचमहाकालंचबर्हिणम् ॥ दलाग्रेषुसुराधीशप्रमुखा
नायुधान्वितान् ॥१२॥ एवंकृतेप्रयोगार्होजायतेमन्त्रनायकः॥प्रयोगादौप्रजप्योसावयुतंद्विशताधि
कम् ॥१३॥ दध्नाक्षीरेणमधुनाचंद्रेणसितयान्वितैः ॥ दद्याद्बलिंसतांबूलैःपायसैर्बलिमंत्रतः॥१४ ॥
भोजनादौभोजनांतेलक्ष्मीसंप्राप्तयेसुधीः ॥ बलिमेतत्प्रदत्त्वाथकुबेरोधननाथताम् ॥ १५ ॥ शांतौ
पुष्टावपिबलिमेतमेवप्रदापयेत् ॥ उक्तस्यवक्ष्यमाणस्यबलेर्मंत्रोथकथ्यते ॥ १६ ॥

वामादिशक्तियुते ॥ १० ॥ ११ ॥ सुराधीशप्रमुखानिंद्रादीन् ॥ १२ ॥ १३ ॥ चंद्रेणकर्पूरेण ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

बलियंत्रमाह ॥ वामेति ॥ वामकर्णेंदुयुक्शूरःऊबिंदुयुतःयःयूं ॥ चरमःक्षःसबिंदुःक्षं ॥ अद्रिजाह्रीं ॥ १७ ॥ वायुःयःसचंद्रःसबिंदुःयं ॥ ॥ कर्णेंदुयुक्चक्रीउबिंदुयुतःकःकुं ॥ गिरिनंदिनीह्रीं॥१८॥स्वरूपमन्यत्॥यथा-यूंक्षंह्रीं

वामकर्णेन्दुयुक्छूरःसबिंदुश्चरमेद्रिजा ॥ कुक्कुटद्वितयंपश्चादेह्येहीमंबलिंवदेत् ॥१७॥ गृह्णयुग्मंगृह्णापयसर्वान्कामांश्चदेहिच ॥ वायुःसचंद्रःकर्णेंदुयुक्चक्रीगिरिनंदिनी ॥ १८ ॥ यूंनमःकुक्कुटायेतिमंत्रोव्योमयुगाक्षरः॥ बलिंदद्यादनेनोक्तंवक्ष्यमाणंचसाधकः॥ १९ ॥ लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्दद्यान्मंत्रीबलिंनिशि॥वशयेदखिलंविश्वंत्रिदिनंवौदनैर्नृपम् ॥ २० ॥ दुग्धमिश्रितगोधूमपिष्टैःकुर्य्यादपूपकम् ॥ आज्यकर्पूरयुक्तेनतेनदद्याद्बलिंनिशि ॥ २१ ॥ ह्यहमेवंबलौदत्तेसुखीस्याद्वशयेज्जगत् ॥ करवीरैर्बिल्वपत्रैःपीतपुष्पैःसुगंधिभिः ॥ २२ ॥ सहस्रसंख्यैः प्रत्येकंपूजयित्वाजपेन्मनुम् ॥ सहस्रंनिशिसप्ताहंयमुद्दिश्यजनंसुधीः ॥ २३ ॥

कुक्कुट २ एह्येहिइमंबलिंगृह्ण २ गृह्णापयसर्वान्कामान्देहियंकुंह्रींयूंनमःकुक्कुटायेतिव्योमयुगाक्षरश्चत्वारिंशदर्णः॥ अनेनमंत्रणपूर्वोक्तंबलिंवक्ष्यमाणंचदद्यात् ॥१९ ॥ओदनैस्त्रिदिनंबलिंदत्त्वानृपंवशयेत् ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ वसुघस्रांतमष्टदिनपर्यंतम् ॥ अधियामिनिरात्रौ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ प्रयोगांतरमाह ॥
कर्मारेति ॥ लोहकारकगृहाद्वह्निमानीय ॥ लोहपात्रेसंस्थाप्य करवीरकाष्ठैःसंदीप्य तत्रसर्षपतैलाक्तानिविषचूर्ण

सयातिदासतांतस्यमनोवचनकर्मभिः॥छागलावकयोर्मांसैःसप्ताहंवितरेद्बलिम्॥ २४ ॥ सहस्रप्रत्य
हंजप्त्वावशयेदखिलंजगत्॥नृपोत्थितेसपत्नोत्थेभयेजातेचसंकटे ॥ २५ ॥ आपद्यपितथान्यस्यां
बलिंदद्यात्सुखाप्तये॥गोपनीयोविधिरयंबलेःकथ्योनदुर्मतौ ॥ २६ ॥ मुक्तकेशउदावक्त्रोजपेद्रात्रु
सहस्रकम्॥ प्रत्यहंवसुघस्रांतंयमुद्दिश्याधियामिनि ॥ २७ ॥ तमाकर्षतिदूरस्थमपिकिंनिकटस्थि
तम् ॥ जातीफलैलाःसंचूर्ण्यकर्पूरमध्यतःक्षिपेत् ॥ २८ ॥ अभिमंत्र्यार्कसाहस्रंसिंदूररजसायुतम्॥
उष्णीकृत्याग्नितापेनक्लेदयेद्वांगपाथसा ॥ २९ ॥ स्थापयेदायसेपात्रेतत्स्पृष्टःस्तंभितोभवेत्॥कर्मा
रसद्मनोवह्निमानीयायसभाजने ॥३० ॥ स्थापयित्वेंधयेत्काष्ठैःकरवीरसमुद्भवैः ॥ जुहुयात्तत्रधत्तूर
बीजानिशतसंख्यया ॥ ३१ ॥ सिद्धार्थतैललिप्तानिविषकर्णयुतानिच ॥ सप्ताहएवंकृत्वारिंस्था
नादुच्चाटयेद्ध्रुवम् ॥ ३२ ॥

युतानिधत्तूरबीजानि शतंशतंसप्ताहंहुत्वाशत्रुमुच्चाटयेत् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

एवंपक्षंकृत्वा तं देशांतरंनयेत् ॥ मासंकृत्वामारयेत्॥प्रयोगांतरमाह ॥ तालेति॥ नराकारंतालपत्रंकृत्वातत्रशत्रोः प्राणान्संस्थाप्यभल्लातकतैलेनविलिप्यअष्टाधिकंसहस्रमभिमंत्र्यतस्यपंचाशत्खंडानिकृत्वाधत्तूरकाष्ठदीप्तेश्मशानाग्नौत्रिदिनंहुत्वारिंमारयेन्मोहयेच्च ॥ ३३ ॥ ३४ ॥३५॥ प्रयोगांतरमाह ॥ साध्येति ॥ नक्षत्रवृक्षाउक्ताः ॥ चिता

पक्षंदेशांतरगतंमासंसंप्रापयेन्मृतिम् ॥ तालपत्रंनराकारंकृत्वात्रस्थापयेदसून् ॥ ३३ ॥जपेदष्टसहस्रं
तत्तीक्ष्णतैलविलेपितम्॥नस्यखंडानिपंचाशत्कृत्वापितृवनोत्थिते ॥ ३४ ॥ उन्मत्ततरुसंदीप्तेजुहु
याज्जातवेदसि॥एवंप्रकुर्वंस्त्रिदिनंमारयेन्मोहयेदरिम् ॥ ३५ ॥ साध्यर्क्षतरुकाष्ठेनकृत्वापुत्तलिकां
शुभाम्॥तस्यामसून्प्रतिष्ठाप्यसहस्रंप्रजपेन्मनुम् ॥३६॥ चिताकाष्ठस्यकीलेनतांस्पृष्ट्वापितृकानने॥
छिंद्याद्यदंगंशस्त्रेणतदंगंतस्यनश्यति॥३७॥वैरिमूत्रयुतांमृत्स्नांतत्पादरजसासह। कुलालमृद्युतांकृत्वा
पुत्तलींरचयेत्तथा॥३८ ॥ तस्यां[1]हृदिपदेमूर्ध्निनामकर्मान्वितंमनुम्॥लिखेच्छ्मशानजांगारैरसून्संस्था
पयेत्ततः॥३९॥जप्तांसहस्रमंत्रेणतीक्ष्णतैलविलेपिताम्॥शस्त्रेणशतधाकृत्वाजुहुयात्पितृभूवसौ ॥४०॥

काष्ठकीलेनतांपुत्तलींस्पृष्ट्वामनुंजपेदितिपूर्वेणसंबंधः ॥ ३६॥ तस्याःप्रतिमायायदंगंशस्त्रेणच्छिंद्यात्तदंगंतस्यशत्रोर्नश्याति ॥ ३७ ॥ प्रयोगांतरमाह ॥ वैरीति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पितृभूवसौश्मशानाग्नौ ॥ ४० ॥

---

[1] हृदिपदेमूर्ध्निचअमुकस्यामुकंकुरु इति योजयित्वामूलमंत्रंलिखेत् ।

यमाशावदनोदक्षिणदिङ्मुखः ॥ निधनतारा जन्मनक्षत्रात्सप्तमनक्षत्रंषोडशंपंचविंशंच ॥ ४१ ॥ प्रयोगांतरमाह निधायेति ॥ गोमयेनशत्रोःप्रतिमांकृत्वानामविदर्भितंमंत्रंतालपत्रेविलिख्यतत्तालपत्रंगोमयप्रतिमाहृदिनिक्षिप्यप्रतिमोपरिरूप्यताम्रमृदामन्यतमनिर्मितंघटंसंस्थाप्यगोमयोदकाभ्यामापूर्यतत्रापिनामविदर्भितमंत्रलेखयुतंतालपत्रं निक्षिप्यतत्रशत्रोःप्राणस्थापनंकृत्वाप्रत्यहंत्रिसंध्यंशतंमंत्रंकुंभंस्पृष्ट्वाजपेत्॥ यावत् शत्रोःप्रतिबिंबंघटेदृश्यतेतावत्का

विभीतकाष्ठसदीप्तेयमाशावदनोनिशि॥शत्रोर्निधनतारायांकृत्वैवंमारयेदरिम्।४१।निधायगोमयंभू
मौप्रकुर्य्यात्प्रतिमांरिपोः॥तालपत्रेसमालिख्यमनुंनाम्नाविदर्भितम्।४२॥तत्पत्रंनिक्षिपेत्तस्याहृदित
त्प्रतिमोपरि॥मृज्जंवाराजतंकुंभंगोमयोदकपूरितम्।४३।मनुंनामयुतंतालपत्रेणाढ्यंनिधापयेत्।तदसू
न्स्थापयेत्कुंभेत्रिसंध्यंप्रजपेन्मनुम्।४४। प्रत्यहंशतसंख्याकंछायायावद्भवेद्रिपोः॥गोमयांभसिदृष्टा
यांतच्छायायांतुसाधकः।४५॥अधस्थायाःप्रतिकृतेश्छिद्यादंगमभीप्सितम्।शस्त्रेणतस्यनाशायमृतये
हृदयंगलम्।४६।प्रविद्धेकंटकैर्मूर्ध्निशिरोरोगोभवेद्रिपोः॥आधयोहृदयेविद्धेपदोःपादव्यथाभवेत्४७

लंजपेत् ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ घटोदकेशत्रुप्रतिबिंबेदृष्टेघटाधःस्थायागोमयप्रतिमायायदंगंछिद्यतेतद्रिपोर्नश्यति हृदिगलेचछिन्नेतन्मृतिः ॥ ४५ ॥ प्रतिमामूर्ध्नि कंटकैर्विद्धेशिरोरोगः हृदिविद्धेमनःपीडापादयुग्मेकंटकाविद्धेपादरोगइत्यादि० ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

दारुणेत्यारंभ्यहर्यक्षंकारिणोयथेत्यंतमेकःप्रयोगः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ हर्यक्षःकेसरी ॥ ५१ ॥ ५२॥ चंदनादिभिरित्यादिशब्दात् कुंकुमकस्तूरीकर्पूरगजमदाः ॥ ५३ ॥ शास्तृमंत्रमाह॥ अथेति ॥ शास्ताशंभोर्गणविशेषः॥अग्निः

दारुणाकुक्कुटंकृत्वातत्रास्यस्थापयेदसून्॥तेस्पृष्ट्वापूर्ववद्ध्यात्वाजपेद्दविसहस्रकम्॥४८॥उपचारैः
समभ्यर्च्यच्छादयेद्रक्तवाससा ॥रथेसंस्थाप्यतंदेवंदिक्षुयोधान्निधापयेत् ॥ ४९॥ चतुरोवर्मसंवीता
नश्वारूढानुदायुधान् ॥तत्संयुतोरणेगच्छेज्जेतुंबलवतोरिपून् ॥ ५०॥वीराढ्यंकुक्कुटंदृष्ट्वापलायंते
रणेऽरयः ॥ भीतादशदिशःसर्वेहर्य्यक्षंकार्रणोयथा ॥५१॥ताम्रचूडस्यमंत्रणमोदकाद्यभिमंत्रितम् ॥
यस्मैददीतभक्षायसवशोमंत्रिणोभवेत् ॥५२॥अष्टोत्तरंशतंजप्त्वारोचनाचन्दनादिभिः॥विदधत्तिल
कंभालेदर्शनाद्वशयेज्जनान् ॥५३॥अथवक्ष्येशास्तृमंत्रमुपासकसमृद्धिदम्॥शास्तारंमृगयेत्युक्त्वा
श्रांतमश्वाग्निहृयुतः।५४।ढंगणावृतमित्युक्त्वापानीयार्थंवनाचदे।त्यशास्त्रेतेततोरैवतेनमोमंत्रईरितः
॥५५॥द्वात्रिंशद्वर्णोस्यऋषीरैवतःपरिकीर्तितः॥पंक्तिश्छन्दोदेवतातुमहाशास्ताखिलेष्टदः॥ ५६ ॥

रेफःऊयुतःरू ॥ ५४ ॥ यथा-शास्तारंमृगयाश्रांतमश्वारूढंगणावृतम् ॥ पानीयार्थंवनादेत्यशास्त्रेतेरैवतेनमइतिश्लोकरूपोमंत्रः ॥५५ ॥ ५६ ॥

---

१ अस्यशास्तृमंत्रस्यरैवतऋषिःपंक्तिश्छंदःमहाशास्तादेवताममाभीष्ट० ।

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ गायत्र्या भूताधिपायेत्यादिकया ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ पार्थिवालिंग

पादैःसर्वैणपंचांगंकृत्वात्मनिविभुंस्मरेत् ॥साध्यंस्वपाशेनविबन्ध्यगाढंनिपातयंतंखलुसाधकस्य॥
पादाब्जयोर्दंडधरंत्रिनेत्रंभजेतशास्तारमभीष्टसिद्धयै ॥५७॥ लक्षमेकंजपेन्मंत्रंदशांशंजुहुयात्तिलैः॥
शैवेपीठेयजेद्देवमादावंगानिपूजयेत् ॥५८॥ दलेष्वष्टसुगोप्तारंपिंगलाक्षंततःपरम्॥ वीरसेनंशांभवंच
त्रिनेत्रंशूलिनंतथा ॥५९॥ दक्षंचभीमरूपंचदिक्पालानस्त्रसंयुतान् ॥ एवंसिद्धोमनुःसर्वमभीष्टंमंत्रि
णेऽर्पयेत् ॥६०॥ मध्याह्नेंजलिनातस्मैजलंदत्त्वाजलार्थिने ॥ गोप्त्रादिभ्यस्तद्गणेभ्योदद्यादष्टौ
जलांजलीन् ॥६१॥ जलसंतर्पितःशास्तासगणोऽभीष्टदोभवेत् ॥ निशितस्मैबलिंदद्याद्गायत्र्याचा
भिमंत्रितम् ॥ ६२ ॥ तदग्रेप्रजपेन्मूलमष्टोत्तरशतंसुधीः ॥ भूताधिपायशब्दांतेविद्महेपदमीरयेत्॥
॥६३॥ महादेवायचततोधीमहीतिपदंवदेत् ॥ तन्नःशास्ताप्रचोवर्णादयादितिचकीर्तयेत् ॥ ६४ ॥
गायत्र्येषोदिताशास्तुःसर्वाभीष्टप्रदानृणाम् ॥ अथपार्थिवलिंगस्यविधानमभिधीयते॥६५॥स्नातो
नित्यंविधायादौगत्वाशुद्धांभुवंसुधीः ॥ उपरिष्ठामपाकृत्यषडर्णेनाधिमंत्रयेत् ॥ ६६ ॥

विधानमाह ॥ स्नातइत्यादि ॥ ६६ ॥

---

१ ॐ भूताधिपायविद्महे महादेवायधीमहि । तन्नःशास्ताप्रचोदयात् ।

षर्डणमाह ॥ आकाशइति ॥ आकाशोहःपृथिवीशेषस्थितः लआयुतः बिंदुयुतश्च ह्लां ॥ चतुर्थ्यंतापृथिवीपृथिव्यै
इति॥ ६७॥६८॥ गणेश्वरकुमारयोर्मंत्रौवक्ष्यमाणौ ॥ हराद्यांश्चसप्तमंत्रान्वक्ष्यमाणान् ॥ ६९ ॥ विवस्वतेसूर्यायार्घ्यं

आकाशःपृथिवीशेषस्थितोबिंदुसमन्वितः॥पृथिवीतुचतुर्थ्यंतानमोंतःस्यात्षडर्णकः॥६७॥ततोमृद
मुपादायकृत्वानिःशर्करांततः॥पात्रेनिदध्यात्संशुद्धेप्रत्यहंपूजनायताम्६८॥सुदिनेसद्गुरोर्मंत्रौगणेश्व
रकुमारयोः॥हराद्यांश्चमनून्सप्तगृह्णीयाद्यागसिद्धये॥६९ ॥ अथार्चनंशुभेघस्रेआरभेतेष्टसिद्धये॥कृत
नित्यक्रियःशुद्धःप्रदायार्घ्यंविवस्वते॥७०॥मृदमादायतोयेनसुधयामंत्रितेनच॥आसिंच्यपिंडयेत्स्वे
ष्टमानांपात्रेनिधापयेत् ॥ ७१ ॥ ततःकालमनुस्मृत्यकामनामपिहृद्गताम्॥ लिंगानिपार्थिवानीह
पूजयेऽमुकसंख्यया॥७२॥ संकल्प्यैवंमृदःपिंडादादायाल्पांमृदंसुधीः ॥ एकादशार्णमंत्रेणकुर्य्याद्बा
लगणेश्वरम् ॥ ७३॥ मायागणेशभूबीजैर्ङेन्तोगणपतिःपुटः ॥ एकादशार्णमंत्रोयंस्मृतोबालगणेशि
तुः ॥७४॥ वराभयलसत्पाणिपद्मंबालगणेश्वरम् ॥ निर्मायस्थापयेत्पीठेलिंगानिरचयेत्ततः ॥७५॥

पूर्वोक्तम् ॥ ७० ॥ सुधया वमितिबीजमंत्रितजलेनमृदमासिंच्येत्यन्वयः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ बालगणेश्वरमंत्र
माह ॥मायेति ॥ मायाह्रीं ॥ गणेशःगम् ॥ भूबीजंग्लौं ॥ ह्रींगंग्लौंगणपतयेग्लौंगंह्रीमिति ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

---

१ ह्रींगंग्लौंगणपतयेग्लौंगंह्रीं ।

हरमंत्रेण ॐनमोहरायेति ॥ अक्षंबिभीतकफलम् ॥ ॐनमोमहेश्वरायेतिमंत्रेणलिंगंकुर्यात् ॥७६॥ लिंगमानमाह॥ अंगुष्ठेति ॥ अंगुष्ठादिद्वादशांगुलांतंयथेष्टंकुर्यात् ॥ ७७ ॥ ॐ नमःशूलपाणयेइतिमंत्रेणपीठेलिंगंस्थापयेत् ॥ ७८ ॥

हरमन्त्रेणगृह्णीयादक्षमात्राधिकांमृदम् ॥ माहेश्वरस्यमंत्रेणलिंगंकुर्य्यात्तयाशुभम् ॥ ७६ ॥ अंगुष्ठमानादधिकंवितस्त्यवधिसुंदरम् ॥ पार्थिवंरचयेल्लिंगंनन्यूनंनाधिकंचतत् ॥७७॥ शूलपाणेस्तुमंत्रेण लिंगंपीठेनिधापयेत् ॥ एवमन्यानिकुर्वीतयथासंकल्पमादरात् ॥७८॥अवशिष्टमृदाकुर्य्यात्कुमारंतस्यमंत्रतः॥स्थापयेल्लिंगपंक्त्यंतेस्वमंत्रेणार्च्चयेच्चतम्॥७९॥वाग्वर्मकर्णबिंद्वाढ्यश्चरमोमीनकेतनः ॥ कुमारायनमोंतोयंगुह[1]मंत्रोदशाक्षरः ॥ ८० ॥ मंत्रेणावाहयेद्देवंप्रतिलिंगंपिनाकिनः॥ततोलिङ्गस्थितंध्यायेत्सुप्रसन्नंमहेश्वरम् ॥ ८१ ॥

॥ ७९ ॥ कुमारमंत्रमाह ॥ वागिति ॥ वाक्ऐं ॥ वर्महुम् ॥ कर्णबिंद्वाढ्यःउबिंदुयुतःचरमःक्षःक्षुम् ॥ मीनकेतनः क्लीं ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ ८० ॥ ॐनमःपिनाकिनेइतिलिंगेशिवमावाहयेत् ॥ ८१ ॥

---

[1] ऐं हुंक्षुंक्लींकुमारायनमः ।

ध्यानमाह ॥ दक्षेति ॥ दक्षदोष्णादक्षिणबाहुना दक्षिणोत्संगस्थंगणेशंप्रामृशन् ॥ अपरेणवामबाहुनावामोरुस्थितायाअगपतितनयायाःपार्वत्याउत्संगेवर्तमानंगुहंकुमारंचप्रामृशन् ॥ इष्टाभीतीवराभयेकराभ्यांदक्षवामाभ्यांधारयन् ॥ ८२ ॥ ॐनमःपशुपतयेइतिमंत्रेणस्नापयेत् ॥ ॐनमःशिवायेतिमंत्रेणवह्निरेतसेशंकरायगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यान्यर्पयेत ॥ ८३ ॥ आवरणार्चनमाह ॥ प्रागादीति ॥ क्षित्यादिमूर्तिकान्शर्वादीन् प्रागादिषुचवामावर्तेनपूजयेत ॥ क्षित्यादीनाह ॥ क्षित्यप्तेजइत्यादि ॥ यथा—शर्वायक्षितिमूर्तयेनमःपूर्वे ॥ भवायजलमूर्त्तयेनम ईशाने ॥ रुद्रायतेजोमूर्तयेनम उत्तरे ॥ उग्रायवायुमूर्त्तयेनमोवायौ ॥ भीमायाकाशमूर्त्तयेनमःपश्चिमे ॥ पशुपतयेयजमानमूर्तयेनमोनैर्ऋत्ये ॥ महादेवायचंद्रमूर्तयेनमोदक्षिणे ॥ ईशानायसूर्यमूर्तयेनमआग्नेये इति ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

दक्षांकस्थंगजपतिमुखंप्रामृशन्दक्षदोष्णावामोरुस्थागपतितनयांकेगुहंचापरेण ॥ इष्टाभीतीपरकरयुगेधारयन्निंदुकांतिःसोऽव्यादस्मांस्त्रिभुवननतोनीलकंठस्त्रिनेत्रः ॥८२॥एवंध्यात्वापशुपतेर्मंत्रेणस्नापयेच्छिवम्।शिवमंत्रेणगंधादीनर्पयेद्वसुरेतसे॥८३॥प्रागादिवामावर्तेनदिक्ष्वष्टौपरिपूजयेत्।शर्वंभवंरुद्रमुग्रंभीमंपशुपतिंतथा८४ महादेवमथेशानंक्रमात्क्षित्यादिमूर्तिकान्॥क्षित्यप्तेजोक्षिलाकाशयजमानेंदुभास्कराः८५क्षित्यादयःस्युःशर्वाद्यास्ततइंद्रादिकान्यजेत्।धूपदीपनिवेद्यानिनमस्कारप्रदक्षिणाः८६

जपंकृत्वाॐनमोमहादेवायेतिविसृजेत् ॥ हरादिमंत्रानाह ॥ तारेति ॥ प्रणवनमआद्याश्चतुर्थ्यंता हराद्याःअद्रयः सप्तसंख्याकामंत्राःॐनमोहरायेत्यादयोमयोक्ताः ॥ ८७ ॥ एवमकं संपूज्यापरंपूजयेत् ॥ अल्पकालेबहुकरणपक्षे बहूनिसहैवपूजयेत् ॥ गणेशगुहौस्वमंत्राभ्यामेवाखिलोपचारैःसंपूज्याविसर्जयेत् ॥८८॥ कामनाभेदेनध्यानान्याह॥

जपंचकृत्वाविसृजेन्महादेवस्यमंत्रतः ॥तारनत्यादिकाङेन्ताहराद्यामनवोद्रयः ॥ ८७ ॥ प्रतिलिंगं
यजेद्देवमखिलानिसहैववा ॥ पूजितौनिजमंत्राभ्यांविसृजेद्गणराड्गुहौ ॥ ८८ ॥ धनपुत्रादिकामैस्तु
शिवोर्च्यःप्रोक्तलक्षणः ॥ विद्याकामैश्चिन्तनीयःपरशुंहरिणंवरम् ॥८९॥ ज्ञानमुद्रांदधद्धस्तैर्वटमूल
मुपाश्रितः ॥ पुंसोर्विरुद्धयोः संधौकुर्य्याल्लिंगानिसाधकः॥९० ॥ नदीतीरद्वयानीतमृदातानिच
पूजयेत् ॥ तत्रध्येयोहरिहरःशंखपद्माहिशूलभृत् ॥ ९१ ॥इंद्रनीलशरच्चंद्रनिभोभूषणपुंजवान्॥ दं
पत्योरविरोधार्थमर्द्धनारीश्वरःस्मृतः ॥ ९२ ॥

परशुमिति॥वटमूलाश्रितोदक्षिणामूर्तिः ॥ वरज्ञानमुद्रेदक्षयोः ॥ परशुहरिणौवामयोः॥संधौअर्द्धहरिहरोध्येयः॥ शंखपद्मौहरिहस्तयोः ॥ नागशूलेहरहस्तयोः ॥ इंद्रनीलनिभोहरिः ॥ शरच्चंद्रनिभोहरः ॥८९ ॥९०॥९१ ॥९२॥

---

१ ॐ नमोमहादेवायेतिमंत्रेण । २ ॐ नमोहरायनमः ।

॥ ९३ ॥ उच्चाटनादिषुध्यानमाह ॥ कालीति ॥ शूलेप्रोतः शत्रुसमूहोयेन ॥ कार्यवशतःअल्पेकार्येऽल्पानांपूजा

पीयूषपूर्णकलशंदधत्पाशांकुशावपि॥ उच्चाटेमारणेद्वेषेध्यातव्यःपुनरीदृशः ॥ ९३॥कालीहस्तांबु
जालंबःशूलप्रोतद्विषच्चयः॥ मुण्डमालालसत्कंठोराववित्रासिताखिलः॥९४॥ इत्थंतुकामनाभेदा
द्ध्यानभेदाःप्रकीर्तिताः॥ पूजयेत्कार्य्यवशतोलक्षावधिसहस्रतः ॥ ९५ ॥ लक्षपार्थिवलिंगानांपूज
नाद्धुविमुक्तिभाक् ॥ लक्षंतुगुडलिंगानांपूजनात्पार्थिवोभवेत्॥९६॥यानारीगुडलिंगानिसहस्रंपूज
येत्सती ॥ भर्तुःसुखमखंडंसाप्राप्यांतेपार्वतीभवेत् ॥ ९७ ॥ नवनीतस्यलिंगानिसंपूज्येष्टमवाप्नुया
त् ॥ भस्मनोगोमयस्यापिवालुकायास्तथाफलम् ॥९८ ॥ क्रीडंतिपृथुकाभूमौकृत्वालिंगंरजोमय
म् ॥ पूजयंतिविनोदेनतेपिस्युःक्षितिनायकाः ॥ ९९ ॥प्रातर्गोमयलिंगानिनित्यंयस्त्रीणिपूजयेत्
बृहतीबिल्वयोःपत्रैर्नैवेद्यंगुडमर्पयेत् ॥ १०० ॥

कार्यागौरवेबहूनांपूजाकार्या ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ धनप्रापकंप्रयोगमाह॥प्रातरिति॥१००॥

संपदावहंप्रयोगमाह ॥ एकादशेति ॥ प्रत्यहंकालचतुष्टयेएकादशैकादशपूजयेत् ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ एनो
निकरः पापौघस्तस्यनाशनम् ॥ उदुंबरसमुद्भवंताम्रमयम् ॥ १०४ ॥ १०५ ॥पिचुमंदोनिंबः ॥१०६॥१०७॥१०८॥

एवंमासत्रयंकुर्वन्ननल्पंलभतेधनम् ॥ एकादशैवलिंगानिगोमयोत्थानियोयजेत्॥१०१ प्रातर्मध्या
ह्नयोःसायंनिशीथेप्रतिवासरम्॥ ससर्वाःसंपदोयायात्षण्मासादेवमाचरन्॥२॥एकादशयजेन्नित्यं
शालिपिष्टमयानिसः ॥ लिंगानिमासमात्रेणसकलमषच्चयंदहेत् ॥ ३॥स्फाटिकंपूजितंलिंगमेनोनिक
रनाशनम् ॥ सर्वकामप्रदंपुंसामुदुंबरसमुद्भवम्॥४॥ रेवाश्मजंसर्वसिद्धिप्रदंदुःखविनाशनम्॥यथाक
थंचिल्लिंगस्यपूजानित्यंकृतेष्टदा।५।योयजेत्पिचुमंदोत्थैःपत्रैर्गोमयजंशिवम्॥क्रुद्धंमहेश्वरंध्यायन्स
पराजयतेरिपून्॥ ६ ॥योलिंगंपूजयेन्नित्यंशिवभक्तिपरायणः॥मेरुतुल्योपितस्याशुपापराशिर्लयंव्र
जेत्॥ ७ ॥दोग्ध्रीणांतुगवांलक्षंयोदद्याद्वेदपाठिने ॥ पार्थिवंयोऽर्चयेल्लिंगंतयोर्लिंगार्चकोवरः॥८॥
चतुर्दश्यांतथाष्टम्यांपौर्णमास्यांविधुक्षये ॥ पयसास्नापयेल्लिंगंधरादानफलंव्रजेत् ॥९॥लिंगपूजांवि
धायाग्रेस्तोत्रंवाशतरुद्रियम् ॥ प्रजपेत्तन्मनाभूत्वाशिवेस्वंविनिवेदयेत् ॥ ११० ॥

॥ १०९ ॥ शतरुद्रियम् ॥ नमस्तेरुद्रमन्यवइतिप्रपाठकंयजुर्वेदोक्तम् ॥ स्वमात्मानंशिवेनिवेदयेत् ॥ ११० ॥

॥ १११ ॥ शिवमंत्रेण–ॐनमःशिवायेतिषडक्षरेण ॥ ११२ ॥ यममंत्रमाह ॥ प्रणवेति ॥ प्रणवॐ ॥ अंकुशःक्रों ॥
हृल्लेखाह्रीं ॥ पाशःआम् ॥ कंजलंवः भौतिकेंदुमत्ऐंबिंदुयुतंवैं ॥ प्रभंजनोयः ॥ स्पष्टमन्यत् ॥ यथा–ॐक्रोंह्रींआं
वैंवै वस्वतायधर्मराजायभक्तानुग्रहकृतेनमः ॥ शमनदैवतोयमदेवताकः ११३ ॥ ११४ ॥ षडंगमाह ॥ त्रिनेत्रेति ॥

यत्संख्याकंयजेह्लिंगंतन्मितंहोममाचरेत्॥आज्यान्वितैस्तिलैरग्नौघृतैर्वापायसेनवा ॥१११॥शिव
मंत्रेणतस्यांतेब्राह्मणान्भोजयेच्छतम्॥एवंकृतेसमस्तेष्टसिद्धिर्भवतिनिश्चितम् ॥ १२ ॥ अथधर्मरा
जमंत्रः ॥प्रणवांकुशहृल्लेखापाशाःकंभौतिकेंदुमत् ॥वैवस्वतायधर्मांतेराजावर्णाःप्रभंजनः ॥ १३ ॥
भक्तानुग्रहवर्णांतेकृतेनमउदीरितः ॥चतुर्विंशतिवर्णात्मामंत्रःशमनदैवतः ॥ १४ ॥ त्रिनेत्रपंचबाणा
द्रियुग्माणैरंगकंमनोः ॥विधायसावधानेनमनसाचिंतयेद्यमम् ॥१५॥ पांथःसंयुतमेघसन्निभतनुः
प्रद्योतनस्यात्मजोनॄणांपुण्यकृतांशुभावहवपुःपापीयसांदुःखकृत् ॥ श्रीमद्दक्षिणदिक्पतिर्महिषगोभू
षाभरालंकृतोध्येयः संयमिनीपतिःपितृगणस्वामीयमोदंडभृत् ॥ ११६ ॥

ॐक्रोंह्रींहृदयायनमइत्यादि० ॥ आंवैं शिरइत्यादि० ॥ ११५ ॥ ध्यानमाह ॥ पाथइति ॥ सजलमेघाभः ॥ प्रद्यो
तनोरविस्तस्यपुत्रः ॥ पुण्यवतांसौम्यः ॥ पापीयसांभीषणः ॥ ११६ ॥

सिद्धमंत्रत्वादृष्याादिपूजाभावः ॥ ११७ ॥ चित्रगुप्तमंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥१८॥ क्षुधायः ॥ तंद्रीमः ॥ क्रियालः॥
उत्कारीवः ॥ वह्नीरः ॥ यस्वरूपम् ॥ एतेअर्घीशसंयुताऊयुताः ॥ मूर्ध्नियामिनीशयुताबिंदुयुताः ॥ तेन

अभ्यस्तोयंसिद्धमंत्रःसकलापद्विनाशनः ॥ नरकप्राप्तिरोद्धास्याद्रिपुभीतिनिवर्तकः ॥११७॥अथ
चित्रगुप्तमंत्रः ॥ प्रणवोहृद्विचित्रायधर्मांतेलेखकायच ॥ यमवांतेहिकाधीतिकारिणेपदमुच्चरेत्
॥१८॥ क्षुधातंद्रीक्रियोत्कारीवह्नियार्घीशसंयुताः॥यामिनीशयुतामूर्ध्निजन्मसंपत्पदंततः॥१९॥
प्रलयंकथयद्वंद्वंस्वाहाष्टत्रिंशदक्षरः ॥ मंत्रोयंचित्रगुप्तस्यसर्वदुःखौघनाशनः ॥ २० ॥ सप्तषण्णवव
स्वगनत्राणैर्मनुसंभवैः ॥ प्रविधायषडंगानिचिंतयेत्कर्मलेखकम्॥२१ ॥ किरीटोज्ज्वलवस्त्रभूषाभि
रामंविचित्रासनासीनमिंदुप्रभास्यम् ॥नृणांपापपुण्यानिपत्रेलिखंतंभजेचित्रगुप्तंसखायंयमस्य२२॥
सिद्धमंत्रमिमंपुंसांजपतांचित्रगुप्तकः ॥ प्रसन्नोगणयेत्पुण्यंनैवपापंकदाचन ॥ १२३ ॥

यम्लव्र्यूंइतिपिंडम् ॥ स्वरूपमन्यत् ॥ मंत्रोयथा–ॐनमोविचित्रायधर्मलेखकाययमवाहिकाधिकारिणेयम्लव्र्यूंजन्म
संपत्प्रलयंकथय २ स्वाहेति ॥ १९ ॥ १२० ॥ षडंगमाह ॥ सप्तेति ॥ वसवोष्टौ ॥ अंगानिषट् ॥ २१ ॥ ध्यानमा
ह ॥ किरीटोज्ज्वलमिति ॥ २२ ॥ १२३ ॥

आसुरीमंत्रमाह ॥ कट्टुकेइति ॥ १२४ ॥ अनंतआ ॥ केशवःअ ॥ बलीरः भगःएयुतःरे ॥ १३५ ॥ कर्णउ ॥२६॥ तन्द्रीमः भृगुःसःसवाली ययुतः स्य ॥ अन्यत्स्वरूपम् ॥ मंत्रोयथा–ॐकटुकेकटुकपत्रेसुभगेआसुरिरक्तेरक्तवाससे अथर्वणस्यदुहितेअघोरेअघोरकर्मकारिकेऽमुकस्यगतिंदह २ उपविष्टस्यगुदंदह २ सुप्तस्यमनो दह २ प्रबुद्धस्यहृदयं

वक्ष्याम्यथर्ववेदोक्तमासुरीविधिमुत्तमम् ॥ कटुकेकटुकांतेतुपत्रेन्तेसुभगेपदम् ॥१२४॥ अनंतसुरिर
क्तंतपदंस्याद्रक्तवाससे ॥ अथर्वणस्यदुहितेकेशवोघोभगीबली ॥ २५॥ अघोरकर्मशब्दांतेकारिके
अमुकस्यच ॥ गतिंदहद्वयंकर्णःपविष्टस्यगुदंदह ॥२६॥ दहसुप्तस्यतंद्रीनोदहयुग्मंप्रबुद्धच ॥भृगुः
सवालीहृदयंदहद्वंद्वंहनद्वयम् ॥२७॥पचयुग्मंतावदंतेदहतावत्पचेतिच॥ यावन्मेवशमायातिवर्मास्त्रे
वह्निवल्लभा ॥२८॥तारादिरासुरीमंत्रोदशोत्तरशताक्षरः॥अंगिरास्तुऋषिश्छन्दोविराड्दुर्गासुरीमता
॥२९॥देवताप्रणवोबीजंशक्तिःपावकनायिका॥हृन्नवार्णैःशिरोंगार्णैःशिखासप्ताक्षरैर्मता ॥ १३० ॥

दह २ हन २ पच २ तावद्दहतावत्पचयावन्मेवशमायातिहुंफट्स्वाहेति ॥ आसुरीसंज्ञादुर्गादेवता ॥ २७ ॥२८॥ २९ ॥ पावकनायिकास्वाहा ॥ षडंगमाह ॥ हृन्नेति ॥ १३० ॥

---

१ अस्यआसुरीमंत्रस्यअंगिराऋषिःविराट्छंदःआसुरीदुर्गादेवताॐबीजंस्वाहाशक्तिःममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

ईशैरेकादशार्णैः ॥ बाणरसाक्षरैःपंचषष्ट्यर्णैःहुंफट्स्वाहेतिचत्वारोवर्णाःसर्वेष्वंगेषूक्तवर्णांतेवाच्याः ॥ १३१॥ ध्या
नमाह ॥ शरदिति ॥ अभयांकुशेवामयोः ॥ जयादिशक्तियुतेपीठेगेंद्रायुधैःपूजाबोध्या ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ पंचांगंमूल

वर्मांष्टभिर्नेत्रमीशैरस्त्रंबाणरसाक्षरैः ॥ हुंफट्स्वाहेतिसर्वत्रपठेदंगेषुसाधकः ॥१३१ ॥ शरच्चंद्रकांति
र्वराभीतिशूलंसृणिंहस्तपद्मैर्दधानांबुजस्था॥ विभूषांवराढ्यादियज्ञोपवीतामुदोथर्वपुत्रीकरोत्वासुरी
नः ॥३२॥ अयुतंप्रजपेन्मंत्रंजुहुयात्तद्दशांशतः ॥ घृताक्तराजिकांवह्नौततःसिद्धोभवेन्मनुः ॥३३ ॥
पंचांगामासुरींमंत्रीगृहीत्वामंत्रयेच्छतम् ॥ तयाधूपितमात्मानयोजिघ्रेत्सवशोभवेत् ॥३४॥ मध्व
क्तामासुरींहुत्वासहस्रंवशयेज्जगत् ॥ राजिकाप्रतिमांकृत्वादक्षांघ्रेर्मस्तकावधि ॥३५ ॥ अष्टोत्तरशतं
खंडान्जुहुयादसिनादितान् ॥नार्याःप्रतिकृतेर्वामपादादिहवनंचरेत् ॥ ३६॥ एवंप्रकुर्य्यात्सप्ताहंरा
जींधनचितेनले ॥ ससपत्नोपिमृत्यंतंदासोजायेतमंत्रिणः ॥ ३७ ॥स्त्रीलिंगोहःप्रकर्तव्योमंत्रेनारीव
शीकृतौ॥ कटुतैलान्वितांराजींनिंबपत्रयुतांरिपोः ॥३८॥नामयुङ्मनुनाहुत्वाज्वरिणंकुरुतेरिपुम्॥
एवंराजींसलवणांहुत्वास्फोटोभवेदरेः ॥ १३९ ॥

शाखापत्रपुष्पफलानि ॥ ३४ ॥ मध्वक्तांखंडघृतक्षौद्रयुताम् ॥ ३५ ॥ ३६॥सपत्नोपिशत्रुरपिदेहांतपर्यंतंदासःस्यात्॥
किमुतान्यः ॥ ३७॥ स्त्रीलिंगोहइति ॥ नार्यावशीकरणेप्रतिमाहोमादौमंत्रेस्थितानाम् ॥ अमुकस्यउपविष्टस्ये
त्यादीनांषष्ठ्यंतानांपदानांस्थानेदेवदत्तायाउपविष्टायाःसुप्तायाइत्यादूहोविधेयः ॥ ३८ ॥ १३९ ॥

अर्कोति ॥ अर्कदुग्धाक्तराजीहोमाद्रिपुनेत्रनाशः॥ १४०॥गुडयुतांराजींहुत्वाक्षत्रियंवशयेत् ॥ दध्यक्तांहुत्वावैश्यम् ॥ ४१ ॥ होममानमष्टोत्तरशतंसर्वत्र ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ उपसर्गाउपद्रवाः ॥४४॥ शीतंचंदनम्॥४५॥वशंवदंवशकृत

अर्कदुग्धाक्ततद्धोमान्नेत्रेनाशयतेरिपोः ॥पालाशेंधनदीप्तेग्नौसप्ताहंघृतसंयुताम् ॥ १४० ॥साधकोराजिकांहुत्वाब्राह्मणंवशयेद्ध्रुवम् ॥ क्षत्रियंतुगुडाभ्यक्तांवैश्यंदधियुतांचताम् ॥ ४१ ॥ शूद्रंलवणसंयुक्तांहुत्वातांसाष्टकंशतम्॥ आसुरीसमिधोहुत्वामध्वक्तालभतेनिधिम् ॥४२॥ तोयपूर्णेघटेमंत्रीराजिकापल्लवान्विते ॥ आवाह्यतांपूजयित्वाशतंमूलेनमंत्रयेत् ॥४३ ॥ तेनाभिषिक्तंमनुजमलक्ष्मीराधयोरुजः ॥ उपसर्गाःपलायंतेपरित्यज्यातिदूरतः ॥४४॥ आसुरीकुसुमंशीतंप्रियंगुर्नागकेसरः॥मनःशिलाचतगरमेतत्सर्वंविचूर्णितम् ॥४५॥शताभिमंत्रितंसाध्यमूर्ध्निक्षिप्तंवशंवदम् ॥ निंबकाष्ठसमिद्धेऽग्नावासुरींसर्षपान्विताम् ॥४६॥ अष्टोत्तरशतंहुत्वासप्ताहंदक्षिणामुखः ॥विदध्यादचिराच्छत्रुंसूर्यसूनुगृहातिथिम्॥ ४७ ॥ किंकुर्य्यान्नृपतिःक्रुद्धःकिंकुर्य्यूरिपवोखिलाः ॥ क्रुद्धःकालोपिकिंकुर्यांदासुरीचेदुपासिता ॥ १४८ ॥

॥४६॥ सूर्यसूनुगृहातिथिं यमातिथिम् ॥ मृतमित्यर्थः ॥४७॥ किंकुर्यादिति ॥ आसुर्यामुपासितायांनृपादयोवशवर्तिनःस्युरित्यर्थः॥कालेनाप्यासुर्युपासकोनपराभूयतेकिमुतान्यैः ॥अथर्ववेदोक्तोयंसर्वोद्रवशांतिकृन्मंत्रः॥१४८॥

ग्रंथविस्तरभयान्मंत्रकथनमुपसंहरति॥ग्रंथानिति ॥ १४९ ॥ इतिश्रीमन्महीधरकृतायांमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांताम्रचूडकार्तवीर्यासुर्यामन्त्रादिनिरूपणंनामैकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥ यंत्राणिवक्तुमुपक्रमते ॥ अथेति॥

ग्रंथाननेकानालोक्यमंत्रागुप्ततमामया॥हितायसुधियांख्याताविस्तरादुपरम्यते ॥ १४९ ॥ इति॥ श्रीमंत्रमहोदधौताम्रचूडादिकथनंनामैकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥ अथप्रवक्ष्येयंत्राणिगदितानिपुरारिणा ॥ शुभेदिनेसमाराध्यस्वेष्टदेवंयतात्मवान् ॥१॥ स्वप्यात्रिदिवसंभूमौहविष्याशीजपेरतः ॥ इदंमेलिखितंयंत्रमिष्टंतत्कीदृशंप्रभो॥ २ ॥ इतिपृष्ट्वानिजंदेवंप्रत्यहंतंसमर्चयेत्॥तृतीयेदिवसेरात्रौस्वप्नंसंप्राप्नुयान्नरः ॥३॥ सिद्धंसाध्यंसुसिद्धंवाशत्रुभूतमथोइदम्॥शत्रुयंत्रंलिखेन्नैवतदातदितरल्लिखेत् ॥४॥ स्वप्नाभावेपितद्धित्वापरंयंत्रंलिखेत्सुधीः ॥अथसंप्रोच्यतेसर्वयंत्रसाधारणीक्रिया ॥ ५ ॥ स्नातःशुद्धाम्बरधरःपुष्पचंदनभूषितः ॥ द्रव्यैःसमुदितैरुक्तस्थलेयंत्रंलिखेद्गृहः ॥ ६ ॥ षष्ठ्यंतंसाधकपदंमध्यबीजोपरिस्मृतम् ॥द्वितीयांतंसाध्यमधःपार्श्वयोःकुरुयुग्मकम् ॥ ७ ॥

पुरारिणाशिवेनगौरींप्रतिकथितानि ॥ पूर्वप्रक्रियामाह ॥ शुभइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ षष्ठ्यंतामिति ॥ देवदत्तस्यइष्टंकुरुकुर्विति ॥ ७ ॥

वियदिति ॥ वियत्हः भृगुःसः हसौः इतिबीजंयंत्रस्यजीवः ॥ हंसःसोहमितिवर्णान् यंत्रस्यासून्प्राणभूतान्कोणेषु ॥
॥८॥ नेत्रेइई ॥ श्रोत्रेउऊ ॥ दिक्पबीजानींद्रादिबीजानि लंरंमंक्षंवंयंसंहआंह्रींइत्युक्तानि ॥ पूर्वादिषु ॥ प्रतिकाष्ठं

वियद्भृग्वौसर्गबीजंमध्यभागादधोलिखेत्॥ईशानादिचतुष्कोणेहंसःसोहमसून्पुनः॥ ८ ॥ नेत्रेश्रो
त्रेपार्श्वयुग्मेदिक्पबीजानिदिक्षुच ॥ यंत्रगायत्रिकावर्णान्प्रतिकाष्ठंत्रयंत्रयम् ॥ ९ ॥यंत्रराजायशब्दां
तेविद्महेवरतत्परम्॥ प्रदायधीमहीत्यंतेतन्नोयंत्रःप्रचोदयात् ॥१०॥ एषोक्तायंत्रगायत्रीस्मृतासर्वे
ष्टसिद्धिदा ॥बहिःप्राणप्रतिष्ठायांमनुंसर्वत्रवेष्टयेत् ॥ ११ ॥ स्थलानुक्तौभूर्जपत्रेक्षौमेवाताडपत्रके ॥
यंत्रंविलिख्यघुटिकांबद्ध्वासूत्रेणवेष्टयेत् ॥१२॥ लाक्षयाच्छादितेस्वर्णेरूप्येताम्रेथवाक्षिपेत् ॥मध्य
बीजेनसंपूज्यदेवंमातृकयापिवा ॥१३॥ संजप्यहुत्वासंपातसिक्तंकृत्वानियोजयेत् ॥ मूर्ध्निबाहौग
लेवापितत्तदिष्टार्थसिद्धये ॥ १४ ॥

प्रतिदिशम् ॥ ९ ॥ गायत्रीमाह ॥ यंत्रेति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ मध्यबीजेनयद्देवताकंयंत्रंतद्बीजेनतद्ज्ञानेमातृ
कयां ॥ १३ ॥ संपातोहुतशेषस्तेनसिक्तम् ॥ १४ ॥

भूतलिपिरुपास्याजप्या ॥सायथा–अंइंउंऋंऌंएंऐंओंऔंहंयंरंवंलंङंकंखंघंगंञंचंछंझंजंणंटंठंढंडंनंतंथंधंदंमंपंफंभंबंशंषंसं इतिद्विचत्वारिंशदर्णा भूतलिपिः ॥ तदुक्तंशारदायां–पंचह्रस्वाःसंधिवर्णाव्योमेरोऽग्निर्जलंधरा ॥ अंत्यमाद्यंद्वितीयंचचतुर्थंमध्यमंक्रमात् ॥ पंचवर्गाक्षराणिस्युर्वांतश्वेतं( ? ) ड्रुभिःसहेति ॥ अस्यादक्षिणामूर्तिऋषिःगायत्रीछंदः वर्णेश्वरीदेवता ॥ हंयंरंवंलंहृत् ॥ ङंकंखंघंगंशिरः ॥ ञंचंछंझंजंशिखा ॥ णंटंठंढंडंवर्म ॥ नंतंथंधंदंनेत्रम् ॥ मंपंफंभंबंअस्त्रम् ॥ गुदलिंगनाभिहृत्कंठभ्रूमध्यकेशांतशिरोब्रह्मरंध्रेषुनवस्वरान्न्यस्योर्ध्वप्राग्दक्षिणोदक्पश्चिमवक्त्रेषुहादि

यंत्रसेवनसक्तेनोपास्याभूतलिपिःपरा ॥ ययोपासितयासर्वंयंत्रसिद्धिःप्रजायते ॥ १५ ॥
अथवश्यकरंयंत्रमुच्यतेक्षिप्रसिद्धिदम् ॥ भस्मादिशोधितेकांस्यभाजनेऽष्टदलंलिखेत् ॥ १६ ॥

पंचकं करयोरग्रेमूलकूर्परांगुलिसंधिमणिबंधेषुङादिवर्गंञादिवर्गौ पादयोरग्रमूलजान्वंगुलीसंधिगुल्फेषुणादिनादि वर्गौ उदरपार्श्वद्वयनाभिपृष्ठेषुमादिवर्गं गुह्यहृद्भ्रूमध्येषुशषसान्न्यसेत् ॥एवं वर्णान्न्यस्यचंद्रशेखरांत्रिनेत्रांवराक्षमालापुस्तककपालकरांसुरामत्तांध्यायेत् ॥ एवंध्यात्वालक्षंप्रजप्यायुतंतिलैर्हुत्वासिद्धमंत्रोभवति ॥ एवंभूतलिपिसेवयावक्ष्यमाणयंत्रसिद्धिः ॥ श्रीविद्ययोराधारताच ॥ १५ ॥ यंत्रमाह अथेति ॥ १६ ॥

॥ १७ ॥ स्वरैराढ्यानि युक्तानि अष्टयुग्मपत्राणिषोडशदलानियस्येदृशेनांबुजन्मनापद्मेनतदष्टदलंवेष्टयेत्॥लोहानि हैमरूप्यताम्राणि ॥ अत्रमातृकादेवता ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ द्वितीयमाह ॥ मायेति ॥ रेखाद्वयकृतेनभूपुरेण

गोरोचनाकुंकुमाभ्यांलेखन्याजातिजातया ॥कर्णिकासाध्यनामाढ्यंवर्गयुक्ताष्टपत्रकम्॥ १७ ॥ तद्वेष्टयेत्स्वराढ्याष्टयुग्मपत्रांबुजन्मना॥तद्वेष्टयेत्त्रिभिर्वृत्तैःपूजयेत्सप्तवासरान् ॥१८॥ नृपादिपुरुषाः सर्वेयोषितोपिवशाध्रुवम् ॥ मोहनाख्येमहायंत्रेपूजितेस्युर्नसंशयः॥ १९॥भूर्जादौलिखितंलोहवेष्टितंशिरसाधृतम् ॥नृपाणांदुष्टसत्त्वानांवशीकरणमुत्तमम् ॥२०॥ मायासंपुटितांसाध्याभिधामादौसमालिखेत् ॥तस्याउपर्य्यधश्चापिमायाबीजचतुष्टयम् ॥ २१ ॥ तद्वेष्टयेद्भूपुरेणरेखाद्वितयसंयुतम् ॥ भूर्जपत्रेविलिखितरोचनाशीतकुंकुमैः ॥२२॥अनामारक्तसंमिश्रैःपूजितंवशकृन्मतम् ॥ कुमारीर्वाडवान्नारीःसंभोज्यवितरेद्बलिम्॥२३॥रक्तपुष्पान्नपललैर्वशीकरणसिद्धये॥ सर्वस्वमपहर्तुंवानिबद्धुंवांछतीश्वरे॥२४॥यंत्रंबाहौविधृत्येदंगच्छेद्भूमिपतिंनरः॥क्रोधाक्रांतमनाभूपःशांतकोपस्तमर्चयेत्॥२५॥

चतुष्कोणेन ॥ शीतंचंदनम् ॥ २१ ॥ २२ ॥ वाडवान्विप्रान् ॥ २३ ॥ पललंमांसम् ॥ २४ ॥ अत्रगौरीदेवता॥२५॥

**तृतीयमाह ॥ दक्षिणोत्तरेति ॥ दक्षिणोत्तरायतंरेखाद्वयंकृत्वामध्येनामविलिखेत् ॥ २६ ॥ तारपद्मालयापुटंप्रणव श्रीपुटितम् ॥ ॐश्रींदेवदत्तश्रींॐइति ॥ २७ ॥ रेखाद्वयोपर्यधश्चकोष्ठत्रयेश्रींक्षःश्रीमितिरेखाग्रकोष्ठयोरंतिमंक्षं**

बीजंसंपुटनामेदंयंत्रमुक्तमनीषिभिः ॥ दक्षिणोत्तरगंकुर्य्याद्रेखाद्वितयमुत्तमम् ॥ २६ ॥ तन्मध्ये
विलिखेत्साध्यंतारपद्मालयापुटम् ॥ रेखाग्रयोःस्थितेकोष्ठद्वयेसर्गिणमंतिमम् ॥ २७ ॥ रेखाद्वयोप
र्य्यधश्चकोष्ठानांत्रितयंलिखेत्॥मध्यकोष्ठेससर्गक्षंश्रींबीजंपार्श्वकोष्ठयोः ॥२८ ॥ एतद्रोचनयाभूर्जे
लिखित्वावह्निनादहेत् ॥शरावसंपुटस्थंतत्ततोभस्मसमुद्धरेत् ॥ २९ ॥ दुग्धेनसहपीतंतत्स्वामिव
श्यकरंपरम्॥दिक्षुमायाचतुष्काढ्यंसाध्यंषट्कोणमध्यतः ॥ ३० ॥ कोणेषुकोणमध्येषुमायाबीजं
समालिखेत् ॥ रोचनाकुंकुमाभ्यांतुभूर्जपत्रेमनोहरे ॥३१॥तच्छरावस्थितंपूज्यंजपेन्मायांतदग्रतः॥
शरावात्तत्समादायबद्धामूर्द्धनिमानवः॥ ३२॥ अग्नितोयादिदिव्येषुशुचिर्दाहादिवर्जितः॥ जयम
प्नोतितद्वात्रौकर्तातस्यप्रभावतः ॥ ३३ ॥

**सर्गिणंविसर्गयुतंक्षः ॥ २८ ॥ शरावयोर्मध्येदहेत् ॥ अत्रश्रीर्देवता ॥ २९ ॥ चतुर्थंदिव्यंस्तंभनमाह ॥ दिक्ष्विति ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ पापकर्तापिदिव्ययंत्रधारणाज्जयति ॥ गौरी देवता ॥ ३३ ॥**

राजमोहनंपंचममाह ॥ मायेति ॥ अष्टदलंकृत्वामध्येह्रींसःह्रींदेवदत्तसःह्रींइतिविलिख्यदलेषुह्रींसःह्रीं इति लिखेत् ॥ उपरिभूपुरम् ॥ गौरीदेवता ॥ मृत्युंजयंषष्ठमाह ॥ क्रुद्धादिति ॥ सप्तरेखात्मकचतुष्कोणेऽमुकस्य मृत्युंवशयेतिविलिख्योपरिद्वादशदलेऋॠऌॡरहितान्स्वरान्लयुतान्कृत्वात्रिशूलांकितकोणेनचतुरस्रेणवेष्टयेत् ॥ यंत्रद्वयम

दिव्यस्तंभनसंज्ञंचयंत्रमुत्तममीरितम्॥ मायाविसर्गिसार्णाभ्यांपुटितंनाममध्यतः ॥ ३४ ॥ दलेष्वष्टसुसर्गाढ्यौसौमायापुटितौलिखेत्॥चतुरस्रेणतत्पद्मंवेष्टयेद्भूर्जपत्रके ॥ ३५ ॥ रोचनाकुंकुमाभ्यांतुलिखित्वातच्छरावयोः॥प्रक्षिप्यपूजयेत्सप्तरात्रंमायांजपेन्नरः॥३६ ॥ राजमोहननामेदंयंत्रंनृपरुषंहरेत्॥क्रुद्धाज्जिघांसोर्नृपतेरात्मरक्षाविधित्सया। ३७।वक्ष्येमृत्युंजयंयंत्रंपद्ममर्कदलंलिखेत्॥कर्णिकायांचतुष्कोणेलिखेन्नामक्रियान्वितम्॥३८॥सप्तरेखात्मकंकार्य्यंतच्चतुष्कोणमुत्तमम् ॥ईशादिद्वादशदलेष्वक्लीबस्वरसंयुतान्। ३९।कर्णान्विलिख्यतत्पद्मंचतुरस्रेणवेष्टयेत्।चतुरस्रस्यकोणेषुत्रिशूलानिसमालिखेत्॥४०॥भूर्जपत्रद्वयेचैतद्यंत्रंकृत्वापृथक्पुनः।यंत्रद्वयपुटंकृत्वास्थापयेत्कावुदङ्मुखः।४१।

ध्येइदंयंत्रसंयोज्य कौपृथिव्यांनिखनेत् ॥ मातृकादेवता ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥४० ॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥ विवादेजयावहंसप्तममाह ॥ लिखेदिति ॥ गौरीदेवता ॥४३॥४४॥ धनिकवश्यकरमष्टममाह ॥ धनिक

तस्योपरिशिलांन्यस्यतत्स्थितोमातृकांजपेत् ॥ एवंकृतेसाधकःस्याद्धीतत्रासोयमादपि ॥ ४२ ॥
सर्वरोगसमूहाच्चकिंपुनाराजमंडलात् ॥ लिखेच्चतुर्दलंपद्मंसाध्याख्यायुक्तकर्णिकम्॥४३॥रोचना
कुंकुमाभ्यांतुभूर्जेमायायुतच्छदम् ॥ तद्यंत्रंपयसिन्यस्यविवादंवादिनाचरेत्॥४४ ॥ जयमाप्नोतिग
दितंविवादविजयाभिधम् ॥ धनिकेयाचतिद्रव्यंदानाशक्तेऽधमर्णके ॥४५॥ धनिकस्यवशीकृत्यैयं
त्रंभूर्जदलेलिखेत् ॥ रोचनाकुंकुमाभ्यांतुषट्कोणंसाध्यकर्णिकम् ॥४६ ॥ कोणाग्रेकोणमध्येषुकामा
न्द्वादशसंलिखेत् ॥ तद्वृत्तेनचसंवेष्ट्यमाययावेष्टयेद्बहिः ॥ ४७ ॥ पुनर्वृत्तेनसंवेष्ट्यपूजयेत्सप्तवास
रान् ॥पठेत्सप्तशतींनित्यमंतेहोमंशताधिकम् ॥ ४८ ॥ कृत्वासंभोजयेत्कन्यांवरेद्यंत्रंगलेस्वके ॥
एवंधनीवशमितोनयाचतिददात्यपि॥४९ ॥ दुष्टाराजसमीपस्थाःपैशुन्यंकुर्वतेयदा ॥ तदायंत्रंप्रकु
र्वीतदुष्टमोहनसंज्ञकम् ॥ ५० ॥

इति ॥ भूर्जदले भूर्जपत्रे ॥ गौरीदेवता ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ दुष्टमोहनंनवममाह दुष्टाइति ॥ ५० ॥

भूर्जेखररक्तेनसाध्यगर्भमष्टदलंविलिख्यदिग्दलेषुमायांविदिग्दलेषुसः इतिविलिख्य वृत्तद्वयेनसंवेष्ट्यप्राणान्संस्थाप्य
संपूज्यदुग्धेक्षिप्तंवश्यकरम् ॥ गौरीदेवता ॥ जयदंदशममाह ॥ चतुरस्रइति ॥ विषंमः ॥ अनंत अः ॥ भृगुः
सः ॥चतुर्दलेंह्रींसह्रींइतिविलिख्यतदुपर्यष्टदलंकृत्वादिक्पत्रेषुरोहरोधस्तंभक्षोभइतिवर्णद्वंद्वंविदिक्पत्रेषुक्षइतिचरमः

लिखेदष्टदलंपद्मंभूर्जेचक्रीवतोसृजा ॥ कर्णिकागतसाध्याख्यंमायायुक्तककुब्दलम् ॥५१॥ सर्गांत
भृगुयुक्कोणंवृत्तद्वितयवेष्टितम् ॥ कृतासुस्थापनंयंत्रंसंपूज्यपयसिक्षिपेत् ॥५२॥ एकविंशतिरात्रेणदु
ष्टाःस्युर्वशवर्तिनः ॥ चतुरस्रेविषानंतंगतंमायापुटंभृगुम्॥५३ ॥ लिखित्वातस्यकोणेषुककुप्स्वपि
दलाष्टकम् ॥ रोहरोधस्तंभक्षोभदिग्दलेषुक्रमाल्लिखेत् ॥ ५४ ॥ कोणेषुसार्गेचरमंभूर्जेरोचनयोत्तमे
शरावद्वयमध्यस्थंमध्येसाध्याभिधान्वितम् ॥५५॥ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैर्दिक्पतिभ्योबलिंहरेत् ॥ व्य
वहारेविवादेचवशकृद्राजवेश्मनि ॥ ५६॥ यंत्रमेतत्समाख्यातंजयदंमानवर्द्धनम्॥यावज्जीववशीक
र्तुंनरंयंत्रंतथोच्यते ॥ ५७ ॥

॥ गौरीदेवता ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ गणेशयंत्रमेकादशमाह ॥ यावदिति ॥ ५७ ॥

चतुरस्रंकृत्वामध्येपंक्तिचतुष्टयंकार्यम् ॥ आद्यायांमायासप्तकम् ॥ द्वितीयायांक्रोंह्रींक्लींगंदेवदत्तंवशयगमिति ॥
तृतीयायांक्रोंह्रींक्लींह्रींइति ॥ चतुर्थ्यांमायाचतुष्कम् ॥ चतुरस्राद्बहिर्दक्षिणदिशांहित्वातिसृषुदिक्षुगंबीजस्यदशकं
दशकंतदुपर्यपिचतुष्कोणम् ॥ एतद्यंत्रंकृष्णमृत्कृतगणेशोदरेन्यस्यतंसंपूज्यदेवेतिसंप्रार्थ्यहस्तमात्रगर्तेनिखायपूरये

अनामासृग्गजमदरोचनालक्तकैर्लिखेत् ॥ भूर्जेजातीयलेखन्याचतुरस्रंमनोहरम् ॥५८॥ तत्राद्यपं
क्तौसंलेख्यमायाबीजस्यसप्तकम् ॥ द्वितीयायांसृणिर्मायाकामौनामगसंपुटम् ॥ ५९ ॥ तृतीयायां
सृणिपुटामाययासंपुटःस्मरः ॥ लेख्यंपंक्तौचतुर्थ्यांतुमायाबीजचतुष्टयम् ॥६०॥चतुरस्राद्बहिर्दिक्षु
दशबीजंगणेशितुः ॥ विलेख्यदक्षिणांहित्वाकुर्य्याद्भूयोपिभूपुरम्॥६१॥एतद्यंत्रंगणपतेरुदरांतः
प्रविन्यसेत् ॥ विनिर्मितस्यसुक्षेत्रादात्तयाकृष्णयामदा ॥ ६२ ॥ पंचोपचारैर्गणपंसंपूज्यामुंमनुंप
ठेत् ॥ देवदेवगणाध्यक्षसुरासुरनमस्कृत ॥ ६३ ॥ देवदत्तंममायत्तंयावज्जीवंकुरुप्रभो॥ हस्दमात्रे
धरागर्तेतंविन्यस्यगणाधिपम् ॥ संपूरयेन्मृदागर्तमेवंवश्योभवेन्नरः ॥ ६४ ॥ पद्मंचतुर्दलंकृत्वासा
ध्याख्यंनेत्रकर्णिकम् ॥ तारोनमइमान्वर्णाल्लिखेद्दलचतुष्टये ॥ ६५ ॥

दिति ॥ गणपतिर्देवता ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ नृपवश्यकरंद्वादशमाह ॥ पद्ममिति ॥
चतुर्दलेइयुतंनाम ॥ ॐनमइतिप्रतिदलम् ॥ अजितेइतिदाक्षिणोत्तरदलयोराधिकांलिखेत् ॥ अजितादेवता ॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ भृत्यवश्यकरंत्रयोदशमाह ॥ चतुर्दलान्तरिति ॥ क्रिया वशयेति तद्युतम् ॥ गौरींदेवता ॥६८॥
॥ ६९ ॥ दुष्टवश्करंचतुर्दशमाह ॥ चतुरस्रइति ॥ मायाबीजगतान्नामार्णांश्चतुरस्रेविलिख्यदुष्टपादरजोयुक्तराजि

अजितेइत्यपिलिखेद्दक्षिणोत्तरपत्रयोः॥ भूर्जेगोरोचनाचंद्रकेसरागुरुभिःपुनः ॥ ६६ ॥ त्रिदिनंनि
यतोयंत्रंसंपूज्याह्निचतुर्थके ॥ एकंसंभोज्यविप्रेंद्रंयंत्रंबाहौविधारयेत् ॥६७॥ हेमादिसंस्थितंभूयो
वशकृद्दर्शनादपि ॥ चतुर्दलांतर्विलिखेद्भृत्यनामक्रियान्वितम्॥६८॥दलेषुमायाबीजानिभूर्जेरोच
नयासुधीः ॥ दध्निक्षिप्तेतुतद्यंत्रेभृत्यआज्ञाकरोभवेत् ॥ ६९ ॥ चतुरस्रेलिखेत्साध्यनामर्णान्गिरिजा
युतान्॥भूर्जेरोचनयामंत्रीदुष्टप्रभुवशीकृतौ ॥७०॥ शत्रुप्रतिकृतेयंत्रंहृदयेतत्प्रविन्यसेत् ॥ कृता
याराजिकापिष्टैःशत्रुपादरजोयुतैः ॥ ७१ ॥ प्रतिमांपूजयित्वातांचुल्लीपार्श्वेनिखानयेत् ॥ अजासृग्यु
क्तभक्तेनकृष्णभूतेबलिंहरेत् ॥७२॥ महाकालायदिक्पेभ्योऽरुणपुष्पाज्यसंयुतम् ॥ एवंकृतेभवेद्व
श्योनृपोदुष्टोपितत्क्षणात् ॥ ७३ ॥

कापिष्टकृततत्प्रतिमायां हृदिन्यस्यतां चुल्लींनिखायकृष्णचतुर्दश्यांमहाकालायारुणपुष्पाज्येनयुक्तमजायारक्तयु
क्तभक्तेनबलिंदद्यात् ॥ उक्तफलसिद्धिः ॥ गौरींदेवता ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

ललितायंत्रंपंचदशमाह ॥ दौर्भाग्येति ॥ शुक्लत्रयोदश्यांभूर्जेरोचनाकस्तूरीकुंकुमैश्चतुष्कोणगर्भमष्टदलंकृत्वामाया
त्रयपुटितंभर्तृनामांतर्विलिख्यदिक्पत्रेषुमायात्रयंकोणदलेएकांकृत्वोत्तरदिग्वक्त्रोरात्रावर्चेत् ॥ ललितादेवता॥

दौर्भाग्यशमनंभर्तृवशकृद्यंत्रमुच्यते ॥ नारीणामीप्सितप्राप्तिकरंसौभाग्यवर्द्धनम् ॥७४ ॥ कुर्य्याद
ष्टदलंपद्मंचतुष्कोणाढ्यकर्णिकम् ॥ चतुष्कोणेलिखेन्मायाबीजानांत्रितयंशुभम् ॥ ७५ ॥ ततःस्व
नाथनामार्णान्मायाबीजत्रयंपुनः ॥ दिक्पत्रेत्रींगौरिसुतांविदिक्पत्रेष्वथैकशः ॥७६॥ भूर्जेसितत्रयो
दश्यांरोचनानाभिकुंकुमैः॥ विलिख्योत्तरदिग्वक्त्रोनिश्यर्चेत्सप्तवासरान् ॥७७॥ तदंतेभोजयेत्स
प्तपतिपुत्रान्विताःस्त्रियः ॥ ललिताप्रीतयेपश्चाद्यंत्रंधातुगतंधृतम् ॥ ७८ ॥ रूपसौभाग्यसंपत्तिकरं
प्रियवशंवदम्॥ संप्रोक्तंललितायंत्रंकामिनीनामभीष्टदम् ॥ ७९ ॥ गोरोचनाकुंकुमाभ्यांभूर्जेष्टदल
मालिखेत् ॥ साकारपुटितंनामकर्णिकायांदलेद्विजा ॥८०॥ दिनद्वयंनिशास्विष्ट्वाभोजयित्वांगना
त्रयम् ॥कंठधृतंभर्तृवश्यकारकंयंत्रमुत्तमम् ॥ ८१ ॥

॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ षोडशमाह ॥ गोरोचनेति ॥ सादेवदत्तसाइतिमध्ये॥पत्रेषुह्रीं ॥
गौरीदेवता ॥ ८० ॥ ८१ ॥

बीजयंत्रंसप्तदशमाह ॥ भृग्वेति ॥ भृगुःसः ॥ आकाशोहः ॥ विधिःकः ॥ क्ष्मालः ॥ खंहः ॥ वह्निरः ॥ एतान् शांतींदुविभूषितान् ईबिंदुयुतान् ॥ तेनषट्कूटंसींहींकींलींहींरींइति ॥ सुंदरीदेवता ॥ ९२ ॥ ८३ ॥ आकर्षणयंत्रमष्टादशमाह ॥ चतुर्दलमिति ॥ स्वरुधिरयुक्तरक्तचंदनैःक्रोधबीजंहुं ॥ रुद्रोदेवता ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ त्रिपुरायंत्र

भृग्वाकाशविधिक्ष्माखवह्नीञ्छांतींदुभूषितान् ॥ लिखेदष्टारपद्मस्यकर्णिकायांदलेष्वपि ॥ ८२ ॥
गोरोचनाचंदनाभ्यांभूर्जेभ्यर्चेद्दिनत्रयम् ॥ धृतंहेमगतंकंठेनार्य्याबाह्वोर्नरेणवा ॥८३॥ सौभाग्यदं
बीजयंत्रंप्रोक्तंदौर्भाग्यनाशनम् ॥ चतुर्दलंलिखेद्भूर्जेस्वासृग्युग्रक्तचंदनैः ॥ ८४ ॥ कर्णिकायांसाध्य
नामक्रोधबीजदलेष्वपि ॥ तद्यंत्रंपूजयित्वाज्येक्षिप्तमावृष्टिकृद्भवेत् ॥ ८५ ॥ षट्कोणेविलिखेन्नाम
वाङ्मनोभवमध्यतः ॥ कोणेषुभृगुरौसर्गीभूर्जेरोचनयार्पितम् ॥८६॥ पूजितंत्रिपुरायंत्रंधृतांतांर्विनि
वेशितम् ॥ इष्टस्याकर्षणंतेनभवेत्सप्ताहमध्यतः ॥ ८७ ॥हरिद्र्यालिखेदष्टदलंवह्न्यस्रकर्णिकम् ॥
शिलायांमध्यतोनामभूबीजंदलमध्यतः ॥ ८८ ॥

मेकोनविंशमाह ॥ षट्कोणइति ॥ वाक्ऐं ॥ मनोभवःक्लीं ॥ भृगुःसः औसर्गीसौः ॥ त्रिपुरादेवता ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ मुखमुद्रर्णाविंशमाह ॥ हरिद्र्येति ॥ हरिद्र्याशिलायांत्रिकोणमध्यमष्टदलंकृत्वात्रिकोणेनामनिर्मायदलेषुग्लौंविलिख्यसंपूज्याशिलांतरेणपिधायानिखनेत् ॥ उक्तफलसिद्धिः ॥ भूमिर्देवता ॥ ८८ ॥

॥ ८९ ॥ अग्निभयहरमेकविंशमाह ॥ वृत्तइति ॥ क्रियेति अमुकस्याग्निभयहरीति ॥ ९० ॥ ९१ भुजयाबाहुना ॥ मातृकादेवता ॥ ९२ ॥ विद्वेषणंद्वाविंशमाह ॥ मायेति ॥ भूर्जेरिपुरुधिरेणकाकपक्षलेखिन्याचतुर्दलेह्रीं

तदभ्यर्च्यपिधायाथशिलयानिखनेत्क्षितौ॥वादेविवादेजायेतप्रतिवाद्यास्यमुद्रणम् ॥ ८९॥ वृत्तेनामसमालिख्यक्रियाकर्मसमन्वितम्॥ दिक्षुवृत्ताद्बहिर्लेख्यंवकाराणांचतुष्टयम् ॥ ९० ॥वेष्टितंचतुरस्रेणयन्त्रमेतत्सुसाधितम्॥गोरोचनाचंदनाभ्यांभूर्जेलिखितमुत्तमम् ॥ ९१॥ एतद्यंत्रंवृतंलोहत्रयेणभुजयाधृतम्॥निवर्तयेदग्निभयंसदनेपिचसंस्थितौ ॥ ९२ ॥ मायापुटितमंकारंनामकर्मयुतंलिखेत्॥ चतुर्दलेऽब्जेलेखन्यावायसच्छदजातया ॥९३॥ दलेष्वपितथालेख्यंविरोधिक्षतजेनतत् ॥ निशिसंपूज्यतद्यंत्रमोदनंविनिवेदयेत् ॥९४॥ अजारुधिरसंयुक्तनारीमेकांचभोजयेत् ॥ ततःश्मशानेशर्वस्यगेहेवाशून्यमंदिरे ॥ ९५ ॥ निखातंतद्विषोर्द्वेषंजनयेदचिराद्ध्रुवम् ॥ विद्वेषणमिदंयंत्रमथोमारणमुच्यते ॥ ९६ ॥

अंह्रीं अमुकौद्वेषयेतिमध्येदलेष्वपिविलिख्यरात्रौसंपूज्यमेषीरुधिरयुक्तमोदननिवेद्यैकनारींसंभोज्ययंत्रंशंभोःसद्मनिश्मशानादौवानिखातेद्वेषासिद्धिः ॥ गौरीदेवता ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मारणंत्रयोविंशमाह ॥ लिखेदिति ॥ चितांगारमेषरक्ताविषैःकाकपक्षलेखिन्यानरकपालेऽष्टदलांतःहुंफट्देवदत्तफट्
हुंइतिविलिख्यदिग्दलेषुहुंकोणदलेषुफट्ततः पद्मंवृत्तेनतच्चवर्मणावेष्ट्यसंपूज्यभस्मनिप्रक्षिप्योपरिस्वल्पंस्वल्पमग्निंप्र
त्यहंप्रज्वालयेद्यथादिनविंशत्यासर्वकपालस्यदाहः ॥ एवमुक्तफलासिद्धिः ॥ अस्त्रंदेवता ॥ ९७॥९८॥९९ ॥ १०० ॥

लिखेदष्टदलेपद्मेनामवर्मास्त्रसंपुटम्॥ दिग्दलेष्वथवर्मैवविदिग्दलगमस्त्रकम्॥ ९७॥ वृत्तेनपद्मंसंवेष्ट्य
वर्मणावेष्टयेच्चतत्॥ श्मशानांगारमेषासृग्विषैःकाकच्छदोत्थया ॥ ९८ ॥ लेखन्यालिखितंयंत्रंकपा
लनरसंभवे॥ सञ्छाद्यभस्मनातस्योपरिप्रज्वालयेद्वसुम् ॥ ९९ ॥ प्रत्यहंप्रदहेत्स्तोकंस्तोकंविंशद्दि
नावधि॥ विंशेहन्यखिलंदग्धंशत्रोर्लोकांतरप्रदम्॥ १०० ॥ चतुर्दलेलिखेन्नामदलगंसर्गिमारुतम्॥
उलूककाकरक्तेनभूर्जेभूतदिनेनिशि। १०१। रक्तवस्त्रधरोरक्तपुष्पमाल्यानुलेपनः॥ लिखित्वापूजयेद्यंत्रं
रक्तैःपुष्पैश्चचंदनैः। १०२। कुमारींभोजयेन्नित्यंदद्यात्तस्यैचदक्षिणाम्। एवंविंशतिघस्रांतंविधायचरमे
दिने। १०३। यंत्रंतत्खंडशःकृत्वाक्षिपेदुच्छिष्टओदने॥ दत्तेतस्मिन्वायसेभ्यउच्चाटोजायतेरिपोः। १०४।

उच्चाटनंचतुर्विंशमाह ॥ चतुर्दलइति ॥ मारुतोयः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ चरमेन्त्ये ॥ १०३ ॥ तस्मिन्यंत्रखंडयुक्तो
च्छिष्टोदनेकाकेभ्योदत्तेफलम् ॥ वायुर्देवता ॥ १०४ ॥

शांतिकरंपंचविंशमाह ॥ रोचनेति ॥ भूर्जेरोचनादिभिःपूर्वापरायतंदक्षिणोत्तरायतंचरेखाष्टकंकृत्वातत्रबाहिःकोष्ठपंक्तिष्वीशानादिष्वकारादिजकारांतांस्तदंतःपंक्तिषुसकारादिभकारांतान् ॥ तदंतःपंक्तिषुमकारादिसकारांता

रोचनामृगकर्पूरकुंकुमैःशोभनेदिने ॥ भूर्जेप्रविलिखेद्यंत्रंलेखन्याजातिजातया ॥ १०५ ॥ प्राक्प्रत्य
ग्दक्षिणोदक्चकुर्य्याद्रेखाष्टकंसमम् ॥ एवमेकोनपंचाशज्जायंतेकोष्ठकास्ततः । १०६ दिग्गतांतिमपंक्ति
स्थांश्चतुर्विंशतिवर्णकान् ॥ अकारादिजकारांतांल्लिखेच्चन्द्रसमन्वितान् ॥ १०७ ॥ तदंतर्गतपंक्ति
स्थान्झादिभांतांश्चषोडश ॥ तदंतःस्थान्मादिसांतान्हकारंशिष्टकोष्ठके ॥ १०८ ॥ रेखाग्रेषुत्रिशूला
निकुर्वीतरदसंख्यया ॥ उपर्य्यधस्त्रिशूलांतर्ह्रीं ल्लेखासप्तकंलिखेत् ॥ १०९ ॥ एवंविलिख्यतद्यंत्रंपूजये
द्दिवसत्रयम् ॥ चंडीपाठकरोविप्रभोजकोभूमिशायकः ॥ ११० ॥ ततोलोहत्रयाविष्टंधारयेद्दोष्णिवा
गले ॥ उपसर्गाःकलिःकृत्याःशमंयांतिविधारणात् ॥ १११ ॥

न्मध्येहंविलिख्यरेखाग्राणिसंवर्ध्यत्रिशूलाकाराणियंत्रपूर्वभागपश्चिमत्रिशूलमध्यभागेषुसप्तह्रुह्रींसप्तकंकृत्वोक्तविधिनापूजितंदोष्णिबाहौधृतमुक्तफलदम् ॥ मातृकादेवता ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥

शाकिनीनिवर्तकंषड्विशमाह ॥ पूर्वोक्तेति ॥ पूर्वोक्तविधिनारोचनादिभिर्भूर्जेजातीलेखिन्याभृगुणासकारेण ॥
॥ ११२ ॥ पूर्ववदिति ॥ दिनत्रयंचंडीपाठादिना ॥ मातृकादेवता ॥ ११३ ॥ ज्वरहरंसप्तविंशमाह ॥ धत्तूरेति ॥
कृष्णाष्टम्यांकृष्णचतुर्दश्यांवाश्मशानवस्त्रेधत्तूररसेनपरस्परव्यातिभिन्नंचतुष्कोणद्वयंकृत्वाऽष्टसुकोणेषुतन्मध्येष्वपिर

पूर्वोक्तविधिनाकुर्य्यात्पद्ममष्टदलान्वितम्॥ मध्येनाम्नायुतंसर्गिभृगुणाष्टदलेष्वपि ॥ ११२ ॥ पूर्वव
त्पूजितंचैतद्बद्धंकंठेभुजेशिशोः॥शाकिनीभूतवेतालग्रहान्सद्योनिवर्तयेत् ॥ ११३ ॥ धत्तूररसतोले
ख्यंपितृकान्तारवाससि ॥ कृष्णेवसुतिथौभूतेपुटितंभूपुरद्वयम् ॥११४॥ कोणांतरालेकोणेषुरेफषो
डशकंलिखेत् ॥दिक्षुरेफचतुष्कोणयुतंनामापिमध्यतः ॥११५॥ ॥पूजितंतत्पितृवणेनिखातंज्वरशां
तिकृत् ॥भूर्जेसुगंधैर्विलिखेत्पद्ममष्टदलान्वितम् ॥ ११६ ॥ नामान्वितंकर्णिकायांदलेष्वजययायु
तम् ॥पूजितंविधृतंबाहौसर्पभीतिनिवारकम् ॥ ११७ ॥

मितिविलिख्यमध्येरंवेष्टितंनामकृत्वा पूजितंश्मशानेनिखातंज्वरहरम् ॥ अग्निर्देवता ॥११४॥ सर्पभयहरमष्टाविंशमाह
भूर्जइति ॥ रोचनादिनाभूर्जेष्टदलंकृत्वामध्येनामदलेषुहंसईतिलिखेत् ॥ हंसोदेवता ॥ ११५॥११६॥ ११७ ॥

बंधमोक्षकृतमेकोनात्रिंशमाह रोचनेति ॥ हिमंचंदनम् ॥ कांस्यपात्रेरोचनादिनाषोडशदलेमायाम् ॥दलेषुस्वरान्विलिख्यतदुपरिककारादिसकारांतार्णयुक्तं द्वात्रिंशद्दलंतदुपरिकोणेषुहक्षयुंतचतुष्कोणंकृत्वासप्ताहपूजितंबंधहरम् ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ उक्तयंत्राणांसिद्धयेमातृकाभूतालिपिर्भैरवाणामन्यतमउपास्यः ॥ तत्रद्वेउक्ते ॥

रोचनाहिमकर्पूरकुंकुमैःपद्ममालिखेत्॥ षोडशारंस्वरैर्युक्तंदलंमायाद्यकर्णिकम् ॥ ११८ ॥ तस्योपरिष्टाद्द्वात्रिंशद्दलंव्यंजनयुग्दलम् ॥ पद्मंदिग्विदिशाहक्षयुक्तंक्ष्मापुरवेष्टितम् ॥११९॥ एतद्यंत्रंकांस्यपात्रेलिखितंसप्तवासरान् ॥ पूजितंभूर्जलिखितंधृतंवाबद्धमोक्षकृत्॥१२०॥पूर्वोक्ताखिलयंत्राणांसिद्धिकामेनमंत्रिणा ॥ उपास्यामातृकादेवीयद्वाभूतलिपिःपरा ॥१२१॥ यद्वोपास्योलेखकालेस्वर्णाकर्षणभैरवः ॥ प्रणवोवाग्भवंकामशक्तीदीर्घत्रयान्विते॥ १२२ ॥ सर्गीभृगुर्भयासंदुरापदुद्धारणाय च ॥ अजामलांतेबद्धायङेतोलोकेश्वरस्तथा ॥ १२३ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरान्तेदीर्घोबालःप्रभंजनः॥ ममदारिद्र्यविद्वेषणायान्तेप्रणवोरमा ॥ १२४ ॥

॥ १२१ ॥ भैरवमाह ॥ प्रणवइति ॥ १२२ ॥ भृगुःसः भयावः ॥ १२३ ॥ दीर्घोबालः वा प्रभंजनोयः ॥ रमाश्रीः ॥ १२४ ॥

हृदयंनमः ॥ मंत्रोयथा–ॐऐंक्लांक्लींक्लूंह्रांह्रींह्रूंसःवंआपदुद्धारणाय अजामलबद्धायलोकेश्वरायस्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्यविद्वेषणाय ॐश्रींमहाभैरवाय नमइति ॥ १२५ ॥ षडंगमाह ॥ नंदेति ॥ नंदानव ॥ आशादश ॥ ॥ १२६ ॥ अथवेति ॥ क्लांह्रांहृत् क्लींह्रींशिरइत्यादि ॥ ध्यानमाह ॥ पारिजातेति ॥ पारिजातवनमध्यगतेमा

ङेन्तोमहाभैरवांतेहृदयंकीर्तितोमनुः ॥ अष्टपंचाशदर्णाढ्योमुनिरस्यचतुर्मुखः॥१२५॥ पंक्तिश्छंदो
देवतोक्तास्वर्णाकर्षणभैरवः ॥ नंदाष्टार्कनवाशादिग्वर्णैरंगमनोःस्मृतम् ॥१२६॥अथवाकामशक्ति
भ्यांदीर्घाढ्याभ्यांषडंगकम्।पारिजातद्रुकांतारेस्थितेमाणिक्यमंडपे॥सिंहासनगतंध्यायेद्भैरवंस्वर्ण
दायिनम्॥१२७॥गाङ्गेयपात्रंडमरुंत्रिशूलंवरंकरैःसंदधतंत्रिनेत्रम् ॥देव्यायुतंतप्तसुवर्णवर्णंस्वर्णाकृषं
भैरवमाश्रयामः॥१२८॥लक्षंजपेद्दशांशेनपायसैर्जुहुयात्सुधीः॥शैवेपीठेयजेद्देवमंगदिक्पालहेतिभिः
॥१२९ ॥ सिद्धंमनुंजपेन्नित्यंत्रिशतींमंडलावधि ॥ दारिद्र्यंदूरमुत्क्षिप्यजायतेधनदोपमः ॥ १३० ॥

णिक्यमंडपे हेमासनगतंध्यायेत् ॥ गांगेयपात्रंहेमभाजनं वरंचदक्षयोः ॥ त्रिशूलडमरूवामयोः ॥ १२७ ॥ १२८॥ हेतयो वज्राद्याः ॥ १२९ ॥ मंडलमेकोनपंचाशद्दिनानि ॥ १३० ॥

---

१ अस्यस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रस्यब्रह्माऋषिःपंक्तिश्छन्दःस्वर्णाकर्षणभैरवोदेवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ।

एधतेवर्द्धते ॥ अरेःशत्रोःसकाशात् पराभवोनस्यात् ॥ १३१ ॥ इतिश्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांमहीधरनिर्मितायांयंत्रमन्त्रादिकथनंनामविंशस्तरंगः ॥ २० ॥ ॥ एवंमंत्रजातंकथयित्वासर्वदेवतानांकामनाविशेषे

जपादिभिर्मनौसिद्धेयंत्रेभ्यःसिद्धिमाप्नुयात्॥सुवर्णमेधतेगेहेनैवारेःस्यात्पराभवः ॥ १३१ ॥इतिमंत्रमहोदधौयंत्रमन्त्रादिनिरूपणंनामविंशस्तरंगः ॥ २० ॥ ॥ नित्यपूजाविधिंसर्वदेवसाधारणंब्रुवे॥ ब्राह्मेमुहूर्तेउत्थायकृत्वाशौचादिकंसुधीः ॥ १ ॥ परिधायांबरंशुद्धंमंत्रस्नानंविधायच॥ प्रविश्यदेवतागारंकुर्य्यात्संमार्जनादिकम् ॥ २ ॥ मंगलारार्तिकंकृत्वानिर्माल्यमपसारयेत्॥ दद्यात्पुष्पांजलिंदन्तधावनाचमनेअपि ॥ ३ ॥ नमस्कृत्यासनेशुद्धेउपविश्यगुरुंस्मरेत्॥ शिरःस्थशुक्लपद्मस्थंप्रसन्नंद्विभुजाक्षिकम् ॥ ४ ॥ अहंब्रह्मास्मिसद्रूपंनित्यमुक्तंनशोकभाक्॥ गुरुदेवात्मनामित्थमैक्यंस्मृत्वार्चयेततम् ॥ ५ ॥

णयंत्राणिचनिरूप्यसर्वदेवसाधारणंपूजाविशेषंवक्तुमुपक्रमते ॥ नित्येति ॥१॥ २॥ ३ ॥ द्वौभुजौद्वेअक्षिणीचयस्यसद्विभुजाक्षिकःतम् ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ श्रीनाथविष्णोइत्यस्यस्थलेविश्वेशशंभोभवदाज्ञयैवेतिशिवोपासकेनभवानिदुर्गेइत्यंबोपासकेनोहोविधेयः ॥ ८ ॥ ९ ॥ आंतरंस्नानमाह ॥ कोटीति ॥ ॥ १० ॥ ११ ॥ वेदोक्तमार्गतः स्वशाखोक्तविधिनातत्तच्छाखानां

त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेवश्रीनाथविष्णोभवदाज्ञयैव॥प्रातःसमुत्थायतवप्रियार्थंसंसारयात्रामनुवर्तयिष्ये॥ ६॥जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मंनचमेनिवृत्तिः॥केनापिदेवेनहृदिस्थितेनयथानियुक्तोस्मितथाकरोमि॥७॥एतच्छ्लोकद्वयेनेष्टदेवतांप्रार्थयेद्बुधः।श्रीनाथविष्णोस्थानेतुकार्यंऊहोन्यदैवतः॥८॥देवतागुणनामादिस्मरन्स्नातुमथोव्रजेत् ॥ स्नानमांतरबाह्याख्यंद्विविधंकथितंबुधैः॥९॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंनिजभूषायुधैर्युतम्॥शिरःस्थंसंस्मरेद्देवंतत्पादोदकधारया ॥ १० ॥ विशंत्या ब्रह्मरंध्रेणानिजंदेहंविशुद्धया॥प्रक्षाल्यांतर्गतपापंविरजोजायतेनरः ॥ ११ ॥ एवंकृत्वांतरंस्नानंस्नायाद्वेदोक्तमार्गतः॥अघमर्षणसूक्तंचस्मरेदंतर्जलेसुधीः ॥१२ ॥ मंत्रस्नानंततःकुर्यात्तत्प्रकारोधुनोच्यते॥प्राणानायम्यमूलेनकृत्वान्यासंषडंगकम् ॥ १३ ॥ आदित्यमंडलात्तीर्थान्याह्वयेत्सृणिमुद्रया॥ मंत्रत्रयेणांबुमध्येविलिखेत्तन्मनुत्रयम् ॥ १४ ॥

भिन्नत्वान्नलिखितः ॥ अघमर्षणसूक्तम् ऋतंचसत्यंचेत्यादिकानामृचांसमूहविशेषः ॥अघमर्षणदृष्टमनुष्टुप्छंदस्कंभाववृत्तदेवताकम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ सृणिमुद्रांकुशमुद्राप्रोक्ता ॥ १४ ॥

ब्रह्मांडेत्यादिश्लोकत्रयंपुराणोक्तंतीर्थावाहनमंत्राः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ग्लौःचन्द्रः ॥ १८ ॥ तेनमन्त्रेणवंइतिबीजेन ॥ कवचेनहुंइतिबीजेन॥अस्त्रेणफडितिमन्त्रेण ॥ १९ ॥ ईशवारमेकादशवारं वक्ष्यमाणेनआधारइत्यादिना॥

ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरैःस्पृष्टानितेरवे ॥ तेनसत्येनमेदेवतीर्थंदेहिदिवाकर ॥ १५ ॥गंगेचयमुनेचैव
गोदावरिसरस्वति ॥ नर्मदेसिंधुकावेरिजलेस्मिन्संनिधिंकुरु ॥ १६॥ आवाहयामित्वांदेविस्नानार्थ
मिहसुंदरि ॥एहिगंगेनमस्तुभ्यंसर्वतीर्थसमन्विते ॥ १७ ॥ ततोवमितिबीजेनयोजयेत्तानितज्जले॥
अग्न्यर्कग्लौमंडलानितत्रसंचिंतयेत्पुनः ॥१८॥ मंत्रयेत्तेनमंत्रेणरविवारंततोजलम् ॥कवचेनावगुंठ्या
थरक्षेदस्त्रेणतत्पुनः ॥१९ ॥ मूलमन्त्रेणेशवारमभिमंत्र्यनमेज्जलम् ॥ मंत्रेणवक्ष्यमाणेनदेवतांमनसि
स्मरन् ॥२० ॥ आधारःसर्वभूतानांविष्णोरतुलतेजसः ॥ तद्रूपाश्चततोजाताश्चापस्ताःप्रणमाम्यहम्
॥ २१ ॥ मज्जेज्जलेस्मरंस्तत्रमूलवद्देवतांतथा ॥उन्मज्ज्यसिंचेत्कंसप्तकृत्वःकलशमुद्रया ॥ २२ ॥
मूलेनाथचतुर्मंत्रैरभिषिंचेन्निजांतनुम् ॥ लिख्यंतेतेऽथचत्वारोमंत्राःशंकरभाषिताः ॥ २३ ॥

देवताकृतिंध्यानोक्ताम् ॥ कं शिरः ॥ कलशमुद्रयाकुंभमुद्रया ॥ हस्तद्वयेनसावकाशिकमुष्टिकरेणकुंभमुद्रा ॥ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ देवमनुष्यान्पितॄंश्चसंक्षेपात्तर्पयेत्–ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यंताम्–सनकादयो मनुष्यास्तृप्यंताम्–कव्यवाडनलादयःपितरस्तृप्यन्ताम्–तर्पणार्हाअस्मत्पितरस्तृप्यंतामितिसंक्षेपतर्पणम्॥ सक्थि

सिसृक्षोर्निखिलंविश्वंमुहुःशुक्रंप्रजापतेः ॥मातरःसर्वभूतानामापोदेव्यःपुनंतुमाम् ॥ २४॥अलक्ष्मींमलरूपांयांसर्वभूतेषुसंस्थिताम्॥क्षालयंतिनिजस्पर्शादापोदेव्यःपुनंतुमाम् ॥२५॥ यन्मेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्द्धनि ॥ ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नंतुवोनमः ॥ २६॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यमरिपक्षक्षयःसुखम्॥ संतोषःक्षांतिरास्तिक्यंविद्याभवतुवोनमः ॥ २७ ॥ विप्रपादोदकंपीत्वाशालग्रामशिलाजलम् ॥ शंखेनत्रिःपरिभ्राम्यप्रक्षिपेन्निजमस्तके ॥ २८ ॥ ततोदेवान्मनुष्यांश्चसंक्षेपात्तर्पयेत्पितॄन् ॥ वस्त्रंसंपीड्यसंक्षाल्यसक्थिनीवाससीधरेत् ॥ २९ ॥ तीर्थाभावात्स्वसदनेस्नायादुष्णेनवारिणा ॥ अल्पाएवप्रवक्तव्यास्तत्रमन्त्रायथोचिताः ॥ ३०॥हस्तयोरपआदायकुर्य्यात्तत्राघमर्षणम् ॥ भस्मनागोरजोभिर्वास्नायान्मंत्रेणवाक्षमः॥३१॥ततआचम्यपीठस्थस्तिलकंरचयेत्सुधीः ॥ केशवाद्यभिधानैस्तुस्थानेषुद्वादशस्वपि ॥ ३२ ॥

नीऊरू ॥ २९ ॥ ३० ॥ अक्षमोरोगादिना ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

॥ ३३ ॥ नन्दकंखड्गम् ॥ ३४ ॥ अग्निरितिमन्त्रेण भस्मादायगृहीत्वा ॥ सयथा–अग्निरितिभस्मवायुरितिभस्म
जलमितिभस्मस्थलमितिभस्मव्योमेतिभस्मसर्वंहवाइदं भस्ममनएतानिचक्षूंषि तस्माद्व्रतमेतत्पाशुपतंयद्भस्म
नांगानिसंस्पृशेदिति ॥ ३५ ॥ ततस्त्र्यंबकंयजामहइतिपूर्वोक्तमंत्रेणाभिमंत्र्यक्रमाद्भालादिषुतत्पुरुषादिनामभिः

ललाटोदरहृत्कंठदक्षपार्श्वांसकेततः ॥ वामपार्श्वांसकर्णेचपृष्ठदेशेककुद्यपि ॥ ३३ ॥ ललाटेतुगदांकु
र्य्याद्धृदयेनंदकंपुनः॥शंखं चक्रंभुजद्वंद्वेशार्ङ्गबाणंचमूर्द्धनि ॥ ३४ ॥ इत्थंतुवैष्णवःकुर्य्याच्छैवःकु
र्य्यात्त्रिपुड्रकम् ॥ अग्निहोत्रोत्थितंभस्मादायाग्निरितिमंत्रतः॥ ३५॥ अभिमंत्र्यत्र्यंबकेनकुर्य्यात्पंच
त्रिपुंड्रकम् ॥ क्रमात्तत्पुरुषाघोरसद्योवामेशनामभिः ॥ ३६ ॥ फालांसोदरवक्षस्तुऋग्भिस्तेषामथा
पिवा ॥ कृत्वासंध्यांस्वशाखोक्तांमन्त्रसन्ध्यांसमाचरेत् ॥ ३७ ॥

पंचत्रिपुंड्रकंकुर्यात् ॥ यथा–तत्पुरुषायनमोभाले॥ अघोरायनमोदक्षांसे ॥ सद्योजातायनमोवामांसे ॥ वामदे
वायनमोजठरे ॥ ईशानायनमोवक्षसि ॥ यद्वातत्पुरुषादिनामस्थलेतत्पुरुषायविद्महे० अघोरेभ्यः० सद्योजातंप्रप
द्यामि० वामदेवायनमः० ईशानःसर्वविद्याना० इति पंचभिरेवमन्त्रैस्त्रिपुंड्राणिविधेयानि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मन्त्रसन्ध्यामाह ॥ प्राणायामेति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४०॥ ४१ ॥ भिदुरोपले वज्रपाषाणे ॥ पापयुक्तंजलंक्षिपेत् ॥ एतदघमर्षणम् ॥ ४२ ॥ मूलमन्त्रमुक्त्वा रविमण्डलसंस्थायदेवायार्घ्यंकल्पयामीतिषोडशार्णमंत्रंजपन् देवायार्घ्यं

प्राणायामषडंगेचकृत्वादायकरेजलम् ॥ त्रिर्जप्त्वामूलमंत्रेणत्वाचमेत्रिर्जपन्मनुम्॥३८॥ पुनर्दक्षकरेणांभोगृहीत्वावामहस्ततः ॥ निधायतस्माच्च्योतद्भिर्बिंदुभिःसप्तधातनुम् ॥ ३९ ॥ संमार्ज्यमूलमंत्रेणावशिष्टंतत्पुनर्जलम् ॥ दक्षहस्तेसमादायनासिकांतिकमानयेत्॥४०॥इडयांतःसमाकृष्यतद्धौतैःपापसंचयैः॥कृष्णवर्णंपिंगलयारेचितंप्रविचिंत्यतत् ॥४१ ॥ क्षिपेदस्त्रेणपुरतःकल्पिते भिदुरोपले॥ अघमर्षणमेतद्धिनिखिलाघनिवारणम् ॥ ४२॥ पुनरंजलिनादायजलमर्घ्यंदिशेत्ततः॥त्रिवारंमूलमंत्रांतेषोडशार्णमनुंजपन् ॥ ४३॥ रविमंडलसंस्थायदेवायार्घ्यपदंवदेत्॥कल्पयामीतिदद्याच्चमंत्रोयंषोडशाक्षरः॥४४॥सूर्य्यमंडलगंध्यायन्निष्टदेवमनन्यधीः॥प्रजपेन्मंत्रगायत्रींमूलंचाष्टोत्तरंशतम्४५

दद्यात् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

संहारमुद्रयातीर्थंविसृज्यद्वौहस्तौविमुखौसंयोज्यतयोरंगुलीःपरस्परसंश्लिष्टाः कृत्वाहस्तौसंमुखौकुर्यादितिसंहार
मुद्रा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ सत्याग्निहोत्रेआवसथ्येचतयोर्होममुपस्थानंचकृत्वादेवपूजागृहमागत्यवैष्णवाचमनंकुर्यात् ॥
॥ ४८ ॥ तदेवाह ॥ केशवेति ॥ ॐ केशवायनमः ॥ नारायणायनमः माधवायनमः इतित्रिर्जलंपीत्वा गोविंदाय

अष्टाविंशतिवारंवातर्पयेत्तावदंभसि ॥ दत्त्वार्घ्यंदिननाथायतीर्थसंहारमुद्रया ॥ ४६ ॥ विसृज्यार्कं
लोकपालान्नत्वादेवस्तुतिंपठन् ॥ यागस्थानंतथागत्यप्रक्षाल्यांघ्रीतथाचमेत् ॥ ४७ ॥ गार्हपत्या
दिकानग्नीन्हुत्वोपस्थायतानपि ॥ देवतागारमागत्यसमाचामेद्यथाविधि ॥ ४८॥ केशवनारायण
माधवैःपीत्वाजलंत्रिधा ॥ करौगोविंदविष्णुभ्यांक्षालयेन्मधुसूदनात् ॥४९॥ त्रिविक्रमेणचाप्योष्ठौ
वामनाच्छ्रीधरान्मुखम् ॥ हृषीकेशेनहस्तंचचरणौपद्मनाभतः ॥ ५० ॥

नमः विष्णवेनमइतिद्वाभ्यांकरौप्रक्षाल्य मधुसूदनायनमः त्रिविक्रमायनमइतिद्विरोष्ठौप्रक्षाल्य वामनायनमः
श्रीधरायनमः इतिमुखं हृषीकेशायनमः इतिदक्षहस्तं पद्मनाभायनमइतिपादौचप्रक्षाल्य ॥ ४९ ॥ ५० ॥

दामोदरायनमः इतिशिरःप्रोक्ष्य संकर्षणायनमइतिमुखं वासुदेवायनमः प्रद्युम्नायनमइतिनासेचांगुष्ठप्रदेशिनीभ्यांस्पृष्ट्वा अनिरुद्धाय० पुरुषोत्तमाय० इत्यक्षिणी ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ अधोक्षजाय० नृसिंहाय० इतिकर्णौचांगुष्ठानामिकाभ्यांस्पृशेत् ॥ अच्युताय० इतिअंगुष्ठकनिष्ठाभ्यांनाभिम् ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ जनार्दनाय०इतिक

दामोदरेणमूर्द्धानंप्रोक्ष्यसंकर्षणादिकान् ॥ मुखादिषुकरांगुल्यावेदादिप्रीणनेन्यसेत् ॥५१॥
मुखे संकर्षणंवासुदेवप्रद्युम्नकौनसोः ॥ अनिरुद्धंचपुरुषोत्तममक्ष्णोःप्रविन्यसेत् ॥५२॥ अधोक्षजंनृसिंहं
चकर्णयोर्नाभितोच्युतम्॥जनार्दनंहृदिन्यस्येदुपेंद्रमपिमूर्द्धनि॥५३॥अंसयोश्चहरिंविष्णुंवैष्णवाचमनं
त्विदम् ॥ केशवाद्याश्चतुर्थ्यंतानमोंताःप्रणवादिकाः ॥ ५४॥आस्येनसोःप्रदेशिन्याऽनामयानेत्रकर्णयोः॥
कनिष्ठयानाभिदेशेंगुष्ठःसर्वत्रसंयुतः ॥५५॥तलेनहृदयेन्यस्येत्सर्वाभिर्मस्तकेंसयोः॥
आत्मविद्याशिवैस्तत्त्वैःस्वाहान्तैःप्रपिबेदपः ॥५६ ॥ हांहींहूंआदिमैःशैवेशाक्तेवाग्बीजपूर्वकैः ॥
क्षालनादिकमंगुल्यास्पर्शोपिस्यादमंत्रकः ॥ ५७ ॥

रतलेनहृदयम् उपेंद्राय० इतिशिरः हरये० कृष्णाय०इत्यंसौचसर्वाभिःस्पृशेत् ॥ इतिवैष्णवाचमनम् ॥ शैवाचमनमाह ॥ आत्मेति ॥ हांआत्मतत्त्वायस्वाहा हींविद्यातत्त्वायस्वाहा हूंशिवतत्त्वायस्वाहेति त्रिर्जलंपीत्वा करक्षालनाद्यंसस्पर्शांतंउक्तांगुलीभिस्तूष्णीमेवकुर्यात् ॥ इतिशैवम्॥ शाक्तंतुहांइत्यादिस्थानेवाग्बीजमेव ॥५६॥५७॥

सामान्यार्घ्यमाह ॥ तारमिति ॥ तारॐ ॥ खंहः वह्निसर्गाढ्यंरेफविसर्गयुतं ह्रः ॥ ५८ ॥ निगमादिनाप्रणवेन ॥ ५९ ॥ यथा–ॐह्रःद्वारार्घ्यंसाधयामीत्युक्त्वाफडितिपात्रंप्रक्षाल्यनमइतिजलेनापूर्यगंगेचेतितीर्थान्यावाह्यप्रणवेनगंधपुष्पेनिक्षिप्यधेनुमुद्रांप्रदर्श्याष्टकृत्वोमूलेनमंत्रयेत् ॥ इतिसामान्यार्घ्यविधिः ॥ तेनार्घ्यजलेनोक्ताःप्रथमतरंगोक्ताद्वारदेवताःगणेशमहालक्ष्मीसरस्वतीविघ्नक्षेत्रपालगंगायमुनाधातृविधातृशंखपद्मनिधिलक्षणाः यथास्थानं

एवमाचम्यसामान्यार्घ्येणद्वारंप्रपूजयेत् ॥ तारखंवह्निसर्गाढ्यंद्वारार्घ्यंसाधयामिच॥५८॥ उक्त्वा
स्त्रमनुनापात्रंक्षालयेत्पूरयेद्धृदा॥तीर्थान्यावाह्यगंधादीन्निक्षिपेन्निगमादिना ॥ ५९॥ धेनुमुद्रांदर्श
यित्वामूलेनाप्यभिमंत्रयेत्॥सामान्यार्घ्यविधिःप्रोक्तस्तेनोक्ताद्वारदेवताः॥ ६० ॥ इष्ट्वार्चेद्द्वारपालां
श्चतेकथ्यंतेपृथग्विधाः॥ नंदःसुनंदश्चंडश्चप्रचंडोबलसंज्ञकः ॥ ६१ ॥ प्रबलोभद्रसंज्ञश्चसुभद्रावैष्ण
वामताः॥नंदिसंज्ञोमहाकालोगणेशोवृषभस्तथा ॥६२ ॥ भृंगिरित्यभिधःस्कंदः पार्वतीशाभिधो
परः॥चंडेश्वरइमेशैवाःशाक्तेयामातरःस्मृताः ॥ ६३ ॥ वक्रतुंडश्चैकदंष्ट्रोमहोदरगजाननौ ॥ लंबो
दरश्चविकटोविघ्नराजश्चसप्तमः ॥ ६४ ॥

संपूज्यवक्ष्यमाणान्यथास्वंद्वारपालान्पूजयेत् ॥ ६० ॥ वैष्णवान्द्वारपालानाह ॥नंदइति शैवानाह॥नंदिसंज्ञइति॥ ब्राह्म्याद्यामातरःशक्तेर्द्वारपालाःस्मृताःपूर्वोक्ताबोध्याः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ गणेशानाह ॥ वक्रेति ॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥ त्रिधा त्रिप्रकारान्दिव्यंतरिक्षभूमिस्थान् ॥ ६६ ॥ अर्घ्यपानीयैःसामान्यार्घजलैरन्तारिक्षस्थान् ॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥ ६९ ॥ विनिर्यतांगृहान्निर्गच्छताम्अंतरायाणांविघ्नानामवकाशदानायवामांगंसंकोचयन्दक्षिणपादेनगृ

धूम्रराजोगणपतेर्द्वारपालाइमेस्मृताः॥ इन्द्रोयमोथवरुणःकुबेरस्त्रिपुराःस्मृताः ॥ ६५ ॥ ईशःकृशानु
रक्षांसिवायुश्चैवाष्टमःस्मृतः॥द्वारपूजांविधायेत्थंविघ्नानुत्सारयेत्रिधा ॥ ६६ ॥ आत्मानंशंकरंध्या
त्वादृष्ट्यादिव्यान्निवारयेत्॥ नभस्थानर्घ्यपानीयैःपार्ष्णिघातैर्धरागतान्॥६७ ॥ अपसर्पंतुतेभूता
येभूताभूमिसंस्थिताः ॥ येभूताविघ्नकर्तारस्तेनश्यंतुशिवाज्ञया॥६८॥अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाः
सर्वतोदिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥६९ ॥ विनिवार्याखिलान्विघ्नानिदंमंत्रद्वयंप
ठन् ॥ अवकाशप्रदानायांतरायाणांविनिर्यताम् ॥७०॥ संकोचयन्वाममंगंगृहंदक्षपदाविशेत् ॥क्षेत्र
पालंविधातारंनैर्ऋत्यांदिशिपूजयेत् ॥ ७१ ॥

हंप्रविशेत् ॥ ७० ॥ ७१ ॥

कुशासनव्याघ्रचर्मावस्त्राणामुपर्युपरिस्थापितानामुपरिअनंतासनायनमः विमलासनायनमः पद्मासनायनमःइति मंत्रत्रयेणत्रीन्दर्भान्निदध्यात॥ ७२॥आधिदंमानसपीडाप्रदम् ॥७३॥ प्रागुदग्वा प्राङ्मुखउदङ्मुखोवा॥ पाथोजंपद्मम् ॥ स्वस्तिकासनवीरासनेष्वन्यतममासनंकुर्य्यात् स्वस्तिकासनलक्षणं यथा–'जानूर्वोरंतरेकृत्वासम्यक्पादतलेउभे ॥ ऋजुकायोविशेद्योगीस्वस्तिकंतत्प्रचक्षते'॥पद्मासनंयथा–'ऊर्वोरुपरिविन्यस्यसम्यक्पादतलेउभे । अंगुष्ठौच

अनंतंविमलंपद्मंङेंतासननमोन्वितम्॥ जपन्निधायदर्भांस्त्रीन्कुशचर्मांबरासने ॥ ७२ ॥ काष्ठपल्लव
वंशाश्मगोशकृत्तृणमृण्मयम्॥ विषमंकठिनंमंत्रीत्यजेदासनमाधिदम् ॥७३ ॥ पृथिवित्वयेतिमंत्रेण
प्रागुदग्वासमाविशेत्॥कुर्य्यात्स्वस्तिकपाथोजवीरादिष्वेकमासनम् ॥ ७४ ॥ अर्घ्यपाद्याचमनीय
मधुपर्काचमस्यच॥पंचपात्राणिपुष्पादीन्स्थापयेत्स्वीयदक्षिणे ॥ ७५ ॥

निबध्नीयाद्धस्ताभ्यांव्युत्क्रमात्ततः ॥ पद्मासनमितिप्रोक्तं योगिनांहृदयंगमम्' इति ॥ अत्रहस्ताभ्यांपादांगुष्ठनिबंधनंतुयोगाभ्यासान्वितंबोध्यम् ॥ योगिनांहृदयंगममितिविशेषणोपादानात्॥ जपादौतुपादतलयोरूर्वोरुपरिन्यासमात्रंपद्मासनम् ॥ वीरासनलक्षणंयथा–'एकंपादमधःकृत्वाविन्यस्योरौतथेतरम् ॥ ऋजुकायोविशेद्योगीवीरासनमितीरितम्' इति शारदातिलके ॥ आदिशब्दात्षट्कर्मोक्तमपि ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

वामेगुरून्दक्षेगणेशम् ॥ ७६ ॥ करयोरस्त्रंन्यस्योपर्युपरितालत्रयंकृत्वांगुष्ठतर्जनीभ्यांशब्दंकुर्वन्सुदर्शनमंत्रेण दिग्बंध
नंचरेत् ॥ ७७ ॥ सुदर्शनमंत्रमाह ॥ प्रणवइति ॥ ॐनमःसुदर्शनायअस्त्रायफडिति ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ पंचधा मातृका

वामेंबुपात्रंव्यजनंछत्रमादर्शंचामरे ॥ कृतांजलिर्वामदक्षेगुरून्गणपतिंनमेत् ॥७६ ॥ न्यस्यास्त्रंकर
योस्तालत्रयंदिग्बंधनंचरेत्॥अंगुष्ठयुक्ततर्जन्यासुदर्शनमनुंजपन् ॥ ७७ ॥ प्रणवोहृदयंङेन्तंसुदर्शन
पदंपुनः॥ अस्त्रायचफडित्युक्तोमंत्रोद्वादशवर्णवान्॥७८॥विधायवह्निप्राकारंभूताजेयोभवेत्सुधीः॥
भूतशुद्धिंतथाप्राणप्रतिष्ठांमातृकास्थितिम्॥७९॥पंचधोक्तांप्रकुर्वीतततोन्यान्मातृकांचरेत् ॥ श्रीकं
ठाद्याञ्छंभुभक्तो[1]वैष्णवःकेशवादिकान् ॥ ८० ॥ गणेशाद्यांस्तुतत्सेवीशक्तिभाङ्मातृकाःकलाः॥
ताःक्रमेणैवकथ्यंतेमुन्यादिन्यासपूर्विकाः ॥ ८१ ॥ मुनिःस्याद्दक्षिणामूर्तिर्गायत्रीछंदईरितम्॥अ
र्द्धाद्रिजाहरोदेवोनियोगः सर्वसिद्धये ॥ ८२ ॥

स्थितिः ॥ सृष्टिस्थितिसंहारसृष्टिस्थितिलक्षणपंचविधंमातृकान्यासम् ॥ उक्तांप्रथमतरंगे ॥ अन्यान् ॥ श्रीकंठा
द्यान् ॥ ८० ॥ तत्सेवीगणेशसेवी ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

---

१ अस्यश्रीकंठमातृकामंत्रस्यदक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिःगायत्रीछंदःअर्द्धनारीश्वरोदेवताहलोबीजानिस्वराःशक्तयःसर्वसिद्ध्यर्थेन्यासेवि० ।

॥ ८३ ॥ ध्यानमाह ॥ पाशेति ॥ पाशांकुशौवामयोः ॥ रक्ताभो हरांशः ॥ सुवर्णाभो देव्यंशः ॥ ८४ ॥ मातृका
स्थले ललाटादौ पूर्वोक्ते॥ ८५ ॥ प्रयोगो यथा–ह्सौं अंश्रीकंठेशपूर्णोदरिभ्यांनमःललाटे ह्सौंआंअनंतेशविरजा

हलोबीजानिगुह्येतुस्वराञ्छक्तीःपदोर्न्यसेत् ॥ हसाभ्यांदीर्घयुक्ताभ्यांकृत्वांगंशंकरंस्मरेत्॥८३॥
पाशांकुशवराक्षस्रक्पाणिशीतांशुशेखरम् ॥ त्र्यक्षंरक्तसुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरंभजेत् ॥ ८४ ॥ एवंध्या
यञ्छंभुशक्तीचतुर्थ्यन्तनमोन्विते ॥ ह्सौंबीजंमातृकापूर्वंविन्यसेन्मातृकास्थले॥ ८५ ॥ श्रीकंठ
र्णोदर्य्यौचानंतोविरजयान्वितः ॥ सूक्ष्मेशःशाल्मलीयुक्तोलोलाक्षीयुक्त्रिमूर्तिकः॥ ८६ ॥ अमरे
शोवर्तुलाक्षावर्घीशोदीर्घघोणया ॥ भारभूतिर्दीर्घमुखीतिथीशोगोमुखीयुतः॥८७॥स्थाण्वीशोदी
र्घजिह्वायुग्धरःकुंभोदरीयुतः॥झिंटीशश्चोर्द्ध्वकेशीभौतिकोविकृतमुख्यपि ॥८८॥ सद्योज्वालामुखी
चानुग्रहउल्कामुखीयुतः ॥अक्रूरःश्रीमुखीमहासेनोविद्यामुखीयुतः ॥८९ ॥ क्रोधीशश्चमहाकाल्या
चंडेशश्चसरस्वती॥पंचान्तकःसर्वसिद्धिगौरीयुंक्तःप्रकीर्तितः ॥ ९० ॥

भ्यांनमोमुखवृत्तेइत्यादि० ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ सद्यःसद्योजाता ॥ ८९ ॥ ९० ॥

॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ श्रीकंठानंतत्रिमूर्त्यादौपदेयत्रेशपदंनास्तिश्रीकंठे

शिवोत्तमशोविन्यस्योयुक्तस्त्रैलोक्यविद्यया ॥ एकरुद्रोमंत्रशक्तिःकूर्मेशश्चात्मशक्तियुक् ॥ ९१॥
एकनेत्रोभूतमात्रायुक्तःस्याच्चतुराननः ॥ लंबोदर्य्यायुतःप्रोक्तोह्यजेशोद्राविणीयुतः ॥९२॥सर्वेशो
नागरीयुक्तःसोमेशश्चापिखेचरी ॥ लांगलीशश्चमंजर्य्यादारकेशश्चरूपिणी ॥९३॥ अर्द्धनारीशवी
रिण्याद्युमाकांतःपुनर्यतः ॥ काकोदर्य्यातथाषाढीपूतनायुक्तईरितः ॥९४॥ चंडीशोभद्रकालीयुगं
त्रीशोयोगिनीयुतः ॥ मीनेशःशंखिनीयुक्तोमेषेशस्तर्जनीयुतः॥९५॥ लोहितःकालरात्रिश्चशिखी
शःकुब्जनायुतः ॥ छगलंडःकपर्दिन्याद्विरंडेशश्चवज्रया॥९६ ॥ महाकालोजयायुक्तोबालीशःसुमु
खेश्वरी ॥भुजंगोरेवतीयुक्तःपिनाकीमाधवीयुतः॥९७॥खड्गीशोवारुणीयुक्तोवकशोवायवीयुतः ॥
श्वेतोरक्षोविदारिण्याभृगुःसहजयायुतः ॥ ९८ ॥ नकुलीशश्चलक्ष्मीयुक्छिवेशोव्यापिनीयुतः ॥
संवर्तकोमहामायाप्रोक्ताश्रीकंठमातृका ॥ ९९ ॥ यत्रत्वीशपदंनोक्तंश्रीकंठादिषुनामसु॥ तत्रसर्वत्र
वक्तव्यंशक्तिभ्यांहृत्ततोवदेत् ॥ १०० ॥

शेत्यत्रेवतत्रापिज्ञेयम् ॥ शक्तिभ्यां पूर्णोदरीप्रभृतिभ्यांचतुर्थीद्विवचनम् ॥ हृन्नमः ॥ तथाप्रयोगउक्तः ॥ १०० ॥

त्वगिति यादिदशवर्णैषुत्वगादीनात्मभ्यामित्यंतान्वदेत् ॥ यथा–ह्सौंयंत्वगात्मभ्यांबालीशसुमुखेश्वरीभ्यांनमः हृदि ॥ ह्सौंरंअसृगात्मभ्यांभुजंगेशरेवतीभ्यांनमोदक्षांसइत्यादि० ॥ १०१ ॥ केशवादिमातृकामाह ॥ केशवादीति ॥ १०२ ॥ षडंगमाह ॥ द्विरुक्तैरिति ॥ ह्रींहृत् ॥ श्रींशिरः ॥ क्लींशिखा ॥ ह्रींवर्म ॥ श्रींनेत्रम् ॥ क्लींअस्त्रम् ॥ ध्यानमाह ॥ शंखेति ॥ शंखादीनिदक्षे ॥ कुंभादीनिवामे ॥ मेघाभोहर्यंशः ॥ चपलाविद्युत् ॥ तन्निभो

त्वगसृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राण्यसून्वदेत्॥शक्तिक्रोधंतथात्मभ्यामंतान्यादिदशस्वपि॥१०१॥
केशवादिमातृकायांसाध्यनारायणोमुनिः ॥ अमृताद्यातुगायत्रीच्छंदोलक्ष्मीर्हरिःसुरः ॥१०२ ॥
द्विरुक्तैःशक्तिश्रीकामैःषडंगानिसमाचरेत् ॥ शंखचक्रगदापद्मकुंभादर्शाब्जपुस्तकम्॥ १०३ ॥बि
भ्रतंमेघचपलावर्णंलक्ष्मीहरिंभजे ॥ एवंध्यात्वाजपेच्छक्तिश्रीकामपुटिताक्षराम् ॥ १०४ ॥ भ्यामंत
विष्णुशक्त्यंतांनमोंतांप्रणवादिकाम् ॥ केशवःकीर्तिसंयुक्तःकांतिर्नारायणान्विता ॥ १०५ ॥

लक्ष्म्यंशः॥ १०३॥ १०४ ॥ भ्यामंतेययोरीदृशौ विष्णुशक्ती अंतेयस्यास्ताम् ॥ तथानमोंतेयस्याःसानमाता ॥ प्रणवआदौयस्याःसाप्रणवादिका ॥ साचसाचताम् ॥ यथा–ॐह्रींश्रींक्लींअंक्लींश्रींह्रींकेशवकीर्तिभ्यांनम इत्यादि० ॥ १०५ ॥

---

अस्यकेशवमातृकान्यासस्यनारायणोमुनिः अमृतगायत्रीछंदःलक्ष्मीहरीदेवते० न्यासकरणेविनियोगः ।

॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥

माधवस्तुष्टिसंयुक्तोगोविंदःपुष्टिसंयुतः ॥ विष्णुस्तुधृतिसंयुक्तःशांतियुङ्मधुसूदनः ॥ १०६॥त्रिविक्रमःक्रियायुक्तोवामनोदययान्वितः ॥श्रीधरोमेधयायुक्तोहृषीकेशश्चहर्षया॥१०७॥पद्मनाभयुताश्रद्धालज्जादामोदरान्विता ॥ वासुदेवश्चलक्ष्मीयुक्संकर्षणसरस्वती ॥१०८॥ प्रद्युम्नःप्रीतिसंयुक्तोऽनिरुद्धोरतिसंयुतः ॥ चक्रीजयागदीदुर्गाशार्ङ्गीतुप्रभयान्वितः॥१०९॥खड्गीतुसत्ययायुक्तःशंखीचण्डासमन्वितः ॥हलीवाणीसमायुक्तोमुसलीचविलासिनी॥११०॥शूलीविजययायुक्तःपाशीविरजयान्वितः॥अंकुशीविश्वयायुक्तोमुकुंदोन्निनदायुतः॥१११॥नंदजःसुनदायुक्तोनंदीसत्यासमन्वितः नरऋद्धीनरकजित्समृद्धीशुद्धियुग्घरिः॥११२॥ कृष्णबुद्धीसत्यभुक्तीसात्वतोमतिसंयुतःसौरिक्षमेशूररमेजनार्दनउमान्वितः।११३।भूधरःक्लेदिनीयुक्तोविश्वमूर्तिश्चक्लिन्नया ॥वैकुंठोवसुधायुक्तोवसुदापुरुषोत्तमौ ॥ ११४ ॥बलीतुपरयायुक्तोबलानुजपरायणे ॥ बालसूक्ष्मेवृषघ्नस्तुसंध्यायुक्प्रज्ञयावृषः ॥११५॥हंसःप्रभासमायुक्तोवराहोनिशयान्वितः॥विमलोमेघयायुक्तोनृसिंहोविद्युतायुतः॥११६॥

यादियोगश्चपूर्ववदिति ॥ ॐह्रींश्रींक्लींयंक्लींश्रंह्रिंत्विगात्मभ्यांपुरुषोत्तमवसुदाभ्यांनमोहृदीत्यादि० ॥ गणेशमा
तृकामाह ॥ गणेशइति ॥ ११७ ॥ षडंगमाह ॥ स्मृत्येति ॥ दीर्घयुक्तगकारेणांगम् ॥ गांगींगूंगैंगौंगःइति ॥११८॥

केशवाद्यामातृकोक्तायादियोगश्चपूर्ववत्॥गणेशमातृकायास्तुमुनिर्गणकईरितः ॥११७॥ निचृद्गाय
त्रिकाछंदोदेवःशक्तिविनायकः॥स्मृत्यादीर्घाढ्ययाचांगकृत्वाध्यायेद्गजाननम् ॥१८॥ गुणांकुशवरा
भीतिपाणिंरक्ताब्जहस्तया॥प्रिययालिंगितंरक्तंत्रिनेत्रंगणपंभजे। १९ ।एवंध्यात्वान्यसेत्स्वीयबीज
पूर्वाक्षरान्वितम्॥विघ्नेशोह्रींसमायुक्तोविघ्नराजःश्रियायुतः॥१२० ॥विनायकःपुष्टियुतःशांतियुक्तः
शिवोत्तमः॥विघ्नकृत्स्वस्तिसंयुक्तोविघ्नहर्तासरस्वती ॥२१॥गणस्तुस्वाहयायुक्तएकदंतःसुमेधया॥
द्विदंतःकांतिसंयुक्तोगजवक्त्रश्चकामिनी।२२।निरंजनोमोहिनीयुक्कपर्दीतुनटीयुतः॥दीर्घजिह्वःपार्वती
युक्छंकुकर्णश्चज्वालिनी।२३ ।वृषभध्वजनन्दौचसुरेशगणनायकौ ।गजेंद्रःकामरूपिण्यासूर्यकर्णस्त
थोमया।२४।त्रिलोचनस्तेजवत्यालंबोदरस्तुसत्यया। महानंदश्चविघ्नेशीचतुर्मूर्तिःसुरूपिणी।१२५।

ध्यानमाह ॥ गुणेति ॥ गुणस्त्रिशूलम् ॥ अंकुशवरौदक्षयोः ॥ ११९ ॥ स्वीयबीजपूर्वाणियान्यक्षराणिअकारादी
नितैर्युतांगः अंविघ्नेशह्रीभ्यांनमइत्यादिभिः ॥ १२० ॥ १२१ ॥१२२ ॥ १२३ ॥ १२४॥ १२५ ॥

---

१ अस्यश्रीगणेशमातृकान्यासमन्त्रस्यगणकऋषिःनिचृद्गायत्रीच्छंदःशक्तिविनायकोदेवतान्यासेवि० ।

॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ त्वगादियोगइति ॥ गंयंत्वागात्मभ्यांजटिदीप्तिभ्यां

सदाशिवःकामदायुगामोदोमदजिह्वया॥दुर्मुखोभूतिसंयुक्तःसुमुखोभौतिकायुतः ॥ १२६ ॥ प्रमोदः
सितयायुक्तएकपादोरमायुतः॥ द्विजिह्वोमहिषीयुक्तःशूरश्चापितुभंजिनी ॥ १२७ ॥ वीरोविकर्ण
यायुक्तःषण्मुखोभृकुटीयुतः॥वरदोलज्जयावामदेवःस्याद्दीर्घघोणया ॥ १२८ ॥ धनुर्धरावक्रतुंडौद्वि
रदोयामिनीयुतः॥सेनानीरात्रिसंयुक्तःकामांधोग्रामणीयुतः ॥१२९ ॥ मत्तःशशिप्रभायुक्तोविमत्तो
लोललोचना॥ मत्तवाहनचंचलेजटीदीप्तिसमन्वितः ॥ १३० ॥ मुंडीसुभगयायुक्तःखड्गीदुर्भगया
तथा ॥ वरेण्यश्चशिवायुक्तोभगायुग्वृषकेतनः ॥ १३१॥भक्तप्रियश्चभगिनीगणेशोभोगिनीयुतः ॥
मेघनादश्चसुभगाव्यासीस्यात्कालरात्रियुक् ॥ १३२ ॥ गणेश्वरःकालिकेतिप्रोक्ताविघ्नेशमातृका॥
त्वगादियोगोयादीनांपूर्ववत्परिकीर्तितः ।' १३३ ॥ कलायुङ्मातृकायास्तुप्रजापतिरृषिःस्मृतः॥
छंदउक्तंतुगायत्रीदेवताशारदाभिधा ॥ १३४ ॥

नमइत्यादि० ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

---

१ अस्यकलामातृकान्यासस्यप्रजापतिर्ऋषिःगायत्रीछंदःशारदादेवतान्यासेवि० ।

कलामातृकायाःषडंगमाह ॥ तारैरिति ॥ यथा—अंॐआंहृत्० ॥ इंॐईंशिरः ॥ उंॐऊंशिखा ॥ एंॐऐंवर्म॥ओंॐऔंनेत्रम् ॥ अंॐअःअस्त्रम् ॥ ध्यानमाह ॥ शंखेति ॥ शंखपरशुकपालाक्षमालामृतकुंभादक्षहस्तेषु ॥ अन्यान्येषु ॥ मध्येप्राग्दक्षिणपश्चिमोत्तरैर्मुखैः क्रमात्सितपीतकृष्णश्वेतरक्तैर्युताम् ॥ तारपूर्वामिति ॥ ॐअंनिवृत्त्यैनमइत्यादि० ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥१४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥

तारैःषडंगंकुर्वीतह्रस्वदीर्घांतरस्थितैः ॥ शंखचक्राब्जपरशुकपालान्यक्षमालिकाम्॥ १३५॥ पुस्तकामृतकुंभौचत्रिशूलंदधतींकरैः ॥ सितापीतासितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः॥ १३६॥ पंचास्यैःसंयुतां चंद्रंसकांतिंशारदांभजे ॥ ध्यात्वैवंतारपूर्वांतांन्यसेन्ङेंतकलान्विता॥ १३७॥ निवृत्तिश्चप्रतिष्ठाचविद्याशांतिस्तथेन्धिका॥दीपिकारेचिकाचापिमोचकाचपराभिधा ॥ १३८ ॥ सूक्ष्मासूक्ष्मामृताज्ञानामृताचाप्यायनीततः ॥व्यापिनीव्योमरूपाचानंतासृष्टिःसमृद्धिका ॥१३९ ॥ स्मृतिर्मेधाततः कीर्तिर्लक्ष्मीर्द्युतिःस्थिरास्थितिः सिद्धिर्जरापालिनीचक्षांतिरीश्वरिकारतिः ॥ १४० ॥ कामिका वरदाचाथाह्लादिनीप्रीतिसंयुता ॥दीर्घातीक्ष्णातथारौद्रीभयानद्राचतन्द्रिका ॥ १४१ ॥क्षुधास्यात्क्रोधिनीपश्चात्क्रियोत्कारीसमृत्युका ॥ पीताश्वेतारुणापश्चादासितानंतयान्विता ॥१४२॥ उक्ता कलामातृकैवंतत्तद्भक्तःसमाचरेत् ॥ ततःस्वमूलमंत्रस्यन्यासात्कल्पोदितांश्चरेत् ॥ १४३ ॥

॥ १४४ ॥ १४५ ॥ स्वस्वमुद्राभिर्जातियुक्तान्यंगानिहृदयादिषुन्यसेत् ॥तामुद्राजातयश्चाच्यँत ॥ १४६ ॥ १४७ ॥
॥ १४८ ॥ विष्णोरंगमुद्राआह ॥ प्रसारितमिति ॥ हृदिमूर्द्धनिचतर्जन्यादिचतुष्टयमेव ॥ शक्तेःषडंगमुद्राआह ॥

ऋषिश्छंदोदैवतानिमूर्ध्निवक्त्रेहृदिन्यसेत् ॥बीजंगुह्येपदोःशक्तिमंगानिकरयोरपि ॥ १४४ ॥ अंगु
ष्ठादिष्वंगुलीषुकरस्यतत्त्वपृष्ठयोः ॥ अंगुष्ठाभ्यांतर्जनीभ्यांनमइत्यादिकंवदेत् ॥ १४५ ॥ हृद
यादिष्वथांगानिजातियुक्तानिविन्यसेत् ॥स्वस्वमुद्राभिरधुनाप्रोच्यंतेजातयश्चताः ॥ १४६ ॥हृद
यायनमश्चेतिशिरसेस्वाहयायुतम् ॥ शिखायैवषडंगंचकवचायहुमित्यपि॥ १४७॥ नेत्रत्रयायवौष
ट्स्यादस्त्रायफडितीरितम् ॥ जातिषट्कंद्विनेत्रेतुनेत्राभ्यांवौषडुच्चरेत् ॥ १४८॥ पंचाङ्गेनेत्रसंत्या
गोमुद्रांगानामथोच्यते ॥ प्रसारितमनंगुष्ठंतर्जन्यादिचतुष्टयम् ॥ १४९ ॥ हृदिमूर्ध्निहिचांगुष्ठहीनो
मुष्टिःशिखातले ॥स्कंधमारभ्यनाभ्यंतादशांगुल्यस्तुवमंणि ॥ १५०॥ तर्जन्यादित्रयंनेत्रत्रयेनेत्रद्वये
द्वयम् ॥ प्रसारिताभ्यांहस्ताभ्यांकृत्वातालत्रयंसुधीः ॥ १५१ ॥ तर्जन्यंगुष्ठयोरग्रेस्फालयन्बंधय
न्दिशः ॥ एषास्त्रमुद्राश्रीविष्णोरंगमुद्राउदीरिताः ॥ १५२ ॥

हृदीति ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

क शिरासि ॥ १५३ ॥ अस्त्रंपूर्वाविष्णोरस्त्रतुल्यम् ॥ शिवषडंगमुद्राआह ॥ मुष्टीइति ॥ १५४ ॥ निर्गतातर्जनीयाभ्यांतौनिस्तर्जनीतादृशावनङ्गुष्ठौसंयुक्तौचमुष्टीशिरासि ॥ निरंगुष्ठकनिष्ठौतौसंयुक्तौमुष्टीशिखायाम्॥ अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यांहीनौमुष्टीकवचे ॥ तलास्फोटःकरतलास्फालनम् ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ न्यासंविनामंत्राअफलाविघ्नदास्ततोमूलमंत्रस्यवर्णादिन्यासंकुर्यात् ॥ १५७ ॥ पीठन्यासमाह ॥ न्यसेदिति ॥ १५८ ॥ आधारशक्तिकूर्मानंतपृथिवीसागररत्नद्वीपप्रासादहेमपीठादीनिहृदि ॥ १५९ ॥

हृद्यंगुलित्रयंन्यस्येत्तर्जन्यादिद्वयंतुके ॥ शिखाप्रदेशेथांगुष्ठंदशांगुल्यस्तुवर्मणि ॥ १६३ ॥ हृद्वन्नेत्रं पूर्वमस्त्रंशक्तेरंगस्यमुद्रिकाः॥मुष्टीविनिर्गतांगुष्ठौसंयुक्तौहृदिविन्यसेत् ॥ १६४ ॥ निस्तर्जनीतादृशौतुशिरस्यथशिखातले॥निरंगुष्ठकनिष्ठौतौनिरंगुष्ठप्रदेशिनी ॥ १६५ ॥ मुष्टीपृथक्कृतौस्कंधाद्धृदन्तंवर्मणिस्मृतौ ॥ तर्जन्यादित्रयंनेत्रेतलास्फोटोस्त्रमीरितम्॥ १६६॥शैवीषडंगमुद्रोक्तावर्णन्यासमथाचरेत्॥जप्ताचाप्यफलामंत्राविघ्नदान्यासमंतरा ॥ १६७ ॥पीठस्यदेवतान्यासाद्देहेपीठंप्रकल्पयेत् ॥न्यसेन्मंडूकमाधारेस्वाधिष्ठानेततःसुधीः ॥ १६८॥ कालाग्निरुद्रंनाभौतुकच्छपंहृदयेततः॥ आधारशक्तिमारभ्यहेमपीठावधिन्यसेत् ॥ १६९ ॥

दक्षांसादिषुधर्मादयःपीठपादाः ॥ तेचवृषकेसरिभूतगजरूपाः ॥ १६० ॥ मुखादिष्वधर्मादयःपीठगात्राणि॥ तेपि
वृषादिरूपाः ॥ इतोनंतोम्बुजंपद्मम् ॥ १६१ ॥ तेषुसूर्यादिषुवर्णाद्याःसूर्यादिकलाः कंभंतपिन्यैनमइत्यादिद्वादश
कलाःसूर्ये ॥ अंअमृतायैनमइत्याद्याःषोडशेंदौ ॥ यंधूम्रार्चिषेनमइत्याद्यादशवह्नौ ॥ नामादिवर्णाद्यान् संसत्त्वा

दक्षवामांसवामोरुदक्षोरुषुयथाक्रमात्॥धर्मोज्ञानंचवैराग्यमश्वर्य्यंविन्यसेत्ततः ॥ १६०॥ वदनेवा
मपार्श्वेचनाभौदक्षिणपार्श्वके॥अधर्मादीन्प्रविन्यस्यहृद्यनंतमितोंबुजम् ॥ १६१ ॥ पद्मेसूर्य्येन्दुव
ह्नींश्चतेष्वर्णाद्यानिजाःकलाः॥तत्तन्नामापिवर्णाद्यान्सत्त्वाद्यांस्त्रीन्गुणान्न्यसेत् ॥ १६२ ॥ तत्रात्म
त्रयमाद्यर्णपूर्वंतुर्य्यंपरादिकम् ॥ मायातत्त्वंकलातत्त्वंविद्यातत्त्वंततोन्यसेत्॥ १६३॥ परतत्त्वंचना
मादिवर्णपूर्वाणिविन्यसेत् ॥ स्वपीठशक्तीर्विन्यस्यन्यसेत्पीठमनुंनिजम्॥१६४॥ हृदिन्यस्यानं
तमुखंदेवानामुत्तरोत्तरम्॥ प्रत्याधारत्वमुदितंपूर्वपूर्वस्यसत्तमैः॥ १६५ ॥इतिदेहमयेपीठेध्यायेत्स्वा
भीष्टदेवताम्॥तत्तन्मुद्रांप्रदर्श्याथकुर्य्यान्मानसपूजनम् ॥ १६६ ॥ अथार्चयेत्ततोदेवंमंत्रेणानेनत
न्मनाः॥स्वागतंदेवदेवेशसन्निधौभवकेशव ॥ १६७ ॥

यनमइत्यादि० ॥ १६२ ॥ आत्मत्रयमाद्यःअउमावर्णास्तत्पूर्वम् ॥ अंआत्मने० ॥ उंअंतरात्मने० ॥ मंपरमात्म
ने० ॥ तुर्यं–ज्ञानात्मने० ॥ परादिकं–ह्रींपूर्वम् ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥

अन्यदैवतेऊहः–शंकरपार्वतीत्यादि० ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ इतिमंत्रमहोदधिव्याख्यायां नौकायामेकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥ अर्घ्यस्थापनमाह ॥ स्वेति ॥ स्ववामाग्रेत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्राणिकृत्वाशंखमुद्रयास्तंभयेत् ॥ शंखमुद्रालक्षणंयथा–वामांगुष्ठंतुसंगृह्यदक्षिणेनतुमुष्टिना ॥ कृत्वोत्तानंतथामुष्टिमंगुष्ठंतुप्रसारयेत् ॥ वामां

गृहाणमानसींपूजांयथार्थपरिभाविताम् ॥केशवेतिपदस्थानेकार्य्यऊहोन्यदैवते॥ १६८॥मनसापूजयित्वैवंक्षणंतद्गतमानसः ॥ स्थित्वामूलमनुंविद्वाञ्जपेदष्टोत्तरंशतम् ॥१६९॥ जपंनिवेद्यदेवायस्थापयेदर्घ्यमुत्तमम्॥बाह्यसंपूजनायाथतत्प्रकारोनिगद्यते॥१७० ॥इतिमन्त्रमहोदधौदेवस्यस्नानादिनिरूपणंनामैकविंशस्तरङ्गः ॥ २१ ॥ स्ववामाग्रेतुषट्कोणवृत्तभूपुरवेष्टितम्॥कृत्वात्रिकोणमूर्ध्वाग्रंस्तंभयेच्छंखमुद्रया॥१॥पुष्पाक्षतैःषडंगानितत्राग्न्यादिषुपूजयेत् ॥ अस्त्रक्षालितमाधारंतत्रादध्यान्मनुंजपन् ॥२॥ मंवह्निमंडलायेतिततोदशकलात्मने ॥ अमुकार्घ्येतिपात्रांतेसनायनमइत्यपि ॥ ॥३ ॥ चतुर्विंशतिवर्णोयमाधारस्थापनेमनुः ॥ आधारेपूर्वकाष्ठादिदशार्चेत्पावकीःकलाः ॥ ४ ॥

गुल्यस्तथाश्लिष्टाःसंयुताःसुप्रसारिताः ॥दक्षिणांगुष्ठकेलग्नामुद्राशंखस्यभूतिदेति ॥ १ ॥ ततः पुष्पाक्षतैरग्न्यादिषुषडंगानिसंपूज्यास्त्रक्षालितमाधारंमंवह्निमंडलायदशकलात्मनेदेवार्घ्यपात्रासनायनम इत्याधारंत्रिकोणेस्थापयेत् ॥ तत्राग्नेःकलाधूम्रार्चिराद्याः पूजयेत् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

स्वमंत्रोति ॥ शंखमंत्रक्षालितंशंखम् अंसूर्यमंडलायद्वादशकलात्मनेदेवार्घ्यपात्रायनमःइतिआधारेस्थापयेत् ॥ ५॥ त्र्यक्षिवर्णवांस्त्रयोविंशतिवर्णःअमुकपदस्थानेइष्टदेवतानामोच्चार्यरामार्घ्येत्यादि० शंखमंत्रमाह ॥ तारइति ॥ कामःक्लीं ॥ ॐक्लींमहाजलचरायहुंफट्स्वाहापांचजन्यायनमइति ॥ ६॥ ७ ॥ तत्रार्ककलास्तापिन्याद्याःसंपूज्य

स्वमंत्रक्षालितंशंखंस्थापयेन्मनुमुच्चरन् ॥ अंसूर्य्यमंडलायांतेद्वादशतिकलात्मने॥५॥अमुकार्घ्येति पात्रायनमोंतस्त्र्यक्षिवर्णवान् ॥ शंखस्थापनमंत्रोऽयंतारःकामोमहाजलः॥६ ॥ चरायवर्मफट्स्वाहा पांचजन्यायहृन्मनुः॥शंखस्यविंशत्यर्णाव्यस्तेनप्रक्षालयेत्तुतम् ॥७॥कलाद्वादशसूर्य्यस्यशंखोपरि यजेत्क्रमात्॥विलोमांमातृकांमूलंविलोमंचपठञ्जलैः॥८आपूर्य्यमनुनेष्ट्वाततत्रार्च्चेदैन्दवीःकलाः॥ॐ सोममंडलायांतेषोडशांतेकलात्मने ॥९॥अमुकार्घ्यामृतायेतिहृन्मनुश्चार्घ्यपूजने ॥ आह्वयेत्तत्रतीर्थानितन्मंत्रैःसृणिमुद्रया॥१०रविमंडलतःस्वीयहृदोदेवमथाह्वयेत्॥अष्टकृत्वोजपेन्मंत्रंपृष्ट्वाजलमन्यधीः॥११॥अप्सुविन्यस्यचांगानिहृदासंपूजयेदपः॥मूलंजपेदष्टशतंच्छादयन्मत्स्यमुद्रया१२।

विलोमेनमूलमातृकेजपन्जलैस्तंसंपूर्य-ॐसोममंडलायषोडशकलात्मनेदेवार्घ्यामृतायनमइत्यर्घ्यंसंपूज्यतन्मंत्रैःसृणिमुद्रयागंगेचेत्यादितीर्थमंत्रेणांकुशमुद्रयाऽर्कमंडलात्तीर्थमावाह्यस्वहृदोदेवमावाहयेत् ॥ अंकुशमुद्रालक्षणमुक्तम् ॥ मत्स्यमुद्रोक्ता ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अंगुष्ठतर्जनीस्फोटं-छोटिकामुद्रा ॥ वाममुष्टिंनिर्गततर्जनीकंकृत्वाशंखोपरिभ्रमणम्--अवगुंठिनीमुद्रा ॥ वर्मणा हुंबीजेन ॥ १३ ॥ गोमुद्रांधेनुमुद्राम् ॥ सायथा--'वामांगुलीनांमध्येषुदक्षिणांगुलिकास्तथा ॥ संयोज्यतर्जनींदक्षां मध्यमानामयोस्तथा ॥ दक्षमध्यमयोर्वामांतर्जनींचनियोजयेत् ॥ वामयानामयादक्षकनिष्ठांचनियोजयेत् ॥ दक्षयानामयावामांकनिष्ठांचानियोजयेत् ॥ विहिताधोमुखींचैषाधेनुमुद्राप्रकीर्तिता'इति अमृतबीजतः वमिति बीजेनसंरोधिन्यामुद्रया॥सायथा-'अंगुष्ठगर्भिणीसैवसांनिरोधेसमीरिता'इति॥अंगुष्ठगर्भमुष्टिद्वयमित्यर्थः ॥ तत्रा

संरक्षेदस्त्रमंत्रेणच्छोटिकामुद्रयाजलम्॥मुद्रयाचावगुंठिन्यावर्मणात्ववगुंठयेत्॥ १३॥अमृतीकृत्यगोमुद्रांकुर्वन्नमृतबीजतः ॥ संरोधिन्यासंनिरुध्यतत्रमुद्राःप्रदर्शयेत्॥ १४ ॥शंखमौसलचक्राख्यापरमीकृत्यतत्पुनः ॥ महामुद्रांविरचयन्योनिमुद्रांचदर्शयेत् ॥ १५ ॥कृष्णमंत्रेगालिनींचरामेगरुडमुद्रिकाम् ॥ शंखाद्दक्षिणदिग्भागेप्रोक्षणीपात्रपूरणम् ॥ १६ ॥

र्घ्यमुद्राः शंखाद्याः ॥ १४ ॥शंखमुसलचक्रमुद्राउक्ताः॥महामुद्रांकुर्वन् ॥ परमीकृत्यकरयोरंगुलीः संग्रथ्यकरौवियोजयेदिति ॥ महामुद्रोक्ता ॥ १५ ॥ करांगुल्यग्राणिवक्रीकृत्यसंमुखंयोजितानि--गालिनीमुद्रा ॥ गरुडमुद्रा यथा--'संमुखौतुकरौकृत्वाग्रंथयित्वाकनिष्ठिके ॥ पुनश्चाधोमुखेकृत्वातर्जन्यौयोजयेत्तयोः ॥ मध्यमानामिकेद्वेतुपक्षाविवविचालयेत् ॥ मुद्रैषापक्षिराजस्यसर्वविघ्ननिवारिणी' इति ॥ १६ ॥

तेनप्रोक्षणीजलेननिजांगमुक्षेत्सिचेत् ॥ मूलगायत्र्यापूजोपकरणानिचउक्षेत ॥ १७ ॥ १८ ॥ उदुंबरंताम्रम् ॥

कृत्वार्घ्यंब्वत्रनिक्षिप्यतेनोक्षेत्त्रिर्निजांतनुम् ॥ प्रजपन्मूलगायत्रीं पूजावस्तुचयंतथा ॥ १७ ॥ पाद्याचमनपात्रेचदध्यादर्घ्यस्यचोत्तरे ॥ एवमर्घ्यविधिःप्रोक्तःसर्वसाधारणोमया ॥ १८ ॥ विहायशंकरंसूर्य्यमर्घ्येशंखःप्रशस्यते ॥ हेमरूप्योदुम्बराब्जरीतिदारुमृदुद्भवम् ॥ १९ ॥ पालाशंपद्मपत्रंवास्मृतंपाद्यादिभाजनम् ॥ अशक्तावन्यपात्रेणपाद्यादीनिनिवेदयेत् ॥ २० ॥ अंतर्यागंततःकुर्य्यात्पीठेदेहमयेसुधीः ॥ न्यासस्थानेषुमंडूकमुख्यान्गंधादिभिर्यजेत् ॥ २१ ॥ पीठमंत्रांतमंत्रेणहृदयेस्वेष्टदेवताम् ॥ कुंडलीमथचोत्थाप्यद्वादशांतेपरंनयेत् ॥ २२ ॥

रीतिःपित्तलम् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ कुंडलीमथेति ॥ आधारचक्रात्कुंडलिनीमुत्थाप्यद्वादशांतेब्रह्मरंध्रेवर्तमानंपरब्रह्मनयेत् ॥ २२ ॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ ब्रह्मचारिवानप्रस्थयतयआज्यमंतर्यागमेव ॥ तेषांद्रव्याभावाद्बहिर्यागेनाधिकारः ॥ २५ ॥ २६ ॥

तदुत्थामृतधाराभिःप्रीणयेत्स्वेष्टदेवताम् ॥जपंकृत्वानिवेद्यास्मैमनसानविसर्जयेत् ॥ २३ ॥ मूर्द्धहृत्पादगुह्येषुतनौपुष्पांजलीन्क्षिपेत्॥ अंतर्यागंविधायेत्थंबाह्यपूजनमाचरेत् ॥२४॥अंतर्यागबहिर्यागौगृहस्थःसर्वमाचरेत् ॥ आज्यमेवब्रह्मचारीवानप्रस्थोयतिस्तथा॥२५ ॥ वर्द्धन्यांप्रक्षिपेत्किंचिदर्घोदकमनन्यधीः ॥ प्राणानायम्यमूलेनवामेगुरुचयंनमेत् ॥ २६ ॥ दक्षिणेचगणेशानंपीठपूजामथाचरेत् ॥स्वर्णादिनिर्मितेयंत्रेयद्वाचंदननिर्मिते ॥२७ ॥ मंडूकात्परतत्त्वांतंदिङ्मध्येपीठशक्तयः ॥ पृथिव्यनंतरंपूज्यःक्षीराब्धिधर्माधवेश्रिया॥ २८ ॥ इक्षुसिंधुर्गणेशेस्यादन्यत्रामृतसागरः॥अग्निराक्षसवाय्वीशकोणेधर्मादयःस्मृताः ॥ २९ ॥ इन्द्रकीनाशवरुणसोमाशासुनञादिकाः ॥ धर्मादिपूजनेप्राचीतथैवावरणार्चने ॥ ३० ॥

॥ २७ ॥ मंडूकादयःपरतत्त्वांताःपीठदेवताउक्ताः ॥ २८ ॥ २९ कीनाशोयमः ॥ नञादिकाअधर्मादयः ॥ ३०॥

शक्रादिषुयथास्वकंप्रसिद्धैवप्राची ॥ पीठशक्तीनांध्यानमाह ॥ श्वेतेति ॥ यथाविधिस्थापितायांविधिनाप्रतिष्ठि

पूजकस्यपुरःकल्प्याःशक्रादिषुयथास्वकम् ॥श्वेताकृष्णारुणापीताश्यामारक्तासिताऽसिता॥ ३१॥
रक्तांबराभयधराध्येयाःस्युःपीठशक्तयः ॥शालग्रामेमणौयंत्रेनित्यपूजांसमाचरेत् ॥ ३२ ॥ हेमादि
प्रतिमायांवास्थापितायांयथाविधि ॥अंगुष्ठादिवितस्त्यंतप्रमाणाप्रतिमागृहे॥ ३३ ॥ पूज्यानदग्धा
भिन्नावानोर्द्ध्वाधोदृङ्नवक्रिका ॥ लिंगंवालक्षणोपेतंतत्रावाहनमाचरेत् ॥३४॥मूलमुच्चार्य्यहृदया
त्सुषुम्नावर्त्मनासह॥द्वारेणब्रह्मरंध्रस्यनासारंध्रेविनिर्गतम् ॥३५॥ पुष्पांजलौमातृकाब्जेयोजयित्वा
विनिक्षिपेत् ॥मूर्त्तौपुष्पांजलिंचैतदावाहनमुदीरितम् ॥ ३६ ॥ शालग्रामेस्थिरायांवानावाहनविस
र्जने ॥ आह्वानाद्युपचारेषुश्लोकान्छंभूदितान्पठेत् ॥ ३७ ॥ आत्मसंस्थमजंशुद्धंत्वामहंपरमेश्वर॥
अरण्यामिवहव्यांशंमूर्तावावाहयाम्यहम् ॥ ३८॥ पंचायतनपक्षेतुमध्येविष्णुंसमर्चयेत् ॥ अग्निनि
र्ऋतिवायव्येशानेषुगणनायकम् ॥ ३९ ॥

तायाम् ॥ योर्ध्वदृक्अधोदृक्वक्राचतानपूज्याः॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ पंचायतन
पूजामाह ॥ पंचेति ॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ कांडानुसमयेनेति ॥ कांडानुसमयः पदार्थानुसमयश्चेतिविधौ प्रकारद्वयम् ॥ एकस्यपूजाकाण्डंसमाप्यापरार्चनंकाण्डानुसमयः ॥ प्रतिपदार्थंसर्वेषांपूजापदार्थानुसमयः :॥ ततोऽत्रकांडानुसमयेनपूजा ॥ आवाहनमुद्रयाआवाहनम् ॥ सायथा--'अनामामूलसंलग्नांगुष्ठाग्रांजलिरीरिता॥ देवाह्वानकरीचैषा मुद्रावाहनसंज्ञिका' इति॥ आवाहनमुद्राधोमुखी–संस्थापनी ॥ ४३॥४४॥ आत्मसंस्थामजांशुद्धामित्याद्यूहः॥४५॥ ४६ ॥४७ ॥

रविंशिवांशिवंमध्येगणेशश्चेच्छिवंशिवाम् ॥ रविं विष्णुरवौमध्येविघ्नाजनगजेश्वरान् ॥ ४० ॥ भवा
न्यांमध्यसंस्थायामीशविघ्नार्कमाधवान्॥हरेमध्यगतेसूर्यगणेशगिरिजाच्युतान् ॥ ४१ ॥ संपूज्या
दौमध्यगतंगणेशादिततोयजेत् ॥गणेशेमध्यसंस्थेतुपूजयेद्भास्करादितः ॥ ४२ ॥कांडानुसमयेनात्र
पूजाप्रोक्तामनीषिभिः॥विधायावाहनंचेत्थमावाहन्यातुमुद्रया ॥ ४३ ॥ संस्थापिन्यास्थापयेत्तुमू
लंतेश्लोकमुच्चरन्॥तवेयंमहिमामूर्त्तिस्तस्यांत्वांसर्वगंप्रभो ॥ ४४ ॥भक्तिस्नेहसमाकृष्टंदीपवत्स्थाप
याम्यहम्॥ऊहःकार्य्योभवान्यादौश्लोकेष्वावाहनादिषु॥४५॥ मूलश्लोकौपठन्कुर्य्यादासनंचोपवे
शनम्॥सर्वांतर्यामिणेदेवसर्वबीजमयंशुभम् ॥ ४६ ॥ स्वात्मस्थायपरंशुद्धमासनंकल्पयाम्यहम्॥
अस्मिन्वरासनेदेवसुखासीनोऽक्षरात्मक ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्वमुद्रयासन्निधानमुद्रया ॥ उत्तानांगुष्ठौमुष्टी–संनिधानमुद्रा ॥ स्वमुद्रयासान्निरोधिन्या ॥ सोक्ता ॥ ५० ॥ मुद्रयासंमुखीकारिण्याउत्तानौमुष्टी–संमुखीकरणी ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ हृद्यंजलिनिबंधनं–प्रार्थनीमुद्रा ॥

प्रतिष्ठितोभवेशत्वंप्रसीदपरमेश्वर ॥ मूलंश्लोकंततःकुर्य्यात्सन्निधानंस्वमुद्रया ॥ ४८ ॥ अनन्यात
वदेवेशमूर्तिशक्तिरियंप्रभो ॥ सान्निध्यंकुरुतस्यांत्वंभक्तानुग्रहतत्परः ॥ ४९ ॥ पठन्मूलंतथाश्लो
कंसन्निरुध्यात्स्वमुद्रया ॥ आज्ञयातवदेवेशकृपांभोधेगुणांबुधे ॥ ५० ॥ आत्मानंदकतृप्तंत्वांनिरु
णध्मिपितर्गुरो॥मुद्रयासंमुखीकुर्य्यान्मूलंश्लोकंचसंपठन्॥५१॥अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वावैकल्यात्सा
धनस्यच ॥ यदपूर्णंभवेत्कृत्यंतदप्यभिमुखोभव॥५२॥कुर्वीतमूलश्लोकाभ्यांप्रार्थन्यामुद्रयार्चने॥
दृशापीयूषवार्षिण्यापूरयन्यज्ञविष्टरम्॥५३॥मूर्तौवायज्ञसंपूर्तेःस्थिरोभवमहेश्वर॥न्यसेत्षडंगंदेवांगे
सकलीकरणंसुधीः ॥ ५४ ॥ मूलंश्लोकंपठन्कुर्य्यादवगुंठंस्वमुद्रया॥ अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरा
मितद्युते ॥ ५५ ॥ स्वतेजःपंजरेणाशुवेष्टितोभवसर्वतः॥ गोमुद्रयामृतीकृत्यविदध्यात्परमाकृतिम्
॥५६॥ महामुद्रांविरचयंस्ततःस्वागतमाचरेत्॥मूलमंत्रंतथाश्लोकंपठंस्तद्गतमानसः॥५७॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ स्वमुद्रयाऽवगुंठिन्या ॥ सोक्ता ॥ ५५ ॥ गोमुद्रोक्ता ॥ ५६ ॥ महामुद्राप्युक्ता ॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥ ५९ ॥ पाद्यद्रव्याण्याह ॥ श्यामाकेति॥ ६० ॥ ६१ ॥ आचमनीयद्रव्याण्याह ॥ लवंगेति ॥ कंकोलंसुगं

यस्यदर्शनमिच्छंतिदेवाःस्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मैतेपरमेशायस्वागतंस्वागतंचमे॥५८॥ ततःसुस्वा
गतंकुर्य्यान्मूलश्लोकौसमुच्चरन् ॥कृतार्थोंनुगृहीतोस्मिसफलंजीवितंमम॥५९॥आगतोदेवदेवेश
सुस्वागतमिदंपुनः ॥श्यामाकविष्णुक्रांताब्जदूर्वाःपाद्यजलेक्षिपेत्॥६०॥मूलश्लोकनमोमंत्रैःपाद्यं
पादांबुजेऽर्पयेत्॥ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानंदविग्रहम् ॥६१ ॥ तस्मैतेचरणाब्जायपाद्यंशुद्धायक
ल्पये॥लवंगजातिकंकोलंप्रक्षिप्याचमनीयके॥६२॥दद्यादाचमनंवक्त्रेमूलश्लोकसुधाक्षरैः॥वेदाना
मपिवेद्यायदेवानांदेवतात्मने ॥ ६३ ॥ आचामंकल्पयामीशशुद्धानांशुद्धिहेतवे ॥ अर्घ्यपात्रेक्षिपे
द्दूर्वास्तिलदर्भाग्रसर्षपान्॥६४॥ यवपुष्पाक्षतान्गंधंतेनार्घ्यंमूर्ध्निचाचरेत्॥मूलश्लोकशिरोमंत्रैर्देव
स्यमनुवित्तमः ॥६५॥ तापत्रयहरंदिव्यंपरमानंदलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्तंतवार्घ्यंकल्पयाम्य
हम्॥६६॥ पात्रेतुमधुपर्कस्यदध्याज्यमधुचाक्षिपेत्॥मूलश्लोकसुधामंत्रैर्दद्यात्तंवदनेप्रभोः ॥ ६७ ॥

धद्रव्यंमरिचोपमम् ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ शिरोमंत्रः स्वाहा ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ सुधामंत्रो वम् ॥ ६७ ॥

॥ ६८ ॥ ६९ ॥ स्नानवस्त्रोपवीतनैवेद्येषुदत्तेष्वाचमनीयंदद्यात् ॥ ७० ॥ ७१ ॥७२ ॥ उभयंमूलश्लोकौ ॥ ७३ ॥

सर्वकालुष्यहीनायपरिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदंदेवकल्पयामिप्रसीदमे ॥६८ ॥ पुनराचमनंद
द्यान्मूलश्लोकांतरंपठन्॥उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापियस्यस्मरणमात्रतः॥६९॥शुद्धिमाप्नोतितस्मैतेपुन
राचमनीयकम्॥ स्नानवस्त्रोपवीतांतेनैवेद्यांतेपितत्स्मृतम्॥ ७०॥ पाद्यादिवस्त्वभावेतुतत्स्मरन्नक्षता
न्क्षिपेत् ॥ गंधतैलंततोदद्यान्मूलश्लोकंपठन्सुधीः ॥ ७१॥ स्नेहगृहाणस्नेहेनलोकनाथमहाशय॥
सर्वलोकेषुशुद्धात्मन्ददामिस्नेहमुत्तमम् ॥७२॥ हरिद्राद्यैस्तमुद्वर्त्यस्नापयेदुभयंपठन् ॥ परमानंदबो
धाब्धिनिमग्ननिजमूर्त्तये ॥७३॥ सांगोपांगमिदंस्नानंकल्पयाम्यहमीशते ॥ ततःसहस्रंशंखेनशतंवा
शक्तितोपिवा ॥७४॥ गंधयुक्तोदकैरीशमभिषिंचन्मनुंस्मरन्॥ पठन्मूलंततःश्लोकौदद्याद्वस्त्रोत्तरी
यके॥७५॥मायाचित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ॥ निरावरणविज्ञानवासस्तेकल्पयाम्यहम्॥ ७६॥
यमाश्रित्यमहामायाजगत्संमोहिनीसदा॥तस्मैतेपरमेशायकल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ ७७॥ पीतंवि
ष्णौसितंशंभौरक्तंविघ्नार्कशक्तिषु॥सच्छिद्रंमलिनंजीर्णंत्यजेत्तैलादिदूषितम् ॥ ७८ ॥

॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ पूर्ववन्मूलश्लोकौपठन्गंधमर्पयेत् ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ अंगुष्ठौकनिष्ठामूललग्नौ–गंधमुद्रा ॥८४ ॥
॥ ८५ ॥ तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने–पुष्पमुद्रा ॥ पुष्पाध्यायमाह ॥ अक्षतानित्यादिना ॥ अक्षतान्तंडुलादीन् ॥तिल

उपवीतंभूषणानिप्रयच्छेदुभयंपठन्॥यस्यशक्तित्रयेणेदंसंप्रोतमखिलंजगत् ॥ ७९ ॥ यज्ञसूत्रा
यतस्मैतेयज्ञसूत्रंप्रकल्पये॥स्वभावसुंदरांगायनानाशक्त्याश्रयायते ॥ ८० ॥ भूषणानिविचित्राणि
कल्पयाम्यमरार्चितम्॥मूलमंत्रेणपुटितमेकैकंमातृकाक्षरम् ॥८१ ॥ विन्यसेद्देवतांगेषुयोगोयंलोक
मोहनः॥कनिष्ठयापात्रसंस्थंपूर्ववद्गंधमर्पयेत् ॥ ८२ ॥ परमानंदसौभाग्यपरिपूर्णदिगंतरम् ॥ गृहा
णपरमंगंधंकृपयापरमेश्वर ॥ ८३ ॥ ततःकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांगंधमुद्रांप्रदर्शयेत्॥मूलंश्लोकंपठन्नानापु
ष्पाणिविनिवेदयेत् ॥ ८४ ॥ तुरीयवनसंभूतंनानागुणमनोहरम् ॥ अमंदसौरभंपुष्पंगृह्यतामिदमुत्त
मम् ॥८५ ॥ तर्जन्यंगुष्ठयोगेनपुष्पमुद्रांप्रदर्शयेत्॥अक्षतानर्कधत्तूरौविष्णौनैवार्पयेत्सुधीः॥८६ ॥
बंधूकंकेतकींकुंदंकेसरंकुटजंजयाम्॥शंकरेनार्पयेद्विद्वान्मालतींयूथिकामपि ॥ ८७ ॥

कोपर्य्यर्पणेनदोषः ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

शक्तौदूर्वादयोनिषिद्धाः महालक्ष्म्यास्तुदूर्वाप्रशस्ता ॥ मालूरंबिल्वम् ॥ तगरंगंधतगरम् ॥ तगरइतिकान्यकुब्जभाषायाम् ॥जातुकदाचिदपि ॥ ८८ ॥ निषिद्धान्याह ॥ निर्गंधमिति ॥ ८९ ॥ तुच्छसंस्पृष्टंशरीरलग्नम् ॥ स्वाविकासितंबलादात्मनाविकासितम् ॥ ९० ॥ पर्युषितंदिनांतरानीतम् ॥ सुमंपुष्पम् चंपककमलयोः कलिकाअपि

शक्तौदूर्वार्कमंदारान्मालूरंतगरंरवौ ॥ विनायकेतुतुलसींनार्पयेज्जातुचिद्बुधः ॥८८॥ श्वेतपीतंहरेरिष्टंरक्तंरविगणेशयोः ॥ निर्गंधंकेशकीटादिदूषितंचोग्रगंधकम् ॥८९ ॥ मलिनंतुच्छसंस्पृष्टमाघ्रातंस्वविकासितम् ॥ अशुद्धभाजनानीतंस्नात्वानीतंचयाचितम् ॥ ९० ॥ शुष्कंपर्य्युषितंकृष्णंभूमिगंनार्पयेत्सुमम् ॥ चंपकंकमलंत्यक्त्वाकलिकामपिवर्ज्जयेत् ॥ ९१ ॥ कुरंटकंकांचनारंवर्जयेद्बृहतीयुगम् ॥ पुष्पंपत्रंफलंदेवेनप्रदद्यादधोमुखम् ॥ ९२ ॥ पुष्पांजलौनतद्दोषस्तथापर्य्युषितस्यच ॥ तुलसीबकुलोवृक्षश्चंपकश्चसरोजिनी ॥९३ ॥ बिल्वकल्हारदमनास्तथामरुबकःकुशः ॥ दूर्वाहिवल्ल्यपामार्गविष्णुक्रांतामुनिद्रुमाः ॥ ९४ ॥

प्रशस्ताः ॥ ९१ ॥ पुष्पपत्रफलान्यधोमुखानिनार्पयेद्यथोत्पन्नंतथैवार्पयेदित्यर्थः ॥ ९२ ॥ पुष्पांजलौ अधोमुखपर्युषितयोर्नदोषः ॥ ९३ ॥ अहिवल्लीनागवल्ली ॥ मुनिद्रुमोऽगस्त्यः ॥ ९४ ॥

---

१—२ तत्रपीतेकुरंटकइत्यमरः ।

धात्री आमलकी ॥ तुलस्यादीनांपत्रैरपिपूजा ॥ जम्ब्वादीनांपत्रैरपिफलैश्च ॥ ९५ ॥ रसालः आम्रः ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ दिक्पहेत्यंतमिति ॥ दिक्पालायुधपर्यंतमावरणपूजा ॥ इदंसांप्रदायकम् ॥ क्वचिदंगपूजातःप्रागपिवज्रा द्यूर्ध्वमप्यावरणानिसंति ॥ अंगपूजास्थानमाह ॥ अग्नीति ॥ ९८ ॥ अंगदेवताध्यानमाह ॥ वामलोचनाःस्त्रीरूपाः ॥ ९९ ॥ तिस्रःकंवचनेत्रास्त्ररूपाः रक्ताइष्टाभयान्वितावराभययुताः ॥ स्वदिक्षुप्रसिद्धासु दिक्पालानिंद्रादीन् ॥ जातिहेत्यादिसंयुतान् ॥ जातयःसुरादयःहेतयोवज्रादयः ॥ आदिशब्दाद्वाहनशक्ती ॥ १०० ॥

धात्रीयुतानामेतेषांपत्रैः कुर्यात्सुरार्चनम् ॥ जंबूदाडिमजर्बीरतिंतिणीबीज[1]पूरकाः ॥ ९५॥ रंभाधात्रीचबदरीरसालःपनसोऽपिच ॥ एषांफलैर्यजेद्देवंतुलसीतुहरेःप्रिया॥ ९६ ॥ सुवर्णपुष्पंतुलसीनैव निर्माल्यतांव्रजेत् ॥ पुष्पपूजांविधायेत्थंकुर्यादावरणार्चनम् ॥९७॥अंगादिदिक्पहेत्यंतंततोधूपादिकंचरेत् ॥ अग्निनैर्ऋतिवाय्वीशकोणेषुहृदयंशिरः॥९८॥ शिखांकवचमाराध्यनेत्रमग्रे पूजयेत्॥ दिक्ष्वस्त्रमंगदेव्यस्ताध्यातव्यावामलोचनाः॥ ९९॥सिताश्वेतासितास्तिस्रोरक्ताइष्टाभ .. न्विताः॥ स्वदिक्षुप्रयजेद्दिक्पान्जातिहेत्यादिसंयुतान् ॥ १०० ॥

---

[1] फलपूरोबीजपूरोरुचकोमातुलिंगकेइत्यमरः ।

प्रणवादीनि यानिनिजबीजानींद्रादिबीजानिपूर्वमुक्तानिलंरंमंक्षंवंयंसंहंह्रींआंइत्यादीनि ॥ प्रयोगमाह ॥ तार
मिति॥१०१॥१०२॥१०३॥आद्येति॥अधिपतयइत्येतस्मात्पूर्वस्यामुकपदस्यस्थानेसुरादिजातीर्वदेत्॥१०४॥१०५॥
बीजादीतिदिक्पालाश्चपूर्वमुक्ताः ॥ यातुतोयपयोर्निर्ऋतिवरुणयोः ॥ कंब्रह्माणम्॥ यथा–ॐलंइंद्रायसुराधिपतये

तारादिनिजबीजाद्यांस्तत्प्रयोगोऽधुनोच्यते ॥तारंबीजमथेन्द्रायामुकाधिपतयेततः॥१०१॥ सायु
धायसवाहांतेनायसांतेपरीतिच ॥ वारायांतेसशक्तीतिकायामुकपदंततः ॥ १०२ ॥पार्षदायनमों
तोऽयंदिक्पालानांमनुःस्मृतः ॥ इंद्रायेतिपदस्थानेवह्न्यादिपदमुच्चरेत् ॥१०३॥ आद्यामुकपदस्था
नेक्रमाज्जातीर्वदेत्सुधीः ॥ सुरतेजःप्रेतरक्षःसलिलप्राणतारकाः ॥१०४॥ भूताहिलोकाविज्ञेयाआ
शापालकजातयः ॥ पार्षदात्पूर्वममुकस्थानेस्यात्स्वेष्टदेवता ॥१०५॥ बीजानिपूर्वमुक्तानिवाहना
न्यायुधान्यपि ॥ यातुतोयपयोर्मध्येऽनंतंपूर्वेशयोस्तुकम् ॥ १०६ ॥

सायुधायसवाहनायसपरिवारायसशक्तिकायामुकेष्टदेवतापार्षदायनमः ॐरंअग्नयेतेजोधिपतये० ॐमंयमायप्रेता
धिपतये० ॐक्षंनैर्ऋतयेरक्षोऽधिपतये०ॐवंवरुणायजलाधिपतये०ॐयंवायवेप्राणाधिपतये ०ॐसंसोमायनक्षत्राधिप
तये० ॐहंईशानायभूताधिपतये० ॐह्रींअनंतायनागाधिपतये० ॐआंब्रह्मणेलोकाधिपतये०इतिप्रयोगः ॥१०६॥

॥ १०७ ॥ पुष्पपाथसीपुष्पोदकेदत्त्वा ॥ धूपमाह ॥ धूपपात्रेति॥ पुरोगुग्गुलुः ॥ आदिशब्दात् घृतकर्पूरशर्कराः ॥ अग्नावगुर्वादिप्रक्षिप्यफडितिप्रोक्ष्यनमइतिपुष्पंसमर्प्यवामतर्जन्यासंस्पृश्यमूलश्लोकांतेसांगायसपरिवारायरामाय

प्रत्यावृत्तिक्षिपेद्देवेपुष्पंमंत्रमिमंजपन्॥अभीष्टसिद्धिंमेदेहिशरणागतवत्सल ॥:१०७॥ भक्त्यासमर्प
येतुभ्यमिदमावरणार्चनम्॥आह्वानाद्युपचारेषुप्रत्येकंपुष्पपाथसी॥ १०८ ॥दत्त्वाप्रक्षाल्यचकरमुप
चारांतरंचरेत् ॥ धूपपात्रस्थितांगारेक्षिप्त्वागुरुपुरादिकम् ॥ १०९ ॥ पात्रमस्त्रेणसंप्रोक्ष्यहृदापुष्पं
समर्पयेत् ॥ संस्पृशन्वामतर्जन्यामूलश्लोकंचसंपठेत् ॥११०॥ वनस्पतिरसोपेतोगंधाढ्यःसुमनो
हरः ॥ आघ्रेयःसर्वदेवानांधूपोऽयंप्रतिगृह्यताम्॥ १११ ॥ सांगायसपरीत्यंतेवाशयङेन्तदेवता॥धूपं
समर्पयामीतिनमोंतंमंत्रमुच्चरन् ॥ ११२ ॥ शंखांबुप्रक्षिपेद्भूमौधूपमुद्रांप्रदर्शयेत्॥ तर्जन्यंगुष्ठयोगेन
घंटामर्चेत्स्वमंत्रतः ॥ ११३ ॥

धूपंसमर्पयामीतिशंखोदकंक्षिपेत् ॥ तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो–धूपमुद्रा ॥ स्वमन्त्रतः घंटामंत्रतः ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ १११ ॥११२ ॥ ११३ ॥

॥ ११४॥ विशेषमाह ॥ धूपयोदीति ॥ ईदृशंदीपदानमपि ॥ प्रोक्षणप्रयोगश्चतद्वत् ॥११५॥ वामोति ॥११६॥११७॥
मध्यमामूलयोरंगुष्ठयोगो–दीपमुद्रा ॥ दीपदानंनेत्रप्रदेशे ॥ वर्तीनांभूरिपक्षेबहुत्वपक्षेऽविषमास्त्याज्याः ॥

जयध्वनिमंत्रमातःस्वाहांतःसदशाक्षरः ॥ वादयन्वामहस्तेनकीर्तयन्देवतागुणान्॥ ११४ ॥ धूपये
दक्षहस्तेनदेवतानाभिदेशतः॥जलंपुष्पांजलिंदद्यादीपदानमपीदृशम्॥ ११५ ॥वाममध्यमयास्पर्शो
मूलश्लोकस्यकीर्तनम्॥सुप्रकाशोमहादीपःसर्वतस्तिमिरापहः॥ ११६॥ सबाह्याभ्यंतरंज्योतिर्दीपोऽ
यंप्रतिगृह्यताम्॥धूपस्थानेदीपपदंमध्यमांगुष्ठयोगतः॥ ११७ ॥दीपमुद्रादशनंचतद्दानंनेत्रदेशतः॥भूरि
पक्षेतुवर्तीनांविषमावार्तिकामताः॥ ११८ ॥ घृतदीपोदक्षिणेस्यात्तैलदीपस्तुवामतः॥सितवर्तियुतोदक्षे
वामांगेरक्तवर्तिकः। ११९।अत्रान्यद्‌धूपवज्ज्ञेयंततोनैवेद्यमर्पयेत्।स्वर्णादिभाजनेसाज्यंपायसंशर्करा
दिकम्। १२०।परिवेष्ययथाशक्तिप्रोक्षेत्कैरस्त्रमंत्रितैः।चक्रमुद्रामथारच्यप्रोक्षेत्तन्मंत्रितैर्जलैः ॥१२१।

॥ ११८ ॥ सितवर्तियुततैलदीपोदक्षिणतः ॥ रक्तवर्तियुतोघृतदीपोवामतइत्यर्थः ॥ ११९ ॥ अन्यज्जलप्रक्षेपादि ॥
॥ १२० ॥ कैर्जलैः ॥ चक्रमुद्रोक्ता ॥ वायुबीजेनद्वादशवारंमंत्रितैर्जलैस्तंनैवेद्यंप्रोक्षेत् ॥ १२१ ॥

वायुबीजोत्थमारुतैर्नैवेद्यदोषंसंशोष्यदक्षिणकरेरंबीजंविचिंत्यदक्षकरपृष्ठवामकरंदत्त्वानैवेद्यंप्रदर्श्याग्निबीजोत्थाग्निनादोषंदग्ध्वावामकरेवंबीजंध्यात्वातत्पृष्ठेदक्षहस्तंदत्त्वानैवेद्यंप्रदर्श्यामृतबीजोत्थामृतप्लुतंस्मृत्वामूलेनप्रोक्ष्यतत्स्पृष्ट्वाऽष्टवारंमूलंप्रजप्यधेनुमुद्रांप्रदर्श्यसंपूज्यदेवेपुष्पंदत्त्वादेवस्योद्गतंतेजःस्मृत्वावामांगुष्ठस्पृष्टंनैवेद्यंसजलदक्षहस्तेनमू

वायुबीजेनार्कवारंततस्तज्जातमारुतैः॥नैवेद्यदोषंसंशोष्यचिंतयेद्दक्षिणेकरे ॥ १२२॥ अग्निबीजंत
स्यपृष्ठेवामंकरतलंन्यसेत्॥तंदर्शयित्वानैवेद्येतदुत्थेनाग्निनाखिलम् ॥१२३॥ नैवेद्यदोषंसंदह्यध्याये
द्वामकरेऽमृतम् ॥तत्पृष्ठेदक्षिणंहस्तंकृत्वातत्रप्रदर्शयेत् ॥१२४॥ आप्लावितस्मरेद्भोज्यंबीजोत्थामृत
धारया ॥ प्रोक्ष्यमूलेनतत्स्पृष्ट्वाऽष्टशोमूलमनुंजपन् ॥ १२५ ॥ दर्शयित्वाधेनुमुद्रांगंधपुष्पैस्तदर्च
येत् ॥ देवेपुष्पांजलिंदत्त्वातेजोदेवमुखोत्थितम् ॥१२६॥विचिंत्यवामांगुष्ठेनस्पृशन्नैवेद्यभाजनम्॥
दक्षहस्तेजलंधृत्वामूलश्लोकंशिरःपठेत् ॥ १२७ ॥

लश्लोकसहितस्वाहांतेसांगायेतिपठन्नैवेद्यमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ अनामामूलयोरंगुष्ठयोगोनैवेद्यमुद्रा ॥ १२२ ॥ १२३॥ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥

॥ १२८ ॥ १२९ ॥ सपुष्पकराभ्यांपात्रमुद्धरन्निवेदयामीतिपठेत् ॥ १३० ॥ पद्माभोवामहस्तो–ग्रासमुद्रा ॥ १३१॥
प्राणादिमुद्राआह ॥ कनिष्ठेति ॥ १३२ ॥ चतुर्थिकाव्यानमुद्रा ॥ १३३ ॥ सर्वांगुलीभिःसमानमुद्रा ॥ द्विठंस्वा

सत्पात्रसिद्धंसुहविर्विविधानेकभक्षणम् ॥निवेदयामिदेवेशसानुगायगृहाणतत्॥१२८॥ क्षांगायेत्या
दिकंप्रोच्यजलमुत्सृज्यभूतले ॥ नैवेद्यमुद्रामंगुष्ठानामिकाभ्यांप्रदर्शयेत् ॥ १२९॥ सपुष्पाभ्यांकरा
भ्यांत्रिःप्रोद्धरन्भक्ष्यभाजनम्॥निवेदयामिभवतेजुषाणेदंहविर्हरे ॥१३०॥ षोडशार्णानिमान्प्रोच्य
ग्रासमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥ वामहस्तेनपद्माभांप्राणाद्यांदक्षिणेनतु ॥१३१ ॥ कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्मुद्राप्राण
स्यकीर्तिता॥तर्जनीमध्यमांगुष्ठैरपानस्यतु स्मृता ॥ १३२ ॥ अनामामध्यमांगुष्ठैरुदानस्यचमुद्रि
का ॥ तर्जन्यनामामध्याभिःसांगुष्ठाभिश्चतु धका ॥ १३३ ॥सर्वाभिःससमानस्यप्राणाद्यान्ङेद्विठा
न्वितान् ॥ तारपूर्वान्जपन्मुद्राःप्राणादीनांप्र र्शयेत् ॥ १३४ ॥

हा ॥ ॐप्राणायस्वाहेत्यादि० ॥ १३४ ॥

जवनिकातिरस्कारिणी तांधृत्वाशालेर्भक्तंब्रह्मेशाद्यैरितिपद्यद्वयंपठेत् ॥ यथा–'ब्रह्मेशाद्यैःपरितउरुभिःसूपविष्टैःसमेतैर्लक्ष्म्याशिंजद्वलयकरयासादरंवीज्यमानः ॥ लीलानर्मप्रहसनमुखैर्व्याप्नुवन्पंक्तिमध्यंभुंक्तेपात्रेकनकघटितेषड्रसं श्रीरमेशः ॥ १ ॥' 'शालेर्भक्तंसुपक्वंशिशिररसितंपायसापूपसूपंलेह्यंपेयंचचोष्यंसितममृतफलंपूरिकाद्यंसुखाद्यम् ॥ आज्यंप्राज्यंसभोज्यंनयनरुचिकरंराजिकैलामरीचस्वादीयःशाकराजीपरिकरममृताहारजोषंजुषस्व' ॥२॥ इति

ततोजवनिकांकृत्वाब्रह्मेशाद्यैरिदंपठेत् ॥ पद्यंशालेर्भक्तमितिमूलमंत्रंचसप्तधा ॥ १३५ ॥ प्रतिसीरामपाकृत्यदद्याच्छ्लोकंपठञ्जलम् ॥ समस्तदेवदेवेशसर्वतृप्तिकरंपरम् ॥१३६॥ अखंडानंदसंपूर्णगृहाणजलमुत्तमम् ॥ स्थंडिलेग्निमुपाधायवैश्वदेवक्रियांचरेत् ॥१३७॥ मूलेनवीक्ष्यचास्त्रेणकृत्वाप्रोक्षणताडने॥ कुशैस्तद्वर्मणाभ्युक्ष्यपूर्ववत्स्थापयेच्छुचिम् ॥१३८॥ तन्मंत्रेणतमभ्यर्च्याहूयतत्रेष्टदेवताम्॥ पूजयेद्गंधपुष्पैस्तांमहाव्याहृतिभिस्ततः ॥ १३९ ॥ हुत्वाव्यस्तसमस्ताभिराहुतीनांचतुष्टयम् ॥ अन्नैर्मूलेनजुहुयात्पंचविंशतिसंख्यया ॥ १४० ॥

पद्यद्वयम् ॥ रमेशपदस्थानेदेवताभेदेन्यदेवतानामूहःकार्यः ॥ लक्ष्म्येतिपदस्थानेपिगौर्यापार्वत्येत्यादिपदसन्निवेशऊह्यः ॥ १३५ ॥ प्रतिसीरांजवनिकाम् ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ शुचिंवह्निं पूर्ववत्प्रथमतरंगोक्तविधिना ॥ १३८ ॥ तन्मंत्रेणवैश्वानरमंत्रेणपूर्वोक्तेन ॥ १३९ ॥ १४० ॥

---

१ शालेरितिजातिनिर्देशः।

॥ १४१ ॥ १४२ ॥ उच्छिष्टभोजिनआह ॥ विश्वक्सेनइत्यादिना विकर्तनस्यरवेः ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ सार्धश्लोक

पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वामूर्तौदेवंनियोजयेत्॥वह्निंविसृज्यदेवायदद्यादाचमनोदकम् ॥१४१॥तेजःसंयो
ज्यदेवस्यनिर्गतंदेववक्त्रतः ॥नैवेद्यांशंतदुच्छिष्टभोजिनेविनिवेदयेत् ॥१४२॥ विष्वक्सेनोहरेरुक्त
श्चंडेश्वरउमापतेः ॥विकर्तनस्यचंडांशुर्वक्रतुंडोगणेशितुः ॥ १४३ ॥ शक्तेरुच्छिष्टचांडालीस्मृताउ
च्छिष्टभोजिनः ॥ ततोलवणमुत्तार्य्यकुर्य्यादारार्तिकंसुधीः ॥१४४ ॥ अथोनिवेद्यतांबूलंदर्शयेच्छत्र
चामरे॥पठेद्देवमनाभूत्वासार्द्धश्लोकचतुष्टयम्॥१४५॥बुद्धिःसवासनाक्लृप्तादर्पणंमंगलानिच।मनोवृ
त्तिर्विचित्रातेनृत्यरूपेणकल्पिता ॥१४६॥ ध्वनयोगीतरूपेणशब्दवाद्यप्रभेदतः॥ छत्राणिनवपद्मा
निकल्पितानिमयाप्रभो ॥१४७॥सुषुम्णाध्वजरूपेणप्राणाद्याश्चामरात्मना॥अहंकारोगजत्वेनवेगः
क्लृप्तोरथात्मना ॥१४८॥ इंद्रियाण्यश्वरूपाणिशब्दादिरथवर्त्मना॥मनःप्रग्रहरूपेणबुद्धिःसारथिरू
पतः॥१४९॥सर्वमन्यत्तथाक्लृप्तंतवोपकरणात्मना॥श्लोकानेतान्पठित्वातुमूलमंत्रमनन्यधीः।१५०।

चतुष्टयंशिवोक्तम् ॥ १४५ ॥ तदेवाह ॥ बुद्धिरिति ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥

मंत्रेणगुह्यातिगुह्येत्यादिना तंजपंदेवदक्षकरेर्घजलेनार्पयेत् ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ प्रदक्षिणासंख्यामाह ॥ अजेति ॥ अजेविष्णौवेदाश्चतस्रःप्रदक्षिणाः ॥ईशेर्द्धम् ॥ शक्तावेका ॥ गणेशस्यतिस्रः ॥ रवेःसप्त ॥१५४॥१५५ ॥ ब्रह्मार्पणमंत्रमाह ॥ इतइति ॥ बकःशः मेषोऽनंतान्वितः नः आयुतः श्वा ॥ यथा–ॐइतःपूर्वंप्राणबुद्धिदेहधर्मा

यथाशक्तिजपित्वातंमंत्रेणविनिवेदयेत्॥क्षिपन्नर्घस्यपानीयंदेवतादक्षिणेकरे ॥१५१॥ गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वंगृहाणास्मत्कृतंजपम्॥ सिद्धिर्भवतुमेदेवत्वत्प्रसादात्त्वयिस्थितिः॥ १५२ ॥ कीर्तितःश्लोकरूपोयंमंत्रोजपनिवेदने ॥दत्त्वापराङ्मुखंचार्घ्यंपुष्पैःशंखंप्रपूजयेत् ॥१५३॥ दंडवत्प्रणिपत्येशंदेवेकुर्य्यात्प्रदक्षिणाः ॥ अजेशशक्तिगणपभास्कराणांक्रमादिमाः ॥ १५४ ॥ वेदार्द्धचंद्रवह्न्यद्रिसंख्याःस्युःसर्वसिद्धये॥स्तुत्वाब्रह्मार्पणाख्येनमनुनाऽत्मानमर्पयेत् ॥ १५५ ॥ इतःपूर्वंप्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यंतेऽवस्थासुमनसावदेत् ॥ १५६ ॥ वाचाचहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेणशिश्नतस्ततः॥ मेषोनंतान्वितोयत्स्मृतंयदुक्तंचयत्कृतम् ॥१५७॥ तत्सर्वंप्रोच्यब्रह्मार्पणंभवत्वग्निवल्लभा॥मांमदीयंचसकलंहरयेतेसमर्पये ॥ १५८ ॥

धिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्नेन यत्स्मृतंयदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मां मदीयं च सकलं हरये ते समर्पये ॐ तत्सदिति ॥ १५६ ॥ १५७॥ १५८ ॥

॥ १५९ ॥ संहारमुद्रोक्ता ॥ हरयेइत्यत्रईशानायगौर्यइत्याद्यूहः ॥ १६० ॥ ब्रह्मयज्ञंवेदाध्ययनम् ॥ अलब्धस्यलाभोयोगः ॥ लब्धस्यपरिपालनंक्षेमः ॥ १६१ ॥ तांत्रंस्नानम् ॥ पूर्वोक्तं प्रथमतरंगोक्तम् ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

तारस्तत्सदितिप्रोक्तोब्रह्मार्पणमनुर्बुधैः॥प्रणवादिर्द्व्यशीत्यर्णोदेवतात्मसमर्पणे ॥१५९॥संहारमुद्रया
देवंसंहरेद्धृदयेनिजे॥अन्यस्मिन्दैवतेकार्य्यऊहोहरिपदेबुधैः॥१६० ॥एवंसंपूज्यदेवेशंब्रह्मयज्ञंसमा
चरेत् ॥ योगक्षेमंततःकृत्वामध्याह्नेस्नानमाचरेत् ॥ १६१॥स्मार्तंतांत्रंचपूर्वोक्तंसंध्यातर्पणमप्यथ॥
संपूज्यपूर्ववद्देवंवैश्वदेवादिकंचरेत् ॥१६२॥देवप्रसादंभुंजीतसंभोज्यब्राह्मणोत्तमान्॥आचम्यदेवंसं
स्मृत्यपुराणंशृणुयात्सुधीः ॥१६३॥संध्याहोमंचनिर्वृत्यदेवंसंपूज्यपूर्ववत् ॥शयीतशुद्धशय्यायांसु
काल्पंदेवतांस्मरन्॥१६४॥ एवंयःपूजयेद्देवंत्रिकालंधर्ममाचरन् ॥नजातुवैरिभिर्दुःखैःपीड्यतेहरि
रक्षितः ॥ १६५ ॥ त्रिकालंपूजनाशक्तैःकार्य्यंद्विःसकृदप्यदः ॥विशेषेणयजेद्देवंसंक्रांत्यादिषुपर्वसु
॥१६६॥दशभिःपंचभिर्वापिपूजयेदुपचारकैः॥ अशक्तःकारयेत्पूजांदद्यादर्चनसाधनम् ॥१६७ ॥

॥ १६५ ॥ अदःपूजनम् ॥ १६६ ॥ दशभिरुपचारैरावाहन$^{१}$आसन$^{२}$स्नान$^{३}$आचमन$^{४}$वस्त्र$^{५}$चन्दन$^{६}$पुष्प$^{७}$धूप$^{८}$दीप$^{९}$नैवेद्यैः$^{१०}$ ॥ पञ्चभिर्गंधाद्यैः ॥ १६७ ॥

पंचप्रकारांपूजामाह ॥ साधनाऽभाविनीति ॥ साधनानांपूजोपकरणानामभावोयस्याःसासाधनाभाविनी ॥ त्रासोयस्याःसातत्कृतात्रासी ॥ दुर्बोधानामियंदौर्बोधी ॥ सूतकेकृतासौतकी ॥१६८॥ आतुरस्येयमातुरी।१६९।

दानाशक्तःसमर्चंस्तंपश्येत्तत्परमानसः॥साधनाऽभाविनीत्रासीदौर्बोधीसौतकीतथा ॥१६८॥आतु
रीपंचधोक्तासौपूजासाकीर्त्यतेक्रमात्॥पूजासाधनवस्तूनामभावान्मनसैवया॥१६९॥पूजांभसासा
धनंयत्साधनाभाविनीतुसा॥त्रस्तःसंपूजयेद्देवंयथालब्धोपचारकैः॥१७०॥मानसैर्वापिसात्रासीज्ञे
यासंपूर्णसिद्धिदा॥बालावृद्धाःस्त्रियोमूर्खादुर्बोधास्तत्कृतातुया॥१७१॥यथाज्ञानंपराचासौदौर्बो
धीकीर्तिताबुधैः॥ सूतकीतुनरःस्नात्वासंध्यांस्वांमानसींचरेत्॥१७२॥मानसैर्वार्चयेत्कामीनिष्का
मःसर्वमाचरेत्॥ सौतक्युक्ताऽऽतुरीरोगान्नस्नायान्नचपूजयेत्॥१७३॥ विलोक्यमूर्तिंदेवस्ययदिवा
सूर्य्यमंडलम्॥ सकृन्मूलमनुंजप्त्वातत्रपुष्पंविनिक्षिपेत्॥१७४॥ ततोरोगेगतेस्नात्वापूजयित्वागु
रून्द्विजान्॥ पूजाविच्छेददोषोमेमास्त्वतिप्रार्थयेत्ततान्॥१७५॥

क्रमाल्लक्षणमाह ॥ पूजेति ॥ त्रासीमाह ॥ त्रस्तइति ॥ १७० ॥ दौर्बोधीमाह ॥ बालाइति ॥ १७१ ॥ सौतकीमाह ॥ सूतकीत्विति ॥ १७२ ॥ आतुरीमाह ॥ आतुरेति ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥

॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ सुरार्चायानित्यतामाह ॥ देवेति ॥ १७९ ॥ इतिमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांदेवा
र्चानिरूपणंनामद्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥ ॥ पवित्रदमनार्चनंवक्तुमुपक्रमते ॥ वक्ष्येथोइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३॥ पूर्वा

तेभ्यश्चाशिषमादायदेवेशंपूर्ववद्यजेत् ॥ आतुरीक्रीर्तितापूजाःपंचैवंनारदोदिताः॥ १७६॥स्वयंसंपा
द्यसर्वाणिश्रद्धयासाधनानियः॥ पूजयेत्तत्परोदेवंसलभेताखिलंफलम् ॥१७७ ॥ पूजनेनफलार्द्धंस्या
दन्यदत्तैस्तुसाधनैः ॥ तस्मात्स्वयंसमानीयसाधनान्यर्चनंचरेत् ॥१७८॥ देवपूजाविहीनोयःसन
रोनरकेपचत्॥ यथाकथंचिद्देवार्च्चाविधेयाश्रद्धयान्वितैः॥१७९॥इतिमंत्रमहोदधौपूजाकथनंनाम
द्वाविंशस्तरंगः॥२२॥वक्ष्येथोसर्वदेवानांपवित्रदमनार्पणम्॥ पवित्रैःश्रावणेपूजाचैत्रेदमनकैरपि॥१॥
प्रत्यब्दंविधिवत्कुर्य्याद्वर्षार्चाफलसिद्धये ॥ चत्रेशुक्लचतुर्दश्यांदमनःपूजयेद्धरम्॥२॥नारायणंतुद्वा
दश्यामष्टम्यांगिरिनंदिनीम् ॥ सप्तम्यांभास्करंदेवंचतुर्थ्यांगणनायकम् ॥३॥ एवंतत्तत्तिथौतंतंपवि
त्रैःश्रावणेर्चयेत् ॥ पूर्वाह्लेदमनाचार्यायाःकृत्वानित्यार्चनंविभोः॥४॥ गत्वादमनकारामगृह्णीयात्तंक्र
यार्पणात् ॥ उपविश्यशुचौदेशेमनुनानेनचार्पयेत् ॥ ५ ॥

ह्नपूर्वदिने ॥ ४ ॥ क्रयार्पणान्मूल्यदानेन ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ क्लींकामदेवायनमइतिकामस्यमनुः ॥ ह्रींरत्यैनमइतिरतेः॥७॥ ८ ॥९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२॥ १३ ॥ १४ ॥

अशोकायनमस्तुभ्यंकामस्त्रीशोकनाशन ॥शोकार्तिंहरमेनित्यमानंदंजनयस्वमे॥ ६॥ इतिसंप्रार्थ्यतत्राचैंद्रतिकामौस्वमंत्रतः ॥ कामदेवायकामादिर्हृदंतोष्टाक्षरोमनुः ॥७॥ कामस्यमायारत्यैर्हृत्पंचार्णस्तुरतेर्मनुः ॥इष्टदेवस्यपूजार्थंनेष्यामित्वामितिब्रुवन् ॥ ८ ॥ उत्पाद्यपंचगव्येनाभिषिच्यक्षालयेज्जलैः ॥ गंधादिभिर्हृदाभ्यर्च्यच्छादयेत्पीतवाससा ॥९॥ निधायवंशपात्रेतंगीतवादित्रनिःस्वनैः ॥गृहमानीयतद्देशेस्थापयेद्देवतांस्मरन्॥१०॥ततोदेवस्यपुरतःकृत्वाष्टदलमंबुजम् ॥ सितकृष्णरक्तपीतवर्णैःसंपूरयेत्तुतम् ॥११॥ भूपुरंतद्बहिःकृत्वापीतवर्णेनपूरयेत् ॥ सितरक्तपीतवर्णंतद्बहिर्वर्तुलत्रयम् ॥ १२ ॥ रक्तवर्णेनतद्बाह्येविदध्याच्चतुरस्रकम् ॥ एवंविरचितेरम्येमंडलेसार्वकामिके ॥ १३ ॥ यदिवासर्वतोभद्रेमुंचेद्दमनभाजनम् ॥ सायंकालीनपूजांतेकुर्य्यात्तस्याधिवासनम् ॥ १४ ॥ताराद्याभ्यांकामरतिमंत्राभ्यांतत्रतौयजेत् ॥ दलेष्वष्टसुरत्याद्यानष्टौकामान्पृथग्विधैः ॥ १५ ॥

ताराद्याभ्यांप्रणवादिकाभ्यांकामरतिमंत्राभ्यामुक्ताभ्यांतत्रमंडलमध्यस्थदमने तौरातिकामौ ॥ १५ ॥

कामानाह कामइति ॥ १६ ॥ प्रणवेति ॥ ॐक्लींकामायनमइत्यादिभिः ॥ १७ ॥ पूजाद्रव्याण्याह ॥कर्पूरेति॥ न्यंकुनाभिजाकस्तूरी ॥ तत्रकर्पूरेणकामपूजा रोचनयाभस्मशरीरपूजा कस्तूर्याऽनंगपूजेत्यादिक्रमः॥१८॥१९ ॥

कामोभस्मशरीरश्चततोनंगश्चमन्मथः ॥वसंतसखसंज्ञश्चस्मरइक्षुधनुर्धरः ॥ १६॥ पुष्पबाणइमेकामास्तान्यजेन्नामभिर्निजैः॥प्रणवानंगबीजाद्यैश्चतुर्थीहृदयान्वितैः॥ १७॥कर्पूररोचनान्यंकुनाभिजागुरुकुंकुमैः ॥ धात्रीफलैश्चंदनेनपुष्पैःकामान्क्रमाद्यजेत् ॥१८॥दमनंगंधपुष्पाद्यैरभिपूज्याभिमंत्रयेत्॥अष्टोत्तरशतंकामगायत्र्यामंत्रवित्तमः ॥ १९ ॥ [1]कामदेवायवर्णांतेविद्महेपदमुच्चरेत्॥पुष्पबाणायचपदंधीमहीतिततोवदेत् ॥२०॥ तन्नोऽनंगःप्रचोवर्णाद्दयादितिमनोभुवः ॥गायत्र्येषाबुधैरुक्ताजगज्जनविमोहिनी ॥ २१ ॥ हृदापुष्पांजलिंदत्त्वामनुनानेनतंनमेत् ॥नमोस्तुपुष्पबाणायजगदानंदकारिणे ॥२२ ॥ मन्मथायजगन्नेत्ररतिप्रीतिप्रदायिने ॥ ततोनिमंत्रयेद्देवमनेनमनुनासुधीः ॥२३॥ आमंत्रितोसिदेवेशप्रातःकालेमयाप्रभो ॥कर्तव्यंतुयथालाभंपूर्णंस्यात्तुतवाज्ञाया ॥ २४ ॥

कामगायत्रीमाह ॥ कामदेवायेति ॥ जनविमोहिनीत्युक्तत्वात्स्वतंत्राप्येषा ॥ २० ॥ २१॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

---

[1] कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ॥ तन्नोऽनंगःप्रचोदयात् ।

वर्मणावगुंठनम् अस्त्रेणरक्षणंचकुर्यात् ॥ २५॥ २६ ॥ २७ ॥ देशकालावुच्चार्यवर्षपूजासांगत्यायदमनार्चांकरिष्य

देवेपुष्पांजलिंदत्त्वादंडवत्प्रणिपत्यच॥दमनेवर्मणास्त्रेणविदध्यादवगुंठनम्॥ २५ ॥ रक्षणंचक्रमादेत
दधिवासनमीरितम्॥ततोजागरणंकुर्य्याद्देवंगायंस्तुवञ्जपन् ॥ २६ ॥ सर्वाधिवासनंचापिकुर्य्यान्नर्त
नजागरौ॥प्रातःस्नानादिनिर्वर्त्यकृत्वानित्यार्चनंविभोः ॥ २७ ॥ संकल्पंदमनार्चायाविदध्यादेव
ताज्ञया॥गृहीत्वादमनस्याथहस्ताभ्यांमंजरींशुभाम् ॥ २८ ॥ हृदाभिमंत्रयेन्मंत्रीततःश्लोकमिमंप
ठेत्॥ सर्वरत्नमयींदिव्यांसर्वगंधमयींशुभाम्॥ २९ ॥ गृहाणमंजरींदेवनमस्तेऽस्तुकृपानिधे॥ मूल
मंत्रेणघंटादिघोषैर्देवस्यमस्तके ॥ ३० ॥ समर्प्यतांततःकुर्य्यान्मालांदमननिर्मिताम्॥हृदाभिमंत्र्य
चानेनश्लोकेनाप्यभिमंत्रयेत्॥ ३१॥ सर्वरत्नमयींनाथदामनींवनमालिकाम् ॥ गृहाणदेवपूजार्थंस
र्वगंधमयींविभो ॥ ३२ ॥ मूलमंत्रंजपन्देवमुकुटेतांसमर्पयेत् ॥दमनेनेष्टदेवस्यपरिवारान्समर्चयेत्
॥३३॥ततोनैवेद्यतांबूलेदत्त्वानत्वाचदडवत्॥दमनार्चांकृतांतस्मैश्लोकेनविनिवेदयेत् ॥ ३४ ॥

इतिसंकल्पः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ पवित्रविधिमाह ॥ पावित्रेति ॥ ३८ ॥ दुर्वर्णरूप्यम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२॥ अष्टो

देवदेवजगन्नाथवांछितार्थप्रदायक॥कृत्स्नान्पूरयमेत्वर्थकामान्कामेश्वरीप्रिय ॥ ३५ ॥ जप्त्वामूलम_
नुवह्निंहुत्वादेवंविसृज्यच॥गुरुंगत्वादमनकैर्यजेत्त्तंतोषयेद्धनैः ॥ ३६॥ विप्रान्त्संभोज्यभुंजीतस्वदे
वायनिवेदितम्॥एवंकृतेकृतार्थःस्याद्वर्षार्चाफलभाङ्नरः ॥ ३७ ॥ कथितादमनार्चैषापवित्रयजनं
ब्रुवे॥ पवित्रयजनाहात्तुपूर्वस्मिन्वासरेसुधीः ॥ ३८ ॥ विदध्यान्नित्यपूजांतेपवित्राणियथाविधि ॥
हैमदुर्वर्णताम्रोत्थतंतुभिःपट्टसूत्रतः ॥ ३९ ॥ यद्वाकार्पाससूत्रैस्तुनिर्मितैर्विप्रभार्यया॥अन्ययावा
सधवयासदाचारप्रसक्तया ॥ ४०॥ कर्तितैस्तानिकुर्वीतनपुंश्चल्यादिनिर्मितैः॥त्रिगुणंत्रिगुणीकृत्य
निर्मायान्नवसूत्रिकाम् ॥ ४१ ॥ तांप्रोक्ष्यपंचगव्येनक्षालयेदुष्णवारिणा ॥प्रणवेनाभिषिंचेत्तांमूलेना
ष्टोत्तरंशतम्॥४२॥मंत्रयेन्मूलगायत्र्यातावदेवततःसुधीः॥रचयेन्नवसूत्रीभिरष्टोत्तरशतेनच ॥ ४३ ॥
तदर्द्धेनतदर्द्धेनजानूरुनाभिमानतः॥देवेशस्यपवित्राणिशचौदेशेप्रसन्नधीः ॥ ४४ ॥

त्तरशतनवसूत्र्याज्येष्ठं चतुःपंचाशतामध्यमं सप्तविंशत्याकनिष्ठं पवित्रंकुर्यात् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठंषट्त्रिंशद्ग्रंथियुतम् ॥ मध्यमंचतुर्विंशातिग्रंथियुतम् ॥ कनिष्ठंद्वादशग्रंथियुतम् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अष्टिः
षोडश ॥ ४८ ॥अद्रिनेत्रमिताभिःसप्तविंशातिसंख्याभिस्ताभिर्नवसूत्रीभिर्गुरुपवित्रं तावतीभिस्ताभिः सप्तविंश

ज्येष्ठमध्यकनिष्ठानितेषुग्रन्थीन्दधीतच ॥षट्त्रिंशत्तत्त्वमार्तण्डमिताञ्ज्येष्ठादिषुक्रमात् ॥ ४९ ॥
अष्टोत्तरसहस्रेणनवसूत्र्याविनिर्मितम् । अष्टोत्तरशतग्रंथिवनमालापवित्रकम् ॥ ४६ ॥ कृत्वातान्रं
जयेद्ग्रंथीन्रोचनाकुंकुमादिभिः ॥ वैणवेपटलेतानिसंछाद्यसितवाससा ॥४७ ॥ स्थापयित्वाविनि
र्मायादन्यान्यावरणार्चने ॥ सप्तविंशत्यष्टिरविनवसूत्रीकृतानितु ॥ ४८ ॥ अद्रिनेत्रमिताभिस्तुकु
र्य्याद्गुरुपवित्रकम् ॥ तावतीभिःकृशानोस्तत्षड्विंशत्यातदात्मनः ॥४९॥तत्रग्रंथीन्यथाशोभंदत्त्वा
संरंजयेदपि ॥ तानिपात्रांतरेन्यस्यकुर्य्याद्गंधपवित्रकम् ॥५०॥ द्वादशग्रंथितिग्मांशुनवसूत्रीविनि
र्मितम् ॥ निर्मायैवंपवित्राणिकुर्य्यात्पूजाथमंडलम्॥५१ ॥ पंकजंषोडशदलंपूरयेदष्टवर्णकैः॥नील
हारिद्रशोणाह्वमांजिष्ठश्वेतसंज्ञकैः ॥ ५२ ॥

त्यैतच्छुचेरग्नेस्तत्पवित्रं षड्विंशत्यास्वपवित्रंचकुर्यात् ॥ तत्रग्रंथयःस्वेच्छयादेयाः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तिग्मांशुर्द्वादश॥
॥ ५१ ॥ ५२ ॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ पात्रे देवपवित्रपात्रेआवरणपवित्रपात्रेच ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ अधिवासनमाहः ॥ तत्रेति ॥ ५८ ॥

सिंदूरधूम्रकृष्णाख्यैस्तद्बहिर्मंडलत्रयम् ॥ सूर्य्यसोमाग्निसंज्ञंतत्सितपीतारुणंक्रमात् ॥५३॥तद्बाह्या
ष्टदलंकुर्य्यादरुणंयदिवासितम् ॥ एवंमंडलमालिख्यपूजयेत्कुसुमादिभिः ॥ ५४॥ तस्योपरिनिब
ध्नीयाद्वितानसमलंकृतम् ॥ मंडलेस्थापयेद्देवंप्रतिमांयदिवाघटम् ॥५५॥तत्रेष्टदेवंसंपूज्यपायसंवि
निवेदयेत् ॥ देवताग्रेपवित्राणांपात्रेन्यस्याधिवासयेत्॥५६॥उक्तसंख्यस्यसूत्रस्यालाभेतानियथा
रुचि ॥ ज्येष्ठादीनिपवित्राणिविदध्यात्सर्वथासुधीः ॥५७ ॥ तत्रद्वाविंशतिंदेवानाहूयप्रतिपूजयेत्
ब्रह्मविष्णुमहेशानास्त्रिसूत्र्यादेवताःस्मृताः॥५८ ॥ ओंकारचंद्रमोवह्निर्ब्रह्मनागशिखिध्वजाः ॥ सू
र्य्यःसदाशिवोविश्वेनवसूत्र्यधिदेवताः॥५९॥क्रियाचपौरुषीवीराचतुर्थीत्वपराजिता॥विजयाजय
यायुक्तामुक्तिदाचसदाशिवा ॥ ६० ॥

शिखिध्वजःकार्त्तिकेयः ॥ विश्वेविश्वेदेवाः ॥ ५९ ॥ ६० ॥

॥६१॥ आवाहनीस्थापनीसन्निधापनीसन्निरोधिनीसम्मुखीकरणीसकलीकरण्यवगुंठिन्यमृतीकरणीपरमीकरण्योन
वाऽऽवाहन्यादिमुद्राः ॥ ताउक्ताः ताभिस्तदाह्वानादिकंपवित्रदेवतानांब्रह्मादीनांपदार्थानुसमयेनकांडानुसमयेन
चाऽऽवाहनादिचकृत्वागंधादिनाऽर्चयेत् ॥ ६२ ॥ ६३॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ केशवपदस्थानेऊहः शंकरःभास्करः

मनोन्मनीतुनवमीदशमीसर्वतोमुखी॥एताःपवित्रग्रंथीनांदेवताःपारिकीर्तिताः॥६१॥आवाहन्यादि
मुद्राभिर्नवभिःसाधकोत्तमः ॥ तदाह्वानादिकंतत्रकृत्वाचर्चेच्चंदनादिभिः ॥६२॥ एवंपवित्राण्यभ्य
र्च्यदद्याद्गंधपवित्रकम्॥ तद्धूपयित्वातारेणहृदयेनाभिमंत्रयेत्॥६३॥ प्रणम्यप्रार्थयेद्देवंश्लोकयुग्म
मिदंपठन् ॥ आमंत्रितोसिदेवेशसार्द्धंदेव्यागणेश्वरैः ॥६४॥ मंत्रेशैर्लोकपालैश्चसहितःपरिवारकैः॥
आगच्छभगवन्नीशविधिसंपूर्तिकारक ॥ ६५ ॥ प्रातस्त्वांपूजयिष्यामिसान्निध्यंकुरुकेशव ॥ततोगं
धपवित्रंतत्पादयोर्विन्यसेत्प्रभोः ॥६६॥ केशवेतिपदस्थानेकार्य्यऊहोन्यदैवतः ॥ भगवत्याःपदे
ष्वत्रलिंगोहोमंत्रवित्तमैः ॥ ६७ ॥

विघ्नराडित्यादिरूपइति ॥भगवत्यांपवित्रारोपणेतुतत्पदेषुलिंगोहोपिकार्यः ॥ यथा--आमंत्रितासिदेवेशिआगच्छ
त्वंभवानीशेविधिसंपूर्तिकारिकेसान्निध्यंकुरुपार्वतीत्यादिरीत्यालिंगपदानामूहः ॥ ६७ ॥

॥ ६८ ॥ कनिष्ठपवित्रारोपणेदेवंश्वेतंध्यायेत् ॥ मध्यमारोपणेरक्तंज्येष्ठारोपणेपीतमिति ॥ ६९ ॥ ७०॥७१ ॥ ताव

अधिवासंविधायेत्थंनिशिजागरणंचरेत्॥ देवस्यस्तुतिनामानिवदन्गायंश्चतद्गुणान् ॥६८॥प्रातर्नित्यार्चनंकृत्वामूलेनाष्टोत्तरंशतम् ॥ कनिष्ठाख्यंपवित्रंतद्गृहीत्वाचाभिमंत्रयेत्॥६९॥ घंटावादित्रवेदानांकारयन्घोषमुत्तमम् ॥ जयशब्दांश्चदेवस्यकंठमूलेनचार्पयेत् ॥ ७० ॥ एवमेवार्पयेदन्येपवित्रेमध्यमोत्तमे ॥ श्वेतंरक्तंक्रमात्पीतंध्यायेद्देवंतदर्पणे ॥७१॥ वनमालापवित्रंतुतावन्मूलेनमंत्रितम् ॥ अर्पयेदिष्टदेवस्यमुकुटेमूलमुच्चरन् ॥ ७२ ॥ ततःसुवर्णकुसुमैःपुष्पैशतमितैःसह॥मूलाभिमंत्रितंदेवमूर्ध्निमूलेनचार्पयेत् ॥७३ ॥ हृदान्यपटलस्थानिपवित्राण्यभिमंत्र्यच॥तत्तन्नाम्नानमोंतेनपरिवारान्सुरान्यजेत् ॥७४॥ एवंपवित्रैः संपूज्यधूपादीनिप्रकल्पयेत्॥ पावकेदवमावाह्यनित्यहोमंविधायच॥७५॥मूलेनाग्निपवित्रंतदर्पयेद्देवतांस्मरन्॥मूर्तौदेवंसमुद्धास्यवह्निंसंयोज्यचात्मनि॥७६॥

दष्टोत्तरशतम् ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१॥ सर्वथागुरुवंशाभावेकंचिच्छिष्टंसंपूज्यतस्यपवित्रंसमर्प्यदक्षिणांचदत्त्वाप

पुष्पांजलिंविधायेशेकर्मांतेविनिवेदयेत्॥मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंकृपानिधे॥७७॥पूजनंपूर्णता
मेतुपवित्रेणार्पितेनते ॥ इतिसंप्रार्थ्यदेवेशंयोजयेद्धृदयेनिजे॥ ७८ ॥गुर्वंतिकंततोगत्त्वादत्त्वापुष्पां
जलिंगुरौ॥स्वांगेषडंगंविन्यस्यगुरुदेहेपिविन्यसेत्॥ ७९॥पाद्यंदत्त्वातथैवार्घ्यंवस्त्रालंकारचंदनम्॥
पुष्पैःसंपूज्यमूलेनपवित्रंतद्गलेर्पयेत्॥८० ॥ स्वशक्त्यादक्षिणांदत्त्वादंडवत्प्रणमेद्गुरुम् ॥ अन्येभ्यः
शिष्टवृद्धेभ्यःपवित्राणिददीतच ॥ ८१ ॥ सर्वथैवगुरोःपूजाकर्तव्यामंत्रिणासदा॥अपूजितेगुरौसर्वापू
जाभवतिनिष्फला॥ ८२ ॥गुरोरभावेतत्पुत्रंतदभावेतदात्मजम् ॥ दौहित्रंतदभावेन्यंपूजयेद्गुरुगोत्र
जम्॥८३॥ततोधृत्वापवित्रंस्वंभोजयित्वाद्विजोत्तमान्॥भुंजीततदनुज्ञातोबंधुभिस्तनयैःसह॥८४।
यथाकथंचित्कुर्वीतपवित्राणिसुरार्चने॥विधेरुक्तस्यचाशक्त्यापूजासंपूर्त्तिहेतवे ॥ ८५ ॥

वित्रपूजापूर्णास्त्विवतितंद्धचनंप्रार्थयेत् ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४॥ ८५ ॥

यस्यामिति ॥ उक्ततिथौकरणासंभवेसर्वथाश्रावणेपवित्रपूजाचैत्रेदमनार्चाचनित्यत्वेनावश्यंकार्यैत्यर्थः ॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥ ८८ ॥ अन्येष्वप्युपेति ॥ उपरागश्चंद्रसूर्यग्रहणम् ॥ अर्धोदयलक्षणंतु–'अमार्कपातश्रवणयुक्ताचेत्पौषमाघ
योः ॥ अर्धोदयःसविज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैःसमः' इति ॥ सौम्यायनंमकरसंक्रांतिः ॥ आदिशब्दाद्युगादयोमन्वा

यस्यांकस्यांतिथौकुर्य्यात्तिथावुक्तेकृतंनचेत्॥सर्वथाश्रावणेचैवपवित्रंतुनिवेदयेत्॥ ८६ ॥ प्रत्यब्दं
यःपवित्रेणपूजांकुर्वीतदैवते॥ऐश्वर्य्यारोग्यसंयुक्तोनैकवर्षाणिजीवति ॥ ८७ ॥संपूर्णहायनंपूजादेव
तानांकृतातुया॥सर्वासंपूर्णतामेतिपवित्रदमनार्पणात्॥ ८८ ॥अन्येष्वप्युपरागार्द्धोदयसौम्यायना
दिषु॥कुर्य्यादलभ्ययोगेषुविशेषाद्देवतार्चनम् ॥ ८९ ॥ यथायथेष्टदेवेषुनृणांभक्तिःसमेधते ॥प्राप्य
तेतदयत्नेनमनोभीष्टंतथातथा॥ ९० ॥ शुचौतत्तदहेकुर्य्याद्देवप्रस्वापनोत्सवम्॥ऊर्जेतथैवदेवानामु
त्थापनविधिंसुधीः ॥ ९१ ॥

दयःश्रवणद्वादशीप्रमुखाग्राह्याः ॥ तत्रेष्टदेवमहोत्सवोमहापूजाचाविधेया ॥ ८९ ॥ तत्रहेतुमाह ॥ यथेति ॥ ९० ॥
शुच्चावाषाढेतत्तदहेचतुर्थ्यादौगणेशादीनाम् ॥ ऊर्जेकार्त्तिके ॥ ९१ ॥

माघकृष्णचतुर्दश्यांशिवरात्रौशिवपूजाप्रकारःशिवागमाद्बोध्यः ॥ नवरात्रेदुर्गार्चनविधिरपितदागमादेव शुक्लपक्षा

माघकृष्णचतुर्दश्यांविशेषाच्छिवपूजनम् ॥आश्विनाद्यनवाहेषुदुर्गापूज्यायथाविधि ॥९२॥ गोपालंपूजयेद्विद्वान्नभःकृष्णाष्टमीदिने ॥रामंचैत्रसितेपक्षेनवम्यामर्चयेत्सुधीः ॥ ९३ ॥ वैशाखाद्यचतुर्दश्यांनरसिंहप्रपूजयेत् ॥ यजेच्छुक्लचतुर्थ्यांतुगणेशंभाद्रमाघयोः ॥ ९४ ॥ महालक्ष्मींयजेद्विद्वान्भाद्रकृष्णाष्टमीदिने ॥ माघस्यशुक्लसप्तम्यांविशेषाद्दिननायकम् ॥ ९५ ॥ याकाचित्सप्तमीशुक्लारविवारयुतायदि ॥तस्यांदिनेशंसंपूज्यदद्यादर्घ्यंपुरोदितम् ॥९६॥ तत्तत्कल्पोदितानन्यान्देवताप्रीतिवर्द्धनान् ॥ विशेषनियमाञ्ज्ञात्वाभजेद्देवमनन्यधीः ॥ ९७ ॥

दिमासाभिप्रायेण एवमग्रेपि ॥ ग्रंथगौरवभयात्तन्नोच्यते ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

आषाढीति ॥ चातुर्मास्येऽवश्यंतत्तद्देशलभ्यंस्वेष्टाकाचिद्वस्तुवर्जयेत् ॥ 'योविनानियमंमर्त्योव्रतंवाजाप्यमेववा॥ चातुर्मास्यंनयेन्मूढोजीवन्नपिमृतोहिसः' इत्यादिनिंदाश्रवणात् ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधि

आषाढीकार्तिकीमध्येकिंचिन्नियममाचरेत्॥देवसंप्रीतयेविद्वान्जपपूजादितत्परः ॥९८॥ एवंयोभजतेविष्णुंरुद्रंदुर्गांगणाधिपम् ॥ भास्करंश्रद्धयानित्यंसकदाचिन्नसीदति ॥९९॥ सधर्ममाचरन्नित्यंदेवपूजापरायणः ॥ जितेंद्रियोखिलान्भोगान्प्राप्येहानंततांव्रजेत् ॥१००॥ इति श्रीमहीधरविरचितेश्रीमंत्रमहोदधौदमनपवित्रार्चननिरूपणंनामत्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३॥ साधकानांशीघ्रसिद्ध्यैमंत्रशुद्धिमथोब्रुवे ॥ साधकस्यतुनामादिवर्णमारभ्यशोधयेत् ॥१ ॥ मंत्राद्यक्षरपर्यंतंचक्रेसिद्धादिकेक्रमात् ॥ जन्मर्क्षोत्थंप्रसिद्धंवानामग्राह्यंविशोधने ॥ २॥

व्याख्यायां नौकायांदमनपवित्रार्चननिरूपणंनामत्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥ मंत्रशुद्धिं वक्तुमाह॥ साधकानामिति ॥ १ ॥ २ ॥

अकथहचक्रमाह ॥ ऊर्ध्वगाइति ॥ षोडशकोष्ठान्विधायतत्रैकत्र्येकादशनवद्विचतुर्द्वादशदशषडष्टषोडशचतुर्दशपंचसप्तपंचदशत्रयोदशेषुकोष्ठेषुक्रमादकारादिवर्णान्पुनःपुनर्विलिख्य कोष्ठचतुष्केसिद्धसाध्यादिविचिंत्यपुनश्चतुष्केसिद्धादिगणनंकार्यम् ॥ तत्रप्रथमचतुष्केयस्यांविदिशिनामार्णःद्वितीयादिचतुष्केषुताद्विदिशमारभ्यसिद्धादिगणयेत् ॥ एवंगणने ( १ ) सिद्धसिद्धः १ सिद्धसाध्यः २ सिद्धसुसिद्धः ३ सिद्धारिः ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ( २ ) साध्यसिद्धः ५ साध्यसाध्यः ६ साध्यसुसिद्धः ७ साध्यारिः ८ ॥

ऊर्द्धगाःपंचरेखाःस्युःपंचतिर्य्यग्गताःपुनः ॥ कोष्ठानितत्रजायंतेषोडशैवात्रसंलिखेत् ॥ ३ ॥भूराम
शिवनंदाक्षिवेदार्कदिग्रसाष्टभिः ॥ कलामनुशरैरद्रितिथिविश्वैर्मितेषुच ॥ ४ ॥ कोष्ठेषुमातृकावर्णा
स्तत्रनामादितःक्रमात् ॥ सिद्धःसाध्यःसुसिद्धोरिर्ज्ञेयोमन्वक्षरावधि॥५॥यस्मिंश्चतुष्केनामार्णस्त
त्स्यात्सिद्धचतुष्टयम् ॥ प्रादक्षिण्याद्द्वितीयं स्यात्साध्याख्यं तत्तृतीयकम् ॥ ६ ॥ सुसिद्धाख्यं
चतुर्थं तु सपत्नाख्यं स्मृतं बुधैः ॥ एककोष्ठे द्वयोर्वर्णः सिद्धसिद्धः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ तद्द्विती
येमंत्रवर्णेसिद्धसाध्यउदाहृतः ॥ तृतीये सिद्धसुसिद्धः सिद्धारिः स्याच्चतुर्थके ॥ ८ ॥
नामादियुक्चतुःकोष्ठान्मन्वर्णश्चेद्द्वितीयके ॥ चतुष्केतत्रपूर्वंतुयत्रनामाक्षरंस्थितम् ॥ ९॥ तत्रतत्को

॥१०॥(३)सुसिद्धसिद्धः९सुसिद्धसाध्यः१०सुसिद्धसुसिद्धः११सुसिद्धारिः१२(४)अरिसिद्धः १३ अरिसाध्यः१४अरिसुसिद्धः१५अर्यरिः१६ इतिषोडशभेदाभवंति ॥ तेषांफलमाह॥सिद्धसिद्धोयथोक्तेनेत्यादि ॥ यथोक्तेनकल्पोक्तेनजपादिनासिद्धोभवतीत्यर्थः॥११॥१२॥१३॥१४॥द्विगुणात्कल्पोक्तद्वैगुण्यात्तत्सुसिद्धःसाध्यसुसिद्धः॥ १५॥१६॥प्रकारांतरेणसिद्धादिशोधनमाह ॥ नाम्न इति ॥ १७ ॥

ष्ठमारभ्यगणयेत्पूर्ववत्क्रमात् ॥साध्यसिद्धःसाध्यसाध्यस्तत्सुसिद्धश्चतद्रिपुः ॥ १० ॥एवंज्ञेयस्तृतीयेचेच्चतुष्केमंत्रवर्णकः॥तदापूर्वोक्तयारीत्याक्रमाज्ज्ञेयाविचक्षणैः॥ ११॥सुसिद्धसिद्धस्तत्साध्यस्तत्सुसिद्धश्चतद्रिपुः।चतुर्थेतुचतुष्केस्यादरिसिद्धारिसाध्यकः॥ १२॥तत्सुसिद्धोर्य्यरिःपश्चादेवंमंत्रंविचारयेत् ॥ सिद्धसिद्धोयथोक्तेनद्विगुणात्सिद्धसाध्यकः॥ १३॥सिद्धसुसिद्धोर्द्धजपात्सिद्धारिर्हंतिबांधवान् ॥ साध्यसिद्धोद्विगुणितःसाध्यसाध्योनिरर्थकः ॥ १४ ॥द्विगुणाज्जपात्सुसिद्धःसाध्यारिर्हंतिगोत्रजान् ॥ सुसिद्धसिद्धोर्द्धजपात्तत्साध्योद्विगुणाज्जपात्॥ १५॥ तत्सुसिद्धग्रहादेवसुसिद्धारिःकुटुंबहा ॥ अरिसिद्धःसुतंहन्यादरिसाध्यस्तुकन्यकाम्॥ १६॥तत्सुसिद्धस्तुपत्नीघ्नस्तदरिःसाधकापहः ॥ नाम्नोमंत्रस्यवर्णांश्चलिखित्वाप्रतिवर्णकम् ॥ १७ ॥

॥१८॥ व्युत्क्रमात्सिद्धसुसिद्धानांबहुत्वेसाध्यारीणामल्पत्वेशुभमित्यर्थः॥ १९॥इदंमतंप्राज्ञसंमतंशिष्टसंमतम्॥२०॥
अकडमचक्रमाह ॥ द्वादशारइति ॥ षंढाऋॠऌॡइतितान् ॥ २१ ॥ २२॥जपहोमतः जपहोमाधिक्येन ॥ २३ ॥

सिद्धादिगणनाकार्य्यायावन्मंत्रसमापनम् ॥ नाम्नोयदिसमाप्तिःस्यात्पुनर्नामलिखेत्सुधीः॥ १८ ॥
एवंसंशोधितेषुस्युर्भूरिवैसाध्यवैरिणः ॥ अल्पाःसिद्धसुसिद्धाश्चेदशुभंव्युत्क्रमाच्छुभम् ॥१९॥ मत
मित्थंतुकेषांचित्तदपिप्राज्ञसंमतम् ॥अथवान्यप्रकारेणसिद्धादीनांविशोधनम् ॥ २० ॥ द्वादशारे
लिखेच्चक्रवर्णान्पूर्वोदितान्क्रमात् ॥ईशानांतमकाराद्यान्हांतान्षंढविवर्जितान् ॥ २१ ॥ तत्रनामार्ण
मारभ्यमंत्राद्यर्णावधिक्रमात् ॥ गणयेत्सिद्धसाध्यादिफलंतेषांविनिर्दिशेत् ॥२२ ॥ सिद्धःसिध्यति
कालेनसाध्यस्तुजपहोमतः ॥ सुसिद्धःप्राप्तिमात्रेणसाधकंभक्षयेदरिः ॥ २३ ॥ सिद्धोनवैकबाणेषु
साध्योरसदिशाक्षिषु ॥ सुसिद्धस्त्रिमुनीशेषुरिपूर्वेदाष्टभानुषु ॥ २४ ॥ अन्योपीहप्रकारोस्तिसिद्ध
साध्यादिशोधने ॥ चतुःकोष्ठेषुविलिखेदादिवर्णान्पुनःपुनः॥२५॥ नामार्णात्सिद्धसाध्यादिज्ञेयं
मन्वक्षरावधि ॥ चतुर्थोपिप्रकारोस्तिसिद्धादीनांविशोधने ॥ २६ ॥

स्पष्टार्थमाह ॥ सिद्धोनवैकादशबाणेष्विति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

प्रकारांतरमाह ॥ नाम्नइति ॥ नाममन्त्रयोर्वर्णानेकीकृत्यचतुर्भक्तेएकशेषेसिद्धः द्विशेषेसाध्यः त्रिशेषेसुसिद्धः
शून्येऽरिरितिफलंपूर्वोक्तम् ॥ २७ ॥ भशोधनंनक्षत्रशोधनम् ॥ तत्रनक्षत्रेषुवर्णविभागमाह ॥ नेत्रेति ॥२८॥ उडुषु

नाम्नोमंत्रस्यवर्णौघंचतुर्भिर्विभजेत्सुधीः॥एकादिशेषेसिद्धादिक्रमाज्ज्ञेयंविचक्षणैः॥२७॥ सिद्धा
दिशोधनंप्रोक्तमथवच्मिभशोधनम् ॥ नेत्रभूगुणवेदक्ष्माधरानयनभूभुजाः ॥२८॥ द्विचन्द्रभुजबाह्व
क्षिभूनेत्रत्रिधरागुणाः॥एकैकंभूभुजेद्व्यक्षिरामचंद्रानुडुष्वथ॥२९॥अश्विन्यादिषुविज्ञेयाआदिवर्णाः
क्रमाद्बुधैः ॥ क्षांताबिंदुविसर्गौतुपौष्णभागेऽव्यवस्थितौ॥३०॥जन्मसंपद्विपत्क्षेमप्रत्यरिःसाधको
वधः ॥ मैत्रंपरममैत्रंचगणनीयंस्वनामभात् ॥ ३१ ॥ विपद्वधःप्रत्यरिश्चत्याज्याअन्यदुडूत्तमम् ॥
अथर्णधनसंशुद्धिःकथ्यतेसिद्धिदायिनी ॥ ३२ ॥ सप्ततिर्य्यग्लिखेद्रेखाद्वादशैवोर्द्ध्वगाःपुनः ॥ एवं
कृतेतुजायंतेकोष्ठाःषट्षष्टिसंमिताः ॥ ३३ ॥

नक्षत्रेषु ॥ २९ ॥ पौष्णभागेरेवत्यंशे ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ऋणधनशोधनमाह सप्तेति ॥ तिर्यक्सप्तरेखाऊर्ध्वं
द्वादशकृत्वा ॥ ३३ ॥

आद्यपंक्तौचतुर्दशाद्यंकाः ॥ द्वितीयायाम् आईऊऋलृहीनाःस्वराएकादश ॥ तृतीयायांकादिटांताः ॥ चतुर्थ्यां ठादिफांताः ॥ पंचम्यांबादिहांताः ॥ षष्ठ्यांदशाद्यंकालेख्याः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कोष्ठेयावतीति ॥ यावतितमेकोष्ठवर्णस्तमंकमुपर्यंकेनगुणयेत् ॥ यथा–प्रथमकोष्ठस्थअकारश्चतुर्दशगुणितश्चतुर्दशैव ॥

आद्यपंक्तौलिखेदंकांस्तेकथ्यन्तेयथाक्रमम्॥मनुनक्षत्रनेत्रार्कतिथिषड्वेदवह्नयः॥ ३४ ॥ सायकावसवोनंदाःकोष्ठेषुक्रमतःस्थिताः॥द्वितीयपंक्तौसंलेख्याःपंचदीर्घोज्झिताःस्वराः ॥३५ ॥ तृतीयपंक्तौकाद्यर्णाष्टकारांताःशिवैर्मिताः॥ठादिफांताश्चतुर्थ्यांतुपंचम्यांबादिहांतिमाः ॥ ३६ ॥ षष्ठ्यांपंक्तौक्रमाल्लेख्याअंकाःकथ्यंतएवते॥दिक्चंद्रमुनिवेदाष्टगुणसप्तेषुसागराः ॥ ३७॥ रसाश्वरामसंख्याताएवमंकाउदीरिताः ॥ मंत्रवर्णान्पृथक्कुर्य्यात्स्वरव्यंजनरूपतः॥३८॥ कोष्ठेयावतिवर्णःस्याद्गुणयेत्तावदंककम्॥कोष्ठोपरिस्थेनांकेनसर्ववर्णेष्वयंविधिः ॥ ३९ ॥ दीर्घाक्षराणामंकास्तुज्ञेयालघ्वक्षरस्थिताः॥एकीकृत्याखिलानंकानष्टभिर्विभजेत्पुनः ॥ ४० ॥

द्वितीयकोष्ठस्थइकारःसप्तविंशत्यागुणितश्चतुःपंचाशत् ॥ एवंतृतीयकोष्ठस्थःउकारःसद्वाभ्यांगुणितःषट् ॥ एवमग्रेपि ॥ साधकनामवर्णास्तुदिगादिभिरेवंगुणनीयाः ॥ साध्यस्यांकानेकीकृत्याष्टभिर्भक्तेशेषःसाध्यराशिः ॥ एवं साधकांकान्गुणितानेकीकृत्याष्टभक्तेशेषःसाधकराशिः ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥ मंत्रराशिरधिकश्चेद्ग्राह्यः ॥४२ ॥ प्रकारांतरेणऋणधनशोधनमाह ॥ नामादीति ॥ धनिताऋणिताचपूर्ववत् ॥ अधिकश्शेषऋणी ऊनोधनीत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ प्रकारांतरमाह ॥ यद्वेति ॥ तादृशैःस्वरव्यंजनरूपे

शेषोंकोमंत्रराशिःस्यान्नामवर्णेष्वयंविधिः ॥ अधःपंक्तिस्थितैरंकैर्गुणनीयास्तुतेखिलाः ॥ ४१ ॥
अधमर्णोधिकोराशिरूनोराशिर्धनीस्मृतः॥मंत्रोयदाधमर्णःस्यात्तदाग्राह्योधनीनतु ॥ ४२ ॥ एवंध
नर्णसंप्रोक्तमन्यथाप्रोच्यतेपुनः ॥ नामाद्यक्षरमारभ्ययावन्मंत्रादिमाक्षरम्॥ ४३ ॥ गणयेन्मातृका
वर्णंक्रमेणगुणयेत्त्रिभिः॥ विभक्तेसप्तभिःशिष्टोनामराशिरुदीरितः ॥ ४४ ॥ एवंमंत्रार्णमारभ्ययाव
न्नामादिमाक्षरम्॥गणयित्वात्रिभिर्हत्वाविभजेत्सप्तभिःसुधीः ॥ ४५ ॥ मंत्रराशिःस्मृतःशिष्टःपूर्वव
द्धनितर्णता॥यद्वामंत्राक्षराणीहस्वरव्यंजनरूपतः ॥४६ ॥ पृथक्कृत्यद्विगुणयेद्योजयेत्साधकाक्षरैः॥
तादृशैरष्टभिर्भक्तैर्मंत्रराशिरुदाहृतः ॥४७॥ एवंनामार्णसंघोपिद्विगुणीकृत्ययोजितः॥मंत्रवर्णैरष्टभ
क्तोनामराशिःस्मृतोबुधैः ॥ ४८ ॥ऋणिताधनिताचात्रपूर्ववत्परिकीर्तिता॥उक्तान्यतममार्गेणशोध
नीयमृणंधनैः ॥ ४९ ॥

णपृथक्कृतैःसाधकनामाक्षरैर्योजयेत्॥४६॥४७॥४८॥ऋणिता धनिताचपूर्ववत् अधिकऋणीत्यादिप्रागुक्तरीत्या ४९॥

मंत्रस्यऋणित्वेहेतुमाह ॥ योमंत्रइति ॥ पूर्वजन्मन्युपासनसमयेपापसद्भावात्पापक्षयंकुर्वन्नान्यत्फलंददौततःपापक्ष
येकृतेफलदानकाले उपासितुरायुःक्षयो जातः समंत्रःफलादानाज्जन्मांतरेऋणीजातः ॥ सप्राप्तिमात्रेणेष्टफलदो

योमंत्रःपूर्वजनुषिसेवितोनाददात्फलम्॥पापात्पापक्षयेजातेफलावाप्तिरनेहसि ॥५० ॥ आयुःक्षया
द्गतोनाशंसाधकोस्यभवांतरे ॥ ऋणित्वात्प्राप्तिमात्रेणमंत्रोभीष्टंप्रयच्छति ॥ ५१ ॥ समांकौयद्युभौ
राशीतदासंसेवनात्फलम् ॥ धनीमंत्रस्तुसंप्राप्तःफलत्यधिकसेवया ॥ ५२ ॥ मंत्राणांशोधनेचैतत्प्र
कारांतरमुच्यते॥षट्कोणेविलिखेत्पूर्वकोणाद्येकैकवर्णकान् ॥५३ ॥ अकारादिहकारांतान्नपुंसकवि
वर्जितान् ॥ नामाद्यक्षरमारभ्यमंत्रार्णावधिशोधयेत् ॥ ५४॥प्रथमेसंपदांप्राप्तिर्द्वितीयेधनसंक्षयः ॥
तृतीयेधनसंप्राप्तिश्चतुर्थेबंधुविग्रहः ॥५५॥ पंचमेतुभवेदाधिःषष्ठेसर्वस्यसंक्षयः॥एवंसंशोधितंमंत्रंद
द्याच्छिष्यायमांत्रिकः ॥ ५६ ॥येषांमनूनांसिद्धादिशोधनंनास्तितान्ब्रुवे॥एकवर्णस्त्रिवर्णोवापंचा
र्णोरसवर्णकः ॥ ५७ ॥

भवतीत्यर्थः ॥ अनेहसिकाले ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ नपुंसकाऋॠऌॡवर्णाः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥
रसवर्णःषडर्णः ॥ ५७ ॥

रदनाक्षरोद्वात्रिंशदर्णः ॥ कूटोव्यंजनसमूहः ॥ ध्रुवःप्रणवः ॥५८॥ परा ह्रीं ॥५९॥ पक्षिनायकोगरुडमंत्रः ॥ ६० ॥

सप्तार्णोनववर्णश्चरुद्रार्णोरदनाक्षरः ॥ अष्टार्णोहंसमंत्रश्चकूटोवेदोदितोध्रुवः॥ ५८ ॥स्वप्नलब्धःस्त्रियाप्राप्तोमालामंत्रोनृकेसरी॥प्रासादोरविमंत्रश्चवाराहोमातृकापरा ॥ ५९ ॥ त्रिपुराकाममंत्रश्चाज्ञासिद्धःपक्षिनायकः॥बौद्धमंत्राजैनमत्रानैवसिद्धादिशोधनम् ॥ ६० ॥ एतद्भिन्नेषुमंत्रेषुशुद्धिरावश्यकीमता॥विद्यांमंत्रंस्तवंसूक्तमरिभूतंत्यजेद्ध्रुवम् ॥ ६१ ॥ अरिमंत्रोगृहीतश्चेदज्ञानवशतस्तदा ॥ तस्यत्यागःप्रकर्तव्यस्तत्प्रकारोधुनोच्यते ॥ ६२ ॥ सुदिनेस्थापयेत्कुंभंसर्वतोभद्रमंडले ॥ विलोमंसंजपन्मंत्रंपूरयेत्तंसुपाथसा ॥६३॥तत्रदेवंसमावाह्ययजेदावरणान्वितम् ॥ तदग्रेस्थंडिलंकृत्वाप्रतिष्ठाप्यानलंततः ॥ ६४ ॥ जुहुयान्मूलमंत्रेणविलोमेनशतंघृतैः॥दिक्पतिभ्योबलिंदद्यात्पायसान्नैर्घृतान्वितैः ॥ ६५ ॥ पुनःसंपूज्यदेवेशंप्रार्थयेन्मनुनामुना ॥ आनुकूल्यमनालोच्यमयातरलबुद्धिना ॥ ६६ ॥ यदुपात्तंपूजितंचप्रभोमंत्रस्वरूपकम् ॥ तेनमेमनसःक्षोभमशेषंविनिवर्तय ॥६७ ॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ अरिमंत्रत्यागप्रकारमाह॥ सुदिनइति ॥ सुपाथसाशोभनोदकेन ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥६६ ॥ ६७ ॥

॥ ६८ ॥ ६९ ॥ तंकुंभंजलैरापूर्यंतत्रकुंभेमंत्रयुक्तंतालपत्रंक्षिपेत् ॥ क्रमोत्क्रमगतयावर्णमालयारामायनमः ओंइ
त्यादिलांतंप्रजप्यततआरभ्यपुनरकारपर्यंतंगणयेत् ॥ एवंजप्तोरिमन्त्रोपिसिद्धिदः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

पापंप्रतिहतंचास्तुभूयाच्छ्रेयःसनातनम् ॥ तनोतुममकल्याणंपावनीभक्तिरस्तुते॥६८॥एवंसंप्रार्थ्य
देवेशंकर्पूरागरुचंदनैः ॥ विलोमंविलिखेन्मंत्रंताडपत्रेतदर्चयेत्॥६९॥प्रबध्यनिजमूर्ध्न्येतत्स्नायात्कुं
भस्थितैर्जलैः॥पुनःसंपूर्य्यतंतोयैस्तस्यास्येमंत्रपत्रकम् ॥७०॥ संपूज्यकुंभेसरितितडागेवाविनिक्षि
पेत् ॥ विप्रान्संभोज्यमुच्येतपीडयासौमनूत्थया॥ ७१॥अनेकधाशोधनेचेच्छुद्धोनप्राप्यतेमनुः ॥
मायांकामंश्रियंचादौदद्यात्तद्दोषमुक्तये ॥ ७२॥यद्वादुष्टोमनुर्जप्तः सिध्येत्प्रणवसंपुटः॥यद्वाक्रमोत्क्र
मगयाप्रजप्तोवर्णमालया ॥७३॥मंत्रेयस्यभवेद्भक्तिर्विशेषःसमनूत्तमः॥वैरिकोष्ठमनुप्राप्तःसिद्धिदस्त
स्यजायते॥ ७४॥ बीजमंत्रास्तथामंत्रामालामंत्रास्तथापरे॥त्रिधामंत्रगणाःप्रोक्ताबुधैरागमवेदिभिः
॥७५॥बीजमंत्रादशार्णांतास्ततोमंत्रानखावधि॥विंशत्यधिकवर्णायेमालामंत्रास्तुतेस्मृताः ॥७६॥

७४ ॥ त्रिविधान्मंत्रानाह ॥ बीजेति ॥ ७५ ॥ नखावाध ॥ विंशत्यणार्वाधि ॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ वर्गगाःतृतीयाः गजडदबाः ॥ कणौंउऊ ॥ ओलळाएतभूवर्णाः ॥ ८० ॥ नासयौ ऋॠऔ घझढधभवसएतेजलवर्णाः ॥ नेत्रेइति ॥इई खछठथफऐरक्षएतेआग्नेयाः ॥ ८१ ॥ वर्गाद्याइति ॥ अआएकचटतपय

बाल्येवयसिसिद्ध्यंतिबीजमंत्राउपासितुः॥मंत्रासिद्धायौवनेतुमालामंत्राश्चवार्द्धके॥७७उक्तान्यस्यामवस्थायामभीष्टप्राप्तयेसुधीः ॥ बीजमंत्रादिमन्त्राणां द्विगुणंजपमाचरेत्॥७८॥ स्वकुलान्यकुलाख्योथमंत्राणांभेदउच्यते ॥ प्रकृतिःपंचभूतात्माततोजातातुमातृका ॥७९ ॥ तस्माद्वर्णास्तुपंचाशत्पंचभूतमयायतः॥तृतीयावर्गगाःकणावोलळाःपार्थिवामताः॥८० ॥नासयौवर्गतुर्याश्चवसौवर्णाःस्मृताअपाम् ॥ नेत्रेद्वितीयावर्गाणामैरक्षापावकात्मकाः ॥८१॥ वर्गाद्यानंतझिटीशाअयषामारुतामताः॥वर्गांतिमाःकपोलौशोहोबिंदुश्चेतिनाभसाः ॥८२॥विसर्गस्तुप्रकृत्यात्मासर्वभूतमयोयतः॥प्राणेरितोविनिर्यातिकंठादिस्थानमस्पृशन् ॥ ८३ ॥

षाएतेवायवीयाः ॥ वर्गांतिमाइति ॥ ङञणनमलॡशहअंएतेनाभसाः ॥ ८२ ॥ विसर्गस्यपंचभूतमयत्वमाह ॥ विसर्गइति ॥ अन्येवर्णाःकंठादिस्थानानिस्पृशंतोनिर्यांतिविसर्गस्तुनतथेतिसर्वभूतमयत्वम् ॥ ८३ ॥

एषांस्वकुलान्यकुलत्वमाह ॥ पार्थिवेति ॥८४ ॥ ८५॥ ८६॥८७॥८८॥८९॥ फलमाह॥ स्वेति ॥ स्वकुलेऽभीप्सिता

पार्थिवादिकवर्णानांस्वकीयाःस्वकुलाभिधाः॥पार्थिवस्यचवर्णस्यमित्रंवारुणमक्षरम् ॥८४॥तैजसं
शत्रुभूतंस्यादुदासीनंतुमारुतम् ॥ जलोद्भवस्यवर्णस्यपार्थिवंमित्रमीरितम्॥८५॥सपत्नंवह्निसंभूत
मुदासीनंतुवायवम्॥तैजसस्याथवर्णस्यवायवंमित्रमुच्यते ॥ ८६॥ विद्वेषीवारुणोवर्णउदासीनस्तु
पार्थिवः ॥ पवनोत्थितवर्णस्यमित्रंवह्निसमुद्भवम् ॥ ८७ ॥ शत्रुःपार्थिववर्णःस्यादुदासीनस्तुपा
थजः ॥ चतुर्णांपार्थिवादीनामाकाशार्णःसखासदा ॥८८॥मनोःसाधकनाम्नोपियोवर्णावादिमौत
योः ॥ स्वकुलादिकभेदस्तुशोध्योमंत्रप्रदित्सुना॥८९॥ स्वकुलेभीप्सितासिद्धिःसिद्धिर्मित्रेपिकी
र्तिता ॥ अमित्रेमरणंरोगउदासीनेनकिञ्चन॥९०॥उदासीनममित्रंचमंत्रंदूरेणवर्जयेत् ॥ स्वकुलंमि
त्रभूतंचगृह्णीयादिष्टकामुकः॥९१॥नक्षत्रैक्येपिसप्रोक्तंस्वकुलंनाममंत्रयोः॥पुंस्त्रीनपुंसकाःप्रोक्तामन
वस्त्रिविधाबुधैः॥९२॥वषडंताःफडंताश्चपुमांसोमनवःस्मृताः॥वौषट्स्वाहांतगानार्य्योहुंनमोंतानपुंस
काः॥९३॥वश्योच्चाटनरोधेषुपुमांसःसिद्धिदायकाः ॥क्षुद्रकर्मरुजांनाशेस्त्रीमंत्राःशीघ्रसिद्धिदाः९४॥

सिद्धिरित्यर्थः॥९०॥९१॥पुनर्मंत्रत्रैविध्यमाह ॥ पुंस्त्रीति॥९२॥९३॥ तेषांविनियोगमाह ॥ वश्योच्चाटनेति॥९४॥

॥ ९५॥ ९६ ॥ छिन्नत्वादीति छिन्नोरुद्धःशक्तिहीनइत्यादयः ॥ पंचाशद्दोषास्तल्लक्षणानिचशारदातिलकेद्वितीय पटलेउक्तानि ग्रंथगौरवभयान्नलिख्यंते ॥ सप्तकोटिमितामंत्राःसंति ॥ तेसर्वेपितद्दोषाक्रांताएव ।९७॥ जननाख्यंसंस्कारमाह ॥ भूर्जपत्रेरोचनाकुंकुमचंदनैरात्माभिमुखंत्रिकोणंकृत्वात्रिभ्योपिकोणेभ्योमध्येकृताभिःषट्षड्रे

अभिचारेस्मृताःक्लीबाएवंतेमनवस्त्रिधा ॥ नक्षत्रशोधनेजन्मनक्षत्रमितरत्रतु ॥९५ ॥ शोधनेमंत्रिभि
र्ग्राह्यंप्रसिद्धंजन्मनामता ॥ दत्तःसंशोधितोमंत्रोभवेच्छिष्येष्टसिद्धये ॥९६ ॥ छिन्नत्वादिकदोषाये
पंचाशन्मंत्रसंस्थिताः ॥ तैर्दोषैःसकलाख्यातामनवःसप्तकोटयः॥९७॥अतस्तद्दोषशांत्यर्थंसंस्कार
दशकंचरेत् ॥ भूर्जपत्रेलिखेत्सम्यक्त्रिकोणंरोचनादिभिः॥९८ ॥ वारुणंकोणमारभ्यसप्तधाविभजे
त्समम् ॥ एवमीशाग्निकोणाभ्यांजायंतेतत्रयोनयः ॥ ९९ ॥ नववेदमितास्तत्रविलिखेन्मातृकांक्र
मात् ॥ अकारादिहकारांतामीशादिवरुणावधि ॥ १००॥ देवींतत्रसमावाह्यपूजयेच्चंदनादिभिः ॥
ततःसमुद्धरेन्मंत्रजननंतदुदीरितम् ॥ १०१ ॥

खाभिः समाभिर्मध्येनववेदमिता एकोनपंचाशत्त्रिकोणाःकोष्ठाजायंते ॥ तत्रेशानादिपश्चिमकोणांतमन्तमातृकां लिखित्वाऽऽवाह्यसंपूज्यततएकैकमंत्रार्णमुद्धरेत् ॥ ततःसंमार्ज्यपत्रांतरेलिखेदित्यर्थः ॥ एतज्जननम् ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥

दीपनमाह ॥ जपइति ॥ हंसमंत्रेणपुटितस्यमंत्रस्यसहस्रंजपो–दीपनम् ॥ हंसःरामायनमःसोहंइति॥बोधनमाह ॥ नभइति ॥ नभोहः वह्नीरः इंदुर्बिंदुस्तैर्युक्तोऽर्घीशः ॥ तेनह्रूं ॥ एतत्संपुटितस्यमनोःपंचसहस्रजपो–बोधनम् ॥ ह्रूंरामायनमःह्रूंइात ॥ फट्रामायनमःफडितिसहस्रजपस्तु–ताडनत् ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ अभिषेकमाह ॥ वागि

जपोहंसपुटस्यास्यसहस्रंदीपनंस्मृतम् ॥ नभोवह्नींदुयुक्तार्घिसंपुटस्यजपोमनोः ॥ १०२ ॥ सहस्र
पंचकमितोबोधनंतत्स्मृतंबुधैः ॥ सहस्रंप्रजपेदस्त्रपुटितंताडनंहितत् ॥ १०३ ॥ वाग्घंसतारैर्जप्तेनसह
स्रंपाथसामनुम् ॥ अभिषिंचेतवागाद्यैरभिषेकोयमीरितः ॥ १०४ ॥ हरिर्वह्न्यन्वितस्तारीवषडंतो
ध्रुवादिकः ॥ सहस्रंतत्पुटंजप्याद्विमलीकरणेमनुः ॥ १०५ ॥

ति ॥ ऐंहंसःॐइतिमंत्रेणसहस्राभिमांत्रितैर्जलैस्तेनैवमंत्रेणताडपत्रोपारिलिखितमंत्रेऽभिषेचनम्–अभिषेकः ॥ १०४ ॥ विमलीकरणमाह ॥ हरिरिति ॥ हरिस्तः वह्न्यान्वितोरयुतः तारीप्रणवयुतः–त्रौं ॥ ॐत्रौंवषट्रामायनमःवषट्त्रौं ॐइतिसहस्रजपो–विमलीकरणम् ॥ १०५ ॥

जीवनमाह ॥ स्वधेति ॥ स्वधावषट्रामायनमःवषट्स्वधेति सहस्रजपो–जीवनम् ॥ तर्पणमाह ॥ क्षीरेति॥दुग्धघृतोदकैस्तेनैवमंत्रेणतास्मिन्नेवशततंतर्पयेदिति–तर्पणम् ॥ १०६ ॥ गोपनमाह ॥ जपेदिति ॥ ह्रींपुटस्यसहस्रंजपो–गोपनम् ॥ आप्यायनमाह ॥ बालेति ॥ बालायास्तार्तीयंसौःगगनंहः तदाद्येन ॥ तेनहसौःइतिबीजेनसंपुटस्यसह

स्वधावषट्पुटंजप्यात्सहस्रंजीवनेमनुम् ॥ क्षीराज्ययुतपाथोभिस्तर्पणेतर्पयेन्मनुम् ॥ १०६॥ जपे
न्मायापुटंमंत्रंसहस्रंगोपनंहितत्॥बालातार्तीयबीजेनगगनाद्येनसंपुटम् ॥ १०७ ॥ सहस्रप्रजपेन्मं
त्रमेतदाप्यायनंमतम्॥संस्कारदशकंप्रोक्तंमनूनांदोषनाशकम् ॥ १०८ ॥सिद्धिप्रदाकलियुगेयेमन्त्रा
स्तान्वदाम्यतः॥त्र्यर्णएकाक्षरोनुष्टुप्त्रिविधोनरकेसरी ॥ १०९ ॥

स्रंजपः–आप्यायनम् ॥ एकवर्णेनसंपुटत्वम्–आदावंतेचोच्चारणमेव ॥ एकस्यविलोमत्वाशक्तेः ॥ १०७ ॥ १०८॥ सिद्धमंत्रानाह ॥ त्र्यर्णइति ॥ एकवर्णादिस्त्रिविधोनरसिंहः १०९ ॥

एकार्णोद्विविधोहयग्रीवः ॥ चिंतामणिःक्ष्म्न्यौंइति ॥ ११० ॥ १११ ॥११२ ॥ विप्रक्षत्रियविड्भ्योदेयान्मंत्रानाह ॥ अघोरेति ॥ उमामाहेश्वरः ॐह्रींह्रौंनमःशिवायेत्यादि ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ मंत्रराजोनरसिंहः ॥ ११५ ॥

एकाक्षरोर्ज्जुनोनुष्टुब्द्विविधस्तुरगाननः॥चिन्तामणिःक्षेत्रपालोभैरवोयक्षनायकः॥ ११० ॥गोपालो
गजवक्त्रश्चचेटकायक्षिणीतथा॥मातंगीसुंदरीश्यामाताराकर्णपिशाचिनी ॥ १११ ॥ शबर्य्येकजटा
वामाकालीनीलसरस्वती॥ त्रिपुराकालरात्रिश्चकलाविष्टप्रदाइमे ॥ ११२ ॥ अघोरादक्षिणामूर्त्तिरु
मामाहेश्वरोमनुः॥हयग्रीवोवराहश्चलक्ष्मीनारायणस्तथा ॥ ११३ ॥ प्रणवाद्याश्चतुर्वर्णावह्नेमंत्रास्त
थारवेः॥प्रणवाद्योगणपतिर्हरिद्रागणनायकः ॥ ११४ ॥ सौरोष्टाक्षरमंत्रश्चतथारामषडक्षरः ॥ मंत्र
राजोध्रुवादिश्चप्रणवोवैदिकोमनुः ॥ ११५ ॥ वर्णत्रयायदातव्याएतेशूद्रायनोबुधैः ॥ सुदर्शनंपाशुप
तमाग्नेयास्त्रंनृकेसरी ॥ ११६ ॥ वर्णद्वयायदातव्यानान्यवर्णेकदाचन ॥ छिन्नमस्ताचमातंगीत्रिपु
राकालिकाशिवः ॥ ११७ ॥ लघुश्यामाकालरात्रिर्गोपालोजानकीपतिः॥उग्रताराभैरवश्चदेयावर्ण
चतुष्टये ॥ ११८ ॥

विप्रक्षत्रदेयानाह ॥ सुदर्शनमिति ॥ ११६ ॥ वर्णचतुष्टयदेयान्मंत्रानाह ॥ छिन्नमस्तेति ॥ ११७ ॥ ११८ ॥

॥ ११९ ॥ बीजेषुविशेषमाह ॥ मायामिति ॥ मायाकामश्रीवाग्बीजानिमुखजन्मनेविप्राय ॥ १२० ॥ कामश्री
वाचोबाहुजेभ्यः क्षत्रियेभ्यः ॥ श्रीवाचौऊरुजेभ्योविड्भ्यः ॥ वाक्शूद्राय ॥ अन्येभ्यःप्रतिलोमानुलोमजेभ्योव
र्मादयः ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ हयमारैःकरवीरैः ॥ १२३ ॥ जातिभिर्जातिपुष्पैर्होमेनगिरोवाचःसिद्धिः ॥ १२४ ॥

मृगीदृशांविशेषेणमंत्राएतेसुसिद्धिदाः॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्रानार्य्योधिकारिणः ॥ ११९ ॥
श्रद्धावंतोदेवगुरुद्विजपूजासुसर्वथा॥मायांकामंश्रियंवाचंप्रदद्यान्मुखजन्मने ॥१२०॥ मायामृतेबा
हुजेभ्यऊरुजेभ्यःश्रियंगिरम्॥वाणीबीजंतुशूद्रेभ्योऽन्येभ्योवर्मवषणनमः॥ १२१ ॥ सर्वसाधारणम
थहोमद्रव्यमिहोच्यते॥फलैर्हुतैःसुखावाप्तिःपालाशैरिष्टसिद्धये ॥ १२२ ॥ हयमारैःस्त्रियोवश्यागुडू
च्यारोगसंक्षयः॥दूर्वयाबुद्धिवृद्धिःस्याद्गुडेनजनवश्यता ॥ १२३॥ बिल्वपत्रैर्घृतःपद्मैःपाटलैश्चंपकैः
श्रियः॥सिद्धार्थैर्मल्लिकाभिश्चकीर्तयेज्जातिभिर्गिरः ॥ १२४ ॥ व्रीहिभिश्चयवैःप्लक्षोदुंबराश्वत्थजैध
सा॥तिलैस्त्रिमधुरैरिष्टाःसंपदःस्युर्नृणांहुतैः ॥ १२५ ॥ किंशुकैःकासमर्दैश्चकृतमालैश्चपाटलैः ॥
विप्रादयःक्रमाद्वश्याःसौभाग्यंगंधवस्तुभिः ॥ १२६ ॥

प्लक्षादिजातेनएधसासमिद्भिः ॥ १२५ ॥ किंशुकादिभिर्हुतैःक्रमाद्विप्रादयोवश्याः ॥ कृतमालोराजवृक्षः ॥ गंधवस्तुभिःकर्पूरादिभिः ॥ १२६ ॥

कलापैर्मयूरपिच्छैस्तेषामरीणांभयोत्पत्तिः ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ जन्मांतरोपार्जितपापबाहुल्यादेकपुरश्चरणेकृतेयदीष्टसिद्धिर्नभवेत्तर्हिपुनःपुरश्चरणंकुर्यात् ॥ १२९ ॥ संक्षेपपुरश्चरणप्रकारमाह ॥ यद्वेति ॥ समुद्रगामिन्यांगङ्गादिकायाम् ॥ विप्रान्संभोज्यहोमसमानसंख्यानेवेत्यर्थः॥तद्दशांशतइत्युभयत्रापिसंबंधात् ॥ तद्दशांशतोजपदशांशेनच

कोद्रवैर्व्याधयोरीणामुन्मत्तत्वंबिभीतकैः ॥कलापैःसाध्वसोत्पत्तिर्माषैस्तेषांतुमूकता ॥ १२७ ॥ समिद्भिःशाल्मलैर्नाशोरिपूणामचिराद्भवेत् ॥ किंभूरिणाददातीष्टंदेवतासमुपासिता ॥ १२८॥ पुरश्चरणएकस्मिन्कृतेजन्मांतराघतः ॥ मंत्रोयदिनसिद्धःस्यात्तदातत्पुनराचरेत् ॥ १२९ ॥ यद्वासमुद्रगामिन्यांनद्यांसिंदुरविग्रहे ॥ स्पर्शान्मोक्षांतमाजप्यजुहुयात्तद्दशांशतः ॥१३० ॥ विप्रान्संभोज्यनानान्नैर्मंत्राणांसिद्धिमाप्नुयात् ॥शश्वज्जपपरस्यापिसिध्यंतिमनवोचिरात् ॥१३१ ॥ इतिमंत्रमहोदधौमंत्रशोधनंनामचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

॥ कर्माणिषडथोवक्ष्येसिद्धिदानिप्रयोगतः ॥ शांतिर्वश्यंस्तंभनंचद्वेषमुच्चाटमारणे ॥ १ ॥

जुहुयात् ॥ विप्रान्संभोज्यचसिद्धिमवाप्नुयादितिसम्बन्धः ॥ १३० ॥ १३१ ॥ इति श्रीमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांमहीधरनिर्मितायांमंत्रशोधनंनामचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

॥ षट्कर्माणिवक्तुमुपक्रमते॥ कर्माणीति ॥ तान्याह ॥ शांतिरिति ॥ १ ॥

लक्षणमाह ॥ शांतीरोगादिनाशनमिति ॥ देवताद्येकोनविंशतिपदार्थान् ॥ प्रतिकर्मभिन्नान् यथास्वंज्ञात्वाषट्कर्माणिकुर्यादित्याह ॥ देवतादेवतावर्णाइत्यादिना ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ उद्देशक्रमेणादौदेवता आह ॥ रतिरिति ॥ शांत्यादिकर्मारंभेक्रमाद्रत्यादिपूजा ॥ ॥देवतावर्णानाह ॥ सितेति ॥ रतिःसिता वाणीअरुणेत्यादि०॥

उक्तानीमानिकर्माणिशांतीरोगादिनाशनम्।वश्यंवचनकारित्वंस्तम्भोवृत्तिनिरोधनम् ॥२॥ द्वेषोऽ
प्रीतिःप्रीतिमतोरुच्चाटःस्थानतश्च्युतिः ॥ मारणंप्राणहरणमितिषट्कर्मलक्षणम् ॥ ३ ॥ देवतादेवता
वर्णाऋतुदिग्दिवसासनम् ॥ विन्यासामंडलंमुद्राक्षरंभूतोदयःसमित् ॥४॥ मालाग्निर्लेखनंद्रव्यंकुंड
स्रुक्स्रुवलेखनीः॥षट्कर्माणिप्रयुंजीतज्ञात्वैतानियथायथम् ॥ ५ ॥रतिर्वाणीरमाज्येष्ठादुर्गाकालीच
देवता ॥ सितारुणहरिद्राभमिश्रश्यामलधूसराः ॥ ६ ॥ प्रपूजयेतकर्मादौस्ववर्णैःकुसुमैःक्रमात् ॥
ऋतुषट्कंवसंताद्यमहोरात्रंभवेत्क्रमात् ॥ ७ ॥ एकैकस्यऋतोर्मानंघटिकादशकंमतम्॥हेमन्तंचव
संताख्यंशिशिरंग्रीष्मतोयदौ ॥ ८ ॥ शरदंकर्मणांषट्केयोजयेत्क्रमतःसुधीः॥शिवसोमेंद्रनिर्ऋति
पवनाग्निदिशःक्रमात् ॥ ९ ॥

॥ ६ ॥ स्ववर्णैःसितादिवर्णैः ॥ ऋतूनाह ॥ ऋतुषट्कामीति ॥ शांत्यादौवसंतादीन्युञ्जीत ॥ प्रत्यहंसूर्योदयान्नाडीदशकंवसंतः तदग्रिमंनाडीदशकंशिशिरइत्यादि० ॥ ७ ॥ ८ ॥ दिशआह ॥ शिवेति ॥ शिवादिगैशानी ॥९॥

दिवसानाह ॥ शुक्लपक्षेइति ॥ १०॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ तदंतगाशुक्लप्रतिपत् ॥ १४ ॥ आसनान्याह ॥पद्ममिति ॥ पद्मस्वस्तिकेउक्ते ॥ विकटलक्षणंयथा–‘जानुजंघांतरालेतुभुजयुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ विकटासनमेतत्स्यात्’ इति ॥ कुक्कुटासनंयथा–‘उपविश्योत्कटासने ॥ कृत्वोत्कटासनंपूर्वसमपादद्वयंततः ॥ अंतर्जानुकरद्वंद्वंकुक्कुटास

तत्तत्कर्माणिकुर्वीतजपंस्तत्तद्दिशामुखः॥शुक्लपक्षेद्वितीयाचसप्तमीपंचमीतथा ॥ १० ॥ तृतीयाबुध
जीवाभ्यांयुताशांतिविधौमता॥चतुर्थीनवमीषष्ठीत्रयोदशीतिथिस्तथा ॥ ११ ॥ जीवसोमयुताश
स्तावशीकरणकर्मणि॥ एकादशीचदशमीनवमीचाष्टमीपुनः॥ १२॥ शनैश्चरसितोपेताप्रोक्ताविद्वे
षकर्मणि॥कृष्णेचतुर्दश्यष्टम्यौभानुसूनुयुतेयदि ॥ १३ ॥उच्चाटनाख्यंकर्मात्रकर्तव्यंफलसिद्धये ॥
भूताष्टम्यौकृष्णगतेअमावास्यातदंतगा ॥ १४ ॥ भानुमंदकुजोपेताःस्तंभमारणयोःशुभाः॥ पद्मस्व
स्तिकविकटेकुक्कुटंवज्रभद्रके ॥ १५ ॥

नमीरितम्’इति ॥ ‘ऊर्वोःपादौक्रमान्यस्येज्जान्वोःप्रत्यङ्मुखांगुली ॥ करौनिदध्यादाख्यातं वज्रासनमनुत्तमम्’इति‘सीवन्याःपार्श्वयोर्न्यस्येद्गुल्फयुग्मंसुनिश्चलम्॥ वृषणाधःपादपार्ष्णीपाणिभ्यांपरिबंधयेत्॥भद्रासनंसमुद्दिष्टंयोगिभिःपूजितंपरम्’ इतिचान्येबोध्ये ॥ १५ ॥

शारीरमासनमुक्त्वोपवेशार्थमासनमाह ॥ गोखड्गेति ॥ फेरुःसृगालः ॥ गवादीनांकृत्तौचर्मण्युपविश्यशांत्यादि विधेयम् ॥ १६ ॥ १७ ॥ विन्यासानाह ॥ ग्रंथनमिति ॥ १८ ॥ ग्रथनलक्षणमाह ॥ एकइति ॥ १९ ॥ विदर्भलक्षणमाह ॥ आदाविति ॥ ग्रंथनविदर्भयोर्मंत्रनामवर्णलेखनेऽन्यतरसमाप्तौपुनर्लेखनम् ॥ २० ॥ संपुटलक्षणमाह॥

शांत्यादिषुप्रकुर्वीतक्रमादासनमुत्तमम्॥गोखड्गगजफेरूणांमेषीमहिषयोस्तथा॥१६॥ कृत्तौनिवेश्य कुर्वीतजपंशांत्यादिकर्मणि॥आसनान्येवसंकीर्त्यविन्यासःप्रोच्यतेधुना॥ १७॥ग्रंथनंचविदर्भाख्य संपुटोरोधनंतथा॥योगःपल्लवएतेषड्विन्यासाःकर्मसुस्मृताः॥ १८ ॥प्रत्येकमेषांषण्णांतुलक्षणंप्रणिगद्यते॥एकोमंत्रस्यवर्णःस्यात्ततोनामाक्षरंपुनः ॥१९॥ मंत्रार्णोनामवर्णश्चेत्येवंग्रंथनमीरितम् ॥आदौमंत्राक्षरद्वंद्वमेकंनामाक्षरंततः ॥ २०॥ एवंपुनःपुनःप्रोक्तोविदर्भोमंत्रवित्तमैः॥मंत्रमादौसमुच्चार्य्य ततोनामाखिलंपठेत्॥२१॥अंतेव्युत्क्रमतोमंत्रमेषसंपुटईरितः॥ आदिमध्यावसानेषुनाम्नोमंत्रस्तुरोधनम्॥२२॥नामांतेतुमनुर्योगोमंत्रांतेनामपल्लवः॥ अर्द्धचंद्रनिभंपार्श्वद्वयेपद्मद्वयांकितम् ॥ २३ ॥

मंत्रमिति ॥ २१ ॥ रोधनमाह ॥ आदीति ॥ २२ ॥ योगमाह ॥ नामान्तइति ॥ पल्लवमाह ॥ मंत्रांतइति ॥ मंडलमाह ॥ अर्द्धचंद्रेति ॥ २३ ॥

॥२४॥तद्वृत्तंबिंदुषट्कांकितंवायुमंडलम् ॥ मुद्राआह ॥ सरोरुहमिति ॥ सरोरुहंपद्ममुद्रा ॥ सायथा–'करौद्वौसंमुखौकृत्वासंहताबुन्नतौपुनः ॥ अंगुलीःप्रसृतामध्येंगुष्ठौपद्मस्यमुद्रिका'इति ॥ पाशमुद्रायथा–'तर्जनीमध्यमेवामेऊर्ध्वमुख्यौविधायच ॥ दक्षिणे द्वेअधोमुख्यौसंमुख्यौचपरस्परम् ॥ पाशमुद्राभवेदेषामिथःसंपीडनेतयोः'इति॥गदामुद्रायथा–'अन्योन्याभिमुखौकृत्वाहस्तौतुग्रथिताबुभौ ॥ अंगुष्ठौमध्यमेतद्वत्संयुक्तेसुप्रसारिते ॥ गदामुद्रेयमुदिता

जलस्यमंडलप्रोक्तंप्रशस्तंशांतिकर्मणि ॥ त्रिकोणंस्वस्तिकोपेतंवश्येवह्नेस्तुमंडलम् ॥२४॥ चतुरस्रं
वज्रयुक्तंस्तंभेभूमेस्तुमंडलम् ॥ वृत्तंदिवस्तद्विद्वेषेबिंदुषट्कांकितंतुतत्॥२५॥वायुमंडलमुच्चाटेमारणेवह्निमंडलम् ॥ सरोरुहंपाशगदेमुसलंकुलिशंत्वसिः॥२६॥

दर्शिताविघ्नहारिणी'इति ॥मुसलमुद्रोक्ता॥ कुलिशंवज्रमुद्रा ॥ सायथा–'कनिष्ठांगुष्ठयुङ्मुद्रात्रिकोणात्वशनेर्मता'इति ॥ अशनेर्वज्रस्यकनिष्ठांगुष्ठयोगादन्यासांप्रसारणात्रिकोणेत्यर्थः ॥ असिःखड्गमुद्रा ॥ सायथा–'ऊर्ध्वस्य वामहस्तस्यतर्जन्याद्यंगुलित्रयम् ॥ प्रसार्ययोजयेदग्येमिथोंगुष्ठकनिष्ठिके ॥ खड्गमुद्रेयमुदितासर्वशत्रुनिकृंतनी' इति ॥ २५ ॥ २६ ॥

होममुद्राआह ॥ मृगीति ॥ २७ ॥ तासांलक्षणमाह ॥ मध्यमेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ वर्णानाह ॥ चद्रात ॥ शांतौ चंद्रवर्णायंत्रेबीजत्वेनलेख्याः ॥ वशीकरणादौजलादिवर्णः ॥ ३० ॥ चंद्रवर्णानाह ॥ ॥ स्वराइति ॥ षोडशस्वराः सठावेतेऽष्टादशचंद्रवर्णाः सन्ति ॥ तथापिवश्यादौपंचभूतवर्णास्तुप्रातरंगेस्वकुलान्यकुलभेदउक्ताः ॥ तत्रयद्यपिचद्रवर्णाअपिसंति ॥ तथापिवश्यादौतोयादिवर्णलेखनेचंद्रवर्णरहितानामेवजलादिवर्णानांलेखनम् ॥ ३१ ॥ केषांचिन्मतेसवलहयराःक्रमाच्चंद्रांबुभूनभोनिलानलवर्णाः ॥ ३२ ॥

षण्मुद्राःकर्मषट्केस्युरथहोमेनिगद्यते । मृगीहंसीसूकरीतिहोमेमुद्रात्रयंमतम्॥ २७॥ मध्यमानामिकांगुष्ठयोगेमुद्रामृगीमता ॥ हंसीकनिष्ठाहीनानांसर्वासांयोजनेमता ॥२८॥सूकरीकरसंकोचेमुद्रालक्षणमीरितम् ॥ शांतोवश्येमृगीहंसीस्तंभनादिषुसूकरी॥२९॥चंद्रतोयधराकाशपवनानलवर्णकाः॥ षट्सुकर्मसुयंत्रस्यबीजान्युक्तानिमंत्रिभिः॥३०॥ स्वराःसठौचंद्रवर्णाभूतवर्णाउदीरिताः॥चन्द्रार्णहीनास्तेग्राह्यावशीकृत्यादिकर्मणि ॥ ३१॥केचित्सवलहान्यंरमाहुश्चंद्रादिवर्णकान्॥शांत्यादिकर्मसुज्ञेयाजातयःषडमूःक्रमात् ॥ ३२ ॥

जातिरूपान्वर्णानाह ॥ नमइति ॥ भूतोदयमाह ॥ नासेति ॥ नासाविवरयोरधस्तात्प्राणगतोजलोदयः ॥ नासामध्यदण्डाश्रयेणप्राणगमनेधरोदयः ॥ सस्तम्भनेज्ञेयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ नासाविवरमध्येप्राणगतौव्योमोदयः॥उपरिप्राणगतौवह्न्युदयः ॥ ३५ ॥ तिर्यक्प्राणगतौवायूदयः ॥ ३६ ॥ समिधआह ॥ दूर्वायाइति ॥ दाडिमेति ॥

नमःस्वाहावषड्वौषट्हुंफट्पषणमंत्रवित्तमैः ॥ नासापुटद्वयाधस्ताद्यदाप्राणगतिर्भवेत् ॥३३ ॥ तोयो
दयस्तथाज्ञेयःशांतिकर्मणिसिद्धिदः ॥ नासादंडाश्रितगतौप्राणेस्तंभेधरोदयः ॥३४॥ पुटमध्यगतौ
तस्मिन्द्वेषेव्योमोदयःशुभः ॥ पुटोपरिष्टाद्गमनेप्राणेस्यात्पावकोदयः ॥३५॥ तदाकर्मद्वयेसिद्धिर्मा
रणेचवशीकृतौ॥ प्राणेतिर्य्यग्गतौज्ञेयउच्चाटेमारुतोदयः ॥३६॥दूर्वायाःसमिधःशांतौगोघृतेनसम
न्विताः ॥ दाडिमप्रसुवोहोमेवश्येजाघृतसंयुताः॥३७॥मेषीघृताक्ताःसमिधःस्तंभेराजतरूद्भवाः ॥
धत्तूरसमिधोद्वेषेअतसीतैलसंयुताः ॥ ३८ ॥ चूतजाःकटुतैलाक्ताउच्चाटनविधौमताः ॥कटुतैलयुताः
शस्तामारणेखदिरोद्भवाः ॥ ३९ ॥

वश्यार्थंहोमेअजाघृताक्तादाडिमसमिधः ॥ ३७ ॥ स्तंभनेमेषीघृताक्ताराजवृक्षसमिधः ॥३८॥ उच्चाटेसर्षपतैलाक्ताआम्रसमिधः ॥ ३९ ॥

मालामाह ॥ शंखजेति ॥ स्तंभनेनिंबफलजा ॥ अरिष्टःफेनिलस्तत्फलजावामालाविधेया ॥ उच्चाटने वाहरदो तथाअश्वदंतजा ॥ ४० ॥ मालायांगणनाप्रकारमाह ॥ मध्यमायामिति ॥ ज्येष्ठेनांगुष्ठेनावर्तयेत भ्रामयेत् ॥४१॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ मालामणिसंख्यामाह ॥ अष्टोत्तरशतमिति ॥ तदर्धंचतुष्पंचाशत् ॥ तदर्धंकंसप्तविंशतिः ॥ एषा

शंखजापद्मबीजोत्थानिंबारिष्टफलोद्भवा ॥ प्रेतदन्तभवावाहरदोत्थाखरदंतजा॥ ४० ॥ जपमालाः क्रमाज्ज्ञेयाः शांतिमुख्येषुकर्मसु ॥ मध्यमायांस्थितांमालांज्येष्ठेनावर्तयेत्सुधीः ॥४१॥शान्तौवश्ये तथापुष्टौभोगमोक्षार्थकेजपे॥ अनामांगुष्ठयोगेनस्तंभनादौजपेत्सुधीः ॥४२ ॥ तर्ज्जन्यंगुष्ठयोगेन द्वेषोच्चाटनयोःपुनः ॥ कनिष्ठांगुष्ठसंयोगान्मारणेप्रजपेत्सुधीः॥४३ ॥ अष्टोत्तरशतंसंख्यातदर्धंचतदर्धकम् ॥ मणीनांशुभकार्य्येस्यात्तिथिसंख्याभिचारके ॥ ४४ ॥ शान्तिर्वश्यंलौकिकाग्नौस्तंभनंवटजेनले॥ द्वेषःकलितरूत्पन्नेशेषेपितृवनस्थिते ॥ ४५ ॥

त्रिविधामालाशुभेकार्या ॥ अभिचारेस्तंभनादौपंचदशमणियुक्तामाला ॥ ४४ ॥ अग्निमाह ॥ शांतिरिति ॥ वटजेवटकाष्ठान्मथनोत्पादिते ॥ कलितरूद्भवेबिभीतकजाते ॥ शेषेउच्चाटनमारणकर्मणिश्मशानवह्नौहोमः ॥ ४५ ॥

वह्निप्रसंगात्काष्ठान्यप्याह ॥ शुभइति ॥ शुभेशांतिपुष्ट्यादौकर्मणिबिल्वादिकाष्ठैरग्निंप्रज्वालयेत् ॥ अशुभेस्तंभनादौविषवृक्षादिकाष्ठैः ॥ विषवृक्षःकुचिलाइतिप्रसिद्धः ॥ अक्षोबिभीतकः ॥ शेलुःश्लेष्मातकः ॥ ४६॥ अग्निप्रसंगादेवकर्मविशेषेवह्निजिह्वापूजामाह ॥ वह्नेरिति ॥ ४७ ॥ कनकाभिधाहिरण्या॥ ४८॥ होमप्रसंगाद्विप्रभो

शुभेकर्मणिबिल्वार्कपलाशक्षीरवृक्षजैः ॥ अशुभेविषवृक्षाक्षैर्निम्बधत्तूरशेलुजैः ॥ ४६॥ काष्ठैःप्रदीपयेदग्निंहोमकर्मणिमंत्रवित् ॥ वह्नेर्जिह्वांसुप्रभाख्यांशांतिकर्मणिपूजयेत्॥ ४७ ॥ वश्यकार्य्येहिरक्ताख्यांस्तंभनेकनकाभिधाम् ॥ विद्वेषगगनांजिह्वामुच्चाटेप्यतिरक्तिकाम्॥ ४८ ॥ कृष्णांतुमारणेचार्चेद्बहुरूपांतुसर्वतः ॥ भोज्येसंख्याविशेषोपिज्ञेयःशांत्यादिकर्मसु ॥ ४९ ॥ शांतौवश्येभोजयेतहोमाद्विप्रान्दशांशतः॥ उत्तमंतद्भवेत्कर्मतत्त्वांशेनतुमध्यमम् ॥ ५० ॥होमाच्छतांशतोविप्रभोजनंत्वधमंतुतत् ॥ शांतेर्द्विगुणितंविप्रभोजनंस्तम्भनेमतम्॥ ५१ ॥

जनसंख्यामाह भोज्येइति ॥ ४९ ॥ शांतिवश्ययोर्होमाद्दशांशेनाद्विजानांभोजनमुत्तमम् ॥ होमात्पंचविंशांशेनतन्मध्यमम् ॥ ५० ॥ शतांशेनाधमम् ॥ ५१ ॥

विप्रस्वरूपमाह ॥ अतिशुद्धेति ॥५२॥ उक्तब्राह्मणभोजनेआभिचारोत्थमेनःपापंनश्यति ॥ तस्मादुत्तमाद्विजाभोज्याः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ लेखनद्रव्यमाह ॥ चन्दनमिति ॥ रात्रिर्हरिद्रासास्तंभनेलेखनद्रव्यम् ॥ अष्टविषाणिमारणे ॥

त्रिगुणं द्वेषणोच्चाटेमारणेहोमसंमितम् ॥ अतिशुद्धकुलोत्पन्नाःसांगवेदविदोऽमलाः ॥५२॥ सदाचाररताविप्राभोज्याभोज्यैर्मनोहरैः ॥ पूज्यास्तेदेवताबुद्ध्यानमस्कार्य्याःपुनःपुनः ॥ ५३ संतोष्यामधुरैर्वाक्यैर्हिरण्यादिप्रदानतः ॥ अचिराल्लभतेभीष्टंगृहीतायांतदाशिषि ॥५४॥एनोभिचारकर्मोत्थंनश्यतिद्विजवाक्यतः॥ चन्दनंरोचनारात्रिर्गृहधूमश्चिताभवः॥५५॥ अंगारोष्टविषाणीतिशांत्यादौयंत्रलेखने ॥पूर्वोक्तंलेखनद्रव्यंगृह्णीयात्तदपिध्रुवम्॥५६॥पिप्पलीमरिचंशुंठीश्येनविष्ठाचचित्रकः॥ गृहधूमोन्मत्तरसोलवणंचविषाष्टकम् ॥ ५७ ॥ शांतौवश्येलिखेद्भूर्जेस्तंभनेद्वीपिचर्मणि॥ खरचर्मणिविद्वेषेउच्चाटेध्वजवाससि ॥ ५८ ॥

पूर्वोक्तंयंत्रतरंगोक्तंलेखनद्रव्यम् ॥ तदपितत्तत्कामनयाग्राह्यम् ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ अष्टविषाण्याह॥ पिप्पलीति ॥ ॥ ५७ ॥ लेखनद्रव्यप्रसंगाल्लेखनाधारमाह॥ शांताविति ॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥ कुंडान्याह ॥ वृत्तमिति ॥ शांतौवृत्तकुंडंपश्चिमे ॥ पद्माकारंवश्येउत्तरे ॥ स्तंभनेचतुरस्रंपूर्वे ॥ द्वेषेत्रिकोणंनैर्ऋत्ये ॥ उच्चाटेषट्कोणंवायव्ये ॥ मारणेऽर्द्धचंद्राकारंदक्षिणइत्यर्थः ॥ ६० ॥ स्रुक्स्रुवावाह ॥ सौवर्णाविति ॥

नरास्थिनिलिखेद्यंत्रंमारणेमंत्रवित्तमः ॥ येत्वाधाराःस्मृतायंत्रतरंगेतेपिसंमताः॥ ५९॥वृत्तंपद्मंचतु
ष्कोणंत्रिषट्कोणंदलेंदुवत् ॥ तोयेशसोमशक्राणांयातुवाय्वोर्यमस्यच॥६०॥आशासुक्रमतःकुंडं
शांतिमुख्येषुकर्मसु ॥ सौवर्णौयज्ञवृक्षोत्थौस्रुक्स्रुवौशांतिवश्ययोः ॥६१॥ स्तंभनादिषुकार्य्येषुस्मृ
तौलोहमयौहितौ ॥हेमजारूप्यजाजातीसंभवालेखनीशमे ॥ ६२ ॥ वश्येदूर्वांकुरोत्पन्नास्तंभनेग
स्त्यवृक्षजा ॥ राजवृक्षभवावास्याद्विद्वेषतुकरंजजा॥६३ ॥ शुभकर्मणिरम्याहेलेखनींरचयेत्सुधीः॥
बिभीतकोत्थितोच्चाटेमारणेतुपुमस्थिजा ॥६४ ॥ रिक्तातिथौकुजदिनेविष्टौतामशुभेपुनः॥भक्ष्यं
चतर्पणंद्रव्यंतत्पात्रमथकीर्त्यते ॥ ६५ ॥

॥ ६१ ॥ लेखनीमाह ॥ शमेशांतौ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ देवताद्येकोनविंशतिवस्तूनिशांत्यादौनिरूप्यपुनरधिकंवक्तुंप्रतिजानीते ॥ भक्ष्यमिति ॥ ६५ ॥

परमान्नकंपायसम् ॥ स्थलाद्भ्रंशनेउच्चाटने ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ एवंकाम्यंकर्मनिरूप्यतत्प्रसाक्तिंवारयति ॥ शुभंवेति ॥ ७३ ॥ एवंचेत्किमित्युक्तंतदित्यतआह ॥ विषयेति ॥ ७४ ॥ पूर्वाचार्योक्त

शांतौवश्येहविष्यान्नंस्तंभनेपरमान्नकम् ॥ माषामुद्गाश्चविद्वेषेगोधूमाभ्रंशनेस्थलात् ॥ ६६ ॥ मसूरान्नंतथाश्यामाअजादुग्धोत्थपायसम् ॥ मारणेप्रोदितंभक्ष्यंमंत्रिणांकर्मकुर्वताम् ॥ ६७ ॥ शांतौवश्येहरिद्राक्तंजलंतर्पणईरितम् ॥ मरिचाद्यंकवोष्णंतत्स्तंभनेमारणेतथा ॥ ६८ ॥ मेषरक्तान्वितंतोयंविद्वेषोच्चाटयोर्मतम् ॥ स्वर्णपात्रंतर्पणेस्याच्छांतौवश्येचकर्मणि ॥ ६९ ॥ स्तम्भनेमृत्तिकापात्रंविद्वेषेखदिरोद्भवम् ॥ लोहनिर्मितमुच्चाटेकुक्कुटांडंतुमारणे ॥ ७० ॥ मृद्वासनेसमासीनःशान्तौवश्येप्रतर्पयेत् ॥ जानुभ्यामुत्थितःस्तंभेद्वेषादावेकपात्स्थितः ॥ ७१ ॥ षट्कर्मणांविधिःप्रोक्तएवंमंत्रज्ञतुष्टये ॥ सम्यक्कृत्वान्यासजातमात्मरक्षांविधायच ॥ ७२ ॥ काम्यंकर्मप्रकर्तव्यमन्यथाभिभवोभवेत् ॥ शुभंवाप्यशुभंवापिकाम्यंकर्मकरोतियः ॥ ७३ ॥ तस्यारित्वंव्रजेन्मंत्रोनतस्मात्तत्परोभवेत् ॥ विषयासक्तचित्तानांसंतोषायप्रकाशितम् ॥ ७४ ॥ पूर्वाचार्योदितंकाम्यंकर्मनैतद्धितावहम् ॥ काम्यकर्मप्रसक्तानांतावन्मात्रंभवेत्फलम् ॥ ७५ ॥

मुक्तम् ॥ तद्वस्तुगत्याहितंनभवति ॥ तत्रहेतुमाह ॥ काम्येति ॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥ निष्कामभजनेफलमाह ॥ वेदेति ॥ कर्मोपासनबोधनंकर्मकांडंज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामोयजेतेत्यादि ॥ उपासनाकांडंसूर्योब्रह्मेत्युपासीतयोहवैज्येष्ठंचवेदेत्यादि ॥ इदंकांडद्वयंसाधनंज्ञानस्य ॥ तृतीयंज्ञानकांडमयमात्मा ब्रह्मेत्यादि तस्मात्साध्यंफलभूतम् ॥ तस्माज्ज्ञानप्राप्तयेप्रयतितव्यमित्यर्थः ॥ ७७ ॥ तत्रोपायमाह ॥ तस्मादिति ॥ निष्कारणवेदोक्ताचरणेदेवतोपासनेचांतःकरणशुद्धिस्ततोज्ञानप्राप्तिरित्यर्थः ॥ ७८ ॥ ज्ञानस्वरूपमाह ॥ कार्येति ॥ कार्याणिकारणानिभूतानिचतत्संघातःशरीरम् ॥ तच्चालकश्चेतनोजीवोवस्तुतोब्रह्मैवेति साक्षात्कारोज्ञानं तस्मान्मुक्तिः ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतोअहंब्रह्मास्मीत्यादिश्रुतेः॥७९॥ ज्ञानायाप्रयतमानंनिंदाति॥ मनुष्येति॥ ८० ॥

निष्कामंभजतांदेवमखिलाभीष्टसिद्धयः॥प्रतिमंत्रंसमुदितायेप्रयोगाःसुखाप्तये॥ तदाशक्तिंविहायैव
निष्कामोदेवतांभजेत् ॥ ७६ ॥ वेदेकांडत्रयंप्रोक्तंकर्मोपासनबोधनम्॥ साधनंकांडयुग्मोक्तंतृतीये
साध्यमीरितम् ॥ ७७ ॥ तस्माद्वेदोदितंकुर्य्यादुपासीतचदेवताः॥ शुद्धांतःकरणस्तेनलभतेज्ञानमु
त्तमम्॥७८॥कार्य्यकारणसंघातंप्रविष्टश्चेतनात्मकः॥जीवोब्रह्मैवसंपूर्णमितिज्ञात्वाविमुच्यते॥७९॥
मनुष्यदेहंसंप्राप्यउपासीतचदेवताः॥योनमुच्येतसंसारान्महापापयुतोहिसः ॥ ८०॥

फलितमाह ॥ आत्मज्ञानेति ॥ कामक्रोधलोभाअरयस्तेषांक्षयंकृत्वाकृतैःकर्मभिर्वैदिकैर्दैवोपासनादिभिश्चांतःकरणशुद्धिद्वाराज्ञानाप्तिरित्यर्थः ॥ ८१ ॥ देवोपास्तिंकुर्वताभविष्यद्विचार्यप्रवर्तितव्यमित्याह ॥ चिकीर्षुरिति ॥

आत्मज्ञानाप्तयेतस्माद्यतितव्यंनरोत्तमैः॥कर्मभिर्देवसेवाभिःकामाद्यरिगणक्षयात् ॥ ८१ ॥ चिकी
र्षुर्देवतोपास्तिमादौभाविविचारयेत्॥स्नानदानादिकंकृत्वास्मृत्वाहरिपदाम्बुजम् ॥ ८२ ॥ शयीत
कुशशय्यायांप्रार्थयेद्वृषभध्वजम् ॥ भगवन्देवदेवेशशूलभृद्वृषवाहन॥८३॥इष्टानिष्टेसमाचक्ष्वमम
सुप्तस्यशाश्वत ॥ नमोजायत्रिनेत्रायपिंगलायमहात्मने ॥ ८४॥वामायविश्वरूपायस्वप्नाधिपतये
नमः॥स्वप्नेकथयमेतथ्यंसर्वकार्येष्वशेषतः॥८५॥ क्रियासिद्धिंविधास्यामित्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥
एभिर्मंत्रैःशिवंप्रार्थ्यनिद्रांकुर्यान्निराकुलः ॥८६ ॥ स्वप्नंदृष्टंनिशिप्रातर्गुरवेविनिवेदयेत्॥तमंतरेण
मन्त्रज्ञःस्वयंस्वप्नंविचारयेत् ॥ ८७ ॥

विचारप्रकारमाह ॥ स्नानसंध्यादिकंकृत्वेत्यादिना ॥ ८२ ॥ शिवप्रार्थनामंत्रमाह ॥ भगवन्निति ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ तमंतरेणगुरुंविनाशुभाशुभंस्वप्नंस्वयमेवविचारयेत् ॥ ८७ ॥

तत्रशुभस्वप्नानाह ॥ लिंगमिति ॥ ८८ ॥ शिखीति ॥ मयूरयुक्तेहंसयुक्तेचक्रयुक्तेवारथेस्थितिः ॥ मोहनंसुरतम्॥ निम्नगानदीमात्रम् ॥ ७९ ॥ स्यंदनोरथः ॥ निम्नगाद्यप्सरोंतानांदर्शनमेवशुभम् ॥ ९० ॥ हर्म्यादीनामारोहणम् ॥ ९१ ॥ मद्यमांसयोर्भक्षणम् ॥ विष्ठयाशरीरेलेपः ॥ रुधिरेणस्नानम् ॥ दधिभक्तभक्षः ॥ राज्यप्राप्तिः ॥ एतानि

लिंगंचन्द्रार्कयोर्बिंबंभारतींजाह्नवींगुरुम्॥रक्ताब्धितरणंयुद्धेजयोनलसमर्चनम्॥८८॥शिखिहंसरथां
गाढचेरथेस्थानंचमोहनम्॥आरोहणंसारसस्यधरालाभश्चनिम्नगा ॥८९॥प्रासादःस्यंदनःपद्मंछत्रंक
न्याद्रुमःफली॥नागोदीपोहयःपुष्पंवृषभोश्वश्चपर्वतः ॥९० ॥ सुराघटोग्रहास्तारानारीसूर्य्योदयोप्स
राः॥हर्म्यशैलविमानानामारोहोगगनेगमः ॥ ९१ ॥ मद्यमांसादनंविष्ठालेपोरुधिरसेचनम्॥दध्योद
नादनंराज्याभिषेकोगोवृषध्वजाः ॥९२॥ सिंहसिंहासनंशंखोवादित्रंरोचनादधि॥चंदनंदर्पणश्चैषां
स्वप्नेसंदर्शनंशुभम् ॥ ९३॥ तैलाभ्यक्तःकृष्णवर्णोनग्नोनागर्तवायसौ॥ शूष्ककंटकिवृक्षश्चचांडालो
दीर्घकंधरः ॥ ९४ ॥ प्रासादस्तलहीनश्चनैतेस्वप्नेशुभावहाः ॥शांतिंकुर्वीतदुःस्वप्नेजपेन्मंत्रमनन्य
धीः॥९५॥अब्दत्रिकंजपंतस्यकुर्वतोविघ्नसंभवः॥ विघ्नसंघमनाहत्यतदाजपपरोभवेत् ॥ ९६ ॥

शुभानि ॥ गवादीनांदर्शनमेवशुभम् ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ अशुभस्वप्नानाह ॥ तैलेति ॥ तैलाभ्यक्तोनापुरुषः ॥ नग्नादीनांदर्शनमशुभम् ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मंत्रसिद्धेर्लक्षणमाह ॥ मनःप्रसादइति ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ आत्मसाक्षात्कारपर्यंतमेवमंत्रोपास्तिरित्याह ॥ लब्धज्ञानइति ॥ अहंब्रह्मेतिसाक्षात्कारोज्ञानमित्यर्थः ॥१०१॥ ग्रंथसमाप्तौमंगलमाचरति ॥ तवंदेइति॥ ब्रह्मैवनानादेवतारूपेणजनैःसेव्यतइत्यर्थः ॥ 'योयोयांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितुमिच्छति ॥: तस्यतस्याचलांश्रद्धां

सिद्धौविश्वस्तचित्तःसंस्तुरीयेब्देससिद्धिभाक् ॥ मनःप्रसादःसंतोषःश्रवणंदुंदुभिध्वनेः॥९७॥गीतस्यतालशब्दस्यगंधर्वाणांसमीक्षणम्॥ स्वतेजसःसूर्य्यसाम्येक्षणंनिद्राक्षुधाजपः॥९८॥रम्यतारोग्यगांभीर्य्यमभावक्रोधलोभयोः॥एवमादीनिचिह्नानियदापश्यतिमंत्रवित् ॥ ९९ ॥ सिद्धिंमंत्रस्यजानीयाद्देवतायाःप्रसन्नताम् ॥ ततोजपेधिकंयत्नंप्रकुर्य्याज्ज्ञानलब्धये॥ १०० ॥ लब्धज्ञानःकृतार्थःस्यात्संसारात्प्रतिमुच्यते॥ज्ञात्वात्मानंपरंब्रह्मवेदांतैःप्रतिपादितम् ॥ १०१ ॥ तंवंदेपरमात्मानंसर्वव्यापिनमीश्वरम्॥योनानादेवतारूपोनृणामिष्टंप्रयच्छति ॥ १०२ ॥

तामेवविदधाम्यहम् ॥ सतथाश्रद्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते ॥ लभतेचततःकामान्मयैवविहितान्हितान्'इतिभगवद्वचनात् ॥ १०२ ॥

ग्रंथकरणेहेतुमाह ॥ विलोक्येति ॥ ब्राह्मणप्रार्थनमेवहेतुः ॥ १०३ ॥ बाणनेत्रामिताःपंचविंशतिः ॥ १०४ ॥ अनुक्रमणीमाह ॥ भूतशुद्धिरिति॥लिपेर्मातृकायान्यसनंन्यासः ॥ आद्येप्रथमतरंगेएतदीरितम्॥ १०५॥ द्वितीयोमौं द्वितीयतरंगे गणेशमंत्राः ॥ काल्यादितृतीये ॥ १०६ ॥ बंधनहारीति ॥ बंदीविशेषणम् ॥ छिन्नमस्तादिबंद्यंतं

विलोक्यनानातंत्राणिप्रार्थितोद्विजसत्तमैः॥स्वमतेरनुसारेणकृतोमंत्रमहोदधिः॥१०३॥ बाणनेत्रमितास्तस्मिंस्तरंगाःसंतिनिर्मिताः॥तत्रानुक्रमणींवक्ष्येमंत्रिणांसुखवृद्धये॥१०४ ॥भूतशुद्धिस्तथाप्राणप्रतिष्ठान्यसनंलिपेः॥पुरश्चर्य्याहोमविधिस्तर्पणाद्याद्यईरितम्॥१०५॥द्वितीयोमौंगणेशस्यमंत्राःसम्यक्समीरिताः॥कालीकाल्यभिधानानांसुमुख्याश्चतृतीयके ॥१०६ ॥तारातुरीयेसंप्रोक्तातारा भेदास्तुपञ्चमे॥षष्ठेतरङ्गेगदिताछिन्नमस्ताशबर्य्यपि॥१०७॥ स्वयंवरामधुमतीप्रमदाचप्रमोदया ॥ बंदी बंधनहारीतिसप्तमेवटयक्षिणी॥१०८॥तस्याभेदाश्चवाराहीज्येष्ठाकर्णपिशाचिनी॥स्वप्नेश्वरीचमातंगीबाणेशीमदनेश्वरी१०९।अष्टमेविस्तरात्प्रोक्ताबालाबालाभिदाअपि।नवमेत्वन्नपूर्णोक्तातद्भेदामोहनाद्रिजा॥११०ज्येष्ठालक्ष्मीरत्रमंत्राउक्ताप्रत्यंगिरारिहा।दशमेबगलावक्रावाराहीद्वितयंतथा १११

षष्ठे ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ वाराहीवार्तालीवटयक्षिण्यादिकामेश्वर्यंतंसप्तमे ॥ १०९ ॥ मोहनाद्रिजामोहनगौरी ॥ ॥ ११० ॥ अरिहाशत्रुनाशकःषोडशार्णः ॥बगलावक्राबगलामुखी ॥ १११ ॥

तदावृतिःश्रीविद्यायाआवरणपूजा ॥ ११२ ॥ मुनिर्वैदव्यासः ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ चरणायुधःकुक्कुटमंत्रः ॥११५॥

श्रीविद्यैकादशेप्रोक्ताद्वादशेतुतदावृतिः॥त्रयोदशेतुहनुमान्विस्तरात्प्रतिपादितः॥११२॥चतुर्दशेनार
सिंहोगोपालोगरुडोपिच ॥अथपंचदशेसूर्योभौमोजीवःसितोमुनिः॥११३॥षोडशोमौंमहामृत्युंज
योरुद्रोधनेश्वरः॥जाह्नवीमणिकर्णीचप्रोक्तासप्तदशेर्जुनः॥११४॥अष्टादशेकालरात्रिश्चंडिकायानवा
क्षरः ॥ एकोनविंशेचरणायुधःशास्तृसमन्वितः ॥११५ ॥ पार्थिवार्चनकीनाशचित्रगुप्तासुरीविधिः
विंशेतरङ्गेयंत्राणिस्वर्णाकर्षणभैरवः ॥ ११६ ॥ स्नानादिरंतर्यागांतएकविंशेर्चनाविधिः॥द्वाविंशे
द्वयंसमारभ्यपूजनंतद्भिदाअपि॥११७॥त्रयोविंशेतुदमनैःपवित्रैश्चसमर्चनम् ॥चतुर्विंशेचभेदेनमंत्रा
णांपरिशोधनम्॥ ११८ ॥तरंगेचरमेप्रोक्तंकर्मषट्कमनुक्रमात् ॥ एवंमंत्रोदधावस्मिन्पञ्चविंशतिरू
र्मयः॥११९ ॥ विशोधनीयाविद्वद्भिःक्षंतव्यंसाहसंमम ॥ चापलंनिजबालानांक्षमतेजनकोयथा ॥
॥१२०॥अहिच्छत्रद्विजच्छत्रवत्सगोत्रसमुद्भवः॥आसीद्रत्नाकरोनामविद्वान्ख्यातोधरातले ॥१२१

कीनाशोयमः११६ ॥ तद्भिदाःपूजाभेदाः ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ चरमेपंचविंशेतरंगे ॥ शांत्यादिकर्मषट्कमनुक्रम
णंचेति ॥ ११९ ॥ १२० ॥ स्ववंशमाह ॥ अहिच्छत्रेति ॥ १२१ ॥

॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ग्रंथांतेआशिषआह॥अविच्छिन्नेति॥ १२६ ॥ १२७ ॥ श्लोकत्रयेणदेवंप्रार्थयते॥
नरसिंहइति ॥ नृसिंहोमेमुदेहर्षायास्तु ॥ देवनामावरेणसमूहेननतः ॥ १२८ ॥ नृसिंहइति ॥ नृसिंहोमांसदाऽ

तत्तनूजोरामभक्तःफनूभट्टाभिधोभवत्॥महीधरस्तदुत्पन्नःसंसारासारतांविदन् ॥१२२॥ निजदेश
परित्यज्यगतोवाराणसींपुरीम् ॥ सेवमानोनरहरिंतत्रग्रंथमिमंव्यधात् ॥१२३॥ कल्याणाभिधपुत्र
णतथान्यैर्द्विजसत्तमैः॥अनेकानागमग्रन्थान्विलोकितृमुनीश्वरैः ॥ १२४ ॥एकग्रंथेस्थितंसर्वंमंत्रा
णांसारमिच्छुभिः ॥ संप्रार्थितःस्वमत्यासौनाम्नामंत्रमहोदधिः ॥१२५ ॥ अविच्छिन्नान्वयाःसंतु
निजधर्मपरायणाः ॥मंगलानिप्रपश्यंतुसर्वेद्रोहपराङ्मुखाः ॥ १२६ ॥ हरिःकरोतुकल्याणंसर्वेषां
जगदीश्वरः॥प्रवर्तयंत्विमंग्रंथंयावद्वेदोरविःशशी॥१२७॥ नरसिंहोमहादेवोमहादेवार्तिनाशनः ॥
मुदेपरोमहालक्ष्म्यादेवावरनतोस्तुमे॥१२८ ॥ नृसिंहउत्संगसमुद्रजामांसमुद्रजद्वीपगृहेनिषण्णः ॥
समुद्रजोहीनमतिःसदाव्यात्समुद्रभक्ताखिलसिद्धिदायी ॥ १२९॥

व्यात् ॥ कीदृशः ॥ उत्संगेसमुद्रजालक्ष्मीर्यस्यसः ॥ समुद्रेजातंयच्छ्वेतद्वीपंतत्रयद्गृहंतत्रोपविष्टःसमुत्सहर्षः ॥
रजोहीनमतिर्विरजाः ॥ समुद्राअंजल्यादिमुद्राविदोयेभक्तास्तेषांसर्वसिद्धिदाता ॥ १२९ ॥

राजालक्ष्मीनृसिंहोजयतिसुखकरंश्रीनृसिंहभजेयंदैत्याधीशामहांतोऽहसतनृहरिणाश्रीनृसिंहायनौमि ॥सेव्योलक्ष्मीनृसिंहादपरइहनहिश्रीनृसिंहस्यपादौसेवेलक्ष्मीनृसिंहेवसतुममनःश्रीनृसिंहावभक्तम् ॥ १३० ॥ विश्वेशोगिरिजाबिंदुमाधवोमणिकर्णिका ॥ भैरवोजाह्नवीदंडपाणिर्मेतन्वतांशिवम् ॥ १३१ ॥अब्देविक्रमतोजातेबाणवेदनृपैर्मिते॥ज्येष्ठाष्टम्यांशिवस्याग्रेपूर्णोमंत्रमहोदधिः॥१३२ ॥

इति श्रीमन्महीधरविरचितेमंत्रमहोदधितन्त्रेषट्कर्मादिनिरूपणंनामपंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

समाप्तोयंग्रंथः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

राजालक्ष्मीनृसिंहइति ॥ विभक्तिसतकेनहरिंस्तौति ॥ नृहरिणामहांतोदैत्याधीशाअहसतहताः ॥ हन्तेर्लुङिकर्मणिचिण्वदिड्भावेरूपम् ॥ श्रीनृसिंहाव श्रीनृसिंह भक्तम् अवरक्ष ॥ १३० ॥ देवान्स्मरति ॥ विश्वेशइति ॥ग्रंथनिष्पत्तिस्थानंकाशीस्थानम् ॥ १३१ ॥ ग्रंथनिर्मितिकालमाह ॥ अब्देविक्रमतइति ॥ बाणवेदनृपैर्मितेवर्षेपंचचत्वारिंशदुत्तरषोडशशततमेविक्रमनृपाद्गतेसति शिवस्यरामेश्वरस्याग्रे मंत्रमहोदधिःसमाप्तिमगमत् ॥ १३२ ॥ इतिश्रीमन्महीधरविरचितायांमंत्रमहोदधिव्याख्यायांनौकायांषट्कर्मनिरूपणंनामपंचविंशस्तरंगः ॥२५॥ समाप्तोयंग्रंथः॥

श्रीगणेशायनमः ॥   ॥ श्रीगणेशंमहेशानंभारतीमीश्वरंशिवम् ॥ नत्वावक्ष्येमातृकाणांनिघण्टुंबा
लबुद्धये ॥ १ ॥ ( ॐ )–ध्रुवस्तारस्त्रिवृद्ब्रह्मवेदादिस्तारकोऽव्ययः ॥ प्रणवश्चत्रिमात्रोपि ॐकारोज्यो
तिरादितः ॥ २ ॥ ( अ )--श्रीकण्ठःकेशवश्चापिनिवृत्तिश्चस्वरादिकः ॥ आकारोमातृकाद्यश्चवता
इत्यभिधीयते ॥ ३ ॥ ( आ )--नारायणस्तथानन्तोमुखवृत्तोगुरुस्तथा ॥ विष्णुशय्यातथाशेषोदीर्घ
आकारएवच॥४॥ ( इ )--माधवस्सूक्ष्मसंज्ञश्चविद्यादक्षिणलोचनम् ॥ गन्धवःपांचजन्यश्चइकार
श्चमुकांकुरः ॥५ ॥ ( ई ) गोविन्दश्चत्रिमूर्तीशःशांतिःस्याद्वामलोचनम् ॥नृसिंहास्त्रंतथामायाईका
रोपिसुरेश्वरः ॥६ ॥ ( उ )--अमरेशस्तथाविष्णुरिन्धिकाचगजांकुशः ॥ दक्षकर्णश्चविजयीउकारो
मन्मथाधिपः ॥ ७ ॥ ( ऊ )--अर्वांशोदीपिकावामश्रवणंमधुसूदनः ॥ इंद्रचापषषण्मुखश्चऊकारोर
क्षणाधिपः ॥ ८ ॥ ( ऋ )--देविकादक्षनासाचभारभूतिस्त्रिविक्रमः ॥ देवमातारिपुघ्नश्चऋकारस्तप
नस्तथा ॥९ ॥ ( ॠ )–अतिथीशोवामनश्चमोचिकावामनासिका ॥ दैत्यमाताचदैवज्ञॠकारस्त्रि
पुरान्तकः ॥ १० ॥ ( ऌ )--श्रीधरश्चपरास्थाणुर्दक्षगण्डस्त्रिवेदकः ॥ एकांघ्रिर्वज्रदण्डश्चव्योमार्द्धिर्ल

स्वरःस्मृतः ॥११॥ ( ॡ )--हृषीकेशोहरस्सूक्ष्मोवामगण्डःकुबेरहृक् ॥ अर्द्धचोंनीलचरणोलृका
रश्चत्रिकूटकः ॥ १२॥ ( ए )--झिंटीशःपद्मनाभश्चशक्तिस्सूक्ष्मास्मृताभगः ॥ ऊर्द्ध्वोष्ठगःकामरूपए
कारश्चत्रिकोणकः ॥१३॥ ( ऐ )--ज्ञानामृतोभौतिकःश्चाधरोद्दामोदरस्तथा॥ वागीशोवर्मभयदऐकार
स्त्रिपुरस्तथा ॥ १४ ॥ ( ओ )--सद्योजातोवासुदेवऊर्ध्वदन्तस्त्रिमात्रकः ॥ आप्यायनीमन्त्रनाथ
ओकारोनागसंज्ञकः ॥१५॥ ( औ )--संकर्षणोनुग्रहेशोमुरारिर्व्यापिनीतथा ॥ अथोदंतगतोमायी
नृसिंहांगस्तथौरसः ॥१६॥ ( अं )--अक्रूरोव्योमरूपश्चप्रद्युम्नश्चन्द्रसञ्ज्ञकः ॥ अनुस्वारस्तथाबिन्दु
रंकारश्चशिरोऽव्ययः ॥ १७ ॥ ( अः )--अनन्तश्चमहासेनोऽनिरुद्धोरसवर्णकः ॥ कन्यास्तननिभस्स
र्गोविसर्गश्चांतिमस्स्वरः ॥ १८ ॥ ( क )--क्रोधीशोधातृसंज्ञश्चक्रीसृष्टिश्चकरादिगः ॥ वर्गादिगः
पादवेषःककारःकामगःस्मृतः ॥१९॥ ( ख )--क्रुधर्द्धिगदिचण्डीशाःखेटोदक्षिणकूर्परः ॥ कैटभा
रिश्चमातंगःसंहारःखार्णकःस्मृतः ॥ २० ॥ ( ग )-स्मृतिःपंचांतकश्शार्ङ्गीगणेशोमणिबन्धगः ॥
गोमुखोगजकुंभश्चगकारःसिंहसञ्ज्ञकः ॥ २१ ॥ ( घ )--खड्गीशिवोत्तमोमेधादक्षिणांगुलिमूलगः ॥

घनोघनस्वरश्चैवघकारोङादिमःस्मृतः ॥ २२ ॥ ( ङ )–संज्ञाकोरुद्रकान्तिश्चदक्षांगुल्यग्रसंस्थितः॥
क्लीबवक्रश्चभद्रेशोङ्कारश्चानुनासिकः ॥ २३ ॥ ( च )--हलीकूर्मेश्वरोलक्ष्मीर्वामबाह्वादिगस्तथा ॥
चित्रधारीचंचलश्चचकारस्संस्मृतोबुधैः ॥ २४ ॥ ( छ )-एकनेत्रश्चमुसलीवामकूर्परगोद्युतिः ॥
त्रिबिन्दुकस्तथाचारीछकारःश्लेष्मकाभिधः ॥ २५ ॥ ( ज )–स्थिराजपन्नौजपजश्शूलीचचतुरान
नः ॥ मणिबन्धगतोवामेजकारांजनकोत्तमः ॥ २६ ॥ ( झ )–स्थितिःपाशीतथाजेशोवामांगुलित
लस्थितः ॥ स्वस्तिकस्स्थाणुसंज्ञश्चझकारोजान्तसंज्ञकः ॥ २७ ॥ ( ञ )–वामांगुल्यग्रतःसिद्धिरं
कुशीसर्वसंज्ञकः ॥ मातंगोह्यनुगानश्चञकारश्चनिरंजनः ॥ २८ ॥ ( ट )–जरामुकुंदस्सोमेशोदक्षपा
दादिगोमुखः ॥ गजांकुशश्चबालेंदुरमृताद्यष्टकस्स्मृतः ॥ २९॥ ( ठ )--लांगलीशोनन्दजश्चपालि
नीचकमण्डलुः॥ दक्षजानुगतस्स्थायीठकारस्स्थविरस्स्मृतः ॥ ३० ॥ ( ड )--नंदीक्षांतिर्दारकश्च
डामरोदक्षगुल्फगः ॥ व्याघ्रपादश्शुभांघ्रिश्चडकारस्तोमरोमतः ॥ ३१ ॥ ( ढ )--ऐश्वरीचार्द्धनारीशो

नरश्शाखांतराकृतिः ॥ दक्षपादांगुलीमूलोढलोढक्कोढकारकः ॥३२॥ ( ण ) -उमाकांतोनरकजिद्रतिर्द
क्षपदाग्रगः ॥ निर्वाणस्त्रिगुणाकारस्त्रिरेखोणस्समीरितः ॥३३॥ ( त )--वामोरुमूलनिलयआषाढी
कामिकाहरिः ॥ तीव्रश्चतरलोनीलस्तकारःकीर्तितोबुधैः ॥३४॥ ( थ )--दण्डीशोवरदःकृष्णोवामजा
नुगतस्स्मरः ॥ शौरीचापिविशालाक्षस्थकारःपरिकीर्तितः ॥३५॥(द)--सत्योत्रीशोह्लादिनीचवामगुल्फ
गतस्तथा॥शूलीकुबेरोदाताचदकारोधादिमःस्मृतः ॥३६॥ (ध)--मीनेशस्सात्वतप्रीतिर्वामपादांगुली
गतः ॥ धनेशोधरणीशश्चधकारोदांतिमःस्मृतः ॥ ३७ ॥ ( न )-शौरीमेषश्चरीदीर्घावामपादाग्रसं
स्थितः ॥ नरोमर्दीनोनादीचनकारश्चानुनासिकः ॥ ३८ ॥ ( प )--तीक्ष्णाचलोहितश्शूरोदक्षपार्श्व
श्चपार्थिवः ॥ पद्मेशोनान्तिमःफादिःपकारोपिप्रकीर्तितः ॥३९ ॥ ( फ )--जनार्दनःशिखीरौद्रीवाम
पार्श्वकृतालयः ॥ फट्कारःप्रोच्यतेसद्भिःफकारःपांतिमःस्मृतः ॥ ४० ॥ ( ब )--छलगण्डोभूधरश्च
भयापृष्ठगतस्तथा॥सुरसोवज्रमुष्टिश्चबकारोभादिमोमतः ॥४१॥ ( भ ) विश्वमूर्तिर्द्धिरण्डेशोनिद्राना
भिगतोपिच॥ भ्रुकुटीचभरद्वाजोभकारश्चजयापहः॥४२॥( म )--वैकुण्ठश्चमहाकालस्तन्द्रीजठरसंस्थि

तः॥मन्त्रेशोमण्डलोमानीविषस्सूर्योमकारकः ॥ ४३ ॥ ( य )—क्षुधाबालाचवायुस्त्वग्घृतश्चपुरुषोत्त
मः ॥ यमुनोयामुनेयश्चयकारोमान्तिमःस्मृतः ॥ ४४ ॥ ( र )—क्रोधिनीचभुजंगेशीज्वालीरुधिरपा
वकौ ॥ रोचिष्मान्दक्षिणांशश्चरुचिरोरेफईरितः ॥ ४५ ॥ ( ल)—क्रियाककुद्गतोमांसंपिनाकीभूर्बला
नुजः ॥ लंपटःशक्रसंज्ञश्चवाद्योरांतोलकारकः॥ ४६ ॥ ( व )--वालोवामांसनिलयोमेदोवारिदवा
रुणौ ॥ उत्कारीजलसंज्ञश्चखङ्गीशोपिवकारकः ॥ ४७॥ ( श )--मृत्युर्वकोवृषघ्नश्चहृद्दोदक्षकरस्थ
तः ॥ शंकुकर्णोस्थिसंज्ञश्चशकारोविद्धिरीरितः ॥ ४८ ॥ ( ष )--वृषःश्वेतेश्वरःपीतामज्जाहृद्वामबा
हुगः ॥ षडाननःषकारश्चकीर्त्तितश्चबुधैःखरः॥ ४९ ॥ ( स )--भृगुःश्वेतस्तथाहंसोहृद्दोदक्षिणपादगः ॥
समयस्सामगश्शुक्रस्संगतिस्सार्णकश्शशी ॥ ५० ॥ ( ह )--नभोवराहोनकुलोहृद्दोवामपदस्थितः ॥
सदाशिवोरुणःप्राणोहकारश्चहयाननः ॥ ५१ ॥ ( ळ)--हृदयान्नाभिसंस्थानश्शिवेशोविमलोसितः ॥
लघुप्रयत्नश्चोपान्त्योळकारःप्रोच्यतेबुधैः ॥ ५२ ॥ ( क्ष )—संवर्त्तकोनृसिंहश्चहृदयान्मुखसंस्थितः ॥
अनन्तःपरमात्माचवज्रकायोऽन्तिमाक्षरः ॥ ५३ ॥ इतिहादिमतेमातृकाकोशः समाप्तः ॥ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां क्षेमराज-श्रीकृष्णदास-श्रेष्ठिना
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणागारे
मुद्रयित्वा प्रकाशितम्।
पौष संवत् १९७९, शके १८४४.

---

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

# क्रय्य पुस्तकें ( मन्त्रशास्त्रग्रन्थाः ) ।

| नाम | की. रु. आ. |
|---|---|
| शाक्तप्रमोद–दशमहाविद्याका पंचांग और पांच देवतोंका पंचांग, राजा देवनंदन संगृहीत इसमें दशमहाविद्या, कुमारी, दुर्गा, शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु इन देवोंके पटल पद्धति कवच सहस्रनाम स्तवराज स्तोत्रादि पंचांग द्वादशांग हैं ... ... ... | ६–० |
| दुर्गोपासनाकल्पद्रुम–हरिकृष्णसंगृहीत. जिसमें दुर्गाजीका ६० प्रकरण कई एक शास्त्रसे उद्धृतकर अंतमें दुर्गापाठभी रखागयाहै ... | ५–० |
| श्रीतत्त्वनिधि–मैसूरराज्याधीश कृष्णराज संगृहीत. इसमें उपासक देवीचरित्र श्रीचक्रदेवता विष्णु शिव ब्रह्मा ग्रह वैष्णवनिधि शैवनिधि आगमकौतुक इत्यादि हैं ... | ४–० |
| महानिर्वाणतंत्र–भाषाटीकासमेत. इसमें तांत्रिक उपासना मूलमंत्र कर्मकांडादि आध्यात्मिकतावादि विषय हैं ... ... | ४–० |
| अनुष्ठानप्रकाश–( चतुर्थीलालकृत ) नैमित्तिक कर्ममें उपयोगी इसमें अकड मकडचक्र दीक्षा पुरश्चरण सूर्यचंद्रादि ग्रहणोंमें पुरश्चरण संकल्पादि संगृहीत हैं .... ... ... | ६–० |

| नाम | की.रु.आ. |
|---|---|
| मेरुतन्त्र–तन्त्रोंपर प्रायःलोग यह दोष लगातेहैं कि यह वाममतप्रधान होनेसे वैदिक लोगोंकेअनुष्ठानके योग्य नहीं;पर इस मेरुतन्त्रमें अनेक वैदिकप्रयोग ऐसे उत्तम हैं कि उक्त दोष कभी नहीं लगसकते ... ... | ८-० |
| माहेश्वरीतंत्र--भाषाटीका स०इसमें मारण मोहन वशीकरण उच्चाटनादि विधि वर्णित हैं ... | ०–४ |
| हनुमदुपासना–( सांगोपांग हनुमदाराधन ) जिसमें पंचमुखी एकादशमुखी हनुमत्कवच हनुमत्सहस्रनाम आदि ( ३४ ) विषय हैं | |
| अत्युत्तम रेशमीगुटका ... ... | २–० |
| ” ” तथा खुलापत्रा | १–१२ |
| बटुकभैरवोपासनाध्याय–(बृहज्ज्योतिषार्णवान्तर्गत).जिसमें संपूर्ण भैरवोंकी उपासनाका मंत्रोद्धार पुरश्चरण कवच पूजा सहस्रनाम स्तवादिका संग्रह है ... ... ... | १–८ |
| महायक्षिणीसाधन–पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकासमेत.इसमें अनेक प्रकारकी यक्षिणीसाधनादि विधि समस्त ( २२५ ) विषय हैं ... ... ... ... | ०–१२ |

संपूर्ण पुस्तकोंका “बडासूचीपत्र” अलग है मँगालीजिये.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–खेमराज श्रीकृष्णदास,“श्रीवेङ्कटेश्वर”स्टीम् प्रेस--बम्बइ.

## अत्रेयमभ्यर्थना.

* * *

अत्रास्माकं मुद्रणालये ऋग्वेदादयो वेदा उपनिषदो वेदान्तग्रन्था महाभारतादीतिहासाः श्रीमद्भागवतादिमहापुराणोपपुराणानि धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-व्याकरण-न्याय-योग-सांख्य-मीमांसादिशास्त्रीयग्रन्थाः काव्य-नाटक-चम्पू-ग्रन्थाः सहस्रनामाद्यनेकस्तोत्रग्रन्था विविधभाषाग्रन्थाश्च सीसकोत्तममहल्लघ्वक्षरैर्मनोहरं मुद्रिता योग्यमूल्येन क्रय्याः सन्ति, तांश्च ग्राहका यथापुस्तकसूचीपत्रं मूल्यप्रेषणेन प्राप्नुयुः।

अधिकमस्मदीयसूचीपुस्तकानां भिन्नभिन्नविषयाणां प्रापणेन "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" पत्रिकाप्रापणद्वारा च ज्ञेयमिति शम्।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

Khemraj Shrikrishnadas Proprietor, "Shri Venkateshwar"
Steem Press-Bombay.

॥ इति मन्त्रमहोदधिः सटीकः सम्पूर्णः ॥